चौदह सितारे

मय इज़ाफ़ा

हज़रत फ़ातमा (स.)

हज़रत अली (अ.)

इमाम मेहदी (अ.)

हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (अ.)

इमाम हसन (अ.)

इमाम हसन असकरी (अ.)

इमाम हुसैन (अ.)

इमाम अली नक़ी (अ.)

इमाम जैनुल आब्दीन (अ.)

इमाम अली रज़ा (अ.)

इमाम मूसिए काज़िम (अ.)

इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.)

इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.)

इमाम मोहम्मद बाक़र (अ.)

अब्बास बुक एजेन्सी

بسم اللہ الرّحمٰن الرّحیم

हज़रत फ़ात्मा (स.)

हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा (स.)

हज़रत अली (अ.)

इमाम हुसैन (अ.)

इमाम हसन (अ.)

चौदह सितारे

मय इज़ाफ़ा

इमाम मोहम्मद बाक़र (अ.)

इमाम ज़ैनुल आब्दीन

इमाम मेहदी (अ.)

मूसिए काज़िम (अ.)

इमाम जाफ़रे सादिक़

इमाम हसन असकरी

इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.)

इमाम अली रज़ा

इमाम अली नक़ी

लेखक

फ़ख़रूल उलेमा, अल्हाज, मौलाना,

नजमुल हसन साहब, करारवी (पेशावर)

रूपान्तरकर्ता :- डा० सैय्यद अली इमाम ज़ैदी " गौहर लखनवी "

पुस्तक का नाम :- चौदह सितारे

लेखक :- मौलाना नजमुल हसन साहब , करारवी (पेशावर)

रूपान्तरकर्ता :- डा० सय्यद अली इमाम ज़ैदी " गौहर " लखनवी

कम्पोज़िंग :- सुपर कम्प्यूटर सेन्टर
कटरा चौराहा, काज़मैन रोड, लखनऊ -३
फ़ोन :- २६१६५३

मुद्रक :- ए० बी० सी० आफ़सेट प्रेस, दिल्ली

संख्या :- १००० (एक हज़ार)

प्रकाशन तिथि :- सितम्बर, १६६६

प्रकाशक :- अब्बास बुक एजेन्सी
रूस्तम नगर, दरगाह हज़रत अब्बास,
लखनऊ - २२६००३

मूल्य :- 150

मिलने का पता :

अब्बास बुक एजेन्सी

रूसतम नगर, दरगाह ह० अब्बास, लखनऊ

फ़ोन : 2647590, 2001816

मोबाईल: 9415102990 फ़ैक्स: 2255977

Email-abbasbookagency@yahoo.com

अर्ज़े नाशिर

तारीख़ न सिर्फ़ एक ज़रिया है गुज़शता हालात और वाक़ेयात से आगाही का एक ताबनाक अफ़साना है। तहज़ीब व तमद्दुन के उरूज व ज़वाल का एक ग़ैर फ़ानी नक़्श है। माज़ी की हिकायात व रवायात का बल्कि यह एक नतीजा है इन्सानी समाज के मुख़्तलिफ़ पहलूओं की ग़ैर आहंगी और माद्दी व नज़रयाती अनासिर के बाहमी इख़्तेलाफ़ व तसादुम का एक अकस है। दुनिया की दास्ताने पारीना का और एक मजमूआ है ज़मानों के तसलसुल का।

इन्सानी इक़्तेदार और इस्तेदादे ज़माने की नैरंगियों के साए में तारीख़ की तशकील हुई है और इन्सान ने उसके लिये लामुतनाही तगय्यूरात की हक़ीक़तों को दरगुज़र करके बेश बहा और रंगा रंग मवाद फ़राहम किया है। उसके दामन में वह हमागीर इन्सानी इक़्तेदार मसतूर हैं। जो हर दौर, हर ज़माने और हर समाज में हक़, इन्साफ़,आज़ादी, मसावात, हमदर्दी, रवादारी, इन्सानी इरतेक़ा, एहसास और इदराक की सूरत में रूनुमां होते रहते हैं। तारीख़ के अज़ीम तरीन अलमिए ख़्वाह वह हज़रते **ईसा इब्ने मरयम**(अ.) की तरह इन्फ़रादी हों, या **हज़रत मूसा**(अ.) और उनके हवारीन की तरह इजतेमाई हों, हमेशा इन्हीं इक़्तेदार की तहरीक से ज़हूर पज़ीर हुये हैं।

तारीख़ की नज़र में इस्लाम वह इलाही अक़ीदा है जिसके लिये ख़ुद मशीयते इलाही ने चाहा कि यह मेरे रसूल(स.) और इताअत गुज़ार बन्दों का पसन्दीदा दीन हो। यह इन्सानी हुक़ूक़ का वह कामिल मजमूआ है जिसकी वही ख़ुदा वन्दे आलम ने अपने नबी पर की और नबी ने उसको अपनी उम्मत तक पहुँचाया।

इस्लाम अज़ली भी है और अबदी भी, यह दीन हज़रते आदम(अ.) के दौर में भी था और क़यामत तक बाक़ी रहेगा। यह और बात है कि हज़रते आदम(अ.) के ज़माने में इस्लाम के मौजूदा ख़दोख़ाल नहीं थे। उसूल व ज़वाबित मोअय्यन नहीं थे, और न कोई ब क़ायदा निज़ामे हयात था। इस लिये क़ुरआने मजीद ने इस्लाम का तज़किरा सबसे पहले हज़रते नूह(अ.) की ज़बान से इन अलफ़ाज़ में किया कि :-

" तुमने (मेरी नसीहत से) मुँह मोड़ लिया, हालांकि मैंने तुमसे कोई उजरत नहीं मांगी थी,मेरी उजरत तो अल्लाह पर है। और मुझे हुक्म है कि मैं उसके फ़रमा बरदार बन्दों में शामिल हो जाऊँ। (यूनूस, आयत, ७२)

उसके बाद हर दौर हर ज़माने में इस्लाम का ज़िक्र "तकरार" के साथ होता रहा, ताकि यह अम्र भी वाज़े हो जाए कि शरियतों के बदल जाने से शरियत की **"रूह"** पर कोई असर नहीं पड़ता। नीज़ यह भी आशकार हो जाय कि इस्लाम दर हक़ीक़त वही दीने इलाही

है जो इन्सानी ज़िन्दगी के लिये ज़ाब्ते के तौर पर वज़आ हुआ था, और जिसकी हमागीर तालीमात में इन्सान की फ़लाह व नजात के इसरार व रूमूज़ पोशीदा हैं। जब **हज़रत इब्राहीम** ख़लील अल्लाह का दौर आया तो उन्होंने भी अपनी शरियत को इस्लाम से ताबीर किया। जैसा कि कुरआने मजीद का बयान है :-

"इब्राहीम व याक़ूब (अ.) ने अपने फ़रज़न्दों को वसीयत की कि अल्लाह ने तुम्हारे लिये इस्लाम को पसन्द किया है। लेहाज़ा जब तुम इस दुनिया से उठना तो मुसलमान उठना"

(बक़रा आयत,१३२)

हज़रत **इब्राहीम व याक़ूब** की यही वसीयत जब जनाबे **यूसुफ़** की तरफ़ मुन्तक़िल हुई तो उन्होंने फ़रमाया :-

" परवरदिगार! तूने मुझे मुल्क भी दिया है और हदीसों की तावील का इल्म भी दिया है। तू ही ज़मीन व आसमान का ख़ालिक़ और दुनिया व आख़ेरत में मेरा सर परस्त व वली है। मेरे माबूद! मुझे इस दुनिया से मुसलमान उठाना और सालेहीन से मुलहिक़ कर देना"

(यूसुफ़, आयत,१०१)

इस आयए करीमा में **हज़रते यूसुफ़** की तरफ़ से अपने पदरे बुज़ुर्गवार की वसीयत के मुताबिक़ जादए इस्लाम पर गामज़न रहने, दुनिया से मुसलमान उठने और सालेहीन से एलहाक़ की ख़्वाहिश का इज़हार है और उसके साथ ही यह भी बताया गया है कि सिर्फ़ इस्लाम ही वह मज़हब है जो दुनिया व आख़ेरत दोनों जगह इन्सान के काम आता है। मालूम हुआ कि **हज़रत नूह**(अ.) की तरह **हज़रत यूसुफ़**(अ.) की नज़र में भी अल्लाह के कुछ मख़सूस और सालेह बन्दे ऐसे थे कि जिनकी ज़वाते मुक़द्देसा से ग़ायबाना तमस्सुक ज़रूरी था।

अब सवाल यह है कि वह " **सालेहीन** " कौन थे ? यह वह बन्दे थे जिनके बारे में कुरआने मजीद का इरशाद है :-

" ऐ अहले बैयते रसूल(स.)! ख़ुदा चाहता है कि तुमको गुनाहों की आलूदगी से दूर रखे और इस तरह पाक व पाकीज़ा रखे कि जिस तरह पाक व पाकीज़ा रखने का हक़ है।"

(अहज़ाब ,आयत ३३)

यह वह सालेहीन हैं जिनके बारे में रसूल अल्लाह(स.) ने इरशाद फ़रमाया :-

" मेरे अहले बैयत की मिसाल कश्तीए नूह(अ.) की सी है जो इस पर सवार हुआ वह नजात पा गया, और जो इससे कनारा कश रहा वह ग़र्क़ हो गया। "

एक और मौक़े पर फ़रमाया :- **" मैं तुमहारे दरमियान दो गरां क़द्र चीज़ें छोड़े जा रहा हूँ, एक कुरआन और दूसरे मेरे अहले बैयत है, और यह दोनों अज़मत में मसावी हैं और एक दूसरे से उस वक़्त तक जुदा न होंगे जब तक (क़यामत के दिन) हौज़े कौसर पर मेरे पास वारिद न हों। अगर तुम उनसे तमस्सुक रखोगे और उनका दामन थामे रहोगे तो मेरे बाद कभी**

गुमराह न होगे।"

कुरआने मजीद ने जहाँ जहाँ पैग़म्बरे इस्लाम का ज़िक्र किया है, वहाँ वहाँ इस्लाम का "**इस्लाम**" का तज़किरा भी इस अन्दाज़ से किया है कि गोया "**दीने इस्लाम**" सिर्फ़ आप ही का दीन है, और अल्लाह की तरफ़ से पहले पहल आप ही को अता हुआ है, और हक़ीक़त भी यही है। क्योंकि अम्बियाए साबेक़ीन में से हर नबी ने अपने इस्लाम से पहले किसी "**साहेबे इस्लाम**" के इस्लाम का एतेराफ़ किया है। लेहाज़ा यह देखना चाहिये कि वह "**साहेबाने इस्लाम**" कौन हैं ? कुरआने मजीद का इरशाद है कि :-

"ऐ रसूल(स.) ! कह दो कि मेरी नमाज़, मेरी इबादत, मेरी ज़िन्दगी, और मौत सब उस अल्लाह के लिये है जो आलेमीन का रब और लाशरीक है और मैं पहला मुसलमान हूँ।"

(एनाम,आयत,१६३,६४)

कुरआन ने वाज़े कर दिया कि अल्लाह का आख़री रसूल पहला मुसलमान और साहेबे इस्लाम है, और रसूले अकरम(स.) ने भी अपनी बेसत के बाद मुसलसल २३, तेईस साल तक उम्मत को इस्लाम ही की तालीम दी। मगर रसूले इस्लाम(स.) के इस्लाम और उम्मत के इस्लाम में एक नुमायां फ़र्क़ यह है कि रसूल(स.) का इस्लाम अज़ली है और उम्मत का इस्लाम उसके वजूद में आने के बाद से शुरू हुआ है। रसूले इस्लाम (स.) के मुतअल्लिक़ कुरआने मजीद में "**अव्वल मन असलहा**" और "**अव्वल अल मुस्लेमीन**" की लफ़्ज़ें इस्तेमाल हुई हैं। इन लफ़्ज़ों का मतलब यह है कि जब से इस्लाम का सिलसिला शुरू हुआ है, पैग़म्बर का इस्लाम तमाम अम्बियाए कराम व अहले इस्लाम पर मुक़द्दम रहा है। दूसरा वाज़े फ़र्क़ यह है कि उम्मत का इसलाम पैग़म्बरे इस्लाम के दस्ते मुबारक पर कलमे का मरहूने मिन्नत है जबकि खुद पैग़म्बर (स.) ने किसी से इस्लाम का दर्स नहीं लिया।

इसमें कोई शक नहीं कि कुरआने मजीद ने "**साहेबाने इस्लाम**" की फ़ेहरिस्त में **नूह, इब्राहीम, ज़ुर्रियते इब्राहीम, याकूब, यूसुफ** (अ.) यहां तक कि कायनात अरज़ो समां को भी शामिल किया है, लेकिन उसके साथ, साथ यह एलान भी कर दिया है कि सरकार ख़तमी मरतबत(स.) "**अव्वल अल मुस्लेमीन**" हैं। आप उस वक़्त भी साहेबे इस्लाम थे जब इस कायनात का वजूद भी न था। लेकिन इन तमाम बातों के बावजूद इस्लाम और इस्लामी तारीख़ का सबसे बड़ा अलमिया यह है कि दुनिया परस्तों ने मुरसले आज़म की वफ़ात के बाद अपने मफ़ाद की ख़ातिर तहस नहस करने और शरियते मोहम्मदी को तबाह व बरबाद करने में कोई दक़ीक़ा उठा नहीं रखा। यहां तक कि इस्लामी तारीख़ नवीसी के फ़न पर भी बड़ी बड़ी ज़ालिम व जाबिर हुकूमतों की मोहरें लगी हुई हैं और इसकी नशो नुमां दौलतो इक़तेदार के साये में हुई है। इस्लाम की तारीख़ मुख़ालेफ़ीन व मुनाफ़ेक़ीन के घरों में पली है और उन्हीं की आग़ोशे मुनाफ़ेक़त में परवान चढ़ी है। इन अल्ल व असबाब के बावजूद अगर इस्लामी तारीख़ के दामन में हमारे मतलब की कोई बात मिल जाती है तो यह इस अम्र की

दलील है कि वह हक़ीक़त इतनी वाज़ेह और रौशन है कि मुवर्रेख़ीन के बिके हुये क़लम भी उसकी परदा पोशी नहीं कर सके, और न ही वह हक़ीक़त तावील व तौजीह की नज़र हो सकी।

चहारदा मासूमीन(अ.) के हालात व वाक़ेआत पर मबनी, **मौलाना सय्यद नजमुल हसन साहब "करारवी"** की यह किताब " **चौदह सितारे** " के उनवान से तारीख़ी हक़ाएक़ का निचोड़ है जिसके मुताअद्दिद उर्दू एडीशन मन्ज़रे आम पर आकर ख़िराजे तहसीन हासिल कर चुके हैं।

इस अम्र की सख़्त ज़रूरत महसूस की जा रही थी कि इस शोरह आफ़ाक़ किताब का हिन्दी तरजुमा भी शाया हो। चुनान्चे हमने अपने इदारे की तरफ़ से **ख़ुदाए सुख़न , मीर बब्र अली " अनीस "** आल्ललाहो मक़ामाह के नवासे, जनाब **डा० सय्यद अली इमाम ज़ैदी** अल मुताख़ल्लिस ब " **गौहर लखनवी** " से तरजुमे के लिये दरख़्वास्त की और उन्होंने ब सरो चश्म हमारी दरख़्वास्त को क़ुबूल करते हुये इस किताब को हिन्दी रसमुलख़त में तबदील कर दिया।

हम **डा० सय्यद अली इमाम ज़ैदी " गौहर लखनवी "** के ममनून व मुताशक्किर हैं कि उन्होंने हमारी इस्तेदुआ पर मुताअद्दिद किताबों, मसलन, **ज़िन्दगी मौत के बाद, नजमुल अज़ा, क़ुरआन और साईंस, ऐलीया, शाहाने अवध और शियत,** और मोरिस बुकैले की किताब **क़ुरआन और जदीद साईंस,** वग़ैरा को भी हिन्दी रसमुलख़त में तबदील करके एक क़ाबिले क़द्र कारनामा अन्जाम दिया है।

हमें उम्मीद है कि इस किताब " **चौदह सितारे** " का हिन्दी एडिशन भी उसी तरह मक़बूल ख़ास व आम होगा जिस तरह उर्दू एडिशन को शरफ़े मक़बूलियत हासिल है।

वस्सलाम

सय्यद अली अब्बास तबा तबाई

अब्बास बुक एजेन्सी, दरगाह हज़रत अब्बास

रूस्तम नगर, लखनऊ -३



بسم الله الرّحمٰن الرّحيم

पेश लफ़्ज़

होते न अगर अज़ल में चौदह सितारे हादी
मिट्टी ख़राब होती , आदम से रहनुमा की

चौदह सितारे से मुराद हज़रात चहारदा मासूमीन(अ.) हैं जिनमें सरख़ीले अम्बिया ख़ातेमुन नबीईन हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा(स.) व शफ़ीए रोज़े जज़ा ख़ातूने जन्नत हज़रत फ़ात्मा ज़हरा(स.) और बारह इमाम (अ.) शामिल हैं। यह वह ज़वात हैं जो ख़ालीके कायनात की तरह बे मिस्ल व बे नज़ीर हैं। यह जब आलमे नूर में थे, उन्होंने मलायका को तस्बीह व तमजीद का सबक़ दिया। जिब्रईल को इल्मे मारेफ़त से बहरावर किया। आदम व हव्वा जो गिरे हुये आंसुओं की तरह बे वक़अत हो चुके थे। उन्हें शरफ़े इन्सानियत में तौबा के ज़रिये से उरूज व फ़रोग़ बख़्शा और जब आलमे ज़ुहूर में आये तो इन्सानी अक़्लों को इल्मो मारेफ़त की जिला देकर चमकाया। गुम्राहों को रहबरी का जादए मुस्तक़ीम बताया। जन्नत में जाने का रास्ता दिखाया। उनकी मदह सराई के लिये ज़बाने क़ुदरते नातिक़, उनके दज़ाहते हालात के लिये औराक़े क़ुरआन शाहिद। इन्सान की क्या मजाल कि उनके कशफ़े हालात के लिये क़लम उठा सके। हालातो औसाफ़ उनके लिखे जा सकते हैं। जिनकी कुनह मालूम और हक़ीक़त आशकार हो, और जिनको दुनिया में आज़ाद ज़िन्दगी बसर करने का मौक़ा मिला हो यह वह ज़वात हैं जिनके समझने से अक़्ले इन्सानी क़ासिर और फ़हमे इन्सानी माज़ूर है। मैंने इस किताब में जो कुछ लिखा है दुआए तौफ़ीक़ और कुतुब की मदद से लिखा है। मुझे हरगिज़ इसका दावा नहीं कि मैं उन हज़रात के हालात का एक शिम्मा भी लिख सका हूँ। बहर हाल अहबाब की ख़्वाहिश थी कि मैं उनके हालात क़लम बन्द करूँ इस लिये क़लम उठाया और कुछ न कुछ लिख दिया।

" गर क़ुबूल उफ़्तद ज़ेहे इज़्ज़ो शरफ़ "

मैंने इसकी पूरी कोशिश की है कि वाक़यात सही अल्फ़ाज़ व इबारत मोजिज़ व मुख़्तसर और हालात दुरूस्त लिखे जायें। तारीख़े विलादत व शहादत की सेहत पर भी पूरी कूव्वत सर्फ़ की जाय और मैंने इसकी सईए बलीग़ में भी दरेग़ नहीं किया कि सही तारीख़

मन्ज़रे आम पर आ जायं मैंने अपनी बिसात के मुताबिक़ इसकी भी कोशिश की है कि जो वाक़ेयात बाज़ मआसरीन ने ग़ैर मुनासिब लिख दिये हैं वह भी साफ़ हो जायें और एतेराज़ की गुन्जाईश बाक़ी न रहे।

मैंने ऐसा भी किया है कि जिन मासूमीन के कवाएफ़ व हालात मशहूर हैं उन्हें ज़्यादा एख़्तेसार से लिखा है, और जो ज़्यादा परदए ख़फ़ा में हैं, उनकी क़द्रे वज़ाहत की है।

मैंने इस किताब को हज़रते हुज्जत(अ.) से मन्सूब किया है। क्योंकि आप वारिसे अम्बिया व औसिया होने के साथ साथ हाज़िर व नाज़िर और हयाते जाहिरया से बहरा मन्द हैं।

मुझे इसकी हरगिज़ तवक़्क़ो न थी कि इस नाचीज़ हदिये को इतनी शोहरत व मक़बूलियत हासिल हो जायगी। जितनी हासिल है। मुझे इस बात की ख़ुशी है कि मैंने पाकिस्तान के फ़हूल उलेमा को यह फ़रमाते हुये सुना है कि किताब " **चौदह सितारे** " हमारे पास हर वक़्त रहती है। हम ब वक़्ते ज़ुरूरत इससे इसतेफ़ादा करते हैं, मुझे इसकी भी ख़ुशी है कि किताब पूरी आबो ताब के साथ मन्ज़रे आम पर आ रही है। क़ाबिले मुबारक बाद हैं जनाब शेख़ राहत अली साहब, वग़ैरह जिन्होंने इमामिया कुतुब ख़ाने की तरफ़ से इसे आफ़सेट पर छपवाया, बेहतरीन काग़ज़ लगाया है और ख़ुश मन्ज़र बनाया है।

मैंने इस एडिशन में बहुत से इज़ाफ़े कर दिये हैं जिनमें बाज़ वह इज़ाफ़े हैं। जिनकी कमी मैं शिद्‌दत से महसूस करता था। जैसे, (१) हज़रत रसूले करीम (स.) की ज़िन्दगी के इब्तेदाई हालात। (२) हज़रत रसूले करीम(स.) के सबबे वफ़ात की तहक़ीक़। (३) हिन्दोस्तान में इस्लाम के पहुँचने का ज़रिया और सिन्ध से आले मोहम्मद(स.) का इलाक़ा और अहले सिन्ध से उनकी दिल चस्पी। (४) हज़रत फ़ात्मा ज़हरा की कनीज़ जनाबे फ़िज़्ज़ा के हालात। (५) हज़रत ज़ैनब व उम्मे कुल्सूम(स.) के हालात, उनकी तारीख़े विलादत व वफ़ात और उनका मदफ़न। (६) फ़ात्मी ख़ुल्फ़ा के हालात। (७) क़ुम की तारीख़ और हज़रत मासूमए क़ुम के हालात। (८) हज़रत इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.) के फ़रज़न्दे अरजुमन्द जनाबे मूसा मुबरक़ा के हालात वग़ैरह, वग़ैरह।

(वस्सलाम)

सैय्यद नजमुल हसन करारवी

१५ शाबान, १३९३ हिजरी

بسم اللہ الرّحمٰن الرّحیم

फ़ेहरिस्त

" हिन्दी "

तोहफ़तुल अवाम

संग्रह कर्ता :- डा० मो० तक़ी अली आबिदी

मूल्य :-

प्रकाशक

अब्बास बुक एजेन्सी

रूस्तम नगर, दरगाह हज़रत अब्बास

लखनऊ-३

फ़ोन :- २६०७५६, २६६५६८



بسم الله الرّحمٰن الرّحيم

तक़रीज़

मलाअज़ अल - शिया, सुल्तान अल शरयक्या मरजए तक़्लीद आलमे शीयत आयत उल्लाह अल-उज़मा, मुजतहिदे आज़म,सरकार शरियत मदार,मुजतहिदे आज़म हज़रत अलहाज आक़ा सैय्यद मोहम्मद काज़िम मद्ज़िल्लहा,ज़ईम हौज़ाह इल्मिया व दार- अल-तबलीग़ अल इस्लामी कुम(ईरान)।

तारीख़ को आलमे इन्सानियत में ख़ास अहमियत हासिल है। इन्सान वाक़ेयाते गुज़श्ता से आशना होकर अपने मुस्तक़बिल को रौशन बना सकता है। गुज़शतेगान की ज़िन्दगी से सबक़ हासिल करते हुये किसी भी मौजुदा मसले में इख़्तियारो इजतेनाब में मुख़्तार होता है। मौजूदा ज़िन्दगी गुजरे हुओं की जिन्दगी से दर्स हासिल करती है। क्या कहने उनकी ज़िन्दगी के मनसूस मिन अल्लाह, नमूनए अमल और पैकरे इन्सान में इफ़्तेख़ारे मलाएका हों और उनकी ज़िन्दगी से दर्स हासिल करना खुशनूदिये इलाही का सबब भी हो तो यक़ीनन हर इन्सान के हाल व मुस्तक़बिल दोनों बेहतर होंगे । जिसके लिये ज़रूरी है कि चहारदा मासूमीन(अ.) की सवानेह हयातको हर ज़बान में तरजुमा करके इशाअते मज़हबे हक़ की जाय।

हुज्जतुल इस्लाम अल्हाज़ आक़ाए **मौलाना सैय्यद नजमुल हसन करारवी** दामत अफ़ाज़ातेह की यह तालीफ़ जो नज़रे सानी और इज़ाफ़े के साथ शाया हो रही है। इन्शाअल्लाह मज़ीद मुफ़ीद साबित होगी। अल्बत्ता तारीख़ी इख़्तेलाफ़ जो अक़ाएद और हश्मतो अज़मते मासूमीन(अ.) के ख़िलाफ़ न हों तो ज़्यादा गिरफ़्तो इन्तेक़ार के क़ाबिल नहीं हैं।

हम दुआ करते हैं के यह कोशिश इन्दल्लाह मक़बूल और मासूमीन(अ.) के सामने मबरूर हो, दुनिया और आख़ेरत में जज़ाए ख़ैर का सबब बने और मोमेनीन इस किताब का मुताअलेआ करके सीरते मासूमीन(अ.) के मुताबिक़ बा अमल ज़िन्दगी गुज़ारने की कोशिश करें।

खुदा वन्दे मतआल मोमेनीन को हर आफ़ते अरज़ी व समावी से मैहफ़ूज़ रखे।

वस्सलाम अल्यकुम व रहमतुल्लाहे व बराकातो।

सैय्यद मोहम्मद काज़िम शरियत मदार

بسم اللہ الرّحمٰن الرّحیم

मोअल्लिफ़ चौदह सितारे के मुताअल्लिक़ ख़तीबे आज़म क़ायदे मिल्लत हज़रत अल्हाज मौलाना सैय्यद मोहम्मद साहब क़िबला देहलवी (आलल्लाहो मक़ामाह)

के

पाकीज़ा ताअस्सुरात

(१) आपकी तसानीफ़ लाजवाब हैं। (२) मुतालेबात के सिलसिले में आपके ख़िदमात क़ौम फ़रामोश न कर सकेगी। (३) क़ौम आपके हवाले है।

(१२ सितम्बर, १९७० ई० के एक अहम मकतूब का एक्तेबास)

हामीए मिल्लते जाफरी ख़तीबुल अस्र अदाम अल्लाह अज़्ह

तसलीम मसनून ! वाला नामा पहूंचा , सद्र से एक घंटे की मुलाक़ात मालूम हुई(जज़ा कल्लाहो मरहबा) ***ईं कार अज़ तो आयद व मरदान चिनिं कुनद*** .....भाई मैं आपकी ज़ेर की सूझ बूझ और क़ौमी व दीनी ख़िदमात का पहले से मोतरिफ़ हूँ। पाकिस्तान बन्ने के बाद **चौदह सितारे ,** ज़िक्र अल अब्बास, व मुख़्तार आले मोहम्मद(स.) की तसनीफ़ ने "सोने पर सोहागा" का काम किया है। सच यह है कि आपकी तसानीफ़ लाजवाब हैं और माशाअल्लाह तक़रीर में तो ख़तीबुल अस्र हैं ही......भाई मैं लबे गोर हूँ अब यह काम आप ही चन्द हज़रात हैं जो संभाल लेंगे। क़ौम आपके हवाले है। आप मुतालेबात के लिये अव्वल यौम से जो कुछ कर रहे हैं क़ौम उसे फ़रामोश न कर सकेगी।

ख़बर नामा मैं खुद निकाल रहा हूँ , फ़ौरन जवाब दीजिये कि मैं इसमें सद्र साहब से आपकी मुलाक़ात का हाल लिखूँ ?

आपने बा वजूद दिल शिकस्ता होने के जो काम किया है उसकी जज़ा आइम्मए मासूमीन देंगे। मैंने अव्वल में लिखा है के मैं तक़रीबन ज़िन्दा दर गोर हूँ और अल्हमदो लिल्लाह कि अब आप यह काम अपने कांधों पर खूब उठा रहे हैं। मैं आपकी हुसने कार करदगी से बहुत खुश हूँ और आपको "अक़ाए मिल्लत" का ख़िताब देता हूँ "कहिए क़ूबूल है" आपने बावजूद बेएतनाई अहल कोरम जो काम इनके असीरान की रेहाई के लिए किया है वह आपके खुलूस और क़ूवत ईमानी को बतलाता है खुदा वन्दे करीम आपकी ज़ात का साया मोमिनीन पर सलामत रखे।

वस्सलाम

सैय्यद मोहम्मद देहलवी (कराची)

بسم الله الرّحمٰن الرّحيم

किताब चौदह सितारे मै इज़ाफ़ा

हक़ाएक़ व तहक़ीक़ात से मम्लू और हवालों से मुरस्सा है इसकी तालीफ़ ने मिल्लते इस्लामिया के ख़ज़ाने में एक दुर्रे बेबहा का इज़ाफ़ा कर दिया है।

हुज्जतुल इस्लाम हज़रत अल्लामा **मिर्ज़ा यूसूफ़ हुसैन साहब क़िब्ला**

सदर मजलिसे अमल उल्मा शिया पाकिस्तान

का

इरशादे गेरामी

यूँ तो क़ुदरत हर दौर में मिल्लते हक़ की बक़ा व फ़रोग़ के लिये न मसाएद हालात और न खुशगवार माहौल के बावजूद कुफ़्र व निफ़ाक़ के अंधेरों में ऐसे चिराग़ रौशन करती रही है जिन्होंने कभी ज़ुल्मात को नूर पर ग़ालिब नहीं होने दिया और यके बाद दीगरे ऐसी हस्तियां आलमे वजूद में आकर और दौलते इल्म से माला माल होकर अपनी ज़बान व क़लम से दीने हक़ की तबलीग़ का हक़ अदा करती रही हैं, जैसा कि अरबी, फ़ारसी, उर्दू और दूसरी ज़बानों में उनके अदीमुल मिसाल तसनीफ़ात व तालीफ़ात का वसी ज़ख़ीरा मौजूद है जो आज तक मशले राह का काम देता रहा है।

मेर मुकर्रम ओर अज़ीज़ दोस्त आली जनाब अल्हाज मौलाना सैय्यद नजमुल हसन साहब क़िब्ला कर्रावी सदरूल्ला फ़ाज़िल मुबल्लिग़ मदरसा अल वाएज़ीन लखनऊ से पाकिस्तान व हिन्दुस्तान में शायद ही कोई मुहिब्बे अहले बैत हो जिसे शरफ़े ताअर्रूफ़ हासिल न हो। आपकी खुदा दाद क़ाबलियत , हक़ाएक़ की तलाश में शबो रोज़ रियाज़त, अन्दाज़े तहरीर की पुख़्तगी, दिलचस्प और दिल आवेज़ तरज़े निगारिश और उसके साथ साथ कोहना मशक़ी इनके वह खुसुसियात हैं जिनका हर साहेबे नज़र व इन्साफ़ को एतेराफ़ करना पड़ता है। आप उन हस्तियों में वहीद, फ़रीद खुसुसीयात से मुशर्रफ़ व मुम्ताज़ हैं जिनके ज़रिये आज मिल्लते बैज़ा मुस्तफ़विया (स.) की तबलीग़ के फ़राएज़ अदा हो रहे हैं। और इन्शाअल्लाह आने वाली नस्लें भी इस से मुस्तफ़ीज़ होती रहेंगी।

आज से चन्द साल क़ब्ल आपने एक जामे किताब (चौदह सितारे) के नाम से तालीफ़ की थी जिसमें चहारदह मासूमीन(अ.) के सवाने हयात एख़्तेसार और जामीयत और दिलचस्प तरीक़े से दर्ज फ़रमाये थे। जिस से अहले इल्म और अवाम दोनों मुस्तफ़ीज़ और लुत्फ़ अन्दोज़ होते रहे। किताब हक़ाएक़ व तहक़ीक़ात से मम्लू और हवालों से मुरस्सा होने

के अलावा इस क़दर साफ़ और सादा और दिलकश अन्दाज़ में लिखी गईं थीं कि एक नज़र पड़ जाने के बाद जब तक ख़त्म न हो जाय छोड़ने को दिल नहीं चाहता था। किताब क्या है हज़रते रसूले करीम(स.) और उनकी आले पाक का लहलहाता हुआ बाग़ है। जिसमें हर क़िस्म के गुलो रेहान की खुशबूऐं दिलो दिमाग़ को माअत्तर कर देती हैं। " कुतुब माअख़्ज़ के हवाले मुकम्मल दर्ज हैं मगर अरबी इबारत बिल्कुल नहीं के पढ़ने में अवाम को उल्झन न हो।

अगरचे इस मौजू के लिये पांच, छे सौ सफ़हात बहुत कम थे। मगर यह भी एक मोजेज़ा तहरीर है कि ना पैदा कनार समुन्द्र को कूज़े में समो दिया है। यह किताब की मक़बूलियत का नतीजा है कि कई मर्तबा जेवरे तबा से मुरस्सा हुई ओर हाथों हाथ निकल गई,अब फिर वह ज़ेरे तबा है और तबाअत भी आफ़सेट पर हो रही है। इस मरतबा आपने खुसूसी तवज्जो से इसमें इस क़दर इज़ाफ़े फ़रमाये हैं कि अब यह किताब नई मालूम होती है इस लिये अब इसकी जामियत और दिल आवेज़ी में भी इज़ाफ़ा हो गया है और हजम में भी मुझे यक़ीने कामिल है कि यह और इशाअतों से कहीं ज़्यादा मक़बूल होगी। इन्शाअल्लाह ताआला खुदा शाहिद है कि इसे देख कर बे साख़्ता दिल से यह दुआ निकलती है।

अल्लाह करे ज़ोरे क़लम और ज़्यादा

मेरी दुआ है कि खुदा वन्दे आलम आपको इससे भी बेहतर ख़िदमात की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और फ़रज़न्दे इस्लाम को इस चश्मए फ़ैज़ से मुस्तफ़ीज़ होने का बेश अज़ बेश मौक़ा बख़्शे और हमारे दूसरे अहले इल्म को भी ऐसी ही तौफ़ीक़ात से सरफ़राज़ फ़रमाए ताके इस्लाम का ख़ज़ाना मदहे अहलेबैत रसूल (स.) से मामूर और दौलते मारेफ़त खुदा व रसूल (स.) व आइम्मए ताहेरीन(अ.) से माला माल रहे और इस ख़िदमत के सिले में खुदा वन्दे आलम बेहतरीन जज़ा मरहमत फ़रमाए (आमीन)।

" वस्सलाम "

मिर्ज़ा यूसुफ़ हुसैन अफ़ीअनाह (लाहौर)

४, दिसम्बर १६७३ ई०

بسم اللّٰہ الرّحمٰن الرّحیم

किताब **"चौदह सितारे"** तारीख़ी वाक़ेयात के साथ साथ हक़ाएक़ के इस बात का मरकज़ व मन्बआ है।

हुज्जतुल इस्लाम हज़रत अल्हाज मौलाना सैय्यद सादिक़ अली शाह साहब क़िबला नजफ़ी इमाम अल जुम्मतः वल जमाअतः जामए मोहम्मदी हाली रोड, गुलबर्ग, (लाहौर)

का

इरशादे गेरामी

अमली दुनिया में उन हज़रात का मक़ाम बहुत बलन्द है जिन्होंने मुख़्तलिफ़ ज़मानों में बनी नौ इन्सान की राहे हक़ और सिराते मुस्तक़ीम की जानिब राहनुमाई के असबाब मोहय्या किये और सख़्त से सख़्त हालात में भी एलाए कलमए हक़ का फ़रीज़ा अदा किया, यक़ीनन अहले ईमान के क़ुलूब पर उनकी मोहब्बत के ऐसे नुक़ूश मौजूद हैं जो कभी महो नहीं हो सकते।

हिदायत का हक़ीक़ी सरचशमा हज़रात अहले बैत ताहेरीन(अ.) की ज़वाते मुक़द्देसा हैं जिनकी क़ुरबानियों ने इस्लाम को हयाते जावेदां बख़्शी और इन्सान को मेराजे इन्सानियत तक पहुँचने के उसूलों की तालीम दी। उर्दू और फ़ारसी ज़बानों में उनके हालात से मुताअल्लिक़ कुतुब का अज़ीम ज़ख़ीरा मौजूद है लेकिन उर्दू ज़बान में इन हस्तियों के हालात पर मुश्तमिल कोई किताब न थी जिसकी शदीद ज़रूरत थी। बेहम्दअल्लाह इस ज़रूरत को नजमुल वाएज़ीन आली जनाब **अल्हाज मौलाना नजमुल हसन साहब क़िब्ला करारवी** की तालीफ़ व मनीफ़ **"चौदह सितारे"** ने पूरा किया

इस किताब में तारीख़ी वाक़ेयात के साथ हक़ाएक का अस्बात भी बतरीक़े अहसन मौजूद है, किताब की जुमला खुसूसियात ही की वजह से इसे ख़ासो आम में शोहरत व मक़बूलियत हासिल हो चुकी है। बहुत कमकिसी उर्दू किताब के हिस्से में आई है।

यह जनाब मौलाना की मेहनत, ख़ुलूस और चहारदह मासूमीन (अ.) की खुसूसी तवज्जे का नतीजा है। मेरी दुआ है कि खुदा वन्दे मतआल मौलाना की मज़हबी और मिल्ली ख़िदमात को क़ुबूल फ़रमाए। इस किताब नीज़ दीगर तालीफ़ात व तस्नीफ़ात को बाक़ियाते सालेहात में क़रार दे और मोमेनीन को इनके मोवल्लेक़ात से एस्तेफ़ादा की तौफ़ीक़ मरहम्मत फ़रमाए।

" वस्सलाम "

सादिक़ अली नजफ़ी (गुलबर्ग, लाहौर)

بسم الله الرّحمٰن الرّحيم

माशा अल्लाह **"चौदह सितारे"** नामी किताब अपने मुन्दरजात की तलअत से जगमगा रही है। सुक़्तुल इस्लाम हज़रत अलहाज अल्लामा मोहम्मद बशीर साहब क़िबला अन्सारी दाम ज़िल्लहुल आली,

सदर पाकिस्तान शिया मजलिसे उलेमा

का

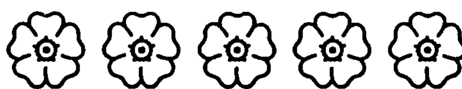
इरशादे गेरामी

जनाब अज़ीज़ मोहतरम नाज़िमे आला पाकिस्तान मजलिसे उलेमा अल्हाज मौलाना सैय्यद नजमुल हसन साहब क़िबला करारवी सदरूल्ला फ़ाज़िल वाएज़ मदरसुल वाएज़ीन लखनऊ, की ज़ाते सतूदह सिफ़ात से पाक व हिन्द के हज़रात मोमेनीन बख़ूबी मुताअरिफ़ हैं। मौसूफ़ कुछ अरसा अख़बार अल वाएज़ लखनऊ के फ़राएज़े एदारत भी अन्जाम देते रहे हैं। मुतवल्ली, मुन्तज़िम मदरसुल वाएज़ीन हज़रत सरकार सदर अल शरियता नजमुल मिल्लत, आलल्लाहो मक़ामह ने आपकी ज़ेहानत, लियाक़त, वुस्अते नज़र और मदरसए हाज़ा के अज़ीम कुतुब ख़ाने में कसरते मुतालेआ से अज़ीम इस्तेफ़ादह के पेशे नज़र नशरो इशाअत के फ़राएज़ आप से मुताअल्लिक़ किये थे। इस लिये आपकी कुतुब मोअल्लेफ़ा अपनी एफ़ादियत में मुम्ताज़ होती हैं। कसरते तफ़हुसव शिद्दते तजस्सुसे कुतुबे मुतदावेला से मज़ामीन में इब्तकारो नुदरत होती है। माशाअल्लाह **" चौदह सितारे मय इज़ाफ़ा "** नामी किताब अपने मुन्दरजात की तलअत से जगमगा रही है, जिसकी ज़िया से हर ख़ानए मोमिन रौशन और **" चौदह सितारों "** के अनवार शेशआ से कुलूबे मोमिन मुनव्वर होंगे।

" फ़क़त "

ग़रीके तक़सीर, मोहम्मद बशीर, अन्सारी बक़लम

(टेकसला) २०, अक्टूबर १९७३ ई०



بسم اللہ الرّحمٰن الرّحیم

पैग़म्बरे इस्लाम हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा (स.) के मुख़्तसर ख़ानदानी हालात

पैगम्बरे इस्लाम *हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा (स.)* हज़रत इब्राहीम (अ.) की नस्ल से थे। हज़रत इब्राहीम अहवाज़,बाबुल या ईराक़ के एक क़रये "कोसा" में तूफ़ाने नूह से १०८१ साल बाद पैदा हुये। जब आपकी उम्र ८६ साल की हुई तो आपके यहाँ जनाबे हाजरा से हज़रते इस्माईल पैदा हुये , और ६० साल की उम्र में जनाबे सारः से हज़रते इस्हाक़ पैदा हुये। हज़रत इब्राहीम (अ.) ने दोनों बीवीयों को एक जगह रखना मुनासिब न समझ कर सारः को मै इसहाख़ शाम में छोड़ा और हाजरा को इस्माईल के साथ हिजाज़ के शहर मक्का में खुदा के हुक्म से पहुंचा आये। इस्हाक़ (अ.) की शादी शाम में और इस्माईल (अ.) की मक्का में क़बीलए जुरहुम की एक लड़की से हुई। इस तरह इस्हाक़ (अ.) की नस्ल शाम में और इस्माईल (अ.) की नस्ल मक्का में बढ़ी ।जब हज़रते इब्राहीम की उम्र १०० साल की हुई और जनाबे हाजरा का इन्तेक़ाल भी हो गया तो आप मक्का तशरीफ़ लाये और इस्माईल (अ.) की मद्द से ख़ानए काबा की तामीर की। मुवर्रेख़ीन का कहना है कि यह तामीर हिजरते नबवी से २७६३ साल पहले हुई थी। उन्होंने एक ख़्वाब के हवाले से बहुक्मे खुदा अपने बेटे (इस्माईल) को ज़िबह करना चाहा था। जिसके बदले में खुदा ने दुम्बा (भेड़) भेज कर फ़रमाया कि तुमने अपना ख़्वाब सच कर दिखाया। इब्राहीम सुनो! हमने तुम्हारे फ़िदये (इस्माईल) को ज़ब्हे अज़ीम इमामे हुसैन(अ.) से बदल दिया है। मुवर्रेख़ीन का कहना है कि यह वाक़ेया हज़रते आदम(अ.) के दुनिया में आने के ३४३५, साल बाद का है। इसके बाद चन्द बातों में आपका इमतेहान लिया गया जिसमें कामयाबी के बाद आपको दरजए इमामत पर फ़ायज़ किया गया। आपने ख़वहिश की कि यह ओहदा मेरी नस्ल से मुस्तक़र कर दिया जाय। इरशाद हुआ बेहतर है, लेकिन तुम्हारी नस्ल में जो ज़ालिम होंगे वह इस्से महरूम रहेंगे। आपका लक़ब ख़लील अल्लाह था। और आप ऊलुल अज़्म पैग़म्बर थे। आप साहेबे शरीयत थे, और खुदा की बारगाह में आपका यह दरजा था कि ख़ातेमुल अम्बिया (स.) को आप की शरीयत के बाक़ी रखने का हुक्म दिया गया। आपने १७५, साल की उम्र में इन्तेक़ाल फ़रमाया और मक़ामे क़ुदस (ख़लील -अल -रहमान) में दफ़न किये गये। वफ़ात से पहले आपने अपना जानशीन हज़रते इस्माईल (अ.) को क़रार

दिया। अंग्रेज़ इतिहासकारों का कहना है कि हज़रते इस्माईल का जन्म जनाबे मसीह से १६११ साल पहले हुआ था।

हज़रत इसमाइल के ये खास इमतेआजात हैं कि उन्हीं की वजह से मक्का आबाद हुआ। चाह ज़मज़म बरअमद हुआ। हजे काबे की इबादत की शुरूआत हुई। १० ज़िलहिज़ को इदे कुरबां की सुन्नत जारी हुई। आप का इन्तेकाल १३७ साल की आयु में हुआ, और आप हिजर इसमाईल "मक्का" के करीब दफ़न हुए। आपने बारह पुत्र छोड़े। आपकी वफ़ात के बाद ख़ानए काबा की निगरानी व दीगर ख़िदमात आपके पुत्र ही करते रहे। इनके पुत्रों में क़ेदार को विशेष हैसियत हासिल थी गरज़के अवलादे हज़रत इसमाईल मक्का मोअज़मा में बढ़ती और नशोनुमा पाती रही। यहाँ तक कि तीसरी सदी में एक शख़्स फ़हर नामी पैदा हुआ जो इनतेहाई बाकामाल था। इस फहर की नसल से पैग़म्बर इस्लाम पैदा हुए। अल्लामा तरीही का कहना है कि इसी फ़हर या इसके दादा नज़र बिन कनाना को कुरैश़ कहा जाता है। क्योंकि बहरिल हिन्द से उसने एक बहुत बड़ी मछली शिकार की थी। जिसको कुरैश कहा जाता था। और उसे लाकर मक्का में रख दिया था। जिसे लोग देखने के लिये दूर दूर से आते थे। लफ़्ज़े "**फ़हर**" इबरानी है और इसके मानी "**पत्थर**" के हैं और "**कुरैश**" के मानी क़दीम अरबी में "**सौदागर**" के हैं।

(क़सी)

पॉचवी सदी इसवी में एक बुर्जुग फहर की नसल से गुज़रे हैं जिनका नाम "क़सी" था। शिबली नोमानी का कहना है कि उन्हीं क़सी को कुरैश कहते हैं। लेकिन मेरे नज़दीक़ ये ग़लत है। क़सी का असली नाम ज़ैद और कुन्नियत अबुलमुग़ैरा थी उनके बाप का नाम कलाब और मॉ का नाम फात्मा बिन्ते सअद और बीबी का नाम आतका बिन्ते ख़ालिख़ बिन लैक था। यह निहायत ही नामवर, बुलन्द हौसला, जवॉमर्द, अज़ीमुश्शान बजुर्ग थे। उन्होंने ज़बरदस्त इज़्ज़त व इख़्तेदार हासिल किया था यह नेक चलन बा मुरव्वत, सख़ी व दिलेर थे, इनके विचार पवित्र और बेलौस थे। इनके एख़लाक़ बुलन्द, शाइस्ता और मोहज़्ज़ब थे। इनकी एक बीबी हबी बिन्ते ख़लील ख़ेज़ाई थीं। यह ख़लील बनु ख़ुज़आ का सरदार था। इसने मरने के समय ख़ानए काबा की तौलियत हबी के हवाले कर देना चाही। इसने अपनी कमज़ोरी के हवाले से इनकार कर दिया। फिर उसने अपने एक रिश्तेदार अबू ग़बशान ख़ेज़ाई के सुपुर्द की। उसने इस अहम ख़िदमत को क़सी के हाथों बेच दिया। इस तरह क़सी इब्ने कलाब इस अज़ीम शरफ़ के भी मालिक बन गये। उन्हों ने ख़ानए काबा की मरम्मत कराई और बरामदा बनवाया। रिफ़ाहे आम के सिलसिले में अनगिनत ख़िदमते कीं। मक्का में कुँवा खुदवाया जिसका नाम अजूल था क़सी का देहान्त ४८० ई० में हुआ। मरने के बाद उन्हें मुक़ामे हजून में दफ़न किया गया और उनकी क़ब्र ज़्यारत गाह बन गई। क़सी अगरचे नबी या इमाम न थे, लेकिन हामिले नूरे मोहम्मदी(स.) थे। यही वजह है कि आसमाने फ़ज़ीलत के आफ़ताब बन गये।

(अब्दे मनाफ़)

क़सी के छ : बेटे थे जिन में अब्दुलदार सब से बड़ा और अब्दुलमुनाफ़ सब से लाऐक था। उन्होंने मरते समय बड़े बेटे को तमाम मनासिब सपुर्द किये। लेकिन अब्दे मनाफ़ ने अपनी लेआकृत की वजह से सब में शिरकत हासिल कर ली। यह कुरैश के मुस्सलेमुस-सबूत सरदार बन गये। अब्दे मनाफ़ का असली नाम मुग़ैरा और कुन्नियत अबू अब्दे शम्स थी और माँ का नाम हबी बिनते ख़लील था। उन्होंने आमका बिन्ते मरह सलेमह बिन हलाल से शादी की। उन्हें हुसनो जमाल की वजह से **"क़मर"** माहताब कहा जाता था। **"दियारे बकरी"** का कहना है कि अब्दे मनाफ़ को मुग़ैरा कहते थे। वह तक़वा व सेलए रहम की तलक़ीन किया करते थे। बाप और बेटे दोंनो एक ही अक़ीदे पर थे और उन्होंने कभी बुत परसती नहीं की। यह भी अपने बाप क़सी की तरह मनाक़िब बेहद और फ़ज़ाएले बेशुमार के मालिक और नूरे मोहम्मदी के हामिल थे। उन्होंने मुल्के शाम के मक़ाम ग़ज़वे में इन्तेक़ाल किया।

अब्दे मनाफ़ के जीते जी तो कोई झगड़ा उठा नहीं। इनके बाद उनकी अवलाद जिनमें हाशिम, मुत्तलिब अब्दे शम्श और नौफ़िल नुमाया हैसियत रखते थे उन्में यह ज़बा उभर पड़ा कि अब्दुलदार की औलाद से वह मनासिब ले लेने चाहिये जिनके वह अहल नहीं। चुनानचे इन लोगों ने बनी अब्दुलदार से मनासिब की वापसी या तकसीम का सवाल किया उन्होनें इन्कार कर दिया। इसके बाद जंग का मैदान हमवार हो गया। बिलआख़िर इस बात पर सुलह हो गई कि रेफ़ायदा सक़ाया की क़्यादत बनी अब्देमुनाफ़ में है और लवा बरदारी का मनसब बनी अब्दुलदार के पास रहे। और दारूलनदवा की सदारत मुश्तरका हो।

(हाशिम)

आप का नाम उमरो कुन्नियत अबू नाफ़ला थी। आपके वालिद अब्दे मुनाफ़ और वालेदा आतका बिनते मरह अल सलमिया थीं। आपको उलू मरतबा की वजह से उमरो अल्अला भी कहते थे। आप और अब्दुल शम्स वह दोनों इस तरह जुडवॉ पैदा हुए थे के इनके पावॅ का पनजा अब्दुल शम्स की पेशानी से चिपका हुआ था। जिसे तलवार के ज़रिए अलाहेदा किया गया। और बेइन्तेहा खून बहा जिस की ताबीर नुजूमियों ने बाहमी खूँरेज़ जगं से की जो बिल्कुल सही उतरी और दोनों ख़ानदानों के दरमियान हमेशा जगं मुतावरिस रही। जिसका एख़्तेताम १३३ हिजरी में हुआ बनी अब्बास (हाशमी) और बनी उमय्या (शम्सी) में ऐसी खूँरेज़ जगं हुई। जिसने बनी उमय्या की कूवत व ताक़त और बुलन्दीए इक़बाल का चिराग़ हमेशा के लिए गुल कर दिया।

आप फ़ितरतन सैर चश्म और फ़य्याज़ थे। दौलत मन्दी में भी बड़ी हैसियत के मालिक थे हुजाज की ख़िदमत आप की ज़िन्दगी का कारनामा था। मुवर्रेख़ीन का कहना है कि आपको हाश्मि इसलिये कहते हैं कि आपने एक शदीद क़हत के मौक़े पर अपनी ज़ाती दौलत से शाम जाकर बहुत काफ़ी केक ख़रीदे थे और उसे लाकर तक़सीम करते हुए कहा कि इसे शोरबा में तोड़

कर खा जाओ। हाशिम के मानी तोड़ने के हैं। लेहाज़ा हाशिम कहे जाने लगे आपने अपनी शादी अपने ख़ानदान की एक लड़की से की जिससे हज़रत असद पैदा हुए । दूसरी शादी खज़रजियों के एक मशहूर क़बीले बनी अदी इब्ने नजार यसरब (मदीना) की नजीबुततरफ़ैन दुख़्तर से की। उसी के बतन से एक बावेक़ार लड़का पैदा हुआ जो आगे चलकर अब्दुल मुतल्लिब शेबतउलहमद से पुकारा गया। अब्दुल मुत्तिलब अभी दूध ही पीते थे, कि जनाबे हाशिम का इन्तेक़ाल हो गया। आपकी औलाद के मुतअल्लिक़ हज़रत जिबराईल का कहना है कि मैंने मशरिक़ो मग़रिब को छान कर देखा है कि मुहम्मद मुस्तफ़ा से बेहतर कोई नहीं है और बनी हाशिम से बेहतर कोई ख़ानदान नहीं है। जनाबे हाशिम ने ५१० ई० में बामक़ाम गज़वए शाम में इन्तेक़ाल फ़रमाया।

(जनाबे असद)

आप हज़रते हाशिम के बड़े बेटे थे। आपकी विलादत ४६७ ई० से क़ब्ल हुई थी। आप में इन्सानी हमदर्दी बहद्दे कमाल पहुँची हुई थी। फ़ख़रूद्दीन राज़ी का बयान है कि जनाबे असद ने एक दिन एक दोस्त को सख़्त भूखा पाकर (जो बनी ख़ज़दम से था) अपनी वालेदा से कहा कि इस के लिये खाने का बन्दोबस्त करो। उन्होंने पनीर और आटा वग़ैरा काफ़ी मिक़दार में इसके घर भिजवाकर उसे सूकून बख़शा। फिर इसी वाक़ेए से मुतासिर होकर जनाबे हाशिम ने अहले मक्का को जमा किया और इनमें तिजारत का जज़बा व शौक़ पैदा किया। असद के मानी शेर के हैं। इब्ने ख़ालविया का यह कहना है के "शेर" के पॉच सौ नाम हैं जिनमें एक असद भी है। शेर भूख और प्यास पर साबिर होता है। अल्लामा तरीही का कहना है कि शेर की अवलाद कम होती है। शायद यही वजह थी कि हज़रते असद के अवलाद कम थी बल्कि अवलादे ज़कूर मफ़कूद और ग़ालेबन सिर्फ़ फ़ात्मा बिन्ते असद ही थीं जो बाद में हज़रत अली (अ.) की वालदा गिरामी क़रार पायीं।

(जनाबे अब्दुल मुत्तलिब)

आप **हज़रत हाशिम** के नेहायत जलीलुल क़द्र साहबज़ादे थे। ४६७ ई० में पैदा हुए वालिद का इन्तेक़ाल बचपने में ही हो चुका था। परवरिश के फराएज़ आपके चचा मुत्तलिब की कनारे आतफ़त में अदा हुए और ख़ुशक़िस्मती से आख़िर में अरब के सबसे बड़े सरदार क़रार पाए। आपके वालिद ही की तरह आपकी वालेदा भी (जिनका नाम सलमा) था ,शराफ़त व अज़मत में इन्तेहाई बुलन्दी की मालिक थीं। इब्ने हिशाम का कहना है कि वह वेक़ारे खानदानी की वजह से अपने निकाह को इस शर्त से मशरूत करती थीं कि जब चाहेंगी घर चली जाऐंगी। अल्लामा हबली का कहना है कि वह यह शर्त भी लगाती थीं कि तौलीद के मौके पर अपने मैके में रहूँगी। जनाबे अब्दुल मुत्तलिब का एक नाम शेबतुल हम्द भी था। क्यों कि आपकी विलादत के वक़्त आपके सर पर सफ़ेद बाल थे। और शैब सफेदी सर को कहते हैं हम्द से उसे मुज़ाफ़ इसलिए किया कि आगे चल कर बे इन्तेहा मम्दूह होने की इनमें अलामतें देखी जा रही थीं। आप सिने शऊर तक पहुँचते ही जनाबे हाशिम की तरह नामवर और मशहूर हो गये। आपने अपने अबाओ

अजदाद की तरह अपने ऊपर शराब हराम कर रखी थीं और ग़ारे हिरा में बैठ कर इबादतें करते थे। आपका दस्तर ख़्वान इतना वसी था कि इन्सानों के अलावा परिन्दों को भी खाना खिलाया जाता था। मुसीबत ज़दों की इमदाद और अपाहिजों की ख़बर गीरी इनका ख़ास शेवा था। आपने बाज़ ऐसे तरीक़े राएज किए जो बाद में मज़हबी नुक़्तए नज़र से इन्सानी ज़िन्दगी के उसूल बन गये। मसलन इफ़ाए नज़र निकाह महरम से इजतेनाब, दुख़्तर कशी की मुमानियत ख़मरो ज़िना की हुरमत और क़िताए यदे सारिक़ के अब्दुल मुत्तलिब का यह अज़ीम कार नामा है कि उन्होंने चाहे ज़मज़म को जो मरूर ज़माने से बन्द हो चुका था, फिर खुदवा कर जारी किया।

आपके अहद का एक अहम वाक़ेया क़ाबए मोअज़्ज़म पर लशकर कशी है। मुअर्रेख़ीन का कहना है कि अबरहातुल अशरम का ईसाइ बादशाह था। उसमें मज़हबी ताअस्सुब बेहद था। ख़ानए काबा की अज़मत व हुरमत देख कर आतिशे हसद से भड़क उठा और इसके वेक़ार को घटाने के लिये मक़ामे "सनआ" में एक अज़ीमुश्शान गिरजा बनवाया। मगर इसकी लोगों की नज़र में ख़ानए काबा वली अज़मत न पैदा हो सकी तो इसने काबे को ढाने का फ़ैसला किया। और असवद बिन मक़सूद हबशी की ज़ेरे सर करदगी एक अज़ीम लशकर मक्के की तरफ़ रवाना कर दिया। कुरैश कनाना खेज़ाआ और हज़ील पहले तो लड़ने के लिये तैयार हुए। लेकिन लशकर की कसरत देख कर हिम्मत हार बैठे और मक्के की पहाड़ीयों में अहलो अयाल समेत जा छुपे। अलबत्ता अब्दुल मुत्तलिब अपने चन्द साथियों समेत ख़ानए काबा के दरवाज़े में जा खड़े हुए और कहा। मालिक यह तेरा घर है और सिर्फ तू ही बचाने वाला है। इसी दौरन में लशकर के सरदार ने मक्के वालों के खेत से मवेशी पकड़े जिनमें अब्दुल मुत्तलिब के दो सौ २०० ऊँट भी थे। अलग़रज़ अबरहा ने हनाते हमीरी को मक्के वालों के पास भेजा और कहा के हम तुम से लड़ने नहीं आऐ। हमारा इरादा सिर्फ़ काबा ढाने का है। अब्दुल मुत्तलिब ने पैग़ाम का यह जवाब दिया के हमें भी लड़ने से कोई ग़रज़ नहीं और इसके बाद अब्दुलमुत्तलिब ने अबरह से मिलने की दरख़्वास्त की । उसने इजाज़त दी यह दाख़िले दरबार हुए। अबरहा ने पुर तपाक ख़ैर मक़्दम किया और इनके हमराह तख़्त से उतरकर फ़र्श पर बैठा। अब्दुल मुत्तलिब ने दौराने गुफ़्तुगू में अपने ऊँटों की रेहाई और वापसी का सवाल किया। उसने कहा तुमने अपने आबाई मकान काबे के लिये कुछ नहीं कहा। उन्होनें जवाब दिया " **अना रब्बिल अब्ल वलिल बैत रब्बुन समीनाह** " मैं ऊंटों का मालिक हूँ अपने ऊँट मागता हूँ जो काबे का मालिक है अपने घर को खुद बचाएगा। अब्दुल मुत्तिलब के ऊँट उन को मिल गये और वह वापस आ गये । और कुरैश को पहाड़ियों पर भेज कर खुद वहीं ठहर गये । गरज़ कि अबरहा अज़ीमुश्शान लशकर ले कर ख़ानए काबा की तरफ़ बढ़ा और जब इसकी दीवारें नज़र आने लगीं तो धावा बोल देने का हुकम दिया। खुदा का करना देखिये कि जैसे ही गुस्ताख व बेबाक लशकर ने क़दम बढ़ाया मक्के के ग़रबी सिमत से खुदा oUhsv kye dkgokbZ y'kdj **"अबा बील"** की सूरत में नमूदार हुआ। इन परिन्दों की चोंच और पन्जों में एक एक कंकरी थी। उन्होंने यह कंकरियां अबरहा के लशकर पर बरसाना शुरू

की। छोटी छोटी कंकरयों ने बड़ी बड़ी गोलियों का काम करके सारे लशकर का काम तमाम कर दिया। अबरहा जो महमूद नामी सुर्ख़ हाथी पर सवार था। ज़ख्मी होकर यमन की तरफ़ भागा लेकिन रास्ते ही में वासिले जहन्नम होगया। यह वाक़ेया ५७० ई० का है।

(१) **सना** यमन का दारूल हुकूमत है। उसे क़दीम ज़माने में उज़ाली भी कहते थे। तमाम अरब में सबसे उमदा और खूबसूरत शहर है। अदन से २६० मील के फ़ासले पर एक ज़रखेज़ वादी में वाक़े है इसकी आबो हवा मोतदिल और खुशगवार है। इसके जुनूब मशरिक़ में तीन दिन की मसाफ़त पर शहर क़ारिब है जिसको "सबा"भी कहते हैं। सना के शुमाल मग़रिब में ६०फ़रसख़ पर "सुरह" है। यहां का चमड़ा दूर दराज़ मुल्कों में तिजारत को जाता है। सना के मग़रिब में बैहरे कुल्ज़ुम से एक मन्ज़िल की मसाफ़त पर शहर "ज़ुबैद" वाक़े है जहां से तिजारत के वासते "क़हवा" अतराफ़ में जाता है। ज़ुबैद से ४ मन्ज़िल और सना से ६ मन्ज़िल पर " बैतुल फ़क़ीह" वाक़े है। ज़ुबैद के शुमाल मशरिक़ में शहर "मोहजिम" है सना से ६ मन्ज़िल के फ़ासले पर के ज़ुबैद के जुनूब में " क़िलए तज़ " है। सना के शुमाल में १० मन्ज़िल की मुसाफ़त पर "नजरान" है।

चूंकि " **अबरहा** " हाथी पर सवार था, और अरबों ने इससे क़बल हाथी ना देखा था नीज़ इसलिये कि बड़े बड़े हाथियों को छोटे छोटे परिन्दों की नन्हीं नन्हीं कंकरयों से बा हुकमे खुदा तबाह करके खुदा के घर को बचा लिया इसलिये इस वाक़ये को हाथी की तरफ़ मनसूब किया गया और इसी से सन्े आमुल फ़ील कहा गया। मेंहदी का ख़िज़ाब अब्दुल मुत्तलिब ने ईजाद किया है। इब्ने नदीम का कहना है के आपके हाथ का लिखा हुआ एक ख़त मामून रशीद के कुतुब खाने में मौजूद था। अल्लामा मजलिसी और मौलवी शिब्ली का कहना है कि आपने ८२, साल की उमर में वफ़ात पाई और मक़ामे हुजून में दफ़न हुए। मेरे नज़दीक आपका सने वफ़ात ५७८ ईसवी है।

(जनाबे अब्दुल्लाह)

आप जनाबे **अब्दुल मुत्तलिब** के बेटे थे। कुनिनयत अबू अहमद थी आपकी वालेदा का नाम फातमा था। जो उमरे बिन साएद बिन उमर बिन मख़्ज़ूम की साहब ज़ादी थी। आपके कई भाई थे। जिनमें अबूतालिब को बड़ी अहमियत हासिल थी। जनाबे अब्दुल्ला ही वह अज़ीमुल मरतबत बुर्ज़ग हैं जिनको हमारे नबीए करीम के वालिद होने का शरफ़ हासिल हुआ। आप नेहायत मतीन ,संजीदा और शरीफ़ तबियत के इन्सान थे और ना सिर्फ जलालते निस्बत बल्कि मुकारिमे इख़्लाक़ की वजह से तमाम जवानाने कुरैश में इमतेयाज़ की नज़रों से देखे जाते थे। मुहासिने आमाल और शुमाएले मतबू में फर्द थे। हरकात मौज़ू और लुतफ़े गुफ़तार में

अपना नज़ीर ना रखते थे। जनाबे अब्दुल मुत्तलिब आप को सबसे ज्यादा चाहते थे।

एक दफ़ा का ज़िक्र है कि अब्दुल मुत्तलिब ने यह नज़र मानी कि अगर ख़ुदा ने मुझे दस बेटे दिये तो मैं इनमें से एक राहे ख़ुदा में कुर्बान कर दूँगा। और इसकी तकमील में अब्दुल्लह को ज़ब्ह करने चले लोगों ने पकड़ लिया और कहा कि आप कुर्बानी के लियें कुरा डालें। चुनानचे बार-बार अब्दुल्लाह के ज़ब्ह पर ही कुरा निकलता रहा। अब्दुल मुत्तलिब ने सख़्त इसरार के साथ उन्हें ज़बह करना चाहा। लेकिन ऊटों की तादाद बढ़ा कर कुरे के लिए सौ तक ले गये। बिल आख़िर तीन बार अब्दुल्लह के मुकाबले में सौ ऊटों पर कुरा निकला और अब्दुल्लाह ज़ब्ह से बच गये उसके बाद आपकी शादी क़बीलए ज़हरा में वहाब इब्ने अबदे मनाफ़ की साहब ज़ादी (आमिना) से हो गयी। शादी के वक़्त जनाबे अब्दुल्लह की उम्र तक़रीबन १८ साल की थी। आप ने २८ साल की उम्र में इन्तेक़ाल फ़रमाया। मुवर्रेख़ीन का कहना है कि आप मक्के से बा सिलसिलए तिजारत मदीना तशरीफ़ ले गये थे वहीं आप का इन्तेक़ाल हो गया और आप मक़ामे अबवा में दफ़न किये गये। आपने तरके में ऊंट,बकरियां और एक लौंडी छोड़ी जिसका नाम (बरकत) और उर्फ़ " उम्मे ऐमन " था।

(हज़रत अबुतालिब)

आप हज़रते हाशिम के पोते, अब्दुलमुत्तलिब के बेटे और जनाबे अब्दुल्ला के सगे भाई थे। आपका असली नाम इमरान था। कुन्नियत अबुतालिब थी आपकी मादरे गेरामी फ़ातमा बिन्ते उमरो मख़ज़ूमी थीं। शम्सुल उलेमा नज़ीर अहमद का कहना है आप अब्दुलमुत्तलिब के अवलादे ज़कूर में सबसे ज्यादा बवाक़ार और अक़्ल मन्द थे। अब्दुलमुत्तलिब के बाद पैग़म्बरे इस्लाम की परवरिश आपने शुरू की और ता हयात उनकी नुसरत व हिमायत करते रहे। मौलवी शिब्ली का कहना है कि अबुतालिब का यह तरीक़ा ता ज़ीस्त रहा कि आंहज़रत (स.) को अपने साथ सुलाते थे और जहां जाते थे साथ ले जाते थे। कुफ्फ़ारे कुरेश और अशरार यहूद से आपने आंहज़रत की हिफ़ाजत की और उन्हें किसी क़िस्म का गज़न्द नहीं पहुंचने दिया। मुवर्रिख़ इब्ने कसीर का कहना है कि सफ़रे शाम के मौके पर एक राहिब की नज़र आप पर पड़ी। उसने इनमें बुज़रगी के आसार देखे और अबुतालिब से कहां कि उन्हें जल्द वापस वतन ले जाओ। नहीं तो यहूद उन्हें क़त्ल कर ड़ालेगे। अबुतालिब ने अपना सारा समाने तिजारत बेच करके वतन की राह ली। मुवर्रिख़ " दयारे बकरी " का कहना है कि हज़रत मोहम्द (स.) जनाबे अबुतालिब की तहरीक से जनाबे खदीजा (रज़ी.) का माल बेचने के लिए शाम की तरफ़ ले जाया करते थे। कुछ दिनों में ख़दीजा (रज़ी.) ने शादी की ख़्वाहिश की और निसबत ठहर गयी। जनाबे अबुतालिब ने आंहज़रत की तरफ से खुतबए निकाह पढ़ा। अबुतालिब के खुतबे की शुरूवात इन लफ़्ज़ों से है।

(अल्हम्दो लिल्लाहिल लज़ी जाअल्ना मिन ज़ुरियते इब्राहीम)

तमाम तारीफ़ें उस ख़ुदा के लिये हैं, जिसने हमें ज़ुर्रियते इब्राहीम में क़रार दिया।

चार सौ दीनार सुर्ख पर अक़्द हुआ। अक़्द निकाह के बाद"फरहा अबू तालिब फरहन शदीदन" हज़रत अबू तालिब बहुत ही खुश हुए । अल्लामा तरही का बा हवालए इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.) कहना है कि अबू तालिब ईमान के तहफ़्फ़ुज़ हैं असहाबे कहफ़ के मानिन्द थे। शमशुल उलमा नजीर अहमद का कहना है कि अब्दुल मुत्तलिब और अबू तालिब दीने फ़ितरत को मज़बूती से पकड़े हुए थे। अल्लामा सेवती का कहना है कि "अनअबल नबी लम यकुन फ़ीहुम मुशरिक " आँ हज़रत के आबाव अजदाद में एक श्ख़स भी मुशरिक नही था। क़ुरआन मजीद में है के ऐ नबी हमने तुमको सजदा करने वालों की पुशत में रखा। अबू तालिब के मुतअल्लिक़ शमशुल उलमा नज़ीर अहमद का कहना है कि वह दिल से पैगम्बर को सच्चा पैग़म्बर और इस्लाम को खुदाई दीन समझते थे। शमशुल उलमा शिबली का कहना है के अबू तालिब मरते वक़्त भी कलमा पढ़ते रहे थे लेकिन बुख़ारी की एक ऐसी मुरसिल रवायत की बिना पर जिसमें मुसय्यब शामिल हैं उन्हें ग़ैर मुस्लिम कहा जाता है। जो क़ाबिले सेहत लाएक़ तसलीम नहीं है। ग़रज़ के आपके मोमिन और मुसलमान होने पर मुन्सिफ़ मुवर्रेख़ीन का इत्तेफाक़ है। अबूतालिब के दो शेर क़ाबिले मुलाहेज़ा हैं।

वदअवतनी व अलमत अनका सदिक़
वलाक़द सदाक़त फकनत क़ब्लेअमीना

वलक़द अलमत बाने, दीने मोहम्मद
मन ख़ैरा अदयाने अल बरीहे देना

तरजुमा :- ऐ मोहम्मद ! तुमने मुझे इस्लाम की तरफ़ दावत दी और मैं खूब जानता हूँ कि तुम यक़ीनन सच्चे हो क्योंकि तुम इस अहदे नबूवत के इज़हार से क़बल भी लोगों की नज़र में सच्चे रहे हो। मैं अच्छी तरह जाने हुए हूँ के ऐ मोहम्मद ! तुम्हारा दीन दुनिया के तमाम अदयान से बेहतर है। आपकी बीबी फ़ातिमा बिन्ते असद थीं जो सन् १ बेसत में ईमान लायीं और ४, हिजरी में बा मुक़ाम मदीनए मुनव्वरा इन्तेक़ाल फ़रमा गईं और खुद आपका इन्तेक़ाल ८५, साल की उमर में शव्वाल १० बेसत में हुआ। आपके इन्तेक़ाल के साल को रसूल अल्लाह (स.) ने **" आमुल हुज़न "** से मौसूम कर दिया था।

(जनाबे अब्बास)

आप जनाबे अब्दुल मुत्तलिब के बेटे और पैग़म्बरे इस्लाम के चचा थे । आपकी वालेदा फ़तीला थीं। आप रसूले खुदा (स.) से २ या ३ साल बड़े थे। आपका क़द तवील और बदन खूबसूरत था। आप हिजरत से क़बल इस्लाम लाए थे। आप बड़े साएबुल राए थे। आपने फ़तेह मक्का और ग़जवा हुनैन में शिरकत की थी। आपके दस बेटे और कई बेटियाँ थीं। आख़िर उम्र में नाबीना हो गए थे। आपने ७७,साल की उम्र में बा तारीख़ १२, रजब ३२, हिजरी बा मुक़ाम मदीनए मुनव्वरा में इन्तेक़ाल फ़रमाया और जन्नतुल बक़ी में दफ़न किये गए। आपका मक़बरा खोद डाला गया है लेकिन निशाने क़ब्र अब भी बाक़ी है। मोअल्लिफ़ ने

१६७२ ई० में बा मौक़ा हज उसे देखा है।

(जनाबे हमज़ा)

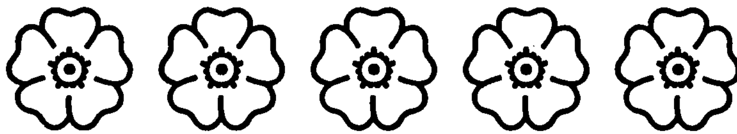
आप जनाबे अब्दुल मुत्तलिब के साहब ज़ादे और आँ हज़रत (स.) के चचा थे। आपकी वालदा का नाम हाला बिन्ते वहब था जो कि जनाबे आमेना की चचा ज़ाद बहन थीं। आपने बेसत के छटे साल इस्लाम कुबूल किया था। आपने जगें बद्र में शिरकत की थी और बड़े कारहाए नुमाया किए थे। आप जगे ओहद में भी शरीक हुए और ज़बर दस्त नबरद आजमाई की। ३१, काफ़िरों को क़त्ल करने के बाद आपका पावँ फिसला और आप ज़मीन पर गिर पड़े। जिसकी वजह से पुश्त से ज़िरा हट गई और मौक़ा पाकर एक वैहशी नामी हब्शी ने तीर मार दिया और आप दिन बल्कि इसी वक़्त बा तारीख़ ५ शव्वाल ३ हिजरी शहीद हो गए। काफ़िरों ने आपको क़त्ल कर डाला और अमीरे माविया की माँ हिन्दा ने आपका जिगर निकाल कर चबा डाला। इसी लिए अमीरे माविया को " **अकल्लुत अकबाद** " कहते हैं। आपकी उमर ५७ साल की थी नमाज़े जनाज़ा रसूले ख़ुदा (स.) ने पढ़ाई थी।

तारीख़ का मशहूर वाक़ेआ है कि ४० हिजरी में जब अमीरे माविया ने नहर खुदवाई तो शोहदाए ओहद की क़बरें खोदी गईं और इसी सिलसिले में एक तैश (बेलचा) जनाबे हमज़ा के पैर पर लगा जिससे खूने ताज़ा जारी हो गया था।

(हज़रत अबूतालिब के बेटे)

इब्ने क़तीबा का कहना है कि हज़रत अबू तालिब के चार बेटे थे (१) **तालिब** (२) **अक़ील** (३) **जाफ़र** (४) **हज़रत अली** इनमें छुटाई बड़ाई दस साल की थी। दयारे बकरी का कहना है कि दो बहने थीं। **उम्मे हानी** और **जमाना** । तालिब ने जगें बद्र में मुसलमानों से न लड़ने के लिए अपने को समुन्दर में गिरा कर डुबा दिया। उनकी कोई औलाद नहीं थी। अक़ील आप ५९० हिजरी में पैदा हुए थे। आपकी कुन्नियत अबू यज़ीद थी। हुदैबिया के मौक़े पर इस्लाम ज़ाहिर किया और आठ हिजरी में मदीना आ गए आपने जगें मौतह में भी शिरकत की थी। आप ज़बर दस्त नस्साब थे । आप में अदाए करज़ के लिए मावीया से मुलाक़ात की थीऔर बारवाएत इब्ने क़तीबा तीन लाख अशरफियाँ हासिल कर ली थीं। आप बड़े हाज़िर जवाब थे। आख़िरी उम्र में आप नाबीना हो गए थे । आपने ९६ साल की उम्र में ५ हिजरी मुताबिक़ ६७० ई० में इन्तेक़ाल किया । जाफ़र आप सूरतो सीरत में रसूल अल्लाह(स.) से बहुत मुशाबे थे आपने शुरू ही में इमान ज़ाहिर किया था। आपने हिजरत हबशा और हिजरते मदीना दोनों में शिरकत की थी आपको जमादील अव्वल ८, हिजरी में जगें मौता के लिए भेजा गया। आपने अलम ले कर ज़बर दस्त जंग की। आपके दोनों हाथ कट गए। अलम दातों से संभाला बिल आख़िर शहीद हो गए, आपके लिऐ आँ हज़रत (स.) ने फरमाया है कि उन्हें इनके हाथों के ऐवज़ ख़ुदा ने जन्नत में ज़मुर्रदैन पर अता फ़रमाए हैं और आप फ़रिश्तों के

साथ उड़ा करते हैं। आपके शहीद होते ही पैग़म्बरे इस्लाम और फ़ातमा ज़हरा(स.) अस्मा बिन्ते 'उमैस' के पास अदाए ताज़ीयत के लिए गए। आपने हुक्म दिया के जाफ़र के घर खाना भेजो। आपने ने ४१ साल की उम्र में शहादत पाई। आपके जिस्म पर नब्बे ज़ख्म थे। आपने आठ बेटे छोड़े। जिनकी माँ असमा बिनते अमीस थीं। जिनमें अब्दुल्लाह बिन जाफ़र और मोहम्मद बिन जाफर ज़्यादा नुमाया थे। यही अब्दुल्लाह हज़रत ज़ैनब के और मौहम्मद हज़रत उम्मे कुलसूम बिन्ते फ़ात्मा के शौहर थे (४) हज़रत अली आपका ज़िक्र आईन्दा किया जाएगा।





पैग़म्बरे इस्लाम

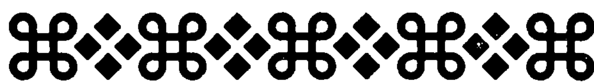
अबुल क़ासिम

हज़रत

मोहम्मद मुस्तफ़ा (स.)

दो टुकड़े एक इशारे में जिसके क़मर हुआ।
जिस दर पा झुक गई है जबीं आफ़ताब की।।
तफ़सीर उसकी ज़ुल्फ़ है वल लैल की निदा।
क्या शान है , जनाबे रिसालत मआब की।।

निदा कलकत्तवी (पेशावर)



بسم الله الرّحمٰن الرّحيم

बाब (१)

हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा (स.)

ऐ नूर के पुतले तुझे क्या ख़ाक से निस्बत।
एहसान तेरा है जो ज़मी पर उतर आया।।

ख़ल्लाक़े आलम ने अपने बन्दों की रहबरी और रहमानी के लिए एक लाख चौबीस हज़ार हादी भेजे जिन में ३१३ रसूल 'बाक़ी नबी थे रसूल में ५ उलुल अज़म थे इन अम्बिया व रसुल पर ईमान ज़रूरी है। उन्हें मासूम मन्सूस आलिमे इल्मे लदुन्नी और अफज़ले कायनात क़रार दिया गया था यह न सिर्फ़ बतने मादर बल्कि बदवे फ़ितरत में ही नबी बनाए गए थे। जिन्हें ख़ल्लाक़े आलम ने अपने नूरे अज़मत व जलाल से पैदा किया था वह नूरी थे इनके जिस्म का साया ना था।

ख़ालिक़े काएनात ने इनकी नबूवत व रिसालत को दवाम देकर इस सिलसिले को ख़त्म कर दिया । लेकिन चूँकि सिलसिला तख़लीक़ का जारी रहना मुसल्लम था ज़रूरतें तबलीग़ की बक़ा लाज़मी थी। लेहाज़ा दाना व बीना ख़ुदा ने अपने अज़ली फ़ैसले के मुताबिक़ बाबे नबूवत इमामत का लाअब्दी दरवाज़ा खोल दिया और बारह इमामों के इन असमा की बज़बाने रसूल वज़ाहत करा दी " लौहे महफ़ूज़ " में लिखे हुए थे। यह नूरी मख़लूक़ भी साए से बेनियाज़ थे इसे भी ख़ुदा ने मासूम मनसूस आलमे इल्मे लदुन्नी और अफ़ज़ल काएनात क़रार दिया है। यह हुज्जते ख़ुदा भी हैं और इमामे ज़माना भी उसे ख़ुदा ने इस्लाम की हिफ़ाज़तदीन की सियानत काएनात की इमामत और रसूले ख़ुदा (स.) की ख़िलाफत की ज़िम्मेदारी सौंपी है। और इस सिलसिले को क़यामत तक के लिए क़ाएम कर दिया है।

आँहज़रत की विलादत बसाअदत

आपके नूरे वजूद की खिल्क़त बा रवाएते हज़रत आदम की तख़लीक़ से नौ लाख बरस पहले बा रवाएते ४-५ लाख साल क़ब्ल हुई थी। आपका नूरे अक़दस अस्लाबे ताहेरा और अरहामे मुताहर में होता हुआ जब सुल्बे जनाबे अब्दुल्लाह बिन अब्दुल मुत्तलिब तक पहुँचा तो आपका ज़हूरो शहूद बश्कले इन्सानी बतने जनाबे " **आमना बिन्ते वहब** " से मक्कए मोअज़्ज़मा में हुआ।

आँहज़रत की विलादत के वक़्त हैरत अंगेज़ वाक़ेयात का ज़हूर

आपकी विलादत से मुत्तालिक़ बहुत से ऐस उ ूमु ूर रूनुमा हुए जो हैरत अंगेज़ हैं। मसलन आपकी वालदा माजदा को बारे हमल महसूस नही हुआ और वह तौलीद के वक़्त कसाफ़तों से पाक थीं आप मख़तून और नाफ़ बुरीदा थे। आपके ज़हूर फरमाते ही आपके जिस्म से ऐसा नूर साते हुआ जिससे सारी दुनिया रौशन हो गई आपने पैदा होते ही दोनो हाथों को ज़मीन पर टेक कर सजदए ख़ालिक़ अदा किया। फिर आसमान की तरफ़ सर बुलन्द करके तकबीर कही और लाइलाहा इललल्लाहो इना रसूलल्लाहे ज़बान पर जारी किया। ब रवायते इबने वाजेए अलमतूफ़ी २९२ हि० शैतान को रजम किया गया और उसका आसमान पर जाना बन्द हो गया सितारे मुसलसल टूटने लगे तमाम दुनिया में ऐसा ज़लज़ला आया कि तमाम दुनिया के कलीसे और दीगर ग़ैर उल्लाह की इबादत करने के मुक़ामात मुन्हदिम हो गए जादू और कहानत के माहिर अपनी अक़्लें खो बैठे और उनके मुवक्लि मजूस हो गए ऐसे सितारे आसमान पर निकल आए जिन्हें कभी किसी ने देखा ना था। सावा की वह झील जिसकी परसतिश की जाती थी जो काशान में है वह ख़ुश्क हो गई। वादिउस समा जो शाम में हैं और हज़ार साल से ख़ुश्क पड़ी थी इसमें पानी जारी हो गया दजला में इस क़दर तुग़यानी हुई के इसका पानी तमाम इलाक़ों में फैल गया मह ले किसरा में पानी भर गया और ऐसा ज़लज़ला आया कि ऐवाने किसरा के १४ कंगूरे ज़मीन पर गिर पड़े और ताक़े किसरा शिगाफ़ हो गया और फ़ारस की वह आग जो एक हज़ार साल से मुसलसल रौशन थी फ़ौरन बुझ गई। (तारीख़े अशाअत इस्लाम देवबन्दी सफ़ा २१८ तबाअ लाहौर)

उसी रात को फ़ारस के अज़ीम आलम ने जिसे (मोबज़्ज़ाने मोबज़्ज़न) कहते थे ख़्वाब में देखा कि तुन्द व सरकश और वैहशी ऊँट अरबी घेड़ों को खींच रहे हैं और उन्हे बलादे फारिस में मुताफरिक़ करतें हैं उसने इस ख़्वाब का बादशाह से ज़्रिक किया। बादशह नवशेरवाँ किसरा ने एक क़ासिद के ज़रिए से अपने हैरह के गर्वनर नुमान बिन मन्ज़र को कहला भेजा कि हमारे आलम ने एक अजीब व ग़रीब ख़्वाब देखा है तू किसी ऐसे अक़लमन्द और होशियार शख़्स को मेरे पास भेज दे जो इसकी इतमिनान बख़्श ताबीर देकर मुझे मुतमईन कर सके। नोमान बिन मन्ज़र ने अब्दुल मसीह बिन उमर अलग़सानी को जो कि बहुत लाएक़ था बादशाह के पास भेज दिया । नवशेरवान ने अब्दुल मसीह से तमाम वाक़ेयात बयान किए और उससे ताबीर की ख़्वाहिश की , उसने बड़े ग़ौर व खौज़ के बाद अर्ज़ कि " कि ऐ बादशाह शाम में मेरा मामूँ " **सतीह काहिन** " रहता है।

वह इस फ़न का बहुत बड़ा आलिम है। वह सही जवाब दे सकता है और इस ख़्वाब

की ताबीर बता सकता है। नव शेरवाँ ने अब्दुल मसीह को हुक्म दिया कि फ़ौरन शाम चला जाए। चूँनान्चे वह रवाना होकर दमशिक पहुचाँ और बा रवाएत इब्ने वाज़े " बाबे जांबिया " में इससे इस वक़्त मिला जबकि वह आलमे एहतिज़ार में था अब्दुल मसीह ने कान में चीख़ कर अपना मुद्दा बयान किया। उसने कहा कि एक अज़ीम हस्ती दुनिया में आ चुकी है। जब नव शेरवाँ की नस्ल के १४ मरदों ज़न हुकमरां कंगूरों के अद्द के मुताबिक़ हुकूमत कर चुकेंगें तो यह मुल्क इस ख़ानदान से निकल जाएगा। सुम्मा " फज़तन फसहू " यह कह कर वह मर गया। (रौज़तुल अहबाब जिल्द १, सफ़ा ५६, सीरते हलबिया, जिल्द १, सफ़ा ८३, हयात अल कुलूब जिल्द २ सफ़ा ४६, अल याकूबी सफ़ा ६)

(आपकी तारीख़े विलादत)

आपकी तारीख़े विलादत में इख़्तेलाफ़ है। बाज़ मुसलमान २, रबीउल अव्वल बाज़ ६, बाज़ ८ ,बाज़ १२ बताते हैं लेकिन जम्हूरे उलमा अहले तशैय्यो और बाज. उल्मा अहेल तसन्नुन १७, रबीउल अव्वल सन् १, आमुलफ़ील मुताबिक़ ५७० ई० को सही समझते हैं।

अल्लामा मजलिसी (अलैहिर-रहमा) हयात अल कुलूब जिल्द ४४, में तहरीर फ़रमाते हैं कि उलमाये इमामिया का इस पर इजमा व इत्तेफाक़ है कि आप १७, रबीउल अव्वल सन् १, आमुल फ़ील यौमे जुमा शब या बा वक़्ते सुबहे सादिक़ **"शुऐब अबी तालिब"** में पैदा हुए हैं। इस वक़्त नव शेरवाँ किसरा की हुकूमत का बयालिसवाँ साल था।

(आपका पालन पोषण और आपका बचपना)

मुवर्रिख़ **ज़ाकिर हुसैन** लिखते हैं कि बारवायते आप के पैदा होने से पहले और बारवायते आप दो माह के भी न होने पाए थे कि आपके वालिद "अब्दुल्लाह" का इन्तेक़ाल ब मुक़ामे मदीना हो गया। क्योंकि वहीं तिजारत के लिए गए थे उन्होंने सिवाए पाँच ऊटँ और चन्द भेड़ों और एक हबशी कनीज़ बरकत (उम्मे ऐमन) के और कुछ विरसे में न छोड़ा। हज़रत आमना (र.) को हज़रत अब्दुल्लाह की वफ़ात का इतना सदमा हुआ की दूध सूख गया। चूँकि मक्का की आबो हवा बच्चों के वासते चन्दा मुवाफिक़ ना थी, इस वासते क़रीब की बद्दू औरतों में से दूध पिलाने के वासते तलाश की गईं। अन्ना के दस्तीयाब होने तक अबू लहब की कनीज़, सूबीया ने आं हज़रत (स.) को तीन चार महीने तक दूध पिलाया। अक़्वामे बद्दू की आदत थी कि साल में दो मरतबा मौसमे बहार और मौसमे ख़िज़ां में दूध पिलाने और बच्चे पालने की नौकरी की तलाश में आया करती थीं। आख़िर "हलीमा सआदिया" के नसीबे ने ज़ोर किया और वह आपको अपने घर ले गईं और आप हलीमा के पास परवरिश पाने लगे।

(तारीख़े इस्लाम जिल्द २, सफ़ा ३२, तारीख़े अबुल फ़िदा जिल्द,२ सफ़ा २०)

मुझे इस तहरीर के इस जुज़ से कि रसूले खुदा (स.) को सूबिया और हलीमा ने दूध पिलाया इत्तेफ़ाक़ नहीं है।

मुवर्रेख़ीन का बयान है कि आप में नमू की कुव्वत अपने सिन के एतेबार से बहुत ज़्यादा थी जब तीन माह के हुये तो खड़े होने लगे, और जब सात माह के हुये तो चलने लगे आठवें महीने अच्छी तरह बोलने लगे। नवें महीने इस फ़साहत से कलाम करने लगे कि सुन्ने वालों को हैरत होती थी।

हाशिया :-

(१) सतीह एक अजीबउल ख़िलक़त इन्सान था। उसके जिस्म में मफ़ासिल यानी जोड़ बन्द न थे। वह उठ बैठ नहीं सकता था, मगर गुस्से के वक़्त उठ बैठता था। उसके बदन में खोपड़ी के सिवा कोइ हड्डी न थी। उसके सरो गर्दन न थी और मुँह सीने में था। वह जाबिया में रहता था। जब उसे कहीं ले जाना होता था तो उसे गठरी की तरह बांध लेते थे। जब उससे कुछ पूछना मक़सूद होता था तो उसे खूब झींझोड़ते थे। फिर वह औंधा हो कर ग़ैब की बातें बताता था। दोनों फ़िरक़ों के उलेमा का बयान है कि वह काहिन था और कहानत के माने ग़ैब की खबर देने के हैं। बारवाएते सफ़ीनतुल बिहार उसने हज़रत रसूले करीम (स.) की नबूवत और हज़रत अली (अ.) की ख़िलाफ़त और हज़रत मेहदी(अ.) की ग़ैबत की ख़बर दी थी। इसकी उम्र ब रवाएते रौज़तुल अहबाब ६०० सौ बरस और ब रावाएते हयात अल कुलूब ६०० सौ बरस की थी।

इन दोनों उलमा के बयान में फरक़ इसलिए है कि इसकी विलादत बन्दे एरम के टूटने के वक़्त हुई थी और बन्दे एरम के टूटने को बाज़ मुवर्रेख़ीन साबेक़ीन ने हज़रत मसीह से ३०२ बरस पहले और बाज़ ने पहली सदी मसीह के आग़ाज़ में लिखा है।

मजमए अल बहरीन में है कि काहन के मानी साहिर के हैं या बाज़ का ख़्याल है कि काहन के जिन्न ताबे होते थे। बाज़ का ख़्याल है कि कहानत एक इल्म है जो हिसाब से ताल्लुक़ रखता है। बाज़ का ख़्याल कि शैतान जब आसमान पर जाता था तो वहाँ से ख़बरें लाता था और शैतानी अफ़राद को बताता था। दुनिया में दो बड़े काहन गुज़रे हैं। एक **शक़** दूसरा **सतीह** रसूल करीम(स.) की विलादत के बाद फ़ने कहानत ख़तम हो गया था।

अगरचे तक़रीबन तमाम मुवर्रेख़ीन ने सूबिया और हलीमा के मुतल्लिक़ यह लिखा है कि इन औरतों ने हज़रत रसूल करीम(स.) को दूध पिलाया था और थोड़े दिनों नहीं बल्कि काफ़ी अर्से तक पिलाया था। लेकिन मेरे नज़दीक यह दुरूस्त नहीं है। क्योंकि यह दुनिया कि किसी तारीख़ में नहीं है कि किसी नबी को उसकी माँ के अलावा किसी और ने दूध पिलाया हो। हज़रत नूह (स.) से हज़रत ईसा तक के हालात देख जाइए कोई एक मिसाल भी ऐसी न मिलेगी जिससे रसूले खुदा (स.) को हलीमा वग़ैरा के दूध पिलाने की ताईद होती हो और

हमें तो ऐसा नज़र आता है कि जैसे कुदरत को इस अम्र पर इसरारे शदीद था कि वह अपने नबी को इसकी माँ ही का दूध पिलवाए।

मिसाल के लिए हज़रत इब्राहीम(स.) और हज़रत मूसा (स.) का वाक़ेआ देख लीजए और अन्दाज़ा लगा लीजए कि किन ना साज़गार हालात व वाक़ेयात में उनकी माओं को दूध पिलाने के लिए उन तक पहूँचाया गया और जब ऐसा देखा कि माँ के पहुचँने में देर हो रही है तो खुद उसी बच्चे के अँगूठे से दूध पैदा कर दिया जैसा कि हज़रते इब्राहीम के लिए हुआ। मतलब यह था कि अगर बच्चे को माँ का दूध दस्तयाब न हो सके तो किसी दूसरे तरीक़े से शिकम सेर हो जाए। इन हालात से मेरी समझ में नहीं आता कि अम्बियाए मा सबक़ के तरीक़े और उसूल से हट कर रसूले करीम (स.) को माँ के अलावा किसी दूसरी औरत के दूध पिलाने को क्योंकर तसलीम कर लिया जाए खुसूसन ऐसी सूरत में जबकि यह तसलीम शुदा हो " लहमतुल रेज़ा कुलेहमतुल नसब " दूध से जो गोश्त पैदा होता है वह नसब के गोश्त व पोस्त के मानिन्द होता है। " वयहरम मिन रेज़ा मा यहरमा मन नसब "और दूध पीने से वह रिश्ता ना जाएज़ हो जाता है जो नसब से ना जाएज़ होता है। (मफ़रूदाते इमामे राग़िब असफ़हानी सफ़ा ६२) और फिर ऐसी सूरत में जब कि माँ मौजूद थी और अहदे रज़ाअत के बाद तक ज़िन्दा रहीं। मैं तो यह समझता हूँ कि आँ हज़रत (स.) को जनाबे आमना (र.) ने दूध पिलाया था और सूबीया व हलीमा ने उनकी परवरिश व परदाख़्त की थी।

मेरे इस नज़रिए को इससे और तक़्वीयत पहुँचती है कि खुदा वन्दे आलम हज़रते मूसा (स.) के लिए इरशाद फ़रमाता है कि "हर मना एलैह अलमराज़ा मन क़बल "हमने दूध पिलायें जाने के सवाल से पहले ही तमाम दाईयों के दूध को मूसा (स.) के लिए हराम कर दिया था। (पारा २०, रूकू ४) यह कैसे मुम्किन है कि खुदा वन्दे आलम हज़रते मूसा (स.) को माँ के अलावा किसी के दूध पीने से बचाने का इतना अहतिमाम करे और फ़ख़्रे मूसा (स.) को इस तरह नज़र अन्दाज़ कर दे कि ऐसी औरतें उन्हें दूध पिलाऐं जिनका इस्लाम भी वाज़े नहीं है।

आपकी सायाए मादरी से महरूमी

आपकी उमर जब ६साल की हुई तो सायए मादरी से महरूम हो गए । आपकी वालदा जनाबे आमना(र.) बिन्ते वहब हज़रत अबदुल्ला की क़बर की ज़्यारत के लिए मदीना गई थीं। वहां उन्होंने एक माह क़याम किया जब वापिस आने लगीं तो बा मुक़ाम अबवा (जो कि मदीने से २२ मील दूर मक्का की जानिब वाक़े है) इन्तेक़ाल फ़रमा गईं और वहीं दफ़न हुईं। आपकी ख़ादमा उम्मे ऐमन आपको मक्का ले आईं (रौज़तुल अहबाब जिल्द १ सफ़ा ६७)

जब आपकी उम्र ८ साल की हुई तो आपके दादा "अब्दुल मुत्तलिब" का १२० साल की उम्र में इन्तेक़ाल हो गया। अब्दुल मुत्तलिब की वफ़ात के बाद आपके बड़े चचा जनाबे अबु तालिब और आपकी चची जनाबे फ़ातमा बिन्ते असद ने फ़राएज़े तरबियत अन्जाम दिये और इस शान से तरबियत की कि दुनिया ने आपकी हमदर्दी और ख़ुलूस का लोहा मान लिया। अब्दुल मुत्तलिब के बाद हज़रत अबु तालिब भी ख़ानए काबा के मुहाफ़िज़ और मुतवल्ली और सरदारे कुरैश थे। हज़रत अली(अ.) फ़रमाते हैं के कोई अरब इस शान का सरदार नहीं हुआ जिस शानो शौकत की सरदारी मेरे पेदरे मोहतरम को खुदा ने दी थी।

(अल याकूबी, जिल्द २,सफ़ा ११)

हज़रत अबुतालिब(रज़ि) को हज़रत अब्दुल मुत्तलिब की वसीयत व हिदायत

बाज़ मुवर्रेख़ीन ने लिखा है कि जब हज़रत अब्दुल मुत्तलिब का वक़्ते वफ़ात क़रीब पहुँचा तो उन्होंने आं हज़रत को अपने सीने से लगाया और सख़्त गिरया किया और अपने फ़रज़न्द अबुतालिब की तरफ़ मुत्वज्जे हो कर फ़रमाया के " ऐ **अबुतालिब** यह तेरे हक़ीकी भाई का बेटा है इस दुरे यगाना की हिफ़ाज़त करना, इसे अपना नूरे नज़र और लख़्ते जिगर समझना, इसकी सुरक्षा में कोई कमी न रखना, अपने हाथ ,ज़बान और जान व माल से इसकी मदद करते रहना "। (रौज़तुल अहबाब)

हज़रत अबुतालिब (रज़ि.) के तिजारती सफ़रे शाम में आं हज़रत की हमराही और बहीरा राहिब का वाक़ेया

हज़रत अबुतालिब जो तिजारती सफ़र में अक्सर जाया करते थे जब एक दिन रवाना होने लगे तो आंहज़रत को जिनकी उम्र उस वक़्त बा रवायते तबरी व इब्ने असीर ९, साल और ब रवायते अबुलफ़िदा व इब्ने ख़ल्दून १३, साल की थी, अपने बाल बच्चों में छोड़ दिया और चाहा कि रवाना हो जायें। यह देखकर आंहज़रत (स.) ने इसरार किया कि मुझे अपने साथ लेते चलिये, आपने यह ख़याल करते हुये के मेरा भतीजा यतीम है उन्हें अपने साथ ले लिया और चलते चलते जब शहरे बसरा के क़रयए कफ़र पहुँचे जो के शाम की सरहद पर ६ मील के फ़ासले पर वाक़े है जो उस वक़्त बहुत बड़ी मंडी थी और वहां नस्तूरी ईसाई रहते थे। वहां उनके एक नस्तूरी राहिबों के माअबद के पास क़याम किया। राहिबों ने आंहज़रत(स.) और अबूतालिब की बड़ी ख़ातिर दारी की। फिर उनमें से एक ने जिसका नाम

"जरजीस" और कुन्नियत "अबुअदास" और लक़ब "बहीरा राहिब " था। आपके चेहरए मुबारक से आसारे अज़मतो जलालत और आला दरजे के कमालाते अक़्ली और महामदे इख़लाक़ नुमायां देख कर और इन सिफ़ात से मौसूफ़ पाकर जो उसने तौरैत और इन्जील और दूसरी आसमानी किताबों में पढ़ी थीं पहचान लिया कि यही पैग़म्बरे आख़ेरूज़ ज़मान हैं। अभी उसने इज़हारे ख़्याल न किया था कि एकदम बादल को हुज़ूर पर साया करते हुये देखा, फिर शाना खुलवा कर मोहरे नबूवत को देखा उसके बाद फ़ौरन मोहरे नबूवत का बोसा (चूमना) लिया और नबूवत की तसदीक़ करके अबुतालिब से कहा कि इस फ़रज़न्दे अरजुमन्द का दीन तमाम अरब व अजम में फैलेगा और यह दुनिया के बहुत बड़े हिस्से का मालिक बन जायगा। यह अपने मुल्क को आज़ाद करायेगा और अपने अहले वतन को नजात दिलायेगा। ऐ अबुतालिब इसकी बड़ी हिफ़ाज़त करना और इसको दुशमनों के अत्याचार से बचाने की पूरी कोशिश करना, देखो कहीं ऐसा न हो कि यह यहूदियों के हाथ लग जाय। फिर उसने कहा मेरी राय यह है के तुम शाम न जाओ और अपना माल यहीं बेच कर के मक्का वापस चले जाओ। चुनान्चे अबूतालिब ने अपना माल बाहर निकाला वह हज़रत की बरकत से आन्न फ़ानन बहुत ज़्यादा नफ़े पर फ़रोख़्त हो गया और अबुतालिब मक्का वापस चले गये। (रौज़तुल अहबाब,जिल्द १,सफ़ा ७१, तन्क़ीदुल कलाम सफ़ा ३० ,एयर दंग सफ़ा २४, तफ़रीउल अज़किया वग़ैरा)

आंहज़रत (स.) का मक्के को रूमीयों के इक़्तेदार से बचाना

जस्टिस अमीर अली बा हवाला तारीख़ " कासन डी० परसून " लिखते हैं कि हुनूज़ का काबा दोबारा तामीर न हो चुका था कि आपने मक्के मोअज़्ज़मा को इस ख़ुफ़िया साज़िश से बचा लिया जो उसकी आज़ादी को मिटाने के लिये की गई थी जिसमें उस्मान बिन हरीर को बड़ा दख़्ल था। उसने कुसतुनतुनया के दयारे क़ैसरी में जाकर दीने मसीही क़ुबूल कर लिया था और क़ैसरे रूम से मालो ज़र ले कर हिजाज़ वापस आया था। उसकी कोशिश थी कि मक्के पर यूनानियों का इक़्तेदार क़ायम करा दे। वह ख़ुफ़या कोशिशें कर रहा था लेकिन उसका यह राज़ खुल गया और उसकी वजह यह थी कि आंहज़रत ने उसका मक़सद अपने ज़राये से मालूम कर लिया था। आख़िर में वह हुज़ूर की कोशिशों से नाकामयाब हो गया।

अहले फ़िरंग (यूरोपियन) इस बात को मानते हैं कि पैग़म्बरे इस्लाम ने अपने मौलद व मसकन को कुसतुनतुनया के बादशाहों के क़ब्ज़े से बचा कर मुसल्मानों पर बड़ा एहसान किया है जिसकी वजह से वह अब्दी शुक्रगुज़ारी के मुस्तहक़ हैं। यही कुछ इब्ने ख़ल्दून ने भी लिखा है।

(तन्क़ीदुल कलाम,सफ़ा ३३)

ख़ानए काबा में हजरे असवद को नसब करने में आंहज़रत (स.) की हिकमते अम्ली

मुवर्रेख़ीन का बयान है कि बेअसते पैग़म्बर से पहले कुरैश ने यह फैसला किया था कि ख़ानए काबा को ढ़ाकर फिर से इसकी तामीर की जाये और उसे बलन्द कर दिया जाये। चुनान्चे इसे गिरा कर उसकी तामीर शुरू कर दी गई फिर जब इमारत हजरे असवद के नसब करने की जगह तक पहुंची और उसके नसब करने का सवाल पैदा हुआ तो कुरेश में शदीद इख़्तेलाफ़ पैदा हो गया। हर कबिले का सरदार यह चाहता था कि इस शरफ़ को वह हासिल करें आख़िरकार बहुत कोशिश के बाद यह तय पाया कि कल जो सबसे पहले हरम में दाख़िल हो उसे हकम (फ़ैसला करने वाला) बना कर इस झगड़े को ख़त्म किया जाये वह नसबे हजर के बारे में जो फ़ैसला दे दे उसकी पाबन्दी हर एक को करना होगी।

गरज़ कि जब सुबह हुई तो हज़रत रसूले करीम (स.) सबसे पहले हरम में दाख़िल हुए लिहाजा उन्हीं को हकम बना दिया गया। हज़रत ने फ़रमाया के एक मज़बूत चादर लाई जाए और उसमें हजरे असवद को रखा जाये और चादर के गोशों को हर क़बिले का सरदार पकड़ कर उसे उठाए और मुक़ामें हजर तक लाए, चुानन्चे ऐसा ही किया गया।

फिर जब हजरे असवद बैतुल्लाह के क़रीब आ गया तो हज़रत मोहम्मद मुस्तफा (स.) ने अपने हाथों से उठाकर उसे नसब कर दिया। हुज़ूर (स.) की इस हिकमते अम्ली से फितनए अज़ीम का सद्दे बाबहो गया। (तारीख़ अबुलफिदा, जिल्द दो पृष्ठ २६ वा याक़ूबी जिल्द दो पृष्ठ १४)

जनाबे ख़दीजा (र.) के साथ आपकी शादी ख़ाना आबादी

जब आपकी उम्र २५ साल की हुई और आपके हुस्ने सीरत, आपकी रास्त बाज़ी(सत्यता) और दयानत की आम शोहरत हो गई और आपको सादिक़ और अमीन का ख़िताब दिया जा चुका तो जनाबे ख़दीजा (र.) बिन्ते ख़ुवलैद ने जो बहुत ही पाकीज़ा नफस, खुश इख़ालिक और ख़ानदाने कुरैश में सबसे ज्यादा दौलत मंद थी ऐसे हाल में अपनी शादी का पैगाम पहुंचाया जब कि उनकी उम्र ४० साल की थी। शादी का पैग़ाम मंजूर हुआ और हज़रत अबूतालिब (र.) ने निकाह पढ़ा। (तलख़ीस सीरतून नबी अल्लामा शिब्ली पृष्ठ ६६ लाहौर १६६५ ई०) । मुवर्रेख़ इब्ने वाज़ेह अलमतूफी २६२ ई० का ब्यान है कि हज़रत अबूतालिब ने जो ख़ुतबा निकाह पढ़ा था उसकी शुरूआत इस तरह थी।

“ अल्हम्दो लिल्लाहिल लज़ी जाअल्ना मिन ज़रा इब्राहीम व ज़ुर्रियते इस्माईल ”

तमाम तारीफ़ें उस एक खुदा के लिए हैं जिसने हमें नस्ले इब्राहीम और ज़ुर्रेयते इस्माईल से क़रार दिया है। (अलयाक़ूबी जिल्द दो पृष्ठ १६ मुद्रित नजफ़े अशरफ़)

मुवर्रेखीनों का ब्यान है कि हज़रत ख़दीजा (र.) का महर १२ औंस सोना और २५ ऊंट मुक़र्र हुआ जिसे हज़रत अबूतालिब ने उसी समय अदा कर दिया। (मुसलमानाने आलम सफ़ा ३८ मुद्रित लाहौर) तवारीख़ में है कि जनाबे ख़ादीजा (र.) की तरफ से अक़्द पढ़ने वाले उनके चचा उम्ररों बिन असद और हज़रत रसूले खुदा (स.) की तरफ से जनाबे अबूतालिब थे।

(तारीख़े इस्लाम जिल्द २ पृष्ठ ८७ मुद्रित लाहौर १९६२ ई०)

एक रवायत में है कि शादी के समय जनाबे ख़ादीजा (र.) बाक़रा थी। यह वाक़िया निकाह ५९५ ई० का है। मनाक़बें इब्ने शहरे अशोब में है के रसूले खुदा के साथ ख़दीजा का यह पहला अक़्द था। सीरते इब्ने हशशाम जिल्द १ पृष्ठ ११९ में है जब तक ख़दीजा ज़िन्दा रहीं रसूले करीम(स.) ने कोई अक़्द नहीं किया।

(कोहे हिरा में आंहज़रत (स.) की इबादत गुज़ारी)

तारीख़ में है कि आपने ३८ साल की उम्र में (कोहे हिरा) जिसे जबले सौर भी कहते हैं को अपनी इबादत गुज़ारी की मंजिल क़रार दिया और उसके एक ग़ार में बैठकर जिसकी लम्बाई ४ हाथ और चौढ़ाई डेढ़ हाथ थी इबादत करते और ख़ानए काबा को देखकर लज़्ज़त महसूस करते थे। यूँ तो दो दो ,चार चार शबाना रोज़ वहां रहा करते थे लेकिन माहे रमज़ान सारे का सारा वहीं गुज़ारते थे।

(आपकी बअेसत)

मुवर्रेख़ीन का ब्यान है कि आंहज़रत (स.) इसी आलमे तनहाई में मशगूले इबादत थे कि आपके कानों में आवाज़ आई या **मोहम्मद**(स.) आपने इधर उधर देखा कोई दिखाई न दिया फिर आवाज आई फिर आपने इधर उधर देखा, नगाह आपकी नज़र एक नूरानी मख़्लूक़ पर पड़ी वह जनाबे जिबरईल थे उन्होंने कहा **"इक़रा"** पढ़ो हज़ूर ने इरशाद फ़रमाया **"माइक़रा"** क्या पढ़ूं उन्होंने अर्ज़ की **(इक़रा बइस्मे रब्बेकल लज़ी ख़लक़)** फिर आपने सब कुछ पढ़ दिया क्योंकि आपको इल्मे कुरआन पहले से हासिल था। जिब्राईल (अ.) के इस तहरीके इक़रा का मक़सद यह था कि नुज़ुले कुरआन की इब्तेदा हो जाए। उस वक़्त आपकी उम्र ४० साल १ दिन की थी। उसके बाद जिब्राईल ने वज़ू और नमाज़ की तरफ़ इशारा किया व अरकात की तादाद की तरफ़ भी हुज़ूर को मुत्वज्जे किया चुनान्चे हुज़ूरे आला ने वज़ू किया और नमाज़ पढ़ी आपने सबसे पहले जो नमाज़ पढ़ी वह ज़ोहर की थी। फिर हज़रत वहां से अपने घर तशरीफ लाएं और ख़दीजतुल कुबरा और अली बिन अबी तालीब से वाक़िया ब्यान फ़रमाया। इन दोनों ने इज़हारे ईमान किया और नमाज़े अस्र इन दोनों ने ब जमाअत अदा की यह इस्लाम की पहली नमाज़े जमाअत थी जिसमें रसूले करीम (स.) इमाम और ख़दीजा (र.) और अली (अ.) मामूम थे। आप दरजए नबूअत पर बदोफ़ितरत ही से फ़ायज़ थे। २७, रजब को मबऊसे रिसालत हुए। (हैयातूल कुलूब, किताब अलमुनतक़ा, मवाहिबुल दुनिया) इसी तारीख़ को नजूले कुरआन की इब्तेदा हुई।

हाशिया :-१. हज़रत अली बिन अबीतालिब के साबेकुल इस्लाम होने के बारे में इतनी कसीर रवायत व शवाहिद मौजूद है कि अगर उन्हें जमा किया जाय तो एक किबात बन सकती है। हज़रते रसूले करीम (स.) ने खुद इसकी तसदीक़ फ़रमाई है। चुनान्चे दार क़त्नी ने अबूसईद हज़री से इमाम अहमद ने हज़रत उमर से हाकिम ने माअज़ से अक़्ली ने हज़रत आयशा से रवायत की है कि हज़रत रसूले ख़ुदा(स.) ने अपनी ज़बाने मुबारक से इरशाद फ़रमाया है कि मुझ पर ईमान लाने वालों में सबसे पहले अली(अ.) हैं। हज़रत अली ख़ुद इरशाद फ़रमाते हैं।

सब कतकुम इला इस्लाम तरा ---- ग़ुलामन माबलग़ता अवान हलमी

मैंने तुम सबसे पहले इस्लाम की तरफ बढ़कर उसका ख़ैर मक़दम किया है। यह वाक़्या है उस वक़्त का जब कि मैं बालिग़ भी न हुआ था शेख़ अलइस्लाम हाफिज़ इब्ने हजर असकलानी, तकरीब अल तहज़ीब मुद्रित देहली के पृष्ठ ८४ पर कुछ अक़वाल ल़िखने के बाद लिखते है "अलमरजाअनहा अव्वलीन असलम" तरजीह उसी को है कि आपने सबसे पहले इस्लाम ज़ाहिर किया। अल्लामा अब्दुल रहमान इब्ने ख़लदुन लिखते हैं कि हज़रत ख़दीजा के बाद हज़रत अली इब्ने अबी तालिब ईमान लाये (तारीख़ इब्ने ख़लदुन पृष्ठ २६५ मुद्रित लाहौर) मुवर्रेख़ अबुलफ़िदा लिखते हैं के जनाबे ख़दीजा (र.) के अव्वल ईमान लाने में और मुसलमान होने में किसी को इख़तिलाफ़ नहीं, मगर इख़तिलाफ़ उनके बाद में है कि बीबी ख़दीजा (र.) के बाद कौन पहले ईमान लाया। साहेबे सीरत और बहुत से अहले इल्म बयान करते हैं कि मर्दों में सबसे पहले हज़रत अली बिन अबी तालिब (अ.) ६,१० या ११ बरस की उम्र में सबसे पहले मुसलमान हुए। अफ़ीफ़ कन्दी की रवायत से भी इसी की तसदीक़ होती है जिसमें उन्होंने चश्मदीद गवाह की हैसियत से वज़ाहत की है कि मैंने रसूले ख़ुदा(स.) को नमाज़ पढ़ते हुए बेअसत के फ़ौरन बाद इस आलम में देखा कि उनके पीछे ज़नाबे ख़दीजा और हज़रत अली(अ.) खड़े थे उस वक़्त कोई और इस्लाम न लाया था। इस रवायत को अल्लामा बिन अब्दुल जज़री करतबी ने इस्तेयाब जिल्द २ पृष्ठ २२५ मुद्रित हैदराबाद दकन में अल्लामा इब्ने असीर जरज़ी ने असद उलग़ाबा जिल्द ३ पृष्ठ ४१४ मुद्रित मिस्र में अल्लामा इब्ने जरीर तबरी ने तारीख़े क़दीर जिल्द २ पृष्ठ २१२ मुद्रित मिस्र में अल्लामा इब्ने असीर ने तारीख़े कामिल जिल्द २ पृष्ठ २० में दर्ज किया है।

साहेबे तफ़रीह अल अज़किया ने सबीहतुल महाफ़िल से नक़्ल किया है कि दोशम्बे को रसूले ख़ुदा(स.) मबऊसे रिसालत हुए हैं और उसी दिन आख़िरे वक़्त हज़रत अली(अ.) मुशर्रफ़ बा इस्लाम हुए हैं। यही कुछ रौज़तुल अहबाब जिल्द १ पृष्ठ ८३ में भी है। अल्लामा अब्दुल बर ने दावा किया है कि बिल इत्तेफ़ाक़ साबित है कि ख़दीजा के बाद सबसे पहले हज़रत अली (अ.) मुशर्रफ़ ब इस्लाम हुए हैं। अल्लामा इक़बाल कहते हैं।

मुस्लिम अव्वल शहे मर्दाने अली ---- इश्क़ रा सरमायए ईमाने अली

वाज़े हो के हज़रत अली (अ.) अज़ल से ही मुसलमान और मोमिन थे, उनके लिए इस्लाम लाने का जुम्ला मुनासिब नहीं है लेहाज़ा जहां कहीं भी तारीख़ में उनके बारे में इस्लाम या ईमान लाने का जुम्ला है इससे इज़हारे इस्लाम वा ईमान समझना चाहिए।

दावते ज़ुल अशीरा का वाक़्या और एलाने रिसालत व वज़ारत

बेअसत के बाद आपने तीन साल तक निहायत राज़दारी और पोशदगी के साथ फ़रायज़ की अदायगी फरमायी इसके बाद खुले बन्दों तबलीग़ का हुक़्म आ गया। (फसद अबेमह तोमर) जो हुक़्म दिया गया है उसकी तकमील करों। मैं इस मकाम पर"तारीख़ अबुल फ़िदा के इश्क़ तरजुमा की लफ़्ज़ ब लफ़्ज़ इबारत नक़्ल करता हूं जिसे मौलाना करीमउद्दीन

हनफ़ी इंस्पेक्टर मद्रास पंजाब ने १८४६ ई० में किया था।

वाज़े हो के तीन बरस तक पैग़म्बरे ख़ुदा दावत तरफ़े इस्लाम ख़ुफिया करते रहे मगर जब कि यह आयत नाज़िल हुई (वा अनज़र अशीरतेकुल अक़रबैन) यानी डरा अपने कुन्बे वालों को जो करीब रिश्ते के है। इस वक़्त हज़रत ने बमुजिब हुक़्मे ख़ुदा के इज़हार करना दावत का शुरू किया। बाद नाज़िल होने इस आयत के पैग़म्बरे ख़ुदा (स.) ने अली से इरशाद किया कि ऐ अली एक पैमाना खाने का मेरे वास्ते तैयार कर और एक बकरी का पैर उस पर छुआ ले और एक बड़ा कासा दूध का मेरे वास्ते ला और अब्दुल मुत्तलिब की औलाद को मेरे पास बुला कर ला ताकि मैं उससे कलाम करूं और सुनाऊँ उनको वह हुक़्म जिस पर जनाबे बारी से मामुर हुआ हूँ चुनान्चे हज़रत अली (अ.) ने वह खाना एक पैमाना बामोजिब हुक़्म तैयार करके औलादे अब्दुल मुत्तलिब को जो करीब ४० आदमी के थे बुलाया,उन आदमियों में हज़रत के चचा अबुतालिब हज़रते हमज़ा और हज़रते अब्बास भी थे। उस वक़्त हज़रत अली ने वह खाना जो तैयार किया था लाकर हाज़िर किया। सब खा पी कर सेर हो गये। हज़रत अली ने इरशाद किया कि जो खाना इन सब आदमियों ने खाया है वह एक आदमी की भूख के लिये काफ़ी था। इसी दौरान हज़रत चाहते थे कि कुछ कहूँ के अबु लहब जल्दी बोल उठा और यह कहा कि मोहम्मद ने बड़ा जादू किया है। यह सुनते ही तमाम आदमी अलग अलग हो गये थे, चले गये। पैगम्बरे ख़ुदा कुछ कहने न पाये थे यह हाल देख कर जनाबे रिसालत माआब (स.) ने इरशाद किया कि ऐ अली देखा तूने उस शख़्स ने कैसी सबक़त की। मुझको बोलने ही न दिया अब फिर कल को तैयार कर जैसा के आज किया था। और फिर उनको बुलाकर जमा कर चुनान्चे हज़रत अली(अ.) ने दूसरे रोज़ फिर मुवाफ़िक़े आं हज़रत खाना तैयार करके सब लोगों को जमा किया। जब वह खाने से फ़राग़त पा चुके उस वक़्त रसूल अल्लाह (स.) ने इरशाद किया कि तुम लोगों की बहुत अच्छी क़िस्मत और नसीब है। क्योंकी ऐसी चीज़ मैं अल्लाह की तरफ़ से लाया हूँ कि उससे तुमको फ़ज़ीलत हासिल होती है और ले आया हूँ। तुम्हारे पास दुनिया और आख़ेरत में अच्छा। ख़ुदा ताअला ने मुझको तुम्हारी हिदायत का हुक्म फ़रमाया है। कोई शख़्स तुम में से इस अम्र का इक़्तेदा करके मेरा भाई , वसी और ख़लीफ़ा बनना चाहता है। इस वक़्त सब मौजूद थे और हज़रत पर एक हुजूम था और हज़रत अली ने अर्ज़ किया कि या रसूल अल्लाह (स.) मैं आपके दुश्मनों को नैज़ा मारूंगा और उनकी आखें फोड़ दूंगा, पेट चीरूंगा और टांगें काटूंगा और आपका वज़ीर हूंगा। हज़रत (स.) ने उस वक़्त हज़रत अली मुर्तज़ा की गरदन पर हाथ मुबारक रख कर इरशाद किया कि " यह मेरा भाई है और मेरा वसी है और मेरा ख़लीफ़ा है तुमहारे बीच इसकी सुनो और इताअत क़ुबूल करो "। यह सुनकर सब क़ौम के लोग मज़ाक़ में हंस कर खड़े हो गये और अबुतालिब से कहने लगे कि अपने बेटे की बात सुन और इताअत कर यह तुझे हुक्म हुआ है। (अल्ख़ पृश्ठ ३३, से ३६ मुद्रित लाहौर)

मुवर्रिख़ अबुल फ़िदा मतूफ़ी ७३२ हिजरी की तहरीर पर मेरा वज़ाहती नोट

आयए अनज़ेरा अशीरतेकल अक़रबैन के नुज़ूल की तफ़सीलहज़रत अली (अ) की ख़िलाफत बिला फसल की बुनियाद क़ाएम करती है। इस पर अमले रसूल फ़ेले रसूल (स.) और क़ौले रसूल (स.) ने साबित कर दिया कि हज़रत अली (अ.) ही रसूल करीम (स.) के ख़लीफा अव्वल और ख़लीफ़ा बिला फ़सल हैं उन्हीं को उन्हों ने अपना जां नशीन बनाया था जिसकी तजदीद अपनी ज़िन्दगी के मुख़तलिफ अदवार में फ़रमाते रहे। यहाँ तक कि नस्से सरीह आयए " या अयोहल रसूल बल्लिग़ मा उनज़ेला एलैका मिन रब्बक " के ज़रिए से ग़दीरे ख़ुम में हजजे आख़िर के मौक़े परआख़री एलान फरमाया और वाज़े कर दिया कि मेरे बाद अली इब्ने अबी तालिब ही मेरे जानशीन और ख़लीफा हैं।

मोवररिख़ अबू अलफिदा ने इस्लाम की इस पहली और बुनियादी दावते तबलीग़ की मुनासिब वज़ाहत फ़रमा दी है और साफ़ लफ़ज़ो में वाज़े कर दिया कि हज़रत रसूल करीम (स.) ने हज़रत अली (अ.) को अपना जानशीन और ख़लीफ़ा इसी बुनियादी दावत के मौक़े पर बना दिया था और लोगों को हुक्म दे दिया था कि " फ़ इसमऊ इलहे व अतीयहू " इनकी बात कान धर कर सुनो और इनकी इताअत करो।

कुछ कमो बेश लफज़ों के साथ यह वाक़ेया तारीख़ तबरी जिल्द २ सफ़ा २१७ तारीख़ कामिल बिन असीर जिल्द २, सफ़ा १२२ लुबाब अलतावील जिल्द ५सफ़ा १०६ मुआलिमुत तनज़ील बर हशिया ख़ाज़िन जिल्द ६ सफ़ा १०५ख़साएस,निसाई सफ़ा १३, मसनद अहमद बिन हमबल जिल्द ३ सफ़ा ३६० कनजुल माल जिल्द ६ सफ़ा ३९७ सीरते इब्ने इसहाक़, तफ़सीर इबने हातिम, दलाएल बहीकी, मुनाक़िब इमामे अहमद, मुसन्निफ अबू बकर इब्ने अबी शबीता, तारीख़े ख़मीस, तफ़सीर इब्ने मरदूया, तफ़सीर सिराजे मुनीर, तफ़सीर शिबली, तफ़सीरे वाहेदी , हुलयतुल औलिया , ज़ख़ीरतुल आमाल अजली, मुख्तारे ज़िया मुक़दसी, तहज़ीब अलआसार तिबरी, इकतेफ़ा आसमी,रौज़तुल अलसफा, हबीब अलसैर,मआरिज अल नबूअता मदारिज अल नबूअता अज़ालतुल ख़फा तारीख़े इस्लाम अब्दुल हकीम नशतर जिल्द १ सफ़ा ४४ वग़ैरा में मौजूद है। इन इस्लामी किताबों के अलावा इसका तज़किरा अहले फिरगं की तसनीफ़ात में भी है। मुलाहेज़ा हो अपालोजी जान डीवन पोस्ट सफ़ा ५,कारलायल सफ़ा ६१ खुल्फ़ा मोहम्मद एयरविंग सफ़ा ३ तारीख़े गिबन जिल्द ३ सफ़ा ४९९, ओकली सफ़ा १५।

दावते जुल अशीरा के सिलसिले में यह अमर क़ाबिले ज़िक्र है कि इस अहम वाक़ेए का जिक्र इमाम बुख़ारी ने अपनी सही में नहीं किया। जिससे उनकी ज़ेहनियत का पता चलता है नीज़ यह कि जरमन में जो तारीख़े तबरी छपी है इसकी जिल्द ६ सफ़ा ६८ में वसी व ख़लीफ़ती के बजाये " कज़ा व कज़ा" दरज है जिससे अहले मिस्र की तहरीफ़ी जद्दो जेहद का अन्दाजा लगाया जा सकता है, वाजे हो के दावते जुलअशीरा का वाक़ेया ४,बेअसत का है।

हिजरते हब्शा ५ बेएसत

एलाने नबूवत के बाद अरब की ज़मीन और अरब के आसमान यानी अपने पराये सब दुश्मन हो गये। उन दुश्मनों में अबु सुफ़यान, अबु जेहल और अबु लहब ख़ास थे। उन लोगों ने आप पर गंदगी डालना और आपको जादूगर और मजनून (पागल) कह कर सताना अपना तरीक़ा बना लिया था। बाज़ मुवर्रेख़ीन का कहना है कि दुश्मनों ने एक दफ़ा कम्बल उढ़ा कर मार डालने का इरादा कर लिय था। इस तरह के मसाएब और ज़ुल्म से जब आं हज़रत (स.) और आपके पैरव परेशान हुये और आपने महसूस कर लिया कि मुसलमान की हैसियत से मक्के में ज़िन्दगी के दिन गुज़ारना मुश्किल है तो हिज़रते हब्शा का फ़ैसला करके अपने असहाब को हिजरत का हुक्म दिया। चुनान्चे ५, बेअसत में सौ १०० मर्द, औरतों ने हिजरत की और हबश पहुंच गये। हबश का बादशा नजाशी (१) था जो नस्तूरी फ़िरक़े का ईसाई था। उसने इन लोगों की आओ भगत की और इनका ख़ैर मक़दम किया। मगर दुश्मनों ने वहां पहुंच कर कोशिश की कि यह लोग ठहरने न पाएं लेकिन वह कामयाब न हुये।

मुवर्रेख़ीन का बयान है कि इन हिजरत करने वालों में जाफ़रे तय्यार भी थे। जो उनमें सरबराह की हैसियत रखते थे। यह लोग ७,हिजरी तक वहीं क़याम करते रहे और फ़तेह ख़ैबर के मौक़े पर वापस आये, उनकी वापसी पर रसूले करीम ने फ़रमाया था कि मैं हैरान हूँ कि दो ख़ुशियों में से किसको तरजीह दूँ। मैं फ़तेह ख़ैबर की ख़ुशी को अहम समझूं या जाफ़रे तय्यार वग़ैरा की वापसी को अहमियत दूँ।

अलगरज़ हिजरते हबशा के सिलसिले में कुफ़्फ़ारे मक्का को जब मालूम हुआ कि यहां के वह बाशिन्दे जो मुसलमान होते हैं चुपके से हबशा चले जाते हैं और वहां आराम से बसर करते हैं तो उनकी दुश्मनी और ज़िद व क़द और बढ़ गयी और उन्होंने बरवायते इब्ने असीर अब्दुल्ला बिन उमय्या को उमरे आस(२) के साथ नजाशी और अराकीने सलतनत के वास्ते हदिया व तहायफ़ दे कर रवाना किया, इन दोनों ने हबशा पहुँच कर नजाशी को मुख़्तलिफ़ तरीकों से भड़काना चाहा मगर वह न भड़का और मुसलमानों की हिमायत करता रहा आख़िरकार यह लोग ख़ायब व खासिर वापस आये।

(हज़रत रसूले करीम (स.) दारूल अरक़म में ६ ,बअेसत)

मुवर्रिख़ ज़ाकिर हुसैन ब हवाला सीरत इब्ने हश्शाम कहते हैं कि जब मुसलमान हबशा की तरफ़ महाजेरत कर गये तो भी रसूल अल्लाह(स.) बराबर वाअज़ फ़रमाते रहे और नये नये लोग दीने इस्लाम में दाख़िल होते रहे, कुफ़्फ़ार ने यह देखकर आंहज़रत(स.) को और ज़्यादा सताना शुरू कर दिया। नाचार आं हज़रत(स.) अपने बचे हुये असहाब को साथ लेकर "अरक़म बिन अबी अरक़म बिन अब्दे मनाफ़ बिन असद" के मकान में एक महीने तक

रहे। यह मकान कोहे सफ़ा के ऊपर वाक़े था। आप वहां लोगों को इस्लाम की तरफ़ दावत देते थे। (तारीख़े इस्लाम जि.२ पृष्ठ ५२)

हज़रत रसूले करीम (स.) शोएबे अबी तालिब में (मोहर्रम ७ बेअसत)

मुवर्रेखीन का बयान है कि जब कुफ़्फ़ारे कुरैश ने देखा कि इस्लाम रोज़ बा रोज़ तरक़्क़ी करता चला जा रहा है तो बहुत परेशान हुये। पहले तो कुछ कुरैश दुश्मन थे अब सब के सब मुख़ालिफ़ हो गये और बरवायते इब्ने हश्शाम व इब्ने असीर व तबरी, अबु जेहल बिन हश्शाम, शेबा, अतबा बिन रबिया, नसर बिन हारिस,आस बिन वाएल, और अक़बा बिन अबी मूईत एक गिरोह के साथ रसूले खुदा(स.) के क़त्ल पर कमर बांध कर हज़रत अबुतालिब के पास आये और साफ़ लफ़्ज़ों में कहा कि मोहम्मद (स.) ने एक नये मज़हब की शुरूआत की है और हमारे खुदाओं को हमेशा बुरा भला कहा करते हैं। लेहाज़ा उन्हें हमारे हवाले कर दो। हम उन्हें क़त्ल कर दें या फिर आमादा ब जंग हो जाओ। हज़रत अबुतालिब ने उन्हें उस वक़्त टाल दिया और वह लोग वापस चले गये, और रसूले करीम(स.) अपना काम बराबर करते रहे। कुछ दिनो के बाद दुश्मन फिर आये और उन्होंने आकर शिकायत की और हज़रत के क़त्ल पर ज़ोर दिया। हज़रत अबुतालिब ने आं हज़रत से वाक़या बयान किया, उन्होंने फ़रमाया कि ऐ चचा मैं जो कहता हूँ कहता रहूंगा मैं किसी की धमकी से डर नहीं सकता,और न मैं किसी लालच में फंस सकता हूँ। अगर मेरे एक हाथ पर आफ़ताब और दूसरे पर माहताब रख दिया जाय तब भी मैं अल्लाह के हुक्म को पहुंचाने में न रूकूंगा। मैं जो करता हूँ अल्लाह के हुक्म से करता हूँ , वह मेरा मुहाफ़िज़ है। यह सुन कर हज़रत अबूतालिब ने फ़रमाया कि बेटा तुम जो करते हो करते रहो मैं जब तक ज़िंदा हूँ तुम्हारी तरफ़ कोई नज़र उठा कर नहीं देख सकता। कुछ समय के बाद बरवायत इब्ने हश्शाम व इब्ने असीर कुफ़्फ़ार ने अबूतालिब (अ.) से कहा कि तुम अपने भतीजे को हमारे हवाले कर दो हम उसे क़त्ल कर दें। और उसके बदले में एक नवजवान हम से बनी मख़ज़ूम में से ले लो। हज़रत अबूतालिब ने फ़रमाया कि तुम बेवक़ूफ़ी की बातें करते हो, यह कभी नहीं हो सकता। यह क्योंकर मुम्किन है कि तुम्हारे लड़के को लेकर उसकी परवरिश करूं, और हमारे बेटे को लेकर क़त्ल कर दो। यह सुनकर उनका ग़ुस्सा और बढ़ गया और उनको सताने पर भरपूर तुल गये। हज़रत अबुतालिब (अ.) ने उसके रद्दे अमल में बनी हाशिम और बनी मुत्तलिब से मद्द चाही, और दुश्मनों से कहला भेजा कि **काबा व हरम** की क़सम अगर मोहम्मद (स.) के पांव में कांटा भी चुभा तो मैं सबको क़त्ल कर दूंगा। हज़रत अबूतालिब के इस कहने पर दुश्मन के दिलों में आग लग गई और वह आंहज़रत (स.) के क़त्ल पर पूरी ताक़त से तैय्यार हो गये।

हज़रत अबुतालिब(अ.) ने जब आं हज़रत(स.) की जान को ग़ैर महफ़ूज़ देखा तो फ़ौरन उन लोगों को लेकर जिन्होंने हिमायत का वायदा किया था जिनकी तादाद बरवायते

हयातुल कुलूब चालीस थी, मोहर्रम ७, बेअसत में " शोएबे अबुतालिब " के अन्दर चले गये और उसके अतराफ़ को महफ़ूज़ कर दिया।

कुफ़्फ़ारे कुरैश ने अबुतालिब के इस अमल से मुताअस्सिर हो कर एक अहद नामा मुरत्तब किया जिसमें बनी हाशिम और बनी मुत्तलिब से मुकम्मल बाईकाट का फ़ैसला था। तबरी में है कि इस इस अहद नामे को मन्सूर बिन अकरमा बिन हाशिम ने लिखा था जिसके बाद ही उसका हाथ शल(बेकार) हो गया था।

तवारीख़ में है कि शोएब का दुश्मनों ने चारों तरफ़ से भरपूर घिराव कर लिया था और उनको मुकम्मल कैद में कर दिया था। इस कैद ने अहले शोएब पर बड़ी मुसिबत डाली, जिसमानी और रूहानी तकलीफ़ के अलावा रिज़्क़ की तंगी ने उन्हें तबाही के किनारे पर पहुँचा दिया और नौबत यहां तक पहुँची कि वह दींदार(धर्म पालक) पेड़ों के पत्ते खाने लगे। नाते, कुनबे वाले अगरचे चोरी छुपे कुछ खाने पीने की चीज़ें पहुंचा देते और उन्हें मालूम हो जाता तो सख़्त सज़ाएं देते। इसी हालत में तीन साल गुज़र गये। एक रवायत में है कि जब अहले शोएब के बच्चे भूख से बेचैन हो कर चीख़ते और चिल्लाते थे तो पड़ोसियों की नींद हराम हो जाती थी। इस हालत में भी आप पर वही नाज़िल होती रही, और हुज़ूर कारे रिसालत अन्जाम देते रहे।

तीन साल के बाद हश्शाम बिन उमर बिन हरस के दिल में यह ख़याल आया कि हम और हमारे बच्चे खाते पीते और ऐश करते हैं, और बनी हाशिम और उनके बच्चे भूखे रह रहे हैं। यह ठीक नहीं है। फिर उसने और कुछ आदमीयों को हम ख़्याल बना कर कुरैश के जल्से में इस सवाल को उठाया अबु जेहल और उसकी बीवी " उम्मे जमील " जिसे ब ज़बाने कुरआन " हिमालतल हतब " कहा जाता है ने विरोध(मुख़ालेफ़त) किया लेकिन अवाम के दिल पसीज उठे। इसी दौरान में हज़रत अबुतालिब आ गये और उन्होंने कहा कि "मोहम्मद"(स.) ने बताया है कि तुमने जो अहद नामा लिखा है उसे दीमक खा गई है। और काग़ज के उस हिस्से के सिवा जिसपर अल्लाह का नाम है सब ख़त्म हो गया है। ऐ कुरैश बस ज़ुल्म की हद हो गई, तुम अपने अहद नामे को देखो अगर मोहम्मद का कहना सच हो तो इन्साफ़ करो और अगर झूठ हो तो जो चाहो करो।

हज़रत अबुतालिब के इस कहने पर अहद नामा मंगवाया गया और हज़रत रसूले करीम(स.) का इरशाद इसके बारे में बिल्कुल सच साबित हुआ। जिसके बाद कुरैश शर्मिन्दा हो गये और शोएब का घिराव टूट गया। उसके बाद हश्शाम बिन उमर बिन हरस और उसके चार साथी, ज़ुबैर बिन अबी, उमय्या मख़्ज़ूमी और मुतअम बिन अदी, अबुल बख़्तरी बिन हशाम, ज़मआ बिन असवद बिन अल मुत्तलिब बिन असद शोएबे अबुतालिब में गये ओर उन तमाम लोगों को जो उसमें कैद थे उनके घरों में पहुँचा दिया। (तारीख़े तबरी, तारीख़े कामिल, रौज़तुल अहबाब) मुवर्रिख़ इब्ने वाज़े जिनका देहांत २९२ में हुआ का बयान है

कि इस घटना के बाद " अस्लम यू मस्जिदिन ख़लक़ मिनन नास अज़ीम " बहुत से काफ़िर मुसलमान हो गये। (अल याकूबी जिल्द २, पृष्ठ २५ मुद्रित नजफ १३८४ हिजरी)

रूमियों की हार पर आंहज़रत (स.)की कामयाब पेशीन गोई (८ बेअसत)

मुवर्रेख़ीन लिखते हैं कि ८ बेअसत में ईरानियों ने रूमियों को हरा दिया और चूँकि ईरानी आतिश परस्त और रूमी ईसाई अहले किताब थे। इसलिए कुफ़्फ़ारे मक्का को इस वाक़्ये से खुशी हुई और मुसलमानों को दुख हुआ। मुसलमानों के दुख को हज़रत रसूल अल्लाह (स.) ने अपनी तसल्ली से दूर किया और उनसे बतौर पेशीन गोई फ़रमाया कि घबराओ नहीं ३ और ६ साल के दरमियान रूमी ईरानियों को शिकस्त देकर कामयाब हो जाऐंगे चुनानचे ऐसा ही हुआ ६ बेअसत गुज़रने से पहले रूमी ईरानीयों पर ग़ालिब आये इस पेशीन गोई का ज़िक्र कुराने मजीद में मौजूद है। मेरे नज़दीक इस पेशीन गोई की सेहत ने हक़ीक़ते कुरान और हक़ीक़ते रिसालत को उजागर कर दिया है ।

गिबन और दीगर ईसाई मुवर्रेख़ीन ने लिखा है कि वह लड़ाई जिसमें ईरानियों ने फ़तेह पाई थी। ६११ ई० से ६१७ ई० तक जारी रही और जिसमें रूमियों ने फ़तेह पाई वह ६२२ ई० से ६२८ ई० तक रही। ईरानियों नें ६१७ ई० तक तमाम एशियाये कोचक और मिस्र फ़तेह कर लिया था और कुसतुनतुनिया से एक मील की दूरी पर पड़ाव डाल दिया था और आगे बढ़ने का ईरादा कर रहे थे सिर्फ़ अबनाए फ़ासक़रस हद्दे फ़ासिल था मगर ६२३ ई० में रूमियों ने ईरानियों को भारी शिकस्त देकर अपने इलाक़े वापिस लेने शुरू कर दिये।

तारीख़े तबरी जिल्द २,सफ़ा ३६० में है कि इस घटना के सम्बन्ध में कुरान में लफ़्ज़ "बज़ा सनीन" आया है जिसके मानी दस के हैं यानी फ़तेह दस साल के अन्दर होगी चुँनान्चे ऐसा ही हुआ।

आपका मोजिज़ए शक़ - उल - क़मर ६ बअेसत

इब्ने अब्बास इब्ने मसूद अनस बिन मालिक हुज़ैफ़ा बिन उमर जिब्बीर बिन मुतअम का बयान है कि शक़ उल क़मर का मोजिज़ा कोहे अबू कुबैस पर ज़ाहिर हुआ था जबकि अबू जेहल ने बहुत से यहूदीयों को हमराह लाकर हज़रत से चाँद को दो टुकड़े करने की खुवाहिश ज़ाहिर की थी। यह वाकेया चौदहवीं रात को हुआ था जबकि आपको मौसमे हज में शुऐब अबी तालिब से निकलने की इजाज़त मिल गई थी।अहले सैर लिखते हैं कि यह वाक़ेया ६ बेअसत का है। इस मोजिज़े का ज़िक्र " तारीख़ फरिश्ता" में भी है। हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.) फ़रमाते हैं कि " मुजिब एतक़ादो क़ौलेही" इस मोजिज़े के वाक़े होने पर ईमान वाजिब है। (सफ़ीनतुल अल बहार ज.१ स.७०६) इस मोजिज़े का ज़िक्र अजीज़ लखनवी मरहूम ने क्या ख़ूब किया है।

मोजिज़ा शक़्क़ुल क़मर का , है मदीने से अयाँ
मह ने शक़ होकर लिया है दीन को आग़ोश में

हज़रत अबूतालिब(र.) और जनाबे ख़तीजतुल कुबरा(र.) की वफात १० बेअसत

हैवातुल हैवान दमीरी में है कि शुऐब अबी तालिब से निकलने के आठ महीने ग्यारह दिन बाद बेअसत माह शव्वाल मे हज़रत अबूतालिब ने इन्तेक़ाल किया। बरवाते इबने वाज़े इस वक़्त इनकी उमर ८६, साल की थी (अल याक़ूबी जिल्द २ सफ़ा २८) कशमीर तवारीख़ में है कि इनकी वफ़ात के तीन दिन बाद जनाबे ख़तीजतुल कुबरा (र.) ने भी इन्तेक़ाल फ़रमाया उस वक़्त इनकी उमर ६५ साल की थी (अल याक़ूबी जिल्द २ सफ़ा २८)

उन दो अज़ीम हमर्ददों और मददगारों के इन्तेक़ाल पुर मलाल से हज़रत रसूल करीम (स.) को सख़्त रंज पहुँचा। आपने शदीद रंज व ग़म और सदमओ अलम के तअस्सुर में इस साल का नाम " आम उल हुज़न " ग़म का साल रख दिया।

मोमिन कुरैश हज़रत अबू तालिब और जनाबे खतीजतुल कुबरा की क़ब्र मक्का के कब्रस्तान "हजून" में एक पहाड़ी पर वाक़े है। यह कब्रें पहले गुम्बद वाली ना थी। बरवायत मुवर्रिख़ ज़ाकिर हुसैन, मिर्ज़ा असग़र हुसैन, अली फ़सीह लखनवी ने तेरहवीं सदी के वसत में मोमेनीन की मदद से इन पर गुम्बद तैयार कराया था।

इसी १०, बेअसत में अबूतालिब के इन्तेक़ाल के बाद क़ुरैश ने यह देख कर कि अब इनका कोई मज़बूत हामी और मदद गार नहीं है। आँहज़रत (स.) पर दस्ते ज़ुल्म व ताअद्दी और भीज़्यादा दराज़ कर दिया और बनी हाशिम अपने रईस के मर जाने से आपकी कमा हक्क़हू हिफ़ाज़त व अयानत न कर सके और दुशमनो की ईज़ारसाई उरूज को पहुँच गई बारवाएते तारीख़ खमीस हज़रत की यह हालत पहुँच गई कि आपने घर से निकलना छोड़ दिया। फिर यह ख़्याल करके कि ताएफ में बनी सक़ीफ रहते हैंऔर वहीं चचा अब्बास की ज़मीन हैताएफ चले जाने का कसद कर लिया और अपने ग़ुलाम आज़ाद ज़ैद बिन हारसा को हम्राह ले कर रवाना हो गए। रास्ते बनी बकर और बनी क़हतान में ठहरना चाहा मगर कोई सूरत नज़र न आई बिल आखिर ताएफ चले गए जो मक्का से सत्तर मील के फासले पर वाके है। वहाँ तवक़्क़ो के ख़िलाफ़ सख़्त दुश्मनी का मुज़ाहेरा देखा १० दिन और बरवायते एक महीना बमुश्किल गुज़रा। बिल आख़िर ग़ुलामी कमीनों और गुन्डों ने आप पर पथराव करके आपको ज़ख़्मी कर दिया फिर इसी पर इकतिफ़ा नहीं की बल्कि पत्थर मारते हुए फ़सीले शहर से बाहर निकाल दिया। आपके पाँव ज़ख़्मी हो गए और ज़ैद का सर फूट गया। एक रवाएत में है कि आपके सर पर इतने पत्थर लगे थे कि आपके सर का ख़ून एड़ी से बह रहा था अलग़रज वहाँ से बइरादए मक्का रावाना होकर जब बतने नख़ला में पहुँचे जो मक्का से एक रात की मसाफ़त पर पहले वाक़े है तो रात को वहीं क़याम किया और कुरआन

पढ़ने लगे नसीबन से यमन जाते हुये जिनों के एक गिरोह ने कलामे ख़ुदा सुना और वह मुसलमान हो गये, फिर आपने ज़ैद को मक्के भेजा कि किसी मद्दगार का पता लगायें मगर कोई न मिला, अल्बत्ता मुतअम बिन अदी ने हामी भरी और आप मक्के वापस आ गये।

(रौज़तुल अहबाब)

इसी सन् १०,बेअसत में वफ़ाते ख़दीजा (र.) के बाद आंहज़रत(स.) ने "सौदा बिन्ते ज़म्आ" से निकाह किया और इसी साल हज़रत आयशा बिन्ते अबी बक्र से भी अक़्द फ़रमाया। मोअर्रेख़ीन का कहना है कि उस वक़्त हज़रत आयशा(र.) की उम्र ६, साल की थी इसी लिये १,हिजरी में जब कि आप नौ ९, साल की हो गई थीं ज़फ़ाफ़ वाक़े हुआ। (रौज़तुल अहबाब)

एक रवायत में हज़रत आयशा का यह क़ौल मिलता है कि मेरी माँ मुझे ककड़ी खिलाती थीं ताकि मैं ज़फ़ाफ़ के क़ाबिल बन जाऊँ।

(सन्न इब्ने माजा, जिल्द ३,अनुवादक बाबुल कशा वल रूत्ब, जिल्द ६२ पृष्ठ ६१)

(क़बीलए ख़जरज का एक गिरोह ख़िदमते रसूल (स.) में ११, बेअसत)

रजब के महीने में एक दिन आंहज़रत मिना में खड़े थे कि एकदम एक गिरोह एहले **यसरब** का क़बीलए खज़रज से हज़रत के पास आया। इस गिरोह में ६ अफ़राद थे। हज़रत ने उनके सामने क़ुराने मजीद की तिलावत की और इस्लाम के महासनि(नियम क़ानून) बयान किये। वह मुसलमान हो गये और उन्होंने यसरब में जाकर काफ़ी तबलीग़ की और वहां के घरों में इस्लाम का चर्चा हो गया।

(आंहज़रत (स.) की मेराजे जिस्मानी १२, बेअसत)

२७,रजब बेअसत की रात को ख़ुदा वन्दे आलम ने जिबरईल को भेज कर बुराक़ के ज़रिये आंहज़रत (स.) को "क़ाबा क़ौसैन" की मंज़िल पर बुलाया और वहां अली बिन अबी तालिब की ख़िलाफ़त व इमामत के बारे में हिदायात दीं। (तफ़सीरे क़ुम्मी) इसी मुबारक सफ़र और ऊरूज को (मेराज) कहा जाता है। यह सफ़र उम्मे हानी के घर से शुरू हुआ था। पहले आप बैतुल मुक़द्दस तशरीफ़ ले गये फिर वहां से आसमान पर रवाना हुये। मंज़िले आसमानी को तय करते हुये एक ऐसी मंज़िल पर पहुंचे जिसके आगे जिबरईल का जाना नामुम्किन हो गया। जिबरईल ने अर्ज़ की हुज़ूर "लौदनूत लता लाहतरक़्ता " अब अगर एक उंगल भी आगे बढ़ूंगा तो जल जाऊंगा।

अगर यक सर मुए बरतर रवम
बनूर तजल्ली, बसोज़द परम

(१) यसरब यानी मदीने में ओस व ख़ज़रज दो अरब क़बीले रहते थे दोनों एक बाप की औलाद थे इनका मसकने क़दीम (निवास स्थान) पुराना यमन थां रसूले करीम जब तक मदीने नहीं पहुंचे यह शहर यसरब के नाम से मशहूर था। ज्योंही रसूले करीम (स.) वहां तशरीफ़ ले गये उसका नाम मदीनतुल रसूल हो गया। फिर बाद में मदीना कहलाने लगा। यह शहर मक्का के शुमाल(उत्तर)की तरफ़ २७० मील की दूरी पर स्थित है।

फिर आप बुराक़ पर सवार आगे बढ़े एक मुक़ाम पर " **बुराक़** " रूक गया और आप " **रफ़रफ** " पर बैठ कर आगे रवाना हो गये। यह एक नूरी तख़्त था जो नूर के दरिया में जा रहा था। यहां तक कि मंज़िले मक़सूद पर आप पहुंच गये। आप जिस्म समैत गये और फ़ौरन वापस आये। कुरान मजीद में " असरा बे अब्देही " आया है। अब्द का इतलाक़ जिस्म और रूह दोनों पर होता है। वह लोग जो मेराजे रूहानी के क़ायल हैं ग़ल्ती पर हैं। (शरए अक़ाएदे नस्फ़ी सफ़ा ६८)मेराज का इक़रार और उसका एतक़ाद जुरूरियाते दीन से है। हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.) फ़रमाते हैं कि जो मेराज का मुन्किर हो उसका हमसे कोई ताअल्लुक़ नहीं। (सफ़ीनतुल बिहार जिल्द २, पृष्ठ १७४) एक रवायत में है कि पहले सिर्फ़ दो नमाज़ें वाजिब थीं। मेराज के बाद पांच वक़्त की नमाज़ें मुक़र्रर हुईं।

बैते उक़बा ऊला

इसी सन् १२ बेअसत के हज के ज़माने में उन ६, आदमीयों में से जो पिछले साल मुसलमान हो कर मदीने वापस गये थे। पांच आदमीयों के साथ सात ७, आदमी मदीने वालों में से और आकर मुर्शरफ़ ब इस्लाम हुए। हज़रत की हिमायत का अहद किया। यह बैएत भी उसी उक़बा के मकान में हुई। जो मक्के से थोडे फ़ासले पर उत्तर की ओर स्थित है। मोअर्रिख़ अबुल फ़िदा लिखता है कि इस अहद पर बैएत हुई कि ख़ुदा का कोई शरीक न करो। चोरी न करो, ज़ेना न करो, अपनी औलाद को क़त्ल न करो। जब वह बैएत कर चुके तो हज़रत ने मुसअब बिन उमैर बिन हाशिम बिन अब्दे मनाफ़ इब्ने अब्द अल अला को तालीमे कुरान और तरीक़ए इस्लाम बताने के लिये नियुक्त किया।

(तारीख़े अबुल फ़िदा जिल्द २, पृष्ठ ५२)

बैएते उक़बए सानिया

१३, बेअसत के ज़िल्हिज्जा के महीने में मुसअब बिन उमैर, ७३ मर्द और दो औरतों को मदीने से लेकर मक्के आये और उन्होंने मक़ामे उक़बा पर रसूले करीम(स.) की ख़िदमत में उन लोगों को पेश किया वह मुसलमान हो चुके थे उन्होंने भी हज़रत की हिमायत का अहद किया और आपके दस्ते मुबारक पर बैएत की, उनमें (ओस और ख़ज़रज) दोनों के लोग शामिल थे।

हिजरते मदीना

१४,बेअसत मुताबिक़ ६२२ ई. में हुकमे रसूल(स.) के मुताबिक़ मुसलमान चोरी छुपे मदीने की तरफ़ जाने लगे। और वहां पहुंच कर उन्होंने अच्छा स्थान प्राप्त कर लिया। कुरैश को जब मालूम हुआ कि मदीने में इसलाम ज़ोर पकड़ रहा है तो (दारूल नदवा) में जमा

होकर यह सोचने लगे कि अब क्या करना चाहिये। किसी ने कहा मोहम्मद को यहीं क़त्ल कर दिया जाय ताकि उनका दीन ही ख़त्म हो जाय। किसी ने कहा जिलावतन कर दिया जाय। अबूजेहल ने राय दी कि विभिन्न क़बीलों के लोग जमा होकर एक साथ उनपर हमला करके उन्हें क़त्ल कर दें। ताकि क़ुरेश खूं बहा न ले सकें। इसी राय पर बात ठहर गई और सबने मिल कर आं हज़रत के मकान का घेराव कर लिया। परवरदिगार की हिदायत के अनुसार जो हज़रत जिबरईल के ज़रिये पहुंची। आपने अपने बिस्तर पर हज़रत अली को लिटा दिया और एक मुट्ठी धूल लेकर घर से बाहर निकले और उनकी आखों में झोंकते हुये इस तरह निकल गये जैसे कुफ्ऱ से ईमान निकल जाय। अल्लामा शिब्ली लिखते हैं कि यह सख़्त ख़तरे का मौक़ा था। जनाबे अमीर को मालूम हो चुका था कि क़ुरेश आपके क़त्ल का इरादा कर चुके हैं। और आज रसूल अल्लाह(स.) का बिस्तरे ख़्वाब क़त्लगाह की ज़मीन है। लेकिन फ़ातेहे ख़ैबर के लिये क़त्लगाह फ़र्शे गुल था।(सीरतुन नबी व मोहसिने आज़म सन्१६५)सुबह होते होते दुश्मन दरवाज़ा तोड़कर घर में घुसे तो अली को सोता हुआ पाया। पूछा मोहम्मद कहां हैं? जवाब दिया जहां हैं ख़ुदा की अमान में हैं। तबरी में है कि अली(अ.) तलवार सूंत कर खड़े हो गये और सब घर से निकल भागे। अहयाअल ऊलूम गेज़ाली में है कि अली की हिफ्ज़त के लिये ख़ुदा ने जिबरईल और मीकाईल को भेज दिया था। यह दोनों सारी रात अली की ख़्वाब गाह का पहरा देते रहे। हज़रत अली का फ़रमाना है कि मुझे शबे हिजरत जैसी नींद आई सारी उम्र न आई थी। तफ़सीरों में है कि इस मौक़े के लिये अ'ायत " **व मिन्न नासे मन यशरी** " नाज़िल हुई है। अलगरज़ आंहज़रत के रवाना होते ही हज़रत अबुबक्र ने उनका पीछा किया आपने रात के अंधेरे में यह समझ कर कि कोई दुश्मन आ रहा है अपने क़दम तेज़ कर दिये। पांव में ठोकर लगी खून बहने लगा। फिर आपने महसूस किया कि इब्ने अबी क़हाफ़ा आ रहे हैं। आप खड़े हो गये। (सही बुख़ारी, जिल्द १ , भाग ३, पृष्ठ ६६) में है कि रसूले ख़ुदा(स.) ने अबू बक्र बिन क़हाफ़ा से एक ऊँट ख़रीदा और मदारिजुल नबूवत में है कि हज़रत अबूबक्र ने दो सौ दिरहम में ख़रीदी हुई ऊँटनी आं हज़रत के हाथ ८००, नौ सौ दिरहम की बेची इसके बाद यह दोनों ग़ारे सौर तक पहुँचे, यह ग़ार मदीने की तरफ़ मक्के से एक घंटे की राह पर ढाई या तीन मील दक्षिण की तरफ़ स्थित है। इस पहाड़ की चोटी तक़रीबन एक मील ऊंची है समुन्द्र वहां से दिखाई देता है। (तलख़ीस सीरतुन नबी, पृष्ठ १६९ व ज़रक़ानी) यह हज़रात ग़ार में दाख़िल हो गये ख़ुदा ने ऐसा किया कि ग़ार के मूँह पर बबूल का पेड़ उगा दिया, मकड़ी ने जाला तना, कबूतर ने अन्डे दे दिये और ग़ार में जाने का शक न रहा। जब दुश्मन इस ग़ार पर पहुँचे तो वह यही सब कुछ देख कर वापस हो गये। अजायब अल क़सस पृष्ठ २५७ में है कि इसी मौक़े पर हज़रत ने कबूतर को ख़ानए काबा पर आकर बसने की इजाज़त दी। इससे पहले और परीन्दों की तरह कबूतर भी ऊपर से गुज़र नहीं सकता था। मुख़्तसर यह कि १, रबीउल अव्वल सन् १४,बेअसत(जुमेरात) के दिन शाम के

वक़्त क़ुरैश ने आंहज़रत के घर का घेराव किया था। सुबह से कुछ पहले २ रबीउल अव्वल जुमे के दिन को ग़ारे सौर में पहुँचे। इतवार के दिन ४ रबीउल अव्वल तक ग़ार में रहे। हज़रत अली (अ.) आप लोगों के लिए रात में खाना पहुँचाते रहे। चौथे रोज़ ५रबीउल अव्वल दोशम्बे के रोज़ अबदुल्ला इब्ने अरीक़त और आमिर बिन फ़हीरा भी आ पहुँचे और यह चारों शख़्स मामूली रास्ता छोड़ कर बहरे कुलज़ुम के किनारे मदीने की तरफ़ रवाना हुए। कुफ़्फ़ारे मदीना ने इनाम मुर्क़र कर दिया कि जो शख़्स उनको ज़िन्दा पकड़ कर लाएगा या उनका सर काट कर लाएगा तो १०० ऊँट इनाम में दिए जाएंगे इस पर सराक़ा इब्ने मालिक आपकी खोज लगाता हुआ ग़ार तक पहुँचा। उसे देख कर हज़रत अबूबक्र रोने लगे। तो हज़रत ने फ़रमाया रोते क्यों हो " ख़ुदा हमारे साथ है " सराक़ा क़रीब पहुंचा ही था कि उसका घोड़ा उसके ज़ानू तक ज़मीन में धंस गया उस वक़्त हज़रत रवानगी के लिये बाहर आचुके थे। उसने माफ़ी मांगी। हज़रत ने माफ़ी दे दी। घेड़ा ज़मीन से निकल आया। वह जान बचा कर भागा और काफ़िरों से कह दिया कि मैंने बहुत तलाश किया मगर मोहम्मद (स.) का पता नहीं मिलता। अब दो ही सूरतें हैं। " या ज़मीन में समा गये या आसमान पर उड़ गये। (१)

हज़रत का क़बा के स्थान पर पहुंचना :- १२, रबीउल अव्वल यौमे दोशम्बा दोपहर के समय आप क़बा के स्थान पर पहुंचे जो मदीने से दो मील के फ़ासले पर एक पहाड़ी है। आपका ऊंट उस जगह ख़ुद ही रूक गया और आगे न बढ़ा। आप उतर पड़े । वहां के रहने वालों ने ख़ुशी के मारे नारए तकबीर बलन्द किया। आपने यहां एक मस्जिद की बुनियाद डाली।

इसी मक़ाम पर हज़रत अली (अ.) भी मक्के से अमानतों की अदायगी से सुबुक दोशी हासिल करने के बाद आ पहुंचे। आपके साथ औरतें और बच्चे थे। औरतें और बच्चे ऊंटों पर सवार थे और हज़रत अली (अ.) पैदल थे। इसी वजह से आपके पैरों पर वरम था। और बक़ौल इब्ने ख़लदून आपके पैरों से ख़ून जारी था। आं हज़रत की नज़र जब अली के पैरों पर पड़ी तो आप रोने लगे और लोआबे दहन(थूक) लगा कर अच्छा कर दिया।

मदीने में दाख़िला :- मक़ामे क़ुबा में चार दिन रूकने के बाद आप मदीने की तरफ़ रवाना हुये और १६, रबीउल अव्वल जुमे के दिन मदीने में दाख़िल हो गये। महल्ले बनी सालिम में नमाज़ का वक़्त आ गया आपने नमाज़े जुमा यहीं अदा फ़रमाई। यह इस्लाम में सबसे पहली नमाज़े जुमा थी। यह वही जगह है जहां अब भी मस्जिदे नबवी है।

मस्जिदे नबवी की तामीर :- मदीने में दाख़िले के बाद आपने सबसे पहले एक मस्जिद की बुनियाद डाली जो बहुत सादगी के साथ तैयार की गयी। उसकी ज़मीन अबू अय्यूब अंसारी ने ख़रीदी और उसमें मज़दूरों की हैसियत से दूसरे असहाब के साथ आं हज़रत (स.) भी काम करते रहे। मस्जिद के साथ साथ हुजरे भी तैयार किये गये और एक चबूतरा जिसे सुफ़्फ़ा कहते थे, यही वह जगह थी जहां नये मुस्लमान ठहराये जाते थे। उन्हीं लोगों

को असहाबे सुफ़्फ़ा कहा जाता था और उनकी परवरिश सदक़े वग़ैरा से की जाती थी।

नमाज़ व ज़कात का हुक्म :- मस्जिदे नबवी की तामीर के बाद नमाज़ की रकअतों को भी तय कर दिया गया यानी पहले मग़रिब के अलावा सब नमाज़ें दो रकअती थीं। फिर १७, रकअतें मुअय्यन कर दी गईं और उनके औक़ात बता दिये गये। इब्ने ख़लदून के अनुसार इसी साल ज़कात भी फ़र्ज़ की गई।

एक १, हिजरी के महत्वपूण वाक़ेयात

अज़ान व अक़ामत :-एक हिजरी में अज़ान मुक़र्रर की गई,जिसे हज़रत अली ने हुक्मे रसूल (स.) से बिलाल(र.) को तालीम कर दी और वह मुस्तक़िल मोअज़्ज़िन क़रार पाये और अक़ामत का तक़र्रूर भी हुआ।

अक़्दे मवाख़ात :- हिजरत के ५ या ८ महीने बाद महाजेरीने मक्का की दिलबस्तगी के लिये आंहज़रत ने ५० महाजिर व अनसार में मवाख़ात (भाई चारगी) क़ायम कर दी। जिस तरह एक बार मक्का में कर चुके थे। तारीख़े ख़मीस और रियाज़ुल नज़रा में है कि वहां हज़रत अबूबक्र (र.) को उमर(र.) का तलहा को ज़ुबैर(र.) का ,उस्मान(र.) को अब्दुल रहमान का,हमज़ा को इबने हारसा का और अली(अ.) को ख़ुद अपना भाई बनाया था। अल्लामा शिब्ली का कहना है कि आंहज़रत ने इत्तेहादे मज़ाक़ तबीयत और फ़ितरत के लेहाज़ से एक दूसरे को भाई बनाया था। मज़ाक़े नबूवत का इत्तेहाद फ़ितरते इमामत ही से हो सकता है। इसी लिये आंहज़रत(स.) ने हर मरतबा अपना भाई अली (अ.) को ही चुना। यही वजह है कि आंहज़रत (स.) हज़रत अली(अ.) से फ़रमाया करते थे।

" अन्तः अख़ी फ़िद् दुनिया वल आख़ेरः "

" यानी दुनिया और आख़ेरत दोनों में मेरे भाई हो। "

२, हिजरी के महत्वपूण वाक़ेयात

जनाबे सय्यदा का निकाह :- १५, रजब २, हिजरी को जनाबे सय्यदा का अक़्द हज़रत अली(अ.) से हुआ और १६, ज़िलहिज्जा को आपकी रूख़सती हुई। सीरतुन नबी में है कि जब जनाबे सय्यदा(स.) की शादी की बात चली तो सबसे पहले हज़रत अबूबक्र (र.) फिर हज़रत उमर (र.) ने पैग़ाम भेजा। कन्ज़ुल आमाल ७, पृष्ठ ११३ में है कि इन पैग़ामात से आंहज़रत ग़ज़बनाक हुये और उनकी तरफ़ से मुँह फेर लिया। रियाज़ुल नज़रा

जिल्द २, पृष्ठ १८४ में है कि आंहज़रत (स.) ने हज़रत अली (अ.) से खुद फ़रमाया कि ऐ अली मुझसे खुदा ने कह दिया है कि फ़ात्मा (स.) की शादी तुम्हारे साथ कर दूँ। क्या तुम्हें मन्जूर है। अर्ज़ की बेशक, अलगरज़ अक़्द हुआ और शहनशहे कायनात ने सय्यदए आलमयान को एक बान की चारपाई, एक चमड़े का गद्दा, एक मशक, दो चक्कियां, दो मिट्टी के घड़े वग़ैरा दे कर रूख़सत किया। इस वक़्त अली (अ.) की उम्र २४, साल और फ़ात्मा (स.) की उम्र १०,साल थी।

तहवीले काबा :- माहे शाबान २, हिजरी में बैतुल मुक़द्दस की तरफ़ से क़िबले का रूख़ काबे की तरफ़ मोड़ दिया गया। क़िबला चूंकि आलमे नमाज़ में बदला गया। इस लिये आंहज़रत (स.) का साथ हज़रत अली (अ.) के अलावा और किसी ने नहीं दिया। क्योंकि वह आं हज़रत के हर फ़ेल व क़ौल को हुकमे खुदा समझते थे। इसी लिये आप मक़ामे फ़ख़्र में फ़रमाया करते थे। **" इन्ना मुसल्ली अल क़िबलतैन "** मैं ही वह हूँ जिसने एक नमाज़ बयक वक़्त (एक ही समय) में दो क़िब्लों की तरफ़ पढ़ी।

जेहाद :- जब क़ुरैश को मालूम हुआ के रसूले इस्लाम(स.) बख़ैर व ख़ूबी मदीना पहूंच गये और उनका मज़हब दिन दूनी रात चौगनी तरक़्क़ी कर रहा है। तो उनकी आंखों में खून उतर आया और दुनिया अंधेर हो गई। और वह मदीने के यहूदियों के साथ मिल कर कोशिश करने लगे कि इस बढ़ती हुई ताक़त को कुचल दें। इसके नतीजे में हजरत को मुशरेकीन क़ुरैश और यहूदियों के साथ बहुत सी देफ़ाई (आत्म रक्षक) लड़ाईयां लड़नी पड़ीं। जिनमें से अहम मौक़ों पर हज़रत खुद फ़ौजे इस्लाम के साथ तशरीफ़ ले गये। ऐसी मुहिमों को **" ग़ज़वा "** कहते हैं और जिन मौक़ों पर आप असहाब में से किसी को फ़ौज का सरदार बना कर भेज दिया करते थे उनको **" सरिया "** कहा जाता है। ग़ज़वात की कुल संख्या २६ है। जिनमें **बद्र, ओहद, ख़न्दक़, ख़ैबर और हुनैन** बहुत मशहूर हैं। और सरियों की संख्या ३६थी। जिनमें सबसे मशहूर **" मौता "** है। जिसमें हज़रते जाफ़रे तय्यार शहीद हुये।

जंगे बद्र :- मदीनए मुनव्वरा से तक़रीबन ८० मील पर बद्र एक गांव था। मदीने में ख़बर पहुँची कि क़ुरैश बड़ी आमादगी के साथ मदीने पर हमला करने वाले हैं। और सुन्ने में आया कि अबू सुफ़ियान ३० सवारों के साथ हज़ार आदमियों के क़ाफ़िले को लेकर शाम से व्यापार का सामान मक्के लिये जा रहा है और मदीने से गुज़रेगा। हज़रत रसूले खुदा(स.) ३१३ साथियों के साथ रवाना हुये और मक़ामे बद्र पर जा उतरे। क़ुरैश ९५० आदमियों की टोली के साथ अबुसुफ़ियान से मिलने के लिये रवाना हुये। लड़ाई हुई खुदा ने मुसलमानों को मद्द दी, जिस्से इनको जीत हुई। ७० कुफ़्फ़ार मारे गये और ७० ही गिरफ़्तार हुये। ३६, काफ़िरों को हज़रत अली(अ.) ने क़त्ल किया। इस लड़ाई में **अबू जेहेल** और उसका भाई **आस** और **अतबा, शैबा , वलीद बिन अतबा** और इस्लाम के बहुत से दुश्मन मारे

गये। इस पहली इस्लामी जंग के अलम बरदार हज़रत अली(अ.) थे। क़ैदियों में नसर बिन हारिस और ओक़बा बिन अबी मूईत क़त्ल कर दिये गये। और बाक़ी लोगों को ज़रे फ़िदया (फ़िदये का पैसा) लेकर छोड़ दिया गया। हज़रत अबू बक्र ने इस ग़ज़वे में जंग नहीं की। ग़ज़वए बद्र के बाद कुफ़्फ़ार का घर घर मातम कदा बन गया। और मरने वालों के बदले का जज़्बा (भावनाएं) मक्के के बूढ़े और जवानों में पैदा हो गया। जिसके नतीजे में ओहद की जंग हुयी।

यह जंग रमज़ान के महीने २, हिजरी में हुई। इसी २, हिजरी में रोज़े फ़र्ज़ किये गये, ईद-अल-फित्र के अहकाम(नियम) लागू हुये और ग़ज़वए बनू क़ैनक़ाः से वापसी पर ईद-अल-अज़हा के आदेश आये और ख़ुम्स वाजिब किया गया।

३, हिजरी के अहम वाक़ेयात

जंगे ओहद :- जंगे बद्र का बदला लेने के लिये अबू सुफ़ियान ने तीन हज़ार(३०००) की फ़ौज से मदीने पर चढ़ाई की। एक हिस्से का अकरमा इब्ने अबी जेहेल और दूसरे का ख़ालिद बिन वलीद सरदार था। आं हज़रत(स.) के साथ पूरे एक हज़ार आदमी भी न थे। " **ओहद** " पर लड़ाई हुई जो मदीने से ६,मील की दूरी पर है। आंहज़रत (स.) ने मुस्लमानों को ताकीद कर दी थी के कामयाबी के बाद भी पुश्त (पीछे) के तीर अंदाज़ों का दस्ता अपनी जगह से न हटे, मुस्लमानों की जीत होने को थी ही कै तीर अंदाज़ों का वही दस्ता जिसके हटने को मना किया था ख़ुदा और रसूल(स.) के हुक्म की ख़िलाफ़ वरज़ी करके माले ग़नीमत(जंग जीतने पर प्राप्त धन दौलत) की लालच में अपनी जगह से हट गया। जिसके नतीजे में निश्चित जीत हार में बदल गई। हज़रत हमज़ा ,असद उल्लाह शहीद हो गये। मैदान में भगदड़ पड़ गई, बड़े बड़े पहलवान और अपने को बहादुर कहने वाले मैदाने जंग छोड़ के भाग गये। और किसी ने रसूले इस्लाम(स.) की ओर ध्यान न दिया। तारीख़ में है कि तमाम सहाबा रसूले ख़ुदा(स.) को मैदाने जंग में छोड़ कर भाग गये। बरवायते अल याक़ूबी की पृष्ठ ३६ की रवायत के अनुसार केवल तीन सहाबी रह गये। जिनमें हज़रत अली (अ.) और दो और थे। बुख़ारी की रवायत के अनुसार हज़रत अबू बक्र और हज़रत उमर और हज़रत उस्मान भी भाग निकले। दुर मनशूर जिल्द २, पृष्ठ ८८, कंजुल आमाल जिल्द १, पृष्ठ २३८ में है कि हज़रत अबूबक्र पहाड़ की चोटी पर चढ़ गये थे। वह कहते हैं के मैं चोटी पर इस तरह उचक रहा था जैसे पहाड़ी बकरी उचकती है। क़ुराने मजीद में है कि यह सब भाग रहे थे और रसूल(स.) चिल्ला रहे थे के मुझे अकेला छोड़ कर कहां जा रहे हो मगर कोई पलट कर नहीं देखता था। (पारा ४, रूकू ७, आयत १५३) एक दुश्मन ने गोफने में पत्थर रख कर आंहज़रत की तरफ़ फेका जिसकी वजह से आपके दो दांत शहीद हो गये और माथे पर काफ़ी चोटें आईं। तलवारें लगने के कारण कई घाव भी हो गये और आप(स.) एक गढ़े में

गिर पड़े। जब सब भाग रहे थे, उस समय हज़रत अली(अ.) जंग कर रहे थे और रसूल (स.) की हिफ़ाज़त भी कर रहे थे। आख़िर कार कुफ़्फ़ार को हटा कर आं हज़रत (स.) को पहाड़ी पर ले गये। रात हो चुकी थी। दूसरे दिन सुबह के वक़्त मदीने को रवानगी हुई। इस जंग में ७०, मुस्लमान मारे गये और ७०, ही ज़ख़्मी हुये और कुफ़्फ़ार सिर्फ़ ३०, क़त्ल हुये जिनमें १२ काफ़िर अली के हाथ से क़त्ल हुये। इस जंग में भी अलमदारी का ओहदा(पद) शेरे ख़ुदा हज़रत अली (अ.) के ही सुपुर्द था।

मुवर्रेख़ीन का कहना है कि हज़रत अली (अ.) महवे जगं रहे आपके जिस्म पर सोलह ज़रबें लगीं और आपका एक हाथ टूट गया था। आप बहुत काफी ज़ख्मी होने के बावजूद तलवार चलाते और दुश्मनों की सफो को उलटते ताजे थे। (सीरतुन नबी जि०१ सफ़ा २७७)। इसी दौरान में आँहज़रत ने फ़रमाया। "अली तुम क्यों नहीं भाग जाते। "अर्ज़ की मौला" क्या ईमान के बाद कुफ़्र एख़्तेआर कर लूँ। (मदारिज-अल-नबूवतः) मुझे तो आप पर कुर्बान होना है। इसी मौक़े पर अली (अ.) की तलवार टूटी थी और **ज़ुल्फ़ेक़ार** दस्तयाब हुई थी। (तारीख़ तबरी जिल्द ४, पृष्ठ ४०६ व तारीख़े कामिल जिल्द २, पृष्ठ ५८)

" नादे अली " का नुज़ूल भी एक रवायत की बिना पर इसी जंग में हुआ था। मुवर्रेख़ीन का कहना है कि आं हज़रत(स.) के ज़ख़्मी होते ही किसी ने यह ख़बर उड़ा दी कि आं हज़रत (स.) शहीद हो गये। इस ख़बर से आपके फ़िदाई मक़ामे ओहद पर पहुँचे जिनमें आपकी लख़्ते जिगर हज़रत फ़ातमा (र.) भी थीं।

कसीर तवारीख़ में है कि दुश्मनाने इस्लाम की औरतों ने मुस्लिम लाशों के साथ बुरा सुलूक किया। अमीरे माविया की मां ने मुस्लमान लाशों के नाक कान काट लिये और उनका हार बना कर अपने गले में डाला। और अमीर हमज़ा का जिगर निकाल कर चबाया। इसी लिये मादरे माविया हिन्दा को जिगर ख़्वारा (जिगर खाने वानी) कहते हैं।

मदीना मातम कदा बन गया :- अल्लामा शिब्ली लिखते हैं कि आं हज़रत मदीने में तशरीफ़ लाये तो तमाम मदीना मातम कदा था। आप जिस तरफ़ से गुज़रते थे घरों से मातम की आवाज़ें आती थीं। आपको इबरत हुई कि सबके रशितेदार मातम दारी का फ़र्ज़ अदा कर रहे हैं लेकिन हमज़ा का कोई नौहा ख़्वां नहीं है। रिक़्क़त के जोश में आपकी ज़बान से बे इख़्तेयार निकला **" अमा हमज़ा फलाबोवा की लहा "** अफ़सोस हमज़ा को रोने वाला कोई नहीं। अन्सार ने अल्फ़ाज़ सुने तो तड़प उठे। सबने जा कर अपनी औरतों को हुक्म दिया कि वह हुज़ूर के दौलत कदे पर जाकर हज़रत हमज़ा का मातम करें। आं हज़रत (स.) ने देखा तो दरवाज़े पर परदा नशीनान की भीड़ थी और हमज़ा का मातम बलंद था। इनके हक़ में दुआये ख़ैर की और फ़रमाया कि मैं तुम्हारी हमदर्दी का शुक्र गुज़ार हूँ। (सीरतुन नबी जिल्द न० १, पृष्ठ न० २८३) यह जंग मंगल के दिन १५, शव्वाल ३, हिजरी में हुई है। हज़रत इमाम हसन(अ.) पैदा हुये और रसूले ख़ुदा (स.) का निकाह हफ़सा बिन्ते उम्र के साथ हुआ।

और ग़ज़वए (अहमर-अल-असद) के लिये आप बरामद हुये। हज़रत अली(अ.) अलमबरदार थे।

४, हिजरी के अहम वाक़ेयात

मोहर्रम ४, हिजरी में बनी असद ने मदीने पर हमला करना चाहा। जिसे रोकने के लिये आपने अबू सलमा को भेजा। उन्होंने दुश्मनों को मार भगाया। फिर सुफ़ियान बिन ख़ालिद ने हमले का इरादा किया जिसके मुक़ाबले के लिये अबदुल्ला इब्ने अनीस भेजे गये।

वाक़्ये बीरे मावूना :- सफ़र ४, हिजरी में अबू बरा आमिर बिन मालिक कलाबी की दरख़्वास्त पर आंहज़रत(स.) ने ७०, अंसार को तबलीग़ के लिये उन्हीं के साथ रवाना किया। यह लोग मक़ामे बीरे मावूना पर ठहरे जो मदीने से ४, मंज़िल के फ़ासले पर वाक़े है। और एक शख़्स आमिर बिन तुफ़ैल के पास भेजा उसने क़ासिद को क़त्ल कर दिया। फिर एक बड़ा लशकर भेज कर मौत के घाट उतार दिया।

ग़ज़्वा बनी नुज़ैर :- उमर बिन उमैया ने क़बीलए आमिर के दो आदमी क़त्ल कर दिये थे। और उनका ख़ून बहा अब तक बाक़ी था। तबरी की रवायत के अनुसार आंहज़रत उसके मुतालिबे के लिये कुछ असहाब के साथ बनी नुज़ैर के पास गये उन्होंने मुतालिबा तो क़ुबूल कर लिया मगर आपको क़त्ल कर देने का यह ख़ुफ़िया प्रोग्राम बनाया। कि एक शख़्स कोठे पर जाकर एक भारी पत्थर आप पर गिरा दे। चुनांचे उमर बिन हज्जाश यहूदी बाला ख़ाने पर गया। हज़रत को इसकी इत्तेला मिल गई। और आप वहां से मदीना तशरीफ़ ले आये। बनी नुज़ैर एक क़िले में रहते थे। जिसका नाम ज़हरा था। यह क़िला मदीने से ३, मील के फ़ासले पर था। हज़रत ने इसकी इस ग़ल्त हरकत की वजह से जिला वतनी का हुक्म दे दिया। आपने कहला भेजा कि १० दिन के अन्दर यह जगह ख़ाली करो। उन्होंने अब्दुल्लाह बिन अबी ख़िरजी मुनाफ़िक के बहकाने से बात न मानी। क़िले का घिराव कर लिया गया। आख़िर वह लोग ६, दिन में वहां से भाग गये।

ग़ज़्वा ज़ातुल रूक़ा :- इसी ४, हिजरी जमादिल अव्वल के महीने में क़बीलए " इनमारो साअलबतः " और " ग़त्फ़ान " ने मदीने पर हमला करना चाहा। आंहज़रत (स.) असहाब को लेकर उनको आगे बढ़ने से रोकने के लिये आगे बढ़े, लेकिन वह सामने न आये और भाग निकले। इसी मौक़े पर एक शख़्स ने क़त्ल के इरादे से आंहज़रत (स.) से तलवार मांगी थी और आपने दे दी थी, मगर वह क़त्ल की हिम्मत न कर सका। (अबुल फ़िदा, जिल्द २, पृष्ठ ८८) इसी ४, हिजरी में ग़ज़्वा बद्र सानी (दूसरी बद्र) भी पेश आया लेकिन जंग नहीं हुई। इस ग़ज़्वे में भी हज़रत अली (अ.) अलम बरदार थे। इसी साल शाबान के महीने में हज़रत इमाम हुसैन (अ.) पैदा हुये और उम्मे सलमा (र.) का रसूले करीम (स.) के साथ अक़्द हुआ और फ़ात्मा बिन्ते असद ने वफ़ात पाई।

५, हिजरी के अहम वाक़ेयात

जंगे ख़न्दक़ :– इस जंग को ग़ज़वए अहज़ाब भी कहते हैं। यह जंग ज़ीक़ाद ५, हिजरी में वाक़े हुई है। इसकी तफसील के मुतालुक़ अरबाबे तवारीख़ लिखते हैं कि मदीने से निकाले हुए बनी नुज़ैर के यहूदी जो ख़ैबर में ठहरे हुए थे वह शब व रोज़ और सुबह शाम मुस्लमानों से बदला लेने के लिए इसकीमे बनाया करते थे। वह चाहते थे कि कोई ऐसी श्कल पैदा हो जाए जिससे मुसलमानो का तुख़्म तक ना रहे। चुनान्चे उसमें से कुछ लोग मक्का चले गए और अबू सुफ़ियान को बुलाकर बनी ग़तफ़ान और क़ैस से रिश्तए अख़ूवत क़ाएम कर लिया और एक मोआहेदे में यह तय किया कि हर क़बीले के सूरमा इकठ्ठा हो कर मदीने पर हमला करें ताकि इस्लाम की बढ़ती हुई ताक़त का क़ला कमा हो जाए। स्कीम मुकम्मल होने के बाद इसको अमली जामा पहनाने के लिए अबू सुफ़ियान चार हज़ार का लश्कर लेकर मक्का से निकला और यहूदियों के दीगर क़बाएल ने ६ हज़ार के लश्कर से पेश क़दमी की। ग़रज़कि १० हज़ार की जमीयत मदीने पर हमला करने के इरादे से आगे बढ़ी।

आँहज़रत को इस हमले की इत्तेला पहले हो चुकी थी। इसी लिए आपने मदीने से निकल कर कोहे सिला को पुश्त पर ले लिया और जनाबे सलमाने फ़ारसी की राय से पांच गज़ चौड़ी और पांच गज़ गहरी खन्दक़ खुदवाई और ख़न्दक़ खोदने में खुद भी कमाले जँफिशानी के साथ लगे रहे। इस जंग में अन्दरूनी ख़लफ़िशार और मुनाफ़िक़ों की रेशादवानियां भी जारी रहीं। जलालउद्दीन सेवती का कहना है कि अन्दरूनी हालात की हिफ़ाज़त के लिए आँहज़रत ने जनाबे अबू बक्र (र.) फिर उमर (र.) को भेजना चाहा लेकिन इन हज़रात के इन्कार कर देने की वजह से हज़रत ने हुज़ैफ़ा को भेजा। (दुर्रे मन्शूर, जिल्द ५, पृष्ठ १८५)

ख़न्दक़ की खुदाई का काम ६, रोज़ तक जारी रहा। ख़न्दक़ तैय्यार हुई ही थी कि कुफ़्फ़ार का एक बड़ा लशकर आ पहुँचा। लशकर की कसरत देख कर मुस्लमान घबरा गये। कुफ़्फ़ार यह हिम्मत तो न कर सके कि मुस्लमानों को एक दम से हमला करके तबाह कर देते लेकिन इक्का दुक्का ख़न्दक़ पार करके हमला करने की कोशिश करते रहे। और यह सिलसिला २० दिन तक चलता रहा। एक दिन उमरो बिन अबदोवुद जो लवी बिन ग़ालिब की नस्ल से था और अरब में एक हज़ार बहादुरों के बराबर माना जाता था ख़न्दक़ फांद कर लशकरे इस्लाम तक आ पहूँचा। और " **हल मिन मुबारिज़** " की सदा दी। **उमरो बिन अबदोवुद** की आवाज़ सुनते ही उमर बिन ख़त्ताब ने कहा कि यह तो अकेला एक हज़ार डाकुओं का मुक़ाबला करता है। यानी बहुत ही बहादुर है। यह सुन कर मुस्लमानों के रहे सहे होश भी जाते रहे। पैग़म्बरे इस्लाम (स.) ने इसके चैलेंज पर लश्करे इस्लाम को मुख़ातिब कर के मुक़ाबले की हिम्मत दिलाई। लेकिन एक नौजान बहादुर के अलावा कोई न सनका।

तारीखे ख़मीस,रौज़तुल अहबाब, और रौज़तुल सफ़ा में है कि तीन मरतबा आंहज़रत(स.)ने अपने असहाब को मुक़ाबले के लिये निकलने की दावत दी मगर हज़रत अली (अ.) के सिवा कोई न बोला। तीसरी मरतबा आपने अली (अ.) से कहा कि यह उमरो बिन अबदवुद है। आपने अर्ज़ की मैं भी अली इब्ने अबी तालिब हुँ।

अलगरज़ आंहज़रत(स.) ने हज़रत अली(अ.) को मैदान में निकलने के लिये तैय्यार किया। अपनी ज़ेरह पहनाई अपनी तलवार कमर में डाली, अपना अमामा अपने हाथों से अली (अ.) के सर पर बांधा और दुआ के लिये हाथ उठा कर अर्ज़ की ,ख़ुदाया जंगे बद्र में उबैदा को, जंगे ओहद में हमज़ा को दे चुका हूँ। पालने वाले अब मेरे पास अली (अ.) रह गये हैं। मालिक ऐसा न हो कि आज इनसे भी हाथ धो बैठूँ। दुआ के बाद अली(अ.) को पैदल रवाना किया और साथ ही साथ कहा "**बरज़ल ईमान कुल्लहू इल्ल कुफ़्र कुल्लहू**" आज कुल्ले ईमान कुल्ले कुफ़्र के मुक़ाबले में जा रहा है। (हेयातुल हैवान जिल्द १, पृष्ठ २३८ व सीरते मोहम्मदिया जिल्द २, पृष्ठ १०२)

अलग़रज़ आप रवाना होकर उमरो के मुक़ाबले में पहूँचे। अल्लामा शिब्ली का कहना है के हज़रत अली (अ.) ने उमरो से पूछा के क्या सच में तेरा यह क़ौल है कि मैदाने जंग में अपने मुक़ाबिल की तीन बातों में से एक बात ज़ुरूर क़ुबूल करता है। उसने कहा हां। आपने फ़रमाया कि अच्छा " इस्लाम क़ुबूल कर " उसने कहा " ना मुमकिन " फिर फ़रमाया! अच्छा " मैदाने जंग से वापस जा " उसने कहा " यह भी नहीं हो सकता "। फिर फ़रमाया! अच्छा " घोड़े से उतर आ और मुझसे जंग कर " वह घोड़े से उतर पड़ा, लेकिन कहने लगा मुझे उम्मीद न थी कि आसमान के नीचे कोई शख़्स भी मुझसे यह कह सकता है जो तुम कह रहे हो। मगर देखो मैं तुम्हारी जान नहीं लेना चाहता। ग़रज़ जंग शुरू हो गई और सत्तर वारों की नौबत आई, बिल आख़िर उसकी तलवार अली(अ.) की सिपर काटती हुई सर तक पहूँची। हज़रत अली (अ.) ने जो संभल कर हाथ मारा तो उमरो बिन अब्दवुद ज़मीन पर लोटने लगा। मुस्लमानों को इस दस्त ब दस्त लड़ाई की बड़ी फ़िक्र थी। हर एक दुआऐं मांग रहा था। जब उमरो से हज़रत अली (अ.) लड़ रहे थे तो ख़ाक इस क़द्र उड़ रही थी कि कुछ नज़र न आता था। गरदो ग़ुबार में हाथों की सफ़ाई तो नज़र न आई हां तकबीर की आवाज़ सुन कर मुस्लमान समझे कि अली (अ.) ने फ़तह पाई।

उमरो इब्ने अब्दवुद मारा गया और उसके साथी ख़न्दक़ कूद कर भाग निकले। जब फ़तह की ख़बर हज़रत(स.) तक पहूँची, तो आप ख़ुशी से बाग़ बाग़ हो गये। इस्लाम की हिफ़ाज़त और अली (अ.) की सलामती की ख़ुशी में आपने फ़रमाया।

" **ज़रबते अली यौमुल ख़न्दक़ अफ़ज़ल मिन इबादतुल सक़लैन** "

आज की एक ज़रबते अली (अ.) मेरी सारी उम्मत वह चाहे ज़मीन में बस्ती हो या आसमान में रहती हो, की तमाम इबादतों से बेहतर है।

बाज़ किताबों में है कि उमरो बिन अब्द वुद के सीने पर हज़रत अली (अ.) सवार होकर सर काटना ही चाहते थे कि उसने चेहरए अक्दस पर लोआबे दहन से बे अदबी की हज़रत को गुस्सा आ गया। आप यह सोच कर फ़ौरन सीने से उतर आये कि कारे ख़ुदा में जज़्बए नफ़्स शामिल हो रहा था, जब गुस्सा ख़त्म हुआ तब सर काटा और ज़ेरह उतारे बग़ैर ख़िदमते रिसालत माआब में जा पहूँचे। आंहज़रत (स.) न अली(अ.) को सीने से लगा लिया। जिबरईल ने बारवायत सुलैमान कनदूज़ी, आसमान से अनार लाकर तोहफ़ा इनायत किया। जिसमें हरे रंग का रूमाल था। और उस पर **" अली वली अल्लाह "** लिखा हुआ था।

हज़रत अली(अ.) मैदाने जंग से कामयाबो कामरान वापस हुये और उमरो बिन अब्दवुद की बहन भाई की लाश पर पहूँची और ख़ोदो ज़िराह बदस्तूर उसके जिस्म पर देख कर कहा **" मा क़त्लहा अला कफ़्वुन करीम "** इसे किसी बहुत ही मोअज़्ज़िज़(आदरणीय) बहादुर ने क़त्ल किया है। उसके बाद कुछ शेर पढ़े, जिनका मतलब यह है कि ऐ उमरो, अगर तुझे इस क़ातिल के अलावा कोई और क़त्ल करता तो मैं सारी उम्र(जीवन भर) तुझ पर रोती। माआरेजुन नबूवतः और रौज़तुल सफ़ा में है कि फ़तेह के बाद जब हज़रत अली(अ.) वापस हुय तो हज़रत अबू बक्र (र.) और उमर(र.) ने उठ कर आपकी पेशानी मुबारक को बोसा दिया।

ग़ज़्वए बनी मुस्तलक़ और वाक़िए अफ़क :- आंहज़रत को इत्तेला मिली कि क़बीलए मुस्तलक़ मदीने पर हमला करना चाहता है। आपने उसे रोकने के लिये २, शाबान ५,हिजरी को इनकी तरफ़ बढ़े। हज़रत अली (अ.) अलमदारे लशकर थे। घमसान की जंग हुई, मुस्लमान कामयाब हुये। वापसी के मौक़े पर हज़रत आयशा(र.) इसी जंगल में रह गईं। जो बाद में एक शख़्स **"सफ़्वान इब्ने माअतल"** के साथ ऊँट पर बैठ कर आंहज़रत तक पहुचीं। आंहज़रत(स.) ने इसे महसूस किया और लोगों ने शुकूक का चरचा कर दिया। बारवायत तारीख़े आइम्मा आंहज़रत(स.) को भी शक हो गया था। और आप कुछ समय तक कशीदा(नाराज़) रहे फिर फ़रमाया मुझे जहां तक मालूम है मैं अपनी बीवी में सिवाय नेकी और भलाई कुछ नहीं पाता और जिस मर्द यानी सफ़्वान इब्ने माअतल के बारे में जो लोग चरचा करते हैं मैं इसमें भी किसी तरह की ख़राबी नहीं पाता, वह बे शक मेरे घर में आमदो रफ़्त रखता था, मगर हमेशा मेरे हुज़ूर में। (उम्महात - उल -उम्मा पृष्ठ १६६)

इसी ५, हिजरी में ग़ज़्वह बनी क़ुरैज़ा , सरया , सैफ़-अल-बहर, ग़ज़्वए बनी अयान भी वाक़े हुये हैं और तयम्मुम का हुक्म भी नाज़िल हुआ है। और बक़ौल मुहीउद्दीन इब्ने अरबी इसी ५, हिजरी में सफ़रे ख़न्दक़ के मौक़े पर आंहज़रत(स.) ने ख़ुद अज़ान में **" हय्या अला ख़ैरिल अमल "** का हुक्म दिया। किबरियत अहमर बर हाशिया अल वियाक़ियत वल जवाहर, जिल्द १, पृष्ठ ४३, व मोअल्लिमे तरजुमा, मुस्लिम पृष्ठ ५२८, व कनज़ुल आमाल, जिल्द ४, पृष्ठ २२६ वाज़े हो कि **"हय्या अला ख़ैरिल अमल"**रसूले करीम(स.)

की तशकीले अज़ां का जुज़ है, लेकिन हज़रत उमर(र.) ने उसे अपने अहद में अज़ान से ख़ारिज(निकाल) कर दिया। मुलाहेज़ा हो। (नील अल वतारा , इमामे शोकानी, जिल्द १ , पृष्ठ ३३६, व सही मुस्लिम मुतारज्जिम, जिल्द २, पृष्ठ १०)

६ , हिजरी के अहम वाक़ेयात

सुलेह हुदैबिया :–ज़ीक़ाद ६, हिजरी मुताबिक़ ६२८, ई० में आंहज़रत(स.) हज के इरादे से मक्के की तरफ़ चले, क़ुरैश को ख़बर हुई तो जाने से रोका, हज़रत एक कुएं पर जिसका **हुदैबिया** नाम था। रूक गए और असहाब से जां निसारी की बैअत ली। इसी को **"बैत-अल-रिज़वान"** कहते हैं और बैअत करने वालों को असहाबे सुमरा से ताबीर किया जाता है। क़ुरैश के ऐलची **"उरवा"** ने कहा कि इस साल हज से बाज़ आएं और यह भी कहा कि मैं आपके हमराह ऐसे लोग देख रहा हूँ जो ओबाश हैं और जगं से भाग निकलेंगे यह सुनकर हज़रत अबूबक्र ने बज़रआलात चूसने की गाली दी। इसके बाद आँहज़रत बा रवाएत इब्ने असीर हज़रत उमर को क़ुरैश के पास इसलिए भेजना चाहा कि वह उन्हें समझा बुझा कर सुलह करने पर राज़ी कर लें। लेकिन वह ना गए और हज़रत उस्मान को भेजने की राए दी हज़रत उस्मान जो अबू सुफ़यान के भतीजे थे। इनके पास गए इनकी अच्छी तरह आव भगत हुई लेकिन आख़िर में गिरफ़तार हो गए और जल्दी छूट कर चले आए। अख़िर उमरो क़ुरैश की तरफ़ से पैग़ामे सुलह लाया और हज़रत ने सुलह कर ली। सुलह नामा हज़रत अली (अ.) ने लिखा है। तरफ़ैन से शहादतें ले ली गयीं। इस सुलह के बाद क़ुरैश बे खटके मुसलमान होने लगे। और मक्के में बिला मज़ाहमत क़ुरान पढ़ा जाने लगा। क्योंकि अमन क़ाएम हो गया और रसूल(स.) का नाम लेना जुर्म ना रहा। एक दूसरे से मिलने लगे। और इस्लाम का नया दौर शुरू हो गया। (तारीख़े ख़मीस जिल्द २ पृष्ठ १५ और द्उ्रे मनशूर जिल्द ६ पृष्ठ ७७ में है कि सुलेह हुदैबिया के बाद हज़रत उमर ने कहा कि मोहम्मद(स.) की नबूवत में जैसा मुझे आज शक हुआ है कभी नहीं हुआ था। यह उन्होंने इसलिए कहा कि वह सुलह पर राज़ी ना थे। इब्ने ख़लदून का बयान है कि इनके इस तरज़े अमल से हज़रत रसूले (स.) खुदा सख़्त रंजीदा हुए। (तारीख़े इब्ने ख़लदून पृष्ठ ३६१)

तारीख़े इस्लाम एहसान उल्लाह अब्बासी में है कि हुदैबिया से वापस होते हुये रास्ते में सूरः **" इन्ना फ़तैहना लका फ़तैहना मुबीनन "** नाज़िल हुआ। इसी साल ग़ज़वह ज़ी क़रद ,सरया दो मताउल जिन्दल,सरया फ़िदक,सरया वादिउल क़ुरा और सरया अरनिया भी वाक़े हुये हैं।

इसी ६ , हिजरी में हज़रत रसूले करीम (स.) ने **ज़ैद बिन हारेसा** की ज़ेरे

सर करदगी चालीस आदमियों की एक जमाअत हमूम की तरफ़ रवाना की जिसने कबीलए मुज़ीना की एक औरत हलीमा और उसके शौहर को गिरफ़तार करके आपकी ख़िदमत में हाज़िर किया। आपने मियां बीवी दोनों को आज़ाद कर दिया।(तारीख़े कामिल बिन असीर जिल्द २, पृष्ठ ७८ व अल रफ़ फ़िल इस्लाम, लेखक अतीक़ुर रहमान उस्मानी, जिल्द १,पृष्ठ १०७)

७, हिजरी के अहम वाक़ेयात

जंगे ख़ैबर :- ख़ैबर मदीनए मुनव्वरा से तक़रीबन ५०, मील के फ़ासले यहूदियों की बस्ती थी। इसके बाशिन्दे यूंही इस्लाम के ऊरूज व इक़बाल से जल भुन रहे थे कि मदीने में जिला वतन यहूदियों ने उनसे मिलकर उनके हौसले बलन्द कर दिये। उन्होंने बनी असद और बनी ग़तफ़ान के भरोसे पर मदीने को तबाह व बरबाद कर डालने का मन्सूबा बांधा और उसके लिये मुकम्मल फ़ौजी तैय्यारियां कर लीं। जब आं हज़रत(स.) को उनके अज़मो इरादे की ख़बर हुईतो आप १४, सफ़र,७, हिजरी को चौदह सौ (१४००) पैदल और २००(दो सौ) सवार लेकर फितने को ख़त्म करने के लिये मदीने से बरामद हुये। और ख़ैबर में पहुंच कर क़िला बन्दी कर ली और मुसलमान उन्हें घेरे में लेकर बराबर लड़ते रहे लेकिन क़िलै क़मूस फ़तेह न हो सका।

तारीख़े तबरी व ख़मीस और शवाहेदुन नबूवतः पृष्ठ ८५, में है के आंहज़रत ने क़िला फ़तह करने के लिये हज़रत उमर को भेजा। फिर हज़रत अबूबक्र को रवाना किया। असके बाद फिर हज़रत उमर को हुक्मे जिहाद दिया। लेकिन यह हज़रात नाकाम वापस आये। (तारीख़े तबरी, जिल्द ३, पृष्ठ ९३ में है कि तीसरी मरतबा जब अलमे इस्लाम पूरी हिफ़जत के साथ आंहज़रत(स.) की ख़िदमत में पहुंच रहा था। रास्ते में भागते हुये लशकर वालों ने सिपहे सालार की बुज़दिली पर इजमा कर लिया और सालारे लशकर इन लशकरियों को बुज़दिल कह रहा था। इन हालात को देखते हुये आंहज़रत (स.)ने फ़रमाया! कल मैं अलमे इस्लाम ऐसे बहदुर को दूंगा जो मर्द होगा। और बढ़ बढ़ कर हमले करने वाला होगा। और किसी हाल में भी मैदाने जंग से न भागे गा। वह ख़ुदा व रसूल को दोस्त रखता होगा और ख़ुदा व रसूल उसको दोस्त रखते होंगे और वह उस वक़्त तक मैदान से न पलटे गा जब तक ख़ुदा वन्दे आलम उसके दोनों हाथों पर फ़तेह न दे देगा।

पैग़म्बरे इस्लाम(स.) के इस फ़रमाने से अहले इस्लाम में एक ख़ास कैफ़ियत पैदा हो गई और हर एक के दिल में यह उमंग आ मौजूद हुई कि कल अलमे इस्लाम किसी सूरत से मुझे ही मिलना चाहिये। (तबरी, जिल्द ३, के पृष्ठ ९३ में है कि हज़रत उमर कहते हैं

कि मुझे सरदारी का हौसला आज के रोज़ से ज़्यादा कभी न हुआ था। मुवर्रिख़ का बयान है कि तमाम असहाब ने बहुत ही बेचैनी में रात गुज़ारी और सुबह होते ही अपने को आंहज़रत के सामने पेश किया। असहाब को अगरचे उम्मीदन न थी लेकिन बताये हुये सिफ़ात का तक़ाज़ा था कि अली (अ.) को आवाज़ दी जाय, कि नागहां ज़बाने रिसालत (स.) से **"अयना अली इब्ने अबू तालिब"** की आवाज़ बलन्द हुई। लोगों ने कहा हुज़ूर वह तो आशोबे चश्म में मुब्तिला हैं। आ नहीं सकते। हुक्म हुआ कि जाकर कहो कि रसूले ख़ुदा (स.) बुलाते हैं। पैग़ाम पहुँचाने वाले ने रसूल(स.) की आवाज़ हज़रत अली (अ.) के कानों तक पहुँचाई।और आप उठ खड़े हुए। असहाब के कधों का सहारा लेकर आँहज़रत की खिदमत में हाज़िर हुए। आपने अली का सर अपने ज़ानू पर रखा। और बुखार उतर गया। लुआबे दहन लगाया आशोबे चश्म जाता रहा। हुक्म हुआ अली मैदाने जंग में जाओ और क़िलए क़मूस को फ़तेह करो। अली (अ.) ने रवाना होते ही पूछा हुज़ूर ! कब तक लड़ूँ और कब वापस आऊँ, फ़रमाया जब तक फ़तेह न हो।

हुक्मे रसूल (स.) पा कर अली (अ.) मैदान में पहुँचे। पत्थर पर अलम लगाया एक यहूदी ने पूछा आपका नाम क्या है फ़रमाया "अली इब्ने अबी तालिब"उसने अपनों से कहा कि (तौरैत) की क़सम यह शख़्स ज़ुरूर जीत लेगा। क्योंकि इस क़िलए के फ़ातेह के जो सिफ़ात तौरैत में बयान किए गए हैं वह बिलकुल सही हैं इसमें सब सिफ़ात पाए जाते हैं। अल ग़रज़ हज़रत अली(अ.) से मुक़ाबले के लिए लोग निकलने लगे,और फ़ना के घाट उतरने लगे सब से पहले हारिस ने जंग आज़माई की, और एक दो वारों की रद्दो बदल में ही वासिले जहन्नम हो गया। हारिस चूँकि मरहब का भाई था इसलिए मरहब ने जोश में आकर रजज़ कहते हुए आप पर हमला किया। आपने इसके तीन भाल वाले नैज़े के वार को रोक कर के ज़ुलफ़ेक़ार का ऐसा वार किया कि इससे आहनी खोद, सर और सीने तक दो टुकड़े हो गए। मरहब के मरने से अगरचे हिम्मतें ख़त्म हो गयी थीं। लेकिन जंग जारी रही और अन्तर रबी यासिर जैसे पहलवान मैदान में आते और मौत के घट उतरते रहे। आख़िर में भगदड़ मच गई। मुवर्रेख़ीन का कहना है जगं के बीच में एक शख़्स ने आपके हाथ पर एक ऐसा हमल किया कि सिपर छूट कर ज़मीन पर गिर गई। और एक दूसरा यहूदी उसे ले भागा हज़रत को जलाल आ गया आप आगे बढ़े और क़िला ख़ैबर के आहनी दर पर बायाँ हाथ रख कर ज़ोर से दबा दिया। आपकी उंगलियाँ उसकी चौखट में इस तरह दर आयीं जैसे मोम में लोहा दर आता है। इसके बाद आपने झटका दिया और ख़ैबर के क़िले का दरवाज़ा जिसे चालीस आदमी हरकत न दे सकते थे, जिसका वज़न बरवाएत मआरिज़-अल-नबूवत आठ सौ मन और बरवाएत रौज़तुल सफ़ा, ३ तीन हज़ार मन था उखड़ कर आपके हाथ में आ गया और आपके इस झटके से क़िलए मे ज़लज़ला आ गया। और सफ़ीहा बिन्ते हई इब्ने अख़्तब मुहँ के बल ज़मीन पर गिर पड़े। चूँकि यह अमल इन्सानी ताक़त के बाहर था। इसलिए आपने

फ़रमाया " मैंने दरे क़िलए ख़ैबर को कूव्वते रब्बानी से उखाड़ा है। उसके बाद आपने उसे सिपर बनाकर जंग की और इसी दरवाज़े को पुल बनाकर लशकरे इस्लाम को उस पार उतार लिया। मदारिज-अल-नबूवः जिल्द दो पृष्ठ २०२ में है कि जब मुकम्मल फतेह के बाद आप वापस तशरीफ़ ले गये तो पैग़म्बरे इस्लाम आपके इस्तेक़बाल के लिये निकले और अली (अ.) को सीने से लगाकर पेशानी पर बोसा दिया और फ़रमाया के ऐ अली (अ.) ख़ुदा और रसूल (स.), जिब्राईल व मिकाईल बल्कि तमाम फ़रिशते तुमसे राज़ी व ख़ुश हैं। अल्लामा शेख़ कुन्दूज़ी किताब नियाबुल मोअदतः में लिखते हैं कि आंहज़रत ने यह भी फ़रमाया था कि ऐ अली (अ.) तुम्हें ख़ुदा ने वो फ़ज़ीलत दी है कि अगर मैं उसे बयान करता तो लोग तुम्हारी ख़ाके क़दम तबर्रूक समझ कर उठा कर रखते। तारीख़ में है कि फ़तेह ख़ैबर के दिन हुज़ूर (स.) को दोहरी ख़ुशी हुई थी। एक फ़तेह ख़ैबर की और दूसरी हबश से मराजेअते जाफ़रे तैयार की। कहा जाता है कि इसी मौक़े पर एक औरत ज़ैनब बिन्ते हारिस नामी ने आंहज़रत को भुने हुये गोश्त में ज़हर दिया था और इसी जंग से वापसी में सहबा के मक़ाम पर रजअते शम्स हुई थी। (शवाहिद-अल-नबूवतः पृष्ठ ८६, ८७)

हज़रत अली (अ.) के लिये रजअते शम्स :- मुवर्रेख़ीन का बयान है कि जब आंहज़रत (स.) लशकर समेत **ख़ैबर** से वापसी में मक़ामे वादी-अल-क़रा की तरफ़ जाते हुये मक़ामे सहबा में पहुंचे और वहां ठहरे हुये थे तो एक दिन आप पर वही के नुज़ूल का सिलसिला ऐसे वक़्त में शुरू हुआ कि सूरज डूबने से पहले ख़त्म न हुआ। हज़रत रसूले करीम (स.) हज़रत अली (अ.) की गोद में सर रखे हुये थे। जब वही का सिलसिला ख़त्म हुआ तो आंहज़रत (स.) ने हज़रत अली से पूछा कि ऐ अली तुमने नमाज़े अस्र भी पढ़ी या नहीं अर्ज़ की, मौला नमाज़ कैसे पढ़ता, आपका सरे मुबारक ज़ानू पर था और वही का सिलसिला जारी था। यह सुनकर हज़रत रसूले करीम (स.) ने दुआ के लिये हाथ बलन्द किये और कहा कि बारे इलाह अली तेरी और तेरे रसूल(स.) की इताअत में था इसके लिये सूरज को पलटा दे ताकि यह नमाज़े अस्र अदा कर ले। चुनांचे सूरज पलट आया और अली (अ.) ने नमाज़े अस्र अदा की। (हबीब असीर, रौज़तुल सफ़ा, रौज़तुल अहबाब, शरहे शफ़ा क़ाज़ी अयाज़, तारीख़े ख़मीस) बाज़ रवायात में यह है कि रसूले ख़ुदा (स.) ने अली(अ.) से फ़रमाया कि सूरज को हुक्म दो वह पलटे गा। चुनांचे अली (अ.) ने हुक्म दिया और सूरज पलट आया। अल्लामा अब्दुलहक़ मोहद्दिस देहलवी लिखते हैं यह हदीस रजअते शम्स सही है सुक़्क़ा रावियों से मरवी है। अल्लामा इक़बाल फ़रमाते हैं।

आँ के दर आफ़ाक़, गरद्द बूतुराब।
बाज़ गर दानद ज़े मग़रिब आफ़ताब।।

तबलीग़ी ख़ुतूत

हज़रत को अभी सुलेह हुदयबिया के ज़रिये से सुकून नसीब हुआ ही था कि आपने सात, ७ हिजरी में एक मोहर बनवाई जिस पर **"मोहम्मदुन रसूल अल्लाह"** कन्दा कराया। इसके बाद दुनिया के बादशाहों को ख़त लिखे। इन दिनो अरब के इर्द गिर्द चार बड़ी सलतनतें क़ायम थीं। १. हुकूमते ईरान जिसका असर मध्य ऐशिया से ईराक़ तक फैला हुआ था। २. हुकूमते रोम जिसमें ऐशियाए कोचक, फ़िलिस्तीन, शाम और यूरोप के बाज़ हिस्से शामिल थे। ३. मिस्र ४. हुकूमते हबश जो मिस्री हुकूमत के जूनूब से लेकर बहरे कुलज़ुम के मग़रबी साहिल पर हिजाज़ व यमन की तरह क़ायम थी और उसका असर सहराए आज़म अफ़्रीक़ा के तमाम इलाकों पर था। हज़रत ने बादशाहे हबश नजाशी, शाहे रोम, क़ैसर हरकुल, गर्वनरे मिस्र जरीह इब्ने मीना क़िब्ती उर्फ़ मक़वुक़श, बादशाहे इरान ख़ुसरो परवेज़ और गर्वनर यमन बाज़ान, वाली दमिशक हारिस वग़ैरह के नाम ख़ुतूत रवाना फ़रमाये।

आपके ख़ुतूत का बादशाहों पर अलग-अलग असर हुआ। नजाशी ने इस्लाम कुबूल कर लिया। शाहे ईरान ने आपका ख़त पढ़ कर गुस्से के मारे ख़त के टुकड़े कर दिये और ख़त लेकर आने वाले को निकाल दिया। और गर्वनर यमन को लिखा कि मदीने के दीवाने "आंहज़रत(स.)" को गिरफ़तार करके मेरे पास भेज दे उसने दो सिपाही मदीने भेजे ताकि हुज़ूर को गिरफतार करें। हज़रत (स.) ने फरमाया, जाओ तुम क्या गिरफ़तार करोगे, तुम्हे ख़बर भी है तुम्हारा बादशाह इन्तेक़ाल कर गया। सिपाही जो यमन पहुंचे तो सुना कि शाहे ईरान मर चुका है आपकी इस ख़बर देने से बहुत से काफ़िर मुसलमान हो गये। क़ैसरे रोम ने आपके ख़त की ताज़ीम की। मिस्र के गर्वनर ने आपके क़ासिद की बड़ी आवभगत की और बहुत से तोफ़ो समेत उसे वापस कर दिया। इन तोहफ़ो में मारिया क़िब्तिया (आंहज़रत की पत्नी) और उनकी बहन शीरीं (जौज़ए हस्सान बिन साबित) एक दुलदुल नामी घोड़ा हज़रत अली के लिए ,याफ़ूर नामी दराज़ गोश माबूर नामी ख़्वाजा सरा शामिल थे।

हुसूले फ़ेदक :- फ़ेदक ख़ैबर के इलाके में एक क़रीया (गांव) है फ़तेह ख़ैबर के बाद आंहज़रत (स.) ने अली (अ.) को फ़ेदक वालों की तरफ़ भेजा और हुक्म दिया कि उन्हें दावते इस्लाम देकर मुसलमान करें। इन लोगों ने इस बात पर सुलह करनी चाही कि आधी ज़मीन आंहज़रत को दे दें और आधी पर ख़ुद क़ाबिज़ रहें। हज़रत ने उसे मंज़ूर फरमा लिया। तबरी जिल्द ३, पृष्ठ ९५ में है कि चूँकि यह फ़ेदक बग़ैर जंगों जिदाल मिला था। इसलिये आंहज़रत (स.) की मिलकियत करार पाया। दुर्रे मन्शुर जिल्द ७, पृष्ठ १७७ में है कि फ़ेदक के क़बज़े में आते ही हुक्मे ख़ुदा नाज़िल हुआ **"वात जिल क़ुरबा हक़्क़ा "** अपने क़राबत दार को हक़ दे दो। शरह मवाक़िफ़ के पृष्ठ ७३५ में है कि आंहज़रत (स.) ने

"आताहा फ़ेदक तख़लता" फ़ातमा ज़ैहरा को बतौरे अतिया फ़ेदक दे दिया। रौज़तुल सफ़ा जिल्द २ पृष्ठ ३७७, मआरिज अल-नबूवता पैरा ४ पृष्ठ २२१ में है कि आंहज़रत (स.) ने तहरीरी तसदीक़ नामा यानी बज़रिये दस्तावेज़ जायदाद फ़ेदक जनाबे सय्यदा के नाम हिबा कर दी। यही कुछ सवाएके मोहर्रेक़ा पृष्ठ २१,२२, वफ़ा -अल- वफ़ा जिल्द २ पृष्ठ ६३, फ़तावे अज़ीज़ी पृष्ठ १४३, रौज़तूल सफ़ा जिल्द २ पृष्ठ १३५, जिल्द १ पृष्ठ ८५, मारिज-अल-नबूवत मुईन काशफ़ी रूकन ४ पृष्ठ २२१, मोअजम-अल-बलदान में इस ज़मीन को बहुत उपजाऊ बताया गया है और कहा गया है कि यह ज़मीन बहुत से चश्मों से सेराब होती थी। इसमे काफ़ी बाग़ात भी थे। अबू दाऊद के किताब ख़ेराज में इसकी आमदनी ४०००,चार हज़ार दीनार (अशरफ़ी) सलाना लिखी है।

एक वाक़ेया :- इसी साल मक़ामे सहबा से वापसी में ग़ज़वा वादी-अल-कुरा वाक़े हुआ। यहूदियों से लड़ाई हुई और बहुत सा माले ग़नीमत हाथ आया। इसी साल मुसलमानों के मशहूर हदीस गढ़ने वाले अबू हुरैरा मुसलमान हुये। यह इस्लाम लाने से पहले यहूदी थे। ३ साल अहदे रिसालत में ज़िन्दगी बसर की। आपने ५३०४, पांच हज़ार तीन सौ चार, हदीसें नक़्ल की हैं। शरहा मुस्लिम नूरी पृष्ठ ३७७, सही मुस्लिम जिल्द २ पृष्ठ ५०६, अलफ़ारूक़ जिल्द २ पृष्ठ १०५, मीज़ान-अल-कूबरा जिल्द १ पृष्ठ ७१ में है कि अब्दुल्लाह बिन उमर हज़रत आयशा (र.) और हज़रत अली (अ.) इन्हें झूठा जानते थे।

८ , हिजरी के अहम वाक़ेयात

जंगे मौता :- जंगे मौता उस मशहूर जंग को कहते हैं जिसमें इस्लाम के ३,सरदार एक के बाद एक शहीद हुये। जिन्में विशेष स्थान **जाफ़रे तैयार** को हासिल था। **मौता** ,यह **शाम** के इलाक़े **बल्क़ा** का एक क़रिया है। इस जंग का वाक़ेया यह है कि हुज़ूर (स.) ने इस्लामी दावत नामा देकर बादशाहों और धनी लोगों की ही तरह शाम के ईसाई हाकिम शरजील बिन उमरो ग़सानी के पास भी भेजा। उसने हुज़ूर(स.) के क़ासिद हारिस इब्ने अमीर को मौता के मक़ाम पर क़त्ल कर दिया। चूँकि उसने इस्लामी तौहीन के साथ,साथ दुनिया के बैनुल अक़वामी क़ानून के ख़िलाफ़ किया था लेहाज़ा आंहज़रत(स.) ने तीन हज़ार की फ़ौज देकर अपने ग़ुलाम ज़ैद को रवाना किया और यह प्रोग्राम बना दिया कि अगर यह क़त्ल हो जायं तो जाफ़रे तैयार और अगर यह क़त्ल हो जायं तो उनके बाद अब्दुल्ला इब्ने रवाह अलमदारी करें (यानी सरदारी करें)। मैदान में पहुँच कर मालूम हुआ कि मुक़ाबले के लिये एक लाख का लशकर आया है। हुक्मे रसूल(स.) था लेहाज़ा हज़रते ज़ैद ने जंग की और शहीद हो गये। हज़रत जाफ़र ने अलम संभाला और बहूत ही बहादुरी और बे जिगरी के साथ वह लड़ने

लगे फ़ौज में हलचल डाल दी। लेकिन सीने पर ९०,नब्बे ज़ख़्म खाकर ताब ना ला सके और ज़मीन पर आकर गिरे।उनके बाद अब्दुल्ला इब्ने रवाजा ने अलम संभाला और जंग में मशग़ूल हुये। आख़िर कार उन्होंने ने भी शहादत पाई! फिर और एक बहादुर ने अलम संभाला। कामयाबी के बाद मदीना वापसी हुई। मुस्लमानों ख़ास कर आंहज़रत (स.) को इस जंग में तीन सिपाह सालारों के क़त्ल होने का सख़्त मलाल हुआ। जाफ़रे तैयार के लिये आपने फ़रमाया " ख़ुदा ने उन्हें जन्नत में परवाज़ के लिये दो ज़मर्रूद के पर अता किये हैं "। मुवर्रेख़ीन का कहना है कि इसी लिये आपको जाफ़रे तैयार कहा जाता है। **"तारीख़े कामिल"** में है कि आंहज़रत (स.) जब जाफ़र के घर गये तो उनकी बीवी को रोता देखकर अपने घर पहुंचे तो फ़ातेमा (अ.) को रोते देखा। हुज़ूर ने सबको तसल्ली दी और जाफ़रे तैयार के घर खाना पकवा कर भिजवाया। यह जंग जमादिल अव्वल, ८ हिजरी में वाक़े हुई।

ज़ात-अल-सलासल :- इसी जमादिल अव्वल ८ , हिजरी में यह सरिया (जंग) ज़ात-अल-सलासल भी वाक़े हुई। आंहज़रत (स.) ने तीन सौ सिपाहियों के साथ उमरो आस को क़बीलए "क़ज़ाआ" के सर को कुचलने के लिये भेजा मगर वह कामयाब न हो सके। तो अबू उबैदा बिन जर्राह को रवाना फ़रमाया, उन्होंने कामयाबी हासिल की।

मिम्बरे नबवी की इब्तेदा :-अब से पहले आंहज़रत (स.) के लिये मस्जिद में कोई मिम्बर न था। आप सुतून(खम्बे) से टेक लगाकर ख़ुतबा दिया करते थे। आपके लिये **आयशा अन्सारिया** ने तीन दरजे का मिम्बर अपने रूमी ग़ुलाम " **बाक़ूम** " नामी से जो बढ़ई का काम जानता था बनवा दिया।

फ़तेह मक्का

सुलेह हुदैबिया की वजह से १०, साल तक आपसी जंगो जेदाल मना होने के बावजूद क़ुरैश के दुश्मन क़बिले बनू बक्र ने आंहज़रत (स.) के दुश्मन क़बीले बनू ख़ज़ाआ पर चढ़ाई कर दी और क़ुरैश की मदद से उन्हें तबाह व बरबाद कर डाला। आख़िरकार हालात से मजबूर होकर बनी ख़ज़ाआ ने आंहज़रत(स.) से मदद मांगी। आंहज़रत(स.) ने १०, हज़ार का लशकर तैयार करके मक्के का इरादा किया। अबू सुफ़ियान ने जब यह तैयारी देखी तो यह दरख़्वास्त पेश करने के लिये कि सुलह नामा हुदैबिया की तजदीद(रीनीवल) कर दी जाय। मदीने आया और अपनी बेटी उम्मे हबीब रसूल(स.) की पत्नी के घर गया। उन्होंने यह कह कर उसे बिस्तरे रसूल(स.) से हटा दिया कि तू काफ़िरो मुशरिक है।(अबुल फ़िदा) फिर आंहज़रत के पास गया। आपने ख़ामोशी इख़्तेयार की। फिर हज़रत अली(अ.) से मिला। उन्होंने भी मूंह न लगाया। फिर हज़रत फ़ात्मा के पास पहुँचा और इमाम हसन और इमाम हुसैन(अ.) के वास्ते से अमान मांगी उन्होंने भी कोई सहारा न दिया। इसके बाद मस्जिद में

तजदीदे सुलोह का एलान करके वापस चला गया। हज़रत मोहम्मद (स.) ने पूरे ध्यान के साथ जंग की खुफिया तैयारियां कर लीं मगर यह न ज़ाहिर होने दिया कि किस तरफ़ जाने का इरादा है। इसी खुफ़िया तैयारी की इस्कीम के तहत आपने मक्के आना जाना बिल्कुल बन्द कर दिया था। आपका ख़याल यह था कि अगर मक्के वालों को वक़्त से पहले यह ख़बर मिल जायगी तो कामयाबी मुश्किल हो जायगी। मगर एक चुग़लख़ोर सहाबी हातिब इब्ने बलतअः ने जिसके बच्चे मक्के में थे। उक औरत के ज़रिये से हमले का मुकम्मल हाल लिख भेजा। वह तो कहिये हज़रत को इत्तेला मिल गई, आपने अली (अ.) को भेज कर ख़त वापस करा लिया।

अलग़रज़ १०, रमज़ान ८, हिजरी को आप अन्जान रास्तों से अचानक मक्के पहूँचे और मक्के से चार फ़रसक़ की दूरी पर " सरा नतहरान" पर पड़ाओ डाला। लशकर की कसरत का चरचा हो गया। अबू सुफ़ियान हज़रते अब्बास के मशविरे से मुस्लमान हो गया। आंहज़रत ने उसके लिये यह छूट कर दी कि जो उसके घर में फ़ेतह मक्का के मोक़े पर पनाह ले उसे छोड़ दिया जाय। अबू सुफ़ियान मक्के वापस गया और उसने आंहज़रत की तरफ़ से एलान कर दिया कि जो मक्के में मेरे मकान में पनाह लेगा महफ़ूज़ रहेगा। जो हथियार लगाये बग़ैर सामने आयेगा उसपर हाथ न उठाया जायगा। उसके बाद जंग शुरू हुई। और थोड़ी सी रूकावट के बाद मक्के पर क़ब्ज़ा हो गया। सरदारे लशकर हज़रत अली(अ.) थे।आंहज़रत क़सवा नामी ऊंट पर सवार होकर मक्के में दाख़िल हुये। और ज़ुबैर के लगाये हुये इस्लामी झंडे के क़रीब जाकर उतरे। ख़ेमे लगाये गये। आपने क़ुरैश से फ़रमाया बताओ तुम्हारे साथ क्या सुलूक करूँ। सबने कहा आप करीम इब्ने करीम हैं हमे माफ़ फ़रमायें। आपने माफ़ी दी। और आप सात मरतबा तवाफ़ के बाद दाख़िले हरमे काबाः हो गये। और उन तमाम बुतों को अपने हाथ से तोड़ा जो नीचे थे। और ऊंचे बुतो को तोड़ने के लिये हज़रत अली(अ.) को अपने कंधे पर चढ़ाया। अली(अ.) ने तमाम बुतो को तोड़ कर ज़मीन पर फेंक दिया गोया पत्थर के खुदाओं को मिट्टी में मिला दिया। मुवर्रेख़ीन का बयान है कि जिस जगह मोहरे नबूवत थी, और जहां मेराज की शब रसूल (स.) के कांधे पर हाथ रखा हुआ महसूस हुआ था, उसी जगह अली (अ.) ने पांव रख कर बुतों को तोड़ा। उनका यह भी बयान है कि हज़रत अली (अ.) को रसूल (स.) ने अपनी पीठ पर सवार किया और जिब्राईल (अ.) ने बुत तोड़ने के बाद अपने हाथों से उतारा। (तारीख़े ख़मीस, जिल्द २, पृष्ठ९२ ज़िन्देगानी मोहम्मद पृष्ठ ७७, अजायब-अल-क़स्स पृष्ठ २७८ में है कि काबे में ३६०,(तीन सौ साठ) बुत थे।

दावते बनी ख़ज़ीमा :- मक्कए मोअज़्ज़ेमा फ़तेह हो जाने के बाद आंहज़रत (स.) ने कुछ लोगों को तबलीग़े इस्लाम के लिये क़रीब की जगहों पर भेजा। जिन्में ख़ालिद बिन वलीद भी थे। यह लोग जब बनी ख़ज़ीमा के पास पहूँचे तो उन्होंने अपने मुस्लमान होने का यक़ीन दिलाया लेकिन इब्ने वलीद ने कोई परवाह न की और उन पर ग़ैर इख़लाक़ी ज़ुल्म

किया। आंहज़रत ने जब यह ख़बर सुनी तो आपने अपने बरी उज़ ज़िम्मा होने का एलान किया और हज़रत अली (अ.) को भेज करहर क़िस्म का तावान अदा किया और खूं बहा दिया। (तबरी जिल्द ३, पृष्ठ १२४)

जंगे हुनैन

हुनैन मक्के से तीन मील के फ़ासले पर ताएफ़ की तरफ़ एक वादी का नाम है। फ़तेह मक्का की ख़बर से बनी हवाज़न , बनी सक़ीफ़, बनी हबशम और बनी सअद ने आपस में फ़ैसला किया कि सब मिल कर मुस्लमानों से लड़ें। उन्होंने अपना सरदारे लशकर मालिक इब्ने औफ़ नफ़री और अलमदार "अबू जरवल" को क़रार दिया। और वह अपने साथ "दरीद इब्ने सम्मा" नामी १२० साल का तजरूबे कार सिपाही मशवेरे के लिये पांच हज़ार सिपाहियों का लशकर लेकर हुनैन और ताएफ़ के बीच मक़ामे "अवतास" पर जमा हो गये। जब आं हज़रत को इस इजतेमा की ख़बर मिली तो आप १२,०००(बारह हज़ार)या १६,(सोलह हज़ार) का लशकर लेकर जिसमें मक्के के २०००,(दो हज़ार) नौ मुस्लिम भी शामिल थे।६, शव्वाल ८ , हिजरी को दुलदुल पर सवार मक्के से निकल पड़े। हज़रत अली(अ.) हमेशा की तरह अलमदारे लशकर थे। मैदान में पहुंच कर हज़रत अबू बक्र ने कहा कि हम लोग इतने ज़्यादा हैं कि आज शिकस्त नहीं खा सकते। मैदाने जंग में इस तरह के मंसूबे बांधे जारहे थे कि वह दुश्मन जो पहाड़ों में छुपे हुये थे निकल आये और तीरों , नैज़ों और पत्थरों से ऐसे हमले किये कि बुज़दिलों के जान के लाले पड़ गये। सब सर पर पांव रख कर भागे। किसी को रसूले ख़ुदा(स.) की ख़बर न थी। वह पुकार रहे थे। ऐ बैएते रिज़वान वालों! कहां जा रहे हो, लेकिन कोई न सुनता था। गरज़ कि ऐसी भगदड़ मची कि उसूले जंग शुरू होने से पहले ही हज़रत अली(अ.), हज़रते अब्बास, इब्ने हारिस,और इब्ने मसूद के अलावा सब भाग गये।। (सीरते हलबिया, जिल्द ३,पृष्ठ १०६) इस मौक़े पर अबू सुफ़ियान कह रहा था कि अभी क्या है मुस्लमान समन्दर पार भागें गे।

हबीब अल सियर और रौज़तुल अहबाब में है कि सबसे पहले ख़ालिद इब्ने वलीद भागे। उनके पीछे क़ुरैश के नौ मुस्लिम चले। फिर एक एक करकेमहजिर व अन्सार ने राहे फ़रार इख़्तेयार की। इसी दौरान में दुश्मनों ने आं हज़रत पर हमला कर दिया जिसे जां निसारों ने रद्द कर दिया।। हालात की नज़ाकत को देख कर रसूल अल्लाह(स.) ख़ुद लड़ने के लिये आगे बढ़े, मगर हज़रते अब्बास ने घोड़े की लजाम थाम ली, और मुस्लमानों को पुकारा, आपकी आवाज़ पर सौ (१००) मुस्लमान वापस आ गये और दुश्मन भी सबके सब मुक़ाबिल हो गये। घमसान की जंग शुरू हुई, अबू जरवल अलमदारे लशकर ने मुक़ाबिल तलब किया। हज़रत अली(अ.)अलमदारे लशकरे इस्लाम मुक़ाबले में तशरीफ़ लाये और एक ही वार में

उसे फ़ना के घाट उतार दिया। मुस्लमानों के हौसले बढ़े और कामयाब हो गये। सीरत इब्ने हश्शाम, जिल्द २, पृष्ठ २६१ में है कि इस जंग में चार मुसलमान और ७०, काफ़िर क़त्ल हुये। जिनमें से चालिस ४०, हज़रते अली के हाथ से मारे गये। इस जंग में ग़ैबी इमदाद मिली थी। जिसका ज़िक्र कुराने मजीद में है। इसके बाद मक़ामे अवतास में जंग हुई। और वहां भी मुस्लमान कामयाब हुये। इन दोनों जंगों में काफ़ी माले ग़नीमत हाथ आया। अवतास में असमा बिन्ते हलीमा साबिया भी हाथ आईं।

हलीमा सादिया की सिफ़ारिश :- जंगे हुनैन की बची हुई फ़ौज ताएफ़ में पनाह गुज़ीन हो गई। आपने शव्वाल ८, हिजरी में इसके मोहासरे का हुक्म दिया। और २० दिन तक मोहासरा (घिराव) जारी रहा। उसके बाद आपने मोहासरा उठा लिया। और मक़ामे जवाना पर चले गये। वहां पांच ज़ीक़ाद को बनी हवाज़न की तरफ़ से दरख़्वास्त आई कि हम आपकी इताअत कुबूल करते हैं। आप हमारी औरतें माल वापस कर दीजिये। बनी हवाज़न की शिफ़ारिश में जनाबे हलीमा साबीया भी आईं। आंहज़रत ने उनकी शिफ़ारिश कुबूल फ़रमाई।

६, हिजरी के अहम वाक़यात

फिलिस की तबाही :- क़बीलए बनी तय जिसमें मशहूर सक़ी **हातम ताई** पैदा हुआ था , **फिलिस** नामी बुत को पूजता था। फ़तहे मक्का के कुछ दिन बाद आंहज़रत (स.) ने १५०, डेढ़ सौ सवारों समैत रबीउल अव्वल ६, हिजरी में उसकी तरफ़ हज़रत अली को भेजा। अदी इब्ने हातम जो सरदारे क़बीला था भाग गया। बहुत सा माले ग़नीमत और क़ैदी हाथ आये। हज़रते अली (अ.) ने इन्सान और माल लशकर में बांट दिये और अदी की बहन यानी हातम ताई की बेटी सफ़ाना को बहुत ही इज़्ज़तो एहतेराम के साथ आंहज़रत की ख़िदमत में पहुंचाया। उसने शराफ़ते ख़ानदान का हवाला देकर रहम की दरख़्वास्त की। आपने उसे आज़ाद कर दिया और किराया देकर उसको उसके भाई अदी के पास भिजवा दिया। आपके इस हुस्ने इख़्लाक़ी से अदी बहुत प्रभावित हुआ। १०, हिजरी में आकर मुस्लमान हो गया।

ग़ज़्व-ए-तबूक़

तबूक़ मदीने और दमिश्क़ के बीच १२ या १४ मन्ज़िल पर था। हज़रत को ख़बर मिली कि नसारा शाम ने हरकुल बादशाहे रूम से चालीस हज़ार (४०,०००) फ़ौज मगा कर मदीने पर हमला करने का फ़ैसला किया है। आपने हिफ़ाज़त को ध्यान में रखते हुये पेश क़दमी की । मदीने का निज़ाम हज़रते अली(अ.) के सिपुर्द फ़रमाया। और ३०,०००(तीस हज़ार)

फ़ौज लेकर शाम की तरफ़ रवाना हो गये। रवानगी के वक़्त हज़रत अली ने अर्ज़ की मौला मुझे बच्चों और औरतों में छोड़े जाते हैं। क्या तुम इस पर राज़ी नहीं हो कि मैं उसी तरह अपना जां नशीन बना कर जाऊं जिस तरह जनाबे मूसा अपने भाई हारून को बना कर जाया करते थे। (सही बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी) ऐ अली ख़ुदा का हुक्म है कि मैं मदीने में रहूं या तुम रहो। (फ़तेहुल बारी, जिल्द ३,पृष्ठ ३८७) ग़रज के आप रवाना तक मंज़िले तबूक़ तक पहूंचे आपने वहां दुश्मनों का २० दिन इन्तेज़ार कियां लेकिन कोई भी मुक़ाबले के लिये न आया। दौराने क़याम में अरीब क़रीब में दावते इस्लाम का सिलसिला जारी रहा। बिल आख़िर वापस तशरीफ़ लाये। यह वाक़ेया रजब ६, हिजरी का है।

वाक़ऐ अक़बा :- तबूक़ से वापसी में एक घाटी पड़ती थी जिसका नाम ओक़बा ज़ी फ़तक़ था। यह घाटी सवारी के लिये इन्तेहाई ख़तरनाक थी। अन्देशा यह था कि कहीं ऊंट का पांव फिसल न जाय कि हज़रत को चोट न लगे। इसी वजह से एलान करा दिया गया कि जब तक हज़रत का ऊंट गुज़र न जाय कोई भी घाटी के क़रीब न आय। ग़रज़ कि रवानगी हुई हज़रत सवार हुये। हुज़ैफ़ा ने मेहार(ऊंट की रस्सी) पकड़ी, अम्मार हंकाते हुये रवाना हुये। यह हज़रात समझ रहे थे कि निहायत पुर अमन जारहे हैं नागाह बिजली चमकी और उनकी नज़र कुछ ऐसे सवारों पर पड़ी जो चेहरों को कपड़े से छुपाये हुये थे। हज़रत ने फ़रमाया ऐ हुज़ैफ़ा तुमने पहचाना यह मुनाफ़िक़ मेरी जान लेना चाहते थे। फिर आपने सबके नाम बता दिये। और कहा किसी से कहना नहीं, वरना फ़साद होगा। रौज़तुल अहबाब में है कि वह अकाबिर (बड़े सहाबा) थे।

तबलीग़े सूरए बराअत :- ६, हिजरी में आंहज़रत ने ३००(तीन सौ) आदमीयों के साथ हज़रते अबू बक्र को हज और तबलीग़े सूरए बराअत के लिये भेजा। अभी आप ज़्यादा दूर न जाने पाये थे कि वापस बुला लिये गये और यह सआदत हज़रत अली (अ.) के सिपुर्द कर दी गई। हज़रत अबू बक्र के एक सवाल के जवाब में फ़रमाया के मुझे ख़ुदा का यही हुक्म है कि मैं जांऊ या मेरी आल में से कोई जाय। शाह वली उल्लाह कहते हैं कि शेख़ैन दोनों के दोनों मामूर थे मगर माजूल (बरख़ास्त) किये गये। कुर्रतुल ऐन पृष्ठ २३४, सही बुख़ारी पैरा २, पृष्ठ २३८,, कन्जुल आमाल, जिल्द १,पृष्ठ १२६, दर मंशूर, जिल्द ३,पृष्ठ ३१०, तारीख़े ख़मीस, जिल्द २, पृष्ठ १५७ से १६०, ख़साएसे निसाई पृष्ठ ६१, रौज़ौल अनफ़, जिल्द २,पृष्ठ ३२८, तबरी, जिल्द ३,पृष्ठ १५४, रियाजुल नज़रापृष्ठ १७४।

जंगे वादीउल रमल :- वादीउल रमल मदीने से पांच मंजिल के फ़ासले पर वाक़े है। वहां अरबों की एक बड़ी जमीअत (ग्रूप) ने मदीने पर शबख़ूं (रात के अंधेरे में चुपके से हमला करना) मारने और अचानक शहर पर क़ब्ज़ा करके इस्लामी ताक़त को चकना चूर कर देने का मन्सूबा तैयार किया। हज़रत (स.) को जैसे ही ख़बर मिली आपने उनकी तरफ़

एक लशकर भेज दिया और अलमदारी हज़रत अबू बक्र के सिर्पुद की। उन्हें हज़ीमत(शिकस्त) हुई फिर हज़रत उमर को अलमदार बनाया। वह ख़ैर से घर को आ गये। फिर उमर बिन आस को रवाना किया वह भी शिकस्त खा गये। जब कामयाबी किसी तरह न हुई तो आं हज़रत(स.) ने हज़रत अली (अ.) को अलम देकर रवाना किया। खुदा ने अली (अ.) को शानदार कामयाबी अता की। जब हज़रत अली (अ.) वापस हुये तो आंहज़रत (स.) ने खुद हज़रत अली (अ.) का इस्तेकृबाल किया। (हबीबुस-सियर , माआरिज-अल-नबूवत)

वफ़ूद :- ६, हिजरी में वफ़ूद आना शुरू हुये और आंहज़रत (स.) की वफ़ात से पहले तक़रीबन अरब का बड़ा हिस्सा मुस्लमान हो गया। इसी हिजरी में हुक्मे नजासते मुशरेकीन भी नाज़िल हुआ।

वुसूलीए सदक़ात :- इसी ६, हिजरी में **बनी तय से अदी बिन हातम ताई, बनी हंज़ला से मालिक इब्ने नवेरा, बनी नजरान से हज़रत अली(अ.)** जज़िया व सदक़ात वुसूल करने गये और माल भिजवाया। (इब्ने ख़लदून)

१०, हिजरी के अहम वाक़ेआत

यमन में तबलीग़ी सरगरमियां :- १०, हिजरी में आं हज़रत(स.) ने ख़ालिद बिन वलीद को तबलीग़े दीन के ख़्याल से **यमन** भेजा। यह वहां जाकर छः ६, महीने तक इधर उधर फिरते रहे और कोई काम न कर सके। यानी उनकी तबलीग़ से कोई भी मुस्लमान न हो सका। तो हज़रत अली (अ.) को भेजा गया। आपने ज़ोरे इल्म और सलीक़ये तबलीग़ी की वजह से सारे क़बीलए हमदान को मुस्लमान कर लिया। उसके बाद अहले यमन मुसलसल दाख़ले इस्लाम होने लगे। जब आंहज़रत(स.) को यह शानदार कामयाबी मालूम हुई तो आपने सजदए शुक्र अदा किया , और क़बीलए हमदान के लिये दुआ की और फ़रमाया खुदा क़बीलए हमदान पर सलामती नाज़िल करे। (तारीख़े तबरी, जिल्द ३, पृष्ठ १५६)

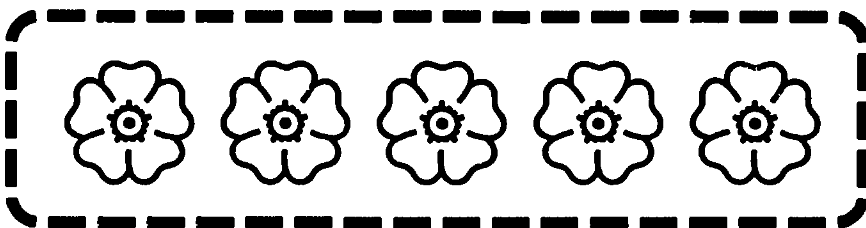
यमन में हज़रत अली (अ.) की शानदार कामयाबी पर मुख़ालिफ़ों की हासेदाना रविश

मुवर्रेख़ीन का बयान है कि यमन में ख़ालिद बिन वलीद बिलकुल कामयाब नहीं हुये, फिर जब हज़रत अली(अ.) को शानदार कामयाबी नसीब हुई तो बाज़ लोगों ने हज़रत अली (अ.) पर माले ग़नीमत के सिलसिले में ऐतेराज़ किया।

किताब ख़िलाफ़त व इमामत के (पृष्ठ ७६ लाहौर की छपी) में है जब जनाबे अमीर तबलीग़े अहले यमन के लिये मामूर किये गये थे। और आपके ख़िलाफ़ कुछ लोगों की

शिकायत सुन कर आंहज़रत(स.) ने फ़रमाया था कि मुझसे अली (अ.) की बुराई न करो। **" फ़ाफ़हा मिनी राआना मिन्हो व हुव्वद लैकुम बाअदी " (अली मुझसे है और मैं अली से हूँ और वह मेरे बाद तुम्हारा हाकिम है।)** बाज़ अहादीस में अल्फ़ाज़ **"वहू वलेकुम बाअदी"** के नहीं पाये जाते। और बाज़ में **" वहू मौला कुल मोमिन व मोमेनात "** पाये जाते हैं। शिकायत यह थी के जनाबे अमीर ने खुम्स में से एक लौंडी चुन ली थी। बुख़ारी की रवायत से मालूम होता है कि यह शिकायत सुन कर रसूल अल्लाह(स.) ने यह भी फ़रमाया था। **" फ़ा अन लहा फ़िल ख़ुम्स अक्सर मिन ज़ालेका "** अली का हिस्सा खुम्स में इस्से भी ज़्यादा है। यह हदीस भी अहले तसन्नुन की तमाम मोतबर किताबों में पाई जाती है और इस से जो मंज़िलत जनाबे अमीर (अ.) की ज़ाहिर होती है वह भी किसी से छुपी नहीं है।

यमन का निज़ामे हुकूमत :- इसी १०, हिजरी में **"बाज़ान"** हाकिमे यमन ने इन्तेक़ाल किया। उसकी वफ़ात के बाद यमन को विभिन्न भागों में, विभिन्न हाकिमों के सिपुर्द किया गया। (१) **सनआ** का गर्वनर **बाज़ान** के बेटे को (२) **हमदान** का गर्वनर **आमिर इब्ने शहरे हमदानी** को (३) **माअरब** का हाकिम **अबू मूसा अशअरी** को (४) जनद का अफ़सर लाअली इब्ने उमैया को (५) मुल्को अशरा में ताहिर इब्ने अबी हाला को(६) नजरान में उमर इब्ने ख़रम को (७) नजरान, ज़म्आ, ज़ुबैद के दरमियान, सईद इब्ने आस को (८) सकासक व सुकून में अक्काशा इब्ने सौर को मुक़र्रर कर दिया गया।



असहाब का तारीख़ी इजतेमा और

तबलीग़े रिसालत की आख़री मंज़िल

हज़रत अली (अ.) की ख़िलाफ़त का एलान

यह एक हक़ीक़त है कि दुनिया के पैदा करने वाले ने इन्तेख़ाबे ख़िलाफ़त को अपने लिये मख़सूस रखा है। और इसमें लोगों का दस्त रस नहीं होने दिया। फ़रमाता है

" रब्बेका यख़्लक मा यशाअ व यख़्तारा माकानालहम अल खैरतः सुभान अल्लाह ताआला अम्मा यशकरून "

तुम्हारा रब ही पैदा करता है और जिसको चाहता है(नबूवत व ख़िलाफ़त) के लिये चुनता है। याद रहे कि इन्सान को न चुन्ने का हक़ है और न वह इसमें ख़ुदा के शरीक हो सकते हैं। (पारः २०, रूकू १०)

यही वजह है कि उसने अपने तमाम ख़ुलफ़ा, आदम से ख़ातम तक ख़ुद मुक़र्रर किये हैं, और उनका एलान अपने नबियों के ज़रिये से कराया है।(रौज़तुल सफ़ा ,तारीख़े कामिल, तारीख़े इब्ने-अल-वरदी ,अराईस शाअल्बी वग़ैरा) और इसमें तमाम अम्बिया के किरदार की मवाफ़ेक़त का इतना लेहाज़ रखा है कि तारीख़े एलान तक में फ़र्क़ नहीं आने दिया। अल्लामा बहाई व अल्लामा मजलिसी लिखते हैं कि तमाम अम्बिया ने ख़िलाफत का एलान १८, ज़िलहिज्जा को ही किया है। (जामे अब्बासी व इख़्तेयाराते मजलिसी) इतिहासकारों का इत्तेफ़ाक़ है कि आंहज़रत (स.) ने हज्जतुल विदा के मौक़े पर १८, ज़िलहिज्जा को ग़दीरे ख़ुम के स्थान पर ख़ुदा के हुक्म से हज़रत अली (अ.) के जानशीन होने का एलान फ़रमाया है।

हुज्जतुल विदा :- हज़रत रसूल करीम(स)२५ ज़ीक़ाद१० हिजरी को हज्जे आख़िर के ईरादे से रवाना हो कर ४ जिलहिज को मक्का मोअज़्ज़मा पहुँचें। आपके साथ आपकी तमाम बीबीयाँ और हज़रत सय्यदा सलाम उल्लाह अलैहा थीं। रवानगी के वक़्त हज़ारों सहाबा साथ रवाना हुए और बहुत से मक्का ही में जा मिले। इस तरह आपके असहाब की तादात एक लाख चौबीस हज़ार हो गई। हज़रत अली(अ.) यमन से मक्का पहुँचे। हुज़ूर(स.) ने फरमाया कि तुम क़ुबानी और मनासिके हज में मेरे शरीक हो। इस हज के मौक़े पर लोगों ने अपनी आँखें से आँहज़रत (स.) को मनासिके हज अदा करते हुए देखा और मारेकतुलआरा ख़ुतबे सुने। जिनमें बाज़ बातें यह थीं। (१) जाहिलीयत के ज़माने के दसतूर

कुचल डालने के काबिल हैं (२) अरबी को अजमी और अजमी को अरबी पर कोई फज़ीलत नहीं (३) मुसलमान एक दूसरे के भाई हैं (४) गुलामों का ख़्याल ज़रूरी है। (५जाहिलयत के तमाम खून माफ़ कर दिए गए । (६) जाहिलयत के तमाम वाजिबुल अदा बातिल कर दिए गए। ग़रज कि हज से फ़रागत के बाद आप मदीने के इरादे से १४ ज़िलहिज को रवाना हूए। एक लाख चौबीस हज़ार असहाब आपके हमराह थे। हज़्फ़ा के करीब मुक़ामे गदीर पर पहुँचते ही आयए बल्लिग़ का नुज़ूल हुआ आपने पालान शुतुर का मिम्बर बनाया और बिलाल(र.) को हुक्म दिया कि **"हय्या अला ख़ैरिल अमल"** कह कर आवाज़ दें। मजमा सिमट कर नुक़्तए एतिदाल पर आगया आपने एक फ़सीह व बलीग़ खुतबा फ़रमाया। जिसमें हमदो सना के बाद अपनी फ़ज़ीलत का इक़रार लिया और फ़रमाया कि मैं तुम में दो गिरां क़द्र चीजें छोड़े जाता हूँ। एक कुरआन और दूसरे अहले बैत। इसके बाद अली (अ.) को अपने नज़दीक बुला कर दोनो हाथों से उठाया और इतना बुलन्द किया कि सफेदी ज़ेरे बग़ल ज़ाहिर हो गई। फिर फ़रमाया **" मन कुनतो मौला फ़ा हाज़ा अलीउन मौला " (जिसका मैं मौला हूँ उसका यह अली भी मौला है।)** ख़ुदाया अली जिधर मूड़े हक़ को उसी तरफ़ मोड़ देना। फिर अली (अ.) के सर पर सियाह अमामा बाधाँ, लोगों ने मुबारक बादीयाँ देनी शुरू कीं। सब आपकी जांनशीनी से खुश हुए। हज़रत उमर (र.) ने भी नुमायाँ अलफाज़ में मुबारक बाद दी। जिबरईल ने भी बाज़बाने कुरान अकमाले दीं और एतिमामे नेमत का मुजदा सुनाया। सीरतुल हलबिया में है कि यह जांनशीनी १८ ज़िलहिज को वाके हुई। (नूरूल अबसबार सफ़ा ७८ में है कि एक शख़्स हारिस बिन नेमान फहरी ने हज़रत के अमल ग़दीरे खुम पर एतिराज़ किया तो उसी वक्त आसमान से उस पर एक पत्थर गिरा और वह मर गया।

वाज़े हो कि इस वाक़ेए ग़दीर को इमामुल मुहद्देसीन हाफिज़ इब्ने अब्दहु ने एक सौ सहाबा से इस हदीसे ग़दीर की रवाएत की है। इमामे जज़री व शाफ़ेई ने इन्हीं सहाबियों से इमाम अहमद बिन हम्बल ने तीस सहाबियों और तबरी ने पछत्तर सहाबियों से रवाएत की है अलावा इसके तमाम अक़ाबिर इस्लाम मसलन ज़हबी सनाई और अली अल क़ारी वग़ैरा से मशहूर और मुतावातिर मानते हैं। महज़ मिनहाजुल उसूल ,सिद्दीक़ हसन सफ़ा १३ तफ़सीर साअलबी फ़तेहुल बयान सिद्दीक़ हसन जिल्द १ सफ़ा ४८।

वाक़ेए मुबाहेला :- बख़रान यमन मे एक मुक़ाम है वहाँ ईसाई रहते थे। और वहाँ एक बड़ा कलीसा था आँहज़रत (स.) ने उन्हें भी दावते इस्लाम भेजी उन्होंने तहकीके हालात के लिए एक वफ़्द ज़ेरे क़यादत अब्दुल मसीह आक़िब मदीना भेजा। वह वफ़्द मस्जिदे नब्वी के सहन में आकर ठहरा। हज़रत से मुबाहेसा हुआ मगर वह क़ाएल न हुए। हुक्मे खुदा नाज़िल हुआ। (फ़कुल तआलो अन्दाअ अब्ना आना) ऐ पैग़म्बर उनसे कह दो के दोनों अपने बेटों अपनी औरतों और अपने नफ़सों को लाकर मुबाहेला करें। चुनान्चे फ़ैसला हो गया और २४ ज़िलहिज १० हिजरी को पंजतने पाक झूटों पर लानत करने के लिए

निकले। नसारा के सरदारों ने जूँही इनकी शकलें देखीं कापने लगे और मुबाहेले से बाज़ आये ! ख़ेराज देना मन्जूर कर लिया। जज़िया देकर रेआया बनना कुबूल किया।

(मआरिज अल इरफ़ान सफ़ा १३५, तफ़सीर बैज़ावी सफ़ा ७४)

सरवरे काऐनात के आख़री लम्हाते ज़िन्दगी

हुज्जतुल विदा से वापसी के बाद आपकी वह अलालत जो बारवाएत मिशक़ात ख़ैबर में दिये हुए ज़हर के करवट लेने से उभरा करती थी, मुस्तमिर हो गई। आप अकसर बीमार रहने लगे बीमारी की खबर आम होते ही झूटे मुददई नबूवत पैदा होने लगे। जिनमें मुसालमा कज़्ज़ाब-असवद अनसी-तलहा-सुजाह ज़्यादा नुमाया थे। लेकिन ख़ुदा ने उन्हें ज़लील किया। इसी दौरान में आपको इत्तेला मिली कि हूकूमत रोम मुसलमानों को तबाह करने का मनसूबा तैय्यार कर रही है। आपने इस ख़तरे के पेश नज़र कि कहीं वह हमला न कर दें उसामा बिन ज़ैद की सर करदगी में एक लशकर भेजने का फ़ैसला किया। और हुक्म दिया कि अली के अलावा अयाने महाजिर व अनसार में से कोई भी मदीना में ना रहे ,और इसी रवानगी पर इतना ज़ोर दिया कि यह तक फरमा दिया। " लाअनललाह मन तखलफअनहा" जो इस जगं में ना जाऐगा उस पर खुदा की लानत होगी। इसके बाद आँहज़रत ने असामा को अपने हाथों से तैय्यार करके रवाना किया। उन्होंने तीन मील के फ़ासले पर मुक़ामे ज़रफ़ में कैम्प लगाया और अयाने सहाबा का इन्तेज़ार करने लगे, लेकिन वह लोग न आऐ। (मदारिज अल नबूवत जिल्द २ सफ़ा ४८८ व तारीख़े कामिल जिल्द २, १२० तबरी जिल्द ३ सफ़ा १८८ में है कि न जाने वालो में **हज़रत अबूबक्र व हज़रत उमर** भी थे। मदारिज अल नबूवतः जिल्द २ सफ़ा ४६४ में है कि आख़िर सफ़र में जबकि आप को शदीद दर्दे सर था। आप रात के वक्त अहले बक़ी के लिऐ दुआ की ख़ातिर तशरीफ़ ले गऐ। हज़रत आएशा ने समझा कि मेरी बारी में किसी और बीबी के वहाँ चले गऐ हैं। इस पर वह तलाश के लिए निकलीं तो आपको बक़ीआ में महवे दुआ पाया। इसी सिलसिले में आपने फ़रमाया क्या अच्छा होता ऐ आएशा कि तुम मुझसे पहले मर जातीं और मैं तुम्हरी अच्छी तरह तजहीज़ो तकफ़ीन करता। उन्होंने जवाब दिया कि आप चाहते हैं, मैं मर जाऊँ तो आप दूसरी शादी कर लें। इसी किताब के पृष्ठ ४६५ में है कि आँहज़रत की तीमार दारी आपके अहले बैत करते थे। एक रवाएत में है कि अहले बैत को तीमार दारी में पीछे रखने की कोशिश की जाती थी।

वाक़ेए क़िरतास :- हुज्जतुल विदा से वापसी पर बामुक़ाम ग़दीरे ख़ुम अपनी जांनशीनी का एलान कर चुके थे। अब आख़िरी वक्त में आपने यह ज़ुरूरी समझते हुए कि उसे दस्तावेज़ी शक्ल दे दें। असहाब से कहा कि मुझे क़लम दवात और कागज़ दे दो ताकि मैं तुम्हारे लिए एक ऐसा नविश्ता लिख दूँ जो तुम्हें गुम्राही से हमेशा हमेशा बचाने के

लिए काफ़ी हो। यह सुन कर असहाब में आपस में चीमी गोयां होने लगीं। लोगों के रूजाहनात क़लम दावात दे देने की तरफ़ देख कर हज़रत उमर ने कहा !

" अनल रजुल लेहिजर हसबुना किताब अल्लाह "

यह मर्द हिज़यान बक रहा है। हमारे लिये किताबे खुदा काफ़ी है।(सही बुख़ारी पेरा ३०,पृष्ठ ८४२) अल्लामा शिब्ली लिखते हैं। रवायत में हजर का लफ़ज है जिसके माने हिज़यान के हैं।

हज़रत उमर ने आंहज़रत के इस इरशाद को हिज़यान से ताबीर किया था। (अल-फ़ारूक़, पृष्ठ ६१) लुग़त में हिज़यान के माने " बेहूदा गुफ़तन " यानी बकवास के हैं।(सराह जिल्द २,पृष्ठ१२३) शमशुल उलमा मौलवी नज़ीर अहमद देहलवी लिखते हैं। "जिनके दिल में तमन्नाए ख़िलाफ़त चुटकियाँ ले रही थी। उन्होंने तो धींगा मुश्ती से मन्सूबा ही चुटकियों में उड़ा दिया और मज़हामत की यह तावील की कि हमारी हिदाएत के लिए कुरआन बस काफ़ी है और चूँकि इस वक़्त पैग़म्बर साहब के हवास बजा नहीं हैं। काग़ज़ क़लम दावात लाना कुछ ज़रूरी नहीं। खुदा जाने क्या क्या लिखवा देगें। (उम्मेहातुल उम्मत, पृश्ठ ६२) इस वाकेए से आँहज़रत को सख़्त सदमा हुआ और आपने झुंझला कर फ़रमाया। कूमू इन्नी मेरे पास से उठ कर चले जाओ। नबी के रूबारू शोर गुल इन्सानी अदब नहीं है। अल्लामा तरही लिखते हैं कि खानए काबा में पाँच लोगों ने हज़रत अबूबक्र ,हज़रत उमर , अबु उबैदा, अब्दुर्रहमान, सालिम गुलाम हुज़ैफ़ा ने मुत्तफ़िक़ा अहदो पैमान किया था। कि " ला नुज़्दो हाज़ल अमरनीफ़ा बनी हाशिम " पैग़म्बर के इन्तेक़ाल के बाद ख़िलाफ़त बनी हाशिम में न जाने देगें (मजमुआ बहरैन)मैं कहता हूँ कौन यक़ीन कर सकता है कि जैशे उसामा में रसूल से सरताबी करने वालों जिसमें लानत तक की गई है और वाक़ेआ किरतास हुक्म को बकवास बतलाने वालों को रसूले खुदा(स.) ने नमाज़ की इमामत का हुक्म दे दिया होगा मेरे नज़दीक इमामते नमाज़ की हदीस ना क़ाबिले क़ुबूल है।

वसीयत और एहतिज़ारः- हज़रत आएशा फ़रमाती हैं कि आख़री वक़्त आपने फ़रमाया। मेरे हबीब को बुलाओ। मैंने अपने बाप अबूबक्र, फिर उमर को बुलाया। उन्होंने फिर यही फ़रमाया तो मैंनें अली को बुला भेजा। आपने अली को चादर में ले लिया और आख़िर तक सीने से लिपटाए रहे (रेआज़ अल नज़रा पृश्ठ १८०) मुवर्रिख़ लिखते हैं कि जनाबे सय्यदा और हसनैन(अ.) को तलब फ़रमाया और हज़रत अली को बुला कर वसीअत की और कहा जैश असामह के लिए मैंनें फ़लाँ यहूदी से करज़ लिया था। उसे अदा कर देना और ऐ अली तुम्हें मेरे बाद सख़्त सदमे पहुँचेंगे तुम सब्र करना और देखो जब अहले दुनियाँ दुनियाँ परसती करें तो तुम दीन एख़्तेआर किए रहना।(रौज़तुल अहबाब जिल्द१ पृश्ठ ५५६ मदारिजुल नबूअत जिल्द २ पृश्ठ ५११ व तारीख़ बग़दाद जिल्द १ पृश्ठ २१६)

(बक़ीया हाशीया पृश्ठ ५२) अली क़ारी बर हाशिया नसीम अलरियाज़ व मदारिज अल नबूअत

तबा कानपुर पृश्ठ ५४२ हबीब उस सियर पृश्ठ ७८ व मकतूबात शेख़ अहमद सर हिन्दी मुजद्दिद अलिफ़ सानी जिल्द २ पृश्ठ ६१ -६२ वग़ैरा में है। उन्हीं कुतुब की रोशनी में शम्शुल उलमा ख़्वाजा हसन निज़ामी देहलवी लिखते हैं। इसी बीमारी के ज़माने में एक दिन बहुत से लोग हज़रत (स.) के पास जमा थे। आपने इरशाद फ़रमाया लाओ कागज़ मैं तुमको कुछ लिख दूँ ताकि तुम मेरे बाद गुमराह न हो जाओ,यह सुन कर (हज़रत उमर) बोले हज़रत रसूल (स.) पर बुख़ार की तकलीफ़ का ग़लबा है इसके सबब से ऐसा फ़रमाते हैं। वसीअत नामे की कुछ ज़रूरत नहीं हमको ख़ुदा की किताब काफ़ी है। (मोहर्रम नामा पृश्ठ १० तबा देहली)

रसूले करीम (स.) की शहादत :-हज़रत अली (अ.) से वसीअत फ़रमाने के बाद आपकी हालत ग़ैर हो गई। हज़रत फ़ातेमा जिनके ज़ानू पर सरे मुबारक रिसालत माब (स.) था। फ़रमाती हैं कि हम लोग इन्तेहाई परेशानी में थे कि नागाह एक शख़्स ने इज़ने हुज़ूरी चाहा, मैंने दाख़ले से मना कर दिया और कहा ऐ शख़्स यह वक्ते मुलाक़ात नहीं है। इस वक्त वापिस चला जा। इसने कहा मेरी वापसी नामुमकिन है। ऐ फ़ातमा (स.) इजाज़त दे दो। यह मलकुल मौत हैं फ़ातेमा(स.) ने इजाज़त दे दी और वह दाख़िले ख़ाना हुए। पैग़म्बर की ख़िदमत में पहुँच कर अर्ज़ की मौला यह पहला दरवाज़ा है जिस पर मैंने इजाज़त मागी है और अब आप(स.) के बाद किसी के दरवाज़े पर इजाज़त तलब न करूँगा। (अजाएब अल क़सस अल्लामा अब्दुल वाहिद पृश्ठ २८८२ व रौज़तुल सफ़ा जिल्द २ पृश्ठ २१६ व अनवार अल कुलूब पृश्ठ १८८)

अलग़रज़ मलकुलमौत ने अपना काम शुरू किया हुज़ूर रसूल करीम (स.) ने बतारीख़ २८ सफ़र ११ हिजरी योमे दोशम्बा ब वक्ते दोपहर ख़िलअते हयात उतार दिया। (मुवद्दतुल कुर्बा पृश्ठ ४६, १४ तबा बम्बई ३१० हिजरी अहले बैत कराम में रोने का कोहराम मच गया। हज़रत अबूबक्र उस वक्त अपने घर महल्ला सख़ गऐ हुए थे। जो मदीने से एक मील के फ़ासले पर था। हज़रत उमर ने वाकेए वफ़ात को नशर होने से रोका और जब हज़रत अबूबक्र आगए तो दोनों सक़ीफ़ा बनी साअदा चले गऐ। जो मदीने से तीन मील के फ़ासले पर था। और बातिल मशविरों के लिए बनाया गया था।(ग़यासुल लुग़ात)और उन्हीं के साथ अबू अबीदा भी चले गए जो गस्साल थे गरज़ कि अकसर सहाबा रसूल ख़ुदा(स.) की लाश छोड़ कर हगांमए ख़िलाफ़त में जा शरीक हुए और हज़रत अली(अ.) ने ग़ुसलो कफ़न का बन्दोबस्त किया। हज़रत अली (अ.) ग़ुस्ल देने में फज़्ल इब्ने अब्बास हज़रत का पैरहन ऊँचा करने में, अब्बास और क़सम करवट बदलवाने में और उसामा व शक़रान पानी डालने में मसरूफ़ हो गए और उन्हीं छः ६ आदमियों ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ी और इसी हुजरे में आपके जिस्मे अतहर को दफ़न कर दिया गया। जहाँ आपने वफ़ात पाई थी। अबू तलहा ने क़ब्र खोदी,हज़रत अबूबक्र व हज़रत उमर आपके ग़ुसलो कफ़न और नमाज़ में शरीक न हो सके क्योंकि जब यह हज़रात सक़ीफ़ा से वापस आए तो आँहज़रत की लाशे

मुतहर सुपुर्दे ख़ाक की जा चुकी थी कंजुल आमाल जिल्द ३ ,पृष्ठ १४० अर-हज्जुल-मतालिब पृष्ठ,६७० अल मुतर्ज़ा पृष्ठ ३६, फतेहुलबारी जिल्द ६, पृष्ठ ४ ,वफ़ात के वक़्त आपकी उम्र ६३ साल की थी। (तारीख़ अबुलफ़िदा जिल्द १ पृष्ठ १५२)

वफ़ात और शहादत का असर :- सरवरे कायनात की वफ़ात का असर यूँ तो तमाम लोगों पर हुआ। असहाबा भी रोए और हज़रत आएशा ने भी मातम किया। (मसनदे अहमद बिन हम्बल जिल्द ६ पृष्ठ २७४ व तारीख़े कामिल जिल्द २ पृष्ठ १२२ व तारीख़ तबरी जिल्द ३ पृष्ठ१६७) लेकिन जो सदमा हज़रत फातेमा(स.) को पहुँचा इसमें वह मुनफ़रिद थीं। तारीख़ से मालूम होता है कि आपकी वफ़ात से आलमे अलवी और आलमे सिफ़ली भी मुत्तसिर हुए और उनमें जो चीज़े हैं उनमें भी असरात हुवैदा हुए हैं। अल्लामा ज़मख़्शरी का बयान है कि एक दिन आँहज़रत ने उम्मे माअबद के वहाँ क़याम फरमाया। आपके वज़ू के पानी से एक पेड़ निकला। जो बेहतरीन फल लाता रहा। एक दिन मैंने देखा कि इसके पत्ते झड़े हुए हैं और मेवे गिरे हुए हैं। मैं हैरान हुई कि नागहाँ ख़बरे वफ़ात सरवरे आलम पहुँची। फिर तीस साल बाद देखा गया कि इसमें तमाम काँटे उग आए थे। बाद में मालूम हुआ कि हज़रत अली(अ.) ने शहादत पाई। फिर मुद्दत मदीद के बाद इसकी जड़ से खून ताज़ा उबलता हुआ देखा गया। बाद में मालूम हुआ हज़रत इमामे हुसैन(अ.) ने शहादत पाई। इसके बाद वह सूख गया। (अजाएब अल क़सिस पृष्ठ १५६ बा हवालए रबीउल अबरार ज़मख़्शरी)

आँहज़रत की शहादत का सबब :- यह ज़ाहिर है कि चाहरदा मासूमीन (अ.) में से कोई भी ऐसा नहीं जिसने शहादत न पाई हो। हज़रत रसूल करीम (स.) से लेकर हज़रत इमामे हसन असकरी (अ.) तक सब ही शहीद हुए हैं। कोई ज़हर से शहीद हुआ है कोई तलवार से शहीद हुआ। इनमें एक औरत भी थीं हज़रत फ़ातेमा बिनते रसूल वह ज़र्बे शदीद से शहीद हुईं। इन चौदाह मासूमों में लगभग तमाम की शहादत का सबब वाज़े है। लेकिन हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा(स.) की शहादत के सबब से अकसर हज़रात न वाकिफ़ हैं इसलिए मैं इस पर रौशनी डालता हूँ।

हुज्जतुल इस्लाम इमाम अबू हामिद मोहम्मद अलग़ज़ाली की किताब सिर्रूल आलमीन के पृष्ठ ७ तबा बम्बई १२१४ हिजरी और किताब मिशक़ात शरीफ़ के हिस्सा ३ पृष्ठ ५८ से वाज़े है कि आपकी शहादत ज़हर के ज़रिए से हुई है और बुख़ारी शरीफ़ की जिल्द ३ तबा मिस्र १३१४ के हिस्सा अल्लददू पृष्ठ १२७ किताब अल तिब से मुस्तफाद और मुस्तमिबत होता है कि "आँहज़रत को दवा में मिला कर ज़हर दिया गया था।"

१. तारीख़े तबरी जिल्द ४ ,पृष्ठ ४३६ में है कि अन्सार ने जब हज़रत अली (अ.) की बैअत करना चाही तो हज़रत उमर ने हज़रत अबूबक्र का हाथ पकड़ कर बैअत कर ली और कहा कि आप भी क़रशी हैं और हम में सज़ावार तर हैं।

मेरे नज़दीक रसूले करीम(स.) के बिस्तरे अलालत पर होने के वक्त के वाक़ेआत व हालात के पेशे नज़र दवा में ज़हर मिला कर दिया जाना ग़ैर मुतवक़्क़ा नहीं है। अल्लामा मोहसिन फैज़ " किताब अलवाफी " की जिल्द १ के पृष्ठ१६६ में बा हवाला तहज़ीबुल एहकाम तहरीर फरमाते हैं कि हुज़ूर मदीने में ज़हर से शहीद हुए हैं। अलख़ मुझे ऐसा मालूम होता है कि ख़ैबर में ज़हर ख़ूरानी की तशहीर अख़फ़ाए जुर्म के लिए की गई थी।

• अज़वाज

चन्द कनीज़ों के अलावा जिन्हें मारिया और रेहाना भी शामिल थीं आपके ग्यारह बीबीयाँ थी जिन्में से हज़रत ख़तीजा(र०) और ज़ैनब बिन्ते ख़ज़ीमह ने आपकी ज़िन्दगी में वफात पाई थी और नौ(९) बीबीयां ने आपके वफ़ात के बाद इन्तेक़ाल किया। आँहज़रत की बीबीयों के नाम निम्न लिखित हैं।

(१) ख़तीजतुल कुबरा (२) सूदा (३) आएशा (४) हफ़सा (५) ज़ैनब बिन्ते ख़ज़ीमह (६) उम्मे सलमा (७) ज़ैनब बिन्ते हजश (८) जवेरिहा बिन्ते हारिस (९) उम्मे हबीबा (१०) सफ़िया (११) मैमूना।

औलाद

आपके तीन बेटे थे और एक बेटी थीं। जनाबे इब्राहीम के अलावा जो मारिया क़िबतिया के बतन से थे । सब वच्चे हज़रत ख़तीजा के बतन से थे हुज़ूर के औलाद के नाम निम्न लिखित हैं।

१- **हज़रत क़ासिम तैय्यब**:-आप बेअसत से पहले मक्का में पैदा हुए और दो साल की उमर में वफात पागऐ।

२- **जनाबे अबदुल्ला** :-जो ताहिर के नाम से मशहूर थे। बेअसत से पहले मक्का में पैदा हुए और बचपन ही में इन्तेक़ाल कर गए।

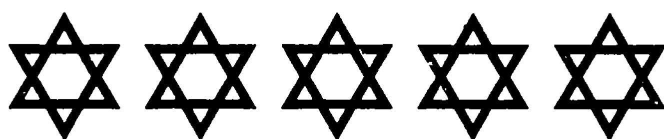
३-**जनाबे इब्राहीम** :- ८, हिजरी में पैदा हुए और १० हिजरी में इन्तेक़ाल कर गए।

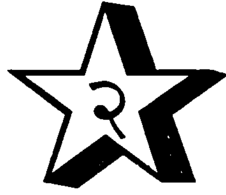
४-**हज़रत फ़ातेमा ज़हरा** :- आप पैग़म्बरे इस्लाम(स.) की इकलौती बेटी थीं। आपके शौहर हज़रत अली(अ.) और बेटे हज़रत इमाम हसन और इमाम हुसैन(अ.) थे। फ़ात्मा ज़हरा(स.) की नसल से ग्यारह इमाम पैदा हुये और इनहीं के ज़रिये से रसूल(स.) की नसल बढ़ी। और आपकी औलाद को सयादत का शरफ़ हासिल हुआ, और वह क़यामत तक " सय्यद " कही जायगी।

हज़रत रसूले करीम(स.) इरशाद फ़रमाते हैं। कि क़यामत में मेरे सिलसिले नसब के अलावा सारे सिलसिले टूट जायेंगे और किसी का रिशता किसी के काम न आयेगा। (सवाएके मोहर्रेका पृष्ठ ९३) अल्लामा हुसैन वाएज़ काशफ़ी लिखते हैं कि तमाम अम्बिया की औलाद हमेशा क़ाबिले ताज़ीम समझी जाती रही है। हमारे नबी (स.) इस सिलसिले में सब

से ज़्यादा हक़दार हैं। (रौज़तुल शोहदा पृष्ठ ४०४)

इमाम उल मुस्लेमीन अल्लामा जलालुद्दीन फ़रमाते हैं कि **हज़रत हसनैन** (स.) की औलाद के लिए सयादत मख़्सूस है। मर्द हो या औरत जो भी इनकी नस्ल से हैं वह क़यामत तक **"सय्यद"** रहेगा। **"वयजुब अला इजमा अल ख़लके ताज़ीमहुम अब अन"** और सारी कायनात पर वाजिब है कि हमेशा हमेशा इनकी ताज़ीम करती रहे।
(लवायमुल तंज़ील जिल्द ३ पृष्ठ ३, ४ असआफ़-अल-राग़ेबीन बर हाशिया नूर-अल-अबसार शिबलन्जी पृष्ठ ११४ तबा मिस्र)





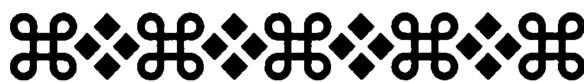
उम्मुल आइम्मा

हज़रत

फ़ातमा ज़हरा (स.अ.)

ख़ातूने जन्नत

ख़दीजा को मिली बेटी, नबी को बिज़अतो मिन्नी
हुई तकमीले तबलीग़े अमल तन्ज़ीमे ईमां में
रिसालत आमदे ज़हरा पा, यह एलान करती है
करेंगी फ़ातमा, कारे रिसालत सिन्फ़े निस्वां में



بسم اللہ الرّحمٰن الرّحیم

(भाग-२)

हज़रत फ़ात्मा ज़हरा (स.अ)

जलवा नुमाए शम्मे हक़ीक़त हैं फ़ात्मा।
आइनऐ कमाले नबूवत हैं , फ़ात्मा।।
यह मानता हूँ इनको रिसालत नहीं मिली।
लेकिन , शरीके कारे रिसालत हैं फ़ात्मा।।

हज़रत फ़ात्मा, पैग़मतबरे इस्लाम हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा (स.अ.) और जनाबे ख़तीजतुल कुबराकी इकलैती बेटी हज़रत अली (अ) की रफ़ीक़ाए हयात और इमाम हसन (अ) व इमामे हुसैन (अ) जनाबे ज़ैनब व उम्मे कुलसूम की मादरे गिरामी और नौ,९ इमामों की जद्दे माजेदा थीं। आपकी मशहूर कुन्यित उम्मे आइम्मा, उम्मुल हसनैन और इमाम अल सिबतैन थी। मशहूर अलक़ाब ज़हरा व सयदतुन्निसाँ थे। एक रवाएत में है कि आपकी कुन्नियत " उम्मे अबींहा " भी थी जो मेरे नज़दीक यह "उम्मे इब्नीहा" है यानी हसन व हुसैन की माँ।

आपकी की विलादतः- आपका नूरे वजूद नूरे रिसालत (स) के साथ खिल्क़ते काएनात से बहुत पहले पैदा हो चुका था। अलबत्ता आपके ज़ाहिरी नमूद व शहूद के लिए उलमा ने लिखा है कि आप मेराजे रिसालत माआब (स.) के बाद ५, बेअसत में तारीख़ २० जमादुस्सानी जुमे के दिन मक्का मोअज़्ज़मा में पैदा हुईं। आपका साले विलादत आमुलफ़ील के लेहाज़ से ४६ और इसवी नुक़तये निगाह से ६१४ , ६१५ ई० था। आपकी विलादत के वक़्त जन्नत से हूरों और आसिआ बिन्ते मज़ाहम ,मरयम बिन्ते इमरान, सफ़ूरा बिन्ते शुऐब, कुल्सूम हमशीरए ,मूसा का आना किताबों से साबित है। जनाबे ख़दीजा का बयान है कि चूंकि मैंने अपने क़बीले के मनशा के बर ख़िलाफ सरवरे काएनात से शादी करली थी। इसलिए मेरी क़ौम ने मेरा बाईकाट कर दिया था। मैंने विलादत के वक़्त हसबे दस्तूर इत्तेला दी लेकिन कोई न आया। अल्लह की रहमत शामिले हाल हुई। हूरों और पाक बीबीयों ने

क़ाबला और दाया का काम किया बच्ची पैदा हुई। हुज्जतुल आलमीन का घर बुक़्क़ए नूर बन गया। (तारीख़े ख़मीस जिल्द १ पृष्ठ ३१३ व दमए साक़ेबा पृष्ठ ५३)

आपका इकलौती बेटी होनाः- मुनाक़िब इब्ने शहर आशोब में है कि जनाबे ख़दीजा के साथ जब आँहज़रत की शादी हुई तो आप बाकरा थीं। यह तसलीम शुदा अमर है कि क़ासिम अब्दुल्ला यानी तैय्यब व ताहिर और फात्मा ज़हरा बतने ख़दीजा से रसूल इस्लाम की औलाद थीं। इसमें इख़्तेलाफ़ है कि ज़ैनब,रूक्कया उम्मे कुल्सूम,आँहज़रत की लड़कियाँ थीं, या नहीं, यह मुसल्लम है कि यह लड़कियाँ ज़हूरे इस्लाम से क़बल काफ़िरों अतबा, पिसराने अबू लहब,और अबू आस, इबने रबी के साथ ब्याही थीं। जैसा के मवाहिबे लदुनिया जिल्द १ पृष्ठ१६७ तबा मिस्र व मुरव्वज उज ज़हब मसूदी जिल्द २ पृष्ठ २९८ तबा मिस्र से वाज़े है। यह माना नहीं जा सकता कि रसूले इस्लाम अपनी लड़कियों को काफ़िरों के साथ ब्याह देते। लेहाज़ा यह माने बगैर चारा नही है कि यह औरतें हाला बिनते ख़वैला हमशीर जनाबे ख़दीजा की बेटियाँ थीं। इनके बाप का नाम अबू लहनद था। जैसा कि अल्लामा मोतमिद बदख़शानी ने मरजाउल-अनस, में लिखा है। यह वाक़ेया है कि यह लड़कियाँ ज़मानए कुफ़र में हाला और अबू लहन्द में बाहमी चपक़लिश की वजह से जनाबे ख़दीजा के ज़ेरे केफ़ालत और तहते तरबीयत रहीं और हाला के मरने के बाद मुतलक़न् उन्हीं के साथ हो गईं और ख़दीजा की बेटी कहलाईं। इसके बाद बा ज़रिए जनाबे ख़दीजा आँहज़रत से मुनसलिक होकर उसी तरह रसूल (स.) की बेटियाँ कहलाईं। जिस तरह जनाबे ज़ैद मुहावरा अरब के मुताबिक़ रसूल के बेटे कहलाते थे। मेरे नज़दीक इन औरतों के शौहर मुताबिक़ दस्तूर अरब दामादे रसूल कहे जाने का हक़ रखते हैं। यह किसी तरह नहीं माना जा सकता कि रसूल की सुलबी बेटियां थीं। क्योंकि हुज़ूरे सरवरे आलम का निकाह जब बीबी ख़दीजा से हुआ था तो आपके ऐलाने नबूवत से पहले इन लड़कियों का निकाह मुशरिकों से हो चुका था और हुज़ूर सरकारे दो आलम का निकाह २५ साल के सिन में ख़दीजा से हुआ और ३० साल तक कोई औलाद नहीं हुई और चालीस साल के सिन में आपने ऐलाने नबूवत फ़रमाया और इन लड़कियों का निकाह मुशरिकों से आपकी चालीस साल की उम्र से पहले हो चुका था,और इस दस साल के अरसे में आपके फ़रज़न्द का भी पैदा होना और तीन लड़कियों का पैदा होना तहरीर किया गया है। जैसा कि मदारिज अल नबूअत में तफ़सील मौजूद है। भला ग़ौर तो कीजए के दस साल की उमर में चार, पाँच औलादें भी पैदा हो गईं और इतनी उमर भी हो गई कि निकाह मुशरिकों से हो गया। क्या यह अक़्ल व फ़हम में आने वाली बात है कि चार साल की लड़कियों का निकाह मुशरिकों से हो गया और हज़रत उस्मान से भी एक लड़की का निकाह हालते शिरक ही में हो गया। जैसा कि मदारिज अल नबूअत में मज़कूर है। इस **हक़ीक़त पर ग़ौर करने से मालूम होता है कि लड़कियाँ हुज़ूर की न थीं बल्कि हाला ही की थीं और इस उम्र में थीं कि इनका निकाह मुशरिकों से हो गया था।** (सवानेह हयाते सय्यदा पृष्ठ३४)

बचपन और तरबीयतः- **जनाबे सय्यदा**(स.) में बचपन के वह आसार ही न थे जो आम लड़कियों में हुआ करते हैं। उम्मे सलमा से कहा गया कि फ़ात्मा को ऊसूले तहज़ीब सीखाऐं। उन्होंने जवाब दिया कि मैं मुज्जस्सेमये अस्मत व तहारत को एख़लाक़ व आदात की क्या तलीम दे सकती हूँ। मैं तो खुद इस कमसिन बच्ची से तालीमें उसूल हासिल किया करती हूँ। किताबों से मालूम होता है कि आपका सारा बचपन इबादत और ख़िदमते वालदैन में गुज़रा। एक मरतबा आँहज़रत सहन काबा में नमाज़ अदा फ़रमा रहे थे कि अबू जेहल जो हज़रत उमर का मामू था। (तारीख़े इस्लाम जिल्द २ पृष्ठ २०) की नज़र आप पर पड़ी तो उसने हालते सजदे में ऊँट की ओझड़ी गोबर भरी पुश्ते हुज़ूर पर रख दी, फ़ात्मा को ख़बर मिली, आप दौड़ी हुई आईं और पुश्ते रिसालत से ओझड़ी हटा दी और पुश्ते मुबारक को पानी से धोया। रसूले करीम (स.) ने फ़रमाया। बेटी एक दिन दुश्मन भी मग़लूब होंगे और खुदा मेरे दीन को इन्तेहाई बुलन्द करेगा। तारीख़ में है के ख़दीजा(स.) किसी की शादी में जाने को तैयार हुईं और कपड़े पहनने लगीं तो पता चला के जनाबे सय्यदा के लिए कपड़े नहीं हैं। माँ इसी तरददुद में थी कि बेटी को एहसास हो गया। अर्ज़ कि मादरे गिरामी मैं पुराने ही कपड़े में चलूँगी। क्योंकि बाबा जान फ़रमाते हैं कि मुसलमान लड़कियों का सबसे बेहतर ज़ेवरे हयाते तक़वा है और बहेतरीन अराईश शर्म व हया है।

फ़ात्मा ज़ेहरा (स.) का सारा बचपन फ़क्र फाक़ा और तंगी व मसाएब में गुज़रा। आपको जिन हज़रात से तालीम मिली वह यह हैं। (१) ख़तीजतुल कुबरा (२) सरवरे काएनात (स) (३) फ़ात्मा बिन्ते असद (४) उम्मे अफज़ल ज़ौजए अब्बास (५) असमा बिन्ते उमैस ज़ौजा जाफ़रे तैय्यार (६) उम्मे हानी हम्शीरा जनाबे अबूतालिब (७) उम्मे ऐमन (८) सफ़िया बिन्ते जनाबे हमज़ा।

मदारिजुल नबूवत में है कि हज़रत रसूले करीम (स.) जनाबे सय्यदा को जबकि वह कमसिन थी। अकसर अपनी आगोश में बिठा लिया करते थे और उनके होठों को बोसा देते थे। इस पर हज़रत आऐशा ने कहा कि जनाबे फ़ात्मा के बोसे देते हैं और अपनी ज़बान उनके मुँह में देते हैं। हुज़ूर ने इरशाद फ़रमाया तुम्हें मालूम नहीं जब मैं मेराज पर गया था जिबरईल ने एक सेब जन्नत में दिया था। मैंने उसे खाया था और इसी से फ़ात्मा का नुतफ़ये, वजूद क़ाएम हुआ था। ऐ आएशा जब मैं जन्नत का मुशताक़ होता हूँ तो फ़ात्मा (स.) की खुशबू सूँघता हूँ और दहने फ़ात्मा से मेवये जन्नत का लुत्फ़ उठाता हूँ। (मदारिज१ पृष्ठ १६२ व अलामे अलवरी १ पृष्ठ ६१)।

आपकी इसमतः- इसमत कोई ऐसी सिफ़त नहीं जो किसी अमल पर मौक़ूफ हो,यह खुदा का अतीया होता है और बदो फितरत में अता हुआ करता है। मलाएक अम्बिया, और औसिया ख़ास के अलावा यह पाकीज़ा सिफत जिन अहम शख़्सीयतों को अता हुई। उनमें हज़रत फात्मा को ख़ास हैसीयत हासिल है। उलमा का इत्तेफाक़ है कि जिस तरह एक लाख

चौबीस हज़ार अम्बिया,और बारह इमाम दुनिया में हिदाएत ख़ल्क़ के लिए भेजे गए और सब मासूम थे। इसी तरह सिनफ़े नाज़ुक के लिए हज़रत मरयम(स.)हज़रत फ़ात्मा ज़हरा(स.) तशरीफ़ लाईं और यह दोनों बीबीयाँ मासूम थीं और दोनों की इसमत पर क़ुरआन गवाह है।

आपकी वालेदा की वफ़ात :–आपकी वालेदा जनाबे ख़दीजतुल कुबरा थीं हज़रत फ़ात्मा(स.) को पांच साल मां की आग़ोश में तरबियत नसीब रही। जनाबे ख़दीजा की अलालत से जनाबे सय्यदा को बेहद दुख हुआ। आप इनकी तीमारदारी में रात व दिन लगी रहती थीं और उनके चेहरे पर नज़र जमाए उन्हीं को देखा करतीं थीं। माँ का चेहरा बहाल देखा तो ख़ुश हो गईं। माँ की शकल पज़मुर्दा मुर्दा देखी तो रंजीदा हो गईं। यही तरज़े अमल रहा कि एक दिन ख़दीजा ने फ़ात्मा को अपने सीने से लगाया और फूट फूट कर रोने लगीं- बेटी ने पूछा- अम्माजान आपके रोने का अन्दाज कुछ़ निराला है फरमाया-बेटी! मैं तुझसे रूख़सत हो रही हूँ। अफसोस तुझे दुल्हन ना देख सकी। माँ बेटी में अलमनाक बातचीत हो रही थी कि माथे पर मौत का पसीना आगया और ख़दीजा १०, रमज़ान १० बेअसत को इन्तेक़ाल फ़रमा गईं मौत के वक़्त आपकी उम्र ६५ साल की थी। आपको मक़बरये हजून में दफ़न किया गया। ख़दीजा के इन्तेक़ाल से फ़ात्मा ज़हरा को इन्तेहाई दुख हुआ और आपसे ज़्यादा सरवरे काएनात(स.) को दुख हुआ। इसी वजह से आपने इस साल को "आम उल हुज़न" कहा है। सही बुखरी हिल्द ३ पृष्ठ ४१६ में है कि आँहज़रत (स.) जनाबे ख़दीजा की याद में गोसफन्द(बकरा) ज़बह करके उनकी सहेलियों के पास भेजा करते थे। एक मरतबा हज़रत आएशा (र.) ने कहा कि उस बूढ़ी औरत को जिसके मुह में दाँत भी न थे। कब तक याद करते रहेंगे। यह सुन कर आँहज़रत(स.) ग़ज़ब नाक हो गए और फ़रमाया कि इससे बेहतर मुझे कोई औरत नसीब नहीं हुई। वह उस वक़्त ईमान लाईं जबकि सब काफ़िर थे और उस वक़्त मेरे लिए माल ख़र्च किया। जब लोग महरूम करना चाहते थे। हयात अल कुलूब में है हजरत अबू तालिब और उनके तीन दिन बाद हज़रत ख़दीजा(र.) का इन्तेक़ाल हुआ था।

हिजरते फ़ात्मा :– १०, बेअसत जुमे की रात यकुम रबीउल अव्वल को आँहज़रत (स.) ने हिजरत फ़रमाई और १६ रबीउल अव्वल जुमे के दिन को दाख़िले मदीना हुए। वहाँ पहुँचने के बाद आपने जैद बिन हारेसा और अबूराफ़ये को ५ सौ दिरहम और दो ऊँट देकर मक्का की तरफ़ रवाना किया कि हज़रत फ़ात्मा, फ़ात्मा बिन्ते असद, उम्मुल मोमेनीन सौदा, उम्मे ऐमन वग़ैरा को ले आए। चुनानचे यह बीबीयाँ चन्द दिनों के बाद मदीना पहुचँ गईं आपके अक़द में उस वक़्त सिर्फ दो बीबीयाँ थीं। एक सौदा और दूसरी आएशा। २, हिजरी में आपने उम्मे सलमा से अक़द किया। उम्मे सलमा ने निगहदाश्ते फ़ात्मा का बीड़ा उठाया और इस अन्दाज़ से ख़िदमत गुज़ारी की कि फ़ात्मा ज़हरा से माँ को भुला दिया।

हज़रत फ़ातमा ज़हरा (स.) की शादी

पैग़म्बरे इस्लाम (स.) ने अली(अ.) की विलादत के वक़्त अली को ज़बान दे दी थी और बाद में फ़रमाया था कि मेरी बेटी का कफ़ू ख़ाना ज़ादे ख़ुदा के सिवा कोई नहीं हो सकता। (नूरूल अनवार सहीफ़ये सज्जादिया) हालात का तक़ाज़ा और नसबी वा ख़ानदानी शराफत का मुक़्तज़ा यह था की फ़ातमा की ख़्वास्तगारी के सिसिले में अली के सिवा किसी का तज़किरा तक न आता। लेकिन किया क्या जाए कि दुनिया इस अहमियत को समझने से क़ासिर रही है। यही वजह है कि फ़ातमा के सिने बुलूग़ तक पहुँचते ही लोगों के पैग़ामात आने लगे। सबसे पहले अबूबक्र ने फिर हज़रत उमर ने ख़्वास्तगारी की और इनके बाद अब्दुर रहमान ने पैग़ाम भेजा। हज़राते शेख़ैन के जवाब में रहमतुल लिल आलेमीन(स.) ग़जबनाक हुये और उनकी तरफ़ से मुँह फेर लिया। (कनजुल आमाल जिल्द ७ पृष्ठ ११३) और अब्दुर रहमान से फ़रमाया कि फ़ातमा की शादी हुक्मे ख़ुदा से होगी तुमने जो महर की ज़्यादती का हवाला दिया है वह अफ़सोसनाक है। तुम्हारी दरख़्वास्त कुबूल नहीं की जा सकती।(बिहारूल अनवार जिल्द १० पृष्ठ १४) इसके बाद हज़रत अली(अ.) ने दरख़्वास्त की तो आप (स.) ने फ़ातमा की मरज़ी दरयाफ्त फ़रमाई। वह चुप हो रहीं यह एक तरह का इज़हारे रज़ामन्दी था।(सीरतुल अल नबी जिल्द १ पृष्ठ २६) बाज़ उलमा ने लिखा है कि आँहज़रत ने ख़ुद अली से फ़रमाया कि ऐ अली (अ.) मुझे ख़ुदा ने फ़रमाया है कि अपनी लख़्ते जीगर का अक़्द तुमसे करूँ क्या तुम्हें मनजूर है ! अर्ज़ की जी हाँ ! इसके बाद शादी हो गई।(रेयाज़ अल नज़रा जिल्द २ पृष्ठ१८४ तबा मिस्र) अल्लामा मजलिसी लिखते हैं कि पैग़ाम महमूद नामी एक फ़रिशता लेकर आया था। (बिहारूल अनवार जिल्द १ पृष्ठ३५) बाज़ उलमा ने जिबरील का हवाला दिया है।

ग़रज़ हज़रत अली (अ.) ने ५०० दिरहम में अपनी ज़िरह उस्मान ग़नी के हाथों बेची और इसी को महर क़रार देकर बातारीख़ यकुम १, ज़िलहिज २, हिजरी हज़रत फ़ातमा ज़हरा के साथ निकाह किया। मज़कूरा रक़म आज कल के अनुसार १०७ एक सौ सात रूपए होती है जो हमारे नज़दीक शरई महर है।

जनाबे सय्यदा का जहेज़ :- निकाह के थोड़े समय बाद २४ ज़िल हिज को हज़रत सय्यदा की रूखसती हुई सरवरे काएनात(स.) ने अपनी इकलौती चहीती बेटी को जो जहेज़ दिया उसकी तफ़सील यह है।

(१) एक कमीज़ क़ीमती सात दिरहम (२) एक मक़ना (३) एक सियाह कम्बल (४) एक बिस्तर खजूर के पत्तों का बना हुआ। (५) दो मोटे टाट (६) चमड़े के चार तकिए(७) आटा पीसने की चक्की (८) कपड़ा धोने की लगन। (९) एक मशक (१०) लकड़ी का बादिया (११) खजूर के पत्तों का बना हुआ एक बरतन (१२) दो मिट्टी के आब ख़ोरे (१३) एक मिट्टी की सुराही

(१४ चमड़े का फ़र्श (१५) एक सफ़ेद चादर (१६) एक लोटा।

यह ज़ाहिर है कि रसूले करीम (स.) आला दरजे का जहेज़ दे सकते थे मगर अपनी उम्मत के गुरबा के ख़्याल से इसी पर इकतेफ़ा फ़रमाया।

जुलूसे रूख़सत :- खाने पीने के बाद जुलूस रवाना हुआ। अशहब नामी नाक़ा पर हज़रत फ़ात्मा सवारथीं। सलमान सारबान थे। अज़वाजे रसूल नाक़े के आगे आगे थीं। बनी हाशिम नंगी तलवारें लिए हुए थे। मस्जिद का तवाफ़ कराया और अली(अ.) के घर में फ़ात्मा को उतार दिया। इसके बाद आँहज़रत (स.) ने फ़ात्मा से एक बरतन में पानी मंगाया। और कुछ दुआएं दम कीं और उसे फ़ात्मा और अली के सर सीने और बाज़ू पर छिड़का और बारगाहे अहदीयत में अर्ज़ की बारे इलाह इन्हें और इनकी औलादों को शैतान रजीम से तेरी पनाह में देता हूँ। (सवाएक़े मोहर्रेक़ा पृष्ठ८४) इसके बाद फ़ात्मा से कहा देखो अली से बेजा सवाल न करना। यह दुनियाँ में सबसे आला और अफ़ज़ल है। लेकिन दौलत मन्द नहीं है और अली से कहा कि यह मेरे जिगर का टुकड़ा है कोई ऐसी बात न करना कि उसे दुख हो। (तज़किरए अलख़्वास सिब्ते इब्ने जौज़ी के पृष्ठ ३६५) में है कि फ़ात्मा के साथ जिस वक़्त अली की शादी हुई उनके घर में एक चमड़ा था। रात को बिछाते थे और दिन में उस पर ऊँट को चारा दिया जाता था।

हज़रत फ़ात्मा का निज़ामे अमल :- शौहर के घर जाने के बाद आपने जिस निज़ामें ज़िन्दगी का नमूना पेश किया वह तबक़ये निसवाँ के लिए एक मिसाली हैसीयत रखता है। आपघर का तमाम काम अपने हाथों से करतीं थीं झाड़ू देना, खाना पकाना, चरखा कातना चक्की पीसना, और बच्चो की तरबीयत करना, यह सब काम और अकेली सय्यदए आलम, लेकिन न कभी तेवरी पर बल आते थे और न कभी शौहर से मद्दगार या ख़ादमा की फ़रमाईश की। फिर जब ७ हिजरी में पैगम्बरे खुदा ने एक ख़ादमा अता की जो फ़िज़्ज़ा के नाम से मशहूर हैं,तो रसूल अल्लाह(स.) की हिदायत के अनुसार सय्यदए आलम फ़िज़्ज़ा के साथ एक कनीज़ का सा नहीं ,बल्कि एक अज़ीज़ रफ़ीक़ कार जैसा बरताव करती थीं और एक दिन घर का काम ख़ुद करती थीं। दरअसल यह मसावाते मोहम्मदी की आला मिसाल हैं। (सय्यदा की अज़मत, मुसन्नेफा मौलाना कौसर नियाज़ी पृष्ठ ५)

फ़ात्मा ज़हरा (स.) और पर्दा :- आपने औरतों की मेराज पर्दादारी को बताया है और खुद भी हमेशा इस पर आमिल रही हैं और इतनी सख़्ती के साथ कि मस्जिदे रसूल (स.) से बिलकुल मुत्तसिल क़याम, रखने और मस्जिद के अन्दर घर का दरवाज़ा होने के बावजूद कभी अपने वालिद बुर्जुग़वार के पीछे नमाज़े जमाअत में शिरकत या आपके मौवाएज़ के सुनने के लिए भी मस्जिद में तशरीफ़ नहीं लाईं। एक मरतबा पैग़म्बर(स.) ने

मिम्बर पर यह सवाल पेश फ़रमा दिया कि औरत के लिए सबसे बेहतर क्या चीज़ है! यह बात सय्यदा तक पहूँची।आपने जवाब दिया औरत के लिए सबसे बेहतर यह बात है कि न इसकी नज़र किसी ग़ैर मर्द पर पड़े, और न किसी ग़ैर मर्द की उस पर पड़े। रसूल(स.) के सामने यह जवाब पेश हुआ आपने फ़रमाया, क्यों न हो फ़ात्मा मेरा ही एक जुज़ है।

जनाबे सय्यदा (स.) का जिहाद :- इस्लाम में औरत का जिहाद मर्द से अलग है इसलिए सय्यदा ने कभी मैदाने जगं में क़दम नहीं रखा मगर रसूल (स.) जब कभी ज़ख्मी हो कर घर वापस तशरीफ़ लाते थे तो पैग़म्बर (स.) के ज़ख़्मों को धुलाने वाली, और अली (अ.) जब खून में डूबी हुई तलवार ले कर आते थे तो उनकी तलवार को साफ़ करने वाली फ़ात्मा ज़हरा ही होती थीं। एक मरतबा नुसरते इस्लाम के लिए मैदान में गईं। मगर उस पुर अमन मामले में जो नसारा के मुक़ाबले में हुआ था और जिसमें सिर्फ़ रूहानी फ़तेह का सवाल था। इस जिहाद का नाम मुबाहेला है और इसमें पर्दादारी के तमाम इमकानी तक़ाज़ों की पाबन्दी के साथ सय्यदए आलम बाप बेटों और शौहर के बीच मरकज़ी हैसीयत रखती थीं। (वसाएल अल शिया जिल्द ३ पृष्ठ ६१)

हज़रत फ़ात्मा (स.)और अमूरे ख़ानादारी :- औरतों का जौहरे ज़ाती शौहरों की ख़िदमत और अमूर खाना दरी में कमाल हासिल करना है। फ़ात्मा ज़हरा ने अली(अ.) की ऐसी ख़िदमत की कि मुश्किल से इस की मिसाल मिल सकेगी। हर मुसीबत और तककलीफ़ में फ़रमा बरदारी पर नज़र रखी और अगर मैं यह कहूँ तो बेजा न होगा कि जिस तरह ख़दीजा(र.) ने इस्लाम और पैग़म्बरे इस्लाम की ख़िदमत की, इसी तरह बिन्ते रसूल (स.) ने इस्लाम और अली की ख़िदमत की, यही वजह है कि जिस तरह रसूले करीम ने ख़दीजा (र.) की मौजूदगी में दूसरा अक़्द नहीं किया। हजरत अली (अ.) ने भी फ़ात्मा की मौजूदगी में दूसरा अक़्द नहीं किया (सवाएक़े मोहर्रेक़ा पृष्ठ ८५ व मुनाक़िब पृष्ठ, ८) हज़रत अली (अ.) से किसी ने पूछा के फ़ातमा (स.) आपकी नज़र में कैसी थीं। फ़रमाया ख़ुदा की क़सम वह जन्नत का फूल थीं। दुनियाँ से उठ जाने के बाद मेरा दिमाग़ उनकी ख़ुशबू से मुअत्तर है।

अमूर ख़ानादारी में जनाबे सय्यदा आपही अपनी नज़ीर थीं। ७, हिजरी तक आपके पास कोई कनीज़ न थी। कनीज़ न होने की सूरत में घर का सारा काम ख़ुद करती थीं ,झाडू देती थीं, पानी भरतीं, चक्की पीसती थीं, आटा छानती थीं ,आटा गूँधती थीं, तनूर जलाकर रोटी पकाती थीं। हज़रत अली(अ.) सवेरे उठ कर मस्जिद चले जाते थे और वहाँ से मज़दूरी की फ़िक्र मे लग जाते थे। फ़िज़्ज़ा के आ जाने के बाद काम बांट लिया गया था। बल्कि बारी बांध ली थी। एक दफ़ा सरकारे आलम(स.) खानए सय्यदा में तशरीफ़ लाए। देखा कि सय्यदा गोद में बच्चे को लिए चक्की पीस रही हैं, फ़रमाया, बेटी एक काम फ़िज़्ज़ा के हवाले

कर दो। अर्ज़ की बाबा जान! आज फ़िज़्ज़ा की बारी का दिन नहीं है। (मुनाक़िब पृष्ठ१४)

हज़रत फ़ातमा (स.) और बाहम गुज़ारदारी ज़ौजा व ख़ावन्द

हज़रत इमाम मूसा काज़िम(अ.) इरशाद फ़रमाते हैं कि " जिहाद अल मरअतल हसन अल तबअल " औरत का जिहाद शौहर के साथ हुस्ने सुलूक है। (वसाएल अल शिया जिल्द १२ पृष्ठ ११६) एक हदीस में है कि " ला तूदी अलमुरतह हक़ अल्लाह हत्ती तूदी हक़ ज़ौजहा " औरत अगर ख़ाविन्द का हक़ अदा नहीं करती तो समझ लेना चाहिए कि वह अल्लाह के हुक़ूक़ भी अदा नहीं कर सकती " (मुकारिमुल एख़लाक़ पृष्ठ २४७)

रसूले करीम (स.) फ़रमाते हैं कि अगर ख़ुदा के अलावा किसी को सजदा जाएज़ होता तो मैं औरतों को हुक्म देता कि अपने शौहरों को सजदा किया करें।

(वसाएल जिल्द १४ पृष्ठ ११५)

हज़रत फ़ात्मा(स.) हुक़ूके ख़ाविन्द से जिस दर्जा वाक़िफ़ थीं कोई भी वाक़िफ़ न था। उन्होंने हर मौक़े पर अपने शौहर हज़रत अली (अ.) का लेहाज़ व ख़्याल रखा। उन्होंने कभी उनसे कोई ऐसा सवाल नहीं किया जिसके पूरा करने से हज़रत अली (अ.) आजिज़ रहे हों। किताब " रेयाहीन अल शरीअतह " में है कि एक मरतबा हज़रत फ़ात्मा (स.) बीमार पड़ीं तो हज़रत अली (अ.) ने उनसे फ़रमाया कुछ खाने को दिल चाहता हो तो बताओ, हज़रत सय्यदा ने अर्ज़ की किसी चीज़ को दिल नहीं चाहता। हज़रत अली (अ.) ने इसरार किया तो अर्ज़ की मेरे पदरे बुज़ुर्गवार ने मुझे हिदएत की है कि मैं आपसे किसी चीज़ का सवाल न करूँ। मुम्किन है आप उसे पूरा न कर सकें तो आपको दुख हो। इसलिए मैं कुछ नहीं कहती। हज़रत अली (अ.) ने जब क़सम दी तो अनार का ज़िक्र किया।

यह तारीख़ का मुसल्लेमा अमर है कि हज़रत अली (अ.) और हज़रत फ़ात्मा(स.) में कभी किसी बात पर नारज़गी नहीं हुई और दोनों ने बाहम दिगर ख़ुशगवार ज़िन्दगी गुज़ारी है।

सास बहू के ताअल्लुक़ात :- फ़ात्मा ज़हरा(स.) की शादी के वक़्त जनाबे फ़ात्मा बिन्ते असद ज़िन्दा थीं। सास बहू के ताअल्लुक़ात अकसर बेशतर ना ख़ुशगवार हो जाया करते हैं ,लेकिन फ़ात्मा ने ऐसा दस्तूर और रवैया एख़्तेयार किया कि कभी भी ताअल्लुक़ात में तनाव पैदा न होने पाया। फ़ात्मा बिन्ते असद के सिपुर्द दोस्त व रिश्तेदारों ,की मुलाक़ात, शादी, और ग़मी में शिरकत वग़ैरा क़रार दिया और अपने ज़िम्मे अमूर ख़ानादारी, मसलन चक्की पीसना, रोटी पकाना वग़ैरा रख लिया था। तारीख़ में इन दोनों की बाहमी कशीदगी का सुराग़ नहीं मिलता।

आपकी औलाद :- आपके तीन बेटे और दो बेटियाँ पैदा हुईं। १५, रमज़ान ३ हिजरी को इमाम हसन(अ.) और ३ शाबान ४, हिजरी को इमाम हुसैन(अ.) और ५,

जमादिल अव्वल ६, हिजरी में हज़रत ज़ैनब और ६ ,हिजरी में जनाबे उम्मे कुलसूम और ११ हिजरी में इस्तेक़ाते मोहसिन हुआ। उलमा ने लिखा है कि ज़ैनब का निकाह अब्दुल्ला बिन जाफर और उम्मे कुलसूम का निकाह मोहम्मद बिन जाफर से हुआ था। (इब्ने माजा अबू दाऊद , इब्ने हजर और असआफ-उर-राग़ेबीन बर हाशिया नूर उल अबसार पृष्ठ८० तबा मिस्त्र) बारवाएत सिब्ते इब्ने जौज़ी हज़रत ज़ैनब के बतन से औन व अब्दुल्ला पैदा हुए और उम्मे कुलसूम ला वलद मरीं। (तजकिरा ख्वास पृश्ठ) ३८०

आपकी इबादत :- आप अनगिन्त नमाज़े रात और दिन पढ़ा करती थीं। आपने अपने पदरे बुर्जुगवार के साथ १०, हिजरी में आख़री हज फ़रमाया था।

फ़ात्मा ज़हरा (स.) पैग़म्बरे इस्लाम (स.) की नज़र में

फ़ात्मा ज़हरा की फज़ीलत और इनके मदारिज के सिलसिले मे क़ुरान मजीद की आएतें और बेशुमार हदीसें मौजूद हैं। इस वक़्त चन्द अहादीस और पैगम्बरे इस्लाम के बाज़ तरज़े अमल पर इकतेफ़ा करता हूँ। आपका इरशाद है कि फ़ात्मा जन्नत में जाने वाली औरतों की सरदार हैं। तमाम जहान की औतों की सरदार हैं। आपकी रज़ा से अल्लाह राज़ी होता है। जिसने आपको तकलीफ़ दी उसने रसूल (स) को तकलीफ़ पहूँचाई। खुदा ने आपकी बदौलत आपके मानने वालों को जहन्नम से छुड़वा दिया। आप फ़रमाते हैं कि मर्दों में बहुत लोग कामिल गुज़रे हैं लेकिन औरतों में सिर्फ़ चार औरतें कामिल गुज़री हैं। (१) मरयम (२) आसीया (३) ख़दीजा (४) फ़ात्मा और इनमें सबसे बड़ा दर्जा कमाल फ़ात्मा को हासिल है।

उलमा का बयान है कि हज़रत पैग़म्बरे इस्लाम(स.) आपसे इन्तेहाई मोहब्बत रखते थे और कमाल इज़्जत भी करते थे। मोहब्बत के मुज़ाहिरों में से एक यह था कि जब किसी ग़ज़वे में तशरीफ़ ले जाते थे तो सब से आखिर में फ़ात्मा से रूख़सत होते थे और जब वापिस आते थे तो सबसे पहले फ़ात्मा ज़हरा को देखने तशरीफ़ ले जाते थे और इज़्ज़तो एहतिराम का मुज़ाहेरा यह था कि (कानत फ़ात्माअज़ाद खलत अली रसूल अल्लाह क़ाम अलैहा फक़्बलहाव अजलसहा फ़ी मजलिसही) जब हज़रत फ़ात्मा आती थीं तो आप ताज़ीम को खड़े हो जाते थे और अपनी जगह पर बिठाते थे। (तिरमिज़ी जिल्द २ पृष्ठ २४६ तबा मिस्त्र) मतालिबुल सऊल पृष्ठ २२ तबा लखनऊ) मुख़तलिफ़ कुतुब सहा में मौजूद है कि आँहज़रत (स.) ने फ़रमाया, " फ़ात्मा मेरा जुज़ है जो उसे तकलीफ पहुँचाएगा ,वह मुझे तकलीफ़ पहुँचाएगा "। मुवर्रेख़ीन और मोहद्देसीन का इत्तेफाक़ है कि नुज़ूल अयए ततहीर के बाद सरवरे दो आलम दरे फ़ात्मा पर ६ माह लगातार बवक्ते नमाज़े सुबह जाकर आवाज़ दिया करते और फरते मसर्रत में फरमाया करते थे कि ख़ुदा ने तुम्हें हर तरह की गन्दगी से पाको पाकीज़ा किया है। (ज़ाद उल उक़्बा तरजुमा मुवद्दतुल कुरबा मुवद्दत ११ पृष्ठ १००)

हज़रत फ़ात्मा (स.) रब्बुल इज़्ज़त की निगाह में :- मोहद्दिसीन(हदीसों के ज्ञाता) का बयान है कि हज़रत फ़ात्मा (स.) को परवर दिगारे आलम अपनी कनीज़े ख़ास जानता था और उनकी बेहद इज़्ज़त करता था। देखा गया है कि हज़रत सय्यदा नमाज़ में मशगूल होती थीं और फ़रिशते इनके बच्चों को झूला झुलाते थे और वह जब क़ुर्आन पढ़ने बैठती थीं तो फ़रिशते उनकी चक्की पीसा करते थे। हज़रत रसूले करीम(स.) ने झूला झुलाने वाले फ़रिशते का नाम **"जिब्राईल"** और चक्की पीसने वाले का नाम **" औक़ाबील "** बताया है।

(मनाक़िब इब्ने शहरे आशोब, जिल्द २,पृष्ठ २८, मुलतान में छपी)

फ़ात्मा अहदे रिसालत(स.) में :- पैगम्बरे इस्लाम(स.) की हयात में फ़ात्मा(स.) की क़दरो मंज़िलत,इज़्ज़त व तौकीर की कोई हद न थी। इन्सान तो दर किनार मलाएक का यह हाल था कि आसमानों से उतर ज़मीन पर आते, और फ़ात्मा(स.) की ख़िदमत करते। कभी जन्नत के तबक़ लाये, कभी हसनैन (अ.) का झूला, झूला कर फ़ात्मा की मदद की। अगर उनके मूहँ से ईद के मौक़े पर निकल गया कि बच्चों तुम्हारे कपड़े दरज़ी लायेगा। तो ज़न्नत के ख़ज़ानची को दरज़ी बन कर आना पड़ा। हद है कि मलकुलमौत भी आपकी इजाज़त के बग़ैर घर में दाख़िल न हुये। अल्लामा अब्दुल मोमिन हन्फ़ी लिखते हैं कि सरवरे कायनात(स.) के वक़्ते अख़ीर फ़ात्मा के ज़ानू पर सरे रिसालत माआब था। मलकुल मौत ने आवाज़ दी और घर में आने की इजाज़त चाही। फ़ात्मा(स.) ने इन्कार कर दिया। मलकुल मौत दरवाज़े पर रूक गये। लेकिन मकान में दाख़िल होने पर ज़िद करते रहे। फ़ात्मा(स.) के बराबर इन्कार पर मलकुल मौत ने कुछ आवाज़ बदल कर आवाज़ दी। फ़ात्मा रो पड़ीं, आपके आंसू रूख़सारे रिसालत पर गिरे। पैगम्बर (स.) ने पूछा क्या बात है। हुक्म हुआ इजाज़त दो, यह मलकुलमौत हैं। (अजायब अल क़स्स, पृष्ठ-२८२)

फ़ात्मा ज़हरा (स.) रसूले इस्लाम (स.) के बाद

२८, सफ़र ११, हिजरी को रसूले इस्लाम का इन्तेक़ाल हुआ। आपके इन्तेक़ाल के बाद आपके घर वालों पर ज़ुल्म व अत्याचार के पहाड़ टूट पड़े और आप इतना दुखी हुईं कि अपनी कशतीए हयात ७५, दिन से अधिक न खे सकीं। आपके सर पर पट्टी बंधी रहा करती थी और रात दिन अपने बाप के ग़म में रोया करती थीं। आपके लिये सरवरे कायनात का सदमा ही क्या कम था के उस पर आफ़त यह कि दुनिया दारों ने रसूल(स.) के घर को ग़मो का अड्डा बना दिया। होना यह चाहिये था के बाप के इन्तेक़ाल के बाद कफ़न दफ़न की मुसिबत से दुख़ दर्द की मारी बेटी को बे नियाज़ कर दिया जाता और हुज़ूर की तदफ़ीन, तकफ़ीन को बहुत अच्छी तरह अंजाम दिया जाता, लेकिन अफ़सोस, इसके विपरीत दुनिया वालों ने रसूल इस्लाम(स.) की मय्यत को यूँ ही घर में छोड़ दिया और ख़ुदा और रसूल के मंशे के ख़िलाफ़ अपनी हुकूमत की बुनियाद क़ायम करने के लिये सक़ीफ़ा बनी साएदा चले गये। रसूल इस्लाम(स.) की मय्यत पड़ी रही, बिल आख़िर आले

मोहम्मद(स.) और दीगर चंद मानने वालों ने इस फ़रीज़े को अदा किया। यह वाक़ेया भुलाने के क़ाबिल नहीं जब की हज़रत अबू बक्र ख़लीफ़ा बन कर और हज़रत उमर ख़लीफ़ा बना कर वापस लौटे तो सरवरे कायनात(स.) की लाशे मुतहर सुपुर्दे ख़ाक की जा चुकी थी। इन हज़रात ने इस तरफ़ ध्यान न दिया और किसी ग़म व अफ़सोस का इज़हार न किया और सबसे पहले जिस चीज़ की कोशिश शुरू की वह हज़रत अली (स.) से बैअत लेने की थी। हज़रत अली(अ.) और कुछ महत्वपूण एंव आदरणीय सहाबा जिनमें कुल **बनी हाशिम, ज़ुबैर, अतबआ बिन अबी लहब, ख़ालिद बिन सईद, मिक्दाद बिन उमर , सलमाने फ़ारसी, अबू ज़रे ग़फ़्फ़ारी, अम्मारे यासिर, बराः बिन आज़िब, इब्ने अबी कअब, और अबू सुफ़ियान** क़ाबिले ज़िक्र हैं। (तारीख़े अबुल फ़िदा, जिल्द १, पृष्ठ ३७५) यह लोग चूंकि ख़िलाफते मन्सूसा के मुक़ाबले में सक़ीफ़ाई ख़िलाफत को तसलीम न करते थे लेहाज़ा जनाबे फ़ात्मा (स.) के घर में गोशा नशीन हो गये। इस पर हज़रत उमर आग और लकड़ियां लेकर आये और कहा घर से निकलो वरना हम घर में आग लगा देंगे। यह सुन कर हज़रत फ़ात्मा ज़हरा (स.) दरवाज़े के क़रीब आईं और फ़रमाया कि इस घर में रसूल(स.) के नवासे हसनैन भी मौजूद हैं कहा होने दीजिये(तारीख़ तबरी, वल इमामत वल सियासत, जिल्द १, पृष्ठ १२) इसके बाद बराबर शोर गुल होता रहा और अली(अ.) को घर से बाहर निकालने की मांग होती रही। मगर अली (अ.) न निकले, फ़ात्मा(स.) के घर को आग लगा दी गई।(१) जब शोले बलन्द होने लगे तो फ़ात्मा(स.) दौड़ कर दरवाज़े के क़रीब आईं और फ़रमाया, अरे मेरे बाप का कफ़न भी मैला न होने पाया कि यह तुम क्या कर रहे हो। यह सुन कर फ़ात्मा(स.) के ऊपर दरवाज़ा गिरा दिया गया। जिसकी वजह से फ़ात्मा के पेट पर चोट लगी और फ़ात्मा(स.) के पेट में मोहसिन नाम का बच्चा शहीद हो गया। (किताब अल मल्ल वल नहल शहरे सतानी, मिस्र में छपी पृष्ठ २०) (२) अल्लामा मुल्ला मूईन काशफ़ी लिखते हैं कि " **बदां मरज़ फ़ात्मा अज़ जहां रेहलत फ़रमूद** " फ़ात्मा इसी ज़रबे उमर से रेहलत कर गईं। (मुलाहेज़ा हो माआरिज अल नबूवत, पैरा ४, भाग ३,पृष्ठ ४२) इसके बाद यह लोग हज़रत फ़ात्मा(स.अ.) के घर में बेधड़क घुस आये और अली(अ.) को गिरफ़्तार करके उनके गले में रस्सी बांधी (इब्ने अबिल हदीद) (३) और लेकर दरबारे ख़िलाफ़त में पहूंचे, और कहा कि बैअत करो, वरना ख़ुदा की क़सम तुम्हारी गरदन मार देंगे।(रौज़तुल अहबाब) हज़रत अली(अ.) ने कहा तुम क्या कर रहे हो और किस क़ायदे और किस बुनियाद पर मुझसे बैअत ले रहे हो। यह कभी नहीं हो सकता। (अल इमामत वल सियासत, जिल्द १ पृष्ठ १३) बाज़ इतिहास कारों का बयान है कि उन लोगों ने सय्यदा के घर में घुस कर धमा चौकड़ी मचा दी बिल आख़िर इबने वाज़े के अनुसार " फ़ख़्रजत फ़ात्मतः फ़क़ालत वल्लाहुल तजज़ जिन औला कशफ़न शआरी वल अजजन इल्ललाह"फ़ात्मा बिन्ते रसूल (स.) सहने ख़ाना में निकल आयीं और कहने लगीं ख़ुदा की क़सम घर से निकल जाओ। वरना मैं अपने सर के बाल खोल दूँगी और ख़ुदा की बारगाह में सख़्त फ़रियाद करूँगी (तारीख़ अल याक़ूबी जिल्द २ पृष्ठ ११६) एक रवाएत में है कि जब हज़रत अली (अ.) को गिरफ़्तार करके ले जया जा रहा था तो हज़रत फ़ात्मा बिन्ते रसूल (स.) ने फ़रयाद

करते हुए कहा था कि "ख़ल्लू अबल हसन" अबुल हसन को छोड़ दो वरना अपने सर के बाल खोल दूँगी। तबरी कहते हैं कि इस कहने पर मस्जिदे नबवी की दीवार कद्दे आदम बुल्नद हो गई थी (२) इसके बाद हज़रत फ़ात्मा को सूचना मिली के आपकी वह जाएदाद जिसका नाम फदक् था। जो ब्राहुक्मे ख़ुदा रसूल (स.) के हाथों आई थी और जिसकी आमदनी फ़कीरों, अनाथों पर हमेशा से खर्च होती आई जिसका महले वक़ू मदीना मुनव्वरा से शुमाल की तरफ़ दो सौ मील है पर ख़लीफ़ए वक़्त ने कब्ज़ा कर लिया है। (मोअज्जिम अलबदान सही बुखरी अलफारूक् जिल्द २पृष्ठ २८८) यह मालूम करके आप हद् दर्जा ग़ज़ब नाक हुईं (बुखारी) और यह मालूम करके और ज़्यादा दुखी हुईं कि एक फ़रज़ी हदीस ग़सबे फिदक् के जवाज़ में गढ़ ली है। अलग़रज़ आपने दरबारे ख़िलाफ़त में अपना मुतालबा पेश किया और इनकारे हुबह पर बतौर सबूत हज़रत अली (अ.), हज़रत इमामे हसन (अ.) , इमामे हुसैन (अ.), उम्मे ऐमन और रबाह को गवाही में पेश किया। लेकिन सब की गवाहीयाँ रद्द कर दी गईं और कहा गया अली(अ.) शौहर हैं हसनैन(अ.) बेटे हैं। उम्मे ऐमन वग़ैरा कनीज़ व गुलाम हैं। इनकी गवाही नहीं मानी जा सकती। (किताब अलकशफ़ा, इन्सान अलअयून व सवाएक् सफ़ा ३२) एक रवायत की बिना पर हज़रत अबू बक्र ने हेबा का तसदीक् नामा लिख कर फ़ात्मा (स.) को दे दिया था वह ले कर जाने ही वाली थीं कि अचानक हज़रत उमर आए। पूछा क्या है! कहा तस्दीके हेबा नामा, आपने वह ख़त हाथ से लेकर चाक कर डाला और बारवाएत ज़मीन पर फेंक कर उस पर थूक दिया और पाँव से रगड़ डाला (सीरते हलबिया पृष्ठ १८५) और मुक्दमा ख़ारिज करा दिया,(इन्सान अल अयून जिल्द ३ पृष्ठ ४०० तबा मिस्र) इसी सिलसिले में आपका खुतबा लम्मा ख़ास अहमियत रखता है। इसके थोड़े दिन बाद हज़रत अबू बक्र और हज़रत उमर अमीरल मोमिनीन हज़रत अली(अ.) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ की कि हमने फ़ात्मा को नाराज़ किया है। हमारे साथ चलिए हम उनसे माफी माँग लें। हज़रत अली (अ.) उनको हमराह लेकर आए और फ़रमाया ऐ फ़ात्मा यह दोनों पहले आऐ थे और तुमने उन्हें अपने मकान में घुसने नहीं दिया अब मुझे लेकर आएं हैं इजाज़त दो कि दाख़िले ख़ाना हो जाऐं। हुकमे अली (अ.) से इताज़त तो दे दी लेकिन जब यह दाखिले ख़ाना हुऐ तो फ़ात्मा ने दीवार की तरफ मुँह फेर लिया और सलाम का जवाब तक न दिया और फ़रमाया ख़ुदा की क़सम ता ज़िन्दगी नमाज़ के बाद तुम दोनों पर बद दुआ करती रहूँगी। ग़रज़ कि फ़ात्मा ने माफ़ न किया और यह लोग मायूस वापिस गए। (अल इमामत वस सीयासत मुअल्लेफ़ा इब्ने अबी क़ुतीबा मतूफ़ी २७६ हिजरी जिल्द १ पृष्ठ १४) इमाम बुख़ारी कहते हैं कि फ़ात्मा ने ताहयात उन लोगों से बात नहीं की और ग़ज़ब नाक ही दुनिया से उठ गईं।

आपकी अलालत

हम ऊपर बहवाला अल्लामा शहर सतानी व अल्लामा मोईन काशफी लिख कर आए हैं कि हज़रत उमर ने सय्यादतुन निसाँ हज़रत फ़ात्मा पर दरवाज़ा गिराया था और शिकमे मुबारक पर ज़र्ब लगाई थी जिसकी वजह से इस्तेक़ाते हमल हुआ था।

१ रौज़तुल अलमनज़िर हासीया कामिल ११पृष्ठ११३ ३१ व एहतिजाज तबरी २ व मुआक़ी अलअख़बार पृष्ठ २०६ ४, एतिजाज १ पृष्ठ ११२,

और इसी सबब से आप बीमार हुईं और आखिर में मर गईं। अब आपकी खिदमत में डिप्टी नज़ीर अहमद की तहरीर का एक्तेबास पेश करते हैं वह लिखते हैं। जो आदमी रसूल(स.) के मरने से सबसे ज़्यादा प्रभावित हुआ वह फ़ात्मा थीं। माँ पहले ही मर चुकीं थीं। अब माँ और बाप दोनों की जगह पैग़म्बर साहब ही थे और बाप भी कैसे दीन और दुनियाँ के बादशाह। ऐसे बाप का साया सर से उठना इस पर हज़रत अली(अ.) का ख़िलाफत से महरूम रहना तरके पदरी फिदक का दावा करना और मुक़दमा हार जाना। इन्हीं दुखों में आपका इन्तेक़ाल हो गया। (रोयाऐ सादक़ा फसल १४) आप इस क़दर रोईं की अहले मोहल्ला एतेराज़ करने लगे। आख़िर में हज़रत अली ने रोने के लिए मदीने से बाहर (बैतुल हुज़्न) बनवाया था।

(अनवारूल हुसैनिया सफ़ा २४ तबा बम्बई)

हालात से प्रभावित हो कर हज़रत सय्यदा ने अपने वालिद बुर्जुगवार का जो मरसिया कहा है उसका एक शेर यह है के :-

सुब्बत आला मसाएब लवानहा   सुब्बत अल्ल अय्याम सिव लेया लेया

(तरजुमा) :- अब्बा जान आपके बाद मुझ पर ऐसी मुसीबतें पड़ीं कि अगर वह दिनों पर पड़तीं तो मिस्ल रात के तारीकोहो जातेंनुरूलअबसार पृष्ठ ४६, व मदारिज जिल्द २ पृष्ठ ५२४)

आपकी वसीअत :- फ़ात्मा ज़हरा (स.) ने असमा बिन्ते उमैस से फ़रमाया कि ऐ असमा मुझे मुसलमानों की औरतों की मय्यत के ले जाने का तरीक़ा पसन्द नहीं है। यह तख़्ते पर लिटा कर कपड़ा डाल कर ले जाते हैं। असमा ने कहा, मैं हबशा में बहुत अच्छा ताबूत देख आई हूँ फ़रमाया। इसकी नक़ल बना दो अली (अ.) को बुलाया और वसीअत की। आपने कहा मुझे ख़ुद नहलाना ,कफन पहनाना, मेरा जनाज़ा रात में उठाना। जिन लोगों ने मुझे सताया है उनको मेरे जनाज़े मे न शरीक होने देना। मेरे बाद शादी करना तो एक रात मेरे बच्चों के पास और एक रात अपनी बीवी के पास गुज़ारना।

शम्शुल उलमा मिस्टर नज़ीर अहमद देहलवी लिखते हैं के " फ़ात्मा ने अबू बक्र वग़ैरा से बात चीत करना छोड़ दी। मरते वक़्त वसीअत की कि मुझे रात के वक़्त दफ़न करना और यह लोग मेरे जनाज़े पर न आने पाऐं (उम्मेहातुल उम्मत पृष्ठ ६६) अल्लामा अब्दुर बर लिखते हैं कि फ़ात्मा की वसीयत थी कि आएशा भी जनाज़े पर न आऐं (इस्तेआब जिल्द २,सफ़ा ७७२)

जनाबे सय्यदा की हज़राते शेख़ैन से नाराज़गी के लिए मज़ीद मुलाहेज़ा हों। तेस्पर अलक़ारी तरजुमा बुख़ारी पे १२ पृष्ठ १८-२१ व पे १ ७ पृष्ठ २१, मुश्किलुल आसार तहावी जि० १ पृष्ठ ४८ तरजुमा सही मुस्लिम जिल्द ५ पृश्ठ २५ रौज़तुल अहबाब जिल्द १ पृष्ठ ४३४ अज़ाला अलख़फा जिल्द २ पृष्ठ ५७ बराहीने क़ाते तरजुमा सवाक़े मोहर्रेक़ा पृष्ठ २१, अशअतुल मात जिल्द ३ पृष्ठ ४८० अल ज़हरा- उमर अबू नसर (उर्दू तरजुमा) पृष्ठ ८६- जमा उल फ़वाएद जिल्द २ पृष्ठ १८, तबा मेरठ।

आपकी वफ़ात हसरते आयात

दुनियाए इस्लाम के क़दीम मुवर्रेख़ीन इब्ने क़तीबा का बयान है कि हज़रत फ़ातमा हज़रत सरवरे काएनात(स.) की वफ़ात के बाद सिर्फ़ ७५ दिन ज़िन्दा रह कर मर गईं। (अल इमामत वस सियासत जिल्द १ पृष्ठ१४) अल्लामा बहाई का जामऐ अब्बासी पृष्ठ ७६ में बयान है कि १०० दिन बाद इन्तेक़ाल हुआ है। आपकी तरीख़े वफ़ात सोमवार दिन ३ जमादील सानी ११ हिजरी है(अनवारूल हुसैनिया जिल्द ३ पृष्ठ २६ तबा नजफ) आपकी वफ़ात से सम्बन्धित हज़रत इब्ने अब्बास सहाबी रसूल का बयान है कि जब फ़ातमा ज़हरा के इन्तेक़ाल का समय आया तो न मासूमा को बुख़ार आया, और न दर्दे सर हुआ। बल्कि इमामे हसन (अ.) और इमामे हुसैन (अ.) के हाथ पकड़े और दोनों को लेकर क़ब्रे रसूल(स.) पर गईं और क़ब्र व मिम्बर के बीच दो रकत नमाज़ पढ़ी। फिर दोनों को अपने सीने से लगाया और फ़रमाया ऐ मेरे बच्चों ! तुम दोनों एक साअत अपने बाप के पास बैठो , अमीरल मोमेनीन इस वक़्त मस्जिद में नमाज़ पढ़ रहे थे फिर वहाँ से घर आए और आँ हज़रत की चादर उठाई ग़ुस्ल करके हज़रत का बचा हुआ कफ़न ,या कपड़े पहने ,बाद अज़ान ज़ोजा हज़रत जाफ़रे तैय्यार(असमा) को आवाज दी ,असमा ने अर्ज़ की बीबी हाज़िर होती हूँ। जनाबे फ़ातमा ने फ़रमाया, असमा तुम मुझसे अलग न होना। मैं एक साअत इस हुजरे में लेटना चाहती हूँ। जब एक साअत गुज़र जाए और मैं बाहर न निकलूँ तो मुझको तीन आवाज़े देना। अगर मैं जवाब दूँ तो अन्दर चली आना, वरना समझ लेना के मैं रसूले ख़ुदा (स.) से मुलहिक़ हो चुकी हूँ। बाद अज़ा रसूले ख़ुदा (स.) की जगह पर खड़ी हुईं और दो रकात नमाज़ पढ़ी। फिर लेट गईं और अपना मुँह चादर से ढाँप लिया। बाज़ उलमा का कहना है कि सय्यदा ने सजदे में ही वफ़ात पाई। अलगरज़ जब एक साअत गुज़री तो असमा ने जनाबे सय्यदा को आवाज़ दी। ऐ हसन (अ.) हुसैन(अ.) की माँ! ऐ रसूल ख़ुदा (स.) की बेटी ! मगर कुछ जवाब न मिला। तब असमा उस हुजरे में दाख़िल हुईं। क्या देखती हैं के वह मासूमा मर चुकी हैं। असमा ने अपना गरेबान फाड़ लिया और घर से बाहर निकल पड़ीं। हसन (अ.) हुसैन(अ.) आ पहुँचे। पूछा असमा हमारी अम्मा कहाँ हैं। अर्ज़ की हुजरे में हैं। शहज़ादे हुजरे में पहूँचे तो देखा कि मादरे गिरामी मर चुकी हैं। शहज़ादे रोते पीटते मस्जिद में पहुँचे। हज़रत अली (अ.) को ख़बर दी। आप सदमे से बेहाल हो गए । फिर वहाँ से बाहाले परेशान घर पहुँचे देखा कि असमा सरहाने बैठी रो रही हैं। आपने चेहरये अनवर खोला। सरहाने एक पर्चा मिला। जिसमें शहादतैन के बाद वसीअत पर अमल का हवाला था और ताकीद थी कि मुझे अपने हाथों से ग़ुस्ल देना। हनूत करना, कफ़न पहनाना,रात के वक़्त दफ़न करना और दुश्मनों को मेरे दफ़न की ख़बर न देना इसमें यह भी लिखा था कि मैं तुम्हे ख़ुदा के हवाले करती हूँ और अपनी इन तमाम औलादों (सादात) को सलाम करती हूँ जो क़यामत तक पैदा होगीं।

जब रात हुई तो हज़रत अली(अ.) ने ग़ुस्ल दिया कफ़न पहनाया, नमाज़ पढ़ी, बैनाबर रवाएत मशहूरा जन्नतुल बक़ी में ले जाकर दफ़न कर दिया। (ज़ाद-अल-क़बा तरजुमा

मुवद्दतुल कुर्बा अली हमदानी शाफ़ेई पृष्ठ १२५ ता पृष्ठ १२६ तबा लाहैर) एक रवाएत में हैं कि आपको मिम्बर और कब्रे रसूल(स.) के बीच में दफ़न किया गया। (अनवारूल हुसैनिया जिल्द ३ पृष्ठ ३६) मक़ातिल किताब में है कि गुस्ल के वक़्त हज़रत अली (अ.) ने पुश्त व बाज़ुए फ़ात्मा पर दुर्रा उमरी का निशान देखा था और चीख मार कर रोए थे। सही बुख़ारी और मुसालिम में है कि हज़रत अली (अ.) ने फ़ात्मा को रात के वक़्त दफ़न कर दिया। "वलम यूज़न बेहा अबा बक्र वसल्ली अलैहा"। अबू बक्र वग़ैरा को शिरकते जनाज़ा की इजाज़त नहीं दी और दफ़न की भी ख़बर नहीं दी और नमाज़ खुद पढ़ी। अल्लामा ऐनी शरह बुख़ारी लिखते हैं कि यह सब कुछ हज़रत अली (अ.) ने जनाबे फ़ात्मा की वसीअत के अनुसार किया था। सही बुख़ारी हिस्सा अल जिहाद में है कि हज़रत फ़ात्मा (स.) हज़रत अबू बक्र वग़ैरा से नाराज़ हो गईं और उनसे नाता तोड़ लिया और मरते दम तक बेज़ार रहीं इमाम इब्ने क़ुतीबा का बयान है कि खुलफ़ा को ,फ़ात्मा की नाराज़गी की जानकारी थी। वह कोशिश करते रहे कि राज़ी हो जाऐं एक दफ़ा माफी मांगने भी गऐ। " फासताज़ना अली फ़ात्मा फलम ताज़न " और इज़्ने हुजूरी चाहा। आपने मिलने से इन्कार कर दिया और इनके सलाम तक का जवाब न दिया और फ़रमाया ताज़िन्दगी तुम पर बद्दुआ करूँगीं और बाबा जान से तुम्हारी शिकायत करूँगी। (अल इमामत वस सीयासत जिल्द १ पृष्ठ १४ तबा मिस्र)

आपका जनाज़ा :- गुस्ल व कफ़न के बाद हज़रत अली (अ.) अपनी औलाद और अपने रिश्तेदारों समैत जनाज़ा लेकर रवाना हुए। बेहारूल अनवार किताब अलफ़तन में है कि रास्ता देखने के लिए एक शमा साथ थी और हज़रत ज़ैनब जो काफ़ी कमसिन थीं काले कपड़े पहने हुए थीं इस साए में चल रही थीं जो शमा की वजह से ताबूत के नीचे ज़मीन पर पड़ रहा था। मुवद्दतुल कुर्बा पृष्ठ १२६ में है कि हज़रत अली (अ.) जब जन्नतुल बक़ी में पहुँचे तो एक तरफ़ से आवाज़ आई और खुदी खुदाई क़ब्र दिखाई दे गई। हज़रत अली (अ.) ने उसी क़ब्र में हज़रत फ़ात्मा की लाशे मुताहर दफ़न की और इस तरह ज़मीन बराबर कर दी कि निशाने क़ब्र मालूम न हो सके।

किताबे मुन्थी अलआमाल शेख़ अब्बास कुम्मी पृष्ठ १३६ में है कि जब जनाबे सय्यदा की लाश क़ब्र में उतारी गई तो रसूले खुदा(स.) के हाथों की तरह दो हाथ निकले और उन्होंने जिस्मे मुताहर जनाबे सय्यदा को सभाल लिया। दलाएल उल इमामत में है कि चूँकि क़ब्रे फ़ात्मा के साथ बे अदबी का शक था इसलिए चालीस क़ब्रें बनाई गईं। मुनाक़िब इब्ने शहर आशोब में है कि चालीस क़ब्रें इसलिए बनाई थीं कि सही क़ब्र मालूम न हो सके और फ़ात्मा को सताने वाला क़ब्र पर भी नमाज़ न पढ़ सके वरना सय्यदा को तकलीफ़ होगी। इसके बावजूद लोगों ने क़ब्र खोद कर नमाज़ पढ़ने की सई की। जिसके रद्दे अमल में हज़रत अली (अ.) नगीं तलवार लेकर पीले कपड़े पहन कर क़ब्र पर जा बैठे। इस वक़्त आपके मुँह से कफ़ निकल रहा था। यह देख कर लोगों की हिम्मतें पस्त हो गईं और आगे न बढ़ सके। (नासिख़ अल तवारीख़ वग़ैरा) वफ़ात के वक़्त जनाबे सय्यदा ताहेरा(स.) की उम्र १८ साल की थी। इन्ना लिल्लाहे वइन्ना इलैहे राजेऊन।

नतीजा :- वफ़ाते रसूल (स.) के बाद जनाबे सय्यदा के साथ जो कुछ किया गया। इस पर

शमसुल उलमा डिप्टी नज़ीर अहमद एल०-एल०-डी० मोतरज्जिम कुरआने मजीद ने अपनी किताब " रोयाए सादका " में निहायत मुफ़स्सिल और मुकम्मल तबसिरा फ़रमाया है। जिसके आख़री जुम्ले यह हैं :-

सख़्त अफ़सोस है कि अहले बैते नबवी को पैग़म्बर साहब की वफ़ात के बाद ही ऐसे नामुलाएम इत्तेफ़ाक़ात पेश आए कि इनका वह अदब व लेहाज़ जो होना चाहिए था इसमें ज़ोफ आ गया और शुदा -शुदा मुनज़िर हुआ। इस नाक़ाबिले बरदाश्त वाक़ेए करबला की तरफ़ जिसकी नज़ीर तारीख़ में नहीं मिलती। यह ऐसी नालाएक़ हरकत मुस्लमानों से हुई है कि अगर सच पूछो तो दुनिया व आख़ेरत में मुहँ दिखाने के क़ाबिल न रहे।

चे खुश फ़रमूद शख़्से ईं लतीफ़ा कि कुश्ता शुद हुसैन अन्दर सक़ीफ़ा

हज़रत फ़ातमा के शुरकाये जनाज़ा :- अल्लामा हाफ़िज मोहम्मद बिन अली शहर आशोब अल मतूफ़ी ५८८ हिजरी तहरीर फ़रमाते हैं कि हज़रत फ़ातमा ज़हरा(स.) के जनाज़े में अमीरल मोमेनीन, इमामे हसन(अ.) इमामे हुसैन(अ.) अक़ील, सलमाने फ़ारसी, अबूज़र,मेक़्दाद,अम्मार और बरीदा शरीक थे और उन्हीं लोगों ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ी एक रवाएत में अब्बास ,फ़ज़ल,हुज़ैफ़ा और इब्ने मसूद का इज़ाफ़ा है। तबरी में इब्ने ज़ुबैर का भी तज़किरा है।

(उम्दतुल मतालिब तरजुमा मुनाकिब जिल्द २ पृष्ठ ६५ तबा मुलतान)

हज़रत फ़ातमा का मदफ़न :- जैसा कि ऊपर गुज़रा ,हज़रत फ़ातमा (स.) के जाए दफ़न में इख़्तेलाफ़ है। कोई जन्नतुल बक़ी ,कोई मिम्बरे रसूल(स.) के बीच में कोई क़ब्र और घर के बीच क़ब्र बताता है। मशहूर यही है कि जन्नतुल बक़ी में आप दफ़न हुई हैं लेकिन अहमद बिन मोहम्मद बिन अबी नसर ने अबुल हसन हज़रत इमाम रज़ा (अ.) से रवाएत की है, वह फ़रमाते हैं कि हज़रत फ़ातमा अपने घर में मदफ़ून हुईं। जब बनी उम्मया ने मस्जिद की तौसीह की तो उनकी क़ब्र रौज़ए रसूल के अन्दर आ गई है। (तरजुमा मुनाक़िब इब्ने शहर आशोब जिल्द२ पृष्ठ ६९)

हज़रत फ़ातमा (स.)की क़ब्र पर हज़रत अली(अ.)का मरसिया

अल्लामा इब्ने शहर आशोब लिखते हैं कि हज़रत अली (अ.) ने वफ़ाते सय्यदा पर अत्याधिक दुख प्रकट किया और बे पनाह ग़मो अलम का एहसास किया। उन्होंने जो क़ब्र पर मरसिया पढ़ा वह यह है :-

लेकुल्ले इजतेमा मन ख़लीलैन फरक़्तह वक़ुल लज़ी दूने अलफिराक़ क़लील

दो दोस्तों के हर इजतेमा का नतीजा जुदाई है और हर मुसीबत दिलबरों की जुदाई की मुसीबत से कम है। **वअन इफ़्तेक़ादी फ़ातम बादे अहमद वलैला अली अन लायदूम ख़लील**

हज़रत रसूले करीम (स.) के तशरीफ़ ले जाने के बाद मेरी रफ़ीक़ए हयात फ़ातमा का दाग़े फिराक़ दे जाना इस अमर का सबूत है कि कोई दोस्त हमेशा नहीं रहेगा।

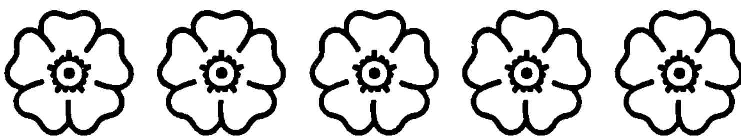
अल्लामा शेख अब्बास कुम्मी लिखते हैं कि हज़रत सय्यदा को सुपुर्दे ख़ाक करने के बाद हज़रत

अमीरल मोमनीन क़ब्रे जनाबे सय्यदा के पास बैठ गऐ और बे इन्तेहा रोए। " पस अब्बाँसे उमवी आँ हज़रत दस्तश गिरफ़त व अज़ सरे क़ब्र उरा बेबुर्द " यह देख कर चचा अब्बास बिन अब्दुल मुत्तिब ने उनका हाथ पकड़ कर उन्हें क़ब्र के पास से उठाया और घर ले गऐ

(मन्थी अल माल जिल्द १ पृष्ठ १४० तबा नजफ़े अशरफ़)

आपके रौज़े का इनहेदाम :- आलिमों का बयान है कि एक अरसा गुज़रने के बाद आपकी क़ब्रे मुबारक पर रौज़े की तामीर हुई। मैं कहता हूँ कि अब से लगभग ४३, साल पहले इब्ने सऊद व अमीरे सऊद अरबिया ने आपके रौज़े मुबारक को जज़बये वहाबीयत से मुतासिर होकर मुनहदिम (तोड़) कर डाला। शेख़ अल ऐराक़ीन मोहम्मद रज़ा का बयान है कि इब्ने सऊद ने मक्का में ६ और मदीना में १६ मुक़द्दस मुकामात को मुनहदिम (तोड़) कराया था कि जिनमें ख़ानए सय्यदा, रौज़ए सय्यदा और बैतुल हुज़न भी थे। मुलाहेज़ा हो,

(अनवारूल हुसैनिया जिल्द १ पृष्ठ ५४ तबा बम्बई १३४६ हिजरी)



हज़रत फ़ात्मा ज़हरा (स.) की कनीज़ जनाबे फ़िज़्ज़ा के मुख़्तसर हालात

जनाबे फ़िज़्ज़ा का असली नाम मएमूना था। हज़रत रसूल करीम (स.) ने इनका नाम फ़िज़्ज़ा रखा। फ़िज़्ज़ा के मानी चाँदी के हैं। गोया रसूले अकरम (स.) ने उनके सियाह फ़ाम (काली) होने के बावजूद उन्हे चाँदी बना दिया और रौशन ज़मीर कर दिया।

जनाबे फ़िज़्ज़ा हबश की रहने वाली थीं। अल्लामा शेख़ जाफ़र बिन मोहम्मद बिन जाफ़र नज़ारी लिखते हैं " ही कानत बिन्ते मालक मन मलूक अल हबशत " वह हबश के बादशाहों में से एक बादशाह की अच्छी नेक लड़की थीं। (अल अनवारूल उलूईया पृष्ठ१०६ तबा नजफ़ अशरफ़) अल्लामा रज्जब अली बरसी ने किताब मशारिक़ अल अनवार में उन्हें हिन्दुस्तान के एक बादशाह की लड़की लिखा है, लेकिन यह मेरे नज़दीक सही नहीं है।

(रिसाला हज़रत फ़िज़्ज़ा पृष्ठ ४ तबा लाहैर)

जनाबे फ़िज़्ज़ा और फ़ने कीमीया गरी :– मुवर्रेख़ीन का बयान है कि जनाबे फ़िज़्ज़ा फ़ने कीमीया गरी की जानकार थीं। अल्लामा रज्जब अल बरसी किताब मशारिक़ अल अनवार में लिखतें हैं कि यह जब हज़रत फ़ात्मा ज़हरा (स.) के ख़ानए अक़दस में आँई और उनकी ज़ाहिरी ग़रीबी व अफ़लास को देखा तो अकसीर का ज़ख़ीरा निकला और ताँबे के टुकड़े पर इस अकसीर को इस्तेमाल किया जिससे ताँबा बेहतरीन सोना बन गया और जनाबे फ़िज़्ज़ा इसको लेकर हज़रत अमीरल मोमीनीन (अ.) की ख़िदमत में हाज़िर हुईं, आपने इसे देख कर फ़रमाया कि ऐ फ़िज़्ज़ा तुमने बेहतरीन सोना बनाया है लेकिन अगर तुम ताँबे को भी पिघला देतीं तो इससे ज्यादा बेहतरीन सोना बन जाता, फ़िज़्ज़ा ने अज़रूए ताअज्जुब कहा कि मौला आप इस फ़न से वाक़िफ़ हैं ! आपने इमाम हुसैन (अ.) की तरफ़ इशरा करते हुए फ़रमाया कि यह इल्म तो हमारा बच्चा भी जानता है। फिर फ़रमाया के ऐ फ़िज़्ज़ा हम तमाम उलूम के जानने वाले हैं। इसके बाद आपने इरशाद फ़रमाया और ज़मीन का टुकड़ा बेहतरीन सोने और क़ीमती जवाहरात में बदल गऐ। फिर आपने इरशाद फ़रमाया के " या फ़िज़्जा मालहज़े ख़लक़ना " ऐ फ़िज़्ज़ा हम इसके लिए पैदा नहीं किए गऐ। (अनवारूल उलूहिया व दमउस साकेब पृष्ठ १३०) मतलब यह था हम सोना व जवहेरात और माल के लिए पैदा नहीं किए गये। हमारी ग़रज़ ख़िलक़ते तबलीग़ और फ़रोग़े इन्सानीयत है।

जनाबे फ़िज़्ज़ा की शादी :– जनाबे फ़िज़्ज़ा जब हज़रत फ़ात्मा (अ.) की ख़िदमत में आँईं थीं तो ग़ैर शादी शुदा थीं। उन्होंने शाही ठाट बाट को ख़ैर बाद (छोड़ दिया) कह कर हज़रत फ़ात्मा ज़हरा (स.) की ख़िदमत को अपना फ़र्ज़ बना लिया था। वह पाकीज़ा दिल की ख़ातून थीं और पाक घराने की ख़िदमत को दुनिया व आख़ेरत की इज़्ज़त समझती थीं। हज़रत फ़ात्मा जब तक ज़िन्दा रहीं उन्होने अपनी शादी नहीं की अलबत्ता उनकी वफ़ात के बाद हज़रत अली(अ.) के इस्रार पर शादी पर रज़ामन्दी ज़ाहिर की। चुनांचे उनकी तजवीज़ कर दी गई।

हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.) इरशाद फ़रमाते हैं। **"कानत ला फ़ात्मता ज़हरा जारेयता यक़ाल लहा फ़िज़्ज़ात हफ़्सारत बादहा लाली फ़ज़्ज़ू जहा मन अबी साबतहा अल हबशी फ़ावलदहा अबना सुम्मा मात अन्हा अबवसअलबता फ़ताज़ूज़हा मन बादा अबवसालैका अलग़तफ़ानी "** हज़रत फ़ातमा ज़हरा (स.) की एक कनीज़ थीं जिनको "फ़िज़्ज़ा" कहते थे। जब बीबी फ़ातमा का इन्तेक़ाल हो गया तो हज़रत अली (अ.) की ख़िदतम गुज़ारी करने लगीं। हज़रत अली ने उनकी शादी अबू सालबा हबशी के साथ कर दी जिससे एक लड़का पैदा हुआ। फिर अबू सालबा का इन्तेक़ाल हो गया। इसके बाद हज़रत अली (अ.) ने इनका निकाह अबू सालिक ग़तफ़ानी के साथ कर दिया (अनवारे अलविया पृष्ठ ५६)

जनाबे फ़िज़्ज़ा और ज़ियाफ़त हज़रत रसूल करीम (स.)

मुवर्रेख़ीन का बयान है कि जनाबे फ़िज़्ज़ा ज़ाहिर मे कनीज़ थीं। लेकिन वह मोहम्मद व आले मोहम्मद की निगाह में बड़ी मशहूर थीं और इनके निगाहे करम की वजह से कुदरत में भी बा इज़्ज़त थीं।

एक दफा का ज़िक्र है कि " माहे रमज़ान की एक रात को जनाबे अमीरल मोमेनीन (अ.) ने आँहज़रत (स.) की ख़िदमत में दरख़्वास्त की कि रसूल (स.) जिस कदम से आपने अर्श मोअल्ला को (शबे मेराज) मुशर्रफ़ फ़रमाया है। आज इस क़दम के ज़रिए हमारे घर को शरफ़ बख़्शें। आँहजरत ने दावत क़ुबूल फ़रमाई और ख़ानए अमीरल मोमीनीन में रोज़ा अफ़तार फ़रमाया। अगले रोज़ के लिए हज़रत फ़ातमा ज़हरा (स.) ने दावत दी और उन्होंने क़ुबूल फ़रमा कर रोज़ा अफ़तार फ़रमाया। फिर इमाम हसन (अ.) ने दावत दी इसके बाद इमाम हुसैन (अ.) ने दरख़्वास्त की, आपने शहज़ादों की ख़्वाहिश पूरी की। यह देख कर जनाबे फ़िज़्ज़ा ने भी दावते तआम दी हज़रत ने क़बूल फरमाई, जब नमाज़े मग़रिबैन के बाद अपने घर हो कर जनाबे फ़िज़्ज़ा के वहाँ जाने का इरादा किया तो जिबरईल (अ.) ने कहा के आप सीधे फ़िज़्ज़ा के घर तशरीफ़ ले जाऐं, यह रब्बे जलील की ख़्वाहिश है। क्यों कि फ़िज़्ज़ा दरवाज़ए सय्यदा पर मुन्तज़िर खड़ी हैं चूनान्चे हुज़ूरे अकरम (स.) सीधे जनाबे सय्यदा के मकान पर तशरीफ़ ले गए। इन लोगों ने ताज़ीम की और अदाब बजालाऐ। हज़रत ने फ़रमाया कि मैं आज फ़िज़्ज़ा का मेहमान हूँ। यह सुन कर अमीरल मोमीनीन ने फ़िज़्ज़ा से कहा के तुमने हमें नहीं बताया कि हुज़ूर (स.) को बुलाया है हमें बता दिया होता तो हम तुम्हारी मद्द करते। फ़िज़्ज़ा ने अर्ज़ की मौला मैं आपही की कनीज़ हूँ। सब इन्तेज़ाम हो जाऐगा इसके बाद वह अन्दर गईं और मुसल्ला बिछाकर दो रकात नमाज़ अदा की और बारगाहे खुदा वन्दा में अर्ज़ की मालिक अपने हबीब की दावत का बन्दोबस्त करा दे " दुआ क़ुबूल हुई और माएदा असमानी नाज़िल हुआ वह उसे लेकर बाहर आईं और सबने तआमे जन्नत(जन्नत का खाना खाया) तनावुल फ़रमाया। हज़रत ने खाने के बाद इरशाद किया। " अल्हमदो लिल्लाह " कि खुदा ने मरयम बिन्ते इमरान की तरह मेरी बेटी की कनीज़ को भी जन्नत से तआम मगवाने का शरफ़ बख़शा।

(मसबीहुल कुलूब ,रेयाजुल कुदस जिल्द २ पृष्ठ २६१ तबा ईरान)

जनाबे फ़िज़्ज़ा और इमदादे ग़ैबी :- एक मरतबा का ज़िक्र है कि जनाबे फ़िज़्ज़ा अपनी बारी के दिन खान्गी कारोबार के सिलसिले में लकड़ियों का एक गट्ठर उठा कर लाना चाहतीं थीं लेकिन ज़्यादा वज़नी होने की वजह से वह उनसे उठ नहीं रहा था। उन्होंने फ़ौरन वह दुआ पढ़ी जो उन्हें रसूले करीम (स.) ने तालीम दी थी। जिसकी इब्तेदा (शुरूआत) यह है कि **" या वाहेदो या अहदो लैसा कमिसलही शैयुन "** इस दुआ का पढ़ना था कि एक अरबी नमूदार हुआ और उसने ईधन उठाकर हज़रत सय्यदा के दरवाज़े पर ला फेंका।

(माली उस सिबतैन जिल्द २ पृष्ठ १३६)

जनाबे फ़िज़्ज़ा और सूरए हलअता :- सूरए हलअता जो अहले बैत की मद्‌ह(तारीफ़) व सना में नाज़िल हुआ है। इसमें जनाबे फ़िज़्ज़ा भी शामिल हैं। मुफ़स्सेरीन लिखते हैं कि इब्ने अब्बास का बयान है कि एक दफ़ा हज़रातें हसनैन(अ.) बीमार हुए तो रसूले खुदा कुछ लोगों के साथ अयादत को तशरीफ़ लाए और जनाबे अमीर से फ़रमाया कि बेहतर होता तुम अपने लड़कों की सेहत के वासते नज़र करते ,यह सुनते ही जनाबे अमीर,फ़ात्मा ज़हरा (स.) और फ़िज़्ज़ा ने तीन-तीन रोजों की नज़र की। ग़रज़ कि जब दोनों साहब ज़ादे अच्छे हुए और नज़र का पूरा करने का वक़्त आया तो घर में कुछ न था। जनाबे अमीर ने शमऊन यहूदी से तीन साअ जौ क़र्ज़ लिए ,जनाबे सय्यदा ने एक साअ जौ लिया और पाँच रोटियाँ पकाईं। शाम को खाना ही चाहते थे कि एक फकीर ने आवाज़ दी **"अस्सलाम अलैकुम या अहले बैते मोहम्मद"** मैं एक मुसलमान मिसकीन हूँ मुझे खाना दो, खुदा तुम्हें जन्नत में ख़्वान देगा। यह सुनते ही सबने अपन-अपने आगे की रोटियाँ दे दीं ख़ाली पानी पीकर सो रहे और दूसरे दिन फिर रोज़ा रखा। हसबे साबिक़ दूसरे दिन जनाबे सय्यदा (स.) ने पाँच रोटियां पकाईं और खाने बैठे कि एक यतीम ने आवाज़ दी और सबने उसको अपनी-अपनी रोटियाँ दे दीं और सिर्फ़ पानी से अफ़तार किया, तीसरे रोज़ फिर रोज़ा अफ़तार करने बैठे थे कि एक क़ैदी ने आवाज़ दी और तीसरे दिन फिर सब बुर्ज़ुगों ने अपनी-अपनी रोटियाँ दे दीं। चौथे दिन सुबह को जनाबे अमीर ने साहब ज़ादों के हाथ पकड़े और हज़रत रसूले अकरम (स.) की ख़िदमत में हाज़िर हुऐ, जब रसूल अल्लाह (स.) नज़र पड़ी कि भूख़ की शिद्दत से काँप रहे हैं तो फ़रमाया कि मैं तुम लोगों को किस क़दर तकलीफ की हालत में देख रहा हूँ फिर खुद उठे और इनके साथ जनाबे सय्यदा के मकान में आए तो फ़ात्मा को मेहराबे इबादत में देखा कि इनका पेट पीठ से मिल गया है और आँखे धंस गई हैं, यह देख कर हज़रत को बहुत दुख हुआ कि अचानक हज़रत जिबरईल(अ.)नाज़िल हुए और कहा कि लीजिये या रसूल अल्लाह (स.)आपको मुबारक हो खुदा ने यह सूरा आपके अहले बैत की शान में नाज़िल किया है और सूरए दहर की तिलावत फ़रमाई।(तफ़सीरे किशाफ जिल्द ३ पृष्ठ २३६ व तफ़सीरे बैज़ावी) इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.) फ़रमाते हैं यानी अलीयन व फ़ातेमता वल हसने वल हुसैने व जरितहुम फ़िज़्ज़ता" इस आयत "यूफ़ूना बिलनज़र" में जनाबे अमीर, जनाबे फ़ात्मा ,इमाम हसन (अ.) इमाम हुसैन(अ.) और उनकी कनीज़ फ़िज़्ज़ा को मुराद लिया है। (तफ़सीर बुरहान जिल्द ४ पृष्ठ ११६४ तबा क़दीम)

ज़रबे उमरी से बिन्ते रसूल (स.) का ज़ख़्मी होना और फ़िज़्ज़ा को पुकारना

तारीख़ गवाह है कि हज़रत उमर ने फ़ात्मा(स.) के घर में आग लगा दी थी और हज़रत सय्यदा के बतन पर दरवाज़ा गिरा दिया था जिससे उनके बतन में जनाबे मोहसिन शाहीद हो गऐ थे (अलमलल वल नहल) अल्लामा मजलिसी लिखते हैं कि "जब बीबी सय्यदा के पहलू पर दरवाज़ा गिरा और बिन्ते रसूल ज़ख़्मी हो कर ज़मीन पर गिरीं तो मुँह से बेसाख़्ता(अचानक) यह जुमले निकले थे। "या रसूल अल्लाह हाज़ा यफ़अल बजैतेका ,व अबनताका, या फ़िज़्ज़ता अलैका फ़ख़्ज़ैनीब अम्मा ज़हरी फना दैनी फक़ल व अल्लाक़तल माफी अहशाई " ऐ रसूल ख़ुदा (स.) आपकी प्यारी बेटी से यह सुलूक किया जा रहा है। ऐ फ़िज़्ज़ा ज़रा मुझको सभालो और मेरी पीठ की तरफ़ से मुझे सहारा दो"। ख़ुदा की क़सम मेरे बतन मे मेरा बच्चा(मोहसिन) शहीद हो गया।

(बिहारूल अनवार जिल्द ८, तबा ईरान)

गुस्ले सय्यदा में फ़िज़्ज़ा की शिरकत

हज़रत अली बिन अबी तालिब (अ.) इरशाद फ़रमाते हैं कि जब उमर बिन ख़त्ताब की ज़रब से शदीद (अधिक) ज़ख्मी होकर फ़ात्मा बिन्ते रसूल (स.) बीमार हो गईं और उन्होंने समझ लिया कि मैं अब न बचूँगी तो मुझे चन्द वसीयतें कीं। इनमें एक वसीयत यह थी कि मेरे गुस्लो कफ़न में तुम्हारे और हसन(अ.) हुसैन(अ.) और जैनब, व उम्मे कुलसूम और फ़िज़्ज़ा व असमा बिन्ते उमैस के अलावा किसी को शरीक न किया जाऐ। चुनान्चे ऐसा ही किया गया। (मआली सिब्तैन जिल्द २ पृष्ठ १३६) एक रवाएत में यह वाक़ेया इस तरह मरकूम (बयान) है।

हज़रत अली(अ.) फ़रमाते हैं कि सय्यदा ने जहां मुझसे और बहुत से अहद लिये थे उन्में एक यह था कि मेरी वफ़ात के बाद मरदों में अब्दुल्ला बिन अब्बास, सलमाने फ़ारसी,अम्मारे यासिर, मिक़दाद बिन असवद, अबूज़रे ग़फ़ारी, हुज़ैफ़ए यमानी और औरतों में उम्मे सलमा, उम्मे एयमन, और फ़िज़्ज़ा के अलावा किसी को शरीक न किया जाय और न किसी को ख़बर दी जाय। एक रवायत में फ़ज़्ल और इब्ने मसूद का भी ज़िक्र है। चुनान्चे हज़रत अली (अ.) ने ऐसा ही किया।

(सफ़ीनतुल बेहार, जिल्द २, पृष्ठ ३६०)

हज़रत सय्यदा का आख़री दीदार और फ़िज़्ज़ा

हज़रत अली(अ.) फ़रमाते हैं कि जब हज़रत फ़ात्मा बिन्ते रसूल का इन्तेक़ाल हो गया और उन्हें कफ़न पहनाया जा चुका तो मैंने चेहरए सय्यदा को बन्द करते हुये जहां ज़ैनब व उम्मे कुलसूम और हसन व हुसैन को आवाज़ दी थी, वहां फ़िज़्ज़ा को भी पुकारा था। कि **" हलमो अतज़रव मन अम कुम "** आओ अपनी मां का आख़री दीदार कर लो (सफ़ीनतुल बेहार, जिल्द २,पृष्ठ ३६५)

जनाबे फ़िज़्ज़ा हज़रत फ़ातमा ज़हरा(स.) की शहादत के बाद

शहादते हज़रत फ़ात्मा(स.) के बाद जनाबे फ़िज़्ज़ा इसी घर में रहीं और उनके बाद हज़रत ज़ैनब वग़ैरह की ख़िदमत को अपना फ़रीज़ा क़रार दे लिया। अल्लामा मेहदी हायरी लिखते हैं। **(लमा मातत फ़ात्मताः अन्ज़मत इला ज़ैनब व कानत तख़ज महाफ़ी बैतहा वा तारता फ़ी बैतुल हसन व तारता फ़ी बैतुल हुसैन फ़लमा ख़रजत अक़ीलतुल क़ुरैश मा अख़ी अल हुसैन मिनल मदीनतल अल ईराक़ ख़रजत फ़िज़्ज़तःमाहा हताअतत करबला)**

हज़रत फ़ात्मा(स.) की वफ़ात के बाद जनाबके फ़िज़्ज़ा हज़रत ज़ैनब की कनीज़ी में आ गईं और उनके ख़ानए अक़दस में ख़िदमत के फ़राएज़ अन्जाम देने लगीं और बाज़ औक़ात इमामे हसन (अ.) और इमामे हुसैन(अ.) के घर में भी ख़िदमते फ़राएज़ अन्जाम देती थीं, फिर जब अक़ीले क़ुरैश हज़रत ज़ैनब अपने भाई के साथ मदीने से ईराक़ की तरफ़ रवाना हुईं तो जनाबे फ़िज़्ज़ा उनके साथ चलीं और करबला के मैदान में आईं।

करबला में हुक्मे फ़िज़्ज़ा से शेर का बरामद होना :- मक़ातिल की किताबों में है के शहादते इमाम हुसैन(अ.) के बाद जब उनकी लाशे अक़्दस पर घोड़े दौड़ाये जाने का बन्दो बस्त किया गया तो हुक्मे जनाबे ज़ैनब के मुताबिक़ जनाबे फ़िज़्ज़ा ने अबुल हारिस नामी शेर को आवाज़ दी थी और उसने आकर लाशे मुबारक की हिफ़ाज़त की थी। (सफ़ीनतुल बिहार, जिल्द २,पृष्ठ ३६५) तफ़सील के लिये मुलाहेज़ा हो **" ज़िकरूल अब्बास "** लाहौर में छपी।

करबला में जनाबे फ़िज़्ज़ा का हज़रते ज़ैनब को सवार कराना :-शहादते हज़रत इमामे हुसैन(अ.) के बाद जब गयारह मोहर्रम को अहलेबैत की रवानगी का वक़्त आया तो हज़रते ज़ैनब ने तमाम औरतों और बच्चों को सवार करा दिया था, लेकिन हज़रते ज़ैनब को ऊंट पर सवार करने वाला कोई न था। रावी कहता है के उस वक़्त मैने देखा के **(अज़ा बेजायरतः मसन्नतः सवदा अक़्बलतः इला ज़ैनब फ़ा रक्तबहा फ़सालत अन्हा फ़क़ालुहा क़ज़्म्ता जारियतः फ़ात्मताः)** एक काले रंग की बूढ़ी कनीज़ आगे बढ़ी और उसने हज़रते ज़ैनब को सवार किया, मैने लोगों से पूछा के यह औरत कौन है, उन्होंने कहा यह फ़िज़्ज़ा हैं। जो हज़रत फ़ात्मा ज़हरा की कनीज़ हैं।

(माआली सिब्तैन, जिल्द २, पृष्ठ ५४, व रिसालए फ़िज़्ज़ा, पृष्ठ१३, लाहोर में छपा)

दरबारे शाम में जनाबे फ़िज़्ज़ा की पीठ पर ताज़याना :-मक़ातिल की किताबों में है के जनाबे फ़िज़्ज़ा वाक़िये हायला करबला में इमामे हुसैन(अ.) के साथ थीं। सय्यदुश शोहदा (अ.) जब रूख़सते आख़िर के लिये ख़ेमे में आये थे और उन्होंने सबको सलामे आख़िर किया था तो जनाबे फ़िज़्ज़ा को भी सलाम किया था। और कहा था ऐ फ़िज़्ज़ा मेरी बहन ज़ैनब का ख़याल रखना। चुनांचे वह हर मौक़े पर इस इरशाद की तरफ़ ध्यान देती रहीं। ख़ुसूसन उस वक़्त ख़ास किरदार अदा किया जब कि यज़ीद ने भरे दरबार में हज़रते ज़ैनब से कलाम करना चाहा था। उस

वक़्त जनाबे फ़िज़्ज़ा सामने आगईं थीं और यज़ीद मलऊन को इस बद तमीज़ी में कामयाब नहीं होने दिया था। लेकिन इस सिलसिले में एक मौक़ा ऐसा भी आ गया था जिसमें फ़िज़्ज़ा को ताज़याना खाना पड़ा। अल्लामा मोहम्मद अली काज़मैनी लिखते हैं कि हज़रत ज़ैनब को दरबारे शाम में ३०, कनीज़ें अपने हलक़े में लिये हुये थीं। यज़ीद ने अपने ग़ुलाम अबु अबीदा को हुक्म दिया कि इन कनीज़ों को ज़ैनब के सामने से हटा दे। चुनांचे वह ताज़याना लेकर आगे बढ़ा। सब कनीजें तो हट गईं लेकिन जनाबे फ़िज़्ज़ा ने हज़रते ज़ैनब के सामने से हटने से इन्कार कर दिया। " **फ़ग़ज़ब अबू उबैदा व ज़र्बहा ज़रबता बिलसवूत हता अन्क़बत अल्लअर्ज़** " अबू उबैदा ने गुस्से में आकर एक ऐसा ताज़याना जनाबे फ़िज़्ज़ा की पीठ पर मारा के वह ज़मीन पर गिर पड़ीं, और चीख़ कर कहा " **वावैला मा अहद मिन क़ौम अल मनूब हा हना हत्ता नवा जज़ाए दरतक** " हाय मुसीबत क्या यहां कोई हबशी क़ौम का आदमी नहीं है जिसे ग़ैरत आये और तुझको इस ज़ुलम की सज़ा दे। यह सुन कर साठ हब्शी ग़ुलामों में से जो यज़ीद के दरबार में मौजूद थे उन्में से एक आगे बढ़ा और उसने अबू अबीदा को फ़िन्नार कर दिया। (किताबुल लिसानुल वायज़ीन पृष्ठ ६९८)

फ़िज़्ज़ा की दुआ और बयान वाक़िये शहादते फ़ात्मा (स.)

अल्लामा मजलिसी अलैहिरहमा, वरक़ा बिन अब्दुल्ला अज़्वी से रवायत करते हैं। वह कहता है के मैं एक मरतबा हज को गया ,आलमे तवाफ़ में एक औरत को देखा जिसका रंग गहरा गन्दुमी था और चेहरा नूरानी था। उसकी गुफ़्तुगू बहूत ही फ़सीह थी और वह यह दुआ मांग रही थी " **अल्लाह हुम्मा रब्बुल काबतुल हराम "अलख़** ऐ काबए मोहतरम के रब, ऐ करामुल कातेबीन के रब, ऐ ज़म ज़मो मशाऐर हराम के रब,ऐ मोहम्मद(स.) ख़ैरूल अनाम के रब, मुझको मेरे मुतहर व मासूम सादात ओर उनके मुबारक चेहरों वाले बेटों के साथ महशूर फ़रमा। मैंने दुआ को सुन कर यह समझ लिया के यह कोई मुहिब्बे अहले बैत है। उसके बाद मैं उसके क़रीब गया और मैंने उस्से पूछा के तू मुहिब्बाने आले मोहम्मद(स.) में से कौन है, उसने जवाब दिया के मैं हज़रत फ़ात्मा ज़हरा (स.) की कनीज़ " **फ़िज़्ज़ा** " हूँ। मैंने कहा ऐ फ़िज़्ज़ा मैं अर्से से तुम्हारे कलाम सुन्ने का शायक़ हूँ। ऐ बीबी मैं तुम्से एक अहम सवाल करना चाहता हूँ तुम मेहरबानी करके तवाफ़ के बाद फ़लां मक़ाम पर आ जाना वहीं हाज़िर होकर सवाल करूँगा, चुनांचे वह आ गईं और मैं भी हाज़िर हो गया।

मैंने अर्ज़ की " **या फ़िज़्जतः अख़बरीनी अन मौलातक फ़ात्मातज़ ज़हरा वमा अल लज़ी रायत मिन्हाइन्दे वफ़ा तेहा बाद मौत अबेहा** " ऐ फ़िज़्ज़ा मुझे बताओ कि वफ़ाते रसूल(स.) के बाद उनकी बेटी फ़ात्मा ज़हरा पर क्या गुज़री। यह सुन्ना था के " **तग़र्रत अयनाहा बिल दमो** " फ़िज़्ज़ा की आंखें आंसुओं से छलक उठीं और वह चीख़ मार कर रोईं और कहने लगीं ऐ वरक़ाः तुमने हमारे ग़म को ताज़ा कर दिया और हमारे दिल को ज़ख़्मों से भर दिया। ऐ वरक़ाः तुमको क्या बताऊं कि सय्यदा पर क्या गुज़री, अच्छा सुनो, यह कह कर उन्होंने तमाम दास्ताने ग़म दोहरा दी।

(बेहारूल अनवार, जिल्द १०, पृष्ठ ५३, व सफ़ीनमुल बेहार, जिल्द २ ,पृश्ठ ३६५)

उमर बिन ख़त्ताब और इल्मियत का एतराफ़

अल्लामा शेख़ जाफ़र नज़ारी लिखते हैं के एक दफ़ा जनाबे फ़िज़्ज़ा का उमर बिन ख़त्ताब से किसी मसलऐ फ़िक़ा में इख़्तेलाफ़ हो गया और फ़िज़्ज़ा ने अपनी इल्मियत की ताक़त से उन्हें ज़ेर कर दिया तो उन्हें ताअज्जुब हुआ और कहा कि " **शेरतः मिन आले अबी तालिब अफ़क़ा मिन जमीए आले ख़त्ताब** " आले **अबू तालिब** का एक मामूली सा बाल भी तमाम आले **ख़त्ताब** से फ़िक़ा जानने वाला है। (अनवारे अलविया, पृष्ठ ५८)

जनाबे फ़िज़्ज़ा और क़ुरआने मजीद :- इनके हालात और वाक़यात से मालूम होता है कि यह क़ुरआने मजीद की हाफ़िज़ थीं। क्योंके उनके लिये यह मुसल्लम है कि उन्होंने बीस साल तक क़ुराने मजीद की आयात में कलाम किया था। अल्लामा मजलिसी,"बेहारूल अनवार" में और शेख़ अब्बास क़ुम्मी "सफ़ीनतुल बेहार" में लिखते हैं, कि " **मातकामत अशर बिन सन्अतल बिल क़ुरान** " यह बीस साल तक क़ुराने मजीद के अलावा कुछ बोलीं ही नहीं। यानी जो बात करती थीं वह क़ुराने मजीद की आयात में करती थीं। ज़ाहिर है के जो सवाल जवाब अपनी निजी ज़िन्दगी के बोल चाल के मौक़ों पर बल्कि ज़िन्दगी के हर मौक़ों पर सिर्फ़ क़ुराने मजीद से बात चीत करे उसके हाफ़िज़े क़ुरान होने में क्योंकर शक किया जा सकता है। मैं मिसाल के तौर पर उनके क़ुराने मजीद की आयात में कलाम करने का एक वाक़ेया लिखता हूँ। अल्लामा हाफ़िज़ मोहम्मद बिन अली शहरे आशोब अल्मतूफ़ी ५८८, बहवाला अबुल क़ासिम क़ेशरी तहरीर करते हैं, कि एक शख़्स अब्दुल्ला बिन मुबारक ने बयान किया कि मैं सफ़र में था इत्तेफ़ाक़न अपने क़ाफ़िले से रह गया और जंगल की तरफ़ निकल गया। मैंने इस जंगल में एक औरत को परेशान हाल देखा तो मैं यह समझा कि शायद यह भी रास्ता भूल गईं हैं। मैंने उनसे पूछा।

(१) तुम कौन हो? उसने जवाब दिया, " **क़ुल सलामुन फ़सूफ़ तामलून**" तुम सलाम कहो अन्क़रीब जान लोगे, मैंने सलाम किया।

(२) अब इस जंगल में फिर क्यों रही हो? उसने कहा **"मन यहदी अल्लाहफ़ला मज़ल्लहा"** जिसे अल्लाह हिदायत दे उसे कोई गुम्राह नहीं कर सकता, मैं समझा कि यह राह भटकी हुई है।

(३) तुम जिनों में से हो या इन्सानों में से? उसने कहा **"या बनी आदम ख़ज़ो अज़ यन्तक़ुम"** ऐ बनी आदम अपनी ज़ीनत को संभालो। मैं समझा कि अपना इन्सान होना बता रही है।

(४) तुम कहां से आई हो? उसने कहा " **तनादून मन मकान बईद** " वह दूर से पुकार रहे हैं। मैं समझा कि बहुत दूर से आई है।

(५) कहां जाने का इरादा है? उसने कहा **"वल्लाह अलन्नास हज्जल बैत"** अल्लाह के लिये लोगों पर हज वाजिब है , मैं समझा कि हज को जा रही हैं।

(६) तुम क़ाफ़्ले से कब जुदा हुई हो? उसने कहा **"वला क़द ख़लक़नस समावात वल अर्ज़ फ़ी सित्ते अय्याम"** हमने आसमानों और ज़मीनों को छः ६ दिन में पैदा किया, मैं समझ गया के छः दिन से भटकी हुई हैं।

(७) तुम कुछ खाना चाहती हो? उसने कहा **" वमा जाअल्ना हुम जसादन या कुलू अल्ताआम "** हमने इनको जिस्म क़रार दिया ,वह खाना खाते हैं। मैं समझ गया कि खाना मतलूब है।

(८) खाना खिला कर मैंने कहा जल्दी सवार हो जाओ, उसने कहा **" ला यकफ़ अल्लाह नफ़सन अला व सआहा "** अल्लाह किसी को उसकी ताक़त से ज़्यादा तकलीफ़ नहीं देता , मैं समझा कि वह एक जानवर पर ज़्यादा बार पसन्द नहीं करती।

(६) तुम मेरे साथ एक ही ऊँट पर बैठ जाओ, उसने कहा **" लौ काना फ़ी हमा हल अतः अल्ललाहा लफ़सदतन "** अगर ज़मीन और आसमान में अल्लाह वाहिद से ज़्यादा ख़ुदा होते तो दोनों तबाह हो जाते, मैं समझा कि एक साथ बैठना नहीं चाहतीं।

(१०) मैंने अपनी सवारी से उतर कर कहा कि तुम सवार हो जाओ, चुनांचे सवार हो कर उसने कहा **" सुभानल लज़ी मसख़र लना हाज़ा "** पाक है वह ख़ुदा जिसने हमें इस पर सवार होने का मौक़ा दिया, और उसे हमारे क़ाबू में किया।

(११) जब हम क़ाफ़्ले में मिल गये , यानी उसका क़ाफ़्ला मिल गया तो मैंने पूछा कि इस क़ाफ़्ले में तुम्हारा कोई अपना भी है, तो उसने कहा **" या दाउदना जा अल्नका ख़लीफ़तेह फ़िल अर्ज़ " वमा मोहम्मदुर रसूल या यहीया ख़ज़ा अल किताब, या मूसा इना अन अल्लाह"** मैं समझ गया कि इसके चार आदमी हैं। **दाऊद और मोहम्मद, यहीया और मूसा,** चुनांचे मैंने उनको ज़ोर से पुकारा, सब हाज़िर हो गये।

(१२) फिर मैंने पूछा यह चारों तुम्हारे कौन हैं ? उसने कहा **" अल मलाल वल बनून ज़ीनतुल हयातुत दुनिया "** माल और औलाद ज़िन्दगानी दुनिया की ज़ीनत हैं। मैं समझ गया के यह चारों उसके बेटे हैं।

फिर उस औरत ने यह आयत पढ़ी **" या अबत असताजरा अन ख़ैर मन असताजरत अल क़वी अल अमीन "** यानी उसने उनसे कहा कि इस श़ख्स को कुछ उजरत दे दो, चुनांचे उन्होंने मुझे कुछ माल दिया। मैंने उसे कम समझ कर कहा अल्लाह जिसे चाहता है दुगना देता है। यह सुन कर उन्होंने और उजरत दी। फिर मैंने उनसे पूछा के यह औरत कौन है? और इसका क्या नाम है। उन्होंने कहा हज़रत फ़ात्मा बिन्ते रसूल(स.) की आज़ाद कनीज़ हैं। इनका नाम **" फ़िज़्ज़ा "** है, और यह हमारी मां हैं। यह बीस साल से आयाते क़ुरानी के ज़रिये बात चीत करती हैं।

(मनाक़िबे इब्ने शहरे आशोब, जिल्द २, पृष्ठ ४०, व अल मुस्तरफ इमाम अल बेशही, जिल्द १,पृष्ठ ५४)

जनाबे फ़िज़्ज़ा की वफ़ात और उनका मदफ़न :- जनाबे फ़िज़्ज़ा की हज़रत फ़ात्मा की हाज़री का वाक़ेया और उनका सिने विलादत व वफ़ात और उनके दफ़न होने की जगह का पता इतिहास में नहीं मिलता। फिर भी रवायत " **ख़ुलासतुल मसाएब** " के अनुसार यह है कि उन्होंने हज़रते ज़ैनबे कुबरा की वफ़ात के थोड़े अर्से के बाद इन्तेक़ाल किया था और उन्हीं के क़रीब शाम में दफ़न हुई थीं।

जनाबे फ़िज़्ज़ा की एक नवासी का वाक़ेया :- जनाबे फ़िज़्ज़ा के ४,चार लड़के और एक लड़की थी। लड़कों के नाम यह हैं। **दाऊद, मोहम्मद, यहीया, और मूसा**, लड़की का नाम " **मसका** " इस लड़की की एक लड़की थी, जिसका नाम **"शोहरत"** था।

शोहरत एक दिन हज को जा रही थी रास्ते में उसकी सवारी थक कर बैठ गई। उसने आसमान की तरफ़ मुँह करके कहा , ख़ुदाया ! तूने मुझे कहीं का न रखा। अब न घर वापस जा सकती हूँ न मक्का पहूंच सकती हूँ। रावी मालिक बिन दीनार कहता है कि इस कहने के फ़ौरन बाद जंगल के दरख़्तों से एक शख़्स ऊँटनी की मेहार पकड़े हुये बरामद हुआ और उसे बिठा कर मक्के ले गया।

(बेहारूल अनवार, सफ़ीनतुल बेहार, जिल्द २ पृष्ठ ३६५ व मनाक़िब जिल्द २, पृष्ठ ३०)

जनाबे फ़िज़्ज़ा के वतन अफ़रीक़ा से अम्बिया, आइम्मा और इस्लाम का इलाक़ा (समबन्ध)

तवारीख़ के देखने से मालूम होता है के बर्रे आज़म अफ़रीक़ा का अम्बिया , आइम्मा और इस्लाम से बहुत गहरा और क़दीमी ताअल्लुक़ है। हज़रते यूसुफ़ और हज़रते मूसा जैसे बड़े पैगम्बरों ने अपनी ज़िन्दगी का बड़ा हिस्सा अफ़रीक़ा ही में बसर किया है। हमारे नबी की जद्दे आलिया हज़रत हाजरा अफ़रीक़ा के मुल्के मिस्र की शहज़ादी थीं।

जब हमारे नबी करीम **हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा (स.)** ने मक्के में इस्लाम की तबलीग़ शुरू की तो काफ़िरों ने आपको और आपके मानने वालों मुस्लमानों को सताना शुरू किया। आपने यह देख कर बाज़ मुस्लमानों को हज़रत जाफ़रे तैय्यार के साथ हबश (अफ़रीक़ा) भेज दिया। वहां के बादशाह ने उन मज़लूम मुस्लमनों को पनाह दी और उन दुश्मनों की रेशा दवानियों को ख़त्म किया। जो मक्के से जाकर शाहे हबश को मुस्लमानों से बदज़न करना चाहते थे।

रसूल (स.) की एक बीवी " **मारिया क़िबतिया** " अफ़रीक़ा की रहने वाली थीं। आप अफ़रीक़ा के मशहूर क़बीले " **नौबा** " से थीं, और रसूल अल्लाह (स.) को गोद में खिलाने वाली **"उम्मे ऐमन"**(बरकत) अफ़रीक़ा की ही रहने वाली थीं। उनके एक बेटे **"ऐमन"** जंगे ख़ैबर में शहीद हुये। उनके दूसरे बेटे **"उसामा बिन ज़ैद"** थे, जिनको रसूल अल्लाह(स.) ने अपनी ज़िन्दगी के आख़री दिनों में एक ऐसे लशकर का सरदार बनाया था जिसमें बड़े

बड़े सहाबी शामिल थे। और आपके एक ख़ास सहाबी और मोअज़्ज़िन" **हज़रत बिलाल"** (र.) भी अफ़रीक़ा के बाशिन्दे थे। हज़रत बिलाल इस्लाम के पहले मोअज़्ज़िन हैं। आज भी अफ़रीक़ा में करोड़ों मुस्लमान आबाद हैं। शुमाली अफ़रीक़ा में **मिस्र, सूडान, तराबलस, तियूंस, अलजज़ायर, और मराकश** ख़ास इस्लामी मुल्क हैं। मग़रबी अफ़रीक़ा में **गिनी और नाईजेरिया** में मुस्लमानों की हुकूमते हैं। मशरिकी अफ़रीक़ा में **हिमालिया** और **जंजीबार** में मुस्लमानों की हुकूमतें क़ायम हैं। मशरिक़ी अफ़रीक़ा के मुमालिक **जंजीबार, युगांडा, कीनिया और टांगानिका** में काफ़ी **"शिया अशना अशरी"** भी आबाद हैं।

शुमाली अफ़रीक़ा का सब से अहम इस्लामी मुल्क " **मिस्र** " है।आज से हज़ारों साल पहले मिस्र के बादशाहों को **"फ़िरऔन"** कहते थे। हज़रत मूसा(अ.) ने एक फ़िरऔन के घर में ही परवरिश पाई थी।

मिस्र की राजधानी " **क़ाहेरा** " है। यह इस्लामी दुनियां का बहुत बड़ा शहर है। यहां की सबसे पुरानी यूनीवर्सिटी " **अल अज़हर** " मौजूद है जो एक हज़ार साल से इल्म का गहवारा बनी हुई है।

क़ाहेरा में मशहद " **रासुल हुसैन** " **(अ.)** नाम की एक इमारत है। जहां हज़ारों मिस्री रोज़आना जमा होकर इमाम हुसैन (अ.) से अपनी मोहब्बत व अक़ीदत का इज़हार करते हैं।

मिस्र के जुनूब में **"सूडान"** है। यह भी एक आज़ाद इस्लामी मुल्क है। मिस्र और सूडान में दरयाए नील बहता है। यह वही दरिया है जिस पर हज़रत मूसा (अ.) ने **"असा" (डन्डा)** मारा था तो दरिया का पानी फट गया था। और हज़रते मूसा (अ.) बनी इस्राईल को लेकर मिस्र निकल गये थे। इस्लामी तारीख़ में इसका ज़िक्र बार बार आता है।

मिस्र के मग़रिब में **"लीबिया"** है। जहां सनोसी अरबों की हुकूमत है। लीबिया से मग़रिबी सिम्त में **"तियूंस"** है,यह बड़ा ज़रखेज़ इलाक़ा है और अब वहां भी एक आज़ाद इस्लामी हुकूमत क़ायम है। तियूंस के मग़रिब में **"अल जज़ायर"** है। जो अपनी पैदा वार और मादनयात के लिये बहुत मशहूर है। अल जज़ायर के मग़रिब में **"मराकश"** है, जहां एक मुस्लमान आज़ाद सुल्तान की हुकूमत है। मराकश से ही मुस्लमानों में पहली मरतबा यूरोप पर हमला किया था और " **इस्पेन** " कब्ज़ा कर लिया था। जहां मुस्लमान सदियों तक हुकूमत करते रहे। शुमाली अफ़रीक़ा की तरह मग़रिबी और वस्अती अफ़रीक़ा के इलाकों में भी मुस्लमानों की अकसरियत है। मग़रिबी अफ़रीक़ा में **नाईजेरिया और गिनी** की आज़ाद मुस्लमान हुकूमतें क़ायम हैं। **सहारा, माली, और कांगो** के इलाकों में भी मुस्लमानों की अकसरियत है।

मशरिक़ी अफ़रीक़ा में **ज़ंजीबार** की मुस्लिम रियासत बहुत पुरानी है। यहां **ख़ोजा अश्ना अशरी** आबादी भी काफ़ी है, और हमारी दो मस्जिदें और कई **इमाम बाड़े** मौजूद हैं।

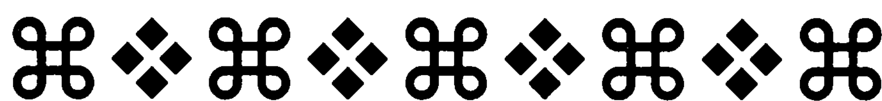
टांगा नीका में मुस्लिम अक्सरिसत है, और इस मुल्क में जगह जगह अशना अश्री शिया भी मौजूद हैं। टांगा नीका के दारूल हुकूमत(राजधानी) **"दारूस्सलाम"** में और दूसरे तमाम बड़े शहरों **अरूशा, मवोशी, व टांगानीका** वग़ैरा में शियों की मस्जिदें और इमाम बाड़े मौजूद हैं। और उनमें ज़ोर शोर से अज़ादारी होती है। **कीनिया और युगांडा** में भी शिया आबादियां मौजूद हैं। मसलन **कम्पाला, सरूटी, अरवाहीमा, निगोरा,** वग़ैरा में इनकी मसाजिद और इमाम बाड़े मामूर नज़र आते हैं। बर्रे आज़म अफ़रीक़ा का सिर्फ़ जुनूबी इलाक़ा ऐसा है जहां मुस्लमान अक़लियत में हैं। अफ़रीक़ा पर इस्लामी असरात की नुमायां निशानी अरबी ज़बान है और मशरिक़ी अफरीक़ा की **"सवाहली"** ज़बान (भाषा) में बेशुमार अरबी अल्फ़ाज़ मौजूद हैं।

मशरिक़ी अफ़रीक़ा में शिया आबादी **सूमालिया, ज़ंजबार, कीनिया, टांगानीका, युगांडा, कांगो, अज़्मबरा, मुम्बासा, मडागा सकर** में पाई जाती हैं। (दीनी बातें)

मोअल्लिफ़ का सफ़रे युगांडा :- बर्रे आज़म अफरीक़ा के इलाक़े **"युगांडा"** के सदर **जनरल " ईदी अमीन "** ने सदरे पाकिस्तान **"ज़ुल्फ़िक़ार अली भुट्टो"** को लिखा के मैं **"आल वर्ल्ड मुस्लिम सुपरीम कौंसिल"** का इजलास करना चाहता हूँ। इसके लिये तमाम मुमालिके इस्लामिया को लिखा जा चुका है कि वह अपने नुमांइन्दे भेजें आपसे भी यही दरख़्वास्त है। सदर भुट्टो ने मरकज़ी वज़ीरे इत्तेलाआत व नशरियात व हज व औक़ाफ़ जनाब मौलाना कौसर नियाज़ी से मशवेरा करके बतारीख़ २६,मई १६७३ ई० मुझ से बज़रिये फ़ारेन ऐफ़ेयर्स ख़्वाहिश की कि मैं इस अज़ीम कान्फ़्रेंस में पाकिस्तान की नुमांइन्दगी करूं, जिसमें तक़रीरें अरबी में होंगी। क्योंकी वहां की ज़बान अरबी है। चुनांचे मैं एक दिन में तमाम इन्तेज़ामात पूरे करके २८ ,मई १६७३ ई० हवाई जहाज़ के ज़रिये रवाना होकर **कराची, तेहरान, बैरूत, यूनान, और मग़रिबी जर्मनी** होता हुआ २६, मई को **लन्दन** पहुँचा। वहां **"सेंटर होटल"** में क़रीब १०, दस घन्टे रूकने के बाद **"कम्पाला"** के लिये रवाना हुआ। जो युगांडा की राजधानी है। वहां "इन्टर नेशनल" होटल में क़याम किया। कई पाकिस्तानी हज़रात मिलने के लिये आये। फिर ३१, मई की सुबह को मुल्क के मुख़तलिफ़ कई जगहों में इजलास मुनअक़िद हुये। जिनमें अरबी और अंग्रेज़ी में तक़रीरें की गई। फिर एक जून १६७३ ई० को असल सुप्रीम कौंसिल का इजलास शाही शानो शौकत के साथ मुनअक़िद किया गया।

सदर **"ईदी अमीन"** ने इजलास शुरू होने से पहले नुमाइंदों से मुलाक़ात की और गुरूप फ़ोटो लिया गया। इसके बाद ८.३० बजे शब को इजलास शुरू हुआ, जो एक बजे रात तक जारी रहा। फिर १.३० बजे "सुप्रिम कौंसिल" के दफ़तर का इफ़तेताह किया गया,और २.३० बजे शब(रात) को अयवाने सदर "एन० टी० बी०" में खाना खाया गया। जहां मैंने पाकिस्तानियों पर ख़ास निगाह रखने की दरख़्वास्त की। जिसका नतीजा मेरी याद देहानी पर उस वक़्त ज़ाहिर हुआ जब **"युगांडा"** से तमाम एशिया के बाशिंदे निकाले जा रहे थे।

३, जून १६७३ ई० को शिया अश्ना अशरी जमाअत के सदर जनाब **"सुल्तान दाऊद"** साहब मेरे पास आये और मुझे अपने साथ शिया मस्जिद व इमाम बाड़े दिखाने के लिये गये। जिन्हें देख कर मैं बेहद खुश हुआ। दरयाफ़्त करने पर मालूम हुआ कि इस "कम्पाला" में तक़रीबन ३०००, हज़ार शियों की आबादी है। इस रात को इजलासे आम का बन्दोबस्त किया गया। जो बाद में जहाज़ की रवानगी के वक़्त की वजह से मन्सूख़ कर दिया गया। फिर इसी ३, जून को शाम के वक़्त " कम्पाला " से " नैरोबी " रवाना होकर ३, जून १६७३ ई० ५, बजे सुबह कराची पहुँचा। इस सफ़र में मेरे साथ जनाब "फ़ज़लुल रहमान" साहब एम० ए० भी थे, जो अंग्रेज़ी में तक़रीरें करते थे। तक़रीबन एक महीने के बाद जनाब "अल्हाज मौलाना कौसर नियाज़ी साहब मरकज़ी वज़ीरे इत्तेलातो नशरियात व हज व अवक़ाफ़ हुकूमते पाकिस्तान और जनाब ग़यूर अहमद साहब, सेक्शन आफ़ीसर " फ़ारेन ऐफ़ेयर्स " ने बताया कि "युगांडा" से सरकारी रिपोर्ट बहुत ही अच्छी आई है।





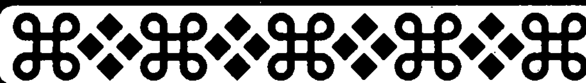
अबुल हसन

हज़रत अली (अ.)

अमीरल मोमेनीन

नुसरते दीं है, अली का काम सोते जागते
ख़्वाबो, बेदारी है यकसां यह हैं ऐने किरदिगार
इसकी बेदारी की अज़मत को सने हिजरी से पूंछ
जिसका सोना बन गया, तारिख़े दीं की यादगार

"साबिर थरयानी" (कराची)



بسم الله الرّحمٰن الرّحيم

भाग-३

हज़रत अली (अ.)

अवसाफ़े अली बा गुफ़्तुगू मुमकिन नीस्त
गुन्जाईशे बहर दर सुबू , मुमकिन नीस्त
मन ज़ाते अली बूअजबी के दानम
इल्ला दानम कि मिस्ले ओ मुमकिन नीस्त

मौलूदे काबा, हज़रत अली(अ.) अबुल ईमान **हज़रत अबू तालिब व जनाबे फ़ात्मा बिन्ते असद** के बेटे पैग़म्बरे इस्लाम **हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा**(स.) सहीमे नूर, दामाद, भाई, जांनशीन और फ़ात्मा के शौहर हज़रत इमामे हसन, इमामे हुसैन(अ.) ज़ैनबो उम्मे कुल्सूम के पदरे बुज़ुर्गवार थे। आप जिस तरह पैग़म्बरे इस्लाम के नूर में शरीक थे, उसी तरह कारे रिसालत में भी शरीक थे। यौमे विलादत से लेकर पूरी ज़िन्दगी पेग़म्बरे इस्लाम के साथ उनकी मदद करने में गुज़ारी। उमूरे मम्लेकत हों या मैदाने जंग आप हर मौक़े पर ताज दारे दो आलम के पेश पेश रहे। एहदे रिसालत(स.) के सही फ़तूहात का सेहरा आप ही के सर रहा। इस्लाम की पहली मन्ज़िल (दावते ज़ुल अशीरा) से लेकर ता विसाले रसूल(स.) आपने वह कार हाये नुमायां किये जो किसी सूरत से भुलाए नहीं जा सकते। और क्यों न हो जबकि आपका गोश्त पोस्त रसूल(स.) का गोश्त पोस्त था और अली(अ.) पैदा ही किये गये थे इस्लाम और पैग़म्बरे इस्लाम के लिये।

आपकी विलादत :- आपकी नूरी तख़्लीक़ ,ख़िल्क़ते सरवरे कायनात के साथ-साथ पैदाईशे आलम व आदम(अ.) से बहुत पहले हो चुकी थी। लेकिन इन्सानी शक्लो सूरत में आपका ज़ुहूर व नमूद १३, रजब ३०, आमुल फ़ील, मुताबिक़ ६०० ई० जुमे के दिन बमुक़ामे ख़ानए काबा हुआ। आपकी मां फ़ात्मा बिन्ते असद और बाप **अबू तालिब** थे।

आप दोनों तरफ़ से हाश्मी थे। इतिहासकारों ने आपके ख़ानए काबा में पैदा होने के मुताअल्लिक़ कभी कोई इख़्तेलाफ़ ज़ाहिर न किया। बल्कि बिल इत्तेफ़ाक़ कहते हैं कि " **लम यूलद किबलहा वला बादह मौलूद फ़ी बैतुल हराम** " आपसे पहले कोई न ख़ानए काबा में पैदा हुआ है न होगा। इसके बारे में उलेमा ने तवातुर का दावा भी किया है।(मुस्तदरिक इमामे हाकिम जिल्द ३, पृष्ठ ४८३) तवारीख़े इस्लाम में वाक़िए विलादत यूँ बयान किया गया है कि फ़ातमा बिन्ते असद को जब दर्दे ज़ेह की तकलीफ़ महसूस हुई तो आप रसूले करीम के मशवेरे के मुताबिक़ ख़ानए काबा के क़रीब गईं और उसका तवाफ़ करने के बाद दीवार से टेक लगा कर खड़ी हो गईं। और बारगाहे ख़ुदा की तरफ़ मुतावज्जे होकर अर्ज़ करने लगीं, ख़ुदाया मैं मोमेना हूँ। तुझे इब्राहीम बानीए ख़ानए काबा और इस मौलूद का वास्ता जो मेरे पेट में है, मेरी मुशकिल दूर कर दे। अभी दुआ के जुमले ख़त्म न होने पाए थे, कि दीवारे काबा शक़ (टूटना) हो गई और फ़ात्मा बिन्ते असद काबे में दाख़िल हो गईं। और दीवार ज्यों की त्यों हो गई। (मनाक़िब पृष्ठ १३२, वसीलतुन नजात, पृष्ठ ६०) विलादत काबा के अन्दर हुई। अली पैदा तो हुए लेकिन उन्होंने आंख नहीं खोली। माँ समझी कि शायद बच्चा बेनूर है, मगर जब तीसरे दिन सरवरे कायनात(स.) तशरीफ़ लाये और अपनी आग़ोशे मुबारक में लिया तो हज़रत अली(अ.) ने आँखें खोल दीं, और जमाले रिसालत(स.) पर पहली नज़र डाली। सलाम करके तिलावते सहीफ़ए आसमानी शुरू कर दी। भाई ने गले लगाया और यह कह कर कि ऐ अली (अ.) जब तुम हमारे हो तो मैं भी तुम्हारा हूँ। फ़ौरन मूँह में ज़बान दे दी। अल्लामा अरबली लिखते हैं। " **वअज़ ज़बाने मुबारक दवाज़दह चश्मए कशूदा शुद** " ज़बाने रिसालत (स.) से दहने इमामत में बारह चश्मे जारी हो गये, और अली(अ.)अच्छी तरह सेराब हो गये। इसी लिये इस दिन को " **यौमुल तरविया** " कहते हैं। क्योंके तरविया के माने सेराबी के हैं। (कशफ़ुल नग़मा पृष्ठ १३२)

अलग़रज़ हज़रत अली ख़ानए काबा से चौथे रोज़ बाहर लाये गये और उसके दरवाज़े पर अली(अ.) के नाम का बोर्ड लगा दिया गया। जो हश्शाम इब्ने अब्दुल मलिक के ज़माने तक लगा रहा। आप पाको पाकीज़ा, तय्यबो ताहिर और मख़्तून(ख़त्ना शुदा) पैदा हुये। आपने कभी बुत परस्ती नहीं की, और आपकी पेशानी कभी बुत के सामने नहीं झुकी। इसी लिये आपके नाम के साथ " **करम अल्लाह वजहा** " कहा जाता है। (नूरूल अब्सार, पृष्ठ ७६, सवाएक़े मोहर्रेक़ा, पृष्ठ ७२)।

आपका नामे नामी :- मोवर्रेख़ीन का बयान है, कि आपका नाम जनाबे अबूतालिब ने अपने जद्दे आला जामए क़बाएले अरब " **क़ुसी** " के नाम पर " **ज़ैद** " और मां फ़ात्मा बिन्ते असद ने अपने बाप के नाम पर " **असद** " और सरवरे कायनात(स.) न ख़ुदा के नाम पर " **अली** " रखा। नाम रखने के बाद अबूतालिब और बिन्ते असद ने कहा। हुज़ूर हमने हातिफ़े ग़ैबी से यही नाम सुना था। (रौज़तुल शोहदा और किफ़ायत अल तालिब)

आपका एक मशहूर नाम " **हैदर** " भी है। जो आपकी माँ का रखा हुआ है। जिसकी तसदीक़ इस रजज़ से होती है ,जो आपने मरहब के मुक़ाबले में पढ़ा था। जिसका पहला मिसरा यह है। **"अना अल लज़ी समतनी अमी हैदरा"** इस नाम के मुताअल्लिक़ रवायतों में है कि जब आप झूले में थे। एक दिन माँ कहीं गई हुई थीं, झूले पर एक सांप जा चढ़ा, आपने हाथ बढ़ा कर उसके मूँह को पकड़ लिया और कल्ले को चीर फ़ेंका। माँ ने वापस होकर यह माजरा देखा तो बेसाख़्ता कह उठीं, यह मेरा बच्चा " **हैदर** " है।

कुन्नीयत व अल्क़ाब :- आपकी कुन्नीयत व अल्क़ाब बे शुमार हैं। कुन्नीयत में अबुल हसन और अबूतुराब और अल्क़ाब में अमीरूल मोमेनीन,अल्मुर्तज़ा, असद उल्लाह, यदुल्लाह, नफ़सुल्लाह, हैदरे कर्रार, नफ़से रसूल, और साक़िए कौसर ज़्यादा मशहूर हैं।

आपकी परवरिश :- आपकी परवरिश रसूले अकरम(स.) ने की पैदा होते ही गोद में लिया, मूँह में ज़बान दी और दूध के बजाय लोआबे दहने रसूल (स.) से सेराब होकर **"लहमका लहमी"** के हक़दार बने। (सहरते हलबीता, जिल्द १,पृष्ठ २६८) इसी दौरान में जब कि आप सरवरे कायनात के ज़ेरे साया आरज़ी तौर पर परवरिश पा रहे थे। मक्के में शदीद क़हत पड़ा, अबूतालिब की चूँकि औलादें ज़्यादा थीं, इस लिये हज़रते अब्बास और सरवरे कायनात(स.) उनके पास तशरीफ़ ले गये और उनको राज़ी करके हज़रत अली (अ.) को मुस्तक़िल तौर पर अपने पास ले आये और अब्बास ने भी जाफ़रे तय्यार को ले लिया। हज़रत अली(अ.) सरवरे कायनात (स.) के पास दिन रात रहने लगे। हुज़ूरे अकरम(स.) ने तमाम नेमाते इलाही से बहरावर कर लिया और हर क़िस्म की तालीमात से भरपूर बना दिया। यहां तक कि अली नामे ख़ुदा कुव्वते बाज़ू बन कर यौमे बेसत २७, रजब को कुल्ले ईमान की सूरत में उभरे और हुज़ूर की ताईद करके इस्लाम का सिक्का बिठा दिया।

इज़हारे ईमान :- मुस्लमानों में अक्सर यह बहस छिड़ जाती है के सबसे पहले इस्लाम कौन लाया, और इस सिलसिले में हज़रत अली(अ.) का नाम भी आ जाता है। हांलाके आप इस मौज़ूए बहस से अलग हैं। क्योंके ज़ेरे बहस वह लाये जा सकते हैं। जो या तो मुस्लमान ही न रहे हों और तमाम उम्र शिर्को बुत परस्ती में गुज़री हो। जैसे हज़रत अबू बक्र, हज़रत उमर, हज़रत उस्मान वग़ैरा, या मुस्लमान तो रहे हों और दीने इब्राहीम पर चलते रहे हों , लेकिन इस्लाम ज़ाहिर न कर सके हों। जैसे हज़रते हमज़ा, हज़रत जाफ़रे तय्यार , और अबुल ईमान हज़रत अबू तालिब (अ.) वग़ैरा ऐसी सूरत में इन हज़रात के लिये कहा जायगा कि इस्लाम कुबूल किया और बाद वालों जैसे हज़रत अबूतालिब (अ.) वग़ैरा के लिये कहा जायगा कि इस्लाम ज़ाहिर किया। अब रह गये हज़रत अली (अ.) यह काबा में फ़ितरते इस्लाम पर पैदा हुये। **"कुल्ले मौलूद यूलद अली फ़ितरतुल इस्लाम"** रसूले इस्लाम (स.) की गोद में आँख खोली। लोआबे दहने रसूल(स.) से परवरिश पाई, आग़ोशे रिसालत

(स.) में पले, बढ़े, दस साल की उम्र में ब वजहे जुरूरत एलाने ईमान किया। रसूल(स.) के दामाद क़रार पाये। मैदाने जंग में कामयाबियां हासिल करके " **कुल्ले ईमान** " बने ,फिर अमीरूल मोमेनीन के ख़िताब से सरफ़राज़ हुये।

फ़ाज़िल माअसर तारीख़े आइम्मा में लिखते हैं कि उल्माए मोहक़्क़ेक़ीन ने साफ़ साफ़ लिखा है कि हज़रत अली(अ.) तो कभी काफ़िर रहे ही नहीं। क्योंकी आप शुरू से ही हज़रत रसूले ख़ुदा की किफ़ालत में इसी तरह रहे जिस तरह ख़ुद हज़रत की औलाद रहती थी। और कुल मामेलात में हज़रत की पैरवी करते थे। इस सबब से इसकी जुरूरत ही नहीं हुई कि आप को इस्लाम की तरफ़ बुलाया जाता और जिसके बाद कहा जाता कि आप मुस्लमान हो जायें। (सीरते हलबिया जिल्द १,पृष्ठ २६८) मसूदी कहता कि आप बचपन ही से रसूल(स.) के ताबे थे। ख़ुदा ने आपको मासूम बनाया और सीधी राह पर क़ायम रखा। आपके लिये इस्लाम लाने का सवाल ही पैदा नहीं होता। (मरूजुल ज़हब, जिल्द ५, पृष्ठ ६८) हज़रत अली फ़रमाते हैं कि मैंने उस उम्मत में सबसे पहले ख़ुदा की इबादत की और सबसे पहले आंहज़रत (स.) के साथ नमाज़ पढ़ी। (इस्तीयाब जिल्द २, पृष्ठ ४७२) पैग़म्बरे इस्लाम फ़रमाते हैं कि हज़रत अली (अ.) ने एक सेकन्ड के लिये भी कुफ़्र इख़्तेयार नहीं किया। (सीरते हलबिया, जिल्द १, पृष्ठ २७०)

हुल्या मुबारक :- आपका रंग गंदुमी, आखें बड़ी, सीने पर बाल, क़द मियाना, दाढ़ी बड़ी और दोनों शानें कोहनिया, और पिंडलियां पुर गोश्त थीं, आपके पांव के पट्ठे जबरदस्त थे। शेर के कंधों की तरह आपके कंधों की हड्डियां चौड़ी थीं। आपकी गरदन सुराही दार और आपकी शक्ल बहुत ही खूबसूरत थी। आपके लबों पर मुस्कुराहट खेला करती थी, आप ख़िज़ाब नहीं लगाते थे।

आपकी शादी ख़ाना आबादी :- आपकी शादी २, हिजरी में हुज़ूरे अकरम की दुख़्तर नेक अख़्तर हज़रत फ़ात्मा ज़हरा से हुई। आपके घर में लौंडी, गुलाम और ख़िदमतगार न थे। बाहर का काम आप खुद और आपकी वालेदा मोहतरमा करती थीं और उमूरे ख़ाना दारी के फ़राएज़ जनाबे फ़ात्मा ज़हरा(स.) अंजाम देती थीं, हो सकता है कि यह रिश्ता आम रिश्तों की हैसियत से देखा जाय ,लेकिन दर हक़ीक़त इसमें एक अहम क़ुदरती राज़ छिपा हुआ है। और उसका खुलासा इस तरह हो सकता है कि इस पर ग़ौर किया जाय कि हुज़ूरे अकरम (स.) का इरशाद है, कि अली(अ.) के अलावा फ़ात्मा (स.) का सारी दुनियां में रहती दुनियां तक कफ़ो नहीं हो सकता। (नूरूल अनवार) फिर फ़रमाते हैं कि मुझे खुदा ने हुक्म दिया है कि मैं फ़ात्मा की शादी अली(अ.) से करूं, और इसी सिलसिले में इरशाद फ़रमाते हैं कि "हर नबी की नस्ल उसके सुल्ब में होती है, लेकिन मेरी नस्ल सुल्बे अली में क़रार दी गयी है। (सवाएक़े मोहर्रेक़ा, पृष्ठ ७४) इन तमाम अक़वाल को मिलाने के बाद यह नतीजा निकलता है कि अली(अ.) और फ़ात्मा(स.) का रिश्ता नस्ले नबूवत की बक़ा और दवाम के लिये क़ायम

किया गया है। यही वजह है कि वह लोग पैग़ामे रिश्ता देकर कामयाब नहीं हो सके। जिनकी बुनियाद नजासते कुफ्र पर इसतेवार हुई और जिनकी इन्तेहा गन्दगिऐ निफ़ाक़ पर हुई।

सरदारी और सयादते अली(अ.) की सिफ़्ते ज़ाती है :- सरवरे कायनात (स.) से इत्तेहादे ज़ाती और इश्तेराके नूरी की बिना पर हज़रत अली (अ.) की सयादत मुसल्लम है। जो मदाररिजे करम हुज़ूरे अकरम (स.) को नसीब हुये। उन्हीं से मिलते जुल्ते हज़रत अली (अ.) को भी मिले। सयादत जिस तरह सरवरे कायनात(स.) के लिये ज़ाती है, उसी तरह हज़रत अली(अ.) के लिये भी है। हाफ़िज़ अबू नईम ने हुलयतुल औलिया में लिखा है कि ग़दीर के मौक़े पर खुतबे से फ़राग़त के बाद जब अमीरूल मोमेनीन हुज़ूरे अकरम (स.) के सामने आये तो आपने फ़रमाया " **मरहबन बे सय्यदुल मुस्लेमीन व इमाम-अल -मुत्तक़ीन** " ऐ मुस्लमानों के सरदार और ऐ परहेज़गारों के इमाम तुम्हें जानशनीं मुबारक हो। इस इरशादे रसूल(स.) पर इज़हारे ख़्याल करते हुये "**अल्लामा मोहम्मद इब्ने तल्हा शाफ़ेई** " ने मतालेबुल सवेल में लिखा है कि हज़रत की सयादतें मुस्लेमीन और इमामत मुत्तक़ीन जिस तरह सिफ़्ते ज़ाती है। खुदा ने अपना नफ़्स क़रार दे कर ,रसूल(स.) ने अपना नफ़्स फ़रमा कर अली(अ.) की शरफ़े सयादत को बामे ऊरूज पर पहुँचा दिया। क्योंकि जिस तरह असलिये नबविया में नफ़्से नबूवत मशारिक है, उसी तरह असलिये सयादत में भी नफ़्स शरीक है। इस लिये हुज़ूरे अकरम (स.) हज़रत अली(अ.) को सय्यदुल अरब, सय्यदुल मोमेनीन, सय्यदुल मुरसलीन फ़रमाया करते थे। (मतालिबुल सवेल, पृष्ठ५६, ५७)और हज़रत फ़ात्मा(स.) को सय्यदुन्निसां-अल-आलेमीन और उनके फ़रज़न्दों को सय्यद शबाब अहले जन्ना के अल्फ़ाज़ से याद किया करते थे,मालूम होना चाहिये कि अली(अ.)और फ़ात्मा(स.) की बाहमी मनाकहत व मज़ावेजत (शादी) ने सिफ़्ते सयादत को दायमी फ़रोग़ दे दिया। यानी जो बनी फ़ात्मा(स.) हैं उनका दरजा और है और जो दीगर औलादे अली (अ.) हैं जो बत्ने फ़ात्मा(स.) (फ़ात्मा के पेट) से पैदा नहीं हुये उनकी हैसियत और है। क्योंकी बनी फ़ात्मा सिलसिलए नस्ले नबूवत की ज़मानत हैं।

माँ की वफ़ात :- आपकी वालेदा माजेदा जनाबे फ़ात्मा बिन्ते असद ने १, बेसत में इज़हारे इस्लाम किया। आप १, हिजरी में शरफ़े हिजरत से मुशर्रफ़ हुईं। २, हिजरी में आपने अपने नूरे नज़र को रसूल(स.) की लख़्ते जिगर से बियाह दिया। और ४ हिजरी में इन्तेक़ाल फ़रमा गईं। आपकी वफ़ात से हज़रत अली बेहद मुताअस्सिर हुये। और आपसे ज़्यादा रसूले अकरम (स.) को रंज हुआ। रसूले करीम(स.) हज़रत अली की वालेदा को अपनी मां फ़रमाते थे। और उनके वहां जाकर रहते थे। इन्तेक़ाल के बाद आपने क़ब्र खोदने में खुद हिस्सा लिया। अपनी चादर और अपने कुरते को शरीके कफ़न किया और कब्र में लेट कर उसकी कुशदगी का अन्दाज़ा किया। (कंज़ुल आमाल, जिल्द ६, पृष्ठ ७ , फ़ुसूले महमा, पृष्ठ, १५ व असाबा, जिल्द ८, पृष्ठ १६० व अज़ालतूल ख़फ़ा , जिल्द १, पृष्ठ, २१५)

आपके वालिदे माजिद का इन्तेक़ाल :– आपके वालिदे माजिद अबुल ईमान हज़रत अबू तालिब ५३५ ई० में बमक़ामे मक्का पैदा हुये और वहीं पले बढ़े, आपकी बुनियाद दीने फ़ितरत पर थी। (उमहातुल आइम्मता, पृष्ठ १४३) आपने हज़रत अली को हिदायत की थी कि रसूल(स.) का साथ न छोड़ना। (तारीख़े कामिल, जिल्द ६, पृष्ठ६०) आप ही की हिदायत से हज़रत जाफ़रे तय्यार ने हुज़ूरे अकरम(स.) के पीछे नमाज़ पढ़ना शुरू की थी। (असाबा, जिल्द ७,पृष्ठ ११३) हज़रत अबदुल मुत्तलिब के इन्तेक़ाल के वक़्त ५७८, ई० में जबकि रसूले करीम(स.) की उम्र आठ साल की थी, आपने उनकी परवरिश अपने ज़िम्मे ले ली, और ४५, साल की उम्र तक महवे ख़िदमत रहे। इसी उम्र में ग़ालेबन ५६४, ई० में आपने रसूले करीम की शादी जनाबे ख़दीजा के साथ कर दी और ख़ुतबए निकाह ख़ुद पढ़ा। (असनिल मतालिब पृष्ठ ३४, मिस्र में छपी, तारीख़े ख़मीस मोवाहेबुल दुनिया) आपका इन्तेक़ाल १५, शव्वाल १०, बेसत में ८०, साल की उम्र में हुआ। आपके इन्तेक़ाल से हज़रत अली(अ.) को बेइन्तेहा रंज हुआ और रसूल अललाह(स.) भी बे हद मुताअस्सिर हुये। आपने इन्तेहाई ताअस्सुर की वजह से इस साल का नाम **"आमुलहुज़्न"** रखा। हज़रत अबूतालिब को इस्लामी उसूल पर दफ़न किया गया। (तारीख़े ख़मीस, सीरते हलबिया)

हज़रते अली के जंगी कारनामे :–उलेमा का इत्तेफ़ाक़ है कि इल्म और शुजाअत इकट्ठा नहीं हो सकते। लेकिन हज़रत अली (अ.) की ज़ात ने इसे वाज़े कर दिया कि मैदाने इल्म और मैदाने जंग दोनों पर क़ाबू हासिल किया जा सकता है। बशरते इन्सान में वही सलाहियतें हों जो कुदरत की तरफ़ से हज़रत अली(अ.) को मिली थीं। २, हिजरी से लेकर अहदे वफ़ाते पैग़म्बरे इस्लाम तक नज़र डाली जाय तो अली (अ.) के जंगी कारनामे अवराक़े तारीख़ पर नज़र आयेंगे। जंगे ओहद हो या जंगे बद्र, जंगे ख़ैबर हो या जंगे ख़न्दक़, जंगे हुनैन या कोई और मारेका हर मन्ज़िल में हर मौक़ा पर अली(अ.) की ज़ुल्फ़िक़ार चमकती हुई दिखाई देती है। तारीख़ शाहिद है कि अली (अ.) के मुक़ाबले में कोई बहादुर टिका ही नहीं। आपकी तलवार ने मरहब, अन्तर, हारिस, व उम्रो बिन अब्दवुद जैसे बहादुरों को दमे ज़दन में फ़ना के घाट उतार दिया। (जंग के वाक़ेयात गुज़र चुके हैं) याद रखना चाहिये कि अली (अ.) से मुक़ाबला जिस तरह इन्सान नहीं कर सकते थे, उसी तरह जिन भी आपसे नहीं लड़ सकते थे।

जंगे बीरूल अलम :– मनाक़िब इब्ने आशोब जिल्द २,पृष्ठ ६० व कनज़ुल वाएज़ीन मुलला सालेह बरग़ानी में बा हवाला, इमामुल मोहक़्क़ेक़ीन अलहाज मोहम्मद तक़ी अल क़रदीनी बतवस्सुल हज़रत इमाम हसन असकरी(अ.) व अबू सईद ख़दरी व हुज़ेफ़ा यमानी लिखते हैं कि रसूले ख़ुदा(स.) जंगे सिकारसिक से वापसी में एक उजाड़ वादी से गुज़रें आपने पूछा यह कौन सा मक़ाम है, उम्र बिन अमिया ज़मरी ने कहा इसे वादी **"कसीबे अरज़क़"**

कहते हैं। इस जगह एक कुआं है जिसमें वह जिन रहते हैं जिन पर जनाबे सुलैमान (अ.) को क़ाबू नहीं हासिल हो सका। इधर से तेग़े यमानी गुज़रा था। उसके दस हज़ार सिपाही इन्हीं जिनों ने मार डाले थे। आपने फ़रमाया कि अगर ऐसा है तो फिर यहीं ठहर जाओ। क़ाफ़ेला ठहरा, आपने फ़रमाया कि दस आदमी जाकर जिनों के कुऐं से पानी लायें। जब यह लोग कुएं के पास पहुँचे तो एक ज़बरदस्त इफ़रीयत बरामद हुआ और उसने एक ज़बरदस्त आवाज़ दी। सारा जंगल आग का बन गया। धरती कांपने लगी, सब सहाबी भाग निकले लेकिन अबुल आस सहाबी पीछे हटने के बजाय आगे बढ़े। और थोड़ी देर में जल कर राख हो गये। इतने में जिब्रईल नाज़िल हुए और उन्होंने सरवरे कायनात(स.) से कहा कि किसी और को भेजने के बजाय आप **"अ़लम"** देकर अली इब्ने अबी तालिब (अ.) को भेजिये। अली(अ.) रवाना हुये, रसूल(स.) ने दस्ते दुआ बलन्द किया, अली(अ.) पहुँचे इफ़रीयत बरामद हुआ और बड़े गुस्से में रजज़ पढ़ने लगा। आपने फ़रमाया मैं अली इब्ने अबी तालिब हुँ। मेरा शेवा मेरा अमल सरकशों की सर कोबी है। यह सुन कर उसने आप पर ज़बर दस्त करतबी हमला किया। आपने वार ख़ाली देकर उसे ज़ुल्फ़िक़ार से दो टुकड़े कर डाला। उसके बाद आग के शोले और धुएं के तूफ़ान कुऐं से बरामद हुये। और ज़बरदस्त शोर मचा और बेशुमार डरावनी शक्लें सामने आगईं, अली(अ.) बरदन व सलामन कहा और चन्द आयतें पढ़ीं। आग बुझने लगी धुआं हवा होने लगा। हज़रत अली(अ.) कुऐं की जगत पर चढ़ गये, और डोल डाल दिया। कुऐं से डोल बाहर फेंक दिया गया। हज़रत अली(अ.) ने रजज़ पढ़ा और कहा कि मुक़ाबले के लिये आ जाओ। यह सुन कर एक इफ़रीयत बरामद हुआ। आपने उसे क़त्ल किया। फिर कुएं में डोल डाला। वह भी बाहर फेंक दिया गया। ग़रज़ के इसी तरह तीन बार हुआ। आख़िर में आपने असहाब से कहा के मैं कमर में रस्सी बांध कर कुएं में उतरता हूँ, तुम रस्सी पकड़े रहो। असहाब ने रस्सी पकड़ ली और अली (अ.) कुएं में उतरे, थोड़ी देर बाद रस्सी कट गई और अली(अ.) और असहाब के बीच रिशता टूट गया। असहाब बहुत परेशान हुये, और रोने लगे। इतने में कुएं से चीख़ पुकार की आवाज़ें आने लगीं। उसके बाद यह सदा आई **"एतना-अल-अमान"** अली हमें पनाह दो। आपने फ़रमाया क़ता व बुरीद और ज़रबे शदीद कलमें पर मौक़ूफ़ है। कलमा पढ़ो, अमान लो। ग़रज़ कि कलमा पढ़ा गया। इसके बाद रस्सी डाली गई और अमीरल मोमेनीन २०,०००(बीस हज़ार) जिनों को क़त्ल करके और २४,०००(चौबीस हज़ार) क़बाएल को मुसलमान बना कर कुऐं से बाहर आये। असहाब ने ख़ुशी का इज़हार किया और सब के सब आंहज़रत(स.) की ख़िदमत में हाज़िर हुये। हुज़ूरे अकरम(स.) ने अली(अ.) को सीने से लगाया, उनकी पेशानी का बोसा दिया और मुबारक बाद से हिम्मत अफ़ज़ाई फ़रमाई। फिर एक रात क़याम के बाद मदीने को रवानगी हुई (दमउस-साकेबा, पृष्ठ १७६ ईरान में छपी व शवाहेदुन नबूवत अल्लामा जामी रूक्न ६,पृष्ठ १६५, लखनऊ में १६२० ई० में छपी)

इस्लाम पर अली (अ.) के एहसानात :- इस्लाम पर अली(अ.) के एहसानात की फ़ेहरिस्त इतनी मुख़्तसर नहीं है कि हम उसे इस मुख़्तसर मजमूए हालात में लिख सकें। **"ताहम मुश्ते अज़ ख़र दारे "** लिखे देते हैं।

(१) दावते ज़ुलअशीरा के मौक़े पर जिस जगह रसूले अकरम(स.) को तक़रीर करने का मौक़ा नहीं मिल रहा था। आपने ऐसी जुर्रत और हिम्मत का मुज़ाहेरा किया के पैग़म्बरे इस्लाम(स.) कामयाब हो गये और आपने इस्लाम का डंका बजा दिया।

(२) शबे हिजरत फ़र्शे रसूल(स.) पर सो कर इस्लाम की क़िस्मत बेदार कर दी और जान जोखम में डाल कर ग़ार में तीन रोज़ खाना पहुँचाया

(३) जंगे बद्र में जबकि मुसलमान सिर्फ़ ३१३(तीन सौ तेरह) और कुफ़्फ़ार बेशुमार थे। आपने कमाले जुर्रत और हिम्मत से कामयाबी हासिल की।

(४) जंगे ओहद में जबकि मुसलमान सरवरे आलम (स.) को मैदाने जंग में छोड़ कर भाग गये थे, उस वक़्त आप ही ने रसूले अकरम(स.) की जान बचाइ और इस्लाम की इज़्ज़त महफ़ूज़ कर ली थी।

(५) कुफ़्फ़ार जिनके दिलों में बदले की आग भड़क रही थी, **"उमरो बिन अब्द वुद"** जैसे बहादुर को लेकर मैदान में आ पहुंचे और इस्लाम को चैलेंज कर दिया। पैग़म्बरे इस्लाम(स.) परेशान थे ,और मुसलमानों को बार बार उभार रहे थे कि मुक़ाबले के लिये निकलें, लेकिन अली(अ.) के अलावा किसी ने हिम्मत न की। आख़िर कार रसूल अल्लाह (स.) को कहना पड़ा कि आज अली(अ.) की एक ज़रबत इबादते सक़लैन से बेहतर है।

(६) इसी तरह ख़ैबर में कामयाबी हासिल कर के आपने इस्लाम पर एहसान फ़रमाया।

(७) मेरे ख़याल के मुताबिक़ हज़रत अली(अ.) का इस्लाम पर सबसे बड़ा एहसान यह था कि, वफ़ाते रसूल (स.) के बाद दुख भरे वाक़ेयात और जान लेवा हालात के बावजूद आपने तलवार नहीं उठाई वरना इस्लाम मंजिले अव्वल पर ही ख़त्म हो जाता।

दुनिया हज़रत अली (अ.) की निगाह में :- यह एक मुसल्लेमा हक़ीक़त है कि हज़रत अली (अ.) दुनिया और दुनिया के कामों से हद दरजा बेज़ार थे। आपने दुनिया को मुख़ातिब करके बारहा कहा कि, **" ऐ दुनिया " ग़ुर्री ग़ैरी** जा मेरे अलावा और किसी को धोका दे। मैंने तुझे तलाक़े बाइन दे दी है। जिसके बाद रूजु करने का सवाल ही पैदा नहीं होता। इब्ने तल्हा शाफ़ेई लिखते हैं कि , एक दिन हज़रत अली (अ.) ने जाबिर इब्ने अब्दुल्ला अन्सारी को लम्बी लम्बी सांस लेते हुये देखा तो पूछा ऐ, जाबिर क्या यह तुम्हारी ठंडी सांस दुनिया के लिये है। अर्ज़ की मौला, है तो ऐसा ही आपने फ़रमाया।

जाबिर सुनो :- इन्सान की ज़िन्दगी का दारो मदार सात चीजों पर है। और यही सात चीजें वह हैं जिन पर लज़्ज़तों का ख़ातमा है, जिनकी तफ़सील यह है।
(१) खाने वली चीज़ें (२) पीने वाली चीज़ें (३) पहन्ने वाली चीज़ें (४) लज़्ज़ते निकाह वाली चीज़ें (५) सवारी वाली चीज़ें (६) सूंघने वाली चीज़ें (७) सुन्ने वाली चीज़ें।

ऐ जाबिर, अब इनकी हक़ीक़तों पर ग़ौर करो। खाने में बेहतरीन चीज़ शहद है, यह मक्खी का लोआबे दहन(थूक) है। और बेहतरीन पीने की चीज़ पानी है, यह ज़मीन पर मारा मारा फिरता है। बेहतरीन पहनने की चीज़ दीबाज़ है, यह कीड़े का लोआब है। और बेहतरीन मन्कूहात औरत है। जिसकी हद यह है कि पेशाब का मक़ाम पेशाब के मक़ाम में होता है। दुनिया इसकी जिस चीज़ को अच्छी निगाह से देखती है वह वही है जो उसके जिस्म में सबसे गंदी है। और बेहतरीन सवारी की चीज़ घोड़ा है। जो क़त्लो क़ेताल का मरकज़ है। और बेहतरीन सूंघने की चीज़ मुश्क है। जो एक जानवर के नाफ़ का सूखा हुआ खून है। और बेहतरीन सुन्ने की चीज़ ग़िना(गाना) है। जो बहुत बड़ा गुनाह है। ऐ जाबिर ऐसी चीजों के लिये आक़िल क्यों ठंडी सांस ले। जाबिर कहते हैं कि इस इरशाद के बाद मैंने कभी दुनिया का ख़्याल तक न किया। (मतालेबूल सूवेल, पृष्ठ १६१)

कसबे हलाल की जद्दो जेहद :- आपके नज़दीक कसबे हलाल बेहतरीन सिफ़त थी। जिसपर आप खुद भी अमल पैरा थे। आप रोज़ी कमाने को ऐब नहीं समझते थे। और मज़दूरी को बहुत ही अच्छी निगाह से देखते थे। मोहद्दिस देहलवी का बयान है ,कि हज़रत अली (अ.) ने एक दफ़ा कुएं से पानी खींचने की मज़दूरी की और उजरत के लिये फ़ी डोल एक खुरमे का फ़ैसला हुआ। आपने १६ डोल पानी के खींचे और उजरत लेकर सरवरे कायनात(स.) की ख़िदमत में हाज़िर हुये और दोनों ने मिल कर तनावुल (खाया) फ़रमाया। इसी तरह आपने मिट्टी खोदने और बाग़ में पानी देने की भी मज़दूरी की है। अल्लामा मुहिब तबरी का बयान है, कि एक दिन हज़रत अली (अ.) ने बाग़ सींचने की मज़दूरी की और रात भर पानी देने के लिये " **जौ** " की एक मिक़दार(मात्रा) तय हुई। आपने फ़ैसले के अनुसार सारी रात पानी देकर सुबह की और " **जौ** "(एक प्रकार का अनाज) हासिल करके आप घर तशरीफ़ लाये। जौ फ़ात्मा ज़ैहरा के हवाले किये। उन्होंने उसके तीन हिस्से कर डाले और तीन दिन के लिये अलग अलग रख लिया। इसके बाद एक हिस्से को पीस कर शाम के वक़्त रोटियां पकाईं । इतने में एक यतीम आ गया, और उसने मांग लीं। फिर दूसरे दिन रोटियां तय्यार की गईं। आज मिसकीन ने सवाल किया, और सब रोटियां दे दी गईं। फिर तीसरे दिन रोटियां तय्यार हुईं। आज फ़क़ीर ने आवाज़ दी, और सब रोटियां फ़क़ीर को दे दी गईं। अली (अ.) और उनके घर वाले तीनों दिन भूखे ही रहे। इसके इनाम में खुदा ने **सूरः " हल अताः "** नाज़िल फ़रमाया (रियाजुन नज़रा जिल्द २, पृष्ठ २३७) बाज़ रवायात में नुज़ूले **सूरः " हल अत : "** के बारे में इसके अलावा दूसरे अन्दाज़ का वाक़ेया मिलता है।

हज़रत अली(अ.) एख़लाक़ के मैदान में :- आप बहुत ही ख़ुश एख़लाक़ थे। उलेमा ने लिखा है कि आप रौशन रू और कुशादा पेशानी रहा करते थे। यतीम नवाज़ थे। फ़क़ीरों में बैठ कर ख़ुशी महसूस करते थे। मोमिनों में अपने को हक़ीर और दुशमनों में अपने को बा रोब रखते थे। मेहमानों की ख़िदमत ख़ुद किया करते थे। कारे ख़ैर में सबक़त करते थे। जंग में दौड़ कर शामिल होते थे। हर मुस्तहक़ की इमदाद करते थे। हर काफ़िर के क़त्ल पर तकबीर कहते थे। जंग में आपकी आखें ख़ून के मानंद होती थीं। इबादत ख़ाने में इन्तेहाई ख़ुज़ु और ख़ुशु की वजह से बेहिस मालूम होते थे। हर रात को वह हज़ार रक्अत नवाफ़िल अदा करते थे। अपने बाल बच्चों के साथ घर के कामों में मदद करते थे। घर में इस्तेमाल होने वाला सारा सामान ख़ुद बाज़ार से ख़रीद कर लाते थे। अपने कपड़ों में ख़ुद पेवन्द लगाते थे। अपनी और रसूले करीम(स.) की जूती ख़ुद टांकते थे। हर रोज़ दुनिया को तीन तलाक़ देते थे। वह ग़ुलाम अपनी मज़दूरी से ख़ुद ख़रीद कर आज़ाद करते थे। (जनातुल ख़ुलूद) किताब अर हज्जुल मतालिब पृष्ठ २०१ में है कि हज़रत अली(अ.) हुज़ूरे अकरम(स.) की तरह कुशादा रू, हंसने वाले और ख़ुश तबआ थे और मिज़ाह(मज़ाक़) भी फ़रमाया करते थे।

हज़रत अली (अ.) ख़ल्लाक़े आलम की नज़र में :- (१) ख़ल्लाक़े आलम ने ख़िलक़ते कायनातसे पहले नूरे अलवी को नूरे नब्वी(स.) के साथ पैदा किया। (२) फिर मसजूदे मलाएक क़रार दिया। (३) फिर जिब्राईल का उस्ताद बनाया। (४) फिर अम्बिया के साथअपनी तरफ़ से मद्दगार बना कर भेजा। (हदीसे क़ुदसी व मदीनतुल मग़ाहिज़, पृष्ठ१६ ईरान में छपी) (५) अपने मख़सूस घर , ख़ानए काबा में अली(अ.) को पैदा किया। (६) इस्मत से बहरावर फ़रमाया। (७) आपकी मोहब्बत दुनिया वालों पर वाजिब क़रार दी। (८) रसूले अकरम (स.) का ख़ुद जांनशीन बनाया। (९) मेराज में अपने हबीब से उन्हीं के लहजे में कलाम किया। (१०) हर इस्लामी जंग में उनकी मद्द की। (११) आसमान से अली (अ.) के लिये ज़ुल्फ़िक़ार नाज़िल फ़रमाई। (१२) अली(अ.) को अपना नफ़स क़रार दिया। (१३) इल्मे लदुन्नी से मुम्ताज़ किया। (१४) फ़ात्मा के साथ अक़्द का ख़ुद हुक्म दिया। (१५) मुबल्लिग़े सूरए बराअत बनाया। (१६) मदहे अली(अ.) में कसीर(काफ़ी तादाद में) आयात नाज़िल फ़रमाईं। अली(अ.) इन्तेहाई सबरो ज़ब्त दे कर रसूल(स.) के बाद फ़ौरी तलवार उठाने से रोका। (१८) उनकी नस्ल में क़यामत तक के लिये इमामत क़रार दी। (१९) क़सीम-अल-नारो जन्नतः बनाया (जन्नत और दोज़ख़ को बांटने वाला)। (२०) लवाएल हम्द का मालिक बनाया। (२१) और साक़िए कौसर क़रार दिया।

अली (अ.) की शान में मशहूर आयात :- (१) आयए तत्हीर (२) आयए सालेह-अल-मोमेनीन (३) आयए विलायत (४) आयए मुबाहेला (५) आयए नजवा (इज़्ने वायता (७) आयए अतआम (८) आयए बल्लिग़ , तफ़सील के मुलाहेज़ा हो “ रूह-अल-क़ुरआन, मोअल्लेफ़ा हक़ीर लाहौर में छपा।

हज़रत अली (अ.) रसूले ख़ुदा (स.) की निगाह में

(१) फ़ख़रे मौजूदात हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा(स.) ने अली(अ.) के काबा में पैदा होते ही मूँह में अपनी ज़बान दी।
(२) अली (अ.) को अपना लोआबे दहन(थूक) चुसाया।
(३) परवरिश व परदाख़्त ख़ुद की।
(४) दावते ज़ुलअशीरा के मौक़े पर जबकि अली(अ.) की उम्र १० या १४ साल की थी।
(५) दामादी का शरफ़ बख़्शा।
(६) बुत शिकनी के वक़्त अली(अ.) को अपने कन्धों पर सवार किया।
(७) जंगे ख़न्दक़ में आपके कुल्ले ईमान होने की तसदीक़ की।
(८) इल्मो हिक्मत से बहरा वर किया।
(९) अमीरूल मोमेनीन का ख़िताब दिया।
(१०) आपकी मोहब्बत ईमान और आपका बुग़ज़ कुफ़्र क़रार दिया।
(११) अली(अ.) को अपना नफ़्स क़रार दिया।
(१२) शबे हिजरत आपने अपने बिस्तर पर जगह दी।
(१३) आप पर भरोसा करके फ़रमाया कि अमानतें वग़ैरा तमु अदा करना।
(१४) अली(अ.) को मख़सूस क़रार दिया कि वह ग़ार में खाना पहुँचाएं।
(१५) १८, ज़िल्हिज को आपकी ख़िलाफ़त का १,२४,०००(एक लाख चौबीस हज़ार) असहाब के मजमे में **"ग़दीर ख़ुम"** के मक़ाम पर एलान फ़रमाया।
(१६) वफ़ात के क़रीब जांनशीनी की दस्तावेज़ लिखने की कोशिश की।
(१७) आपकी मदहो सना में बेशुमार अहादीस फ़रमाईं।
(१८) आपको हुक्म दिया कि मेरे बाद फ़ौरी जंग न करना।
(१९) मौक़ा हाथ आने पर मुनाफ़िक़ों से जंग करना ताके हुक्मे ख़ुदा जाहद-अल-कुफ़्फ़ार वल मुनाफ़ेक़ीन की तकमील हो सके जोकि मेरे लिये है।

अली (अ.) की शान में मशहूर अहादीस

(१) हदीसे मदीना (२) हदीसे सफ़ीना (३) हदीसे नूर (४) हदीसे न्ज़िलत (५) हदीसे ख़ैबर (६) हदीसे ख़न्दक़ (७) हदीसे तैर (८) हदीसे सक़लैन ९) हदीसे ग़दीर।

(तफ़सील के लिये अब्क़ातुल अनवार मुलाहेज़ा हो)

नक़्शे ख़ातमे रसूल (स.) और अली वली अल्लाह :- इमामुल मोहद्देसीन अल्लामा मोहम्मद बाक़र मजलिसी, अल्लामा मोहम्मद बाक़र नजफ़ी, अल्लामा शेख़ अब्बास कुम्मी तहरीर फ़रमाते हैं कि रसूले करीम(स.) हज़रत अली(अ.) को एक नगीना देकर मोहर कुन(नगीने पर नक़्श बनाने वाले) के पास जो अंगूठियों के नगीनों पर कन्दा करता था भेजा और फ़रमाया कि इस पर **"मोहममद बिन अब्दुल्ला"** कन्दा करा लाओ। हज़रत अली (अ.) ने उसे कन्दा करने वाले को दे कर इरशादे रसूल(स.) के मुताबिक़ हिदायत कर दी। अमीरूल मोमेनीन जब शाम के वक़्त उसे लाने के लिये गये। तो उस पर " **मोहम्मद बिन अब्दुल्ला** " के बजाय " **मोहम्मदुर रसूल अल्लाह** " कन्दा था। हज़रत ने फ़रमाया कि मैंनें जो इबारत बताई थी तुमने वह क्यों न कन्दा की। कन्दा करने वाले ने अर्ज़ की मौला, आप इसे हुज़ूर के पास ले जाइये। फिर वह जैसा इरशाद फ़रमाएंगे ,वैसा किया जायगा। हज़रत ने उसे क़ुबूल फ़रमा लिया। रात गुज़री ,सुबह के वक़्त वज़ू करते हुये देखा कि इस पर मोहम्मद रसूल अल्लाह(स.) के नीचे अली वली अल्लाह कन्दा है। आप इस पर ग़ौर फ़रमा रहे थे कि जिब्रईल अमीन ने हाज़िर होकर अर्ज़ की " हुज़ूर फ़रमाया गया है कि " **कतबता मा अरदत व कतबन मा अरदना** " ऐ नबी, जो तुमने चाहा तुमने लिखवाया, जो मैंने चाहा मैंने लिखवा दिया। तुम्हें इसमें तरद्दुद क्या है। (बेहारूल अनवार ,दमए साकेबा, सफ़ीनतुल बेहार, जिल्द १, पृष्ठ ३७६, नजफ़े अशरफ़ में छपी)

नियाबते रसूल (स.)

हर अक़्ले सलीम यह तसलीम करने परमजबूर है। कि मनीब व मनाब में तवाफ़ुक़ होना चाहिये। यानी जो सिफ़ात नाएब बनाने वाले में हों, उसी क़िस्म की सिफ़्तें नाएब बन्ने वाले में भी होनी चाहिये। अगर नाएब बनाने वाला नूर से पैदा हो तो जांनशीन को भी नूरी होना चाहिये। अगर वह मासूम हो तो, उसे भी मासूम होना चाहिये। अगर उसे ख़ुदा ने बनाया हो तो, उसे भी ख़ुदा के हुक्म से ही बनाया गया हो। हज़रत अली(अ.) हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा(स.) के जांनशीन थे, लेहाज़ा उनमें नबवी सिफ़ात का होना ज़ुरूरी था। यही वजह है कि जिन सिफ़ात के हामिल सरवरे कायनात(स.) थे, उन्हीं सिफ़ात से हज़रत अली(अ.) भी बहरावर थे।

जांनशीन बनाने का हक़ सिर्फ़ ख़ुदा को है :- कुरआने मजीद के पारा २०, रूकू ७-१० में बसराहत मौजूद है कि ख़लीफ़ा और जांनशीन बनाने का हक़ सिर्फ़ ख़ुदा वन्दे करीम को है। यही वजह है कि उसने तमाम अम्बिया का तक़र्रूर ख़ुद किया और उनके जांनशीन को ख़ुद मुक़र्रर कराया, अपने किसी नबी तक को यह हक़ नहीं दिया कि वह बतौर ख़ुद अपना

जांनशीन मुक़र्र कर दे। न कि उम्मत को इख़्तेयार देना कि इजमा से काम लेकर मन्सबे इलाहिया पर किसी को फ़ाएज़ कर दे। और यह हो भी नहीं सकता था। क्योंकी तमाम उम्मत ख़ताकार है। ख़ताकारों का इजमा न सवाब बन सकता है और न खातियों का मजमूआ मासूम हो सकता है। और जांनशीने रसूल(स.) का मासूम होना इस लिये ज़ुरूरी है कि रसूल (स.) मासूम थे। यही वजह है कि ख़ुदा ने रसूले करीम का जांनशीन हज़रत अली(अ.) और उनकी ११, (ग्यारह) औलाद को मुक़र्रर फ़रमाया। (नियाबुल मोअद्दता पृष्ठ ६३) जिसका संगे बुनियाद दावते ज़ुल अशीरा के मौक़े पर रखा और आयते विलायत और वाक़िए तबूक़(सही मुस्लिम, जिल्द २, पृष्ठ २७२) से इस्तेहकाम पैदा किया। फिर " **इज़ा फ़रग़ता फ़ननसब** " से हुक्मे निफ़ाज़ का फ़रमान जारी फ़रमाया और आयए बल्लिग़ के ज़रिये से ऐलाने आम का हुक्म नाफ़िज़ फ़रमाया।

चुनांचे रसूले करीम(स.) ने यौमे जुमा १८, ज़िल्हिज्जा, १०, हिजरी को बामुक़ामे ग़दीरे ख़ुम, एक लाख चौबीस हज़ार (१,२४,०००) असहाब की मौजूदगी में हज़रत अली (अ.) की ख़िलाफ़त का एलाने आम फ़रमाया। (रौज़तुल सफ़ा, जिल्द २, पृष्ठ २१५) में है कि, मजमे को एक जगह पर जमा करने के लिये जो एलान हुआ था। वह **"हय्या अला ख़ैरिल अमल"** के जरिये से हुआ था। कुतुबे तवारीख़ व अहादीस में मौजूद है कि इस एलान पर हज़रत उमर ने भी मुबारक बाद अदा की थी। जिसकी तफ़सील बाब १, में गुज़री।

१८, ज़िल्हिज्जा :- अल्लामा जलाल उद्दीन सियोती ने लिखा है कि हज़रत उमर ने इस तारीख़ को यौमे ईद क़रार दिया है। रईसुल उलेमा हज़रत अल्लामा बहावुद्दीन आमेली तहरीर फ़रमाते हैं कि सरवरे कायनात (स.) की विलादत से ४, साल बाद १८, जिल्हिज्जा,१०, हिजरी को हज़रत अली(अ.) की जांनशीनी अमल में आई और आपके इमाम-अल-इन्सो जिन होने का एलान किया गया और इसी तारीख़ ३४, हिजरी में हज़रते उस्मान क़त्ल हुये। और हज़रत अली(अ.) की बैएत की गई। इसी तारीख़ हज़रते मूसा (अ.) साहिरों पर ग़ालिब आये। और हज़रते इब्राहीम(अ.) को आग से नजात मिली। और इसी तारीख़ को हज़रते मूसा (अ.) ने जनाबे यूशा इब्ने नून को हज़रत सुलैमान ने जनाबे आसिफ़ इब्ने बरख़िया को अपना जांनशीन मुक़र्रर किया। और इसी तारीख़ को तमाम अम्बिया ने अपने जांनशीन मुक़र्रर फ़रमाए।
(जामेए अब्बासी या नज़द वबाबी पृष्ठ ५८, १६१४ ई० देहली में छपा व इख़्तेयारात मजलिसी रहमतउल्लह इलैह)

दस्तावेज़े ख़िलाफ़त :-सरवरे कायनात (स.) ने इब्तेदाए इस्लाम से लेकर ज़िन्दगी के आख़िरी दिनों तक हज़रत अली(अ.) की जांनशीनी का बार बार मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ व उन्वान से एलान करने के बाद वफ़ात के वक़्त यह चाहा कि उसे दस्तावेज़ी शक्ल दे दें। लेकिन हज़रत उमर ने बनी बनाई इस्कीम के तहत रसूले करीम(स.) को कामयाब न

होने दिया और उनके आख़री फ़रमान (क़लम दावात की तलबी) को बकवास और हिज़यान से ताबीर करके उन्हें मायूस कर दिया। जिसके मुताअल्लिक़ आपका खुद बयान है कि जब आं हज़रत (स.) ने वक़्ते आख़िर मरज़ुल मौत में हक़ को छोड़ कर बातिल की तरफ़ जाना चाहा ताके अली (अ.) की सराहत कर दें तो ख़ुदा की क़सम मैंने आंहज़रत को मना कर दिया और आंहज़रत अली (अ.) के नाम को तहरीरन ज़ाहिर न कर सके।

(तारीख़े बग़दाद व शरह इब्ने अबिल हदीद, जिल्द १, पृष्ठ ५१, तेहरान में छपी)

इमामे गज़ाली (र.) फ़रमाते हैं कि रसूल अल्लाह (स.) ने अपनी वफ़ात से पहले असहाब से कहा कि मुझे क़लम दावात और काग़ज़ दे दो। **" ला ज़ैल अनकुम इशकाल अल मरज़ा ज़िक्र लकुम मिनल मुस्तहक़ बादी क़ाला उमरा औ अल रजल फ़ाना लेहजर "** ताके मैं तुमहारे लिये इमारत द ख़िलाफ़त की मुश्किलात को तहरीरन दूर कर दूँ और बता दूँ कि मेरे बाद इमारत व ख़िलाफ़त का मुस्तहक़ कौन है। मगर हज़रत उमर ने उस वक़्त यह कह दिया कि इस मर्द को छोड़ दो यह हिज़यान बक रहा है, और बकवास कर रहा है।

(माअज़ अल्लाह)

मुलाहेज़ा हो :-

(सेराआलेमीन बम्बई में छपी, पृष्ठ ६ , सतर १५ किताब अल शिफ़ा, क़ाज़ी अयाज़, बरेली में छपी, पृष्ठ३०८ व नसीम अल रियाज़, शरह शिफ़ा, शरह मिश्क़ात, मोहद्दिस देहलवी व मदारिजे नबूवत, हबीब-अल-सैर जिल्द १, पृष्ठ १४४, रौज़तुल अहबाब, जिल्द १, पृष्ठ ५५०, बुख़ारी , जिल्द ६, पृश्ठ ६५६, अल फ़ारूक़ जिल्द २, पृष्ठ ४८)।

ख़लीफ़ा का तक़र्रुर और तवारीख़े फ़रहंग :- मोअर्रेख़ीने इस्लाम के अलावा मोअर्रेख़ीने फ़िरहंग (अंग्रेज़ इतिहासकारों) ने भी हज़रत अली (अ.) इस्तेहक़ाक़े ख़िलाफ़त और नुमायां तौर पर ख़लीफ़ा मुक़र्रर किये जाने पर मुकम्मल रौशनी डाली है।

हम इस मौक़े पर मिसटर डीवन पौर्ट की तहरीर का तरजुमा पेश करते हैं। इन दोनों फ़िरक़ों सुन्नी और शिया में से एक ने मोहम्मद के चचा ज़ाद भाई और दामाद अली से जैसा कि मुक़तज़ाए इन्साफ़ व हमियत है तो ला रखा। क्योंकि आंहज़रत एलानिया तौर पर उनसे मोहब्बत व उल्फ़त रखते थे और कई बार उनको अपना ख़लीफ़ा भी ज़ाहिर किया था। ख़ुसूसन दो मौक़ों पर एक जब आंहज़रत (स.) ने अपने घर में बनी हाशिम की दावत की थी और अली (अ.) ने कुफ़्फ़ार के मज़ाक़ उड़ाने और तौहीन करने के बावजूद अपना ईमान ज़ाहिर किया था। हज़रत ने अपनी बाहें उस जवान के गले में डाल कर छाती से लगाया और बा आवाज़े बलन्द कहा, **" देखो मेरे भाई, मेरे वसी और मेरे ख़लीफ़ा को "**।

दूसरे जब आंहज़रत ने अपने इन्तेक़ाल से कुछ महीने पहले ख़ुतबा पढ़ा था। बा हुक्मे ख़ुदा जिसको जिब्रईल आंहज़रत के पास लाये थे, और यूँ कहा था। कि ऐ पैग़म्बर

मैं ख़ुदा की तरफ़ से आप पर सलवात व रहमत लाया हूँ और इसका हुक्म आपके पैरवों के नाम जिको आप बग़ैर ताख़ीर के सुना दीजिये। और शरीरों से कोई ख़ौफ़ न कीजिये। ख़ुदा आपको उनके शर से बचायेगा। ख़ुदा के हुक्म के मुताबिक़ आंहज़रत ने अनस से कहा कि लोगों को जमा करें जिसमें आंहज़रत के पैरव व यहूदी व नसरानी व मुख़तलिफ़ बाशिन्दे भी हाज़िर हों। यह जमीयत एक गांव के पास जमा हुई जिसे ग़दीरे ख़ुम कहते हैं। जो नवाह शहर हजफ़ा में मक्के और मदीने के बीचमें है। पहले इस मक़ाम को साफ़ किया गया और २, अप्रैल ६२६ ई० को आंहज़रत एक ऊंचे मिम्बर पर गये। जो वहां उनके लिये तैय्यार किया गया था और जब कि हाज़ेरीन निहायत तवज्जोह से सुनते थे। एक ख़ुतबा हज़रत ने बड़ी शानो शौकत और फ़साहत व बलाग़त से पढ़ा , जिसका ख़ुलासा यह है।

“ तमाम हम्दो सना उस ख़ुदाए यकता के लिये है जिसको कोई देख नहीं सकता। उसका इल्म माज़ी , हाल और मुस्तक़बिल को शामिल है और उसको इन्सानों के कुल पोशीदा इसरार मालूम हैं। क्योंकि उससे कोई चीज़ पोशीदा नहीं रह सकती। वह बेइन्तेहा बईद और बिलकुल क़रीब है। वही वह है जिसने आसमानो ज़मीन और उसके दरमियान की तमाम चीज़ों को ख़ल्क़ किया। वह ग़ैर फ़ानी है और जो कुछ है सब उसकी क़ुदरत और उसके इख़्तेयार के ताबे है। उसकी रहमत और उसका फ़ज़ल सबके शामिले हाल है। वह जो करता है मसलेहत से करता है। वह नुज़ूले अज़ाब में टाल मटोल करता है। उसका सज़ा देना रहमत से ख़ाली नहीं है। उसकी ज़ात का भेद मुमकिनात को मालूम नहीं हो सकता। आफ़ताब(सूरज) व माहताब(चांद) और बाक़ी अजरामे समावी(नक्षत्र) उसी के इल्म से अपनी राह पर जो उसी ने मुक़र्रर कर दी है चलते हैं। बाद हम्दे ख़ुदा वाज़े हो के मैं ख़ुदा का सिर्फ़ एक बन्दा हूं। मुझे ख़ुदा का हुक्म हुआ है और मैं उसकी तामील में सरे नियाज़ बा कमाले अदब व ख़ुज़ु झुकाता हूँ। सुनो, तीन बार जिब्रईल मेरे पास आचुके हैं। और तीनों दफ़ा उन्होंने मुझे हुक्म दिया है कि मैं अपने तमाम पैरवों से ख़्वाह वह गोरे हों या काले यह ज़ाहिर कर दूँ, कि अली(अ.) मेरे ख़लीफ़ा और मेरे वसी और तमाम उम्मत के इमाम हैं। और मेरे गोश्त व पोस्त हैं और मेरे ऐसे हैं। जैसे मूसा के हारून थे और मेरी वफ़ात के बाद वही तुम्हारी हिदायत करेंगे और हादी होंगे। जब मैं इस दुनिया से रेहलत कर जाऊं तो मेरे पैरवों को उनकी फ़रमा बरदारी ऐसी करनी चाहिये जैसी इताअत मेरी करते थे। जबकि मैं तुम में मौजूद था।

सुनो, जिसने अली(अ.) की नाफ़रमानी की उसने दर हक़ीक़त ख़ुदा और रसूल (स.) की नाफ़रमानी की, ऐ दोस्तो, यह ख़ुदा के अहकाम हैं। सब “ **वहीयां** ” (जिब्रईल के ज़रिये ख़ुदा के भेजे हुये सारे पैग़ामात) जो वक़्तन फ़वक़्तन मुझ पर आई हैं। अली (अ.) ने मुझसे सीख ली हैं। जो अली (अ.) का हुक्म न मानेगा उसके सर पर अल्लाह की दाएमी लानत ज़रूर रहेगी।

ख़ुदा ने क़ुरआन की हर सूरत में अली (अ.) की तारीफ़ की है मैं दोबारा कहता

हूँ कि अली मेरे चचा ज़ाद भाई और मेरे गोश्त और खून हैं और खुदा ने उनको निहायत नादिर खूबियां अता की हैं। अली(अ.) के बाद उनके बेटे हसन और हुसैन(अ.) उनके जांनशीन होंगे। इस खुतबे के तमाम होने पर अबू बक्र, उमर, उस्मान,अबू सुफ़ियान और दूसरे लोगों ने अली(अ.) के हाथ चूमे और उनको रसूल(स.) के ख़लीफ़ा मुक़र्रर होने की मुबारक बाद दी और इक़रार किया कि उनके कुल अहकाम को सच्चे तौर पर बजा लायेंगे।

६२२ ई० में सिर्फ़ तीन दिन पहले अपने इन्तेक़ाल से आंहज़रत ने फिर अपने ताबईन को इन अक़ीदों की मज़ीद ताकीद कर दी। और इस बात पर ज़ोर दिया कि आपकी आल से खुसूसियत के साथ मोहब्बत रखें। ओर उनकी इज़्ज़तो तौक़ीर करें। आपने बड़े शद्दो मद से यूँ फ़रमाया कि जो मुझको मौला मानता हो, वह अली (अ.) को भी मौला समझे, अल्लाह ताईद करे उसकी जो दोस्ती रखे अली(अ.) से और ग़ज़बनाक हो उस पर जो उनका दुशमन हो। ऐसे मुकर्रर और मुसर्रह बयानात से जो खुद रसूल(स.) के लबों से अदा हुये थे। एक वक़्त तो अमरे ख़िलाफ़त से शको शुब्हा बिल्कुल दूर रहा। मगर आख़िर में सबको मायूसी हो गई। क्योंके अबूबक्र की बेटी और आंहज़रत(स.) की दूसरी ज़ौजा (पत्नी) आयशा ने साज़ बाज़ करके अपने बाप को पहला ख़लीफ़ा लोगों से मुक़र्रर करा लिया। मलकुल मौत के इन्तेज़ार में आंहज़रत(स.) का आयशा के हुजरे में जाना चाहे आपकी मरज़ी से हो या बीबी आयशा के हुक्म से ख़ास कर उनके मुफ़ीद मतलब बात हो गई कि आंहज़रत का हुक्म दोबारा ख़िलाफ़ते अली(अ.) लोगों के कानों तक न पहुँचने पाये। बस अल्ल उमूम यह समझा गया कि रसूल(स.) बग़ैर अपने ख़लीफ़ा के मुताअल्लिक़ आख़िरी वसीयत किए हुये इन्तेक़ाल किया और इस तरह यह बात हुई कि तीनों ख़लीफ़ाओं ने राज किया। इस्से पहले कि अली (अ.) अपने हक़ को पहुँचें जिसका वह मुकम्मल इस्तेहक़ाक़ रखते थे न सिर्फ़ बा लिहाजे क़राबत व ज़ौजियत, फ़ात्मा दुख़्तरे रसूल(स.) बल्कि बा लिहाज़ उन बेशुमार और बड़ी ख़िदमतों के जो उन्होंने इस्लाम कीं, हो सकता है कि बीबी आयशा ने अपने बाप की लड़की होने की वजह से उनकी यह ख़िदमत की हो, कि उन्हें ख़लीफ़ा बना दिया जाय। लेकिन सही यह है कि आयशा को अली(अ.) की तरफ़ से पुराना बुग़्ज़ व कीना था। जो वाक़ए अफ़क के मौक़े पर पैदा हो गया था। क्यों की उस मौक़े पर अली(अ.) ने राय पेश की थी कि बीबी आयशा की तहक़ीक़ात कराई जाय। बीबी आयशा इस बात को कभी न भूलीं और उन्होंने दरगुज़र नहीं किया, बल्कि अली(अ.) को सताया और ऐसा इन्तेक़ाम लिया जो इस्लाम में अपनी आप नज़ीर है। (किताबे ख़िलाफ़त, मन्क़ूल अज़, तारीख़े इस्लाम, जिल्द ३, पृष्ठ २५)

आनरएबिल **" मिस्टर टायलर "** ने अपनी किताब में लिखा है कि मोहम्मद(स.) ने खुद अपने दामाद अली(अ.) को अपना ख़लीफ़ा और जांनशीन कर दिया था लेकिन आपके ससुर अबुबक्र ने लोगों को अपनी साज़िश में ले कर ख़िलाफ़त पर क़ब्ज़ा कर लिया।

(मुलाहेज़ा हो एलीमेंट्स आफ़ जनरल हिस्ट्री पृष्ठ २४६, १८५१ ई० में छपा)

इन्साईक्लोपीडिया बरटानिका में यह है कि " रसूल(स.) के बाद इस्लाम की सरदारी का दावा अली(अ.)को ज़्यादा मुनासिब मालूम होता था। मिस्टर टरयो ने लिखा है कि अगर क़राबत(नज़दीकी) की वजह से तख़्त नशीनी का उसूल अली(अ.) के मोआफ़िक़ माना जाता तो वह बरबाद कुन झगड़े पैदा ही न होते जिन्होंने इस्लाम को मुस्लमानों के ख़ून में डुबो दिया।

(स्प्रिट आफ़ इस्लाम, मिस्टर सडीवाज़, तारीख़े इस्लाम, जिल्द, ३ पृष्ठ २०१)

हज़रत अली (अ.) के फ़ज़ाएल

अमीरल मोमेनीन हज़रत अली (अ.) के फ़ज़ाएल क़लमबन्द करना इन्सान की ताक़त के बाहर है। खुद सरवरे कायनात(स.) ने इसके मोहाल होने पर नस फ़रमा दी है। आपका इरशाद है कि " अगर तमाम दुनिया के दरिया,समन्दर सियाही बन जायें और दरख़्त क़लम हो जायें और जिन्नो इन्स लिखने और हिसाब करने वाले हों तब भी अली इब्ने अबी तालिब(अ.) के मुकम्मल फ़जाएल नहीं लिखे जा सकते। (कशफ़ुल गमा, पृष्ठ ५३, व अर हज्जुल मतालिब) उलेमाए इस्लाम ने भी अकसरियत फ़ज़ाएल का एतेराफ़ किया है और अकसर ने अहातए फ़ज़ाएल से आजेज़ी ज़ाहिर की है। अल्लामा अब्दुलबर ने किताब इस्तियाब जिल्द २, के पृष्ठ, ४७८ पर तहरीर फ़रमाया है। " **फ़ज़ाएले ला यूहीत बहा किताब** " आपके फ़ज़ाएल किसी एक किताब में जमा नहीं किये जा सकते। अल्लामा इब्ने हजरे मक्की सवाएके मोहर्रेक़ा और मंज मकीया में लिखते हैं कि " **मनाकिबे अली व फ़ज़ाएल अकसर मिन अन तुहसा** " हज़रत अली(अ.) कि मनाक़िब व फ़ज़ाएल हद्दे एहसा से बाहर हैं। और सवाएक़ पृष्ठ ७२, पर फ़रमाते हैं कि, " **फ़ज़ाएले अली वही कसीराह, अज़ीताह मशाएतः हत्ता क़ाला अहमद वमा जा लाहद मिनल फ़ज़ाएल माजल अली** " बे शुमार हैं। बेश बहा हैं और मशहूर हैं। अहमद इब्ने हम्बल का कहना है, कि अली (अ.) के लिये जितने फ़ज़ाएल व मनाक़िब मौजूद हैं, किसी के लिये नहीं हैं। क़ाज़ी इस्माईल, इमामे निसाई, और अबू अली नैशापूरी का कहना है कि किसी सहाबी की शान में उम्दा सन्दों के साथवह फ़ज़ाएल वारिद नहीं हुये जो हज़रत अली(अ.) की शान में वारिद हुये हैं। अल्लामा मोहम्मद इब्ने तल्हा शाफ़ेई तहरीर फ़रमाते हैं कि अली(अ.) के जो फ़ज़ाएल हैं वह किसी और को नसीब नहीं। रसूल अल्लाह(स.) ने आपको " **आयतुल हुदा** " "**मनारूल ईमान**" और " **इमाम-अल-औलिया** " फ़रमाया है और इरशाद किया है कि अली का दोस्त मेरा दोस्त है और अली का दुशमन मेरा दुशमन है (मतालेबुल सेवेल, पृष्ठ ५७) अल्लामा हजर लिखते हैं कि क़ुरआने मजीद में जहां " **या अय्योहल लज़ीना आमेनू** " आया है वहां ईमान दारों से मुराद लिये जाने वालों में अली(अ.) का दरजा सबसे पहला है। क़ुरआने मजीद

में मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर असहाब की मज़म्मत आई है। लेकिन हज़रत अली(अ.) के लिये जब भी ज़िक्र आया है, ख़ैर के साथ आया है और अली(अ.) की शान में कुरआने मजीद की तीन सौ(३००) आयतें नाज़िल हुई हैं। (सवाएक़े मोहर्रेक़ा, पृष्ठ ७६, मिस्र में छपी) यही वजह है कि इमाम-अल-इन्स वल-जिन हज़रत अली(अ.) इरशाद फ़रमाते हैं। इस उम्मत में किसी एक का भीक़्यास और मुक़ाबेला आले मोहम्मद(स.) से नहीं किया जा सकता और इन लोगों की बराबरी जिनको बराबर नेमतें दी गईं। उन अफ़राद से नहीं की जा सकती जो नेमत देने वाले थे और नेमतें देते रहे। आले रसूल(स.) दीन की निव और यक़ीन के खम्बे हैं। (सल सबीले फ़साहत, तरजुमा नहजुल बलाग़ा ,पृष्ठ २७) बे शक हुज़ूरे विलायत का यह फ़रमाना बिलकुल दुरूस्त है कि आले मोहम्मद(स.) की बराबरी नहीं की जा सकती। क्योंकि हुज़ूर रसूले करीम(स.) ने इरशाद फ़रमा दिया है कि मेरी आल मेरे अलावा सारी कायनात से बेहतर और अफ़ज़ल है और हदीसे कफ़ो फ़ात्मा (स.) ने इसकी वज़ाहत कर दी है कि आले रसूल का दरजा अम्बिया से बाला तर है। इन्हीं हज़रात की मोहब्बत का हुक्म खुदा वन्दे आलम ने कुरआने मजीद में दिया है। और उनकी मोहब्बत से सवाल किया जाना मुसल्लम है। इनके लिये दुनिया की मस्जिदें अपने घर के मानिन्द हैं। (दुरेमन्शूर, व मतालेबुल सवेल पृष्ठ,५६) अहले बैत में हज़रत अली(अ.) का पहला दरजा है, और यह मानी हुई बात है कि जो फ़ज़ीलत अली (अ.) की है इसमें तमाम आइम्मा मुशतरक हैं। आपको ख़ुदा ने क़सीमे नारो जन्नत बनाया है। (सवाएक़े मोहर्रेक़ा पृष्ठ ७३) आपके हुक्म के बग़ैर कोइ जन्नत में नहीं जा सकता। अल्लामा हजरे मक्की तहरीर फ़रमाते हैं कि हज़रत अबूबक्र ने इरशाद फ़रमाया है कि मैंने रसूले अल्लाह(स.) को यह कहते सुना है, कि कोई शख़्स भी सिरात पर से गुज़र कर जन्नत में जा न सकेगा जब तक अली(अ.) का दिया हुआ परवानए जन्नत उसके पास न होगा। (सवाएक़े मोहर्रेक़ा, पृष्ठ ७५ मिस्र में छपी) आपको हक़ के साथ और हक़ को आपके साथ होने की बशारत दी गई है। आपको रसूले अकरम(स.) ने मवाख़ात के मौक़े पर अपना भाई क़रार दिया है। आपके लिये दो बार आफ़ताब पलटा, शवाहेदुन नबूवत ,पृष्ठ८७ में है कि जंगे ख़ैबर के सिलसिले में सहबा के मक़ाम पर **(वही)** का नज़ूल होने लगा और सरे मुबारके रसूल(स.) अली(अ.) के ज़ानू पर था और आफ़ताब ग़ुरूब हो गया था। उस वक़्त आपने अली(अ.) को हुक्म दिया कि आफ़ताब को पलटा कर नमाज़ अदा करें। चुनांचे आफ़ताब डूबने के बाद पलटा और अली(अ.) ने नमाज़ अदा की। इसी किताब के पृष्ठ १७६ पर और किताब सफ़ीनतुल बिहार जिल्द १, पृष्ठ ५७ व मज़मूए बैहरैन पृष्ठ २३२ में है कि वफ़ाते रसूल(स.) के बाद हज़रत अली(अ.) बाबुल जाते वक़्त जब फ़रात के क़रीब पहुँचे तो असहाब की नमाज़े अस्र क़ज़ा हो गई, आपने आफ़ताब को हुक्म दिया कि पलट आये चुनांचे वह पलटा और असहाब ने नमाज़े अस्र अदा की नसीमुल रियाज़, शरह शिफ़ा क़ाज़ी अयाज़ वग़ैरह में है कि एक मरतबा आपका एक ज़ाकिर आपके ज़िक्र में मशग़ूल था।

कि नमाज़े अस्र क़ज़ा हो गई, उसने कहा ऐ आफ़ताब पलट आ कि मैं उसका ज़िक्र कर रहा हूँ जिसके लिये तू दो बार पलट चुका है। चुनांचे आफ़ताब पलटा और उसने नमाज़े अस्र अदा की।(शवाहेदुन नबूवत के पृष्ठ २१६ में है कि अली(अ.) मुजस्सम हक़ थे, और उनकी ज़बान पर हक़ ही जारी होता था। इमामे शाफ़ेई इरशाद फ़रमाते थे जो मुस्लमान अपनी नमाज़ में उन पर दुरूद न भेजे उसकी नमाज़ सही नहीं है।

मौलाना ज़फ़र अली ख़ाँ का एक शेर और उसकी रद

मौलाना ज़फ़र अली ख़ां मरहूम एडीटर " **ज़मींदार** " लाहौर का एक अजीबो ग़रीब शेर एक दरसी किताब (हमारी उर्दू) मुसन्नेफ़ा हारून रशीद में हमारी नज़र से गुज़रा शेर यह है।

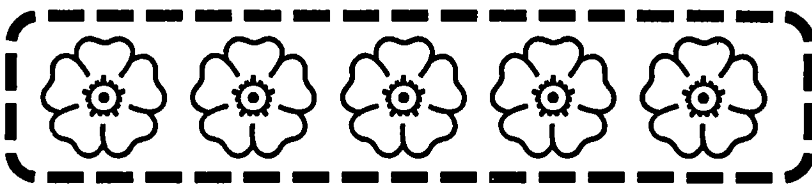
हैं किरनें एक ही मशल की अबु बक्रो, उमर उस्मानो अली।
हम मरतबा हैं , याराने नबी , कुछ फ़र्क नहीं इन चारों में।।

इस शेर में अगर मशल से मुराद नबी(स.) की ज़ात ली गई है। तो असहाब का उनकी किरन होना इन्तेहाई बईद है। क्योंके वह नूरी और जौहरी थे। और यह माद्दी हैं। वह मुजस्सम ईमान थे। और उन लोगों ने ३८ ,३६, ४० साल कुफ़्र में गुज़ारे हैं। उन्होंने कभी बुत परस्ती नहीं की और उन्होंने अपने उम्र के बड़े हिस्से बुत परस्ती में गुज़ार कर इस्लाम क़ुबूल किया था। और अगर मशअल से मुराद नबूवत ली गई है और उसकी किरनें ,उनकी इमामत और ख़िलाफ़त को क़रार दिया है। तो यह भी दुरूस्त नहीं है। क्योंके रसूल(स.) की नबूवत मिन जानिब अल्लाह थी। और उनकी ख़िलाफ़त की बुनियाद इजमाए नाक़िस पर क़ायम हुई थी। इस शेर के दूसरे मिसरे में चारों को हम मरतबा कहा गया है और रसूल (स.) का यार बताया गया है। हो सकता है कि तीनों हज़रात रसूल(स.) के यार रहे हों, लेकिन हज़रत अली(अ.) हरगिज़ रसूल(स.) के यार नहीं थे। बल्कि दामाद और भाई थे। अब रह गया चारों का हम मरतबा होना यह तो हो सकता है के तीनों हम मरतबा हों और था भी कि तीनों हज़रात हर हैसियत से एक दूसरे के बराबर थे, लेकिन हज़रत अली(अ.) का उनके बराबर होना या उनका आपके हम मरतबा होना समझ से बाहर है। क्योंकि यह चालीस साल बुत परस्ती के बाद मुस्लमान हुये थे और अली(अ.) पैदा ही मोमिन और मुस्लमान हुये। इन लोगों ने मुद्दतों बुत परस्ती की और अली(अ.) ने एक सेकेंड भी बुत नहीं पूजा। इसी लिये " करम अल्लाहो वजहा " कहा जाता है। यह फ़ात्मा के शौहर थे। इनमें से किसी को यह शरफ़ नसीब नहीं हुआ। वह लोग आम इन्सानों की तरह ख़ल्क़ हुये और अली मिसले नबी (स.) नूर से पैदा हुये। इसके अलावा ख़ुद ख़ुदा वन्दे आलम ने अली(अ.) के अफ़ज़ल ही

होने की नहीं बल्कि बेमिस्ल होने की नस(सनद) फ़रमा दी है। **मुलाहेज़ा हो :-** (अहया-अल-उलूम, ग़ज़ाली तफ़सीर साअल्बी व तफ़सीरे कबीर, जिल्द २, पृष्ठ २८३)

इमाम फ़ख़रूद्दीन राज़ी ने हज़रत अली(अ.) को अम्बिया के बराबर और तमाम सहाबा से अफ़ज़ल तहरीर किया है। (अरबईन फ़ी उसूल-अल-दीन, दारे हज-अल-मतालिब, पृष्ठ, ४५५) सरवरे कायनात (स.) ने अली (अ.) को अपनी नज़ीर बताया है। (अर हज-अल-मतालिब,पृष्ठ ४५४) इन्हीं खुसूसीयात की बिना पर अली(अ.) को मेआरे ईमान क़रार दिया गया है।

अल्लामा तिरमिज़ी और इमामे नेसाई ने बुग़ज़े अली (अ.) से मुनाफ़िक़ को पहचानने का उसूल बताया है और बाज़ ने अफ़ज़लियते अली(अ.) पर एतेक़ाद ज़ुरूरी क़रार दिया है और अल्लामा अब्दुल बर ने एस्तेयाब में सहाबा, ताबईन वग़ैरा की फ़ेहरिस्त पेश की है, जो अली(अ.) को अफ़ज़ल सहाबा मानते थे और शायद इसकी वजह यह होगी कि तमाम लोग जानते थे कि खुदा वन्दे आलम ने अली(अ.) के सिवा किसी के क़ल्ब को ईमान की कसौटी पर नहीं कसा (एज़ालतुल ख़फ़ा, जिल्द २,पृष्ठ २५६)



हज़रत अली(अ.) की इल्मी हैसियत

हज़रत अली(अ.) का नफ़्से अल्लाह होना मुसल्लेमात से है और अल्लाह उस वाजेबुल वुजूद ज़ात को कहते हैं जो इल्म व कुदरत से इबारत है। यह ज़ाहिर है कि जो नफ़्से अल्लाह होगा उसे फ़ितरतन तमाम उलूम से बहरावर होना चाहिये। हज़रत अली (अ.) के लिये यह मानी हुई चीज़ है कि आप दुनिया के तमाम उलूम से सिर्फ़ वाक़िफ़ ही नहीं बल्कि उन्में महारत रखते थे। और इल्मे लदुन्नी से भी माला माल थे। तमाम उलूम के बारे में आपके ज्ञान की कोई सीमा नहीं है। इमामे शबलन्जी लिखते हैं। " **वमा कानत फ़िल इल्म वल्फ़हुम .....तहमल मजलदात** " आपके इल्मो फ़हम वग़ैरा के लिये बहुत सी जिल्दें दरकार हैं। मोहम्मद इब्ने तल्हा शाफ़ेई लिखते हैं कि इमाम-अल-मुफ़स्सेरीन जनाब इब्ने अब्बास का कहना है कि इल्मो हिकमत के १०(दस) दरजों में से ६(नौ) हज़रत अली (अ.) को मिले हैं और दसवें में तमाम दुनिया के उलेमा शामिल हैं, और इस दसवें दरजे में भी अली(अ.) को अव्वल नम्बर हासिल है। अबुल फ़िदा कहते हैं कि हज़रत इल्म-अल-नास,बिल कुरआन वल सन्न थे। यानी तुम लोगों से ज़्यादा उन्हें कुरआन व हदीस का इल्म था। खुद सरवरे कायनात(स.) ने भी आपके इल्मी मदारिज पर बार बार रौशनी डाली है। कहीं " **अना मदीनतुल इल्म व अलीयन बाबोहा** " फ़रमाया, कहीं " **अना दारूल हिकमते व अलीयन बाबोहा** " इरशाद फ़रमाया, किसी जगह पर " **अलम उम्मती अली इब्ने अबी तालिब** " कहा। हज़रत अली(अ.) ने खुद भी इसका इज़हार किया है और बताया है कि इल्मी नुकतए नज़र से मेरा दरजा क्या है। एक मकाम पर फ़रमाया कि रसूल अल्लाह(स.) ने मुझे इल्म के हज़ार बाब(अध्याय) तालीम फ़रमाये हैं और मैंने हर बाब से हज़ार बाब(अध्याय) पैदा कर लिये हैं। एक मकाम पर इरशाद फ़रमाया " **ज़कनी रसूल अल्लाह ज़कन ज़कन** " मुझे रसूल अल्लाह (स.) ने इस तरह इल्म भराया है जिस तरह कबूतर अपने बच्चे को दाना भराता है। एक मन्ज़िल पर कहा कि " **सलूनी कब्ल अन तफ़क़दूनी** " मेरी ज़िन्दगी में जो चाहे पूछ लो। वरना फिर तुम्हें इल्मी मालूमात से कोई बहरावर करने वाला न मिलेगा। एक मकाम पर फ़रमाया कि आसमान के बारे में मुझसे जो चाहो पूछो, मुझे ज़मीन के रास्तों से ज़्यादा आस्मान के रास्तों का इल्म है। एक दिन फ़रमाया कि अगर मेरे लिये मसन्दे क़ज़ा बिछा दी जाय तो मैं तौरैत वालों को तौरैत से, इन्जील वालों को इन्जील से, ज़बूर वालों को ज़बूर से और फुरक़ान वालों को कुरआन से इस तरह जवाब दे सकता हूँ कि उनके उलेमा हैरान रह जायें। एक मौके पर आपने इरशाद फ़रमाया , कि खुदा की क़सम मुझे इल्म है कि कुरआन की कौन सी आयत कहां नाज़िल हुई है, और मैं यह भी जानता हूँ कि खुश्की

में कौन सी नाज़िल हुई है और तरी में कौन सी आयत नाज़िल हुई, कौन सी दिन में और कौन सी आयत रात में नाज़िल हुई। उलेमा ने लिखा है कि एक शब इब्ने अब्बास ने हज़रत अली(अ.) से ख़्वाहिश की कि बिस्मिल्लाह की तफ़सीर बयान फ़रमायें, आपने सारी रात तफ़सीर बयान फ़रमाई और जब सुबह हो गई तो फ़रमाया ऐ इब्ने अब्बास मैं इसकी तफ़सीर इतनी बयान कर सकता हूँ कि ७०, ऊँटों का बार हो जाय, बस मुख़्तसर यह समझ लो कि जो कुछ कुरआन में है वह सूरए हम्द में है, और जो सूरए हम्द में है, वह बिस्मिल्लाह हिर रहमानिर्रहीम में है और जो बिस्मिल्लाह में है, वह बाए बिस्मिल्लाह में है, और जो बाए बिस्मिल्लाह में है, वह नुक़्तए बाए बिस्मिल्लाह में है। **"व अनल नुक़्ततल लती तहतल बा"** ऐ इब्ने अब्बास मैं वही नुक़्ता हूँ जो बिस्मिल्लाह की बे के नीचे दिया जाता है। शेख़ सुलैमान क़न्दूज़ी लिखते हैं कि तफ़सीरे बिस्मिल्लाह सुन कर इब्ने अब्बास ने कहा कि ख़ुदा की क़सम मेरा और तमाम सहाबा का इल्म अली(अ.) के मुक़ाबले में ऐसा है जैसे सात समुन्दरों के मुक़ाबले में पानी का एक क़तरा। कुमैल इब्ने ज़्याद से हज़रत अली(अ.) ने फ़रमाया कि ऐ **कुमैल** मेरे सीने में इल्म के ख़ज़ाने हैं, काश कोई अहल मिलता कि मैं उसे तालीम कर देता।

मुहिब तबरी तहरीर फ़रमाते हैं कि सरवरे आलम(स.) का इरशाद है कि जो शख़्स इल्मे आदम, फ़हमे नूह, हिल्मे इब्राहीम, ज़ोहदे यहीया, सौलते मूसा को इन हज़रात समेत देखना चाहे " **फ़ल यन्ज़ुर इला अली इब्ने अबी तालिब** " उसे चाहिये कि वह अली इब्ने अबी तालिब के चेहरए अनवर को देखे। मुलाहेज़ा हो, (नूरूल अबसार शरह मवाक़िफ़, मतालेबुल सवेल, सवाएक़े मोहर्रेक़ा, शवाहेदुन नबूवत, अबुल फ़िदा, कशफ़ुल ग़म्मा, नेयाबुल मोअद्दत, मनाक़िब इब्ने शहरे आशोब, रियाज़ुल नज़रा, अर हज-अल-मतालिब, अनवारूल ग़ता) उलमाए इस्लाम के अलावा अंग्रेज़ इतिहासकारों ने भी आपके कमाले इल्मी का एतेराफ़ (मान्ना) किया है। लेखक इन्साईकिलोपीडिया बरटानिका लिखते हैं। अली(अ.) इल्म और अक़्ल में मशहूर थे। और अब तक कुछ संग्रह ज़रबुल मिसाल और शेरों के उनसे मन्सूब हैं। ख़ुसूसन " **मक़ालाते अली** " जिसका अंग्रेज़ी तरजुमा **(विल्यम पोल)** ने १८३२ ई० में बामक़ाम टोंबरा छपवाया। (मोहज़ब्बुल मोकालेमा पृष्ठ १०४) मिस्टर एयर विंग लिखते हैं। आप ही वह पहले ख़लीफ़ा हैं जिन्होंने उलूम व फ़ुनून की बड़ी हिमायत फ़रमाई। आपको ख़ुद भी शेर कहने का पूरा ज़ौक़ था। और आपके बहुत से हकीमाना मक़ूले और ज़रबुल मिसाल इस वक़्त तक लोगों के ज़बांज़द(याद) हैं। और मुख़्तलिफ़ ज़बानों में उनका तरजुमा भी हो गया है। (किताब ख़ुलफ़ाए रसूल, पृष्ठ १७८) मिस्टर **"ओकली"** लिखते हैं। तमाम मुस्लमानों में बा इत्तेफ़ाक़ अली की अक़्ल व दानाई की शोहरत है। जिसको सब मानते हैं। आपके **"सद कलेमात"** अभी तक महफ़ूज़ हैं जिनका अरबी से तुरकी में तरजुमा हो गया है। इसके अलावा आपके अशआर का दीवान भी है। जिसका नाम अनवारूल अक़वाल है। **"लोवर वर्डलीन"** पुस्तकालय में आपके अक़वाल की एक बड़ी किताब **(नहजुल बलागह)** मौजूद है। आपकी

मशहूर तरीन तसनीफ़ **(जाफ़रो जामा)** है। जो एक बईदुल फ़हेम(समझ में न आने वाला) ख़त में आदादो हिन्दसे(गिन्ती और निशानों) के ज़रिये से लिखा हुआ है। यह हिन्दसे उन तमाम अज़ीमुशशान वाक़ेयात को जो इब्तेदाए इस्लाम से रहती दुनिया तक होने वाले वाक़ेयात बतलाते हैं। यह आपके ख़ानदान में है लेकिन पढ़ी नहीं जा सकती अलबत्ता इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.) इसके कुछ हिस्से की तशरीह व तफ़सीर में कामयाब हो गये हैं और इसको मुकम्मल बारहवें इमाम करेंगे। (तारीख़े अरब ओकली, पृष्ठ ३३२) मोवर्रिख़ गिबन लिखते हैं, आप वह पहले ख़लीफ़ा हैं जिन्होंने इल्मो फ़न और किताबत की परवरिश की और हिकमत से ममलू अक़वाल का एक बड़ा मजमूआ आपके नाम से मन्सूब है। आपका क़ल्ब व देमाग़ हर शख़्स से ख़िराजे तहसीन हासिल करता रहेगा। आपका क़ल्बो दिमाग़ मुजस्सम नूर था। आपकी दानाई और पुर मग़ज़ नुकता संजी ज़रबुल मिसाल के ईजाद में आपकी फ़ेरासत बहुत ही आला पाए की थी।(तारीख़े अरब पृष्ठ २८६, बम्बई हाई कोर्ट के जज मिस्टर अरनोल्ड, एडवोकेट जनरल एक फैसले में लिखते हैं। शुजाअत, हिकमत, हिम्मत, अदालत, सख़ावत, जोहद और तक़वा में अली(अ.) का अदीलो नज़ीर तारीख़े आलम में कम नज़र आता है। (ला रिपार्ट, जिल्द १२, एजाज़-अल-तन्ज़ील पृष्ठ १६६)

हज़रत अली(अ.) की तस्नीफ़ात :- उल्माए इस्लाम का इसपर इत्तेफ़ाक़ है कि इस्लाम में सबसे पहले मुसन्निफ़ (लेखक) हज़रत अली(अ.) हैं। अल्लामा रशीदउ्ददीन इब्ने शहरे आशोब किताब माआलिम-अल-उलेमा में और अल्लामा मोहम्मद मोहसिन सदर ने किताब-अल-शिया व फ़ुनूने इस्लाम में तहरीर फ़रमाया है कि ,**"अव्वल मिन सनफ़ फ़िल इस्लाम अमीरल मोमेनीन"** इस्लाम में सबसे पहले हज़रत अली(अ.) ने तस्नीफ़ की है। आपकी किताब का नाम (किताबे अली) और जामिया था। **उसूले काफ़ी** किताब-अल- हुज्जत में है कि इस किताब में तमाम दुनिया के होने वाले वाक़ेयात व हालात लिखे हुये थे। यह भी मुसल्लम है कि सबसे पहले क़ुरआन जमा करने वाले भी हज़रत अली(अ.) हैं। मुलाहेज़ा हो(नूरूल अबसार इमामे शबलेंजी, पृष्ठ ७३, मिस्र में छपी) किताब **"आयानुल शिया"** में अबुल आइम्मा की तालीफ़ात व तसनीफ़ात की फ़ेहरिस्त इस तरह लिखी है।

(१) क़ुरआने मजीद को तन्ज़ील के मुताबिक़ हज़रत अली(अ.) ने जमा किया। इसमें असबाब व मक़ामाते नुज़ूल आया व सूर का भी ज़िक्र था।

(२) किताबे अली जिसमें क़ुरआने मजीद के साठ क़िस्म के उलूम का ज़िक्र था।

(३) किताब जामे (४) किताब-अल-जफर (५) सहीफ़ुल फ़राएज़ (६) किताब फ़ी ज़कात-अल-नअम (७) किताब फ़िल अबवाब-अल-फ़िक़ा (८) किताब फ़िल फ़िक़ा (९) मालिके अशतर के नाम तहरीरी हिदायात (१०) मोहम्मद बिन हन्फ़िया के नाम वसीयत (११) मसन्दे अली(अ.) लाबी अब्दुल रहमान, अहमद बिन शईब नेसाई, इन किताबों के अलावा आपका संग्रह और **"सहीफ़ए अलविया"** और आपके अशआर का मजमूआ **"दीवाने अली"**

के नाम से हज़रत अली इब्ने अबी तालिब की तरफ़ मन्सूब है। यह किताब नवाब अलाउद्दीन अहमद ख़ां बहादुर, फ़रमा रवाए लोहारो के हुक्म से १८७६, ई० में फ़ख़रूल मताबे , लोहारो में छपी थी, और अब मुख़तलिफ़ मुल्कों में छप चुकी है और उसकी शरहें भी हो चुकी हैं।

इन किताबों के अलावा जनाबे अमीरूलमोमेनीन का कलाम नीचे लिखी किताबों में जमा किया गया है।

(१) **नहजुल बलागा** :-इसे **अल्लामा सय्यद रज़ी** (अल रहमा) ने जमा फ़रमाया है,वह ३५६, हिजरी मुताबिक़ ६६६ ई० में पैदा हुये थे और उनकी वफ़ात मोहर्रम ४०४ हिजरी मुताबिक़ १५१३ ई० में हुई है।

किताब नहजुल बलागा की बहुत सी शरहें लिखी गई हैं लिखने वालों में से कुछ नाम यह हैं।

(१) इमामे अहले सुन्नत अज़ीज़ बिन अबू हामिद अब्दुल हमीद बिन हेयत उल्लाह बिन मोहममद बिन हसनैन इब्ने अबिल हदीद मदाईनी अल मुतावल्लिद १, ज़िल्हिज्जा, ५८६ हिजरी मुताबिक़ ३०, दिसम्बर ११६० ई० बा मक़ाम मदाएन इनकी वफ़ात ६५५ हिजरी मुताबिक़ १२५७ ई० बा मक़ाम बग़दाद।

(२) क़वामुद्दीन यूसुफ़ बिन हसन, जिनकी वफ़ात ६२२ हिजरी मुताबिक़ १५१६ ई०

(३) मुफ़्ती मोहम्मद अब्दूह मिस्त्र

(४) अल्लामा मोहम्मद हसन नाएल अल मरसफ़ी जिनका हाशिया है असल किताब नहजुल बलाग़ाह मिस्त्र के मशहूर प्रेस दारूलकुतुब अल अरबिया में छप गई है। यह चारों व्याख्याकर्ता अहले सुन्नत वल जमाअत से ताअल्लुक़ रखते हैं।

(५) सय्यद अली बिन नासिर यह सय्यद रज़ी के दौर के थे। सबसे पहले नहजुल बलाग़ा की शरह उन्होंने ही लिखी है। उनकी शरह का नाम " **आलामे नहजुल बलाग़ा** " है।

(६) अल्लामा कुतुबउद्दीन रावन्दी उनकी शरह का नाम " **मिनहाजुल बरअता** " है।

(७) सय्यद इब्ने ताऊस , अबुलक़ासिम अली बिन मूसा बिन जाफ़र बिन मोहम्मद बिन ताऊस, जो मोहर्रम ५१६ हिजरी मे पैदा हुये और ५, ज़ीक़ाद ६६८ हिजरी में इन्तेक़ाल हुआ।

(८) कमाल उद्दीन मीसम बिन अली मीसम बहरानी।

(६) कुतुबउद्दीन मोहम्मद बिन हुसैन सिकन्दरी।

(१०) शेख़ हुसैन बिन शहाबुद्दीन हैदर अली आमेली का सफ़र के महीने में १०७६ हिजरी, मुताबिक़ अगस्त १६६५, ई० बामक़ाम हैदराबाद दकन इन्तेक़ाल हुआ।

(११) शेख़ निज़ामुद्दीन अली बिन हुसैन इनकी शरह का नाम **"अनवारूल फ़साहत"** है।

(१२) अल्लामा मिर्ज़ा अलाउद्दीन मोहम्मद बिन अबी तुराब अल हुसैन उनकी शरह बहुत

ही मबसूत है। इसका नाम " **हदायकुल हकाएक** " है। यह २०(बीस) जिल्दों में है।

(१३) आका शेख़ मोहम्मद रज़ा मुसम्मा बा " **दुर्रे नजफिया** "।

(१४) मुल्ला फतेह अल्लाह काशेफ़ी जिनका इन्तेकाल ६६७, हिजरी में हुआ यह फ़ारसी में है। और इसका नाम **"तम्बीहुल ग़ाफेलीन"** है।

(१५) मोहक्क़िक़ हबीब अल्लाह हाशमी अल खूई, इनकी शरह का नाम भी " **मिनहाज उल बराअता फ़ी नहजुल बलाग़ा** " है। यह २५, जिल्दों में है। कुम ख़याबाने इरम तेहरान में मिलती है। इसके अलावा किताब के कुछ मुस्तदरकात हैं जो छप चुकी हैं।

(२) मायते कलमतः जिसको जाहिज़ ने जमा किया था।

(३) **"ग़र्र अल हकम व दरद अल कलम"** जिसको अब्दुल वाहिद बिन मोहम्मद बिन अब्दुल वाहिद ने जमा किया था।

(४) **"दस्तूरे माअलम हक्म"** जिसको क़ाज़ी अबू अब्दुल्लाह मोहम्मद बिन सलामा ने जमा किया था इनका इन्तेक़ाल ४५४ हिजरी में हुआ था।

(५) नसर अला लाई जिसको अबुलफ़ज़ल अली बिन हुसैन अल बतरसी साहब मजमउल बयान ने जमा किया।

(६) " **किताब मतलूब कुल्ले तालिब मन कलामे अली बिन अबी तालिब** " जिसको अबू इस्हाक़ अल वतवात अल अनसारी ने जमा किया है। इसका फ़ारसी और जरमन ज़बान में तरजुमा हो चुका है।

(७) " **कलाएद अल हकम व फ़राएद अल कलम** " जिसको क़ाज़ी अबु यूसूफ़ बिन सुलैमान अला सफ़रानई ने जमा किया है।

(८) किताब " **माअमियाते अली** "

(९) **इमसाल अल इमाम अली बिन अबी तालिब**

(१०) शेख़ मुफ़ीद अल रहमा ने किताब अल इरशाद में कुछ कलाम जमा किया है।

(११) नसर बिन मज़ाहम की किताब " **सिफ़्फ़ीन** " में आपका कलाम जमा है।

(१२) किताब " **जवाहरूल मतालिब** "

आपकी इल्मी मरकज़ियत :- अल्लामा इब्ने अबिल हदीद , अल्लामा इब्ने शहरे आशोब, अल्लामा इब्ने तल्हा शाफ़ेई और अल्लामा अरबली तहरीर फ़रमाते हैं कि " अशरफ़ुल उलूम, उल-इलाहियात है और यह हज़रत अली(अ.) ही के कलाम से एक्तेबास किया गया है। और आप ही इसकी इब्तेदा और इन्तेहा हैं। अक़ाएद के एतेबार से इस्लाम में मुख़्तलिफ़ फ़िरक़े हैं। इन्में मोतज़ला भी है। इस फ़िरक़े का बानी वासिल इब्ने अता है। जो अबु हाशिम का शर्गिद था और वह अपने बाप मोहम्मद बिन हन्फ़िया का शर्गिद था और मोहम्मद हज़रत अली के शार्गिद थे। दूसरा फ़िरक़ा अशअरिया है जो अबुल हसन अशअरी की तरफ़ मन्सूब

है और वह शागिर्द था अबु अली जबाई का जो मशाएख़ मोतज़ला से था। इसकी इन्तेहा भी हज़रत अली तक क़रार पाती है। तीसरा फ़िरक़ा इमामिया व ज़ैदिया है। इसका हज़रत की तरफ़ मंसूब होना बिलकुल वाज़ेह है।

इस्लामी उलूम में इल्मे फ़िक़ह भी है और इस्लाम का हर फ़िरक़ा व मुजतहिद हज़रत हीं का शागिर्द है। चुनांचे अहले सुन्नत में चार फ़िरक़े हैं। मालकी, हन्फ़ी, शाफ़ेई और हम्बली। मालकी फ़िरक़े के बानी इमामे मालिक शागिर्द थे रबीअतुल राई के और वह शागिर्द थे अकरेमा के और वह शागिर्द थे इब्ने अब्बास के और वह शागिर्द थे हज़रत अली(अ.) के। दूसरे फ़िरक़े हन्फ़ी के बानी इमामे अबू हनीफ़ा थे, यह शागिर्द थे , इमामे मोहम्मद बाक़र (अ.) के और इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.) के और यह शागिर्द थे, इमाम ज़ैनुल आबेदीन (अ.) के और इमाम आबिद(अ.) शागिर्द थे इमाम हुसैन(अ.) के, और वह शागिर्द थे हज़रत अली(अ.) के। तीसरे फ़िरक़े के बानी इमाम शाफ़ेई शागिर्द थे इमाम मोहम्मद के और वह शागिर्द थे इमाम अबू हनीफ़ा के। चौथे फ़िरक़े के बानी इमाम अहमद बिन हम्बल शागिर्द थे, इमाम शाफ़ेई के इस तरह उनका फ़िरक़ा भी हज़रत अली(अ.) का शागिर्द हुआ। इसके अलावा सहाबा के फ़ुक़हा हज़रत उमर व अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास थे, और दोनों ने इल्मे फ़िक़ह हज़रत अली(अ.) से ही सीखा। इब्ने अब्बास का शागिर्दे हज़रत अली(अ.) होना तो वाज़ेह और मशहूर है। रहे हज़रत उमर तो उनके बारे में भी सबको इल्म है कि बकसरत मसाएल में जब उनकी अक़्लो फ़हम और राह चारो तदबीर बन्द हो जाया करती थी तो वह हज़रत अली(अ.) की तरफ़ रूजु करते और हज़रत अली(अ.) से ही मुशकिल कुशाई की दरख़्वास्त किया करते थे, और अकसर ऐसा भी हुआ है कि अपने अलावा दीगर सहाबा की भी मुशकिल कुशाई अली(अ.) से कराया करते थे। उनका बार बार **" लौला अली लहका उमर "** अगर अली(अ.) न होते तो उमर हलाक हो जाता, कहना और यह फ़रमाना कि ख़ुदा वह वक़्त न लाये कि मैं किसी इल्मी मुशिकल में मुब्तिला हो जाऊँ और अली(अ.) मौजूद न हों। इसके अलावा यह कहना कि जब अली(अ.) मस्जिद में मौजूद हों तो कोई फ़तवा देने की जुरअत न करे। यह साबित करता है के हज़रत उमर की फ़िक़ही हद हज़रत अली(अ.) तक मुन्तही होती है। हज़रत अली(अ.) ही वह हैं जिन्होंने उस औरत के मुक़दमे में मुनसेफ़ाना फ़तवा दिया। जिसने ६, छैः महीने में बच्चा जना था। और ज़िना कार हामला औरत के मामले को तय फ़रमाया था। जिसके रजम का फ़तवा हज़रत उमर दे चुके थे।

इस्लामी उलूम में तफ़सीरे क़ुरानी का इल्म भी है। यह इल्म भी हज़रत अली (अ.) ही से हासिल किया गया है। जो शख़्स तफ़सीर की किताबें देखे उसे आसानी से इस दावे की सेहत मालूम हो जायेगी, क्योंके तफ़सीर के मतालिब ज़्यादा तर हज़रत अली(अ.)

और अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास ही से मन्कूल हैं और अब्दुल्लह इब्ने अब्बास का शागिर्दे अली(अ.) होना मशहूर व मारूफ़ है। लोगों ने अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास से एक दफ़ा पूछा कि हज़रत अली(अ.) के इल्म के मुक़ाबले में आपका इल्म कितना है। फ़रमाया जितना एक बहरे ज़ख़्ख़ार के मुक़ाबले में एक छोटा क़तरा हो सकता है। इस्लामी उलूम में इल्मे तरीक़त व हक़ीक़त और उसूले तसव्वुफ़ भी है और तुमको मालूम होना चाहिये कि इस फ़न के जुमला उलेमा व माहेरीन अपने को हज़रत की तरफ़ ही मन्सूब करते हैं और हज़रत ही तक अपने सिलसिले को मुन्तही क़रार देते हैं। इसकी सराहत उन लोगों ने भी की है। जो फ़िरकए सूफ़ीया के इमाम और पेशवा माने गये हैं। जैसे शिब्ली, जुनैद, सिरी, अबू यज़ीद बस्तामी, मारूफ़ करख़ी, सूफ़ी ख़रक़ा, सूफ़ी को अली(अ.) का ही शेआर क़रार देते हैं।

उलूमे अरबिया में इल्मे नुजूम भी है। दुनिया के माहेरीन को इल्म है कि इस इल्म के बानी हज़रत अली(अ.) हैं। आप ही ने इस इल्म की ईजाद की है। आप ही ने इसके क़वाएद व ज़वाबित मदून फ़रमाये हैं। आपने इस इल्म के उसूल व जवामे की तालीम अबू-अल-अस्वद देली को दी और उसके क़वानीन तरतीब देने का तरीक़ा सिखाया। हज़रत ने जो मुख़्तसर और जामे उसूल बताये उनमें कलाम , कलमा और एराब थे। आपने कहा कि कलाम , इस्मे फ़ेल , हरफ़ को कहते हैं और कलमा मारेफ़ा और नुकरा होता है। और एराब, रफ़े नसब हजर और जज़्म में मुन्क़सिम होता है। हज़रत के इन मुख़्तसर उसूल व ज़वाबित को आपके मोजेज़ात में शुमार करना चाहिये। (शरह इब्ने अबिल हदीद, जिल्द १, पृष्ठ ७, व मतालेबुल सुवेल, पृष्ठ ६८ व कशफ़ुल गम्मा, पृष्ठ ५४, मनाक़िब जिल्द २, पृष्ठ६७)।

इसके अलावा इल्म-अल-क़िरअत, इलम-अल-फ़राएज़, इल्म-अल-कलाम, इलम -अल-ख़िताबत, इल्म-अल-फ़साहत व बलाग़त, इल्म-अल-शेर, इल्म-अल-उरूज़ वल क़वाफ़ी, इल्म-अल-अदब, इल्म-अल-किताबत, इल्म ताबीरे ख़्वाब, इल्म-अल-फ़लसफ़ा, इल्म-अल-हिन्दसा, इल्म-अल-नुजूम, इल्म-अल-हिसाब, इल्म-अल-तिब, इल्मे मन्तिक़-अल-तैर वग़ैरा में आपको इन्तेहाई कमाल हासिल था (मनाक़िब, जिल्द २, पृष्ठ ६७) और इल्मे लदुन्नी, इल्मे-अल-ग़ैब, में भी आपको यदे तूला हासिल था।

(नुरूल अबसार पृष्ठ ७६०,व अर हज्जुल मतालिब, पृष्ठ २१३)

इब्ने शहरे आशोब ने मनाक़िब में हज़रत अली(अ.) के सौते नाक़ूस की तफ़सीर बयान फ़रमाने की तफ़सील लिखी है। और अल्लामा मोहम्मद बाक़र ने दमुस साकेबा के पृष्ठ १४१, पर इब्ने अबिल हदीद के हवाले से ३३, बड़ी सतरों पर मुश्तमिल हज़रत का एक निहायत फ़सीह व बलीग़ ऐसा खुतबा नक़ल किया है जिसमें लफ़्ज़े " **अलिफ़** " नहीं है।

आपका ज़ोहदो तक़्वा :– मिस्र के मशहूर मोवर्रिख़ अल्लामा जरजी ज़ैदान लिखते हैं कि अली(अ.) की हालत क्या बयान हो। ज़ोहद और तक़्वे के मुताअलिक़आपके वाक़ेयात बहुत कसरत से हैं। उसूले इस्लाम की पाबन्दी करने में आप बहुत सख़्त और अपने हर क़ौलो फ़ेल में निहायत शरीफ़ व आज़ाद थे। जाल, फ़रेब, धोका,मक्र को आप जानते तक न थे। और अपनी ज़िन्दगी के मुख़्तलिफ़ ज़मानों से किसी हालत में भी आपने चाल, हीला, ग़द्दारी वग़ैरा की तरफ़ ज़र्रा बराबर भी रूख़ नहीं किया। आपकी तमाम तर तवज्जे महज़ दीन के मूताअल्लिक़ रहती थी, और आपका कुल एतेमाद और भरोसा सिर्फ़ सच्चाई और हक़ पर था। चुनानचे आपके ज़ोहद और फ़क़ीराना ज़िन्दगी की मिसालों में से एक यह भी है कि आपने जिस वक़्त रसूल(स.) की बेटी फ़ात्मा(स.) से शादी की तो आपके पास फ़र्श की क़िस्म से कोई चीज़ नहीं थी सिवाय दुम्बे की एक खाल के कि उसी पर दोनों शब को पड़ कर सो रहते थे। और दिन के वक़्त इसी चमड़े पर अपने ऊँट को दाना खिलाते थे। आपके पास एक मुलाज़िम भी न था जो आपकी ख़िदमत करता। आपकी ख़िलाफ़ते ज़ाहेरी के ज़माने में एक दफ़ा असफ़हान के (ख़ेराज) का माल आया तो आपने उसको सात हिस्सों पर तक़सीम कर दिया फिर उसमें एक रोटी मिली तो उसके भी सात टुकड़े किये। आप ऐसे कपड़ो का लिबास पहनते थे जो सरदी से ज़रा भी महफ़ूज नहीं रख सकता था। बाज़ लोगों ने आपको देखा कि अपने ओढ़ने की चादर में खजूरें उठा कर खुद ला रहे हैं। जिनको एक दिरहम में ख़रीदा था। यह देख कर अर्ज़ की ऐ अमीरल मोमेनीन यह हमें दे दें ताके हम पहुँचा दें। आपने जवाब दिया कि जिसके अयाल हैं उन्हीं को उनका बोझ उठाना चाहिये। आपके जर्री अक़्वाल से यह भी है कि मुसलमान को चाहिये कि इतना कम खाएं कि भूख से उनके पेट हल्के रहें और इतना कम पियें कि प्यास से उनके पेट सूखे रहें। और ख़ुदा के ख़ैफ़ से इतना रोयें कि उनकी आंखें ज़ख़्मी रहें।

(तारीख़े तमददुने इस्लामी, जिल्द ४, पृष्ठ ३७, व तारीख़े कामिल,जिल्द ३, पृष्ठ २०४)

आपकी असाबत राय :– आपकी राय इतनी साएब थी कि कभी लग़ज़िश नहीं हुई। जिसको जो मशवेरा दे दिया वह अटल साबित हुआ। अल्लामा इब्ने अबिल हदीद शरह नहजुल बलाग़ाह में लिखते हैं कि तमाम लोगों से ज़्यादा हज़रत अली(अ.) की राय साएब और मोहकम व सही हुआ करती थी। और आपकी तदबीर तमाम लोगों की तदबीरों से बलन्द व बरतर होती थी। अल्बत्ता आप इसी मामले में राय देते थे जो शरीयत के मुताबिक़ और इस्लाम की रौशनी में हो यानी ग़लत उमूर में आपका कोई मशवेरा न था।

आपकी सियासत :– अल्लामा इब्ने अबिल हदीद लिखते हैं। **“ काना शदीद-अल-सियासत खशनन फ़ी ज़ात अल्लाह ”** आप बे नज़ीर सियासी थे। आपकी सियासत उन लोगों जैसी न थी जो दीन और ख़ुदा को पहचानते नहीं। आपकी

सियासत हुक्मे खुदा व रसूल(स.) का परतौ हुआ करती थी। आप अल्लाह की ज़ात के बारे में निहायत ही सख़्त और शदीद-अल-अमल थे। इस सिलसिले में उन्होंने कभी अपने भाई तक की परवाह नहीं की। अक़ील और इब्ने अब्बास की नाराज़गी मशहूर है।

(सवाएक़े मोहर्रेक़ा)

हिल्म, सिदाक़त, अदल :- ख़ालिद इब्नल अमीर का बयान है कि मैं अली (अ.) को तीन बातों की वजह से महबूब रखता हूँ।

(१) यह कि जब वह ख़फ़ा होते थे तो मुकम्मल इल्म का इस्तेमाल करते थे।

(२) जो बात कहते थे सच कहते थे।

(३) जो फ़ैसला करते थे पूरे अदल के साथ करते थे।

माअक़ल इब्नुल यसार का बयान है कि सरवरे कायनात(स.) ने एक दिन फ़ातमा ज़हरा (स.) से फ़रमाया कि मैंने तुम्हारी शादी बहुत बड़े आलिम और उम्मत में सबसे बड़े ईमानदार और अज़ीम तरीन हिल्म करने वाले **अली** से की है।

(अर हज-अल-मतालिब पृष्ठ २०२)

मौलाए कायनात हज़रत अली (अ.) के बाज़ करामात

यह मुसल्लम है कि मौलाए कायनात,मुशकिल कुशा, आलिम, हज़रत अली बिन अबी तालिब(अ.) मज़हरूल अजायब वल ग़राएब थे। ख़िल्क़ते ज़ाहेरी से क़ब्ल अम्बिया (अ.) की मदद करना,सलमाने फ़ारसी को दशत अरज़न में शेर से छुड़ाना, और ज़हूरो शहूद के बाद एक शब में चालीस जगह बयक वक़्त दावत में शिरकत करना, दुनिया के हर गोशे में आपके क़दम के निशानात का पत्थर पर मौजूद होना। ग़ारे असहाबे कहफ़ में निशाने क़दम का मौजूद होना। काबुल में मज़ारे सख़ी का वजूद और दीगर निशानात का मौजूद होना तूरे ख़ुम के क़रीब मस्जिदे अली की तामीर, पेशावर में असाए शाहे मरदां की ज़ियारत गाह का होना। कोटा के रास्ते में क़दम के निशानात का पाया जाना। हैदराबाद में क़दम गाह मौला अली का होना। आलम में हर शख़्स की मुशकिल कुशाई का हो जाना। नीज़ बाबे ख़ैबर का उखाड़ना। रसूल करीम(स.) की आवाज़ पर चशमे ज़दन में पहुँच जाना। चादर पर बैठ कर ग़ारे असहाबे कहफ़ तक जाना और उनसे कलाम करना वग़ैरा वग़ैरा आपके मज़हरूल अजाएब वल ग़राएब होने का बय्यन सुबूत है। हम ज़ैल में किताब (इमामे मुबीन) से वाक़ेयात का खुलासा दर्ज करते हैं।

आपका गहवारे में क़त्लए अज़दर दो पारा करना :- एक दफ़ा का ज़िक्र है कि हवालिये मक्का में एक निहायत ज़बर दस्त और तवील अज़दहा आ गया और उसने तबाही मचा दी, एक लशकर ने उसे मारने की कोशिश की मगर कामयाब न हुआ।

एक दिन वह अज़दहा मदीने की तरफ़ चला, जब क़रीब पहुँचा, शहरे मदीना में हल चल मच गई। लोग घरों को छोड़ कर भागने लगे। इत्तेफ़ाक़न वह अज़दहा ख़ानए हज़रत अबू तालिब में दाख़िल हो गया। वहां मौलाए कायनात गहवारे में फ़रोकश थे। और उनकी मादरे गेरामी कहीं बाहर तशरीफ़ ले गई थीं। जब वह अज़दहा गहवारे के क़रीब पहुँचा तो " **यदुल्लाह** " ने उसके दोनों जबड़ों को पकड़ कर दो पारा कर दिया। रसूले ख़ुदा(स.) ने मसर्रत का इज़हार किया, अवाम ने दादे शुजाअत दी। माँ ने वापस आकर माजरा देखा और अपने नूरे नज़र का नाम " **हैदर** " रखा इस नाम का ज़िक्र मरहब के मुक़ाबले में अली बिन अबी तालिब ने खुद भी फ़रमाया है।

अना अल लज़ी सतमनी अमी हैदरा।
ज़िरग़ाम, आजाम वल--यस--क़सूरा।।

साक़ीए कौसर और संगे ख़ारा :-रवायत में है कि हज़रत अमीरल मोमेनीन(अ.) जंगे सिफ़्फ़ीन से वापस जाते हुये एक सहाराए लक़ो दक़ से गुज़रे, शिद्दते गरमा की वजह से आपका लशकर बे इन्तेहा प्यासा हो गया उसने हज़रत से पानी की ख़्वाहिश की। आपने सहरा में इधर उधर नज़र दौड़ाई , एक बहुत बड़ा पत्थर नज़र आया, उसके क़रीब तशरीफ़ ले गये और पत्थर से कहा कि मैं तुझसे सुन्ना चाहता हूँ कि इस सहरा में पानी कहां है। उसने ब क़ुदरते ख़ुदा जवाब दिया कि " अल मातहती " चशमए आब मेरे ही नीचे है। हज़रत ने लशकर को हुक्म दिया कि इस पत्थर को हटाए। लेकिन १०० (सौ) आदमी कामयाब न हो सके। फिर आपने लबे मुबारक को हरकत दी और दस्ते ख़ैबर कुशा उस पर मारा, पत्थर दूर जा गिरा। उसके हटते ही शहद से ज़्यादा शीरीं और बर्फ़ से ज़्यादा सर्द पानी का चशमा बरामद हो गया। सब सेराब हुये और सबने पानी से छागलें भर लीं। फिर आपने पत्थर को हुक्म दिया कि अपनी जगह पर आ जमे। बरवायत इब्ने अब्बास पत्थर उस जगह से खुद ब खुद सरक कर अपनी जगह पर आ पहूँचा, और लशकर शुकरे ख़ुदा करता हुआ रवाना हो गया।

मौला अली(अ.) और इन्सान की क़ल्बे माहियत :- असबग़ बिन नबाता का बयान है कि एक शख़्स क़ुरैश से हज़रत अली(अ.) की ख़िदमत में हाज़िर होकर कहने लगा कि मैं वह हूँ कि जिसने बेशुमार इन्सानों को क़त्ल किया है और बहुत से अतफ़ाल को यतीम किया है। हज़रत ने उसका जब यह ताअरूफ़ सुना तो आपको ग़ुस्सा आ गया। आपने फरमाया के " **अख़साया कल्ब** " ऐ कुत्ते मेरे पास से दूर हो जा, हज़रत के दहने अक़दस से इन अल्फ़ाज़ का निकलना था कि उसकी माहियत और उसकी हय्यत बदल गई। और वह कुत्ते की शक्ल में होकर दुम हिलाने लगा। लेकिन साथ ही साथ बेताब हो कर फ़रयादो फ़ुग़ां करते हुये ज़मीन पर लोटने लगा। हज़रत को उस पर रहम आया और आपने दुआ की ख़ुदा ने फिर उसे उसकी असल हय्यत में बदल दिया।

ऐन उल्लाह, अली(अ.) ने कोरे मादर ज़ाद को चशमे बीना दे दी

अब्दुल्लाह बिन यूनुस का बयान है कि मैं एक साल हज्जे बैतुल्लाह के लिये घर से रवाना हो कर जा रहा था। नागाह रास्ते में एक नाबीना ज़ने हबशिया को देखा कि वह हाथों को उठाय हुये इस तरह दुआ कर रही है। ऐ अल्लाह ब हक़्क़े अली बिन अबी तालिब मुझे चशमे बीना दे दे। यह देख कर मैं उसके क़रीब गया और उस्से पूछा कि क्या तू वाक़ेइ अली बिन अबी तालिब(अ.) से मोहब्बत रखती है। उसने कहा बेशक मैं उनपर सद हज़ार जान से कुरबान हूँ। यह सुन कर मैनें उसे बहुत से दिरहम दिये मगर उसने क़ुबूल न किया और कहा कि मैं दिरहम व दीनार नहीं मांगती। " मैं आँख चाहती हूँ " फिर मैं उसके पास से रवाना होकर मक्के मोअज़्ज़मा पहुँचा और हज से फ़राग़त के बाद फिर उसी रास्ते से वापस आया। जब उस मक़ाम पर पहुँचा जिस मक़ाम पर वह नाबीना औरत थी तो देखा कि वह औरत चशमे बीना की मालिक है और सब कुछ देखती है। मैंने उस्से पूछा कि तेरा माजरा क्या है। उसने कहा कि मैं बदस्तूर दुआ किया करती थी। एक दिन हसबे मामूल मशगूले दुआ थी नागाह एक मुक़द्दस तरीन बुजुरग नमूदार हुये और उन्होंने मुझसे पूछा कि क्या तू वाक़ेइ अली को दोस्त रखती है। मैनें कहा जी हां, ऐसा ही है। यह सुन कर उन्होंने कहा कि खुदाया अगर यह औरत दावाए मोहब्बत में सच्ची है तो उसे बीनाई अता फ़रमा। उनके इन अल्फ़ाज़ के ज़बान पर जारी होते ही मेरी आँखें खुल गईं, चश्मे बीना मिल गई। मैं सब कुछ देखने लगी। मैंने उसके फ़ौरन बाद क़दमों पर गिर कर पूछा , हुज़ूर आप कौन हैं। फ़रमाया मैं वही हूँ जिसके वास्ते से तू दुआ कर रही थी।

मुशकिल कुशा की मुशकिल कुशाई :- एक रवायत में है कि एक दिन हज़रत अली(अ.) मदीने की एक गली से गूज़र रहे थे। नागाह आपकी निगाह अपने एक मोमिन पर पड़ी देखा कि उसे एक शख़्स बुरी तरह गिरफ़्त में लिये हुये है। हज़रत उसके क़रीब गये और उस्से पूछा यह क्या मामेला है। उस मोमिन ने कहा, मौला मैं इस मरदे मुनाफ़िक़ के एक हज़ार सात सौ (१७००) दीनार का क़रज़ दार हूँ। इसने मुझे पकड़ रखा है। और इतनी मोहलत भी नहीं देता कि मैं यहां से जाकर कोई बन्दोबस्त करूं। हज़रत ने फ़रमाया के तू ज़मीन की रूख़ कर और जो पत्थर वग़ैरा इस वक़्त तेरे हाथ आयें उन्हें उठा ले। चुनांचे उसने ऐसा ही किया, जब उसने उठा कर देखा तो वह सब सोने के थे।

हज़रत ने फ़रमाया के इसका क़रज़ा अदा करने के बाद जो बचे उसे अपने काम में ला। रावी कहता है कि दूसरे दिन जिब्रईल के कहने से हज़रत रसूले करीम(स.) ने इस वाक़ेए को असहाब के मजमे में बयान फ़रमाया।

एक मशलूल की शिफ़ा याबी :- अब्दुल्लाह बिन अब्बास का बयान है। कि एक रोज़ नमाज़े सुबह के बाद हज़रत रसूले करीम(स.) मस्जिदे मदीना में बैठे हुये सलमान, अबूज़र, मिक्दाद और हुज़ैफ़ा से महवे गुफ़्तुगू थे कि नागाह मस्जिद के बाहर एक गुलगुला उठा, शोर सुन कर लोग मस्जिद के बाहर गये, तो देखा कि चालीस आदमी खड़े हैं जो मुसल्लाह हैं। और उनके आगे एक निहायत खूबसूरत नौजवान शख़्स हैं। हुज़ैफ़ा ने रसूले ख़ुदा(स.) को हालात से आगाह किया, आपने फ़रमाया कि उन लोगो को मेरे पास लाओ। वह आगये, तो हज़रत ने फ़रमाया कि अली बिन अबी तालिब को बुला लाओ। हुज़ैफ़ा गये, अमीरल मोमेनीन ने फ़रमाया कि ऐ हुज़ैफ़ा मुझे इल्म है कि एक गिरोह क़ौमे आद से आया है, मुझे उनकी हाजत भी मालूम है। उसके बाद आप हाज़िरे ख़िदमते रसूले करीम(स.) हुये। आं हज़रत ने हज़रत अली(अ.) से उनका सामना कराया। हज़रत अली(अ.) ने उस मरदे खूबरू से कहा कि ऐ हज्जाज बिन ख़ल्जा, बिन अबिल असफ़, बिन सईद बिन मम्ता, बिन अलाक़, बिन वहब, बिन सअब, बता तेरी क्या हाजत है। उसने जब अपना नाम और पूरा शजरा सुना तो हैरान रह गया और कहा कि हुज़ूर मेरे भाई को शिकार का बड़ा शौक़ है उसने एक दिन जंगल में शिकार खेलते हुये एक जानवर के पीछे घोड़ा डाला, और उस पर तीर चलाया, इसके फ़ौरन बाद उसका निस्फ़ बदन शल हो गया। बड़े इलाज किये मगर कोई फ़ाएदा न हुआ। आपने फ़रमाया कि उसे मेरे सामने ला। वह एक ऊँट पर लाया गया। हज़रत ने उसे हुक्म दिया कि उठ बैठ। चुनांचे वह तन्दुरूस्त होकर उठ बैठा। यह देख कर वह और उसके क़बीले के सत्तर हज़ार (७०,०००) नुफ़ूस मुस्लमान हो गये।

आपकी सायए रहमत से महरूमी

हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा(स.) ने २८, सफ़र ११, हिजरी यौमे दोशम्बा इन्तेक़ाल फ़रमाया।(मोअद्दतूल क़ुरबा) हज़रत अली(अ.) आपकी तजहीज़ो तकफ़ीन में मशगूल हो गये। **हज़रत उमर अबू बक्र** को हमराह लेकर “ **सक़ीफ़ा बनी साएदा** ” जो मदीने से तीन,३ मील के फ़ासले पर वाक़े है और मशवेराहाय बातिल के लिए बनाया गया था,चले गये। (ग़यासुल लुग़ात) रस्सा कशी के बाद हज़रत अबू बक्र को ख़लीफ़ा बना लाये। हज़रत अली(अ.) चूंकि रसूले करीम (स.) को इन लोगों की वापसी के पहले दफ़न कर चुके थे। इस लिये सबसे पहले उन्होंने यह सवाल किया कि आपने हमारी वापसी का इन्तेज़ार क्यों नहीं किया। हज़रत अली(अ.) ने फ़रमाया कि रसूले करीम (स.) ब मक़ामे ग़दीर खुम ख़लीफ़ा मुक़र्र कर चुके थे। आप किस जवाज़ से वहां गये और किस उसूल से मसलए ख़िलाफ़त को ज़ेरे बहस लाये, और क्या वजह थी कि हम रसूल(स.) का लाशा बे गोरो कफ़न रहने देते। इसके बाद उन्होंने

बैअत का मुतालेबा किया। हज़रत अली(अ.) ने अपना हक़ फ़ाएक़ होना और अपने को मन्सूस ख़लीफ़ा होना ज़ाहिर करके उनके मुतालेबे के ख़िलाफ एहतेजाज किया, और फ़रमाया कि मुझसे बैअत का सवाल ही पैदा नहीं होता। इस पर उन्होंने शदीद इसरार किया और आपसे बैअत लेने की हर मुम्किन कोशिश की। मोवर्रेख़ीन का इत्तेफ़ाक़ है कि इसी सिलसिले में फ़ात्मा ज़ेहरा(स.) का घर जलाया गया। फ़ात्मा(स.) के दुर्रे लगाये गये। अली(अ.) की गरदन में रस्सी बांधी गई, और आपको क़त्ल कर देने की धम्की दी गई और विरासते रसूल(स.) से फ़ात्मा(स.) और औलादे फ़ात्मा को महरूम कर दिया गया। बाग़ छीना गया। अली(अ.), हसनैन और उम्मे ऐमन को गवाही में झूठा क़रार दिया गया। इन हालात से आले मोहम्मद को जितना मुताअस्सिर होना चाहिये इसका अन्दाज़ा हर बा फ़हम कर सकता है। हज़रत अली(अ.) जो सायए रहमते रसूल(स.) से महरूम होकर मसाएब व आलाम की चक्की के दोनों पाटों में आ गये। उन्होंने अपने ख़ुतबात में इस पर रौशनी डाली है और अपने हालात की वज़ाहत की है। तफ़सील के लिये मुलाहेज़ा हो **" ख़ुतबए शक़शक़्या "**।

वफ़ाते रसूल(स.) के बाद अली(अ.) का ख़ुतबा :- किताब नहजुल बलागाह जिल्द १,पृष्ठ ४३२ तबा मिस्र में है। " बुज़ुरगाने असहाबे मोहम्मद(स.) ने जो हाफ़िज़े क़ुरआन व सुन्नते नबवी थे जान लिया था कि मैं कभी एक साअत के लिये भी फ़रमाने ख़ुदा और रसूल (स.) से दूर नहीं हुआ। और पैग़म्बरे अकरम (स.) की ख़ातिर कभी अपनी जान की परवाह नहीं की। जब दिलेरों ने राहे फ़रार इख़्तेयार की और बड़े बड़े पहलवान पीछे हट आये, इस शुजाअत और जवां मरदी के बाएस जो ख़ुदा ने मुझे अता की है मैंने जंग की और रसूले ख़ुदा(स.) की क़ब्ज़े रूह इस हालत में हुई कि आपका सरे मुबारक मेरे सीने पर था। इनकी जान मेरे ही हाथों पर बदन से जुदा हुई। चुनांचे मैंने अपने हाथ(रूह निकलने के बाद) अपने चेहरे पर मले। मैंने ही आं हज़रत(स.) के जसदे अतहर को ग़ुस्ल दिया और फ़रिश्तों ने इस काम में मेरी मदद की। पस बैते नबवी और उसके अतराफ़ से गिरया ज़ारी की सदा बलन्द हुई। फ़रिश्तों का एक गिरोह जाता था तो दूसरा आ जाता था। उनकी नमाज़े जनाज़ा का हमहमा मेरे कानों से जुदा नहीं हुआ यहां तक कि आपको आख़री आराम गाह में रख दिया गया। पस आं हज़रत की हयात व ममात में उनसे मेरे मुक़ाबले में कौन सज़ावार था। जो कोई इसका अदआ करता है वह सही नहीं कहता। (तरजुमा नहजुल बलाग़ा, रईस अहमद जाफ़री, जिल्द १, पृष्ठ १२००, तबा लाहौर) इसी किताब के पृष्ठ १३०३ पर है। " मेरे मां बाप आप पर क़ुरबान ऐ रसूले ख़ुदा(स.) आपकी वफ़ात से नबूवत, ऐहकामे इलाही,और अख़बारे आसमानी का सिलसिला मुनक़ेता हो गया। जो दूसरे पैग़म्बरों की वफ़ात पर कभी नहीं हुआ था। आपकी ख़ुसुसियत यगानगत यह भी थी कि दूसरी मुसीबतों से आपने तसल्ली दे दी, क्योंकि आपकी मुसिबत हर मुसीबत से बालातर है, और दुनिया से रेहलत फ़रमाने की बिना पर आपको यह उमूमियत व ख़ुसूसियत हासिल है कि आपके मातम में

तमाम लोग यकसां दर्दमन्द और सीना फ़िगार हैं।

रफ़ीक़ए हयात की जुदाई :- रसूले करीम(स.) के इन्तेक़ाल पुर मलाल को अभी १०० दिन भी न गुज़रे थे कि आपकी रफ़ीक़ए हयात हज़रत फ़ात्मा ज़ैहरा(स.) अपने पदरे बुज़ुर्गवार की वफ़ात के सदमे वग़ैरा से बतारीख़ २०,जमादुस्सानिया ११, हिजरी इन्तेक़ाल फ़रमा गईं। हज़रत अली(अ.) ने वसीयते फ़ातमा के मुताबिक़ हज़रत अबू बक्र, हज़रत उमर, हज़रत आयशा वग़ैरा को शरीके जनाज़ा नहीं होने दिया। और शब के तारीक परदे में हज़रत फ़ात्मा ज़ैहरा को सुपुर्दे ख़ाक फ़रमा दिया। और ज़मीन से मुख़ातिब हो कर कहा **" या अरज़न असतो दका व देयती हाज़ा बिन्ते रसूल अल्लाह "** ऐ ज़मीन मैं अपनी अमानत तेरे सुपुर्द कर रहा हूँ ऐ ज़मीन यह रसूल की बेटी हैं। ज़मीन ने जवाब दिया। **" या अली अना अरफ़क़ बेहा मिनका "** ऐ अली, आप घबराऐं नहीं मैं आपसे ज़्यादा नरमी करूँगी। (मुअद्दतुल कुरबा पृष्ठ १२६, तमाम वाक़ेयात की तफ़सील गुज़र चुकी है।

हज़रत अली(अ.) का ख़ुतबा :- ज़मीन से मुख़ातिबे के बाद आपने सरवरे कायनात(स.) को मुख़ातिब करके कहा ,कि या रसूल अल्लाह(स.) आपको मेरी जानिब से और आपकी पड़ोस में उतरने वाली और आपसे जल्द मुल्हक़ होने वाली आपकी बेटी की तरफ़ से सलाम हो। या रसूल अल्लाह(स.) आपकी बरगुज़ीदा बेटी की रेहलत से मेरा सबरो शकेब जाता रहा। मेरी हिम्मत व तवानाई ने साथ छोड़ दिया, लेकिन आपकी मुफ़ारेक़त के हादसए उज़मा और आपकी रेहलत के सदमए जांकाह पर सब्र कर लेने के बाद मुझे इस मुसीबत पर भी सब्र व शिकेबाई ही से काम लेना पड़े गा। जबकि मैंने अपने हाथों से आपको क़ब्र की लहद में उतारा और इस आलम में आपकी रूह ने परवाज़ की कि आपका सर मेरी गरदन और सीने के दरमियान रखा हुआ था। (इन्नललाहे व इन्ना इलैहे राजेऊन) अब यह अमानत पलटाई गई। गिरवीं रखी हुई चीज़ छुड़ा ली गई। लेकिन मेरा ग़म बे पायां और मेरी रातें बे ख़्वाब रहेंगी। यहां तक कि ख़ुदा वन्दे आलम मेरे लिये भी इसी घर को मुन्तख़िब करे। जिसमें आप रौनक़ अफ़रोज़ हैं। या रसूल अल्लाह(स.) वह वक़्त आ गया कि आपकी बेटी आपको बताएं कि किस तरह आपकी उममत ने उन पर ज़ुल्म ढाने के लिये एका कर लिया। आप उनसे पूरे तौर पर पूछें और तमाम अहवाल व वारदात दरयाफ़्त करें। यह सारी मुसिबत इनपर बीत गईं। हालांके आपको गुज़रे हुये कुछ ज़यादा अरसा नहीं हुआ था। और न आपके तज़किरों से ज़बानें बन्द हुईं थीं। आप दोनों पर मेरा सलामे रूख़सती हो। ऐसा सलाम जो किसी मलूल व दिल तंग की तरफ़ से होता है। अब अगर मैं इस जगह से पलट जाऊं तो इस लिये नहीं कि आपसे मेरा दिल भर गया और अगर ठहरा रहूँ तो इस लिये नहीं कि मैं इस वादे से बदज़न हूँ। जो अल्लाह ने सब्र करने वालों से किया है।

(नहजुल बलाग़ा, मुतरजमा मुफ़्ती जाफ़र हुसैन जिल्द २, पृष्ठ २४३, तबा लाहौर)

हज़रत अली(अ.) की गोशा नशीनी

पैग़म्बरे इस्लाम के इन्तेक़ाल पुर मलाल और उनके इन्तेक़ाल के बाद हालात नीज़ फ़ात्मा ज़ेहरा की वफ़ाते हसरत आयात ने हज़रत अली(अ.) को उस स्टेज पर पहुँचा दिया, जिसके बाद मुस्तक़बिल का प्रोग्राम बनाना नागुज़ीर हो गया। यानी इन हालात में हज़रत अली (अ.) यह सोचने पर मजबूर हो गये कि आप आईंदा ज़िन्दगी किस असलूब और किस तरीक़े से गुजारें। बिल आख़िर आप इस नतीजे पर पहुँचे कि (१) दुशमनाने आले मोहम्मद को अपने हाल पर छोड़ देना चाहिये। (२) गोशा नशीनी इख़तेयार कर लेनी चाहिये। (३) हत्तल मक़दूर मौजूदा सूरत में भी इस्लाम की मुल्की व ग़ैर मुल्की ख़िदमत करते रहना चाहिये। चुनान्चे आप इसी पर कारबन्द हो गये।

हज़रत अली(अ.) ने जो प्रोग्राम मुरत्तब फ़रमाया। वह पैग़म्बरे इस्लाम के फ़रमान की रौशनी में मुरत्तब फ़रमाया क्यों कि इन्हें इन हालात की पुरी इत्तेला थी और उन्होंने हज़रत अली(अ.) को सब बता दिया था। अल्लामा इब्ने हजर लिखते हैं। **" इन्नल्लाहा ताआला अतला नबीया, अला मायकूना बाआदा ममा अब्तेला बा अली "** के ख़ुदा वन्दे आलम ने अपने नबी को इन तमाम उमूर से बा ख़बर कर दिया था, जो उनके बाद होने वाले थे, और इन हालात व हादेसात की इततेला कर दी थी, जिसमें अली(अ.) मुब्तिला हुये(सवाएक़े मोहर्रेक़ा पृष्ठ ७२) रसूल करीम (स.) ने फ़रमाया था कि ऐ अली (अ.) मेरे बाद तुमको सख़्त सदमात पहुंचेगे, तुम्हें चाहिये कि इस वक़्त तुम दिल तंग न हो और सब्र का तरीक़ा इख़्तेयार करो और जब देखना कि मेरे सहाबा ने दुनिया इख़्तेयार कर ली है। तो तुम आख़ेरत इख़्तेयार किये रहना(रौज़तुल अहबाब, जिल्द १, पृष्ठ ५५६ व मदारेजुल नबूवत,जिल्द २,पृष्ठ ५११) यही वजह है कि हज़रत अली(अ.) ने तमाम मसाएब व आलाम निहायत ख़न्दा पेशानी से बरदाश्त किये। मगर तलवार नहीं उठाई और गोशा नशीनी इख़्तेयार करके जमए क़ुरआन की तकमील करते रहे। और वक़्तन फ़वक़्तन अपने मशवेरों से इस्लाम की कमर मज़बूत फ़रमाते रहे।

ग़सबे ख़िलाफ़त के बाद तलवार न उठाने की वजह :- बाज़ बरादराने इस्लाम यह कह देते हैं कि जब अली(अ.) की ख़िलाफ़त ग़सब की गई और उन्हें मसाएब व आलाम से दोचार किया गया तो उन्होंने बद्रो, ओहद ,ख़ैबरो ख़न्दक़ की चली हुई तलवार को नियाम से बाहर क्यों न निकाल लिया। और सब्र पर क्यों मजबूर हो गये। लेकिन मैं कहता हूँ कि अली (अ.) जैसी शख़्सियत के लिये यह सवाल ही पैदा नहीं होता कि उन्होंने इस्लाम के अहदे अव्वल में जंग क्यों नहीं की। क्योंकि इब्तेदा उम्र से ता हयाते पैग़म्बर अली (अ.) ही ने इस्लाम को परवान चढ़ाया था। हर महलके में इस्लाम ही के लिये लड़े थे।

अली(अ.) ने इस्लाम के लिये कभी अपनी जान की परवाह नहीं की थी। भला अली (अ.) से यह क्योंकर मुम्किन हो सकता था कि रसूले करीम(स.) के इन्तेक़ाल के बाद वह तलवार उठा कर इस्लाम को तबाह कर देते और सरवरे कायनात की मेहनत और अपनी मशक़्क़त को अपने लिये तबाह व बरबाद कर देते। इस्तेआब अब्दुलबर जिल्द १, पृष्ठ १८३ तबा हैदराबाद में है कि हज़रत अली(अ.) फ़रमाते हैं कि मैंने लोगों से यह कह दिया था कि देखो रसूल अल्लाह (स.) का इन्तेक़ाल हो चुका है, और ख़िलाफ़त के बारे में मुझसे कोई नज़ा न करे क्योंकि हम ही उसके वारिस हैं। लेकिन क़ौम ने मेरे कहने की परवाह न की। ख़ुदा की क़सम अगर दीन में तफ़रेक़ा पड़ जाने और अहदे कुफ़्र के पलट आने का अन्देशा न होता तो मैं उनकी सारी कारवाईयां पलट देता। (फ़तेहुल बारी, शरह बुख़ारी, जिल्द ४, पृष्ठ २०४ की इबारत से वाज़े होता है कि हज़रत अली(अ.) ने इस तरह चशम पोशी की जिस तरह कुफ़्र के पलट आने के ख़ौफ़ से हज़रत रसूले करीम(स.) मुनाफ़िक़ों और मुवल्लेफ़तुल कुलूब के साथ करते थे। कन्ज़ुल आमाल,जिल्द ६, पृष्ठ ३३ में है कि आंहज़रत मुनाफ़िक़ों के साथ इस लिये जंग नहीं करते थे कि लोग कहने लगेंगे कि मोहम्मद(स.) ने अपने असहाब को क़त्ल कर डाला। किताब मुअल्लिमुल तन्ज़ील, सफ़ा ४१२, सफ़ा ४१४, अहया-अल-उलूम जिल्द ४, सफ़ा ८८, सीरते मोहम्मदिया, सफ़ा ३५६, तफ़सीरे कबीर जिल्द ४, सफ़ा ६८६, तारीख़े ख़मीस जिल्द २, सफ़ा ११३६, सीरते हल्बिया सफ़ा ३५६, शवाहेदुन नबूवत और फ़तेहुल बारी में है कि आहज़रत ने आएशा से फ़रमाया कि ऐ आएशा " **लौलाहद सान क़ौमका बिलकुफ़्र लेफ़आलत** " अगर तेरी क़ौम ताज़ी कुफ़्र से मुसलमान न होती तो मैं इसके साथ वह करता जो करना चाहिये था।

हज़रत अली(अ.) और रसूले करीम(स.) के अहद में कुछ ज़्यादा फ़र्क़ न था जिन वजूह की बिना पर रसूल(स.) ने मुनाफ़िक़ों से जंग नहीं की थी। उन्हीं वजूह की बिना पर हज़रत अली(अ.) ने भी तलवार नहीं उठाई। (कंज़ुल अमाल, जिल्द ६, सफ़ा ६६, किताब ख़साएसे सियूती जिल्द २, सफ़ा १३८, व रौज़तुल अहबाब जिल्द १, सफ़ा ३६३, इज़ालतुल ख़फ़ा जिल्द १, सफ़ा १२५ वगैरा में मुख़तलिफ़ तरीक़े से हज़रत की वसीयत का ज़िक्र है और इसकी वज़ाहत है कि हज़रत अली(अ.) के साथ क्या होना है और अली(अ.) को उस वक़्त क्या करना है। चुनान्चे हज़रत अली(अ.) ने इस हवाले के बाद कि मेरी जंग से इस्लाम मन्ज़िले अव्वल में ही ख़त्म हो जायेगा। मैंने तलवार नहीं उठाई। यह फ़रमाया कि ख़ुदा की क़सम मैंने उस वक़्त का बहुत ज़्यादा ख़याल रखा कि रसूले ख़ुदा(स.) ने मुझसे अहदे ख़ामोशी व सब्र ले लिया था। तारीख़े आसम कूफ़ी सफ़ा ८३, तबा बम्बई में हज़रत अली(अ.) की वह तक़रीर मौजूद है जो आपने ख़िलाफ़ते उस्मान के मौक़े पर फ़रमाई है। हम उसका तरजुमा आसम कूफ़ी उर्दू तबा देहली के सफ़ा ११३, से नक़ल करते हैं। ख़ुदाए जलील की क़सम अगर मोहम्मद रसूल अल्लाह(स.) हम से अहद न लेते और हमको इस अमर से मुत्तेला न कर

चुके होते जो होने वाला था तो मैं अपना हक़ कभी न छोड़ता और किसी शख़्स को अपना हक़ न लेने देता। अपने हक़ को हासिल करने के लिये इस क़दर कोशिशे बलीग़ करता कि हुसूले मतलब से पहले मरज़े हलाकत में पड़ने का भी ख़याल न करता। इन तमाम तहरीरों पर नज़र डालने के बाद यह अमर रोज़े रौशन की तरह वाज़े हो जाता है कि हज़रत अली (अ.) ने जंग क्यों नहीं की और सब्र व ख़ामोशी को क्यों तरजीह दी।

मैंने अपनी किताब " **अल ग़फ़ारी** " के सफ़ा १२१ पर हज़रत अबू ज़र के मुताअल्लिक़ अमीरल मोमेनीन हज़रत अली(अ.)के इरशाद **"व अला अलमन इज्ज़ फ़िहा"** की शरह करते हुये इमामे अहले सुन्नत इब्ने असीर जज़री की एक इबारत तहरीर की है जिसमें हज़रत अली(अ.) की जंग न करने की वजह पर रौशनी पड़ती है। वह यह है।

निहायतुल लुग़त इब्ने असीर जज़री के सफ़ा २३१ में है। " **अल एजाज़ जमा इज्ज़ व हू मोख़राशी यरीद बेहा आख़िरूल अमूर** " एजाज़ इज्ज़ की जमा है जिसके मानी मोखरशी के हैं और जिसका मतलब आख़िर उमूर तक पहुंचने से मुताअल्लिक़ है। इसके बाद अल्लामा जज़री लफ़्ज़े एजाज़ की शरह करते हुये हज़रत अली(अ.) की एक हदीस नक़ल फ़रमाते हैं " **वमन हदीस अली लना हक़ अन नाता नाख़ज़ा व अन नमनआ नरकब एजाज़ अल बल व अन ताका सरा** " आप फ़रमाते हैं ख़िलाफ़त हमारा हक़ है अगर दे दिया गया तो ले लेंगे और अगर हमें रोक दिया यानी हमें न दिया गया तो हम एजाज़े अबल पर सवारी करेंगे। यानी आख़िर तक अपने इस हक़ के लिये जद्दो जेहद जारी रखेंगे और उसमें मुद्दत की परवाह न करेंगे, यहां तक कि उसे हासिल कर लें। यही वजह है कि " **सलम व सब्र अल्ल ताख़ीर वलम यक़ातल व इननमा क़ातल बाद एन्आक़ाद अल इमामता** " दिल तंग और सब्र के आख़िर तक बैठे रहे और ख़ुलफ़ाए वक़्त से जंग नहीं की। फिर जब उन्होंने इमामत (ख़िलाफ़त) हासिल कर ली तो उसे सही उसूलों पर चलाने के लिये ज़ुरूरी समझा।

हज़रत अली(अ.) का क़ुरआन पेश करना :- नूरूल अबसार इमाम शबलन्जी में है कि हज़रत अली(अ.) ने रसूले करीम(स.) के ज़माने में क़ुरआने मजीद जमा करके आंहज़रत की ख़िदमत में पेश किया था। जिल्द १, सफा ७३, सवाएक़े मोहर्रेक़ा, सफ़ा ७६ में है कि जब आपको बैय्यते अबू बक्र के लिये मजबूर किया गया और कहा गया, तो आपने फ़रमाया कि मैंने क़सम खाई है कि जब तक क़ुरआने मजीद को मुकम्मल तौर पर जमा न कर लूँगा, रिदा न ओढूँगां (एतक़ाने सियूती सफ़ा ५७) हबीब अल सियर जिल्द १, सफ़ा ४, में है कि अली(अ.) का क़ुरआन तन्ज़ील के मुताबिक़ था। बेहारूल अनवार,व मनाक़िब जिल्द २, सफ़ा ६६ में है कि अमीरूल मोमेनीन ने पूरा क़ुरआन जमा करने के बाद उसे चादर में लपेटा और ले कर मस्जिद में पहुँचे और हज़रत अबू बक्र से कहा कि यह क़ुरआन है जिसे मैंने तन्ज़ील के मुताबिक़ जमा किया है और जो आं हज़रत की नज़र से गुज़र चुका है, इसे

ले लो और राएज कर दो। आपने यह भी कहा कि मैं इसे इस लिये पेश कर रहा हूँ कि मुझे आंहज़रत ने हुक्म दिया था कि एतमामे हुज्जत के लिये पेश करना । किताब फ़सल-अल-ख़त्ताब में है कि उन्होंने जवाब दिया कि इसे वापस ले जाओ। हमें तुम्हारे कुरआन की ज़ुरूरत नहीं है। अल्लमा सियोती तारीखुल खुलफ़ा के सफ़ा १८४ में इब्ने सीरीन का क़ौल नक़ल करते हुये लिखते हैं कि अगर वह कुरआन क़ुबूल कर लिया गया होता तो लोगो को बे इन्तेहा फ़ाएदा पहुँचता।

हज़रत अली(अ.) के मोहाफ़िज़े इस्लाम मशवेरे :- यह मुसल्लेमा हक़ीक़त है कि अपने पेश रौ हज़रात खुलेफ़ा को ग़ादर, ख़ाएन, काज़िब, आसिम समझते थे। (सही मुस्लिम,जिल्द २, सफ़ा ६१, तबा नवलकिशोर) और उनकी सीरत से इस दरजा बेज़ार थे कि मौक़ए तक़र्रूरे ख़िलाफ़त हज़रत उस्मान,सीरते शेख़ैन की शर्त की वजह से तख़्त छोड़ना गवारा किया था। लेकिन इस से इन्कार नहीं किया जा सकता कि हज़रत अली (अ.) अपने ज़ाती जज़्बात पर खुदा व रसूल(स.) के जज़्बात को मुक़द्दम रखते थे। अमरो बिन अब्दवुद ने जब जंगे ख़न्दक़ में आपके चेहरए मुबारक के साथ लोआबे दहन से बे अदबी की थी और आपको गुस्सा आ गया था तो आप सीने से उतर आये थे, ताके कारे खुदा में अपना ज़ाती गुस्सा शामिल न हो जाय। यही वजह थी कि आप दिल तंग और नाराज़ होने के बावजूद तहफ़्फ़ुज़े वक़ारे इस्लाम की ख़ातिर खुलफ़ा को अपने मुफ़ीद मशवरों से नवाज़ते रहे। मिसाल के लिये मुलाहेज़ा हो।

(१) क़ैसरे रोम ने दूसरे ख़लीफ़ा से सवाल कर दिया कि आपके कुरआन में कौन सा सूरा है जो सिर्फ़ सात आयतों पर मुशतमिल है और इसमें सात हुरूफ़, हुरूफ़े तहज्जी के नहीं हैं। इस सवाल से आलमे इस्लाम में हलचल मच गई। हुफ़्फ़ाज़ ने बहुत ग़ौरो फ़िक्र के बाद हथियार डाल दिये। हज़रत उमर ने हज़रत अली(अ.) को बुलवा भेजा और यह सवाल सामने रखा, आपने फ़ौरन इरशाद फ़रमाया कि वह सूरए हम्द है। इस सूरे में सात आयतें हैं और इसमें **(से, जीम, ख़े, ज़े, शीन, ज़ोय, फ़े)** नहीं हैं।

(२) उलमाए यहूद ने दूसरे ख़लीफ़ा से असहाबे कहफ़ के बारे में चंद सवालात किये, आप उनका जवाब न दे सके और आपने अली(अ.) की तरफ़ रूजु की , हज़रत ने ऐसा जवाब दिया कि वह पूरे तौर पर मुतमइन हो गये। हज्रे अस्वद के बोसा देने पर हज़रत अली(अ.) ने जो बयान दिया है उस से हज़रत उमर की पशेमानी, बुदूरे साफ़रा सियूती में मौजूद है।

(३) एहदे अव्वल में नीज़ अहदे सानी की इब्तेदा में शराब पीने पर (४०)चालीस कोड़े मारे जाते थे। हज़रत उतर ने यह देख कर कि इस हद से रोब नहीं जमता और कसरत से शराब पी रहे हैं, हज़रत अली(अ.) से मशवेरा किया, आपने फ़रमाया कि चालीस के बजाय (८०) अस्सी कोड़े कर दिये जायें, और उसके लिये यह दलील पेश की कि जो शराब पीता

है वह नशे में होता है, और जिसको नशा होता है, वह हिज़यान बकता है, और जो हिज़यान बकता है वह इफ़्तेरा करता है। **" व अली अल मुफ़्तरी समानून "** और इफ़्तेरा करने वालों की सज़ा अस्सी कोड़े हैं। लेहाज़ा शराबी को भी अस्सी कोड़े मारने चाहिये। हज़रत उमर ने इसे तस्लीम कर लिया। (मतालेबुल सुवेल, सफ़ा १०४)

(४) एक हामेला औरत ने ज़ेना किया हज़रत उमर ने हुक्म दिया कि उसे संगसार किया जाय। हज़रत अली(अ.) ने फ़रमाया कि ज़ेना औरत ने किया है लेकिन वह बच्चा जो पेट में है, उसकी कोई ख़ता नहीं, लेहाज़ा औरत पर उस वक़्त हद जारी की जाय जब वज़ए हमल हो चुके। हज़रत उमर ने तसलीम कर लिया और साथ ही साथ कहा।

" लौला अली लहका उमर "

(५) जंगे रूम में आपने जाने के मुताअल्लिक़ हज़रत उमर ने हज़रत अली(अ.) से मशवेरा किया।

(६) जंगे फ़ारस में भी खुद शरीके जंग होने के मुताअल्लिक़ हज़रत अली (अ.) से मशवेरा लिया। मुवर्रेख़ीन का इत्तेफ़ाक़ है कि हज़रत अली(अ.) ने हज़रत उमर को खुद जंग में जाने से रोका और फ़रमाया कि अगर आप शहीद हो जायेंगे तो कसरे शाने इस्लाम होगी। हजरत अली(अ.) के मशवेरे पर हज़रत उमर बहादुरों के मुसलसल ज़ोर देने के बावजूद जंग में शरीक न हुये। मेरा ख़याल है कि हज़रत अली(अ.) ने निहायत ही साएब मशवेरा दिया था। क्योंकि वह जंगे बद्र और ख़ैबर, ख़न्दक़ के वाक़ेयात व हालात से वक़िफ़ थे। अगर खुदा ना ख़ासता मैदान छूट जाता तो यक़ीनन कसरे शाने इस्लाम होती। अगर शहादत से कसरे शाने इस्लाम का अन्देशा होता तो हज़रत अली(अ.) सरवरे कायनात(स.) को भी मशवेरा देते कि आप किसी जंग में खुद न जाइये।

तारीख़ में है कि वह बराबर जाते और ज़ख़्मी होते रहे। **" ओहद "** में तो जान ही ख़तरे में आ गई थी।

(७) **मिस्टर अमीर अली** तारीखे़ इस्लाम में लिखते हैं कि हज़रत अली(अ.) के मशवेरे से ज़मीन की पैमाईश की गई और माल गुज़ारी का तरीक़ा राएज किया गया।

(८) आप ही के मशवेरे से सन् हिजरी क़ायम हुआ।

मशवेरों के मुताअल्लिक़ उलमाए इस्लाम की रायें :- अल्लामा इब्ने अबिल हदीद लिखते हैं कि जब हज़रते उमर ने चाहा कि खुद जंगे रोम व ईरान में जायें तो हज़रत अली(अ.) ही ने उनको मुफ़ीद मशवेरा दिया। जिसको हज़रत उमर ने शुकरिये के साथ क़ुबूल किया और वह अपने इरादे से बाज़ रहे और हज़रत उस्मान को भी ऐसे क़ीमती मशवेरे दिये जिनको अगर वह क़ुबूल कर लेते तो उन्हें हवादिसो आफ़ात का सामना न करना पड़ता। उबैद उल्लाह अमरतसरी लिखते हैं कि तमाम मुवर्रेख़ीन मुत्तफ़िक़ हैं कि इस्लाम में हज़रत उमर से ज़्यादा कोई ख़लीफ़ा मुदब्बिर पैदा नहीं हुआ इसकी ख़ास वजह यह थी कि हज़रत उमर

हर बाब में हज़रत अली(अ.) से मशवेरा लेते थे। (अर हज-अल-मतालिब, सफ़ा २२७) मिस्टर अमीर अली लिखते हैं कि हज़रत उमर के अहदे हुकूमत में जितने काम रेफ़ाहे आम के हुये हैं वह सब हज़रत अली(अ.) के सलाह व मशवेरे से अमल में आये। (तारीख़े इस्लाम)

मशवेरों के अलावा जानी इमदाद :- हज़रत अली(अ.) ने सिर्फ़ मशवेरों ही से अहदे गोशा नशीनी में इस्लाम की मदद नहीं की बल्कि जानी ख़िदमात भी अंजाम दी हैं। मिसाल के लिये अर्ज़ है कि जब फ़तेह मिस्र का मौक़ा आया तो हज़रत अली(अ.) ने अपने ख़ानदान के नौजवानों को फ़ौज में भरती कराया और उनके ज़रिये से जंगी ख़िदमात अन्जाम दियें। शेख़ मोहम्मद इब्ने मोहम्मद बिन मआज़ मम्लकते मिस्र में मुस्लमानों की फ़तूहात के सिलसिले में कहते हैं कि मुबारकबाद के क़ाबिल हैं हज़रत अली(अ.) कि भतीजे और दामाद **"मुस्लिम बिन अक़ील"** और उनके भाई जिन्होंने महाज़े मिस्र में सख़्त जंग की और इस दरजा ज़ख़्मी हुये कि ख़ून उनकी ज़िरह पर से जारी था, और ऐसा मालूम होता था कि ऊँट के जिगर के टुकड़े हैं। (मुलाहेज़ा हो किताब फ़तूहात, सफ़ा ६४, तबा बम्बई, १२८६ ई०) इसी तरह फ़तेह " **शुशतर** " के मौक़े पर १७० हिजरी में आपके भतीजे मोहम्मद इब्ने जाफ़र और औन बिन जाफ़र शहीद हुये। तारीख़े इस्लाम जिल्द ३, सफ़ा ८१, बा हवाला तारीख़े कामिल व इस्तियाब।

हज़रत अली(अ.) और इस्लाम में सड़कों की तामीरी बुनियाद

हज़रत अली(अ.) बज़ाते खुद सिराते मुस्तक़ीम थे और आपको रास्तों से ज़्यादा दिलचस्पी थी। आप फ़रमाते थे कि मैं ज़मीन व आसमान के रास्तों से वाक़िफ़ हूँ। हाफ़िज हैदर अली क़लन्दर सीरते अलविया में लिखते हैं कि जज़िये का माल व रूपया लशकर की आरास्तगी, सरहद की हिफ़ाज़त और क़िलों की तामीर में सर्फ़ होता था और जो उससे बच रहता था वह सड़को पुलों की तय्यारी और सरिशतये तालीम के काम में आता था।

(एहसनुल इन्तेख़ाब, सफ़ा ४८८, तबा लखनऊ, १३५१, हिजरी)

इसी सीरते अलविया की रौशनी में फ़िक़्ही किताबों में सड़क की तामीर की तरफ़ लफ़्जे " **फ़ी सबी लिल्लाह** " से इशारा किया गया है। (शराए-अल-इस्लाम, तबा, ईरान, १२०७ ई०) में है कि फ़ी सबी लिल्लाह से मुराद मख़सूस जंगी एख़राजात हैं और एक क़ौल है कि इसमें रास्तों और पुलों की तामीर, ज़ायरों की इमदाद, मस्जिदों की मरम्मत भी शामिल है, और मुजाहिद को चाहे वह अपने मामेलात में ग़नी ही क्यों न हो इमदाद देनी ज़ुरूरी है। सबील माने रास्ते के हैं और इसकी इज़ाफ़त अल्लाह की तरफ़ देने से बाहवाला मज़कूरा साबित होता है कि सड़क की तामीर को भी ख़ास अहमियत हासिल है। इसी लिये हज़रत अली(अ.) ने सड़क की तामीर में पूरे इनहेमाक का सुबूत दिया है। अल्लामा हाशिम

बहरैनी किताब मदीनतुल मआजिज़ के सफ़ा ७६, पर बाहवाला इब्ने शहरे आशोब तहरीर फ़रमाते हैं कि हज़रत अली(अ.) ने १७, मील तक अपने हाथों से ज़मीन हमवार की और सड़क की तामीर फ़रमाई और हर मील पर पत्थर नस्ब करके उन पर **(हाज़ा मीले अली)** तहरीर फ़रमाया। चूंकि इस ज़माने में नक़्लो हमल का कोई ज़रिया न था इस लिये इन वज़नी पत्थरों को जिन्हें बड़े क़वी हैकल लोग उठा न सकते थे, हज़रत अली(अ.) खुद उठा कर ले जाते थे और नस्ब करते थे और उठाने की शान यह थी कि दो पत्थरों को हाथों में ले लेते थे और एक को पैरों की ठोकरों से आगे बढ़ाते थे। इसी तरह तीन तीन पत्थर ले जाकर हर मील पर संगे मील नस्ब करते थे। अल्लामा शिब्ली ने हज़रत उमर के मोहक्मए जंगी की ईजाद को अल-फ़ारूक़ में बड़े शद्दो मद से लिखा है, लेकिन हज़रत अली(अ.) की इस अहम रिफ़ाही ख़िदमत का कहीं भी कोई ज़िक्र नहीं किया, हालांकि हज़रत अली(अ.) की यह वह बुनियादी ख़िदमत है, जिसका जवाब ना मुमकिन है।

हज़रते उस्मान की ख़िलाफ़त और वफ़ात :- मुवर्रेख़ीन का इत्तेफ़ाक़ है कि हज़राते शेख़ैन की वफ़ात के बाद मसलए ख़िलाफ़त फिर ज़ेरे बहस लाया गया और हज़रत अली (अ.) से कहा गया कि आप सीरते शेख़ैन पर अमल पैरा होने का वायदा कीजिये, तो आपको ख़लीफ़ा बना दिया जाय। आपने फ़रमाया कि मैं ख़ुदा व रसूल(स.) और अपनी साएब राय पर अमल करूंगा, लेकिन सीरते शेख़ैन पर अमल नहीं कर सकता।(तबरी जिल्द ५, सफ़ा ३७, व शरह फ़िक़हे अकबर, सफ़ा ८०,और तारीख़ुल क़ुरआन,सफ़ा ३६,तबा जद्दा) इस फ़रमाने के बाद लोगों ने इसी इक़रार के ज़रिये हज़रत उस्मान को ख़लीफ़ा बना दिया। हज़रत उस्मान ने अपने अहदे ख़िलाफ़त में ख़ुवेश परवरी, अक़रेबा नवाज़ी की। बड़े बड़े असहाबे रसूल(स.) को जिला वतन किया। बैतुल माल के माल में बेजा तसर्रूफ़ किया। अपनी लड़की के लिये महल तामीर कराये। मरवान बिन हकम को अपना दामाद और वज़ीरे आज़म बना लिया। हालांकि रसूल अल्लाह(स.) उसे शहर बदर कर चुके थे, और शेख़ैन ने भी इसे दाख़िले मदीना नहीं होने दिया था। फ़िदक इसके हवाले कर दिया। बाज़ मोअज़्ज़िज असहाब को पिटवाया। गुज़रे हुये अहद में जो क़ुरआन राएज थे उन्हें जमा करके जला दिया। जिन असहाब ने अपने क़ुरआन न दिये थे उन्हें मस्जिद में इतना पिटवाया कि पसलियां टूअ गईं। हज़रत आयशा उम्मुल मोमेनीन का वज़ीफ़ा बन्द कर दिया और हज़रत मोहम्मद इब्ने अबी बक्र को क़त्ल कर देने की पूरी साज़िश की। इन्हीं हालात की वजह से नतीजा यह बरामद हुआ कि हज़रत आयशा ने लोगों को हुक्म दिया कि **"अक़तलू नासल"** इस लम्बी डाढ़ी वाले को क़त्ल कर दो। (रौज़तुल अहबाब, जिल्द ३, सफ़ा १२-२०, मजमउल बिहार, सफ़ा ३७२, नहाया इब्ने असीर सफ़ा १६६) इस फ़रमाने के बाद आप हज को तशरीफ़ ले गईं । आपके जाने के बाद लोगों ने उस्मान को क़त्ल कर डाला। जब आपको मक्के में क़त्ले उस्मान की ख़बर मिली तो आप बहुत खुश हुईं। मुवर्रेख़ीन ने लिखा है कि आपके जनाज़े पर हज़रत

अली(अ.) मदीने में होने के बावजूद नमाज़े जनाज़ा न पढ़ सके। आपकी लाश कूड़े पर डाल दी गई, और कुत्तों ने एक टांग खा ली।(तारीख़े आसम कूफ़ी) अलगरज़ आप १८,ज़िल्हिज्जा, सन् ३५ हिजरी यौमे जुमा ८८, साल की उम्र में क़त्ल होकर यहूदियों के क़बरस्तान (ख़शे कौकब) में दफ़न हुये।

हज़रत अली(अ.) की ख़िलाफ़ते ज़ाहेरी

पैग़म्बरे इस्लाम के इन्तेक़ाल के बाद से हज़रत अली(अ.) गोशा नशीनी के आलम में फ़राएज़े मन्सबी अदा फ़रमाते रहे। यहां तक कि ख़िलाफ़त के तीन दौरे इस्लाम की तक़दीर के चक्कर बन कर गुज़र गये और ३५ ई० में तख़्ते ख़िलाफ़त ख़ाली हो गया। २३,२४ साल की मुद्दते हालात को परखने और हक़ व बातिल के फ़ैसले के लिये काफ़ी होती है। बिल आख़िर असहाब इस नतीजे पर पहुँचे कि तख़्ते ख़िलाफ़त हज़रत अली(अ.) को बिला शर्त हवाले कर देना चाहिये। चुनांचे असहाब का एक अज़ीम गिरोह हज़रत अली(अ.) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। इस गिरोह में ईराक़, मिस्र, शाम, हिजाज़, फिलस्तीन और यमन के नुमाइन्दे शामिल थे। उन लोगों ने ख़िलाफ़त क़ुबूल करने की दरख़्वास्त की।

हज़रत अली(अ.) ने फ़रमाया मुझे इसकी तरफ़ रग़बत नहीं है। तुम किसी और को ख़लीफ़ा बना लो। इब्ने ख़लदून का बयान है, कि जब लोगों ने इस्लाम के अन्जाम से हज़रत को डराया,तो आपने रज़ा ज़ाहिर फ़रमाई। नहजुल बलाग़ा में है कि आपने फ़रमाया कि मैं ख़लीफ़ा हो जाऊँगा तो तुम्हें हुक्मे ख़ुदा वन्दी मानना पड़ेगा। बहर हाल आपने ज़ाहेरी ख़िलाफ़त क़ुबूल फ़रमा ली। मुसन्निफ़ बिरीफ़ सरवे ने लिखा है कि अली(अ.) ६५५ ई० में तख़्ते ख़िलाफ़त पर बिठाये गये। जो हक़ीक़त के लेहाज़ से रसूल(स.) के बाद ही होना चाहिये था(तारीख़े इस्लाम, जिल्द ३, सफ़ा २६) रौज़तुल अहबाब में है कि ख़िलाफ़ते ज़ाहिरया क़ुबूल करने के बाद आपने जो पहला ख़ुतबा पढ़ा उसकी इब्तेदा इन लफ़्ज़ों से थी। " **अलहम्दो लिल्लाह अला एहसाना क़द रजअल हक़ अला मकानेह** " ख़ुदा का लाख, लाख शुक्र और उसका एहसान है कि उसने हक़ को अपने मरकज़ और मकान पर फिर ला मौजूद किया। तारीख़े इस्लाम और जामए अब्बासी में है कि १८, ज़िलहिज्जा को हज़रत अली(अ.) ने ख़िलाफ़ते ज़ाहेरी क़ुबूल फ़रमाई, और २५, ज़िल हिज्जा ३५, हिजरी को बैयते आम्मा अमल में आई। इन्साइकिलोपीडिया बरटानिका में है कि जब मोहम्मद साहब(स.) ने इन्तेक़ाल फ़रमाया, तो अली(अ.) में मज़हबे इस्लाम के मुसल्लम-अल-सुबूत सरदार होने के हुक़ूक़ मौजूद थे। लेकिन दूसरे तीन साहब अबू बक्र, उमर व उस्मान ने जाये ख़िलाफ़त पर क़ब्ज़ा कर लिया और अली(अ.) मुलक़्क़ब बा ख़लीफ़ा न हुये लेकिन बादे उस्मान ६५६ हिजरी में अली(अ.) ख़लीफ़ा हो गये,अली(अ.) के अहदे ख़िलाफ़त में सबसे पहला काम तलहा व ज़ुबैर

ी बग़ावत को फ़रो करना था। जिन्हें बी बी आयशा ने बहकाया था। आयशा अली(अ.) की ख़्त दुश्मन थीं और ख़ास उन्हीं की वजह से अली(अ.) अब तक ख़लीफ़ा न हो सके थे। (मोहज़्ज़ब मुकालेमा, सफ़ा ३४) मुवर्रिख़ "जरजी ज़ैदान" लिखते हैं कि " अगर हज़रत उमर के ज़माने में जब लोगों के दिलों में नबूवत की दहशत और रिसालत की हैबत क़ायम थी और सच्चा दीन क़ायम था। हज़रत अली(अ.) मुसलमानों के हाकिम मुक़र्रर होते तो आपकी हुकूमत और सियासत कहीं बेहतर और आला साबित होती, और आपके कामों में ज़र्रा बराबर भी ज़ोफ़ ज़ाहिर न होता। लेकिन इसको क्या किया जाय कि आपके पास ख़िलाफ़त की ख़िदमत उस वक़्त आई जब लोगों की नियतें फ़ासिद हो गई थीं और इन्तेज़ामाते मुल्की और उसूली हुकूमत के मुताल्लिक़ वालियों और मातहतों के दिलों में हिरस व तमा पैदा हो गई थी और इन सबसे ज़्यादा तम्मअ और मक्कार माविया इब्ने अबू सुफ़ियान था। क्योंकि इसने अपनी हुकूमत जमाने के लिये लोगों को धोका, फ़रेब दे कर उनके साथ मक्र व हीला करके और मुस्लमानों का माल बे दरेग़ लुटा कर लोगों को अपनी तरफ़ कर लिया था।

(तारीख़-अल-तमद्दुन-अल-इस्लामी, ४, सफ़ा ३७, तबा मिस्र)

फ़ाज़िल माअसर सैय्यद इब्ने हसन जारचोई लिखते हैं कि अगर अली(अ.) रसूल(स.) के बाद ही ख़लीफ़ा तसलीम कर लिये जाते तो दुनिया मिनहाजे रिसालत पर चलती और राहवारे सलतन्त व हुकूमत दीने हक़ की शाहराह पर सरपट दौड़ता मगर मसलेहत ओर दूर अन्देशी के नाम से जो आईन व रूसूम हुकमरां जमात का जुज़वे ज़िन्दगी और ओढ़ना बिछोना बन गये थे, उन्होंने अली(अ.) की पोज़ीशन नाहमवार और उनका मौकूफ़ ना इस्तेवार बना दिया था। पिछले दौर की ग़ैर इस्लामी रसमों और इम्तियाज़ पसन्द ज़ेहनियतों की इसलाह करने में उनको बड़ी दिक़्क़त हुई, और फ़िर भी ख़ातिर ख़्वाह कामयाबी हासिल न हो सकी। तबीयतें अदम मसावात की खूगर और माअशरती अदल से कोसों दूर हो चुकी थीं।

अली(अ.) ने बैयत के दूसरे रोज़ बैतुल माल का जायज़ा लिया और सबको बराबर तक़सीम कर दिया। हबशी गुलाम और क़ुरैशी सरदार दोनों को दो-दो दिरहम मिले। इसपर पेशानी पर सिलवटें पड़ने लगीं। बनी उमय्या को इस दौर में अपनी दाल गलते नज़र न आई। कुछ माविया से जा मिले, कुछ उम्मुल मोमेनीन आयशा के पास मक्के जा पहुँचे। आसम कूफ़ी का बयान है कि आयशा हज से वापस आ रही थीं कि उन्हें क़त्ले उस्मान की ख़बर मिली। उन्होंने निहायत इश्तियाक़ से पूछा कि अब कौन ख़लीफ़ा हुआ। कहा गया " **अली** " यह सुन कर बिलकुल ख़ामोश हुईं। अब्दुल्लाह इब्ने सलमा ने कहा, क्या आप उस्मान की मज़म्मत और अली(अ.) की तारीफ़ नहीं करती थीं। अब नाख़ुशी का सब्ब क्या है? फ़रमाया आख़िर वक़्त में उसने तौबा कर ली थी। अब उसका क़सास चाहती हूँ। इब्ने ख़ल्दून का बयान है कि आयशा ने एलान कराया कि जो शख़्स इस्लाम की हम्दर्दी करना और ख़ूने उस्मान का बदला लेना चाहता हो और उसके पास सवारी न हो, वह आय उसे सवारी

159

दी जायगी। “ **बिरीफ़ सरवे आफ़ हिस्ट्री** ” में है कि आयशा जो अली(अ.) की पुरानी और हमेशा की दुश्मन थीं । अदावत में इस क़द्र बढ़ गईं कि उनके माज़ूल करने के लिये एक फ़ौज जमा कर ली।

हज़रत अली(अ.) को एक दूसरी दिक़्क़त यह दरपेश थी कि सारा आलमे इस्लाम इन उमवी आमिलों और हाकिमों से तंग आ गया था। जो हज़रत उस्मान के अहद में मामूर थे, अगर अली(अ.) उनको बदस्तूर रहने देते तो हुकूमत के बावजूद जमहूर को चैन न मिलता, और अगर हटाते हैं तो मुख़ालिफ़ों की तादाद में इज़ाफ़ा करते हैं। हुक्काम व आमिल मुद्दत से खुदसरी के आदी और बैतुलमाल को हज़्म करने के ख़ूगर हो चुके थे। अकसर उन्में ऐसे थे जिनके बाप दादा अज़ीज़ व अक़रोकबा अली(अ.) की तलवार से मौत के घाट उतर चुके थे। या अली(अ.) के खरे और बे लौस अदलो इन्साफ़ का तमाशा देख चुके थे। उनको नज़र आ रहा था कि अली(अ.) हैं तो हम नहीं रह सकते और रहे भी तो मन मानी नहीं कर सकते। उन्होंने वह कमीं गाह तलाश की जहां बैठ कर वह दामादे रसूल(स.) पर तीर चला सकें, और वह मोरचे बनाये और वह घाटियां खोदीं जिनकी आड़ में छुप कर वह नई हुकूमत को जड़ से उखाड़ सकें।

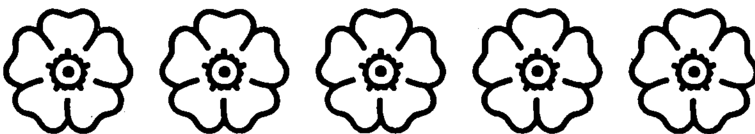
तलहा व ज़ुबैर जो ख़ुद हुकूमत के ख़वाहां और ख़िलाफ़त के आरज़ू मन्द थे और हज़रत आयशा की हिमायत और मद्द उनको हासिल थी। पहले तो अली(अ.) से बैयत कर बैठे, फिर लगे उनसे साज़िशें करने। एक दिनआये और बसरे व कूफ़े की हुकूमत तलब करने लगे। हज़रत अली(अ.) ने कहा मुझे तुम्हारी ज़ुरूरत है, मदीने में रहो और रोज़ मर्रा के कारोबारे हुकूमत में मेरी मद्द करो। दूसरे दिन वह मक्का जाने की इजाज़त मांगने आये। वाशिंगटन एयरविंग लिखता है, ऐसी हालत में कि लब पर तक़्वा और दिल में मक्र था। यह आयशा से जा मिले जो मुख़ालेफ़त के लिये तैय्यार थीं। यही मुवर्रिख़ लिखता है।

अली(अ.) ख़लीफ़ा हो गये लेकिन देखते थे कि उनकी हुकूमत जमी नहीं है। गुज़शता ख़लीफ़ा के ज़माने में बहुत सी बद उनवानियां पैदा हो गई थीं जिनमें इस्लाह की ज़ुरूरत थी, और बहुत से सूबे उन लोगों के हाथ में थे जिनकी वफ़ादारी पर उनको मुतलक़न एतेमाद न था। उन्होंने इस्लाहे आम का इरादा किया। पहली इस्लाह यह थी कि गवरनर हटा दिये जायें। लोगों ने उनके इस अमल की मोआफ़ेक़त न की मगर अली(अ.) ने न माना।

गवरनरों की तक़र्रुरी :- और गवरनरों की तक़र्रुरी फ़रमा दी। आपने हालाते हाज़रा के पेशे नज़र इस ओहदे पर ज़्यादा उन लोगों को फ़ाएज़ किया जिन पर आपको कामिल एतेमाद था और जो अहदे साबिक़ में अपने हुक़ूक़े सरदारी से महरूम रखे गये थे। आपने **अब्दुल्लाह** को “ **यमन** ” का ,**सईद** को “ **बहरैन** ” का **समाआ** को “ **तहामा** ” का **औन** को “ **मियामा** ” का **क़सम** को “ **मक्के** ” का **क़ैस** को “ **मिस्र** ” का **उस्मान बिन हनीफ़** को “ **बसरे** ” का **अम्मार** को “ **कूफ़े** ” का और **सहल** को “ **शाम** ” का गवरनर मुक़र्रर

फ़रमा दिया। हज़रत अली(अ.) को सलाह दी गई कि वह माविया को अपनी जगह रहने दें। मगर अली(अ.) ने ऐसी सलाहों पर तवज्जो न की, और क़सम खाई कि मैं रास्ती से मुन्हरिफ़ उमूर पर अमल न करूंगा। एहसान अल्लाह अब्बासी तारीख़े इस्लाम में लिखते हैं। अली (अ.) ने सीधे तौर पर जवाब दिया कि मैं उम्मते रसूल(स.) पर बुरे लोगों को हुक्मरां नहीं रख सकता। अल्लामा जरजी ज़ैदान तारीख़े तमद्दुने इस्लामी में लिखते हैं। " यह अम्र पहले मालूम हो चुका है कि अबू सुफ़ियान और उसकी औलाद ने महज़ मजबूरी के आलम में इस्लाम कुबूल किया था। क्योंकि उनको अपनी कामयाबी से मायूसी हो चुकी थी। इसलिये माविया को ख़िलाफत की आरज़ू महज़ दुनियावी अग़राज़ की वजह से पैदा हुई। कुरैश के चन्द चीदा-चीदा सरदार उनके पास जमा हो गये। अग़राज़े नफ़सानी की बिना पर मन्सबे ख़िलाफ़त का ख़ानदाने बनी हाशिम में जाना उनको बहुत शाक़ गुज़र रहा था "।

आमिल हटते गये और कुछ माविया के पास शाम में और कुछ उम्मुल मोमेनीन आयशा के पास मक्के में जमा होते गये। तलहा व ज़ुबैर मक्के जाकर उम्मुल मोमेनीन से मिले और " **इन्तेक़ामे उस्मान** " के नाम से एक तहरीक उठाई । अब्दुल्लाह इब्ने आमिर और लैला इब्ने उमैय्या ने जो माज़ूल गवरनर थे और बैतुलमाल का रूपया लेकर भाग आये थे, माली इम्दाद दी। तारीख़े इस्लाम जिल्द ३, सफ़ा १६६ में है कि बा रवायत साहबे रौज़तुल अहबाब व इब्ने ख़लदून, इब्ने असीर लैला ने जनाबे आयशा को साठ हज़ार (६०,०००) दीनार जो छः लाख (६,०००००) दिरहम होते हैं और छः सौ (६००) ऊँट इस ग़रज़ से दिये कि अली(अ.) से लड़ने की तैय्यारी करें। उन्हीं ऊँटों में एक निहायत उमदा अज़ीम-उल-जुस्सा ऊँट था जिसका नाम " **असकर** " था और जिसकी कीमत ब रवायत मसूदी दो सौ अशरफ़ी थी। मुवर्रेख़ीन का बयान है कि इसी ऊँट पर सवार होकर जनाब उम्मुल मोमेनीन **आयशा**, दामादे रसूल(स.) शौहरे बुतूल अली(अ.) से लड़ीं और इसी ऊँट की सवारी की वजह से इस लड़ाई को " **जंगे जमल** " कहा गया।



जंगे जमल

(३६, हिजरी)

यह मुसल्लेमा हकीक़त है कि हज़रत अली(अ.) क़त्ले उस्मान के बाद १८, ज़िलहिज्जा ३५, हिजरी को तख़्ते ख़िलाफ़त पर मुतमक्किन हुये और आपने अनाने हुकूमत संभालने के बाद सबसे पहला जो काम किया वह क़त्ले उस्मान की तहक़ीक़ात से मुताअल्लिक़ था। "**नायला**" ज़वजए उस्मान अगरचे कोई शहादत न दे सकीं और किसी का नाम न बता सकीं। नीज़ उनके अलावा भी कोई चश्म दीद गवाह न मिल सका, जिसकी वजह से फ़ौरी सज़ाएं दी जायें। लेकिन हज़रत अली(अ.) तहक़ीक़ाते यक़ीनीया का अज़्मे समीम कर चुके थे। अभी आप किसी नतीजे पर न पहुँचने पाये थे कि मक्के में साज़िशें शुरू हो गईं। हज़रत आयशा जो हज से फ़रागत के बाद मदीने के लिये रवाना हो चुकी थीं और ख़िलाफ़ते अली (अ.) की ख़बर पाने के बाद फिर मक्के में जाकर फ़रोकश हो गई थीं। उन्होंने चार यारान,तलहा, ज़ुबैर, अब्दुल्लाह, अबुल याअली के मशवेरे से "**इन्तेक़ाम ख़ूने उस्मान**" के नाम से एक साज़िशी तहरीक की बुनियाद डाल दी, और क़त्ले उस्मान का इल्ज़ाम हज़रत अली(अ.) पर लगा कर लोगों को भड़काना शुरू कर दिया, और इसका एलाने आम करा दिया कि जिसके पास अली(अ.) से लड़ने के लिये मदीना जाने के वास्ते सवारी न हो वह हमें इत्तेला दे, हम सवारी का बन्दो बस्त करेंगे। उस वक़्त अली(अ.) के दुशमनों की कमी नहीं थी। किसी को आपसे बुग़ज़े लिल्लाही था। कोई जंगे बद्र में अपने किसी अज़ीज़ के मारे जाने से मुतास्सिर था। किसी को प्रोपेगन्डे ने मुतास्सिर कर दिया गया था। गरज़के एक हज़ार अफ़राद हज़रत आयशा की आवाज़ पर मक्के में जमा हो गये, और प्रोगेराम बनाया गया कि सबसे पहले बसरे पर छापा मारा जाय। चुनान्चे आप इन्हीं मज़कूरा चारों अफ़राद के मैमने और मैसरे पर मुशतमिल लशकर ले कर बसरे की तरफ़ रवाना हो गईं। आपके साथ अज़वाजे नबी में से कोई भी बीबी नहीं गईं। हज़रत आयशा का यह लशकर जब मुक़ामे "जात-अल-अरक़" में पहुँचा तो मुग़िरा और सईद इब्ने आस ने लशकर से मुलाक़ात की और कहा कि तुम अगर ख़ूने उस्मान का बदला लेना चाहते हो तो तलहा और ज़ुबैर से लो। क्योंकि उसमान के सही क़ातिल हैं, और अब तुम्हारे तरफ़दार बन गये हैं। तवारीख़ में है कि रवानगी के बाद जब मक़ामे "**हवाब**" पर हज़रत आयशा की सवारी पहुंची और कुत्ते भौंकने लगे तो उम्मुल मोमेनीन ने पूछा कि यह कौन सा मुक़ाम है। किसी ने कहा इसे "**हवाब**" कहते हैं। हज़रत आयशा ने उम्मे सलेमा की याद दिलाई हुई हदीस का हवाला देकर कहा कि मैं अब अली(अ.) से जंग के लिये नहीं जाऊँगी। क्योंकि रसूल अल्लाह(स.) ने फ़रमाया था कि मेरी एक बीवी पर "**हवाब**" के कुत्ते भौंकें गे और वह हक़ पर न होगी।

लेकिन अब्दुल्लाह इब्ने ज़ुबैर के ज़िद करने से आगे बढ़ीं, बिल आख़िर बसरे जा पहुँचीं और वहां के अलवी गर्वनर उस्मान बिन हनीफ़ पर शबख़ूं मारा और चालीस आदमियों को मस्जिद में क़त्ल करा दिया और उस्मान बिन हनीफ़ को गिरफ़तार करा के उनके सर, डाढ़ी, मूंछ, भवें और पलकों के बाल नुचवा डाले ओर उन्हें चालीस कोड़े मार कर छोड़ दिया। उनकी मदद के लिये हकीम इब्ने जब्लता आये तो उन्हें भी सत्तर आदमियों समेत क़त्ल कर दिया गया। इसके बाद बैतुलमाल पर क़ब्ज़ा न देने की वजह से सत्तर आदमी और शहीद हुये, यह वाक़्या २५, रबीउस सानी, ३६ हिजरी का है। (तबरी)

हज़रत अली(अ.) को जब इत्तेला मिली तो आपने भी तैय्यारी शुरू कर दी, अभी आप बसरे की तरफ़ रवाना न होने पाये थे कि मक्के से उम्मुल मोमेनीन हज़रत उम्मे सलमा का ख़त आ गया। जिसमें लिखा था कि आयशा हुक्मे ख़ुदा व रसूल(स.) के ख़िलाफ़ आपसे लड़ने के लिये मक्के से रवाना हो गई हैं, मुझे अफ़सोस है कि मैं औरत हूँ , हाज़िर नहीं हो सकती, अपने बेटे उमर बिन अबी सलमा को भेजती हूँ इसकी ख़िदमत क़ुबूल फ़रमायें। (आसम कूफ़ी)

हज़रत अली(अ.) आख़िर रबीउल अव्वल ३६, हिजरी में अपने लशकर समेत मदीने से रवाना हुये। आपने लशकर की अलमदारी मोहम्मदे हनफ़िया के सिपुर्द की और मैमने पर इमाम हसन और मैसरे पर इमाम हुसैन(अ.) को मुताअय्यन फ़रमाया, और सवारों की सरदारी अम्मारे यासिर और पियादों की नुमाइन्दगी मोहम्मद इब्ने अबी बक्र के हवाले की और मुक़दमा तुल जैश का सरदार अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास को क़रार दिया। मक़ामे ज़ब्दा में आपने क़याम फ़रमाया और वहां से कूफ़े के वाली अबू मूसा अश्अरी को लिखा कि फ़ौज रवाना करे, लेकिन चूंकि वह आयशा के ख़त से पहले ही मुतास्सिर हो चुका था लेहाज़ा उसने फ़रमाने अली(अ.) को टाल दिया। हज़रत को मक़ामे ज़ीक़ार पर हालात की इत्तेला मिली, आपने उसे माज़ूल करके क़रज़ा इब्ने का[illegible]ब को अमीर नामज़द कर दिया और मालिके अशतर के ज़रिये से दारूल इमाराह ख़ाली करा लिया। (तबरी) इसके बाद इमाम हसन के हमराह ७,०००(सात हज़ार) कूफ़ी और मालिके अशतर के हमराह १२,०००(बारह हज़ार) कूफ़ी ६,दिन के अन्दर ज़ीक़ार पहुंच गये। इसी मक़ाम पर उवैसे क़रनी ने भी पहुंच कर बैयत की। इसी मक़ाम पर उन ख़ुतूत के जवाब आये जो रबज़ा से हज़रत ने(तलहा व ज़ुबैर) को लिखे थे। जिन्में उनकी हरकतों का तज़किरा किया था, और लिखा था कि अपनी औरतों को घर में बिठा कर नामूसे रसूल(स.) को जो दर बदर फिरा रहे हो, इससे बाज़ आओ। जवाबात में इस्कीम के मातहत क़त्ले उस्मान की रट थी। इसके बाद इमाम हसन (अ.) ने एक ख़ुतबे में तलहा व ज़ुबैर के क़ातिले उस्मान होने पर रौशनी डाली। हज़रत अभी मक़ामे ज़ीक़ार ही में थे कि मज़लूम उस्मान बिन हनीफ़ आपकी ख़िदमत में जा पहुंचे। हज़रत ने उस्मान का हाल देखकर बेहद अफ़सोस किया और फ़ौरन बसरे की तरफ़ रवाना हो गये। मुसन्निफ़ तारीख़े आइम्मा लिखते हैं कि आयशा के लशकर की आख़री तादाद ३०(तीस) हज़ार और

हज़रत अली(अ.) के लशकर की तादाद २०,०००(बीस हजार) थी। सफ़ा २६५ अल्लामा अब्बासी लिखते हैं कि हज़रत अली(अ.) तलहा, ज़ुबैर और आयशा के तमाम हालात देख रहे थे लेकिन यही चाहते थे कि लड़ाई न हो। जब बसरे के क़रीब आप पहुंचे तो क़आक़ा इब्ने उमरो को उन लोगों के पास भेजा और सुलह की पेश कश की। क़आक़ा ने जो रिर्पोट वापस आकर पहुंचाई इससे वह लोग तो मुतास्सिर हुये जो ज़ेरे क़यादत आसम इब्ने कलीब अली(अ.) के पास बतौरे सफ़ीर आये हुये थे और उनकी तादाद सौ (१००) थी, लेकिन आयशा वग़ैरा पर कोई ख़ास असर न हुआ। आसम वग़ैरह ने अली(अ.) की बैयत कर ली और अपनी क़ौम से जा कर कहा कि अली(अ.) की बातें नबियों जैसी हैं। ग़रज कि दूसरे दिन अली(अ.)बसरा पहुंच गये। उसके बाद जमल वाले बसरा से निकल कर मुक़ामे "ज़ाबुक़ा" या "ख़रबिया" में जा ठहरे और वहां से अली(अ.) के मुक़ाबले के लिये हज़रते आयशा ऊँट पर सवार हो कर खुद निकल पड़ीं। हज़रत अली(अ.) ने अपने लशकर को हुक्म दिया कि आयशा और उनके लशकर पर हमला न करें,न उनका जवाब दें। ग़रज़कि वह जंग की कोशिश करके वापस गईं। उसके बाद अली(अ.) ने ज़ैद इब्ने सूहान को उम्मुल मोमेनीन के पास भेज कर जंग न करने की ख़्वाहिश की मगर कोई नतीजा बरामद न हुआ।

१५, जमादिल आख़िर, ३६, हिजरी यौमे पंजशम्बा, बा वक़्ते शब तलहा व ज़ुबैर ने शबख़ूँ मार कर हज़रत अली(अ.) को सोते में क़त्ल कर डालना चाहा। लेकिन अली (अ.) बेदार थे और तहज्जुद में मशग़ूल थे। हज़रत को हमले की ख़बर दी गई, आपने हुक्मे जंग दे दिया। इस तरह जंग का आग़ाज़ हुआ।

मैदाने कारज़ार :- हज़रते आयशा को तलहा व ज़ुबैर लोहे व चमड़े से मढ़े हुये हौदज में बैठा कर मैदान में लाये और अलमदारी का मनसब भी उन्हीं के सिपुर्द किया और उसकी सूरत यह की, कि हौदज में झन्डा नस्ब करके मेहारे नाक़ा अस्कर लायली के सिपुर्द कर दी। यह देख कर हज़रत अली(अ.) रसूल अल्लाह(स.) के घोड़े दुलदुल पर सवार होकर दोनों लशकरों के दरमियान आ खड़े हुये, और ज़ुबैर को बुला कर कहा कि तुम लोग क्या कर रहे हो। अब भी सोचो और उस पर ग़ौर करो कि रसूल अल्लाह(स.) ने तुमसे क्या कहा था। ऐ ज़ुबैर क्या तुम्हें मुझसे जंग करने के लिये मना नहीं किया था। यह सुन कर ज़ुबैर शरमिन्दा हुये और वापस चले आये लेकिन अपने लड़के अब्दुल्लाह के भड़काने से आयशा की तरफ़दारी में नबरद आज़माई से बाज़ न आये।

अलगरज़ हज़रत अली(अ.) ने जब देखा कि यह जमल वाले ख़ूँरेज़ी से बाज न आयेंगे तो अपनी फ़ौज को ख़ुदा तरसी की तलक़ीन फ़रमाने लगे, आपने कहा!
(१) बहादुरों, सिर्फ़ दफ़्ये दुशमन की नियत रखना। (२) इब्तेदाए जंग न करना। (३) मक़तूलों के कपड़े न उतारना। (४) सुलह की पेशकश मान लेना और पेशकश करने वाले के हथियार न लेना। (५) भागने वालों का पीछा न करना। (६) ज़ख़्मी बीमार और औरतों व बच्चों पर

हथियार न उठाना। (७) फ़तेह के बाद किसी के घर में न घुसना।

इसके बाद आयशा से फ़रमाने लगे तुम अनक़रीब पशेमान होगी और अपने लोगों की तरफ़ मुतवज्जे हो कर कहा तुम में कौन ऐसा है जो क़ुरआन के हवाले से जंग करने से बाज़ रखे। यह सुन कर मुस्लिम नामी एक जांबाज़ इस पर तैय्यार हुआ, और क़ुरआन ले कर उनके मजमे में जा घुसा। तलहा ने उसके हाथ कटवा दिये,और फिर शहीद करा दिया।

हज़रत अली(अ.) के लशकर पर तीरों की बारिश शुरू हो गई। बारवायत तबरी आपने फ़रमाया अब इन लोगों से जंग जायज़ और ज़ुरूरी हो गई है। आपने मोहम्मद बिन हनफ़िया को हुक्म दिया । मोहम्मद काफ़ी लड़ कर वापस आये। अली(अ.) ने अलम लेकर एक ज़बर दस्त हमला किया और कहा बेटा इस तरह लड़ते हैं। फिर अलम मोहम्मद बिन हनफ़िया के हाथ में दे कर कहा हां बेटा आगे बढ़ो, मोहम्मद हनफ़िया अन्सार लेकर यहां तक कि हौदज तक मारते हुये जा पहुंचे, बिल आख़िर सात दिन के बाद हज़रत अली (अ.) खुद मैदान में निकल पड़े और दुशमन को पसपा कर डाला। मरवान के ज़हर आलूद तीर से तलहा मारे गये, और ज़ुबैर मैदाने जंग से भाग निकले। रास्ते में वादीउस्सबा के क़रीब उमर बिने ज़रमोज़ ने उनका काम तमाम कर दिया। उसके बाद हज़रते आयशा बारह हज़ार जर्रार समेत आख़िरी हमले के लिये सामने आ गईं। अलवी लशकर ने इस क़दर तीर बरसाए कि होदज पुशते साही के मान्नद हो गया। हज़रते आयशा ने काअब इब्ने असवद को क़ुरआन देकर हज़रत अली(अ.) के लशकर की तरफ़ भेजा। मालिके अशतर ने उसे रास्ते ही में क़त्ल कर दिया। उसके बाद आयशा के नाक़े को पैय कर दिया गया। ऊँट हौदज समेत गिर पड़ा और लोग भाग निकले। हज़रत अली(अ.) ने मोहम्मद बिन अबि बक्र को हुक्म दिया कि हौदज के पास जा कर उसकी हिफ़ाज़त करें। उसके बाद खुद पहुँच कर कहने लगे, आयशा तुमने हुरमते रसूल बरबाद कर दी। फिर मोहम्मद से फ़रमाया कि इन्हें अब्दुल्लाह इब्ने हनीफ़ ख़ज़ाई बसरी के मकान में ठहरायें हज़रत ने कुशतों को दफ़्न करने का हुक्म दिया, और एलाने आम कराया कि जिसका सामान जंग में रह गया हो तो जामेउल बसरा में आकर ले जाय। मसूदी ने लिखा है कि इस जंग में १३,०००(तेराह हज़ार) आयशा के और ५,०००(पांच हज़ार) हज़रत अली(अ.) के लशकर वाले मारे गये। (मुरूजुलज़हब ,जिल्द ५,सफ़ा १७७)

मुवर्रेख़ीन का बयान है कि फ़तह के बाद अब्दुल रहमान इब्ने अबी बक्र ने हज़रते अली(अ.) की बैयत कर ली। मसूदी और आसम कूफ़ी ने लिखा है कि हज़रत अली(अ.) ने आयशा को मुताअददि्द आदमियों से कहला भेजा कि जल्द से जल्द मदीने वापस चली जाओ, लेकिन उन्होंने एक न सुनी। आख़िर में बारवायते रौज़तुल अहबाब,व हबीब-उस-सैर व आसम कूफ़ी, इमाम हसन के ज़रिये से कहला भेजा अगर तुम अब जाने में ताख़ीर करोगी तो मैं तुम्हें ज़वजियते रसूल(स.) से तलाक़ दे दूँगा। यह सुन कर वह मदीने जाने के लिये तैय्यार हो गईं। हज़रते अली (अ.) ने चालीस (४०) औरतों को मरदों

के सिपाहियाना लिबास में हज़रते आयशा की हिफ़ाज़त के लिये साथ कर दिया, और खुद भी बसरे से बाहर तक पहुंचाने गये। (अलख़िज़री ,जिल्द २,सफ़ा ६०) और मोहम्मद बिन अबि बक्र को हुक्म दिया कि इन्हें मंजिले मक़्सूद तक जा कर पहूँचा आओ। एयरविंग लिखता है कि आयशा को अली(अ.) के हाथों सख़्त बरताव की उम्मीद हो सकती थी, लेकिन वह आली हौसला शख़्स ऐसा न था। जो एक गिरे हुये दुश्मन पर शान दिखाता। उन्होंने इज़्ज़त की और चालीस आदमियों के साथ मदीनके तरफ़ रवाना कर दिया।

उसके बाद हज़रत अली(अ.) ने बसरे के बैतुलमान का जायज़ा लिया, ६,००००० (छः लाख) दुर्रे आबदार बरामद हुये, आपने सब अहले मारेका पर तक़्सीम कर दिया और अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास को वहां का गवरनर मुक़र्रर कर के यौमे दोशम्बा १६, रजब,३६ हिजरी को कूफ़े की तरफ़ रवाना हो गये, और वहां पहुँच कर कुछ दिनों क़याम किया और दौराने क़याम में कूफ़ा, ईराक़, ख़ुरासान, यमन, मिस्र और हरमैन का इन्तेज़ाम किया। ग़रज़ शाम के सिवा तमाम मुमालिके इस्लामी पर हज़रत का तसल्लुत हो गया, और क़ब्ज़ा बैठ गया, और इस अन्देशे से कि माविया ईराक़ पर क़बज़ा न कर ले कूफ़े को दारूल ख़िलाफ़ा बना लिया। इब्ने ख़ल्दून लिखता है कि जमल के बाद सिस्तान में बग़ावत हुई, हज़रत ने रज़ी इब्ने क़ास अम्बरी को भेज कर उसे फ़रो कराया।

ख़ुरासान में रफ़ए बग़ावत के लिये अलवी फ़ौज की जंग और जनाबे शहर बानों का लाना

तारीख़े इस्लाम में है कि अहदे उस्मानी में एहले फ़ारस ने बग़ावत व सरकशी करके अब्दुल्लाह इबने मोअम्मर वालीए फ़ारस को मार डाला, और हुदूदे फ़ारस से लशकरे इस्लाम को निकाल दिया। उस वक़्त फ़ारस की लशकरी छावनी मक़ामे **"असतख़र"** था। ईरान का आख़री बादशा **"यज़्द जरद इब्ने शहरयार इब्ने किसरा"** अहले फ़ारस के साथ था। हज़रत उस्मान ने अब्दुल्लाह इब्ने आमिर को हुक्म दियाकि बसरा और अमान के लशकर को मिला कर फ़ारस पर चढ़ाई करे उसने तामीले इरशाद की। हुदूदे अस्तख़ा में ज़बरदस्त जंग हुई मुस्लमान कामयाब हो गये, और अस्तख़र फ़तेह हो गया।

अस्तख़र के फ़तेह होने के बाद ३१, हिजरी में यज़्द जरद मक़ामे **रै** और फिर वहां से ख़ुरासान और ख़ुरासान से मरव जा पहुँचा और वहीं सुकूनत इख़्तेयार कर ली। इसके हमराह चार हज़ार आदमी थे। मरव में वह ख़ाक़ाने चीन की साज़िशी इमदाद की वजह से मारा गया, और शाहाने अजम के गोरिस्तान अस्तख़र में दफ़्न कर दिया गया।

जंगे जमल के बाद ईरान,ख़ुरासान के इसी मक़ाम मरव में सख़्त बग़ावत हो गयी

उस वक़्त ईरान में बरवायत इरशाद मुफ़ीद व रौज़तुल सफ़ा "हरस इब्ने जाबिर जाअफ़ी" गवरनर थे। हज़रते अली(अ.) ने मरव के "कज़िया न मरज़िया" को ख़त्म करने के लिये इमदादी तौर पर ख़लीद इब्ने क़रआ यरबोई को रवाना किया। वहां जंग हुई, और हरीस इब्ने जाबिर जाफ़ी ने "यज़द जरद इब्ने शहरयार इब्ने कसरा" (जो अहदे उस्मानी में मारा जा चुका था) की दो बेटियां आम असीरों में हज़रते अली(अ.) की ख़िदमत में इरसाल कीं। एक का नाम " शहर बानों " और दूसरी का नाम " केहान बानों " था। हज़रत ने शहर बानों इमाम हुसैन(अ.) को और केहान बानों, मोहम्मद इब्ने अबी बक्र को अता फ़रमाईं। (जामेउल तवारीख़, सफ़ा १४६, कशफ़ुल गम्मा, सफ़ा ८६, मतालेबुल सेवेल, सफ़ा २६१, सवाएके मोहर्रेक़ा, सफ़ा १२० नूरूल अबसार, सफ़ा १२६, तोहफ़ए सुलैमानिया, शरह इरशादिया, सफ़ा ३६१, तबा ईरान)

" जंगे सिफ़्फ़ीन "

(३६,३७, हिजरी)

सिफ़्फ़ीन नाम है उस मक़ाम का जो **फ़ुरात** के ग़रबी जानिब बरक़ा और बालस के दरमियान वाक़े है। (माजमुल बलदान सफ़ा ३७०) इसी जगह अमीरल मोमेनीन और माविया में ज़बरदस्त जंग हुई थी। इस जंग के मुताअल्लिक़ उलेमा व मुवर्रेख़ीन का बयान है कि बानीए जंगे जमल आयशा की मानिन्द माविया भी लोगों को क़त्ले उस्मान के फ़रज़ी अफ़साने के हवाले से हज़रते अली(अ.) के ख़िलाफ़ भड़काता और उभारता था। जंगे जमल के बाद हज़रमे अली(अ.) के शाम पर मुक़र्रर किये हुये हाकिम सुहैल इब्ने हनीफ़ ने कूफ़े आकर हज़रत को ख़बर दी कि माविया ने एलाने बग़ावत कर दिया है और उस्मान की कटी हुई उंगलियों और ख़ून आलूद कुरता लोगों को दिखा कर अपना साथी बना रहा है, और यह हालत हो चुकी है कि लोगों ने क़समें खा ली हैं कि ख़ूने उस्मान का बदला लिये बग़ैर न नरम बिस्तर पर सोयेंगे न ठंडा पानी पियेंगे। उमरे आस वहां पहुंच चुका है जो उसे मदद दे रहा है। हज़रते अली(अ.) ने माविया को एक ख़त मदीने से दूसरा कूफ़े से इरसाल करके दावते बैयत दी।,लेकिन कोई नतीजा बरामद न हुआ। माविया जो जमए लशकर में मशग़ूलो मसरूफ़ था एक लाख बीस हज़ार (१,२०,०००) अफ़राद पर मुशतमिल लशकर लेकर मक़ामे सिफ़्फ़ीन में जा पहुंचा। हज़रते अली(अ.) भी शव्वाल ३६,हिजरी में (नख़लिया और मदाएन) होते हुये रक़ा में जा पहुंचे। हज़रत के लशकर की तादाद (९०,०००) नब्बे हज़ार थी। रास्ते में लशकर सख़्त प्यासा हो गया। एक राहिब के इशारे से हज़रत ने ज़मीन से एक ऐसा चशमा बरामद किया जो नबी और वसी के सिवा किसी के बस का न था। (आसम कूफ़ी, सफ़ा २१२, रौज़तुल सफ़ा जिल्द २, सफ़ा ३६२) हज़रत ने अपने लशकर को सात हिससों में तक़सीम किया और माविया ने भी सात टुकड़े कर दिये। मक़ामे रक़ा से रवाना होकर आबे फ़रात उबूर किया।

हज़रत के मुक़द्देमातुल जैश से माविया के मुक़द्दमे ने मज़ाहेमत की और वह शिकस्त खा कर माविया से जा मिला। हज़रत का लशकर जब वारिदे सिफ़्फ़ीन हुआ तो मालूम हुआ कि माविया ने घाट पर क़ब्ज़ा कर लिया है, और अलवी लशकर को पानी देना नहीं चाहता। हज़रत ने कई पैग़ाम्बर भेजे और बनदिशे आब को तोड़ने के लिये कहा मगर समाअत न की गई। बिल अख़िर हज़रत अली(अ.) की फ़ौज ने ज़बरदस्त हमला करके घाट छीन लिया। मुवर्रेख़ीन का बयान है कि घाट पर क़ब्ज़ा करने वालों में इमाम हुसैन(अ.) और हज़रते अब्बास इब्ने अली ने कमाल जुरअत का सुबूत दिया था। (ज़िकरूल अब्बास सफ़ा २६, मोअल्लेफ़ा हक़ीर) हज़रते अली(अ.) ने घाट पर क़ब्ज़ा करने के बाद एलान करा दिया कि पानी किसी के लिये बन्द नहीं है। मतालेबिुल सुवेल में है कि हज़रत अली(अ.) बार बार माविया को दावते मसालेहत देते रहे, लेकिन कोई असर न हुआं आख़िर कार माहे ज़िल्हिज में लड़ाई शुरू हुई और इन्फेरादी तौर पर सारे महीने होती रही। मोहर्रम ३७,हिजरी में जंग बन्द रही और यकुम सफ़र से घम्सान की जंग शुरू हो गई। एयरविंग लिखता है अली (अ.) को अपनी मरज़ी के ख़िलाफ़ तलवार ख़ैंचना पड़ी। चार महीने तक छोटी-छोटी लड़ाईयां होती रहीं जिन्में माविया के ४५,०००(पैंतालिस हज़ार) आदमी काम आये और अली(अ.) की फ़ौज ने उससे आधा नुक़सान उठाया। जिकरूल अब्बास सफ़ा २७, में है कि अमीरल मोमेनीन अपनी रवायती बहादुरी से दुशमने इस्लाम के छक्के छुड़ा देते थे। अमरू बिन आस और बशर इब्ने अरताता पर जब आपने हमले किये तो यह लोग ज़मीन पर लेट कर बरेहना हो गये। हज़रते अली(अ.) ने मुँह फेर लिया। यह उठ कर भाग निकले। माविया ने अमरू आस पर ताना ज़नी करते हुये कहा कि दर पनाह औरत खुद ग़िरीख़्ती तूने अपनी शर्मगाह के सदके में जान बचा ली। मुवर्रेख़ीन का बयान है कि यकुम सफ़र से सात शबाना रोज़ जंग जारी रही। लोगों ने माविया को राय दी कि अली(अ.) के मुक़ाबले में खुद निकलें। मगर वह न माने। एक दिन जंग के दौरान में अली(अ.) ने भी यही फ़रमाया था। कि ऐ जिगर ख़्वारा के बेटे क्यों मुस्लमानों को कटवा रहा है तू खुद सामने आजा और हम दोनों आपस में फ़ैसला कुन जंग करलें। बहुत सी तवारीख़ में है कि इस जंग में ९०, नब्बे लड़ाईयां वुकू में आईं। ११०, रोज़ तक फ़रीक़ैन का क़याम सिफ़्फ़ीन में रहा। माविया के ९०,०००(नब्बे हज़ार) और हज़रते अली (अ.) के २०,००० (बीस हज़ार) सिपाही मारे गये। १३, सफ़र ३७, हिजरी को माविया की चाल बाज़ियों और अवाम की बग़ावत के बाएस फ़ैसला हकमैन के हवाले से जंग बन्द हो गई। तवारीख़ में है कि हज़रते अली (अ.) ने जंगे सिफ़्फ़ीन में कई बार अपना लिबास बदल कर हमला किया है। तीन मरतबा इब्ने अब्बस का लिबास पहना, एक बार अब्बास इब्ने रबिया का भेस बदला, एक दफ़ा अब्बास इब्ने हारिस का रूप इख़्तेयार किया और जब करीब इब्ने सबा हमीरी मुक़ाबले के लिये निकला तो आपने अपने बेटे हज़रते अब्बस का लिबास बदला और ज़बरदस्त हमला किया। मुलाहेज़ा हो मुनाक़िबे (एहज़ब

ख़्वारज़मी, सफ़ा १६६, क़लमी) लड़ाई निहायत तेज़ी से जारी थी कि **"अम्मारे यासिर"** जिनकी उम्र ६३, साल थी, मैदान में आ निकले और अट्ठारा शामियों को क़त्ल करके शहीद हो गये। हज़रत अली(अ.) ने आपकी शहादत को बेहद महसूस किया। एयर विंग लिखता है कि अम्मार की शहादत के बाद अली(अ.) ने बारह हज़ार सवारों को लेकर पुर ग़ज़ब हमला किया और दुशमनों की सफ़ें उलट दीं, और मालिके अशतर ने भी ज़बरदस्त बेशुमार हमले किये।

दूसरे दिन सुबह को हज़रत अली(अ.) फिर लशकरे माविया को मुख़ातिब करके फ़रमाया कि लोगों सुन लो कि अहकामे ख़ुदा मोअत्तल किये जा रहे हैं। इस लिये मजबूरन लड़ रहा हूँ। इसके बाद हमला शुरू कर दिया और कुशतों के पुश्ते लग गये।

लैलतुल हरीरः- जंग निहायत तेज़ी के साथ जारी थी। मैमना और मैसरा अब्दुल्लाह और मालिके अशतर के क़ब्ज़े में था। जुमे की रात थी, सारी रात जंग जारी रही। बारवायत आसम कूफ़ी ३६,०००(छत्तीस हज़ार) सिपाही तरफ़ैन के मारे गये। ६००,(नौ सौ) आदमी हज़रत अली(अ.) के हाथों क़त्ल हुये। लशकरे माविया से अल-ग़यास, अल-ग़यास की आवाज़ें बलन्द हो गईं। यहां तक कि सुबह हो गई और दोपहर तक जंग का सिलसिला जारी रहा। मालिके अशतर दुशमन के ख़ेमे तक जा पहुँचे क़रीब था कि, माविया ज़द में आजाय और लशकर भाग खड़ा हो। नागाह उमरो बिन आस ने ५००(पांच सौ) क़ुरआन नैज़ों पर बलन्द करा दिये और आवाज़ दी कि हमारे और तुम्हारे दरमियान क़ुरआन है। वह लोग जो माविया से रिशवत खा चुके थे फ़ौरन ताईद के लिये खड़े हो गये और अशअश बिन क़ैस, मसूद इब्ने नदक, ज़ैद इब्ने हसीन ने अवाम को इस दरजा वरग़लाया कि वह लोग वही कुछ करने पर आमादा हो गये, जो उस्मान के साथ कर चुके थें मजबूरन मालिके अशतर को बढ़ते हुये क़दम और चलती हुई तलवार रोकना पड़ी। मुवर्रिख़ **" गिबन "** लिखता है कि अमीरे शाम भागने का तहय्या कर रहा था, लेकिन यक़ीनी फ़तेह फ़ौज के जोश और नाफ़रमानी की बदौलत अली(अ.) के हाथ से छीन ली गई। ज़रजी ज़ैदान लिखता है कि नैज़ों पर क़ुरआन शरीफ़ देख कर हज़रत अली(अ.) की फ़ौज के लोग धोका खा गये। नाचार अली(अ.) को जंग मुलतवी करना पड़ी। बिल आख़िर अवाम ने माविया की तरफ़ उमरो आस और हज़रत की तरफ़ से उनकी मरज़ी के ख़िलाफ़ "अबू मूसा अशअरी" को हकम मुक़र्रर करके माहे रमज़ान में बामक़ाम " ज़ोमतुल जन्दल " फ़ैसला सुनाने को तय किया।

हकमैन का फ़ैसला :- अल गरज़ माहे रमज़ान में बमुक़ाम "अज़रह" चार, चार सौ अफ़राद समैत उमरो बिन आस और अबू मूसा अशअरी जमा हुये और अपना वह बाहमी फ़ैसला जिसकी रू से दोनों को ख़िलाफ़त से माज़ूल करना था, सुनाने का इन्तेज़ाम किया। जब मिम्बर पर जाकर एलान करने का मौक़ा आया तो अबू मूसा ने उमरो बिन आस को कहा कि आप जाकर पहले बयान दें। उन्होंने जवाब दिया . आप बुज़ुर्ग हैं पहले आप

फ़रमाएं। अबू मूसा मिम्बर पर गये और लोगों को मुख़ातिब करके कहा कि मैं अली(अ.) को ख़िलाफ़त से माज़ूल करता हूँ। यह कह कर उतर आये। उमरो बिन आस जिससे फ़ैसले के मुताबिक़ अबू मूसा को यह तवक़्क़ो थी कि वह भी माविया की माज़ूली का एलान कर देगा। लेकिन उस मक्कार ने इसके बरअक्स यह कहा कि मैं अबू मूसा की ताईद करता हूँ और अली(अ.) को हुकूमत से हटा कर माविया को ख़लीफ़ा बनाता हूँ। यह सुन कर अबू मूसा अशअरी बहुत ख़फ़ा हुये, लेकिन तीर तरकश से निकल चुका था। यह सुन कर मजमे पर सन्नाटा छा गया। अली(अ.) ने मुसकुरा कर अपने तरफ़दारों से कहा कि मैं न कहता था कि दुशमन फ़रेब देने की फ़िक्र में है।

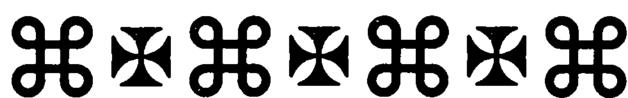
जंगे नहरवान :- हकमैन के मोहमल और मक्काराना फ़ैसले को हज़रत अली(अ.) और उनके तरफ़दारों ने मुस्तरद कर दिया, और दोबारा आला पैमाने पर फ़ौज कशी का फ़ैसला और तहय्या कर लिया। अभी इसकी नौबत न आने पाई थी कि ख़वारिज की बग़ावत की इत्तेला मिली, और पता चला कि वह लोग जो सिफ़्फ़ीन में जंग रोकने के ख़िलाफ़ थे। अब हज़रत के सख़्त मुख़ालिफ़ हो कर मक़ामे "हरवरा" में आ रहे हैं। फिर मालूम हुआ कि वह लोग बग़दाद से चार फ़रसख़ के फ़ासले पर बमुक़ाम नहरवान बतारीख़ १०,शव्वाल, ३७,हिजरी जा पहुंचे हैं, और वहां मुस्लमानों को सता रहे हैं। हज़रत ने मजबूरन उनपर चढ़ाई की। १२,०००(बारह हज़ार) में से कुछ कूफ़े और मदाएन चले गये। और कुछ ने बैयत कर ली। चार हज़ार(४,०००) आमादए पैकार हुये। बिल आख़िर लड़ाई हुई और नौ आदमियों के अलावा सब मारे गये। इसी जंग में मशहूर मुनाफ़िक़ व ख़ारजी **"ज़ुलसदिया"** भी मारा गया। जिसका अस्ल नाम मोज़ज था। इसके एक हाथ की जगह लम्बा सा पिस्तान बना हुआ था। इसी लिये इसे **" ज़ुलसदिया "** कहा जाता था।

मोहम्मद इब्ने अबी बक्र की इबरत नाक मौत :- मोहम्मद इब्ने अबी बक्र मिस्र के गवरनर थे। माविया ने छः हज़ार(६,०००) फ़ौज के साथ उमरो बिन आस को मोहम्मद से मुक़ाबले के लिये मिस्र भेज दिया। मोहम्मद ने हज़रत अली(अ.) को वाक़ेए की इत्तेला दी। आपने फ़ौरन जनाबे मालिके अशतर को उनकी कुमक में मिस्र रवाना कर दिया।

माविया को जब मालिके अशतर की रवानगी का पता चला तो उसने मक़ामे अरीश या मुल्ज़िम के ज़मींदार को ख़ुफ़िया लिख कर भेजा कि मालिके अशतर मिस्र जा रहे हैं, अगर तुम उन्हें दावत वग़ैरह के ज़रिये से क़त्ल कर दो तो मैं तुम्हारा ख़िराज २०, साल के लिये माफ़ कर दूँगा। उस शख़्स ने ऐसा ही किया। जब मालिके अशतर पहुँचे तो उसने दावत दी और आपके लिये इफ़तारे सोम का इन्तेज़ाम किया, और दूध में ज़हर मिला कर दे दिया। जनाब मालिके अशतर शहीद हो गये। (तारीख़े कामिल, जिल्द ३, सफ़ा १४१ व तबरी, जिल्द ६, सफ़ा ५४) इधर मालिके अशतर शहीद हुये उधर उमरो आस ने जनाब मोहम्मद इब्ने अबी बक्र पर मिस्र में हमला कर दिया। आपने पूरा पूरा मुक़ाबला किया लेकिन नतीजे

पर गिरफ़्तार हो गये। आपको माविया इब्ने ख़दीज ने माविया इब्ने अबू सुफ़ियान के हुक्म से गधे की खाल में सी कर ज़िन्दा जला दियां हज़रते आयशा को जब इस इबरत नाक मौत की ख़बर मिली तो आप बेहद रंजिदा हुईं और ता हयात माविया और उमरो आस के लिये हर नमाज़ के बाद बद दुआ करने को वतीरा बना लिया। (तारीख़े कामिल, जिल्द, ३, सफ़ा १४३, हैवातुल हैवान वग़ैरा) इस वाक़िये से अमीरल मोमेनीन को बेहद रंज पहुंचा और माविया को खुशी हुई (तबरी इब्ने ख़ल्दून, मसूदी) यह वाक़ेया सफ़र ३८ , हिजरी का है। (तारीख़े इस्लाम जिल्द,१, सफ़ा २१६) किताब निहायतुल अरब फ़ी मारेफ़त निसाबुल अरब मोअल्लिफ़ा अबुल अब्बास अहमद बिने अली बिन अहमद बिन अब्दुल्लाह, तअलक़शन्दी, अल मतूफ़ी ८२१, हिजरी मतबुआ बग़दाद,१६०८ ई० के मुताबिक़ २६६, के फुट नोट में है कि मोहम्मद बिन अबी बक्र मक्के मदीने के दरमियान १०, हिजरी में पैदा हुये थे। उनकी परवरिश हज़रते अली (अ.) की आग़ोशे करामत में हुई थी। वफ़ाते अबू बक्र के बाद उनकी मां असमा बिन्ते उमैस से हज़रत ने अक़्द कर लिया था। हज़रत उनको बेहद चाहते थे। यह जंगे जमल और सिफ़्फ़ीन में हज़रत अली(अ.) के साथ थे। सन् ३७, में अमीरल मोमेनीन ने उन्हें मिस्र का गवरनर बना दिया। जब जंगे सिफ़्फ़ीन से अमीरल मोमेनीन बइरादा रवाना हो गये तो माविया ने एक बड़ा लशकर भेज कर मिस्र पर हमला करा दिया। काफ़ी जंग हुई बिल आख़िर मोहम्मद को शिकस्त हुई। **“ अख़्तफ़ी मोहम्मद फ़ाअरफ़ माविया बिन ख़दीज मकाना कब्ज़ अलैहे व क़त्ला सुम हरक़ा ”** मोहम्मद बिने अबी बक्र रूपोश हो गये। लेकिन माविया ने उन्हें तलाश करके गिरफ़्तार कर लिया। फिर उन्हें क़त्ल करके उन्हें जला दिया। **“ व काना मिनल इबादुज़ ज़हाद ”** बड़े ज़ाहिद थें तारीख़े आसम कूफ़ी के सफ़ा ३३८ में है कि उन्हें गधे की खाल में सी कर जलवा दिया था। हज़रत मोहम्मद बिन अबी बक्र की शहादत के नतीजे में हज़रते आयशा को भी कुएं में गिरा कर अमीरे माविया ने ख़त्म करा दिया था। (हबीब-उस-सैर वग़ैरा) इसकी क़दरे तफ़सील आईंदा आयेगी।

इमाम ज़ैनुल आबेदीन (अ.) की विलादत :- इसी साल सन् ३८, हिजरी के जमादियुस सानी की १५, तारीख़ को हज़रते इमाम ज़ैनुल आबेदीन(अ.) जनाबे शहर बानो बिन्ते **“ यज़द जुरद ”** इब्ने शहरयार इब्ने केसरा शाह ईरान के बत्न से पैदा हुये।



हिन्दोस्तान में इस्लाम सबसे पहले हज़रत अली बिन अबी तालिब के ज़रिये से पहुँचा इलाक़ए सिन्ध से आले मोहम्मद का ख़ुसूसी इलाक़ा व राबेता

यह ज़ाहिर है कि हज़रते रसूले करीम (स.) के बाद इस्लाम की सारी ज़िम्मेदारी अमीरल मोमेनीन हज़रत अली बिन अबी तालिब पर थीं जिस तरह सरकारे दो आलम अपने अहदे नबूवत में ता बा हयाते ज़ाहेरी इस्लाम की तबलीग़ करते रहे और उसे फ़रोग़ देने में तन, मन, धन की बाज़ी लगाये रहे। इसी तरह उनके बाद अमीरल मोमेनीन ने भी इस्लाम को बामे ऊरूज तक पहुंचाने के लिये जेहदे मुसलसल और सई पैहम की और किसी वक़्त भी उसकी तबलीग़ से ग़फ़लत नहीं बरती। यह और बात है कि ग़ज़बे इक़्तेदार की वजह से दारए अमल वसी न हो सका और हलक़ए असर महदूद होकर रह गया। ताहम फ़रीज़े की अदायगी इमामत की ख़ामोश फ़िज़ा में जारी रहीं यहां तक कि इक़्तेदार क़दमों में आया और मिन्हाजे नबूवत पर काम शुरू हो गयां तबलीग़ के महदूद हलक़े वसी हो गये। इमामत ख़िलाफ़त के दोश बदोश आगे बढ़ी और इसलाम की रौशनी मुमालिके ग़ैर में पहुँचने लगी। हिन्दोस्तान जो कुफ़्रो इल्हाद,और ग़ैर उल्लाह की परस्तिश का मरकज़ और मलजा व मावा था। अमीरल मोमेनीन ने दीगर मुमालिक के साथ, साथ वहां भी इस्लाम की रौशनी पहुँचाने का अज़्मे मोहकम कर लिया और थोड़ी सी जद्दो जेहद के बाद वहां इस्लाम की किरन पहुँचा दी, और ज़मीने हिन्द को इस्लामी ताबन्दगी से मुनव्वर कर दिया।

इमामुल मुवर्रेख़ीन अबू मोहम्मद ,अब्दुललाह बिने मुस्लिम, इब्ने क़ुतीबा, दीनवरी अपनी किताबुल माअर्रिफ़ के सफ़ा ६५ , तबा मिस्र १६३४ ई० में लिखते हैं।

“ इन्नमा बल्लेग़ुल इस्लाम फ़िस सनादा औलन फ़ी ज़मन अमीरल मोमेनी अली इब्ने अबी तालिब(अ.) कमा यशहद अलैहे वक़ाअ कसीरतः ” इस्लाम **“ सिन्ध ”** हिन्दोस्तान में सबसे पहले अमीरल मोमेनीन अली इब्ने अबी तालिब के अहद में पहुँचा। इस पर बहुत से वाक़ेयात शाहिद हैं। हज नामा क़लमी सफ़ा ३४ में है कि अमीरल मोमेनीन(अ.) ने सन् ३८, हिजरी में नाज़िर बिन दावरा को सरहादाते सिन्ध की देख भाल के लिये रवाना किया। यह रवानगी बज़ाहिर अपने मक़सद के लिये राह हमवार करने की ख़ातिर थी और यह मालूम करना मक़सूद था कि हिन्दोस्तान में क्योंकर दाख़िला हो सकता है। इसी मक़सद के लिये इससे क़ब्ल अहदे उस्मानी में अब्दुल्लाह बिन आमिर इब्ने करेज़ को मुक़र्रर किया गया था। मुवर्रिख़ बिलाज़री लिखते हैं कि वह सफ़रूल हिन्द की तरफ़ दरयाई मुहिम पर रवाना हुये। ग़रज़ यह थी कि इस मुलक के हालात से आगाही हासिल हो। अब्दुल्लाह बिन आमिर ने

हकीम बिन जिब्लतुल अदवी की सरदारी में एक दस्ता समुन्दर के रास्ते रवाना किया। वह बिल्लोचिस्तान और सिन्ध के मशरिक़ी इलाक़े को देख कर वापस आये तो अब्दुल्लाह ने उनको उस्मान बिन अफ़ान के पास भेज दिया कि जो कुछ देखा है जाके सुना दें, उस्मान ने पूछा उस मुल्क का क्या हाल है, कहा मैंने उस मुल्क को चल फिर के अच्छी तरह देख लिया है। उस्मान ने कहा मुझसे उसकी कैफ़ियत बयान करो। " **हकीम बिन जबला** " ने कहा **(मा हावशल, समाराहा वक्ल, वस्सुहा बतल , अनकल्ल हबीश फ़ीहा ज़ाउवा व अन कसरवा जाआवा**) वहां पानी कम, फल रद्दी, चोर बेबाक, लशकर कम हो तो ज़ाया जायगा, बहुत हो तो भूखों मरेगा। यह सुन कर उन्होंने कहा, ख़बर दे रहे हो या हजो कर रहे हो। बोले ऐ अमीर, ख़बर दे रहा हूँ। यह सुन कर उन्होंने लशकर कशी का ख़याल तरक कर दिया। (तरजुमा फ़तुहुल बलदान बेलाज़री, जिल्द २, सफ़ा ६१३)

हज़रत उस्मान जिनका मक़सद मुल्क पर क़ब्ज़ा करना और फ़तुहवात की फ़ेहरिस्त बढ़ाना था, वहां के हालात सुन कर ख़ामोश हो गये, और सिन्ध वग़ैरा की तरफ़ बढ़ने का ख़याल तर्क कर दिया। लेकिन हज़रत अमीरल मोमेनीन(अ.) जिनका मक़्स्द फ़तूहात की फ़ेहरिस्त मुरत्तब करना न था, बल्कि दीने इस्लाम फैलाना था, उन्होंने नासाज़गार हालात के बावजूद आगे बढ़ने का अज़्म बिल जज़्म कर लिया और ३६, हिजरी में हज़रत अली (अ.) ने हारिस बिन मुर्रा अब्दी को सिन्ध पर क़ाबू हासिल करने के लिये भेजा। " **फ़फ़तहुल सिन्ध ज़ालेकल सिन्नाह** " इसी सन् में सिन्ध फ़तेह हुआ। यह हज़रत अली(अ.) का कारनामा है। कि " **सिन्ध अली यद अली बिन अबी तालिब व अक़ामल हुकूमत अल इस्लामिया**" अली बिन अबी तालिब के हाथों फ़तेह हुआ, और हुकूमते इस्लामिया पहले पहल उन्हीं के हाथों क़ायम हुई। (तारीख़े सिन्ध दारूल मुस्न्नेफ़ीन, आज़म गढ १६४७ ई०)

अल्लामा बिलाज़री अल मतूफ़ी, २७६ लिखते हैं। " आख़िर ३८, हिजरी या अव्वल ३६, हिजरी में हारिस बिन मुर्रा अब्दी ने अली बिन अबी तालिब रज़ी अल्लाह अनहा से इजाज़त ले कर बा हैसियत मुतव्वा सरहदे हिन्द पर हमला किया। फ़तेहयाब हुये, कसीर ग़नीमत हाथ आई , सिर्फ़ लौंडी ग़ुलाम ही इतने थे कि एक दिन में एक हज़ार तक़सीम किये गये। हारिस और उनके अकसर असहाब अरज़े कैक़ान में काम आये। सिर्फ़ चंद ज़िन्दा बचे। यह ४२, हिजरी का वाक़ेया है।

(तरजुमा फ़तेहुल बलदान बिलाज़री, जिल्द २, सफ़ा ६१३, तबा कराची)

मुवर्रिख़ ज़ाकिर हुसैन का बयान है कि साहेबे रौज़तुल सफ़ा लिखते हैं कि हिन्दोस्तान में क़ासिम की मातहती में एक मोतदबेह फ़ौज रवाना की गई, जो ३८,हिजरी के अवाएल में सिन्ध की फ़तूहात में मसरूफ़ हुई। उसने चंद मक़ामाते सिन्ध पर क़ब्ज़ा किया। क़ासिम के बाद ३८, हिजरी के आख़िर में या ३६, हिजरी के शुरू में हारिस बिन मर्रा अब्दी एक दूसरी फ़ौज के साथ दारूल ख़िलाफ़ा से रवाना किया गया और उसने इन मुमालिक में

बहुत से मुमालिक फ़तह किये। बहुत से हिन्दू गिरफ़तार किये गये और कसीर माले ग़नीमत हाथ आया जो बराहे रास्त दारूल ख़िलाफ़ा को रवाना किया गया, और एक दिन में एक हज़ार लौंडी गुलाम ग़नीमत के माल में तक़सीम किये गये, हारिस बिन मुर्रा मद्दत तक इन बिलाद पर क़ाबिज़ रहे। (तारीख़े इस्लाम, जिल्द ३, सफ़ा २२२, तबा देहली, १३३१, हिजरी)

बादशाह शन्सब बिन हरिक़ का दस्ते अमीरल मोमेनीन पर ईमान लाना

हिन्दोस्तान के लिये फ़तेह सिन्ध के बाद राह का हमवार हो जाना यक़ीनी था। इसी लिये सिन्ध फ़तेह किया गया। फ़तेह सिन्ध के बाद अमीरल मोमेनीन हज़रत अली (अ.) के इस्लामी जद्दो जेहद के आसार तारीख़ में मौजूद हैं। मुवर्रिख़ मुल्ला मोहम्मद क़ासिम **" हिन्दू शाह "** फ़रीशता ज़ेरे उनवान ज़िक्र बिनाए शहरे देहली लिखते हैं कि ३०७ ई० में दादपत्ता राजपूत ने जो तआएफ़े तूरान से ताअल्लुक़ रखता था, क़सबए इन्द्र पत के पहलू में देहली की बुनियाद रखी फिर उनके आठ अफ़राद ने इस पर हुकूमत की फिर ज़वाले हुकूमते तूरान के बाद ताएफ़ा चौहन की हुकूमत क़ाएम हुई। इस ताएफ़े के ६, छः अफ़राद ने हुकूमत की। उसके बाद सुल्तान शहाबुद्दीन ग़ौरी ने उनके आख़री बादशा पिथवरा को क़त्ल कर दिया। फिर ऊमरे हुकूमत ५८८ ई० में मुलूके ग़ौर के आख़री फ़रमारवा ज़ुहाक ताज़ी पर बादशाह फ़रीदूँ का ग़लबा हो गया हो गया और ज़ुहाक के दो पोते या नवासे,सूरी और साम उसके हमराह हो गये। एक अरसे के बाद इन दोनों को फ़रीदों की तरफ़ से अपनी तबाही का वहम पैदा हो गया। चुनान्चे यह दोनों " नेहा दन्द" चले गये, और वहां हुकूमत क़ायम कर ली, और फ़रीदूँ से मुक़ाबेला शुरू कर दिया। बिल आख़िर फ़रीदूँ ग़ालिब रहा और उन लोगों ने ख़िराज कुबूल करके हुकूमत क़ायम रखी, और ज़ुर्रियत ज़ुहक इस मम्लेकत में यके बा दीगरे बुज़ुर्ग क़बीला यानी बादशाह होता रहा।

(ता बवक़्ते इस्लाम नौबत बा शन्सब रसीद व ऊ दर ज़माने अमीरल मोमेनीन असद उल्लाहुल ग़ालिब अली बिन अबी तालिब(अ.) बूद व बर दस्ते आंहज़रत ईमान आवुरदा। मन्शूरे हुकूमते ग़ौर बख़्ते मुबारक शाह विलायत पनाह याफ्त(तारीख़े फ़रिशता, जिल्द १, सफ़ा ५४, मक़ालए दोउम ज़िक्र, बिनाए देहली व अहवाल मुलूक ग़ौर, तबा नेवल किशोर, १२८१ ई०)" यहां तक कि दौरे इस्लाम आ गया और नौबते शाही शन्सब तक आ पहुँची। इसका ज़माना अहदे अमीरल मोमेनीन हज़रत अली बिन अबी तालिब में आया। उसने हज़रत अली (अ.) के हाथों पर ईमान कुबूल किया और मुस्लमान हुआ और हुकूमते ग़ौर का मन्शूर हज़रत शाह विलायत पनाह के हाथों पर बना। "यही कुछ तबक़ाते नासरी मुसन्नेफ़ा अबू उमर मिनहाजउद्दीन उस्मान बिन मेराज उद्दीन तबा कलकत्ता १८६४ ई० ज़िक्रे सलातीन शन्सानिया के तबक़ए ७, सफ़ा २६ में भी

है। तारीख़े इस्लाम ज़ाकिर हुसैन के जिल्द ३, सफ़ा २२२ में है कि शन्सब, तुरकी नसब का था। मुवर्रिख़ फ़रिशते ने शाह शन्सब का नसब नामा यूँ तहरीर किया है। शन्सब बिन हरीक़ बिन नहीक़ इब्ने मयसी बिन वज़न बिन हुसैन बिन बहराम बिन हबश बिन हसन बिन इब्राहीम बिन साद बिन असद बिन शद्दाद बिन ज़हाक, सफ़ा ५४।

औलादे शन्सब की अमले बनी उमय्या से बेज़ारी :- मुल्ला मोहम्मद क़ासिम फ़हरशता लिखते हैं कि जिस ज़माने में बनी उमय्या ने यह अन्धेर गरदी कर रखी थी कि अहले बैते रसूल ख़ुदा (स.) को तमाम मुमालिके इस्लामीया में मिम्बरों पर बुरा भला कहा जाता था, और वह हुक्म बाज़ाहिर पहुँचा हुआ था। मगर ग़ौर में **"अहले ग़ौर मुरतकिब आँ अमरे शनीअ नशुदन्द"** अहले ग़ौर ने इस अमरे नामाकूल का इरतेकाब नहीं किया था(और वह इस अमल में बनी उमय्या से बेज़ार थे) तारीख़े फ़रिशता सफ़ा ५४।

औलादे शन्सब की दुशमनाने आले मोहम्मद(स.) से जंग :- इसी तारिख़े फ़रिशता के सफ़ा ५४ में है कि जब अबू मुस्लिम मरवज़ी ने बादशाहे वक़्त के ख़िलाफ़ ख़ुरूज किया था और उसने औलादे शन्सब से मदद चाही थी तो उन लोगों ने **" दर क़त्ले आदाए अहले बैत तक़सीर न करद"** दुश्मनाने आले मोहम्मद(स.) के क़त्ल करने में कोई कमी नहीं की। इन तहरीरों से मालूम होता है कि अमीरल मोमेनीन(अ.) के ज़रिये से इस्लाम के साथ, साथ शिईयत भी हिन्दुस्तान में पहुँची थी क्योंकि औलादे शन्सब का तरज़े अमल शीईयत का आईना दार है।

(हज़रत इमाम हुसैन(अ.) की राहे कूफ़ा से सिन्ध जाने की ख़्वाहिश)

मुवर्रिख़ अबू मोहम्मद, मोहम्मद अब्दुल्लाह बिन मुस्लिम बिन क़तीबा देवनरी अल मतूफ़ी,२७६ ई० तहरीर फ़रमाते हैं कि **" अनल हुसैन अल मासेदा हरफ़ी तरीक़ कूफ़ा क़ाला (अ.) अन लसतम बरा हुनैन बूवरद अल ईराक़ फ़ातिर कोफ़ी ला ज़हब इला सिन्ध "** जब हज़रत इमाम हुसैन(अ.) को हुर ने कूफ़े के रास्ते में रोका तो आपने इरशाद फ़रमाया कि तुम अगर मेरे ईराक़ में आने को पसन्द नहीं करते तो मुझे छोड़ दो कि मैं सिन्ध चला जाऊँ। उसके बाद इब्ने क़तीबा लिखते हैं। " वा यालम मिन्हा इनल इस्लाम क़द बलग़ इलैहे मन क़बल " इमाम हुसैन(अ.) के इस फ़रमाने से मालूम होता है कि इस्लाम इस वक़्त से पहले सिन्ध में पहुँच चुका था।

(मारिफ़ इब्ने क़तीबा, सफ़ा ६५, तबा मिस्र, १६३४ ई० महीज़-उल-अहज़ान, सफ़ा १६३)

(हज़रत ज़ैनुल आबदीन(अ.) की एक ज़ौजा का सिन्धी होना)

इस्लाम के क़दीम तरीन मुवर्रिख़ इब्ने क़तीबा अपनी "किताबे मआरिफ़" के सफ़ा ७३, पर लिखता है। **"कानत ज़ौजतुल इमाम ज़ैनुल आबेदीन सिन्दिया व तवल्लुद तहा ज़ैद अल शहीद"** इमाम ज़ैनुल आबेदीन(अ.) की एक बीवी सिन्धी थीं, और उनसे हज़रत ज़ैद

शहीद पैदा हुये। फिर इसी किताब के सफ़ा ६५ पर लिखता है। " **इमाम ज़ैद बिन अली बिन अल हुसैनी फ़कान बकता इमाम अल हसन वामा सिन्धिया"** ज़ैद बिन अली बिन अल हुसैन की कुन्नीयत अबुल हसन थीं और उनकी मां सिन्धी थीं।

एक और जगह लिखता है। " **रवी अन अल लती व हबत ज़ैनुल आबेदीन कानत सिन्धिया** " मरवी है जो बीवी इमाम ज़ैनुल आबेदीन(अ.) को दी गई वह सिन्धी थीं। अब्दुल रज़्ज़ाक़ लिखते हैं कि ज़ैद शहीद इमाम ज़ैनुल आबेदीन की जिस बीवी से पैदा हुये वह सिन्धी थीं। (किताब ज़ैद-अल-शहीद, सफ़ा ५, तबा नजफ़े अशरफ़)

इन जुमला हालात पर नज़र करने से यह बात वाज़ेह हो जाती है, कि सिन्ध (हिन्दोस्तान) में दीने इस्लाम हज़रत अली(अ.) के ज़रिये से पहुँचा और इसी के साथ, साथ शीईयत की भी बुनियाद पड़ी थीं, नीज़ यह कि हज़रत इमाम हुसैन (अ.) को सिन्ध के मुसलमानों पर भरोसा था। वह कूफ़ा व शाम के मुसलमानों पर सिन्ध के मुसलमानों को तरजीह देते थे। यही वजह है कि आपने राहे कूफ़ा में इब्ने ज़ियाद और यज़ीद बिन माविया के लशकर के सरदार, हुर बिन यज़ीदे रेयाही(जो बाद में हज़रत इमाम हुसैन(अ.) के क़दमों में शहीद होकर राहिये जन्नत हुये थे) से यह फ़रमाया था कि मुझे सिन्ध चले जाने दो। इसके अलावा आपके फ़रज़न्द इमाम ज़ैनुल आबेदीन ने एक बीवी सिन्ध की अपने पास रखी थी।, जिस्से हज़रत ज़ैद शहीद पैदा हुये थे। यह तमाम उमूर इस अम्र की वज़ाहत करते हैं कि आले मोहम्मद(स.) को इलाक़ए सिन्ध से दिलचस्पी थी और वह उसके बाशिन्दों को अच्छी निगाह से देखते थे, और उनपर पूरा भरोसा करते थे।

हज़रत अली(अ.) की शहादत

(४०, हिजरी)

कसे रा मयस्सर न, शुद ईं सआदत।
ब काबा विलादत, ब मस्जिद शहादत।।

सिफ़्फ़ीन के साज़ेशी फ़ैसलए हकमैन के बाद हज़रत अली(अ.) इस नतीजे पर पहुँचे कि अब एक फैसला कुन हमला करना चाहिये। चुनान्चे आपने तैय्यारी शुरू फ़रमा दी और सिफ़्फ़ीन व नहरवान के बाद ही से आप इसकी तरफ मुतवज्जे हो गये थे। यहां तक कि हमले की तय्यारियां मुकम्मल हो गईं। दस हज़ार फौज का अफ़सर इमाम हुसैन(अ.) को और दस हज़ार फ़ौज का सरदार क़ैस इब्ने सआद को और दस हज़ार का अबू अय्यूब अंसारी को मुक़र्रर किया। इब्ने ख़ल्दून लिखता है कि फ़ौज की जो मुकम्मल फ़ेहरिस्त तय्यार हुई उसमें चालीस हज़ार आज़मूदा कार, सत्तर हज़ार रंग रूट और आठ हज़ार मज़दूर पेशा

शामिल थे। लेकिन कूच का दिन आने से पहले इब्ने मुलजिम ने काम तमाम कर दिया। मुक़द्दमा नहजुल बलाग़ा, अब्दुल रज़्ज़ाक़, जिल्द २, सफ़ा ७०४, में है, कि फ़ैसला तो ढोंग ही था, मगर सिफ़्फ़ीन की जंग ख़त्म हो गई और माविया हतमी तबाही से बच गये। अब अमीरल मोमेनीन ने कूफ़े का रूख़ किया और माविया पर आख़री ज़र्ब लगाने की तय्यारियां करने लगे। साठ हज़ार (६०,०००) फ़ौज आरास्ता हो चुकी थी ओर यलग़ार शुरू ही होने वाली थी, कि एक ख़ारजी अब्दुल रहमान इब्ने मुलजिम ने दग़ा बाज़ी से हमला कर दिया। हज़रत अमीरल मोमेनीन शहीद हो गये। इब्ने मुलजिम की तलवार ने हज़रत अली(अ.) का काम तमाम नहीं किया, बल्कि पूरी उम्मते मुसल्लेमा को क़त्ल कर डाला, तारीख़ का धारा ही बदल डाला। इब्ने मुलजिम की तलवार न होती तो ख़िलाफ़त मिनहाजे नबूवत पर इस्तेवार रहती। (अर हज्जुल मतालिब, सफ़ा ४७८ में है कि पैग़म्बरे इस्लाम ने पेशीन गोई फ़रमाई थी कि अली(अ.) की डाढ़ी सर के खून से रंगीन होगी। तारीख़-अल-फ़ख़री, सफ़ा ७३ में है कि हज़रत अली(अ.) एक मरतबा बीमार हुये और शेख़ेन उन्हें देखने के लिये गये, तो हालत सक़ीम देख कर आं हज़रत से कहने लगे कि शायद अली(अ.) न बचेंगे। आपने फ़रमाया अभी अली(अ.) को मौत नहीं आयेगी। अली(अ.) दुनिया के तमाम रन्जो ग़म उठाने के बाद तलवार से शहीद होंगे। सवाएक़े मोहर्रेक़ा सफ़ा ८० में है कि हज़रत अली(अ.) फ़रमाते थे कि मेरे सर और मेरी दाढ़ी को खून से जो रंगीन करेगा, वह दुनिया में सबसे ज़्यादा बद बख़्त होगा। शरह इब्ने अबिल हदीद, जुज़ १३, सफ़ा १०२ में है कि ख़ालिद बिन वलीद बाज़ उमूरे शुजाउत की वजह से अली(अ.) को क़त्ल करना चाहते थे। सीरते हलबिया, जिल्द २, सफ़ा १६६ व बुख़ारी जिल्द ५, हालाते ग़ज़वए ताएफ़, सफ़ा २६, में है कि रसूल अल्लाह(स.) ख़ालिद इब्ने वलीद पर तबर्रा करते थे। तारीख़ अबुल फ़िदा वग़ैरह में है कि **"ख़ालिद"** ने अहदे अबू बक्र में " **मालिक इब्ने नवेरा** " की बीवी से ज़ेना किया था। तारीख़े आसम कूफ़ी सफ़ा ३४ व तारीख़े तबरी, जिल्द ४, सफ़ा ४६४ में है कि हज़रत उमर ने ख़लीफ़ा होते ही ख़ालिद को माजूल कर दिया था। तारीख़े तबरी जिल्द,६ सफ़ा ५४ व कामिल वग़ैरा में है कि ३८ हिजरी में अमीरे माविया ने मालिके अशतर को ज़हर से शहीद करा दिया। तारीख़े कामिल इब्ने असीर जिल्द ३, सफ़ा १४२ में है कि माविया ने हज़रत अबू बक्र के बेटे मोहम्मद को गधे की खाल में सी कर जिन्दा जला दिया था। जिसका हज़रत आयशा को बहुत रंज था, और माविया को बद दुआ किया करती थीं। तवारीख़ में है कि माविया ने हज़रत आयशा को कुएं में गिरा कर ज़िन्दा दफ़न कर दिया। ज़िक्र-अल-अब्बास सफ़ा ५१ में मुख़्तलिफ़ तवारीख़ के हवाले से मरकूम है कि २८ ,सफ़र ५०, हिजरी को वाक़िये शहादत हज़रत अली(अ.) के १०, साल बाद इमाम हसन(अ.) को ज़हर से माविया ने शहीद कराया था। कशफ़ुल ग़म्मा सफ़ा ६१ में है कि हज़रत अली(अ.) ने पेशीन गोई फ़रमाई थी कि अमीरे शाम को उस वक़्त तक मौत न आयगी जब तक वह मेरे सर और मेरी दाढ़ी को ख़ून आलूद

अपनी आंखों से न देख ले गा। किताब तज़किरए मोहम्मद व आले मोहम्मद, जिल्द २, सफ़ा २८८ में है कि इब्ने मुलजिम ख़ारजी ,तहरीक की इस जमाअत का मिम्बर था जो किसी मज़बूत हाथ के इशारे पर नाच रही थी। ऐन उस वक़्त जब अली(अ.) शाम के हमले के लिये रवाना होने की तय्यारियां कर रहे थे। इब्ने मुलजिम का वार करना यह बता रहा है कि इसकी तह में बड़ी साज़िश थी। तारीख़-अल-इमामत वल सियासत जिल्द२, सफ़ा ३० में है कि माविया ने अहदे उस्मान में हज़रते उस्मान से क़त्ले अली(अ.) की इजाज़त मांगी थी, लेकिन उन्होंने इन्कार कर दिया था। किताब मनाक़िबे मुरतज़वी के सफ़ा २७७, में बा हवाला हदीक़तुल हक़ाएक़ हकीम सनाई (र.) मरक़ूम है कि अमीरल मोमेनीन के क़त्ल के इन्तेज़ामात इब्ने मुलजिम के ज़रिये से अमीरे माविया ने किये थे। जिसका इक़रार खुद इब्ने मुलजिम ने इन अल्फ़ाज़ में किया था।

के मरा ईं , माविया फ़रमूद।
कार करदम कनून न दारद सूद।।

मैंने माविया के कहने से ऐसा फ़ल किया, मगर अफ़सोस कोई फ़ायदा बरामद न हुआ। मुलाहेज़ा हो जिक्र-अल-अब्बास सफ़ा २०, किताब अर हज्जुल मतालिब, सफ़ा ७५३ व तबरी जिल्द ४, सफ़ा ५९६ व रौज़तुल अहबाब में है कि अब्दुल रहमान इब्ने मुलजिम ने कूफ़ा पहुंच कर एक हज़ार दिरहम की एक तलवार ख़रीदी और उसे ज़हर में बुझा लिया।, और मौक़े की तलाश में कूफ़े की गलियों के चक्कर काटने लगा। इसी दौरान में एक दिन उसकी नज़र एक हसीन औरत पर जा पड़ी जिसका नाम क़तामा बिनते नजबा था और जो माविया की रिशते दार होती थी। इब्ने मुलजिम उस औरत का बे दाम ग़ुलाम बन गया और उस्से सिलसिला जुम्बानी शुरू की। बिल आख़िर बात ठहरी और अक़्द का फ़ैसला हो गया। जब मेहर की गुफ़तुगू हुई तो उसने कहा कि तीन हज़ार अशरफ़ियां और हज़रत अली (अ.) का सर लूंगी। क्योंकि उन्होंने इस्लामी जंगों में मेरे बाप और भाईयों को क़त्ल कर दिया है। इब्ने मुलजिम ने जवाब दिया कि मुझे मंजूर है। **“ लक़द क़सदत लक़तल अली वमा अक़द मनी हाज़ल मिस्र ग़ैर ज़ालेका ”** खुदा की क़सम तूने ऐसी चीज़ मांगी है जिसके लिये मैं खुद इस शहर में भेजा गया हूँ, अलबत्ता तुझे भी अपने वायदे का पास व लिहाज़ रखना चाहिये, उसने कहा ऐसा ही होगा। इस अहदो पैमान वायदा वईद के बाद इब्ने मुलजिम तगो दौ व सई व कोशिश और जद्दो जेहद में मशग़ूल हो गया। सवाएक़े मोहर्रेक़ा सफ़ा ८० में है कि इब्ने मुलजिम की इमदाद के लिये शबीब इब्ने बीरह अशजई भी था। रौज़तुल शोहदा, सफ़ा १९८ में है कि क़तामा ने और कई अशख़ास इसकी मद्द के लिये मोअय्यन और मोहय्या कर दिये। मुस्तदरिक हाकिम में है कि क़तामा ने ऐसा मेहर मांगा जिसकी मिसाल अरब व अजम में नहीं है। तारीख़े अहमदी सफ़ा २१० में बा हवाला रौज़तुल अहबाब मरक़ूम

: कि हज़रत अली(अ.) ने ज़मानए शहादत क़रीब होने पर कई बार अपनी शहादत का इशारे और कनाये में ज़िक्र फ़रमाया था। मन्कूल है कि एक दिन आप खुतबा फ़रमा रहे थे। नागाह इमाम हसन दौराने खुतबा में आ गये। हज़रत अली(अ.) ने पूछा बेटा आज कौन सी तारीख़ है और इस महीने के कितने दिन गुज़र चुके हैं। आपने अर्ज़ की बाबा जान १३ दिन गुज़र गये हैं। फिर हज़रत ने इमाम हुसैन(अ.) की तरफ़ रूख़ करके पूछा बेटा अब महीने के ख़त्म होने में कितने दिन बाक़ी रह गये हैं। इमाम हुसैन(अ.) ने अर्ज़ की बाबा जान सत्तरा दिन रह गये हैं। उसके बाद आपने अपनी रीशे मुबारक पर हाथ फेर कर फ़रमाया कि अन्क़रीब क़बीलए मुराद का एक नामुराद मेरी दाढ़ी को सर के खून से रंगीन करे गा। (अख़बारे सहीहा में वारिद है कि हज़रत अली(अ.) का उसूल यह था कि आप एक, एक दिन अपने बेटों के यहां इफ़तार फ़रमाया करते थे, और सिर्फ़ एक लुक़मा तनावुल करते थे। एक रवायत में है कि आपने अपनी बेटी उम्मे कुलसूम से फ़रमाया कि मैं अन्क़रीब तुम लोगों से रूख़्सत हो जाऊंगा। यह सुन कर वह रोने लगीं। आपने फ़रमाया कि मौत से किसी को छुटकारा नहीं **" बेटी "** मैंने आज रात को ख़्वाब में सरवरे आलम को देखा है। कि वह मेरे सर से गुबार साफ़ कर रहे हैं,और फ़रमाते हैं कि तुम तमाम फ़राएज़ अदा कर चुके, अब मेरे पास आ जाओ। जम्हूरे मुवर्रेख़ीन का इत्तेफ़ाक़ है कि जिस रात की सुबह को आप शहीद हुये ,उस रात में आप सोये नहीं। यह रात आपकी इस तरह गुज़री कि आप थोड़ी थोड़ी देर के बाद मुसल्ले से उठ कर सहने ख़ाना में आते और आसमान की तरफ़ देख कर फ़रमाते थे कि मेरे आक़ा सरवरे कायनात ने सच फ़रमाया है कि मैं शहीद किया जाऊंगा। लिखा है कि जब नमाज़े सुबह के इरादे से बाहर निकले, तो सहने ख़ाना में बतख़ों ने दामन थाम लिया और शोर मचाने लगीं, किसी ने रोका तो आपने फ़रमाया, मत रोको यह मुझ पर नौहा कर रही हैं। फिर आप दौलत सरा से बरामद हो कर दाख़िले मस्जिदे कूफ़ा हुये और गुलदस्ते अज़ान पर जाकर अज़ान कहने लगे। इसके बाद नमाज़ में मशगूल हो गये। जब आप सजदए अव्वल में गये, नामुराद इब्ने मुलजिम मुरादी ने सरे अक़दस पर तलवार लगा दी। यह तलवार उसी जगह लगी जिस जगह ख़न्दक़ में उमरो बिन अब्दोवुद की तलपार लग चुकी थी। ज़र्ब के लगते ही आसमान से आवाज़ आई, **" अला क़तल्ल अमीरल मोमेनीन "** आगाह हो कि अमीरल मोमेनीन क़त्ल हो गये। इसके बाद आप ज़मीन पर लोटने लगे और ज़ख़्म पर मिट्टी डाल कर बोले **" फ़ुज़तो बे रब्बिल काबा "** खुदा की क़सम मैंने हयाते अब्दी पाई और कामयाब हो गया। ज़र्ब लगने के बाद इब्ने मुलजिम भागा, लोगों ने ताअक़्क़ुब किया। (किताब ज़िकरूल अब्बास, सफ़ा ४०) में है कि आपको ख़ून में नहाया हुआ देख कर अवलादो असहाब ने गिरया करना शुरू कर दिया। आपने फ़रमाया बस रो चुको और मुझे घर ले चलों यह सुन कर हज़रत इमाम हसन और इमाम हुसैन (अ.)और हज़रते अब्बास ने उक गिलीम में डाल कर आपको घर पहुंचाया। किताब अल-कर्रार, सफ़ा ४०२ में है कि

घर पहुंच कर आपने सुबह को मुख़ातिब करके फ़रमाया कि तू गवाह रहना कि मैंने कभी नमाज़ कज़ा नहीं की, और ख़ुदा व रसूल की कोई मुख़ालेफ़त मुझसे नहीं हुई। तारीख़े अहमदी सफ़ा २१२ में है कि कोई इलाज कारगर न हुआ और आपकी वफ़ात का वक़्त आ पहुंचा। तारीख़ अल इमामत वल सियासत जिल्द १, सफ़ा १५४ में है आपको ऐसी ज़हर से बुझी हुई तलवार से ज़ख़्मी किया गया था कि सारे अहले मिस्र के लिये काफ़ी था। किताब रहमतुल आलेमीन मुसन्नेफ़ा क़ाज़ी मोहम्मद सुलैमान जज पटियाला के सफ़ा ८१, में है कि ज़ख़्म को जिस पर शहादत हुई कसीर बिन उमरो सकूनी जो शाहाने ईरान का तबीबे ख़ास रह चुका था,उसने बताया कि ज़ख़्म उम्मे दिमाग़ तक पहुंच गया है और अब सेहत मोहाल है। तारीख़े कामिल इब्ने असीर में है कि इन्तेक़ाल के वक़्त आपने नसीहतें और वसीयतें फ़रमाईं जो तक़्वा परहेज़ गारी, इबादत, सेलए रहम वग़ैरा-वग़ैरा से मुताअल्लिक़ थीं। फिर एक नविशता लिख कर दिया। किताब अख़बारे मातम, सफ़ा १२४ में और बाज़ कुतुबे तवारीख़ में है कि आपकी ख़िदमत में शरबत पेश किया गया। तो आपने थोड़ा सा पी कर क़ातिल को भिजवा दिया। अल अख़बार अल तवाल सफ़ा ३६०, में है कि हज़रत उम्मे कुलसूम ने इब्ने मुलजिम से कहलाया कि ऐ दुशमने ख़ुदा तूने अमीरल मोमेनीन को शहीद कर दिया, तो उसने जवाब दिया कि अमीरल मोमेनीन को नहीं, मैंने तुम्हारे बाप को क़त्ल किया है और ऐसी तलवार से क़त्ल किया है जिसे एक माह ज़हर पिलाता रहा हूँ। कशफ़ुल अनवार, तरजुमा बिहार, जिल्द ६, सफ़ा २७७ में है कि आपने आखरी वक़्त अपने सब बेटों को बुला कर इमाम हसन और इमाम हुसैन(अ.) की इताअत और इमदाद का हुक्म दिया, और फ़रमाया कि यह फ़रज़न्दाने रसूल(स.) हैं। उसूले काफ़ी सफ़ा १४१ में है कि जिन बेटों को हिदायत दी गई उनकी तादाद बारह थी। मरक़ातुल ईक़ान, जिल्द १, सफ़ा ४० में है कि आपने अपनी तमाम अवलाद व अज़वाज को इमाम हसन(अ.) के सिपुर्द फ़रमाया। माईतन्न सफ़ा ४४१ में है कि हज़रते अब्बास को इमाम हुसैन(अ.) के हवाले करके फ़रमाया कि यह तुम्हारा ग़ुलाम है। करबला में काम आयगा। किताब अक़्दुल फ़रीद में है कि आपने अमरे ख़िलाफ़त इमामे हसन के सिपुर्द फ़रमाया। किताब वसीलतुन नजात में है कि इमाम हसन हज़रत अली(अ.) की वसीयत के मुताबिक़ इमामे बरहक़ और ख़लीफ़ए वक़्त क़रार पाये। तारीख़े कामिल इब्ने असीर, बेहारूल अनवार, आलाम अल वरा , ज़िकरूल अब्बास,सफ़ा ३८ में है कि आपने २१, रमज़ान, ४० हिजरी को इन्तेक़ाल फ़रमाया। किताब जामेए अब्बासी सफ़ा ५६, और अल याक़ूबी में है कि शबे २१ रमज़ान को आपने इन्तेक़ाल फ़रमाया है। इसी शब को हज़रते ईसा आसमान पर उठाये गये। हज़रते मूसा ने रेहलत की और यूशा इब्ने नून ने वफ़ात पाई। किताब अल इमामत वल सियासत जिल्द १, सफ़ा १५५, व इरशादे मुफ़ीद, सफ़ा ७ में है कि इमामे हसन, इमामे हुसैन(अ.) और अब्दुल्लाह इब्ने जाफ़र ने ग़ुस्ल दिया, और मोहम्मदे हनफ़िया ने पानी डालने में मदद की। कफ़न पिनहाने के बाद हज़रत इमामे हसन(अ.) ने

नमाज़े जनाज़ा पढ़ी। रहला इब्ने जबीर अनदलसी सफ़ा १८६, तबा मिस्र १६०८ ई० में है कि आपको जिस जगह ग़ुस्ल दिया गया उसी जगह हज़रत नूह की बेटी का घर था। सवाएक़े मोहर्रेक़ा सफ़ा ८० में है कि शहादत के वक़्त आपकी उम्र ६३, साल थी। बाज़ तवारीख़ में है कि आपकी क़ब्र हज़रत नूह की बनाई हुई थी, और आपका जनाज़ा सिरहाने के तरफ़ से फ़रिशते उठाये हुये थे। तारीख़े अबुल फ़िदा में है कि आप नजफ़े अशरफ़ में सिपुर्दे ख़ाक किये गये। जो अब भी ज़ियारत गाहे आलम है। अल याक़ूबी जिल्द २, सफ़ा २०३ में है कि शहादते अली (अ.) के बाद इमामे हसन(अ.) ने अपने ख़ुतबे में फ़रमाया कि उन्होंने सिर्फ़ सात सौ (७००) दिरहम छोड़े हैं। मुसतदरिक, हाकिम और रियाज़ुन नज़रा और अर हज्जुल मतालिब, सफ़ा ७६० में है कि जिस शब में हज़रत अली(अ.) शहीद हुये उसकी सुबह को बैतुल मुकद्दस का जो पत्थर उठाया जाता था, उसके नीचे से खूने ताज़ा बरामद होता था। तारीख़ अल याक़ूबी, जिल्द २, सफ़ा २०३ में है कि हज़रत अली(अ.) के दफ़न के बाद उनकी क़ब्र पर क़आक़ा बिन ज़रारा ने एक तक़रीर की जिसमें निहायत ग़मो अन्दोह के साथ कहा कि ऐ मौला आपकी ज़िन्दगी ख़ैरो बरकत की किलीद थी, अगर लोग आपको सही तरीक़े पर मानते तो ख़ैर ही ख़ैर पाते, मगर दुनिया वालों ने दुनिया को दीन पर तरजीह दी और ख़ैर हासिल न कर सके। इन्शाअल्लाह दुनिया दार जहन्नम में जायेंगे। किताब अनवारूल हुसैनिया जिल्द २, सफ़ा ३६ में है कि आपकी क़ब्र पोशीदा रखी गई थी। " **मिस्टर गिबन** " की तारीख़ डी गाईन एण्ड हाल आफ़ दी रोमन इम्पाएर में है कि ज़ालिम बनी उमय्या की वजह से अली की क़ब्र छुपाई गई। चौथी सदी में एक कुब्बा रौज़ए कूफ़ा के खन्डरों के पास नमूदार हो गया। मशहदे अली कूफ़े से ५ मील और बग़दाद से १२०, मील जुनूब में वाक़े है। हैवातुल हैवान व दमीरी जिल्द २, सफ़ा १८७ में है कि सबसे पहले आपकी क़ब्र के गिर्द कटैहरे लगवाये गये थे। किताब सैफ़-अल-मुक़ल्लेदीन बाब ५, सफ़ा २७४ में है कि मुसन्निफ़ किताब अब्दुल जलील यूसुफ़ ज़ी ने आपकी तारीख़ के बारे में लिखा है।

गर तू साले शहादतश जूई।
सरे मातम , चरानमी गोई।।

हज़रत अली(अ.) की शहादत पर मरसिया :– हज़रत अली(अ.) की शहादत पर बहुत से शोअरा ने मरासी कहे हैं हम इस वक़्त किताब," **रहमतुल लिल आलेमीन** " मुसन्नेफ़ा क़ाज़ी मोहम्मद सुलैमान जज रियासत पटीयाला के जिल्द २,सफ़ा ८१ से बक्र बिन हमाद अल क़ाहेरी के ११, अशआर में से सिर्फ़ तीन शेर मय तरजुमा नक़ल करते हैं।

कुल ला बिन मलहजम व अला क़द अर ग़ालेबा।
हदमत वै लका , लिल इस्लाम अरकाना।।

"इब्ने मुलजिम" से कहना गो मैं जानता हूँ कि तक़दीर सब पर ग़ालिब है, कि कमबख़्त तूने इस्लाम के अरकान को ढा दिया।

क़तलत अफ़ज़ल मिन यमशी अली क़दम।
व अव्वलुन नास, इस्लामन व ईमाना ।।

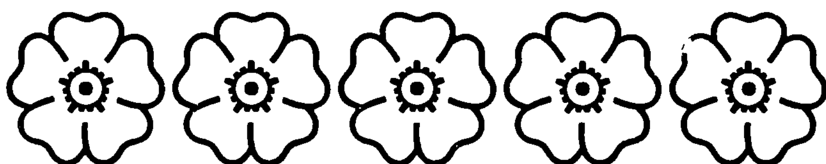
वह शख़्स जो ज़मीन पर चलने वालों में सबसे अफ़ज़ल था और इस्लाम व ईमान में सबसे अव्वल।

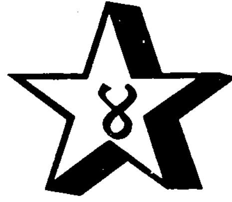
व इल्मुन्नास बिल क़ुरआन सुम बेमा।
सन रसूलना, शरअन वत तबैना।।

और क़ुरआन व सुन्नत के जानने में सब आलम था, तूने उसे क़त्ल किया है।

हज़रत की अज़वाज व औलाद :- किताब अनवारूल हुसैनिया जिल्द २, सफ़ा ३५ में है कि आपने दस औरतों से निकाह कियाऔर आपके इन्तेक़ाल के वक़्त चार बीवियां मौजूद थीं। इमामा, असमा, लैला, और उम्मुल बनीन। आपने दस बेटे और अट्ठारा बेटियां छोड़ीं। इरशादे मुफ़ीद, सफ़ा १९९ व हमराह इब्ने हज़्म व तहज़ीबुल असमा , जिल्द १, सफ़ा ३४९ में है कि आपके बारह बेटे और सोलह बेटियां थीं आप की नस्ल पांच बेटों से बढ़ी। (१) इमाम हसन(अ.) (२) इमाम हुसैन(अ.) (३) मोहम्मदे हनफ़िया[1] (४) हज़रते अब्बास (५) उमर बिन अली, मुलाहेज़ा हो। नासेखुल तवारीख़ जिल्द ३, सफ़ा ७०७, तबा बम्बई व ज़िकरूल अब्बास, सफ़ा ४४ तबा लाहौर।

१. मोहम्मद की मां का असली नाम खूला और लक़ब हनफ़ेया था वह क़बीलए हनफ़िया बिन लहीम से थीं, मोहम्मद बिन हनफ़िया ८, हिजरी में पैदा हुये और उन्होंने यकुम मोहर्रम ८१, हिजरी को इन्तेक़ाल कियां उनके ज़ोहद व रियाज़त और ज़ोरो क़ुव्वत की हिकायात बहुत मशहूर हैं। (किताब रहमतुल लिल आलेमीन, जिलद २, सफ़ा ८५, तबा लाहौर) अबुल अब्बास , अहमद बिन अली नल शन्दी अलमतूफ़ी ८२१, ई० तहरीर फ़रमाते हैं कि बनी हनफ़या अदनान के बक्र बिन वाएली से मुताअल्लिक़एक क़बीला है जिसका सिलसिला यह है।
(बनू हनफ़या बिन लहीम, बिन साअब, बिन अली बिन बक्र, बिन वाएल यह यमामा में रहते थे। (निहायतुल अरब फ़िन निसाब अल अरब , सफ़ा २२५, तबा नजफ़े अशरफ़)





अबु मोहम्मद

हज़रत

इमाम हसन (अ.)

बाप की शमशीर का हमसर है बेटे का क़लम।
बाज़ुए हैदर की ताक़त , ख़ामए शब्बर में है।।
फ़तेह ख़ैबर में है मुज़मर,मक़सदे सुलहे हसन।
मक़सदे सुलहे हसन , फ़तहे दर ख़ैबर में है।।

"साबिर थरयानी" (कराची)



بسم الله الرّحمٰن الرّحيم

हज़रत इमाम हसन (अ.स.)

वली जुलमेनन, हज़रत हसन, आँ सरवरे ख़ूबां।
कि हर चीज़ अज़ अदम बाक़ुदर तश मुमकिन ज़े इमकाँ शुद।।
ज़ेहे सौदाए बातिल, के तवानम, मदहे आँ शाहे।
कि मदाहश खुदा, रावी पयम्बर, मदहे क़ुरां शुद।।

हज़रत इमाम हसन (अ.), **अमीरल मोमेनीन हज़रत अली**(अ.) व सय्यदतुननिसां **हज़रत फ़ात्मा** (स.अ.) के फ़रज़ंद और पैग़म्बरे ख़ुदा हज़रत **मोहम्मद मुस्तफ़ा** (स.) व मोहसिने इस्लाम हज़रत **ख़तीजतुल कुबरा** के नवासे थे। आपको भी ख़ुदा वन्दे आलम ने मासूम मन्सूस अफ़ज़ले कायनात आलिमे इल्मे लदुन्नी क़रार दिया है।

आपकी विलादत :- आप १५, रमज़ान, ३, हिजरी की शब को मदीनए मुनव्वरा में पैदा हुये। विलादत से क़ब्ल उम्मे अफ़ज़ल ने ख़्वाब में देखा कि रसूले अकरम (स.) के जिस्मे मुबारक का एक टुकड़ा मेरे घर में आ पहुँचा है। ख़्वाब रसूले करीम(स.) से बयान किया। आपने फ़रमाया कि इसकी ताबीर यह है कि मेरे लख़्ते जिगर फ़ात्मा के बत्न से एक बच्चा पैदा हेगा, जिसकी परवरिश तुम करोगी। मुवर्रेख़ीन का कहना है कि रसूल (स.) के घर में आपकी पैदाइश अपनी नवैय्यत की पहली ख़ुशी थी। आपकी विलादत ने रसूल(स.) के दामन से मक़्तूउन नसल होने का धब्बा साफ़ कर दिया, और दुनिया के सामने सूरए कौसर की एक अमली और बुनियादी तफ़सीर पेश कर दी।

आपका नामे नामी :- विलादत के बाद इस्मे गेरामी हम्ज़ा तजवीज़ हो रहा था, लेकिन सरवरे कायनात(स.) ने बा हुक्मे ख़ुदा मूसा के वज़ीर हारून के फ़रज़न्दों के शब्बीर व शब्बर नाम पर आपका नाम हसन और बाद में आपके भाई का हुसैन रखा। बेहारूल अनवार में है कि इमाम हसन की पैदाईश के बाद जिब्रईल अमीन ने सरवरे कायनात(स.) की ख़िदमत में एक सफ़ैद रेशमी रूमाल पेश किया। जिस पर हसन,हुसैन लिखा

हुआ था। माहिरे इल्म-अल-नसब अल्लामा अबुल हुसैन का कहना है, कि ख़ुदा वन्दे आलम ने दोनों शहज़ादों का नाम अन्ज़ारे आलम से पोशीदा रखा था। यानी इनसे पहले हसन और हुसैन नाम से कोई मौसूम नहीं हुआ था। किताबे आलामे अलवरी के मुताबिक़ यह नाम भी लौहे महफ़ूज़ में लिखा हुआ था।

ज़बाने रिसालत (स.) दहने इमामत में :- अल्ल-शराए में है कि जब इमाम हसन(अ.) की विलादत हुई और आप सरवरे कायनात(स.) की ख़िदमत में लाये गये, तो रसूले करीम(स.) बे इन्तेहा खुश हुये, और उनके दहने मुबारक में अपनी ज़बाने अक़दस दे दी। बेहारूल अनवार में है कि आं हज़रत ने नौज़ायदा बच्चे को आग़ोश में ले कर प्यार किया और दाहिने कान में अज़ान और बाएं में अक़ामत फ़रमाने के बाद अपनी ज़बान उनके मुँह में दे दी। इमाम हसन(अ.) उसे चूसने लगे। इसके बाद आपने दुआ की ख़ुदाया इसको और उसकी औलाद को अपनी पनाह में रखना। बाज़ लोगों का कहना है कि इमाम हसन (अ.) को लोआबे दहने रसूल(स.) कम और इमाम हुसैन(स.) को ज़्यादा चूसने का मौक़ा दस्तियाब हुआ था। इसी लिये इमामत नसले हुसैन(अ.) में मुस्तक़र हो गई।

आपका अक़ीक़ा :- आपकी विलादत के सातवें दिन सरवरे कायनात ने खुद अपने दस्ते मुबारक से अक़ीक़ा फ़रमाया और बालों को मुंडवा कर उसके हम वज़न चांदी तसद्दुक़ की। (असद-उल-ग़ाबेता,जिल्द ३,सफ़ा १३) अल्लामा कमालुद्दीन का बयान है कि अक़ीक़े के सिलसिले में दुम्बा ज़ब्हा किया गया था।(मतालेबुल सुवेल, सफ़ा २२०) काफ़ी कुलैनी में है कि सरवरे कायनात(स.) ने अक़ीक़े के वक़्त जो दुआ पढ़ी थी उसमें यह इबारत भी थी।

" अल्लाह हुम्मा अज़्महा बाअज़्मा, लहमहा, बिल हमा, दमहा बदमहा वशअरहा, बशराही, अल्लाहा हुम्मा अज अलहा वक़आ लम हमीदिन वालेही "

ख़ुदाया इसकी हड्डी मौलूद की हड्डी के एवज़, इसका गोश्त उसके गोश्त के एवज़, इसका ख़ून उसके ख़ून के एवज़, इसका बाल उसके बाल के एवज़ क़रार दे और इसे मोहम्मद व आले मोहम्मद(स.) के लिये हर बला से नजात का ज़रिया बना दे। इमामे शाफ़ेई(र.) का कहना है कि आं हज़रत (स.) ने इमामे हसन का अक़ीक़ा करके इसके सुन्नत होने की दाएमी बुनियाद डाल दी। (मतालेबुल सुवेल, सफ़ा २२०) बाज़ माआसेरीन ने लिखा है कि आं हज़रत(स.) ने आपका ख़त्ना भी कराया था, लेकिन मेरे नज़दीक यह सही नहीं है। क्योंकि इमामत की शान से मख़्तून पैदा होना भी है।

कुन्नियत व अलक़ाब :- आपकी कुन्न्ति सिर्फ़ अबू मोहम्मद थी और आपके अलक़ाब बहुत कसीर हैं। जिनमें तय्यब, तक़ी, सिब्त व सय्यद ज़्यादा मशहूर हैं। (मोहम्मद बिन तलहा शाफ़ेई का बयान है कि आपका " सय्यद " लक़ब खुद सरवरे कायनात का अता करदा है। (मतालेबुल सुवेल, सफ़ा २२१)

ज़्यारते आशूरा से मालूम होता है कि आपका लक़ब नासेह और अमीन भी था।

इमामे हसन(अ.) पैग़म्बरे इस्लाम(स.) की नज़र में

यह मुसल्लेमा हक़ीक़त है कि इमाम हसन(अ.) पैग़म्बरे इस्लाम(स.) के नवासे थे लेकिन कुरआने मजीद ने उन्हें फ़रज़न्दे रसूल(स.) का दरजा दिया है और अपने दामन में जा बजा आपके तज़किरे को जगह दी है। खुद सरवरे कायनात(स.) ने बे शुमार आहादीस आपके मुताअल्लिक़ इरशाद फ़रमाई हैं। एक हदीस में है कि आं हज़रत(स.) ने इरशाद फ़रमाया है कि मैं हसनैन को दोस्त रखता हूँ और जो उन्हें दोस्त रखे उसे भी क़द्र की निगाह से देखता हूँ। एक सहाबी का बयान है कि मैंने रसूले करीम(स.) को इस हाल में देखा है कि वह एक कंधे पर इमामे हसन(अ.) को और एक पर इमामे हुसैन (अ.) को बिठाए हुये लिये जा रहे हैं और बारी बारी दोनों का मूँह चूमते जाते हैं। एक सहाबी का बयान है कि एक दिन आं हज़रत नमाज़ पढ़ रहे थे और हसनैन आपकी पुश्त पर सवार हो गये। किसी ने रोकना चाहा तो हज़रत ने इशारे से मना फ़रमाया(असाबा, जिल्द २, सफ़ा १२) एक सहाबी का बयान है कि मैं उस दिन से इमाम हसन(अ.) को बहुत ज़्यादा दोस्त रखने लगा हूँ। जिस दिन मैंने रसूल(स.)की आग़ोश में बैठ कर उन्हें उनकी दाढ़ी से खेलते देखा। (नूरूल अबसार,सफ़ा ११६)

एक दिन इमाम हसन(अ.) को कंधे पर सवार किये हुये कहीं लिये जा रहे थे। एक सहाबी ने कहा कि ऐ साहब ज़ादे तुम्हारी सवारी किस क़द्र अच्छी है, यह सुन कर आंहज़रत ने फ़रमाया कहो कि किस क़द्र अच्छा सवार है। (असद अल ग़ाब्ता, जिल्द ३, सफ़ा १५ बाहवाला तिरमिज़ी) इमाम बुख़ारी और इमाम मुस्लिम लिखते हैं कि एक दिन रसूले खुदा (स.) इमाम हसन(अ.) को कांधे पर बिठाए हुये फ़रमा रहे थे, खुदाया मैं इसे दोस्त रखता हूँ तू भी इससे मोहब्बत कर। हाफ़िज अबू नईम, अबू बक्र से रवायत करते हैं कि एक दिन आं हज़रत(स.) नमाज़े जमाअत पढ़ा रहे थे कि नागाह इमाम हसन आ गये और वह दौड़ कर पुश्ते रसूल(स.) पर सवार हो गये। यह देख कर रसूल करीम(स.) ने निहायत नरमी के साथ सर उठाया। इख़्तेतामे नमाज़ पर आपसे इसका तज़किरा कया गया तो फ़रमाया यह " मेरा गुले उम्मीद " है। " अब्नी हाज़ा सय्यद " यह मेरा बेटा सय्यद है। और देखो यह अनक़रीब दो बड़े गिरोहों में सुलह कराये गा। इमामे निसाई अब्दुल्लाह इब्ने शद्दाद से रवायत करते हैं कि एक दिन नमाज़े इशा पढ़ाने के लिये आं हज़रत तशरीफ(स.) लाये आपकी आग़ोश में इमाम हसन(अ.) थे। आंहज़रत नमाज़ में मशग़ूल हो गये। जब सजदे में गये तो इतना तूल कर दिया कि मैं यह समझने लगा कि शायद आप पर वही नाज़िल होने लगी है। इख़्तेतामे नमाज़ पर आपसे इसका तज़किरा किया गया। तो फ़रमाया कि मेरा फ़रज़न्द मेरी पुश्त पर आगया था, मैंने यह न चाहा कि उसे उस वक़्त तक पुश्त से उतारूँ जब तक कि वह ख़ुद न उतर जाय। इस लिये सजदे को तूल देना पड़ा। हकीम तिरमिज़ी और निसाई व अबू दाऊद ने लिखा है कि आं हज़रत(स.) एक दिन मैहवे ख़ुतबा थे कि हसनैन आ गये, और हसन (अ.) के पांव अबा के दामन में इस तरह उलझे कि ज़मीन पर गिर पड़े, यह देख कर

आं हज़रत (स.) ने खुतबा तर्क कर दिया और मिम्बर से उतर कर आग़ोश में उठा लिया, और मिम्बर पर ले जाकर खुतबा शुरू फ़रमाया। (मतालेबुल सुवेल, सफ़ा २२३)

इमाम हसन(अ.) की सरदारिए जन्नत :- आले मोहम्मद(अ.) की सरदारी मुसल्लेमात से है, उलेमाए इस्लाम का इसपर इत्तेफ़ाक़ है कि सरवरे कायनात (स.) ने इरशाद फ़रमाया है। " **अल हसन वल हुसैन सय्यद शबाबे अहले जन्नतः व अबु हुमा ख़ैर मिनहा** " हसन और हुसैन(अ.) जवानाने बेहिश्त के सरदार हैं और उनके वालिदे बुज़ुर्गवार यानी अली इब्ने अबी तालिब इन दोनों से बेहतर हैं। जनाबे हुज़ीफ़ए यमानी का बयान है कि मैंने आं हज़रत को एक दिन बहुत ही मसरूर पा कर अर्ज़ की मौला आज इफ़राते शादमानी की क्या वजह है। इरशाद फ़रमाया कि मुझे आज जिब्रईल ने यह बशारत दी है कि मेरे दोनों फ़रज़ंद हसन व हुसैन जवानाने बेहिश्त के सरदार हैं, और उनके वालिद अली इब्ने अबी तालिब उनसे बेहतर हैं। (कंज़ुल आमाल, जिल्द ७, सफ़ा १०७, सवाएके मोहर्रेका सफ़ा ११७) इस हदीस से इसकी भी वज़ाहत हो गई कि हज़रत अली(अ.) सिर्फ़ सय्यद ही न थे बल्कि फ़रजनदाने सियादत के बाप थे।

जज़्बए इस्लाम की फ़रावानी :- मुवर्रेख़ीन का बयान है कि एक दिन अबू सुफ़ियान हज़रत अली(अ.) की ख़िदमत में हाज़िर हो कर कहने लगा कि आप आं हज़रत (स.) से सिफ़ारिश कर के एक ऐसा मोहायदा लिखवा दीजिये जिसकी रू से मैं अपने मक़सद में कामयाब हो सकूँ। आपने फ़रमाया कि आं हज़रत जो कह चुके है। अब उसमें सरे मूं फ़र्क़ न होगा। उसने इमाम हसन(अ.) से सिफ़ारिश की ख़्वाहिश की। आपकी उम्र अगरचे उस वक़्त सिर्फ़ १४ माह की थी, लेकिन आपने उस वक़्त ऐसी जुरअत का सुबूत दिया जिसका तज़किरा ज़बाने तारीख़ पर है। लिखा है कि अबू सुफ़ियान की तलब सिफ़ारिश पर आपने दौड़ कर उसकी डाढ़ी पकड़ ली और नाक मरोड़ कर कहा कलमै शहादत ज़बान पर जारी करो। तुम्हारे लिये सब कुछ है यह देख कर अमीरुल मोमेनीन मसरूर हो गये।

(मनाक़िबे आले अबु तालिब, जिल्द ४, सफ़ा ४६)

इमाम हसन और तरजुमानी वही :- अल्लामा मजलिसी तहरीर फ़रमाते हैं कि इमाम हसन का यह वतीरा था कि आप इन्तेहाई कम सिनी के आलम में अपने नाना पर नाज़िल होने वाली वही मन अन अपनी वालेदा माजेदा को सुना दिया करते थे। एक दिन हज़रत अली(अ.) ने फ़रमाया कि ऐ बिन्ते रसूल मेरा जी चाहता कि मैं हसन को तरजुमानी वही करते हुये खुद देखूं और सुनूं सय्यदा ने इमाम हसन(अ.) पहुंचने का वक़्त बता दिया।

एक दिन अमीरुल मोमेनीन हसन से पहले दाख़िले ख़ाना हो गये, और गोशए ख़ाना में छुप कर बैठ गये। इमाम हसन(अ.) हसबे मामूल तशरीफ़ लाये और मां की आग़ोश में बैठ कर वही सुनाना शुरू कर दी, लेकिन थोड़ी ही देर के बाद अर्ज़ की,

" **या अमाह क़द तलजलज लेसानी व कुल बयानी लाअल सय्यदी यरानी** "

मादरे गेरामी आज वही तरजुमानी में लुकनत और बयाने मक़सद में रूकावट हो रही है, मुझे ऐसा मालूम होता है कि जैसे मेरे बुजुर्ग मोहतरम मुझे देख रहे हैं। यह सुन कर हज़रत अमीरल मोमेनीन(अ.) ने दौड़ कर इमाम हसन(अ.) को आग़ोश में उठा लिया, और बोसा देने लगे। (बेहारूल अनवार, जिल्द १०, सफ़ा १६३)

हज़रत इमाम हसन(अ.) का बचपन में लौहे महफ़ूज़ का मुतालेआ करना

इमाम बुख़ारी रक़मतराज़ हैं कि एक दिन कुछ सदके की खजूरें आई हुई थीं इमाम हसन (अ.) इसके ढेर से खेल रहे थे और खेल ही के तौर पर इमाम हसन(अ.) ने दहने अक़दस में रख ली। यह देख कर आं हज़रत (स.) ने फ़रमाया, ऐ हसन क्या तुम्हें मालूम नहीं है कि हम लोगों पर सदक़ा हराम है। (सही बुख़ारी, पारा, ६, सफ़ा २५)

हज़रत हुज्जतुल इस्लाम शहीदे सालिस क़ाज़ी नूर उल्लाह शुश्तरी फ़रमाते हैं कि इमाम पर अगरचे वही नाज़िल नहीं होती लेकिन उसको इल्हाम होता है और वह लौहे महफ़ूज़ का मुतालेआ करता है। जिसपर अल्लामा इब्ने हजरे असक़लानी का वह क़ौल दलालत करता है जो उन्होंने सही बुख़ारी की इस रवाएत की शरह में लिखा है जिसमें आँ हज़रत ने इमाम हसन के शीरख़्वारगी के आलम में सदके की खजूर के मुँह में रख लेने पर एतेराज़ फ़रमाया था। “ **कख़ कख़ अमा ताअलम अनल सदकतः अलैना हराम** ” थूकू-थूकू क्या तुम्हें मालूम नहीं कि हम लोगों पर सदक़ा हराम है और जिस शख़्स ने यह ख़याल किया कि इमाम हसन उस वक़्त दूध पीते थे, आप पर अभी शरई पाबन्दी न थी। आं हज़रत ने उन पर क्यों एतेराज़ किया। इसका जवाब अल्लामा असक़लानी ने अपनी फ़तेह अलबारी ,शरह सही बुख़ारी में दिया है। कि इमाम हसन (अ.) और दूसरे बच्चे बराबर नहीं हो सकते। क्योंकि“ **अनल हसन यतालेआ लौह अल महफ़ूज़** ” इमाम हसन (अ.) शीर ख़्वारगी के आलम में भी लौहे मैहफ़ूज़ का मुतालेआ किया करते थे। (हक़ाएक़ुल हक़,सफ़ा १२७)

(ख़लीफ़ए अव्वल को मिम्बरे रसूल(स.) से उतरने का हुक्म)

अल्लामा इब्ने हजर और **इमामे सियूती** रक़मतराज़ हैं कि इमाम हसन(अ.) एक दिन मस्जिदे रसूल(स.) से गुज़रे। आपने देखा कि हज़रत अबु बक्र मिम्बरे रसूल (स.) पर बैठे हुये हैं। आपसे रहा न गया और आप मिम्बर के क़रीब तशरीफ़ ले जा कर फ़रमाने लगे। “ **अन्ज़ल अन मिम्बर अबी** ” मेरे बाप के मिम्बर से उतर आओ, यह तुम्हारे बैठने की जगह नहीं है। यह सुन कर वह मिम्बर से उतर आये-और इमाम हसन(अ.) को अपनी आग़ोश में बैठा लिया।

(सवाएक़े मोहर्रेक़ा, सफ़ा १०५, तारीख़ अल ख़ोल्फ़ा, सफ़ा ५५, रियाज़ुन नज़रा, सफ़ा १२८)

इमाम हसन का बचपन और मसाएले इल्मिया :– यह मुसल्लेमात से है कि हज़रात आइम्मए मासूमीन(अ.) को इल्मे लदुन्नी हुआ करता था। वह दुनिया में तहसीले इल्म के मोहताज नहीं हुआ करते थे। यही वजह है कि वह बचपन में ही ऐसे मसाएले इल्मिया से वाकिफ़ होते थे, जिनसे दुनिया के आम उलेमा अपनी ज़िन्दगी के आख़री उम्र तक बे बहरा रहते थे। इमाम हसन(अ.) जो ख़ानवादए रिसालत की एक फ़र्द अकमल और सिलसिले असमत की एक मुस्तहकम कड़ी थे, कि बचपन के हालात व वाक़ेयात देखे जायं तो मेरे दावे का सुबूत मिल सकेगा।

(१) मनाक़िबे इब्ने शहरे आशोब में ब हवाले शरह अख़बारे क़ाज़ी नोमान मरक़ूम है कि एक सायल हज़रत अबु बक्र की ख़िदमत में आया और उसने सवाल किया कि मैंने हालाते एहराम में शुतर मुर्ग़ के चन्द अन्डे भून के खा लिये हैं। बताइये कि मुझ पर क्या कफ़्फ़ारा वाजिब-उल-अदा हुआ। सवाल का जवाब चूंकि उनके बस का न था, इस लिये अरक़े निदामत पेशानिये ख़िलाफ़त पर आ गया। इरशाद हुआ कि इसे अब्दुल रहमान बिन औफ़ के पास ले जाओ। जो उनसे सवाल दोहराया तो वह भी ख़ामोश हो गये, और कहा कि इसका हल तो अमीरल मोमेनीन कर सकते हैं। साएल हज़रत अली(अ.) की ख़िदमत में लाया गया। आपने साएल से फ़रमाया कि मेरे दो छोटे बच्चे जो सामने नज़र आ रहे हैं उनसे दरयाफ़्त कर ले। साएल इमामे हसन की तरफ़ मुतवज्जे हुआ और मसला दोहराया। इमामे हसन (अ.) ने जवाब दिया कि तूने जितने अंडे खाय हैं उतनी ही ऊंटनियां ले कर उन्हें हामेला करा और उनसे जो बच्चे पैदा हों उन्हें राहे ख़ुदा में हदियए ख़ानए काबा कर दे। अमीरल मोमेनीन ने हंस कर फ़रमाया कि बेटा जवाब तो बिलकुल सही है लेकिन यह तो बताओ कि क्या ऐसा नहीं है कि कुछ हमल ज़ाया हो जाते हैं और कुछ बच्चे मर जाते हैं। अर्ज़ की बाबा जान बिलकुल दुरूस्त है, मगर ऐसा भी तो होता है कि कुछ अंडे भी ख़राब और गन्दे निकल जाते हैं। यह सुन कर साएल पुकार उठा कि एक मरतबा अपने अहद में सुलैमान बिन दाऊद ने भी यही जवाब दिया था। जैसा कि मैंने अपनी किताबों में देखा है।

(२) एक रोज़ अमीरल मोमेनीन(अ.) मक़ामे रहबा में तशरीफ़ फ़रमा थे, और हसनैन (अ.) वहां मौजूद थे, नागाह एक शख़्स आकर कहने लगा कि मैं आपकी रियाया और अहले बलद(शहरी) हूँ। हज़रत ने फ़रमाया कि तू झूठ बोलता है, तू न तो मेरी रियाया में से है और न मेरे शहर का शहरी है, बल्कि तू बादशाहे रोम का फ़रसतादा है। तुझे उसने माविया के पास चन्द मसाएल दरयाफ़्त करने के लिये भेजा था और उसने मेरे पास भेज दिया है। उसने कहा या हज़रत आपका इरशाद बिलकुल बजा है मुझे माविया ने पोशीदा तौर पर आपके पास भेजा है और इसका हाल ख़ुदा वन्दे आलम के सिवा किसी को मालूम नहीं है, मगर आप बा इल्मे इमामत समझ गये। आपने फ़रमाया कि अच्छा अब इन मसाएल के जवाबात इन दो बच्चों में से किसी एक से पूछ ले। वह इमाम हसन की तरफ़ मुतवज्जे हो कर चाहता था

कि सवाल करे कि इमाम हसन(अ.) ने फ़रमाया कि ऐ शख़्स तू यह दरयाफ़्त करने आया है कि !

(१) हक़ो बातिल में कितना फ़ासला है। (२) ज़मीन व आसमान तक कितनी मसाफ़त है। (३) मशरिक़ व मग़रिब में कितनी दूरी है। (४) क़ौस क़ज़ा क्या चीज है। (५) मखनस किसे कहते हैं। (६) वह दस चीज़ें क्या हैं जिनमें से हर एक को ख़ुदा वन्दे आलम ने दूसरे से सख़्त और फ़ाएक़ पैदा किया है।

सुन हक़ और बातिल में चार अंगुश्त का फ़र्क़ व फ़ासला है। अकसर व बेशतर जो कुछ आंख से देखा हक़ है। और जो कान से सुना वह बातिल है।(आंख से देखा हुआ यक़ीनी, कान से सुना हुआ मोहताजे तहक़ीक़, ज़मीन और आसमान के दरमियान इतनी मसाफ़त है कि मज़लूम की आह और आंख की रौशनी पहुंच जाती है। मशरिक़ व मग़रिब में इतना फ़ासला है कि सूरज एक दिन में तय कर लेता है और क़ौसे क़ज़ा असल में क़ौसे ख़ुदा है। इस लिये कि क़ज़ह शैतान का नाम है। यह फ़रावानी रिज़्क़ और अहले ज़मीन के लिये ग़र्क़ से अमान की अलामत है। इस लिये अगर यह ख़ुश्की में नमूदार होती है तो बारिश के अलामात से समझी जाती है और बारिश में निकलती है तो ख़त्मे बारान की अलामात में से शुमार की जाती है। मुख़न्नस वह है जिसके मुताअल्लिक़ यह मालूम न हो कि वह मर्द है या औरत ओर जिसके जिस्म में दोनों के आज़ा हों। इसका हुक्म यह है कि ता हदे बुलूग़ इन्तेज़ार करे, अगर मोहतलिम हो तो मर्द और हायज़ हो और पिस्तान उभर आयें तो औरत। अगर इस्से मसला हल न हो तो देखना चाहिये कि उसके पेशाब की धार सीधी जाती है कि नहीं। अगर वह सीधी जाती है तो वह मर्द वरना औरत। और वह दस चीज़ें जिनमें से एक दूसरे पर ग़ालिब व क़वी है वह यह हैं। कि ख़ुदा ने सबसे ज़्यादा सख़्त पत्थर को पैदा किया है। मगर इससे ज़्यादा सख़्त लोहा है। जो पत्थर को भी काट देता है उससेज़यादा सख़्त क़वी आग है जो लोहे को पिघला देती है, और आग से ज़्यादा सख़्त क़वी पानी है जो आग को बुझा देता है, और इससे ज़ायदा सख़्त व क़वी अब्र है जो पानी को अपने कंधों पर उठाये फिरता है और उससे ज़्यादा क़वी हवा है जो अब्र को उड़ाये फिरती है, और हवा से ज़्यादा सख़्त व क़वी फ़रिशता है जिसकी हवा महकूम है, और उससे ज़्यादा सख़्त व क़वी मलकुल मौत है, जो फ़रिशतए बाद की भी रूह क़ब्ज़ कर लेंगे, और मलकुल मौत से भी ज़्यादा सख़्त व क़वी मौत है जो मलकुल मौत को भी मार डालेगी और मौत से भी सख़्त व क़वी हुक्मे ख़ुदा है। यह जवाबात सुन कर साएल फड़क उठा।

(३) हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र (अ.) से मनक़ूल है कि एक मरतबा लोगों ने देखा कि एक शख़्स के हाथ में ख़ून आलूदा छुरी है और उसी जगह एक शख़्स ज़ब्हा किया हुआ पड़ा है। जब उससे पूछा गया कि तूने उसे क़त्ल किया है, तो उसने कहा हां। लोग उसे जसदे मक़तूल समैत जनाबे अमीरल मोमेनीन की ख़िदमत में ले चले। इतने में एक शख़्स दौड़ता हुआ आया,

और कहने लगा कि इसे छोड़ दो। इस मक्तूल का क़ातिल मैं हूँ। उन लोगों ने उसे भी साथ ले लिया और हज़रत के पास ले गए। सारा किस्सा बयान किया। आपने पहले शख़्स से पूछा कि जब तू इसका क़ातिल नहीं था तो क्या वजह है कि अपने को इसका क़ातिल बयान किया। उसने कहा या मौला मैं क़स्साब हूँ। गोसफन्द ज़ब्ह कर रहा था कि मुझे पेशाब की हाजत हुई। इस तरह ख़ून आलूदा छुरी लिए हुए उस ख़राबे में चला गया। वहाँ देखा कि यह मक्तूल ताज़ा ज़ब्हा किया हुआ पड़ा है। इतने में लोग आ गये और मुझे पकड़ लिया। मैंने यह ख़्याल करते हुए कि इस वक़्त जबकि क़त्ल के सारे क़राएन मौजूद हैं मेरे इनकार को कौन बावर करेगा। मैंने इक़रार कर लिया। फिर आपने दूसरे से पूछा कि तू इसका क़ातिल है। उसने कहा जी हाँ मैं ही उसे क़त्ल कर के चला गया था। जब देखा कि एक क़स्साब की नाहक़ जान चली जाएगी, तो हाज़िर हो गया। आपने फ़रमाया मेरे फरज़न्द हसन को बुलाओ वही इस मक़सद का फैसला सुनाएंगे। इमाम हसन(अ.) आये सारा क़िस्सा सुना। फ़रमाया दोनों को छोड़ दो यह क़स्साब बे क़ुसूर है। और यह शख़्स अगरचे क़ातिल है मगर उसने एक नफ़्स को क़त्ल किया तो दूसरे नफ़्स (क़स्साब को बचा कर --- उसे हयात दी। और उसकी जान बचा ली, और हुक्मे क़ुरआन है कि! “ **मन अययाहा फकानमा अहया अन्नास जमीअन** ” जिसने एक नफ़्स की जान बचाई उसने गोया तमाम लोगों की जान बचाई। लेहाज़ा उस मक्तूल का खून बहा बैतुलमाल से दिया जाय। सफ़ा ४, अली इब्ने इब्राहीम क़ुम्मी ने अपनी तफ़सीर में लिखा कि शाहे रोम ने जब हज़रत अली(अ.) के मुक़ाबले में माविया की चीरा दस्तियों से आगाही हासिल की तो दोनों को लिख कि मेरे पास एक-एक नुमाएन्दा भेज दें।

हज़रत अली(अ.) की तरफ़ से इमाम हसन(अ.) और माविया की तरफ़ से यज़ीद की रवानगी अमल में आई। यज़ीद ने वहां पहुंच कर शाहे रोम की दस्त बोसी की और इमाम हसन(अ.) ने जाते ही कहा कि खुदा का शुक्र है। मैं यहूदी, नसरानी, मजूसी वग़ैरा नहीं हूँ। बल्कि ख़ालिस मुसलमान हूँ। शाह रोम ने चन्द तसावीर निकालीं यज़ीद ने कहा कि मैं इनमें से एक को भी नहीं पहचानता और न बता सकता हूँ कि यह किन हज़रात की शक्लें हैं। हज़रत हसन(अ.) ने हज़रत आदम(अ.), नूह(अ.), इब्राहीम(अ.) और शोएब व यहीया(अ.) की तसवीरें देख कर शक्लें पहचान लीं और एक तस्वीर देख कर आप रोने लगे। बादशाह ने पूछा यह किसकी तस्वीर है। फ़रमाया मेरे जद्दे नामुराद की, इसके बाद बादशाह ने सवाल किया कि वह कौन से जानदार हैं, जो अपनी मां के पेट से पैदा नहीं हुये।

आपने फ़रमाया कि ऐ बादशाह, वह सात, ७ जानदार हैं। (१) आदम (२) हव्वा (३) दुम्बए इब्राहीम (४) नाक़ए सालेह (५) इबलीस (६) मुसवी अज़दहा (७) वह कव्वा जिसने क़ाबील की दफ़्ने हाबील की तरफ़ रहबरी की।

बादशाह ने यह तबहहुरे इल्मी देख कर बड़ी इज़्ज़त की, और तहाएफ़ के साथ वापस किया।

इमाम हसन(अ.) और तफ़सीरे कुरआन :- अल्लामा इब्ने तलहा शाफ़ेई बा हवालए तफ़सीर वसीत वाहिदी लिखते हैं कि एक शख़्स ने इब्ने अब्बास और इब्ने उमर से एक आयत से मुताअल्लिक़ " **शाहिद व मशहूद** " के मानी दरयाफ़्त किये। इब्ने अब्बास ने शाहिद से यौमे जुमा और मशहूद से यौमे अरफ़ा बताया। और इब्ने उमर ने यौमे जुमा और यौमुल नहर कहा। इसके बाद वह शख़्स इमाम हसन(अ.) के पास पहुंचा। आपने शाहिद से रसूले ख़ुदा(स.) और मशहूद से यौमे क़यामत फ़रमाया और दलील में आयत पढ़ी।
(१) " **या अय्योहन नबी अना अरसलनाका शाहिदो मुबशशिरो नज़ीरा** " ऐ नबी हमने तुमको शाहिदो मुबशशिर और नज़ीर बना कर भेजा। (२) " **ज़ालेका यौमे मजमूआ लहा अन्नास व ज़ालेका यौमे मशहूद** " क़यामत का वह दिन होगा, जिसमें तमाम लोग एक मक़ाम पर जमा कर दिये जायेंगे,और यही यौमे मशहूद है। साएल ने सबके जवाब सुन्ने के बाद कहा " **फ़क़ाना क़ौल-अल-हसन अहसन** " इमाम हसन(अ.) का जवाब दोनों कहीं बेहतर है। (मतालेबुल सुवेल, सफ़ा, २२५)

इमाम हसन(अ.) की सायए रहमत से महरूमी

मुवर्रेख़ीन का बयान है कि इमाम हसन(अ.) की उम्र जब सात(७) साल पांच(५) माह और तेरह(१३) यौम की हुई तो आपके सर से रहमतुल लिल आलेमीन का साया २८, सफ़र ११, हिजरी को उठ गया।अभी आप नाना के सोग मनाने से फ़राग़त हासिल न कर सके थे कि ३, जमादिउस्सानी ११, हिजरी को आपकी वालेदा माजेदा हज़रते फ़ात्मा ज़हरा (स.) ने भी इन्तेक़ाल फ़रमाया। इस ग़म बालाए ग़म ने इमाम हसन(अ.) को बे इन्तेहा सदमा पहुंचाया।

मुशहबेहते रसूल(स.) :- अल्लामा अली मुत्तक़ी तहरीर फ़रमाते हैं कि हज़रते अली(अ.) फ़रमाया करते थे कि हसन रसूले करीम (स.) की शक्लो शबाहत से बहुत ज़्यादा मुशाबेह है। अनस बिने मालिक का बयान है कि इमाम हसन(अ.) के जिस्म का निस्फ़ बालाई हिस्सा रसूल अल्लाह (स.) से और निस्फ़ हिस्सा ज़ेरी अमीरल मोमेनीन से मुशाबेह है।

एक रवाएत में है कि आं हज़रत फ़रमाया करते थे कि हसन में ख़ुदा ने हैबत और सरदारी और हुसैन में जुर्रत व हिम्मत वदीअत की है। (कन्ज़ुल आमाल, जिल्द ७, सफ़ा,१०७)

इमाम हसन(अ.) की इबादत :- इमाम ज़ैनुल आबेदीन फ़रमाते हैं कि इमाम हसन (अ.) ज़बरदस्त आबिद , बेमिसल ज़ाहिद, अफ़ज़ल तरीन आलिम थे। आपने जब भी हज फ़रमाया पैदल फ़रमाया। कभी, कभी पा बरैहना हज को जाते थे। आप अक्सर मौत,आदाबे क़ब्र सिरात, और बेअसत व नशूर को याद करके रोया करते थे। जब आप वज़ू करते थे तो आपके चेहरे का रंग ज़र्द हो जाया करता था और जब नमाज़ के लिये खड़े होते थे तो बेद की मिस्ल कांपने लगते थे। आपका मामूल था कि जब दरवाज़ए मस्जिद पर पहुंचते तो ख़ुदा को मुख़ातिब करके कहते,

मेरे पालने वाले तेरा गुनाहगार बन्दा तेरी बारगाह में आया हैं। ऐ रहमानो रहीम अपनी अच्छाईयों के सदके में मुझ जैसे बुराई करने वाले बन्दे को माफ़ कर दे। आप जब नमाज़े सुबह से फ़ारिग़ होते थे तो उस वक़्त तक वज़ाएफ़ में मशगूल रहते थे, जब तक सूरज ताले न हो जाय।

(रौज़तुल (वाएज़ीन व बेहारूल अनवार)

आपका ज़ोहद :- इमाम शाफ़ेई लिखते हैं कि इमाम हसन(अ.) ने अक्सर अपना सारा माल राहे खुदा में तक़्सीम कर दिया। और बाज़ मरतबा निस्फ़ माल तक़सीम फ़रमाया। वह अज़ीम ज़ाहिदो परहेज़गार थे।

आपकी सख़ावत :- मुवर्रेख़न लिखते हैं कि एक शख़्स ने हज़रत इमामहसन(स.) से कुछ मांगा। दस्ते सवाल दराज़ होना था कि आपने पचास हज़ार(५०,०००) दिरहम और पांच सौ(५००) अशर्फ़ियां दे दीं और फ़रमाया कि मज़दूर ला कर इसे उठा ले जा। इसके बाद आपने मज़दूर की मज़दूरी में अपना चोग़ा बख़्श दिया। (मरातुल जनान,१२३) एक मरतबा आपने एक साएल को खुदा से दुआ करते हुये सुना, खुदाया मुझे दस हज़ार दिरहम अता फ़रमा। आपने घर पहुंच कर मतलूबा रक़्म भिजवा दी। (नूरूल अबसार,सफ़ा १२२)

आपसे किसी ने पूछा कि आप तो फ़ाक़ा करते हैं। लेकिन साएल को महरूम वापस नहीं फ़रमाते। इरशाद फ़रमाया कि मैं खुदा से मांगने वाला हूँ। उसने मुझे देने की आदत डाल रखी है, और मैंने लोगों को देने की आदत डाली है। मैं डरता हूँ कि अगर अपनी आदत बदल दूँ तो कहीं खुदा भी अपनी आदत न बदल दे, और मुझे भी महरूम कर दे। (सफ़ा, १२३)

तवक्कुल के मुताअल्लिक़ आपका इरशाद :- इमामे शाफ़ेई का बयान है कि किसी ने इमाम हसन(अ.) से अर्ज़ की कि अबूज़रे ग़फ़्फ़ारी फ़रमाया करते थे कि मुझे तवंगरी से ज़्यादा नादारी और सेहत से ज़्यादा बीमारी पसन्द है। आपने फ़रमाया कि खुदा अबू ज़र पर रहम करे। उनका कहना दुरूस्त है। लेकिन मैं तो कहता हूँ कि जो शख़्स खुदा के क़ज़ा व क़द्र पर तवक्कुल करे वह हमेशा इसी चीज़ को पसन्द करे गा, जिसे खुदा उसके लिये पसन्द करे।(मरातुल जेना, जिल्द १, सफ़ा १२५)

(इमाम हसन(अ.) हिल्म और इख़लाक़ के मैदान में)

अल्लामा इब्ने शहरे आशोब तहरीर फ़रमाते हैं कि एक दिन हज़रत इमाम हसन (अ.) घोड़े पर सवार कहीं तशरीफ़ लिये जा रहे थे। रास्ते में माविया के तरफ़दारों का एक शामी सामने आ पड़ा। उसने हज़रत को गालियां देनी शुरू कर दीं। आपने उसका मुतलक़न कोई जवाब न दिया। जब वह अपनी जैसी कर चुका तो आप उसके क़रीब गये ओर उसको सलाम करके फ़रमाया कि भाई शायद तू मुसाफ़िर है, सुन अगर तुझे सवारी की ज़ुरूरत हो, तो मैं तुझे सवारी दे दूँ। अगर तू भूखा हो तो खाना खिला दूँ। अगर तुझे कपड़े दरकार हों तो कपड़े दे दूँ। अगर तुझे रहने को जगह चाहिये, तो मकान का इन्तेज़ाम कर दूँ। अगर दौलत की ज़ुरूरत है तो तुझे

इतना दे दूँ कि तू ख़ुश हाल हो जाय। यह सुन कर शामी बे इन्तेहा शरमिन्दा हुआ और कहने लगा कि मैं गवाही देता हूँ कि आप ज़मीने ख़ुदा पर ख़लीफ़ा हैं। मौला मैं तो आपको और आपके बाप दादा को सख़्त नफ़रत और हिक़ारत की नज़र से देखता था। लेकिन आज आपके इख़्लाक़ ने मुझे आपका गिरवीदा बना दिया। अब मैं आपके क़दमों से दूर न जाऊंगा और ता हयात आपकी ख़िदमत में रहूँगा। (मुनाकिब जिल्द,४, सफ़ा ५३, व कामिल मबरूज,२ सफ़ा ८६)

एहसान का बदला एहसान

अबुल हसन मदाईनी का बयान है कि एक मरतबा इमाम हसन(अ.) ,इमाम हुसैन (अ.) और अब्दुल्लाह बिन जाफ़रे तय्यार हज को जाते हुये भूख और प्यास की हालत में एक ज़ईफ़ा के झोपड़े में जा पहुँचे और उससे खाने पीने की चीज़ तलब फ़रमाई। उसने अर्ज़ की कि मेरे पास एक बकरी है उसका दूध दूह कर प्यास बुझाइ जा सकती है,उन्होंन दूध पी लिया लेकिन गुरसनगी से तसल्ली न हुई तो उससे फ़रमाया कि कुछ खाने का बन्दो बस्त भी हो सकता है। उसने कहा मेरे पास तो बस यही एक बकरी है। लेकिन मैं क़सम देती हूँ कि आप इसे ज़ब्ह करके तनावुल फ़रमा लें। बकरी जब्ह की गई गोश्त भूना गया और सबने खा लिया और इसके बाद क़दरे आराम करके वह लोग रवाना हो गये। जब शाम को उसका शौहर आया तो उस औरत ने सारा वाक़ेया सुनाया। शौहर ने पूछा वह कौन लोग थे। कहा मालूम नहीं,जाते वक़्त यह कहा था कि हम मदीने के रहने वाले हैं। शौहर ने कहा ख़ुदा की बन्दी यह तो बता कि अब हमारा गुज़ारा किस तरह होगा। गरज़ कि थोड़े अरसे में उन लोगों को क़हत का सामना करना पड़ा और यह सख़्त मुसिबतों में मुब्तिला हो कर भीख मांगते हुये मदीने जा पहुँचे। एक गली से गुज़र रहे थे कि नागाह इमाम हसन(अ.) की निगाह उस औरत पर जा पड़ी। आपने उसे बुलवा कर बकरी वाला वाक़ेया याद दिलाया और उसको एक हज़ार बकरियां और एक हज़ार अशर्फ़ियां इनायत फ़रमा दीं और उसे इमाम हुसैन(अ.) की ख़िदमत में भेज दिया। उन्होंने भी उसे इसी क़द्र बकरियां वग़ैरा अता फ़रमाईं। फिर अब्दुल्लाह इब्ने जाफर को इत्तेला दी गई उन्होंने भी उसी के लगभग उसे दे दिया। वह माला माल हो कर अपने घर वापस चली गई। (नूरूल अबसार,सफ़ा १२१, व मतालेबुल सुवेल, सफ़ा २२६)

(अहदे अमीरल मोमेनीन(अ.) में इमाम हसन(अ.) की इस्लामी ख़िदमात)

तवारीख़ में है कि जब हज़रत अली(अ.) को पच्चीस बरस की ख़ाना नशीनी के बाद मुसलमानों ने ख़लीफ़ए ज़ाहिरी की हैसियत से तसलीम किया और उसके बाद जमल, सिफ़्फ़ीन और नहरवान की लड़ाईयां हुईं तो हर एक जेहाद में इमाम हसन(अ.) अपने वालिदे बुज़ुर्गवार के साथ-साथ ही नहीं रहे बल्कि बाज़ मौकों पर जंग में आपने कारहाय नुमायां भी किये। सैरूल सहाबा और रौज़तुल सफ़ा में है कि जंगे सिफ़्फ़ीन के सिलसिले में जब अबू मूसा अशअरी की रेशा दवानियां

उरयां हो चुकीं तो अमीरल मोनीन ने इमाम हसन(अ.) और अम्मारे यासिर को कूफ़ा रवाना फ़रमाया। आपने जामए कूफ़ा में अबू मूसा के अफ़सून को अपनी तक़रीर के तिरयाक़ से बे असर बना दिया। ओर लोगों को हज़रत अली(अ.) के साथ जाने पर आमादा किया। अख़बार अल तवाल की रवायत की बिना पर नौ हज़ार छैः सौ पचास (९६५०) का लशकर तय्यार हो गया।

मुवर्रेख़ीन का बयान है कि जंगे जमल के बाद जब आयशा मदीने जाने पर आमादा न हुईं तो हज़रत अली(अ.) ने इमामे हसन(अ.) को भेजा और उन्हें समझा बुझा कर मदीना रवाना किया। चुनांचे वह इस सई मम्दूह में कामयाब हो गये। बाज़ तारीख़ों में है कि इमाम हसन(अ.) " **जंगे जमल** " व " **सिफ़्फ़ीन** " में अलमदारे लशकर थे और आपने मोहायदए तहकीम पर दस्तख़त फ़रमाये थे, और जंगे जमल व सिफ़्फ़ीन और नहरवान में भी सई बलीग़ की थी। फ़ौजी कामों के अलावा आपके सिपुर्द सरकारी मेहमान ख़ाने का इन्तेज़ाम और शाही मेहमानों की मदारात का काम भी था। आप मुक़दमात के फ़ैसले भी करते थे, और बैतुल माल की निगरानी भी फ़रमाते थे।

हज़रत अली(अ.) की शहादत और इमाम हसन(अ.) की बैयत

मुवर्रेख़ीन का बयान है कि इमाम हसन(अ.) के वालिदे बुज़ुर्गवार हज़रत अली(अ.) के सरे मुबारक पर बा मक़ामे मस्जिदे कूफ़ा १८, रमज़ान,४० हिजरी बा वक़्ते सुबह अमीरे माविया की साज़िश से अब्दुल रहमान इब्ने मुल्जिम मुरादी ने ज़हर में बुझी हुई तलवार लगाई। जिसके सदमे से आपने २१, रमज़ानुल मुबारक ४०,हिजरी बा वक़्ते सुबह शहादत पाई। इस वक़्त इमाम हसन(अ.) की उम्र ३८, साल ६,यौम की थी। हज़रत अली (अ.) की तदफ़ीन व तकफ़ीन के बाद अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास की तहरीक से बक़ौल इब्ने असीर क़ैस इब्ने सआद इबादा अनसारी ने इमामे हसन की बैयत की और उनके बादतमाम हाज़ेरीन ने बैयत कर ली। जिनकी तादाद ४०,०००(चालीस हज़ार) थी। यह वाक़ेया २१, रमजान ४०, हिजरी, यौमे जुमा का है। किफ़ाएतुल अस्र अल्लामा मजलिसी में है कि इस वक़्त आपने एक फ़सीह व बलीग़ ख़ुतबा पढ़ा। जिसमें आपने हम्दो सना के बाद १२, इमामों की ख़िलाफ़त का ज़िक्र फ़रमायां और इसकी वज़ाहत की कि आं हज़रत (स.) ने फ़रमाया है कि हम में हर एक या तलवार के घाट उतरेगा या ज़हरे दग़ा से शहीद होगा। इसके बाद आपने ईराक़ , ईरान, ख़ुरासान, हिज़ाज़ और यमन व बसरा वग़ैरा के अम्माल की तरफ़ तवज्जो की और अब्दुल्ला इब्ने अब्बास को बसरा का हाकिम मुक़र्रर फ़रमाया। माविया को ज्योंही ख़बर पहुंची तो बसरे के हाकिम इब्ने अब्बास मुक़र्रर कर दिये गये हैं तो उसने दो जासूस रवाना किये। एक क़बीलए हमीर , कूफ़े की तरफ़ और दूसरा क़बीलए क़ीन का बसरे की तरफ़

इसका मक़सद यह था कि लोग इमाम हसन(अ.) से मुनहरिफ़ हो कर मेरी तरफ़ आ जायें। लेकिन वह दोनों जासूस गिरफ़तार कर लिये गये और उन्हें बाद में क़त्ल कर दिया गया।

हक़ीक़त है कि जब एनाने हुकुमत इमाम हसन(अ.) के हाथों में आई तो ज़माना बड़ा पुर आशोब था। हज़रते अली(अ.) जिनकी शुजाअत की धाक सारे अरब में बैठी हुई थी। दुनिया से कूच कर चुके थे। उनकी दफ़ातन शहादत में सोये हुये फ़ितनों को बेदार कर दिया था। और सारी ममलकत में साज़िशों की खिचड़ी पक रही थी। खुद कूफ़े में अशअश इब्ने क़ैस, उमर बिने हरीस,शीश इब्ने रबई वग़ैरा खुल्लम खुल्ला बर सरे अनाद और आमादए फ़साद नज़र आते थे। माविया ने जा बजा जासूस मुक़र्रर कर दिये थे। जो मुसलमानों में फूट डलवाते और हज़रत के लशकर में इख़्तेलाफ़ो इफ़तेराक़ का बीज बोते थे। उसने कूफ़ के बड़े बड़े सरदारों से साज़िशी मुलाक़ातें कीं, और बड़ी बड़ी रिशवतें दे कर उन्हें तोड़ लिया। बेहारूल अनवार के एल्लशराए के हवाले से मन्कूल है कि माविया ने उमर बिने हरीस, अशअश बिने क़ैस, हजर इबनुल हजर शीश इब्ने रबई के पास अलाहेदा, अलाहेदा यह पैग़ाम भेजा कि जिस तरह हो सके हसन इब्ने अली को क़त्ल करा दो। जो मनचला यह काम कर गुज़रेगा उसे दो लाख दिरहम नग़द इनाम दूँगा, और फ़ौज की सरदारी अता करूंगा। और अपनी किसी लड़की से शादी कर दूंगा। यह इनाम हासिल करने के लिये लोग शबो रोज़ मौक़े की तलाश में रहने लगे। हज़रत को इत्तेला मिली तो आपने कपड़ों के नीचे ज़िरह पहनना शुरू कर दी। यहां तक कि नमाज़े जमाअत पढ़ाने के लिये बाहर निकलते तो ज़िरह पहन कर निकलते थे। माविया ने एक तरफ़ तो खुफ़िया तोड़ जोड़ किये, दूसरी तरफ़ एक बड़ा लशकर ईराक़ पर एक बड़ा हमला करने के लिये भेज दिया। जब हमला आवर लशकर हुदूदे ईराक़ में दूर तक आगे बढ़ आया तो हज़रत ने अपने लशकर को हरकत करने का हुक्म दिया। हजर इब्ने अदी को थोड़ी सी फ़ौज के साथ आगे बढ़ने के लिये फ़रमाया। आपके लशकर में भीड़ भाड़ तो खासी नज़र आने लगी थी मगर सरदार जो सिपाहियों को लड़ाते हैं। कुछ तो माविया के हाथ बिक चुके थे, कुछ आफ़ियत पोशी में मसरूफ़ थे। हज़रत अली(अ.) की शहादत ने दोस्तों के हौसले पस्त कर दिये थे, और दुशमनों को जुरअतो हिम्मत दिला दी थी।

मुवर्रेख़ीन का बयान है कि माविया ६०,०००(साठ हज़ार) की फ़ौज लेकर मक़ामे मसकन में जा उतरा, जो बग़दाद से १०, फ़रसख़ तकरीत की जानिब, अवाना के क़रीब वाक़े है। इमाम हसन(अ.) को जब माविया की पेश क़दमी का इल्म हुआ तो आपने भी एक बड़े लशकर के साथ कूच कर दिया और कूफ़े से साबात में जा पहुंचे, और बारह हज़ार की फ़ौज कैस इब्ने साअद की मातहती में माविया की पेश क़दमी रोकने के लिये रवाना कर दिया। फिर साबात से रवाना होते वक़्त आपने एक खुतबा पढ़ा जिसमें आपने फ़रमाया कि!

“ लोगों तुमने इस शर्त पर मुझ से बैयत की है कि सुलह और जंग दोनों ही हालतों में मेरा साथ दोगे। मैं ख़ुदा की क़सम खाकर कहता हूँ कि मुझे किसी शख़्स

से बुग़ज़ व अदावत नहीं है, मेरे दिल में किसी को सताने का ख़्याल नहीं। मैं सुलह को जंग से और मोहब्बत को अदावत से कहीं बेहतर समझता हूँ।"

लोगों ने हज़रत के इस ख़िताब का मतलब यह समझा कि हज़रत इमाम हसन(अ.) अमीरे माविया से सुलह करने की तरफ़ माएल हैं। और ख़िलाफ़त से दस्त बरदारी करने का इरादा दिल में रखते हैं इसी दौरान में माविया ने इमाम हसन के लशकर की कसरत से मुतास्सिर हो कर यह मशविरा उमरो आस कुछ लोगों को इमाम हसन(अ.) के लशकर में और कुछ को क़ैस इब्ने साअद के लशकर में भेज कर एक दूसरे के ख़िलाफ़ प्रोपेगन्डा करा दिया। इमाम हसन(अ.) के लशकर वाले साज़िशयों ने क़ैस के मुताअल्लिक़ यह शोहरत देनी शुरू की कि उसने माविया से सुलह कर ली है, और क़ैस बिने साआद के लशकर में जो साज़िशी घुसे हुये थे उन्होंने तमाम लशकरयों में यह चर्चा कर दिया कि इमाम हसन (अ.) ने माविया से सुलह कर ली है। इमाम हसन(अ.) के दोनों लशकरों में इस ग़ल्त अफ़वाह के फैल जाने से बग़ावत और बद गुमानी के जज़बात उभर निकले। इमाम हसन (अ.) के लशकर का वह उन्सर जिसे पहले ही से शुबहा था कि माएल ब सुलह हैं यह कहने लगा कि इमाम हसन(अ.) भी अपने बाप हज़रत अली(अ.) की तरह काफिर हो गये हैं। बिल आख़िर फ़ौजी आपके ख़ेमे पर टूट पड़े आपका कुल असबाब लूट लिया। आपके नीचे से मुसल्ला तक खींच लिया। दोशे मुबारक पर से रिदा भी उतार ली और बाज़ नुमायां क़िस्म के अफ़राद ने इमाम हसन(अ.) को माविया के हवाले कर देने का प्लान तय्यार किया। आख़िर कार आप इन बद बख़्तों से मदाएन के गर्वनर साअद या सईद की तरफ़ रवाना हो गये। रास्ते में एक ख़्वारजी ने जिसका नाम बा रवायतुल अख़बारूल तवाल, सफ़ा ३६३, जराह बिने क़ैसा था। आपकी रान पर कमी गाह से एक ऐसा ख़न्जर लगाया जिसने हड्डी तक महफ़ूज न रहने दी आपने मदाएन में मुक़ीम रह कर इलाज कराया और अच्छे हो गये। तारीख़े कामिल, जिल्द ३, सफ़ा १६१, तारीख़े आइम्मा, सफ़ा ३३३, फ़तेहुलबारी।

माविया ने मौक़ा ग़नीमत जान कर २०,०००(बीस हज़ार) का लशकर अब्दुल्लाह इब्ने अमिर की क़यादत व मातहती में मदाएन भेज दिया। इमाम हसन(अ.) उससे लड़ने के लिये निकलने ही वाले थे कि उसने आम शोहरत कर दी कि माविया बहुत बड़ा लशकर ले कर आ रहा है। मै इमाम हसन(अ.) और उनके लशकर से दरख़्वास्त करता हूँ कि मुफ़्त में जान न दें और सुलह कर लें। इस दावते सुलह और पैग़ामे ख़ौफ़ से लोगों के दिल बैठ गये। हिम्मतें पस्त हो गईं और इमाम हसन(अ.) की फ़ौंज भागने के लिये रास्ता ढूंढने लगी।

सुलेह :- मुवर्रिख़ ,मआसिर अल्लामा अली नक़ी लिखते हैं कि अमीरे शाम को हज़रते इमाम हसन(अ.) की फ़ौज की हालत और लोगों की बेवफ़ाई का हाल मालूम हो चुका था। इस लिये वह समझते थे कि इमाम हसन(अ.) के लिये जंग मुमकिन नहीं है। मगर इसके साथ यह भी यक़ीन रखते थे कि हज़रत इमाम हसन (अ.) कितने ही बेबस और

बेकस हों मगर अली(अ.) व फ़ात्मा के बेटे और पैगम्बरे इस्लाम के नवासे हैं। इस लिये वह ऐसे शराएत पर हरगिज़ सुलोह न करेंगे,जो हक़ परस्ती के ख़िलाफ हों और जिनसे बातिल की हिमायत होती हो। इसको नज़र में रखते हुये उन्होंने एक तरफ तो आपके साथियों अब्दुल्लाह इब्ने आमिर के ज़रिये पैग़ाम दिलवाया, कि अपनी जान के पीछे न पड़ो, और खूं रेज़ी न होने दों इस सिलसिले में कुछ लोगों को रिशवतें भी दी गईं और कुछ बुज़दिलों को अपनी तादात की ज़्यादती से ख़ौफ़ ज़दा किया गया, और दूसरी तरफ़ हज़रत इमाम हुसैन (अ.) के पास पैग़ाम भेजा, कि आप जिन शराएत पर कहें उन्हीं शराएत पर सुलोह के लिये तय्यार हूँ।

इमाम हसन(अ.) यक़ीनन अपने साथियों की ग़द्दारी देखते हुये जंग करना मुनासिब न समझते थे, लेकिन इसी के साथ-साथ यह ज़ुरूर पेशे नज़र था कि ऐसी सूरत पैदा हो कि बातिल की तक़वियत का धब्बा मेरे दामन पर न आने पाये।

इस घराने को हुकूमत व इक़्तेदार की हवस तो कभी थी ही नहीं उन्हें तो मतलब इससे था कि मख़लूक़े ख़ुदा की बेहतरी हो और हुदूदे इलाही का इजरा हो। अब अमीरे माविया ने जो आप से मुँह मांगे शरायत पर सुलह करने के लिये आमदगी ज़ाहिर की तो अब मुसालेहत से इन्कार करना शख़्सी इक़्तेदार की ख़्वाहिश के अलावा और कुछ नहीं क़रार पा सकता था, और यह कि अमीरे शाम सुलोह की शरायत पर अमल न करेंगे। बात की बात थी। जब तक सुलोह न होती यह अन्जाम सामने कहां आ सकता था, और हुज्जतें तमाम क्योंकर हो सकती थीं। फिर भी आख़री जवाब देने से क़ब्ल आपने साथ वालों को जमा कर लिया और तक़रीर फ़रमाई।

आगाह रहो कि तुम में वह ख़ूंरेज़ लड़ाईयां हो चुकी हैं जिनमें बहुत लोग क़त्ल हुये, कुछ मक़्तूल " सिफ़्फ़ीन " में हुये जिनके लिये आज तक रो रहे हो और कुछ मक़्तूल " नहरवान " के जिनका मावेज़ा तलब कर रहे हो, अब अगर तुम मौत पर राज़ी हो तो हम इस पैग़ामे सुलोह को क़ुबूल न करें और उनसे अल्लाह के भरोसे पर तलवारों से फ़ैसला करें और अगर ज़िन्दगी को अज़ीज़ रखते हो तो हम उसको क़ुबूल कर लें और तुमहारी मरज़ी पर अमल करें।

जवाब में लोगों ने हर तरफ़ से पुकारना शुरू किया हम जिन्दगी चाहते हैं। आप सुलोह कर लिजिये। इसी का नतीजा था कि आपने सुलोह के शरायत मुरत्तब करके मआद के पास रवाना किये। (तरजुमा इब्ने ख़ल्दून)

शराएते सुलोह

(इस सुलह नामे के शराएत हसबे ज़ैल थे)

(१) यह कि माविया हुकूमते इस्लाम में, किताबे खुदा और सुन्नते रसूल(स.) पर अमल करेंगे।

(२) यह कि माविया को अपने बाद किसी को ख़लीफ़ा नामज़द करने का हक़ न होगा।

(३) यह कि शाम व ईराक़ व हिजाज़ व यमन सब जगह के लोगों के लिये अमान होगी।

(४) यह कि हज़रत अली (अ.) के असहाब और शिया जहां भी हैं उनके जान व माल और नामूस और औलाद महफ़ूज़ रहेंगे।

(५) यह कि माविया हसन इब्ने अली(अ.) और उनके भाई हुसैन इब्ने अली (अ.) ख़ानदाने रसूल(स.) में से किसी को भी कोई नुक़सान या हलाक करने की कोशिश न करेंगे और न खुफ़िया तौर पर और न एलानिया और उन्में से किसी को किसी जगह धमकाया और डराया न जायगा।

(६) यह कि जनाबे अमीरल मोमेनीन की शान में कलमाते नाज़ेबा जो अब तक मस्जिदे जामा और क़ुनूते नमाज़ में इसतेमाल होते रहे हैं, वह तर्क कर दिये जायें, आख़िरी शर्त की मंजूरी में माविया को उज़्र हुआ तो यह तय पाया कि कम अज़ कम जिस मौक़े पर इमाम हसन(अ.) मौजूद हों, उस जगह ऐसा न किया जाय। यह मोहायदा रबीउल अव्वल या जमादिउल अव्वल, ४१ हिजरी को अमल में आया।

सुलह नामे पर दस्तख़त :- २५, रबीउल अव्वल को कूफ़े के क़रीब मुक़ामे अम्बार में फ़रीक़ैन का इजतेमा हुआ और सुलोह नामे पर दोनों के दस्तख़त हुये, और गवाहियां सब्त हुईं। (निहायतुल अरब फ़ी मारेफ़तुन निसाब अल अरब,सफ़ा ८०) इसके बाद माविया ने अपने लिये आम बैयत का एलान कर दिया और उस साल का नाम सुन्नतुल जमाअत रखा फिर इमाम हसन(अ.) को खुतबा देने पर मजबूर किया। आप मिम्बर पर तशरीफ़ ले गये और इरशाद फ़रमाया, ऐ लोगों, खुदाए तअला ने हम में से अदल के जरिये से तुम्हारी हिदायत की और आख़िर के ज़रिये से तुम्हें खूंरेजी से बचाया। माविया ने इस अम्र में मुझसे झगड़ा किया जिसका मैं इस से ज़्यादा मुस्तहक़ हूँ लेकिन मैंने लोगों की खूँरेज़ी की निसबत इस अम्र का तर्क कर देना बेहतर समझा। तुम रंज व मलाल न करो कि मैंने हुकूमत इसके न अहल को दे दी, और उसके हक़ को जाय नाहक़ पर रखा मेरी नियत इस मामले में सिर्फ़ उम्मत की भलाई है। यहां तक फ़रमाने पाय थे कि माविया ने कहा बस ऐ हज़रत ज़्यादा फ़रमाने की ज़ुरूरत नहीं है। (तारीख़े ख़मीस, जिल्द २, सफ़ा ३२५)

तकमीले सुलोह के बाद इमाम हसन(अ.) ने सब्र व इस्तेक़लाल व नफ़्स की बलन्दी के साथ उन तमाम नाखुशगवार हालात को बरदाश्त किया और मोहायदे पर सख़्ती से क़ायम रहे, मगर इधर यह हुआ कि अमीरे शाम ने जंग के ख़तम होते ही और सियासी इक़तेदार के मज़बूत होते ही ईराक़ में दाख़िल हो कर नख़ीले में जिसे कूफ़े की सरहद समझना चाहिये क़याम किया और जुमे के खुतबे के बाद एलान किया कि मेरा मक़सद जंग से यह न था कि तुम लोग नमाज़ पढ़ने लगो, रोज़े रखने लगो, हज करो या ज़कात अदा करो, यह सब तुम तो करते ही हो मेरा मक़सद तो यह था कि मेरी हुकूमत तुम पर मुसल्लम हो जाय, और यह मेरा मक़सद हसन(अ.) के उस मोहायदे के बाद पूरा हो गया और बवजूद तुम लोगों की नागवारी के मैं कामयाब हो गया। रह गये वह शराएत जो मैंन हसन(अ.) के साथ किये हैं वह सब मेरे पैरों के नीचे हैं। इनका पूरा करना या न करना मेरे हाथ की बात है। यह सुन कर मजमे में एक सन्नाटा छा गया, मगर अब किसमें दम था कि उसके ख़िलाफ़ ज़बान खोलता।

शराएते सुलोह का हश्र :–मुवर्रेख़ीन का इत्तेफाक़ है कि अमीरे माविया जो मैदाने सियासत के खिलाड़ी और मकरो जौर की सलतनत के ताजदार थे इमाम हसन (अ.) से वादा और मुहाएदा के बाद ही सबसे मुकर गए।"वलमयफ लहु मावीयतालयाअ महाआहद अलैह" तारीख़ कामिल इब्ने असीर जिल्द ३ सफा १६२ में है कि मावीया ने किसी एक चीज़ की भी परवाह ना की और किसी पर अमल ना किया। इमाम अबुल हसन अली बिन मोहम्मद लिखते हैं कि जब माविया के लिए अमरे सलतनत उसतवार हो गया तो इसने अपने हाकिमों को जो मुख़्तलिफ़ शहरों और इलाक़ों में थे, यह फ़रमान भेजा कि अगर कोई शख़्स अबुतुराब और उसके अहले बैत की रवायत करेगा तो मैं उससे बरीउज़्ज़िम्मा हूँ। जब यह ख़बर तमाम मुलकों में फ़ैल गई और लोगों को माविया का मंशा मालूम हो गया तो तमाम ख़तीबों ने मिम्बरों पर से सब्बो शितम और मनक़सते अमीरल मोमेनीन पर खुतबा देना शुरू कर दिया। कूफे में ज़्यादा इब्ने अबीहा जो कई बरस तक हज़रत अली (अ) के अहद में उनके अमल में रह चुका था वह शीआने अली को अच्छी तरह से जानता था। मर्द,औरतों जवानों और बूढ़ों से अच्छी तरह आगाह था इसे हर एक रहाईश और कोनों और गोशों में बसने वालों का पता था। इसे कूफ़े और बसरे दोनों का गर्वनर बना दिया गया था।

इस ज़ालिम की हालत यह थी के शियाने अली को क़तल करता और बाज़ों की आँखो को फोड़ देता और बाज़ों के हाथ पाँव कटवा देता था। इस ज़ुलमें अज़ीम से सैकड़ों तबाह हो गए। हज़ारों जंगलों और पहाड़ों में जा छुपे, बसरे में आठ हज़ार आदमीयों का क़तल वाक़े हुआ जिनमें बैयालिस हाफिज़ और क़ारी कुरआन थे। इन पर मोहब्बते अली का जुर्म आएद किया गया था। हुक्म यह था कि अली(अ.)के बजाए उस्मान के फज़ाएल बयान किए जाऐं,और अली के फज़ाएल के मुतअल्लिक़ यह फ़रमान था कि एक फज़ीलत के एवज़ दस

दस मुनक़सत व मज़म्मत तसनीफ़ की जाए यह सब कुछ अमीरल मोमीनीन (अ.) से बदला लेने और यज़ीद के लिए ज़मीने ख़िलाफ़त हमवार करने की ख़ातिर था।

कूफ़े से इमाम हसन (अ.) की मदीने को रवानगी :- सुलेह के मराहिल तय होने के बाद इमामे हसन (अ.) अपने भाई इमामे हुसैन (अ.) और अब्दुल्लाह इब्ने जाफ़र और अपने अतफ़ाल व अयाल को लेकर मदीने की तरफ़ रवाना हो गए। तारीख़े इस्लाम मिस्टर ज़ाकिर हुसैन की जिल्द १, सफ़ा ३४ में है कि जब आप कूफ़े से मदीना के लिए रवाना हुए तो माविया ने रास्ते में एक पैग़ाम भेजा और वह यह था कि आप ख़्वारिज से जंग करने के लिए तय्यार हो जाएं। क्योंकि उन्होंने मेरी बैअत होते ही फिर सर निकाला है। इमाम हसन(अ.) ने जवाब दिया कि अगर ख़ूँरेज़ी मक़सूद होती तो मैं तुझसे क्यों सुलेह करता। जस्टिस अमीर अली अपनी तारीख़े इस्लाम में लिखते हैं कि ख़्वारिज हज़रत अबू बक्र और हज़रत उमर को मानते और हज़रत अली (अ.) और उस्मान ग़नी को नहीं तसलीम करते थे और बनी उम्मया को मुरतिद कहते थे।

सुलेह हसन (अ.) और उसके वजूह व असबाब

उस्ताज़िल आलाम हज़रत अल्लामा **सय्यद अदील अख़्तर** आलल्लाहो मक़ामा (साबिक़ प्रिन्सपल मदरसातुल वाएज़ीन लखनऊ) अपनी किताबे तसकीन-अल-फ़तन फ़ी सुलेह-अल-हसन के सफ़ा १५८ में तहरीर फरमाते हैं:-

इमामे हसन (अ.) की पालीसी बिल्कुल जैसा कि बार बार लिखा जा चुका है कुल अहले बैत की पालीसी एक और सिर्फ एक थी (विरासात-अल-बैब सफ़ा २४६) वह यह कि हुक्मे ख़ुदा और हुक्मे रसूल(स.) की पाबन्दी उन्हीं के एहकाम का इजरा चाहिए हैं। इस मतलब के लिए जो बरदाश्त करना पड़े ,मज़कूरा बाला हालात में इमाम हसन (अ.) के लिए सिवाए सुलेह क्या चारा हो सकता था। इसको खुद साहेबाने अक़्ल समझ सकते हैं। किसी इस्तेदलाल की चन्दा ज़ुरूरत नहीं है। यहाँ पर अल्लामा इब्ने असीर की यह इबारत (जिसका तरजुमा दर्ज किया जाता है) क़ाबिले ग़ौर है

“ कहा गया है कि इमाम हसन (अ.) ने हुकूमत माविया को इस लिए सुर्पुद की जब माविया ने ख़िलाफ़त हवाले करने के मुताल्लिक़ आपको ख़त लिखा। उस वक़्त आपने ख़ुत्बा पढ़ा और ख़ुदा की हम्दो सना के बाद फ़रमाया कि देखो हमको शाम वालों से इस लिये नहीं दबना पड़ रहा है, कि अपनी हक़ीक़त में कोई शक या निदामत है। बात तो फ़क़त यह है कि हम अहले शाम से सलामत और सब्र के साथ लड़ रहे थे, मगर अब सलामत में अदावत और सब्र में फ़रयाद मख़्लूत कर दी गई है। जब तुम लोग सिफ़्फ़ीन को जा रहे थे उस वक़्त तुम्हारा दीन तुम्हारी दुनिया पर मुक़द्दम था। लेकिन अब तुम एक से हो गये हो कि आज तुम्हारी दुनिया तुम्हारे दीन पर मुक़द्दम हो गई है। इस वक़्त तुम्हारे दोनों तरफ़

दो क़िस्म के मक़तूल हैं। एक सिफ़्फ़ीन के मक़तूल जिन पर रो रहे हो। दूसरे नहरवान के मक़तूल जिनके ख़ून का बदला चा रहे हो। ख़ुलासा यह कि जो बाक़ी है वह साथ छोड़ने वाला है, और जो रो रहा है वह बदला लेना ही चाहता है। ख़ूब समझ लो कि माविया ने हमको जिस अम्र की दावत दी है न इसमें इज़्ज़त है और न इन्साफ़ लेहाज़ा अगर तुम लोग मौत पर आमादा हो तो हम इसकी दावत को रद कर दें, और हमारा इसका फ़ैसला ख़ुदा के नज़दीक भी तलवार की बाढ़ से हो जाय, और अगर तुम ज़िन्दगी चाहते हो तो जो इसने लिखा है मान लिया जाय, और जो तुम्हारी मरज़ी है वैसा हो जाय। यह सुनना था कि हर तरफ़ से लोगों ने चिल्लाना शुरू कर दिया, बक़ा लक़ा, सुलोह सुलोह (तारीख़े कामिल जिल्द ३, सफ़ा १६२)

नाज़ेरीन इन्साफ़ फ़रमायें कि क्या अब भी इमाम हसन(अ.) के लिये यह राय है कि सुलोह न करें। इन फ़ौजियों के बल बूते पर(अगर ऐसों को फ़ौज और उनकी कुव्वतों को बल बूता कहा जा सके) लड़ाई ज़ेबा है हर गिज़ नहीं। ऐसे हालात में सिर्फ़ यही चारा था कि सुलोह करके अपनी और इन तमाम लोगों की ज़िन्दगी तो महफ़ूज़ रखें जो दीने रसूल (स.) के नाम लेवा और हक़ीक़ी पैरौ ओर पाबंद थे, इसके अलावा पैग़म्बरे इसलाम(स.) की पेशीन गोई भी सुलोह की राह में मशाल का काम कर रही थी। (बुख़ारी) अल्लामा मोहम्मद बाक़र लिखते हैं कि हज़रत को अगरचे माविया की वफ़ाए सुलोह पर एतेमाद नहीं था। लेकिन आपने हालात के पेशे नज़र चारो नाचार दावते सुलोह मंजूर कर ली। (दमउस साकेबा)

सुलोह हसन(अ.) और जंगे हुसैन(अ.) :- सुलोह और जंग दो मुतज़ात मुताबाइन लफ़्ज़ हैं सुलोह का लफ़्ज़ कलाम अरब में उस वक़्त इस्तेमाल होता है जब फ़साद बाक़ी न रहे और मुसालेह उस करारदाद को कहते हैं, जिससे नज़ा दूर हो जाय और साहेबाने सियासत के नज़दीक सुलोह उसको कहते हैं जिसके बाद कुछ शराएत पर लड़ाई रोक दी जाय।(सवानेह इमाम हसन, सफ़ा ६६, बा हवालए मोअज्जिम अल तालिब, सफ़ा ५५५) और जंग उसे कहते हैं जिसके दामन में सुलोह का इम्कान न हो। सुलोह इमकाने जंग मफ़्क़ूद होने पर और जंग इमकाने सुलोह के फ़क़दान पर होती है, और इस इमकान और अदम इमकान नीज़ मौक़े के समझने का हक़ साहबे मामेला को होता है। यही वजह है कि आं हज़रत (स.) ने मौक़े सुलोह पर सुलहे हुदैबिया किया। और मौक़ए जंग पर बेशुमार जेहाद किये और हज़रत अली(अ.) ने मौक़ए सुलोह में ख़ामोशी और गोशा नशीनी इख़्तेयार की और मौक़ए जंग में जमल और सिफ़्फ़ीन का कारनामा पेश किया।

इमाम हसन(अ.) के लिये जंग मुमकिन न थी इस लिये उन्होंने सुलोह की और इमाम हुसैन(अ.) के लिए सुलोह मुमकिन न थी इस लिये उन्होंने जंग की, और अज़ रूए हदीस अपने मक़ाम पर दोनों अमल सही और मम्दूह हुये। **"अमा मान क़ामा औक़ादा"** यह दोनों इमाम हसन(अ.) और हुसैन(अ.) हर हाल में वाजिब अल इताअत हैं, चाहे जंग

करें या सुलोह (बेहार) यानी दोनों के हालात और सवालात में फ़र्क़ था। इमाम हसन(अ.) के पास उस वक़्त बिलकुल मुईन व मद्दगार न थे। जब माविया ने ख़लैए ख़िलाफ़त का सवाल किया था। नीज़ माविया का सवाल यह था कि खिलाफत छोड़ दो या अपनी और अपने मानने वालों की तबाही व बरबादी बरदाश्त करो। इमाम हसन (अ़) ने हालात की रोशनी में ख़िल ख़िलाफ़त को मुनासिब समझा और सुलोह कर ली। आप इरशाद फ़रमाते थे "फक़द तराकतोहू लम इरादतन इस्लाह अमता व हक़दमा मुस्लामीना"- मैंने खिलाफत जान बूझ कर इसलिए तर्क कर दी ताकि इस्लाह व सुकून हो सके और खून न बहे। (कामिल व बेहार)

इमाम हुसैन (अ़) के पास बेहतरीन जा निसारजाँ बाज़ मौजूद थेऔर यज़ीद का सवाल यह था कि बैअत करो या सर दो (तबरी रौज़तुल अल सफ़ा) इमाम हुसैन(अ.) ने हालात की रोशनी में सर देने को मुनासिब समझा और बैअत से इन्कार करके जंग के लिए तैयार हो गए।

यक़ीन करना चाहिए कि अगर इमाम हसन (अ़) से भी बैअत का सवाल होता तो वह भी वही कुछ करते जो इमाम हुसैन(अ) ने किया है। आपके मद्दगार होते या न होते, क्यों कि आले मोहम्मद किसी ग़ैर की बैअत हरामे मुतलक़ समझते थे। अल्लामा जलाल हुसैनी मिसरी ने"अलहुसैन" में बा हवालए वाक़ेए हिर्रा लिखा है। कि वाक़ेए करबला के बाद किसी हुकूमत ने आले मोहम्मद के किसी अहद में बैअत का सवाल नहीं किया।

बा हुक्मे हक़ कहीं सुलोह कर लेते है दुश्मन से।
कहीं पर जंगे ख़ामोशी , जवाबे संग होती है।।
ज़माना यह सबक़ ले फ़ात्मा के दिल के टुकड़ों से।
कहां पर सुलोह होती है, कहां पर जंग होती है।।

इमाम हसन (अ.) पर कसरते अज़वाज का इल्ज़ाम :- यह एक मुसल्लेमा हक़ीक़त है कि पैग़मबरे इस्लाम (अ.) की जद्दो जेहद और अमीरल मोमेनीन(अ.) की सई व कोशिश से इसलाम दुनिया में फैला, जो लोग इब्तेदाए बेसत में मुसलमान हुये और जिन्होंने हयाते पैग़म्बर तक इसलाम क़ुबूल किया, उनके मज़हबी इन्केलाब में हज़रत अली(अ.) के दस्ते बाज़ू को बड़ा दख़ल है। अमवी और अब्बासी नस्लों में इस्लाम की दरामद और अली(अ.) की जेहादी क़ुव्वत रहीने मिन्नत है। ज़ुरूरत थी कि इन नस्लों के चशमो चिराग़ जब आगे चल कर फ़रोग़ पाते तो अली(अ.) का क़सीदा पढ़ते, क्योंकि उन्हीं के सदक़े में उन्हें सिराते मुसतक़ीम नसीब हुई थी। लेकिन यह होता उसी वक़्त जबकि बा जबरो इकराह इसलाम क़ुबूल न किया होता। यहां हाल यह था " **जबान पर अल्लाह, दिल में बाग़ड़ बिल्ला** " यही वजह है कि इन नस्लों की हर फ़र्द ने फ़रोग़ पाते ही मोहम्मद मुस्तफ़ा (स.) और उनकी आले पाक की मुख़ालेफ़त अपना शेवा बना लिया था। अमीरे माविया जो बक़ौले मुवर्रेख़ीने इस्लाम

व फ़िरंग, सियाना, बदनियत गुनाहों से बे परवाह, ख़ुदा से बेख़ौफ़ था। (महाज़राते असफ़हानी, तारीख़े अमीर अली) को नहीं इक़्तेदार हासिल हुआ। उसने आले मोहम्मद को तबाह करने के लिये वह तमाम मसाएल मोहय्या किये जिनके बाद बानिये इस्लाम और उनकी आल की इज़्ज़त व आबरू, जान माल का तहफ़्फ़ुज़ ना मुमकिन सा हो गया। जंगे जमल और सिफ़्फ़ीन वग़ैरा इसकी चीरा दस्तियों से रूनूमां हुईं। इमाम हसन(अ.) की सुलोह इसी की ज़्यादतियों का नतीजा थीं मुवर्रेख़ीन का बयान है कि सुलोह हसन(अ.) के बाद माविया मुसल्लेमुल सुबूत बादशाह बन गया। फिर इसने अपनी ताक़त के ज़ोर से मोहम्मद व आले मोहम्मद(स.) के ख़िलाफ़ हदीसों के गढ़ने और तारीख़ का धारा मोड़ने की मुहिम शुरू कर दी, और मोहम्मद व आले मोहम्मद(स.) को बदनाम करने में कोई दक़ीक़ा फ़रो गुशात नहीं किया। इस मौक़े पर चंद चीज़ों की तरफ़ इशारा करता हूँ।

(१) पैग़म्बरे इस्लाम(स.) को मेराजे जिस्मानी नहीं हुई। (शरह शिफ़ा)

(२) आप में जिन्सी हवस इस दरजा थी कि शबो रोज़ अपनी गयाराह बीबियों के पास जाते थे। (सम्त अल शमीम मुहिब, तबरी जिल्द २, सफ़ा ६४ तबआ हलब)

(३) आपके दिल पर अकसर पर्दे पड़ जाया करते थे। (सही मुस्लिम व अबू दाऊद)

(४) आपकी चार लड़कियां थीं। (तवारीख़े इस्लाम)

(५) आपके बाप दादा काफ़िर थे और आख़िर वक़्त तक मुसलमान न हुये।

(६) उस्मान ग़नी जुन्नुररैन थे। (७) अबू तालिब बिल्कुल मुफ़लिस थे।

(८) अली ने उस्मान को क़त्ल किया। (९) अली बहुत ज़बर दस्त डाकू थे। (मरऊजे अल ज़हब मसअवी) (१०) अली व फ़ात्मा नमाज़े सुबह नहीं पढ़ते थे। (हुलयतुल औलिया, जिल्द ३, सफ़ा १४४, तबआ मिस्र १९३३ ई० (११) अली की बेटी उम्मे कुल्सूम का अक़्द ख़लीफ़ए दोएम से हुआ था। (१२) अफ़सानए सकीना बिन्तुल हुसैन, इमाम हसन की कसरते अज़वाज और कसरते तलाक़ का अफ़साना भी ऐसी नस्ल बनी उम्य्या ख़ुसूसन माविया की पैदावार है। ख़िलाफ़त के छोड़ने के बावजूद वह इसके दस्ते ज़ुल्म से महफ़ूज़ नहीं रह सके। मुख़्तलिफ़ क़िस्म के इलज़ामात उन पर हज़बे आदत लगता रहा, और फिर इन तमाम चीज़ों को तवारीख़ और अहादीस में जगह देने की सई करता रहा उसके बाद ज़रा सुकून हासिल करते ही किताब अल इख़्बारूल माज़ीयीन तदवीन कराई और इसमें उल्टी सीधी बातें लिखवा दीं।

(उमवी अहद की तारीख़ के मुताअल्लिक़ मुसतशरक़ीने योरोप की राय)

अमेरीका का मशहूर मुवर्रिख़ प्रोफ़ेसर फिल्पि के०हिट्टी अपनी तसनीफ़ (तारीख़े अरब) में लिखता है कि मुसलमान अरबों के दो फ़रीक़ जब कभी कोई मज़हबी, सियासी या समाजी निज़ा होती थी तो हर एक फ़रीक़ अपनी ताईद में रसूल अल्लाह(स.) की हदीस पेश करता,ख़्वाह वह हदीसें सही हों या मौज़ूआ और झूठी, इस लिये अली(अ.) और अबू बक्र

की सियासी मुखालेफ़त, अली(अ.) और माविया का झगड़ा, बनी अब्बास और बनी उमय्या की बाहमी अदावत वग़ैरा मुताअद्दिद झूठी हदीसों के बनने के बाएस हुये। इसके अलावा उलमा की कसीर तादाद के लिये यह दौलत कमाने और रूपया पैदा करने का ज़रिया बन गया।

प्रोफ़सर सिमेन किले कैम्बरेज यूनीवर्सिटी मतूफ़ी १७२० ई० अपनी तारीख़ सारा सेनेज़ में लिखते हैं। " अरबियों ने तारीख़ नवीसी का ग़ल्त तरीक़ा इख़्तेयार करके हमको इस मसर्रत और फ़ायदे से महरूम कर दिया। जो हमको इनकी लिखी हुई तारीख़ों से हासिल हो सकता था। मुवर्रिख़ के फ़रायज़ और हुक़ूक़ क्या होते हैं उन्होंने कमा हक़्क़ा न समझा इस लिये इन फ़राएज़ और हुक़ूक़ को नज़र अन्दाज़ कर दिया। हमारे लिये इनकी लिखी हुई तारीख़ों का मुतालेआ करना और उनसे सही तारीख़ी वाक़ेयात का अख़्ज़ करना बहुत मुशकिल हो गया।

यह इन तारीख़ी माख़्ज़ों के बेएतेमादी और उनकी कोताहियों का आलम है जिनमें इमाम हसन(अ.) जैसे मुरताज़ इमाम की कसरते अज़वाज का अफ़साना मुरत्तब किया गया है।

जब हम कसरते अज़वाज और कसरते तलाक़ के अफ़साने पर ग़ौर करते हैं तो हमें साफ़ नज़र आता है कि ऐसा वाक़ेया हरगिज़ नहीं हुआ। क्योंकि अगर ऐसा होता तो इन तमाम औरतों के नाम इलमे रिजाल की तारीख़ की किताबों में ज़ुरूर होते। हमें कुतुबे रिजाल में जो नाम मिलते हैं उनकी इन्तेहा सिर्फ़ नौ (९) तक होती है। यह हक़ीक़त है कि आपने वक़्तन फ़ावक़्तन इसी तरह नौ(९) बीवियां अपने अक़्द में रखीं। जिस तरह से रसूल अल्लाह(स.) की नौ(९) बीवियां थीं। आपकी बीवियों के नाम यह हैं।

(१) उममे फ़रवा (२) खूला (३) उम्मे बशीर (४) सक़फ़िया (५) रम्ला (६) उम्मे इसहाक़ (७) उम्मुलहसन (८) बिन्ते उमराउल क़ैस (९) जादा बिन्दे अशअत

(सीरतुल हसन, अबसारूल ऐन)

" एडवर्ड गिबन " मशहूर मारूफ़ तारीख़ तन्ज़ील व इनक़ेतए सलतन्ते रोम में लिखते हैं।

यह हज़रात आले मोहम्मद(स.) आलाते हर्ब, मालो ज़र रियाया न रखते थे, इसपर भी लोग इनकी इज़्ज़त,वक़अत और ताज़ीम करते थे। जो चीज़ हुकमरान ख़ुलफ़ा के दिलों में रशक व हसद की आग भड़काती थी, इनके मज़ाराते मुक़द्देसा जो मदीने, फ़रात के किनारे और ख़ुरासान में मौजूद हैं। अब तक इनके शियों की ज़्यारत गाह हैं। इन बुज़ुर्गवारों पर हमेशा बग़ावत और ख़ाना जंगियों का इल्ज़ाम लगाया जाता था, हालांकि यह शाही ख़ानदान के औलिया अल्लाह, दुनिया को हमेशा हक़ीर समझते थे। मशियते इज़ेदी के मुताबिक़ सरे तसलीम ख़म करते हुये और इन्सानों के मज़ालिम बरदाश्त करते हुये उन्होंने उमूरे दीनी तालीम व तलक़ीन में अपनी उमरें सर्फ़ कर दीं।

यह समझने की बात है कि जो हज़रात दुनिया को हक़ीर समझते हों उनकी तरफ़ कसरते अज़वाज और कसरते तलाक़ का इन्तेसाब अफ़साने से ज़्यादा क्या वकअ़त हासिल कर सकता है।

हज़रत इमाम हसन(अ.) की शहादत

मुवर्रेख़ीन का इत्तेफ़ाक़ है कि इमाम हसन(अ.) अगर सुलोह के बाद मदीने में गोशा नशीन हुये थे। लेकिन अमीरे माविया आपके दर पए आज़ार रहे। उन्होंने बार बार कोशिश की किसी तरह इमाम हसन(अ.) इस दारे फ़ानी से मुल्के जावेदानी को रवाना हो जायें, और इससे इनका मक़सद यज़ीद की ख़िलाफ़त के लिये ज़मीन हमवार करना थी। चुनानचे उन्होंने आपको पांच बार ज़हर दिलवाया। लेकिन अय्यामे हयात बाक़ी थे ज़िन्दगी ख़त्म न हो सकी। बिलआख़िर शाहे रोम से एक ज़बर दस्त क़िसम का ज़हर मंगवा कर मोहम्मद इब्ने अशअत या मरवान के ज़रिये से जादा बिन्ते अशअत के पास अमीरे माविया ने भेजा और कहला दिया कि जब इमाम हसन शहीद हो जायेंगे तब हम तुझे एक लाख दिरहम देंगे, ओर तेरा अक़्द अपने बेटे यज़ीद के साथ कर देंगे। चुनांचे इसने इमाम हसन को ज़हर देकर हलाक कर दिया। (तारीख़े मरऊजुल ज़हब मसूदी जिल्द २, सफ़ा ३०३, व मक़ातिल अल तालेबैन सफ़ा ५१, अबू अल फ़िदा,जिल्द १, सफ़ा १८३, रौज़तुल सफ़ा जिल्द ३, सफ़ा ७, हबीबुल सैर, जिल्द २, सफ़ा १८ तबरी, सफ़ा ६०४ इस्तेयाब, जिल्द१, सफ़ा १४४)

मुफ़स्सिरे क़ुरान साहिबे तफ़सीरे हुसैनी अल्लामा हुसैन वाएज़ काशफ़ी रक़्म तराज़ हैं कि इमाम हसन(अ.) मुसालेह माविया के बाद मदीने में मुसतक़िल तौर पर फ़रोकश हो गये थे। आपको इत्तेला मिली कि बसरे में रहने वाले मुहिब्बाने अली(अ.) के ऊपर चंद ऊबाशों ने शबख़ूँ मार कर इनके ३८, आदमी हलाक कर दिये। इमाम हसन इस ख़बर से हो कर बसरे की तरफ़ रवाना हो गये। आपके हमराह अब्दुल्ला इब्ने अब्बास भी थे। रासते में ब मुक़ामे मूसली साअद मूसली जो जनाबे मुख़तार इब्ने अबी अबीहा सक़फ़ी के चचा थे, वहां क़याम फ़रमाया। इसके बाद वहां से रवाना हो कर वह दमिश्क़ से वापसी पर जब आप मूसल पहुँचे तो बइसरारे शदीद एक दूसरे शख़्स के वहां मुक़ीम हुये और वह शख़्स माविया के फ़रेब में आ चुका था और माल व दौलत की वजह से इमाम हसन (अ.) को ज़हर देने का वायदा कर चुका था। चुनान्चे दौराने क़याम में उसने तीन बार हज़रत को खाने में ज़हर दिया लेकिन आप बच गये। इमाम के महफ़ूज़ रह जाने से इस शख़्स ने माविया को ख़त लिखा कि तीन बार ज़हर दे चुका हूँ मगर इमाम हसन हलाक नहीं हुये यह मालूम करके माविया ने ज़हरे हलाहल इरसाल किया और लिखा कि अगर इसका एक क़तरा भी तू दे सका तो यक़ीनन इमाम हसन हलाक हो जायेंगे। नामाबर ज़हर और ख़त लिये हुये आ रहा था कि रास्ते में एक दरख़्त के नीचे खाना खा कर लेट गया, इसके पेट में ऐसा दर्द उठा कि वह

बरदाश्त न कर सका नागाह एक भेड़िया बरामद हुआ और उसे लेकर रफ़ू चक्कर हो गया। इत्तेफ़ाक़न इमाम हसन(अ.) के एक मानने वाले का उस तरफ़ से गुज़र हुआ। उसने नाक़ा, ख़त और ज़हर से भरी हुई बोतल हासिल कर ली और इमाम हसन(अ.) की ख़िदमत में पेश किया। इमाम हसन(अ.) ने उसे मुलाहेज़ा फ़रमा कर जा नमाज़ के नीचे रख लिया। हाज़ेरीन ने वाक़ेया दरयाफ़्त किया। इमाम ने बताया। सआद मोसली ने मौक़ा पा कर वह ख़त जा नमाज़ के नीचे से निकाल लिया जो माविया की तरफ़ से इमाम के मेज़बान के नाम से भेजा गया था। ख़त पढ़ कर साद मोसली आग बबूला हो गये और मेज़बान से पूछा क्या मामेला है? उसने ला इल्मी ज़ाहिर की मगर उसके उज़्र को बावर न किया गया उसको ज़दो कोब किया गया। यहां तक कि वह हलाक हो गया। उसके बाद आप मदीने रवाना हो गये।

मदीने में उस वक़्त मरवान बिन हकम वाली था उसे माविया का हुक्म था कि जिस सूरत से हो सके इमाम हसन(अ.) को हलाक कर दो। मरवान ने एक रूमी दल्लाला जिस का नाम " **अल्यसूनिया** " था को तलब किया और उससे कहा कि तू जादा बिन्ते अशअश के पास जाकर उसे मेरा यह पैग़ाम पहुँचा दे। कि अगर तू इमाम हसन(अ.) को किसी सूरत से शहीद कर देगी तो तुझे माविया एक हज़ार दीनारे सुर्ख़ और पचास ख़िलअते मिस्री अता करेगा, और अपने बेटे यज़ीद के साथ तेरा अक़्द कर देगा, और उसके साथ साथ सौ दीनार नग़द भेज दिये। दल्लाला ने वायदा किया और जादा के पास जाकर उससे वायदा ले लिया। इमाम हसन(अ.) उस वक़्त घर में न थे और बमुक़ामे अक़ीक़ गये हुये थे, इस लिये दल्लाला को बात चीत का अच्छा ख़ासा मौक़ा मिल गया, और वह जादा को राज़ी करने में कामयाब हो गयी। अल गरज़ मरवान ने ज़हर भेजा ओर जादा ने इमाम हसन(अ.) को शहद में मिला कर दे दिया। इमाम (अ.) उसे खाते ही बीमार हो गये, और फ़ौरन रौज़ए रसूल(स.) पर जाकर सेहत याब हुये। ज़हर तो आपने खा लिया लेकिन जादा से बदगुमान भी हो गये। आपको शुब्हा हो गया जिसकी बिना पर आपने उसके हाथ का खाना पीना छोड़ दिया और यह मामूल मुक़र्र कर लिया कि हज़रते क़ासिम की मां या हज़रत इमाम हुसैन (अ.) के घर से खाना मंगवा कर खाने लगे। थोड़े अरसे के बाद आप जादा के घर तशरीफ़ ले गये उसने कहा कि मौला हवाली मदीना से बहुत उम्दा ख़ुरमे आये हैं हुक्म हो तो हाज़िर करूं। आप चुंकि ख़ुरमे बहुत पसंद करते थे। फ़रमाया ले आ। वह ज़हर आलूद ख़ुरमे ले कर आई और पहचाने हुये ख़ुरमे छोड़ कर ख़ुद साथ खाने लगी। इमाम ने एक तरफ़ से खाना शुरू किया और वह दाने खा गये जिनमें ज़हर था। उसके बाद इमाम हुसैन(अ.) के घर तशरीफ़ लाय और सारी रात तड़प कर बसर की। सुबह को रौज़ए रसूल(स.) पर जा कर दुआ मांगी और सेहतयाब हुये। इमाम हसन(अ.) ने बार बार इस क़िस्म की तकलीफ़ उठाने के बाद अपने भाईयों से तबदीलीए आबो हवा के लिये मूसल जाने का मशविरा किया और मूसल के लिये रवाना हो गये। आपके हमराह हज़रत अब्बास (अ.) और चंद हवा-

ख़्वाहान भी गये। अभी वहां चंद यौम न गुज़रे थे कि शाम से एक नाबीना भेज दिया गया। ओर उसे एक ऐसा असा दिया गया जिसके नीचे लोहा लगा हुआ था, जो ज़हर में बुझा हुआ था। उस नाबीना ने मूसल पहुंच कर इमाम हसन(अ.) के दोस्दारान में से अपने को ज़ाहिर किया, और मौक़ा पा कर उनके पैर में अपने असा की नोक चुभो दी। ज़हर जिस्म में दौड़ गया और आप अलील हो गये। जर्राह इलाज के लिये बुलाया गया, उसने इलाज शुरू किया। नाबीना ज़ख़्म लगा कर रूपोश हो गया था। चौदह दिन के बाद जब पन्द्रहवें दिन वह निकल कर शाम की तरफ़ रवाना हुआ तो हज़रते अब्बास अलमदार(अ.) की नज़र उस पर जा पड़ीं। आपने उससे असा छीन कर उसके सर पर इस ज़ोर से मारा कि सर शिगाफ़्ता हो गया और वह अपने कैफ़रो किरदार को पहुंच गया। उसके बाद जनाबे मुख़तार और उनके चचा साद मोसली ने उसकी लाश जला दी। चंद दिनों के बाद हज़रत इमाम हसन(अ.) मदीनए मुनव्वरा वापस तशरीफ़ ले गये।

मदीनए मुनव्वरा में आप अय्यामे हयात गुज़ार रहे थे कि " **अल सोनिया** " दल्लाला ने फिर मरवान के इशारे पर जादा से सिलसिला जुम्बानी शुरू कर दी और ज़हरे हलाहल उसे दे कर इमाम हसन(अ.) का काम तमाम करने की ख़्वाहिश की।

इमाम हसन(अ.) चूंकि उससे बदगुमान हो चुके थे इस लिये उसकी आमदो रफ़्त बंद थी। उसने हर चंद कोशिश की लेकिन मौक़ा न पा सकी। बिल आख़िर शबे बिसतो हश्तुम, सफ़र, ५० ई० को वह उस जगह जा पहुंची जिस मक़ाम पर इमाम हसन(अ.) सो रहे थे। आपके क़रीब हज़रत ज़ैनब व उममे कुल्सूम सो रही थीं और आपकी पाईंती कनीज़ें महवे ख़्वाब थीं। जादा उस पानी में ज़हरे हलाहल मिला कर ख़ामोशी से वापस आई जो इमाम हसन(अ.) के सराहने रखा हुआ था। उसकी वापसी के थोड़ी देर बाद ही इमाम हसन (अ.) की आंख खुली। आपने जनाबे ज़ैनब को आवाज़ दी और कहा कि ऐ बहन मैंने अभी अभी अपने नाना , अपने पदरे बुज़ुर्गवार, और अपनी मादरे गिरामी को ख़्वाब में देखा है। वह फ़रमाते थे कि ऐ हसन तुम कल रात हमारे पास होगे। उसके बाद आपने वज़ू के लिये पानी मांगा और ख़ुद अपना हाथ बढ़ा कर सराहने से पानी लिया और पी कर फ़रमाया कि ऐ बहन ज़ैनब " **ईं चे आब बूद कि अज़ सर हलक़म ता बनाफ़म पारा पारा शुद** " **(हाय यह कैसा पानी है जिसने मेरे हल्क़ से नाफ़ तक टुकड़े टुकड़े कर दिया है।)** उसके बाद इमाम हुसैन(अ.) को इत्तेला दी गई वह आये, दोनों भाई बग़ल गीर होकर महवे गिरया हो गये। उसके बाद इमाम हुसैन(अ.) ने चाहा कि एक कूज़ा पानी ख़ुद पी कर इमाम हसन (अ.) के साथ नाना के पास पहुंचें। इमाम हसन(अ.) ने पानी के बरतन को ज़मीन पर पटक दिया वह चूर चूर हो गया। रावी का बयान है कि जिस ज़मीन पर पानी गिरा था वह उबलने लगी थी। अल गरज़ थोड़ी देर के बाद इमाम हसन(अ.) को ख़ून की क़ै आने लगी। आपके जिगर के सत्तर टुकड़े तश्त में आ गये। आप ज़मीन पर तड़पने लगे। जब दिन चढ़ा तो

आपने इमाम हुसैन(अ.) से पूछा कि मेरे चेहरे का रंग कैसा है। कहा " **सब्ज़** " है। आपने फ़रमाया कि हदीसे मेराज का यही मुक्तज़ा है। लोगों ने पूछा कि यह हदीसे मेराज क्या है। फ़राया कि शबे मेराज मेरे नाना ने आसमान पर दो क़स्र एक ज़र्मरूद का एक याकूत का देखा तो पूछा कि ऐ जिब्रईल यह दोनों क़स्र किसके लिये हैं। उन्होंने अर्ज़ की एक हसन के लिये दूसरा हुसैन के लिये। पूछा दोनों के रंग में फ़र्क़ क्यों है? कहा हसन ज़हर से शहीद होंगे और हुसैन तलवार से शहादत पायेंगे। यह कह कर आप हुसैन(अ.) से लिपट गये ओर दोनों भाई रोने लगे और आपके साथ दरो दीवार भी रोने लगे।

उसके बाद आपने जादा से कहा अफ़सोस तूने बड़ी बे वफ़ाई की लेकिन याद रख कि तूने जिस मक़सद के लिये ऐसा किया है उसमें कामयाब न होगी। उसके बाद आपने हुसैन(अ.) और बहनों से कुछ वसीयतें कीं, और आंखें बंद फ़रमा लीं। फिर थोड़ी देर के बाद आंख खोल कर फ़रमाया ऐ हुसैन मेरे बाल बच्चे तुम्हारे सुपुर्द हैं फिर आंख बंद फ़रमा कर नाना की ख़िदमत में पहुंच गये। **" इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहे राजेऊन "**

इमाम हसन(अ.) की शहादत के फ़ौरन बाद मरवान ने जादा को अपने पास बुला कर दो औरतों और एक मर्द के साथ माविया के पास भेज दिया। माविया ने उसे हाथ पैर बंधवा कर दरियाए नील में यह कह कर डलवा दिया कि तूने जब इमाम हसन(अ.) के साथ वफ़ा न की तो यज़ीद के साथ क्या वफ़ा करेगी।

(रौज़तुल शोहदा, सफ़ा २२० ता २३५ तबआ बम्बई १२८५ ई० व ज़िकरूल अब्बास सफ़ा ५०, तबा लाहौर, १६५६ ई०)

माविया सजदए शुक्र में :- मरवान हाकिमे मदीना ने जादा बिन्ते अशअश के ज़रिये से अपनी कामयाबी की इत्तेला माविया को दी। माविया ख़बरे शहादत पाते ही ख़ुशी के मारे अल्लाहो अकबर कह कर सजदे में गिर पड़ा और उसके देखा देखी सारे दरबार वाले ख़ुशी मनाने के लिये नारए तकबीर बलन्द करने लगे। उनकी आवाज़ें फ़ात्मा बिन्ते क़रज़आ के कानों में पहुंची जो माविया की बीवी थी, तो कहने लगी यह किस चीज़ की ख़ुशी है। माविया ने जवाब दिया कि इमाम हसन(अ.) की शहादत हो गई है। इस ख़ुशी में मैंने नारए तकबीर बलन्द करके सजदए शुक्र अदा किया है। फ़ात्मा बेइन्तेहा रंजीदा हुई और कहने लगी अफ़सोस फ़रज़न्दे रसूल(स.) क़त्ल किया जाय ओर दरबार में ख़ुशी मनाई जाय। (तारीख़ अबुल फ़िदा, जिल्द १, सफ़ा १८२, अक़्दुल फ़रीद, जिल्द २, सफ़ा २११ ओकली सफ़ा ३३६, रौज़तुल मनाज़िर, जिल्द ११ सफ़ा १३३ तारीख़े ख़मीस, जिल्द २ सफ़ा ३२८ हैवातुल हैवान, जिल्द १ सफ़ा ५१ नूज़ूलुल अबरार, सफ़ा ५ अरहज्जुल मतालिब, सफ़ा ३५७ व अख़बारूल तवाल सफ़ा ४०० इब्ने क़ुतीबा ने, इब्ने अब्बस के दरबारे माविया में पहुंच कर इस मौक़े की ज़बर दस्त गुफ़्तुगू लिखी है। (अल इमामत वल सियासत)

इमाम हसन(अ.) की तजहीज़ो तकफ़ीन :- अलगरज़ इमाम हसन (अ.) की शहादत के बाद इमाम हुसैन(अ.) ने गुस्लो कफ़न का इन्तेज़ाम फ़रमाया और नमाज़े जनाज़ा पढ़ी गई। इमाम हसन(अ.) की वसीयत के मुताबिक़ उन्हें सरवरे क़ायनात (स.) के पहलू में दफ़्न करने के लिये अपने कंधों पर उठा कर ले चले। अभी पहुंचे ही थे कि बनी उमय्या खुसूसन **मरवान** वग़ैरा ने आगे बढ़ कर पहलूए रसूल(स.) में दफ़्न होने से रोका और **हज़रत आयशा** भी एक खच्चर पर सवार होकर आ पहुंचीं, और कहने लगीं यह घर मेरा है मैं तो हरगिज़ हसन को अपने घर में दफ़्न न होने दूंगी। (तारीख़े अब्दुल फिदा जिल्द १, सफ़ा १८३ रौज़तुल मनाज़िर जिल्द ११ सफ़ा १३३) यह सुन कर बाज़ लोगों ने कहा ऐ आयशा तुम्हारा क्या हाल है। कभी ऊंट पर सवार होकर दामादे रसूल(स.) से जंग करती हो कभी खच्चर पर सवार हो कर फ़रज़न्दे रसूल(स.) के दफ़्न में मज़ाहेमत करती हो। तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिये। (तफ़सील के लिये मुलाहेज़ा हो ज़िकरूल अब्बास सफ़ा ५१)मगर वह एक न मानीं और ज़िद पर अड़ी रहीं यहां तक कि बात बढ़ गई। आपके हवाख़वाहों ने आले मोहम्मद पर तीर बरसाए (किताब रौज़तुल सफ़ा, जिल्द ३, सफ़ा ७ में है कि कई तीर इमाम हसन(अ.) के ताबूत में पेवस्त हो गये। किताब ज़िकरूल अब्बास सफ़ा ५१ में है कि ताबूत में सत्तर तीर पेवस्त हुये थे। तारीख़े इस्लाम जिल्द १, सफ़ा २८ में है कि नाचार लाशे मुबारक को जन्नतुल बक़ी में ला कर दफ़्न कर दिया गया। तारीख़े कामिल जिल्द ३,सफ़ा १८२ में है कि शहादत के वक़्त आपकी उम्र ४७, साल की थी।

आपकी अज़वाज और औलाद :- आपने मुख़्तलिफ़ अवक़ात में नौ(९) बीवियां कीं। आपकी औलाद में ८ (आठ) बेटे और ७ (सात) बेटियां थीं। यही तादाद इरशादे मुफ़ीद सफ़ा २०८ और नुरूल अबसार सफ़ा ११२ तबा मिस्र में है। **अल्लामा तल्हा शाफ़ेई** मतालेबुल सुवेल के सफ़ा २३९ पर लिखते हैं कि इमाम हसन(अ.) की नस्ल ज़ैद ओर हसने मुसन्ना से चली है। इमाम **शबलंजी** का कहना है कि आपके तीन **फ़रज़न्द अब्दुल्लाह, क़ासिम** और उमरो करबला में शहीद हुये हैं। (नूरूल अबसार सफ़ा ११२)

जनाबे ज़ैद बड़े जलीलउल क़द्र और सदक़ाते रसूल(स.) के मुतावल्ली थे। उन्होंने १२० हिजरी में ९० साल की उम्र में इन्तेक़ाल फ़रमाया।

जनाबे हसने मुसन्ना निहायत फ़ाज़िल, मुत्तक़ी और सदक़ाते अमीरल मोमेनीन के मुतवल्ली थे। आपकी शादी इमाम हुसैन(अ.) की बेटी जनाबे फ़ात्मा से हुई थी। आपने करबला की जंग में शिरकत की थी, और बेइन्तेहा ज़ख़्मी हो कर मक़तूलों में दब गये थे। जब सर काटे जा रहे थे तब उनके मामूं अबू हसान ने आपको ज़िन्दा पा कर उमरे सआद से ले लिया था। आपको ख़लीफ़ा सुलैमान बिन अब्दलु मलिक ने ९७, हिजरी में ज़हर दे दिया था। जिसकी वजह से आपने ५२ साल की उम्र में इन्तेक़ाल फ़रमाया। आपकी शहादत के बाद आपकी बीवी जनाबे फ़ात्मा एक साल तक क़ब्र पर ख़ेमा ज़न रहीं।

(इरशादे मुफ़ीद, सफ़ा २११ व नूरूल अबसार, सफ़ा २६९)

शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी

बरादराने अहले सुन्नत के अवाम का ख़याल है कि शेख़ सय्यद अब्दुल क़ादिर ज़ीलानी और बरवायते इब्ने जंगी दोस्त और बरवायते इब्ने **"चंग दोस्त"** सय्यद थे और इनका नसब जनाबे हसने मुसन्ना , इब्ने हसन बिन अली(अ.) तक पहुचता है। लेकिन उनके उलेमा इससे इन्कार करते हैं। चुनांचे :-

(१) इमाम-उल-अन्साब अहमद बिन अली बिन अल हुसैन बिन अली, बिन महन्ना अपनी किताब उमदतुल तालिब तबा बमबई के सफ़ा ११२ पर लिखते हैं कि खुद शेख़ अब्दुल क़ादिर ने अपनी सियादत का दावा नहीं किया और न उनके बेटों ने किया है। अलबत्ता इसकी ईजाद उनके पोते क़ाज़ी अबुल सालेह नसर बिन अबी बक्र बिन अब्दुल क़ादिर ने फ़रमाई है लेकिन अपने दावे के सुबूत में वह दलील लाने से क़ासिर रहे हैं। यही वजह है कि किसी अहले नसब ने आपका दावा तसलीम नहीं किया।

(२) अल्लामए दौराँ ने सय्यद अहमद बिन मोहम्मद अल हुसैनी निसबे किताब शजरतुल अल अवलिया में रक़म तराज़ हैं कि तमाम उलेमाए इनसाब ने शेख़ सय्यद अब्दुल क़ादिर के सिलसिलए सियादत से इन्कार किया है और किसी ने भी इनके सादात होने को नक़ल नहीं किया, और खुद उन्होंने भी सय्यद होने का दावा नहीं किया और उनकी ज़िन्दगी में किसी और ने भी इनको सय्यद नहीं कहा। **" अन अव्वल मन अज़हर हाज़ा अल दाआ अल बातलता हु आनसरा इब्ने अबी बक्र बिन अल शेख़ अब्दुल क़ादिर "** मालूम होना चाहिये कि इस दावए बातिला को सबसे पहले इनके पोते नसर बिन अबी बक्र ने ज़ाहिर किया है।

(३) रिसाला सूफ़ी जो बसर परसती ख़्वाजा हसन निज़ामी मंडी, बहाउद्दीन ज़िला गुजरात से शाया होता था। इसके जिल्द ३, सफ़ा ६ में लिखा है। " सेयुम पीरे तरीक़त हज़रत ख़्वाजा मुहिउद्दीन अब्दुल क़ादिर जीलानी है। वलदियत आपकी क़दम बक़दम हज़रत ईसा के है सिलसिला, नसब आपका हज़रत उमर फ़ारूक़ तक पहुंचता है।

इमाम शिब्लंजी का इरशाद है कि आपकी विलादत ४७० ई० में और वफ़ात ५६१ में हुई है। आप हम्बलीउल मज़हब थे। आपकी वालेदा उम्मुल ख़ैर मक़ामे जबाल इलाक़ए तबरिस्तान की रहने वाली थीं। इस लिये आपको अब्दुल क़ादिर जिब्ली कहते हैं और जीलानी एज़ाज़ी तौर पर कहा जाता है। (नुरूल असार सफ़ा २१४, व इक़तेबासुल अनवार, सफ़ा ७२)आप दो किताबों ग़नीयतुल तालेबैन और फ़तूहुल ग़ैब के मुसन्निफ़ हैं। (तारीख़े इस्लाम जिल्द,५ सफ़ा ६३)

मविया इब्ने अबी सुफ़ियान का तारीख़ी तार्अरूफ़

अमीरे माविया के तार्अरूफ़ और आपके किरदार की आईना दारी के लिए अगरचे सिर्फ़ यही कहना काफ़ी है कि आप हज़रत अली (अ.) इमाम हसन (अ.) अम्मार यासिर, मालिके अशतर,और उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा बिनते अबी बक्र मोहम्मद इब्ने अबी बक्र नीज़ अबदुर्रहमान इब्ने ख़ालिद इब्ने वलीद वग़ैराहुम के मुसल्लेमुल सुबूत क़ातिल हैं जैसा कि तहरीर किया जा चुका है। लेकिन इससे आपकी नसली हालात और आपके किरदार के दीगर पहलू रौशन नहीं होते इसलिए ज़ुरूरत है कि कुतबे मोतबरा के हवाले से चन्द चीज़े निहाएत मुख़्तसर लफ़्ज़ों में पेश कर दी जाएं। बनाबरीं अर्ज़ है कि (१) नसायह काफ़िया सफ़ा ६५ व सफ़ा ११० में है कि क़बीलए क़ुरैश की इब्तेदा, क़सी इब्ने कलाब से हुई जो औलाद कअब इब्ने लवी से थे क़सी के चार बेटों में से एक का नाम अब्दुल मुनाफ़ था। हाशिम और अब्दुल शम्स अब्दुल मुनाफ के बेटे थे। हाशिम की ज़ुर्रियत से मोहम्मद व आले मोहम्मद(स.) में जो हाशमी कहलाते हैं और अब्दुल शम्स की तरफ़ मनसूब है जो पसता क़द, चुन्धा, करन्जा, बदशक्ल था, जिसके चेहरे से शरारत व नहूसत नुमायाँ थी। उमिया के मानी छोटी लौंडी के हैं। हस्सान बिन साबित ने इसके अवलाद व अब्दुल शम्स होने से इन्कार किया है। देखो दीवाने हस्सान सफ़ा ६१ (२) अलहुर्रियत फ़ील इस्लाम मुसन्नेफ़ा अबुल कलाम आज़ाद के सफ़ा २६ में है कि ख़िलाफ़ते राशेदा के बाद बनू उम्मया का दौरे फ़ेतन व बिदआत से शुरू होता है। जिन्होंने निज़ामे हुकूमते इस्लामी की बुनयादें मुताज़लज़िल कर दीं (३) ततहीर उल जिनान सफ़ा १४२ नसलहे काफ़िया सफ़ा १०६ में है कि आँहज़रत(स.) ने इरशाद फ़रमाया है कि हमारा सबसे बड़ा दुश्मन क़बीलए बनी उम्मया है (४) नियाबुल मोअद्दता सफ़ा १४८ में है कि कबाएले अरब में सबसे शरीर बनी उम्मया हैं (५) तहरीरूल जेनान सफ़ा १४८ में है कि हर शै के लिए एक आफ़त है और दीने इस्लाम की आफ़त बनी उम्मया है (६) तारीख़ उल ख़ुल्फ़ा सफ़ा ८ और तफ़सीरे नैशा पुरी में है कि आँहज़रत(स.) ने ख़्वाब में देखा कि मिम्बर पर लंगूर कूद रहे हैं जिससे आपको बेइन्तेहा सदमा हुआ जिससे तसल्ली के लिए सूरए क़दर नाज़िल हुआ जिसमें फ़रमाया गया है कि शबे क़दर मुद्दते हुकूमत बनी उम्मया से बेहतर है (७) रौज़तुल मनाज़िर बर हाशिया कामिल जिल्द सफ़ा ८५ में है कि शाजरए मलउना फ़िल क़ुरान से मुराद बनी उम्मया हैं (८) तारीख़े आसम कूफ़ी सफ़ा २४२ में है कि अहदे जाहिलयत में बनी उम्मया कि ग़िज़ा टिड्डी और मुरदार थी(६) फ़तेहुलबारी इब्ने हजर असक़लानी जिल्द ५ सफ़ा ६५ में है कि ज़मानए जाहिलयत में फ़ाहेशा औरतें अपने मकानों पर पहचान के लिए झन्डे लगाए रहती थीं (१०) नसायहे काफ़िया सफ़ा ११०

समरतुल अवराक़ सफ़ा १०८ अबुलफ़िदा जिल्द १, सफ़ा १८८ इब्ने शहना जिल्द २, सफ़ा १३४ एयर विंग, सफ़ा ४८ तज़किरए ख़वास अल उम्मता, सफ़ा ११७, तारीख़े आसम कूफ़ी सफ़ा २२६ वग़ैरा में है कि मशहूर फ़ाहेशा औरतें जिनके मकानों पर झंडे थे, वह चार थीं। (१) ज़रक़ा (२) " नाबेग़ा " उमरो आस की मां (३) " हमामा " अमीरे माविया की दादी (४) " हिन्दा " अमीरे माविया की मां और हिन्दा के मुताअल्लिक़ आसम कूफ़ी सफ़ा २२६ में है कि यह तमाम ऐबों की ख़ज़ीना दार थीं। (११) तारीख़े ख़ुलफ़ा सफ़ा २१८ में है कि यह शायरा और बड़ी संग दिल थी। इसका एक शेर अहवाले मामून रशीद में दर्ज है। जिसका तरजुमा यह है।

" हम ख़ूबसूरती में सितारए सुबह सादिक़ की बेटियां हैं। नर्म बिसतरों पर हम किसी के साथ यूँ मिलते हैं जैसे मुजामेअत करने वाला मस्त चकोर चांद के गिर्द घूमता है। " (मुतख़ेबुल लुग़ात व सराह)

(१३) नसाए सफ़ा ८३ में है कि हस्सान इब्ने साबित ने हिन्दा की ज़िना कारी अपने अशआर में बयान की और आं हज़रत को सुनाया हज़रत ख़ामोश रहे। अशआर मुलाहेज़ा हो दीवाने हस्सान सफ़ा ४० से ६० में।

(१४) इब्ने क़ुतीबा ने लिखा है कि आं हज़रत ने उक़बा को मक़ामे सफ़ोरिया(शाम) का यहूदी फ़रमाया है।

(१५) निसाए काफ़िया सफ़ा ११० में है कि उम्मया ने सफ़ोरिया की एक यहूदन लड़की से ज़िना किया था जिससे ज़कवान नामी लड़का पैदा हुआ था जिसकी कुन्नियत अबू उमरो मुकर्र की गई थी। यही अबू उमरो अक़बा का दादा था।

(१६) रौज़ल अनफ़ असाबा व कामिल और हलबी में ज़कवान को ग़ुलामे उम्य्या लिखा है।

(१७) आग़ाफ़ी अबुल फ़रह असफ़हानी ४/८ तरजुमा मुसाफ़िर में है कि उमय्या के बाद ज़कवान ने अपनी मां से निकाह कर लिया था।

(१८) अग़ाफ़ी अबुल फ़रह असफ़हानी निसाए काफ़िया हाशिया सफ़ा ८४ तजकिरए सिब्ते अब्ने जौज़ी में है कि इसी अबू उमर का बेटा मुसाफ़िर था जो सख़ावत और जमाली शेर गोई में मशहूर था। हिन्दा का उससे मोआशेक़ा हो गया और उससे हामेला हो गई। जब हमल ज़ाहिर हो गया तो उसने मुसाफ़िर से कहा कि तू किसी तरफ़ चला जा। चुनांचे वह हीरा को चला गया। उसके बाद हिन्दा अबूसुफ़ियान के तसर्रुफ़ में आ गई। जब मुसाफ़िर को पता लगा तो उसने फ़ेराक़ में जान दे दी। मुसाफ़िर के चले जाने के बाद हिन्दा मक़ामे अजयाद की तरफ़ चली गई और वहीं बच्चा जना।

(१९) सिब्ते इब्ने जोज़ी ने तज़किरए ख़वास अल उम्मता में लिखा है कि हज़रत आयशा ने उम्मे हबीबा ख़्वाहरे माविया को कहा! **"क़ातिल अल्लाह अब्नतुल राहता"** ख़ुदा लानत करे

दुख़्तरे ज़ने ज़िनाकार पर, और इमाम हसन(अ.) ने माविया को कहा!
" वक़द अलमत अल फ़राशल लज़ी दलदत इलैहे "। मैं उस फ़र्श को जानता हूँ जिस पर तू पैदा हुआ है। उसके बाद इसकी तौज़ीह इब्ने जोज़ी ने यह की है।
" काला अल समीई वल हशाम इब्ने मोहम्मद अल कल्बी फ़ी किताब अल मुसम्मा बिल मसालिब वक़फ़त अला मानी क़ौल अल हसन माविया क़द अलिमतो अल फ़राशल लज़ी वलदत इलहै अन माविया कानाया अल अनाह मिन्नी अरबता मिन क़ुरैश ग़मारता इब्ने वलीद व मुसाफ़िर इब्ने अबी उमरो व अबी सुफ़ियान वल अब्बास व हूला कानू अन्दमा अबी सुफ़ियान व काना कुल यत्तहुम बेहिन्द "। यानी असमई और हशाम ने कहा है कि इमाम हसन(अ.) के क़ौल के यह मानी हैं कि, **माविया, अबूसुफ़ियान, उमरो अब्बास** और **मुसाफ़िर** चार आदमियों की तरफ़ मन्सूब है।
" अमा मुसाफ़िर बिन अबी उमरो फ़क़ाला अल कलबी आउम्मतुन नास अली अन माविया मिनहा "। कल्बी ने कहा कि जमहूर की राय थी कि माविया मुसाफ़िर इब्ने उमरो से हैं क्योंकि वही सबसे ज़्यादा हिन्दा से मोहब्बत करता था। मसालिब इब्ने समआन में है कि पदरे हिन्दा ने इसका निकाह **" लोअदा "** माले कसीर अबू सुफ़ियान से किया।
" फ़ौज़अत माविया बाद सलासता अशहर " निकाह के तीन माह बाद बत्ने **"हिन्दा"** से माविया पैदा हुआ। इसी लिये ज़महशरी ने रबीउल अबरार में माविया को **चार यारी** लिखा है। बरवायत हिन्दा का ताअल्लुक़ एक खूब सूरत डोम से भी था जिसका नाम **"सब्बाह"** था। इसी से माविया का भाई अतबा इब्ने अबी सुफ़ियान पैदा हुआ है। जैसा कि निसाए काफ़िया, सफ़ा ११० में है। **" काला अल शआबी फ़क़द असा रसूल अल्लाह अबी हिन्दा यौमे फ़तेह मक्का बशी मन हाज़ा "** इमामे शाबी का बयान है कि हिनदा की ज़िना कारीकी तरफ़ आं हज़रत ने फ़तेह मक्का के दिन उस मौक़े पर इयारा फ़रमाया था जब कि वह बैअत करने आई थी। हिन्दा ने कहा कि मैं किस चीज़ पर बैअत करूं। हज़रत ने फ़रमाया कि तू उस चीज़ पर बैअत कर कि आज से ज़िना नहीं करेगी। उसने कहा कि हज़रत कहीं **" हुर्रा "** आज़ाद औरतें ज़िना करती हैं। **"मन्ज़र रसूल अल्लाह इला उमरे तबस्सुम"** यह सुन कर आपने हज़रत उमर की तरफ़ देख कर तबससुम फ़रमाया, मुलाहेज़ा हो।

(माविया दायरतुल इस्लाह, सफ़ा ८)

अल्लामा मजलिसी हयातुल क़ुलूब जिल्द २, सफ़ा ४३७ पर लिखते हैं कि हज़रत उमर ज़मानए जाहिलयत के अमली शाहिद थे। इसी लिये रसूल अल्लह(स.) उनकी तरफ़ देख कर मुस्कुराय थे।

(२०) तमाम तवारीख़े इस्लाम में है कि इसी हिन्दा ने हज़रते हम्ज़ा को अपने एक आशिक़ हब्शी नामी से शहीद करा के उनका जिगर चबाना चाहा था और कान, नाक वग़ैरा काट कर अपने गले का हार बनाया था। (२१) माविया का बाप जो अबूसुफ़ियान कहा जाता है वह

बरवायत हैवातुल हैवान " **तेली** " था।

(२२) आसम कूफ़ी सफ़ा २३६ में है कि यह शराबी था।

(२३) हयातुल कुलूब और नहजुल बलाग़ाह जिल्द २, सफ़ा १३१ में है कि अबुसुफ़ियान ने ब जब्रो इकराह इस्लाम कुबूल किया था।

(२४) माविया दायरतुल इसलाह सफ़ा १४ में है कि माविया १७, या २२ साल क़ब्ले हिजरत हिन्दा के शिकम से पैदा हुआं

(२५) नहजुल बलाग़ाह जिल्द २ सफ़ा १६ में है कि हज़रत अली(अ.) ने माविया को नसीक़ फ़रमाया है। जिसक मानी मुत्तिहमुन नसब के हैं।

(२६) जनातुल खुलूद में है कि माविया का क़द लम्बा और आखें सब्ज़ थीं।

(२७) तारीखुल खुलफ़ा सफ़ा १३२ में है कि इसकी सूरत डरावनी थी।

(२८) तारीख़े कामिल जिल्द ३, सफ़ा १६६, और निसाए काफ़िया सफ़ा २१ में है कि मोहम्मद इब्ने अबी बक्र ने माविया को लईन इब्ने लईन कहा है।

(२९) उसने ग़लत तौर पर मशहूर किया कि अली(अ.) क़ातिले उस्मान हैं। (आसम कूफ़ी सफ़ा १६६)

(३०) निसाए काफ़िया सफ़ा ५३ व हुलयतुल औलिया सफ़ा १४४ में है कि उसने ग़लत शोहरत दी कि माज़अल्लाह अली(अ.) नमाज़ नहीं पढ़ते।

(३१) निसाए काफ़िया सफ़ा ५३ में है कि माविया के हुकुम से अबीदुल्लाह इब्ने अब्बास के दो कमसिन बच्चे मां की गोद में ज़िब्ह किये गये।

(३२) आसम कूफ़ी सफ़ा ३०७ में है कि माविया ने यमन और हिजाज़ में तीस हज़ार (३०,०००) मुहिब्बाने अली(अ.) को क़तल किया।

(३३) निसाए काफ़िया सफ़ा ६१ में है कि माविया ने मालिके अशतर को ज़हर से शहीद करा दिया।

(३४) आसम कूफ़ी सफ़ा ३३८ में है कि माविया ने मोहम्मद इब्ने अबी बक्र को गधे की खाल में सिलवा कर जलवा दिया।

(३५) इसी किताब में है कि जब हज़रत आयशा को इसकी ख़बर मिली तो बहुत रोईं और ताहयात बद दुआ देती रहीं।

(३६) निसाए काफ़िया सफ़ा ६२ में है कि हज़रत अली(अ.) को इसकी इत्तेला मिली तो " **बकी बकआ शदीदन** " बहुत राये।

(३७) निसाए काफ़िया सफ़ा ५८ में सीरते मोहम्मदिया सफ़ा ५७७ में है कि हजर इबने अदी सहाबिए रसूले करीम(स.) मोहब्बते अली(अ.) में क़तल किये गये और अब्दुल रहमान इब्ने हस्सान ज़िन्दा दफ़न किये गये।

(३८) निसाए काफ़िया सफ़ा, ४३ में है, कि उमर बिन हमक़ भी हुक्मे माविया से शहीद

किये गये।

(३९) तबरी और निसाए काफ़िया सफ़ा ५२ में है कि माविया के एक आमिल समरता ने आठ हज़ार आदमियों को शहीद किया।

(४०) तारीख़े आसम सफ़ा ३३४, व निसाए काफ़िया सफ़ा ७० में है कि बसरे और कूफ़े में एक एक रात को पांच, पांच सौ (५००) मुहिब्बाने अली(अ.) क़त्ल किये गये।

(४१) तारीख़े कामिल इब्ने असीर जिल्द ३, सफ़ा १३३ में है कि माविया नमाज़ के हर कुनूत में हज़रत अली, इब्ने अब्बास, इमाम हसन, इमाम हुसैन और मालिके अशतर पर लानत करता था।

(४२) निसाए काफ़िया सफ़ा १७० में है कि माविया मोअल्लेफ़तुल कुलूब में था। उसका कातिबे वही होना ग़लत है।

(४३) तारीख़े आसम सफ़ा ४६ में है कि माविया ने शोहदाय ओहद की क़बरों पर से नहर जारी कराई ओर लाशों को दूसरी जगह दफ़्न करा दिया। लाशों के निकालने में एक बेलचा हज़रते हम्ज़ा के पैर में लग गया जिससे खूने ताज़ा जारी हुआ।

(४४) मोलवी अमीर अली अपनी तारीख़े इस्लाम में लिखते हैं कि इमाम हसन के तरके ख़िलाफत के बाद माविया हक़ीक़त में ही बादशाहे इस्लाम बन गया। इस तरफ़ ज़माने के अजीबो ग़रीब इन्केलाब से हज़रते मोहम्मदे मुस्तफ़ा(स.) के दुश्मनों ने उनकी औलाद का मौरूसी हक़ ग़ज़्ब कर लिया और बुत परस्ती के हामी उन जनाब के मज़हब और सलतन्त के सरदार और पेशवा बन गये। दारूल ख़िलाफ़ा जो हज़रत अली(अ.) ने कूफ़े में मुक़र्रर किया था अब दमिश्क़ में मुनतक़िल हो गया और जहां माविया ईरानी और यूनानी शानो शौकत के साथ रहा करता था। वह अक्सर अपने दुश्मनों और मुख़ालिफ़ों का ज़हर या तलवार से काम तमाम कर देता था। रिश्तेदारी या ख़िदमते इस्लाम भी उसके सफ़्फ़ाक हाथों से बचा न सकती थी और फिर मुवर्रिख़ ओबसरन ने नक़्ल किया है कि बनी उमय्या का अव्वल ख़लीफ़ा सियाना, मुताफ़न्नी और सफ़्फ़ाक था। अपना मतलब निकालने के लिये किसी जुर्म के इरतिकाब से न डरता था। ज़बर दस्त ग़नीम को हलाक करा देना उसके बायें हाथ का खेल था। पैग़म्बरे इस्लाम के नवासे इमाम हसन(अ.) और मालिके अशतर को ज़हर से हलाक करा दिया। इसी तरह अब्दुल रहमान इब्ने ख़ालिद इब्ने वलीद को ४५ हिजरी में ज़हर से तमाम करा दिया। (कामिल, इब्ने असीर, तबरी, अबुल फ़िदा, रौज़तुल सफ़ा, हबीब अल सियर) और उम्मुल मोमेनीन जनाबे आयशा को इस तरह ज़िन्दा गढ़े में दफ़्न कर दिया कि ५६ हिजरी में आकर एक मकान में गढ़ा खुदवा कर उसको ख़स पोश करके आबनूस की कुर्सी बिछवाई और आयशा को दावत में बुलवा कर उस पर बिठाया, आयशा बैठते ही उस गढ़े में जा पड़ीं। माविया ने इस गढ़े को पत्थर और चूने से मज़बूत बंद करा दिया और मक्के की तरफ़ कूच कर गये। (हबीब-उस-सैर , जिल्द १, सफ़ा , ८५ ओकली तारीख़े इस्लाम

रबीउल अबरार, अवाएल सियूती, कामिल अल सफ़ीना, हदीक़ा, हकीम सनाई, मुनाक़िबे मुर्तज़वी।

(४५) ५१ ई० में हजर इब्ने अदी को जो निहायत मुत्तक़ी व परहेज़गार और इबादत गुज़ार थे और उनके ६ हम राहियों को और उमर इब्ने हमक़ सहाबी को सिर्फ़ इस जुर्म में कि वह दोस्त दाराने अली(अ.) में से थे और जब माविया का गर्वनर कूफ़े के मिम्बर पर अली(अ.) पर लानत करता तो यह रोकते और अली(अ.) की हिमायत करते थे, क़त्ल करा दिया।

(४६) ख़ानदाने बनी उमय्या को क़ुरआन में शजरए मलऊना फ़रमाया गया है।

(४७) उनको अली(अ.) उनकी औलाद और उनके शियों से सख़्त दुश्मनी थी। चुनांचे माविया हज़रत अली(अ.) पर तबर्रा करता था। उसने ४१ हिजरी में हुक्म दिया कि ममालिके महरूसा की मस्जिदों में ख़तीब मिम्बर पर बैठ कर हज़रत अली(अ.) पर तबर्रा किया करें और यह रस्म ६६, हिजरी तक जारी रही जबकि उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ने ख़ुतबे में से इस तबर्रा को निकलवा कर आयए " **इन्नल्लाह या मर बिल अदल वल एहसान** " और ख़ुलफ़ाए अरबिया के नाम दाख़िल कराये। मुलाहेज़ा हो, **सही मुस्लिम, तिर्मिज़ी, मिनहाजुल सुन्नता, अक़्दुल फ़रीद, अबुल फ़िदा, कामिल इब्ने असीर, तबरी, तारीख़ अल ख़ुलफ़ा, फ़तावाए अज़ीज़ी, तफ़रीह उल अहबाब, ख़साएस निसाई।**

इमाम ग़ेज़ाली(र.) लिखते हैं कि हज़रत अली(अ.) पर शितम व तबर्रा एक हज़ार माह तक जारी रहा।(इसरारूल आलेमीन सफ़ा १०, तबआ बम्बई) अल निसाएल काफ़िया के सफ़ा ६ में है कि हज़रत अली(अ.) पर सत्तर हज़ार मिम्बरों पर सबबो शितम की जाती थी। माविया ने अबु हुरैरा, उमरे आस , मुग़ीरा इब्ने शेबा और उरवा इब्ने ज़ुबैर को इस अम्र पर मामूर किया था कि अली(अ.) की मनक़सत में झूठी हदीसें तय्यार करें।

(४८) इब्ने अबिल हदीद जिल्द २, सफ़ा ६ में है कि शियाने अली(अ.) के मालो मता ज़ब्त कर लिये गये वह क़त्ल किये गये और इस क़द्र उन पर ज़ुल्म किये गये कि कोई अपने को शिया न कह सकता था।

(४६) इब्ने अबिल हदीद जिल्द २, सफ़ा ६, निसाए काफ़िया सफ़ा ७०, किताब अल फ़ख़री में है कि माविया उमूरे दुनिया में इस क़द्र मुनहमिक रहता और अपनी हिम्मत तदबीर उमूरे दुनिया में इतनी मसरूफ़ करता कि और सब बातें उसके सामने हेच समझता था।

(५०) दिन में पांच मरतबा खाता था और आख़िरी दफ़ा सबसे ज़्यादा खाकर कहता था ऐ ग़ुलाम उठा ले खाते खाते थक गया मगर सेर नहीं हुआ। एक बछड़ा भून कर लाये वह एक ही मैदे की रोटी के साथ खा गया और साथ में चार मोटे, मोटे गुर्दे। एक गर्म भेड़ का बच्चा और एक ठन्डे भेड़ का बच्चा और खजूरों से अलग मुहँ मीठा

किया। इसके आगे सौ (१००) रतल बाक़लानी रूतब रखा गया वह सब खा गया।

(५१) इमाम निसाई फ़रमाते हैं कि रसूल अल्लाह (स.) ने उनके हक़ में बद दुआ की थी। **“ ला अशबा उल्लाह बतना ”** ख़ुदा इसका पेट न भरे।

(५२) माविया अपना मतलब निकालने में खूं रेज़ी के मुताअल्लिक़ परवाह न करता था।

(५३) ओकली लिखता है कि वह ज़क्र बर्क़ कपड़े पहनता और शानो शौकत से बसर करता और हमेशा शराब पीता था।

(५४) हसन बसरी कहते हैं कि माविया की चार बातें ऐसी हैं कि उनमें से एक ही उसकी हलाकत के लिये काफ़ी है। (१) अव्वल मुस्तहक़्क़ीने ख़िलाफ़त को महरूम करके ज़बर दस्ती ख़िलाफ़त पर क़ब्ज़ा करना। (२) दूसरे यज़ीद को वली अहद बनाना जो बद अतवार , शराबी, हरीर पहनने वाला, गाना बजाना सुन्ने का शौक़ीन था। (३) तीसरे अबु सुफ़ियान के हरामी बेटे ज़ियाद को शरियत के ख़िलाफ़ अपना भाई बनाना। (४) चौथे हजर और उनके असहाब पर ज़ुल्म करना और उनको क़त्ल कराना।

(५५) इमाम शाफ़ेई फ़रमाते हैं कि चार सहाबी ऐसे हैं जिनकी गवाही क़ाबिले क़ुबूल नहीं। माविया, उमरो आस, मुग़िरा, ज़ियाद, हक़ीक़त यह है कि इस्लाम की इन्हीं चार फ़ितना गरों ने कमर तोड़ी है।

(५६) मसूदी लिखता है कि अहले शाम माविया के फ़रमा बरदार और इताअत गुज़ार ऐसे थे कि जंगे सिफ़्फ़ीन को जाते हुये माविया ने जुमे की नमाज़ बुध को पढ़ा दी और लोगों ने पढ़ली।

(५७) फिर मसूदी लिखता है कि बनी उमय्या के अहद में आम लोगों के इख़्लाक़ में यह बात दाख़िल हो गई थी कि सय्यद को सरदार न बनायें। बनी उमय्या बग़ैर आलिम होने के इल्म की बात कहते थे बिला तमीज़ फ़ाज़िल व मफ़ज़ूल और फ़ायदा नुक़सान के जो उनके आगे हो जाय उसकी मुताबेक़त कर लेते थे, और हक़ो बातिल में तमीज़ न करते थे।

(५८) माविया ६० हिजरी में अलील हुआ और उसने यज़ीद से कहा कि जो कुछ मांगना हो मांग ले। उसने कहा हुकूमत चाहता हूँ, ताकि उसके ज़रिये से जहन्नुम से नजात हासिल कर लूँ। उसने यज़ीद का मूँह चूम लिया और कहा मुझे मंज़ूर है।

(तारीख़े कामिल)

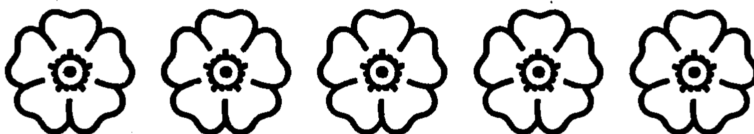
चुनांचे वह यज़ीद जैसे दुश्मने इस्लाम को ख़लीफ़ा बना कर रजब ६०, हिजरी में राहीए दार उल बवार हो गया। (तारीख़े इस्लाम, जिल्द १, सफ़ा ३३)

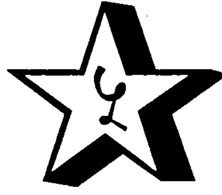
(५९) यह मुसल्लेमाते तारीख़ी में से है कि माविया के हक़ में कोई एक हदीस भी वारिद न हुई और उसके बिदआत बे शुमार हैं। ततहिरूल जिनान, मौज़ूआते मुल्ला अली क़ारी, सफ़ा ४८, व फ़तेहुल बारी में है कि माविया के हक़ में कोई भी ख़बर सही वारिद नहीं यही वजह

है कि सही बुख़ारी में उसके लिये कोई बाब क़ायम नहीं किया गया।
(६०) मफ़रूदात इमाम राग़िब असफ़हानी में है कि हज़रत अली(अ.) ने फ़रमाया था कि माविया के गले में जब तक ईसाईयों की सलीब न पड़ेगी उसे मौत न आयेगी। चुनांचे आख़िरी वक़्त नसरानी किरस्टान ने तावीज़े शिफ़ा के नाम से उसके गले में सलीब डाल दी। उसके बाद उसका इन्तेक़ाल हो गया। यक़ीन है कि माविया नसरानी व ईसाई महशूर होगा। क्योंकि यह अली(अ.) का दुश्मन और उनको अज़ीयत देने वाला था, और हदीस में है कि **" मन अज़ी अलयनन बाएस यौमुल क़यामा यहूदिया "**। जो अली(अ.) को अज़ीयत देगा वह यहूदी व नसरानी मबऊस व महशूर होगा। (निसाए काफ़िया, तारीख़ुल ख़ुलफ़ा सफ़ा १३५ में है कि माविया ने चालीस साल हुकूमत की। ७७, साल की उम्र पाई और ६० हिजरी में इन्तेक़ाल किया और दमिश्क़ (शाम) में दफ़्न किया गया। १.

मैं कहता हूँ कि माविया के जुमला अमल व किरदार के नताएज एक तरफ़ और उसका हज़रत अली(अ.) और इमाम हसन(अ.) का क़त्ल करना एक तरफ़। यक़ीन करना चाहिये कि अमीरे माविया की बख़्शिश क़तअन, दुशवार, नामुम्किन और मोहाल है। फ़क़्त

१. सुना जाता है कि शाम में जिस जगह पर माविया की क़ब्र थी उस जगह चूड़ियां बनाने की भट्टी बनी हुई है।





अबु अब्दुल्लाह

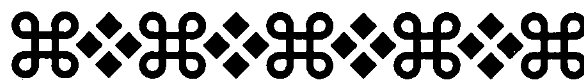
हज़रत

इमाम हुसैन (अ.)

शहीदे कर्बला

हुसैन तूने तहे तेग़ , वह किया सजदा।
कि फ़ख़्र करती है ताअत भी इस इताअत पर।।
न अब्दियत को फ़कत , इफ़्तेख़ार है मौला।
उलूहियत भी है नाज़ां , तिरी इबादत पर।।

साबिर थरयानी (कराची)



بسم الله الرّحمٰن الرّحيم

बाब (५)
हज़रत इमाम हुसैन (अ.स.)

यूँही बस तीसरी शाबान को हुरमत चौगनी हो गई।
मुझे बारह पिला दे, पांचवां साक़ी हुआ पैदा।।
न क्योंकर, ऐसे बेटे पर हों नाज़ां साक़ीए कौसर।
निहां हैं जिसमें नौ कौसर यह वह इस्मत का है दरिया।।

हज़रत इमाम हुसैन(अ.) अबुल आइम्मा अमीरल मोमेनीन हज़रत अली (अ.) व सय्यदुन्निसां हज़रत फ़ात्मतुज़ ज़हरा के फ़रज़न्द और पग़म्बरे इस्लाम हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा(स.) व जनाब ख़तीजतुल कुबरा के नवासे और शहीद मज़लूम इमाम हसन(अ.) के कुव्वते बाज़ू थे। आप को अबुल आइम्मतुस सानी कहा जाता है। क्योंकि आप ही की नस्ल से नौ इमाम मुतावल्लिद हुये। आप भी अपने पदरे बुज़ुर्गवार और बरादरे आली वक़ार की तरह मासूम मनसूस अफ़ज़ले ज़माना और आलिमे इल्मे लदुन्नी थे।

आपकी विलादत :- हज़रत इमाम हसन(अ.) की विलादत के पचास रातें गुज़रीं थीं कि हज़रत इमाम हुसैन(अ.) का नुक़्तए वुजूद बतने मादर में मुस्तक़र हुआ था। हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.) इरशाद फ़रमाते है कि विलादते हसन(अ.) और इस्तेक़रारे हमल हुसैन(अ.) में तोहर का फ़ासला था।(असाबा नज़्लुल अबरार वाक़ेदी) अभी आपकी विलादत न होने पाई थी कि बा रवायते उम्मुल फ़ज़्ल बिनते हारिस ने ख़्वाब में देखा कि रसूल करीम(स.) के जिसम का एक टुकड़ा काट कर मेरी आग़ोश में रखा गया है इस ख़्वाब से वह बहुत घबराई और दौड़ी हुई रसूले करीम(स.) की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अर्ज़ परदाज़ हुई कि हुज़ूर आज एक बहुत बुरा ख़्वाब देखा है। हज़रत ने ख़्वाब सुन कर मुस्कुराते हुये फ़रमाया कि यह ख़्वाब तो निहायत ही उम्दा है। ऐ उम्मुल फ़ज़्ल इसकी ताबीर यह है कि मेरी बेटी फ़ात्मा के बतन से अन्क़रीब एक बच्चा पैदा होगा जो तुम्हारी आग़ोश में परवरिश पाय गा। आपके इरशाद फ़रमाने को थेड़ा ही अरसा गुज़रा था कि ख़ुसूसी मुद्दते हमल सिर्फ़ ६ माह गुज़ार कर नूरे नज़र रसूल(स.) इमाम हुसैन(अ.) बातारीख ३, शाबान ,सन् ४ हिजरी बमुक़ाम मदीनए मुनव्वरा बतने मादर से आग़ोशे मादर में आ गये। (शवाहेदुल नबूवत सफ़ा १३,व अनवारे हुसैनिया जिल्द ३, सफ़ा ४३ बा हवालए साफ़ी सफ़ा २९८, व

जामए अब्बासी सफ़ा ५६, व बेहारूल अनवार व मिसबाहे तूसी व मक़तल इब्ने नम्मा सफ़ा २,) वग़ैरा उम्मुल फ़ज़ल का बयान है कि मैं हसबुल हुक्म इनकी ख़िदमत करती रही एक दिन मैं बच्चे को लेकर आं हज़रत(स.) की ख़िदमत में हाज़िर हुई। आपने आग़ोशे मोहब्बत में लेकर प्यार किया और आप रोने लगे मैंने सबब दरयाफ़्त किया तो फ़रमाया कि अभी अभी जिबरईल मेरे पास आये थे वह बतला गये हैं कि यह बच्चा उम्मत के हाथों निहायत ज़ुल्मो सितम के साथ शहीद होगा और ऐ उम्मुल फ़ज़ल वह मुझे इसकी क़त्लगाह की सुर्ख़ मिट्टी भी दे गये हैं। (मिशकात जिल्द ८, सफ़ा १४० तबा लाहौर और मसनद इमाम रज़ा सफ़ा ३८ में है कि आं हज़रत(स.) ने फ़रमाया देखो यह वाक़ेया फ़ात्मा(स.) से कोई न बतलाए वरना वह सख़्त परेशान होंगी।

मुल्ला जामी लिखते हैं कि उम्मे सलमा ने बयान किया कि एक दिन रसूले ख़ुदा(स.) मेरे घर इस हाल में तशरीफ़ लाये कि आपके सरे मुबारक के बाल बिखरे हुये थे और चेहरे पर गर्द पड़ी हुई थी। मैंने इस परेशानी को देख कर पूछा कि क्या बात है फ़रमाया मुझे अभी, अभी जिबरईल ईराक़ के मक़ामे करबला में ले गये थे। वहां मैंने जाय क़त्ले हुसैन(अ.) देखी है ओर यह मिट्टी लाया हूँ। ऐ उम्मे सलमा(अ.) इसे अपने पास महफ़ूज़ रखो। जब यह ख़ून हो जाय तो समझना कि मेरा हुसैन शहीद हो गया।

(शवाहेदुन नबूवत सफ़ा १७४)

आपका इस्मे गेरामी :- इमाम शबलेंजी लिखते हैं कि विलादत के बाद सरवरे कायनात (स.) ने इमाम हुसैन(अ.) की आंखों में लोआबे दहन लगाया और अपनी ज़बान उनके मूँह में देकर बड़ी देर तक चुसाया इसके बाद दाहिने कान में अज़ान और बायें में अक़ामत कही। फिर दुआए ख़ैर फ़रमा कर हुसैन नाम रखा। (नूरूल अबसार, सफ़ा ११३) उलेमा का बयान है कि यह नाम इस्लाम से पहले किसी का भी नहीं था। वह यह भी कहते है। कि यह नाम खुद ख़ुदा वन्दे आलम का रखा हुआ है। (अरहज्जुल मतालिब व रौज़तुल शेहदा सफ़ा २३६) किताब आलाम अल वरा तबरसी में है कि यह नाम भी दीगर आइम्मा के नामों की तरह लौहे मैहफ़ूज़ में लिखा हुआ है।

आपका अक़ीक़ा :- इमाम हुसैन(अ.) का नाम रखने के बाद सरवरे कायनात(स.) ने हज़रत फ़ात्मा से फ़रमाया कि बेटी जिस तरह हसन(अ.) का अक़ीक़ा किया गया है उसी तरह इसके अक़ीक़े का भी इन्तेज़ाम करो, और इसी तरह बालों के हम वज़्न चांदी तसद्दुक़ करो जिस तरह हसन(अ.) के लिये कर चुकी हो। अलग़रज़ एक मेंढा मंगवाया गया और रसमे अक़ीक़ा अदा कर दी गई। (मतालेबुल सुवेल सफ़ा २४१)

बाज़ माअसरीन ने अक़ीक़े के साथ ख़त्ने का ज़िक्र किया है। जो मेरे नज़दीक क़तअन नाक़ाबिले क़ुबूल है। क्योंकि इमाम का मख़्तून पैदा होना मुसल्लेमात से है।

कुन्नियत व अलक़ाब :- आपकी कुन्नियत सिर्फ़ अबु अब्दुल्ला थी अलबत्ता अलक़ाब आपके बेशुमार हैं। जिनमें सय्यद, सिब्ते असग़र, शहीदे अकबर और सय्युश शेहदा ज़्यादा मशहूर हैं। अल्लामा मोहम्मद बिन तलहा शाफ़ेई का बयान है कि सिब्ते और सय्यद खुद रसूले करीम(स.) के मोअय्यन करदा अलक़ाब हैं।

(मतालेबुल सवेल, सफ़ा ३२१)

आपकी रज़ाअत :- उसूले काफ़ी बाब मौलूदुल हुसैन(अ.) सफ़ा ११४ में है कि इमाम हुसैन(अ.) ने पैदा होने के बाद न हज़रत फ़ात्मा ज़हरा(स.) का शीरे मुबारक नोश किया और न किसी दाई का दूध पिया। होता यह था कि जब आप भूखे होते तो सरवरे कायनात तशरीफ़ लाकर ज़बाने मुबारक दहने अक़दस में दे देते थे और इमाम हुसैन(अ.) उसे चूसने लगते थे। यहां तक कि सेरो सेराब हो जाते थे। मालूम होना चाहिये कि इसी से इमाम हुसैन(अ.) का गोश्त पोस्त बना और लोआबे दहने रिसालत से हुसैन(अ.) परवरिश पा कर कारे रिसालत अंजाम देने की सलाहियत के मालिक बने। यही वजह है कि आप रसूले करीम(स.) से बहुत मुशाबेह थे। (नुरूल अबसार सफ़ा ११३)

खुदा वन्दे आलम की तरफ़ से विलादते इमाम हुसैन(अ.) की *तहनियत* और *ताज़ियत*

अल्लामा हुसैन वाएज़ काशेफ़ी रक़म तराज़ हैं कि इमाम हुसैन(अ.) विलादत के बाद ख़ल्लाक़े आलम ने जिबरईल को हुक्म दिया कि ज़मीन पर जा कर मेरे हबीब मोहम्मद मुस्तफ़ा (स.) को मेरी तरफ़ से हुसैन(अ.) की विलादत पर मुबारक बाद दे दो और साथ ही साथ उनकी शहादते उज़्मा से भी उन्हें मुत्तला करके ताज़ियत अदा कर दो। जनाबे जिबरईल बा हुक्मे रब्बे जलील ज़मीन पर वारिद हुये और उन्होंने आं हज़रत की ख़िदमत में पहुँच कर तहनियत अदा की। इसके बाद अर्ज़ परदाज़ हुये कि ऐ हबीब रब्बे करीम आपकी ख़िदमत में शहादते हुसैनी की ताज़ियत भी मिन जानिबे अल्लाह अदा की जाती है। यह सुन कर सरवरे कायनात(स.) का माथा ठन्का और आपने पूछा कि जिबरईल माजेरा क्या है। तहनियत के साथ ताज़ियत की तफ़सील बयान करो। जिबरईल(अ.) ने अर्ज़ की एक वह दिन होगा जिस दिन आपके इस चहिते फ़रज़न्द "**हुसैन**" के गुलूए मुबारक पर ख़न्जरे आबदार रखा जायगा और आपका यह नूरे नज़र बे यारो मद्दगार मैदाने करबला में यक्कओ तनहा तीन दिन का भूखा प्यासा शहीद होगा। यह सुन कर सरवरे आलम(स.) महवे गिरया हो गये। आपके रोने की ख़बर ज्योंही अमीरल मोमेनीन(अ.) को पहुँची वह भी रोने लगे आलमे गिरया में दाख़िले ख़ानए सय्यदा हो गये। जनाबे सय्यदा(स.) ने जो हज़रत अली(अ.) को रोता देखा

तो दिल बेचैन हो गया। अर्ज़ की अबुल हसन रोने का सबब कया है। फ़रमाया बिन्ते रसूल (स.) अभी जिबरईल आये हैं और वह हुसैन की तहनियत के साथ साथ उसकी शहादत की ख़बर भी दे गये हैं हालात से बा ख़बर होने के बाद फ़ात्मा का गिरया गुलूगीर हो गया। आपने हुज़ूर(स.) की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अर्ज़ की बाबा जान यह कब होगा। फ़रमाया जब न मैं हूँगा न तू होगी न अली(अ.) होंगे न हसन होंगे। फ़ात्मा(स.) ने पूछा बाबा मेरा बच्चा किस ख़ता पर शहीद होगा। फ़रमाया फ़ात्मा(स.) बिलकुल बेजुर्म व बे ख़ता सिर्फ़ इस्लाम की हिमायत में शहादत होगी। फ़ात्मा(स.) ने अर्ज़ की बाबा जान जब हम में से कोई न होगा तो इस पर गिरया कौन करेगा ओर उसकी सफ़े मातम कौन बिछायेगा।

रावी का बयान है कि इस सवाल का हज़रत रसूले करीम(स.) अभी जवाब न देने पाये थे कि हातिफ़े ग़यबी की आवाज़ आई, ऐ फ़ात्मा ग़म न करो। तुम्हारे इस फ़रज़न्द का ग़म अब्द उल आबाद तक मनाया जायगा और इसका मातम क़यामत तक जारी रहेगा।

एक रवायत में है कि रसूले ख़ुदा(स.) ने फ़ात्मा के जवाब में यह फ़रमाया था कि ख़ुदा कुछ लोगों को हमेशा पैदा करता रहेगा, जिसके बूढ़े, बूढ़ों पर और जवान जवानों पर और बच्चे, बच्चों पर और औरतें, औरतों पर गिरया व ज़ारी करते रहेंगे।

फ़ितरूस का वाक़ेया :- अल्लामा मज़कूर बाहवालए हज़रत शेख़ मुफ़ीद अल रहमा रक़मतराज़ हैं कि इसी तहनियत के सिलसिले में जनाबे जिबरईल बे शुमार फ़रिश्तों के साथ ज़मीन की तरफ़ आ रहे थे। नागाह उनकी नज़र ज़मीन के एक ग़ैर मारूफ़ तबक़े पर पड़ी। देखा कि एक फ़रिश्ता ज़मीन पर पड़ा हुआ ज़ारो क़तार रो रहा है। आप उसके क़रीब गये और आपने उससे माजरा पूछा। उसने कहा ऐ जिबरईल मैं वही फ़रिश्ता हूँ जो पहले आसमान पर सत्तर हज़ार फ़रिश्तों की क़यादत करता था। मेरा नाम फ़ितरूस है। जिबरईल ने पूछा तुझे यह किस जुर्म की सज़ा मिली है। उसने अर्ज़ की, मरज़ीए माबूद के समझने में एक पल की देरी की थी। जसकी यह सज़ा भुगत रहा हूँ। बालो पर जल गये हैं। यहां कुंजे तन्हाई में पड़ा हूँ। ऐ जिबरईल ख़ुदारा मेरी कुछ मद्द करो। अभी जिबरईल जवाब न देने पाये थे कि उसने सवाल किया। ऐ रूहुल अमीन आप कहां जा रहे हैं। उन्होंने फ़रमाया कि नबी आख़ेरूज़ ज़मां हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा (स.) के यहां एक फ़रज़नद पैदा हुआ है। जिसका नाम **" हुसैन "** (अ.) है। मैं ख़ुदा की तरफ़ से उसकी अदाए तहनियत के लिये जा रहा हूँ। फ़ितरूस ने अर्ज़ की ऐ जिबरईल ख़ुदा के लिये मुझे अपने हमराह लेते चलो। मुझे इसी दर से शिफ़ा और नजात मिल सकती है। जिबरईल उसे साथ लेकर हुज़ूर की ख़िदमत में उस वक़्त पहुँचे जबकि इमाम हुसैन(अ.) आग़ोशे रसूल(स.) में जलवा फ़रमा थे। जिबरईल ने अर्ज़े हाल किया। सरवरे कायनात(स.) ने फ़रमाया कि फ़ितरूस के जिस्म को हुसैन (अ.) के जिस्म से मस कर दो, शिफ़ा हो जायगी। जिबरईल ने ऐसा ही किया और फ़ितरूस के बालो पर उसी तरह रोईदा हो गये जिस तरह पहले थे। वह सेहत पाने के बाद फ़ख़्रो

मुबाहात करता हुआ अपनी मंज़िले असली आसमाने सेयुम पर जा पहुँचा और मिसले साबिक़ सत्तर हज़ार फ़रिश्तों की क़यादत करने लगा।

"बाद अज़ शहादते हुसैन(अ.) चूँ बरां क़ज़िया मतला शुद "

यहां तक कि वह ज़माना आया जिसमें इमाम हुसैन(अ.) ने शहादत पाई और इसे हालात से आगाही हुई तो उसने बारगाहे अहदियत में अर्ज़ की " मालिक मुझे इजाज़त दी जाय कि मैं ज़मीन पर जा कर दुश्मनाने हुसैन(अ.) से जंग करूं। इरशाद हुआ कि जंग की कोई ज़रूरत नहीं अलबत्ता तू सत्तर हज़ार फ़रिशते लेकर ज़मीन पर चला जा और उनकी क़ब्रे मुबारक पर सुबह व शाम गिरियो मातम किया कर और इसका जो सवाब हो उसे उनके रोने वालों के लिये हिबा कर दे। चुनांचे फ़ितरूस ज़मीने करबला पर जा पहुँचा और ता क़याम क़यामत शबो रोज़ रोता रहेगा। (रौज़तुल शौहदा अज़,२३६ ता सफ़ा २३८ तबा बम्बई १३८५ हिजरी व ग़नीमतुल तालेबीन शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी)

इमाम हुसैन का रूए ताबां :- मुल्ला जामी रहमुतउल्लाह अलैहा तहरीर फ़रमाते हैं कि इमाम हुसैन(अ.) को ख़ुदा वन्दे आलम ने वह हुस्न व जमाल दिया कि जिसकी नज़ीर नज़र नहीं आतीं आपके रूए ताबां का यह हाल था कि जब आप जाय तारीक में बैठ जाते थे तो लोग आपके रूए रौशन से शमए तरीक़ का काम लेते थे। यानी चीज़ रौशन हो जाती थी और लोगों को तारीकी में राहबरी की ज़हमत नहीं होती थी। (शवाहेदुन नबूवत, रूकन ६, सफ़ा १७४ व रौज़तुल शेहदा, बाब ७ सफ़ा २३८) शेख़ अब्दुल वासेए इब्ने यहीया वासेई लिखते हैं कि इमाम हसन और इमाम हुसैन(अ.) एक दिन रसूल करीम(स.) की ख़िदमत में हाज़िर थे यहां तक कि रात हो गई। आपने फ़रमाया मेरे बच्चों अब रात हो गई तुम अपनी मां के पास चले जाओ। बच्चे हसबुल हुक्म रवाना हो गये। रावी का बयान है कि जैसे यह बच्चे घर की तरफ़ चले एक रौशनी पैदा हुई जो उनके रास्ते की तारीकी को दूर करती जाती थी। यहां तक कि बच्चे अपनी मां की ख़िदमत में जा पहुँचे। पैग़म्बरे इस्लाम (स.) जो इस रौशनी को देख रहे थे इरशाद फ़रमाने लगे।

" अल्हम्दोलिल्लाहिल लज़ी अकरामना अहल्ल बैत "

ख़ुदा का शुक्र है कि उसने हम अहले बैत को इज़्ज़त व करामत अता फ़रमाई है।

(मसन्दे इमामे रज़ा सफ़ा ३२ मतबुआ मिस्र, १३४१ हिजरी)

जनाबे इब्राहीम का इमाम हुसैन(अ.)पर क़ुरबान होना :- उलेमा का बयान है कि एक रोज़ हज़रत रसूले ख़ुदा(स.) इमाम हुसैन(अ.) दाहिने ज़ानू पर और अपने बेटे जनाबे इब्राहीम को बायें ज़ानू पर बिठाये हुये प्यार कर रहे थे कि नागाह जिबरईल नाज़िल हुये और कहने लगे इरशादे ख़ुदा वन्दी है कि दो में से एक अपने पास रखो। पैग़म्बरे इस्लाम ने इमाम हुसैन(अ.) को इब्राहीम पर तरजीह दी और अपने फ़रज़न्द इब्राहीम को हुसैन पर

फ़िदा कर देने के लिये कहा। चुनांचे इब्राहीम अलील होकर तीन यौम में इन्तेकाल कर गये। रावी का बयान है कि इस वाक़िये के बाद से जब इमाम हुसैन(अ.)आं हज़रत (स.) के सामने आते थे तो आप उन्हें आग़ोश में बिठा कर फ़रमाते थे कि यह वह है जिस पर मैंने अपने बेटे इब्राहीम को क़ुरबान कर दिया है। (शवाहेदुन नबूवत सफ़ा १७४ व तारीख़े बग़दाद जिल्द २ सफ़ा २०४)।

हसनैन की बाहमी ज़ोर आज़माई :- इब्नल ख़शाब शेख़ कमालउद्दीन और मुल्ला जामी लिखते हैं कि एक मरतबा इमाम हसन और इमाम हुसैन(अ.) कमसिनी के आलम में रसूले ख़ुदा(स.) की नज़रों के सामने आपस में ज़ोर आज़माई करने और कुश्ती लड़ने लगे। जब बाहम एक दूसरे से लिपट गये तो रसूले ख़ुदा(स.) ने इमाम हसन(अ.) से कहना शुरू किया, हां बेटा! "हसन बगीर ,हुसैन रा " हुसैन को गिरा दे और चित कर दे फ़ातमा ने आगे बढ़ कर अर्ज़ की बाबा जान आप तो बड़े फ़रज़न्द की हिम्मत बढ़ा रहे हैं और छोटे बेटे की हिम्मत अफ़ज़ाई नहीं करते। आपने फ़रमाया कि ऐ बेटी यह तो देखो कि जिबरईल खड़े हुये हुसैन से कह रहे हैं, **" बगीर हसन रा "** ऐ हुसैन तुम हसन को गिरा दो, और चित कर दो।(शवाहेदुन नबूवत, सफ़ा १७४, व रौज़तुलशोहदा, सफ़ा २३६, नूरूल अबसार, सफ़ा ११४, तबा मिस्र)

ख़ाके क़दम हुसैन(अ.) और हबीब बिन मज़ाहिर :- अल्लामा हुसैन वाएज़ काशफ़ी लिखते हैं कि एक दिन रसूले ख़ुदा(स.) एक रासते से गुज़र रहे थे आपने देखा कि चन्द बच्चे खेल रहे हैं। आप उनके क़रीब गये और उनमें से एक बच्चे को उठा कर अपनी आग़ोश में बिठा लिया और आप उसकी पेशानी के बोसे देने लगे। एक सहाबी ने पूछा। हुज़ूर इस बच्चे में कया ख़ुसूसियत है कि आपने इस दरजा क़द्र अफ़ज़ाई फ़रमाई है। आपने इरशाद फ़रमाया कि मैंने इसे एक दिन इस हाल में देखा है कि यह मेरे बच्चे हुसैन के क़दमों की ख़ाक उठा कर अपनी आंखों में लगा रहा था। बाज़ हज़रात का बयान है कि वह बच्चा आंहज़रत ने जिसको प्यार किया था उसका नाम हबीब इब्ने मज़ाहिर था। "रौज़तुल शोहदा"

पिसरे मुतर्ज़ा , इमाम हुसैन -- कि चूँ ऊला न बूदा दर कौनैन
मुस्तफ़ा ऊरा कशीदा बदोश -- मुरतर्ज़ा, पर वरीदा दर आग़ोश
अक़्ल दर बन्द अहदो पैमाईश -- बूदा जिबरईल ,महद जुम्बानिश

इमाम हुसैन(अ.) के लिये बच्चे आहू का आना :- किताब कनजुल ग़राएब में है कि एक शख़्स ने सरवरे कायनात (स.) की ख़िदमत में एक बच्चे आहू(हिरन) हदिये में पेश किया। आपने उसे इमाम हसन(अ.) के हवाले कर दिया क्योंकि आप बर वक़्त हाज़िरे ख़िदमत हो गये थे। इमाम हुसैन(अ.) ने जब इमाम हसन के पास हिरन का बच्चा देखा तो अपने नाना से कहने लगे, नाना जान आप मुझे भी हिरन का बच्चा दिजिये। सरवरे कायनात(स.) इमाम हुसैन(अ.) को तसल्ली देने लगे लेकिन कमसिनी का आलम था।

फ़ितरते इन्सानी ने इज़हारे फ़ज़ीलत के लिये करवट ली और इमाम हुसैन(अ.) ने ज़िद करना शुरू कर दिया और क़रीब था कि रो पड़ें, नागाह एक हिरन को आते हुये देखा गया। जिसके साथ उसका बच्चा था। वह आहू(हिरन) सीध ख़िदमत में आया और उसने बा ज़बाने फ़सीह कहा। हुज़ूर मेरे दो बच्चे थे एक को सय्याद ने शिकार करके आपकी ख़िदमत में पहुंचा दिया और दूसरे को मैं इस वक़्त लेकर हाज़िर हुआ हूँ। उसने कहा मैं जंगल में था कि मेरे कानों में एक आवाज़ आई जिसका मतलब यह था कि नाज़ परवरदए रसूल(स.) बच्चे आहू के लिये मचला हुआ है जल्द से जल्द अपने बच्चे को रसूल(स.) की ख़िदमत में पहुँचा। हुक्म पाते ही मैं हाज़िर हुआ हूँ और हदिया पेशे ख़िदमत है। आं हज़रत (स.) ने आहू को दुआए ख़ैर दी और बच्चे को इमाम हुसैन(अ.) के हवाले कर दिया।(रौज़तुल शोहदा जिल्द १, सफ़ा २२०)

इमाम हुसैन(अ.) सीनए रसूल(स.) पर :- सहाबिए रसूल(स.) अबू हुरैरा(र.) रावीए हदीस का बयान है। मैंने अपनी आंखों से यह देखा कि रसूले करीम (स.) लेटे हुये हैं और इमाम हुसैन(अ.) निहायत कमसिनी के आलम में उनके सीनए मुबारक पर हैं। उनके दोनों हाथों को पकड़े हुये फ़रमाते हैं। ऐ हुसैन तू मेरे सीने पर कूद चुनांचे इमाम हुसैन(अ.) आपके सीनए मुबारक पर कूदने लगे उसके बाद हुज़ूर(स.) ने इमाम हुसैन(अ.) का मूँह चूम कर ख़ुदा की बारगाह में अर्ज़ की ऐ मेरे पालने वाले मैं इसे बेहद चाहता हूँ, तू भी इसे महबूब रख। एक रवायत में है कि आंहज़रत (स.) का लोआबे दहन और उनकी ज़बान इस तरह चूसते थे जिस तरह कोई खजूर चूसे। (अर हज्जुल मतालिब, सफ़ा ३५९, सफ़ा ३६१, इसतेआब, जिल्द १, सफ़ा १४४,असाबा,जिल्द २, सफ़ा ११, कंज़ुल आमाल, जिल्द ७, सफ़ा १०४, कंजुल अल हक़ाएक़, सफ़ा ५९)

हसनैन(अ.) में ख़ुशनवीसी का मुक़ाबला :-रसूले करीम(स.) के शहज़ादे इमाम हसन और इमाम हुसैन(अ.) ने एक तहरीर लिखी। फिर दोनों आपस में मुक़ाबेला करने लगे कि किसका ख़त अच्छा है। जब बाहमी फ़ैसला न हो सका तो फ़ात्मा ज़हरा की ख़िदमत में हाज़िर हुये। उन्होंने फ़रमाया अली(अ.) के पास जाओ। अली(अ.) ने कहा रसूल अल्लाह से फ़ैसला कराओ। रसूले करीम ने इरशाद किया, ऐ नूरे नज़र इसका फ़ैसला तो मेरी लख़्ते जिगर फ़ात्मा ही करेगी। उसके पास जाओ। बच्चे दौड़े हुये फिर मां की ख़िदमत में हाज़िर हुये। मां ने गले लगा लिया, और कहा ऐ मेरे दिल की उम्मीद, तुम दोनों का ख़त बेहतरीन है और दोनों ने बहुत खूब लिखा है, लेकिन बच्चे न माने और यही कहते रहे मादरे गेरामी दोनों को सामने रख कर सही फ़ैसला दीजिये। माँ ने कहा अच्छा बेटा, लो अपना गुलू बंद तोड़ती हूँ। उसके दाने चुनो, फ़ैसला ख़ुदा करेगा। सात दानों का गुलू बंद टूटा, ज़मीन पर दाने बिखरे, बच्चों ने हाथ बढ़ाए और तीन तीन दानों पर दोनों ने क़ब्ज़ा कर लिया एक दाना जो रह गया, उसकी तरफ़ दोनों के हाथ बराबर से बढ़े। हुक्मे ख़ुदा वन्दे आलम हुआ

जिबरईल दाने के दो टुकड़े कर दो। एक हसन ने ले लिया और एक हुसैन(अ.) ने उठा लिया। मां ने बढ़ कर दोनों के बोसे लिये और कहा क्यों बच्चों मैं न कहती थी कि तुम दोनों के ख़त अच्छे हैं और एक की दूसरे के ख़त पर तरजीह नहीं है। (ख़ासेतुल मसाएब सफ़ा ३३५) क़ारी अब्दुल वुदूद शम्स लखनवी खलफ़ मौलवी अब्दुल हकीम उस्ताद मौलवी शेख़ अब्दुल शकूर मुदीर अल नजम पाटा नाला लखनऊ, भारत अपने एक क़सीदे में लिखते हैं।

दोनों भाई एक दिन , मादर से यह कहने लगे।
आप फ़रमाएं कि लिखना,किसको बेहतर आ गया।।
सात मोती रख के फ़राया , कि जो ज़ाएद उठाये।
एक मोती , दो हुआ , हिस्सा बराबर हो गया।।

जन्नत के कपड़े और फ़रज़न्दाने रसूल(स.) की ईद

इमाम हसन और इमाम हुसैन का बचपना है। ईद आने को है और इन असख़ियाये आलम के घर में नये कपड़े का क्या ज़िक्र पुराने कपड़े बल्कि जौ की रोटीयां तक नहीं हैं। बच्चों ने मां के गले में बाहें डाल दीं। मादरे गेरामी मदीने के बच्चे ईद के दिन ज़र्क़ बर्क़ कपड़े पहन कर निकलेंगे और हमारे पास नये कपड़े नहीं हैं । हम किस तरह ईद मनायेंगे। मां ने कहा बच्चों घबराओ नहीं ,तुमहारे कपड़े दरज़ी लायेगा। ईद की रात आई, बच्चों ने फिर मां से कपड़ों का तक़ाज़ा किया। मां ने वही जवाब देकर नौनिहालों को ख़ामोश कर दिया। अभी सुबह न होने पाई थी कि एक शख़्स ने दरवाज़े पर आवाज़ दी,दरवाज़ा खटकटाया, फ़िज़्ज़ा दरवाज़े पर गईं। एक शख़्स ने एक गठरी लिबास की दी। फ़िज़्ज़ा ने उसे सय्यदए आलम की ख़िदमत में उसे पेश किया। अब जो खोला तो उसमें दो छोटे छोटे अम्मामे, दो क़बाएं, दो अबाएं ग़रज़ की तमाम ज़ुरूरी कपड़े मौजूद थे। मां का दिल बाग़ बाग़ हो गया। वह समझ गई कि यह कपड़े जन्नत से आये हैं लेकिन मुँह से कुछ नहीं कहा। बच्चों को जगाया कपड़े दिये। सुबह हुई, बच्चों ने जब कपड़ों के रंग की तरफ़ नज़र की तो कहा मादरे गेरामी यह तो सफ़ैद कपड़े हैं। मदीने के बच्चे रंगीन कपड़े पहने होंगे। अम्मां जान हमें रंगीन कपड़े चाहिये। हुज़ूरे अनवर(स.) को इत्तेला मिली, तशरीफ़ लाये, फ़रमाया घबराओ नहीं। तुमहारे कपड़े अभी अभी रंगीन हो जायेंगे। इतने में जिबरईल आफ़ताबा (एक बड़ा और चौड़ा बरतन) लिये हुये आ पहुंचे। उन्होंने पानी डाला, मोहम्मद मुस्तफ़ा के इरादे से कपड़े सब्ज़ और सुर्ख़ हो गये। सब्ज़(हरा) जोड़ा हसन(अ.) ने पहना, सुर्ख़ जोड़ा हुसेन(अ.) ने ज़ेबे तन किया। मां ने गले लगाया, बाप ने बोसे दिये, नाना ने अपनी पुश्त पर सवार करके मेहार के बदले अपनी ज़ुल्फ़ें हाथों में दे दीं और कहा मेरे नौनिहालों ,रिसालत की बाग तुमहारे हाथ में है। जिधर चाहो मोड़ो और जहां चाहो ले चलो। (रौज़तुल शोहदा, सफ़ा १८६, बेहारूल

अनवार) बाज़ उलेमा का कहना है कि सरवरे कायनात बच्चों को पुश्त पर बिठा कर दोनों हाथों पैरों से चलने लगे ओर बच्चों की फ़रमाईश पर ऊंट की आवाज़ मुँह से निकालने लगे।

(कशफ़ुल महजूब)

गिरयए हुसैनी और सदमए रसूल (स.) :- इमाम शिब्लंजी और अल्लामा बदख़्शी लिखते हैं कि ज़ैद इब्ने ज़ियाद का बयान है कि एक दिन आं हज़रत (स.) ख़ानए आयशा से निकल कर कहीं जा रहे थे, रास्ते में फ़ातमा ज़हरा(स.) का घर पड़ा। उस घर से इमाम हुसैन(अ.) के रोने की आवाज़ बरामद हुई। आप घर में दाख़िल हो गये और फ़रमाया ऐ फ़ात्मा **" अलम तालमी अन बकाराह यूज़ीनी "** क्या तुम्हें मालूम नहीं कि हुसैन(अ.) के रोने से मुझे किस क़द्र तकलीफ़ और अज़ियत पहुंचती है।(नूरूल अबसार, सफ़ा ११४ व मम्बए अहतमी, जिल्द, ६ सफ़ा २०१ व ज़ख़ाएर अल अक़बा, सफ़ा १२३) बाज़ उलमा का बयान है कि एक दिन रसूले ख़ुदा (स.) कहीं जा रहे थे। रास्ते में एक मदरसे की तरफ़ से गुज़र हुआ। एक बच्चे की आवाज़ कान में आई जो हुसैन(अ.) की आवाज़ से बहुत ज़्यादा मिलती थी। आप दाख़िले मदरसा हुये और उस्ताद को हिदायत की कि इस बच्चे को न मारा करो क्योंकि इसकी आवाज़ मेरे बच्चे हुसैन(अ.) से बहुत मिलती है।

इमाम हुसैन(अ.) की सरदारिए जन्नत :- पैग़म्बरे इस्लाम की यह हदीस मुसल्लेमात और मुतावातेरात से है कि **" अल हसन वल हुसैन सय्यद शबाब अहले जन्नतः व अबुहुमा ख़ेर मिन्हमा "** हसन व हुसैन जवानाने जन्नत के सरदार हैं। और उनके पदरे बुर्ज़ुगवार इन दोनों से बेहतर हैं। (इब्ने माजा) सहाबीए रसूल(स.) जनाबे हुज़ैफ़ा यमानी का बयान है कि मैंने एक दिन सरवरे कायनात(स.) को बेइन्तेहा ख़ुश देख कर पूछा, हुज़ूर इफ़राते मसर्रत की क्या वजह है। फ़रमाया ऐ हुज़ैफ़ा आज एक ऐसा मलक नाज़िल हुआ है जो मेरे पास इससे पहले नहीं आया था। उसने मेरे बच्चों की सरदारिए जन्नत पर मुबारक बाद दी है और कहा है कि **" अन फ़ातमा सय्यदुन निसाए अहले जन्नतः व अनल हसन वल हुसैन सय्यद शबाब अहले जन्नतः "** फ़ात्मा जन्नत की औरतों की सरदार और हसनैन जन्नत के मरदों के सरदार हैं। (कंज़ुल आमाल जिल्द ७ सफ़ा १०७,तारीख़ुल ख़ोलफ़ा, सफ़ा १३२ असदउल ग़ाबा, सफ़ा१२,असाबा, जिल्द २,सफ़ा १२, तिर्मिज़ी शरीफ़,मतालेबुल सुवेल, सफ़ा २४२, सवाएक़े मोहर्रेक़ा, सफ़ा ११४) इस हदीस से सियादते अलविया का मसला भी हल हो गया। क़तए नज़र इसके कि हज़रत अली(अ.) में मिसले नबी सियादत का ज़ाती शरफ़ मौजूद था और ख़ुद सरवरे कायनात ने बार बार आपकी सियादत का तसदीक़ सय्यदुल अरब,सय्यदुल मुत्तक़ीन,सय्यदुल मोमेनीन वग़ैरा जैसे अल्फ़ाज़ से फ़रमाई है। हज़रत अली (अ.) सरदाराने जन्नत इमाम हसन और हुसैन(अ.) से बेहतर होना वाज़ेह करता है कि आपकी सियादत मुसल्लम ही नहीं बल्कि बहुत बलन्द दरजा रखती है। यही वजह है कि मेरे नज़दीक जुमला अवलादे अली (अ.) सय्यद हैं। यह और बात है कि बनी फ़ात्मा के बराबर नहीं हैं।

इमाम हुसैन(अ.) आलमे नमाज़ में पुश्ते रसूल(स.) पर

ख़ुदा ने जो शरफ़ इमाम हसन(अ.) और इमाम हुसैन(अ.) को अता फ़रमाया है वह औलादे रसूल(स.) के सिवा किसी को नसीब नहीं। इन हज़रात का ज़िक्र इबादत और उनकी मोहब्बत इबादत यह हज़रात अगर पुश्ते रसूल(स.) पर आलमे नमाज़ में सवार हो जायें, तो नमाज़ में कोई ख़ल्ल वाक़े नहीं होता। अकसर ऐसा होता था कि यह नौनेहाले रिसालत पुश्ते रसूल(स.) पर आलमे नमाज़ में सवार हो जाया करते थे और जब कोई मना करना चाहता था तो आप इशारे से रोक दिया करते थे, और कभी ऐसा भी होता था कि आप सजदे में उस वक़्त तक मशग़ूले ज़िक्र रहा करते थे जब तक बच्चे आपकी पुश्त से खुद न उतर आयें। आप फ़रमाया करते थे, ख़ुदाया मैं इन्हें दोस्त रखता हूँ तू भी इनसे मोहब्बत कर। कभी इरशाद होता था ऐ दुनिया वालों ! अगर मुझे दोस्त रखते हो तो मेरे बच्चों से भी मोहब्बत करो। (असाबा सफ़ा १२, जिल्द २, मुसतदरिक इमाम हाकिम व मतालेबुल सुवेल सफ़ा २२३)

हदीस हुसैन मिन्नी :- सरवरे कायनात (स.) ने इमाम हुसैन(अ.) के बारे में इरशाद फ़रमाया है कि ऐ दुनिया वालों ! बस मुख़्तसर यह समझ लो कि,

" हुसैन मिन्नी व अना मिनल हुसैन "

हुसैन मुझ से है और मैं हुसैन से हूँ। ख़ुदा उसे दोस्त रखे जो हुसैन को दोस्त रखे। (मतालेबुल सुवेल, सफ़ा २४२, सवाएक़े मोहर्रेक़ा, सफ़ा ११४, नूरूल अबसार सफ़ा ११३, व सही तिर्मिज़ी, जिल्द,६ सफ़ा ३०७, मुस्तदरिक इमाम हाकिम जिल्द ३, सफ़ा १७७, व मस्नदे अहमद, जिलद ४, सफ़ा ६७२ असदउल ग़ाबता,जिल्द २, सफ़ा ६१ कंज़ुल आमाल, जिल्द ४, सफ़ा २२१)

मकतूबात बाबे जन्नत :- सरवरे कायनात हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा(स.) इरशाद फ़रमाते हैं कि शबे मेराज जब मैं सैरे आसमानी करता हुआ जन्नत के क़रीब पहुंचा तो देखा कि बाबे जन्नत पर सोने के हुरूफ़ में लिखा हुआ है।

"ला इलाहा इल्लल लाह मोहम्मदन हबीब अल्लाह अलीयन वली अल्लाह व फ़ात्मा अमत अल्लाह वल हसन वल हुसन सफ़ुत अल्लाह व मिनल बुग़ज़हुम लानत अल्लाह"

तरजुमा :-

ख़ुदा के सिवा कोई माबूद नहीं, मोहम्मद (स.) अल्लाह के हबीब हैं, अली (अ.) अल्लाह के वली हैं, फ़ात्मा(स.) अल्लाह की कनीज़ हैं, हसन और हुसैन(अ.) अल्लाह के बुरगुज़ीदा हैं और उनसे बुग़ज़ रखने वालों पर ख़ुदा की लानत है।

(अर हज्जुल मतालिब, बाब ३, सफ़ा ३१३, तबा लाहौर १२५१ ई०)

इमाम हुसैन(अ.) और सिफ़ात हसना की मरकज़ीयत

यह तो मालूम ही है कि इमाम हुसैन(अ.) हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा(स.) के नवासे , हज़रत अली(अ.) व फ़ात्मा(स.) के बेटे और इमाम हसन(अ.) के भाई थे और इन्हीं हज़रात को पन्जेतन कहा जाता है, और इमाम हुसैन पन्जेतन के आख़री फ़र्द हैं। यह ज़ाहिर है कि आख़िर तक रहने वाले और हर दौर से गुज़रने वाले के लिये इकतेसाब सिफ़ाते हसना के इम्कानात ज़्यादा होते हैं। इमाम हुसैन(अ.) ३, शाबान ४, हिजरी को पैदा होकर सरवरे कायनात(स.) की परवरिश व परदाख़्त ओर आग़ोशे मादर में रहे और कसबे सिफ़ात करते रहे। २८, सफ़र ११, हिजरी को जब आंहज़रत (स.) शहादत पा गये और ३, जमादुस्सानी को मां की बरकतों से महरूम हो गये, तो हज़रत अली(अ.) ने तालीमाते इलाहिया और सिफ़ाते हसना से बहरावर किया। २१, रमज़ान ४०, हिजरी को आपकी शहादत के बाद इमाम हसन(अ.) के सर पर ज़िम्मेदारी आयद हुई। इमाम हसन(अ.) हर क़िस्म की इस्तेमदाद व इस्तेयानते ख़ानदानी और फ़ैज़ाने बारी में बराबर के शरीक रहे।

२८, सफ़र ५० हिजरी को जब इमाम हसन(अ.) शहीद हो गये तो इमाम हुसैन(अ.) सिफ़ाते हसना के वाहिद मरकज़ बन गये। यही वजह है कि आप में जुमला सिफ़ाते हसना मौजूद थे, और आपके तरज़े हयात में मोहम्मद(स.) व अली(अ.) फ़ात्मा (स.) और हसन(अ.) का किरदार नुमायां था, और आपने जो कुछ किया कुरआन और हदीस की रौशनी में किया। कुतुबे मक़ातिल में है कि करबला में जब इमाम हुसैन(अ.) रूख़्सते आख़िर के लिये ख़ेमे में तशरीफ़ लाये तो जनाबे ज़ैनब ने फ़रमाया था कि ऐ, ख़ामेसे आले एबा आज तुम्हारी जुदाई के तसव्वुर से ऐसा मालूम होता है कि मोहम्मद मुस्तफ़ा(स.), अली मुरतज़ा(अ.),फ़ात्मा ज़हरा(अ.) हसने मुजतबा(अ.) हम से जुदा हो रहे हैं।

हज़रत उमर का एतेराफ़े शरफ़े आले मोहम्मद(स.)

अहदे उमरी में अगरचे पैग़ैमरे इस्लाम(स.) की आखें बन्द हो चुकी थीं और लोग मोहम्मद मुस्तफ़ा(स.) की ख़िदमत और तालीमात को पसे पुश्त डाल चुके थे। लेकिन फिर भी कभी कभी **" हक़ बर ज़बान जारी "** के मुताबिक़ अवाम सच्ची बातें सुन ही लिया करते थे। एक मरतबा का ज़िक्र है कि हज़रत उमर मिम्बरे रसूल(स.) पर ख़ुतबा फ़रमा रहे थे। नागाह हज़रत इमाम हुसैन(अ.) का उधर से गुज़र हुआ। आप मस्जिद में तशरीफ़ ले गये और हज़रत उमर की तरफ़ मुख़ातिब हो कर बोले। **" अन्ज़ल अन मिम्बर अबी "** मेरे बाप के मिम्बर पर से उतर आईये और जाईये अपने बाप के मिम्बर पर बैठिये।

आपने कहा मेरे बाप का तो कोई मिम्बर नहीं है। उसके बाद मिम्बर पर से उतर कर इमाम हुसैन(अ.) को अपने हमराह अपने घर ले गये और वहां पहुंच कर पूछा कि साहब ज़ादे तुमहें यह बात किसने सिखाई है, तो उन्होंने फ़रमाया कि मैंने अपने से कहा है। मुझे किसी ने नहीं सिखाया। उसके बाद उन्होंने कहा मेरे मां बाप तुम पर फ़िदा हों। कभी कभी आया करो। आपने फ़रमाया बेहतर है। एक दिन आप तशरीफ़ ले गये तो हज़रत उमर को माविया से तनहाई में महवे गुफ़्तुगू पाकर वापस चले गये। जब इसकी इत्तेला हज़रत उमर को हुई तो उन्होंने महसूस किया और रास्ते में एक दिन मुलाक़ात पर कहा कि आप वापस क्यों चले आये थे। फ़रमाया कि आप महवे गुफ़्तुगू थे। इस लिये मैं अब्दुल्लाह इब्ने उमर के हमराह वापस आया। हज़रत उमर ने कहा फ़रज़न्दे रसूल(स.) मेरे बेटे से ज़्यादा तुमहारा हक़ है। **" फ़ा अन्नमा अन्तः मातरी फ़ी दो सना अल्लाह सुम अनतुम "** इस से इनकार नहीं किया जा सकता कि मेरा वुजूद तुम्हारे सदक़े में है।

(असाबा जिल्द २, सफ़ा २५ कनजुल आमाल जिल्द ७, सफ़ा १०७ व इज़ालतुल ख़फ़ा,जिल्द ३, सफ़ा ८० व तारीख़े बग़दाद जिल्द १,सफ़ा १४१)

इब्ने उमर का एतराफ़े शरफ़े हुसैनी :- इब्ने हरीब रावी हैं कि एक दिन अब्दुल्लाह इब्ने उमर ख़ानए काबा के साये में बैठे हुये लोगों से बातें कर रहे थे कि इतने में हज़रत इमाम हुसैन(अ.) सामने से आते हुये दिखाई दिये। इब्ने उमर ने लोगों की तरफ़ मुख़ातिब हो कर कहा कि यह शख़्स यानी इमाम हुसैन(अ.) अहले आसमान के नज़दीक तमाम अहले ज़मीन से ज़्यादा महबूब हैं। (असाबा जिल्द २, सफ़ा १५)

इमाम हुसैन(अ.) की रकाब इब्ने अब्बास के हाथों में

सिपहर काशानी लिखते हैं कि एक मरतबा हज़रत इमाम हुसैन(अ.) घोड़े पर सवार हो रहे थे। हज़रत इब्ने अब्बास सहाबिए रसूल(स.) की नज़र आप पर पड़ी तो आपने दौड़ कर हज़रत की रकाब थाम ली और इमाम हुसैन(अ.) को सवार कर दिया। यह देख कर किसी ने कहा कि ऐ इब्ने अब्बास तुम तो इमाम हुसैन(अ.) से उम्र और रिश्ते दोनों में बड़े हो, फिर तुमने इमाम हुसैन(अ.) की रकाब क्यों थामी। आपने गुस्से में फ़रमाया कि ऐ कमबख़्त तुझे क्या मालूम कि यह कौन हैं और इनका शरफ़ क्या है। यह फ़रज़न्दे रसूल (स.) हैं, इन्हीं के सदक़े में नेमतों से भरपूर और बहरावर हूँ। अगर मैंने इनकी रकाब थाम ली तो क्या हुआ। (नासेखुल तवारीख़, जिल्द ६, सफ़ा ४५)

(इमाम हुसैन(अ.) की गरदे क़दम और जनाबे अबू हुरैरा)

कौन है जो जनाबे अबु हुरैरा के नाम से वाक़िफ़ न हो आप ही वह हैं जिनपर साबिक़ की हुकूमतों को बड़ा एतमाद था। और आप पर एतमाद की यह हद थी कि अमीरे माविया ने जब अमीरल मोमेनीन के ख़िलाफ़ हदीसें गढ़ने की स्कीम बनाई थी तो उन्हीं को

इस स्कीम का रूहे रवां क़रार दिया था। (मीज़ान अल बकरा इमाम शेरानी, सफ़ा २१) आप को हज़रत अली(अ.) से अक़ीदत भी थी आप नमाज़ हज़रत अली(अ.) के पीछे पढ़ते थे और खाना माविया के दसतरख़्वान पर खाते थे। आप फ़रमाते थे कि इबादत का लुत्फ़ अली(अ.) के साथ और खाने का मज़ा माविया के साथ है।

मुवर्रिख़ तबरी का बयान है कि एक मय्यत में इमाम हुसैन(अ.) और जनाबे अबू हुरैरा (र.) ने शिरकत की और दोनों हज़रात साथ ही चल रहे थे। रास्ते में थोड़ी देर के लिये रूक गये, तो अबू हुरैरा ने झट रूमाल निकाल कर हज़रत इमाम हुसैन(अ.) के पाये मुबारक और जूतियों से गर्द झाड़ना शुरू कर दिया। इमाम हुसैन(अ.) ने फ़रमाया । ऐ अबू हुरैरा तुम यह क्या करते हो,मेरे पैरों और जूतियों से गर्द क्यों झाड़ने लगे। आपने अर्ज़ की **"दाअनी मिनका फ़लो या लम अलनास मिनका मा अलम लहमलूक अला अवा तक़ाहुम"** "मौला मुझे मना न किजिये, आप इसी क़ाबिल हैं कि मैं आपकी गर्दे क़दम साफ़ करूं। मुझे यक़ीन है कि अगर लोगों को आपके फ़ज़ाएल और आपकी वह बड़ाई मालूम हो जाय जो मैं जानता हूं तो यह लोग आपको अपने कंधों पर उठाये फिरें। (तारीख़े तबरी, जिल्द ३,सफ़ा १९ तबअ मिस्र)

इमाम हुसैन(अ.)का ज़ुर्रियते नबी में होना :- हज़रत इमाम हसन (अ.) और इमाम हुसैन(अ.) के ज़ुर्रियते नबी में होने पर आयते मुबाहेला गवाह है। रसूले ख़ुदा(स.) ने **"अबनअना"** की तामील व तकमील हसनैन(अ.) ही से की थी। यह उनके फ़रज़न्दाने रसूल होने की दलीले मोहकम है जिसके बाद किसी एतराज़ की गुन्जाईश नहीं रहती। आसिम बिन बहदेला कहते हैं कि एक दिन हम लोग **हज्जाज बिन यूसूफ़** के पास बैठे हुये थे कि इमाम हुसैन(अ.) का ज़िक्र आ गया। हज्जाज ने कहा उनका ज़ुर्रियते रसूल (स.) से कोई ताअल्लुक़ नहीं। यह सुनते ही **यहिया बिन यामर** ने कहा। **" कुन्बत अहिय्या अल अमीर "** अमीर यह बात बिलकुल ग़लत और झूठ है वह यक़ीनन ज़ुर्रियते रसूल (स.) में हैं। यह सुन कर उसने कहा कि इसका सुबूत क़ुराने मजीद से पेश करो। **" अवला क़तलनका क़तलन "** वरना तुम्हें बुरी तरह क़त्ल करूंगा। यहिया ने कहा क़ुरान मजीद में है। **" व मन ज़ुर्रियते दाऊदो सुलैमान......व ज़करया व यहिया व ईसा "** इस आयत में ज़ुर्रियते आदम में हज़रते ईसा भी बताये गये हैं। जो अपनी मां की तरफ़ से शामिल हुये हैं। बस इसी तरह इमाम हुसैन(अ.) भी अपनी मां की तरफ़ से ज़ुर्रियते रसूल(स.) में हैं। हज्जाज ने कहा यह सही है लेकिन मजमें में तुमने मेरी तकज़ीब (बे इज़्ज़ती) की है लेहाज़ा तुम्हें शहर बदर किया जाता है। इसके बाद उन्हें ख़ुरासान भेज दिया।

(मुस्तदरिक सहीहीन, जिल्द ३, सफ़ा १६४)

करम हुसैनी की एक मिसाल :- इमाम फ़ख़रूद्दीन राज़ी तफ़सीरे कबीर में ज़ेरे आयत " **अल आदम अल असमा कुल्लेहा** " लिखते हैं कि एक एराबी ने ख़िदमते इमाम हुसैन(अ.) में हाज़िर हो कर कुछ मांगा और कहा कि मैंने आपके जद्दे नामदार से सुना है कि जब कुछ मांगना हो तो चार क़िस्म के लोगों से मांगो। (१) शरीफ़े अरब से (२) करीम हाकिम से (३) हामिले क़ुरअन से (४) हसीन शक्ल वाले से मैं आपमें यह जुमला सिफ़ात पाता हूँ इस लिये मांग रहा हूँ। आप शरीफ़े अरब हैं। आपके नाना अरबी हैं। आप करीम हैं। क्योंकि आपकी सीरत ही करम है। क़ुरआने पाक आपके घर में नाज़िल हुआ है। आप सबीह व हसीन हैं। रसूले ख़ुदा (स.) का इरशाद है कि जो मुझे देखना चाहे वह हसन और हुसैन(अ.) को देखे। लेहाज़ा अर्ज़ है कि मुझे अतीये से सरफ़राज़ फ़रमाइये, आपने फ़रमाया कि जद्दे नामदार ने फ़रमाया है कि " **अल मारूफ़ बे क़दरे अल मारफ़ते** " मारफ़त के मुताबिक़ अतिया देना चाहिये, तू मेरे सवालात का जवाब दे। (१) बता सबसे बेहतर अमल क्या है? उसने कहा अल्लाह पर ईमान लाना। (२) हलाकत से नजात का ज़रिया क्या है ? उसने कहा अल्लाह पर भरोसा करना। (३) मरद की ज़ीनत क्या है? कहा " इल्म मय हिल्म " ऐसा इल्म जिसके साथ हिल्म हो, आपने फ़रमाया दुरूस्त है। उसके बाद आप हंस पड़े। " वरमी बिल सीरते इल्हे " और एक बड़ा कीसा उसके सामने डाल दिया। (फ़ज़ाएल उल ख़मसते मिन सहायसित्ता, जिल्द ,३, सफ़ा २६८)

इमाम हुसैन(अ.) की एक करामत :- तबाक़ात इब्ने सआद जिल्द ५, सफ़ा १०७ में है कि जब इमाम हुसैन(अ.) मदीने से मक्के जाने के लिये निकले तो रास्ते में इब्ने मतीह मिल गये। वह उस वक़्त कुआं खोद रहे थे। पूछा मौला कहां का इरादा है? फ़रमाया मक्के जा रहा हूँ (शायद यह मेरा आख़री सफ़र हो) यह सुन कर उन्होंने अर्ज़ की मौला इस सफ़र को मुलतवी कर दीजिये। फ़रमाया मुम्किन नहीं है, फिर बात ही बात में उन्होंने अर्ज़ की मैं कुआं खोद रहा हूँ।(अकसर इधर पानी खारा निकलता है) आप दुआ कर दें पानी मीठा हो और कसीर हो, आपने थोड़ा पानी जो उस वक़्त बरामद हुआ था मांगर चखा, और उसमें कुल्ली कर के कहा कि इसे कुएं में डाल दो। चुनांचे उन्होंने ऐसा ही किया। " फ़ाजब वमही " उसका पानी शीरीं(मीठा) और कसीर हो गया।

(इमाम हुसैन(अ.) की नुसरत के लिये रसूले करीम(स.) का हुक्म)

अनस बिन हारिस का बयान है कि जो सहाबीए रसूल(स.) और असहाबे सुफ़्फ़ा में से कि मैंने देखा है कि हज़रत इमाम हुसैन(अ.) एक दिन रसूले ख़ुदा(स.) की गोद में थे और वह उनको प्यार कर रहे थे। इसी दौरान में फ़रमाया " **अन अम्बी हाज़ा यक़्तेदा बारे ज़ैने यक़ाला लहा करबल फ़मन शोहदा ज़ालेका फ़ल यनसेरहा** " कि मेरा यह फ़रज़न्द " **हुसैन** " उस ज़मीन पर क़त्ल किया जायगा, जिसका नाम करबला है। देखो तुम

में से इस वक़्त जो भी मौजूद हो,उसके लिये ज़ुरूरी है कि उसकी मदद करे।

रावी का बयान है कि असल रावी और चश्म दीद गवाह अनस बिन हारिस जोकि उस वक़्त मौजूद थे वह इमाम हुसैन(अ.) के हमराह करबला में शहीद हो गये थे। (असद अल ग़ाबेआ जिल्द १, सफ़ा १२३ व सफ़ा ३४९, असाबा जिल्द १,सफ़ा ४८, कन्ज़ुल आमाल जिल्द ६, सफ़ा २२३, ज़ख़ायर अल अक़बा, मुहिब तबरी, सफ़ा १४६)

इमाम हुसैन(अ.) की इबादत :- उलेमा व मुवर्रेख़ीन का इत्तेफ़ाक़ है कि हज़रत इमाम हुसैन(अ) ज़बरदस्त इबादत गुज़ार थे। आप शबोरोज़ में बेशुमार नमाज़ें पढते और अनवाए अक़साम इबादत से सरफराज़ होते थे। आपने पच्चीस हज पा पियादा किए और यह तमाम हज ज़मानए क़यामे मदीनए मुनव्वरा में फ़रमाए थे। इराक़ में क़याम के दौरान आपको अमवी हंगामा आराइयों की वजह से किसी हज का मौक़ा नहीं मिल सका। (असद उल ग़ाबा जिल्द ३ सफ़ा २७)

इमाम हुसैन (अ.) की सख़ावत :- मसन्दे इमामे रज़ा, सफ़ा ३५ में है कि सख़ी दुनियां के सरदार और मुत्तक़ी अख़ेरत के लोगों के सरदार होते हैं। इमाम हुसैन (अ.) सख़ी ऐसे थे जिनकी मिसाल नहीं। उलमा का बयान है कि उसामा इब्ने ज़ैद सहाबिए रसूल(स.) बीमार थे। इमाम हुसैन (अ.) उन्हें देखने के लिए तशरीफ़ ले गये, तो आपने महसूस किया कि वह बेहद रंजीदा हैं। पूछा ऐ मेरे नाना के सहाबी क्या बात है। "वाग़माहो" क्यों कहते हो। अर्ज़ की मौला साठ हज़ार दिरहम का कर्ज़दार हूँ। आपने फ़रमाया घबराओ नहीं उसे मैं अदा कर दूँ गा। चुनांचे आपने अपनी ज़िन्दगी में ही उन्हें क़रज़े के बार से सुबुक दोश फ़रमा दिया।

एक दफ़ा एक देहाती शहर में आया और उसने लोगों से दरयाफ़्त किया कि यहां सबसे ज़्यादा सख़ी कोन है। लोगों ने इमाम हुसैन(अ.) का नाम लिया। उसने हाज़िरे ख़िदमत होकर बा ज़रिये अशआर सवाल किया। हज़रत ने चार हज़ार अशरफ़ियां इनायत फ़रमा दीं। शईब ख़ज़ाई का कहना है कि शहादते इमाम हुसैन(अ.) के बाद आपकी पुश्त पर बार बरदारी के घट्टे देखे गये। जिसकी वज़ाहत इमाम ज़ैनुल आबेदीन(अ.) ने यह फ़रमाई थी कि आप अपनी पुश्त पर लाद कर अशरफ़ियां और ग़ल्लों के बोरे बेवाओं और यतीमों के घर रात के वक़्त पहुंचाया करते थे। किताबों में है कि आपके एक ग़ैर मासूम फ़रज़न्द को अब्दुल रहमान सलमा ने सुरए हम्द की तालीम दी, आपने एक हज़ार अशरफ़ियां और एक हज़ार क़ीमती ख़लअतें इनायत फ़रमाईं। (मनाक़िबे इब्ने शहरे आशोब, जिल्द ४,सफ़ा ७४) इमाम शिब्लंजी और अल्लामा मोहम्मद इब्ने तलहा शाफ़ेई ने नूरूल अब्सार और मतालेबुल सुवेल में एक अहम वाक़ेया आपकी सिफ़ते सख़ावत के मुताअल्लिक़ तहरीर किया है,जिसे हम इमाम हसन(अ.) के हाल में लिख आये हैं, क्योंकि इस वाक़िये सख़ावत में वह भी शरीक थे।

इमाम हुसैन(अ.) का उमरो आस को जवाब :- एक मरतबा माविया, उमरो आस और हज़रत इमाम हुसैन(अ.) एक मक़ाम पर बैठे हुये थे। उमरो आस ने पूछा क्या वजह है कि हमारे अवलाद ज़्यादा होती है और आप हज़रात के कम। हज़रत ने उसके जवाब में एक शेर पढ़ा, जिसका तरजुमा यह है कि, कमज़ोर और ज़लील व हक़ीर चिड़यों के बच्चे ज़्यादा और शिकारी परिन्दे बाज़ और शाहीन वग़ैरा के बच्चे कुदरतन कम होते हैं। फिर उमरो आस ने पूछा कि हमारी मूछों के बाल जल्दी सफ़ैद हो जाते हैं और आपके देर में इसकी वजह क्या है। आपने फ़रमाया कि तुम्हारी औरतें गन्दा दहन होती हैं। बा वक़्ते मक़ारबत उनके बुख़ारात से तुम्हारी मूछों के बाल सफ़ैद हो जाते हैं। फिर उसने पूछा कि इसकी क्या वजह है कि आप लोगों की दाढ़ी घनी निकलती है। आपने फ़रमाया कि इसका जवाब तो कुरआन में मौजूद है। उसके बाद आपने एक आयत पढ़ी, जिसका तरजुमा यह है। अच्छी ज़मीन से अच्छा सब्ज़ा उगता है और बुरी और ख़बीस ज़मीन से बुरी पैदावार होती है। (पारा ८ रूकू १४) उसके बाद माविया ने उमरो आस को मज़ीद सवाल करने से रोक दिया। तब आपने अरबी के दो शेर पढ़े, जिसका फ़ारसी में तरजुमा यह है।

नैश अक़रब न अज़ पैए कीं अस्त ---- मुक़्तज़ाए तबीअतश ईं अस्त

(मनाक़िब जिल्द ४, सफ़ा ७५ व बेहार जिल्द १, सफ़ा १४८)

हज़रत "उमर" की वसीयत कि सनदे ग़ुलामिए अहले बैत का नविशता मेरे कफ़न में रखा जाय

उलमाए अहले सुन्नत का बयान है कि एक दिन मंज़िले मनाख़ेरत में अब्दुल्ला बिन उमर इमाम हसन(अ.) और इमाम हुसैन(अ.) के सामने फ़ख़रो इफ़तेख़ार की बातें करने लगे। यह सुन कर इमाम हसन(अ.) ने फ़रमाया कि तुम तो हमारे ग़ुलाम ज़ादे हो। इतनी बढ़ चढ़ कर क्या बातें कर रहे हो। इस पर अब्दुल्ला बिन उमर रंजीदा हो कर अपने बाप के पास गये और इमाम हसन(अ.) ने जो कुछ कहा था उसे बयान किया। यह सुन कर हज़रत उमर ने फ़रमाया कि बेटा यह बात उनसे लिखवा लो, अगर लिख दें तो मेरे कफ़न में रख देना। एक रवायत में है कि उन्होंने लिख दिया और हज़रत उमर ने वसीयत कर दी कि इसे उनके कफ़न में रखा जाय। क्योंकि मोहम्मद व आले मोहम्मद(स.) की ग़ुलामी बख़शिश का ज़रिया है।

यह रवायत इस दरजा मशहूर है कि शोअरा ने भी इसे नज़म किया है। इस मक़ाम पर रहबरे शरीयत व तरीक़त हज़रत फ़ाज़िल मख़दूम सय्यद मोहम्मद नासिर जलाली मद् ज़िल्लहुल आली की वह नज़म दर्ज करता हूँ जो उन्होंने ज़ेरे उनवान " **शाने अदब** " तहरीर फ़रमाई है। जिसे हाफ़िज़ शफ़ीक़ अहमद नासरी पाक बंगला जहांगीर रोड, कराची

नम्बर ५ ने रिसाला " **खून के आंसू** " में शाया किया है अगरचे इसके बाज़ मुन्दरजात से मुझे इत्तेफ़ाक़ नहीं है। वह तहरीर फ़रमाते हैं।

एक दिन इब्ने उमर से यह हसन कहने लगे
जानते हो मेरे नाना थे , शहनशाहे ज़मन
हमसरी का है अगर , मुझसे तुम्हें कुछ दावा
साफ़ कहता हूँ कि यह अमर नहीं मुसतहसन
जानता हूँ मैं तुम्हें तुम हो ग़ुलाम इब्ने ग़ुलाम
मेरे रूतबे से ख़बरदार है , हर अहले वतन
सुन के यह बात हुये , इब्ने उमर सख़्त मुलूल
ज़रदिये रूख़ से अयां हो गई दिल की उलझन
देर तक पहले तो , ख़ामोश रहे हैरत से
फिर कहा फ़रते ख़िजालत से झुका कर गरदन
आप अपनी ज़बां से जिसे कहते हैं, ग़ुलाम
है वह फ़रज़न्दे उमर, कौन उमर, फ़ख़्रे ज़मन
आज हैं अहले अरब , उन्हीं की सरदारी में
आज हैं तख़्ते ख़िलाफ़त पायही जलवा फ़िगन
नाम से उनके लरज़ जाते हैं दिल शाहों के
काम से उनके है एयवाने अरब रश्के चमन
मेरी तौक़ीर व शराफ़त की है दुनिया क़ायल
मेरी आज़ादिये , अज़्मत है जहां पर रौशन
फिर ग़ुलाम इब्ने ग़ुलाम आप मुझे कहते हैं
ग़ौर कीजिये , है यही अहदे वफ़ा रसमे कोहन
जाके दरबारे ख़िलाफ़त , में करूंगा फ़रयाद
है कलाम आपका दर असल बहुत सब्र शिकन
आये इस हाल में , नज़दीके उमर इब्ने उमर
अश्क आंखों में अलम दिल में लबों पर शेवन
दाद ख़्वाहाना तरीक़े से, यह फिर अर्ज़ किया
देख लिजिये मुझे इस तरह से कहते हैं हसन
माजरा सुन के यह बेटे से , उमर कहने लगे
सच , तेरे साथ हसन का है यही तरज़े सुख़न
यूँ तेरी बात का , कब दिल को यक़ीं आता है
हां अगर शाहे हसन लिख दें यह बातें मनो अन

335

आये फिर, पेशे हसन इब्ने उमर और कहा
है ख़लीफ़ा का यह फ़रमान बा आदाबे हसन
आप लिख दीजिये काग़ज़ पा मुनासिब है यही
साफ़ वह बात कि जिससे है, मुझे रंजो मेहन
सुन के इरशाद किया, शाहे हसन ने कि सुनो
मुझ को डर है न किसी का न किसी से है जलन
लाओ काग़ज़ कि अभी तुम को नविश्ता दे दूँ
किज़्ब के कांटों में, उलझा नहीं मेरा दामन
हैं उमर मेरे ग़ुलाम, और मेरे नाना के
एक काग़ज़ पा दिया लिख के यह बे हीला व फ़न
लाये क़िरतासे हसन पेशे उमर, इब्ने उमर
ग़ुस्से के जोश में करते थे सब आज़ा सन सन
सर में सौदा था कि अब होगी हसन को ताज़ीर
वहम था, होंगे गिरफ़तार हसन के दुश्मन
और था हाले उमर यह, कि पढ़ा जब काग़ज़
बल न अबरू पा पड़े आई जबीं पा न शिकन
झूम कर फ़रते मसर्रत से यह इरशाद किया
बारे एहसाने हसन से, नहीं उठती गरदन
दस्ते अक़्दस से दिया लिख के ग़ुलामी नामा
मेरी उम्मीद के कांटों को, बनाया गुलशन
मिल गई अहमदे मुरसल से ग़ुलामी की सनद
हो गया पुर दुर्रे मक़सूद से मेरा दामन
दीनो दुनियां में मेरे वास्ते है बाएसे फ़ख़्र
इसे रखना यह वसीयत है, मेरे ज़ेरे कफ़न

इमाम हुसैन(अ.) की मुनाजात और ख़ुदा की तरफ़ से जवाब

अल्लामा इब्ने शहरे आशोब और अल्लामा मजलिसी लिखते हैं कि हज़रत इमाम हुसैन(अ.) एक रात को जनाबे ख़दीजा की क़ब्र पर तशरीफ़ ले गये। आपके हमराह अनस इब्ने मालिक सहाबिए रसूल(स.) भी थे। आपने मज़ारे ख़दीजा(र.) पर नमाज़ें पढीं और आप बारगाहे ख़ुदा वन्दी में महवे मुनाजात हो गये, मुनाजात में आपने ६, अशआर पढ़े जिनमें पहला शेर यह है। "या रब या रब अनता मौला-फ़ा रहम अबीदन इलैका मलजाहा"

तरजुमा :- ऐ मेरे रब, तू ही मेरा मौला और आक़ा है। ऐ मालिक तू अपने ऐसे बनदे पर रहम फ़रमा जिसकी बाज़गश्त सिर्फ़ तेरी ही तरफ़ है। अभी आपकी मुनाजात तमाम न होने पाई थी कि हातिफ़े ग़ैबी की मनजूम आवाज़ आई जिसका पहला शेर है कि :-

लब बैक अब्दी वा अनतः फ़ी कन्फ़ी

व कलमा कुलत कद अलमनहा

तरजुमाः- ऐ मेरे बन्दे मैं तेरी सुन्ने के लिये मौजूद हूँ और तू मेरी बारगाह में आया हुआ है। तूने जो कुछ कहा है मैंने अच्छी तरह से सुन लिया है।

(मुनाकिब जिल्द ४, सफ़ा ७८ व बेहार जिल्द १, सफ़ा १४४)

जंगे सिफ़्फ़ीन में इमाम हुसैन (अ.) की जद्दो जेहद

अगरचे मुवर्रेख़ीन का तक़रीबन इस पर इत्तेफ़ाक़ है कि इमाम हुसैन(अ.) अहदे अमीरल मोमेनीन के हर मारके में मौजूद रहे। लेकिन महज़ इस ख़याल से कि यह रसूले अकरम(स.) की ख़ास अमानत हैं। उन्हें किसी जंग में लड़ने की इजाज़त नहीं दी गई(अनवारूल हुसेनिया सफ़ा ४४) लेकिन अल्लामा शेख़ मेहदी माज़ नदरानी की तहक़ीक़ के मुताबिक़ आपने बन्दिशे आब तोड़ने के लिये मक़ामे सिफ़्फ़ीन में नबर्द आज़माई फ़रमाई थी। (शजरए तूबा, तबा नजफ़े अशरफ़, १३५४ हिजरी व बेहायल अनवार, जिल्द १० सफ़ा २५७ तबा ईरान) अल्लामा बाक़र ख़ुरासानी लिखते हैं कि इस मौक़े पर इमाम हुसैन(अ.) के हमराह हज़रते अब्बास भी थे। (किबरियत अल अहमर सफ़ा २५ व ज़िकरूल अब्बास सफ़ा २६)

हज़रत इमाम हुसैन (अ.) गिरदाबे मसाएब में वाक़िए करबला का आग़ाज़

हज़रत इमाम हुसैन(अ.) जब पैग़म्बरे इस्लाम हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा(स.) की ज़िन्दगी के आखरी लम्हात से लेकर इमाम हसन(अ.) की हयात के आख़री अय्याम तक बहरे मसाएब व आलाम के साहिल से खेलते हुये ज़िन्दगी के इस अहद में दाख़िल हुये जिसके बाद आपके अलावा पंजेतन में कोई बाक़ी न रहा तो आपका सफ़ीनए हयात ख़ुद गिरदाबे मसाएब में आ गया। इमाम हसन(अ.) की शहादत के बाद माविया की तमाम तर जद्दो जेहद यही रही कि किसी तरह इमाम हुसैन(अ.) का चिराग़े ज़िन्दगी भी इसी तरह गुल कर दें। जिस तरह हज़रत अली(अ.) और इमाम हसन(अ.)की शमए हयात बुझा चुका है और उसके लिये वह हर किस्म का दांव करता रहा और इससे उसका मक़सद यह था कि यज़ीद की ख़िलाफ़त

के मनसूबे को परवान चढ़ाये। बिल आख़िर उसने ५६, हिजरी में एक हज़ार की जमाअत समैत यज़ीद के लिये बैएत लेने की ग़रज़ से हिजाज़ का सफ़र इख़्तेयार किया और मदीनए मुनव्वरा पहुंचा। वहां इमाम हुसैन(अ.) से मुलाक़ात हुई, उसने बैएते यज़ीद का ज़िक्र किया। आपने साफ़ लफ़्ज़ों में उसकी बदकारी का हवाला देकर इनकार कर दिया। माविया को आपका इनकार खला तो बहुत ज़्यादा लेकिन चंद उलटे सीधे अल्फ़ाज़ कहने के सिवा और कुछ कर न सका। इसके बाद मदीना और फिर मक्कु में बैएते यज़ीद लेकर शाम को वापस चला गया। अल्लामा हुसैन वाएज़ काशफ़ी लिखते हैं कि अमीरे माविया ने जब मदीने में बैएत का सवाल उठाया तो हुसैन बिन अली(अ.) अब्दुल रहमान बिन अबी बक्र, अब्दुल्लाह इब्ने उमर, अब्दुल्लाह इब्ने ज़ुबैर ने बैएते यज़ीद से इनकार कर दिया। उसने बड़ी कोशिश की, लेकिन यह लोग न माने और रफ़ेए फ़ित्ना के लिये इमाम हुसैन के अलावा सब मदीने से चले गये। माविया उनके पीछे मक्के पहुंचा और वहां उनपर दबाव डाला लेकिन कामयाब न हुआ। आख़िर कार शाम वापस चला गया। (रौज़तुल शोहदा, सफ़ा २४३) माविया बड़ी तेज़ी के साथ बैएते यज़ीद लेता रहा, और बक़ौल अल्लामा इब्ने क़ुतीबा इस सिलसिले में उसने टको ं में लोगों के दीन भी ख़रीद लिये। अलग़रज़ रजब ६०, हिजरी में माविया रख़्ते सफ़र बांध कर दुनिया से चल बसा। यज़ीद जो अपने बाप के मिशन को कामयाब करना ज़ुरूरी समझता था। सबसे पहले मदीने की तरफ़ मुत्वज्जे हो गया और उसने वहां के वाली वलीद बिन उक़बा को लिखा कि इमाम हुसैन(अ.), अब्दुल रहमान इब्ने अबी बकर, अब्दुल्लाह इब्ने उमर और इब्ने ज़ुबैर से मेरी बैएत ले ले, और अगर यह इन्कार करें तो उनके सर काट कर मेरे पास भेज दे। इब्ने अक़बा ने मरवान से मशवेरा किया उसने कहा कि सब बैएत कर लेंगे लेकिन इमाम हुसैन(अ.) हरगिज़ बैएत न करेंगे, और तुझे उनके साथ पूरी सख़्ती का बरताव करना पड़ेगा।

साहेबे तफ़सीरे हुसैनी अल्लामा हुसैन वाएज़ काशफ़ी लिखते हैं कि वलीद ने एक शख़्स अब्दुल्लाह इब्ने उमर बिन उस्मान को इमाम हुसैन और इब्ने ज़ुबैर को बुलाने के लिये भेजा। क़ासिद जिस वक़्त पहुंचा दोनों मस्जिद में महवे गुफ़तुगू थे। आपने इरशाद फ़रमाया कि तुम चलो हम आते हैं। क़ासिद वापस चला गया और यह दोनों आपस में बुलाने के सबब पर तबादलए ख़याल करने लगे। इमाम हुसैन(अ.) ने फ़रमाया कि मैंने आज एक ख़्वाब देखा है जिससे मैं समझता हूँ कि माविया ने इन्तेक़ाल किया और यह हमें बैएते यज़ीद के लिये बुला रहा है। अभी यह हज़रात जाने न पाये थे कि क़ासिद फिर आ गया और उसने कहा कि वलीद आप हज़रात के इनतेज़ार में है। इमाम हुसैन(अ.) ने फ़रमाया कि जल्दी क्या है जा कर कह दे कि हम थोड़ी देर में आ जायेंगे। इसके बाद इमाम हुसैन(अ.) दौलत सरा में तशरीफ़ लाये और ३० बहादुरों को हमराह लेकर वलीद से मिलने का क़स्द फ़रमाया आप दाख़िले दरबार हो गये और बहादुराने बनी हाशिम बैरूने ख़ाना दरबारी हालात का मुतालेआ करते रहे।

वलीद ने इमाम हुसैन(अ.) की मुकम्मल ताज़ीम की और माविया के मरने की ख़बर सुनाने के बाद बैएत का ज़िक्र किया। आपने फ़रमाया कि मसला सोच विचार का है तुम लोगों को जमा करो और मुझे भी बुला लो मैं "अली रूसे अल शहाद" यानी आम मजमे में इज़हारे ख़याल करूंगा। वलीद ने कहा बेहतर है। फिर कल तशरीफ़ लाईगा। अभी आप जवाब न देने पाये थे कि मरवान बोल उठा। ऐ वलीद अगर हुसैन(अ.) इस वक़्त तेरे क़ब्ज़े से निकल गये तो फिर हाथ न आयेंगे। उनको इसी वक़्त मजबूर कर दे और अभी बैएत ले ले, और अगर यह इनकार करें तो हुक्मे यज़ीद के मुताबिक़ सर तन से उतार ले। यह सुन्ना था कि इमाम हुसैन(अ.) को जलाल आ गया। आपने फ़रमाया "**यब्ने ज़रक़ा**" किसमें दम है जो हुसैन को हाथ लगा सके। तुझे नहीं मालूम हम आले मोहम्मद(स.) हैं। फ़रिशते हमारे घरों में आते रहते हैं। हमें क्योंकर मजबूर किया जा सकता है, कि हम यज़ीद जैसे फ़ासिक़ व फ़ाजिर और शराबी की बैएत कर लें। इमाम हुसैन(अ.) की आवाज़ का बुलन्द होना था कि बहादुराने बनी हाशिम दाख़िले दरबार हो गये और क़रीब था कि जबर दस्त हंगामा बरपा कर दें। लेकिन इमाम हुसैन(अ.) ने उन्हें समझा बुझा कर ख़ामोश कर दिया। इसके बाद इमाम हुसैन (अ.) वापस दौलत सरा तशरीफ़ ले गये। वलीद ने सारा वाक़ेया लिख कर भेज दिया। उसने जवाब में लिखा कि इस ख़त के जवाब में इमाम हुसैन(अ.) का सर भेज दो। वलीद ने यज़ीद का ख़त इमाम हुसैन(अ.) के पास भेज कर कहला भेजा कि फ़रज़न्दे रसूल मैं यज़ीद के कहने पर किसी सूरत से अमल नहीं कर सकता। लेकिन आपको बा ख़बर करता हूँ और बताना चाहता हूँ कि यज़ीद आपका खून बहाने के दरपै है। इमाम हुसैन(अ.) ने सब्र के साथ हालात पर ग़ौर किया और नाना के रौज़े पर जाकर दरदे दिल बयान किया और बेइन्तेहा रोये। सुबह सादिक़ के क़रीब मकान वापस आये और दूसरी रात को फिर रौज़ए रसूल(स.) पर तशरीफ़ ले गये और मुनाजात के बाद रोते रोते सो गये। ख़्वाब में आं हज़रत (स.) को देखा कि आप हुसैन(अ.) की पेशानी का बोसा ले रहे हैं और फ़रमा रहे हैं कि ऐ नूरे नज़र अन्क़रीब उम्मत तुम्हें शहीद कर देगी। बेटा तुम भूखे और प्यासे होगे, तुम फ़रयाद करते होगे और कोई तुम्हारी फ़रयाद रसी न करेगा। इमाम हुसैन(अ.) की आंख खुल गई। आप दौलत सरा वापस तशरीफ़ लाये और अपने आइज़्ज़ा को जमा करके फ़रमाने लगे कि अब इसके सिवा कोई चारा कार नहीं है कि मैं मदीना छोड़ दूँ। तरके वतन का फ़ैसला करने के बाद इमाम हसन(अ.) और मज़ारे जनाबे सय्यदा(स.) पर तशरीफ़ ले गये। भाई से रूख़्सत हुये और मां को सलाम किया क़ब्र से जवाबे सलाम आया। नाना के रौज़े पर रूख़्सते आख़री के लिये तशरीफ़ ले गये, रोते, रोते सो गये। सरवरे कायनात(स.) ने जवाब में सब्र की तलक़ीन की और फ़रमाया बेटा हम तुम्हारे इन्तेज़ार में हैं।

उलेमा का बयान है कि इमाम हुसैन(अ.) २८, रजब ६०, हिजरी यौमे सेह शम्बा ब इरादए मक्के रवाना हुये। अल्लामा इब्ने हजर का कहना है कि "**नफ़रूल मकता**

ख़ौफ़न अला नफ़सहू " इमाम हुसैन (अ.) जान के ख़ौफ़ से मक्के को तशरीफ़ ले गये।(सवाएके मोहर्रेका सफ़ा ४७) आपके साथ तमाम मुख़द्देराते इस्मत व तहारत और छोटे छोटे बच्चे थे। अलबत्ता आपकी एक सहाबजादी जिनका नाम फ़ात्मा सुग़रा था और जिनकी उम्र उस वक़्त ७, साल थी, बा वजहे अलालते शदीद हमराह न जा सकीं। इमाम हुसैन (अ.) ने आपकी तीमार दारी के लिये हज़रत अब्बास की मां जनाबे उम्मुल बनीन को मदीने में ही छोड़ दिया था और कुछ फ़रिज़ए ख़िदमत उम्मुल मोमेनीन जनाबे उम्मे सलमा के सिपुर्द कर दिया थां आप तीन शाबान ६० हिजरी यौमे जुमा को मक्के मोअज़्ज़मा पहुंच गये। आपके पहुंचते ही वालिए मक्का सईद इब्ने आस मक्का से भाग कर मदीने चला गया और वहां से यज़ीद को मक्के के तमाम हालात लिखे, और बताया कि लोगों का रूझान इमाम हुसैन (अ.) की तरफ़ इस तेज़ी से बढ़ रहा है कि जिसका जवाब नहीं। यज़ीद ने यह ख़बर पाते ही मक्के में क़त्ले हुसैन(अ.) की साज़िश पर ग़ौर करना शुरू कर दिया।

इमाम हुसैन(अ.) मक्के मोअज़्ज़मा में ४, माह, शाबान, रमज़ान, शव्वाल, ज़ीक़ाद मुक़ीम रहे। यज़ीद जो बहर सूरत इमाम हुसैन(अ.) को क़त्ल करना चाहता था। उसने यह ख़्याल करते हुये कि हुसैन(अ.) अगर मदीने से बच के निकल गये हैं तो मक्का में क़त्ल हो जायें और मक्के से बच निकलें तो कूफ़ा पहुंच कर शहीद हो सकें। यह इन्तेज़ाम किया कि कूफ़े से १२,००० (बारह हज़ार) ख़ुतूत दौराने क़याम मक्के में पहुँचवाये। क्योंकि दुश्मनों को यक़ीन था कि हुसैन (अ.) कूफ़े में आसानी से क़त्ल किये जा सकेंगे। न यहां के बाशिन्दों में अक़ीदे का सवाल है और न अक़ीदत का। यह फ़ौजी लोग हैं इनकी अक़्लें भी मोटी होती हैं। यही वजह है कि शहादते इमाम हुसैन(अ.) से क़बल जब तक जितने अफ़सर भेजे गये वह महज़ इस गर्ज़ से भेजे जाते रहे कि हुसैन(अ.) को कूफ़े ले जायें।(कशफ़ुल ग़म्मा, सफ़ा ६८) और एक अज़ीम लशकर मक्के में शहीद किये जाने के लिये इरसाल किया, और तीस ३०, ख्वारजियों को हाजियों के लिबास में ख़ास तौर पर भिजवा दिया जिसका क़ायद उमर इब्ने साअद था। (नासेख़ुल तवारीख़ जिल्द ६, सफ़ा २१, मुन्तख़िब तरीही ख़ुलासेतुल मसाएब, सफ़ा १५०, जिकरूल अब्बास सफ़ा १२२)

अब्दुल हमीद ख़ान एडीटर मौलवी लिखते हैं कि " इसके अलावा एक साज़िश यह भी की गई कि अय्यामे हज में ३०० शामियों को भेज दिया गया कि वह गिरोहे हुज्जाज में शामिल हो जायें और जहां जिस हाल में भी हज़रत इमाम हुसैन(अ.) को पायें क़त्ल कर डालें। (शहीदे आज़म सफ़ा ७१) ख़ुतूत जो कूफ़े से आये थे उन्हें शरई रंग दिया गया था और वह ऐसे लोगों के नाम से भेजे गये थे। जिनसे इमाम हुसैन(अ.) मुतारिफ़ थे। शाह अब्दुल अज़ीज़ मुहद्दिस का कहना है कि यह ख़ुतूत **" मन कुल तायफ़तः व जमा अताः हर तायफा "** और जमाअत की तरफ़ से भिजवाए गये थे। (इसरारूल शहादतैन सफ़ा २७)

अल्लामा इब्ने हजर का कहना है कि ख़ुतूत भेजने वाले आम अहले कूफ़ा थे।

(सवाएक़े मोहर्रेक़ा सफ़ा ११७) इब्ने जरीर का बयान है कि इस ज़माने में कूफ़े में एक घर के अलावा कोई शिया न था। (तबरी)

हज़रत इमाम हुसैन(अ.) ने अपनी शरई ज़िम्मेदारी को पूरा करने के लिये कूफ़े के हालात जानने के लिये जनाबे मुस्लिम इब्ने अक़ील को कूफ़े रवाना कर दिया।

हज़रत मुस्लिम इब्ने अक़ील :- हज़रत मुस्लिम हुक्मे इमाम पाते ही सफ़र के लिये रवाना हो गये। शहर से बाहर निकलते ही आपने देखा कि एक सय्याद ने एक आहू(हिरन) का शिकार किया है और उसे छुरी से ज़िब्ह कर डाला। दिल में ख़याल पैदा हुआ कि इस वाक़ेये को इमाम हुसैन(अ.) से बयान करूं तो बेहतर होगा। इमाम हुसैन(अ.) की ख़िदमत में हाज़िर हुये और वाक़ेया बयान किया। आपने दुआये कामयाबी दी और रवानगी में उजलत की तरफ़ इशारा किया। जनाबे मुस्लिम इमाम हुसैन(अ.) के हाथों और पैरों का बोसा दे कर बा चश्मे गिरियां मक्के रवाना हो गये। मुस्लिम इब्ने अक़ील के दो बेटे थे। मोहम्मद और इब्राहीम, एक की उमर ७, साल दूसरे की ८, साल थी। यह दोनों बेटे बा रवायत मदीनए मुनव्वरा में थे। हज़रत मुस्लिम मक्के से रवाना हो कर मदीना पहुंचे और वहां पहुंच कर रौज़ेए रसूल(स.) में नमाज़ अदा की और ज़ियारत वग़ैरा से फ़राग़त हासिल करके अपने घर वारिद हुये। रात गुज़री सुबह के वक़्त अपने बच्चों को ले कर दो रहबरों समैत जंगल के रास्ते से कूफ़ा रवाना हुये। रास्ते में शिद्दते अतश की वजह से इन्तेक़ाल कर गये। आप जिस वक़्त कूफ़ा पहुंचे और वहां जनाबे मुख़्तार इब्ने अबीदा सक़फ़ी के मकान पर क़याम फ़रमा हुये। थोड़े दिनों में अट्ठारा हज़ार(१८,०००) कूफ़ियों ने आपकी बैअत कर ली। इसके बाद बैअत करने वालों की तादाद ३०,०००(तीस हज़ार) हो गई। इसी के दौरान यज़ीद ने अबीदुल्ला इब्ने ज़ियाद को बसरा लिखा कि कूफ़े में इमाम हुसैन(अ.) का एक भाई मुस्लिम इब्ने अक़ील नामी पहुंच गया है तू जल्द से जल्द वहां पहुंच कर नोमान इब्ने बशीर से हुकूमते कूफ़ा का चार्ज़ ले ले और मुस्लिम का सर मेरे पास भेज दे। इब्ने ज़ियाद पहली फ़ुरसत में कूफ़े पहुंच गया। इसके दाख़िले के वक़्त ऐसी शक्ल बनाई कि लोग समझे कि इमाम हुसैन (अ.) आ गये हैं लेकिन मुस्लिम इब्ने उमर बाहली ने पुकार कर कहा कि यह इब्ने ज़ियाद है।

हज़रत मुस्लिम बिन अक़ील को जब इब्ने ज़ियाद की रसीदगी कूफ़े की इत्तेला मिली तो आप ख़ानए मुख़्तार से हट कर हानी इब्ने उरवा के मकान में चले गये। इब्ने ज़ियाद ने माक़िल नामी ग़ुलाम के ज़रिये जनाबे मुस्लिम की क़याम गाह का पता लगा लिया। उसे जब यह मालूम हुआ कि मुस्लिम हानी बिन उरवा के मकान में हैं तो हानी को बुलवा भेजा और पूछा कि तुमने मुस्लिम बिन अक़ील की हिमायत का बीड़ा उठाया है और वह तुम्हारे घर में हैं। जनाबे हानी ने पहले तो इन्कार कर दिया लेकिन जब माक़िल जासूस सामने लाया गया तो आपने फ़रमाया कि ऐ अमीर, हम मुस्लिम को अपने घर बुला कर नहीं लाये बल्कि वह

खुद आ गये हैं। इब्ने ज़ियाद ने कहा कि अच्छा जो सूरत भी हो तुम मुस्लिम को हमारे हवाले करो। जनाबे हानी ने जवाब दिया कि यह बिलकुल ना मुमकिन है। यह सुन कर इब्ने ज़ियाद ने हुक्म दिया कि हानी को कै़द कर दिया जाय। जनाबे हानी ने फ़रमाया कि मैं हर मुसिबत को बरदाश्त करूंगा लेकिन मेहमान को तुम्हारे सिपुर्द हरगिज़ ना करूंगा। मुख़्तसर यह कि जनाबे हानी जिनकी उम्र ९०, साल की थी को खम्बे में बंधवा कर पांच सौ (५००) कोड़े मारने का हुक्म दिया गया। जनाबे हानी बेहोश हो गये। उसके बाद उनका सर काट कर तने मुबारक को दार पर लटका दिया गया।

जब हज़रत मुस्लिम को जनाबे हानी की गिरफ़तारी का इल्म हुआ तो आप अपने साथियों को लेकर बाहर निकल गये। दुश्मन से घमासान जंग हुई लेकिन कतीर इब्ने शहाब, मोहम्मद इब्ने अशअश, शिम्र इब्ने ज़िलजौशन, शीश इब्ने रबी के बहकाने और ख़ौफ़ दिलाने से सब डर गये। यहां तक कि नमाज़े मग़रबैन में आपके हमराह सिर्फ़ ३० आदमी थे और जब आपने नमाज़ तमाम की तो कोई भी साथ न था। आपने चाहा कि कूफ़े से बाहर जाकर कहीं रात गुज़ार लें, मगर मोहम्मद इब्ने कसीर ने कहा कि कूफ़े के तमाम रास्ते बंद हैं। आप मेरे मकान में जा ठहरिये। इब्ने ज़ियाद ने बाप और बेटे दोनों को तलब किया और दरबार में निहायत सख़्त और सुस्त कहा। उस वक़्त उनके साथी मोहम्मद इब्ने कसीर और दरबारियों में सख़्त जंग हुई। बिल आख़िर यह बाप और बेटे दोनों शहीद हो गये।

हज़रत मुस्लिम को जब मोहम्मद कसीर की शहादत की इत्तेला मिली तो वह उनके घर से बाहर बरामद हुये। मुस्लिम यह चाहते थे कि कोई ऐसा रास्ता मिल जाय कि मैं कूफ़े से बाहर चला जाऊं और इसी कोशिश में घोड़े पर सवार हो कर कूफ़े के हर दरवाज़े पर गये। लेकिन किसी दरवाज़े से रास्ता न मिला। क्योंकि हर जगह दो दो हज़ार का पहरा था, नागाह सुबह हो गई और मुस्लिम नाचार अपना घोड़ा शारए आम पर छोड़ कर एक कूचे में घुस गये ओर वहां की एक बोसीदा मस्जिद में छुप रहे। इब्ने ज़ियाद को जैसे यह मालूम था कि कूफ़े ही में मुस्लिम कहीं रूपोश हैं। उसने एलान करा दिया कि जो मुस्लिम को गिरफ़तार करके लायेगा या उनका सर दरबार में पहुंचायेगा तो उसे काफ़ी माल दिया जायगा।

हज़रत मुस्लिम ने दिन मस्जिद में गुज़ारा और रात को मस्जिद से निकल खड़े हुये। जनाबे मुस्लिम की हालत भूख और प्यास से ऐसी हो गई थी कि रास्ता चलना दूभर थां आप इसी हालत में एक महल्ले में सर गरदां फिर रहे थे। कि आपकी नज़र एक ज़ईफ़ा(बूढ़ी औरत)पर पड़ी आप उसके क़रीब गये और उससे पानी मांगा। उसने पानी देकर ख़्वाहिश की कि जल्दी अपनी राह लगें क्योंकि यहां फ़िज़ा बहुत मुकद्दर है। आपने फ़रमाया कि ऐ **"तौआ"** जिसका कोई घर न हो वह कहां जाय। उसने पूछा कि आप कौन हैं। फ़रमाया मोहम्मद मुस्तफ़ा (स.) और अली मुरतज़ा का भतीजा और इमाम हुसैन(अ.) का चचा ज़ाद भाई हूँ। **"तौआ"** ने अपने घर में जगह दी आपने रात गुज़ारी लकिन सुबह होते ही दुश्मन

का लशकर आ पहुंचा। क्योंकि पिसरे तौआ ने मां से पोशीदा इब्ने ज़ियाद से चुग़ल ख़ोरी कर दी थी। लशकर का सरदार मोहम्मद बिन अशअश था। जो इमाम हसन(अ.) की क़ातेला जादा बिन्ते अशअश का सगा भाई था। मुस्लिम ने जब तीन हज़ार घोड़ों की टापों की आवाज़ सुनी तो तलवार ले कर घर से बाहर निकल पड़े और सैकड़ों दुश्मनों को तहे तेग़ कर दिया। बिल आख़िर इब्ने अशअश ने और फ़ौज मांगी, इब्ने ज़ियाद ने कहला भेजा कि एक शख़्श के लिये तीन हज़ार फ़ौज कैसे न काफ़ी है। उसने जवाब दिया शायद तूने यह समझा है कि किसी बनिये बक़्क़ाल से लड़ने के लिये भेजा है। ग़र्ज़ कि जब मुस्लिम पर किसी तरह क़ाबू न पाया जा सका तो एक खस पोश गढ़े में आपको गिरा दिया गया। फिर गिरफ़्तार करके इब्ने ज़ियाद के सामने पेश कर दिया।

इसने हुक्म दिया कि इनहें कोठे से ज़मीन पर गिरा कर उनका सर काट लिया जाय। आपने कुछ वसीयतें की और कोठे से गिरते वक़्त " अस्सलाम अलैका या अबा अब्दिल्ला " कहा और नीचे तशरीफ़ लाये। आपका सर काटा गया, उलमा का बयान है कि आपका और हानी का सर काट कर दमिश्क़ भेज दिया गया और तन बाज़ारे क़साबा में दार पर लटका दिया गया।

एक रवायत में है कि दोनों के पैरों में रस्सी बांध कर बाज़ारों में फिरा रहे थे कि क़बीलए मुज़हज ने काफ़ी जंगो जिदाल करके लाशें हासिल कर लीं और दफ़्न कर दिया। मुलाहेज़ा हो (रौज़तुल शोहदा, सफ़ा २६० से सफ़ा २७६ व कशफ़ुलग़म्मा सफ़ा ६८ व खुलासतुल मसाएब सफ़ा ४६) आपकी शहादत ६, ज़िल्हिज ६० हिजरी को वाके़ हुई है। अनवारूल मजालिस बाब ६, मजलिस २, तबा ईरान)

मोहम्मद और इब्राहीम की शहादत :- मुवर्रेख़ीन का बयान है कि शहादते मुस्लिम के बाद लोगों ने इब्ने ज़ियाद को जनाबे मुस्लिम के दोनों कमसिन लड़कों के कूफ़े में मौजूद होने की ख़बर दी , जिनका नाम मोहम्मद व इब्राहीम था। इब्ने ज़ियाद ने इनकी गिरफ़तारी का हुक्म नाफ़िज़ कर दिया। पिसराने मुस्लिम क़ाज़ी शरई के घर में पोशीदा थे। सरकारी एलान के बाद क़ाज़ी ने बच्चों से कहा कि हमारी और तुम्हारी दोनों की जान अब ख़तरे में है। बेहतर यह है कि तुम्हें किसी सूरत से मदीने पहुंचा दिया जाय। बच्चों ने इसे क़ुबूल किया। क़ाज़ी ने अपने बेटे असद को हुक्म दिया कि इन बच्चों को दरवाज़े अराक़ेन के बाहर जो क़ाफ़ला मदीना जाने के लिये ठहरा हुआ है उसमें छोड़ आ। असद उन बच्चों को लेकर जब रात के वक़्त वहां पहुंचा तो क़ाफ़ला रवाना हो चुका था। लेकिन इस मक़ाम से नज़र आ रहा था। असद ने बच्चों को उसी काफ़ले के रास्ते पर लगा दिया और घर वापस आयां कमसिन बच्चे थोड़ी दुर चले थे कि क़ाफ़ला नज़रों से ग़ायब हो गया और सुबह हो गई। बच्चे हैरान व सर ग़रदान फिर रहे थे कि नागाह सरकारी आदमियों ने उन्हें गिरफ़्तार कर लिया और उन्हें इब्ने ज़ियाद के पास पहुंचा दिया। उसने उन्हें क़ैद ख़ाने में बन्द करके यज़ीद

को बच्चों की गिरफ़्तारी की इत्तेला दे दी। क़ैद ख़ाने का दरबान इत्तेफ़ाक़न मुहिब्बे आले मोहम्मद था। उसने रात के वक़्त बच्चों को छोड़ दिया और राहे क़ादसिया पर लगा कर एक अंगूठी दी और कहा कि क़ादसिया में मेरे भाई से मिलना और इस अंगूठी के जरिये से ताअर्रूफ़ के बाद उनसे कहना कि वह तुम्हें मदीना पहुंचा दें। बच्चे तो रवाना हो गये लेकिन सुबह होते ही दरबान जिसका नाम " मशकूर " था क़त्ल कर दिया गया। उससे पूछा गया कि तूने मुस्लिम के बेटों को क्यों छोड़ दिया। उसने कहा कि ख़ुशनूदिये ख़ुदा के लिये। इब्ने ज़ियाद ने पांच सौ(५००) कोड़े मारने का हुक्म दिया। मशकूर की शहादत के बाद उसे उमर इब्ने अल हारिस ने दफ़्न कर दिया।

पिसराने मुस्लिम बिन अक़ील, मशकूर की मेहरबानी से रिहा होकर क़ादिसया जा रहे थे। हुदूदे कूफ़े के अन्दर ही रास्ता भूल गये और सारी रात चक्कर लगा कर सुबह को अपने को कूफ़े में ही पाया। सुबह हो चुकी थी दुश्मन के ख़तरे से एक दरख़्त पर चढ़ गये। इत्तेफ़ाक़न एक औरत उस जगह पानी भरने आई उसने पानी में परछाईं देख कर पूछा कि तुम कौन हो। उन्होंने इतमेनान करने के बाद कहा कि हम मुस्लिम के फ़रज़न्द हैं। उस औरत ने अपनी मलका को ख़बर दी। वह सरो पा बरैहना दौड़ कर आईं और इन बच्चों को ले गईं और मकान की एक ख़ाली जगह पर उनको ठहरा दिया। थेड़ी रात गुज़री थी कि इस मोमिना का शौहर " हारिस बिन उरवा " सर गर्दां व परेशान घर में आया तो मोमेना ने पूछा कि आज बड़ी रात कर दी ख़ेर तो है। उसने कहा "मशकूर" दरबान ने मुस्लिम के बेटों को क़ैद से रिहा कर दिया। जिनकी तलाश के लिये इनाम व इकराम इब्ने ज़ियाद की तरफ़ से मुकर्रर किया गया है। मैं भी अब तक उन्हीं की तलाश में फिर रहा था। हारिस खाना खा कर बिसतर पर लेट गयां अभी आंख न लगी थी कि बच्चों की सांस की आवाज़ को महसूस करके उठ खड़ा हुआ। बिवी से पूछा कि यह किसके सांस की आवाज़ आती हैं उसने कोई जवाब न दिया। यह उस तहख़ाने की तरफ़ चला जिसमें नौनिहालाने रिसालत(स.) जलवा अफ़रोज़ थे। उसकी आहट पा कर एक भाई ने दूसरे को जगा कर कहा कि भैय्या अभी मोहम्मद मुसतफ़ा(स.) अली मुतर्ज़ा(अ.) फ़ात्मा ज़हरा(स.) हसने मुजतबा(अ.) और इमाम हुसैन (अ.) और मेरे बाबा ख़्वाब में तशरीफ़ लाये थे और उन्होंने फ़रमाया है कि हम तुम्हारे इन्तेज़ार में हैं। इतने में हारिस अन्दर दाख़िल हो गया। उन्हें पकड़ कर कहा कि तुम कौन हो? उन्होंने फ़रमाया हम तेरे नबी की अवलाद हैं। " हर बना मिनल सजन " क़ैद ख़ाने से भाग कर आये हैं और तेरे घर में पनाह ली है। उसने कहा कि तुम क़ैद से भाग कर मौत के मूंह में आ गये हो। उसके बाद उसने उन यतीमों के रूख़सारों (गालों) पर इस ज़ोर से तमाचे मारे कि यह मुहँ के बल गिर पड़े। फिर उसने उनके बाजुओं को कस के बांधा और हाथ पाओं बांध कर डाल दिया। यह बे चारे सारी रात अपनी बेबसी और बे कसी पर रोते रहे। जब सुबह हुई तो उन्हें नहर पर क़त्ल करने के लिये ले चला। बीवी ने फ़रयाद की उसे

एक तलवार मारी। गुलाम ने रोका तो उसे क़त्ल कर दिया। बेटे ने मना किया उसे भी क़त्ल कर दिया। अलग़रज़ नहरे फ़ुरात पर ले जाकर क़त्ल करना ही चाहा था कि बच्चों ने कहा ऐ शेख़(१) हमें ज़िन्दा इब्ने ज़ियाद के पास ले चल। (२) हमें बाज़ार में बेच डाल। (३) हमारी कमसिनी पर रहम कर (४) हमें दो रकअत नमाज़ पढ़ने की इज़ाज़त दे। उसने कहा कि क़त्ल के सिवा कोई चारा कार नहीं है। अल्बत्ता अगर नमाज़ पढ़ते हो तो पढ़ लो लेकिन कोई फ़ायदा नहीं है। अलग़रज़ बच्चों ने वज़ू किया और दो दो रकअत नमाज़ अदा की और दुआ के लिये हाथ उठाये। इस मलऊन ने बड़े भाई की गरदन पर तलवार लगाई। सरे मुबारक दूर जाकर गिरा। छोटे भाई ने दौड़ कर सरे मुबारक उठा लिया और भाई के खून में लोटने लगा। इस ज़ालिम ने बड़े भाई की लाश पानी में डाल दी और छोटे का सर भी काट लिया। जब दोनों लाशें पानी में पहुंची तो बाहम बग़लगीर होकर डूब गईं। रावी का बयान है कि हारिस ने जिस वक़्त इब्ने ज़ियाद के सामने फ़रज़न्दे मुसिलम के सर पेश किये **" क़ाम सुम क़दो फ़ल ज़ालेका सलासन "** तो वह तीन मरतबा उठा और बैठा। फिर हुक्म दिया कि यह सर इसी पानी में डाल दिये जायें। जिस जगह इनके तन डाले गये हैं। चुनांचे एक मुहिब्बे आल मोहम्मद (स.) ने इन सरों को फ़रात में डाल दिया। कहा जाता है कि सरों के पानी में पहुंचते ही डूबे हुये जिस्म सतह आब पर उभर आये और अपने सरों समैत तह नशीन हो गये। अल्लामा हुसैन वाएज़ काशफ़ी तहरीर फ़रमाते हैं कि वह शख़्स जो मुस्लिम के बेटों के सरों को पानी में डालने के लिये लाया था उसका नाम " मक़ातिल " था। उसने दोनों सरों को पानी में डालने के बाद हारिस मलऊन के मक़तूल गुलाम और बेटे की लाशों को बाबे बनी ख़ज़ीमा में दफ़्न कर दिया। (रौज़तुल शोहदा सफ़ा २७६ से सफ़ा २८५ व खुलासतुल मसाएब सफ़ा ४२१) अल्लामा अरबेली लिखते हैं कि जनाबे अक़ील दिहानी इब्ने उरवा व मोहम्मद इब्ने कसीर और फ़रज़न्दाने मुस्लिम को ठिकाने लगाने के बाद उमर इब्ने सआद और इब्ने ज़ियाद के माबैन **" रै "** का मोहायदा हो गया और तय पाया कि हुर इब्ने यज़ीद रियाही को सबसे पहले दो हज़ार सवारों समैत रवाना करके इमाम हुसैन(अ.) को गिरफ़तार कराया जाय और उन्हें कूफ़े ला कर क़त्ल कर दिया जाय। (कशफ़ुल ग़म्मा सफ़ा ६८)

मक्के मोअज़्ज़मा में इमाम हुसैन(अ.) की जान न बच सकी

यह वाक़ेया है कि इमाम हुसैन(अ.) मदीनए मुनव्वरा से इस लिये आज़िमे मक्का हुये थे कि यहां उनकी जान बच जायगी लेकिन आपकी जान लेने पर ऐसा सफ़्फ़ाक दुश्मन तुला हुआ था जिसने मक्के मोअज़्ज़मा और काबए मोहतरम में भी आपको महफ़ूज़ न रहने दिया और वह वक़्त आगया कि इमाम हुसैन(अ.) मक़ामे अमन को महले ख़ौफ़ समझ कर मक्कए मोअज़्ज़मा छोड़ने पर मजबूर हो गये और मजबूरी इस हद तक बढ़ गई कि आप

हज तक न कर सके। यह मुसल्लेमात से है कि शयातीन बनी उमय्या के तीस ख़ूंख़ार हज के लिबास में इमाम हुसैन(अ.) के साथ हो गये और क़रीब था कि आपको आलमे हज व तवाफ़ में क़त्ल कर दें। इमाम हुसैन(अ.) को जैसे ही साज़िश का पता लगा आपने फ़ौरन हज को उमरे से बदला और आठ,८ ज़िल्हिज ६० हिजरी को जनाबे मुस्लिम के ख़त पर भरोसा करके आज़िमे कूफ़ा हो गये। अभी आप रवाना न होने पाये थे कि अज़ीज़ व अक़रेबा ने कमाले हमदर्दी के साथ कूफ़े के सफ़र को न करने की दरख्वास्त की। आपने फ़रमाया कि अगर मैं चूंटी के बिल में भी छुप जाऊं तो क़त्ल ज़ुरूर किया जाऊंगा और सुनो मेरे नाना ने फ़रमाया है कि हुरमते मक्का एक दुम्बे के क़त्ल से बरबाद होगी। मैं डरता हूँ कि वह दुम्बा मैं ही न क़रार पाऊं। मेरी ख़्वाहिश है कि मैं मक्का से बाहर चाहे एक ही बालिश्त पर क्यों न हो क़त्ल किया जाऊं। (तारीख़े कामिल जिल्द,४ सफ़ा २०, नियाबुल मोअद्दता सफ़ा २३७, सवाएक़े मोहर्रेक़ा) यह वाक़ेया है कि यज़ीद का इरादा बहर सूरत इमाम हुसैन(अ.) को क़त्ल करना और इस्तेहसाल बनी फ़ातमा था। (कशफ़ुल गम्मा सफ़ा ८७) यही वजह है कि जब इमाम हुसैन(अ.) के मक्के मोअज़्ज़मा से रवाना होने की इत्तेला वालीए मक्का उमर बिन सआद को हुई तो उसने पूरी ताक़त से वापस लाने की सई की और इसी सिलसिले में उसने यहीया बिन सईद इब्ने अल आस को एक गिरोह के साथ आपको रोकने के लिये भेज दिया। “ फ़ाक़ालू लहू अन सरफ़ा अयना तज़हब ” इन लोगों ने आपको रोका और कहा कि आप यहां से कहां निकले जा रहे हैं फ़ौरन लौटिये। आपने फ़रमाया ऐसा हरगिज़ नहीं होगा। यह रोकना मामूली न था जिसमें मारपीट की भी नौबत आई। (दमाउस साकेबा सफ़ा ३१६) मक़सद यह है कि वालिये मक्का यह नहीं चाहता था कि इमाम हुसैन(अ.) इसके हुदूदे इक़्तेदार से निकल जायें और यज़ीद के मनशा को पूरा न कर सकें। क्योंकि उसके पेशे नज़र वालीए मदीना की बरतरफ़ी या तअत्तुल था। वह देख चुका था कि हुसैन(अ.) के मदीने से सालिम निकल आने पर वालीए मदीना बर तरफ़ कर दिया गया था।

इमाम हुसैन (अ.) की मक्के से रवानगी :- अलग़रज इमाम हुसैन(अ.) अपने जुमला आईज़्ज़ा और अक़रेबा व अनसारे जां निसार को हमराह लेकर जिनकी तादाद बक़ौल इमाम शिब्ली ७२ थी मक्के से रवाना हो गये। आप जिस वक़्त मंज़िले सफ़ा पर पहुंचे तो फ़रज़दक़ शायर से मुलाक़ात हुई। वह कूफ़े से आ रहा था। इसरार पर उसने बताया कि चाहे लोगों के दिल आपके साथ हों लेकिन इनकी तलवारें आपके ख़िलाफ़ हैं। आपने अपनी रवानगी की वजहें बयान फ़रमाईं और आप वहां से आगे बढ़े फ़िर मंज़िले हाजिज़ के एक चश्मे पर उतरे और वहां अब्दुल्ला इब्ने मुती से मुलाक़ात हुई उन्होंने भी कूफ़ीयों की बे वफ़ाई का जिक्र किया, इसके बाद आप मंज़िले बतन अल रहमा पहुंचे और वहां से मंज़िले ज़ातुल अर्क़ में डेरा डाला। वहां एक शख़्स बशीर इब्ने ग़ालिब से मुलाक़ात हुई उसने भी कूफ़ीयों की गद्दारी का तज़किरा किया। फिर आप वहां से आगे बढ़े। एक मक़ाम

पर एक ख़ेमा नस्ब देखा। पूछा इस जगह कौन ठहरा है। मालूम हुआ कि ज़ोहैर इब्ने कैन। आपने उन्हें बुलवा भेजा। जब वह आये तो आपने अपनी हिमायत का ज़िक्र किया। उन्होंने कुबूल करके अपनी बीवी को बा रवायत अपने भाई के साथ घर रवाना कर दिया और खुद इमाम हुसैन(अ.) के साथ हो गये। फिर आप वहां से रवाना होकर मंज़िले " ज़बाला " में पहुंचे वहां आपको हज़रते मुस्लिम व हानी और मोहम्मद बिन कसीर और अब्दुल्लाह बिन यक़तर जैसे दिलेरों की शहादत की ख़बर मिली आपने " **इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहे राजेऊन** " फ़रमाया और दाख़ेले ख़ेमा हो कर हज़रते मुस्लिम की बच्चियों को कमाले मोहब्बत के साथ प्यार किया और बे इन्तेहा रोये। उसके बाद बक़ौल अल्लामा अरबली, आपने बा वक़्ते शब एक खुतबा दिया जिसमें हालात की वज़ाहत के बाद इरशाद फ़रमाया कि मेरा क़त्ल यक़ीनी है। मैं तुम लोगों की गरदनों से तौक़े बैएत उतारे लेता हूँ। तुम्हारा जिधर जी चाहे चले जाओ। दुनिया दार तो वापस हो गये, लेकिन सब दींदार साथ ही रहे। फिर वहां से रवाना हो कर मंज़िले क़सर बनी मक़ातिल पर उतरे, वहां पर अब्दुल्लाह इब्ने हजर जाफ़ेई से मुलाक़ात हुई। आपके इसरार के बावजूद वह बक़ौले वाएज़ काशफ़ी आपके साथ न हुआ। फिर आप मंज़िले साअलबिया पर पहुंचे, वहां जनाबे ज़ैनब की आग़ोश में सर रख कर सो गये। ख़्वाब में रसूले खुदा को देखा कि वह बुला रहे हैं। आप रो पड़ें उममे कुल्सूम ने रोने की वजह पूछी आपने ख़्वाब का हवाला दिया और ख़ानदान की तबाही का असर ज़ाहीर किया। अली अकबर ने अर्ज़ की बाबा हम हक़ पर हैं हमें मौत से कोई डर नहीं। उसके बाद आपने मंज़िले क़तक़तानिया पर खुतबा दिया और वहां से रवाना हो कर क़बीलए बनी सुकून में ठहरे। आपकी यहां सुकूनत की इत्तेला इब्ने ज़ियाद को दी गई। उसने एक हज़ार या दो हज़ार के लशकर समैत हुर बिन यज़ीदे रियाही को इमाम हुसैन(अ.) की गिरफ़तारी के लिये रवाना कर दिया। इमाम हुसैन(अ.) अपनी क़याम गाह से निकल कर कूफ़े की तरफ़ बा दस्तूर रवाना हो गये। रास्ते में बनी अकरमा का एक शख़्स मिला, उसने कहा क़ादसिया से ग़दीब तक सारी ज़मीन लशकर से पटी पड़ी है। आपने उसे दुआए ख़ैर दी और खुद आगे बढ़ कर " मंज़िले शराफ़ " पर क़याम किया। वहां आपने मोहर्रम ६१, हिजरी का चांद देखा और आप रात गुज़ार कर बहुत सवेरे रवाना हो गये।

हुर बिन यज़ीदे रियाही :- सुबह का वक़्त गुज़रा दोपहर आई, लशकरे हुसैनी बादया पैमाई कर रहा था कि नागाह एक सहाबिए हुसैन(अ.) ने तकबीर कही। लोगों ने वजह पूछी, उसने जवाब दिया कि मुझे कूफ़े की सिम्त खुरमे और केले के दरख़्त जैसे नज़र आरहे हैं। यह सुन कर लोग यह ख़्याल करते हुये कि इस जंगल में दरख़्त कहां, उस तरफ़ ग़ौर से देखने लगे।, थोड़ी देर में घोड़ों की कनौतियां नजर आईं। इमाम ने फ़रमाया कि दुश्मन आ रहे हैं। लेहाज़ा मंज़िले ज़ुख़शब या ज़ूहसम की तरफ़ मुड़ चलो। लशकरे हुसैनी ने रूख़ बदला और लशकरे हुर ने तेज़ रफ़तारी इख़्तेयार की। बिल आख़िर सामने आ पहुंचा और

ब रवायते लजामे फ़रस पर हाथ डाल दिया। यह देख कर हज़रते अब्बास आगे बढ़े और फ़रमाया तेरी मां तेरे मातम में बैठे। " मातरीद " क्या चाहता है। (मातईन,सफ़ा १८३)

मुवर्रेख़ीन का बयान है कि चूंकि लश्करे हुर प्यास से बेचैन था, इस लिये साक़िये कौसर के फ़रजंद ने अपने बहादुरों को हुक्म दिया कि हुर के सवारों और सवारी के जानवरों को अच्छी तरह सेराब कर दो। चुनांचे अच्छी तरह सेराबी कर दी गई। उसके बाद नमाज़े ज़ोहर की अज़ान हुई हुर ने इमाम हुसैन(अ.) की क़यादत में नमाज़ अदा की और बताया कि हमें आपकी गिरफ़तारी के लिये भेजा गया है, और हमारे लिये यह हुक्म है कि हम आपको इब्ने ज़ियाद के दरबार में हाज़िर करें। इमाम हुसैन(अ.) ने फ़रमाया कि मेरे जीते जी यह ना मुम्किन है कि मैं गिरफ़तार हो कर ख़ामोशी के साथ कूफ़े में क़त्ल कर दिया जाऊं। फिर उसने तन्हाई में राय दी कि चुपके से रात के वक़्त किसी तरफ़ निकल जायें। आपने उसकी राय को पसन्द किया और एक रास्ते पर आप चल पड़े। जब सुबह हुई तो फिर हुर को पीछा करते देखा और पूछा कि अब क्या बात है। उसने कहा मौला किसी जासूस ने इब्ने ज़ियाद से मुख़बिरी कर दी है। चुनांचे अब उसका हुक्म यह आ गया है कि मैं आपको बे आबो गियाह जंगल(जहां पानी और साया न हो) में रोक लूँ। गुफ़्तुगू के साथ साथ रफ़्तार भी जारी थी कि नागाह इमाम हुसैन(अ.) के घोड़े ने क़दम रोके, आपने लोगों से पूछा इस ज़मीन को क्या कहते हैं। कहा गया " करबला " आपने अपने साथियों को हुक्म दिया कि यहीं पर डेरे डाल दो और यहीं ख़ेमे लगा दो। क्योंकि क़ज़ाए इलाही यहीं हमारे गले मिलेगी।(नूरूल अबसार, सफ़ा ११७ मतालेबुल सुवेल सफ़ा २५७ तबरी जिल्द ३, सफ़ा ३०७ कामिल जिल्द ४, सफ़ा २६, अबुल फ़िदा जिल्द २, सफ़ा २०१ व दमए साकेबा सफ़ा ३३०, अख़बारूल तवाल सफ़ा २५० इबनुल वरदी जिल्द १, सफ़ा १७२, नासिक़ जिल्द ६, सफ़ा २१९ बेहारूल अनवार जिल्द १०, सफ़ा २८६)

करबला में वुरूद :- २, मोहर्रमुल हराम ६१, हिजरी यौमे पंजशम्बा को इमाम हुसैन(अ.) वारिदे करबला हो गये। (नूरूल ऐन सफ़ा ४६, हयवातुल हैवान जिल्द १, सफ़ा ५१, मतालेबुल सुवेल सफ़ा २५०, इरशादे मुफ़ीद व दमए साकेबा सफ़ा ३२१, वाएज़ काशफ़ी और अल्लामा अरबली का बयान है कि जैसे ही इमाम हुसैन(अ.) ने ज़मीने करबला पर क़दम रखा ज़मीने करबला ज़र्द हो गई और एक ऐसा गुबार उठा जिससे आपके चेहरए मुबारक पर परेशानी के आसार नुमायां हो गये। यह देख कर असहाब डर गये और जनाबे उममे कुलसूम रोने लगीं। (कशफ़ुलग़म्मा सफ़ा ६९ व रौज़तुल शोहदा, सफ़ा ३०१)

साहेबे मख़ज़नुल बुका लिखते हैं कि करबला के फ़ौरन बाद जनाबे उम्मे कुलसूम ने इमाम हुसैन(अ.) से अर्ज़ की, भाई जान यह कैसी ज़मीन है कि इस जगह हमारा दिल दहल रहा है। इमाम हुसैन(अ.) ने फ़रमाया बस यह वही मक़ाम है जहां बाबा जान ने सिफ़्फ़ीन के सफ़र में ख़्वाब देखा था, यानी यह वह जगह है जहां हमारा ख़ून बहेगा। किताब

माईन में है कि इसी दिन एक सहाबी ने एक बेरी के दरख़्त से मिसवाक के लिये शाख़ें काटी तो उससे खूने ताज़ा जारी हो गया।

इमाम हुसैन(अ.) का ख़त एहले कूफ़ा के नाम :- करबला पहुंचने के बाद आपने सबसे पहले एतमामे हुज्जत के लिये एहले कूफ़ा के नाम क़ैस इब्ने मसहर के ज़रिये से एक ख़त इरसाल फ़रमाया। जिसमें आपने तहरीर फ़रमाया था कि तुम्हारी दावत पर मैं करबला तक आ गया हूँ। क़ैस ख़त लिये जा रहे थे कि रास्ते में गिरफ़्तार कर लिये गये और उन्हें इब्ने ज़ियाद के सामने कूफ़े ले जाकर पेश कर दिया गया। इब्ने ज़ियाद ने ख़त मांगां क़ैस ने बा रवायते चाक करके फेंक दिया और ब रवायते इस ख़त को खा लिया। इब्ने ज़ियाद ने उन्हें ताज़याने(कोड़े) मार कर शहीद कर दिया। (रौज़तुल शोहदा सफ़ा ३०१, कशफ़ुल ग़म्मा सफ़ा ६६)

अबीदुल्लाह इब्ने ज़ियाद का ख़त इमाम हुसैन (अ.) के नाम

अल्लामा इब्ने तल्हा शाफ़ेई लिखते हैं कि इमाम हुसैन(अ.) के करबला पहुंचने के बाद हुर ने इब्ने ज़ियाद को आपकी करबला पहुंचने की ख़बर दी। उसने इमाम हुसैन (अ.) को फ़ौरन एक ख़त इरसाल किया जिसमें लिखा कि मुझे यज़ीद ने हुक्म दिया है कि मैं आपसे उसके लिये बैएत ले लूँ।, या क़त्ल कर दूँ। इमाम हुसैन(अ.) ने इस ख़त का जवाब न दिया। " अल क़ायमन यदह " और उसे ज़मीन पर फेंक दिया। (मतालेबुल सुवेल सफ़ा २५७ व नूरूल अबसार सफ़ा ११७) इसके बाद आपने मोहम्मद बिन हन्फ़िया को अपने करबला पहुंचने की एक ख़त के ज़रिये से इत्तेला दी और तहरीर फ़रमाया कि मैंने ज़िन्दगी से हाथ धो लिया है और अन्क़रीब उरूसे मौत से हमकनार हो जाऊंगा। (जलाउल एयवान सफ़ा, १६६)

दूसरी मोहर्रम से नवीं मोहर्रम तक के मुख़्तसर वाक़ेयात

दूसरी मोहर्रमुल हराम ६१, हिजरी :- को आप करबला में वारिद हुये। आपने एहले कूफ़ा के नाम ख़त लिखा। आपके नाम इबने ज़ियाद का ख़त आया, इसी तारीख़ को आपके हुकम से नहरे फ़रात के किनारे ख़ेमे नस्ब किये गये।(कशफ़ुल ग़म्मा, सफ़ा ६८ व शहीदे आज़म सफ़ा १११) हुर ने रोका और कहा कि फ़रात से दूर ख़ेमे नस्ब किजिये।(नूरूल ऐन, सफ़ा ४६) अब्बास इब्ने अली को गुस्सा आ गया।(शहीदे आज़म जिल्द २, सफ़ा ३७१) इमाम हुसैन(अ.) ने गुस्से पर क़ाबू किया और बक़ौल अल्लामा असफ़राईनी ३, या ५, मील के फ़ासले पर ख़ेमे नस्ब किये गये। (नूरूल ऐन सफ़ा ४६) नस्बे ख़्याम के

के बाद अभी आप इसमें दाख़िल न हुये थे कि चंद अशआर आपकी ज़बान पर जारी हुये। जनाबे ज़ैनब ने ज्योंही अशआर को सुना इस दरजा रोईं कि बेहोश हो गईं। इमाम रूख़सार पर पानी छिड़क कर होश में लाये। (लहूफ़ सफ़ा १०६ आसारतुल अहज़ान, सफ़ा ३६) फिर आले मोहम्मद(स.) दाख़िले ख़ेमा हुये। उसके बाद साठ हज़ार दिरहम पर १६, मुरब्बा मील ज़मीन ख़रीद कर चंद शरायत के उन्हीं को हिबा कर दी। (कशकोल बहाई, सफ़ा ६१, ज़िकरूल अब्बास, सफ़ा १४४)

तीसरी मोहर्रमुल हराम यौमे जुमा :- को उमर इब्ने साअद ५,६, बक़ौल अल्लामा अरबली २२,०००(बाईस हज़ार सवार) व पियादे लेकर करबला पहुंचा और उसने इमाम हुसैन(अ.) से तबादलए ख़यालात की ख़्वाहिश की। हज़रत ने इरादए कूफ़े का सबब बयान फ़रमाया। उसने इब्ने ज़ियाद को गुफ़्तुगू की तफ़सील लिख दी और यह भी लिखा कि इमाम हुसैन(अ.) फ़रमाते हैं कि अगर अब अहले कूफ़ा मुझे नहीं चाहते तो मैं वापस जाने को तैयार हूँ। इब्ने ज़ियाद ने उमर बिन साद के जवाब में लिखा कि अब जब कि हमने हुसैन(अ.) को चुंगल में ले लिया है तो वह छुटकारा चाहते हैं। " लात हीना मनास " यह हरगिज़ नहीं होगा। इनसे कह दो कि यह अपने तमाम आइज़्ज़ा व अक़रेबा समेत बैएते यज़ीद करें या क़त्ल होने के लिये आमादा हो जांय। मैं बैएत से पहले उनकी किसी बात पर ग़ौर करने के लिये तैयार नहीं हूँ।(नासिख़ व रौज़तुल शोहदा) इसी तीसरी तारीख़ की शाम को हबीब इब्ने मज़ाहिर क़बीलए बनी असद में गये और उनमें से ६० जांबाज इमदादे हुसैनी के लिये तैयार किये। वह उन्हें ला रहे थे कि किसी ने इब्ने ज़ियाद को इत्तेला कर दी। उसने ४००(चार सौ) का लश्कर भेज कर उस कुमक को रूकवा दिया।(नासेख़ुल तवारीख़ जिल्द ६, सफ़ा २३५)

चौथी मोहर्रमुल हराम :- को इब्ने ज़ियाद ने मस्जिदे जामा में ख़ुत्बा दिया जिसमें उसने इमाम हुसैन(अ.) के ख़िलाफ़ लोगों को भड़का दिया और कहा कि हुक्मे यज़ीद से तुम्हारे लिये ख़ज़ानों के मुँह खोल दिये गये हैं। तुम उसके दुश्मन इमाम हुसैन(अ.) से लड़ने के आमादा हो जाओ। उसके कहने से बे शुमार लोग आमादए करबला हो गये और सबसे पहले शिम्र ने रवानगी की दरख़्वास्त की। चुनांचे शिम्र को चार हज़ार (४,०००) इब्ने रकाब को दो हज़ार (२,०००), इब्ने नमीर को चार हज़ार (४,०००) इब्ने रहीना को तीन हज़ार (३,०००) इब्ने हरशा को दो हज़ार(२,०००) सवार दे कर करबला रवाना कर दिया। (दमउस साकेबा, सफ़ा ३२२)

पांचवीं मोहर्रमुल हराम यौमे यकशम्बा :- को शीश इब्ने रबी को चार हज़ार (४,०००) उरवा इब्ने क़ैस को चार हज़ार(४,०००) सिनान इब्न अनस को दस हज़ार (१०,०००) मोहम्मद इब्ने अशअश को एक हज़ार (१,०००) अबदुल्लाह इब्ने हसीन को एक

हज़ार का लश्कर देकर रवाना कर दिया। (नासिखुल तवारीख़ जिल्द ६ सफा २३३ दमए साकेबा सफ़ा ३२२)

छठी मोर्हरमुल हराम यौमे दोशम्बा :- को ख़ूली इब्ने यज़ीद असबही को दसहज़ार (१०,०००)इब्नुल हुर को तीन हज़ार (३,०००) हजाज इब्ने हुर को एक हज़ार का लश्कर देकर रवाना कर दिया गया। इनके अलावा छोटे बड़े और कई लश्कर इरसाल करने के बाद इब्ने ज़्याद ने उमर इब्ने साद को लिख कि अब तक तुझे अस्सी हज़ार का कूफ़ी लश्कर भेज चुका हूँ,इनमें हेजाज़ी और शामीं शामिल नहीं हैं। तुझे चाहिए कि बिला हीला हवाला हुसैन(अ.) को कत्ल कर दे। (नासिखुल जिल्द ६ सफा २३३ दमए साकेबा सफ़ा ३२२ जलाउल ऐन सफ़ा १६७) इसी तारीख़ को खूली इब्ने यज़ीद ने इब्ने ज़्याद के नाम एक ख़त इरसाल किया जिसमें उमर इब्ने साद के लिए लिखा कि यह इमाम हुसैन (अ.) से रात को छुप कर मिलता है और इनसे बात चीत किया करता है। इब्ने ज़्याद ने इस खत को पाते ही उमरे साद के नाम एक ख़त लिखा कि मुझे तेरी तमाम हरकतों की इत्तिला है तू छुपकर बातें करता है। देख मेरा ख़त पाते ही इमाम हुसैन (अ.) पर पानी बन्द कर दे और उन्हें जल्द अज़ जल्द मौत के घाट उतारने की कोशिश कर। (नासिखुल तवारीख़ जिल्द ६ सफा२३६अख़बारुल तौल सफा२५६ तबरी जिल्द १ सफा २१२ अलबराता व अनहातिया जिल्द८ सफा१७५)।

सातवीं मोहर्रमुल हराम यौमें सह शम्बाः- उमर इब्ने हजाज को पाँचसौ सवारों समेत नहरे फुरात परइसलिए मुक़र्रर कर दिया कि इमाम हुसैन (अ.) के ख़ेमें तक पानी न पहुँच पाए(तारीख़े तबरी जिल्द १ सफा ३१३ व नासिखुल तवारीख़ जिल्द ६ सफा२३७) फिर मज़ीद एहतियात के लिए चार हज़र (४,०००) का लश्कर देकर हजर को एक हज़ार (१,०००) का लश्कर दे कर शीश इब्ने रबी को रवाना किया गया। (मक़तल मख़निफ़ सफ़ा ३२) और पानी की बन्दिश कर दी गई।और पानी बन्द होने के बाद अब्दुल्ला इब्ने हसीन ने निहायत करीह लफ़्जो में ताना ज़नी की (नूरूल ऐन सफा ३१) जिससे इमाम हुसैन (अ.) को सख़्त सदमा पहुँचा (तज़किरा सफ़ा १२१) फिर इब्ने हौशब ने ताना ज़नी की जिसका जवाब हज़रत अब्बास ने दिया। (अल इमामत वल सियासत जिल्द १ सफ़ा ८) आपने ग़ालेबन ताना ज़नी के जवाब में ख़मे से १९ क़दम के फ़ासले पर जानिबे क़िबला एक ज़र्ब तीशा से चशमा जारी कर दिया। (मक़तले अवाम सफ़ा ७८ व आसम कूफ़ी सफ़ा २६६) और यह बता दिया कि हमारे लिए पानी की कमी नहीं है लेकिन हम इस मुक़ाम पर मोजिज़ा दिखाने के लिए नहीं आए बल्कि इम्तेहान देने आऐ हैं।

आठवीं मोहर्रमुल हराम यौमे चहार शम्बा :- की शब को ख़ेमए आले मोहम्मद व आले मोहम्मद (स) से पानी बिल्कुल ग़एब हो गया इस प्यास की शिद्दत ने बच्चों को बेचैन कर दिया है इमाम हुसैन (अ.) ने हालात को देखकर हज़रत अब्बास को पानी लाने

का हुक्म दियाआप चन्द सवारों को ले कर तशरीफ ले गए और बड़ी मुश्किलों से पानी लाए। **वज़लका समीउल अब्बास सक्का** इसी सक्क़ाई की वजह से अब्बास को सक्क़ा कहा जाता है।(अख़्बारूल तवाल सफ़ा २५३ जलाउल ऐन सफ़ा १६८ व दमए साकेबा सफ़ा ३२३) रात गुज़रने के बाद जब सुबह हुई तो यज़ीद इब्ने हसीन सहराई ने ब इजाज़त इमाम हुसैन ,इब्ने साद को फ़हमाईश की लेकिन कोई नतीजा बरामद न हुआ। इसने कहा यह कैसे हो सकता है कि हुसैन को पानी देकर हुकूमत " रै " छोड़ दूँ। (नासिखुल तवारीख़ जिल्द ३ सफ़ा ३३८) इमाम शिबली लिखते हैं कि इब्ने हसीन और इब्ने साद की गुफ़्तुगू के बाद इमाम हुसैन (अ.) ने अपने ख़ेमों के गिर्द ख़न्दक़ खोदने का हुक्म दिया।(नुरूल अबसार सफ़ा ११७) इसके बाद हज़रत अब्बास को हुक्म दिया कि कुऐं खोद कर पानी बरामद करो। आपने कुआँ तो खोदा। लेकिन पानी न निकला। (मक़तल अबी मख़नफ़ सफ़ा २७)

नवीं मोहर्रमुल हराम यौमे पंजशम्बा :- की शब को इमाम हुसैन (अ.) और उमरे साद में आख़री गुफ़्तुगू हुई। आपके हमराह हज़रत अब्बास और अली अकबर भी थे। आपने गुफ़्तुगू में हर किस्म की हुज्जत तमाम कर ली। (दमए साकेबा सफ़ा ३२३) नवीं की सुबह को आपने हज़रत अब्बास को फिर कुआँ खोदने का हुक्म दिया लेकिन पानी बरामद न हुआ। (नासिखुल तवारीख़ जिल्द ६ सफ़ा २४५) थोड़ी देर के बाद इमाम हुसैन ने बच्चों की हालत के पेशे नज़र फिर अब्बास से कुआँ खोदने की फ़रमाईश की आपने सई बलीग़ शुरू कर दी जब बच्चों ने कुआँ खुदता हुआ देखा तो सब कूज़े लेकर आ पहुँचे। अभी पानी निकलने न पाया था कि दुश्मन ने आकर उसे बन्द कर दिया। **फहर बत अतफ़ाले ख़्याम** दुश्मनों को देखकर बच्चे खेमों जा छुपे। फिर थोड़ी देर के बाद हज़रत अब्बास ने कुआँ खोदा वह भी बन्द कर दिया गया **हत्ताहफ़रा अरबन**। यहाँ तक कि चार कुएं खोदे और पानी हासिल न कर सके। ब रवाएते पाँचवीं मरतबा पनी बरामद हुआ। सकीना ने कूज़ा भरा और दुश्मन के ख़ौफ़ से खेमें की तरफ़ भागीं तनाबे ख़ेमा में पाँव उलझे और आप गिर पड़ीं पानी जाता रहा और दुश्मन ने कुआँ बन्द कर दिया सकीना प्यासी की पयासी ही रहीं। (खुलासेतुल मसाएब सफ़ा ११२ तबा नवल किशोर सफ़ा १८७६) इसके बाद इमाम हुसैन (अ.) एक नाक़े पर सवार हो कर दुश्मन के क़रीब गए और अपना तारुफ़ कराया लेकिन कुछ न बना (कशफुल ग़म्मा सफ़ा ७०) मुवर्रेख़ीन लिखते हैं कि नवीं तारीख़ को शिम्र कूफ़ा वापस गया और उसने उमर इब्ने साद की शिकाएत करके इब्ने ज़्याद से एक सख़्त हुक्म हासिल किया जिसका मक़सद यह था कि अगर हुसैन(अ.) बैअत नहीं करते तो उन्हें क़तल करके उनकी लाश पर घोड़े दौड़ा दें और अगर तुझसे यह न हो सके तो शिम्र को चार्ज दे दे हमने उसे हुकमे तामील हुक्म यज़ीद दिया है। (रौज़तुल शोहदा सफ़ा ३०६ व दमए साकेबा सफ़ा ३२३) इब्ने ज़्याद का हुक्म पाते ही इब्ने साद तामील पर तैय्यार हो गया,इसी नवीं तारीख़ को शिम्र ने हज़रत अब्बास और उनके भाईयों को अमान की पेश कश की उन्होंने बड़ी देर से उसे

ठुकरा दिया।(जलाउल ऐन सफा १६८ तबरी सफा२३७ जिल्द ६)तफसील के लिए मुलाहेज़ा हो ज़िक्ररूल अब्बास सफा १७६ से १८२ इसी नवीं की शाम आने से पहले शिम्र की तहरीक से इब्ने साद ने हमले का हुक्म दे दिया। इमाम हुसैन (अ.) ख़ेमें में तशरीफ फरमा थे। अपको हज़रते ज़ैनब फिर हज़रते अब्बास ने फिर दुश्मन के आने की इत्तिला दी। हज़रत ने फरमाया कि मुझे अभी नींद सी आगई थी मैंने आँहज़रत को ख़्वाब में देखा उन्होने फरमाया कि (अनका तरो ग़दा) हुसैन (अ.) तुम कल मेरे पास पहुचँ जाओगे (दमए साकेबा ३२२) जनाबे ज़ैनब रोने लगीं और इमाम हुसैन (अ.) ने हज़रते अब्बास से फरमाया कि भय्या तुम जाकर उन दुश्मनों से एक शब की मोहलत ले लो। हज़रते अब्बास तशरीफ ले गए और लड़ाई एक शब के लिए मुलतवी हो गई। (तरीखे इस्लाम २७२ तबा गोरखपुर १६३१ ई०) जंग के रोकने की ग़रज़ क्या थी। उस के लिए मोलाहेज़ा हो ज़िकरूल अब्बास सफा १८६)

शबे आशूर

नवीं का दिन गुज़रा ,आयूर की रात आई ,इलतवाए जंग के बाद इमाम हुसैन (अ.) को जिस चीज़ की ज़्यादा फिक्र थी वह यह थी कि अपने असहाब को मौत से बचा लें । आपने रात के वक़्त अपने असहाब और रिश्तेदारों को जमा करके फरमाया। इसमें शक नहीं कि तुमसे बेहतर रिश्तेदार और असहाब किसी को नसीब नही हुए लेकिन देखो चूँकि यह सिर्फ मुझी को कत्ल करना चाहते हैं। इसलिए मैं तुम्हारी गर्दनों से तौक़े बैएत उतारे लेता हूँ। तुम रात के अँधेरे में अपनी जान बचा कर निकल जाओ। यह सुनना था कि हज़रते अब्बास,फरज़न्दाने मुस्लिम बिन अक़ील , मुस्लिम इब्ने औसजा , ज़ोहैर इब्ने क़ैन,साद इब्ने अब्दुल्ला खड़े हो गए और अर्ज़ करने लगे , मौला आपने यह क्या फरमाया। "अरे लानत है उस ज़िन्दगी पर जो आपके बाद बाक़ी रहे।(इब्न अल वर्दी जिल्द १ सफा १७३ इरशाद सफा २६७ व दमए साकेबा सफ़ा ३२४ जला उल अयून १६६ इन्सानियत मौत के दरवाज़े पर सफ़ा ७२)

खुतबे के बाद आपने हज़रते अब्बास को पानी लाने का हुक्म दिया। आप ३० सवारों और २० प्यादो समेत नहर पर तशरीफ ले गए और बड़ी देर जगं करने के बावजूद पानी ना लासके (तज़किरए ख़्वास अल उम्मता सफा१४१) उसके बाद इमाम हुसैन (अ.) मौक़ए जगं देखने के लिए मैदान की तरफ तशरीफ ले गए वापसी में ख़ेमए जनाबे ज़ैनब में गए । जनाबे ज़ैनब ने पूछा भय्या आपने असहाब का इम्तिहान ले लिया है या नहीं। आपने इत्मिनान दिलाया। फिर हिलाल इब्ने नाफ़ए ने जनाबे ज़ैनब को मुतमइन किया (दमए साकेबा सफ़ा ३२५, जनाबे ज़ैनब से गुफ़्तुगू के बाद आपने फिर एक खुत्बा फ़रमाया और आइज़्ज़ा

व असहाब से मिस्ले, साकिब कहा कि यह लोग मेरी जान चाहते हैं तुम लोग अपनी जानें न दो। यह सुन कर असहाब व रिश्तेदारों ने बड़ा दिलेराना जवाब दिया। (नासिख़ जिल्द ६, सफ़ा २२७) इसके बाद इमाम हुसैन(अ.) ने अपने असहाब को जन्नत दिखला दी। (वसाएले मुज़फ्फ़री सफ़ा ३६४)

अल्लामा कन्तूरी लिखते हैं कि पानी न होने की वजह से ख़ेमे में शदीद इज़्तेराब पैदा हो गया और जनाबे ज़ैनब के गिर्द २० लड़के और लड़कियां जमा हो कर फ़रयाद करने लगीं। (मातीं जिल्द १, सफ़ा ३१८) यह हालत बुरैर हमादानी को मालूम हो गई। वह कुछ साथियों को लेकर नहर पर पहुँचे। ज़बरदस्त जंग हुई। हज़रत अब्बास मदद को भेजे गये। चंद जांबाज़ काम आ गये। ग़ालेबन इसी मौक़े पर हज़रत अब्बास के एक भाई अब्बास अल असग़र भी शहीद हुये हैं। (नासिख़ जिल्द ६, सफ़ा २८६) अल गर्ज़ बुरैर हमदानी बहुत मुश्किल से एक मश्क ख़ेमे तक ले ही आये। बच्चे बेताबी की वजह से इस मश्क पर जा गिरें मश्क का मुँह खुल गया, पानी बह गया। बच्चों और औरतों के साथ बुरैर ने भी मुँह पीट लिया और इन्तेहाई हसरत और अफ़सोस के साथ कहा। हाय आले मोहम्मद(स.) की प्यास न बुझ सकी। (मायतीन जिल्द १, सफ़ा ३१६) अल्लामा काशफ़ी लिखते हैं कि पानी की जद्दो जेहद की नाकामी के बाद इमाम हुसैन(अ.) ने हुक्म दिया, कि सब अपने अपने ख़ेमों में जाकर इबादत में मशग़ूल हो जायें। (रौज़तुल शोहदा सफ़ा ३१२)

मुजाहेदीने करबला की आख़री सहर

इमाम हुसैन(अ.) और आपके असहाब व आइज़्ज़ा मशगूले इबादत हैं। सफ़ैदए सहरी नमूदार होने को है। ज़िन्दगी की आख़िरी सुबह होने वाली है। नागाह इमाम हुसैन (अ.) की आँख लग गई। आपने ख़्वाब में देखा कि बहुत से कुत्ते आप पर हमला आवर हैं और इन कुत्तों में एक अब्लक़ मबरूस कुत्ता है जो बहुत ही सख़्ती कर रहा है। (दमए साकेबा सफ़ा ३२६)

अल्लामा दुमीरी लिखते हैं कि इमाम हुसैन(अ.) को शिम्र ने शहीद किया है। जो मबरूस था। (हैवातुल हैवान जिल्द १, सफ़ा ५१)

काशफ़ी का बयान है कि जब सुबह का इब्तेदाई हिस्सा ज़ाहिर हो गया तो आसमान से आवाज़ आई या ख़ैलील उल्लाह अरक़बी (ऐ अल्लाह के बहादुर सिपाहियों तैयार हो जाओ। मौक़ए इम्तेहान और वक़्ते मौत आ रहा है। उसके बाद सुबह हो गई। (रौज़तुल शोहदा सफ़ा ३१२, महीजुल एहज़ान सफ़ा १०२)

सुबह आशूरा

(तुलूए सुबहे महशर थी तुलूए सुबहे आशूरा)

दस मोहर्रमुल हराम ६१, हिजरी यौमे जुमा :-रात गुज़री, सुबहे काज़िब का ज़ुहूर हुआ तो यज़ीदी काज़िबो और झूठों ने अपने लशकर की तरतीब दे ली और सुबह सादिक़ का तुलू हुआ तो सादक़ैन ने नमाज़े सुबह का तहय्या किया। हज़रत अली अकबर ने अज़ां कही और इमाम हुसैन(अ.) ने नमाज़े जमाअत पढ़ाई। अल्लाह के सच्चे बन्दे अभी मुसल्ले पर ही थे कि अस्सी हज़ार ८०,००० के लशकर में हमला वर होने के आसार ज़ाहिर होने लगे। इमाम मुसल्ले से उठ खड़े हुये और आपने ७२, जांबाजों पर मुश्तमिल लशकर की तन्ज़ीम यूँ फ़रमा दी। मैमना २० बहादुर, मैसरा २० बहादुर बाक़ी क़ल्बे लशकर मैमना के सरदार ज़ुहैरेक़ैन मैसरा के हबीब इब्ने मज़ाहिर और अलम्दारे लश्कर हज़रत अब्बास को क़रार दे दिया (जलाल अल अयून सफ़ा २०१ अख़बारूल तवारीख़ सफ़ा २०३) इसके बाद हज़रत अब्बास ने फ़रमाया कि जगं छिड़ी ही चाहती है। भय्या एक दफ़ा पानी की और कोशिश कर लो। और सुनो सिर्फ अपने भाई भतीजों को जमा करके कुआँ खोदो,यानी असहाब को ज़हमत ना दो। हज़रत अब्बास (अ) ने कमाले जाफिशानी से कुआँ खोदा,लेकिन कोई नतीजा ना निकला,फिर दूसरा कुआँ खोदावह भी बे सूद ही रहा (दमउस साकेबा सफ़ा ३२६ हालाते सुबह आशूरा) इमाम हुसैन(अ.) खेमें में थे और बक़ौले अब्दुल हमीद ऐडीटर रिसाला मौलवी देहली,ठीक १० बजे लश्कर वालों को उमर इब्ने साद का अर्जन्ट हुक्म मिलता है कि हुसैन(अ.) को क़त्ल करने के लिए आगे बढ़ो,टिड्डी दल फ़ौज ने हरकत की और तीन दिन के भूखे प्यासे थोड़े से मुसाफिरों को क़त्ल करने दुश्मनाने इस्लाम आगे बढ़े। (शहीदे आज़म सफ़ा १६६ तबा देहली) हज़रत ने घोड़ों की टापों की आवाज़ सुनी। रसूले खुदा (स.) की ज़िरह ज़ेब तन की और ख़न्दक़ में आग देने का हुक्म देकर आप असहाब की फ़हमाईश करने लगे।(नासिख़ जिल्द ६ सफ़ा २४५) इतने में दुश्मनों ने खेमे को घेर लिया। बुरैर इब्ने ख़ज़ीर ने बाहर निकल कर उन्हे समझाया लेकिन कोई फ़ाएदा न हुआ,फिर आप खुद दुश्मनों के सामने आए और अपना तारूफ़ कराया और बरवाएते यह भी फ़रमाया कि मुझे छोड़ दो,मैं यहाँ से हिन्द किसी और तरफ़ को चला जाँउ। मगर उन्होंने एक न सुनीं फिर आपने फ़रमाया कि यह बता दो कि मुझे किस जुर्म की बिना पर क़त्ल करना चाहते हो। उन्होंने जवाब दिया **नक़ तलक़ बुग़ज़न ले अबीका** हम तुम्हें तुम्हारे बाप की दुश्मनी में कत्ल कर रहे हैं।(नयाबुल मोवद्दता सफ़ा २४६)फिर आपने क़ुरान मजीद को हकम क़रार दिया। लेकिन उन्होंने एक न मानी।(नासिख़ुल तवारीख़ जिल्द ६ २५०) फिर आपने बारगाहे खुदा वन्दी में दस्ते दुआ बलन्द किया और आख़िर में बरावाते (दमउस साकेबा सफ़ा ३२८) अर्ज़

की **अल्ला हुम्मा सलता अलैहिम गुलामसक़ीफ़,** खुदाया इन पर क़बीलए सक़ीफ़ के एक गुलाम (मुख़्तार) को मुसल्लत करके उन्हें ज़ुल्म आफ़रीनी का मज़ा चखाए।

जनाबे हुर की आमदः-इमाम हुसैन (अ.) के मवाएज़ का असर सिर्फ हुर पर पड़ा। उन्होने इब्ने साद के पस जाकर आख़री इरादह मालूम किया फिर अपने घोड़े को ऐड़ दी और इमाम की ख़िदमत में हाज़िर हो गए। (तारीख़े तबरी) इसके बाद घोड़े से उतर कर इमाम हुसैन(अ.) की रेकाब को बोसा दिया (रौज़तुल अहबाब) इमामाने हुर को माफी देकर जन्नत की बशारत दी(तबरी) दमउस साकेबा सफ़ा ३३०) में है कि हुर के साथ इसका बेटा भी था। हमीद इब्ने मुस्लिम का बयान है कि उमरे साद ने लशकरे हुसैनी पर सबसे पहले तीर चलाया। इसके बाद तीरों की बारिश शुरू हुई, रौज़तुल अहबाब में है कि जनाबे हुर को क़सूर इब्ने कनाना और इरशाद में है कि अय्यूब मशरह ने एक कूफ़ी की मद्द से शाहीद किया।(तफसील के लिए मुलाहेज़ा हो किताब "बहत्तर सितारे" मोअल्लेफ़ा हक़ीर तबा लाहौर।

इमाम हुसैन (अ.) और उनके असहाब व अइज़्ज़ा की हश्र आफ़रीं जंग

अल्लामा **ईसा अरबली** लिखते हैं कि जनाबे हुर की शहादत के बाद उमरे साद के लश्कर से दो नाबकार मुबारज़ तलब हुएजिनकेनाम निसयान व सालिम थे। इनके मुक़ाबले के लिए इमाम हुसैन (अ.) के लश्कर से जनाबे हबीब इब्ने मज़ाहिर और यज़ीद इब्ने हसीन बरामद हुए और इन दोनो को चन्द हमलों में फना के घाट उतार दिया।इसके बाद माक़िल इब्ने यज़ीद सामने आया।जनाबे यज़ीद इब्ने हसीन और बक़ौले मजलिसी बुरैर इब्ने ख़ज़ीर हमादानी ने उसे क़त्ल कर डाला। फिर मज़ाहिम इब्ने हरीस सामने आया। उसे जनाबे नाफे इबने हिलाल ने क़त्ल कर दिया। (कशफ़ुल ग़म्मा सफ़ा ७१)

जगें मग़लूबा :- उमर इब्ने साद ने जब हुसैनी बहादुरों की शाने शुजाअत देखी तो समझ गया कि इनसे इनफ़ेरादी मुक़ाबेला न मुम्किन है। लेहाज़ा इजतेमाई हमले का प्रेग्राम बनाया और अपने चीफ़ कमानडर को हुक्म दिया कि कसीर तादात में कमान अन्दाज़ों को ला कर यक बारगी तीर बारानी कर दो। जिसका नतीजा यह हुआ कि इमाम हुसैन (अ.) का तक़रीबन तमाम लशकर मजरूह हो गया ३२, या ४०, या २२, या ५०, असहाब इसी वक़्त शहीद हो गए। (मुलाहेज़ हो तफ़सील के लिए "बहत्तर सितारे" मोअल्लेफ़ा हक़ीर)

अल्लामा इब्ने क़ुतीबा लिखते हैं कि हज़रत इमाम हुसैन (अ.) ने इरशाद फ़रमाया "अन लस्तुम बराज़ैन बारूहल इराक़ फ़ातिर कूनी लाज़हबा अल्ल सिनदह" तुम अगर मेरे इराक़ पहुँचने पर राज़ी नहीं हो तो मुझे छोड़ दो। मैं सिन्ध (हिन्द) चला जाँऊ। २ तफ़सील के लिए देखो। मुख़्तारे आले मोहम्मद तबा लाहौर १२ मना।

जंगे मग़लूबा के बाद हज़रत इमाम हुसैन (अ.) अपने बहादुरों को ले कर जिनकी कुल तादात ३२ थी। मैदान में निकल आए और इस बे जिगरी से लड़े कि लश्करे मुख़ालिफ के छक्के छूट गए ,जिस तरफ़ हमला करते थे सफें साफ हो जातीं थीं और इस हमले में बेशुमार दुश्मन मौत के घाट उतार दिए। इन भूखे प्यासे बहादुर शेरों ने लश्कर में ऐसी हल चल मचा दी,जिससे अफ़सरान तक के हाथ पावँ फुला दिए। बिल आख़िर लश्करे कूफा के कमानीर उरवा बिन कैस ने उमर इब्ने साद को कहला भेजा कि जल्द लश्कर और खुसूसन तीर अन्दाज़ भेजो। क्योंकि इन थोड़े से अलवी बहादुरोंने हमारी दुरगत बना दी है। (तारीखे़ कामिल जिल्द४ सफा ३५ तबरी जिल्द ६ सफ़ा २५०बहारूल अनवार जिल्द६ सफा २८६)उमर इब्ने साद ने फौरन५०० कमानदारों को हसीन इब्ने नमीर के हमराह उरवा बिन कै़स की कुमक में भेज दिया। इन रूबाहों ने पहुँचते ही तीर बारानी शुरू कर दी और इसका नतीजा यह हुआ कि इमाम हुसैन(अ.) के कई बहादुर काम आ गए। और तक़रीबन कुल के कुल प्यादा हो गए । इसी दौरान उमर इब्ने साद ने आवाज़ दी कि आग लगाओ हम खेमों को जलाऐंगें। यह देख कर इमाम हुसैन (अ.) ने शिम्र को पुकारा कि यह क्या बे हयाई की जा रही है। इतने में शबश इब्ने अरबी आ गया और उसने हरकते नाशाइस्ता से बाज़ रखा। (बहारूल अनवार जिल्द १० सफ़ा २६६)

मुवर्रिख़ इब्ने असीर और अल्लामा मजलिसी लिखते हैं कि दौराने जगं में नमाज़े ज़ोहर का वक़्त आ गया तो अबू सुमामा समदी या सैदावी ने ख़िदमते इमाम हुसैन (अ.) में अर्ज़ की मौला अगरचे हम दुश्मनो में घिरे हुए हैं,लेकिन दिल यही चाहता है कि नमाज़े ज़ोहर अदा कर ली जाए। इमाम ने अबू समामा को दोआ दी और नमाज़ का तहयया फरमाया। तीर चूँकि मुसलसल आ रहे थे इस लिए ज़ुहैर इब्ने कै़न और साद इब्ने अब्दुल्ला इमाम हुसैन (अ.) के सामने खड़े हो कर तीरों को सीनों पर लेने लगे। यहँ तक कि इमाम हुसैन (अ.) ने नमाज़ तमाम फ़रमा ली। मुवर्रेख़ीन लिखते है कि तलवारों और नैज़ो के ज़ख्म के अलावा १३ तीर सईद के सीने में पेवस्त हो गए। नमाज़ तमाम हुई और जनाबे सईद भी दुनियाँ से रूख़सत हो गए (तरीखे़ कामिल बेहारूल जिल्द १० सफ़ा २६६) जगें मग़लूबा के बाद जो ३२ असहाब बचे उनमें से बाज़ के मुख़्तसर हालात दर्ज ज़ैल किए जाते हैं।

हज़रत इमाम हुसैन (अ.) के मशहूर असहाब और उनकी शहादत

हबीब इब्ने मज़ाहिर :- जनाबे हबीब इब्ने मज़ाहिर इब्ने रेयाब इब्ने अश्तर जनजवान इब्ने फक़अस इब्ने तरीफ़ इब्ने उमर बिन कै़स हरस इब्ने साअलबा, इब्ने दवान, इब्ने असद अबू क़ासिमअसदी के बेटे इमाम हुसैन(अ.)के बचपने के दोस्त थे। उन्हें रिसालत माब(स.) के सहाबी होने का भी शरफ़ हासिल था। यह असहाब अमीरल मोमनीन में भी

थे और हर जगं में शरीक रहे । उन्होने कूफे में हज़रत मुस्लिम बिन अक़ील का पूरा पूरा साथ दिया और यह शहादत के बाद करबला को पा पियादा रवाना हो कर इमाम हुसैन (अ) की ख़िदमत में पहुँचे थे। करबला पहुँच कर उन्होने पूरी कोशिश की बनी असद से कुछ मदद ले आए। लेकिन उमरे साद के लशकर ने रास्ते में मज़ाहेमत की । शबे आशूर एक शब की मोहलत के लिए जब हज़रत अब्बास गए तो हबीब भी साथ थे । नमाज़े ज़ोहर आशूरा के मौके पर हसीन इब्ने नमीर की बद कलामी का जवाब हबीब ही ने दिया था। और उसके कहने पर "हुसैन की नमाज़ कुबूल न होगी हबीब ने बढ कर घाड़े के मुँह पर तलवार लगाई थी। फिर मैदान में मुसलसल लोगो से लड़ते और उन्हें कत्ल करते रहे। यहाँ तक कि बदील इब्ने हरीम अक़्फाई ने आप पर तलवार लगाई और बनी तमीम के एक शख़्स ने नैज़ा मारा और हसीन बिन नमीर ने सर पर तलवार लगाई। आप घोड़े से गिर पड़े। इस वक़्त एक तमीमी ने सर काट लिया हबीब की शहादत के बाद इमाम हुसैन (अ.) ने इन्तेहाई र्दद अंगेज़ लहजे में कहा। ऐ हबीब मैं तुमको और अपने असहाब को खुदा से लूँगा।

ज़ुहैर इब्ने कैन :- जनाबे ज़ुहैर कैन इब्ने कैस, नमीरी बजल्ली के बेटे थे। यह कौम के सरदार और रईस थे। ६०, हिजरी में इमाम हुसैन (अ.) के साथ हुए। शबे आशूर हज़रत अब्बास जब एक शब की मोहलत के लिए आगे बढ़े तो आपके हमराह ज़ुहैर भी थे। इमाम हुसैन (अ.) की जिन्दगी में जब शिम्र के पास आकर उसे जलाना चाहा था। तो जनाबे ज़ुहैर ही ने इससे मुक़ाबला करके इस इरादे से बाज रखा था,और नमाज़े जोहर के लिए सईद के साथ ज़ुहैर ने भी इमाम हुसैन (अ) की हिफाज़त के लिए सीना तान दिया था। आपने मैदान में ज़बर दस्त जगं की बिल आख़िर कसीर इब्ने अब्दुल्ला शुऐबी और महाजिरइब्ने औस तमीमी ने आप को शहीद कर दिया। शहादत के बाद इमाम हुसैन लाश पर तशरीफ लाए और कहा ज़ुहैर खुदा तुम पर रहमत नाज़िल करे और तुम्हारे क़ातिलों पर जो बन्दरों और रीछों की तरह मसख़ हो गए हैं लानत करे।

नाफ़े इब्ने हिलाल :- जनाबे नाफ़े, हिलाल इब्ने नाफे इब्ने जमल इब्न साद अशीरा इब्ने मद हज जमली के बेटे थे। आप शरीफुन नफ़्स सरदारे क़ौम, बहादुर और क़ारीए क़ुरआन रावीउल हदीस थे। आप हर जगं में अमीरल मोमिनीन के साथ रहे करबला में जब हज़रत अब्बास पानी की जद्दो जहद के लिए नहरे फ़ुरात पर तशरीफ ले गए थे तो नाफे इब्ने हिलाल आपके साथ थे। मैदाने कारज़ार करबला में नाफ़े इब्ने हिलाल ने १२ दुश्मनों को ज़हर में बुझे हुए तीर से क़तल किया फिर जब तीर ख़त्म हो गए तो तलवार से लड़ने लगे। बिल आख़िर तीर बारानी की गई और आपके दोनों बाज़ू टूट गए और आप गिरफ़्तार होकर इब्ने साद के सामने लाए गए। फिर शिम्र के हाथों क़त्ल कर दिए गए।

मुस्लिम इब्ने औसजा :- जनाबे मुस्लिम ,औसजा इब्ने साद इब्ने सआलबा

इब्ने दोदान इब्ने असद, इब्ने हज़ीमा अबू हजल असदीसादी के बेटे थे। यह शरीफ़ तरीन मर्दुम, आबिदो ज़ाहिद और सहाबी रसूल थे। अकसर इस्लामी जगों में शरीक रहे। कुफे में मुस्लिम बिन अक़ील की पूरी ताक़त से मदद् की आपके हमराह मदहज चार क़बीले तमीम व हमदान व कुन्दा व रबीआ थे। जनाबे हानी व मुस्लिम की शहादत के बाद अपने बाल बच्चों समेत करबला आ पहुँचे और इमाम हुसैन(अ.) के क़दमों में शरफ़े शहादत से सरफराज़ हुए। मुवर्रेख़ीन का बयान है कि मुस्लिम इब्ने औसजा नेहायत दिलेरी के साथ जगं फ़रमा रहे थे कि मुस्लिम इब्ने अब्दुल्ला ज़ेआनी तऊन और अब्दुल्ला इब्ने ख़स्तकारह ने मिल कर आपको शाहीद कर दिया।

आबिस शाकरी :- जनाबे आबिस, अबू शबीबबिन शाकरी इब्ने रबीह बिन मालिक इबने साब इबने माविया बिन कसीर बिन मलिक इब्ने चश्म इब्ने हम्दानी के बेटे थे। आप निहायत बहादुर , रईस , आबिद शब ज़िन्दह दार और अमीरल मोमीनीन के मुख़लिस तरीन मानने वालों में थे। आपके क़बीलए बनू शाकिर पर अमीरल मोमिनीन को बड़ा एतिमाद था। इसी वजह से जंगे सिफ़्फ़ीन में फ़रमाया था कि अगर क़बीलए बनी शाकिर के एक हज़ार अफ़राद मौजूद हों तो दुनियाँ में इस्लाम के सिवा कोई मज़हब बाक़ी ही ना रहे। आबिस ने कूफ़े में जनाबे मुस्लिम का पूरा साथ दिया और जब जनाबे मुस्लिम कूफ़ा पहूँचे तो आपने सबसे पहले तआउन का यक़ीन दिलाया था। आप कूफ़े से जनाबे मुस्लिम का ख़त ले कर मक्का गए थे और वहीं से इमाम हुसैन(अ.) के साथ हो गए और यौमे आशूरा शहीद हो गए। आप मैदान में आए और मुबारज़ तलबी की। मगर किसी में दम ना था कि आबिस से लड़ता बिल आख़िर इन पर इजतेमाई तौर पर पथराव किया। फिर बेशुमार अफ़राद ने मिल कर उन्हें शहीद करके सर काट लिया।

बुरैर हमादानी :- जनाबे बुरैर इब्ने खज़ीर हम्दानी मशरक़ी, बनू मशरिक़ के क़बीलए हम्दान के एक मोअम्मर ताबेई थे। यह निहायत बहादुर आबिद और ज़ाहिद और बेमिस्ल क़ारीए क़ुरआन थे। इनका शुमार कूफ़े के शोरफ़ा में था। उन्होंने कूफ़े से मक्के जा कर इमाम हुसैन(अ.) की हमराही इख़्तेयार की थी और ताहयात साथ रहे। शबे आशूर पानी लाने में उन्होंने अज़ीम जद्दो जेहद की थी। मैदाने जंग में आपका मुक़ाबला यज़ीद इब्ने माक़ल से हुआ बुरैर ने उसे क़त्ल कर दिया। फिर रज़ी इब्ने मन्क़ज़ अब्दी सामने आया। आपने ज़मीन पर दे मारा। इतने में कआब इब्ने जाबिर अज़दी ने आपकी पुश्त में नैज़ा मारा और आपने उस रज़ी की नाक दांत से काट ली। जिसके सीने पर सवार थे। कआब का नैज़ा बुरैर की पुश्त में रह गया और उसने तलवार से बुरैर को शहीद कर दिया।

इमाम हुसैन(अ.) के आइज़्ज़ा व अक़रेबा और औलाद की शहादत

असहाबे बावफ़ा और अन्साराने बासफा की शहादत के बाद आपके अइज़्ज़ा व अक़रोबा यके बाद दीगरे मैदाने कारज़ार में आकर शहीद हो गए। मेरे नज़दीक बनी हाशिम में सबसे पहले जिसने शरफे शहादत हासिल किया वह अब्दुल्ला इब्ने मुस्लिम इब्ने अक़ील थे। आप हज़रत अली की बेटी रूकय्या बिन्ते सहबा बिन्ते उबाद बिन्ते रबियाबिन यहिया बिन अब्द बिन अलक़मा सआलबिया के फरज़न्द थे। आप मैदान में तशरीफ लाए और ऐसा हमला शेराना किया कि रूबाहों की हिम्में पस्त हो गईं। आपने तीन हमले फ़रमाऐं और ९० दुश्मनों को फ़िन्नार किया। दौराने जगं में उमर बिन सबीह सैदावी ने आपकी पेशानी पर तीर मारा। आपने फ़ितरत के तक़ाजे पर तीर पहुँने से पहले अपना हाथ पेशानी पर रख लिया और हाथ पेशानी से इस तरह पेवस्त हो गया कि फिर जुदा न हुआ। फिर उसने दूसरा तीर मारा जो साहब ज़ादे कि दिल पर लगा, और आप ज़मीन पर तशरीफ़ लाए। (नुरूलऐन तरजुमा अबसारूल हुसैन सफा ७६) आपको ख़ाको खूँ में गलताँ देख कर आपके भाई मोहम्मद बिन मुस्लिम आगे बढ़े और उन्होंने भी ज़बर दस्त जगं की बिल आख़िर अबू जरहम अज़्वी और लक़ीत और इब्ने अयास जहमी ने आपको शहीद कर दिया। (बहारूल अनवार जिल्द १० सफ़ा ३०२) इनके बाद जाफ़र बिन अक़ील इब्ने अबी तालिब मैदान में तशरीफ़ ले गऐ। आपने १५ ज़बरस्त दुश्मनो को फना के घट उतारा आख़िर में बशर बिन ख़ोत ने आपको शहीद कर दिया। (क़शफ़ुल ग़म्मा सफ़ा ८२) इनके बाद जनाबे अब्दुर रहमान इबने अक़ील मैदान में तशरीफ़ लाए। आपने ज़बर दस्त जगं की और आपको दुश्मनों ने घेर लिया। आख़िर कार उस्मान बिन ख़ालिद मलून की ज़र्बे शदीद से राहीए जन्नत हुए। इनके बाद अब्दुल्ला अकबर बिन अक़ील मैदान में आए और ज़बर दस्त क़ेताल के बाद उसमान बिन खालिद के हाथों शहीद हुए अबू मख़नफ़ के कहने के मुताबिक़ अब्दुल्ला अकबर के बाद मूसा बिन अक़ील ने मैदान लिया और ७० आदमीयों को क़त्ल करके शहीद हुए। इनके बाद औन बिन अक़ील और अली बिन अक़ील दर्जए शहादत परफ़ाएज़हुए। इनके बाद मोहम्मद बिन सईद बिन अक़ील और जाफ़र बिन मोहम्मद बिन अक़ील और अहमद बिन मोहम्मद बिन अक़ील यके बा दीगरे मैदान में तशरीफ़ लाए और कार हाए नुमायाँ करके दर्जए शहादत हासिल किया। इनके बाद औन बिन अबदुल्ला बिन जाफर मैदीन में आए और ३० सवार ८ प्यादों को क़तल करने के बाद अब्दुल्ला इब्ने बत के हाथों शहीद हुए। आपके बाद जनाबे हसन मुसन्ना मैदान में तशरीफ़ लाए। आपने ज़बर दस्त जगं की और इस दर्जा ज़ख़्मी हो गए कि जाँबर होने का कोई इम्कान न था। बिल आख़िर मक़तूलैन में डाल दिए गए। नतीजे पर उनका एक रिश्ते का मामू असमा बिन ख़रजा मकीनीं बिन अबी हसान उन्हें उठा ले गए। इनके बाद जनाबे

क़ासिम मैदान में तशरीफ़ लाए। अगरचे आपकी उमर अभी नाबालग़ी की हद से मुताजाविज़ न हुई थी। लेकिन आपने ऐसी जगं की कि दुश्मनों की हिम्म्तें पस्त हो गईं। आपके मुक़ाबले में अरज़क़ शामी आया। आपने उसे पछाड़ दिया। इसके बाद चारों तरफ़ से हमले शुरू हो गए। अपने ७० दुश्मनों को क़त्ल किया आख़िर कार अमर बिन माद बिन उरवा बिन नफ़ील आज़दी की तेग़ से शहीद हुए। मुवर्रेख़ीन का बयान है कि आपका जिस्मे मुबारक ज़िन्दगी ही में पामाले सुमे अस्पाँ हो गया था। उनके बाद अब्दुल्ला इब्ने हसन मैदान में आए और ज़बर दस्त जंग की। आपने १४ दुश्मनों को तहे तेग किया। आपको हानी इब्ने शीस ख़ज़रमी ने शहीद किया। उनके बाद अबू बक्र इब्ने हसन मैदान में आए आपने मैमना और मैसरे को तबाह कर दिया। आप ८०, दुश्मनों को क़त्ल करके शहीद हो गए। आपको बक़ौल अल्लामा समावी अब्दुल्ला इब्ने अक़बा ग़नवी ने शहीद किया है उनके बाद अहमद बिन हसन मैदान में आए। अगरचे आपकी उमर १८ साल से कम थी लेकिन आपने यादगार जगं की और ६० सवारों को क़तल करके दर्जए शहादत हासिल किया। उनके बाद अब्दुल्ला असगर मैदान में आए। आप हज़रत अली के बेटे थे आपकी वालेदा लैला बिन्ते मसूद तमीमी थीं आपने ज़बरदस्त जगं की और दर्जए शहादत हासिल किया। आप २१, दुश्मनों को क़त्ल करके ब दस्ते अब्दुल्ला बिन उक़बा ग़नवी शहीद हुए ।

बाज़ अक़वाल के बिना पर उनके बाद उमर बिन अली मैदान में आए और शाहीद हुए। तबरी का बयान है यह करबला में शहीद नहीं हुए। अकसर मुवर्रेख़ीन का कहना है कि अब्दुल्ला असग़र के बाद अबदुल्ला बिन अली मैदान में तशरीफ़ लाए। यह हज़रत अब्बास के हक़ीक़ी भाई थे। उनकी उमर ब वक़्ते शहादत ३५ साल की थी। आपको हानी इब्ने सबीत ख़िर्जरमी ने शहीद किया । उनके बाद हज़रत अब्बास के दूसरे भाई उसमान बिन अली मैदान में आए। आपने रजज़ पढ़ा और ज़बरदस्त जगं की। दौराने क़ताल में ख़ूली इब्ने यज़ीद असबही ने पेशानी पर एक तीर मारा जिसकी वजह से आप ज़मीन पर आरहे। फिर एक शख़्स जो क़बीलए अबान बिन दारिम का था ने आपका सर काट लिया। शहादत के वक़्त अपकी उमर २३ साल थी। इनके बाद हज़रत अब्बास के तीसरे हक़ीक़ी भाई मैदान में तशरीफ़ लाए और बक़ौले अबुल फर्ज बद स्ते ख़ूली इब्ने यजीद और ब रावाएते अबू मख़न्नफ़ बाज़रबे हानी इब्ने सबीत अल ख़ज़रमी शहीद हुए। शहादत के वक़्त आपकी उमर २१ साल थी, इनके बाद फज़ल बिन अब्बास बिन अली मैदान में तशरीफ़ लाए और मशगूले कारज़ार हो गए। आपने २५० दुश्मनों को क़त्ल किया और बिल आख़िर चारों तरफ़ से हमला करके आपको शहीद कर दिया गया। इनके बाद हज़रत अब्बास के दूसरे बेटे क़सिम इब्ने अब्बास मैदान में तशरीफ़ लाए। आपकी उमर बक़ौले इमाम असफ़हानी १६, साल की थी। आपने ८००, दुश्मनों को फ़ना के घांट उतार दिया। इसके बाद इमाम हुसैन (अ.) की ख़िदमत में हाज़िर होकर पानी मागां। पानी न मिलने पर आप फिर वापस गए और २०, सवारों को क़त्ल

करके शहीद हो गए।

(अलमदारे करबला हज़रते अब्बास (अ.) की शहादत)

इन बनी हाशिम के बहादुर नौनिहालों की शहादत के बाद हज़रते अब्बास (अ.) अलमदार मैंदान में हुसूले आब के लिए तशरीफ लाए और कारे नुमायाँ करके शहीद हो गए। आपके तफ़सीली हालात के लिए मुलाहेज़ा हो किताबे ज़िकरूल अब्बास १ ,मोवल्लेफ़ा हक़ीर मतबुआ लाहौर। आपके मुख़्तसर हालात यह हैं कि आप ४ शाबान २६ हिजरी मुताबिक़ १८ मई ६४७ ई० यौमे सेह शाम्बा को मदीनए मुनव्वरा में पैदा हुए। आप इमाम हुसैन (अ.) के मुस्तक़िल अलम्बरदार थें। आपको करबला में जंग करने की इजाज़त नहीं दी गई सिर्फ़ पानी लाने का हुक्म दिया गया था। आप कमाल वफ़ादारी की वजह से नहरे फ़ुरात में दाख़िल हो कर प्यासे बरामद हो गए थे। आपका दाहिना हाथ खेमें में पानी पहुँचाने की सई में ज़ैद इब्ने वरक़ा की तलवार से कट गया था, और बाँयाँ हाथ हकीम इब्ने तुफ़ैल की तलवार से कटा, फिर एक तीर मशकीज़े पर लगा और सारा पानी बह गया। फिर एक तीर आपके सीने में लगा। इसके बाद लोहे का गुर्ज़ सर पर पड़ा और आप ज़मीन पर आ रहे। आपने इमाम हुसैन (अ.) को आवाज़ दी इमाम हुसैन (अ.) ने कमर थाम कर फ़रयाद की " अलाअन अन कसरा ज़हरी " हाए मेरी कमर टूट गई। आपका लक़ब सक़्क़ा और कुन्नियत अबू फ़ज़ल व अबू क़रबा थी। आप भी यौमे आशूरा शहीद हो गए। आपकी तारीख़े शहादत मौलाना रोम ने मिसरा " सर दीं रा बुरीद बे दीने " से निकाली है। शहादत के वक़्त आपकी उमर ३४, साल चन्द माह थी।

हज़रत अली अकबर (अ.) की शहादत :- हज़रत अब्बास (अ.) की शहादत के बाद हज़रत अली अकबर ने इज़्ने जिहाद की सई बलीग़ की। बिल आखिर आप कामयाब हो कर मैदाने करबला में तशरीफ लाए। आपको इमाम हुसैन (अ.) ने अपने हाथों से आरास्ता किया। हज़रत अली की तलवारहिमाएल की ज़िरह पहनाई और पैग़म्बरे इस्लाम की सवारी के घोड़े पर सवार फ़रमाया जिसका नाम उक़ाब या मुरतिजज़ था। रवानगी के वक़्त इमाम हुसैन ने (अ.)बार गाहे अहदियत में हाथों को बुलन्द करके कहा "मेरे पालने वाले अब तेरी राह में मेरा वह फरज़न्द कुरबान होने को जा रहा है जो सूरत और सीरत में तेरे रसूल (स.) से बहुत मुशाबे है मेरे मौला जब मैं नाना की ज़्यारत का मुश्ताक़ होता था तो इसकी सूरत देख लिया करता था। मालिक इसकी तू ही मद्‌द फ़रमाना। उलमा ने लिखा है कि मैदीन में पहुँचने के बाद हज़रत अली अकबर ने रजज़ पढी और मुक़ाबला शुरू हो गया और ऐसी ज़बर दस्त जगं हुई कि दुश्मनों के दातों पसीने आगए। सफ़ां की सफ़ें उलट गईं। एक सौ बीस दुश्मन फिन्नार वस सक़र हो गए । हज़रत अली अकबर जो तीन दिन के भूके और प्यासे थे। बाप की खिदमत में हाज़िर हुए , और अर्ज़ की बाबा जान ,प्यास मारे डालती है। पानी की कोई सबील कर दीजए इमाम हुसैन (अ.) के पास पानी कहाँ था।

जो ज़ख़्मों से चूर अली अकबर जैसे बेटे की आख़री फ़रमाईश पूरी फ़रमाते। आपने कहा बेटा पानी तो थोड़ी ही देर में नाना जान पिलायेंगे। अलबत्ता अपनी ज़बान मेरे मुह में दे दो। अली अकबर ने बेचैनी में ज़बान तो मुँह में दे दी लेकिन फौरन ही खेच ली और कहा बाबा जान " लसा नका ऐबस मन लस्सानी " आपकी ज़बान तो मेरी ज़बान से भी ज़्यादा खुश्क़ है, फिर इमाम हुसैन (अ.) ने रसूले करीम (स.) की एक अँगूठी अली अकबर के मुहँ में दी और फरमाया बेटा जाओ ख़ुदा हाफिज़।

हज़रत अली अकबर दोबारा मैदान में पहुँचे तारिक़ इब्ने शीश जिससे उमरे सआद ने हुकूमते " रै " और " मूसल " का वायदा किया था। अली अकबर के मुक़ाबले में आ गया। आपने कमाले जवां मरदी से इस पर नैज़े का वार किया। नैज़ा उसके सीने में लग कर पुश्त से दो बालिश्त बाहर निकल गयां इसके मरते ही उसका बेटा उमर तारिक़ मैदान में आ गया। आपने उसे भी क़त्ल कर दिया। फिर तल्हा इब्ने तारिक़ सामने आया आपने इसका गरेबान पकड़ कर उसे पछाड़ दिया। यह देख कर उमरे सआद ने मिसरा इब्ने ग़ालिब को मुक़ाबले का हुक्म दियां वह अली अकबर के सामने आ कर दो टुकड़े हो गया। उसके क़त्ल होने से हल चल मच गई। उमरे सआद ने मोहकम इब्ने तुफ़ैल....और इब्ने नौफ़िल को दो हज़ार सवारों के साथ अली अकबर पर हमला करने का हुक्म दिया। अली अकबर ने निहायत दिलेरी से हमले का जवाब दिया और प्यास से बेचैन हो कर इमाम हुसैन (अ.) की ख़िदमत में फिर हाज़िर हुये और पानी का सवाल किया।

आपने फ़रमाया बेटा अब तुम्हें साक़ीए कौसर ही सेराब करेंगे। नूरे नज़र जाने पदर जल्द जाओ, रसूले करीम(स.) इन्तेज़ार फ़रमा रहे हैं। हज़रत अली अकबर मैदान में वापस आये। दुश्मनों ने यूरिश कर दी, आपने शेरे गुरिसना की तरह हमले किये और थोड़ी ही देर में अस्सी दुश्मनों को क़त्ल कर डाला।

बिल आख़िर मुनकज़ बिन मुर्रा अब्दी और इब्ने नमीर ने सीने में नैज़ा मारा। आपके हाथ से एनाने सिपर छूट गई और आप घोड़े की गरदन से लिपट गये। घोड़ा जिस तरफ़ से गुज़रता था आपके जिस्म पर तलवारें लगती थीं। यहां तक कि आपका जिस्म पारा पारा हो गया। आपने आवाज़ दी " या अब्ताहो अदरिकनी" बाबा जान ख़बर लिजिये, इमाम हुसैन(अ.) दौड़ कर पहुँचे लेकिन आपसे पहले हज़रत ज़ैनब पहुँच गईं। उलेमा ने लिखा है कि ज़ैनब ने वहां पहुँच कर अपने को अली अकबर पर गिरा दिया था। इमाम हुसैन (अ.) ने उन्हें ख़ेमे में पहुँचाया और अली अकबर के चेहरे से ख़ून साफ़ किया और कहा कि ऐ बेटे तेरे बाद इस ज़िन्देगानीए दुनिया पर ख़ाक है फिर आपने अली अकबर को ख़ेमे

करांची के एक मौलवी साहब ने अपने एक रिसाले में जो हज़रत अब्बास के हालात पर मुश्तमिल है ज़िकरूल अब्बास पर बे सरो पा एतराज़ात किए हैं हम उनके साठ साल से उपर हो जाने की वजह से उनके एतराज़ात का जवाब देना पसन्द नहीं करते।

में ले जाने की कोशिश की। लेकिन हर क़िस्म के ज़ोफ़ ने कामयाब न होने दिया। बिल आख़िर बच्चों को आवाज़ दी। बच्चों ! आओ मेरी मदद करो। चुनांचे बच्चों की इमदाद से अली अकबर का लाशा ख़ेमे के क़रीब लाया गया और मुख़द्देराते असमत में कोहरामे अज़ीम बरपा हो गया। रौज़तुल शोहदा सफ़ा ३६८, कशफ़ुल ग़म्मा सफ़ा ७५, अबसारूल ऐन सफ़ा ३४ अल्लामा समावी लिखते हैं कि हज़रत अली अकबर का असली नाम अली, लक़ब अकबर और कुन्नियत अबुल हसन थी। आपकी उमर शहादत के वक़्त १८ साल थी। (नूरूल ऐन तरजुमा अबसाररूल ऐन सफा ३४)।

हज़रत अली असग़र (अ.) की शहादत :- अल्लामा अरबली लिखते हैं कि जब इमाम हुसैन(अ.) बे यारो मद्दगार हो गये तो आप ख़ुद बा क़स्दे शहादत मैदान के लिये चले और वहां पहुँच कर आपने **"हल मिन नासेरिन युनसेरना"** की आवाज़ बलन्द की जिनों के एक गिरोहे अज़ीम ने सआदते नुसरत हासिल करने की ख़्वाहिश की आपने उन्हें दुआए ख़ैर से याद फ़रमाया और नुसरत क़ुबूल करने से यह कहते हुये इनकार कर दिया कि मुझे शरफ़े शहादत हासिल करना है और मैंने आवाज़े इस्तेग़ासा इतमामे हुज्जत के लिये बुलन्द किया है। मेरा मक़्सद यह है कि दुश्मनाने ख़ुदा व रसूल(स.) के लिये मेरी मदद न करने का कोई बहाना बाक़ी न रहे। अभी आप जिनों से बातें कर रहे थे कि नागाह हज़रत ज़ैनुल आब्दीन(अ.) अपनी कमाले अलालत के बा वजूद एक असा लिये हुये ख़ेमे से बाहर निकल आये। इमाम हुसैन(अ.) ने जनाबे उम्मे कुल्सूम को आवाज़ दी, बहन फ़ौरन आबिदे बीमार को रोको, कहीं ऐसा न हो कि सादात का सिलसिलए नसल व नसब ही ख़त्म हो जाय। सय्यदुश शोहदा की आवाज़े इस्तेग़ासा का असर जब अपने ख़ेमों के बाशिन्दों पर देखा तो फ़ौरन वापस तशरीफ़ लाकर सबको समझाया और अपनी मौत का हवाला देकर इसरारे इमामत इमाम ज़ैनुल आब्दीन(अ.) के सिपुर्द फ़रमाया। आप रवाना हुआ ही चाहते थे, कि बा रवायत जनाबे सकीना घोड़े के सुम से लिपट गईं। इमाम हुसैन(अ.) ने सीने से लगाया, रूख़सार का बोसा दिया, सब्र की तलक़ीन की और जनाबे ज़ैनब को सकीना की निगाह दाश्त की हिदायत फ़रमाई। उसके बाद हज़रत अली असग़र को जिन्होंने अपने को झूले से गिरा दिया थां इमाम हुसैन(अ.) ने बढ़ कर अपनी आग़ोश में लिया और मक़तल की तरफ़ रवाना हो गये।

मैदान में पहुँच कर आप एक टीले पर बलन्द हुये और आपने क़ौमे अशक़िया को मुख़ातिब करके कहा कि देखो मैं अपने छै,६ महीने के बच्चे को पानी पिलाने लाया हूँ। इसकी माँ का दूध ख़ुश्क हो गया और इसकी ज़बान सूख गई है। ख़ुदारा इसे पानी पिला कर इसकी जान बचा लो, और सुनो अगर मैं तुम्हारे ज़ोमे नाक़िस में गुनाहगार हो सकता हूँ तो मेरे इस मासूम बच्चे में गुनाह की सलाहियत नहीं है। यह तो बे ख़ता है इस सदाए पुर तासीर का असर यह हुआ कि लश्कर का मिज़ाज बिगड़ने लगा, शक़ीउल क़लब लशकरी रो पड़े

उमरे सआद ने जब यह देखा तो फ़ौरन हुरमुला इब्ने काहिल अज़दी को हुक्म दिया। "**अंक़ता कलामुल हुसैन**" हुसैन(अ.) के कलाम को नोके तीर से क़ता कर दे। हुरमुला ने तीरे सेह शोहबा चिल्लए कमान में जोड़ा, और अली असग़र (अ.) के गले की तरफ़ फेका। तीर जो ज़हर से बुझा हुआ था अली असगर के गले पर लगा और उसने अली असग़र के गले के साथ, साथ इमाम हुसैन(अ.) का बाज़ू भी छेद दिया। इमाम हुसैन (अ.) ने बच्चे को सीने से लगा कर उसके ख़ून से चुल्लू भर लिया और चाहा कि आसमान की तरफ़ फेकें, जवाब आया, यह ख़ूने नाहक़ है इसे इस तरफ़ न फेकिये, वरना क़यामत तक के लिये बारिश का सिलसिला बन्द हो जायगा। आपने चाहा कि उसे ज़मीन की तरफ़ ही फेंक दें, उधर से भी जवाब मिल गया। तो आपने उसे चेहरे मुबारक पर मल लिया और फ़रमाया ! "**हकज़ा लाती जद्दी रसूल अल्लाह**" मैं इसी तरह अपने जद्दे नामदार हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा(स.) की ख़िदमत में पहुचूंगा। (अबसारूल ऐन व अनवारूल शहादत) इसके बाद आपने एक नन्हीं सी क़ब्र खोदी और उसमें हज़रत अली असग़र को दफ़न फ़रमा दिया।

नन्हीं सी क़ब्र खोद के, असग़र को गाड़ के
शब्बीर , उठ खड़े हुये , दामन को झाड़ के

इमाम हुसैन (अ.) की रूख़्सते आख़री :- हज़रत अली असग़र की शहादत के बाद न सरकार है न दरबार न लशकर है न अलमदार, अली असग़र को नन्हीं सी क़ब्र खोद कर दफ़्न फ़रमाते हैं और अकेले हरम के ख़ेमों की तरफ़ आते हैं और अहले बैत से रूख़्सत होते हैं औरफ़रमाते हैं **ऐ ज़ैनब , ऐ उम्मे कुल्सूम, ऐ रूक़य्या, ऐ रबाब, ऐ सकीना, अलैकुन मिन्नी अस्सलाम, सलामे अलविदा**। यह मेरी आख़री रूख़्सत है। **ऐ बहनों ,ऐ बीबियों, ऐ बेटियों** बस ख़ुदा हाफ़िज़ो नासिर है और वही हामियो मद्दगार है।

बहन ज़ैनब देखो, हर मुसिबत में, हर बला में ख़ुदा को याद रखना, अपने रहीमो करीम ख़ालिक़ को न भूलना। एनाने सब्र को हाथ से न छोड़ना। राहे इलाही में हर एक रंज व मुसिबत को राहत समझना। रस्सी से हाथ बंधे तो उफ़ न करना, चादर छिने तो ग़म न खाना। अम्मां के सब्र और बाबा के हिल्म के जौहर दिखलाना। नाना रसूल(स.) तुम्हारे मद्दगार, और ख़ुदा तुम्हारा हामी है। हां लुटने के लिये तय्यार हो जाओ। क़ैद होने के लिये कमरों को कस लो। चादरों को अच्छी तरह से ओढ़ लो। मक़नों को मज़बूती से बांध लो। ऐ बहन ज़ैनब यह यतीम बच्चे, यह असीराने अहले बैत (अ.) का क़ाफ़ेला बस तुम्हारे साथ है। बीमारे करबला सय्यदे सज्जाद ज़ैनुल आब्दीन(अ.) को ग़श से जगा दो, होशियार कर दो। अब तौक़ो ज़न्जीर पहन्ने और असीर होने का वक़्त आ गया। बेड़ियां पहन्नें और कांटों पर पैदल चलने का ज़माना क़रीब है। अब जंगल के कांटों भरे रास्ते हैं और सहरा नवरदी है। कभी कूफ़ा व शाम के बाज़ार हैं और लोगों का हुजूम है। तमाशईयों का मजमा है, मां बहनों

के नंगे सर हैं। ऊँटों की मेहार है और ज़ैनुल आब्दीन है, यज़ीद और इब्ने ज़ियाद के दरबार में शिम्र के ताज़याने हैं और हमारा लाडला बीमार है। ऐ , ज़ैनुल आब्दीन!

प्यासा गला कटाय, यह ओहदा है बाप का
पहनो गले में तौक़ यह हिस्सा है आप का

बस हमारे बाद दुनिया के इमाम तुम हो। ऐ जाने पदर इस कश्ती की मल्लाही अब तेरी ज़ात पर है। देखना बाप की मेहनत राएगां ना जाने पाऐ, अनाने सब्र व तहम्मुल हाथ से न छूटे। करबला से कूफा और कूफे से शाम तक माँ बहनों के साथ , बेड़ियाँ पहने , तौक़ डाले ,नगें पावँ जाओ। सब्रे रज़ाए इलाही के जौहर दिखलाओ। तौहीद के खुतबे पढ़ो हिदाएत के रास्ते बताओ, हाँ हा बेटा देखना। बेड़ी पहन कर सिसिलए सब्र छूट ना जाए, बस हम राहे रज़ा सर से क़ता करने को तैय्यार हैं और तुम अपने पैरों से तै करना। राहे इलाही में ख़ार दार तौक़ को फूलों का हार समझना और इश्के इलाही में लोहे की तपती बेड़ियों को मोहब्बते खुदा की ज़नजीरें जानना। फटे पुराने कपड़े मंगातें हैं। पोशाक के नीचे पहनते हैं ,उन्हें भी जगह जगह से चाक फरमा देते हैं। सबब पूछा जाता है तो फरमाते हैं कि मेरे शहीद हो जाने के बादयह ज़ालिम शक़ी मेरा लिबास भी लूँटेगें और कपड़े भी उतारें गे। शायद यह फटे पुराने कपड़े नीचे देख कर छोड़ दें और इस तरह मेरी लाश बरहनगी से बच जाए

(तारीख़े कामिल जिल्द ४ सफ़ा ४० व तबरी सफ़ा ३४)

बहन को रूखसत फरमा कर ,बीबीयों को अलविदा कह कर ,माँ की कनीज़ फिज़्ज़ा,पालने वाली को भी सलामकरके बाली सकीना सीने पर सोने वाली लाडली बेटी को छाती से लगाकरमुह चूमते और फरमाते थे " बेटी " खुदा के सिपुर्द किया। ख़ेमे का परदा उठा,बाहर तशरीफ लाए, बहन ने रकाब थामी,ज़ुल्जना परसवार हुएऔर मैदाने कारज़ार पर रवाना हो गए। (नामूसे इस्लाम)

हज़रत इमाम हुसैन (अ.) मैदाने जगं में

जब आपके ७२, असहाब व अनसार और बनी हाशिम क़ुरबान गाहे इस्लाम पर चढ़ चुके तो आप खुद अपनी क़ुरबानी पेश करने के लिए मैदाने कारज़ार में आ पहुँचे। लशकरे यज़ीद जो हज़ारों की तादात में था,असहाब बावफाऔर बहादुराने बनी हाशिम के हाथों वासले जाहन्नुम हो चुका था इमाम हुसैन जब मैदान में पहुँचे तो दुश्मनों के लश्कर में से तीस हज़ार सवार व प्यादे बाक़ी थे यानी सिर्फ एक प्यासे को तीस हज़ार दुश्मनो से लड़ना था। (कशफ़ुल गम्मा) मैदान में पहुँचने के बाद आपने सबसे पहले दुश्मनों को मुख़ातिब करके एक खुतबा इरशाद फ़रमाया। आपने कहा ऐ ज़ालिमों ! मेरे क़त्ल से बाज़ आओ,

मेरे ख़ून से हाथ ना रगों, तुम जानते हो मैं तुम्हारे नबी का नवासा हूँ। मेरे बाबा अली साबिके इस्लाम हैं ,मेरी माँ फ़ात्मा ज़हरा (स.) तुम्हारे नबी (स.) की बेटी हैं और तुम जानते हो कि मेरे नाना रसूल अल्लाह (स.) ने मुझे और मेरे भाई हसन(अ.) को सरदारे जवानाने जन्नत फ़रमाया है। अफ़सोस तुम कैसी बुरी क़ौम और कैसी बुरी उम्मत हो कि न तुमको खुदा का ख़ौफ है न रसूल (स.) से शर्म है। तुम अपने नबी की औलादों और अपने रसूल (स.) की आल का खूँन बहाते हो और मेरे खूने नाहक़ पर आमादा होते हो ,हालांकि मैंनें किसी को क़त्ल किया है, न किसी का माल छीना है कि जिसके बदले में तुम मुझको क़त्ल करते हो। मैं तो दुनियाँ से बे ताअल्लुक़ अपने नाना रसूल (स.) की क़ब्र पर मुजाविर बना बैठा था। तुमने मुझे हिदएत के लिए बुलाया और मुझे नाना की क्रब पर बैठने दिया न खुदा के घर में रहने दिया। सुनो अब भी हो सकता है कि मुझे इसका मौक़ा दे दो कि मैं नाना की क़ब्र पर बैठूँ या ख़ानए खुदा में पनाह ले लूँ। इसके बाद आपने इतमामे हुज्जत के लिए उमरे साद को बुलाया और उससे फ़रमाया (१) तुम मेरे क़त्ल से बाज़ आओ। (२) मुझे पानी दे दो। (३) अगर यह मनजूर न हो तो फिर मेरे मुक़ाबिले के लिए एक एक शख़्स को भेजो।

उसने जवाब दिया आपकी तीसरी दरख्वास्त मनजूर की जाती है और आपसे लड़ने के लिएएक एक शख़्स मुक़ाबले में आएगा। (रौज़तुल शोहदा)

इमाम हुसैन (अ.) की नबर्द आज़माई :- मोहाएदे के मुताबिक़ आपसे लडने के लिए लश्करे शाम से एक एक शख़्स आने लगा और आप उसे फ़ना के घाट उतारने लगे सबसे पहले जो शख़्स मुक़ाबिले के लिए निकला वह खमीम इब्ने क़हतबा था आपने इस पर बरक़ ख़ातिफ़ की तरह हमला किया और उसे तबाह व बरबाद कर डाला। यह सिसिलए जगं थोड़ी देर जारी रहाऔर मुद्दते क़लील में कुश्तों के पुश्ते लग गए और मक़तूलीन की तादाद हदे शुमार से बाहर हो गई। यह देख कर उमरे साद ने लश्कर वालों को पुकार कर कहा क्या देखते हो सब मिल कर यक बारगी हमला कर दो। यह अली का शेर है इससे इनफेरादी मुक़ाबिले में कामयाबी क़तअन न मुम्किन है। उमरे साद की इस आवाज़ ने लश्कर के हौसले बुलन्द कर दिए और सबने मिल कर यक बारगी हमले का फैसला किया। आपने लश्कर के मैमना और मैसरा को तबाह कर दिया। आपके पहले हमले में एक हज़ार नव सौ पचास दुश्मनों ने फिर हमला कर दिया। इस तादाद में चार हज़ार कमान दार थे। अब सूरत यह हुई कि सवार प्यादे और कमान दारों ने हम आहंग व हम अमल हो कर मुसलसल मुतावातिर हमले शुरू कर दिए। इस मौक़े पर आपने जो शुजाअत का जौहर दिखया। इसके मुतअल्लिक़ मुवर्रेख़ीन का कहना है कि सर बरसने लगे। धड़ गिरने लगे, और आसमान थर थराया। ज़मी कांपी ,सर्फे उल्टीं, परे दरहम बरहम हो गए।

अल्लाह रे हुसैन का वह आख़री जिहाद :- हर वार पर अलीए वली दे रहे

थे दाद, कभी मैसरा को उलटतें हैं, कभी मैमना को तोड़ते हैं। कभी कलबे लश्कर में दरआते हैं। कभी जिनाहे लश्कर परहमला फरमाते हैं। शामी कट रहे हैं कुफी गिर रहे हैं। लाशों के ढेर लग रहे हैं। हमले करते हुए फौजों को भगाते हुए नहर की तरफ़ पहुँच जाते हैं। भाई की लाश तराई में पड़ी नज़र आती है। आप पुकार कर कहते हैं ऐ अब्बास तुमने।

यह हमले न देखे , यह सफ़आराई न देखी
अफ़सोस तुमने मेरी, तनहाई न देखी

अल्लामा असफ़रानी का कहना है कि इमाम हुसैन (अ.) दुश्मनों पर हमला करते थे ,तो लश्कर इस तरह से भागता था जिस तरह से टिडडियाँ मुनतशिर हो जाती हैं नुरूल ऐन में एक मुक़ाम पर लिखा है कि इमाम हुसैन (अ.) बहादुर शेर की तरह हमला फ़रमाते और सफों को दरहम बरहम कर देते थे और दुश्मनों को इस तरह काट कर फेंक देते थे जिस तरह तेज़ धार आले से खेती कटती है।

अल्लामा अरबली लिखते हैं कि आँ हज़रत हमलागराँ अफ़गन्द हर कि बाद कोशीद शरबते मर्ग नोशीद व बहर जानिब कि ताख़्त गिरोहे रा बख़ाक अन्दाख़्त कि आपके अज़ीमुश्शान हमले की कोई ताब ना ला सकता था।जो आपके सामने आता था।,शरबते मर्ग से सेराब होता था,और आप जिस जानिब हमला करते थे । गिरोह के गिरोह को ख़ाक में मिला देते थे। (कशफुल ग़म्मा)

मुवर्रिख़ इब्ने असीर का बयान है कि जब इमाम हुसैन (अ.)को यौमें आशूरा दाहिने और बाऐं जानिब से घेर लिया। तो आपने दाईं जानिब हमला करके सब को भगा दिया।फिर पलटकर बाईं जानिब हमला करते हुए आए तो सबको मार कर हटा दिया ख़ुदा की क़सम हुसैन(अ.) से बढ़ कर किसी शख़्स को ऐसा क़वी दिल, साबित क़दम ,बहादुर नहीं देखा गया जो शिकस्ता दिल हो ,सदमे उठाए हुए हो , बेटों ,अज़ीज़ों, और दोस्त अहबाब के दाग़ भी खाए हुए हो ,और फिर हुसैन(अ.) की सी साबित क़दमीं और बे जिगरी से जगं कर सके ,ब खुदा दुश्मनों की फौज के सवार और प्यादे हुसैन (अ.) के सामने इस तरह भागते थे जिस तरह भेड़ बकरियों के गल्ले, शेर के हमले से भागते हैं। हुसैन (अ.) जगं कर रहे थे। " इज़न ख़रजता ज़ैनब " कि जनाबे जैनब खेमें से निकल आईं और फरमाया।काश आसमान ज़मीन पर गिर पड़ता। ऐ , उमरे साद तू देख रहा है और अबू अबदुल्ला क़तल किए जा रहें हैं, यह सुन कर उमरे साद रो पड़ा। आँसू दाढी पर बहने लगे, और उसने मुँह फेर लिया,इमाम हुसैन (अ.) उस वक़्त ख़ज का जुब्बा पहने हुए थे। सर पर अमामा बध ाँ हुआ था और वसमा का खिज़ाब लगाए हुए थे, हुसैन ने धोड़े से गिर कर भी इसी तरह जगं फ़रमाई जिस तरह जंग जू बहादुर सवार जगं करते थे, हमलों को रोकते थे और सवारों के पैरों पर हमले फ़रमाते थे,ऐ ज़लिमों ! मेरे क़तल पर तुमने एका कर लिया है। क़सम खुदा की तुम मेरे क़त्ल से ऐसा गुनाह कर रहे हो जिसके बाद किसी के क़त्ल से भी इतने गुनाह

गार ना होगे । तुम मुझे ज़लील कर रहे हो और खुदा मुझें इज़्ज़त दे रहा है और सुनो वह दिन दूर नहीं कि मेरा खुदा तुम से अचानक मेरा बदला ले लेगा।

तुम्हें तबाह कर देगा तुम्हारा खून बहाएगा तुम्हें सख़्त अज़ाब में मुब्तिला कर देगा। (तारीख़ कामिल जिल्द ४ सफ़ा ४०) **मिस्टर जेम्स कारकरन** इमाम हुसैन(अ.) की बहादुरी का ज़िक्र करते हुए वाक़ेए करबला के हवाले से लिखते हैं कि“दुनियाँ में रूस्तम का नाम बहादुरी में मशहूर है। लेकिन कई शख़्स ऐसे गुज़रे हैं कि इनके सामने रूस्तम का नाम लेने के क़ाबिल नहीं। चुनान्चे अव्वल दर्जे में हुसैन इब्ने अली (अ.) हैं क्योंकि मैदाने करबला में गरम रेत पर और गुरसनगी में जिस शख़्स ने ऐसा ऐसा काम किया हो ,उसके सामने रूस्तम का नाम वही शख़्स लेता है जो तारीख़ से वाक़िफ नहीं है। किसके क़लम को क़ुदरत है कि इमाम हुसैन (अ.) का हाल लिखे किसकी ज़बान में ताक़त है कि इन बहत्तर बुज़ुर्गवारों की साबित क़दमी और तेवरे शुजाअत और हज़ारों खूँ ख्वार सवारों के जवाब देने और एक एक के हलाक हो जाने के बाब में ऐसी तारीफ करे। जैसी होनी चाहिए। किसके बस की बात है जो इन पर वाक़े होने वाले हालात का तसव्वुर कर सके। लश्कर में घिर जाने के बाद से शहादत तक के हालात अजीब व ग़रीब क़िस्म की बहादुरी को पेश करते हैं। यह सच है कि एक की दवा, दो मशहूर है और मुबालग़ा की यही हद है कि जब किसी के हाल में यह कहा जाता है कि तुमने चार तरफ़ से घेर लिया। लेकिन हुसैन और ७२ बहत्तर तन को आठ क़िस्म के दुश्मनो ने तगं किया था। चार तरफ़ से यज़ीदी फ़ौज जो आँधी की तरह तीर बरसा रही थी। पाँचवाँ दुश्मन अरब ,की धूप, छटवां दुश्मन रेगे गरम जो तनूर के ज़र्रात की मानिन्द लौ दे रहे थी। और सातवाँ और आठवाँ दुश्मन भूख और प्यास जो दग़ा बाज़ हमराही के मानिन्द जान लेवा हरकतें कर रहे थे। पस जिन्होंने ऐसे मारके में हज़ारों काफ़िरों का मुक़ाबला किया हो इन पर बहादुरी का ख़तमा हो चुका, ऐसे लोगों से बहादुरी में कोई फौक़ियत नहीं रखता। (तारीख़े चीन दफ़्तर दोम बाब १६ जिल्द २)

इमाम हुसैन (अ.) अपने मक़्तूल बहादुरों को पुकारते हैं

भूख और प्यास के आलम में नबर्द आज़माई की भी कोई हद होती है। भूख और प्यास के आलम में नबर्द आज़माई की भी कोई हद होती है। आख़िर कार जब इमाम हुसैन (अ.) का जिस्म मुबारक तीरों से मिस्ले जिस्म साही हो गया और आप बेहद ज़ख़्मी हो गए तो अपने बहादुर मक़्तूलों की तरफ मुतव्वजा हो कर फर माने लगे,“ऐ बहादुर शेरों उठो और इमाम हुसैन (अ.) की मदद् करो। बेशक तुमने बड़ी मदद की और तुम मेरी हिमाएत में सर से गुज़र गए हो ,जान से बेनियाज़ हो गए हो, लेकिन सुनो अब वक़्त वहालात का तक़ज़ा यह है कि इस वक़्त मेरी मद्द करो लेकिन अफसोस जान से गुज़र जाने वाले और सर को फिदा कर देने वाले हयाते ज़ाहिरी से महरूम क्यो कर मद्द करते, बाज़ रवाएतों में है कि आपकी आवाज़ पर ज़ाफर जिन ने लब्बैक कही और इमदाद की दरखास्त की। आपने यह

कह कर उसे मुस्तरद कर दिया कि मैं इम्तिहान देने के लिए आया हूँ और इतमामे हुज्जत के लिए सदाए इमदाद बुलन्द की है और वरना मुझे मदद् की ज़रूरत नहीं है " एक रवाएत में है कि फिर फरिशतों ने मदद् करना चाही उन्हें भी जवाब दे दिया। एक और रवाएत में है कि हुसैन (अ.) की इस आख़री पुकार पर कटी हुई गर्दनों से लब्बैक की आवाज़ आई।

बारगाहे अहदीयत में इमाम हुसैन (अ.) के दिल की आवाज़

हुसैन (अ.) यको तनहाँ, बे यारो मदद् गार ,जलती हुई ज़मीन पर दुश्मनो के झुन्ड में खड़ें हैं। और नाना रसूल (स) अरबी का अमामा जिसके पेच कटे हुए खून में भरा हुआ सर पर है, पैरहने अहमदी ज़ेबतन है। लेकिन तीरों से छलनी और ख़ून से रंगीन है। क़बा का दामन अली अकबर के ख़ून से लाल ,चेहरए अनवर अली असगर के लहू से गुलनार है, पेशानी मुबारक से खून टपक रहा है और अब्बास के ग़म से कमर टूट चुकी है, बदन ज़ख़्मों से चूर सीने से ख़ून के फौव्वारे जारी हैं। प्यास से कलेजा फुक रहा है, अनसार की लाशें सामने पड़ी हैं, बराबर का बेटा, कड़ियल जवान, शबीहे पयमबर, सीने पर बर्छी खाए , ख़ून में नहाए सो रहा है, भाई की निशानी क़ासिम इब्ने हसन खूँ की मेहंदी लगाए उरूसे मौत से हमकनार आराम कर रहा है। बहन के लाडले दाग़ दे कर चले जा चुके हैं। लशकर की ज़ीनत , बच्चों की ढारस, सकीना का सक़्क़ा, अली का शेर कूव्वते बाज़ू शाने कटाए नहर की तराई में पड़ा है। ६,माह की जान तीरे सेह शोबे की नज़र हो चुकी है। क़त्ल गाह मेना का नक़शा पेश कर रहा है, ख़्याम से भूखे प्यासे बच्चों के रोने बिल बिलाने की जिगर सोज़ आवाज़ें आरही हैं। बीबीयों के रोने और फ़रयाद करने की आवाज़ें दिल को जला रही हैं। लेकिन अल्लाह रे हुसैन (अ.) का जज़्बए कुर्बानी, यह इश्क़े खुदा का मतवाला, इस्लाम का फ़रेफ़्ता , तौहीद का शेफ़ता, सबरो रज़ा का मजस्समा,यादे खुदा में महो और मुनाजात में मशगूल है। जैसे जैसे मसाएब व आलाम बढ़ते जाते हैं, चेहरा शगुफ़्ता होता जाता है। आप फ़रमाते हैं। मेरे पालने वाले मैं अपनी ज़िन्दगी से इस मौत को पसन्द करता हूँ ,जो तेरी राह में हो, मेरे मौला, मुझे इसमें खुशी महसूस होती है कि मैं सत्तर मरतबा तेरी बारगाह में शहीद किया जाऊँ और इस क़त्ल पर फ़ख़्र करता हूँ जिसमें तेरे दीन की नुसरत का राज़ मुज़मिर हो। इसके बाद आप अर्ज़ करते हैं। (नामूसे इस्लाम सफ़ा १८४)

तरकतुल नास तरानी हवाक व अतीमतुल अयाल लकी अराक

(१) मेरे मालिक तू जानता है और बेहतर जानता है कि मैंने तेरी मोहब्बत में सबसे हाथ उठा लिया है और फ़क़त तेरे दीदार के शौक़ में अहलो अयाल को छोड़ दिया और बच्चों को यतीम बना दिया।

(२) मालिक अगर तेरे दीदारे इश्क़ में मेरे टुकड़े कर दिए जाऐं। तब भी मेरा दिल तेरे सिवा किसी और की तरफ झुक नहीं सकता।

यह कह कर आपने तलवार नेयाम में रख ली। क्येंकि सदाए आसमानी आ गई थी कि " अपना वादए तिफली पूरा करो " आपके हाथों का रूकना था कि सारा लश्कर मुसलसल हमले पर आमादा हो गया और चालीस अफ़राद ने आपको घेरे में ले कर वार करना शुरू कर दिया।

इमाम हुसैन (अ.) अर्शे ज़ीन से फ़रशे ज़मीन पर

आप पर मुसलसल वार हो रहे थे कि नागाह एक पत्थर पेशानीए अक़दस पर लगा इसके फ़ौरन बाद अबवाल हतूफ जाफई मलऊन ने जबीने मुबारक पर तीर मारा आपने उसे निकाल कर फेंक दिया और खून पोछने के लिए आप अपना दामन उठाना ही चाहते थे कि सीनए अक़दस पर एक तीर सेह शोबा पेवस्त हो गया। जो ज़हर में बुझा हुआ था। इसके बाद सालेह इब्ने वहब लईन ने आपके पहलू पर अपनी पूरी ताक़त से एक नैज़ा मारा। जिसकी ताब न ला कर ज़मीने गर्म पर दाहिने रूखसार के भल गिरे, ज़मीन पर गिरने के बाद आप फिर उठ खड़े हुए वरआ इब्ने शरीक लईन ने आपके दाऐं शाने पर तलवार लगाई और दूसरे मलऊन ने दाहिने तरफ़ वार किया आप फिर ज़मीन पर गिर पड़े, इतने में सिनान बिन अन्स ने हज़रत के " तरकूह " हसली पर नैज़ा मारा और उसको खैंच कर दूसरी दफ़ा सीनए अक़दस पर लगाया। फिर इसी ने एक तीर हज़रत के गुलूए मुबारक पर मारा इन पैहम ज़रबात से हज़रत कमाल बेचैनी में उठ बैठे और आप ने तीर को अपने हाथों से खीचा और खून रीशे मुबारक पर मला। इसके बाद मालिक बिन नसर कन्दी लईन ने सर पर तलवार लगाई और वरह इब्ने शरीक़ ने शाने पर तलवार का वार किया। हसीन बिन नमीर ने दहने अक़दस पर तीर मारा। अबू अय्यूब ग़नवी ने हलक़ पर हमला किया। नसर बिन हरशा ने जिसम पर तलवार लगाई इब्ने वहब ने सीनए मुबारक पर नैज़ा मारा।

यह देख कर उमरे साद ने आवाज दी अब देर क्या है इनका सर फ़ौरन काट लो। सर काटने के लिए शीश इब्ने रबी बढ़ा। इमाम हुसैन (अ.) ने इसके चेहरे पर नज़र की उसने हुसैन (अ.) की आँखों में रसूल (स.) की तसवीर देखी और काँप उठा। फिर सिनान बिन अन्स आगे बढ़ा। इसके जिसम में राशा पड़ गया। वह भी सरे मुबारक न काट सका। यह देख कर शिमरे मलून ने कहा ,यह काम सिर्फ़ मुझसे हो सकता है और वह ख़न्जर लिए हुए इमाम हुसैन (अ.) के क़रीब आकर सीनए मुबारक पर सवार हो गया। आपने पूछा तू कौन है ? उसने कहा मैं शिम्र हूँ। फ़रमाया तू मुझे नहीं पहचानता। इसने कहा ,

" अच्छी तरह जानता हूँ " तुम अली (अ.) व फात्मा (स.) के बेटे और मोहम्मद (स.) के नवासे हो, आपने फ़रमाया फिर मुझे क्यों ज़बह करता है। इसने जवाब दिया इसलिए कि मुझे यज़ीद की तरफ़ से मालो दौलत मिलेगा। (कशफ़ुल गम्मा सफ़ा ७६) इसके बाद आपने अपने दोस्तों को याद फ़रमाया और सलामे आख़री के जुमले अदा किए।

जब आप उसकी शक़ी उल क़लबी की वजह से मायूस हो गए तो फ़रमाने लगे। ऐ शिम्र मुझे इज़ाज़त दे दे कि मैं अपने ख़ालिक़ की आख़री नमाज़े असर अदा कर लूँ। इसने इजाज़त दी आप सजदे में तशरीफ़ ले गए। (रौज़तुल शेहदा सफा २७७) और शिम्र ने आपके गुलूए मुबारक को ख़नजर की बारह ज़र्बों से क़ता करके सरे अक़दस को नैज़े पर बुलन्द कर दिया। हज़रत ज़ैनब खेमें से निकल पड़ीं। ज़मीन काँपने लगी, आलम में तारीकी छा गई, लोगों के बदन में कप कपी पड़ गई। आसमान ख़ूँ के आसूँ रोने लगा। जो शफ़क़ की सूरत में रहती दुनियाँ तक क़ाएम रहेगा।(सवाएक़े मोहर्रेक़ा सफ़ा ११६) इसके बाद उमरे साद ने खूली बिन यज़ीद और हमीद बिन मुस्लिम के हाथों सरे मुबारक करबला से कूफे इब्ने ज़्याद के पास भेज दिया। (अल हुसैन अज उमर बिन नसर सफ़ा १५४) इमाम हुसैन (अ.) सरे बुरीदगी के बाद आपका लिबास लूटा गया। अख़िनस बिन मुरसिद अमामा ले गया। इसहाक़ इब्ने हशूआ क़मीस ,पैराहन ले गया। अबहर बिन काब पैजामा ले गया। असवद बिन ख़ालिद नालैन ले गया, अब्दुल्लाह बिन असीद कुलाह ले गया, बज़दल बिन सलीम अंगुशतरी ले गया। कैस बिन अशस पटका ले गया। उमर बिन साद ज़िरह ले गया, जमीह बिन ख़लक़ अज़दी तलवार ले गया। अल्लाह रे ज़ुल्म एक कमर बन्द के लिए जमाल मलून ने हाथ क़ता कर दिया। एक अँगूठी के लिए बुज़दिल ने उँगली काट डाली।

इसके बाद दीगर शोहदा , के सर काटे गए और लाशों पर घोड़े दौड़ाने के लिए उमरे साद ने लश्करयों को हुक्म दिया दस अफ़राद इस अहम जुर्म खुदाई के लिए तैयार हो गए। जिनके नाम यह हैं कि इस्हाक़ बिन हवीया, अखनस बिन मरसद, हकीम बिन तुफ़ैल, उमरो बिन सबीह, सालिम बिन खसीमह सालेह बिन वहब, वाएज़ बिन तागम,हानी बिन मसबत, असीद बिन मालिक, तवारीख़ में हैं। "फ़ला सवाअल हुसैन ब हवाफ़र ख़ैवलाहुम हत्ती रजू अज़हरा वहमदहू" इमाम हुसैन(अ.) की लाश को इस तरह घोड़ों की टापों से पामाल किया कि आपका सीना और पुश्त टुकड़े टुकड़े हो गई, बाज़ मुर्वेख़ीन का कहना है कि जब इन लोगों ने चाहा कि जिसम को इस तरह पामाल कर दें कि बिलकुल नापैद हो जाए तो जंगल से एक शेर निकला और उसने बचा लिया। (दमए साकेबा सफ़ा ३५०) अल्लामा इब्ने हजर मक्की लिखते हैं कि हज़रत इमाम हुसैन (अ.) की शहादत के फैरन बाद मिट्टी रसूले खुदा (स.) मदीने में उम्मे सलमा को दे गए थे। खून हो गई (सवाएक़े मोहर्रेक़ा सफ़ा ११५) और रसूले ख़ुदा, उम्मे सलमा के ख़्वाब में मदीने पहुँचे। इनकी हालत यह थी वह बाल बिखराए हुए ख़ाक सर पर डाले हुए थे। उम्मे सलमा ने पूछा कि आप का यह क्या हाल है फ़रमाया

"शहादता क़तलल हुसैना अनफ़ा" में अभी अभी हुसैन के क़त्ल गाह में था और अपनी आखों से उसे ज़बह होते हुए देखा है। (सही तिरमिज़ी जिल्द २,सफ़ा ३०६ मुसतदरिक हाक़िम जिल्द ४ सफ़ा १६ तहज़ीबुल तहज़ीब जिल्द २, सफ़ा ३५६ ,ज़खाएरूल ओक़बा सफ़ा १४८)

शामे ग़रीबाँ

शहादते इमाम हुसैन (अ.) के बाद अस्पे वफ़ा दार ने अपनी पेशानी इमाम हुसैन (अ.) के ख़ूँन में रगीन करके अहले हरम में ख़बरे शहादत पहुँचा दी थी जिसकी वजह से खेमें में कोहरामे अज़ीम बपा ही था कि दुश्मनों ने ख़ेमें का रूख़ किया और पहुँचते ही ख़ेमों में आग लगा दी और सामान लूटना शुरू कर दिया। अहले बैते रसूल(स.) फ़रयादो फ़ुगां की आवज़ें बुलन्द कर रहे थे और कोई फ़रयाद रस और पुरसाने हाल न था। तमाम बीबीयों के सरों से चादरें छीन लीं। फ़ात्मा बिन्ते हुसैन के पैरों से छागलें उतार लीं, और हज़रत ज़ैनब व उम्में कुलसूम के कानों से गोशवारे खींच लिए। सय्यदे सज्जाद के नीचे से बिस्तर खेंच कर उन्हें ज़मीन पर डाल दिया। ग़रज़कि एक ऐसा हशर बरपा कर दिया गया जो न किसी के हाथ कभी रवा रखा गया था और न इस से क़बल सुनने में आया था। इन हालात को देख कर एक औरत जो क़बीलए बकर इब्ने वाएल से थी एक तलवार का टुकड़ा ले कर इन मुख़ालिफ़ों पर हमलावर हुई, जो आले रसूल को लूट रहे थे। बाज़ रवाएतों में है कि एक बच्चे के कुर्ते में आग लगी हुई थी और वह बाहर की तरफ़ भाग रहा था, जैसे हवा लगती थी आग भड़क जाती थी,यह हाल देख कर एक दुश्मन ने तरस खाया, और बढ़ कर दामन से आग बुझा दी, नौनिहाल ने जब उसे अपने ऊपर मेहरबान पाया तो पूछने लगा कि ऐ शेख़ नजफ़ का रास्ता किधर है। उसने कहा ऐ फ़रज़न्द इस कमसिनी में नजफ़ का रास्ता क्यों पूछते हो । फ़रमाया मैं अपने नाना के पास जाकर उनके सामने फ़रयाद करूँगा।

(किताब तवज़ीह में यह वाक़ेआ जनाबे सकीना की तरफ मनसूब है)

अल ग़रज़, ज़ुल्मो जौर की इन्तेहा हो रही थी किसी बीबी की पुश्त पर तज़याने लगाए जारहे थे किसी के रूख़सार पर तमाचे लगा रहे थे किसी की पीठ पर नैज़े की अनी चुभोई जा रही थी। जब सब कुछ लूटा जा चुका। ख़ेमें जल चुके और शाम आ गई तो वहीं के जले भुने ग़ल्ले के दानों से और ब रवाएते हुर की बीवी दाना पानी लाई और फ़ाक़ा शिकनी की गई।

इसके बाद हज़रत ज़ैनब ने जनाबे उम्मे कुलसूम से फ़रमाया कि बहन अब रात हो चुकी है , तारीकी छाई हुई है, तुम सब औरतों और बच्चों को एक जगह जमा करो, इनकी हिफाज़त में रात भर पहरा दूँगी। हज़रत उम्मे कुलसूम ने सब बीबीयों को जमा कर लिया, लेकिन उन्हें जनाबे सकीना न मिलीं, आपने जनाबे ज़ैनब से अर्ज़े वाक़ेआ किया। ज़ैनब मक़तल की तरफ़ हज़रत सकीना को तलाश करने के लिए निकलीं। एक नशेब से सकीना

के रोने की आवाज़ आई,जाकर देखा कि सकीना बाप के सीने से लिपटी हुई गिरया कर रही हैं। जनाबे ज़ैनब उन्हें ख़ेमे में ले आईं। जनाबे सकीना का बयान है कि उस वक़्त बाबा की कटी हुई गरदन से यह आवाज़ आ रही थी।

शिअती माअन शरबतुम, मा अज़बे फ़ाज़ करूनी
औ सिमअतुम बेग़रीबओ, शहीद फ़ा अन्बूनी
व अनल सिब्तल लज़ी, मन ग़ैरे जुर्म कतलूनी
व मज जद्दल ख़ल्ल बाअदल क़त्ल सहकूनी
लैताकुम फ़ी यौमे आशूरा , जमीआ तन्ज़रूनी
कैफ़ असतसक़आ लुतफ़ली फ़ा बवाअन यरहमूनी

तरजुमा : ऐ मेरे शियों ! जब ठंडा पानी पीना तो मुझे याद करना और जब किसी ग़रीब या शहीद के वाक़ेयात सुनना तो मुझपर गिरया करना। ऐ मेरे दोस्तों सुनो मैं रसूल(स.) का वह मज़लूम नवासा हूँ जिसे बिला जुर्म व ख़ता दुश्मनों ने क़तल कर दिया और फिर क़तल के बाद उसकी लाश पर घोड़े दौड़ा दिये। ऐ मेरे शियों ! काश तुम आज आशूरा के दिन होते तो यह रूह फ़रसा मनाज़िर देखते कि मैं अपने प्यासे बच्चे (अली असग़र) के लिये किस तरह पानी मांग रहा था और यह संग दिल किस दिलेरी और बे बाकी से इन्कार कर रहे थे। ग़रज़कि हज़रत ज़ैनब जनाबे सकीना को बाप के सीने पर से समझा बुझा कर उठा लाईं और उन्हें जनाबे उम्मे कुल्सूम के सिपुर्द करके तिलाया फिरना शुरू कर दिया। (दमए साकेबा)

रात का काफ़ी हिस्सा गुज़रने के बाद जनाबे ज़ैनब ने देखा कि एक सवार घोड़ा बढ़ाये चला आ रहा है। आपने बढ़ कर उससे कहा कि हम आले रसूल(स.) हैं। हमारे छोटे बड़े, बूढ़े, जवान सब आज ही क़त्ल किये जा चुके हैं। अब हमारे छोटे छोटे बच्चे अभी रोते रोते सो गये हैं। ऐ सवार अगर तुझे हमको ज़्यादा लूटा मक़सूद है तो सुबह आ जाना और जो कुछ हमारे पास रह गया है उसे भी लूट लेना, लेकिन देखो इन बच्चों को न सता,और उन्हें सोने दे। ख़ुदा के लिये इस वक़्त चला जा। लेकिन सवार ने एक न सुनी और घोड़े के क़दम बराबर बढ़ते ही रहे, आख़िर ज़ैनब भी शेरे ख़ुदा की बेटी थीं। उन्हें जलाल आ गया और उन्होंने लजामे फ़रस पर बढ़ कर हाथ डाल दिया, और कहा कि मैं क्या कहती हूँ और तू क्या करता है। यह हाल देख कर सवार घोड़े से उतर पड़ा और ज़ैनब को सीने से लगा कर कहने लगा। ऐ बेटी, मैं तेरा बाप अली हूँ। बेटी तेरी हिफ़ाज़त के लिये आया हूँ। ऐ जाने पदर तू बच्चों में जा तेरी हिफ़ाज़त करूंगा। ज़ैनब ने फ़रयादो फ़ुग़ां शुरू कर दी, और तमाम वाक़ेयात बयान किये। अल ग़रज़ जब यह हश्र आफ़रीं रात तमाम हुई तो हुक्मे उमरे सआद से लशकरियों ने आकर आले रसूल(स.) को घेर लिया और बिला महमिल व कजावे के नाक़ों

पर सवार होने को कहा। चारो नाचार रसूल ज़ादियां नाक़ों पर सवार हुईं। हाल यह था कि सर खुले हुये थे, बाल बिखरे हुये थे और आंखोंसे आंसू जारी थे। इमाम ज़ैनुल आब्दीन की अलालत की वजह से चूँकि ताबो तवां न रखते थे। इस लिये सवार होने में परेशानी थी। शिम्र ने ताज़याने से अज़ीयत पहुँचाई और फ़िज़्ज़ा ने दौड़ कर इमाम को मदद दी और आप नाक़े पर सवार हो गये लेकिन ताक़त न होने की वजह से नाक़े की पुश्त पर सम्भलना दुश्वार था। इसलिये दुश्मनाने इसलाम ने आपके पैरों को नाक़े के पेट से मिला कर बांध दिया।

(इसरारूल शहादत)

फिर उसके बाद उस क़ाफ़ले को ले कर कूफ़े के लिये रवाना हुये और ग़ज़ब यह किया कि इन रसूल ज़ादियों को मक़तल की तरफ़ से गुज़ारा। मुवर्रेख़ीन का बयान है कि जैसे ही यह हुसैनी क़ाफ़ला मक़तल में पहुँचा हश्र का समां पेश हो गया। ज़ैनब ने अपने को नाक़े से गिरा दिया और फ़रयादो फ़ुग़ां करने लगीं। आपने कहा !

ऐ मोहम्मद मुस्तफ़ा(स.) जिनपर मलायका आसमान से दुरूद भेजते हैं। देखिये यह हुसैन(अ.) ख़ाको ख़ून में आलूदा टुकड़े टुकड़े हो कर चटीयल मैदान में पड़े हैं। आपकी बेटियां और नवासियां क़ैदी हैं। आपकी अवलाद मक़तूल है और हवा उनपर खाक उड़ा रही है।

यह दर्दनाक मरसिया सुनकर दोस्त व दुश्मन कोई ऐसा न था जो रोने न लगा हो। उस वक़्त उन लोगों को महसूस हुआ कि वह किस क़द्र शदीद गुनाह के मुरतकिब हुये हैं लेकिन अब क्या हो सकता था। (अल हुसैन अबू नसर, सफ़ा १५५)

दम उस साकेबा में है कि ज़ैनब की फ़रयाद से जानवर भी रोने लगे और उनकी आंखों से आंसू टपक रहे थे। इस तरह हज़रत उम्मे कुल्सूम भी नौहा व फ़रयाद कर रही थीं और जनाबे सकीना भी महवे गिरया मातम थीं। बिल आख़िर दुश्मनों के तशद्दुद से यह क़ाफेला आगे बढ़ गया और आले रसूल की लाशें बे गोरो कफ़न ज़मीने गर्म करबला पर पड़ी रहीं। चंद दिनों के बाद बनी असद ने उनपर नमाज़ें पढ़ीं और उन्हें सिपुर्दे ख़ाक कर दिया।

ग्यारह मोहर्रम की सुबह :- वाक़ेया यह है कि अली(अ.) की बेटियां रसूल(स.) की नवासियां बे महमिल व अमारी के नाकों पर सवार करके दरबारे कूफ़ा में दाख़िल की गईं। फिर एक हफ़्ता उन्हें कूफ़े के क़ैद ख़ाने में रखा गया। इसके बाद इन ग़रीबों को बारह रबीउल अव्वल, ६१, हिजरी योमे चहार शम्बा को शाम पहुँचा दिया गया और वहां एक साल क़ैद में रखा गया। फिर वहां से रिहाई के बाद आले रसूल(स.) २० सफ़र,६२ हिजरी करबला होते हुये आठ ८, रबीउल अव्वल ६२, हिजरी वारिदे मदीनए मुनव्वरा हुये।

इस इजमाल की मुख़्तसर अलफ़ाज़ में तफ़सील यह है कि गयाहरवीं मोहर्रम योमे शम्बा को शिम्र बिन ज़िलजौशन ने हज़रत इमाम ज़ैनुल आब्दीन(अ.) से कहा कि अब तुम्हें औरतों और बच्चों समैत दरबारे इब्ने ज़ियाद में चलना हो गा जो कूफ़े में है।

इमाम ज़ैनुल आब्दीन(अ.) ने फ़रमाया कि मैं सानीये ज़ेहरा से अर्ज़ करता हूँ। चुनांचे उन्होंने फुफी से अर्ज़ की।,ज़ैनब बिन्ते अली को जलाल आ गया। फौरन भाई की वसीअत याद आ गइ सर झुका कर कहा , बेटा हर मुसीबत बरदश्त करूँगी।

फिर रवानगी का बन्दो बस्त शुरू हो गया बेमहमिल व अमारी के नाक़ों पर सर बरैहना मुख़्दूदेराते अस्मत व तहारत सवार की गई, सरों को बारवाएते नैजो पर बुलन्द किया गया,और शोहदा के लाशों को ज़मीने गरम पर छोड़ कर क़ाफला कूफा के लिए रवाना हो गया, बाज़ारे कूफा में दाख़ले के वक़्त हज़रत ज़ैनब (स.) की फ़रयादी आवाज़ को मान्द करने के लिए बाजों की आवाज तेज़ करा दी गई। ब रवाएते हज़रत ज़ैनब ने मातम शुरू कर दिया फिर इनके हाथ पसे गरदन से बाध दिए गए। कूफ़े में दाख़ला हुआ। बाज़ारे कूफ़ा में हज़रत ज़ैनब व उम्मे कुलसूम, हज़रत फ़ात्मा, बिन्ते हुसैन और हज़रत ज़ैनुल आब्दीन(अ.) ने ज़बर दस्त तक़रीर की और वाक़ेए पर भरपूर रौशनी डाली। दारूल अमारह के दरवाज़े पर सरे मुस्लिम बिन अक़ील(अ.) लटका देखा गया। इब्ने ज़्याद ने मुख़्तार को क़ैद ख़ाने से बुलाया और सरे हुसैन(अ.) तशते तिला में रख कर उनके सामने लाया गया, फिर छड़ी से दन्दाने मुबारक इमाम हुसैन(अ.) के साथ बे अदबी की गई। एक हफ़्ता कूफ़े के क़ैद ख़ाने में मुखद्देराते अस्मत व तहारत को क़ैद रखने के बाद हुसैनी क़ाफले को शाम के लिए रवाना कर दिया गया। जो ब रवाएते ३६ ,दिन में और ब रवाएते १६ रबीउल अव्वल ६१ हिजरी चहार शम्बा के दिन शाम पहुँचा जब शाम की राज धानी दमिश्क़ में जहाँ यज़ीद का दरबार लगता था। दाख़ले का मौक़ा आया तो तीन दिन तक इस क़ाफले को "बाब अल साअत " पर ठहराया गया क्यों कि दरबार के सजने में तीन दिन की ज़रूरत बाक़ी थी, फिर दरबार में दाख़ला हुआ, हज़ारों कुर्सी नशीन आले मोहम्मद(स.) की मुख़द्देरात (औरतों) का तमाशा देखने के लिए जमा थे। यज़ीद ने हज़रते ज़ैनब से कलाम करना चाहा। जनाबे फिज़्ज़ा ने मज़ाहमत की, फिर यज़ीद की ताना ज़नी पर बिन्ते अली ने दुख दर्द से भरे हुए अलफाज़ में ज़बरदस्त तक़रीर की, दरबार में हल चल मची और मुख़द्देराते अस्मत व तहारत को ऐसे क़ैद ख़ाने में भेज दिया गया जिसमें धूप और ओस से बचाव का कोई इन्तेज़ाम न था। फिर इमाम ज़ैनुल आब्दीन (अ.) ने मस्जिदे दमिश्क़ में यादगार खुतबा दिया जो अज़ान के जरिए से मुनक़ेता कर दिया गया। (बिहार जिल्द १० सफ़ा २३३)

अलग़रज़ यह हुसैनी क़फला तक़रीबन एक साल इस क़ैद ख़ाने में पड़ा रहा। इसी दौरान में हज़रत सकीना का इन्तेक़ाल भी हो गया। कुतुबे मक़ातिल से क़ैदख़ाने में हिन्दा ज़ौजए यज़ीद के आने का भी पता मिलता है। काफी वक़्त गुज़रने के बाद यह क़फेला रेहा किया गया। एक ख़ाली मकान में मुख़द्देराते तहारत ने एक हफ़्ता नौहा व मातम किया और शाम की औरतों से ताज़ीयत क़ुबूल की। फिर बशीर बिन जज़लम की रहनुमाई में यह क़ाफ़ला २०, सफ़र ६२ , हिजरी को करबला पहुँचा। हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह अन्सारी जो

सहाबिए रसूल और क़ब्रे हुसैन के मुजाविरे अव्वल थे। उन्होंने फ़रयादो फ़ुग़ा की हालत में इन्तेहाई रन्जो ग़म के साथ इस क़ाफ़िले का इस्तेक़बाल किया, ज़ैनब ने क़ब्रे इमाम हुसैन (अ.) पर अपने को गिरा दिया। बरावाएते तीन दिन तक फ़रयादो फ़ुग़ा और नौहा,मातम के बाद यह क़ाफ़िला मदीनए को रवाना हुआ, क़रीबे मदीना क़ाफ़िला ठहरा, बशीर ने ख़बरे ग़म एहले मदीना तक पहुँचाई, जूक़ दर जूक़ अहले मदीना क़ाफ़िले के मुस्तक़र पर सरो पा बरैहना रोते पीटते जमा हो गए। मोहम्मद हनफ़िया भी आए ,अब्दुल्लाह बिन जाफ़र भी आए और उम्मे सलमा भी आईं। उम्मे सलमा के एक हाथ में फ़ात्मा सुग़रा का हाथ था और एक हाथ में वह शीशी थी जो रसुले खुदा दे गए थे और इसमें करबला की मिट्टी ख़ूँन हो गई थी। क़ाफ़िला दाख़िले मदीना हुआ। हज़रत उम्मे कुलसूम ने मरसिया पढ़ा जिसका पहला शेर यह है।

मदीनतह जदना अतक़ब लैना फबल हसराता वाएहज़ान जैना

तरजुमा :- ऐ हमारे नाना के मदीने तू हमें कुबूल न कर (क्योंकि हम कुबूल किए जाने के क़ाबिल नहीं हैं) हम यहाँ हसरतें मुसीबतों और अन्दोह ग़म के साथ वापस आऐं हैं। मदीने में दाख़ले के बाद रौज़ए रसूल (स.) पर बेपनाहँ फ़रयाद फ़ुग़ा की गई १५ शबाना रोज़ बनी हाशिम के घरों में चुल्हा नहीं जला और इनके घरों से धुआँ नहीं उठा , इस वाक़ेए हाल के बाद हज़रत इमाम ज़ैनुल आब्दीन (अ.) चालिस साल ज़िन्दा रहे और शबो रोज़ गिरयौ ज़ारी फ़रमाते रहे। यही हाल हज़रत ज़ैनब, उम्मे कुलसूम और हज़रत फ़ात्मा नीज़ दीगर तमाम शुरकाए गिरदाब व मसाएब का रहा ताज़िन्दगी इनके आँसू सूखे नहीं

हज़रत इमाम हुसैन (अ.) की बहन जनाबे ज़ैनब व जनाबे कुलसूम के मुख़्तसर हालात विलादत, वफ़ात और मदफ़न

जनाबे ज़ैनब व उम्मे कुलसूम, हज़रत रसलू (स.) व ख़तीजतुल कुबरा की नवासीयाँ, हज़रत अबूतालिब व फ़ात्मा बिनते असद की पोतियाँ हज़रत अली व फ़ात्मा की बेटीयाँ इमाम हसन व इमाम हुसैन(अ.) की हक़ीक़ी और हज़रत अब्बास व जनाबे मोहम्मद हनफ़िया की अलाती बहनें थीं। इस सिलसिले के पेशे नज़र जिसकी बालाई सतह में हज़रत हमज़ा हज़रत जाफ़रे तैय्यार, हज़रत अब्दुल मुत्तलिब और हज़रत हाशिम भी हैं। इन दोनों बहनों की अज़मत बहुत नुमाया हो जाती है।

यह वाक़ेआ है कि जिस तरह इनके आबाओ अजदाद,माँ बाप और भाई बे मिस्ल व बेनज़ीर हैं इसी तरह यह दो बहनें भी बेमिस्ल व बेनज़ीर हैं, खुदा ने इन्हे जिन ख़ानदानी सेफ़ात से नवाज़ा है इसका मुक़तज़ा यह है कि मैं यह कहूँ कि जिस तरह अली व फ़ात्मा के फ़रज़न्द ला जवाब हैं इसी तरह इनकी दुख़्तरान लाजवाब हैं, बेशक ज़ैनब व उम्मे कुलसूम

मासूम न थीं लेकिन इनके महफ़ूज़ होने में कोई शुब्हा नहीं जो मासूम के मुतरादिफ़ है, हम ज़ैल में दोनों बहनों का मुख़्तसर अलफाज़ में अलग अलग ज़िक्र करते हैं।

हज़रत ज़ैनब की विलादतः-मोवर्रेख़ीन का इत्तेफाक़ है कि हज़रत ज़ैनब बिन्ते अमीरल मोमिनीन(अ.) ५ ,जमादिल अव्वल ६, हिजरी को मदीना मुनव्वरा में पैदा हुई जैसा कि " ज़ैनब अख़त अल हुसैन " अल्लामा मोहम्मद हुसैन अदीब नजफ़े अशरफ़ सफ़ा १४ "बतालता करबला" डा० बिन्ते अशाती अन्दलसी सफ़ा २७, तबा, बैरूत " सिलसिला तुल ज़हब" सफ़ा १६ व किताबुल बहरे मसाएब और ख़साए सज़ैनबीहा इब्ने मोहम्मद जाफ़र अल जज़ारी, से ज़ाहिर हैं, मिस्टर एजाजुर्रहमान एम०ए० लाहैर ने किताब " **ज़ैनब** " के सफ़ा ७ पर ५ हिजरी लिखा है जो मेरे नज़दीक सही नहीं, एक रवाएत में माहे रजब व शाबान एक में माहे रमज़ान का हवाला भी मिलता है, अल्लामा महमूदुल हुसैन अदीब की इबारत का मतन यह है। (फक़दवलदत अकै़लहू ज़ैनब फ़ी अलआम अल सादस लिल हिजरत अला माअतफका़ अलमोरेख़ून अलैह ज़ालका यौमल ख़ामस मिन शहरे जमादिल अव्वल अलख़) हज़रत ज़ैनब (स.) जमादील अव्वल ६, हिजरी में पैदा हुई, इस पर मुवर्रेख़ीन का इत्तेफाक़ है मेरे नज़दीक यही सही है, यही कुछ (अल वक़ाएक़ व अल हवादिस जिल्द १ सफ़ा ११३ तबा कुम १३४१ ई०) में भी है।

हज़रत ज़ैनब की विलादत पर हज़रत रसूल करीम(स.) का ताअस्सुर

वक़्ते विलादत के मुताअल्लिक़ जनाबे आक़ाई सय्यद नूरूद्दीन बिन आक़ई सय्यद मोहम्मद जाफ़र अल जज़ारी ख़साएस ज़ैनबया में तहरीर फ़रमाते हैं कि जब हज़रत ज़ैनब (स.) मोतवल्लिद हुई और उसकी ख़बर हज़रत रसूल करीम (स.) को पहुँची तो हुज़ूर जनाब फ़ात्मा ज़हरा के घर तशरीफ़ लाए और फ़रमाया कि ऐ मेरी राहते जान ,बच्ची, को मेरे पास लाओ, जब बच्ची रसूल की ख़िदमत में लाई गई तो आपने उसे सीने से लगाया और उसके रूख़सार पर रूख़सार रख कर बे पनाह गिरया किया यहाँ तक कि आपकी रीशे मुबारक आँसू से तर हो गई, जनाबे सय्यदा ने अर्ज़ की बाबा जान आपको ख़ुदा कभी न रूलाए। आप क्यों रो पड़े इरशाद हुआ कि ऐ जाने पदर, मेरी यह बच्ची तेरे बाद मुताअद्दिद तकलीफों और मुख़तलिफ़ मसाएब में मुबतिला होगी। जनाबे सय्यदा यह सुन कर बे अख़तियार गिरया करने लगीं और उन्होंने पूछा कि इसके मसाएब पर गिरया करने का क्या सवाब होगा। फ़रमाया वही सवाब होगा जो मेरे बेटे हुसैन (अ.) के मसाएब से मुतासिर होने वाले का होगा इसके बाद आपने इस बच्ची का नाम ज़ैनब रखा।(इमाम मुबीन सफ़ा १६४ तबा लाहैर) बरवाएते ज़ैनब इबरानी लफ़्ज़ है जिसके मानी बहुत ज़्यादा रोने वाली के हैं। एक रवाएत में है कि यह लफ़्ज़ **ज़ैन** और **अ ब** से मुरक्कब है। यानी बाप की ज़ीनत फिर कसरते इस्तेमाल से ज़ैनब हो गया।

एक रवाएत में है कि आँ हज़रत ने यह नाम ब हुकमे रब्बे जलील रखा था जो ब ज़रिए जिबराईल पहुँचा था।

विलादते ज़ैनब पर अली बिन अबी तालिब का ताअस्सुर

डा० बिन्तुल शातमी अन्दलिसी अपनी किताब, **"बतलतै करबला ज़ैनब बिन्ते अल ज़हरा"** तबा बैरूत के सफ़ा २६ पर रक़म तराज़ हैं कि हज़रत ज़ैनब की विलादत पर जब जनाबे सलमाने फ़ारसी ने असद उल्लाह हज़रत अली (अ.) को मुबारक बाद दी तो आप रोने लगे और आपने उन हालात व मसाएब का तज़किरा फ़रमाया जिनसे जनाबे ज़ैनब बाद में दो चार होने वाली थीं।

हज़रत ज़ैनब की वफ़ात :- मुवर्रेख़ीन का इत्तेफ़ाक़ है कि हज़रत ज़ैनब(स.) जब बचपन, जवानी और बुढ़ापे की मंज़िलें तय करने और वाक़ये करबला के मराहिल से गुज़रने के बाद क़ैद ख़ानए शाम से छुट कर मदीने पहुँची तो आपने वाक़याते करबला से अहले मदीना को आगाह किया और रोने पीटने,नौहा व मातम को अपना शग़ले ज़िन्दगी बना लिया। जिससे हुकूमत को शदीद ख़तरा लाहक़ हो गया। जिसके नतीजे में वाक़िये " **हर्रा** " अमल में आया। बिल आख़िर आले मोहम्मद को मदीने से निकाल दिया गया।

अबीदुल्लाह वालीए मदीना अल मतूफ़ी २७७ अपनी किताब अख़बारूल ज़ैनबया में लिखता है कि जनाबे ज़ैनब मदीने में अकसर मजालिसे अज़ा बरपा करती थीं और खुद ही ज़ाकरी फ़रमाती थीं। उस वक़्त के हुक्कामे वक़्त को रोना रूलाना गवारा न था कि वाकिये करबला खुल्लम खुल्ला तौर पर बयान किया जाय। चुनांचे उरवा बिन सईद अशदक़ वालीए मदीना ने यज़ीद को लिखा कि मदीने में जनाबे ज़ैनब की मौजूदगी लोगों में हैजान पैदा कर रही है। उन्होंने और उनके साथियों ने तुझसे खूने हुसैन(अ.) के इन्तेक़ाम की ठान ली है। यज़ीद ने इत्तेला पा कर फ़ौरन वालीए मदीना को लिखा कि ज़ैनब और उनके साथियों को मुन्तशर कर दे और उनको मुख़तलिफ़ मुल्कों में भेज दे। (हयात अल ज़हरा)

डाक्टर बिन्ते शातमी अंदलसी अपनी किताब " बतलतए करबला ज़ैनब बिन्ते ज़हरा " तबा बैरूत के सफ़ा १५२ में लिखती हैं कि हज़रत ज़ैनब वाक़िये करबला के बाद मदीने पहुंच कर यह चाहती थीं कि ज़िन्दगी के सारे बाक़ी दिन यहीं गुज़रें लेकिन वह जो मसाएबे करबला बयान करती थीं वह बे इन्तेहा मोअस्सिर साबित हुआ और मदीने के बाशिन्दों पर इसका बेहद असर हुआ। "फ़कतब वलैहुम बिल मदीनता इला यज़ीद अन वुजूद हाबैन अहलिल मदीनतः महीज अल ख़वातिर" इन हालात से मुतअस्सिर हो कर वालीए मदीना ने यज़ीद को लिखा कि जनाबे ज़ैनब का मदीने में रहना हैजान पैदा कर रहा है। उनकी तक़रीरों से अहले मदीना में बग़ावत पैदा हो जाने का अन्देशा है। यज़ीद को जब वालीए मदीना का ख़त मिला तो उसने हुक्म दिया कि इन सबको मुमालिको अम्सार में मुन्तशिर कर दिया

जाय। इसके हुक्म आने के बाद वालीए मदीना ने हज़रते ज़ैनब से कहला भेजा कि आप जहां मुनासिब समझें यहां से चली जायें। यह सुनना था कि हज़रते ज़ैनब को जलाल आ गया और कहा कि " वल्लाह ला ख़रजन व अन अर यक़्त दमायना " ख़ुदा की क़सम हम हरगिज़ यहां से न जायेंगे चाहे हमारे ख़ून बहा दिये जायं। यह हाल देख कर ज़ैनब बिन्ते अक़ील बिन अबी तालिब ने अर्ज़ की ऐ मेरी बहन ग़ुस्से से काम लेने का वक़्त नहीं है। बेहतर यही है कि हम किसी और शहर में चले जायें। " फ़ख़्रहत ज़ैनब मन मदीनतः जदहा अल रसूल सुम लम हल मदीनतः बादे ज़ालेका इबादन " फिर हज़रत ज़ैनब मदीनए रसूल(स.) से निकल कर चली गईं। उसके बाद से फिर मदीने की शक्ल न देखी। वह वहां से निकल कर मिस्र पहुंची, लेकिन वहां ज़्यादा दिन ठहर न सकीं। " हकज़ा मुन्तकलेतः मन बलदाली बलद ला यतमईन बहा अल्ल अर्ज़ मकान " इसी तरह वह ग़ैर मुतमईन हालत में परेशान शहर बा शहर फिरती रहीं और किसी एक जगह और मकान में सुकूनत इख़्तेयार न कर सकीं। " अल्लामा मोहम्मद अल हुसैन अल अदीब अल नजफ़ी लिखते हैं। " व क़ज़त अल अक़ीलतः ज़ैनब, हयातहाबाद अख़यहा मुन्तक़लेतः मन बल्दाली बलद तकस अलन्नास हना व हनाक ज़ुल्म हाज़ा अल इन्सान इला रख़या अल इन्सान " कि हज़रत ज़ैनब अपने भाई की शहादत के बाद सुकून से न रह सकीं वह एक शहर से दूसरे शहर में सर गरदां फिरती रहीं और हर जगह ज़ुल्मे यज़ीद को बयान करती रहीं और हक़ व बातिल की वज़ाहत फ़रमाती रहीं और शहादते हुसैन(अ.) पर तफ़सीली रौशनी डालती रहीं। (ज़ैनब अख़्तल हुसैन सफ़ा ४४) यहां तक कि आप शाम पहुंची और वहां क़याम किया। क्योंकि बा रवायते आपके शौहर अब्दुल्लाह बिन जाफ़रे तय्यार की वहां जायदाद थी वहीं आपका इन्तेक़ाल बा रवायते अख़्बारूल ज़ैनबिया व हयात अल ज़हरा रोज़े शम्बा इतवार की रात १४ रजब ६२, हिजरी को हो गया। यही कुछ किताब " बतलतए करबला " के सफ़ा १५५ में है। बा रवायते ख़सायसे ज़ैनबिया क़ैदे शाम से रिहाई के चार महीने बाद उममे कुल्सूम का इन्तेक़ाल हुआ और उसके दो महीने बीस दिन बाद हज़रते ज़ैनब की वफ़ात हुई। उस वक़्त उनकी उम्र ५५ साल की थी।

आपकी वफ़ात या शहादत के मुताअल्लिक़ मशहूर है कि एक दिन आप उस बाग़ में तशरीफ़ ले गईं जिसके एक दरख़्त में हज़रत इमाम हुसैन(अ.) का सर टांगा गया था। इस बाग़ को देख कर आप बेचैन हो गईं। हज़रत ज़ुहूर जारज पूरी मुक़ीम लाहौर लिखते हैं।

कारवां शाम की सरहद में जो पहुंचा सरे शाम
मुत्तसिल शहर से था बाग़ , किया उसमें क़याम
देख के बाग़ को , रोने लगी हमशीरे इमाम
वाक़ेया पहली असीरी का जो याद आया तमाम

हाल तग़ईर हुआ, फ़ात्मा की जाई का
शाम में लटका हुआ देखा था सर भाई का
बिन्ते हैदर गईं, रोती हुई नज़दीके शजर
हाथ उठा कर यह कहा, ऐ शजरे बार आवर
तेरा एहसान है, यह बिन्ते अली के सर पर
तेरी शाखों से बंधा था, मेरे माजाये का सर
ऐ शजर तुझको ख़बर है, कि वह किस का था
मालिके बाग़े जिनां, ताजे सरे तूबा था
रो रही थी यह बयां करके जो वह दुख पाई
बाग़बां बाग़ में था, एक शक़ीए अज़ली
बेलचा लेके चला, दुश्मने औलादे नबी
सर पे इस ज़ोर से मारा, कि ज़मीं कांप गई
सर के टुकड़े हुये, रोईं न पुकारीं ज़ैनब
ख़ाक पर गिर के सुए ख़ुलद सिधारीं ज़ैनब

हज़रत ज़ैनब का मदफ़न :- अल्लामा मोहम्मद अल हुसैन अल अदीब अल नजफ़ी तहरीर फ़रमाते हैं।

" क़द अख़्तलफ़ अल मुरख़ून फ़ी महल व फ़नहा बैनल मदीनतः वश शाम व मिस्र व अली बेमा यग़लब अन तन वल तहक़ीक़ अलैहा अन्नहा मदफ़ूनतः फ़िश शाम व मरक़दहा मज़ार अला लौफ़ मिनल मुसलेमीन फ़ी कुल आम "

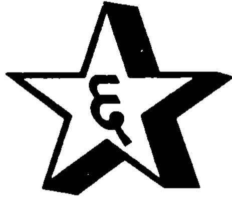
" मुवर्रेख़ीनने उनके मदफ़न यानी दफ़न की जगह में इख़्तेलाफ़ किया है कि आया मदीना है या शाम या मिस्र " लेकिन तहक़ीक़ यह है कि वह शाम में दफ़न हुई हैं और उनके मरक़दे अक़्दस और मज़ारे मुक़द्दस की हज़ारों मुसलमान अक़ीदत मन्द हर साल ज़्यारत किया करते हैं। (ज़ैनब अख़्तल हुसैन सफ़ा ५०, तबा नजफ़े अशरफ़) यही कुछ मोहम्मद अब्बस एम० ए० जोआईंट एडीटर पीसा अख़बार ने अपनी किताब " मशहिरे निसवां " तबा लाहौर १६०२ ई० के सफ़ा ६२१ में और मियां एजाजुल रहमान एम० ए० ने अपनी किताब " ज़ैनब रज़ी अल्लाह अन्हा " के सफ़ा ८१, तबा लाहौर १६५८ ई० में लिखा है।

शाम में जहां जनाबे ज़ैनब (स.) का मज़ारे मुक़द्दस है उसे **" ज़ैनबिया "** कहते हैं। नाचीज़ को शरफ़े ज़ियारत १६६६ ई० में नसीब हुआ।

हज़रत उम्मे कुलसूम की विलादत, वफ़ात और उनका मदफ़न

तारीख़ के औराक़ शाहिद हैं कि हज़रते उम्मे कुलसूम अपनी बहन हज़रते ज़ैनब के कारनामों में बराबर की शरीक थीं। वह तारीख़ में अपनी बहन के बिलकुल दोश बदोश नज़र आती हैं वह मदीने की ज़िन्दगी, करबला के वाक़ेयात, दोबारा गिरफ़्तारी और मदीने से अख़राज सब में हज़रते ज़ैनब के साथ रहीं। उनकी विलादत ६, हिजरी में हुई। उनका अक़्द मोहम्मद बिन जाफ़र बिन अबी तालिब से हुआ। उनकी वफ़ात हज़रते ज़ैनब से दो महीने बीस दिन पहले हुई। वह शाम में दफ़्न हुई हैं। (ख़सायसे ज़ैनबिया) (मोअज्जम अल बलदान याक़ूत हम्वी जिल्द ४, सफ़ा २१६) उनका मज़ार और सकीना बिन्तुल हुसैन का मज़ार शाम में एक ही इमारत में वाक़े है। उनकी उम्र ५१, साल की थी। इनकी औलाद का तारीख़ में पता नहीं मिलता। अलबत्ता हज़रते ज़ैनब के अब्दुल्लाह बिन जाफ़रे तय्यार से चार फ़रज़न्द, **अली, मोहम्मद, औन, अब्बास और एक दुख़्तर उम्मे कुल्सूम** का ज़िक्र मिलता है। (ज़ैनब अख़्तल हुसैन, सफ़ा ५५ व सफ़ीनतुल बेहार जिल्द ८, सफ़ा ५५८)

हाशियाः- (१) हज़रत उम्मे कुल्सूम के साथ उमर बिन ख़त्ताब के अक़्द का फ़साना तौहीने आले मोहम्मद (स.) का एक दिल सोज़ बाब है। इसकी रद के लिये मुलाहेज़ा हो। मुक़द्दमा, अहया अल मयत, अल्लामा जलालउद्दीन सियूती मतबूआ लाहौर)



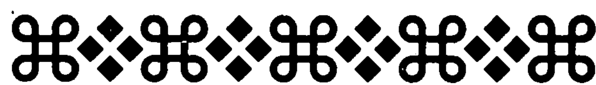
अबु मोहम्मद

हज़रत

इमाम ज़ैनुल आब्दीन (अ.)

बन के सज्जादे की ज़ीनत आये सज्जादे हज़ीं
चूमती है जिनके क़दमों को , इबादत की जबीं
दोस्त का क्या ज़िक्र है मूज़ी को यह कहना पड़ा
अनतः ज़ैनुल आब्दीं , व अनतः ज़ैनुल आब्दीन

(साबिर थरयानी, कराची)



بسم الله الرّحمٰن الرّحيم

बाब-६

हज़रत इमाम ज़ैनुल आब्दीन(अ.)

मिसले जद खुद इमामे अवलिया
चूँ पदर मशहूर, दर सबरे रज़ा
दर इबादत ई, क़दर सर गर्म बूद
अन्तः ज़ैनुल आब्दीन आमद निदा

हज़रत इमाम ज़ैनुल आब्दीन(अ.) **पैग़म्बरे इस्लाम हज़रत मोहम्मद**(स.) के चौथे जांनशीन, हमारे चौथे इमाम और चहारदा मासूमीन की छटी मोहतरम फ़र्द हैं। आपके वालिदे माजिद शहीदे करबला हज़रत इमाम हुसैन(अ.) थे और वालेदा माजेदा जनाबे शाहे ज़नान उर्फ़ शहर बानो थीं। आप अपने आबाओ अजदाद की तरह इमामे मन्सूस, मासूम, आलमे ज़माना और अफ़ज़ले कायनात थे। उलेमा का बयान है कि आप इल्म, ज़ोहद, इबादत में हज़रत इमाम हुसैन(अ.) की जीती जागती तसवीर थे। (सवाएक़े मोहर्रेक़ा, सफ़ा ११६)

इमाम ज़हरी इब्ने अयनिया और इब्ने मुसय्यब का कहना है कि हमने आपसे ज़्यादा किसी को अफ़ज़ले इबादत गुज़ार और फ़क़ीह नहीं देखा। (नूरूल अबसार, सफ़ा १२६)

एक शख़्स ने सईद बिन मुसय्यब से किसी का ज़िक्र करते हुये कहा कि वह बड़ा मुत्तक़ी है। इब्ने मुसय्यब ने पूछा, तुमने इमाम ज़ैनुल आब्दीन(अ.) को देखा है उसने कहा नहीं। उन्होंने जवाब दिया। " मा रायत अहदन अवरा मिनहा " मैंने उनसे ज़्यादा मुत्तक़ी और परहेज़गार किसी को भी नहीं देखा। (मतालेबुल सुवेल, सफ़ा २६७)

इब्ने अबी शेबा का कहना है कि " असहा इलासा नीद " वह रवायत है जो ज़हरी ने इमाम ज़ैनुल आब्दीन(अ.) से मन्सूब करे।(तबक़ात अल हफ़्फ़ाज़,ज़हबी अर हज्जुल मतालिब, सफ़ा ४३५) अल्लामा ज़हरी फ़रमाते हैं कि इमाम ज़ैनुल आब्दीन(अ.) हदीस बयान करने में निहायत मोतमिद इलैहे और सादिकुल रवायत थे। आप बहुत बड़े आलिम और फ़ेक़हे अहले बैत में बे मिसल व बे नज़ीर थे। (हैवातुल हैवान, जिल्द १, सफ़ा १२१,तारीख़ इब्ने ख़ल्कान,जिल्द १, सफ़ा ३२०) आप ऐसे पुर जलाल व जमाल थे कि जो भी आपको देखता था ताज़ीम करने पर मजबूर हो जाता था। (वसीलतुन नजात, सफ़ा ३१६)

आपकी विलादत बसआदत

आप बतारीख़ १५ जमादिउस सानी, ३८ हिजरी यौमे जुमा बक़ौले १५ जमादिल अव्वल ३८, हिजरी यौमे पनशम्बा बा मक़ाम मदीनए मुनव्वरा पैदा हुये। (आलाम अल वरा, सफ़ा १५१ व मनाक़िब जिल्द४, सफ़ा १३१)

अल्लामा मजलिसी तहरीर फ़रमाते हैं कि जब जनाबे शहर बानो ईरान से मदीने के लिये रवाना हो रही थीं तो जनाबे रिसालत मआब(स.) ने आलमे ख़्वाब में उनका अक़्द हज़रत इमाम हुसैन(अ.) के साथ पढ़ दिया था। (जलालुल अयून, सफ़ा २५६) और जब आप वारिदे मदीना हुईं तो हज़रत अली(अ.) ने इमाम हुसैन(अ.) के सिपुर्द करके फ़रमाया कि वह असमत परवर बीवी है कि जिसके बतन से तुम्हारे बाद अफ़ज़ले अवसिया और अफ़ज़ले कायनात होने वाला बच्चा पैदा होगा। चुनांचे हज़रत इमाम ज़ैनुल आब्दीन(अ.) पैदा हुये, लेकिन अफ़सोस यह है कि आप अपनी मां की आग़ोश में परवरिश पाने का लुत्फ़ उठा न सके। " मातत फ़ी नफ़ासहा बेही " आपके पैदा होते ही " मुद्दते नेफ़ास " में जनाबे शहर बानों की वफ़ात हो गई।

(क़मक़ाम,जलाल अल अयून, अयून, अख़्बारे रज़ा, दमए साकेबा,जिल्द १, सफ़ा ४२६)
कामिल मुबरद में है कि जनाबे शहर बानों, मारूफ़तुल नसब और बेहतरीन औरतों में से थीं।

शेख़ मुफ़ीद तहरीर फ़रमाते हैंकि जनाबे शहर बानों, बादशहे ईरान यज़्द जरद बिन शहरयार बिन शेरविया इब्ने परवेज़ बिन हरमज़ बिन नौशेरवाने आदिल " किसरा " की बेटी थीं। (इरशाद, सफ़ा ३६१ व फ़ज़्लुल ख़त्ताब)

अल्लामा तहरीर फ़रमाते हैं कि हज़रत अली(अ.) ने शहर बानों से पूछा कि तुम्हारा नाम क्या है तो उन्होंने कहा " शाहे जहां " हज़रत ने फ़रमाया नहीं अब **" शहर बानों "** है। (मजमउल बहरैन, सफ़ा ५७०)

नाम, कुन्नियत, अल्क़ाब :- आपका इस्मे गिरामी **" अली "** कुन्नियत **" अबु मोहम्मद " " अबुल हसन "** और **" अबुल क़ासिम "** था।

आपके अलक़ाब बेशुमार थे, जिनमें **ज़ैनुल आब्दीन, सय्यदुस साजदीन, ज़ुल शफ़नात, सज्जाद** व **आबिद** ज़्यादा मशहूर हैं।

(मतालेबुल सुवेल, सफ़ा २६१, शवाहेदुन नबूवत सफ़ा १७६, नूरूल अबसार, सफ़ा १२६, अल फ़रा अल नामी, नवाब सिद्दीक़ हसन, सफ़ा १५८)

लक़ब ज़ैनुल आब्दीन की तौज़ीह :- अल्लामा शिब्लन्जी का बयान है कि इमाम मालिक का कहना है कि आपको ज़ैनुल आब्दीन कसरते इबादत की वजह से कहा जाता है। नूरूल अबसार सफ़ा १२६ उलेमाए फ़रीकैन का इरशाद है कि हज़रत ज़ैनुल आब्दीन (अ.) एक शब नमाज़े तहज्जुद में मशगूल थे कि शैतान अजदहे की शक्ल में आपके क़रीब आ गया और आपके पाए मुबारक के अंगूठे को मूँह में ले कर काटना शुरू किया, इमाम जो हमातन मशगूले इबादत थे और आपका रूजहाने कामिल बारगाहे ईज़दी की तरफ़ था। वह ज़रा भी उसके अमल से मुतासिर न हुये और बदस्तूर नमाज़ में मुन्हमिक व मसरूफ़ व मशगूल रहे बिल आख़िर वह आजिज़ आ गया और इमाम ने अपनी नमाज़ भी तमाम कर ली। उसके बाद आपने शैतान मलऊन को तमाचा मार कर दूर हटा दिया। उस वक़्त हातिफ़े ग़ैबी ने अनतः ज़ैनुल आब्दीन की तीन बार आवाज़ दी और कहा बे शक तुम इबादत गुज़ारों की ज़ीनत हो। उसी वक़्त से आपका यह लक़ब हो गया।

(मतालेबुल सुवेल, सफ़ा २६२, शवाहेदुन नबूवत सफ़ा १७७)

अल्लामा शहरे आशोब लिखते हैं कि इस अजदहे के दस सर थे और उसके दांत बहुत तेज़ और उसकी आंखें सुर्ख़ थीं और वह मुसल्ले के क़रीब से ज़मीन फ़ाड़ के निकला था। (मनाक़िब जिल्द ४, सफ़ा १०८)

एक रवायत में इसकी वजह यह भी बयान की गई है कि क़यामत में आपको इसी नाम से पुकारा जायगा। (दमए साकेबा, सफ़ा ४२६)

लक़ब सज्जाद की तौजीह :- ज़हबी ने तबक़ात उल हफ़ाज़ में इमाम मोहम्मद बाक़िर(अ.) के हवाले से लिखा है कि हज़रत इमाम ज़ैनुल आब्दीन(अ.) को सज्जाद इस लिये कहा जाता है कि आप तक़रीबन हर कारे ख़ैर पर सजदा फ़रमाया करते थे। जब आप खुदा की किसी नेमत का ज़िक्र करते तो सजदा करते। जब कलामे खुदा की आयते " सजदा " पढ़ते तो सजदा करते। जब दो शख़्सों में सुलोह कराते तो सजदा करते इसी का नतीजा था आपके मवाज़े सुजूद पर ऊंट के घट्टों की तरह घट्टे पड़ जाते थे फिर उन्हें कटवाना पड़ता था। इसी लिये आपका लक़ब " ज़ुल शफ़नास " यानी घट्टे वाले भी था।

(अर हज्जुल मतालिब, सफ़ा ४३४)

इमाम ज़ैनुल आब्दीन(अ.) की नसबी बलन्दी :- नसब और नस्ल बाप और मां की तरफ़ से देखे जाते हैं। इमाम (अ.) के वालिदे माजिद हज़रत इमाम हुसैन(अ.) और दादा हज़रत अली(अ.) और दादी हज़रत फ़ात्मतुज़ ज़हरा बिनते रसूले खुदा(स.) हैं और आपकी वालेदा जनाबे शहर बानों बिन्ते यज़द जर्द इब्ने शहरयार इब्ने किसरा हैं। आप हज़रत पैग़म्बरे इस्लाम(स.) के पोते और नौशेरवाने आदिल के नवासे हैं। यह वह बादशाह है जिसके अहद में पैदा होने पर सरवरे कायनात(स.) ने इज़हारे मसर्रत

फ़रमाया है। इस सिलसिले नसब के मुताअल्लिक़ अबुल असवद दवाएली ने अपने अशआर में उसकी वज़ाहत की है कि इससे बेहतर और सिलसिला नामुमकिन है। उसका एक शेर यह है।

वा अन गुलामन , बैन किसरा व हाशिम
ला करम मन यनतत, अलैहे अल तमाएम

इस फ़रज़नद से बलन्द नसब कोई और नहीं हो सकता जो नौशेरवाने आदिल और फ़ख़्रे कायनात हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा(स.) के दादा हाशिम की नसल से हो। (उसूले काफ़ी,सफ़ा २५५)

शेख़ सुलैमान क़न्दूज़ी और दीगर उलेमाए इस्लाम लिखते हैं कि नौशेरवां के अदल की बरकत तो देखो कि उसी की नस्ल को आले मोहम्मद(स.) के नूर की हामिल क़रार दिया और आइम्मए ताहेरीन(अ.) की एक अज़ीम फ़र्द को उस लड़की से पैदा किया जो नौशेरवां की तरफ़ मन्सूब है। फिर तहरीर करते हैं कि इमाम हुसैन(अ.) की तमाम बीवीयों में यह शरफ़ सिर्फ़ जनाबे शहर बानों को नसीब हुआ जो हज़रत इमाम ज़ैनुल आब्दीन(अ.) की वालेदा माजेदा हैं। (नियाबउल मोअद्दता, सफ़ा ३१५ व फ़स्ल अल ख़ताब सफ़ा २६१)

अल्लामा अबीदुल्लाह बा हवाला इब्ने ख़लक़ान लिखते हैं कि जनाब शहर बानों शाहाने फ़ारस के आख़री बादशाह " **यज़्द जर्द** " की बेटी थीं और आप ही से इमाम ज़ैनुल आब्दीन(अ.) पेदा हुये हैं। जिनको " **अल ख़ैरतैन** " कहा जाता है। क्योंकि हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा(स.) फ़रमाया करते थे कि ख़ुदा वन्दे आलम ने अपने बन्दों में से दो गिरोह अरब और अजम को बेहतरीन क़रार दिया है और मैंने अरब से क़ुरैश और अजम से फ़ारस को मुन्तख़ब कर लिया है। चूंकि अरब और अजम का इजतेमा इमाम ज़ैनुल आब्दीन(अ.) में है इसी लिये आपको इब्नल ख़ैरतैन से याद किया जाता है।(अर हज्जुल मतालिब, सफ़ा ४३४)

अल्लामा शहरे आशोब लिखते हैं कि जनाबे शहर बानों को "सय्यदुन निसां" कहा जाता है। (मनाक़िब, जिलद ४,सफ़ा १३१)

जनाबे शहर बानों की तशरीफ़ आवरी की बहस :- कहा जाता है कि अहदे उमरी में फ़तेह मदाएन के मौक़े पर जनाबे शहर बानों लशकरे इस्लाम के हाथ लगी थीं और वहां से अपनी दीगर बहनों के साथ मदीने पहुंच कर हज़रत इमाम हुसैन(अ.) की ज़ौजियत से मुशर्रफ़ हुईं।(रबीउल अबरार, ज़मख़्शरी) लेकिन मेरे नज़दीक यह बिलकुल ग़लत है। क्योंकि फ़तेह मदाएन सफ़र १६, १७ हिजरी में हुई है जैसा कि तारीख़ अबुल फ़िदा, जिल्द १,सफ़ा ११६, तारीख़े कामिल, जिल्द २, सफ़ा १६७ मोअज्जमुल बलदान जिल्द ७, सफ़ा ४१३ व फ़तहुल अजम, सफ़ा १६०, तारीख़े इब्ने ख़ल्दून, जिल्द २, सफ़ा १०० में है और यज़्द जर्द जनाबे शहर बानों का बाप था। १४, हिजरी के शुरू में एनाने हुक्मरानी का मालिक हुआ।

जैसा कि तारीख़े तबरी जिल्द २, सफ़ा १६६ तारीख़े कामिल जिल्द १, सफ़ा १७८ व तारीख़ अबुल फ़िदा जिल्द अव्वल सफ़ा ५६ में है और तख्त नशीनी के वक़्त उसकी उम्र २१, साल की थी। जैसा कि तारीख़े तबरी जिल्द ३ सफा ८१ तारीख़े कामिल जिल्द २ १७२ तारीख़ इब्ने ख़ल्दून जिल्द २ सफा ६१,फ़तूहात इस्लामिया जिल्द १ सफ़ा ६६ में है इस हिसाब से फतहे मदाईन के वक़्त उसकी उमर ज़्यादा से ज़्यादा २२ साल की हो सकती है, मेरी समझ में नहीं आता कि एक अजमी जो गरम मुल्क का बाशिन्दा न हो वह ग़रीबों की तरह इतनी थोड़ी उम्र में क्यों कर मुबाशेरत के क़ाबिल बन सकता है यानी यह मुम्किन है कि एक इतने कम सिन शख़्स से ऐसी लड़की पैदा हो सके जो ६१ हिजरी में फतहे मदाईन के वक़्त शादी के क़ाबिल हो। इस लिए लामोहाला यह मानना पड़ेगा यज़्द जुर्द की शादी १८-१६ साल की उमर में हुई होगी। अब ऐसी सूरत में इसकी शादी १८-१६ साल की उमर में तसलीम की जाए और यह भी मान लिया जाए कि जनाबे शहर बानों उसकी पहली औलाद थीं मदाएन के वक़्त जनाबे शहर बानो की उमर ५-६ साल से ज़्यादा नहीं हो सकती। इसके अलावा हज़रत इमाम हुसैन (अ.) जो ४ हिजरी में पैदा हुए हैं उनकी शादी कमसिनी में बाहालते नाबालग़ी फिर ऐसी सूरत में जब कि इमाम हसन की शादी न हुई हो जो इमाम हुसैन(अ.) से बड़े थे। १६, हिजरी में फतहे मदाएन के बाद हज़रत अली अकबर (अ.) क्यों कर कर सकते थे।

मुवर्रिख़ शहरि शमसुल उलमा ,शिबली नोमानी हज़रत उमर का हाल लिखते हुए तहरीर फरमाते हैं कि इस मौक़े पर हज़रत शहर बानो का क़िस्सा जो ग़लत तौर पर मशहूर हो गया है इसे ज़िक्र करना ज़रूरी है। आम तौर पर मशहूर है कि जब फ़ारस फतेह हुआ तो यज़्द जुर्द शह नशाह फ़ारस की बेटीयाँ गिरफ़्तार हो कर मदीने में आईं हज़रत उमर ने आम लौंडियों की तरह बाज़ार में उनके बेचने का हुक्म दिया। लेकिन हज़रत अली (अ.) ने मना किया कि ख़ानदाने शाही के साथ ऐसा सुलूक जाएज़ नहीं। इन लड़कियों की क़ीमत का अन्दाज़ा कराया जाए। फिर यह लड़कियाँ किस के एहतिमाम और सुपुर्दगी में दी जांए और उससे उनकी क़ीमत आला से आला शरह पर लगवा ली जाए। चुनान्चे हज़रत अली(अ.) ने खुद उनको अपने एहतिमाम में लिया और एक इमाम हुसैन को एक मोहम्मद बिन अबू बक्र को एक अब्दुल्ला बिन उमर को इनाएत की। इस ग़लत किस्से की हक़ीक़त यह है कि ज़ैहमख़शरी ने जिसको फ़ने तारीख़ से कुछ वास्ता नहीं। रबीउल अबरार में इसको लिखा और इब्ने ख़लकान ने इमाम ज़ैनुल आबदीन (अ.) के हाल में यह रवाएत उसके हवाले से नक़ल कर दी लेकिन यह महज़ ग़लत है। अव्वलन तो ज़ैहमख़्शरी के सिवा तबरी,इब्ने असीर ,याक़ूबी बिलाज़री इब्ने क़ुतीबा वग़ैरा किसी ने इस वाकिया को नहीं लिखा और ज़हमखशरी का फन तरीख़ी में जों पाया हैवह ज़ाहिर है। इसके अलावा तारीख़ी क़रायन इसके बिल्कुल ख़िलाफ़ हैं। हज़रत उमर के अहद में यज़्दो जरद और ख़ानदाने शाही पर मुस्लमानों को मुतलक़ क़ाबू हासिल नहीं हुआ। मदाएन के मारके में यज़्दो जर्द मय तमाम अहलो अयाल

के दारूल सलतन्त से निकला और हवान पहुँचा। जब मुसलमान हवान पर चढे तो वह असफाहान भाग गया और फिर करमान वग़ैरा में टकराता फिरा। मरू में पहुँच कर ३०-३१ हिजरी में जो हज़रत उसमान की ख़िलाफत का ज़माना था मारा गया। मुझको शुब्हा है कि ज़ैमख़शरी को यह भी मालूम था या नहीं कि यज़दो जर्द का क़त्ल किस अहद में हुआ। इसके अलावा जिस वक़्त का यह वाक़ेआ बयान किया जाता है उस वक़्त इमाम हुसैन (अ.) की उमर १२ साल थी। क्योंकि जनाबे मम्दुह हिजरत के पाँचवे साल पैदा हुए और फ़ारस १७ हिजरी में फ़तेह हुआ इसलिए यह अमर भी किसी क़दर मुस्तबअद है कि हज़रत अली (अ.) ने उनके नाबालग़ी में उन पर इस किस्म की इनाएत की होगी इसके अलावा वह एक शहनशाह की अवलाद की क़ीमत निहायत गराँ क़रार पाई होगी और हज़रत अली (अ.) निहायत ज़ाहिदाना और फक़ीराना जिन्दगी बसर करते थे। ग़रज़ कि किसी हैसीयत से इस वाक़िए की सेहत पे गुमान नहीं हो सकता।

(अलफारूक़ सफा १७२)

मैंने तवारीख़ से जो इस्तेमबात किया है वह यह है कि अहदे उसमानी में अहले फारस ने बग़ावत करके अबीद उल्ला बिन उमर "वाली फारस" फारस को मार डाला और हुदूदे फ़ारस से लश्कर भी निकाल दिया। इस वक़्त फ़ारस की लश्करी छावनी का मुक़ाम "अस्तख़र" था। ईरान का आख़री बादशाह "यज़द जरद अहले फ़ारस के साथ था। हज़रत उस्मान ने अब्दुल्ला बिन आमिर को हुक्म दिया कि बसरा और अम्मान के लश्कर को मिला कर फ़ारस पर चढ़ाई कर दो । चुँनाचे ऐसा ही किया गया । हुदूदे अस्तख़र में ज़बरदस्त और धमासान की जगं हुई और मुस्लमान कामयाब हुए। अस्तख़र फ़तेह होने के बाद ३१ हिजरी में यज़द जरद " रै " वहाँ से ख़ुरासान और फिर खुरासान से मरोजा पहुँचा। उसके हमराह चार हज़ार जर्रार सिपाही भी थे। मरो में वह ख़ाक़ान चीन की साज़िशी इमदाद की वजह से मारा गया और शहान अजम के गोरिस्तान " अस्तख़र " में दफ़न हुआ। इसके बाद अहदे उस्मानी बदल गया और हज़रत अली (अ.) शेरे ख़ुदा का ज़माना आ गया।

जंगे जमल के बाद ईरान ख़ुरासान के मक़ाम " मरौ " में सख़्त बग़ावत हुई। उस वक़्त ईरान में बरवायत इरशाद मुफ़ीद व रौज़तुल सफ़ा हरीस इब्ने वजअफ़ी गर्वनर थे। हज़रत अली(अ.) ने मरौ के क़ज़िया नामरज़िया को ख़त्म करने के लिये इमदादी तौर पर ख़ुलिद इब्ने कुर्रा यरबोई को रवाना किया, वहां जंग हुइ और लशकरे इस्लाम कामयाब हुआ। हरीस इब्ने जाबिर जाअफ़ी ने यज़द जरद इब्ने शहरयार इब्ने किसरा जो अहदे उस्मानी में मारा जा चुका था कि दो बेटियां शहर बानों और गीहान बानों को आम असीरों के साथ हज़रत अली(अ.) की ख़िदमत में भेजा। शेरे ख़ुदा अली(अ.) ने शहर बानों को इमाम हुसैन (अ.) और गीहान बानों को मोहम्मद बिन अबी बक्र की ज़ौजियत में दे दिया। जैसा कि रौज़तुल सफ़ा जिल्द ३, सफ़ा ६ तबा निवल किशोर , इरशादे मुफ़ीद जिल्द २, सफ़ा २९२, आलाम

अल वरा सफ़ा १०५, उम्दतुल तालिब सफ़ा १७१, जामेउल तवारीख़ सफ़ा १४६, कशफ़ुल गम्मा सफ़ा ८६, मतालेबुल सुवेल सफ़ा २६१, सवाएक़े मोहर्रेका सफ़ा १२०, नूरूल अबसार सफ़ा १२६, तोहफ़ए सुलैमानिया, शरए इरशाद सफ़ा ३६१ में मौजूद है, उस वक़्त इमाम हुसैन (अ.) की उम्र और जनाबे शहर बानों की उम्र काफ़ी हो चुकी थी और इमाम हसन(अ.) की शादी हुये अरसा गुज़र चुका था। हज़रत अली(अ.) की ख़िलाफ़त ३५ हिजरी से ४० हिजरी तक रही। जनाब शहर बानों से ३८, हिजरी में इमाम ज़ैनुल आब्दीन(अ.) और गिहान बानों से क़ासिम बिन मोहम्मद पैदा हुये।

इमाम ज़ैनुल आब्दीन(अ.) के बचपन का एक वाक़ेया

अल्लामा मजलिसी रक़मतराज़ हैं कि एक दिन इमाम ज़ैनुल आबदीन(अ.) जब कि आपका बचपन था, बीमार हुये। हज़रत इमाम हुसैन(अ.) ने फ़रमाया " बेटा " अब तुम्हारी तबियत कैसी है और तुम कोई चीज़ चाहते हो तो बयान करो ताकि मैं तुम्हारी ख़्वाहिश के मुताबिक़ उसे फ़राहम करने की कोशिश करूँ। आपने अर्ज़ की बाबा जान अब ख़ुदा के फ़ज़ल से अच्छा हूँ। मेरी ख़्वहिश सिर्फ़ यह है कि ख़ुदा वन्दे आलम मेरा शुमार उन लोगों में करे जो परवरदिगारे आलम के क़ज़ा व क़दर के ख़िलाफ़ कोई ख़्वाहिश नहीं रखते। यह सुन कर इमाम हुसैन(अ.) ख़ुश व मसरूर हो गये और फ़रमाने लगे बेटा तुमने बड़ा मसर्रत अफ़ज़ा और मारेफ़त ख़ेज़ जवाब दिया है। तुम्हारा जवाब बिलकुल हज़रत इब्राहीम(अ.) के जवाब से मिलता जुलता है। हज़रत इब्राहीम(अ.) को जब मिनजनीक़ में रख कर आग की तरफ़ फेंका गया था और आप फ़ज़ा में होते हुये आग की तरफ़ जा रहे थे तो हज़रत जिब्रईल ने आपसे पूछा था, " हल्लक हाजतः " आपकी कोई हाजत व ख़्वाहिश है। उस वक़्त उन्होंने जवाब दिया था, " नाअम इमा इलैका फ़ला " बेशक मुझे हाजत है लेकिन तुम्से नहीं, अपने पालने वाले से है। (बेहारूल अनवार, जिल्द ११ सफ़ा २१ तबा ईरान)

आपके अहदे हयात के बादशाहाने वक़्त

आपकी विलादत बादशाहे दीनो ईमान हज़रत अली(अ.) के अहदे असमत में हुई। फिर इमाम हसन(अ.) का ज़माना रहा, फिर बनी उमय्या की ख़ालिस दुनियावी हुकूमत हो गई। सुलहे इमाम हसन(अ.) के बाद फिर ६०, हिजरी तक माविया बिन अबी सुफ़ियान बादशाह रहा। उसके बाद उसका फ़ासिक़ व फ़ाजिर बेटा यज़ीद ६४ हिजरी तक हुकमरां रहा। ६४, हिजरी में माविया बिन यज़ीद इब्ने माविया और मरवान बिन हकम हाकिम रहे।

९५ हिजरी से वलीद बिन अब्दुल मलिक ने हुक्मरानी की और उसी ने ९५ हिजरी में हज़रत इमाम ज़ैनुल आब्दीन(अ.) को ज़हरे दग़ा से शहीद कर दिया।
(तारीख़े आइम्मा, सफ़ा ३९२ व सवाएक़े मोहर्रेक़ा, सफ़ा १२ व नूरूल अबसार सफ़ा १२८)

इमाम ज़ैनुल आब्दीन(अ.) का अहदे तफ़्लियत और हज्जे बैतअल्लाह

अल्लामा मजलिसी तहरीर फ़रमाते हैं कि इब्राहीम बिन अदहम का बयान है कि मैं एक मरतबा हज के लिये जाता हुआ क़ज़ाए हाजत की ख़ातिर क़ाफ़िले से पीछे रह गया। अभी थोड़ी ही देर गुज़री थी कि मैंने एक नौ उम्र लड़के को इस जंगल में सफ़रे प्यादा देखा। उसे देख कर फिर ऐसी हालत में कि वह पैदल चल रहा था और उसके साथ कोई सामान न था और न उसका कोई साथी था। मैं हैरान हो गया और फ़ौरन उसकी ख़िदमत में हाज़िर हो कर अर्ज़ परदाज़ हुआ। " साहब ज़ादे " यह लक़ो दक़ सहरा और तुम बिलकुल तने तन्हा, यह मामेला क्या है ज़रा मुझे बताओ। तो सही कि तुम्हारा ज़ादे राह और तुम्हारा राहेला कहां है और तुम कहां जा रहे हो? इस नौ ख़ेज़ ने जवाब दिया।

" ज़ादी तक़वा व राहलती रजाली व क़सादी मौलाया "

मेरा ज़ादे राह तक़वा और परहेज़गारी है मेरी सवारी मेरे दोनों पैर हैं और मेरा मक़सूद मेरा पालने वाला है और मैं हज के लिये जा रहा हूँ। मैंने कहा कि आप तो बिल्कुल कमसिन हैं, हज आप पर वाजिब नहीं है। उस नौ ख़ेज़ ने जवाब दिया। बेशक तुम्हारा कहना दुरूस्त है लेकिन ऐ शेख़ मैं देखा करता हूँ कि मुझसे छोटे छोटे बच्चे भी मर जाते हैं। इसलिये हज को ज़ुरूरी समझता हूँ कि कहीं ऐसा न हो कि इस फ़रीज़े की अदाएगी से पहले मर जाऊँ। मैंने पूछा ऐ साहब ज़ादे तुम्ने खाने का क्या इन्तेज़ाम किया है। देख रहा हूँ कि तुम्हारे साथ खाने का कोई इन्तेज़ाम नहीं है। उसने जवाब दिया। ऐ शेख़ जब तुम किसी के यहां मेहमान जाते हो तो खाना अपने हमराह ले जाते हो ? मैंने कहा नहीं। फिर उसने फ़रमाया सुनो, मैं तो ख़ुदा का मेहमान हो कर जा रहा हूँ। खाने का इन्तेज़ाम उसके ज़िम्मे है। मैंने कहा इतने लम्बे सफ़र को पैदल क्योंकर तय करोग। उसने जवाब दिया कि मेरा काम कोशिश करना है और ख़ुदा का काम मंज़िले मक़सूद तक पहुंचाना है।

हम अभी बाहमी गुफ़्तुगू में ही मसरूफ़ थे कि नागाह एक ख़ूब सूरत जवान सफ़ैद लिबास पहने हुये आ पहूँचा और उसने इस नौ ख़ेज़ को गले से लगा लिया। यह देख कर मैंने उस जवाने राना से दरयाफ़्त किया यह नौ उम्र फ़रज़ंद कौन है ? उस नौजवान ने कहा कि यह हज़रत इमाम ज़ैनुल आब्दीन(अ.) बिन इमाम हुसैन बिन अली इब्ने अबी तालिब (अ.) हैं। यह सुन कर मैं उस जवाने राना के पास से इमाम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और माज़ेरत ख़्वाही के बाद उनसे पूछा कि यह ख़ूब सूरत जवान जिन्होंने आपको गले

से लगाया यह कौन हैं ? उन्होंने फ़रमाया यह हज़रते ख़िज़्र नबी(अ.) हैं। उनका फ़र्ज़ है कि रोज़ाना हमारी ज़ियारत के लिये आया करें। उसके बाद मैंने फिर सवाल किया और कहा कि आख़िर आप इस तवील और अज़ीम सफ़र को बिला ज़ाद और राहेला क्योंकर तय करेंगे तो आपने फ़रमाया कि मैं ज़ाद और राहेला सबकुछ रखता हूँ, और वह यह चार चीज़ें हैं। (१) दुनिया अपनी तमाम मौजूदात समेत खुदा की ममलेकत है। (२) सारी मख़लूक़ अल्लाह के बन्दे हैं। (३) असबाब और अरज़ाक़ खुदा के हाथ में है। (४) क़ज़ाए खुदा हर ज़मीन में नाफ़िज़ है। यह सुन कर मैंने कहा खुदा की क़सम आप ही का ज़ाद व राहेला सही तौर पर मुक़द्दस हस्तियों का सामाने सफ़र है। (दमए साकेबा जिल्द ३, सफ़ा ४३७) उलेमा का बयान है कि आपने सारी उम्र में २५(पच्चीस) हज पा पियादा किये हैं। आपने सवारी पर जब भी सफ़र किया है अपने जानवर को एक कोड़ा भी नहीं मारा।

आपका हुलिए मुबारक :- इमाम शिब्लंजी लिखते हैं कि आपका रंग गन्दुम गूँ (सांवला) और क़द मियाना था। आप दुबले पतले क़िस्म के इन्सान थे।

(नुरूल अबसार, सफ़ा १२६ व अख़बारूल अव्वल सफ़ा १०६)

मुल्ला मुबीन तहरीर फ़रमाते हैं कि आप हुसनो जमाल ,सूरतो कमाल में निहायत ही मुम्ताज़ थे। आपके चेहरे मुबारक पर जब किसी की नज़र पड़ती थी तो वह आपका एहतेराम करने और आपकी ताज़ीम करने पर मजबूर हो जाता था।

(वसीलतुन नजात सफ़ा २१६)

मोहम्मद बिन तल्हा शाफ़ेई रक़मतराज़ हैं कि आप साफ़ कपड़े पहनते थे और जब रास्ता चलते थे तो निहायत खुशू के साथ राह रवी में आपके हाथ ज़ानू से बाहर नहीं जाते थे। (मतालेबुल सुवेल सफ़ा २२६, व सफ़ा २६४)

हज़रत इमाम ज़ैनुल आब्दीन(अ.) की शाने इबादत

जिस तरह आपकी इबादत गुज़ारी में पैरवी ना मुम्किन है इसी तरह आपकी शाने इबादत की रक़म तराज़ी भी दुश्वार है। एक वह हस्ती जिसका मक़सद माबूद की इबादत और ख़ालिक़ की मारेफ़त हो और जो अपनी हयात का मक़सद इताअते खुदा वन्दी ही को समझता हो और इल्मो मारेफ़त में हद दरजा कमाल रखता हो। उसकी शाने इबादत को सतेह क़िरतास(क़लम से नहीं लिखा जा सकता) पर क्योंकर लाया जा सकता है और ज़बाने क़लम इसकी तरजुमानी में किस तरह कामयाबी हासिल कर सकती है। यही वजह है कि उलेमा की बे इन्तेहा काहिशो काविश के बा वजूद आपकी शाने इबादत का मुज़ाहेरा नहीं हो सका। " क़द बलिग़ मिनल इबादतः मअलम बलीगः अहादो " आप इबादत की उस मंज़िल पर फ़ायज़

थे जिस पर कोई भी फ़ायज़ नहीं हुआ। (दमए साकेबा, सफ़ा ४३९)

इस सिलसिले में अरबाबे इल्म और साहेबाने क़लम जो कुछ कह और लिख सके हैं उनमें से बाज़ वाक़ेयात व हालात यह हैं।

आपकी हालत वज़ू के वक़्त :- वज़ू नमाज़ के लिये मुक़द्दमे की हैसियत रखता है और इसी पर नमाज़ का दारो मदार होता है। इमाम ज़ैनुल आब्दीन(अ.) जिस वक़्त वज़ू का इरादा फ़रमाते थे आपके रगो पै में ख़ौफ़े ख़ुदा के असरात नुमायां हो जाते थे। अल्लामा मोहम्मद तल्हा शाफ़ेई लिखते हैं कि जब आप वज़ू का क़स्द फ़रमाते थे और वज़ू के लिये बैठते थे तो आपके चेहरे मुबारक का रंग ज़र्द हो जाया करता था। यह हालत बार बार देखने के बाद उनके घर वालों ने पूछा कि वज़ू के वक़्त आपके चेहरे का रंग ज़र्द क्यों पड़ जाता है। तो आपने फ़रमाया कि उस वक़्त मेरा तसव्वुरे कामिल अपने ख़ालिक़ व माबूद की तरफ़ होता है। इस लिये उसकी जलालत के रोब से मेरा यह हाल हो जाया करता है। (मतालेबुल सुवेल सफ़ा २६२)

आलमे नमाज़ में आपकी हालत :-अल्लामा तबरेसी लिखते हैं कि आपको इबादत गुज़ारी में इम्तियाज़े कामिल हासिल था। रात भर जागने की वजह से आपका सारा बदन ज़र्द रहा करता था और ख़ौफ़े ख़ुदा में रोते रोते आपकी आंखें फूल जाया करती थीं और नमाज़ में खड़े खड़े आपके पांव सूज जाया करते थे। (आलाम अल वरा सफ़ा १५३) और पेशानी पर घट्टे रहा करते थे और आपकी नाक का सिरा ज़ख़्मी रहा करता था। (दमए साकेबा, सफ़ा ४३६)

अल्लामा मोहम्मद बिन तल्हा शाफ़ेई लिखते हैं कि जब आप नमाज़ के लिये मुसल्ले पर खड़े हुआ करते थे तो लरज़ा बर अन्दाम हो जाया करते थे। लोगों ने बदन में कपकपी और जिस्म में थरथरी का सबब पूछा तो इरशाद फ़रमाया कि मैं उस वक़्त ख़ुदा की बारगाह में होता हूँ और उसकी जलालत मुझे अज़ ख़ुद रफ़्ता कर देती और मुझ पर ऐसी हालत तारी कर देती है। (मतालेबुल सुवेल सफ़ा २२६)

एक मरतबा आपके घर में आग लग गई और आप नमाज़ में मशग़ूल थे। अहले महल्ला और घर वालों ने बे हद शोर मचाया और हज़रत को पुकारा। " हुज़ूर आग लगी हुई है " मगर आपने सरे नियाज़ सजदे बे नियाज़ से न उठाया। आग बुझा दी गई। नमाज़ ख़त्म होने पर लोगों ने आपसे पूछा कि हुज़ूर आग का मामेला था, हमने इतना शोर मचाया, लेकिन आपने कोई तवज्जो न फ़रमाई। आपने इरशाद फ़रमाया " हां " मगर जहन्नम की आग के डर से नमाज़ तोड़ कर उस आग की तरफ़ मुत्वज्जे न हो सका।

(शवाहेदुन नबूवत, सफ़ा १७७)

अल्लामा शेख़ सब्बान मालकी लिखते हैं कि जब आप वज़ू के लिये बैठते थे तब ही से कांपने लगते थे और जब तेज़ हवा चलती थी तो आप ख़ौफ़े ख़ुदा से लाग़र हो जाने

की वजह से गिर कर बेहोश हो जाया करते थे।

(असआफ़ अल राग़ेबीन बर हाशियए नुरूल अबसार, सफ़ा २००)

इब्ने तल्हा शाफ़ेई लिखते हैं कि हज़रत इमाम ज़ैनुल आब्दीन(अ.) नमाज़े शबसफ़र व हज़र दोनों में पढ़ा करते थे और कभी उसे क़ज़ा नहीं होने देते थे।

(मतालेबुल सुवेल, सफ़ा २६३)

अल्लामा मोहम्मद बाक़र बेहारूल अनवार के हवाले से तहरीर फ़रमाते हैं कि इमाम (अ.) एक दिन नमाज़ में मसरूफ़ व मशग़ूल थे। कि इमाम मोहम्मद बाक़र(अ.) कुएं में गिर पड़े। बच्चे के गहरे कुएं में गिरने से उनकी मां बेचैन हो कर रोने लगीं और कुएं के गिर्द पीट,पीट कर चक्कर लगाने लगीं और कहने लगीं, इब्ने रसूल अल्लाह(स.) मोहम्मद बाक़र(अ.) ग़र्क़ हो गये। इमाम ज़ैनुल आब्दीन(अ.) ने बच्चे के कुएं में गिरने की कोई परवाह न की और इतमीनान से नमाज़ तमाम फ़रमाई। उसके बाद आप कुएं के क़रीब आये और पानी की तरफ़ देखा फिर हाथ बढ़ा कर बिला रस्सी के गहरे कुएं से बच्चे को निकाल लिया। बच्चा हंसता हुआ बरामद हुआ। कुदरते खुदा वन्दी देखिये उस वक़्त न बच्चे के कपड़े भीगे थे और न बदन तर था। (दमए साकेबा, सफ़ा ४३०, मनाक़िब जिल्द ४, सफ़ा १०६)

इमाम शिब्लन्जी तहरीर फ़रमाते हैं कि ताऊस रावी का बयान है कि मैंने एक शब हजरे असवद के क़रीब जा कर देखा कि इमाम ज़ैनुल आब्दीन(अ.) बारगाहे ख़ालिक़ में मुसलसल सजदा रेज़ी कर रहे हैं। मैं उसी जगह खड़ा हो गया। मैंने देखा कि आपने एक सजदे को बे हद तूल दे दिया है, यह देख कर मैंने कान लगाया तो सुना कि आप सजदे में फ़रमा रहे हैं।

“ अब्देका बे फ़सनाएक मिसकीनेका बेफासनाएक़ साएलेका बेफ़नाएक फ़क़ीरेका बेफ़नाएक ” यह सुन कर मैंने भी इन्हीं कलेमात के ज़रिये से दुआ मांगनी शुरू कर दी, फ़वा अल्लाह। खुदा की क़सम मैंने जब भी उन कलमात के ज़रिये से दुआ मांगी फ़ौरन कुबूल हुई।

(नूरूल अबसार सफ़ा १२६, तबा मिस्र, इरशाद मुफ़ीद, सफ़ा २६६)

इमाम ज़ैनुल आब्दीन(अ.) की शबाना रोज़ एक हज़ार रकअतें

उलेमा का बयान है कि आप शबो रोज़ में एक हज़ार रकअतें अदा फ़रमाया करते थे। (सवाएक़े मोहर्रेका, सफ़ा ११६ मतालेबुल सुवेल सफ़ा २६७) चूंकि आपके सजदों का कोई शुमार न था इसी लिये आपके आज़ाए सुजूद “ सफ़ना बईर ” ऊँट के घट्टे की तरह हो जाया करते थे और साल में कई मरतबा काटे जाते थे।

(अल फ़रआ अल नामी सफ़ा १५८ व दमए साकेबा, कशफ़ुल ग़मा सफ़ा ६०)

अल्लामा मजलिसी लिखते हैं कि आपके मक़ामाते सुजूद के घट्टे साल में दो बार

काटे जाते थे और हर मरतबा पांच तह निकलती थीं।(बेहारूल अनवार जिल्द २, सफ़ा ३)

अल्लामा दमीरी मुवर्रिख़ इब्ने असाकर के हवाले से लिखते हैं कि दमिशक़ में हज़रत इमाम ज़ैनुल आब्दीन(अ.) के नाम से मौसूम एक मस्जिद है जिसे "जामेए दमिशक़" कहते हैं। (हैवातुल हैवान जिल्द,१ सफ़ा १२१)

इमाम ज़ैनुल आब्दीन(अ.) मन्सबे इमामत पर फ़ाएज़ होने से पहले

अगरचे हमारा अक़ीदा यह है कि इमाम बतने मादर से इमामत की तमाम सलाहियतों से भर पूर आता है। ताहम फ़राएज़ की अदाएगी की जिम्मेदारी इसी वक़्त होती है। जब वह इमामे ज़माना की हैसियत से काम शुरू करे। यानी ऐसा वक़्त आजाए जब काएनाते अरज़ी पर कोई भी उससे अफ़ज़ल व इल्म बरतर व अकमल न हो, इमाम ज़ैनुल आब्दीन (अ.) अगरचे वक़्त विलादत ही से इमाम थे लेकिन फ़राएज़ की अदाएगी की जिम्मे दारी आप पर उस वक़्त आएद हुई। जब आपके वालिदे माजिद हज़रत इमाम हुसैन (अ.) दर्जए शहादत पर फ़ाएज़ हो कर हयाते ज़ाहेरी से महरूम हो गए।

इमाम ज़ैनुल आबदीन (अ.) की विलादत ३८, हिजरी में हुई जबकि हज़रत अली (अ.) इमामे ज़माना थे। दो साल उनकी ज़ाहिरी ज़िन्दगी में आपने हालते तफ़ूलियत में अय्यामे हयात गुज़ारे फिर ५०, हिजरी तक इमाम हसन (अ.) का ज़माना रहा। फिर आशुरा ६१, हिजरी तक इमाम हुसैन (अ.) फ़राएज इमामत की अन्जामी ही फ़रमाते रहे आशूर की दो पहर के बाद सारी ज़िम्मेदारी आप पर आएद हो गई। इस अज़ीम ज़िम्मेदारी से क़ब्ल के वाक़ेयात का पता सराहत के साथ नहीं मिलता। अलबता आपकी इबादत गुज़ारी और आपके इख़्लाक़ी कार नामे बाज़ किताबों में मिलते हैं। बहर सूरत हज़रत अली (अ.) के आख़री अय्यामे हयात के वाक़ेयात और इमाम हसन (अ.) के हालात से मुताअस्सिर होना एक लाज़मी अमर है।

फिर इमाम हसन (अ.) के साथ तो २२ -२३ साल गुज़ारे थे। यक़ीनन इमाम हसन (अ.) के जुमला मामलात में आप ने बड़े बेटे की हैसियत से साथ दिया ही होगा। लेकिन मक़सदे हुसैन(अ.) के फरोग़ देने में आपने अपने अहदे इमामत के आग़ाज होने पर इन्तेहाई कमाल कर दिया।

वाक़ेए करबला के सिलसिले में इमाम ज़ैनुल आब्दीन(अ.) का शानदार किरदार

२८ रजब ६० हिजरी को आप हज़रत इमाम हुसैन(अ.) के हमराह मदीने से

से रवाना हो कर मक्का मोअज़जमा पहुँचे चार माह क़याम के बाद वहाँ से रवाना हो कर २ मोहर्रम हराम को वारिदे करबला हुए ,वहाँ पहुँचते ही या पहुँचने से पहले आप अलील हो गए और आपकी अलालत ने इतनी शिदद्त एख़तियार की आप इमाम हुसैन (अ.) की शहादत के वक़्त इस क़ाबिल न हो सके कि मैदान में जाकर दर्जए शहादत हासिल करते। ताहम हर अहम मौक़े पर आपने ज़ज़बाते नुसरत को बरूए कार लाने की सई की। जब कोई आवाज़े इस्तेग़ासा कान में आई आप उठ बैठे और मैदाने कारज़ार में शिद्दते मर्ज़ के बावजूद जा पहुँचने की सइए बलीग़ की, इमाम हुसैन (अ.) के इस्तेग़ासा पर तो आप खेमें से बाहर निकल आए एक चोबे ख़ेमा ले कर मैदान का अज़्म कर दिया, नगाह इमाम हुसैन (अ.) की नज़र आप पर पड़ गई और उन्होंने जंगाह से बक़ौले हज़रत ज़ैनब (स.) को आवाज़ दी । **"बहन सय्यदे सज्जाद को रोको वरना नसले मोहम्मद(स.) का ख़ातमा हो जाएगा"** हुकमे इमाम से ज़ैनब (स.) ने सय्यदे सज्जाद को मैदान में जाने से रोक लिया। यही वजह है कि सय्यदों का वजूद नज़र आ रहा है। अगर इमाम ज़ैनुल आब्दीन (अ.)अलील हो कर शहीद होने से न बच जाते तो नसले रसूल (स.) सिर्फ इमाम मोहम्मदे बाक़र (अ.) में महदूद रह जाती। **इमाम सालबी** लिखते हैं कि मर्ज़ और अलालत की वजह से आप दर्जए शहादत पर फ़ाएज़ न हो सके। (नुरूल अबसार सफ़ा १२६)

शहादते इमाम हुसैन (अ.) के बाद जब ख़ेमों में आग लगाई तो आप उन्हीं ख़ेमों में से एक ख़ेमें में बदस्तूर पड़े हुए थे। हमारी हज़ार जानें क़ुर्बान हो जाऐं। हज़रत ज़ैनब पर कि उन्होंने अहम फ़राएज की अदाएगी के सिलसिले में सबसे पहला फ़रीज़ा इमाम ज़ैनुल आब्दीन (अ.) तहफ़्फ़ुज़ का अदा फ़रमाया और इमाम को बचा लिया। अलग़रज़ रात गुज़री और सुबह नमूदार हुई, दुश्मनों ने ज़ैनुल आबदीन(अ.) को इस तरह झिझोड़ा कि आप अपनी बीमारी भूल गए। आपसे कहा गया कि नाक़ो पर सब को सवार करो और इब्ने ज़्याद के दरबार में चलो ,सबको सवार करने के बाद आले मोहम्मद (स.) का सारबान फूफियों, बहनों और तमाम मुखद्देरात को लिए हुए दाख़िले दरबार हुआ। हालत यह थी कि औरतें और बच्चे रस्सीयों में बंधे हुए और इमाम लोहे में जकड़े हुए दरबार में पहुँच गए। आप चूँकि नाक़े की बरैहना पुश्त पर संभल न सकते थे इसलिए आपके पैरों को नाक़े की पुश्त से बांध दिया गया था। दरबारे कूफ़ा में दाख़िल होने के बाद आप और मुखद्देराते अस्मत क़ैद ख़ाने में बन्द कर दिए गए। सात रोज़ के बाद आप सबको लिए हुए शाम की तरफ़ रवाना हुए और १९, मन्ज़िलें तय करके तक़रीबन ३६, यौम (दिनों) में वहाँ पहुँचे।

कामिल भाई में है कि १६ रबीउल अव्वल ६१ ,हिजरी को आप दमिशक़ पहुँचे हैं। अल्लाह रे सब्रे इमाम ज़ैनुल आब्दीन(अ.) बहनों और फुफियों का साथ और लबे शिकवा पर सकूत की मोहर हुदूदे शाम का एक वाक़ेआ यह है। आपके हाथों में हथकड़ी, पैरों में बेड़ी, और गले में ख़ारदार तौक़े आहनी पड़ा हुआ था, इस पर मुस्तज़ाद यह कि लोग आप

पर आग बरसा रहे थे। इसी लिए आपने बाद वाक़ेए करबला एक सवाल के जवाब में " **अश्शाम,अश्शाम,अश्शाम** " फ़रमाया था। (तहफ़फ़ुज़े हुसैनिया अल्लामा बसतामी)

शाम पहुँचने के कई घन्टों या दिनों के बाद आप आले मोहम्मद (स.) को लिए हुए सरहाए शोहदा, समेत, दाखिले दरबार हुए। फिर क़ैद खाने में बन्द कर दिए गए। तक़रीबन एक साल क़ैद की मशक़्क़तें झेलीं,

क़ैदखाना भी ऐसा था कि जिसमें तमाज़ते आफ़ताबी की वजह से इन लोगों के चेहरों की खालें मुतागय्यर हो गईं थी। (लहूफ़ मुद्दते क़ैद के बाद आप सब को लिए हुए २०, सफर ६२ हिजरी को वारिदे करबला हुए। आपके हमराह सरे हुसैन (अ.) भी कर दिया गया था।

आपने उसे पदरे बुज़ुर्गवार के जिस्मे मुबारक से मुलहक़ किया (नासिख़ुल तवारीख़) ८ ,रबीउल अव्वल ६२, हिजरी को आप इमाम हुसैन (अ.) का लुटा हुआ क़ाफ़िला लिए हुए ,मदीनए मुनव्वरा पहुँचे, वहाँ के लोगों ने आहो ज़ारी, और कमालो रजं से अपका इस्तेकबाल किया। १५ शाबाना रोज़ नौहा व मातम होता रहा।

(तफ़सीली वाक़ेआत के लिए कुतुब मक़ातिल व सैर मुलाहेज़ा किजिए)

इस अज़ीम वाकेया का असर यह हुआ कि ज़ैनब के बाल इस तरह सफेद हो गए थे कि जानने वाले उन्हें पहचान ना सके ।(अहसन अलक़सस सफा १८२ तबा नजफ़) रूबाब ने साए में बैठना छोड़ दिया,इमाम ज़ैनुल आबदीन (अ.) गिरया फरमाते रहे(जलालुल ऐन सफा२५६) अहले मदीना यज़ीद की बैअत से अलाहेदा हो कर बाग़ी हुए बिल आख़िर वाक़िए हर्रा की नौबत आ गई।

वाक़ेए करबला और हज़रत ज़ैनुल आब्दीन (अ.) के खुतबात

मारकए करबला की ग़मगीन दास्तान तारीखे इस्लाम ही नहीं तारीखें आलम का अफ़सोस नाक सानेहा है। हज़रत इमाम ज़ैनुल आब्दीन(अ.) अव्वल से आख़िर तक इस होशरूबा और रूह फ़रसा वाक़ेए में अपने बाप के साथ रहे और बाप की शहादत के बाद खुद इस अलमिया के हीरो बने और फिर जब तक जिन्दा रहे इस सानेहा का मातम करते रहे। १० मोर्हरम ६१ हिजरी का यह अन्दोह नाक हादसा जिसमें १८ बनी हाशिम और ७२ असहाब व अनसार काम आए। हज़रत इमाम ज़ैनुल आब्दीन (अ.) मुदतुल उमर घुलता रहा और मरते दम तक इसकी याद फ़रामोश न हुई,और इसका सदमए जां काह दूर न हुआ,आप यूँ तो इस वाक़ेए के बाद चालिस साल जिन्दा रहे। मगर लुतफ़े ज़िन्दगी से महरूम रहे और किसी ने आपको बशशाश और फ़रहानाक न देखा, इस जान का वाक़ेए करबला के सिलसिले में आपने जो जाबजा खुतबे इरशाद फ़रमाये हैं उनका तरजुमा दर्जे ज़ैल हैं।

कूफ़े में आपका ख़ुतबा :- किताब लहूफ सफ़ा ६८ में है कि कूफ़ा पहुँने के बाद इमाम ज़ैनुल आब्दीन (अ.) ने लोगों को ख़ामोश रहने का इशारा किया,सब ख़ामोश हो गए, आप खड़े हुए खुदा की हमदो सना की। हज़रत बनी सालिम का ज़िक्र किया। उनपर सलवात भेजी। फिर इरशाद फ़रमाया ऐ लोगों जो मुझे पहचानता है वह तो पहचानता ही है। जो नहीं पहचानता उसे मैं बताता हूँ। मैं अली इब्नुल हुसैन अली बिन अबी तालिब हूँ, मैं उसका फरज़न्द हूँ जिसकी बे हुरमती की गई , जिसका सामान लूट लिया गया। जिसके अहलो अयाल कैद कर दिए गए । मैं उसका फरज़द हूँ जो साहिले फुरात पर ज़बह कर दिया गया, और बग़ैर कफ़न व दफ़न छोड़ दिया गया और शहादते हुसैन(अ.) हमारे फख़र के लिए काफ़ी हैं। ऐ लोगो ! मैं तुम्हें खुदा की क़सम देता हूँ, ज़रा सोचो तुमने ही मेरे पदरे बुर्ज़गवार को ख़त लिखा और फिर तुमने ही उनको धोखा दिया। तुमने ही उनके साथ अहदो पैमान किया और उनकी बैअत की और फिर तुमने ही उनको शहीद कर दिया। तुम्हारा बुरा हो कि तुमने अपने लिए हलाकत का सामान इकठ्ठा कर लिया, तम्हरी राहें किस क़दर बुरीं हैं, तुम किन आँखों से रसूल (स.) को देखोगे। जब रसूल बाज़ पुर्स करेंगे कि तुम लागों ने मेरी इतरत को क़तल किया और मेरे अहले हरम को ज़लील किया " इस लिए तुम मेरी उम्मत में नहीं "

मस्जिदे दमिशक़ (शाम) में आपका ख़ुतबा :- (मक़तल अबी मख़नफ़ सफा १३५ बेहारूल अनवार जिल्द १० सफ़ा २३३ रियाज़ुल क़ुद्स जिल्द २ सफ़ा ३२८) और रौज़तुल अहबाब वग़ैरा में है कि जब हज़रत ज़ैनुल आबदीन (अ.) अहले हरम समेत दरबारे यज़ीद में दाखिल किए गए और उनको मिम्बर पर जाने का मौक़ा मिला तो आप मिम्बर पर तशरीफ़ ले गए और अम्बिया की तरह शीरी ज़बान में नेहायत फ़साहत व बलाग़त के साथ ख़ुतबा इरशाद फ़रमाया ! ऐ लोगों तुम में से जो मुझे पहचानता है वह तो पहचानता ही है और जो नहीं पहचानता मैं उसे बताता हूँ कि मैं कौन हूँ सुनो मैं अली बिन हुसैन अली इब्ने अबी तालिब हूँ ,मैं उसका फरज़न्द हूँ जिसने हज किये हैं उसका फरजन्द हूँ, जिसने तवाफे काबा किया है और सई की है मैं पिसरे ज़मज़म व सफा हूँ मैं फरज़न्दे फ़ात्मा ज़हरा(स.) हूँ मैं उसका फरज़न्द हूँ जिस पर लोगों ने पानी बन्द कर दिया। हाँलाकि तमाम मखलूक़ात पर पानी को जएज़ करार दिया। मैं मोहम्मद(स.) का फरज़न्द हूँ जो करबला में शहीद किया गया,मैं इसका फरज़न्द हूँ जिसके अनसार ज़मीन में आराम की नीन्द सो गये, मैं उसका पिसर हूँ जिसके अहले हरम कैद कर दिए गए मैं उसका फरज़न्द हूँ जिसके बच्चे बग़ैर जुर्मो खता ज़िबह कर डाले गए मैं उसका बेटा हूँ जिसके खेमों में आग लगा दी, मैं उसका फरज़न्द हूँ जो ज़मीने करबला पर शहीद कर दिया गया मैं उसका फ़रज़न्द हूँ जिसको ना गुस्ल दिया गया और ना कफ़न मैं उसका फरज़न्द हूँ जिसका सर नोके नैज़ा पर बुलन्द किया गया, मैं उसका फरज़न्द हूँ जिसके अहले हरम की करबला में बे हुरमती की गई। मैं उसका फ़रजन्द

हूँ जिसका जिस्म ज़मीने करबला पर छोड़ दिया गया और सर दूसरे मक़ामात पर नोके नैज़ा पर बुलन्द करके फिराया गया। मैं उसका फ़रजन्द हूँ। मैं उसका फ़रजन्द हूँ जिसके इर्द गिर्द सिवाय दुश्मन के कोई और न था। मैं उसका फ़रजन्द हूँ जिसके अहले हरम को क़ैद करके शाम तक फिराया गया। मैं उसका फ़रजन्द हूँ जो बे यारो मद्दगार था... फिर इमाम(अ.) ने फ़रमाया लोगों ख़ुदा ने हमको पांच चीज़ो से फ़ज़ीलत बख़्शी है। (१) ख़ुदा की क़सम हमारे ही घर में फ़रिशतों की आमद रफ़्त रही और हम हीं मादने नबूवत व रिसालत(स.) हैं। (२) हमारी ही शान में क़ुरान की आयतें नाज़िल कीं और हमने लोगों की हिदायत की। (३) शुजाअत हमारे ही घर की कनीज़ है, हम कभी किसी की कुव्वत व ताक़त से नहीं डरे और फ़साहत हमारा ही हिस्सा है। जब फ़सहा(ज्ञानी) फ़क़रो मुबाहात करें। (४) हम हीं सिरातल मुस्तक़ीम और हिदायत का मरकज़ हैं और इसके लिये इल्म का सर चशमा हैं। जो इल्म हासिल करना चाहे और दुनिया के मोमेनीन के दिलों में हमारी मोहब्बत है। (५) हमारे ही मरतबे आसमानों ओर ज़मीनों में बलन्द हैं। अगर हम न होते तो ख़ुदा दुनिया को पैदा ही न करता। हर फ़ख़्र हमारे फ़ख़्र के सामने पस्त है। हमारे दोस्त रोज़े क़यामत सेरो सेराब होंगे और हमारे दुश्मन रोज़े क़यामत बद बख़्ती में होंगे। जब लोगों ने इमाम ज़ैनुल आब्दीन (अ.) का कलाम सुना तो चीख़ मार कर रोने और पीटने लगे और उनकी आवाज़ें बे साख़ता बलन्द होने लगीं। यह हाल देख कर यज़ीद घबरा उठा कि कहीं कोई फ़ितना न खड़ा हो जाय। इसके लिये उसने रद्दे अमल में फ़ौरन मोअज़्ज़िन को हुक्म दिया कि अज़ान शुरू करके इमाम के ख़ुत्बे को मुन्क़ता कर दे। जब मोअज़्ज़िन गुल्दस्तए अज़ान पर गया और " अल्लाहो अक्बर " (ख़ुदा की ज़ात सबसे बुज़ुर्ग और बरतर है) इमाम ने फ़रमाया तूने एक बड़ी ज़ात की बड़ाई बयान की। एक अज़ीमुश शान ज़ात की अज़मत का इज़हार किया और जो कहा हक़ है। फिर मोअज़्ज़िन ने कहा " अश हदोअन ला इलाहा इल्लल्लाह " (मैं गवाही देता हूँ कि नहीं कोई माबूद सिवा अल्लाह के) इमाम ने फ़रमाया मैं भी इस मक़सद की हर गवाह के साथ गवाही देता हूँ और हर इन्कार करने वाले के ख़िलाफ़ इक़रार करता हूँ। फिर मोअज़्ज़िन ने कहा " अशहदो अन मोहम्मदन रसूल अल्लाह " (मैं गवाही देता हूँ कि मोहम्मद मुस्तफ़ा अल्लाह के रसूल है) " फबका अलीउन " यह सुन कर हज़रत अली बिन हुसैन(अ.) रो पड़े ओर फ़रमाया ऐ यज़ीद मैं तुझसे ख़ुदा का वासता देकर पूछता हूँ बता हज़रत मोहम्मद(स.) मेरे नाना थे या तेरे। यज़ीद ने कहा आपके। आपने फ़रमाया, फिर क्यों तूने उनके अहले बैत को शहीद किया। यज़ीद ने कोई जवाब नहीं दिया और अपने महल में यह कहता हुआ चला गया। " ला हाजतः ली बिल सलवातः " मुझे नमाज़ से कोई वास्ता नहीं है। इसके बाद मिन्हाल बिन उमर खड़े हुये और कहा ऐ फ़रज़न्दे रसूल(स.) आपका क्या हाल है, फ़रमाया ऐ मिन्हाल ऐसे शख़्स का क्या हाल पूछते हो जिसका बाप निहायत बे दर्दी से शहीद कर दिया गया। जिसके मद्दगार ख़त्म कर दिये गये हों, जो अपने

चारों तरफ़ अहले हरम को क़ैद देख रहा हो ,जिनका ना परदा रह गया ना चादरें रह गईं, जिनका ना कोई मद्दगार है,तुम तो देख ही रहे होकि मैं मुकय्यद हूँ , ज़लील रूसवा किया गया हूँ,ना कोई मेरा नासिर हैना मद्दगार ,मैं और मेरे अहले बैत लिबासे कुहना में मलबूस हैं, हम पर नए लिबास हराम कर दिए गए हैं। अब जो तुम मेरा हाल पूछते हो तो मैं तुम्हारे सामने मौजूद हूँ। तुम देख ही रहे हो , हमारे दुश्मन हमें, बुरा भला कहते हैं और हम सुबहो शाम मौत का इन्तेज़ार करते हैं।

फिर फरमाया अरब व अजम इस पर फख़र करते हें कि हज़रत मोहम्मद मुस्तफा (स.) इनमें से थे। और कुरैश अरब पर इसलिए फख़र करते हैं, कि आँहज़रत (स.)कुरैश थे और हम इनके अहले बैत हैं लेकिन हमको कतल किया गया, हम परजुल्म किया गया,हम पर मुसीबतों के पहाड़ टूट गए और हमको क़ैद करके दरबदर फिराया गया। गोया हमारा हसब बहुत गिरा हुआ है और बहुत ज़लील है। गोया हम इज़्ज़त की बुलिन्दयों पर नहीं चढ़े और बुर्जुगयों के फ़रश पर जलवा अफरोज़ नहीं हुए। आज गोया तमाम यज़ीद और इसके लश्कर का हो गया आले मुस्तफा(स.) यज़ीद की अदना गुलाम हो गई है, यह सुनना था कि हर तरफ़ से रोने पीटने की सदाऐं बुलन्द हुईं, यज़ीद बहुत ख़ाएफ हुआ, कि कोई फितना न खड़ा हो जाए इसने इस शख़्स से कहा जिसने इमाम को मिम्बर पर तशरीफ़ ले जाने के लिए कहा था,"वयहकाअरदत बसअव दह ज़वाल मलकी" तेरा बुरा हो तू इनको मिम्बर पर बिठा कर मेरी सलतनत ख़त्म करना चाहता है। इसने जवाब दिया ,बखुदा मैं यह न जानता था कि यह लड़का इतनी बुलन्द गुफ़्तुगू करेगा। यज़ीद ने कहा "क्या तू नहीं जानता कि यह अहले बैते नबूअत और मादने रिसालत की एक फ़रद है,यह सुन कर मोवज़्ज़िन से न रहा गया और उसने कहा कि ऐ यज़ीद "अज़कान कज़ालका फलम्मा कतल अबाह" जब तू यह जानता था तो तूने इनके पदरे बुर्ज़गवार को क्यों शहीद किया। मोवज़्ज़िन की गुफ़्तुगू सुन कर यज़ीद बरहम हो गया " फ़मर बज़र अनकह " और मोवज़्ज़िन की गरदन मार देने का हुक्म दिया।

मदीने के क़रीब पहुँच कर आपका ख़ुतबा :-मकतल अबी मख़नफ़ सफ़ा ८८ में है। एक साल तक क़ैद ख़ाने शाम की सऊबत बरदाश्त करने के बाद जब अहले बैते रसूल की रिहाई, हुई और यह क़ाफला करबला होता हुआमदीना की तरफ चला तो क़रीब मदीना पहुँच कर इमाम (अ.) ने लोगों को ख़ामोश हो जाने का इशारा किया। सब के सब ख़ामोश हो गए। आपने फ़रमाया !

हम्द उस ख़ुदा की जो तमाम दुनिया का परवर दिगार है,रोज़े जज़ा का मालिक है, तमाम मख़्लूक़ात का पैदा करने वाला है जो इतना दूर है बुलन्द आसमान से भी बुलन्द है और इतना क़रीब है कि सामने मौजूद है और हमारी बातों को सुनता है। हम ख़ुदा की तारीफ करते हैं और उसका शुक्र बजा लाते हैं,अज़ीम हादसों, ज़माने की हौलनाक गरदिशों,

र्दद नाक ग़मों, ख़तरनाक आफ़तों शदीद तकलीफ़ों, और क़लबो जिगर को हिला देने वाली मुसीबतों के नाज़िल होने के वक़्त ऐ लोगो ! ख़ुदा और सिर्फ़ ख़ुदा के लिए हम्द है, हम बड़े बड़े मसाएब में मुबतिला किए गए, दीवारे इस्लाम में बहुत बड़ा रख़ना (शिगाफ़) पड़ गया हज़रत अबू अब्दुल्ला हुसैन और उनके अहले बैत शहीद कर दिय गए, इनकी औरतें और बच्चे क़ैद कर दिए गए और लश्करे यज़ीद ने इनके६३६५८२'१ सरहाए मुबारक को बुलन्द नैज़ो पर रख कर शहरों में फिराया, यह वह मुसीबत है जिसके बराबर कोई मुसीबत नहीं। ऐ लोगो! तुम में से कौन मर्द है जो शहादते हुसैन(अ.) के बाद खुश रहे या कौन सा दिल है जो शहादते हुसैन(अ.) से ग़मग़ीन न हो या कौन सी आँख है जो आँसू को रोक सके। शहादते हुसैन पर सातों आसमान रोए। समन्दर और उसकी मौजें रोईं,आसमान और उसके अरकान रोए। ज़मीन और उसके अतराफ़ रोए। दरख़्त और उसकी शाखें रोईं, मछलियाँ और समन्दर के गिरदाब रोए, मलाएक मुक़रेबीन और तमाम आसमान वाले रोए, ऐ लोगो ! कौन सा क़ल्ब है जो शहादते हुसैन (अ.) की ख़बर सुन कर न फट जाए, कौन सा क़ल्ब है जो महज़ून न हो, कौन सा कान है जो इस मुसीबत को सुन कर जिससे दीवारे इस्लाम में रख़ना पड़ा। बहरा न हो, ऐ लोगो ! हमारी यह हालत थी कि हम कशाँ कशाँ फिराए जाते थे। ज़लील किए गए शहरों से दूर थे , गोया हमको अवलाद तुर्क व देलम समझ लिया गया था। हाँलाकि न हमने कोई जुर्म किया था न किसी की बुराई का इरतेक़ाब किया था न दीवारे इस्लाम में कोई रख़ना डाला था और न इन चीजों के ख़िलाफ़ किया था जो हमने अपने आबो अजदाद से सुना था, ख़ुदा की क़सम अगर हज़रत नबी (स.) भी इन लोगों लश्करे यज़ीद को हम से जगं करने के लिए मना करते तो यह ना मानते जैसे कि हज़रत नबी (स.) ने हमारी वसीअत का एलान किया और इन लोगों ने न माना बल्कि जितना उन्होंने किया है इससे ज़्यादा सुलूक करते ,हम ख़ुदा के लिए हैं और ख़ुदा की तरफ़ हमारी बाज़गश्त है।

रौज़ए रसूल पर इमाम (अ.) की फ़रयाद :- मक़तल अबी मख़नफ़ सफ़ा १४३ में है कि यह लुटा हुआ क़ाफ़िला मदीने में दाख़िल हुआ तो हज़रत उम्मे कुलसूम (अ.) गिरयो बुका करती हुई मस्जिदे नब्वी में दाख़िल हुईं और अर्ज़ की ,ऐ नाना आप पर मेरा सलाम ,हो! " अनी नाऐतहू अलैका वलदक अल हुसैन " मैं आपको आपके फ़रज़न्द हुसैन(अ.) की ख़बरे शहादत सुनाती हूँ ,यह कहना था कि क़ब्रे रसूल (स.) से गिरये की सदा बुलन्द हुई, और तमाम लोग रोने लगे। फिर हज़रत ज़ैनुल आब्दीन (अ.) अपने नाना की क़ब्रे मुबारक पर तशरीफ़ लाए और अपने रूख़सार क़ब्रे मुताहर से रगड़ते हुए यूँ फ़रयाद करने लगे।

अना जैका या जद्दाहा या ख़ैर मुरसल अनाजैका फ़ख़रोना, अलैका मौजालन
जसबक मक़तूल व नस लक ज़ाका असैरन वमाला हामिया व मदा फ़आ

सुबयाना कमातसबइ अमा वमसना
मन अलज़रमा लातहतमलहू असाबआ

तरजुमा :- मैं आपसे फ़रयाद करता हूँ ऐ नाना, ऐ तमाम रसूलो में से सबसे बेहतर आपका महबूब हुसैन(अ.) शहीद कर दिया गया और आपकी नस्ल तबाह व बरबाद कर दी गई, ऐ नाना हम सबको इस तरह क़ैद किया गया जिस तरह लावारिस कनीज़ों को क़ैद किया जाता है। ऐ नाना हम पर इतने मसाएब ढाए गए जो उंगलियों पर गिने नहीं जा सके।

इमाम ज़ैनुल आब्दीन(अ.) और ख़ाके शिफ़ा :- मिसबाह उल मुजतहिद में है कि हज़रत इमाम ज़ैनुल आब्दीन (अ.) के पास एक कपड़े में बंधी हुई थोड़ी सी ख़ाके शिफ़ा रहा करती थी। (मुनाक़िब जिल्द ३२६ तबा मुलतान)

हज़रत के हमराह ख़ाके शिफ़ा का हमेशा रहना तीन हाल से ख़ाली न था या उसे तबर्रूक समझते थे या उस पर नमाज़ में सजदा करते थे या उसे ब हैसीयत मुहाफ़िज़ रखते थे और लोगों को बताना मक़सूद रहता था कि जिसके पास खाके शिफ़ा हो वह जुमला मसाएब व अलाम से महफ़ूज़ रहता है और इसका माल चोरी नहीं होता जैसा कि अहादीस से वाज़े है

इमाम ज़ैनुल आब्दीन (अ.) और मोहम्मद हनफ़िया के दरमियान हजरे असवद का फ़ैसला

आले मोहम्मद के मदीने पहुँने के बाद इमाम ज़ैनुल (अ.) के चचा मोहम्मद हनफ़ि ने बरावते अहले इस्लाम से ख़्वाहिश की मुझे तबररूकात इमामत दे दो , कि मैं बुज़ुंग ख़ानदान और इमामत का अहल व हक़दार हूँ। आपने फ़रमाया कि हजरे असवद के पास चलो वह फ़ैसला कर देगा। जब यह हज़रत उसके पास पहुँचे तो वह ब हुक्मे खुदा यूँ बोला। “ इमामत ज़ैनुल आब्दीन का हक़ है ” इस फ़ैसले को दोनों ने तसलीम कर लिया।

(शवाहेदुन नबूअत सफ़ा १७६)

कामिल मबरद में है कि इस वाकिया के बाद से मोहम्मद हनफ़ि इमाम ज़ैनुल आब्दीन (अ.) की बड़ी इज़्ज़त करते थे। एक दिन अबू ख़ालिद काबली ने उनसे इसकी वजह पूछी तो कहा कि हजरे असवद ने ख़िलाफ़त का इनके हक़ में फ़ैसला दे दिया है और यह इमामे ज़माना हैं यह सुन कर वह मज़हबे इमाम का क़ाएल हो गया।

(मुनाक़िब जिल्द २ सफ़ा ३२६)

सुबूते इमामत में ज़ैनुल आब्दीन (अ.) का कन्करी पर मुहर फ़रमाना

उसूल काफ़ी में है कि एक औरत जिसकी उम्र ११३ साल की हो चुकी थी।

एक दिन इमाम ज़ैनुल आब्दीन (अ.) के पास आई उसके पास वह कन्करी थी जिस पर हज़रत अली(अ.) इमाम हसन(अ.) इमाम हुसैन(अ.) की मोहरे इमामत लगी हुई थी। उसके आते ही बिला कहे हुये आपने फ़रमाया कि वह कंकरी ला जिस पर मेरे आबाओ अजदाद की मोहरें लगीं हुई हैं उस पर मैं भी मोहर कर दूँ। चुनांचे उसने कंरी दे दी। आपने उसे मोहर करके वापस कर दी और उसकी जवानी भी पलटा दी। वह खुश व खुर्रम वापस चली गई। (दमए साकेबा जिल्द २, सफ़ा ४३६)

वाक़ेए हिर्रा और इमाम ज़ैनुल आब्दीन (अ.)

मुस्तनद तवारीख़ में है कि करबला के बेगुनाह क़त्ल ने इसलाम में एक तहलका डाल दिया। खुसूसन ईरान में एक क़ौमी जोश पैदा कर दिया। जिसने बाद में बनी अब्बस को बनी उम्मया के ग़ारत करने में बड़ी मद्‌द दी। चुंकि यज़ीद तारेकुस्सलात और शराबी था और बेटी बहन से निकाह करता और कुत्तों से खेलता था, उसकी मुलहिदाना हरकतों और इमाम हुसैन(अ.) के शहीद करने से मदीने में इस क़द्र जोश फ़ैला कि ६२, हिजरी में अहले मदीना ने यज़ीद की मोअत्तली का एलान कर दिया और अब्दुल्ला बिन हनज़ला को अपना सरदार बना कर यज़ीद के गर्वनर उस्मान बिन मोहम्मद बिन अबी सुफ़ियान को मदीने से निकाल दिया। सियोती तारीख़ अल खुलफ़ा में लिखता है। कि ग़सील उल मलायका(हनजल़ा) कहते हैं कि हम ने उस वक़्त तक यज़ीद की ख़िलाफ़त से इन्कार नहीं किया जब तक हमें यह यक़ीन नहीं हो गया कि आसमान से पत्थर बरस पड़ेंग। ग़ज़ब है कि लोग मां बहनों और बेटियों से निकाह करें। एलानिया शराब पियें, और नमाज़ छोड़ बैठें।

यज़ीद ने मुस्लिम बिन अक़बा को जो खूं रेज़ी की कसरत के सबब (मुसरिफ़) के नाम से मशहूर है। फ़ौजे कसीर देकर अहले मदीना की सरकोबी को रवाना किया। अहले मदीना ने बाब अल तैबा के क़रीब मक़ामे " **हिर्रा** " पर शामियों का मुक़ाबला किया। घमसान का रन पड़ा, मुसलमानों की तादात शामियों से बहतु कम थी। इसके बा वजूद उन्होंने दादे मरदानगी दी। मगर आखिर शिकसत खाई। मदीने के चीदा चीदा बहादुर रसूल अल्लाह (स.) के बड़े बड़े सहाबी, अन्सार व महाजिर इस हंगामे आफ़त में शहीद हुये। शामी घरों में घुस गये। मज़ारात को उनकी ज़ीनत और आराईश की ख़ातिर मिसमार कर दिया। हज़ारों औरतों से बदकारी की। हज़ारों बाकरा लड़कियों का इज़ालाए बकारत (बलात्कार) कर डाला। शहर को लूट लिया। तीन दिन क़त्ले आम कराया। दस हज़ार से ज़्यादा बाशिन्दगाने मदीना जिनमें सात सौ महाजिर और अन्सार और इतने ही हामेलान व हाफ़ेज़ाने क़ुरान व उलेमा व सुलोहा मोहद्दिस थे। इस वाक़ए में मक़तूल हुये हज़ारों लड़के लड़कियां गुलाम बनाई गईं और बाक़ी लोगों से बशर्त क़ुबूले गुलामी यज़ीद की बैयत ली गई। मस्जिदे नब्वी और हज़रत के

हरमे मोहतरम में घोड़े बंधवाए गए। यहाँ तक कि लीद के अम्बार लग गए। यह वाक़ेआ जो तारीख़े इस्लाम में वाक़ेए हर्रा के नाम से मशहूर है। २७ ज़िल हिज ६३ हिजरी को हुआ था। इस वाकेए पर मौलवी, अमीर अली लिखते हैं कि कुफ़्र व बुत परसती ने फिर ग़लबा पाया। एक फिरगीं मोवरिख़ लिखता है कि कुर्फ का दोबारा जन्म लेना इस्लाम के लिए सख़्त खौफनाक और तबाही बख़्श साबित हुआ। बक़ीया तमाम मदीने को यज़ीद का गुलाम बनाया गया। जिसने इन्कार किया उसका सर उतार लिया,इस रूसवाई से सिफ दो आदमी बचे "अली बिन हुसैन (अ.) और अली बिन अब्दुल्ला इब्ने अब्बास" इनसे यज़ीद की बैयत भी नहीं ली गई मदारिस शिफ़ाख़ाने और दीगर रफ़ाहे आम की इमारतें जो ख़ुलफा के ज़माने में बनाई गई थीं बन्द कर दी गईं या मिसमार कर दी गईं और अरब फिर एक वीराना बन गया। इसके चन्द मुद्दत बाद अली बिन हुसैन (अ.) के पोते जाफरे सादिक़ (अ.) ने अपने जद्दे माजिद अली मर्तुज़ा का मकतब ख़ाना फिर मदीना में जारी किया। मगर यह सहरा में सिर्फ एक ही सच्चा नख़लिस्तान था। इसके चारों तरफ ज़ुल्मत व ज़लालत छाई हुई थी। मदीना फिर कभी न संभला। बनी उम्मय्या के अहद में मदीना ऐसी उजड़ी बसती हो गया कि जब मन्सूरे अब्बासी ज़्यारत को मदीने में आया। तो उसे एक रहनुमा की ज़रूरत पड़ी। हवास को वह मकानात बताए जहाँइब्तेदाई ज़माने के बुर्ज़ुगाने इस्लाम रहा करते थे ।

(तरीख़े इस्लाम जिल्द १ सफा३६, तारीख़े अबुल फ़िदा, जिल्द १ सफ़ा १६१ ,तारीख़ फ़ख़री सफ़ा ८६, तरीख़े कामिल जिल्द ४ सफ़ा ४६ सावयक़े मोहर्रेक़ा सफ़ा १३२)

वाक़ेए हिर्रा और आपकी क़याम गाह :- तवारीख़ से मालूम होता है कि आपकी एक छोटी सी जगह "मुन्बा" नामी थी जहाँ खेती बाड़ी का काम होता था। वाक़ेए हिर्रा के मौक़े पर शहरे मदीना से निकल कर अपने गाँव चले गऐ थे। (तारीख़े कामिल जिल्द ४ सफ़ा ४५) यह वही जगह है, जहाँ हज़रत अली (अ.) ख़लीफ़ा उस्मान के अहद में क़याम पज़ीर थे। (अक़दे फ़रीद जिल्द २ सफ़ा २१६)

ख़ानदानी दुश्मन मरवान के साथ आपकी करम गुस्तरी

वाक़ेए हिर्रा के मौक़े पर जब मरवान ने अपनी और अपने अहलो अयाल की तबाही और बरबादी का यक़ीन कर लिया। तो अब्दुल्ला इब्ने उमर के पास जाकर कहने लगा कि हमारी मुहाफज़त करो। हुकूमत की नज़र मेरी तरफ़ से भी फिरी हुई है। मैं जान और औरतो की बेहुरमती से डरता हूँ। उन्होंने साफ़ इन्कार कर दिया। उस वक़्त वह इमाम ज़ैनुल आब्दीन (अ.) के पास आया और उसने अपनी और अपने बच्चो की तबाही व बरबादी का हवाला देकर हिफाज़त की दरख़्वासत की हज़रत ने यह ख़्याल किए बग़ैर कि यह ख़ानदानी हमारा दुश्मन है और इसने वाक़ेए करबला के सिलसिले में पूरी दुश्मनी का मुज़ाहेरा

किया है। आपने फ़रमाया बेहतर है कि अपने बच्चों को मेरे पास बमुक़ाम मुनबा भेज दो, जहां पर मेरे बच्चे रहेंगे तुम्हारे भी रहेंगे। चुनान्चे वह अपने बाल बच्चों को जिन में हज़रत उसमान की बेटी आएशा भी थी आपके पास पहुँचा गया और आपने सबकी मुकम्मल हिफाज़त फ़रमाई। (तारीख़े कामिल जिल्द ४ सफ़ा ४५)

इमाम ज़ैनुल आब्दीन(अ.) और मुस्लिम बिन अक़बा :- अल्लामा मसूदी लिखते हैं कि मदीने के इन हंगामी हालात में एक दिन मुस्लिम बिन अक़बा ने इमाम ज़ैनुल आब्दीन(अ.) को बुला भेजा। अभी वह पहुँचे न थे कि उसने अपने पास के बैठने वालों से आपकी खानदानी बुराई शुरू की और न जाने क्या क्या कह ड़ाला। लेकिन अल्लाह रे ! आपका रोब व जलाल कि ज्यों हीं आप उसके पास पहुँचे वह बसरो क़द ताज़ीम के लिए खड़ा हो गया। बात चीत के बाद जब आप वापस तशरीफ ले गए तो किसी ने मुस्लिम से कहा कि तूने इतनी शानदार ताज़ीम क्यो कि उसने जवाब दिया , मैं क़सदन ब इरदातन ऐसा नहीं किया बल्कि उनके रोब व जलाल की वजह से मजबूरन ऐसा किया है।

(मरूजुल ज़हब मसउदी बर हाशिया तारीख़े कामिल जिल्द ६ सफ़ा १०५)

इमाम ज़ैनुल आब्दीन(अ.) से बैअत का सवाल न करने की वजह

मुवर्रेख़ीन का इत्तेफाक़ है कि वाक़ेए हर्रा में मदीने का कोई शख़्स ऐसा न था जो यज़ीद की बैअत न करे और क़त्ल होने से बच जाए लेकिन इमाम ज़ैनुल आब्दीन (अ.) बैअत न करने के बावजूद महफ़ूज़ रहे, बल्कि उसे यूँ कहा जाए कि आपसे बैअत तलब ही नहीं की गई। अल्लामा जलालउद्दीन हुसैनी मिसरी अपनी किताब " **अलहुसैन** " में लिखते हैं कि यज़ीद का हुक्म था कि सबसे बैअत लेना अली इबनुल हुसैन(अ.) को न छेड़ना, वरना वह भी सवाले बैअत पर हुसैनी किरदार पेश करेगें और एक नया हगांमा खड़ा हो जाएगा।

(दुश्मने अज़ली हसीन बिन नमीर के साथ आपकी करम नवाज़ी)

मदीने को तबाह बरबाद करने के बाद मुस्लिम बिन अक़बह इब्तिदाए ६४ हिजरी में मदीना से मक्का को रवाना हो गया। इत्तेफाक़न राह में बीमार होकर वह गुमराह राहिए जहन्नम हो गया, मरते वक़्त उसने हसीन बिन नमीर को अपना जानशीन मुर्कर कर दिया। उसने वहाँ पहुँच कर ख़ानए काबा पर सगं बारी की और उसमें आग लगा दी ,उसके बाद मुकम्मिल मुहासरा करके अब्दुल्ला बिन ज़ुबैर को क़तल करना चाहा इस मुहासरे को चालीस दिन गुज़रे थे कि यज़ीद पिलीद वासिले जहन्नम हो गया। उसके मरने की ख़बर से इब्ने ज़ुबैर ने ग़लबा हासिल कर लिया और यह वहाँ से भाग कर मदीना जा पहुँचा।

मदीने के दौरान क़याम में इस मलऊन ने एक दिन ब वक़्ते शब चन्द सवारों

को ले कर फ़ौज के ग़िज़ाई सामान की फ़राहमी के लिए एक गाँव की राह पकड़ी। रास्ते में उसकी मुलाक़ात हज़रत इमाम ज़ैनुल आब्दीन (अ.) से हो गई,आपके हमराह कुछ ऊटँ थे जिन पर गिज़ाई सामान लदा हुआ था।उसने आपसे वह ग़ल्ला खरीदना चाहा। आपने फरमाया कि अगर तुझे ज़रूरत है तो यूँ ही ले ले हम इसे फरोख्त नहीं कर सकते,(क्योंकि मैं इसे फुक़राए मदीना के लिए लाया हूँ) उसने पुछा कि आपका नाम क्या है। आपने फ़रमाया " अली इबनुल हुसैन " कहते हैं। फिर आपने उससे नाम दरयाफ़्त किया तो उसने कहा मैं हसीन बिन नमीर हूँ। अल्लाह रे ! आपकी करम नवाज़ी, आपने यह जानने के बावजूद कि यह मेरे बाप के क़ातिलों में से है उसे सारा ग़ल्ला दें दिया(और फ़ुक़रा के लिए दुसरा बन्दो बस्त फ़रमाया)। उसने जब आपकी यह करम गुस्तरी देखी और अच्छी तरह पहचान भी लिया तो कहने लगा कि यज़ीद का इन्तेक़ाल हो चुका। आपसे ज़्यादा मुस्तहक़े ख़िलाफ़त कोई नहीं। आप मेरे साथ तशरीफ़ ले चलें। मैं आपको तख़्ते ख़िलाफत पर बिठा दूँगा। आपने फ़रमाया कि मैं खुदा वन्दे आलम से अहद कर चुका हूँ कि ज़ाहिरी ख़िलाफ़त कुबूल न करूँगा। यह फ़रमा कर आप अपने दौलत सरा को तशरीफ़ ले गए।(तारीख़े तबरी फ़ारसी सफ़ा ६४४)

इमाम ज़ैनुल आब्दीन (अ.) और फ़ुक़रा मदीना की किफ़ालत

अल्लामा इब्ने तलह शाफ़ई लिखते हैं कि हज़रत ज़ैनुल आब्दीन(अ.) फुक़राए मदीना के १०० घरों कि किफ़ालत फ़रमाते थे और सरा सामान उनके घर पहुँचाया करते थे। उनमें बहुत ज़्यादा ऐसे घराने थे जिनमें आप यह भी मालूम न होने देते थे कि यह सामान खुरदोनोश रात को कौन दे जाता है। आपका उसूल यह था कि बोरियाँ पुश्त पर लाद कर घरों में रोटी और आटा वग़ैरा पहुँचाते थे और यह सिसिला ताबा हयात जारी रहा। बाज़ मोअज़्ज़ेज़ीन का कहना है कि हमने अहले मदीना को यह कहते हुए सुना है कि इमाम ज़ैनुल आब्दीन (अ.) की जिन्दगी तक हम खुफिया ग़िजाई रसद से महरूम नहीं हुए।

(मतालेबुल सुवेल सफ़ा २६५ नुरूल अबसार सफ़ा १२६)

हज़रत ज़ैनुल आब्दीन (अ.) और ज़ेराअत

अहादीस में है कि ज़राअत व काश्त कारी सुन्नत है। हज़रत इदरीस के अलावा कि वह ख़य्याती करते थे। तक़रीबन जुमला अम्बिया ज़राअत किया करते थे। हज़रात आइम्मए ताहेरीन (अ.) का भी यही पेशा रहा है लेकिन यह हज़रात इस काश्त कारी से खुद फ़ाएदा नहीं उठाते थे बल्कि इससे गुरबा, फ़ुक़रा, और तयूर के लिए रोज़ी फ़राहम किया करते थे, हज़रत जैनुल आब्दीन(अ.) फ़रमाते हैं " माअजरा अलज़रा लतालब अलफ़ज़ल फ़ीह वमाअज़रा अलालैतना वलहू अल फ़क़ीरो ज़ुल हाजता वलैतना वल मना अलक़बरता ख़सता मन अल तैर " मैं अपना फ़ाएदा हासिल करने के लिए ज़राअत नहीं किया करता। बल्कि

मैं इसलिए ज़राअत करता हूँ कि इससे ग़रीबों , फकीरो मोहताजों और ताएरों खुसूसन कुबर्रहू को रोज़ी फ़राहम करूँ। (सफ़ीनतूल बेहार जिल्द १ सफ़ा ५४६)

वाज़े हो कि कुबरहू वह ताएर है जो अपने महले इबादत में कहा करता है। **"अल्लह हुम्मा लाअन मबग़ज़ी आले मोहम्मद"** खुदाया उन लोगों पर लानत जो आले मोहम्मद (स.) से बुग़ज रखते हैं। (लबाब अल तावील बग़वी)

इमाम ज़ैनुल आब्दीन (अ.) और फ़ितनए इब्ने ज़ुबैर

मुवर्रिख़ मि० ज़ाकिर हुसैन लिखते हैं कि अबदुल्ला बिन ज़ुबैर जो आले मोहम्मद (स.) का शदीद दुश्मन था ३ हिजरी में हज़रत अबू बक्र की बड़ी साहब ज़ादी असमा के बतन से पैदा हुआ ,इसे खिलाफत की बड़ी फिक्र थी। इसी लिए जगें जमल में मैदाने गरम करने में उसने पूरी सई से काम लिया था। यह शख्स इन्तेहाई कन्जूस और बनी हाशिम का सख़्त दुश्मन था और उन्हे बहुत सताता था। बरवाएते मसूदी उसने जाफ़र बिन अब्बास से कहा कि मैं चालीस बरस से तुम बनी हाशिम से दुश्मनी रखता हूँ। इमाम हुसैन (अ.) की शहादत के बाद ६१ हिजरी में मक्का में और रजब ६४ हिजरी में मुलके शाम के बाज़ इलाकों के अलावा तमाम मुमालिक इस्लाम में इसकी बैअत कर ली गई अक़दुल फ़रीद और मरूज उज़ ज़हब में है कि जब इसकी कूवत बहुत बढ़ गई तो उसने खुतबे में हज़रत अली की मजम्मत की और चालीस रोज़ तक खुतबे में दुरूद नहीं पढ़ा और मोहम्मद हनिफ़ा और इब्ने अब्बास और दीगर बनी हाशिम को बैअत के लिए बुलाया। उन्होंने इन्कार किया तो बरसरे मिम्बर उनको गालियाँ दीं और खुतबे से रसूल अल्लह (स.) का नाम निकाल डाला, और जब इसके बारे में इस पर एतिराज़ किया गया तो जवाब दिया कि इससे बनी हाशिम बहुत फूलते हैं,मैं दिल में कह लिया करता हूँ। इसके बाद उसने मोहम्मद हनफ़िया और इब्ने अब्बास को हब्से बेजा में मय १५, बनी हाशिम के क़ैद कर दिया और लकड़ियाँ क़ैद ख़ाने के दरवाज़े पर चुन दीं और कहा कि अगर बैअत न करोगे तो मैं आग लगा दूँगा। जिस तरह बनी हाशिम के इन्कारे बैअत पर लकड़ियाँ चुनवा दी गई थीं। इतने में वह फ़ौज वहाँ पहुँच गई। जिसे मुख़्तार ने उनकी मदद के लिए अब्दुल्ला जदली की सर करदगी में भेजी थी और उसने इन मोहतरम लोगों को बचा लिया और वहाँ से ताएफ़ पहुँचा दिया। (अक़दे फ़रीद व मसूदी)

उन्हीं हालात की बिना पर हज़रत ज़ैनुल आब्दीन(अ.) अकसर फ़ितनए इब्ने ज़ुबैर का ज़िक्र फ़रमाते थे, आलिमे अहले सुन्नत, अल्लामा शिब्ली लिखते हैं कि अबू हमज़ा शुमाली का बयान है कि एक दिन हज़रत की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और चाहा कि आपसे मुलाक़ात करूँ लेकिन चूँकि आप घर के अन्दर थे , इस लिए सुए अदब समझते हुए मैंने

आवाज़ न दी, थोड़ी देर के बाद खुद बाहर तशरीफ़ लाए ,और मुझे हमराह लेकर एक जानिब रवाना हो गए। रास्ते में आपने एक दीवार की तरफ़ इशारा करते हुये फ़रमाया, ऐ अबु हमज़ा मैं एक दिन सख़्त रंजो अलम में इस दीवार से टेक लगाये खड़ा था और सोच रहा था कि इब्ने ज़ुबैर के फ़ितने से बनी हाशिम को क्योंकर बचाया जाय। इतने में एक शरीफ़ और मुकददस बुज़ुर्ग साफ़ सुथरे कपड़े पहने हुये मेरे पास आये और कहने लगे आख़िर क्यों परेशान खड़े हैं। मैंने कहा मुझे फ़ितनए इब्ने ज़ुबैर का ग़म और उसी की फ़िक्र है। वह बोले ! ऐ अली इब्नुल हुसैन(अ.) घबराव नहीं जो ख़ुदा से डरता है, ख़ुदा उसकी मद्‌द करता है। जो उससे तलब करता है वह उसे देता है। यह कह के वह मुक़द्‌दस शख़्स मेरी नज़रों से ग़ायब हो गये और हातिफ़े ग़ैबी ने आवाज़ दी। “ **हाज़ल ख़िज़्र ना हबाका** ” कि यह जो आपसे बातें कर रहे थे वह जनाबे ख़िज़्र (अ.) थे।

(नुरूल अबसार, सफ़ा १२६ मतालेबुल सुवेल, सफ़ा २६४, शवाहेदुन नबूवत, सफ़ा १७८)

(वाज़े हो कि यह रवायत बरादराने अहले सुन्नत की है। हमारे नज़दीक इमाम कायनात की हर चीज़ से वाक़िफ़ होता है।)

हज़रत इमाम ज़ैनुल आब्दीन(अ.) की अपने पदरे बुज़ुर्गवार के क़र्ज़े से सुबुक दोशी

उलेमा का बयान है कि हज़रत इमाम ज़ैनुल आब्दीन(अ.) क़ैद ख़ानए शाम से छूट कर मदीने पहुंचने के बाद से अपने पदरे बुज़ुर्गवार हज़रत इमाम हुसैन(अ.) के क़र्ज़े की अदायगी की फ़िक्र में रहा करते थे और चाहते थे कि किसी न किसी सूरत से ७५ हज़ार दीनार जो हज़रत सय्यदुश शेहदा का क़र्ज़ा है मैं अदा कर दूँ। बिल आख़िर आपने “ चश्मए तहनस ” को जो कि इमाम हुसैन(अ.) का बामक़ाम “ ज़ी ख़शब ” बनवाया हुआ था फ़रोख़्त करके क़रज़े की अदायगी से सुबुक दोशी हासिल फ़रमाई। चशमें के बेचने में यह श्रर्त थी कि शबे शम्बा को पानी लेने का हक़ ख़रीदने वाले को न होगा। बल्कि उसकी हक़दार सिर्फ़ इमाम (अ.) की हमशीरा होंगी।

(बेहारूल अनवार, वफ़ा अल वफ़ा, जिल्द २, सफ़ा २४६ व मनाक़िब जिल्द ४, सफ़ा ११४)

माविया इब्ने यज़ीद की तख़्त नशीनी और इमाम ज़ैनुल आब्दीन (अ.)

यज़ीद के मरने के बाद उसका बेटा अबू लैला, माविया बिन यज़ीद ख़लीफ़ए वक़्त बना दिया गया। वह इस ओहदे को क़ुबूल करने पर राज़ी न था, क्योंकि वह फ़ितरतन हज़रत

अली(अ.) की मोहब्बत पर पैदा हुआ था और उनकी औलाद को दोस्त रखता था, बा रवायत हबीब अल सैर उसने लोगों से कहा कि मेरे लिये ख़िलाफ़त सज़ावार और मुनासिब नहीं है। मैं ज़ुरूरी समझता हूँ कि इस मामले में तुम्हारी रहबरी करूँ और बता दूँ कि यह मन्सब किसके लिये ज़ेबा है। सुनो ! इमाम ज़ैनुल आब्दीन(अ.) मौजूद हैं उनमें किसी तरह का कोई ऐब निकाला नहीं जा सकता। वह इसके हक़ दार और मुसतहक़ हैं। तुम लोग उनसे मिलो और उन्हें राज़ी करो। अगरचे मैं जानता हूँ कि वह इसे क़ुबूल न करेंगे।

मिस्टर ज़ाकिर हुसैन लिखते हैं कि ६४, हिजरी में यज़ीद के मरते ही माविया बिन यज़ीद की बैअत शाम में, अब्दुल्ला इब्ने ज़ुबैर की हिजाज़ और यमन में हो गई और अब्दुलाह इब्ने ज़ियाद ईराक़ में ख़लीफ़ा बन गया।

माविया इब्ने यज़ीद हिल्म व सलीम अल बतआ जवाने सालेह था। वह अपने ख़ानदान की ख़ताओं और बुराईयों को नफ़रत की नज़र से देखता और अली(अ.) और औलादे अली(अ.) को मुस्तहक़े ख़िलाफ़त समझता था। (तारीख़े इस्लाम, जिल्द १, सफ़ा ३७) अल्लामा मआसिर रक़म तराज़ हैं कि ६४ हिजरी में यज़ीद मरा तो उसका बेटा माविया ख़लीफ़ा बनाया गया। उसने चालीस रोज़ और बाज़ क़ौल के मुताबिक़ ५, माह ख़िलाफ़त की। उसके बाद खुद ख़िलाफ़त छोड़ दी और अपने को ख़िलाफत से अलग कर लिया। इस तरह कि एक रोज़ मिम्बर पर चढ़ कर देर तक ख़ामोश बैठा रहा फिर कहा " लोगों " मुझे तुम लोगों पर हुकूमत करने की ख़्वाहिश नहीं है। क्योंकि मैं तुम लोगों की जिस बात (गुम्राही और बे ईमानी) को ना पसन्द करता हूँ। वह मामूली दरजे की नहीं बल्कि बहुत बड़ी है और यह भी जानता हूँ कि तुम लोग भी मुझे न पसन्द करते हो। इस लिये कि मैं तुम लोगों की ख़िलाफ़त से बड़े अज़ाब में मुब्तिला और गिरफ़तार हूँ, और तुम लोग भी मेरी हुकूमत के सबब गुम्राही की सख़्त मुसीबत में पड़े हो। " सुन लो " कि मेरे दादा माविया ने इस ख़िलाफ़त के लिये उस बुज़ुर्ग से जंगो जदल की जो इस ख़िलाफ़त के लिये उससे कहीं ज़्यादा सज़ावार और मुस्तहक़ थे और वह हज़रत इस ख़िलाफ़त के लिये सिर्फ़ माविया ही नहीं ,बल्कि दूसरे लोगों से भी अफ़ज़ल थे। इस सबब से कि हज़रत को हज़रत रसूले ख़ुदा(स.) से क़राबते क़रीबिया हासिल थी। हज़रत के फ़ज़ाएल बहुत थे। ख़ुदा के यहां हज़रत को सबसे ज़्यादा तक़र्रुब हासिल था। हज़रत तमाम सहाबा, महाजेरीन से ज़्यादा अज़ीम उल क़द्र, सबसे ज़्यादा बहादुर, सबसे ज़्यादा साहेबे इल्म, सबसे पहले ईमान लाने वाले, सबसे आला अशरफ़ दर्जा रखने वाले और सबसे पहले हज़रत रसूले ख़ुदा(स.) की सोहबत का फ़ख़्र हासिल करने वाले थे। अलावा इन फ़ज़ाएल व मनाक़िब के वह जनाबे हज़रत रसूले ख़ुदा के चचा ज़ाद भाई ,हज़रत के दामाद और हज़रत के दीनी भाई थे। जिनसे हज़रत ने कई बार मवाख़ात फ़रमाई। जनाबे हसनैन(अ.) जवानाने अहले बेहिश्त के सरदार और इस उम्मत में सबसे अफ़ज़ल और परवरदए रसूल(स.) और फ़ात्मा, बुतूल(स.) के दो लाल यानी पाको पाकीज़ा दरख़्ते रिसालत

के फूल थे। उनके पदरे बुजुर्गवार हज़रत अली(अ.) ही थे। ऐसे बुजुर्ग से मेरा दादा जिस तरह सरकशी पर आमादा हुआ उसको तुम लोग खूब जानते हो, और मेरे दादा की वजह से तुम लोग जिस गुम्राही में पड़े उस से भी तुम लोग बे खबर नहीं हो। यहां तक कि मेरे दादा को उसके इरादे में कामयाबी हुई और उसके दुनिया के सब काम बन गये, मगर जब उसकी अजल उसके क़रीब पहुंच गई और मौत के पंजों ने उसको अपने शिकंजे में कस लिया तो वह अपने आमाल में इस तरह गिरफ़तार हो कर रह गया कि अपनी क़ब्र में अकेला पड़ा है, और जो जुल्म कर चुका था उन सबको अपने सामने पा रहा है, और जो शैतनत व फ़िरऔनियत उसने इख़्तेयार कर रखी थी उन सबको अपनी आंखों से देख रहा है। फिर यह ख़िलाफ़त मेरे बाप यज़ीद के सिपुर्द हुई तो जिस गुम्राही में मेरा दादा था उसी ज़लालत में पड़ कर मेरा बाप भी ख़लीफ़ा बन बैठा और तुम लोगों की हुकूमत अपने हाथ में ले ली। हालांकि मेरा बाप यज़ीद भी इस्लाम कुश बातों दीन सोज़ हरकतों और अपनी रूसियाहियों की वजह से किसी तरह उसका अहल न था कि हज़रत रसूले करीम(स.) की उम्मत का ख़लीफ़ा और उनका सरदार बन सके। मगर वह अपनी नफ़्स परस्ती की वजह से इस गुम्राही पर आमादा हो गया और उसने अपने ग़ल्त कामों को अच्छा समझा। जिसके बाद उसने दुनिया में जो अंधेरा किया उससे ज़माना वक़िफ़ है कि अल्लाह से मुक़ाबला और सरकशी करने तक पर आमादा हो गया, और हज़रत रसूले खुदा(स.) से इतनी बग़ावत की कि हज़रत की औलाद का खून बहाने पर कमर बांध ली, मगर उसकी मुद्दत कम रही और उसका ज़ुल्म ख़त्म हो गया। वह अपने आमाल के मज़े चख रहा है और अपने गढ़े (क़ब्र) से लिपटा हुआ और अपने गुनाहों की बलाओं में फसा हुआ पड़ा है। अलबत्ता उसकी सफ़ाकियों के नतीजे जारी और उसकी खूँरेज़ियों की अलामतें बाक़ी हैं। अब वह भी वहां पहुँच गया जहां के लिये अपने करतूतों का ज़ख़ीरा मोहय्या किया था और अब किये पर नादिम हो रहा है। मगर कब? जब किसी निदामत का कोई फ़ायदा नहीं और वह इस अज़ाब में पड़ गया कि हम लोग उसकी मौत को भूल गये और उसकी जुदाई पर हमें अफ़सोस नहीं होता बल्कि उसका ग़म है, कि अब वह किस आफ़त में गिरफ़तार है। काश मालूम हो जाता कि वहां उसने क्या उज़्र तराशा और फिर उससे क्या कहा गया। क्या वह अपने गुनाहों के अज़ाब में डाल दिया गया और अपने आमाल की सज़ा भुगत रहा है। मेरा गुमान तो यही है कि ऐसा ही होगा। उसके बाद गिरया उसके गुलूगीर हो गया, और वह देर तक रोता और ज़ोर ज़ोर से चीख़ता रहा।

फिर बोला अब मैं अपने ज़ालिम ख़ानदान बनी उम्मया का तीसरा ख़लीफ़ा बनाया गया हूँ हालांकि जो लोग मुझ पर मेरे दादा और बाप के जुल्मों की वजह से ग़ज़बनाक हैं। उनकी तादाद उन लोगों से कहीं ज़्यादा है जो मुझसे राज़ी हैं।

भाईयों मैं तुम लोगों के गुनाहों के बार उठाने की ताक़त नहीं रखता और खुदा वह दिन भी मुझे न दिखाये कि मैं तुम लोगों की गुमराहियों और बुराईयों के बार से लदा हुआ

उसकी दरगाह में पहुचूँ। अब तुम लोगों को अपनी हुकूमत के बारे में इख़्तेयार है उसे मुझसे ले लो और जिसे पसन्द करो अपना बादशाह बना लो, कि मैंने तुम लोगों की गरदनों से अपनी बैअत उठा ली। वस्सलाम। जिस मिम्बर पर माविया इब्ने यज़ीद ख़ुत्बा दे रहा था उसके नीचे मरवान बिन हक्म भी बैठा हुआ था। ख़ुत्बा ख़त्म होने पर वह बोला। क्या हज़रत उमर की सुन्नत जारी करने का इरादा है कि जिस तरह उन्होंने अपने बाद ख़िलाफ़त को " शूरा " के हवाले किया था। तुम भी इसे शूरा के सिपुर्द करते हो। इस पर माविया बोला। आप मेरे पास से तशरीफ़ ले जायें। क्या आप मुझे भी मेरे दीन में धोका देना चाहते हैं। ख़ुदा की क़सम मैं तुम लोगों की ख़िलाफ़त का कोई मज़ा नहीं पाता। अलबत्ता इसकी तलख़ियां बराबर चख रहा हूँ। जैसे लोग उमर के ज़माने में थे, वैसे ही लोगों को मेरे पास भी लाओ। इसके अलावा जिस तारीख़ से उन्होंने ख़िलाफ़त को शूरा के सिपुर्द किया और जिस बुज़ुर्ग हज़रत अली (अ.)की अदालत में किसी क़िस्म का शुबहा किसी को हो भी नहीं सकता। इसको उससे हटा दिया। उस वक़्त से वह भी ऐसा करने की वजह से क्या ज़ालिम नहीं समझे गये। ख़ुदा की क़सम अगर ख़िलाफ़त कोई नफ़े की चीज़ है तो मेरे बाप ने उससे नुक़सान उठाया, और गुनाह ही का ज़ख़ीरा मोहय्या किया, और अगर ख़िलाफ़त कोई और वबाल की चीज़ है तो मेरे बाप को उससे जिस क़द्र बुराई हासिल हुई वही काफ़ी है।

यह कह कर माविया उतर आया, फिर उसकी मां और दूसरे रिशते दार उसके पास गये तो देखा कि वह रो रहा है। उसकी मां ने कहा कि काश तू हैज़ ही में ख़त्म हो जाता और इस दिन की नौबत न आती। माविया ने कहा ख़ुदा की क़सम मैं भी यही तमन्ना करता हूँ। फिर कहा अगर मेरे रब ने मुझ पर रहम नहीं किया तो मेरी नजात किसी तरह नहीं हो सकती। उसके बाद बनी उमय्या उसके उस्ताद उमर मक़सूस से कहने लगे कि तू ही ने माविया को यह बातें सिखाई हैं और उसको ख़िलाफ़त से अलग किया है, और अली(अ.) व औलादे अली(अ.) की मोहब्बत उसके दिल में रासिख़ कर दी है। ग़र्ज़ उसने हम लोगों के जो अयूब व मज़ालिम बयान किये उन सबका बाएस तू ही है, और तू ही ने इन बितअतों को उसकी नज़र में पसन्दीदा क़रार दे दिया है। जिस पर उसने यह ख़ुत्बा बयान किया है। मक़सूस ने जवाब दिया ख़ुदा की क़सम मुझसे उसका कोई वास्ता नहीं है। बल्कि वह बचपन ही से हज़रत अली(अ.) की मोहब्बत पर पैदा हुआ है, लेकिन उन लोगों ने बेचारे का कोई उज़्र नहीं सुना और क़ब्र खोद कर उसे ज़िन्दा दफ़्न कर दिया।

(तहरीर अल शहादतैन सफ़ा १०२, सवाएक़े मोहर्रेक़ा, सफ़ा १२२, हैवातुल हैवान जिल्द १, सफ़ा ५५, तारीख़े ख़मीस जिल्द २, सफ़ा २३२, तारीख़े आइम्मा, सफ़ा ३९१)

मुवर्रिख़ डाक्टर ज़ाकिर हुसैन लिखते हैं, इसके बाद बनी उमय्या ने माविया बिन यज़ीद को भी ज़हर से शहीद कर दिया। उसकी उम्र २१, साल १८ दिन की थी। उसकी ख़िलाफ़त का ज़माना चार महीने और बा रवायते चालीस यौम शुमार किया जाता है। माविया

सानी के साथ बनी उमय्या की सुफ़यानी शाख़ की हुकूमत का ख़ात्मा हो गया और मरवानी शाख़ की दाग़ बेल पड़ गई।(तारीख़े इस्लाम, जिल्द १, सफ़ा ३८) मुवर्रिख़ इब्नुल वरदी अपनी तारीख़ में लिखते हैं कि माविया इब्ने यज़ीद के मरने के बाद शाम में बनी उमय्या ने मुतफ़्फ़ेक़ा तौर पर मरवान बिन हकम को ख़लीफ़ा बना लिया।

मरवान की हुकूमत सिर्फ़ एक साल क़ायम रही फिर उसके इन्तेक़ाल के बाद उसका लड़का अब्दुल मलिक इब्ने मरवान ख़लीफ़ए वक़्त क़रार दिया गया।

अब्दुल मलिक इब्ने मरवान और इमाम ज़ैनुल आब्दीन(अ.)

६५, हिजरी में मरवान के मरने के बाद उसका बेटा अब्दुल मलिक मिस्र व शाम का बादशाह तसलीम किया गया। यह बनी उमय्या का असल नमूना था। चूंकि मुसतबद फ़रेबी और ईमान से दूर था। वह अजीब क़ाबलियत के साथ अपनी ख़िलाफ़त को मुस्तहकम करने में मसरूफ़ हुआ। उसकी राह में मुख़्तार बिन अबी अबीदा सक़्फ़ी और अब्दुल्ला इब्ने ज़ुबैर रूकावट थे। उनके बाद जमादुससानिया ७३, हिजरी में अब्दुल मलिक इब्ने मरवान तमाम मुमालिके इस्लामिया का अकेला बादशाह बन गया। इब्ने ज़ुबैर से लड़ने में चूंकि हज्जाज बिन यूसुफ़ अमवी जरनल ने नुमायां किरदार अदा किया था। इस लिये अब्दुल मलिक बिन मरवान ने उसे हिजाज़ का गर्वनर बना दिया था।

७५, हिजरी में अब्दुल मलिक ने इसे अपनी मशरिक़ी सलतनत , ईराक़, फ़ारस और सिस्तान , किरमान, और ख़ुरासान का जिसमें काबुल और कुछ हिस्सा मावरा अल नहर का भी शामिल था, वायस राय बना दिया।

हज्जाज ने अपनी हेजाज़ की गर्वनरी के ज़माने में मदीने के लोगों पर जिनमें असहाबे रसूल(स.) भी थे। बड़े बड़े ज़ुल्म किये। ईराक़ में अपनी बीस बरस की गवरनरी के दौरान में उसने तक़रीबन डेढ़ लाख (१,५०,००० और बा रवायत मिशक़ात ५,००००० (पांच लाख) बन्देगाने ख़ुदा का ख़ून बहाया था। जिनमें से बहुत लोगों पर झूठे इल्ज़ाम और बोहतान लगाये गये थे। उसकी वफ़ात के वक़्त ५०,०००(पचास हज़ार) मर्द व ज़न क़ैद ख़ानों में पड़े हुये उसकी जान को रो रहे थे। बे सख़फ़ (बग़ैर छत) क़ैद ख़ाना उसी की ईजाद है।

इब्ने ख़ल्क़ान लिखता है कि अब्दुल मलिक बड़ा ज़ालिम और सफ़्फ़ाक था और ऐसे ही उसके गवरनर, हज्जाज ईराक़ में , मेहरब ख़ुरासान में , हश्शाम इब्ने इस्माईल हिजाज़ और मग़रेबी अरब में और उसका बेटा अब्दुल्ला मिस्र में। हस्सान बिन नोमान मग़रिब में , हज्जाज का भाई मोहम्मद बिन यूसुफ़ यमन में , मोहम्मद बिन मरवान जज़ीरे में , यह सब के सब ज़ालिम और सफ़्फ़ाक थे। और मसूदी लिखता है कि बे परवाही से ख़ून बहाने में अब्दुल मलिक के आमिल इसी के नक़्शे क़दम पर चलते थे। मुवर्रेख़ीन लिखते हैं

कि यह कंजूस, बे रहम, सफ़्फ़ाक, वायदा ख़िलाफ़, दग़ा बाज़, बे ईमान था। यह मतलब बरारी के लिए सब कुछ किया करता था। अख़तल इसके दरबार का मशहूर शायर और ज़हरी मशहूर मोहद्दिस था। जिसने सबसे अव्वल हदीस की किताब लिखी। (तारीख़े इस्लाम जिल्द १ सफ़ा ४२) ज़हरी का असल नाम इमाम अबूबकर मोहम्मद बिन मुस्लिम बिन अबीद उल्ला इब्ने शहाब ज़हरी मदनी शामी था। यह ताबई- फक़ीह और मोहद्दिस था। ५१, हिजरी में पैदा होकर १२४ हिजरी में फ़ौत हुआ। मदीने के नामी मोहद्दिसों और फ़क़ीहों में था, अब्दुल मलक और हुश्शाम ख़ुल्फ़ा बनी उमय्या की सोहबत में रहा। इमाम मालिक का उसताद और इलमे हदीस का मदून था। (तारीख़ इस्लाम जिल्द ५ सफ़ा ७६,सफ़ा १६,२०) मुतअदिद उलमा ने लिखा है कि अब्दुल मलक बिन मरवान ने जब मदीने में हज्जाज के ज़रिए तबाही मचाई थी। इसी ज़माने में अब्दुल मलिक इब्ने मरवान ने हुक्म दे दिया था कि अली इब्ने हुसैन (अ.) को गिरफतार करके शाम पहुँचा दिया जाए। चुनांचे आप को ज़ंजीरों में जकड़ कर मदीने से बाहर एक ख़ेमें में ठहरा दिया गया है।

ज़हरी का बयान है कि मैं उन्हें रूख़सत करने के लिए उनकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ। जब मेरी नज़र हथकड़ी और बेड़ियों पर पड़ी तो मेरी आँखों से आँसू निकल पड़े और मैं अर्ज़ परदाज़ हुआ कि काश अपके बजाए लोहे के ज़ेवरात मैं पहन लेता और आप इससे बरी हो जाते। आपने फ़रमाया ज़हरी तुम मेरी हथकड़ियाँ ,बेड़ी और मेरे तौक़ गराँ बार को देख कर घबरा रहे हो ,सुनो मुझे इसकी कोई परवाह नहीं है।

(शवाहेदुन नबूवत सफ़ा १७७ व अर हज्जुल मतालिब, सफ़ा ४२२ हयातुल औलिया, जिल्द ३ सफ़ा १३५ तबा मिस्र)

अल्लामा मोहम्मद बिन तलहा शाफ़ेई बहवाला ज़हरी लिखते हैं कि इस वाक़े के बाद अब्दुल मलिक इब्ने मरवान के पास गया और मैंनं कहा कि ऐ मेरे "अमीर यास अली बिन अलहुसैन हैस मज़न अनह मशग़ूल बरब्बहू इमाम ज़ैनूल आब्दीन(अ.) पर किसी क़िस्म का कोई इलज़ाम नहीं है। वह तेरी हुकूमत के मामेलात से कोई दिलचस्पी नहीं रखते वह ख़ालिस अल्लाह वाले हैं कि ज़हरी के तज़किरे ख़ुसूसी के बाद अब्दुल मलिक इब्ने मरवान ने हज्जाज बिन यूसुफ़ को लिखा कि "अन यज़तनेबादेमा बनी अब्दुल मुत्तलिब" बनी हाशिम को सताने और उनके ख़ून बहाने से इजतेनाब और परहेज़ करें।

(सवाएक़े मोहर्रेक़ा सफ़ा ११६)

अल्लामा शिबली लिखते हैं कि बादशाह ने हज्जाज को इजतेनाब की वजह भी लिखी थी और वह यह थी कि बनी उम्मय्या के अकसर बादशाह उन्हें सताकर जलद तबाह हो गए हैं। (नूरूल अबसार सफ़ा १२७) ग़रज़ अब्दुल मलिक के ज़माने में इस वाकिये के बाद से औलादे अबु तालिब हज्जाज के हाथों से अमान में रही।

(तारीख़े इस्लाम जिल्द, १ सफ़ा १४१)

इमाम ज़ैनुल आब्दीन (अ.) और बुनियादे काबए मोहतरम व नसबे हजरे असवद

७१, हिजरी में अब्दुल मलिक बिन मरवान ने ईराक़ पर लश्कर कशी करके मसअब बिन ज़ुबैर को क़त्ल किया फिर ७२, हिजरी में हज्जाज बिन यूसुफ को एक अज़ीम लश्कर के साथ अब्दुल्लाह इब्ने ज़ुबैर को क़त्ल करने के लिए मक्के मोअज़्ज़मा रवाना किया। (अबूल फ़िदा) वहाँ पहुँच कर हज्जाज ने इब्ने ज़ुबैर से जगं की इब्ने ज़ुबैर ने ज़बर दस्त मुकाबेला किया और बहुत सी लड़ाइयाँ हुईं, आखिर में इब्ने ज़ुबैर महसूर हो गए, और हज्जाज ने इब्ने ज़ुबैर को काबे से निकालने के लिए काबे पर सगं बारी शुरू कर दी। यही नहीं बल्कि उसे खुदवा डाला, इब्ने ज़ुबैर जमादील आख़िर ७३, हिजरी में क़त्ल हुआ। (तारीख़ इब्नुल वरदी) और हज्जाज जो ख़ानए काबा की बुनियाद तक ख़राब कर चुका था। इसकी तामीर की तरफ़ मुतवज्जे हुआ ।

अल्लामा सद्दूक़ किताब अल्ल शराए में लिखते हैं कि हज्जाज के हदमे काबा के मौक़े पर लोग उसकी मिट्टी तक उठा कर ले गए और काबा को इस तरह लूट लिया कि इसकी कोई पुरीनी चीज़ बाक़ी ना रही। फिर हज्जाज को ख़्याल पैदा हुआ कि इसकी तामीर करानी चाहिए। चुनांचे उसने तामीर का प्रेग्राम मुरत्तब कर लिया और काम शुरू करा दिया। काम की अभी बिल्कुल इब्तेदाई मज़िंल थी कि एक अज़दहा बरामद हो कर ऐसी जगह बैठ गया जिसके हटे बग़ैर काम आगे नहीं बढ़ सकता था। लोगों ने इस वाक़िये कि इत्तिला हज्जाज को दी, हज्जाज घबरा उठा और लागों को जमा करके उनसे मशविरा किया कि अब क्या करना चाहिए। जब लोग इसका हल निकालने से क़ासिर रहे तो एक शख़्स ने खड़े होकर कहा कि आज कल फ़रज़न्दे रसूल (स.) हज़रत जैनुल आब्दीन (अ.) यहाँ आए हुए हैं। बेहतर होगा कि उनसे दरयाफ़्त कराया जाए। यह मसला उनके अलावा कोई हल नहीं कर सकता ,चुनांचे हज्जाज ने आपको ज़हमते तशरीफ़ आवरी दी, आपने फ़रमाया कि हज्जाज तूने ख़ानए काबा को अपनी मीरास समझ लिया। तूने तो बेनाए इब्राहीम (अ.) उखड़वा कर रास्ते में डलवा दिया। "सुन" तुझे ख़ुदा उस वक़्त तक काबे की तामीर में कामयाब न होने देगा। जब तक तू काबे का लूटा हुआ सामान वापस न मंगाएगा। यह सुन कर ऐलान किया कि काबे से मुतअल्लिक़ जो शय भी किसी के पास हो वह जल्द अज़ जल्द वापस करे। चुनांचे लोगों ने पत्थर मिट्टी वग़ैरा जमा कर दी। जब सब कुछ जमा हो गया तो आप उस अजदहे के क़रीब गए और वह हट कर एक तरफ़ हो गया। आपने उसकी बुनियाद इसतेवार की और हज्जाज से फ़रमाया कि इसके ऊपर तामीर करो " फ़लज़ालिक सार अल बैत मरतफ़अन" फिर इसी बुनियाद पर ख़ानए काबा की तामीर बुलन्द हुई। किताब ऊ ल ख़राएज वल जराएज में अल्लामा

क़ुतब रावन्दी लिखते हैं कि जब तामीरे काबा उस मुक़ाम तक पहँची जिस जगह हजरे असवद नसब करना था यह दुशवारी पैदा हुई कि जब कोई आलिम, ज़ाहिद, क़ाज़ी उसे नसब करता था तो " यताज़ल ज़लव यज़तरब वला यसतक़र " हजरे असवद मुताज़लज़िल और मुज़तरिब रहता और अपने मुक़ाम पर ठहरता न था। बिल आख़िर ज़ैनुल आब्दीन (अ.) बुलाए गए और आपने बिस्मिल्लाह कह कर उसे नसब कर दिया, यह देख कर लोगों ने अल्लाहो अकबर का नारा लगाया। (दमए साकेबा जिल्द २ सफा ४३७) उल्मा व मुवर्रेख़ीन का बयान है कि हज्जाज बिन यूसुफ़ ने यज़ीद बिन माविया ही की तरह ख़ानए काबा पर मिनजनीक़ से पत्थर वग़ैरा फिकवाए थे।

इमाम ज़ैनुल आब्दीन(अ.) और अब्दुल मलिक बिन मरवान का हज

बादशाहे दुनिया अब्दुल मलिक बिन मरवान अपने अहदे हुकूमत में अपने पाये तख़्त से हज के लिये रवाना हो कर मक्के मोअज़्ज़मा पहुंचा और बादशाहे दीन हज़रत इमाम ज़ैनुल आब्दीन(अ.) भी मदीनए मुनव्वरा से रवाना हो कर पहुंच गये। मनासिके हज के सिलसिले में दोनों का साथ हो गया। हज़रत इमाम ज़ैनुल आब्दीन(अ.) आगे आगे चल रहे थे और बादशाह पीछे पीछे चल रहा था। अब्दुल मलिक को यह बात नागवार हुई और उसने आपसे कहा क्या मैंने आपके बाप को क़त्ल किया है जो आप मेरी तरफ़ मुतवज्जे नहीं होते। आपने फ़रमाया कि जिसने मेरे बाप को क़त्ल किया है उसने अपनी दुनिया व आख़ेरत ख़राब कर ली है। क्या तू भी यही हौसला रखता है। उसने कहा नहीं। मेरा मतलब यह है कि आप मेरे पास आयें ताकि मैं आपसे कुछ माली सुलूक करूं। आपने इरशाद फ़रमाया, मुझे तेरे माले दुनियां की ज़ुरूरत नहीं है। मुझे देने वाला ख़ुदा है। यह कह कर आपने उसी जगह ज़मीन पर रिदाए मुबारक डाल दी और काबे की तरफ़ इशारा कर के कहा, मेरे मालिक इसे भर दे। इमाम की ज़बान से अल्फ़ाज़ का निकलना था कि रिदाए मुबारक मोतियों से भर गई। आपने उसे राहे ख़ुदा में दे दिया। (दमए साकेबा, जन्नातुल ख़ुलूद, सफ़ा २३)

बद किरदार और रिया कार हाजियों की शक्ल :- इमामुल हदीस ज़हरी का बयान है कि मैं हज के मौक़े पर इमाम ज़ैनुल आब्दीन(अ.)के पास मक़ामे अराफ़ात में खड़ा हाजियों को देख रहा था। दफतन मेरे मुहँ से निकला कि मौला कितने लाख हाजी हैं और कितना ज़बरदसत शोर मचा हुआ है। हज़रत ने फ़रमाया कि मेरे क़रीब आओ। जब मैं बिलकुल नज़दीक हुआ तो आपने मेरे चेहरे पर हाथ फेर कर फ़रमाया। " अब देखो " जब मैंने फिर नज़र की तो मुझे लाखों आदमियों में दस हज़ार के एक के तनासुब से इन्सान दिखाई दिये। बाक़ी सब के सब बन्दर , कुत्ते, सुअर भेड़िये और इसी तरह के जानवर नज़र आये। यह देख कर मैं हैरान रह गया। आपने फ़रमाया कि सुनो ! जो सही नियत और सही

313

अक़ीदे के बग़ैर हज करते हैं उनका यही हश्र होता है। ऐ ज़ेहरी नेक नियती और हमारी मोवद्दत व मोहब्बत के बग़ैर सारे आमाल बेकार हैं।

(तफ़सीरे इमाम हसन असकरी, व दमए साकेबा, जिल्द २, सफ़ा ४३८)

इमाम ज़ैनुल आब्दीन(अ.) और एक मर्दे बल्ख़ी

अल्लामा शेख़ तरही और **अल्लामा मजलिसी** रक़म तराज़ हैं कि बलख़ का रहने वाला एक दोस्त दारे आले मोहम्मद(स.) हमेशा हज किया करता था और जब हज को आता था तो मदीने जा कर इमाम ज़ैनुल आब्दीन(अ.) की ज़ियारत का शरफ़ भी हासिल किया करता था। एक मरतबा हज से लौटा तो उसकी बीवी ने कहा कि तुम हमेशा अपने इमाम की ख़िदमत में तहाएफ़ ले जाते हो मगर उन्होंने आज तक तुमको कुछ न दिया। उसने कहा तौबा करो तुम्हारे लिये यह कहना सज़ावार नहीं है। वह इमामे ज़माना हैं। वह मालिके दीनो दुनिया हैं। वह फ़रज़न्दे रसूल(स.) हैं। वह तुम्हारी बातें सुन रहे हैं। यह सुन कर वह ख़ामोश हो गई। अगले साल जब वह हज से फ़राग़त हासिल करके इमाम ज़ैनुल आब्दीन(अ.) की ख़िदमत में पहुँचा और सलाम व दस्त बोसी के बाद आपके पास बैठा तो आपने खाना तलब फ़रमाया। हुक्मे इमाम से मजबूर होकर उसने इमाम के साथ खाना खाया। जब दोनों खाना खा चुके तो इमाम के दोस्त उस बलख़ी ने हाथ धुलाना चाहा। आपने फ़रमाया तू मेहमान है। यह तेरा काम नहीं। उसने इसरार किया और हाथ धुलाना शुरू कर दिया। जब तश्त भर गया तो आपने पूछा यह क्या है। उसने कहा " पानी " हज़रत ने फ़रमाया नहीं " याक़ूते अहमर " हैं। जब उसने ग़ौर से देखा तो वह तश्त " याक़ूते सुर्ख़ " से भरा हुआ था। इसी तरह " ज़मुर्रदे सब्ज़ " और " दुरे बैज़ " से भर गया। यानी तीन बार ऐसा ही हुआ यह देख कर वह हैरान हो गया और आपके हाथों का बोसा देने लगा। हज़रत ने फ़रमाया इसे लेते जाओ अपनी बीवी को दे देना और कहना कि हमारे पास और कुछ माले दुनिया से नहीं है। वह शख़्स शरमिन्दा होकर बोला। मौला आपको हमारी बीवी की बात किसने बता दी। इमाम ने फ़रमाया हमें सब मालूम हो जाता है। उसके बाद वह इमाम(अ.) से रूख़्सत हो कर बीवी के पास पहुँचा। जवाहेरात देकर सारा वाक़ेया बयान किया। बीवी ने कहा आईन्दा साल मैं भी चल कर ज़ियारत करूंगी। जब दूसरे साल बीवी हमराह रवाना हुई, तो रास्ते में इन्तेक़ाल कर गई। वह शख़्स हज़रत की ख़िदमत में रोता पीटता हाज़िर हुआ। हज़रत ने दो रकअत नमाज़ पढ़ कर फ़रमाया। जांओ तुम्हारी बीवी ज़िन्दा हो गई हैं। उसने क़याम गाह पर लौट कर बीवी को ज़िन्दा पाया। जब वह हाज़िरे ख़िदमत हुई तो कहने लगी, ख़ुदा की क़सम इन्होंने मुझे मलकुल मौत से कह कर ज़िन्दा किया था और उससे कहा था कि यह मेरी ज़ायरा है। मैंने इसकी उम्र तीस साल बढ़वा ली है। (अल मुन्तख़िब वल बिहार)

इमाम ज़ैनुल आब्दीन(अ.) एख़्लाक़ की दुनियां में

इमाम ज़ैनुल आब्दीन(अ.) चूंकि फ़रज़नदे रसूल(स.) थे इस लिये आप में सीरते मोहम्मदिया का होना लाज़िमी था। अल्लामा मोहम्मद इब्ने तल्हा शाफ़ेई लिखते हैं कि एक शख़्स ने आपको बुरा भला कहा। आपने फ़रमाया। भाई मैंने तो तेरा कुछ नहीं बिगाड़ा। अगर कोई हाजत रखता हो तो बता, ताकि मैं पूरी करूं। वह शरमिन्दा होके आपके एख़्लाक़ का कलमा पढ़ने लगा। (मतालेबुल सुवेल,सफ़ा २६७)

अल्लामा हजरे मक्की लिखते हैं। एक शख़्स ने आपकी बुराई आपके मूँह पर की। आपने उससे बे तवज्जीही बरती, उसने मुख़ातिब करके कहा मैं तुमको कह रहा हूँ। आपने फ़रमाया मैं हुक्मे ख़ुदा " वा अर्ज़ अनालन जाहेलीन " जाहिलों की बात की परवाह न करो, पर अमल कर रहा हूँ। (सवाएके मोहर्रेका, सफ़ा १२०)

अल्लामा शिब्लन्जी लिखते हैं कि एक शख़्स ने आपसे आकर कहा कि फ़लो शख़्स आपकी बुराई कर रहा था। आपने फ़रमाया कि मुझे उसके पास ले चलो, जब वहां पहुँचे ,तो उससे फ़रमाया भाई जो बात तूने मेरे लिये कही है, अगर मैंने ऐसा किया हो तो ख़ुदा मुझे बख़्शे और अगर नहीं किया तो ख़ुदा तुझे बख़्शे कि तूने बोहतान लगाया। एक रवायत में है कि आप मस्जिद से निकल कर चले तो एक शख़्स आपको सख़्त अल्फ़ाज़ में गालियां देने लगा। आपने फ़रमाया कि अगर कोई हाजत रखता है तो मैं पूरी करूं। " अच्छा ले " यह पांच हज़ार दिरहम, वह शरमिन्दा हो गया। एक रवायत में है कि एक शख़्स ने आप पर बोहतान बाधां। अपने फ़रमाया मेरे और जहन्नम के दरमियान एक खाई है। अगर मैंने उसे तय कर लिया तो परवाह नहीं। जो जी चाहे कहो और अगर उसे पार न कर सकूँ तो मैं इससे ज़्यादा बुराई का मुस्तहक़ हूँ जो तुमने की (नुरूल अबसार सफ़ा १२६-१२७) अल्लामा दमीरी लिखते हैं कि एक शामी हज़रत अली (अ.) को गालियाँ दे रहा था, इमाम ज़ैनुल आब्दीन (अ.) ने फ़रमाया , भाई तुम मुसाफ़िर मालूम होते हो , अच्छा मेरे साथ चलो , मेरे यहाँ क़याम करो और जो हाजत रखते हो बताओ ताकि मैं पूरी करूँ। वह शरमिन्दा हो कर चला गया। (हैवातुल हैवान, जिल्द १, सफ़ा १२१)

अल्लामा तबरिसी लिखते हैं कि एक शख़्स ने आपसे बयान किया कि फ़लां शख़्स आपको गुमराह और बिदअती कहता है। आपने फ़रमाया अफ़सोस है कि तुमने उसकी हम नशीनी और दोस्ती का कोई ख़याल न रखा और उसकी बुराई मुझसे बयान कर दी। देखो यह ग़ीबत है अब ऐसा कभी न करना। (एहतेजाज, सफ़ा ३०४) जब कोई सायल आपके पास आता तो ख़ुश व मसरूर हो जाते थे और फ़रमाते थे कि ख़ुदा तेरा भला करे। कि तू मेरा

ज़ादे राहे आख़ेरत उठाने के लिये आ गया है। (मतालेबुल सुवेल, सफ़ा २६३)

इमाम ज़ैनुल आब्दीन(अ.) **सहीफ़ए कामेला** में फ़रमाते हैं। ख़ुदा वन्दा मेरा कोई दरजा न बढ़ा, मगर यह कि इतना ही ख़ुद मेरे नज़दीक मुझको घटा और मेरे लिये कोई ज़ाहिरी इज़्ज़त न पैदा कर। मगर यह कि ख़ुद मेरे नज़दीक इतनी ही बातनी लज़्ज़त पैदा कर दे।

इमाम ज़ैनुल आब्दीन(अ.) और सहीफ़ए कामेला

किताब सहीफ़ए कामेला आपकी दुआओं का मजमूआ है। इसमें बेशुमार उलूम व फ़ुनून के जौहर मौजूद हैं। यह पहली सदी की तसनीफ़ है। (मआलिम अल उलेमा, सफ़ा १, तबआ ईरान) इसे उलेमाए इस्लाम ने ज़ुबूरे आले मोहम्मद(स.) और इन्जीले अहलेबैत कहा है। (नेयाबुल मोअद्दता, सफ़ा ४६६ व फ़ेहरिस्त कुतुब ख़ानए तेहरान, सफ़ा ३६) और उसकी फ़साहत व बलाग़त मआनी को देख कर उसे कुतुबे समाविया और सहफ़े लौहिया व अरशिया का दरजा दिया गया हैं (रियाज़ुल सालीकैन, सफ़ा १) इसकी चालीस हज़ार शरहें हैं जिनमें मेरे नज़दीक रियाज़ुल सालीकैन को फ़ौक़ीयत हासिल है।

हश्शाम बिन अब्दुल मलिक और क़सीदए फ़रज़दक

अब्दुल मलिक इब्ने मरवान का सन् १०५ में ख़लीफ़ा होने वाला बेटा हश्शाम बिन अब्दुल मलिक अपने बाप के अहदे हुकूमत में एक मरतबा हज्जे बैतुल्लाह के लिये मक्के मोअज़्ज़मा गया। मनासिके हज बजालाने के सिलसिले में तवाफ़ से फ़राग़त के बाद हजरे असवद का बोसा देने आगे बढ़ा और पूरी कोशिश के बावजूद हाजियों की कसरत की वजह से हजरे असवद के पास न पहुँच सका। आख़िर कार एक कुर्सी पर बैठ कर मजमे के छटने का इन्तेज़ार करने लगा। हश्शाम के गिर्द उसके मानने वालों का अम्बोहे कसीर था। यह बैठा हुआ इन्तेज़ार ही कर रहा था कि नागाह एक तरफ़ से फ़रज़न्दे रसूल(स.) हज़रत इमाम ज़ैनुल आब्दीन(अ.) बरामद हुये। आपने तवाफ़ के बाद ज्योंही हजरे असवद की तरफ़ रूख़ किया। मजमा फटने लगा, हाजी हटने लगे, रास्ता साफ़ हो गया और आप क़रीब पहुँच कर तक़बील फ़रमाने लगे। हश्शाम जो कुर्सी पर बैठा हुआ था हालात का मुतालेआ कर रहा था जल भुन कर ख़ाक हो गया और उसके साथी बहरे हैरत में ग़र्क़ हो गये। एक मुँह चढ़े ने हश्शाम से पूछा। हुज़ूर यह कौन हैं। हश्शाम ने यह समझते हुये कि अगर तअर्रूफ़ करा दिया और इन्हें बता दिया कि यह ख़ानदाने रिसालत के चश्मो चिराग़ है। तो कहीं मेरे मानने वालों की निगाह मेरी तरफ़ से फिर कर उनकी तरफ़ न मुड़ जाये। तजाहुले आरेफ़ाना के तौर पर कहने लगा। “ मआ अरफ़ा ” मैं नहीं पहचानता। यह सुन कर शायरे दरबार जनाब **फ़रज़दक**

से न रहा गया और उन्होंने शामियों की तरफ़ मुख़ातिब हो कर कहा। " अना अराफ़ा " इसे मैं जानता हूँ कि यह कौन है। " मुझ से सुनो " यह कह कर उन्होंने इरतेजालन और फ़िल बदीहा एक अज़ीम उश्शान क़सीदा पढ़ना शुरू कर दिया जिसका पहला शेर यह है (तरजुमा)यह वह शख़्स है जिस को ख़ानए काबा हिल्लो हरम सब पहचानते हैं और उसके क़दक रखने की जगह , क़दम की चाप को ज़मीन बतहा भी महसूस कर लेती है मैं इस रदीफ़ में इस क़सीदा का उर्दू मनज़ूम तरजुमा दर्ज ज़ैल करता हूँ।

यह वह है जानता है मक्का जिसके नक़्शे क़दम
ख़ुदा का घर भी है, आगाह और हिल्लो हरम
जो बेहतरीन ख़लाएक़, है उसका का है फरज़न्द
है पाक व ज़ाहिद व पाकीज़ा व बुलन्द हशम
क़ुरैश लिखते हैं जब , इसे तू कहते हैं
बुर्ज़ुगियों पे हुई इसकी इन्तेहाए करम

इस क़सीदे के तमाम नाक़ेलीन ने पहला शेर यह लिखा है।

हाज़ल लज़ीताअररूफ अलबतहा व तातहू वाअल बैतयाअरफहू, वाअलहलव अलहरम

लेकिन यह मालूम होने के बाद कि क़सीदे के लिए मतला ज़रूरी होता है। उसे पहला शेर क़रार नहीं दिया जा सकता, अलबत्ता यह मुमकिन है कि यह समझा जाए कि शायर ने मौक़े के लेहाज़ से अपने क़सीदे की इस वक़्त पढ़ने की इब्तेदा इसी शेर से की थी और मुवर्रेख़ीन ने इसी शेर को पहला शेर क़रार दे लिया ,अल्लामा अब्दुलल्ला इब्ने मोहम्मद इब्ने यूसुफ़ ज़ोज़नी अल मौतूफ़ी २३१ हिजरी, शरहे सबहे मुअल्लेक़ात में लिखते हैं कि इस क़सीदे का पहला शेर यह है।

या साएली एन हल अलजदू व अल करम अन्दी बयान अज़ा, तलाबहा क़दम

क़सीदा फ़रज़दक़ के मुताल्लिक़ एक ग़लत फ़हमी और उसका इज़ाला

इमाम अहलेसुन्नत मोहम्मद अब्दुल क़ादिर सईद अलराफ़ई ने १६२७ ई० में शएर अरब अबू अलतमाम हबीब अदस बिन हारस ताई आमली शामी बग़दाद के कीवान "हमासह" को मिस्र तबा कराया है। इसकी जिल्द २ सफ़ा २८४ पर इस क़सीदे के इब्तेदाई ६, अश्आर को नक़्ल करके लिखा है कि यह अश्आर "हज़ीन अल कनानी" के हैं। इसने उन्हें अब्दुल्ला बिन अब्दुल मलिक बिन मरवान की मदह में कहे थे, साथ ही साथ यह भी लिखा है "व अलनास यरोदन हाज़ह अल बयात अल फरज़ोक़ यमदह बहा अली इबनुल हुसैन बिन अबी तालिब व हैग़लतमन रदहाफह लान हाज़ा लेस ममायमदह बेही मिस्ल अली बिन अल हुसैन व लहमन अल फज़ल अलबा हरमालैस ला हद फ़ी वक़्तहू"और लोग जो इन

अबयात के मुतअल्लिक़ यह रवाएत करते हैं कि यह फ़रज़दक़ के हैं और उसने उन्हें मदहे "इमाम ज़ैनुल आब्दीन (अ.) " में कहा है ग़लत है क्यों कि यह अश्आर उनके शायाने शान नहीं हैं वह तो अपने वक़्त के सबसे बड़े साहेबे फ़ज़ीलत थे "

मैं कहता हूँ कि यह अश्आर फ़रज़दक़ ही के हैं। क्योंकि इसे बेशुमार फ़हूल उलमा, व मुवर्रेख़ीन ने उन्हीं के अश्आर तसलीम किए हैं जिनमें इमाम अलमोहक़्क़ेक़ीन अल्लामा शेख़ मुफ़ीद अलै हिर रहमा मौतूफ़ी ४१३ हिजरी व इमाम ज़दज़नी अल मौतूफी ४३१ हिजरी व अल्लामा इब्ने हजर मक्की व हाफ़िज़ अबू नईम और साहेबे मज़ा फ़िल अदब शामिल हैं। मुलाहेज़ा हो इरशाद मुफ़ीद सफ़ा ३६६ तबा ईरान १३०३, इन उलमा के तसलीम करने के बाद किसी फ़रदे वाहिद के इनकार से कोई असर नही पड़ा।

पहुँच गया है यह इज़्ज़त ,की उस बुलन्दी पर
जहाँ पर जा सके इस्लाम के अरब ना अजम

यह चाहता है कि ले हाथों हाथ रूकने हतीम
जो चूमने हजरे असवद , आए निज़्दे हरम

छड़ी है हाथ में , जिसकी महकती है ख़ुशबू
वह हाथ जो नहीं इज़्ज़त में और शान में कम

नज़र झुकाए हैं सब यह हया है रोब से लोग
जो मुस्कुराए तो आजाए, बात करने का दम

जबीं के नूरे हिदायत से , कुफ़्र घटता है यूँ
ज़ियाए महर से तारीकियाँ, हों जैसे कम

फ़ज़ीलत और नबियों की इसके जद से है पस्त
तमाम उम्मतें, उम्मत से इसके रूतबे में कम

यह वह दरख़्त है जिसकी है जड़ ख़ुदा का रसूल
इसी से फ़ितरत व आदात भी हैं पाक बहम

यह फ़ात्मा का है , फ़रज़न्द "तू नहीं वाक़िफ़"
इसी के जद से नबियों का बढ़ सका न क़दम

अज़ल से लिखी है ,हक़्क़े शराफ़तो इज़्ज़त
चला इसी के लिए , लौह पर ख़ुदा का क़लम

जो कोई ग़ैज दिलादे , तो शेर से बढ़ जाए
सितम करे कोई इस पर तो मौत का नहीं ग़म

ज़र्र न होगा उसे तू ,बने हज़ार अन्जान
इसे तो जानते हैं सब अरब तमाम अजम

बरसते अबर हैं हाथ इसके जिनका फ़ैज़ है आम
वह बरसा करते हैं ,यकसाँ कभी नहीं हुए कम
वह नरम है, कि डर जल्द बाज़ियों का नहीं
है हुसने खुलक़, इसी की तो ज़ीनते बाहम
मुसीबतों में क़बीलों के , बार उठाता है
हैं जितने खूब शमाएल, हैं इतने खूब करम
कभी न उसने कहा " ला " बजुज़ तशहुद के
अगर न होता तशहुद तो होता "ला" भी नअम
ख़िलाफ़े वादा नहीं करता , यह मुबारक ज़ात
है मेज़ बान भी,अक़्ल, व इरादह भी है बहम
तमाम ख़लक़ पे एहसाने आम है इसका
इसी से उठ गया अफ़लासो रंजो फ़क्ररए कदम
मोहब्बत इसकी है"दीन"और अदावत इसकी है कुफ़्र
है क़ुरब इसका , निजातो पनाह का आलम
शुमार ज़ाहिदों का हो , तो पेशवा यह हो
कि बेहतरीन ख़लाएक़, इसीको कहते है हम
पहुँचना इसकी सख़ावत , को ग़ैर मुम्किन है
सख़ी हों लाख न पांएगे इसकी गरदे क़दम
जो क़हत की हो मुसीबत, यह अबरे बारां है
जो भड़के जगं की आतिश यह शेर से नहीं कम
न मुफ़लिसी का असर है , फ़राग़ दस्ती पर
कि इसको ज़र की खुशी है न बेज़री का अलम
इसी की चाह से जाती है, आफ़त और बदी
इसी की वजह से आती है, नेकी और करम
इसी का ज़िक्र मुक़द्दम, है बाद जिक्रे खुदा
इसी के नाम से हर बात ख़तम करते है हम
मज़म्मत आने से , इसके क़रीब भागती है
करीमे ख़लक़ है, होती नहीं सख़ावत कम
खुदा के बन्दो में है कौन ऐसा जिसका सर
इसी घराने के एहसान, से हुआ न हो ख़म
खुदा को जानता है , जो इसे भी जानता है
इसी के घर से मिला उम्मतों को दीन बहम

इस क़सीदे को सुन कर हश्शाम ग़ैज़ो ग़ज़ब से पेचो ताब खाने लगा और उसका नाम दरबारी शोअरा की फ़ेहरिस्त से निकाल कर उसे बमुक़ाम असफ़ान क़ैद कर दिया। हज़रत ज़ैनुल आब्दीन(अ.) को जब उसकी क़ैद का हाल मालूम हुआ। तो आपने बारह हज़ार दिरहम उसके पास भेजा। फ़रज़दक़ ने यह कह कर वापस कर दिया कि मैंने दुनियावी उजरत के लिये क़सीदा नहीं कहा है। इससे मैं कसबे सवाब का इरादा रखता हूँ। हज़रत ने फ़रमाया कि हम आले मोहम्मद का यह उसूल है कि जो चीज़ दे देते हैं फिर उसे वापस नहीं लेते। तुम इसे ले लो। ख़ुदा तुम्हारी नियत का अजरे अज़ीम देगा। वह सब कुछ जानता है। " फ़ा क़बलहल फ़रज़दक़" फ़रजदक़ ने उसे क़ुबूल कर लिया।
(सवाएक़े मोहर्रेक़ा, सफ़ा १२०, मतालेबुल सुवेल,सफ़ा २२६, अर हज्जुल मतालिब, सफ़ा ४०३, मजालिसे अदब, जिल्द ६, सफ़ा २५४, वसीलुन नजात, सफ़ा ३२०, तारीख़े अहमदी ,सफ़ा ३२८ तारीख़े आइम्मा, सफ़ा ३६६, हुलयतुल अवलिया, हाफ़िज अबू नईम रिसाला हक़ाएक़ लखनऊ)

अल्लामा इब्ने हसन जांचवी लिखते हैं कि " हश्शाम उनको एक हज़ार दीनार सालाना दिया करता था। जब उसने यह रक़म बन्द कर दी, तो यह बहुत परेशान हुये। माविया बिने अब्दुल्लाह इब्ने जाफ़रे तय्यार ने कहा, फ़रज़दक़ घबराते क्यों हो, कितने साल ज़िन्दा रहने की उम्मीद है। उन्होंने कहा,यही बीस साल। फ़रमाया कि यह बीस हज़ार दीनार ले लो और हश्शाम का ख़याल छोड़ दो। उन्होंने कहा मुझे अबू मोहम्मद अली इब्नुल हुसैन(अ.) ने भी रक़म इनायत फ़रमाने का इरादा किया था। मगर मैंने क़ुबूल नहीं किया। मैं दुनियां का नहीं आख़ेरत के अज्र का उम्मीदवार हूँ।

बेहारूल अनवार में है कि हज़रत इमाम ज़ैनुल आब्दीन(अ.) ने चालीस दीनार अता फ़रमाये और हुआ भी ऐसा ही कि फ़रज़दक़ उसके बाद चालीस साल और ज़िन्दा रहे।

(तज़किरा मोहम्मद व आले मोहम्मद, जिल्द २, सफ़ा १६०)

फ़रज़न्दे रसूल(स.) इमाम ज़ैनुल आब्दीन (अ.) और मुख़्तार आले मोहम्मद

अब्दुल मलिक बिन मरवान के अहदे ख़िलाफ़त में हज़रते मुख़्तार बिन अबीदा सख़्फ़ी क़ातेलाने हुसैन से बदला लेने के लिये मैदान में निकल आये।

अल्लामा मसूदी लिखते हैं कि इस मक़सद में कामयाबी हासिल करने के लिये उन्होंने इमाम ज़ैनुल आब्दीन(अ.) की बैअत करनी चाही मगर आपने बैअत लेने से इन्कार कर दिया। (मरूजुल ज़हब जिल्द ६, सफ़ा १५५ अल्लामा नुरूल्लाह शूस्तरी, शहीदे सालिस)

तहरीर फ़रमाते हैं कि अल्लामा हिल्ली ने मुख़्तार को मक़बूल लोगों में शुमार किया है। इमाम मोहम्मद बाक़िर (अ.) ने उनपर नुकता चीनी करने से रोका है, और इमाम जाफ़रे सादिक़(अ.) ने उनके लिये रहमत की दुआ की है। (मजालेसुल मोमेनीन,जिल्द ३४६ अल्लामा मजलिसी लिखते हैं कि हज़रत इमाम ज़ैनुल आब्दीन(अ.) ने उनकी कार गुज़ारी के सिलसिले में खुदा का शुक्र अदा किया है। (जलालुल अयून)

आप कूफ़े के रहने वाले थे। जनाबे मुस्लिम बिन अक़ील को आप ही ने सबसे पहले मेहमान रखा था। आपको इब्ने ज़ियाद ने आले मोहम्मद से मोहब्बत के जुर्म में क़ैद कर दिया था। वहां से छूटने के बाद आपने खूने हुसैन(अ.) का बदला लेने का अज़्मे बिल जज़्म कर लिया था। चुनांचे , २६ हिजरी में एक बड़ी जमाअत के साथ बरामद हो कर कूफ़े के हाकिम बन बैठेऔर आपने किताब, सुन्नत और इन्तेक़ामे खूने हुसैन(अ.) पर बैअत लेकर बड़ी मुस्तैदी से इन्तेक़ाम लेना शुरू कर दिया। शिम्र को क़त्ल कर दिया, खूली को क़त्ल करके आग में जला दिया, उमर बिन सआद और उसके बेटे हफ़्स को क़त्ल किया।
(तारीख़ अबुल फ़िदा)

मुल्ला मुबीन लिखते हैं कि शिम्र को क़त्ल करके उसकी लाश को उसी तरह घोड़ों की टापों से पामाल करा दिया। जिस तरह उसने इमाम हुसैन(अ.) की लाश को पामाल किया था। (वसीलतुन नजात) ६७ हिजरी में इब्ने ज़ियाद को गिरफ़तार करने के लिये इब्राहीम इब्ने मालिके अशतर की सरकरदगी में एक बड़ा लशकर मूसल भेजा। जहां का वह उस वक़्त गर्वनर था। शदीद जंग के बाद इब्राहीम ने उसे क़त्ल किया और उसका सर मुख़्तार के पास भेज कर बाक़ी बदन नज़्रे आतश कर दिया। (अबुल फ़िदा) फिर मुख़्तार के हुक्म से क़ैस इब्ने अशअश की गदर्न मारी गई। बजदल इब्ने सलीम (जिसने इमाम हुसैन(अ.) की उंगली एक अंगूठी के लिये काटी थी) के हाथ पाओं काटे गये। फिर हकीम इब्ने तुफ़ैल पर तीर बारानी की गई। उसने अलमदारे करबला हज़रत अब्बास(अ.) को शहीद किया था। इसी के साथ साथ यज़ीद इब्ने सालिक, इमरान बिन ख़ालिद, अब्दुल्लाह बिजली, अब्दुल्लाह इब्ने क़ैस, ज़रआ इब्ने शरीक, सबीह शामी और सनान बिन अनस तलवार के घाट उतारे गये। (हबीब उल सैर) उमर बिन हज्जाज भी गिरफ़तार हो कर क़त्ल हुआ। (रौज़तुल सफ़ा)

मिन्हाल बिन उमर का कहना है कि मैं इसी दौरान में हज के लिये गया तो हज़रत इमाम ज़ैनुल आब्दीन(अ.) से मुलाक़ात हुई। आपने पूछा हुरमुला बिन काहिल असदी का क्या हश्र हुआ। मैंने कहा वह तो सालिम था। आपने आसमान की तरफ़ हाथ उठा कर फ़रमाया। खुदाया उसे आतशे तेग़ का मज़ा चखा। जब मैं कूफ़े वापस आया और मुख़्तार से मिला और उनसे वाक़्या बयान किया तो वह इमाम की बद दुआ की तकमील पर सजदए शुक्र अदा करने लगे।

ग़र्ज़ कि आपने बेशुमार क़ातेलाने हुसैन(अ.) को तलवार के घाट उतार दिया।

क़ाज़ी मेबज़ी ने शरहे दीवाने मुतर्ज़वी में लिखा है कि मुख़्तारे आले मोहम्मद(स.) के हाथों से क़त्ल होने वालों की तादाद अस्सी हज़ार तीन सौ तीन (८०,३०३) थी।

मुवर्रेख़ीन का बयान है कि जनाबे मुख़्तार के सामने जिस वक़्त इब्ने ज़ियाद मलऊन का सर रखा गया था तो एक सांप आकर उसके मुँह में घुस कर नाक से निकलने लगा। इसी तरह देर तक आता जाता रहा। वह यह भी लिखते हैं कि हज़रते मुख़्तार ने इब्ने ज़ियाद का सर हज़रत इमाम ज़ैनुल आब्दीन(अ.) की ख़िदमत में मदीनए मुनव्वरा भेज दिया। जिस वक़्त वह सर पहुँचा तो आपने शुक्र खुदा अदा किया और मुख़्तार को दुआएं दीं। मुवर्रेख़ीन का यह भी बयान है कि उसी वक़्त औरतों ने बालों में कंघी करनी और सर में तेल डालना और आंखों में सुरमा लगाना शुरू किया। जो वाक़िए करबला के बाद से इन चीजों को छोड़े हुये थीं। (अक़्दे फ़रीद जिल्द २, सफ़ा २५१ , नूरूल अबसार सफ़ा १२४, मजालिसे मोमेनीन, बेहारूल अनवार) ग़र्ज़ कि जनाबे मुख़्तार ने इन्तेक़ामे ख़ूने शेहदा लेने के सिलसिले में कारहाय नुमायां किये। बिल आख़िर १४,रमज़ान ६७ हिजरी को आप कूफ़े के दारूल इमाराह के बाहर शहीद कर दिये गये। “ **इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहे राजेऊन** ”
(तफ़सील के लिये मुलाहेज़ा हो किताब, मुख़्तार आले मोहम्मद(स.) मोअल्लेफ़ा हक़ीर, मतबूआ लाहौर)

इमाम ज़ैनुल आब्दीन(अ.)
उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ की निगाह में

८६, हिजरी में अब्दुल मलिक इब्ने मरवान के इन्तेक़ाल के बाद उसका बेटा वलीद बिन अब्दुल मलिक ख़लीफ़ा बनाया गया। यह हज्जाज बिन यूसुफ़ की तरह निहायत ज़ालिमो जाबिर था। इसके अहदे जुल्मत में उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ जो कि चचा ज़ाद भाई था। हिजाज़ का गर्वनर मुक़र्रर हुआ। यह बड़ा मुन्सिफ़ मिज़ाज़ और फ़य्याज़ था। उसी के अहदे गर्वनरी का एक वाक़ेया यह है कि ८७, हिजरी में सरवरे कायनात के रौज़े की एक दीवार गिर गई थी। जब उसकी मरम्मत का सवाल पैदा हुआ और उसकी ज़ुरूरत महसूस हुई कि किसी मुकद्दस हस्ती के हाथ से इसकी इब्तेदा की जाय तो उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ने हज़रत ज़ैनुल आब्दीन(अ.) ही को सब पर तरजीह दी। (वफ़ा अल वफ़ा, जिल्द १, सफ़ा ३८६) इसी ने फ़िदक वापस किया था और अमीरल मोमेनीन पर से तबर्रा की वह बिदअत जो माविया ने जारी की थी, बन्द कराई थी।

इमाम ज़ैनुल आब्दीन(अ.) की शहादत

आप अगरचे गोशा नशीनी की ज़िन्दगी बसर फ़रमा रहे थे, लेकिन आपके रूहानी इक़्तेदार की वजह से बादशाहे वक़्त वलीद बिन अब्दुल मलिक ने आपको ज़हर दिया। और आप बतारीख़ २५, मोहर्रमुल हराम ९५ हिजरी, मुताबिक़ ७१४ ई० को दरजए शहादत पर फ़ाएज़ हो गये। इमाम मोहम्मद बाक़र(अ.) ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और आप मदीने के जन्नतुल बक़ी में दफ़्न कर दिये गये।

अल्लामा शिब्लन्जी, अल्लामा इब्ने सबाग़ मालेकी, अल्लामा सिब्ते इब्ने जोज़ी तहरीर फ़रमाते हैं कि " व अनल लज़ी समआ अल वलीद बिन अब्दुल मलिक " जिसने आपको ज़हर दे कर शहीद किया वह वलीद बिन अब्दुल मलिक ख़लीफ़ए वक़्त है। (नूरूल अबसार सफ़ा १२८, सवाएक़े मोहर्रेक़ा सफ़ा १२०, फ़ुसूल अल महमा, तज़किरए सिब्ते इब्ने जौज़ी, अर हज्जुल मतालिब सफ़ा ४४४,मनाक़िब जिल्द ४ सफ़ा १२१, मुल्ला जामी तहरीर फ़रमाते हैं कि आपकी शहादत के बाद आपका नाक़ा क़ब्र पर नाला व फ़रयाद करता हुआ तीन रोज़ में मर गया। (शवाहेदुन नबूवत सफ़ा १७६) शहादत के वक़्त आपकी उम्र ५७, साल की थी।

आपकी औलाद :- उलेमा फ़रीक़ैन का इत्तेफ़ाक़ है कि आपने ग्याराह लड़के और चार लडकियां छोडीं। (सवाएक़े मोहर्रेक़ा सफ़ा १२०, व अर हज्जुल मतालिब सफ़ा ४४४)

अल्लामा शेख़ मुफ़ीद फ़रमाते हैं कि उन १५, अवलादों के नाम यह हैं।
(१) **हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र**(अ.) आपकी वालेदा हज़रत **इमाम हसन**(अ.) की बेटी **अम्मे अब्दुल्लाह जनाबे फ़ात्मा** थीं। (२) **अब्दुल्लाह** (३) **हसन** (४) **ज़ैद** (५) **उमर** (६) **हुसैन** (७) **अब्दुल रहमान** (८) **सुलैमान** (९) **अली** (१०) **मोहम्मद असग़र** (१२) **ख़दीजा** (१३) **फ़ात्मा** (१४) **अलीया** (१५) **उम्मे कुल्सूम** (इरशाद मुफ़ीद, फ़ारसी सफ़ा ४०१)

जनाबे ज़ैद शहीद :- आपकी औलाद में हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र (अ.) के बाद सबसे नुमायां हैसियत जनाबे ज़ैद शहीद की है। आप ८०, हिजरी में पैदा हुये। १२१, हिजरी में हश्शाम बिन अब्दुल मलिक से तंग आकर आप अपने हम नवा तलाश करने लगे, और यकुम सफ़र १२२ हिजरी को चालीस हज़ार (४०,०००) कूफ़ीयों समैत मैदान में निकल आये। ऐन मौक़ए जंग में कूफ़ीयों ने साथ छोड़ दिया। बाज़ मआसरीन लिखते हैं कि कूफ़ियों के साथ छोड़ने का सबब इमाम अबू हनीफ़ा की नकस बैअत है। क्योंकि उन्होंने पहले जनाबे ज़ैद की बैअत की थी। फिर जब हश्शाम ने आपको दरबार में बुला कर इमामे आज़म का ख़िताब दिया तो यह हुकूमत के साथ हो गये और उन्होंने ज़ैद की बैअत तोड़ दी।

इसी वजह से उनके तमाम मानने वाले उन्हें छोड़ कर अलग हो गये। उस वक़्त आपने फ़रमाया " रफ़ज़त मूनी " ऐ कूफ़ियों ! तुमने मेरा साथ छोड़ दिया। इसी फ़रमाने की वजह से कूफ़ियों को राफ़ज़ी कहा जाता है। जहां उस वक़्त चंद अफ़राद के सिवा कोई भी शिया न था। सब हज़रते उस्मान और अमीरे माविया के मानने वाले थे। ग़रज़ के दौराने जंग में आपकी पेशानी पर एक तीर लगा जिसकी वजह से आप ज़मीन पर तशरीफ़ लाये। यह देख कर आपका एक ख़ादिम आगे बढ़ा और उसने आपको उठा कर एक मकान में पहुँचा दिया। ज़ख़्म कारी था, काफ़ी इलाज के बवजूद जां बर न हो सके। फिर आपके ख़ादिमों ने खुफ़िया तौर पर आपको दफ़न कर दिया और क़ब्र पर से पानी गुज़ार दिया ताकि क़ब्र का पता न चल सके, लेकिन दुश्मनों ने सुराग़ लगा कर लाश क़ब्र से निकाल ली और सर काट कर हश्शाम के पास भेजने के बाद आपके बदन को सूली पर लटका दिया। चार साल तक यह जिस्म सूली पर लटका रहा। ख़ुदा की कुदरत तो देखिये, उसने मकड़ी को हुक्म दिया और उसने आपके औरतैन(पोशीदा मक़ामात) पर घना जाला तान दिया। (ख़मीस जिल्द २, सफ़ा ३५७ व हैवातुल हैवान) चार साल के बाद आपके जिस्म को नज़रे आतश करके राख दरियाए फ़रात में बहा दी गई। (उमदतुल मतालिब सफ़ा २४८)

शहादत के वक़्त आपकी उम्र ४२ साल की थी। हज़रत ज़ैद शहीदे अज़ीम मनाक़िब व फ़ज़ाएल के मालिक थे। आपको " हलीफ़ अल कुरआन " कहा जाता था। आप ही की औलाद को ज़ैदी कहा जाता है और चूँकि आपका क़याम बा मक़ाम वासित था, इस लिये बाज़ हज़रात अपने नाम के साथ ज़ैदी अल वास्ती लिखते हैं। तारीख़ इब्नुल वरदी में है कि ३८, हिजरी में हज्जाज बिन यूसुफ़ ने शहरे वासित की बुनियाद डाली थी। जनाबे ज़ैद के चार बेटे थे। जिनमें जनाबे यहीया बिन ज़ैद की शुजाअत के कारनामे तारीख़ के अवराक़ में सोने के हुरूफ़ से लिखे जाने के क़ाबिल हैं। आप दादहियाल की तरफ़ से हज़रत इमाम हुसैन(अ.) और नानिहाल की तरफ़ से जनाब मोहम्मद बिन हनफ़िया की यादगार थे। आपकी वालेदा का नाम " रेता " था। जो मोहम्मद बिन हनफ़िया की पोती थीं। नसले रसूल(स.) में होने की वजह से आपको क़त्ल करने की कोशिश की गई। आपने जान के तहफ़्फ़ुज़ के लिये यादगार जंग की। बिल आख़िर १२५, हिजरी में आप शहीद हो गये। फिर वलीद बिन यज़ीद बिन अब्दुल मलिक के हुक्म से आपका सर काटा गया और हाथ पाओं काटे गये। उसके बाद लाशे मुबारक सूली पर लटका दी गई फिर एक अरसे के बाद उसे उतार कर जलाया गया।

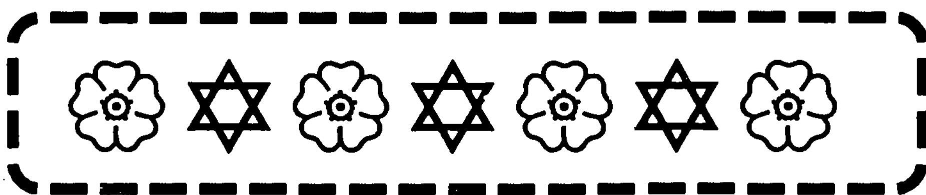
(१) उन्होंने सलतन्ते हश्शाम में दावाए ख़िलाफ़त किया थां बहुत से लोगों ने बैअत कर ली थी। तदाएन, बसरा, वास्ता, मूसल, ख़ुरासान, रै, जरजान के अलावा सिर्फ़ कूफ़े ही के १५ हज़ार शख़्स थे। जब यूसुफ़ सक़फ़ी उनके मुक़ाबले में आया तो यह सब लोग उन्हें छोड़ कर भाग गये। ज़ैद शहीद ने फ़रमाया " रफ़ज़र ना अल यौम " उस दिन से राफ़ज़ी का लफ़्ज़ निकला... इनके चार फ़रज़न्द थे। (१) यहीया (२) हुसैन (३) ईसा (४) मोहम्मद सादाते बाराहा व बिल गिराम का नसब मोहम्मद बिन ईसा तक पहुँचता है। (किताब रहमतुल आलेमीन जिल्द २, सफ़ा १४२)

और हथौड़े से कूट कूट कर रेज़ा रेज़ा किया गया। फिर एक बोरे में रख कर कशती के ज़रिये से एक एक मुठ्ठी राख दरियाए फ़रात की सतह पर छिड़क दी गई। इस तरह इस फ़रज़न्दे रसूल(स.) के साथ जुल्मे अज़ीम किया गया।

ईसा बिन ज़ैद :- यह भी जनाबे ज़ैद शहीद के निहायत बहादुर सहाब ज़ादे थे। ख़लीफ़ए वक़्त आपके भी खून का प्यासा था। आप अपना हसब नसब ज़ाहिर न कर सकते थे। ख़लीफ़ए जाबिर की वजह से रूपोशी की ज़िन्दगी गुज़ारते थे। कूफ़े में आब पाशी का काम शुरू कर दिया था और वहीं एक औरत से शादी कर ली थी और उससे भी अपना हसब नसब ज़ाहिर नहीं किया था। इस औरत से आपकी एक बेटी पैदा हुई। जो बड़ी होकर शादी के क़ाबिल हो गई। इसी दौरान में आपने एक मालदार बेहिशती के वहां मुलाज़ेमत कर ली, जिसके एक लड़का था। मालदार बेहिशती ने जनाबे ईसा की बीवी से अपने लड़के का पैग़ाम दिया। जनाबे ईसा की बीवी बहुत खुश हुईं कि मालदार घराने से लड़की का रिश्ता आया है। जब जनाबे ईसा घर तशरीफ़ लाये तो उनकी बीवी ने कहा कि मेरी लड़की की तक़दीर चमक उठी है क्योंकि मालदार घराने से पैग़ाम आया है। यह सुनना था कि जनाबे ईसा सख़्त परेशान हुये बिल आख़िर खुदा से दुआ की, बारे इलाहा सैदानी ग़ैरे सय्यद से बिहाई जा रही है। मालिक मेरी लड़की को मौत दे दे। लड़की बीमार हुई और दफ़अतन उसी दिन इन्तेक़ाल कर गई। उसके इन्तेक़ाल पर आप रो रहे थे। उनके एक दोस्त ने कहा कि इतने बहादुर हो कर आप रोते हैं। उन्होंने फ़रमाया कि इसके मरने पर नहीं रो रहा हूँ। मैं अपनी इस बे बसी पर रो रहा हूँ कि हालात ऐसे हैं कि मैं इससे यह तक नहीं बता सका कि मैं सय्यद हूँ और यह सय्यद ज़ादी है। (उमदतुल मतालिब,सफ़ा २७८ मिनहाज अल नदवा सफ़ा ५७)

अल्लामा अबुल फ़रज असफ़हानी अल मतूफ़ी ३५६, हिजरी लिखते हैं। कि जनाबे ईसा बिन ज़ैद ने अपने दोस्त से कहा था कि मैं इस हालत में नहीं हूँ कि इन लोगों को यह बता सकूँ। " बाना ज़ालेका ग़ैरे जाएज़ " कि यह शादी जाएज़ नहीं है। इस लिये कि यह लड़का हमारे कफ़ो का नहीं है।

(मक़ातिल अल तालेबैन सफ़ा २७१, मतबुआ नजफ़े अशरफ़, १३८५ हिजरी)





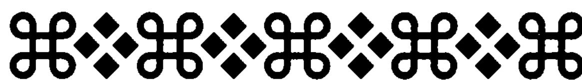
अबु जाफ़र

हज़रत

इमाम मोहम्मद बाक़र (अ.)

बाक़रे आले मोहम्मद ,और ज़ैनुल आब्दीन
किस तरह ज़िन्दा रहे, गोया है राज़े किबरिया
करबला की हर बला, हर इब्तेला, को झेल कर
ज़िन्दगी इनकी हक़ीक़त में है, ज़िन्दा मोजेज़ा

साबिर थरयानी (कराची)



326

بسم الله الرّحمٰن الرّحيم

बाब--(७)

हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र(अ.)

हुआ पैदा जहां में, आज वह हमनामे पैग़म्बर
लक़ब बाक़र है जिसका और कुन्नियत अबु जाफ़र
इमामुल तमुत्तक़ीं, मन्सूस और मासूम आलम में
नबी का पांचवां नायब, हमारा पांचवां रहबर

हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र (अ.) पैग़म्बरे इस्लाम हज़रत मोहम्मद मुस्तफा (स.) के पांचवें जांनशीन, हमारे पाँचवें इमाम और सिलसिलये अस्मत की सातवीं कडी थे। अपके वालिद माजिद सय्यदुस साजेदीन हज़रत जैनुल आब्दीन(अ.) थे और वालेदा माजदा उम्में अब्दुल फ़ात्मा बिन्ते हज़रत इमाम हसन(अ.) थीं। उलमा का इत्तेफाक़ है कि आप बाप और माँ दोनों की तरफ़ से अलवी और नजीबुत तरफ़ैन हाशमी थे। नसब का यह शरफ़ किसी को भी नहीं मिला। (सावाएक़े मोहर्रेक़ा सफ़ा १२० व मतालेबुल सुवेल सफ़ा २६६) आप अपने आबाओ अजदाद की तरह इमाम मन्सूस, मासूम, इल्मे ज़माना और अफ़ज़ले काएनात थे। यानी ख़ुदा की तरफ़ से आप इमाम ,मासूम और अपने अहदे इमामत में सबसे बड़े आलिम और काएनात में सबसे अफज़ल थे।

अल्लामा इब्ने हजर मक्की लिखते हैं कि आप इबादत इल्म और ज़ोहद वग़ैरा में हज़रत इमाम ज़ैनुल आब्दीन (अ.) की जीती जागती तस्वीर थे।(सवाहेक़े मोहर्रेक़ा सफ़ा १२०)अल्लामा मोहम्मद तलहा शाफ़ेई लिखते हैं कि आप इल्म ज़ोहद, तक़वा तहारत सफ़ाए क़लब और दीगर महासिन व फ़ज़ाएल में इस दर्जा पर फाएज़ थे कि यह सिफ़ात ख़ुद इनकी तरफ़ इन्तेसाब से मुमताज़ क़रार पाए। (मतालेबुल सुवेल सफ़ा २६६)

अल्लामा इब्ने साद का कहना है कि आप ताबेईन के तीसरे तबक़े में से थे और बहुत बड़े आलम , आबिद और सुक़्क़ा थे। इब्ने शहाब ज़हरी और इमाम निसाई ने आपको सुक़्क़ा फ़क़ीह लिखा है। फकुहा की बड़ी जमाअत ने आपसे रवाएत की है। अता का बयान है कि उलमा को अज़रूए इल्म किसी के सामने इस क़दर अपने आप का झूठा समझते हुए

नहीं देखा जिस तरह से कि वह अपने आपको इमाम मोहम्मद बाक़र (अ.) के रूबरू समझते थे। मैने हाकिम जैसे आलिम को उनके सामने सिपर अन्दाख़्ता देखा है।

(अर हज्जुल मतालिब सफ़ा ४४६)

साहबे रौज़तुल सफ़ा का कहना है कि हज़रत इमाम बाक़र (अ.) के फज़ाएल लिखने के लिए एक अलाहेदा किताब दरकार है। ख़्वाजा मोहम्मद पारसा लिखते हैं कि " इमाम बारआ मजमुए जलालहू व कमालहू" आप अज़ीमुश्शान इमाम व पेशवा, और जामेए सफ़ात जलाल व कमाल थे (फ़सल अल ख़ताब)

अल्लामा शेख मोहम्मद ख़िज़री लिखते हैं कि इमाम मोहम्मदे बाक़र (अ.)अपने ज़माने में बनी हाशिम के सरदार थे। तारीखे फक़ा सफा १७६ तबा कराची)

आपकी विलादत बासआदत :- हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र(अ.) बतारीख़ यकुम रजबुल मुरज्जब ५७, हिजरी यौमे जुमा मदीनए मुनव्वरा में पैदा हुए। (अल्लामा अलवरी सफ़ा १५५ व जलाल उल अयून सफ़ा २६ व जनातुल ख़लूद सफ़ा २५)

अल्लामा मजलिसी फ़रमाते हैं कि जब आप बतने मादर में तशरीफ लाए तो आबाओ अजदाद की तरह अपके घर में आवाज़े ग़ैब आने लगी और जब नौ माह के हुए तो फरिश्तों की बेइन्तेहा आवाज़ें आने लगीं और शबे विलादत एक नूर साते हुआ। विलादत के बाद क़िबला रू हो कर असमान की तरफ़ रूख़ फ़रमाया और (आदम की मानिन्द) तीन बार छींकने के बाद हम्दे खुदा बजा लाए ,एक शबाना रोज़ दस्ते मुबारक से नूर साते रहा। आप ख़तना करदा, नाफ़ बुरीदा, तमाम अलाइशों से पाक और साफ़ मुतवल्लिद हुए थे।

(जलालुल अयून सफ़ा २५६)

इस्मे गिरामी, कुन्नियत और अलक़ाब :- आपका इस्मे गिरामी "लौहे महफूज़" के मुताबिक़ और सरवरे काएनात (स.) की ताय्युन के मुआफिक़ "मोहम्मद" था। आपकी कुन्नियत "अबूजाफ़र थी और आपके अलक़ाब कसीर थे। जिनमें बाक़र , शाकिर हादी ज़्यादा मशहूर हैं। (मतालेबुल सुवेल शवाहेदुन नबूअत सफ़ा १८१)

बाक़र की वजह तसमिया:- बाक़र बक़रह से मुशतक और इसी का इस्म फ़ाएल है इसके मानी शक करने और वस्अत देने के हैं। (अलमन्जिद सफा४१) हज़रत इमाम मोहम्मदे बाक़र (अ.) को इस लक़ब से इस लिए मुलक़्क़ब किया गया था कि आपने उलूम व माअरिफ को नुमाया फरमाया और हक़ाएक़ एहकाम व हिकमत व लताएफ के वह सरबस्ता ख़ज़ाने ज़ाहिर फ़रमाए जो लोगों पर ज़ाहिरो हुवेदा न थे।

(सवाएक़े मोहर्रेक़ा सफ़ा १०, मतालेबुल सुवेल सफ़ा २६६ शवाहेदुन नबूअत सफ़ा १८१)

जौहरी ने अपनी सहाह में लिखा है कि "तवस्सया फ़िल इल्म" को बक़रह कहते हैं। इसी लिए इमाम मोहम्मद बिन अली को बाक़रसे मुलक़्क़ब किया जाता है। अल्लामा सिब्ते

इब्ने जौज़ी का कहना है कि कि कसर्ते सुजूदकी वजह से चूँकि आपकी पेशानी वसी थी इस लिए आपको बाकर कहा जाता हैऔर एक वजह यह भी है कि जामिय्यत इलमिया की वजह से आपको यह लक़ब दिया गया है। शहीदे सालिस अल्लामा नूरउल्लाह शुशतरी का कहना है कि आँ हजरत (स.) ने इरशाद फ़रमाया है कि इमाम मोहम्मद बाक़र (अ.) उलूमो मारिफ़ को इस तरह शिगाफ़ता करेगें। जिस तरह ज़ेराअत के लिए ज़मीन शिगाफ़ता की जाती है। (मजालिस-अल-मोमीनीन सफ़ा ११७)

बादशाहाने वक़्त :- आप ५७ हिजरी में मावीया इब्ने अबी सुफ़यान के अहद में पैदा हुए ६० हिजरी में यज़ीद बिन मावीया बादशाहे वक़्त रहा ६४ हिजरी में मावीया बिन यज़ीद और मरवान बिन हकम बादशाह रहे। ६५ हिजरी से ८६ हिजरी तक अब्दुल्ल मलिक बिन मरवान खलीफ़ए वक़्त रहा। फिर ८६ हिजरी से ६६ हिजरी तक वलीद बिन अब्दुल मलिक ने हुकमरानी की , इसी ने ६५ हिजरी में आपके वालिद माजिद को दर्जए शहादत पर फ़ाएज़ कर दिया। इसी ६५ हिजरी से आपकी इमामत का आग़ाज हुआ,और ११४ हिजरी तक आप फराएजे इमामत अदा फरमाते रहे। इसी दौरान में वलीद अब्दुल मलिक के बाद सलमान बिन अब्दुल मलिक, उमर बिन अब्दुल अज़ीज,यज़ीद इब्ने अब्दुल मलिक और हश्शाम बिन अब्दुल मलिक बादशाहे वक़्त रहे। (अल्लाम उलवरा सफ़ा १५६)

वाक़ेए करबला में इमाम मोहम्मदे बाक़र (अ.) का हिस्सा

अपकी उमर अभी ढाई साल की थी, कि अपको हज़रत इमाम हुसैन(अ.) के हम्राह वतने अजीज़ मदीनए मुनव्वरा छोड़ना पड़ा, फिर मदीना से मक्का और वहाँसे करबला तक की सऊबते सफ़र बरदाश्त करना पड़ी। इसके बाद वाकेए करबला, के मसाएब देखे , कूफ़ओ शाम की बाज़ारो और दरबारो का हाल देखा। एक साल शाम में क़ैद रहे। फिर वहाँ से छूट कर ८ रबीउल अव्वल ६२ हिजरी को मदीना मुनव्वरा वापस हुए। जब आपकी उमर चार साल की हुई , तो आप एक दिन कुँए में गिर गए । खुदा ने आपको डूबने से बचा लिया।(और जब आप पानी से बरामद हुए तो आपके कपड़े और आपका बदन तक भीगा हुआ ना था। (मुनाक़िब जिल्द ४ सफ़ा १०६)

हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र (अ.) और जाबिर बिन अब्दुल्लाह अन्सारी की बाहमी मुलाक़ात

यह मुसल्लेमा हक़ीक़त है कि हज़रत मोहम्मद (स.) ने अपनी ज़ाहेरी ज़िन्दगी

329

के एख़्तेताम पर इमाम मोहम्मद बाक़र(अ.) की विलादत से तक़रीबन ४६ साल पहले जाबिर बिन अब्दुल्लाह अन्सारी के ज़रिये से इमाम मोहम्मद बाक़र(अ.) को सलाम कहलाया था। इमाम(अ.) का यह शरफ़ इस दरजे मुम्ताज़ है कि आले मोहम्मद(स.) में से कोई भी इसकी हमसरी नहीं कर सकता। (मतालेबुल सुवेल, सफ़ा २७२)

मुवर्रेख़ीन का बयान है कि सरवरे कायनात(स.) एक दिन अपनी आग़ोशे मुबारक में हज़रत इमाम हुसैन(अ.) को लिये हुये प्यार कर रहे थे। नागाह आपके सहाबी ख़ास जाबिर बिन अब्दुल्लाह हाज़िर हुये। हज़रत ने जाबिर को देख कर फ़रमाया ऐ जाबिर मेरे इस फ़रज़न्द की नस्ल से एक बच्चा पैदा होगा। जो इल्मो हिकमत से भर पूर होगा। ऐ जाबिर ! तुम उसका ज़माना पाओगे, और उस वक़्त तक ज़िन्दा रहोगे। जब तक वह सतहे अर्ज़ पर न आ जाय। ऐ जाबिर ! देखो , जब तुम उससे मिलना तो उसे मेरा सलाम कह देना। जाबिर ने इस ख़बर और इस पेशीनगोई को कमाले मसर्रत के साथ सुना और उसी वक़्त से इस बहज़त आफ़रीं साअत का इन्तेज़ार करना शुरू कर दियां यहाँ तक कि चश्मे इन्तेज़ार पत्थरा गईं और आंखों का नूर जाता रहा। जब तक आप बीना थे हर मजलिस व महफ़िल में तलाश करते रहे और जब नूरे नज़र जाता रहा तो ज़बान से पुकारना शुरू कर दिया। आपकी ज़बान पर जब हर वक़्त इमाम मोहम्मद बाक़र का नाम रहने लगा। तो लोग यह कहने लगे कि जाबिर का देमाग़ ज़ोफ़े पीरी की वजह से अज़कार रफ़्ता हो गया है। लेकिन बहर हाल वह वक़्त आ ही गया कि आप पैग़ामे अहमदी और सलामे मोहम्मदी पहुँचाने में कामयाब हो गए। रावी का बयान है कि हम जनाबे जाबिर के पास बैठे हुए थे कि इतने में इमाम ज़ैनुल आब्दीन (अ.) तशरीफ लाए, आपके हमराह आपके फ़रज़न्द इमाम मोहम्मद बाक़र (अ.) भी थे। इमाम (अ.) ने अपने फ़रज़न्दे अरजुमन्द से फ़रमाया कि चाचा जाबिर बिन अब्दुल्ला अनसारी के सर का बोसा दो। उन्होंने फ़ौरन तामील इरशाद फरमाया, जाबिर ने इनको अपने सीने से लगा लिया और कहा कि इब्ने रसूल (अ.) आपको आपके जद्दे नाम दार हज़रत मोहम्मद (स.) ने सलाम फरमाया है। हज़रत ने कहा ऐ जाबिर इन पर और तुम पर मेरी तरफ़ से भी सलाम हो। इसके बाद जाबिर बिन अब्दुल्लाह अनसारी ने आपसे शफ़ाअत के लिए ज़मानत की दरख़्वास्त की। आपने उसे मनजूर फ़रमाया और कहा कि मैं तुम्हारे जन्नत में जाने का ज़ामिन हूँ।

(सवाएके मोहर्रेका सफ़ा १२० वसीलए अल निजात सफ़ा ३३८ मतालेबुल सुवेल सफ़ा ३७३ शवाहेदुन नबूवत सफ़ा १८१ नुरूल अबसार सफ़ा १४ रेजाल कशी सफ़ा २७ तारीख़ तबरी जिल्द ३ सफ़ा ६६ मजालिस अल मोमिनीन सफ़ा ११७)

अल्लामा मोहम्मद बिन तल्हा शाफ़ेई का बयान है कि आँ हज़रत ने यह भी फ़रमाया था कि “ अन बकारक बादा रौयते ही यसरा ” किऐ जाबिर मेरा पैग़ाम पहुँचाने के बाद बहुत थोड़ा जिन्दा रहोगे। चूनांचे ऐसा ही हुआ। (मतालेबुल सुवेल सफ़ा २७३)

सात साल की उम्र में इमाम मोहम्मद बाक़र(अ.) का हज्जे ख़ानए काबा

अल्लामा जामी तहरीर फ़रमाते हैं कि रावी बयान करता है कि मैं हज के लिये जा रहा था, रास्ता पुर ख़तर और इन्तेहाई तारीक था। जब मैं लक़ो दक़ सहरा में पहुँचा। तो एक तरफ़ से कुछ रौशनी की किरन नज़र आई मैं उसकी तरफ़ देख ही रहा था। कि नागाहएक सात सालका लड़का मेरे क़रीब आ पहुँचा। मैंने सलाम का जवाब देने के बाद उससे पूछा कि आप कौन हैं ? कहां से आ रहे हैं और कहां का इरादा है, और आपके पास ज़ादे राह क्या है। उसने जवाब दिया, सुनो मैं ख़ुदा की तरफ़ से आ रहा हूँ और ख़ुदा की तरफ़ जा रहा हूँ। मेरा ज़ादे राह " तक़वा " है मैं अरबी उल नस्ल, क़ुरैशी ख़ानदान का अलवी नज़ाद हूँ। मेरा नाम मोहम्मद बिन अली बिन हुसैन बिन अली बिन अबी तालिब है। यह कर करवह नज़रों से ग़ायब हो गये और मुझे पता न चल सका कि आसमान की तरफ़ परवाज़ कर गये या ज़मीन में समा गये। (शवाहेदुन नबूवत,सफ़ा १८३)

हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र (अ.) और इस्लाम में सिक्के की इब्तेदा

मुवर्रिख़ शहीर ज़ाकिर हुसैन तारीख़े इसलाम जिल्द,१ सफ़ा ४२ में लिखते हैं कि अब्दुल मलिक बिन मरवान ने ७५ हिजरी में इमाम मोहम्द बाक़र(अ.) की सलाह से इस्लामी सिक्का जारी कियां इससे पहले रोम व ईरान का सिक्का इस्लामी ममालिक में भी जारी था।

इस वाक़िये की तफ़सील अल्लामा दमीरी के हवाले से यह है कि एक दिन अल्लामा किसाई से ख़लीफ़ा हारून रशीद अब्बासी ने पूछा कि इस्लाम में दिरहम व दीनार के सिक्के, कब और क्योंकर रायज हुये। उन्होंने कहा कि सिक्कों का इजरा ख़लीफ़ा अब्दुल मलिक बिन मरवान ने किया है। लेकिन इसकी तफ़सील से नावाक़िफ़ हूँ और मझे नहीं मालूम कि इनके इजरा और ईजाद की ज़ुरूरत क्यों महसूस हुई। हारून रशीद ने कहा कि बात यह है कि ज़मानए साबिक़ में जो काग़ज़ वग़ैरा ममालिके इस्लामिया में मुस्तमिल होते थे। वह मिस्र में तैय्यार हुआ करते थे। जहां उस वक़्त नसरानियों की हुकूमत थी ओर वह तमाम के तमाम बादशाहे रूम के मज़हब पर थे। वहां के काग़ज पर जो ज़र्ब यानी (ट्रेड मार्क) होता था। उसमें ब ज़बाने रोम(अब-इब्न-रूहुल क़ुदस) लिखा होता था।

"फ़लम यज़ल ज़ालेका कज़ालेका फ़ी सदरूल इस्लाम कल्लाह बेमआनी अल्हा काना अलैहा"

और यही चीज़ इस्लाम में जितने दौर गुज़रे थे सब में रायज थी। यहां तक कि जब अब्दुल मलिक बिन मरवान का ज़माना आया तो चूँकि वह बड़ा ज़ेहीन और होशियार था। लेहाज़ा उसने तरजुमा कराके गवरनरे मिस्र को लिखा कि तुम रूमी ट्रेड मार्क को मौकूफ़ व मतरूक कर दो। यानी काग़ज़ कपड़े वग़ैरा जो अब तैय्यार हों उनमें यह निशानात न लगने दो, बल्कि उनपर यह लिखवाओ। " शहद अल्लाह अन्हा ला इलाहा इला हनो " चुनांचे इस अमल पर अमल दरामद किया गया। जब इस नये मार्क के काग़ज़ों का जिन पर कलमए तौहीद सब्त था। रवाज पाया तो कैसरे रोम को बे इन्तेहा नागवार गुज़रा। उसने तोहफ़े तवाएफ़ भेज कर अब्दुल मलिक बिन मरवान ख़लीफ़ए वक्त को लिखा कि काग़ज़ वग़ैरा पर जो " मार्क " पहले था वही बदस्तूर जारी करो। अब्दुल मलिक ने हदिये लेने से इन्कार कर दिया और सफ़ीर को तोहफ़ों और हदाया समैत वापस भेज दिया और उसके ख़त का जवाब तक न दिया।

कैसरे रोम ने तहाएफ़ को दुगना करके भेजा और लिखा कि तुमने मेरे तहाएफ़ कम समझ कर वापस कर दिया। इस लिये अब इज़ाफ़ा कर के भेज रहा हूँ। इसे कुबूल कर लो और काग़ज़ से नया मार्क हटा दो। अब्दुल मलिक ने फिर हदिये वापस किये और मिसले साबिक़ कोई जवाब न दिया। इसके बाद कैसरे रोम ने तीसरी मरतबा ख़त लिखा और तहाएफ़ व हदाया भेजे और ख़त में लिखा कि तुम ने मेरे ख़तों के जवाबात नहीं दिये, और न मेरी बात कुबूल की। अब मैं क़सम खाकर कहता हूँ कि अगर तुमने अब भी रूमी " ट्रेड मार्क " को अज़ सरे नौ रवाज न दिया और तौहीद के जुमले काग़ज़ से न हटाय तो मैं तुम्हारे रसूल को गालियां, सिक्कए दिरहम व दीनार पर नक़्श कराके तमाम ममालिके इस्लामिया में रायज करूंगा और तुम कुछ न कर सकोगे। देखो अब जो मैं ने लिखा है उसे पढ़ कर " अर फ़स जबैनैका अरक़न "अपनी पेशानी का पसीना पोछ डालो, और जो मैं कहता हूँ उसपर अमल करो ताकि हमारे और तुम्हारे दरमियान जो रिश्तए मोहब्ब्त क़ायम है बदस्तूर बाक़ी रहे।

अब्दुल मलिक इब्ने मरवान ने जिस वक़्त इस ख़त को पढ़ा उसके पाओं तले से ज़मीन निकल गई। हाथ के तोते उड़ गये, और नज़रों में दुनिया तारीक हो गई। उसने कमाले इज़्तेराब में उलेमा, फ़ुज़ला, अहले राय और सियासत दानों को फ़ौरन जमा करके उनसे मशवेरा तलब किया और कहा कि ऐसी बात सोचो कि सांप भी मर जाय और लाठी भी न टूटे,या सरासर इस्लाम कामयाब हो जाय। सबने सर जोड़ कर बहुत देर तक ग़ौर किया लेकिन कोई ऐसी राय न दे सके जिसपर अमल किया जा सकता। " फ़ल्म यहजद अन्दा अहदा मिन्हुम राया यामल बेही " जब बादशाह उनकी किसी राय से मुतमइन न हो सका तो और ज़्यादा परेशान हुआ, और दिल में कहने लगा मेरे पालने वाले अब क्या करूं। अभी वह इसी तरददुद में बैठा था कि उसका वज़ीरे आज़म इब्ने " ज़न्बआ " बोल उठा। बादशाह तू यक़ीनन जानता है कि इस अहम मौक़े पर इस्लाम की मुशकिल कुशाई कौन कर सकता

है। लेकिन अमदन उसकी तरफ़ रूख़ नहीं करता। बादशाह ने कहा। " वैहका मन " ख़ुदा तुझसे समझे, बता तो सही वह कौन है ? वज़ीरे आज़म ने अर्ज़ की " एलैका बिल बाक़र मिन अहले बैतुन नबी " मैं फ़रज़न्दे रसूल(स.) इमाम मोहम्मद बाक़र (अ.) की तरफ़ इशारा कर रहा हूँ, और वही इस आड़े वक़्त में काम आ सकते हैं। अब्दुल मलिक बिन मरवान ने ज्योंही आपका नाम सुना, " क़ाला सदक़त " कहने लगा। ख़ुदा की क़सम तुमने सच कहा और सही रहबरी की है।

इसके बाद उसी वक़्त फ़ौरन अपने आमिले मदीने को लिखा कि इस वक़्त इस्लाम पर एक सख़्त मुसिबत आ गई है, और इसका दफ़्आ होना इमाम मोहम्मद बाक़र (अ.) के बग़ैर नामुमकिन है। लेहाज़ा जिस तरह हो सके उन्हें राज़ी करके मेरे पास भेज दो, देखो इस सिलसिले में जो मसारिफ़ होंगे, वह हुकमत के ज़िम्मे होंगे।

अब्दुल मलिक ने दरख़्वास्त तल्बी, मदीने इरसाल करने के बाद शाहे रोम के सफ़ीर को नज़र बन्द कर दिया और हुक्म दिया कि जब तक मैं इस मसले को हल न कर सकूँ इसे राजधानी से जाने न देना।

हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र(अ.) की ख़िदमत में अब्दुल मलिक बिन मरवान का पैग़ाम पहुँचा और आप फ़ौरन आज़िमे सफ़र हो गये और अहले मदीना से फ़रमाया कि चूँकि इसलाम का काम है लेहाज़ा मैं अपने तमाम कामों पर इस सफ़र को तरजीह देता हूँ। अलगरज़ आप वहां से रवाना हो कर अब्दुल मलिक के पास जा पहुँचे। चुंकि वह सख़्त परेशान था इस लिये उसने आपके इस्तेक़बाल के फ़ौरन बाद अर्ज़े मुद्दआ कर दिया। इमाम (अ.) ने मुस्कुराते हुये फ़रमाया। " ला याज़म हाज़ा अलैका फ़ानहु लैसा बे शैइन " ऐ बादशाह घबरा नहीं यह बहुत ही मामूली बात है। मैं इसे अभी चुटकी बजाते हल किए देता हुं। बादशाह सुन मुझे बा इल्मे इमामत मालूम है कि ख़ुदाये क़ादिरो तवाना क़ैसरे रोम को इस फ़ेले क़बीह पर क़ुदरत ही न देगा और फिर ऐसी सूरत में जबकि उसने तेरे हाथों में उससे ओहदा बर होने की ताक़त दे रखी है। बादशाह ने अर्ज़ किया। या बिन रसूल अल्लाह(स.) वह कौन सी ताक़त है जो मुझे नसीब है और जिसके ज़रिये से मैं कामयाबी हासिल कर सकता हूँ।

हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र(अ.) ने फ़रमाया कि तुम इसी वक़्त हकाक और कारीगरों को बुलाओ और उनसे दिरहम और दीनार के सिक्के ढलवाओ और मुमालिके इस्लामिया में रायज कर दो। उसने पूछा कि उनकी क्या श्कलो सूरत होगी और वह किस तरह ढलेंगे ? इमाम(अ.) ने फ़रमाया कि सिक्के के एक तरफ़ कलमै तौहीद दूसरी तरफ़ पैग़म्बरे इस्लाम का नामे पसमी और ज़र्ब सिक्के का सन् लिखा जाय। उसके बाद उसके औज़ान बतायें आपने कहा कि दिरहम के तीन सिक्के इस वक़्त जारी हैं एक बग़ली जो दस **मिसक़ाल** के दस होते हैं। दूसरे समरी ख़फ़ाफ़ जो छे **मिसक़ाल** के दस होते हैं। तीसरे पांच **मिसक़ाल** के दस यह कुल २१,**मिसक़ाल** होते हैं। इसको तीन पर तक़सीम करने पर हासिले **तक़सीम** ७,

सात मिसक़ाल हुये। इसी सात मिसक़ाल के दस दिरहम बनवां और इसी सात मिसक़ाल की क़ीमत के सोने के दीनार तैय्यार कर जिसका ख़ुरदा दस दिरहम हो। सिक्का दिरहम का नक़्श चूंकि फ़ारसी में है इसं लिये इसे फ़ारसी में रहने दिया जाय ओर दीनार का सिक्का रूमी हरफ़ों में है लेहाज़ा उसे रूमी ही हरफ़ो में कन्दा कराया जाय और ढालने की मशीन " सांचा " शीशे का बनवाया जाय। ताकि सब हम वज़न तैय्यार हो सकें।

अब्दुल मलिक ने आपके हुक्म के मुताबिक़ तमाम सिक्के ढलवा लिये और सब काम दुरस्त कर लिया। इसके बाद हज़रत की ख़िदमत में हाज़िर हो कर दरयाफ़्त किया कि अब क्या करूं ? " अमरहा मोहम्मद बिन अली " आपने हुक्म दिया कि इन सिक्कों को तमाम ममालिके इस्लामिया में रायज करदे और साथ ही एक सख़्त हुक्म नाफ़िज़ कर दे जिसमें यह हो कि इसी सिक्के को इस्तेमाल किया जायं और रूमी सिक्के ख़िलाफ़े क़ानून क़रार दिये गये। अब जो ख़िलाफ वरज़ी करेगा। उसे सख़्त सज़ा दी जायगी, और बवक़्ते ज़ुरूरत उसे क़त्ल भी किया जायगा। अब्दुल मलिक बिन मरवान ने तामीले इरशाद के बाद सफ़ीरे रूम को रिहा करके कहा कि अपने बादशाह से कहना कि हमने अपने सिक्के ढलवा कर रायज कर दिये। और तुम्हारे सिक्के को ग़ैर क़ानूनी क़रार दे दिया। अब तुम्से जो हो सके कर लो।

सफ़ीरे रोम यहां से रिहा होकर जब अपने कै़सर के पास पहुँचा और उससे सारी दास्तान बताई तो वह हैरान रह गया और सर डाल कर देर तक ख़ामोश बैठा सोचता रहा। लोगों ने कहा , बादशाह तूने जो यह कहा था कि मैं मुस्लमानों के पैग़म्बर को सिक्कों पर गालियां कन्दा कर दूंगा। अब इस पर अमल क्यों नहीं करते। उसने कहा अब गालियां कन्दा करके क्या कर लूँगा। अब तो उनके ममालिक में मेरा सिक्का ही नहीं चल रहा और लेन देन ही नहीं हो रहा है।

(हयातुल हैवान दमीरी,अल मतूफ़ी ८०८ हिजरी जिल्द १, सफ़ा ६३ तबआ मिस्र १३६ हिजरी)

वलीद बिन अब्दुल मलिक की आले मोहम्मद पर ज़ुल्म आफ़रीनी

तारीख़े अबुल फ़िदा में है कि हिजरी ८६ वलीद बिन अब्दुल मलिक इबने मरवान ख़लीफ़ा मुक़र्रर हुआ। तारीख़े कामिल में है कि ९१ हिजरी में उसने हज्जे काबा अदा किया। मुवर्रेख़ीन इस्लाम का बयान है कि जब वलीद बिन अब्दुल मलिक हज से फ़ारिग़ हो कर मदीनए मुनव्वरा आया तो एक दिन मिम्बरे रसूल (स.) पर ख़ुत्बा देते हुये उसकी नज़र इमाम हसन(अ.) के बेटे हसने मुसन्ना पर पड़ी जो ख़ानए सय्यदा में बैठे हुये आयना देख रहे थे। ख़ुत्बे से फ़राग़त के बाद उसने उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ को तल्ब करके कहा कि तुमने हसन बिन हसन(अ.) वग़ैरा को क्यों अब तक इस मकान में रहने दिया और क्यों न उनको

यहां से निकाल बाहर किया। मैं नहीं चाहता कि आइन्दा फिर इन लोगों को यहां देखूँ। ज़ुरूरत है कि यह मकान इनसे ख़ाली करा लिया जाय और इसे ख़रीद कर मसजिद में शामिल कर दिया जाय। हसन मुसन्ना और फ़ात्मा बिन्ते इमाम हुसैन(अ.) और उनकी औलाद ने घर छोड़ने से इन्कार किया। वलीद ने हुक्म दिया कि मकान को उन लोगों पर गिरा दो। फिर लोगों ने ज़बर दस्ती असबाब निकाल कर फेंकना और उसे उजाड़ना शुरू कर दिया। मजबूरन यह हज़रात मुख़द्देरात आलियात समेत रोज़े रौशन में घर से निकल कर बैरूने मदीना सुकूनत पज़ीर हुये। कुछ दिनों के बाद इसी क़िस्म का वाक़ेया जनाबे हफ़सा के मकान का भी पेश आया जो औलादे हज़रत उमर के क़ब्ज़े में था। चुनांचे जब उनसे कहा गया कि घर से बाहर निकलो तो उन्होंने मन्जूर न किया और उसकी क़ीमत भी क़ुबूल न कीं हज्जाज बिन यूसुफ़ उस वक़्त मदीने में मौजुद था। उसने चाहा कि मकान को गिरा दे। मगर जब इस बात की इत्तेला वलीद बिन अब्दुल मलिक को हुई तो उसने उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ आमिले मदीना को लिखा कि औलादे उमर बिन ख़त्ताब की रज़ा जोई में कमी न करो, और उनका एहतेराम मल्हूज़े ख़ातिर रखो। अगर वह मकान फ़रोख़्त करने पर राज़ी न हों तो उनके रहने के लिये मकान का एक हिस्सा छोड़ दो और उनकी आमदो रफ़्त के लिये मसजिद की जानिब एक दरवाज़ा भी रहने दो। (किताब जज़्बुल क़ुलूब सफ़ा १७३ व वफ़ा अल वफ़ा, जिल्द १, सफ़ा ३६३)

आपके वालिदे माजिद की वफ़ात हसरते आयात :– जब आपकी उम्र तक़रीबन ३८, साल की हुई तो वलीद बिन अब्दुल मलिक ने आपके वालिदे माजिद हज़रत इमाम ज़ैनुल आब्दीन(अ.) को ६५ हिजरी में ज़हरे दग़ा से शहीद कर दिया। आपने फ़राएज़े तजहीज़ो तकफ़ीन सर अंजाम दिये। आप ही ने नमाज़ पढ़ाई। मुल्ला जामी लिखते हैं कि हज़रत इमाम ज़ैनुल आब्दीन(अ.) ने अपने बाद आपको अपना वसी मुक़र्रर फ़रमाया। क्योंकि आप ही तमाम औलाद में अफ़ज़ल व अरफ़ा थे। उलेमा का बयान है कि अपने वालिदे माजिद की ज़ाहिरी वफ़ात के बाद आप इमामं ज़माना क़रार पाय ओर आप पर इमामत के फ़राएज़ की अदायगी की ज़िम्मेदारी आयद हो गई।

हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र (अ.) की इल्मी हैसियत

किसी मासूम की इल्मी हैसियत पर रौशनी डालना बहुत दुश्वार है, क्योंकि मासूम और इमामे ज़माना को इल्मे लदुन्नी होता है। वह ख़ुदा की बारगाह से इल्मी सलाहियतों से भरपूर पैदा होता है। हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र(अ.) चूंकि इमामे ज़माना मासूमे अज़ली थे, इस लिये आपके इल्मी कमालात , इल्मी कारनामे और आपकी इल्मी हैसियत की वज़ाहत नामुमकिन है। ताहम मैं उन वाक़ेयात में से कुछ वाक़ेयात लिखता हूँ जिनर उलमा ने उबूर

हासिल कर सके हैं।

अल्लामा इब्ने शहरे आशोब लिखते हैं कि हज़रत का खुद इरशाद है कि " अलमना मन्तिक़ अल तैरो अवतैना मिन कुल्ले शैइन " हमें ताएरों तक की ज़बान सिखाई गई है और हमें हर चीज़ का इल्म अता किया गया है।

(मनाक़िबे शहरे आशोब, जिल्द ५, सफ़ा ११)

रौज़तुल सफ़ा में है, (बा खुदा सौगन्द कि माख़ाजनाने खुदाएम दर आसमान व ज़मीन) खुदा की क़सम हम ज़मीन और आसमान में खुदा वन्दे आलम के ख़ाज़िन इल्म हैं और हम ही शजरए नबूवत और मादने हिकमत हैं। वही हमारे यहां आती रही और फ़रिशते हमारे यहां आते रहते हैं। यही वजह है कि दुनिया के ज़ाहिरी अरबाबे इक़्तेदार हमसे जलते और हसद करते हैं। लिसानुल वाएज़ीन में है कि अबु मरीयम अब्दुल ग़फ़्फ़ार का कहना है कि मैं एक दिन हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र (अ.) की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अर्ज़ परदाज़ हुआ कि (१) मौला कौन सा इस्लाम बेहतर है। फ़रमाया, जिससे अपने बरादरे मोमिन को तकलीफ़ न पहुँचे। (२) कौन सा खुल्क़ बेहतर है। फ़रमाया, सब्र और माफ़ कर देना। (३) कौन सा मोमिने कामिल है। फ़रमाया, जिसके इख़लाक़ बेहतर हों। (४) कौन सा जेहाद बेहतर है। फ़रमाया, जिसमें अपना खून बह जाय। (५) कौन सी नमाज़ बेहतर है। फ़रमाया, जिसका कुनूत तवील हो। (६) कौन सा सदक़ा बेहतर है। फ़रमाया, जिससे नाफ़रमानी से नजात मिले। (७) बादशाहाने दुनिया के पास जाने में आपकी क्या राय है। फ़रामाया, मै। अच्छा नहीं समझता। (८) पूछा क्यों ? फ़रमाया, इस लिये कि बादशाहों के पास की आमदो रफ़्त से तीन बातें पैदा होती हैं। (१) मोहब्बते दुनिया (२) फ़रामोशिए मर्ग (३) क़िल्लते रज़ाए खुदा (४) पूछा फिर मैं न जाऊँ। फ़रमाया मैं तलबे दुनिया से मना नहीं करता। अल्बत्ता तल्बे मआसी से रोकता हूँ।

अल्लामा तबरीसी लिखते हैं। कि यह मुसल्लेमा हक़ीक़त है और इसकी शोहरते आम्मा कि आप इल्मो ज़ोहद और शरफ़ में सारी दुनिया से फ़ौक़ीयत ले गये हैं। आपसे इल्मे कुरआन, इल्मे अल आसार, इल्म अल सन्न और हर क़िस्म के उलूम, हुक्मे आदाब वग़ैरा में कोई भी फ़ौक़ नहीं गया। हत्ता कि आले रसूल(स.) मे भी अबुल आइम्मा के अलावा आपके बराबर उलूम के मज़ाहिरे में कोई नहीं हुआ। बड़े बड़े सहाबा और नुमायां ताबेईन, और अज़ीमुल क़द्र फ़ुक़हा आपके सामने ज़ानुए अदब तह करते रहे। आपको आं हज़रत (स.) ने जाबिर बिन अब्दुल्लाह अन्सारी के ज़रिये से सलाम कहलाया था और इसकी पेशीन गोई फ़रमाई थी कि यह मेरा फ़रज़न्द " बाक़ेरूल उलूम " होगा। इल्म की गुत्थियों को इस तरह सुलझायेगा कि दुनिया हैरान रह जायगी। आलाम उल वरा, सफ़ा १५७, अल्लामा शेख़ मुफ़ीद, अल्लामा शिब्लन्जी तहरीर फ़रमाते हैं। कि इल्मे दीन, इल्मे अहादीस, इल्मे सन्न और तफ़सीरे कुरआन व इल्म- अल - सीरत व उलूमो फ़ुनून, अदब वग़ैरा के ज़ख़ीरे जिस क़द्र

इमाम मोहम्मद बाक़र(अ.) से ज़ाहिर हुये इतने इमाम हुसैन और इमाम हसन(अ.) की औनाद में से किसी से ज़ाहिर नहीं हुये। मुलाहेज़ा हो किताब अल इरशाद, सफ़ा २८६ नुरूल अबसार , सफ़ा १३१ अर हज्जुल मतालिब सफ़ा ४४७ अल्लामा इब्ने हजर मक्की लिखते हैं कि हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र(अ.) के इल्मी फ़यूज़ व बरकात और कमालात व एहसानात से उस शख़्स के अलावा जिसकी बसीरत ज़ाएल हो गई, जिसका दिमाग़ ख़राब हो गया हो और जिसकी तबीयत व तीनत फ़ासिद हो गई हो। कोई शख़्स इन्कार नहीं कर सकता। इसी वजह से आपके बारे में कहा जाता है कि आप " बाक़रूल उलूम " इल्म के फ़ैलाने वाले और जामेउल उलूम हैं। आप ही उलूमो मआरिफ़ में शोहरते आम्मा हासिल करने और उसके मदारिज बलन्द करने वाले हैं। आपका दिल साफ़, इल्मो अमल रौशन व ताबिन्दा, नफ़्स पाक और ख़िलक़त शरीफ़ थी। आपके कुल अवक़ात इताअते ख़ुदा वन्दी में बसर होते थे। आरिफ़ों के कुलूब में आपके आसार रासिख़ और गहरे निशानात नुमायां हो गये थे। जिनके बयान करने से वसफ़ करने वालों की ज़बानें गूंगी और आजिज़ो मांदा हैं। आपके ज़ोहद व तक़वा , आपके उलूमो मआरिफ़ आपके इबादात व रियाज़ात और आपके हिदायात व कलमात इस कसरत से हैं कि उनका बयान इस किताब में ना मुमकिन है।(सवाएक़े मोहर्रेका सफ़ा १२०)

अल्लामा इब्ने ख़लदून लिखते हैं। कि इमाम मोहम्मद बाक़र (अ.) अल्लामा ज़मान और सरदारे कबीर-उस-शान थे। आप उलूम में बड़े तवाहुर और वसीउल इत्तेला थे।

(वफ़यात उल अयान, जिल्द १, सफ़ा ४५०)

अल्लामा ज़हबी लिखते हैं कि आप बनी हाशिम के सरदार और मुतबहे इल्मी की वजह से बाक़र मशहूर थे। आप इल्म की तह तक पहुँच गये थे। आपने इसके दक़ाएक़ को अच्छी तरह समझ लिया था।

(तज़केयल हफ़्फ़ाज़ जिल्द १, सफ़ा १११)

अल्लामा शबरावी लिखते हैं कि इमाम मोहम्मद बाक़र(अ.) के इल्मी तज़किरे दुनिया में मशहूर हुये और आपकी मदहो सना में बा कसरत शेर लिखे गये। मालिक ज़ेहनी ने यह तीन शेर लिखे हैं।

तरजुमा :- जब लोग क़ुरआने मजीद का इल्म हासिल करना चाहें तो पूरा क़बीलए क़ुरैश उसके बताने से आजिज़ रहेगा, क्योंकि वह ख़ुद मोहताज है और अगर फ़रज़न्दे रसूल(स.) इमाम मोहम्मद बाक़र(अ.) के मुँह से कोई बात निकल जाय तो बे हदो हिसाब मसाएल व तहक़ीक़ात के ज़ख़ीरे मोहय्या कर देंगे। यह हज़रात वह सितारे हैं जो हर क़िस्म की तारीकियों में चलने वालों के लिये चमकते हैं और उनके अनवार से लोग रास्ते पाते हैं।

(इलतहाफ़, सफ़ा ५२ व तारीख़ुल आइम्मा, सफ़ा ४१३)

अल्लामा शहरे आशोब का बयान है कि सिर्फ़ एक रावी मोहम्मद बिन मुस्लिम ने आप से तीस हज़ार (३०,०००) हदीसें रवायत की हैं। (मनाक़िब जिल्द ५, सफ़ा ११)

आपके बाज़ इल्मी हिदायात व इरशादात :- अल्लामा मोहम्मद बिन तल्हा शाफ़ेई लिखते हैं कि जाबिर जाफ़ेई का बयान है कि एक दिन हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र(अ.) से मिला तो आपने फ़रमाया,

ऐ जाबिर मैं दुनिया से बिलकुल बेफ़िक्र हूँ। क्योंकि जिसके दिल में दीने ख़ालिस हो वह दुनिया को कुछ नहीं समझता, और तुम्हें मालूम होना चाहिये कि दुनिया छोड़ी हुई सवारी , उतारा हुआ कपड़ा और इस्तेमाल की हुई औरत है।

मोमिन दुनिया की बक़ा से मुतमइन नहीं होता और उसकी देखी हुई चीज़ों की वजह से नूरे खुदा उससे पोशीदा नहीं होता।

मोमिन को तक़वा इख़्तियार करना चाहिये कि वह हर वक़्त उसे मुतनब्बे और बेदार रखता है।

सुनो दुनिया एक सराय फ़ानी है। " नज़लत बेही दारे तहलत मिनहा " इसमें आना जाना लगा रहता है, आज आये और कल गये और दुनिया एक ख़्वाब है जो कमाल के मानन्द देखी जाती है और जब जाग उठे तो कुछ नहीं....आपने फ़रमाया, तकब्बुर बहुत बुरी चीज़ है। यह जिस क़द्र इन्सान में पैदा होगा, उसी क़द्र उसकी अक़्ल घटेगी।

कमीने शख़्स का हरबा गालियां बकना है।

एक आलिम की मौत को इबलीस ने नब्बे (९०) आबिदों के मरने से बेहतर समझता है।

एक हज़ार आबिदों से वह एक आलिम बेहतर है जो अपने इल्म से फ़ायदा पहुंचा रहा हो।

मेरे मानने वाले वह हैं जो अल्लाह की इताअत करें।

आंसुओं की बड़ी क़ीमत है रोने वाला बख़्शा जाता है और जिस रूख़्सार पर आंसू जारी हों वह ज़लील नहीं होता।

सुस्ती और ज़्यादा तेज़ी बुराईयों की कुन्जी है। खुदा के नज़दीक बेहतरीन इबादत पाक दामानी है। इनसान को चाहिये कि अपने पेट और अपनी शर्म गाहों को महफ़ूज़ रखें।

दुआ से क़ज़ा भी टल जाती है। नेकी बेहतरीन ख़ैरात है।

बत्तरीन ऐब यह है कि इन्सान को अपनी आंख की शहतीर दिखाई न दे और दूसरों की आंख का तिन्का नज़र आये। यानी अपने बड़े गुनाह की परवाह न हो और दूसरों के छोटे अयूब उसे बड़े नज़र आयें और खुद अमल न करे। सिर्फ़ दूसरों को तालीम दे।

जो खुशहाली में साथ दे और तंग दस्ती में दूर रहे, वह तुम्हारा भाई और दोस्त नहीं है। (मतालेबुल सुवेल, सफ़ा २७२)

अल्लामा शिबलंजी लिखते हैं कि, हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र (अ.) ने फ़रमाया कि जब कोई नेमत मिले तो कहो अलहम्दो लिल्लाह और जब कोई तकलीफ़ पहुँचे तो कहो " लाहौल बिलाकुव्वत इल्लाह बिल्ला " और जब रोजी तगं हो तो कहो "अस्तग़फिरूलल्लाह"। दिल को दिल से राह होती है, जितनी मोहब्बत तुम्हारे दिल में होगी इतनी ही तुम्हारे भाई और दोस्त के दिल में भी होगी।

तीन चीज़ें खुदा ने तीन चीज़ों में पोशीदा रखी हैं।

(१) अपनी रज़ा अपनी इताअत में , किसी फ़रमा बरदारी को हक़ीर न समझो। शायद इसी में खुदा की रज़ा हो (२) अपनी नाराज़ी अपनी मुसीबत में , किसी गुनाह को मामूली न जानों शायद खुदा उसी से नाराज़ हो जाए (३) अपनी दोस्ती या अपने वली, मख़लूक़ात में किसी शख़्स को हक़ीर न समझो, शायद वही वली उल्लाह हो।

(नूरूल अबसार सफ़ा १३१ व इतहाफ सफ़ा ६३)

अहादीसे अइम्मा में है। इमाम मोहम्मद बाक़र (अ.) फ़रमाते हैं।

इन्सान को जितनी अक़्ल दी गई है इसी के मुताबिक़ इससे क़यामत में हिसाब व किताब होगा।

एक नफ़ा पहुँचाने वाला आलिम सत्तर हज़ार आब्दिों से बेहतर है।

आलिम की सोहबत में थोड़ी देर बैठना एक साल की इबादत से बेहतर है।

खुदा उन उलमा पर रहम व करम फ़रमाए जो अहयाए इल्म करते और तक़वा को फरोग़ देते हैं।

इल्म की ज़कात यह है कि मख़लूके खुदा को तालीम दी जाए।

कुराने मजीद के बारे में तुम जितना जानते हो उतना ही बयान करो।

बन्दों पर खुदा का हक़ यह है कि जो जानता हो उसे बताए और जो न जानता हो उसके जवाब में ख़ामोश हो जाए।

इल्म हासिल करने के बाद उसे फैलाओ इस लिए कि इल्म को बन्द रखने से शैतान का ग़लबा होता है।

मोअल्लिम और मुताकल्लिम का सवाब बराबर है।

जिस तालीम की ग़रज़ यह हो कि वह उल्मा से बहस करे, जोहला पर रोब जमाए और लोगों को अपनी तरफ़ माएल करे वह जहन्नमी हैं।

दीनी रास्ता दिखलाने वाला और रास्ता पाने वाला दोनों सवाब की मीज़ान के लिहाज़ से बराबर हैं।

जो दीनियात में ग़लत कहता हो उसे सही बता दो।

ज़ाते इलाही वह है ,जो अक़्ले इन्सानी में समा सके और हुदूद में महदूद न हो सके। इसकी ज़ात फ़हम व अदराक से बाला तर है। खुदा हमेशा से है और हमेशा रहेगा।

खुदा की ज़ात के बारे में बहस न करो, वरना हैरान हो जाओगे।

अज़ल की दो किस्में हैं एक अज़ल महतूम, दूसरे अज़ल मौकूफ़, दूसरी से खुदा के सिवा कोई वाकिफ़ नहीं।

ज़मीने हुज्जते खुदा के बग़ैर बाकी नहीं रह सकती।

उम्मत बे इमाम की मिसाल भेड़ के उस गल्ले की है, जिसका कोई भी निगरां न हो।

इमाम मोहम्मद बाकर(अ.) से रूह की हकीकत और माहीयत के बारे में पूछा गया तो फ़रमाया कि रूह हवा की मानिन्द मुताहर्रिक है और यह रीह से मुश्ताक़ है, हमजिन्स होने की वजह से उसे रूह कहा जाता है। यह रूह जो जानदारों की ज़ात के साथ मख़सूस है,वह तमाम रूहों से पाकीज़ा तर है। रूह मख़लूक़ और मसनूह है और हादिस और एक जगह से दूसरी जगह मुनतकि़ल होने वाली है। वह ऐसी लतीफ़ शै है जिसमें न किसी क़िस्म की गरानी और सगींनी है न सुबकी , वह एक बारीक और रक़ीक़ शै है, जो क़ालिबे कसीफ़ में पोशीदा है। इसकी मिसाल इस मशक जैसी है जिसमें हवा भर दो। हवा भरने से वह फूल जायगी, लेकिन उसके वज़न में इज़ाफ़ा न होगा। रूह बाक़ी है और बदन से निकलने के बाद फ़ना नहीं होती। यह सूर फुंकने के वक़्त ही फ़ना होगी।

आपसे खुदा वन्दे आलम के सिफ़ात के बारे में पूछा गया तो आपने फ़रमाया, कि वह समी बसीर है और अलाए समा व बसर के बग़ैर सुन्नता और देखता है।

रईसे मोतज़ला उमर बिन अबीद ने आपसे पूछा कि "मन यहाल अलैहा ग़जबनी" से कौन सा ग़ज़ब मुराद है। फ़रमाया उक़ाब और अज़ाब की तरफ़ इशारा फ़रमाया गया है।

अबुल ख़ालिद काबली ने आपसे पूदा कि क़ौले खुदा " फ़ामनू बिल्लाह व रसूलहे नूरूल लज़ी अन्ज़लना " में नूर से क्या मुराद है। आपने फ़रमाया। " वल्लाहा अलन नूर अल आइम्मते मिन आले मोहम्मद " खुदा की क़सम नूर से हम आले मोहम्मद मुराद हैं।

आपसे दरयाफ़्त किया गया कि " यौमे नदउ कुल्ले उनासिम बे इमामेहिम " से कौन लोग मुराद हैं। आपने फ़रमाया वह रसूल अल्लाह हैं और उनके बाद उनकी औलाद से आइम्मा होंगे। उन्हीं की तरफ़ आयत में इशारा फ़रमाया गया है। जो उन्हें दोस्त रखेगा और उनकी तसदीक़ करेगा। वही नजात पायेगा और जो उनकी मुख़ालेफ़त करेगा जहन्नम में जायगा।

एक मरतबा ताऊसे यमानी ने हज़रत की ख़िदमत में हाज़िर हो कर यह सवाल किया कि वह कौन सी चीज़ है जिसका थोड़ा इस्तेमाल हलाल था, और ज़्यादा इस्तेमाल हराम। आपने फ़रमाया कि नहरे तालूत का पानी था। जिसका सिर्फ़ एक चुल्लू पीना हलाल था और उससे ज़्यादा हराम। पूछा वह कौन सा रोज़ा था जिसमें खाना पीना जायज़ था। फ़रमाया वह

जनाबे मरयम का रोज़ा " सुमत " था जिसमें सिर्फ़ न बोलने का रोज़ा था, खाना पीना हलाल था। पूछा वह कौन सी शै है जो सर्फ़ करने से कम होती है। बढ़ती नहीं , फ़रमाया कि वह उम्र है। पूछा वह कौन सी शै है जो बढ़ती है घटती नहीं। फ़रमाया वह समुन्द्र का पानी है। पूछा वह कौन सी चीज़ है जो सिर्फ़ एक बार उड़ी और फिर न उड़ी। फ़रमाया वह कोहे तूर है। जो एक बार हुक्मे ख़ुदा से उड़ कर बनी इसराईल के सरों पर आ गया था। पूछा वह कौन लोग हैं जिनकी सच्ची गवाही ख़ुदा ने झूटी क़रार दी। फ़रमाया वह मुनाफ़िक़ों की तस्दीक़े रिसालत है, जो दिल से न थी। पूछा बनी आदम का १/३ हिस्सा कब हलाक हुआ। फ़रमाया ऐसा कभी नहीं हुआ। तुम यह पूछो कि इन्सान का १/४ हिस्सा कब हलाक हुआ तो मैं तुम्हें बताऊँ कि यह उस वक़्त हुआ। जब क़ाबील ने हाबील को क़त्ल किया। क्योंकि उस वक़्त चार आदमी थे। आदम, हव्वा, हाबील, क़ाबील। पूछा फिर नस्ले इन्सानी किस तरह बढ़ी। फ़रमाया जनाबे शीस से जो क़त्ले हाबील के बाद बतने हव्वा से पैदा हुये।

इमाम मोहम्मद बाक़र(अ.) और जनाबे अबू हनीफ़ा का इम्तेहान

अल्लामा शिबली नोमानी और अल्लामा इब्ने अलक़ीम लिखते हैं कि इमाम अबू हनीफ़ा एक मुद्दत तक हज़रत की ख़िदमत में हाज़िर रहे और उन्हीं से फ़ेक़ह हदीस के मुताल्लिक़ बहुत सी नादिर बातें हासिल कीं। शिया, सुन्नी दोनों ने माना हैं कि अबू हनीफ़ा की मालूमात का बड़ा ज़ख़ीरा हज़रत ही का फ़ैज़े सोहबत था। इमाम साहब ने इनके फ़रज़न्द रशीद हज़रत जाफ़र सादिक़ (अ.) की फ़ैज़े सोहबत से भी बहुत कुछ फ़ाएदा उठाया। जिसका ज़िक्र उमूमन तारीख़ों मे पाया जाता है।

(सीरतुलनोमान व अलाम अल माक़ेनीन जिल्द १ सफ़ा ६३)

अल्लामा शबादी शाफ़ई लिखते हैं कि एक दिन हज़रत मोहम्मद बाक़र (अ.) ने इमाम अबू हनीफ़ा से फ़रमया कि मैंने सुना है कि तुम क़यास करने में ज़मीन व आसमान के कुलाबे मिलाते हो यह सच है! उन्होंने कहा मैं बेशक क़यास करता हूँ और इसकी वजह हदीस व अख़्बार हैं। हज़रत ने फ़रमया कि अच्छा मैं चन्द सवाल करता हूँ तुम क़यास करके जवाब दो। उन्होंने कहा फरमाईए, आपने इरशाद फ़रमाया क़तल बड़ा गुनाह है कि ज़िना अर्ज़ की क़तल है। फिर क्या वजह है कि क़तल में सिर्फ़ दो गवाह काफ़ी हैं ज़िना की शाहादत में चार गवाह तलब होते हैं उन्होने सुकूत इख़्तेआर किया इसरार पर यूँ बोले मुझे इल्म नहीं। फिर आपने फ़रमाया,नमाज़ की अज़मत ज़्यादा है या रोज़े की, कहा नमाज़ की,कहा फिर क्या वजह है कि हाएज़ औरतों को नमाज़ की कज़ा ज़रूरी नहीं और रोज़े की क़ज़ा लाज़मी है।

इसकी तफ़सील के लिए मुलाहेज़ा हो " तारीख़े इस्लाम " जिल्द १ मोअल्लेफ़ा हक़ीर मतबूआ इमामिया कुतुब ख़ाना मुग़ल हवेली लाहौर।

उन्होंने कहा मुझे मालूम नहीं। फिर हज़रत ने फ़रमाया बताओ। पेशाब ज़्यादा नजिस है या मनी। उन्होंने कहा पेशाब ज़्यादा नजिस है। हज़रत ने फ़रमाया कि फिर क्या वजह है कि पेशााब के बाद वज़ू किया जाता है और मनी के बाद ग़ुस्ल वाजिब है। कहा मुझे इल्म नहीं।

इमाम अबू हनीफ़ा का बयान है कि इन सवालात के बाद आप दूसरे कामों में लग गए तो मैंने अर्ज़ की ऐ फरज़न्दे रसूल (स.) इन सब मसाएल के बारे में मेरी तशफ़्फ़ी फ़रमाएं आपने फ़रमाया कि मैं इस शर्त से बताऊंगा कि तुम आइन्दा क़यास करने से बाज़ रहने का वादा करो। चुनांचे मैंने वादा किया तो आपने इरशाद फ़रमाया , सुनो !

(१) क़तल करने वाला एक ही शख़्स होता है, इसलिए सिर्फ दो गवाह काफ़ी होते है और ज़िना में दो शख़्स हाते हैं इसलिए चार गवाह की ज़रूरत होती है (२) हाएज़ को साल में एक ही मरतबा रोज़े से दो चार होना पड़ता है। इसकी क़ज़ा आसान है और नमाज़ से हर माह साबेक़ा पड़ता है इसकी क़जा मुश्किल है इसलिए ख़ुदा ने यह सहूलियत दी है कि रोज़े की कज़ा करें और नमाज़ की कज़ा न करे (३) पेशाब सिर्फ मसाने से निकलता है और दिन में कई मरतबा निकलता है। इसमें ग़ुस्ल दुश्वार होता है, और मनी सारे जिस्म से निकलती है " तहत कुलशैरता जनाबता " बल्कि यूँ समझो कि हर बुने मू से निकलती है और कभी, कभी निकलती है इसलिए ग़ुस्ल करना आसान होता है। लेहाज़ा इसके महल्ले इख़राज का लेहाज़ करते हुए ग़ुस्ल ज़ुरूरी क़रार दिया गया है। इमाम अबू हनीफ़ा का बयान है कि इस जवाब से मुझे पूरी तसल्ली हो गई और हज़रत को सलाम करके घर वापस आया।

(इताफ सफ़ा ८८)

अल्लामा दमेरी ने अपनी किताब हैवातुल हैवान की जिल्द २ सफ़ा ८६) तहतुल लुग़त ज़बी तबा मिस्र में इस वाक़िए को इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.) से मुतालल्कि लिखा है।

अल्लामा शिबलंजी लिखते हैं कि अलाए बिन उमर बिन अबीद ने हज़रत इमाम मोहमद बाक़र (अ.) से पुछा। "इन अलसमावाता वलअर्ज़ा कानता रतक़ाफफतक़ना हमा" का क्या मतलब है ,आपने इरशाद फरमाया आसमान व ज़मीन दोनो (अपनी फैज़ रसाई से) बन्द थे फिर ख़ुदा ने उन्हे खोल दिया , यानी आसमान से पानी बरसने लगा और ज़मीन से दाना उगने लगा (नुरूल अबसार सफ़ा १३० व इतहाफ़ सफ़ा व कशफ़ुलगमा सफ़ा ५४)

अल्लामा जामी लिखते हैं कि इन्सानों की तरह आपसे जिन भी इल्मी फ़ायदा उठाया करते थे। रावी का बयान है कि मैंने एक दिन बारह अजनबी अशख़ास को आपके पास देख कर पुछा कि यह कौन लोग हैं , इमाम मोहम्मद बाक़र ने फ़रमाया यह जिन हैं मेरे पास मसाएल शरई पूछने आते हैं। (शवाहेदुन नबूवत सफ़ा १८२)

इमाम मोहम्मद बाक़र (अ.) के बाज़ करामात

आइम्माए अहले बैत (अ.) का साहेबे करामात होना मुसल्लेमात से है। हज़रत

मोहम्मदे बाक़र (अ.)के करामात हदे एहसा से बाहर हैं। इस मुक़ाम पर चन्द लिखे जाते हैं। अल्लामा जामेई रहमतुल ल्लाह अलैहा लिखते हैं कि(१) एक रोज़ आप खच्चर पर सफ़र फ़रमा रहे थे और आपके हमराह एक और शख़्स गदहे पर सवार था। मक्का और मदीना के दरमियान पहाड़ से एक भेड़िया बरामद हुआ आपने उसे देख हर अपनी सवारी रोक ली। वह क़रीब पहँच कर गोया हुआ। मौला ! इस पहाड़ी में मादा है और उसे सख़्त र्दद ज़ेह आ़ ़ है आप दुआ फ़रमा दीजिए कि इस मुसीबत से नजात हो जाए। आपने दुआ फ़रमा दी । फिर उसने कहा कि यह दुआ कीजिए कि "अज़नस्ल मन पर शीआए तौ मफ़स्तल न गिरदाना " मेरी नसल में से किसी को भी आपके शिओं पर ग़लबा व तसल्लत न हासिल होने दे,आपने फ़रमाया मैंने दुआ कर दी, वह चला गया (२)एक शब एक शख़्स शदीद बारिश के दौरान में आपके दौलत कदे पर जाकर ख़ामोश खड़ा हो गया और सोचने लगा कि इस न मुनासिब वक़्त ः "दक़्कुलबाब" करूँ या वापस चला जाउं। नागाह आपने अपनी लौंडी से फ़रमाया कि फुलां शख़्स मक्के से आकर मेरे दरवाज़े पर खड़ा है उसे बुला लो! उसने दरवाज़ा खोल कर बुला लिया(३)रावी का बयान है कि एक दिन आपके दौलत कदे पर हाज़िर होकर इज़ने हुज़ूरी का तलबगार हुआ। आपने किसी वजह से इजाज़त न दी। मैं ख़ामोश खड़ा रहा। इतने में देखा कि बहुत से आदमी आये और गये, यह हाल देख कर मैं बहुत रंजीदा हुआ और देर तक सोचने लगा कि किसी और मज़हब में चला जाऊं इसी ख़्याल में घर चला गया। जब रात हुई तो आप मेरे मकान पर तशरीफ़ लाए और कहने लगे किसी मज़हब में मत जाओ, कोई मज़हब दुरूस्त नहीं है। आओ मेरे साथ चलो यह कह कर अपने हमराह ले गए(४) एक शख़्स ने आपसे कहा ख़ुदा पर मोमिन का क्या हक़ है। आपने इसके जवाब से एराज़ किया। जब वह न माना तो फ़रमाया कि इस दरख़्त को अगर कह दिया जाए कि चला आ, तो वह चला आएगा, यह कहना था कि वह अपने मक़ाम से रवाना हो गया , फिर आपने हुक्म दिया वह वापस चला गया। (५)एक शख़्स ने आपके मकान के सामने कोई हरकत की, आपने फ़रमाया मुझे इल्म है, दीवार हमारी नज़रों के दरमियान हाएल नहीं होती, आईन्दा ऐसा नहीं होना चाहिए(६) एक शख़्स ने अपने बालों के सफ़ेद होने की शिकाएत की आपने उसे अपने हाथों से मस कर दिया, वह सियाह हो गये (७)जिस ज़माने में इमाम ज़ैनुल आब्दीन(अ.) का इन्तेक़ाल हुआ था। आप मस्जिदे नबवी में तशरीफ़ फ़रमा थे इतने में मनसूर दवानक़ी और दाऊद बिन सुलैमान मस्जिद में आए। मनसूर आप से दूर बैढा और दाऊद क़रीब आगया। उसने फ़रमाया। मनसूर मेरे पास क्यों नहीं आता। उसने कोई उज़्र बयान किया हज़रत ने फ़रमाया इससे कह दो तू अनक़रीब बादशाहे वक़्त होगा और शरफ़ व ग़र्ब का मालिक होगा। यह सुन कर दवानेक़ी आपके क़रीब आगया और कहने लगा आपका रोब व जलाल मेरे क़रीब आने से माने था, फिर आपने उसकी हुकूमत की तफ़सील बयान फ़रमाई, चुनान्चे वैसा ही हुआ।।(८) अबू बसीर की आखें जाती रही थीं, उन्होंने एक दिन

कहा कि आप तो वारिसे अम्बिया हैं। मेरी रौशनी पलटा दीजिए। आपने इसी वक़्त आँखों पर हाथ फेर कर उन्हें बीना बना दिया (९) एक कूफ़ी ने आपसे कहा कि मैंने सुना है कि आपके ताबे फ़रिशते हैं जो आपको शिया और ग़ैर शिया बता दिया करते हैं। आपने पूछा तू क्या काम करता है, उसने कहा गन्दुम फ़रोशी, आपने फ़रमाया ग़लत है। फिर उसने कहा कभी कभी जौ भी बेचता हूँ। फ़रमाया यह भी ग़लत है , तू सिर्फ़ ख़ुरमे बेचता है। उसने कहा आपसे यह किसने बताया है। इमाम ने फ़रमाया उसी फ़रिशते ने जो मेरे पास आता है इसके बाद आपने फ़रमाया कि तू फ़ुलां बीमारी में तीन दिन के अन्दर वफ़ात कर जाएगा। चुनांचे ऐसा ही हुआ। (१०) रावी कहता है कि मैं एक दिन हज़रत की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो क्या देखा, आप ब ज़बाने सुरयानी मुनाजात पढ़ रहे हैं। मेरे सवाल के जवाब में फ़रमाया कि यह फ़ुलां नबी की मुनाजात है (११) हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.) फ़रमाते हैं कि मेरे वालिदे बुर्ज़ुगवार इमाम मोहम्मद बाक़र (अ.) एक दिन मदीने में बहुत से लोगों के दर्मियान बैठे हुए थे नागाह आपने सर डाल लिया। इसके बाद फ़रमाया, ऐ अहले मदीना आईन्दा साल यहाँ नाफ़े बिन अरज़क़ चार हज़ार जर्रार सिपाही ले कर अएगा और तीन शबाना रोज़ शदीद मुक़ाबला व मुक़ातेला करेगा, और तुम अपना तहफ़्फ़ुज़ न कर सकोगे। सुनो जो कुछ मैं कह रहा हूँ "हवा काएन लायद मनहू" वह होके रहेगा चुनांचे आइन्दा साल (कान अल अमर अला मक़ाल) वही हुआ जो आपने फ़रमाया थ। (१२) ज़ैद बिन आज़म का बयान है कि एक दिन ज़ैद शहीद आपके सामने से गुज़रे तो आपने फ़रमाया कि यह ज़ुरूर कूफ़े में ख़ुरूज करेंगे और क़तल होंगे और इनका सर दयार ब दयार फिराया जायगा। (फ़कान कमाकाल) चुनांचे वही कुछ हुआ। (शवाहेदुन नबूवत सफ़ा १८५ नुरूल अबसार सफ़ा १३०)

आपकी इबादत गुज़ारी और आपके आम हालात

आप आपने आबाओ अजदाद की तरह बेपनाह इबादत करते थे। सारी रात नमाज़ें पढ़नी और सारा दिन रोज़े से गुज़ारना आपकी आदत थी। आपकी ज़िन्दगी ज़ाहिदाना थी। बोरीए पर बैठते थे। हदाया जो आते थे उसे फ़ुक़राओ मसाकीन पर तक़सीम कर देते थे। ग़रीबों पर बेहद शफ़क़त फ़रमाते थे। तवाज़े और फ़रोतनी, सब्र और शुक्र ग़ुलाम नवाज़ी सेलए रहम वग़ैरा में अपनी आप नज़ीर थे। आपकी तमाम आमदनी फ़ुक़राओं पर सर्फ़ होती थी। आप फ़क़ीरों की बड़ी इज़्ज़त करते थे और उन्हें अच्छे नाम से याद करते थे।(कशफ़ुल ग़मा सफ़ा ९५)आपके एक ग़ुलाम अफ़लह का बयान है कि एक दिन आप काबे के करीब तशरीफ़ ले गए ,आपकी जैसे ही काबे पर नज़र पड़ी आप चीख़ मार कर रोने लगे मैंने कहा कि हुज़ूर सब लोग देख रहे हैं आप आहिस्ता से गिरया फ़रमायें। इरशाद किया ऐ अफ़लह शायद ख़ुदा भी उन्हीं लोगों की तरह मेरी तरफ़ देख ले और मेरी बख़्शिश का साहारा हो जाय।

इसके बाद आप सजदे में तशरीफ़ ले गए और जब सर उठाया तो सारी ज़मीन आँसूओं से तर थी। (मतालेबु सुवेल सफ़ा २७१)

हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र(अ.) और हश्शाम बिन अब्दुल मलिक

तवारीख़ में है कि ६६, हिजरी में वलीद बिन अब्दुल मलिक फ़ौत हुआ (अबुल फ़िदा) और उसका भाई सुलैमान बिन अब्दुल मलिक ख़लीफ़ा मुक़र्रर किया गया।(इब्ने वरा) ६६, हिजरी में उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ख़लीफ़ा हुआ। (इब्नुल वरा) उसने ख़लीफ़ा होते ही इस बिदअत को जो ४१ हिजरी से बनी उम्मया ने हज़रत अली(अ.) पर सबो शितम की सूरत में जारी कर रखी थी। हुकमन रोक दिया। (अबुल फ़िदा) और रूकूमे खुमस बनी हाशिम को देना शुरू किया। (किताब उल ख़राएज, अबू यूसुफ़) यह वह ज़माना था जिसमें अली के नाम पर अगर किसी बच्चे का नाम होता था तो वह क़त्ल कर दिया जाता था और किसी को भी ज़िन्दा न छोड़ा जाता था। (तदरीब अल रावी , सयूती) इसके बाद १०१, हिजरी में यज़ीद इब्ने अब्दुल मलिक ख़लीफ़ा बनाया गया। (इब्नुल वरदी) १०५ हिजरी में हश्शाम इब्ने अब्दुल मलिक बिन मरवान बादशाहे वक़्त मुक़र्रर हुआ। (इब्नुल वरदी)

हश्शाम बिन अब्दुल मलिक, चुसत, चालाक, कंजूस, मुताअस्सिब, चाल बाज़, सख़्त मिज़ाज, कजरौ, खुद सर,हरीस, कानों का कच्चा और हद दरजा शक्की था।, कभी किसी का एतेबार न करता था। अकसर सिर्फ़ शुब्हे पर सलतनत के लाएक़ मुलाज़िमों को क़त्ल करा देता था। यह ओहदों पर उन्हीं को फ़ाएज़ करता था जो खुशामदी हों। उसने ख़ालिद बिन अब्दुल्लाह क़सरी को १०५, हिजरी से १२० हिजरी तक ईराक़ का गर्वनर रखा। क़सरी का हाल यह था कि हश्शाम को रसूल अल्लाह (स.) से अफ़ज़ल बताता और उसी का प्रोपेगन्डा किया करता था। (तारीख़े कामिल जिल्द ५, सफ़ा १०३) हश्शाम आले मोहम्मद(स.) का दुश्मन था। इसी ने ज़ैद शहीद को निहायत बुरी तरह क़त्ल किया था। तारीख़े इस्लाम जिल्द १, सफ़ा ४६) इसी ने अपने ज़मानए वली अहदी में फ़रज़दक़ शायर को इमाम ज़ैनुल आब्दीन (अ.) की मदह के जुर्म में बा मक़ाम असक़लान क़ैद किया था। (सवाएक़े मोहर्रेक़ा)

हश्शाम का सवाल और उसका जवाब :- तख़्ते सलतनत पर बैठने के बाद हश्शाम बिन अब्दुल मलिक हज के लिये गया। वहां उसने इमाम मोहम्मद बाक़र(अ.) को देखा कि मसजिदुल हराम में बैठे हुये लोगों को पन्दो नसाहे से बहरावर कर रहे हैं। यह देख कर हश्शाम की दुश्मनी ने करवट ली और उसने दिल में सोचा कि उन्हें ज़लील करना चाहिये और इसी इरादे से उसने एक शख़्स से कहा कि जाकर उनसे कहो कि ख़लीफ़ा पूछ रहे हैं कि हश्र के दिन आख़री फ़ैसले से पहले लोग क्या खायें और पियेंगे। उसने जा कर इमाम (अ.) के सामने ख़लीफ़ा का सवाल पेश किया। आपने फ़रमाया जहां हश्रो नश्र होगा

वहां मेवे दार दरख़्त होंगे , वह लोग उन्हीं चीज़ों को इस्तेमाल करेंगे। बादशाह ने जवाब सुन कर कहा यह बिलकुल ग़लत है। क्योंकि हश्र में लोग मुसिबतों और परेशानियों में मुब्तेला होंगे, उनको खाने पीने का होश कहां होगा ? क़ासिद ने बादशाह का जुम्ला नक़ल कर दिया। हज़रत ने क़ासिद से फ़रमाया कि जाओ और बादशाह से कहो कि तुमने क़ुरआन भी पढ़ा है या नहीं , क़ुरान में यह नहीं है कि जहन्नम के लोग जन्नत वालों से कहेंगे कि हमें पानी और कुछ नेमतें दे दो कि पी और खा लें। उस वक़्त वह जवाब देंगे, कि काफ़िरों पर जन्नत की नेमतें हराम हैं। (पारा ८, रूकू १३) तो जब जहन्नम में भी लोग खाना पीना नहीं भूलेंगे तो हश्रो नश्र में कैसे भूल जायेंगे। जिसमें जहन्नम से कम सख़्तियां होंगी और वह उम्मीदो बीम और जन्नत व दोज़ख़ के दरमियान होंगे। यह सुन कर हश्शाम शरमिन्दा हो गया।

(इरशादे मुफ़ीद,सफ़ा ४०८ व तारीख़े आइम्मा सफ़ा ४१४)

इमाम मोहम्मद बाक़र और हश्शाम की मुश्किल कुशाई

यह और बात है कि आले मोहम्मद(स.) को दीदा व दानिस्ता नज़र अन्दाज़ कर दिया जाय, लेकिन कठिन मौकों पर अहम मराहिल के लिये उनकी मुश्किल कुशाई के बग़ैर कोई चारा कार ही न था।

अल्लामा मजलिसी(अल रहमा) लिखते हैं " हश्शाम बिन अब्दुल मलिक बिन मरवान के ज़माने में शाम और ईराक़ के आने वाले हज्जाज को मक्के के रास्ते में एक मंज़िल पर पानी न मिलने की वजह से सख़्त मुसिबत का सामना हुआ करता था। ग़रीब हज्जाज उस मंज़िल की बे आबी ओर अपने इज़्तेराब ओर बेचैनी का ख़याल करके मंज़िल दो मंज़िल पहले से अपना सामान जमा कर लिया करते थें ताकि उस मंज़िल तक किफ़ायत कर सकें, मगर बाज़ औक़ात यह इन्तेज़ामात भी नाकाफ़ी साबित हो जाते थे, और बहुत से ग़रीब हज्जाज पानी न मिलने की वजह से इस मंज़िल पर जां बहक़ तसलीम हो जाते थे। इस मुसिबत की शिकायत अहले इस्लाम में हमेशाबनी रहती थी। वहां की ज़मीन भी हज्जाज की तमाम ज़मीनों से ज्यादा संगलाख़(बंजर) थीं। वहां ज़मीन से पानी निकालना गोया आसमान से पानी लाना था। आख़िर कार हज्जाज की इस नाक़ाबिले बरदाश्त मुसिबत पर सलतनत ने तवज्जो की और एक बहुत बड़ा कुआं खोदने का बन्दोबसत किया। हश्शाम ने इस कुएं की तामीर का ऐहतमाम खुद अपने ज़िम्मे लिया और अपने मीरे इमारत को मज़दूरों और काम करने वालों की एक बड़ी जमाअत के साथ उस मक़ाम पर भेजा। ग़रज़कि मोहकमए तामीरात का सुल्तानी इस्टाफ़ उस मक़ाम पर पहुंच कर अपने काम में मसरूफ़ हुआ वह अरब की ज़मीन और फिर अरब में भी किस हिस्से की , हिजाज़ की दिन, दिन भर की कड़ी मेहनत के बाद हाथ दो हाथ ज़मीन का खुद जाना भी ग़रीब काम करने वालों के लिये बहुत

ग़नीमत था। खुदा खुदा करके काम करने वाले सतेह आब के क़रीब पहुंचे तो यकायक उसकी जानिब से एक सूराख़ पैदा हो गया। उससे एक निहायत गरम और मुँह झुलसा देने वाली हवा निकली जिसने उन सबको हलाक कर दिया। जो उस वक़्त कुएं के अन्दर थे। कुएं के ऊपर जो दीगर काम करने वाले थे। उन्होंने जब उनकी ज़िन्दगी के आसार मफ़कूद पाए तफ़हुस हाल के लिए चन्द और आदमीयों को कुएं में उतारा वह भी जाकर वापस न आए।

जब तमाम इस्टाफ के दो तिहाई कारकुन ज़ाया हो चुके और उनकी हलाकत की कोई वजह मालूम न हो सकी तो मीरे इमारत ने मजबूर हो कर काम बन्द कर दिया और हश्शाम की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अर्ज परदाज़ हुआ, और सारा वाक़ेया इससे बयान किया। इस ख़बर वहशत असर के सुनते ही तमाम दरबार में सन्नाटा छा गया और हर एक अपनी अपनी इस्तेदाद और हैसियत के मुताबिक़ इसके असबाब और बवाएस ढूंढने लगा। आख़िर कार हश्शाम ने एक तहक़ीक़ाती जमाअत को मुरत्तब करके मौक़े पर भेजा मगर वह भी न काम रही और यह मालूम न कर सकी कि इसमें जाने वाले मर क्यों जाते हैं।

हश्शाम इसी इज़तेराब और परेशानी में था कि हज का ज़माना आ गया,यह दमिश्क़ से चल कर मक्का मोअज़्ज़मा पहुँचा और वहाँ पहुँच कर उसने हर मकतबे ख़्याल के रहनुमाओं को जमा किया और उनके सामने कुऐं वाला वाक़ेया बयान किया और उनकी मुश्किल कुशाई की ख़्वाहिश की।

बादशाह की अर्ज़दाश्त सुन कर सब ख़ामोश हो गए और काफ़ी सोचने के बावजूद किसी नतीजे पर न पहुँच सके। नागाह हज़रत इमाम मोहम्मदे बाक़र (अ.) जो बादशाह की तरफ़ से मदऊ थे आ पहुँचे ,और आपने हालात सुनकर फ़रमाया मैं मौक़ा देखूँगा। चूनाचें आप तशरीफ़ ले गए और वापस आकर आपने फ़रमाया। ऐ बादशाहे क़ौम आदम से जो अहले एहक़ाफ थे जिनका ज़िक्र कुराने मजीद में मौजूद है,यह जगह उन्हीं के मोअज़्ज़ब होने की है यह रेह अक़ीम जो ज़मीन के सातवें तबक़े से निकल रही है यह किसी को भी ज़िन्दा न छोड़े गी। लेहज़ा इस जगह को फ़ौरन बन्द करा दे और फ़लां मुक़ाम पर कुआँ खुदवा। चुनाचें बादशाह ने ऐसा ही किया। आपके इरशाद से लोगों की जानें भी बच गयीं और कुआँ भी तैय्यार हो गया। (हयातुल कुलूब जिल्द २ व मजमउल बहरैन सफा ५७७ व मासिरे बक़र सफ़ा २२) रसूले करीम (स.) फ़रमाते हैं कि इन मुक़ामात से जल्द दूर भागो जो माज़ूब हो चुके हें ताकि कहीं ऐसा न हो कि तुम भी मुतासिर हो जाओ।

(मुक़दमा इब्ने ख़लदून सफ़ा १२५ तबा मिस्र)

अल्लामा रशीदउद्दीन अबू अब्दुल्ला मोहम्मद बिन अली बिन शहर आशोब ने इमाम मोहम्मद बाक़र (अ.) ही जैसा वाक़ेआ अहदे मेहदी अब्बासी में इमाम मूसा काज़िम (अ.) के मुताल्लिक़ लिखा है।

(मुनाक़िब जिल्द ५ सफ़ा ६९)

हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र (अ.) की दमिशक़ में तलबी

अल्लामा मजलिसी और सय्यद इब्ने ताऊस रक़मतराज़ हैं कि हश्शाम बिन अब्दुल मलिक अपने अहदे हुकूमत के अख़री अय्याम में हज्जे बैतुल्लाह के लिए मक्का मोअज़्ज़मा पहुँचा। वहाँ हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र (अ.) और इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.) भी मौजूद थे। एक दिन इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.)ने मजमए आम में एक ख़ुतबा इरशाद फ़रमाया जिसमें और बातों के अलावा यह भी कहा कि हमें रूए ज़मीन पर ख़ुदा के ख़लीफ़ा और उसकी हुज्जत हैं। हमारा दुश्मन जहन्नुम में जाएगा, और हमारा दोस्त नेमाते जन्नत से मुतनइम होगा। इस ख़ुतबे की इत्तिला हश्शाम को दी गई ,वह वहां तो ख़ामोश रहा, लेकिन दमिशक़ पहुंचने के बाद वालीए मदीना को पैग़ाम भेजा कि मोहम्मद बिन अली और जाफ़र बिन मोहम्मद को मेरे पास भेज दो। चुनांचे आप हज़रात दमिश्क़ पहुँचे वहाँ हश्शाम ने आपको तीन रोज़ तक इज़्ने हुज़ूरी नहीं दिया। चौथे रोज़ जब अच्छी तरह दरबार को सजा लिया तो आपको बुलावा भेजा। आप हज़रात जब दाख़िले दरबार हुए तो आपको ज़लील करने के लिए आपसे कहा हमारे तीर अन्दाज़ों की तरह आप भी तीर अन्दाज़ी करें।

हज़रत मोहम्मद बाक़र ने फ़रमाया कि मैं ज़ईफ़ हो गया हूँ मुझे इससे माफ़ रख. उसने ब क़सम कहा यह न मुम्किन है। फिर एक तीर कमान आपको दिलवादी आपने ठीक निशाने पर तीर लगाए, यह देख कर वह हैरान रह गया, इसके बाद इमाम ने फ़रमाया , बादशाह हम मादने रिसालत हैं। हमारा मुक़ाबला किसी अमर में कोई नहीं कर सकता। यह सुन कर हश्शाम को ग़ुस्सा आ गया। वह बोला कि आप लोग बहुत बडे. बड़े वादे करते हैं। आपके दादा अली बिन अबी तालिब ने ग़ैब का दावा किया है। आपने फ़रमाया बादशाह क़ुरआन मजीद में सब कुछ मौजूद है और हज़रत अली (अ.) इमामे मुबीन थे। उन्हें क्या नहीं मालूम था। (जिलाउल अयून)

सक़्क़तुल इस्लाम अल्लामा कुलैनी तहरीर फ़रमाते हैं कि हशाम ने अहले दरबार को हुक्म दिया था कि मैं मोहम्मद इब्ने अली इमाम मोहम्मद बाक़र (अ.) को सरे दरबार ज़लील करूँगा। तुम लोग यह करना कि जब मैं ख़ामोश हो जाऊँ तो उन्हें कलमाते न सज़ा कहना चुनाचें ऐसा ही किया गया।

आख़िर में हज़रत ने फ़रमाया। बादशाह याद रख हम ज़लील करने से ज़लील नहीं हो सकते , ख़ुदा वन्दे आलम ने हमें जो इज़्ज़त दी है,उसमें हम मुन्फरिद हैं। याद रख आक़बत की शाही मुत्तक़ीन के लिए है। यह सुन कर हशाम ने फामर बहा अला अलजिस आपको क़ैद करने का हुक्म दे दिया चुनाचें आप क़ैद कर दिए गए।

क़ैद ख़ाने में दाखिल हाने के बाद आपने क़ैदियों के सामने एक मोजिज़ नुमा

तक़रीर की जिसके नतीजे में क़ैद खाने के अन्दर कोहरामें अज़ीम बरपाहोगया । बिल आखिर क़ैद ख़ाने के दरोग़ा ने हश्शाम से कहा कि अगर मोहम्मद बिन अली ज़्यादह दिनों क़ैद रहे तो तेरी ममलेकत का निज़ाम मुन्क़लिब हो जाएगा । इनकी तक़रीर क़ैद ख़ाने से बाहर भी असर डाल रही है और अवाम में इनके क़ैद होने से बड़ा जोश है। यह सुन कर हश्शाम डर गया और उसने आपकी रेहाई का हुक्म दिया और साथ ही यह भी एलान करा दिया न आपको कोई मदीने पहुँचाने जाए और न रास्ते में आपको कोई खाना पानी दे, चुनांचे आप तीन रोज़ भूखे प्यासे दाख़िले मदीना हुए।

वहाँ पहुँच कर आपने खाने पीने की सई की , लेकिन किसी ने कुछ न दिया। बाज़ारे हशाम के हुक्म से बन्द थे यह हाल देख कर आप एक पहाड़ी पर गए और आपने उस पर खड़े हो कर अज़ाबे इलाही का हवाला दिया। यह सुनकर एक पीर मर्द बाज़ार में खड़ा होकर कहने लगा भईयों ! सुनो , यही वह जगह है जिस जगह हज़रत शुऐब नबी ने खड़े होकर अज़ाबे इलाही की ख़बर दी थी और अज़ीम तरीन अज़ाब नाज़िल हुआ था। मेरी बात मानो और अपने आपको अज़ाब में मुबतिला न करो। यह सुन कर सब लोग हज़रत की ख़िदमत में हाज़िर हो गए और आपके लिए होटलों के दरवाज़े खोल दिए। (उसूल काफ़ी)

अल्लामा मजलिसी लिखते हैं कि इस वाक़ेए के बाद हश्शाम ने वाली मदीना इब्राहीम बिन अब्दुल मलिक को लिखा कि इमाम मोहम्द बाक़र(अ.) को ज़हर से शहीद कर दे। (जलाउल अयून सफ़ा २६२)

किताब अल ख़राएज व अलबहराएज़ में अल्लामा रवन्दी लिखते हैं कि इस वाक़ेए के बाद हशाम बिन अब्दुल मलिक ने ज़ैद बिन हसन के साथ बाहमी साज़िश के ज़रिए इमाम (अ.) को दोबारा दमिश्क़ में तलब करना चाहा लेकिन वालिए मदीना की हमनवाई हासिल न होने की वजह से अपने इरादे से बाज़ आया । उसने तबरूकाते रिसालत (स.) जबरन तलब किए और इमाम (अ.) ने बरवाएते इरसाल फरमा दिए।"

दमिशक़ से रवानगी और एक राहिब का मुस्लमान होना

अल्लामा मजलिसी तहरीर फ़रमाते हैं कि हज़रत इमाम माहम्मद बाक़र(अ.) क़ैद ख़ानए दमिश्क़ से रिहा होकर मदीने को तशरीफ़ लिए जा रहे थे कि नागाह रास्ते में एक मुक़ाम पर मजमए कसीर नज़र आया। आपने तफ़ाहुसे हाल किया तो मालूम हुआ कि नसारा का एक राहिब है जो साल में सिर्फ़ एक बार अपने माअबद से निकलता है। आज इसके निकलने का दिन है। हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र (अ.) इस मजमें में अवाम के साथ जाकर बैठ गए , राहिब जो इन्तेहाई जईफ़ था, मुकर्रेरा वक़्त पर बरामद हुआ। उसने चारों तरफ़ नज़र दौड़ाने के बाद इमाम (अ.) की तरफ़ मुख़ातिब हो कर (१) क्या आप हममें से हैं।

फ़रमाया मैं उम्मते मोहम्मद से हूँ(२) आप उलमा से हैं या जोहला से , फ़रमाया में जाहिल नहीं हूँ (३) आप मुझसे कुछ दरियाफ़्त करने के लिए आऐं हैं फ़रमाया नहीं (४) जबकि आप आलिमों में से हैं क्या मैं आपसे कुछ पूछ सकता हूँ, फ़रमाया ज़रूर पूछिए।

यह सुन कर राहिब ने सवाल किया (१) शबो रोज मैं वह कौन सा वक्त है जिसका शुमार न दिन में हो न रात में हो,फ़रमाया वह सूरज के तुलू से पहले का वक्त है। जिसका शुमार दिन और रात दोनों में नहीं। वह वक़्त जन्नत के अवक़ात में से है और ऐसा मुताबर्रिक है कि इसमं बीमारों को होश आ जाता है। र्दद को सुकून होता है। जो रात भर न सो सके उसे नीद आती है, यह वक़्ते आखरत की तरह रग़बत रखने वालों के लिए ख़ास उल ख़ास है(२) आपका अक़ीदा है कि जन्नत में पेशाब व पाख़ाना की ज़रूरत न होगी क्या, दुनिया में इसकी कोई मिसाल है। फ़रमाया बतने मादर में जो बच्चे परवरिश पाते हैं। इनका फ़ुज़ला ख़ारिज नहीं होता (३) मुसलमानों का अक़ीदा है कि खाने से बेहिश्त का मेवा कम न होगा इसकी यहाँ कोई मिसाल है, फ़रमाया " हाँ " एक चिराग़ से लाखों चिराग़ जलाए जाऐं तब भी पहले चिराग़ की रौशनी में कमी न होगी (४) वह कौन से दो भाई हैं जो एक साथ पैदा हुए और एक साथ मरे लेकिन एक की उमर पचास साल की हुई दुसरे की डेढ़ सौ साल की हुई, फ़रमाया उज़ैर और अज़ीज़ पैग़म्बर हैं। यह दोनों दुनियाँ में एक ही रोज़ पैदा हुये और एक ही रोज़ मरे। पैदाईश के बाद तीस बरस तक साथ रहे। फिर ख़ुदा ने अजीज़ नबी को मार डाला (जिसका ज़िक्र क़ुरान मजीद में मौजूद है) और सौ बरस(१००) के बाद फिर जिन्दा फ़रमाया इसके बाद वह अपने भाई के साथ और जिन्दा रहे और फिर एक रोज़ दोनों ने इन्तेक़ाल किया।

यह सुन कर राहिब अपने मानने वालों की तरफ़ मोतवज्जा हो कर कहने लगा कि जब तक यह शख़्स शाम के हुदू में मौजूद है मैं किसी के सवाल का जवाब न दूँगा। सब को चाहिए कि इसी आलमे ज़माना से सवाल करे इसके बाद वह मुसलमान हो गया।

(जलाल उल अयून सफ़ा २६१ तबा ईरान १३०१ हिजरी)

इमाम मोहम्मद बाक़र (अ.) की शहादत

आप अगरचे अपने इल्मी फ़ैज़ व बरकात की वजह से इस्लाम को बराबर फरोग़ दे रहे थे। लेकिन इसके बावजूद हशाम बिन अब्दुल मलिक ने आपको ज़हर के ज़रिए से शहीद करा दिया और आप बतारीख़ ७, ज़िल्हिज ११४ हिजरी यौमे दोशम्बा मदीना मुनव्वरा में इन्तिक़ाल फ़रमा गए। इस वक़्त आपकी उमर ५७, साल की थी आप जन्नतुल बक़ीह में दफ़न हुए। (कशफ़ुल ग़मा सफ़ा ६३ जलाउल अयून सफ़ा २६४ जनात अलखलूद सफ़ा २६,

दमए साकेबा सफा . ४४६, अनवारूल हुसैनिया सफा . ४८ ,शवाहेदुन नबूअत सफ़ा १८१ रौज़तुल शोहदा सफ़ा ४३४)

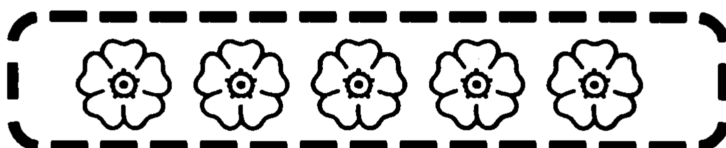
अल्लामा शिबलंजी और **अल्लमा इब्ने हजर मक्की** फ़रमाते हैं "मात मसमूमन काबहू"आप अपने पदर बुर्जुगवार इमाम ज़ैनुल आब्दीन(अ.) ही की तरह ज़हर से शहीद कर दिए गए। (नुरूल अबसार सफ़ा ३१ व सवाके मोहर्रेका सफ़ा १२०) आपकी शहादत हश्शाम के हुक्म से इब्राहीम बिन वालीए मदीना की ज़हर खूरानी के जरिए वाके़ हुई है। एक रवाएत में है कि ख़लीफ़ए वक़्त हश्शाम बिन अब्दुल मलिक की मुरसला ज़हर आलूद ज़ीन के ज़रिए से वाके़ हुई थी। (जनात अल खुलूद व दमए साकेबा जिल्द २ सफ़ा ४७८)

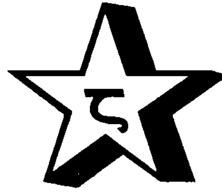
शहादत से क़ब्ल आपने हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.) से बहुत सी चीजों के मुताल्लिक़ वसीअत फ़रमाई और कहा कि बेटा मेरे कानों में मेरे वालिद माजिद की आवाज़ आ रही है। वह मुझे जल्द बुला रहे हैं। (नुरूल अबसार सफ़ा१३१)

आपने गुस्लो कफ़न के मुतल्कि ख़ास तौर से हिदाएत की क्योंकि (इमाम राजिज़ इमाम नशवेद, इमाम को इमाम ही गुस्ल दे सकता है। (शवाहेदुन नबूवत सफ़ा १८१ अल्लामा मजलिसी फ़रमाते हैं कि आपने अपनी वसीअतों में यह भी कहा कि ८०० दिरहम मेरी अज़ादारी और मेरे मातम पर सर्फ़ करना और ऐसा इन्तेज़ाम करना कि दस साल तक मिना में ब ज़मानए हज मेरी मज़लूमियत का मातम किया जाए। (जलाअल अयून सफ़ा २६४) उलमा का बयान है कि वसीयतों में यह भी था कि मेरे बन्दे कफ़न कब्र में खोल देना और मेरी क़ब्र चार उंगल से ज़्यादा ऊँची न करना। (जनात अल ख़ुलूद सफ़ा २७)

अज़वाज व औलाद :- आपकी चार बीबीयाँ थीं और उन्हीं से औलाद हुई। **उम्मे फ़रवा, उम्मे हकीम, लैला** और एक बीबी **उम्मे फ़रवा क़ासिम बिन मोहम्मद बिन अबी बक्र** जिन से हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.) और अब्दुल्ला अफ़तह पैदा हुए और उम्मे हकीम बिनते असद बिन मोग़ैरा शक़फी से इब्रहीम व अबदुल्ला और लैला से अली और ज़ैनब पैदा हुये और चौथी बीबी से उम्मे सलमा मोता वल्लिद हुईं।
(इरशाद मुफ़ीद सफ़ा २६४ मनाक़िब जिल्द ५ सफ़ा १६ व नुरूल अबसार सफ़ा १३१)

अल्लामा मोहम्मद बाक़र बहभानी, अल्लामा मोहम्मद रज़ा आल काशेफ़ुल ग़ता, और अल्लामा हुसैन वाएज़ काशफ़ी लिखते हैं कि **हज़रत मोहम्मद बाक़र** (अ.) की नस्ल सिर्फ़ **इमाम जाफ़र सादिक़** (अ.) से बढ़ी है उनके अलावा किसी की ओलादें ज़िन्दा और बाक़ी नहीं रहीं । (दमए साकेबा जिल्द २, सफ़ा ४७६ अनवारूल हुसैनिया जिल्द २, सफ़ा ४८, रौज़तुल शोहदा सफ़ा ४३४ तबा लखनऊ १२८५ ई०)





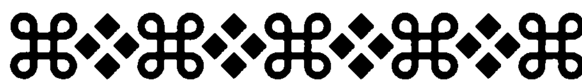
अबु अब्दुल्लाह

हज़रत

इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.)

इसी इजमाल की हैं शरह , गोया जाफ़रे सादिक़
लक़ब जिसका किताब अल्लाह में ख़त्मे नबूवत है
बनाये सबसे पहले , फ़िक़्हा के आईन मौला ने
इन्हीं के दम से क़ायम आज इस्लामी शरीअत है

साबिर थरयानी " कराची "



بسم الله الرّحمٰن الرّحيم

भाग-८

हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.)

सादिके आले मोहम्मद , वह इमामे सादस
ज़ेबे सर जिसके इमामत का है मोरूसी ताज
है यह मौलूदे जिगर बन्द , मोहम्मद बाक़र
ख़ानए हस्ती, बिदअत को करे ताराज

हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.),पैग़म्बरे इस्लाम हज़रत मोहमद मुस्तफ़ा (स.) के छठे जानशीन और सिलसिलाए अस्मत की आठवीं कड़ी हैं। आपके वालिद माजिद हज़रत मोहम्मद बाक़र (अ.) थे। और वालदा माजदा जनाब उम्मे फ़रवा बिनते क़ासिम बिन मोहम्मद बिन अबी बक्र थीं। आप अपने आबाओ अजदाद की तरह इमाम मन्सूस , मासूम, आलिमें ज़माना, और अफज़ले काएनात थे।

अल्लामा हजर लिखते हैं कि हज़रत इमाम जाफरे सादिक़ (अ.) अफज़ल व अकमल थे। इसी बिना पर आपने अपने बाप के ख़लीफा और वसी क़रा पाये (सवाएके मोहर्रेक़ा सफ़ा १२०) **अल्लामा इब्ने ख़ल्क़ान** तहरीर फ़रमाते हैं कि आप सादात अहलेहबैत से थे व फ़ज़्लह “ अश्हरान यज़कर ” इनकी अफज़ललियत व करम मोहताज बयान नहीं (दफ़ायात अल अयान जिल्द १ सफ़ा १०५)

इमाम फ़खरूद्दीन राज़ी की तफ़सीर कबीर जिल्द ५ सफ़ा ४२६ व जिल्द ६ सफा ७८३ तबा,मिस्र बहवालए आयए ततहीर और आरिफ़ समदानी अली हमदानी की मुवदतुल क़ुर्बा सफ़ा ३४ तबा बम्बई १३१० ई०और शाह अब्दुल अज़ीज़ की अश्रया ताअन१३ सफ़ा ४३६ तबा लखनऊ १३०६ की इबारत से मुस्तफाद होता है। कि आप भी अपने आबाओ अजद्दा की तरह मासूम और महफ़ूज़ थी। (वरासतु लबीब सफ़ा २००) में है कि आपने इब्तिदाए उम्र से आख़िर तक कोई गुनाह नहीं किया और इसी को महफ़ूज़ कहे हैं। इमाम

जाफ़रे सादिक़ (अ.) खुद इरशाद फ़रमाते हैं (नहन क़ौम मासूमून),हम हैं वही खुदा के तरजुमान, हम हैं इल्मे खुदा के ख़ज़ीनादार और हम ही लोग मासूम हैं। खुदा ने हमारी इताअत का हुक्म दिया है और हमारी मासीयत से दुनिया वालों को रोका है।

(आलाम अलवर सफ़ा १५६)

अल्लामा इब्ने तलह शाफई लिखते हैं कि आप अहले बैते और रिसालत की अज़ीम तरीन फर्रद थे और आप मुख़्तलिफ क़िस्म के उलूम से भर पूर थे। आप ही से क़ुरान मजीद के मानी के चश्में फूटते रहे हैं। आपके बहरे इल्म से उलूम के मोती रोले जाते हैं। आप ही से इल्मी अजाएब व कमालात का ज़हूर व इन्केशाफ़ हुआ।

(मतालेबुल सुवेल सफ़ा १७३)

अल्लामा इब्ने हजर लिखते हैं कि उलमा ने आपसे इस दर्जा नक़ले उलूम किया जिसकी कोइ हद नही। आपका आवाज़े इल्म तमाम अमसाद दयार में फैला हुआ था

(सवाएक़े मोहर्रेक़ा सफ़ा १२०)

मुल्ला जामी तहरीर फ़रमाते हैं कि आपके उलूम का अहाता व फ़हमो इदराक से बुलन्द है। (शवाहेदुन नबूवत सफ़ा १८०)

अल्लामा मिस्र शेख़ मोहम्मद ख़ज़्री बक लिखते हैं कि इनसे इमाम मालिक बिन अन्स, इमाम अबू हनीफ़ा और अकसर उलमाए मदीना ने रवाएत की है। मगर इमाम बुख़ारी ,सहाए सित्ता में सब से ज़्यादा मुताबर्रिक समझी जाती है। वाज़े हो कि दीगर सहाह में आले मोहम्मद (अ.) से भी रवायत ली गई हैं। ज़रूरत थी कि इन सहाह का बुखारी से बुलन्द दर्जा दिया जाता मगर ऐसा नहीं हुआ।

बरीं अक़्ल व दानिश बबायदग्रीस्त

आपकी विलादत ब साआदत

आप बतारीख़ १७, रबीउल अव्वल ८३, हिजरी मुताबिक़ ७०२ ई० यौम दो श्मबा मदीनए मुनव्वरा में पैदा हुए (इरशाद मुफ़ीद फ़ारसी सफ़ा ४१३ अलआम अलनरा सफा १५६जामें अब्बासी सफा ६० वग़ैराह) आपकी विलादत की तारीख़ को खुदा वन्दे आलम ने बड़ी इज़्ज़त दे रखी है। अहादीस में है कि इस तारीख़ को रोज़ा रखना एक साल के रोज़े के बराबर है। विलादत के बाद एक दिन हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र (अ.) ने फरमाया कि मेरा यह फरज़न्दइन चन्द मखसूस अफ़राद में से है जिनकी वजह से खुदा ने बन्दों पर एहसान फ़रमाया और यही मेरे बाद मेरा जानशीन होगा। (जन्नात अल खुलूद सफ़ा २७)

अल्लामा मजलिसी, लिखते हैं कि जब आप बतने मादर में थे। तब कलाम

फ़रमाते थे विलादत के बाद आपने कलमए शहादतैन ज़बान पर जारी फ़रमाया आप भी नाफ़ बुरीदा और ख़तना शुदा पैदा हुए हैं। (जिला अल अयून सफ़ा २६५) आप तमाम नबूवतों के खुलासा थे।

इस्मे गिरामी, कुन्नियत, अलक़ाब

आपका इस्में गिरामी जाफ़र, आपकी कुन्नियत अबू अब्दुल्लाह अबू इस्माईल और आपके अलक़ाब, सादिक़, साबिर, फ़ाज़िल, ताहिर वग़ैरा हैं। अल्लामा मजलिसी रक़म तराज़ हैं कि आँहज़रत ने अपनी ज़ाहिरी ज़िन्दगी में हज़रत जाफर बिन मोहम्मद को लक़ब सादिक़ से मौसूम व मुलक़्क़ब फ़रमाया था और इसकी वजह बज़ाहिर यह थी कि अहले असमान के नज़दीक आपका लक़ब पहले ही से " **सादिक़** " था।

(जिला अल अयून सफ़ा २६४)

अल्लामा इब्ने ख़ल्कान का कहना है कि सिदक़ मक़ाल की वजह से आपके नामें नामी का जुज़ो "सादिक़" क़रार पाया है। (वफ़यात उल अयान जिल्द १, सफ़ा १०५)

" **जाफ़र** " के मुताल्लिक़ उलमा का बयान है किजन्नत में जाफर नामी एक शीरी नहर है इसी की मुनासेबत से आपका यह लक़ब रखा गया है। चूँकि आपका फ़ैज़े आम नहरे जारी की तरह था। इसी लिए इस लक़ब से मुलक़्क़ब हुए।

(अरहज्जुल मतालिब सफ़ा ३६१ बहवाला तज़किरातुल उल ख़्वास उल उम्मता)

इमाम अहले सुन्नत अल्लामा वहीदुज़्ज़मां हैदराबादी तहरीर फ़रमाते हैं,जाफ़र छोटी नहर या बड़ी वासेए(कुशादा) इमाम जाफ़र सादिक़, मशहूर इमाम हैं। बारह इमामों में से और बड़े सुक़्क़ा और फ़क़ीह और हाफ़िज़ थे इमामे मालिक और इमामे अबू हनीफ़ा के शेख़(हदीस) हैं और इमाम बुख़ारी को मालूम नहीं क्या शुबहा हो गया कि वह अपनी सही में इनसे रवाएत नहीं करते और यहया बिन सईद क़तान ने बड़ी बेअदबी की है, जो कहते है "फ़ी मनहू शैइनव मजालिद अहबा इला मिन्हा" मेरे दिल में इमाम जाफर सादिक़ की तरफ से खलिश है। मैं इनसे बेहतर मजालिद को समझता हूँ। हालाँकि मजालिद को इमाम साहब के सामने क्या रूतबा है ! ऐसी ही बातों की वजह से अहले सुन्नत बदनाम होते हैं कि उनको आइम्मा अहले बैत से मोहब्बत और ऐतिकाद नहीं। अल्लाह ताला इमाम बुख़ारी पर रहम करे कि मरवान और इमरान बिन ख़्तान और कई ख़्वारिज से तो उन्होंने रवाएत की और जाफ़रे सादिक़ से जो इब्ने रसूल (स.)अल्लाह हैं इनकी रवाएत में शुबहा करते हैं। (अनवारूल अलख्ता पारा सफ़ा ४७ तबा हैदराबाद दकन)**अल्लामा इब्ने हजर मक्की अल्लामा शिबलजी** रक़्मतराज़ हैं कि अयाने अइम्मा में से एक जमाअत मिसल यहया बिन सईद इब्ने हजर , इमाम मालिक, इमाम शैफ़ान सूरी ,सुफ़यान बिन ऐनिया,अबू हनीफ़ा ,अय्यूब सजसतानी ने आपसे हदीस अख्ज़ की, अबू हातिम का क़ौल है कि इमाम जाफ़रे सादिक(अ.) ऐसे सुक़्क़ा

हैं (लायस अल अन्हा मसलह) कि आप ऐसे शख़्सों की निस्बत कुछ तहक़ीक़ और इसतेफ़सार या तफहुस की ज़रूरत ही नहीं। आप रियासत की तलब से बे नियाज़ थे और हमेशा इबादत गुज़ारी में बसर करते रहे, उमर इब्ने मक़दाम का कहना है कि जब मैं इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.) को देखता हूँ तो मुझे माअन ख़्याल होता है कि यह जौहरे रिसालत (स.) की असल बुनियाद हैं। (सवाएक़े मोहर्रेक़ा सफ़ा १२० नुरूल अबसार १३१ हुलयतुल अबरार, तारीख़ आईम्मा सफ़ा ४३३)

बादशाहाने वक़्त :- आपकी विलादत ८३ हिजरी में हुई है इस वक़्त अब्दुल मलिक बिन मरवान बादशाहे वक़्त था। फिर वलीद सुलेमान उमर बिन अब्दुल यज़ीद बिन अब्दुल मलिक, यज़ीद अल नाक़िस, इब्राहीम इब्ने वलीद, और मरवान अल हेमार, अल्ल तरतीब ख़लीफ़ा मुक़र्रर हुए। मरवान अलहेमार के बाद सलतनते बनी उम्मय्या का चिराग़ गुल हो गया और बनी अब्बास का पहला बादशाह अबुल अब्बास, सफ़ाह और दूसरा मन्सूर दवानक़ी हुआ है। मुलाहेज़ा हो। (अलाम उल वरा) तारीख़ इब्ने अलवरी व तारीख़ अइम्मा सफ़ा ३३६) इसी मन्सूर ने अपनी हुकूत के दो साल गुज़रने के बाद इमाम जाफ़र सादिक (अ.) को ज़हर से शहीद कर दिया। (अनवारूल हुसैनिया जिल्द सफ़ा ५०)

अब्दुल मलिक बिन मरवान के अहद में आपका एक मनाज़िरा

हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़(अ.) ने बे शुमार इल्मी मनाजिरे फरमाए हैं, आपने दहिरयों , क़दरियों काफ़िर और यहूदी व नसारा को हमेंशा शिकस्त फ़ाश दी है। किसी एक मनाज़िरे में भी आप पर कोई ग़लबा हासिल न कर सका। अहदे अब्दुल मलिक इब्ने मरवान का ज़िक्र है कि एक क़दरिया मज़हब का मनाज़िर इसके दरबार में आकर उलमा से मनाज़िरे का ख़्वाहिश मन्द हुआ। बादशाह ने हसबे आदत अपने उलमा को तलब किया और उनसे कहा कि इस क़दरिये मनाज़िर से मनाज़िरा करो उलमा ने उससे काफी ज़ोर अज़माई की मगर वह मैदाने मनाज़िरे का खिलाड़ी इनसे न हार सका और तमाम उलमा आजिज़ आगए। इस्लाम की शिकस्त होते हुए देख कर अब्दुल मलिक इब्ने मरवान ने फ़ौरन एक ख़त हज़रत इमाम मोहम्मदे बाक़र (अ.) की ख़िदमत में मदीना रवाना कर दिया और उसमें ताकीद की कि आप ज़रूर तशरीफ़ लायें हज़रत मोहम्मद बाक़र(अ.) की ख़िदमत में जब इसका ख़त पहुँचा तो आपने अपने फ़रज़न्द हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.) से फ़रमाया कि बेटा मैं ज़ईफ हो चुका हो तुम मनाज़ेरे के लिए शाम चले जाओ। हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.) अपने पदरे बुर्जुगवार के हसब उल हुक्म मदीन से रवाना हो कर शाम पहुँच गए। अब्दुल मलिक इब्ने मरवान ने जब इमाम मोहमद बाक़र(अ.) के बजाऐ इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.) को देखा तो कहने लगा कि आप अभी कमसिन हैं और वह बड़ा पुराना मनाज़िर है, हो सकता है कि आप भी और उलमा की तरह शिकस्त खांए इस लिए मुनासिब नहीं कि

मजालिस मनाज़िरा फिर मुन्अकिद की जाए। हज़रत ने फ़रमाया, बादशाह तू घबरा नहीं। अगर खुदा ने चाहा तो मैं सिर्फ़ चन्द मिनट में मनाज़िरा ख़त्म कर दूंगा। आपके इरशाद की ताईद दरबारियों ने भी की और मौक़ए मनाज़िरे पर फ़रीक़ैन आ गए। चूँकि क़दरियों का एतेक़ाद है कि बन्दा ही सब कुछ है। खुदा को बन्दों के मामले में कोई दख़ल नहीं है, और न खुदा कुछ कर सकता है। यानी खुदा के हुक्म और क़ज़ा व क़द्र व इरादों को बन्दों के किसी अमर में दख़्ल नहीं। लेहाज़ा हज़रत इसकी पहल करने की ख़्वाहिश पर फ़रमाया कि मैं तुमसे सिर्फ़ एक बात कहना चाहता हूँ और वह यह है कि तुम " सूरये हम्द पढ़ो " उसने पढ़ना शुरू किया। जब वह " इय्या का नाब्दो व इयाका नस्तेईन " पर पहुँचा, जिसका तरजुमा यह है। कि मैं सिर्फ़ तेरी इबादत करता हूँ और बस तुझी से मदद चाहता हूँ। तो आपने फ़रमाया , ठहर जाओ, और मुझे इसका जवाब दो कि जब खुदा को तुम्हारे एतेक़ाद के मुताबिक़ तुम्हारे किसी मामले में दख़्ल देने का हक़ नहीं तो फिर तुम उससे मदद क्यों मांगते हो। यह सुन कर वह ख़ामोश हो गया, और कोई जवाब न दे सका। बिल आख़िर मजलिसे मनाज़ेरा बरख़्वास्त हो गई और बादशाह बेहद खुश हुआ।

(तफ़सीरे बुरहान जिल्द १, सफ़ा ३३)

अबु शाकिर देसानी का जवाब :- अबु शाकिर देसानी जो ला मज़हब था। हज़रत से कहने लगा कि क्या आप खुदा का ताअर्रूफ़ करा सकते हैं और उसकी तरफ़ मेरी रहबरी फ़रमा सकते हैं। आपने एक ताऊस का अन्डा हाथ में लेकर फ़रमाया देखो इसकी बाहरी बनावट पर ग़ौर करो, और अन्दर की बहती हुई ज़रदी और सफ़ैदी को बहुत ग़ौर से देखो और उसपर तवज्जो दो कि इसमें रंग बिरंग के तायर (पक्षी) क्योंकर पैदा हो जाते हैं। क्या तुम्हारी अक़्ले सलीम इसको तस्लीम नहीं करती कि इस अंडे को अछूते अन्दाज़ में बनाने वाला और उससे पैदा करने वाला कोई है। यह सुन कर वह ख़ामोश हो गया, और दहरियत से बाज़ आया। इसी देसानी का ज़िक्र है कि उसने एक दफ़ा आपके सहाबी हश्शाम बिन हकम के ज़रिये से सवाल किया कि क्या यह मुमकिन है ? कि खुदा सारी दुनिया को एक अंडे में समो दे और अंडा बढ़े न दुनिया घटे। आपने फ़रमाया बेशक वह हर चीज़ पर क़ादिर है। उसने कहा कोई मिसाल ? फ़रमाया मिसाल के लिये आंख की छोटी पुतली काफ़ी है। इसमें सारी दुनिया समा जाती है। न पुतली बढ़ती है न दुनिया घटती है।

(उसूले काफ़ी, सफ़ा ४३३ जामए उल अख़्बार)

इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.) और हकीम इब्ने अयाश कल्बी

हश्शाम बिन अब्दुल मलिक बिन मरवान के अहदे हयात का एक वाक़ेया है कि हज़रत इमाम ज़ाफ़र सादिक़ (अ.) की ख़िदमत में एक शख़्स ने हाज़िर हो कर अर्ज़ किया

कि हकीम बिन अयाश कल्बी आप लोगों की हजो किया करता है। हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़(अ.) ने फ़रमाया कि अगर तुझको उसका कुछ कलाम याद हो तो बयान कर। उसने दो शेर सुनाये। जिसका हासिल यह है कि हमने ज़ैद को शाख़े दरख़्ते ख़ुरमा पर सूली दे दी। हालांकि हमने नहीं देखा कोई मेहंदी दार पर चढ़ाया गया हो और तुमने अपनी बेवक़ूफ़ी से अली(अ.) को उस्मान के साथ क़यास कर लिया। हालांकि अली(अ.) से उस्मान बेहतर और पाकीज़ा थे। यह सुन कर इमाम जाफ़रे सादिक़(अ.) ने दुआ की बारे इलाहा अगर यह हकीम कल्बी झूठा है तो इस पर अपनी मख़लूक़ में से किसी दरिन्दे को मुसल्लत फ़रमा। चुनांचे उनकी दुआ कुबूल हुई और हकिम कल्बी को राह में शेर ने हलाक कर दिया।

(असाबा इब्ने हजर, असक़लानी जिल्द २, सफ़ा ८०)

मुल्ला जामी तहरीर करते हैं कि जब हकीम कल्बी के हलाक होने की ख़बर इमाम जाफ़रे सादिक़(अ.) को पहुंची तो उन्होंने सजदे में जाकर कहा कि उस ख़ुदाए बरतर का शुकरिया है कि जिसने हमसे जो वायदा फ़रमाया उसे पूरा किया।

(शवाहेदुन नबूवत, सवाएक़े मोहर्रेक़ा, सफ़ा १२१ व नूरूल अबसार, सफ़ा १४७)

११३, हिजरी में इमाम जाफ़रे सादिक़(अ.) का हज

अल्लामा इब्ने हजर मक्की लिखते हैं कि आपने ११३ हिजरी में हज किया और वहां ख़ुदा से दुआ की, ख़ुदा ने बिला फ़स्ल अंगूर और दो बेहतरीन रिदायें भिजवाईं। आपने अंगूर ख़ुद भी खाया और लोगों को भी खिलाया और रिदायें एक साएल को दे दीं।

इस वाक़िये की मुख़्तसर अल्फ़ाज़ में तफ़सील यह है कि बअस बिन सअद उसी सन् में हज के लिये गये। वह नमाज़े अस्र पढ़ कर एक दिन कोहे अबू क़बीस पर गये, वहां पहुंच कर देखा कि एक निहायत मुक़द्दस शख़्स मशग़ूले नमाज़ है। फिर नमाज़ के बाद वह सजदे में गया और या रब या रब कह कर ख़ामोश हो गया। फिर या हय्यो, या हय्यो कहा और चुप हो गया। फिर या अर रहमानिर रहीम कह कर चुप हो गया। फिर बोला ख़ुदा मुझे अंगूर चाहिये और मेरी रिदा बोसीदा हो गई है, दो रिदाएं चाहिये हैं। रावी हदीसे बाअस कहता है कि यह अल्फ़ाज़ अभी तमाम न होने पाये थे कि एक ताज़ा अंगूरों से भरी हुई ज़म्बील (बहुत बड़ा टोकरा) आ मौजूद हुई और उस पर दो बेहतरीन चादरें रखी हुई थीं। उस आबिद ने जब अंगूर खाना चाहा तो मैंने अर्ज़ की हुज़ूर मैं आमीन कह रहा था। मुझे भी खिलाइये। उन्होंने हुक्म दिया, मैने खाना शुरू किया। ख़ुदा की क़सम ऐसे अंगूर सारी उम्र ख़्वाब में भी नज़र न आये थे। फिर आपने एक चादर मुझे दी। मैंने कहा मुझे ज़ुरूरत नहीं है। उसके बाद आपने एक चादर पहन ली और एक ओढ़ ली, फिर पहाड़ से उतर कर मक़ामे सई की तरफ़ गये। मैं उनके साथ था। रास्ते में एक सायल ने कहा, मौला मुझे चादर दे

दीजिये, ख़ुदा आपको जन्नत के लिबास से आरास्ता करेगा। आपने फ़ौरन दोनों चादरें उसके हवाले कर दीं। मैंने उस सायल से पूछा यह कौन हैं ? उसने कहा इमामे ज़माना हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.) यह सुन कर मैं उनके पीछे दौड़ा कि उनसे मिल कर कुछ इस्तेफ़ादा करूं। लेकिन फिर वह मुझे न मिल सके।

(सवाएके़ मोहर्रेक़ा, सफ़ा १२१ व कशफ़ुल गम्मा सफ़ा ६६, मतालेबुल सुवेल सफ़ा २७७)

वलीद बिन यज़ीद और आले मोहम्मद (स.)

हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.) के वालिदे माजिद **हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र**(अ.) को सन् ११४ में शहीद करने के बाद हश्शाम बिन अब्दुल मलिक बिन मरवान १२५, हिजरी में वासिले जहन्नम हुआ। उसके मरने के बाद वलीद बिन यज़ीद बिन अब्दुल मलिक बिन मरवान ख़लीफ़ए वक़्त बनाया गया। यह ख़लीफ़ा ऊबाश, इख़्लाक़ी औसाफ़ से कोसों दूर ,बेशर्म, मुन्हियात का मुरतकिब, निहायत फ़ासिक़ो फ़ाजिर और अय्याश था। मय नोशी और लवातत में ख़ास शोहरत रखता था। निहायत जब्बार और कीना वर, जिस हांडी में खाता उसी में सूराख़ करता यह अपने बाप की कनीज़ों को भी इस्तेमाल किया करता था। एक दिन उसकी जमीला लड़की एक ख़ादेमा के पास बैठी थी उसने उसे पकड़ लिया और उसकी बुकारत (इज़्ज़त लूटना) ज़ायल कर दी। ख़ादेमा ने कहा कि यह तो मजूस का काम है। उसने जवाब दिया कि मलामत का ख़याल करने वाले मग़मूम मर जाते हैं।

एक दिन हज के ज़माने में यह ख़ानए काबा की छत पर मय नोशी के लिये भी गया था। तारीख़ का यह मशहूर वाक़ेया है कि एक दिन उसने क़ुरआने मजीद से फ़ाल खोली। उसमें आयत " ख़ाबा कल जब्बार अनीद " निकला यह देख कर उसने गुस्से में क़ुरआने मजीद को फेंक दिया। फिर उसे टांग कर तीरों से टुकड़े टुकड़े कर डाला और कहा ऐ क़ुरआन! जब ख़ुदा के पास जाना तो कह देना " मज़क़नी अल वलीद " मुझे वलीद ने पारा, पारा किया है।

एक दिन वलीद अपनी एक कनीज़ के साथ बैठा शराब पी रहा था। इतने में अज़ान की आवाज़ कान में आई। यह फ़ौरन मुबाशेरत (सम्भोग) में मशग़ूल हुआ। जब लोगों ने नमाज़ पढ़ाने के लिये कहा तो उस कनीज़ को अपना लिबास पहना कर शराब के नशे और जनाबत की हालत में नमाज़ पढ़ाने के लिये मस्जिद में भेज दिया और उसने नमाज़ पढ़ा दी। (तारीख़े ख़मीस, हबीब उस सैर, हज्जुल करामा, सिद्दीक़ हसन) यह ज़ाहिर है कि जो दीनो ईमान, नमाज़ व मस्जिद व क़ुराआने मजीद का एहतेराम न करता हो वह आले मोहम्म्द (स.) का क्या एहतेराम कर सकता है। यही वजह है कि उसने अपने मुख़्तसर अहद में उनके साथ कोई रियायत नहीं की। तारीख़ में है कि हज़रत ज़ैद शहीद(र.) के बेटे जनाबे

यहीया को इसी के अहद मे बुरी तरह शहीद किया गया, और उनका सर वलीद के दरबार में लाया गया और जिस्म खुरासान में सूली पर लटकाया गया।

(तारीख़े इस्लाम जिल्द १, सफ़ा ४८)

हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.) और जनाबे अबू हनीफ़ा नोमान बिन साबित कूफ़ी

फ़रज़न्दे रसूल(स.) हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक (अ.) जो आलिमे इल्मे लदुन्नी थे। आपके फ़ैज़े सोहबत से अरबाबे अक्ल ने उलूम हासिल किये। आपकी ही एक कनीज़ " हुसैनिया " का ज़िक्र ज़बान ज़द ख़्वासो अवाम है कि उसने बादशाहे वक़्त के दरबार में चालीस उलेमाए इसलाम को चुप करके दम बा खुद कर दिया था। आप ही के फ़ैज़े सोहबत से जनाबे नोमान बिन साबित ने इल्मी मदारिज हासिल किये थे, और आपके लिये मनक़बते अज़ीमा है। (हदाएक़ उल हनफ़िया सफ़ा १८, तबा लखनऊ, १६०६ ई०)

जनाब नोमान बिन साबित ८० हिजरी में बा मक़ाम कूफ़ा पैदा हुय। आपकी कुन्नियत अबू हनीफ़ा थी। आप अजमी नस्ल के थे। आपको हारून रशीद अब्बसी के अहद में काफ़ी उरूज हासिल हुआ।

(तारीख़े सग़ीर बुख़ारी, सन् १७४ व सीरतुन नोमान, शिब्ली, सफ़ा १७)

आपको हश्शाम बिन अब्दुल मलिक बिन मरवानके ज़माने में " इमामे आज़म का ख़िताब मिला। जब कि उन्होंने १२३ हिजरी में जनाबे ज़ैद शहीद की बैयत की और हुकूमत की मुख़ालेफ़त करके मोआफ़ेक़त की थी।

किताब मुस्तफ़ा शरह मौता में है कि अकाबिर मोहद्देसीन मिस्ल अहमद बुख़ारी, इमाम मुस्लिम, तिरमिज़ी, निसाई, अबू दाऊद, इब्ने माजा ने आपकी रवायत पर भरोसा नहीं किया। आपकी वफ़ात १५० हिजरी में हुई है।

(तारीख़े सग़ीर सफ़ा १७४)

इसी तारीख़े सग़ीर में बा रवायत नईम बिन हमाद, मरवी है कि मैं सुफ़ियान सौरी की ख़िदमत में हाज़िर था, कि नागहां अबू हनीफ़ा साहब की वफ़ात की ख़बर सुनी गई, तो सुफ़ियान ने खुदा का शुक्र अदा किया ओर कहा कि यह शख़्स इस्लाम को तोड़ कर चकना चूर करता था। " मा वल्द फ़िल इस्लाम अश्शाम मिन्हा " इस्लाम में इस्से ज़्यादा शूम कोई पैदा नहीं हुआ।

इमाम अबू हनीफ़ा की शर्गिदी का मसला

यह तारीख़ी मुसल्लेमात से है कि जनाबे अबू हनीफ़ा हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र(अ.) और इमाम जाफ़रे सादिक़(अ.) के शागिर्द थे। लेकिन अल्लामा तक़ीउद्दीन इब्ने तैमिया ने हम असर होने की वजह से इसमें मुन्केराना शुब्हा ज़ाहिर किया है। इनके शुब्हे को शम्सुल उलेमा अल्लामा शिब्ली नोमानी ने रद करते हुये तहरीर फ़रमाया है। " अबू हनीफ़ा एक मुद्दत तक इस्तेफ़ादे की ग़र्ज़ से इमाम मोहम्मद बाक़र(अ.) की ख़िदमत में हाज़िर रहे और फ़िक़ा व हदीस के मुताअल्लिक़ बहुत बड़ा ज़ख़ीरा हज़रत मम्दूह का फ़ैज़े सोहबत था। इमाम साहब ने उनके फ़रज़न्दे रशीद हज़रत जाफ़रे सादिक़(अ.) की फ़ैज़े सोहबत से भी कुछ फ़ायदा उठाया, जिसका ज़िक्र उमूमन तारीख़ों में पाया जाता है। इब्ने तैमिया ने इससे इन्कार किया है, और उसकी वजह यह ख़याल की है कि इमाम अबू हनीफ़ा इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.) के माअसर और हम असर थे। इसलिये उनकी शागिरदी क्योंकर इख़्तेयार करते। लेकिन इब्ने तैमीया की गुस्ताख़ी और ख़ीरा चश्मी है। इमाम अबू हनीफ़ा लाख मुजतहिद और फ़क़ीह हों लेकिन फ़ज़लो कमाल में उनको हज़रत जाफ़रे सादिक़(अ.) से क्या निसबत। हदीस व फ़िक़ा बल्कि तमाम मज़हबी उलूमे अहले बैत(अ.) के घर से निककले हैं। " वा साहेबुल बैत अदरा बेमा फ़ीहा " घर वाले ही घर की तमाम चीज़ों से वाक़िफ़ होते हैं।

(सीरतुन नोमान सफ़ा ४५, तबआ आगरा)

जनाबे अबू हनीफ़ा का इम्तेहान :-तवारीख़ में है कि हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़(अ.) की ख़िदमत में अकसर हज़रत अबू हनीफ़ा नोमान बिन साबित हाज़िर हुआ करते थे, और यह होता रहता था कि आप उनका इम्तेहान ले कर उन्हें फ़ायदा पहुंचा दिया करते थे। एक दफ़ा का ज़िक्र है कि जनाबे अबू हनीफ़ा हज़रत की ख़िदमत में हाज़िर हुये, तो आपने पूछा कि ऐ अबू हनीफ़ा मैंने सुना है कि तुम मसाएले दीनिया में " क़यास " से काम लिया करते हो। अर्ज़ की जी हां है तो ऐसा ही । आपने फ़रमाया कि ऐसा न किया करो क्योंकि " अव्वल मन क़यास इब्लीस " दीन में क़यास करना इब्लीस का काम है और उसी ने क़यास की पहल की है।

एक दफ़ा आपने पूछा कि ऐ अबू हनीफ़ा यह बताओ कि खुदा वन्दे आलम ने आखों में नमकीनी , कानों में तल्ख़ी ,नाक के नथनों में रूतूबत और लबों पर शीरीनी क्यों पैदा की ? उन्होंने बहुत ग़ौरो ख़ौज़ के बाद कहा, या हज़रत इसका इल्म मुझे नहीं है, आपने फ़रमाया अच्छा मुझसे सुनो, आखें चरबी का ढेला हैं। अगर उन्में शूरियत और नमकीनी न होती तो पिघल जातीं, कानों में तल्ख़ी इस लिये है कि कीड़े मकोड़े न घुस जायें। नाक में रूतूबत इस लिये है कि सांस की आमदो रफ़्त में सहूलियत हो और ख़ुशबू और बदबू महसूस

हो, लबों में शीरीनी इस लिये है कि खाने पीने में लज़्ज़त आये।

फिर आपने पूछा वह कौन सा कलमा है जिसका पहला हिस्सा कुफ्र और दूसरा ईमान है। उन्होंने अर्ज़ की मुझे इल्म नहीं। आपने फ़रमाया कि वह वही कलमा है जो तुम रात में पढ़ा करते हो सुनो, ला इलाहा कुफ्र और इल्लल्लाह ईमान है।

फिर आपने पूछा कि औरत कमज़ोर है या मर्द, नीज़ यह कि हालते हमल में औरत को खूने हैज़ क्यों नहीं आता। उन्होंने कहा कि यह तो मालूम है कि औरत कमज़ोर है लेकिन यह नहीं मालूम कि इसे आलमे हमल में हैज़ क्यों नहीं आता। आपने फ़रमाया कि अच्छा अगर औरत कमज़ोर है तो क्या वजह है कि मीरास में उसको एक हिस्सा और मर्द को दो हिस्सा दिया जाता है। उन्होंने जवाब दिया मुझे मालूम नहीं। आपने फ़रमाया कि औरत का नफ़्क़ा मर्द पर है और हुसूले आज़ूक़ा उसी के ज़िम्मे है इस लिये उसे दोहरा दिया गया और औरत को आलमे हमल में खूने हैज़ इस लिये नहीं आता कि वह बच्चे के पेट में दाख़िल होकर ग़िज़ा बन जाता है।

इब्ने ख़लक़ान लिखते हैं कि एक दिन हज़रत की ख़िदमत में जनाबे अबू हनीफ़ा साहब तशरीफ़ लाये तो आपने पूछा। ऐ अबू हनीफ़ा तुम इस मुजरिम के बारे में क्या फ़तवा देते हो, जिसने हज के लिये एहराम बांधने के बाद हिरन के वह दांत तोड़ डाले हों जिनको रूबाई कहते हैं। " फ़क़ाला या बिन रसूल मा आलमा मा फ़ीहा " अर्ज़ की फ़रज़न्दे रसूल (स.) मुझे इसका हुक्म मालूम नहीं " फ़क़ाला अनता तदाहिर वला तालम " आपने फ़रमाया कि इसी इल्मीयत पर फ़ख़्र करते और लोगों को धोका देते हो, तुम्हें यह तक मालूम नहीं कि हिरन के रूबाईया होते ही नहीं। (अल मसाएद, सफ़ा २०२)

फिर आपने पूछा कि यह बताओ कि अक्ल मन्द कौन है? उन्होंने अर्ज़ की जो अच्छे बुरे की पहचान करे और दोस्त दुश्मन में तमीज़ कर सके । आपने फ़रमाया कि यह सिफ़त और तमीज़ तो जानवरों में भी होती है। वह भी प्यार करते और मारते हैं। यानी अच्छे बुरे को जानते हैं। उन्होंने कहा फिर आप ही फ़रमायें। आपने इरशाद किया कि अक़्लमन्द वह है जो दो नेकियों और दो बुराईयों में यह इम्तियाज़ कर सके कि कौन सी नेकी तरजीह देने के क़ाबिल और दो बुराईयों में कौन सी बुराई कम और कौन ज़्यादा है।
(हैवातुल हैवान, दमीरी जिल्द २, सफ़ा ८५, ८६ तारीख़ इब्ने ख़लक़ान जिल्द १, सफ़ा १०५ मनाक़िब इब्ने शहरे आशोब सफ़ा ४१ नुरूल अबसार सफ़ा १३१)

इमाम जाफ़रे सादिक़(अ.) के बाज़ नसायेह व इरशादात

अल्लामा शिब्ली तहरीर फ़रमाते हैं(१) सईद वह है जो तन्हाई में अपने को लोगों से बे नियाज़ और खुदा की तरफ़ झुका हुआ पाये। (२) जो शख़्स किसी बरादरे मोमिन

का दिल खुश करता है , खुदा वन्दे आलम उस के लिए एक फरिशता पैदा करता है जो उस की तरफ़ से इबादत करता है और क़ब्र में मूनिसे तन्हाई,क़यामत में साबित क़दमी का बाएस। मन्ज़िले शफ़ाअत में और जन्नत में पहूँचाने में रहबर होगा (३) नेकी का तकमेला यानी कमाल यह है कि इसमें जल्द करो, और उसे कम सम्झो, और छुपा के करो (४) अमले ख़ैर नेक नीयती से करने को सआदत कहते हैं(५) तवज्जा में ताख़ीर नफ़्स का धोखा है।(६) चार चीज़े ऐसी हैं जिनकी क़िल्लत को कसरत समझना चाहिए (१) आग (२) दुश्मनी (३) फ़क़ीरी (४) मर्ज़ (७) किसी के साथ बीस दिन रहना अज़ीज़दारी के मुतारादिफ़ है (८) शैतान के ग़ल्बे से बचने के लिए लोगों पर एहसान करो (९) जब अपने किसी भाई के वहाँ जाओ तो सदरे मज्लिस में बैठने के अलावा इसकी हर नेक ख़्वाहिश को मान लो (१०) लड़की(रहमत) नेकी और लड़का नेअमत है। खुदा हर नेकी पर सवाब देता है और नेअमत पर सवाल करेगा (११) जो तुम्हें इज़्ज़त की निगाह से देखे तो तुम भी उसकी इज़्ज़त करो, जो ज़लील समझे उससे खुद्दारी बरतो (१२) बख़्शिश से रोकना खुदा से बदज़नी है(१३) दुनियाँ में लोग बाप दाद के ज़रिए से मुतअर्रिफ़ होते हैं और आख़रत में आमाल के ज़रिए से पहचाने जाएंगे (१४) इन्सान के बाल बच्चे उसके असीर और क़ैदी हैं नेअमत की वुस्अत पर उन्हें वुसअत देनी चाहिए वरना ज़वाले नेअमत का अन्देशा है। (१५) जिन चीज़ों से इज़्जत बढ़ती है इनमें तीन यह हैं (१) ज़ालिम से बदला न ले (२) उस पर करम गुस्तरी जो मुख़ालिफ हो (३) जो इसका हमर्दद न हो उसके साथ हमदर्दी करे (१६) मोमिन वह है जो जादए हक़ से न हटे और खुशी से से बातिल की पैरवी न करे (१७) जो खुदा की दी हुई नेमत पर क़िनाअत करेगा, मुस्तग़नी रहेगा (१८) जो दूसरों की दौलत मंदी पर लल्चाई नज़र डालेगा ,वह हमेशा फ़क़ीर रहेगा(१९) जो राज़ी ब रज़ा खुदा नहीं वह खुदा पर इत्तेहाम तक़दीर लगा रहा है।(२०) जो अपनी लग़ज़िश को नज़र अन्दाज़ करेगा वह दूसरों की लग़ज़िश को भी नज़र में न लाएगा (२१) जो किसी को बेपरदा करने की सई करेगा खुद बरहना हो जाएगा(२२) जो किसी पर नाहक़ तलवार खींचेगा तो नतीजे में खुद मक़तूल होगा (२३) जो किसी के लिए कुआँ खोदेगा खुद उसमें गिरेगा "चाह कुन रा चाह दरपेश (२४) जो शख़्स बेवक़ूफ़ों से राह रसम रखेगा ज़लील होगा (२५) हक़ गोई करनी चाहिए ख़्वाह वह अपने लिए मुफ़ीद हो या मुज़िर (२६) चुग़ल ख़ोरी से बचो क्योंकि यह लोगों के दिलों में दुश्मनी आरै अदावत का बीज बोती है (२७) अच्छों से मिलो, बुरों के क़रीब न जाओ। क्योंकि वह ऐसे पत्थर हैं जिनमें जोंक नहीं लगती,यानी उनसे फ़ाएदा नहीं हो सकता (नुरूल अबसार सफ़ा १३४) (२८) जब कोई नेमत मिले तो बहुत ज़्यादा शुक्र करो ताकि इज़ाफ़ा हो(२९) जब रोज़ी तगं हो तो अस्तग़फ़ार ज़्यादा करो कि अब्वाबे रिज़क खुल जाएं (३०) जब हुकूमत या ग़ैर हुकूमत की तरफ़ से कोई रंज पहुँचे तो (ला हौल विला कूवतह इल्ला बिल्लाहिल अलीअल अज़ीम) ज़्यादा कहो कि रंज दूर हो। ग़म काफ़ूर हो ,और खुशी का वफ़ूर हो ।(मतालेबुल सुवेल सफ़ा २७४ से सफ़ा २७५)

आपके बाज़ करामात

हज़रत इमाम जाफ़र सादिक (अ.) के करामात और ख्वारिक् आदात और इल्मी मालूमाती वाके़आत से किताबें भरी पड़ी हैं।

अल्लामा अरबली लिखते हैं कि अबू बसीर एक दिन हमाम खाने के लिए अपने घर से बराआमद हुए। रास्ते में चन्द ऐसे हज़रात मिले जो इमाम जाफरे सादिक् (अ.) की ज़्यारत के लिए जा रहे थे। अबू बसीर सहाबी सोच कर साथ हो गए कि अगर मैं हमाम से वापसी में जाऊंगा तो सआदते ज़ियारत में पीछे रह जाऊंगा। जब वहाँ पहुँचे तो आपने इशरतन फ़रमाया कि नबी और इमाम के घर में हालते जनाबत में दाखिल नहीं होना चाहिए अबू बसीर ने माज़रत की और हमाम चले गए। (कशफुल ग़मा सफ़ा ९७)

यूनुस बिन ज़िबयान कहते हैं कि हम लोग एक दिन हज़रत की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो आपने दौराने गुफ़्तुगू में फ़रमाया कि ज़मीन के ख़ज़ाने हमारे इख़्तेआर में हैं। यह कह कर आपने पैर से ज़मीन पर एक ख़त खींचा और एक बालिश्त का डब्बा उठाकर हमें दिखलाया। इसमें बेहतरीन सोने की ईटें थीं, मैंने अर्ज़ की मौला ,आपके क़ब्ज़े में सब कुछ है मगर आपके मानने (तज़किरतुल मासूमीन)

आपके इख़्लाक़ और आदात व औसाफ़

अल्लामा इब्ने शहर आशोब तहरीर फ़रमाते हैं कि एक दिन इमाम जाफ़र सादिक् (अ.) ने अपने एक गुलाम को किसी काम से बाज़ार भेजा। जब उसकी वापसी में बहुत देर हुई तो आप उसको तलाश करने के लिए निकल पड़े, देखा एक जगह लेटा हुआ सो रहा है। आप उसे जगाने के बजाए उसके सरहाने बैठ गए और पंखा झलने लगे। जब वह बेदार हुआ तो आपने फ़रमाया यह तरीक़ा अच्छा नहीं है। रात सोने के लिए और दिन काम काज के लिए है। आइन्दा ऐसा न करना (मुनाक़िब जिल्द ५ सफ़ा ५२)

अल्लामा मआसिर मौलाना अली नक़ी मुजतहिदुल असर रक़म तराज़ हैं, आप इसी सिलसिलए , अस्मत की एक कड़ी थे जिसे ख़ुदावन्दे आलम ने नवए इन्सानी के लिए नमूनये कामिल बनाकर पैदा किया। उनके इख़्लाक़ व अवसाफ़ ,ज़िन्दगी के हर शोबे में मेआरी हैसीयत रखते थे। ख़ास ख़ास अवसाफ़ जिनके मुतअल्लिक़ मुवर्रेख़ीन ने मख़सूस तौर पर वाके़आत नक़ल किए हैं। मेहमां नवाज़ी, ख़ैरो आफ़ीयत मख़फ़ी तरीके पर गुरबा की ख़बर गीरी, अज़ीज़ों के साथ हुस्ने सुलूक, अफ़ो जराएम,सब्र व तहम्मुल वग़ैरा हैं।

एक मरतबा एक हाजी मदीने में वारिद हुआ और मस्जिदे रसूल (स.) में सो गया आँख खुली तो उसे शुबा हुआ कि उसकी एक हज़ार की थैली मौजूद नहीं, उसने इधर उधर देखा, किसी को न पाया। एक गोशए मस्जिद में इमाम जाफ़र सादिक़(अ.) नमाज़ पढ़ रहे थे वह आपको बिल्कुल न पहचानता था। आपके पास आकर कहने लगा कि मेरी थैली तुमने ले ली है। हज़रत ने पूछा उसमें क्या था। उसने कहा एक हज़ार दीनार, मेरे साथ मेरे मकान तक आओ ,वह आपके साथ हो गया। बैत-उस-शरफ़ में तशरीफ़ ला कर एक हज़ार दीनार इसके हवाले कर दीएवह मस्जिद में वापिस चाला गया और अपना असबाब उठाने लगा ,तो खुद उसके दीनारो की थैली असबाब में नज़र आई , यह देख कर बहुत शर्मिन्दा हुआ और दौड़ता हुआ फिर इमाम की खिदमत में आया उज़्र ख़्वाही करते हुए हज़ार दीनार वापस करना चाहा। (हज़रत ने फ़रमाया हम जो कुछ दे देते हैं वह फिर वापस नहीं लेते)

मौजूदा ज़माने में यह हालात सभी की ही आँखो से देखे हुए हैं कि जब यह अन्देशा मालूम होता है अनाज मुश्किल से मिलेगा तो जिसको जितना मुम्किन हो वह अनाज खरीद कर रख लेता है। मगर इमा जाफर सादिक़ (अ.) के किरदार का एक वाक़ेआ यह है कि एक मरतबा आपसे आपके वकील माक़िब ने कहा कि हमें इस गरानी और क़हत की तकलीफ का कोई अन्देशा नही है। हमारे पास गल्ले का इतना ज़खीरा है जो बहुत अर्से तक के लिए काफी होगा। हज़रत ने फरमाया यह तमाम गल्ला फ़रोख़्त कर डालो इसके बाद जो हाल सबका होगा वह हमारा भी होगरा,जब गल्ला फरोख्त कर दिया गया तो फ़रमाया अब ख़ालिस गेहूँ तो फ़रमाया अब ख़ालिस गेहूँ की रोटी न पका करे, बल्कि आधे गेहूँ और आधे जौ की पकाई जाए। जहाँ तक मुम्किन हो हमें गरीबों का साथ देना चाहिए।

आपका क़ायेदा था कि आप मालदारों से ज़्यादा ग़रीबों की इज़्जत करते थे। मज़दूरो की बड़ी कदर फामाते थे। खुद भी तिजारत फ़रमाते थे और अक्सर अपने बाग़ों में ब नफ़्से नफ़ीस मेहनत भी करते थे।

एक मरतबा आप बेलचा हाथ में लिए बाग में काम कर रहे थे और पसीने से तमाम जिसम तर हो गया था। किसी ने कहा यह बेलचा मुझे इनाएत फ़रमाइऐ , तलबे ,माश में धूप और गरमी की तकलीफ़ सहना ऐब की बात नहीं, गुलामों और कनीज़ों पर वही मेहरबानी, रहती थी। जो इस घराने की इम्तेआज़ी सिफ़त थी। इसका एक हैरत अंगेज़ नमूना यह है कि जिसे सफ़यान सूरी ने बयान किया, कि मैं एक मरतबा इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ देखा कि चेहरए मुबारक का रगं मुतागय्यर है,मैंने सबब दरयाफ़त किया तो फ़रमाया मैने मना किया था कि कोई मकान के कोठे पर न चढ़े इस वक़्त जो मैं घर आया तो क्या देखा कि एक कनीज़ जो एक बच्चे की परवरिश पर मुतअय्यन थी उसे गोद में लिए ज़िने से ऊपर जा रही थी। मुझे देखा तो ऐसा ख़ौफ़ तारी हुआ कि बद हवासी में बच्चा उसके हाथ से छूट गया, और इस सदमें से जान बाहक़ तसलीम हो

गया। मुझे बच्चे के मरने का इतना सदमा नहीं जितना इसका रजं है कि इस कनीज पर इतना रोब हेरास क्यों तारी हुआ। फिर हज़रत ने इस कनीज़ को पुकार कर फ़रमाया , डर नहीं, मैंने तुमको राहे खुदा में आज़ाद कर दिया। इसके बाद हज़रत बच्चे की तजहीज़ की तरफ़ मोतवज्जा हुए।

(सादिक़ आले मोहम्मद (स.) सफ़ा १२ मुनाकिब इब्ने शहरे आशोब जिल्द ५ सफ़ा ५४)

किताब मुजानी अल अदब जिल्द १ सफ़ा ६७ में है कि यहाँ कुछ मेहमान आए थे । हज़रत ने खाने के मौके पर अपनी कनीज़ को खाना लाने का हुक्म दिया , वह सालन का बड़ा प्याला लेकर जब दस्तरख़्वान के क़रीब पहुंची तो इत्तेफाक़न प्याला उसके हाथ से छूट कर गिर गया। इसके गिरने से इमाम (अ.) और दीगर मेहमानो के कपड़े खराब हो गए। कनीज़ कापने लगी और आपने गुस्से के बजाए उसे राहे खुदा में यह कह कर आज़ाद कर दिया कि तू जो मेरे ख़ौफ़ से काँपती है शाएद यही आज़ाद करना कफ़्फ़ारा हो जाए। फिर उसी किताब के सफ़े ६६ में। है कि एक गुलाम आपका हाथ धुला रहा था कि कि दफ़तन लोटा छूट कर तश्त में गिरा और पानी उड़ कर हज़रत के मुंह पर पड़ा। गुलाम घबरा उठा हज़रत ने फ़रमाया डर नहीं जा मैंने तुझे राहे खुदा में आज़ाद कर दिया।

किताब तोहफ़तुल अलज़राएर अल्लामा मजालिसी में है कि आपकी आदात में इमाम हुसैन (अ.) की ज़्यारत के लिए जाना दाखिल था। आप अहदे सफ़ाह और ज़मानए मनसूर में भी ज्यारत के लिए तशरीफ ले गए थे। करबला की आबादी से तक़रीबन चार सौ क़दम शुमाल की जानिब ,नहरे अलक़मा के किनारे बाग़ों में शरीए सादिक़ आले मोहम्मद (स.) इसी ज़माने से बना हुआ है।

(तसवीरे अज़ा १० सफ़ा ६० तबा देहली १६१६ ई०)

हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.) की इल्मी बुलन्दी

यह ज़ाहिर है कि इल्म ही इन्सान का वह जौहर गैर फानी है जिसके बग़ैर हक़ीक़ी इम्तेआज़ हासिल नहीं होता। हज़रत आदम (अ.) ने इल्म के ज़रिए मलाएका पर फज़ीलत हासिल की और आपके इस तरज़े अमल से नागुज़ीर तौर पर यह वाज़े हो गया कि मनसूस मिन अल्लाह को आलिमे जैय्यद होना लाज़मी है हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.) चूँकि सही तौर पर मनसूस थे लेहाज़ा आपका आलमे ज़माना होना लाज़मी था और यही वजह है कि आप इल्म के उन मदारिज पर फ़ाएज़ थे जिनके अशर्ए बुलन्द के पाए को परिन्दा पर नहीं मार सकता था।

सादिके आले मोहम्मद (स.) की तसानीफ़

आपकी तसानीफ़ का शुमार नहीं किया जा सकता। तवारीख़ से मालूम होता है कि आपने बेशुमार किताबें व रिसाले और मक़ालात से दुनिया वालों को फ़ैज़याब फ़रमाया है। आप चुंकि उलूम में ग़ैर महदूद थे। इस लिये आपकी किताबें हर इल्म में मिलती हैं। आपने इल्मे दीन, इल्मे कीमिया, इल्मे रजज़, इल्मे फ़ाल , इल्मे फ़लसफ़ा, इल्मे तबीइयात, इल्मे हैय्यत, इल्मे मन्तिक़, इल्मे तिब, इल्मे समीयात, इल्मे तशरीह अल अजसाम व अफ़आल अल आज़ा, इल्म अल हयात वमा बाद अल तबयात वग़ैरा वग़ैरा पर ख़ामा फ़रसाई की है और लेक्चर दिये हैं। हम इस मक़ाम पर सिर्फ़ दो किताबों का ज़िक्र करना चाहते हैं।

(१) **किताबे जफ़र व जामेआ** (२) **किताब अहले लिब्बाहिमा**

किताब जफ़र व जामा :- किताब जफ़र व जामाके मुताअल्लिक़ उलेमा के बयानात मुख्तलिफ़ हैं मौलवी वहीदुज़्ज़मां हैदराबादी अपनी किताब अनवारूल लुग़ता के पारा ५, सफ़ा १५ पर लिखते हैं, कि आं हज़रत (स.) ने अमीरूल मोमेनीन अली इब्ने अबी तालिब को दो किताबें लिखवा दीं थीं।

“ **एक जफ़र** ” दूसरी “ **जामए** ” एक किताब तो बकरी की खाल पर थी, दूसरी भेड़ की खाल पर और उसमें क़यामत तक जितनी बातें होने वाली थीं वह सब मुजमिलन लिखवा दी थीं। सय्यद शरीफ़ ने शरह मवाफ़िक में नक़ल किया है कि जफर और जामए दो किताबें हैं जो हज़रत अली(अ.) के पास थीं। इनमें अज़ रूए क़वायद, इल्मे हुरूफ़ व तकसीर बड़े बड़े हवादिस का बयान था। जो क़यामत तक होने वाले थे, और आपकी औलाद में जो इमाम गुज़रे वह इन्हीं किताबों को देखकर अकसर उमूर की ख़बर देते थे।

किताब बहरे मुहीत में है कि इल्मे जफ़र और इल्मे तकसीर एक ही है, यानी सायल के सवाल के हुरूफ़ में तसर्रूफ़ और तग़य्युर करके सवाल का जवाब निकालना।

अल्लामा शिब्लंजी अपनी किताब नूरूल अबसार के सफ़ा १३३ पर बा हवाला हैवातुल हैवान दमीरी लिखते हैं कि इब्ने क़ुतीबा ने किताबे अदब अल कातिब में लिखा है कि किताब अल जफर हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.) की लिखी हुई है। इसमें वह तमाम चीजें है। जो क़यामत तक दुनिया में रूनूमां होंगी।

अल्लामा इब्ने तल्हा शाफ़ेई अपनी किताब मतालेबुल सुवेल के सफ़ा २१४ म किताब अल जफर का ज़िक्र करते हुये लिखते हैं कि “ होआमन कलामेह ” यह किताब आप ही की तसनीफ़ है। यही इबारत बिलकुल इसी तरह शवाहेदुन नबूवत मुल्ला जामी के सफ़ा १८७ तबा लखनऊ १६०५ में भी मौजूद है। तारीख़ से मालूम होता है कि आप जफ़र व

जामए के अलावा जफ़र अहमर व जफरे अबयज़ और मुसहफ़े फ़ात्मा के भी मालिक थे और आप को ख़ुदा ने इल्मे ग़ाबिर व मज़बूर नुक़्त व नक़र से बहरावर फ़रमाया था। अल्लामा जामी शवाहेदुन नबूवत, सफ़ा १८७ में और अल्लामा अरबली कशफ़ुल ग़म्मा सफ़ा ६७ में फ़रमाते हैं कि हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.) फ़रमाया करते थे। हमें आईंदा और गुज़िशता का इल्म और इल्हाम की सलाहियत और मलायका की बातें सुन्ने की ताक़त दी गई है। मेरे ख़याल में यही आलिमे इल्मे लदुन्नी होने की दलील है, जो जांनशीने पैग़ंबर होने के सुबूत में पेश किया जा सकता है।

साहेबे मजमूउल बेहरैन इसकी ताईद करते हुये लिखते हैं कि जफ़र व जामया में क़यामत तक होने वाले सारे वाक़ेयात मुन्दरिज हैं। यहां तक कि इस में ख़राश लग जाने की भी सज़ा का ज़िक्र है और एक ताज़याना बल्कि आधा ताज़याना(कोड़ा) का भी हुक्म मौजूद है।

किताब अहले लेजया :- अल्लामा मजलिसी ने किताब बेहारूल अनवार की जिल्द २ में हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.) की किताब अहले लजिया को मुकम्मल तौर पर नक़ल फ़रमाया है। इस किताब के तसनीफ़ करने की ज़ुरूरत यूँ महसूस हुई कि एक हिन्दुस्तानी फ़लसफ़ी हज़रत की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और उसने आलीयात और माबद अल तबीआत पर हज़रत से तबादलए ख़यालात करना चाहा। हज़रत ने उससे निहायत मुकम्मल गुफ़्तुगू की और इल्मे कलाम के उसूल पर दहरियत और मादीयत को फ़ना कर छोड़ा, उसे आख़िर में कहना पड़ा कि आपने अपने दावे को इस तरह साबित फ़रमा दिया है कि अरबाबे अक़्ल को माने बग़ैर चारा नहीं। तवारीख़ से मालूम होता है कि हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.) ने हिन्दी फ़लसफ़ी से जो गुफ़्तुगू की थी उसे किताब की शक्ल में जमा करके बाबे अहले बैत के मशहूर मुताकल्लिम जनाब मुफ़ज़्ल बिन उमर अल जाफ़ी के पास भेज दिया था और यह लिखा था कि,

ऐ मुफ़ज़्ल मैंने तुम्हारे लिये एक किताब लिखी है जिसमें मुन्करीने ख़ुदा की रद की है। और उसके लिखने की वजह यह हुई कि मेरे पास हिन्दुस्तान से एक तबीब (फ़लसफ़ी) आया था और उसने मुझसे मुबाहेसा किया था। मैंने जो जवाब उसे दिया था, उसी को क़लम बन्द करके तुम्हारे पास भेज रहा हूँ।

हज़रत सादिक़ आले मोहम्मद (स.) के फ़लक वक़ार शागिर्द

हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.) के शार्गिदों का शुमार मुशकिल है। बहुत मुमकिन है कि आईनदा सिलसिलए तहरीर में आपके बाज़ शार्गिदों का ज़िक्र आता जाय। आम मुवर्रेख़ीन ने बाज़ नामों को ख़ुसूसी तौर पर पेश करके आपकी शार्गिदी की सिल्क में पिरो

कर उन्हें मोअज़्ज़ज़ बताया है। मतालेबुल सुवेल, सवाएक़े मोहर्रेक़ा, नुरूल अबसार वग़ैरा में इमाम अबू हनीफ़ा यहीया बिन सईद अन्सारी इब्ने जरीह, इमाम मालिक इबने अनस, इमाम सुफ़ियान सूरी, सुफ़ियान बिन अयनिया, अय्यूब सजिसतानी वग़ैरा का आपके शार्गिदों में ख़ास तौर से ज़िक्र है। तारीख़ इबने ख़लक़ान जिल्द १, सफ़ा १३० और ख़ैरूद्दीन ज़र कली की अल्ल आलाम , सफ़ा १८३ तबा मिस्र मोहम्मद फ़रीद वजदी की इदारा मायफ़ल क़ुरआन की जिल्द ३, सफ़ा १०६ तबा मिस्र में है।

" वा काना तलमीना अबू मूसा जाबिर बिन हय्यान अल सूफ़ी अल तरसूसी " आपके शर्गिदों में जाबिर बिन हय्यान सूफ़ी तरसूसी भी हैं। आपके बाज़ शागिर्दों की जलालत क़द्र और उनकी तसानीफ़ और इल्मी ख़िदमात पर रौशनी डालनी तो बे इन्तेहा दुश्वार है। इस लिये इस मक़ाम पर सिर्फ़ जाबिर बिन हय्यान तरसूसी जो कि इन्तेहाई बा कमाल होने के बावजूद शार्गिदे इमाम की हैसियत से अवाम की नज़रों से पोशीदा हैं। का ज़िक्र किया जाता है।

इमामुल कीमिया जनाबे जाबिर इब्ने हय्यान तरसूसी

आपका पूरा नाम **अबू मूसा जाबिर बिन हय्यान बिन अब्दुल समद अल सूफ़ी अल तरसूसी अल कूफ़ी** है। आप ७४२, ई० में पैदा हुये और ८०३ ई० में इन्तेक़ाल फ़रमा गये। बाज़ मोहक़्क़ेक़ीन ने आपकी वफ़ात ८१३ ई० बताई है। लेकिन इब्ने नदीम ने ७७७ ई० लिखा है।

इन्साईकिलो पीडिया आफ़ इस्लामिक हिस्ट्री में है कि उस्तादे आज़म जाबिर बिन हय्यान बिन अब्दुल्लाह , अब्दुल समद कूफ़े में पैदा हुआ वह तूसीउल नस्ल था और आज़ाद नामी क़बीले से ताअल्लुक़ रखता थां ख़यालात में सूफ़ी था और यमन का रहने वाला था अवाएल उम्र में इल्मे तबीआत की तालीम अच्छी तरह हासिल कर ली और इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.) इब्ने इमाम मोहम्मद बाक़र(अ.) की फ़ैज़े सोहबत से इमाम उल फ़न हो गया।

तारीख़ के देखने से मालूम होता है कि जाबिर बिन हय्यान ने इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.) की अज़मत का एतराफ़ करते हुये कहा है कि सारी कायनात में कोई ऐसा नहीं जो इमाम की तरह सारे उलूम पर बोल सके।

तारीख़े आइम्मा में हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.) की तसनीफ़ात का ज़िक्र करते हुये लिखा है कि हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.) ने एक किताब कीमीया, जफर रमल पर लिखी थी। हज़रत के शार्गिद व मशहूर मारूफ़ कीमिया गर जाबिर बिन हय्यान जो यूरोप में जबर के नाम से मशहूर हैं। जाबिर सूफ़ी का लक़ब दिया गया था और ज़ुननून मिस्री

की तरह वह भी इल्मे बातिन से ज़ौक़ रखते थे। इन जाबिर बिन हय्यान ने हज़ारों वरक़ की एक किताब तालीफ़ की थीं जिसमें हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.) के पांच सौ रिसालों को जमा किया था। अल्लामा इब्ने ख़लकान किताब दफ़ियात इला अयान जिल्द १, सफ़ा १३० तबा मिस्र में हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.) का ज़िक्र करते हुये लिखते हैं।

हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़(अ.) के मक़ालात इल्मे कीमिया और इल्मे जफर व फ़ाल में मौजूद हैं और आपके शागिर्द थे। जाबिर बिन हय्यान सूफ़ी तरसूसी जिन्होंने हज़ार वरक़ की एक किताब तालीफ़ की थी। जिसमें इमाम जाफ़रे सादिक़(अ.) के पांच सौ रिसालों को जमा किया था। अल्लामा ख़ैरूद्दीन ज़रकली ने भी अल-आलाम जिल्द १, सफ़ा १८२ तबा मिस्र में यही कुछ लिखा है। इसके बाद तहरीर किया है कि उनकी बेशुमार तसानीफ़ हैं जिनका ज़िक्र इब्ने नदीम ने अपनी फ़ेहरिस्त में किया है। अल्लामा मोहम्मद फ़रीद वजदी ने दायरए मआरेफ़ुल कुरआन अल राबे अशर की जिल्द ३, सफ़ा १०९ तबा मिस्र में भी लिखा है कि जाबिर बिन हय्यान ने इमाम जाफ़रे सादिक़(अ.) के पांच सौ रसायल को जमा करके एक किताब हज़ार सफ़्हे की तालीफ़ की थी। अल्लामा इब्ने ख़ल्दून ने भी मुक़दमए इब्ने ख़ल्दून मतबूा मिस्र सफ़ा ३८५ में इल्मे कीमिया का ज़िक्र करते हुये जाबिर बिन हय्यान का ज़िक्र किया है और फ़ाज़िल हंसवी ने अपनी ज़ख़ीम तसनीफ़ किताब और किताब ख़ाना ग़ैर मतबूआ में बा हवालए मुक़द्दमा इब्ने ख़ल्दून सफ़ा ५७९ तबा मिस्र लिखा है कि जाबिर बिन हय्यान इल्मे कीमिया के ईजाद करने वालों का इमाम है बल्कि इस इल्म के माहेरीन ने इसको जाबिर से इस हद तक मख़सूस कर दिया है कि इस इल्म का नाम ही " इल्मे जाबिर " रख दिया है।

(अल जव्वाद शुमारा ११, जिल्द १, सफ़ा ९)

मुवर्रिख़ इब्नुल क़त्फ़ी लिखते हैं कि जाबिर बिन हय्यान को इल्मे तबीआत और कीमिया में तक़द्दुम हासिल है। इन उलूम में उसने शोहरए आफ़ाक़ किताबें तालीफ़ की हैं। इनके अलावा उलूमे फ़लसफ़ा वग़ैरा में शरफ़े कमाल पर फ़ाएज़ थे और यह तमाम कमालात से भर पूर होना इल्मे बातिन की पैरवी का नतीजा था। मुलाहेज़ा हो, (तबक़ातुल उमम, सफ़ा ९५, व अख़बारूल हुक्मा सफ़ा १११ तबा मिस्र)

पयामे इस्लाम जिल्द ७, सफ़ा १५ में है कि वही ख़ुश क़िसमत मुसलमान है जिसे हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.) की शार्गिदी का शरफ़ हासिल था इसके मुतअल्लिक़ जनवरी २५ ई० में साईंस प्रोग्ररेस नवीशतए जे० होलम यार्ड एम० ए० एफ़० आई० सी० आफ़ीसरे आला शोबए साईंस कफ़टेन कालेज ब्रिस्टल ने लिखा है कि इल्मे कीमिया के मुतअल्लिक ज़मानाए वस्ता की अकसर तसानीफ़ मिलती हैं। जिसमें " **गेबर** " का ज़िक्र आता है और आम तौर पर (गेबर या जेबर) दर अस्ल " **जाबिर** " है। चुनांचे जहां कहीं भी लातीनी कुतुब में गेबर का ज़िक्र आता है वहां मुराद अरबी माहिरे कीमिया जाबिर बिन हय्यान ही है। जिसे **J** के बजाय **G** आसानी से समझ में आजाता है। लातीनी में (**जे**) से मिलती जुल्ती आवाज़

और बाज़ इलाक़ों मसलन मिस्र वग़ैरा में (**जे**) को अब भी बतौर (**जी**) यानी गाफ़ इस्तेमाल किया जाता है। इसके अलावा ख़लीफ़ा हारून के ज़माने में साईंस कमेस्ट्री वग़ैरा का चरचा बहुत हो चुका है और इस इल्म के जानने वाले दुनिया के गोशे गोशे से खिंच कर दरबारे ख़िलाफ़त से मुन्सलिक हो रहे थे। जाबिर इब्ने हय्यान का ज़माना भी कमो बेश इसी दौर में था। पिछले २०, २५, साल में इंगलिस्तान और जर्मनी में जाबिर के मुतअल्लिक़ बहुत सी तहक़ीक़ात हुई हैं। लातीनी ज़बान में इल्मे कीमिया के मुताअल्लिक़ चंद कुतुब सैकड़ों साल से इस मुफ़क्किर के नाम से मन्सूब हैं। जिसमें मख़सूस (१) समा (२) बरफ़ेकशन (३) डी इन्वेस्टीगेशन परफ़ेक्शन (४) डी इन्वेस्टीगेशन वर टेलक्स (५) टीटा बहन लेकिन इन किताबों के मुताअल्लिक़ अब तक उक तूलानी बहस है और इस वक़्त तक मुफ़क्केरीने योरोप इन्हें अपने यहां की पैदावार बताते हैं। इस लिये उन्हें इसकी ज़ुरूरत महसूस होती है। जाबिर को हर्फ़ (जी) (गाफ़) गेबर से पुकारें और बजाय अरबी नस्ल के उसे योरोपियन साबित करें।

हालांकि समा के कई तबा शुदा ऐडीशनों में गेबर को अरब ही कहा गया है। रसल के अंगरेज़ी तरजुमे में उसे एक मशहूर अरबी शहज़ादा और मन्तक़ी कहा गया है।

१५४१ ई० में की नूरन बर्ग के एडिशन में वह सिर्फ़ अरब है। इसी तरह और बहुत से क़ल्मी नुसख़े ऐसे मिल जाते हैं। जिनमें कहीं उसे ईरानियों के बादशाह से याद किया गया है। किसी जगह उसे शाह बन्द कहा गया है। इन इख़्तेलाफ़ात से समझ में आता है कि जाबिर बर्रे आज़म एशिया से न था बल्कि इस्लामी अरब का एक चमकता सितारा था।

इन्साईकिलो पीडिया आफ़ इस्लामिक कैमिसट्री के मुताबिक़ जाफ़र बर मक्की के ज़रिये से जाबिर बिन हय्यान का ख़लीफ़ा हारून रशीद के दरबार में आना जाना शुरू हो गयां चुनांचे उन्होंने ख़लीफ़ा के नाम से इल्मे कीमिया में एक किताब लिखी जिसका नाम " शुगूफ़ा " रखा। इस किताब में उसने इल्मे कीमिया के जली व ख़फ़ी पहलूओं के मुताअल्लिक़ निहायत मुख़्तसर तरीक़े , निहायत सुथरा तरीक़े अमल और अजीबो ग़रीब तजरबात बयान किये। जाबिर की वजह से ही क़ुस्तुनतुनया से दूसरी दफ़ा यूनानी कुतुब बड़ी तादात में लाई गईं।

मन्तिक़ में अल्लामए दहर मशहूर हो गया और ६० साल से कुछ ज़्यादा उमर में उसने तीन हज़ार किताबें लिखीं और इन किताबों में से वह बाज़ पर नाज़ करता था। अपनी किसी तसनीफ़ के बारे में उसने लिखा है कि रूए ज़मीन पर हमारी इस किताब के मिस्ल एक किताब भी नहीं है। न आज तक ऐसी किताब लिखी गई है और न क़यामत तक लिखी जायगी। (सरफ़राज़ २, दिसम्बर १९५२ ई०)

फ़ाज़िल हंसवी अपनी किताब " किताब व किताब ख़ाना " में लिखते हैं कि जाबिर के इन्तेक़ाल के दो बरस बाद इज़्ज़-उद-दौला इब्ने मुइज़्ज़-उद-दौला के अहद में कूफ़े के शारेह बाबुश शाम के क़रीब जाबिर की तजरूबे गाह का इन्केशाफ़ हो चुका है। जिसको खोदने के

बाद बाज़ क़दीमी मख़तूतात ब्रिटिश मियूज़ियम में अब तक मौजूद हैं। जिनमें से किताब उल ख़वास क़ाबिले ज़िक्र है। इसी तरह फुस्ते वस्ता में बाज़ किताबों का तरजुमा लातीनी में किया गया। इन किताबों के अलावा इन अनुवादों के सिबअईन भी हैं जो नाक़िसो नातमाम है।

" इसी तरह अल बहस अनल कमाल " का तरजुमा भी लातीनी में किया जाचुका है। यह किताब लातीनी ज़बान में कीमिया पर योरोप की ज़बान में सबसे पहली किताब है। इसी तरह और दूसरी किताबें भी अनुवादित हुई हैं। जाबिर ने कीमिया के अलावा तबीयात, हैय्यत इल्मे रोया, मन्तिक़, तिब और दूसरे उलूम पर भी किताबें लिखीं। इसकी एक किताब समीयात पर भी है। जो कुत्ब ख़ानए तैमूरिया क़ाहेरा मिस्र में मौजूद है। इनमें चन्द ऐसे मक़ालात को जो बहुत मुफ़ीद थे। बाद करह हुरूफ़ ने रिसालए मक़ततफ़ जिल्द ५८,५६ में शाया किये हैं। मुलाहेज़ा हो,

(मोअज्जमुल मतबूआत अल अरबिया अल मोअर्रेबा जिल्द ३, हरफ़ जीम, सफ़ा ६६५) जाबिर ब हैसियत एक तबीब के काम करता था, लेकिन इसकी तिब्बी तसानीफ़ हम तक न पहुंच सकीं। हालां कि इस मक़ाले का लिखने वाला यानी (डाक्टर माक्स मी यरहाफ़) ने जाबिर की किताब को जो समूम पर है हाल ही में मालूम कर लिया।

जाबिर की एक किताब जिसको मए मतन अरबी और तरजुमा फ्रानसीसी पोल कराओ मुस्तशरिक़ ने १६३५ ई० में शाया किया है ऐसी भी है जिसमें उसने तारीख़ इन्तेशार आराद अक़ाएद व अफ़कार हिन्दी यूनानी और इन तग़य्यूरात का ज़िक्र किया है जो मुस्लमानों ने किए हैं। इस किताब का नाम " एख़राज माफ़िल कूव्वत इल्ल फ़ेल " है।

(अलजवाद जिल्द १० सफ़ा ६ तबआ बनारस)

प्रोफ़ेसर रसकार की रद :- मेरे बयान से यह यक़ीनन वाज़ेह हो गया कि मुवर्रेख़ीन इस पर मुत्तफ़िक़ है। कि जाबिर बिन हय्यान इस्लाम का मोअज्जि कीमिया गर हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़(अ.) का शागिर्द था, लेकिन मिस्टर प्रोफ़सर रसकार ने इल्मे कीमिया के बारे में जो रिसाला शाया किया है। उसमें जाबिर इब्ने हय्यान के उन दावों को ग़ल्त और जाली बताया है, जो इमाम जाफ़रे सादिक़ की शार्गिदी की तरफ़ मन्सूब है। इसकी दलील यह है कि हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.) को इल्मे कीमिया और साईंस से क्या वास्ता। और इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.) की हैसियत का इमाम पारे, गन्धक, खटाई और फुकनी के इस्तेमाल में मसरूफ़ हो यह कैसे हो सकता है। मैं मौसूफ़ के जवाब में कहता हूँ कि मौसूफ़ ने कोई माकूल वजह इन्कार की बयान नहीं फ़रमाई। तारीख़ों का सुबूत पेश करनासुबूत के लिये काफ़ी है, और उनके इन्कार से अदम शार्गिदी की दलील नहीं क़ायम की जा सकती। यह कब ज़ुरूरी है कि जाबिर बिन हय्यान जैसे ज़की व ज़ेहीन शागिर्द को बच्चों की तरह बैठ कर अमल करके दिखाया हो। जेहीन तालिबुल इल्मों को ज़बानी तालीम दी जाती है और अगरइसी तरह तालीम दी हो जिस तरह एतेराज़ करने वालों का ख़याल है, तब भी कोई हर्ज नहीं है।

इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.) जैसा उस्ताद उलूम को फैलाने के लिये पारा और गन्धक, खटाई और फुकनी में कुछ देर मसरूफ़ रह सकता है और यह कोई एतेराज़ की बात नहीं हो सकती । मुमकिन हैं कि हज़रत ने जुमला उलूम के उसूल तालीम फ़रमा दिये हों और जाबिर ने उन्हें वसअत दे दी हो। मिसाल के लिये मुलाहेज़ा हो। किताब मनाक़िब में है कि हज़रत अली फ़रमाते हैं। अलमनी रसूल अल्लाह(स.) अलिफ़ बाब, आं हज़रत (स.) ने मुझे उलूम के एक हज़ार बाब तालीम फ़रमाये और मैंने हर बाब से हज़ार हज़ार बाब खुद पैदा किये। (किताब मतालेबुल सुवेल सफ़ा ५८ में है कि हज़रत अली (अ.) ने इल्मे नहो के उसूल अबु असवद दवेली को तालीम फ़रमाये फिर उसने तमाम तफ़सीलात मुकम्मल किये, हो सकता है कि इसी उसूल पर जाबिर को तालीम दी गई हो।

जाबिर बिन हय्यान की वफ़ात :- इन्साईकिलोपीडिया आफ़ इस्लामिक कमेस्ट्री से मालूम होता है कि जाबिर बिन हय्यान की उम्र ६० साल से कुछ ज़्यादा थी। मिस्टर जाफ़र बारहवी ने उनकी विलादत और वफ़ात के बारे में सरफ़राज़ १७, नवम्बर १६५२ ई०में जो कुछ तहरीर किया है उसी को नक़ल करते हुये मिस्टर क़मर रज़ा ने पयामे इस्लाम जिल्द ७, सफ़ा १५, १६ ,२६ जूलाई १६५३ ई० में लिखा है कि जाबिर बिन हय्यान७२२, ई० में पैदा हुये और उन्होंने ८०३ ई० में इन्तेक़ाल किया और बाज़ का कहना है कि ८१३ ई० तक ज़िन्दा रहे। इसके बाद लिखते है। कि इब्ने नदीम ने उनकी वफ़ात ७७७ ई० में बताई है और मेरे नज़दीक यही ठीक है। मेरी समझ में नहीं आता कि मौसूफ़ ने इब्ने नदीम के फ़ैसले को क्योंकर तसलीम कर लिया इस लिये कि अगर विलादत का सन सही है तो फिर इब्ने नदीम का बयान मानने लायक़ नहीं क्योकि अगर वह ७२२, ई० में पैदा हुये थे। ओर ७७७ ई० में वफ़ात पा गये तो गोया उनकी उम्र सिर्फ़ ५५ साल की हुई जो इतने साहेबे कमाल के लिये क़रीने क़यास नहीं है मेरे नज़दीक इन्साईकिलो पीडिया वाले की तहक़ीक़ सही है वह ६० साल से कुछ ज़्यादा उनकी उम्र बताता हैं जो हिसाब के एतेबार से सही है। क्योंकि विलादत ७२२ ई० और वफ़ात ८१३ ई० में तसलीम करने के बाद उनकी उम्र ६१ साल होती है और यह उम्र ऐसे बा कमाल के लिये होनी मुनासिब है।

सादिके आले मोहम्मद(स.) के इल्मी फ़यूज़ व बरकात

हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.) जिन्हें रासेख़ीन फिल इल्म में होने का शरफ़ हासिल है। और जो इल्मे अव्वलीन व आख़ेरीन से आगाह और दुनिया की तमाम ज़बानों से वाक़िफ़ हैं। जैसा कि मुवर्रेख़ीन ने लिखा है। मैं उनके तमाम इल्मी फ़यूज़ व बरकात पर थोड़े अवराक़ में क्या रौशनी डाल सकता हूँ। मैंने आपके हालात की छान बीन भी की है।

और यक़ीन रखता हूँ कि अगर मुझे फ़ुरसत मिले तो तक़रीबन ६ महीने में आपके उलूम और फ़ज़ाएलो कमालात का काफ़ी ज़ख़ीरा जमा किया जा सकता है। आपके मुताअल्लिक़ इमाम मालिक बिन अनस लिखते हैं " मेरी आंखों ने इल्मो फ़ज़ल, वरा व तक़वे में इमाम जाफ़रे सादिक़(अ.) से बेहतर देखा ही नहीं जैसा कि ऊपर गुज़रा वह बहुत बड़े लोगों में से थे और बहुत बड़े ज़ाहिद थे। ख़ुदा से बेपनाह डरते थे। बेइन्तेहा हदीसें बयान करते थे, बड़ी पाक मजलिस वाले ओर कसीरूल फ़वाएद थे। आपसे मिल कर बे इन्तेहा फ़ायदा उठाया जाता था। (मनाक़िब शहरे आशोब जिल्द ५ सफ़ा ५२ तबा बम्बई)

इल्मी फ़यूज़ रसानी का मौक़ा

यूं तो हमारे तमाम आइम्मए अहलेबैत (अ.) इल्मी फ़यूज़ व बरकात से भरपूर थे और इल्मे अववलीन व आख़ेरीन के मालिक , लेकिन दुनिया वालों ने उनसे फ़ायदा उठाने के बजाय उन्हें क़ैदो बन्द में रख कर उलूमो फ़ुनून के ख़ज़ाने पर हतकड़ियों और बेड़ियों के नाग बिठा दिये थे। इस लिये इन हज़रात के इल्मी कमालात कमा हक़्क़ा मंज़रे आम पर न आ सके। वरना आज दुनिया किसी इल्म में ख़ानदाने रिसालत(स.) के अलावा किसी की मौहताज न होती। फ़ाज़िल मआसिर मौलाना सिब्तुल हसन साहब हंसवी लिखते हैं कि इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.) अल मतूफ़ी १४८ हिजरी का अहद मआरफ़ परवरी के लिहाज़ से एक ज़र्रीं अहद था। वह रूकावटें जो आपसे पहले आइम्मा अहलेबैत के लिये पेश आया करती थीं उन्में किसी हद तक कमी थीं। उमवी हुकूमत की तबाही और अब्बासी सलतनत का इस्तेहकाम आपके लिये सुकून व अमन का सबब बना , इस लिये हज़रत को मज़हबे अहलेबैत की इशाअत और उलूमव फ़ुनून की तरवीज (फैलाने) का बेहतरीन मौक़ा मिला। लोगों को भी इन आलिमाने रब्बानी की तरफ़ रूजु करने में अब कोइ ख़ास ज़हमत न थी जिसकी वजह से आपकी ख़िदमत में अलावा हिजाज़ के दूर दराज़ मक़ामात मिस्ले ईराक़, शाम, ख़ुरासान, काबुल, सिन्ध, हिन्द और बलादे रोम, फ़िरहंग के तुल्बा शाएक़ीन इल्म हाज़िर होकर मुस्तफ़ीद होते थे। हज़रत के हलक़ए दर्स में चार हज़ार असहाब थे। अल्लामा शेख़ मुफ़ीद (अल रहमा) किताबे इरशाद में फ़रमाते हैं।

(तरजुमा) लोगों ने आपके उलूम को नक़ल किया जिन्हें तेज़ सवार मनाज़िल बईदा की तरफ़ ले गये और आपकी शोहरत तमाम शहरों में फ़ैल गई, और उलेमा ने अहले बैत में किसी से भी इतने उलूम व फ़ुनून को नहीं नक़्ल किया है। जो आपसे रवायत करते हैं। और जिनकी तादाद ४,०००(चार हज़ार) है। ग़ैर अरब तालेबान इल्म से एक रूमी नसल बुज़ुर्ग ज़रारा बिन ऐन मतूफ़ी १५० हिजरी क़ाबिले ज़िक्र हैं। जिनके दादा सुनसुन बिला दरदम के एक मुक़द्दस राहिब(Nonk) थे। ज़रारा अपनी ख़िदमाते इल्मिया के एतेबार से इस्लामी

दुनियां में काफ़ी शोहरत रखते थे और साहेबे तसानीफ़ थे। किताब अल इस्तेताअत वल जबरान की मशहूर तसनीफ़ है। (खुलासतुल अक्वाल अल्लामा जल्ली सफ़ा ३८, मिन्हजुल मक़ाल सफ़ा १४२ व मोवल्लेफ़ा शिया फ़ी सदरूल इस्लाम सफ़ा ५१)

कुतुबे उसूले अरबेअमता

हज़रत के असहाब में चार सौ ऐसे मुसन्नेफ़ीन थे जिन्होंने अलावा दीगर उलूम व फ़ुनून के कलामे मासूम को ज़ब्त करके चार सौ कुतुब उसूल तैयार कीं। असल से मुराद मजमूए अहादीस अहलेबैत की वह किताबें हैं जिनमें जामे ने खुद बराहे रासत मासूम से रवायत करके अहादीस को ज़ब्ते तहरीर किया है या ऐसे रावी से सुना है जो खुद मासूम से रवायत करता है। इस क़िस्म की किताब में जामे की दूसरी किताब या रवायत से अन फ़लां अन फ़लां के साथ नक़्ल करता जिसकी सनद में और वसाएत की ज़ुरूरत हो। इस लिये कुतुबे उसूल में ख़ता व ग़ल्त सहो व निसयान का एहतेमाल ब निसबत और दूसरी किताबों के बहुत कम है। कुतुबे उसूल के ज़मानए तालीफ़ का इन्हेसार अहदे अमीरल मोमेनीन से ले कर इमाम हसन असकरी (अ.) के ज़माने तक है। जिसमें असहाबे मासूमीन ने बिल मुशाफ़ा मासूम से रवायत करके अहादीस को जमा किया है। या किसी ऐसे सुक़्क़े रावी से हदीस मासूम को अख़ज़ किया है जो बराहे रास्त मासूम से रवायत करता है। शेख़ अबुल क़ासिम जाफ़र बिन सईद अल मारूफ़ बिल मोहक़्क़िक़ अल हली अपनी किताब अल मोतबर में फ़रमाते हैं कि इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.) के जवाबात मसाएल को चार सौ मुसन्नेफ़ीन असहाबे इमाम ने तहरीर करके चार सौ तसानीफ़ मुकम्मल की हैं।

सादिक़े आले मोहम्मद(स.) के असहाब की तादाद और उनकी तसानीफ़

आगे चल कर फ़ाज़िल माअसर अल जव्वाद में बाहवालए किताब व कुतुब ख़ाना लिखते हैं कुतुब रेजाल में असहाबे आइम्मा के हालात व तराजिम मज़कूर हैं। उनकी मजमूई तादाद चार हज़ार पांच सौ असहाब है। जिनमें से सिर्फ़ चार हज़ार असहाब हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.) के हैं ! सबका तज़किरा अबुल अब्बास अहमद बिन मोहम्मद बिन सईद बिन अक्दा २४९,से ३३३ ने अपनी किताब रेजाल में किया है और शेख़ अल ताएफ़ा अबू जाफ़र अल तूसी ने भी इन सबका ज़िक्र अपनी किताब रिजाल में किया है,मासूमीन(अ.)के तमाम असहाब में से मुसन्नेफ़ीन की जुमला तादाद एक हज़ार तीन सौ से ज़्यादा नहीं है।

जिन्होंने सैकड़ों की तादाद में कुतुबे उसूल और हज़ारों की तादाद में दूसरी किताबें तालीफ़ और तसनीफ़ की हैं जिनमें से बाज़ मुसन्नेफ़ीन असहाबे आइम्मा तो ऐसे थे जिन्होंने तन्हा सैकड़ों किताबें लिखीं। फ़ज़ल बिन शाज़ान ने एक सो अस्सी किताबें तालीफ़ कीं। इब्ने दवल ने सौ किताबें लिखीं। इसी तरह बरक़ी ने भी तक़रीबन सौ किताबें लिखीं। इब्ने अबी अमीर ने ९० नब्बे किताबें लिखीं और अकसर असहाबे आइम्मा ऐसे थे जिन्होंने तीस या चालीस से ज़्यादा किताबें तालीफ़ कीं। ग़रज़ की एक हज़ार तीन सौ मुसननेफ़ीन असहाबे आइम्मा ने तक़रीबन पांच हज़ार तसानीफ़ कीं। मजमउल बेहरैन में लफ़्ज़े जबर के मातहत है कि सिर्फ़ एक जाबिर अल जाफ़ेई इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.) के सत्तर हज़ार अहादीस के हाफ़िज़ थे।

(अमीरल मोमेनीन, किताब मक़तल अल हुसैन,ज़्यादा मशहूर हैं।)

तारीख़े इस्लाम जिल्द ५, सफ़ा ३ में है कि " अब्बना बिन शग़लब बिन रबाह (अबू सईद) कूफ़ी सिर्फ़ इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.) की तीस हज़ार अहादीस के हाफ़िज़ थे। उनकी तसानीफ़ में तफ़सीर ग़रीबुल क़ुरआन, किताब अल मुफ़रद , किताब अल फ़ज़ाएल, किताब अल सिफ़्फ़ीन क़ाबिले ज़िक्र हैं। यह क़ारी फ़क़ीह लग़वी मोहद्दिस थे। इनहें हज़रत इमाम ज़ैनुल आब्दीन(अ.) और हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र , हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.) के सहाबी होने का शरफ़ हासिल था। १४१ हिजरी में इन्तेक़ाल किया।

हज़रत सादिक़े आले मोहम्मद(स.) और इल्मे जफ़र

हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.) को चूंकि नशरे उलूम का मौक़ा मिल गया था लेहाज़ा आपने इल्मी इफ़ादात के दरिया बहा दिये। आपको जहां दीगर उलूम में कमाल था और आपने मुख़तलिफ़ उलूम के नशर में कोशिश की है। इल्मे जफ़र में भी आप यकताए ज़माना थे और इस इल्म में भी आपकी तसानीफ़ हैं।

इल्मे जफ़र किसे कहते हैं इसके मुताअल्लिक़ " अलाब लौलैस मालूफ़ अल यसवा " किताब अल मन्जद के सफ़ा ९१ , तबा बैरूत में लिखते हैं। कि इल्मे जफ़र को इल्मे हुरूफ़ भी कहते हैं। यह ऐसा इल्म है कि इसके ज़रिये से हवादिसे आलम को मालूम कर लिया जाता है। मौलवी वहीदुज़्ज़मां अपनी किताब अनवारूल लुग़त सफ़ा १५, ब हवालए बहरे मुहीत लिखते हैं कि इल्मे जफ़र जो इल्मे तकसीर का दूसरा नाम है इससे मुराद यह है कि सायल के सवाल के हुरूफ़ में तग़य्युर व तबद्दुल करके हालात मालूम किये जायं। मजमउल बेहरैन में लफ़्ज़े जफ़र के मातहत लिखा है कि इल्म अल हुरूफ़ के उसूल पर हवादिसे आलम के मालूम करने का नाम इल्मे जफ़र है। तारीख़े आइम्मा बा हवालएतारीख़े इब्ने ख़लक़ान जिल्द,१,सफ़ा ८५ में है कि इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.) ने एक किताब कीमिया और जफ़र

और रमल पर लिखी थी।

(१) अल्लामा सय्यद अब्दुल हुसैन शरफ़उद्दीन अपनी किताब " मोअल्लेफ़ा अल शिया फ़ी सदरूल इस्लाम" तबा बग़दाद के सफ़ा ३६ में लिखते हैं कि जनाबे जाबिर जाफ़ेई का असली नाम और सिलसिलए नसब यह था। जाबिर बिन यज़ीद बिन हरस बिन अब्दुल ग़ौस बिनकआब बिन अल हरस बिन माविया बिन वाएल अल जाएफ़ी अल कूफ़ी था। उनकी तसानीफ़ में किताब अल तफ़सीर, किताब अल नवादर, किताब अल फ़ज़ाएल ,किताब अल जमल, किताब अल सिफ़्फ़ीन, किताब अल नहरवान, किताब मक़तल अमीरल मोमेनीन, किताब मक़तल अल हुसैन,ज़्यादा मशहूर है।

हज़रत सादिक़ आले मोहम्मद(स.) और इल्मे तिब

अल्लामा इब्ने बाबूया अल नफ़मी किताब अल ख़साएल जिल्द २, बाब १६, सफ़ा ९७ से ९९ तबा ईरान में तहरीर फ़रमाते हैं कि हिन्दोस्तान का एक मशहूर तबीब " मन्सूर दवानक़ी " के दरबार में तलब किया गया। बादशाह ने हज़रत से उसकी मुलाक़ात कराई। इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.) ने इल्मे तशरीह अल अजसाम और अफ़आल उल आज़ा के मुताअल्लिक़ उससे उन्नीस सवलात किये। वह अगरचे अपने फ़न में पूरा कमाल रखता था लेकिन जवाब न दे सका। बिल आख़िर कलमा पढ़ कर मुसलमान हो गया। अल्लामा इब्ने शहरे आशोब लिखते हैं कि इस तबीब से हज़रत ने २०, सवालात किये थे और इस अन्दाज़े से पुर अज़ मालूमात तक़रीर फ़रमाई कि वह बोल उठा "मिन एना लका हाज़ा अल इल्म" ऐ हज़रत यह बे पनाह इल्म आपने कहां से हासिल फ़रमाया?

आपने कहा कि मैंने अपने बाप दादा से। उन्होंने मोहम्मद(स.) से उन्होंने जिबरईल, उन्होंने ख़ुदा वन्दे आलम से इसे हासिल किया है। जिसने अजसाम व अरवाह को पैदा किया है। " फ़क़ाला अल हिन्दी सदक़त " उसने कहा बे शक आपने सच फ़रमाया। इसके बाद उसने फिर कलमा पढ़ कर इस्लाम क़ुबूल कर लिया और कहा । " इन्नका आलम अहले ज़माना " मैं गवाही देता हूँ कि आप अहदे हाज़िर के सबसे बड़े आलिम हैं।

(मनाक़िब इब्ने शहरे आशोब जिल्द १ सफ़ा ४५ तबा बम्बई)

हज़रत सादिक़ आले मोहम्मद(स.) का इल्मुल क़ुरआन

मुख़्तसर यह कि आपके इल्मी फ़यूज़ व बरकात पर मुफ़स्सल रौशनी डालनी तो दुशवार है जैसा कि मैंने पहले अर्ज़ किया है। अलबत्ता सिर्फ़ यह अर्ज़ कर देना चाहता हूँ कि इल्मुल क़ुरआन के बारे में दमए साकेबा सफ़ा ४८७ पर आपका क़ौल मौजूद है। वह फ़रमाते है। ख़ुदा की क़सम मैं क़ुरआने मजीद को अव्वल से आख़िर तक इसी तरह पर

जानता हूँ। गोया मेरे हाथ में ज़मीन व आसमान की ख़बरें है और वह ख़बरें भी हैं जो हो चुकी हैं और हो रही हैं और हाने वाली हैं, और क्यों न हो जबकि कुरआने मजीद में है कि इस पर हर चीज़ अयां है। एक मक़ाम पर आपने फ़रमाया है कि हम अम्बिया और रसूलों के उलूम के वारिस हैं। (दमए साकेबा सफ़ा ४८८)

इल्म अल नुजूम

इल्म अल नुजूम के बारे में अगर आप के कमालात देखना हों तो कुतुबे तवाल का मुतालेआ करना चाहिये। आपने निहायत जलील उलेमाए इल्म अल नुजूम से मुबाहेसा और मुनाज़ेरा करके अंगुश्त बदन्दां कर दिया है। बेहारूल अनवार मनाक़िबे शहरे आशोब व दमए साकेबा वग़ैरा में आपके मनाज़िरे मौजूद हैं उलेमा का फ़ैसला है कि इल्मे नुजूम हक़ है लेकिन उसका सही इल्म आइम्मए अहले बैत के अलावा किसी को नसीब नहीं, यह दूसरी बात है कि हल्क़ा बगोशान मोअद्दते नूरे हिदायत से कसबे ज़िया कर लें।

इल्मे मन्तिक़ अल तैर

सादिके आले मोहम्मद(स.) दीगर आइम्मा की तरह मन्तिक़ अल तैर से भी बाक़ायेदा वाक़िफ़ थे। जो परिन्दा या कोई जानवर आपस में बात चीत करता था उसे आप समझ लिया करते थे और ब वक़्ते ज़ुरूरत उसकी ज़बान में तकल्लुम फ़रमाया करते थे। मिसाल के लिये मुलाहेज़ा हों, किताबे तफ़सीरे लुबाब अल तावील जिल्द ५, सफ़ा ११३ व मआलम अल तन्ज़ील, सफ़ा ११३ अजायबुल क़स्स, सफ़ा १०५, नूरूल अनवार सफ़ा ३११, तबा ईरान में है कि सादिक़ आले मोहम्मद(स.) ने क़बरह नामी परिन्दा जिसको चकोर या चनडोल कहते हैं कि बोलते हुये असहाब से फ़रमाया कि तुम जानते हो यह क्या कहता है, असहाब ने सराहत की ख़्वाहिश की तो फ़रमाया यह कहता है।

“ अल्लाहुम्मा लान मबग़ज़ी मोहम्मद व आले मोहम्मद ”

खुदाया मोहम्मद व आले मोहम्मद(स.) से बुग़ज़ करने वालों पर लानत कर। **फ़ाख़्ता** की आवाज़ पर आपने कहा कि इसे घर में न रहने दो, यह कहती है कि **“ फ़क़्द तुम फ़क़्द तुम ”** खुदा तुम्हें नेस्तो नाबूद करे, वग़ैरा वग़ैरा।

हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.) और इल्म अल अजसाम

मनाक़िबे शहरे आशोब और बेहारूल अनवार जिल्द १४, में है कि एक ईसाई

ने हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.) से इल्मे तिब के बारे में सवालात करते हुये जिस्मे इन्सानी की तफ़सील पूछी। आपने इरशाद फ़रमाया कि खुदा वन्दे आलम ने इन्सान के जिस्म में १२ वसल, २४८ हड्डियां और तीन सौ साठ रगें ख़ल्क़ फ़रमाई हैं। रगें तमाम जिस्म को सेराब करती हैं। हड्डियां जिस्म को, गोश्त हड्डियों को और आसाब गोश्त को रोके रहते हैं।

सादिके आले मोहम्मद(स.) ने जन्नत में घर बनवा दिया

यह एक मुसल्लेमा हक़ीक़त है कि बेहिश्त पर अहले बैते रसूल(स.) का पूरा पूरा हक़ व इक़तेदार है। मुल्ला जामी लिखते हैं कि एक शख़्स ने हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.) को रवाना हज होते हुये कुछ दिरहम दिये और अर्ज़ की कि मैं हज को जाता हूँ। मेहरबानी फ़रमा कर मेरी वापसी तक एक मकान मेरी रहाईश का बनवा दीजिये गा। या ख़रीद फ़रमा दीजिये गा। जब वह लौट कर आयातो आपने फ़रमाया कि मैंने तेरे लिये जन्नत में एक घर ख़रीद लिया है। जिसके हुदूदे अरबा यह हैं। हुदूदे अरबा बताने के बाद आपने एक नविशता दिया और वह घर चला गया। वहां पहुँच कर बीमार हुआ, और मरने लगां वसीयत की कि नविशता मेरे कफ़न में रखा जाय। चुनांचे लोगों ने रख दिया। जब दूसरा दिन हुआ तो क़ब्र पर वही परचा मिला । **“ व बर पुश्त दे नविशता ”** कि **जाफ़र बिन मोहम्मद वफ़ा नमूद बान चे वायदा करदा बूद।**

इस परचे की पुश्त पर लिखा हुआ था कि सादिक़ आले मोहम्मद(स.) ने जो वायदा किया था, दुरूसत निकला और मुझे मकान मिल गया।

(शवाहेदुन नबूवत, सफ़ा १६२)

दस्ते सादिक़ (अ.) में एजाज़े इब्राहीमी

पैग़म्बरे इस्लाम(स.) की मशहूर हदीस है कि मेरे अहले बैत मेरे अलावा तमाम अम्बिया से बेहतर हैं। इसका मतलब यह हुआ कि जो मोजेज़ात अम्बिया कराम दिखाया करते थे वह आपके अहले बैत भी दिखा सकते थे। यह दूसरी बात है कि उन्हें तहद्दी के तौर पर असबाते नबूवत के लिये दुनिया वालों को दिखाना ज़ुरूरी था, लेकिन अहले बैत को ऐसे मोजेज़ात दिखलाना ज़ुरूरी न हो, लेकिन अगर किसी वक़्त कोई इस क़िस्म का मोजेज़ा तलब करे तो वह शाने इस्लाम दिखलाने के लिये मोजेज़ा दिखला दिया करते थे।

मुल्ला जामी लिखते हैं। कि एक शख़्स ने सादिक़ आले मोहम्मद(स.) से पूछा कि हज़रत इब्राहीम(अ.) ने जो चार जानवरों को ज़िन्दा किया था तो वह परिन्दें हम जिन्स

थे या मुख़्तलिफ़ अजनास के थे। हज़रत ने ताअज्जुबाना सवाल को सुन कर फ़रमाया। देखो हज़रत इब्राहीम(अ.) ने इस तरह जिन्दा किया था। यह फ़रमा कर आपने आवाज़ दी **ताऊस** यहां आ। **ग़राब** यहां आ। **बाज़** यहां आ। **कबूतर** यहां आ। यह तमाम परन्दे हज़रत के पास आ गये। आपने हुक्म दिया। इन्हें ज़ब्हा करके इनके गोश्त को खूब पीस डालो। उसके बाद आपने सर हाथ में लेकर एक एक को आवाज़ दी। आवाज़ के साथ गोश्त उड़ा और अपने अपने सर से जा लगा और पहरन्दा फिर मुकम्मल हो गया। यह देख कर सायल हैरान रह गया। (शवाहेदुन नबूवत सफ़ा १६१ तबा लखनऊ, १६०५ ई०)

ख़तो किताबत और दरख़्वास्त के बारे में आपकी हिदायत

बिस्मअल्लाह के लिखने का तरीक़ा :-हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.) ने छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी चीज़ों के बारे में हिदायत फ़रमाई है। उसूले काफ़ी, सफ़ा ६६०, तबा ईरान में है कि जब कुछ भी लिखो तो " **बिस्म अल्लाह अर रहमान अर रहीम** " से शुरू करो , और देखो बिस्मअल्लाह को दन्दाने वाले " **सीन** " से लिखना, यानी बे बाद सीन इस तरह लिखना (सीन)

दरख़्वास्त लिखने का तरीक़ा

आप फ़रमाते हैं कि दाहेनी तरफ़ दावात रख कर दरख़्वास्त लिखो। इमाम शबलन्जी नूरूल अबसार तबा मिस्र के सफ़ा १३३ और अल्लामा मजलिसी हुलयतुल मुत्तक़ीन में लिखते हैं कि सादिक़ आले मोहम्मद(स.) ने फ़रमाया है कि जब कोई दरख़्वास्त दो , और चाहो कि वह ज़ुरूर मंज़ूर हो जाय तो उसके सर नामे पर लिखो।

بسم الله الرّحمٰن الرّحيم

" **वआदअल्लाह अल साबेरीन अल मख़रज मिम्मा यकराहून वल रिज़्क मिन हैस ला यसतबून जाअलना अल्लाह व इय्या कुम मिनल लज़ीना ला ख़ौफ़ुन अलैहिम वला हुम यह ज़नून** " अल्लामा अरबली किताब कशफ़ुल गम्मा के सफ़ा ६७ पर इसी तरीक़ए तहरीर को लिखने के बाद लिखते हैं। कि बर सरे रूक़ा ब क़लम बे मदाद ब नवीस यानी यह इबारत बिला रौशनाई के बर सर दरख़्वास्त लिखनी चाहिये।

(तहज़ीबुल इस्लाम, तरजुमा हुल्यतुल मुत्तक़ीन सफ़ा १८५ तबा कराची)

ख़त और जवाबे ख़त

उसूले काफ़ी ,सफ़ा ६६० में है कि " **काला अल सादिक़ (अ.) रद्दे जवाब अल किताब वाजेबून को जोबे रद्देस सलाम** " हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.) फ़रमाते हैं कि ख़त का जवाब देना इसी तरह वाजिब है जिस तरह सलाम का जवाब देना वाजिब है।

हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.) की अन्जाम बीनी और दूर अन्देशी

मुवर्रेख़ीन लिखते हैं कि जब बनी अब्बास इस बात पर आमादा हो गये कि बनी उमय्या को ख़त्म कर दें। तो उन्होंने यह ख़याल किया कि आले रसूल(स.) की दावत का हवाला दिये बग़ैर काम चलना मुशकिल है। लेहाज़ा वह इमदाद व इन्तेक़ामे आले मोहम्मद (स.) की तरफ़ दावत देने लगे और यही तहरीक करते हुये उठ खड़े हुये, जिससे आम तौर पर आले मोहम्मद(स.) यानी बनी फ़ात्मा की अयानत समझी जाती थी। इसी वजह से शियाने बनी फ़ात्मा को भी उनसे हमदर्दी पैदा हो गयी थी और वह उनके मद्दगार हो गये थे, और इसी सिलसिले में अबू सलमा जाफ़र बिन सुलैमान कूफ़ी आले मोहम्मद की तरफ़ से वज़ीर तजवीज़ किये गये थे। यानी यह गुमाशते के तौर पर तबलीग़ करते थे। उन्हें इमामे वक़्त की तरफ़ से कोइ इजाज़त हासिल न थी। यह बनी उमय्या के मुक़ाबले में बड़ी कामयाबी से काम कर रहे थे। जब हालात ज़्यादा साज़गार नज़र आये तो उन्होंने इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.) और अबू मोहम्मद अब्दुल्लाह इब्ने हसन को अलग अलग एक एक ख़त लिखा कि आप यहां आ जायं ताकि आपकी बैअत की जाय।

क़ासिद अपने अपने ख़ुतूत ले कर मन्ज़िल तक पहुँचे, मदीने में जिस वक़्त क़ासिद पहुँचा वह रात का वक़्त था। क़ासिद ने अर्ज़ की मौला मैं अबू सलमा का ख़त लाया हूँ। हुज़ूर उसे मुलाहेज़ा फ़रमा कर जवाब इनायत फ़रमायें।

यह सुन कर हज़रत ने चिराग़ तलब किया और ख़त ले कर उसी वक़्त पढ़े बग़ैर नज़रे आतश कर दिया और क़ासिद से फ़रमाया कि अबु सलमा से कहना कि तुम्हारे ख़त का यही जवाब था।

अभी वह क़ासिद मदीने पहुँचा भी न था कि ३, रबीउल अव्वल, १३२ हिजरी को जुमे के दिन हुकूमत का फ़ैसला हो गया ओर सफ़ाह अब्बासी ख़लीफ़ा बनाया जा चुका था।

(मरवजुल ज़हब मसूदी बर हाशिया, कामिल , जिल्द ८, सफ़ा ३०, तारीख़ुल ख़ुल्फ़ा, सफ़ा २७२, हैवातुल हैवान, जिल्द १, सफ़ा ७४, तारीख़े आइम्मा, सफ़ा ४३३)

ख़लीफ़ा मन्सूर दवानेक़ी और हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.)

मुवर्रिख़ अबुल फ़िदा लिखता है कि अबुल अब्बस सफ़ाह बिन अब्दुल्लाह अब्बासी ने चार साल छै माह(४,साल ६ महीने) हुकूमत कर के ज़िल्हिज्जा १३६ हिजरी मुताबिक़ ७५४ ई० में इन्तेक़ाल किया और वक़्त वफ़ात अपने भाई मन्सूर को अपना वली अहद क़रार दिया। जिस वक़्त सफ़ाह ने इन्तेक़ाल किया मन्सूर हज को गया हुआ था। १३७ हिजरी में उसने वापस आकर एनाने हुकूमत संभाल ली।

जस्टिस अमीर अली लिखते हैं कि मन्सूर बनी अब्बास का वह बादशाह है जिसकी आक़ेबत अन्देशी और दूर बीनी से इस ख़ानदान को इतना क़याम और इस क़द इक़्तेदार हासिल हुआ कि दुनियावी सलतन्त जाने के बाद भी अरसे तक ख़ानदानी वक़ार बाक़ी रहा।

मुवर्रिख़ ज़ाकिर हुसैन लिखते हैं कि मन्सूर मुदब्बिर, मुन्तज़िम, मगर दग़ा बाज़, बे रहम, शक्की, वसवासी और सफ़्फ़ाक था। जिस पर उसे ज़रा भी शब्हा होता कि ज़ात या ख़ानदान के लिये मुज़िर साबित होगा, उसे हरगिज़ ज़िन्दा न छोड़ता। हज़रत अली(अ.) की औलाद के साथ जो ज़ुल्म उसने किये हैं। उन्हींने अब्बासी तारीख़ के सफ़ों को सब से ज़्यादा सियाह किया है। उसी ने अलवियों और अब्बासियों में अदावत का बीज बोया। बड़ा कंजूस था। एक एक दांग पर जान देता था। इसी लिये उसे दवानेक़ी कहते हैं। हज़रत इमाम हसन(अ.)और इमाम हुसैन(अ.) की औलाद अगरचे जुम्ला दुनियावी उमूर से किनारा कश थी, लेकिन उनका रूहानी इक़्तेदार मन्सूर के लिये निहायत ही तकलीफ़ देह था और ख़्वाम-ख़्वाह उनकी तरफ़ से उसे खटका लगा रहता थां यह सादात से पूरी दुश्मनी करता था। उसने बनी हुसैन(अ.) की जायदातें ज़ब्त कीं और बहुत से सादात क़त्ल किये, बहुतों को ज़िन्दा दीवारों में चुनवा दिया। इमाम मालिक को इसी लिये ताज़याने लगवाये कि उन्होंने एक मौक़े पर सादात की हिमायत की थी। इमाम अबू हनीफ़ा को इसी लिये क़ैद किया कि उन्होंने इब्तेदा में ज़ैद शहीद की बैअत कर ली थी। फिर १५० ई० में उन्हें ज़हर दिलवा दिया। गर्ज़ कि उसके ज़माने में बेशुमार सादात क़त्ल हुये औरबहुत से क़ैद ख़ानों में सड़ गये और ज़िन्दान के ज़हरीले बुख़ारात की वजह से मर गये। हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.) के साथ भी उसका रवय्या इसी अन्दाज़ का था। हालांकि आपने और आपसे पहले आपके वालिदे माजिद हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र(अ.) ने इसे ब इल्मे इमामत हाकिम होने की ख़ुश ख़बरी दी थी और उस वक़्त उसने उनकी मदह सराई की थी। (सवाएक़े मोहर्रेक़ा सफ़ा १२१)

मुल्ला जामी और इमाम शबलन्जी लिखते हैं कि मंसूर अब्बासी का एक मुक़र्रब बारगाह नाक़िल है कि मैंने एक दिन मन्सूर को मुताफक्किर देख कर सबबे तफ़्क्कुर दरयाफ़्त

किया, मनसूर ने कहा कि मैंने अलवियों की जमाएते कसीर को फ़ना कर दिया। लेकिन उनके पेशवाको अब तक बाक़ी रखाहै। मैंने पूछा वह कौन है। मन्सूर ने कहा " जाफ़र बिन मोहम्मद(स.) " मैंने अर्ज़ की जाफ़र इब्ने मोहम्मद तो ऐसे शख्स हैं जो हमेशा इबादत और यादे खुदा में मशगूल रहते हैं। दुनियाँ से कुछ तअल्लुक़ नहीं रखते, मन्सूर ने कहा जानता हूँ कि तू दिल में इनकी इमामत का ख़्याल रखता है, मगर मैंने क़सम खाई है कि रात होने से पहले ही इनकी तरफ़ से मुतमईन हो जांऊगा। यह कह कर जल्लाद को हुक्म दिया कि जब जाफ़र बिन मोहम्मद को लोग हाज़िर करें और मैं अपने सर पर हाथ रखूँ ,तो फ़ौरन उनको क़त्ल कर देना ,थेड़ी देर के बाद हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.) तशरीफ़ लाए वह उस वक़्त कुछ पढ़ रहे थे। जब मन्सूर की नज़र उन पर पड़ी तो कांपने लगा और इस्तेक़बाल करके उनको अपनी मस्नद पर बिठा लिया उसके बाद पूछा कि या बिन रसूल अल्लाह (स.) आपके तकलीफ करने की क्या वजह हुई। उन्होंने फ़रमाया तलब किए जाने पर आया हूँ। मन्सूर ने कहा कि अगर कोई हाजत हो तो बयान कीजीऐ। हज़रत ने फ़रमाया ,यही हाजत है कि आइन्दा मेरी तल्बी न हो , जब मैं चाहूं आऊँ ,यह कह कर वहाँ से चले गए। (शवाहिद अल नबूवत सफ़ा १८८ वसीलए नजात, नुरूल अबसार १४६ मजानी अदब जिल्द २ सफ़ा १८२ इरशाद मुफ़ीद सफ़ा ४१५)।

मन्सूर अब्बासी की सादात कशी

जब बनी उम्मय्या की सल्तनत का ज़माना ख़त्म हुआ ,तो बनी अब्बास की हुकूमत का दौर चला। यह लोग बनी उम्माय्या से भी ज़्यादा सादात के दुश्मन साबित हुए। इनके ज़माने में तो सादात पर वह तबाही आई कि इसके बयान से बदन पर रोंगटे खड़े होते हैं। इस सिलसिलए अब्बासी का दूसरा बादशाह मन्सूर अब्बासी हुआ है। ख़ुदा की पनाह इसके मज़ालिम का क्या ठिकाना है। हज़ारहा सय्यदों को इस ज़ालिम ने क़तल कराया। इनके खून के गारों से दीवारें तामीर कराईं यही नहीं बल्कि बहुत से बेगुनाहों को ज़िन्दा दीवारों में चुनवा दिया। बीख़ों और बुन्यिादों में दबवा दिया । क़ैद ख़ाने में सड़ा, सड़ा कर मार दिया। इसके ज़माने में शिया या सय्यदों का शुब्हा हो जाना, क़तल के लिए काफ़ी था। सबसे ज़्यादा तबाही इस ज़ालिम के दौरे सल्तनत में हुसैनी सादात पर आई। ख़्याल करो कि नाज़ुक दौर में हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.) ने किस ऐहतियात से अपनी ज़िन्दगी बसर की होगी। ज़ुल्म के बर्दाश्त करने की भी कोई हद होती है। सालहा सालसे ग़रीब सादात एक अजीब बे कसी की हालत में बसर कर रहे थे। आख़िर उनके सीनों में भी दिल था और एक बहादुर ख़ानदान का खून रगों में दौड़ा हुआ था। रफ़्ता रफ़्ता उनको भी जोश आ गया। इमाम हसन(अ.) की औलाद में उनके पोते जनाबे अब्दुल्लाह महज़ एक बड़े नेक दिल और जोशीले

सय्यद थे। उन्होंने चाहा कि सादात को अब्बासियों के मज़ालिम से किसी तरह छुड़ायें। इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.) ने उनको इस इरादे से रोकना चाहा मगर उनका जोश कम नहीं हुआ। और लोगों को मन्सूर के ख़िलाफ़ उभारने लगे। उनके दो बेटे थे। एक का नाम मोहम्मद नफ़से ज़किया और दूसरे का इब्राहीम था। इन दोनों ने इस कोशिश में पूरा हिस्सा लिया। मन्सूर को जब उनके इरादों का हाल मालूम हुआ तो उसने सादाते हुसैनी की गिरफ़्तारी के लिये एक फ़ौज भेजीं जिनमें सत्तर पच्हत्तर आदमी, कमसिन बच्चे, नौजवान और बूढ़े सब शामिल थे, गिरफ़्तार कर लिये गये। लिखा है कि जब यह सित्म रसीदा क़ाफ़ला मदीने से चला तो उनकी बेकसी व मजबूरी, बे गुनाही व बे क़ुसूरी का ख़याल करके हर एक अपने मक़ाम पर रोता और बेचैन नज़र आता था। आह व साहेबाने फ़ज़लो कमाल जो सूरतो सीरत में बे मिसल व बे नज़ीर थे जिनका एक एक जवान हिम्मत व दिलेरी में तमाम अरब में मशहूर था। गले में तौक़ पहने और हाथें में दोहरी जंजीरें डालें, शर्मो हिजाब से गरदनें नीचें किये लाग़र ऊंटों की पीठों पर बैठे हुये मदीनए रसूल(स.) से निकल रहे थे।

तारीख़े कामिल में है कि जब इमाम जाफ़रे सादिक़(अ.) को कुन्बे की गिरफ़्तारी का हाल मालूम हुआ तो बेचैन हो गये। मस्जिदे रसूल के दरवाज़े पर खड़े थे कि मज़लूम सादात का क़ाफ़ेला इधर से गुज़रा। इमाम(अ.) ने जब यह हाल देखा कि किसी के पैर में ज़न्जीर है किसी के गले में तौक़, किसी की मुशकें कसी हैं किसी के पैर ऊँट के पेट से बंधे हुये है, तो आप ज़ार, ज़ार रोने लगे और फ़रमाया ख़ुदा की क़सम आज के बाद से हुरमते हरमे ख़ुदा और रसूल महफ़ूज़ न रहेगी। ख़ुदा की क़सम क़ौमे अन्सार से जो मोहायदा हज़रत रसूले ख़ुदा (स.) ने लिया था यानी उनकी औलाद और उनकी हिफ़ाज़त को वह भूल गये। ख़ुदा वन्दा तू अन्सार से सख़्त मोआख़ेज़ा करना। हज़रत की परेशानी का उस वक़्त यह आलम था कि रिदाये मुबारक दोशे अक़दस से गिर गई थी। इस वाक़िये का आप पर इतना गहरा असर पड़ा कि आप उसी रोज़ से बीमार पड़ गये और तक़रीबनबीस रोज़ तक तप(बुख़ार) की वह शदीद तकलीफ़ उठाई कि जान के लाले पड़ गये। हज़रत ने चाहा कि अपने चचा हज़रते अब्दुल्लाह महज़ तक जायें ओर तसल्ली व दिलासा दें मगर एक संगदिल ने वहां तक न जाने दिया।

मोहम्मद नफ़से ज़किया व इब्राहीम हज़रत अब्दुल्लाह महज़ उस ज़माने में रूपोश हो गये थे और सहराई अरबों का भेस बदल कर रहने लगे थे। चुनांचे उसी भेस में वह छुप कर एक मंज़िल पर जनाबे अब्दुल्लाह महज़ से मिले। उन्होंने बेटों से कहा कि इस ज़िल्लत की ज़िन्दगी से इज्ज़त की मौत बेहतर है। मन्सूर उस ज़माने में कूफ़े में था। क़ैदी उसके सामने पेश हुये। उसने सबको क़ैदे सख़्त का हुक्म दिया जहां न रौशनी का गुज़र था न ताज़ा हवा का। चनद रोज़ बाद ही यह लोग मरने लगे। क़यामत यह आई कि उनके मुरदों को भी क़ैद ख़ाने से बाहर न निकाला गया। वहीं मरते और सड़ते रहे। इससे वहां की हवा और ज़्यादा

गन्दी हो गई और एक ऐसी वबा फैली कि हर रोज़ दो चार मरने लगे। हक़ीक़त यह है कि सादात कुशी में बनी अब्बास के मज़ालिम बनी उमय्या से भी कहीं ज़्यादा बढ़ गये थे। बनी उमय्या ने अगर ऐसा किया तो ग़ैर हो कर क़दीमी दुश्मन बन कर यह तो अपने कहलाते थें माले दुनिया की तमा और हुकूमत की हिर्स ने उनकी आंखों पर ऐसा परदा डाला कि नेक व बद की तमीज़ बाक़ी न रही और दुनिया के पीछे आख़ेरत को बिलकुल भूल गये। बहर हाल ग़रीब सादात ने इस क़ैद ख़ाने में बड़ी इबरत नाक हालत में ज़िन्दगी बसर की लेकिन इस हालत में भीख़ुदा की याद से ग़ाफ़िल न रहे। शबो रोज़ तिलावते कलामे पाक से काम रहता था। क़ैद ख़ाने की तारीकी में दिन के अवक़ात का चूंकि पता न चलता था, इस लिये अपनी तिलावत को पांच हिस्सों में तक़सीम कर दिया था और उन्हीं से अवक़ाते नमाज़ का पता लगाते थे। उनको इस क़ैद ख़ाने में कई कई वक़्त फ़ाक़े से गुज़र जाते थे और कोई पुरसाने हाल न था। बल्कि खाने का क्या ज़िक्र पानी भी ज़ुरूरत भर न मिलता था।

अब इधर का हाल सुनों, मोहम्मद नफ़से ज़किया ने बहुत जल्द एक फ़ौज फ़राहम करके मन्सूर पर चढ़ाई की और मदीने पर क़ब्ज़ा कर लिया। मगर चनदही रोज़ बाद मन्सूर की फ़ौजों ने फिर आ घेरा। मोहम्मद उनके मुक़ाबले की ताब न ला सके। आख़िर शहीद हो गये। उनका सर काट करके मनसूर के पास भेज दिया गया। इस ज़ालिम ने इस सर को एक ख़ान में रख कर क़ैद ख़ाने में उनके बूढ़े बाप अब्दुल्लाह महज़ के पास भेज दिया। जनाबे अब्दुल्लाह उस वक़्त नमाज़ पढ़ रहे थे कि सर मुसल्ले के पास रखा गया। नमाज़ से फ़ारिग़ हो कर जे देखा तो जवान बेटे का सर रखा हुआ है। बे साख़्ता एक आह सीने से निकली, सर को छाती से लगा लिया और कहने लगे, बेटा, शाबाश तुम बेशक उन्हीं वायदा वफ़ा करने वालों में से हो जिनकी तारीफ़ ख़ुदा ने क़ुरआन में की है। बेटा तुम ऐसे जवान थे कि तुम्हारी तलवार ने तुमको ज़िल्लत से बचा लिया और तुम्हारी परहेज़गारी ने तुम को गुनाहों से महफ़ूज़ रखा। फिर सर लाने वाले से कहा कि मन्सूर से कह देना कि हम तो मक़तूल हो ही चुके , अब तुम्हारी बारी है। अब हमारा और तुम्हारा इन्साफ़ ख़ुदा के यहां होगा। यह कह के एक ठन्डी सांस भरी और दम निकल गया।

अब दूसरे भाई यानी इब्राहीम का हाल सुनो, यह भी मुद्दतों इधर उधर घूमते फिरे आख़िर उन्होंने भी एक फ़ौज जमा करके मिस्र की हुकूमत हासिल कर ली। जिस ज़माने में नफ़से ज़किया मन्सूर से लड़ रहे थे। उन्होंने भाई की मदद को आना चाहा, मगर मन्सूर ने रास्ते बन्द कर रखे थे। मुम्किन न हुआ। मोहम्मद पर फ़तेह पाने के बाद मन्सूर ने इब्राहीमका भी ख़ात्मा कर दिया। सूरत यह हुई कि इब्राहीम अपने लशकर को साथ लिये कूफ़े की तरफ़ रवाना हुये। मक़ाम " अल अहमरा " में ख़ेमा ज़न थे कि मन्सूर का लशकर भी वहां पहुंच गया। दोनों लशकरों में सख़्त मुक़ाबला हुआ। सैकड़ों आदमी मारे गये। इब्राहीम की फ़तेह के आसार नुमायां हो चुके थे कि यका यक मामेला दिगर गूँ हो गया और इब्राहीम

की फ़ौज ने भागते हुये दुश्मन का पीछा किया मगर नेक दिल इब्राहीम को उनकी तबाह हालत पर रहम आ गया, अपने सिपाहियों को ताअक्कुब से रोक दिया। मन्सूर के सरदार " ऐनी " ने इस मौक़े से फ़ायदा उठाया और अपनी तितर बितर कुव्वत को जमा करके फिर एक दम हमला कर दिया। इब्राहीम की फ़ौज को इस बलाए नागहानी की क्या ख़बर थी। वह अपनी फ़तह देख कर अपनी कमरें खोल चुके थे कि शिकस्त खाई हुई दुश्मन की फ़ौज फिर लौट पड़ी। अब इब्राहीम को मुक़ाबला करना दुश्वार हो गया। फ़ौज तितर बितर हो गई। मजबूरन तलवार ले कर खुद मुक़ाबले को निकल पड़े। देर तक हाशमी शुजाअत के जौहर दिखाते रहे। आख़िर कहां तक? दुश्मन ने चारों तरफ़ से घेर कर हलाक कर दिया। यह वाक़ेया २५ ज़ीक़ादा १४५ हिजरी का है। इब्राहीम वह शख़्स थे कि पूरे पांच बरस रूपोश रहे थे और मन्सूर बा वजूद इतनी कुदरतो ताक़त के किसी तरह उनको गिरफ़तार न कर सका था।

इब्राहीम और नफ़्से ज़किया के क़त्ल होने के बाद भी मन्सूर के मज़ालिम सादात पर कम न हुये, जहां जिसको पाया बे क़त्ल किये न छोड़ा, उस ज़माने में सादात की वह तबाही हुई कि बयान में नहीं आ सकती। अल्लामा मजलिसी लिखते हैं कि मन्सूर के ज़माने में बे शुमार औलादे अली(अ.) शहीद किये गये और बहुतों को दीवार में चुनवा दिया गया। मन्सूर उस ज़माने में बग़दाद में महल बनवा रहा था। इसमें जहां औरों को ज़िन्दा चुनवा दिया था। एक हसनी नौजवान को भी चुनवाया, वह चूँकि बहुत ही हसीनो ख़ूबसूरत था, उसके चेहरे पर मेमार की नज़र पड़ी तो बे साख़्ता उसका दिल रोने लगा। हुक्म से मजबूर था। दीवार में चुनते चुनते उसे मौक़ा मिल गया। बोला कि ऐ फ़रज़न्दे रसूल(स.) आप घबरायें नहीं, मैं सांस के लिये सूराख़ छोड़े देता हूँ और रात को आकर निकाल लूंगा। चुनांचे वह रात की तारीकी में दीवार के क़रीब आया और ईंटें हटा कर उस नौनिहाले बाग़े रिसालत को दीवार से निकाल दिया और कहा कि आप सिर्फ़ इतना कीजिये कि इस तरह जिन्दा बच कर किसी तरफ़ चले जाइये कि आपका पता निशान न मिल सके और ऐ फ़रज़नदे रसूज(स.) आप अपने नाना मोहम्मद मुसतफ़ा (स.) से मेरी बख़्शिश की सिफ़ारिश फ़रमाइयेगा।

उन्होंने शुक्रिया अदा किया और कहा ऐ शेख़ अगर तुमसे हो सके तो मेरी ज़ुल्फ़ों को तराश ले और किसी रात को मेरी दुखिया मां के पास फ़लां महल्ले में जा कर उन्हें मेरी ज़ुल्फ़ें देकर कह दे कि मैं ज़िन्दा हूँ और अन्क़रीब मिलूंगा। इस मेमार का बयान है कि मैं उनकी ख़्वाहिश के मुताबिक़ उनके मकान पर पहुँचा तो उनकी माँ बैठी रो रही थीं। मैंने उन्हें सुबूते हयात के लिये ज़ुल्फ़ें देकर नवेदे ज़िन्दगी सुनाई और वापस चला आया। (जलाअल अयून सफ़ा २६६ तबा ईरान व सवानेह उमरी चहारदा मासूमीन, हिससा २, सफ़ा ७)

तवारीख़ में है कि जनाबे नफ़्से ज़किया के शहीद होने के बादसे जहां मज़ालिम का पूरा ज़ोर पैदा हो गया था। वहां इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.) भी महफ़ूज़ नहीं रह सके इमाम शब्लन्जी लिखते हैं कि उनको क़त्ल कराने के बाद मन्सूर ने इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.) को तलब किया और उनकी सख़्त तहदीद की और क़त्ल की खुले अल्फ़ाज़ में धम्की दी। (नूरूल अबसार सफ़ा १३३)

मंनसूर का हज और इमाम जाफ़रे सादिक़(अ.) पर बोहतान तराज़ी

हालात की रौशनी में हर बा फ़हम इसका अन्दाज़ा कर सकता है कि हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़(अ.) की ज़िन्दगी किस दौर से गुज़र रही थी और मन्सूर किस ताक में था और किस तरह बहाना तलाश कर रहा था।

तारीख़े हबीब उस सियर में है कि १४४ हिजरी में मन्सूर अब्बासी हज के लिये गया। मन्सूर ने हज से फ़राग़त की तो एक शख़्स ने उससे कहा कि इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.) तुम्हारे ख़िलाफ़ लोगों को भड़काते और उकसाते हैं। उसने इमाम(अ.) को बुला कर उनसे कहा कि मुझे ऐसा मालूम हुआ है कि आप मेरी हुकूमत के ख़िलाफ़ प्रोपेगन्डा करते और लोगों को उकसाते और भड़काते हैं। आपने इरशाद फ़रमाया ऐ बादशाह यह बिल कुल ग़लत है और तुझे मेरे कहने पर यक़ीन न आये तो तू उस शख़्स को मेरे सामने तलब कर मन्सूर ने उसे बुलाया। आपने फ़रमाया कि तूने मुझ पर क्यों बोहतान बांधा है। उसने कहा कि मैंने सच कहा है। इमाम (अ.) ने फ़रमाया कि क्या तू क़सम खा कर कह सकता है। उसने कहा हां, फिर उसने खुदा की क़सम खाई। आपने कहा इस तरह नहीं जिस तरह मैं कहूँ। उस तरह क़सम खा। चुनांचे आपने फ़रमाया कि अपनी ज़बान से यह कहकर क़सम खा कि " बरत मिन हौल अल्लाह " मैं खुदा की कुव्वत व ताक़त से दूर हट कर अपने भरोसे पर क़सम खाता हूँ। उसने पहले तो हल्का सा इन्कार किया फिर वह क़सम खा गया। उसका नतीजा यह हुआ कि वह उसी जगह गिर कर हलाक हो गया।

(सवाएक़े मोहर्रेक़ा, सफ़ा १२० तबा मिस्र)

इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.) का दरबारे मन्सूर में एक तबीबे हिन्दी से तबादलए ख़यालात

अलमा रशीदउद्दीन अबू अब्दुल्लाह मोहम्मद बिन अली इब्ने शहरे आशोब माज़न्द्रानी अल मतूफ़ी ५८८, हिजरी ने दरबारे मन्सूर का एक अहम वाक़ेया नक़्ल फ़रमाया है। जिसमें मुफ़स्सल तौर पर यह वाज़े किया गया है कि एक तबीब जिसको अपनी क़ाबलियत पर बड़ा भरोसा और ग़ुरूर था। वह इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.) के सामने किस तरह सिपर अन्दाख़्ता हो कर आपके कमालात का मोतरिफ़ हो गया। हम मौसूफ़ की अरबी इबारत का तरजुमा अपने फ़ाज़िल मआसर के अल्फ़ाज़ में पेश करते हैं।

एक बार **हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़** (अ.) मन्सूर दवानक़ी के दरबार में तशरीफ़ फ़रमा थे। वहां एक तबीबे हिन्दी तिब की बातें बयान कर रहा था और हज़रत ख़ामोश बैठे सुन रहे थे। जब वह कह चुका तो हज़रत से मुख़ातिब होकर कहने लगा। अगर कुछ पूछना चाहें तो शौक़ से पूछें। आपने फ़रमाया, मै क्या पूछूँ, मुझे तुझ से ज़्यादा मालूम है। तबीब अगर यह बात है तो मैं भी कुछ सुनूँ। इमाम, जब किसी मर्ज़ का ग़लबा हो तो उसका इलाज ज़िद से करना चाहिये। यानी हार, गर्म का इलाज बारद, सर्द से, तर का ख़ुश्क से, ख़ुशक का तर से,और हर हालत में अपने ख़ुदा पर भरोसा रखे। याद रख मेदा तमाम बीमारियों का घर है और परहेज़ सौ दवाओं की एक दवा है। जिस चीज़ का इन्सान आदी हो जाता है उसके मिज़ाज के मुवाफ़िक़ और उसकी सेहत का सबब बन जाती है। तबीब :- बे शक आपने जो बयान फ़रमाया है असली तिब यही है। इमामः- यह न समझना चाहिये कि मैंने जो बयान किया है यह तिब की किताबें पढ़ कर हासिल किया है। बल्कि यह उलूम मुझको ख़ुदा की तरफ़ से मिले हैं। अब बता तू ज़्यादा इल्म रखता है या मैं। तबीबः- मैं इमाम :- अच्छा मैं चन्द सवाल करता हूँ उनका जवाब दे।

(१) आंसुओं और रूतूबतों की जगह सर में क्यों है? (२) सर पर बाल क्यों हैं। (३) पेशानी बालों से ख़ाली क्यों है? (४) पेशानी पर ख़त और शिकन क्यों हैं ? (५) दोनों पल्कें आंखों के ऊपर क्यों हैं ? (६) नाक दोनों आखों के दरमियान क्यों है ? (७) आंखें बादामी शक्ल की क्यों हैं ? (८) नाक का सूराख़ नीचे की तरफ़ क्यों है ? (९) मूँह पर दो होंठ क्यों बनाये गये हैं ? (१०) सामने के दांत तेज़ और दाढ़ें चौड़ी क्यों है और उन दोनों के बीच में लम्बे दांत क्यों हैं ? (११) दोनों हथेलियां बालों से ख़ाली क्यों है ? (१२) मरदों के दाढ़ी क्यों होती है ? (१३) नाख़ून और बालों में जान क्यों नहीं ? (१४) दिल सनोबरी शक्ल का क्यों है ?(१५) फ़ेफ़ड़े के दो टुकड़े क्यों है और वह अपनी जगह हरकत क्यों करता है ? (१६) जिगर की शक्ल मोहद्दब क्यों है ? (१७) गुरदे की शक्ल लोबिये के दाने की तरह क्यों होती है ?(१८) घुटने आगे को झुकते हैं पीछे को क्यों नहीं झुकते ? (१९) दोनों पावों के तलवे बीच से ख़ाली क्यों होते हैं ?

तबीबः- मैं इन बातों का जवाब नहीं दे सकता। **इमाम :-** ख़ुदा के फ़ज़्ल से मैं इन सब सवालों का जवाब जानता हूँ। **तबीब :-** बयान फ़रमाइये।

इमाम(अ.) :- (१) सर अगर आंसुओं और रूतूबतों का मरकज़ न होता तो ख़ुशकी की वजह से टुकड़े टुकड़े हो जाता। (२) बाल इस लिये सर पर हैं कि उनकी जड़ों से तेल वग़ैरा दमाग़ तक पहुंचता रहे और बहुत से दमागी अबख़रे निकलते रहें, दिमाग़ गरमी और सरदी से महफ़ूज़ रहे। (३) पेशानी बालों से इस लिये ख़ाली है कि इस जगह से आंखों में नूर पहुँचता है। (४) पेशानी में लकीरें इस लिये हैं कि सर से जो पसीना गिरे वह आंखों में न जा पाये। जब शिकनों में पसीना जमा हो तो इन्सान उसे पोंछ कर फ़ेक दे। जिस तरह

ज़मीन पर पानी जारी होता है तो गढ़ों में जमा हो जाता है। (५) पलकें इस लिये आंखों पर क़रार दी गईं हैं कि आफ़ताब की रौशनी इतनी उनपर पड़े जितनी ज़ुरूरत है और ब वक़्ते ज़ुरूरत बन्द हो कर आंखों की हिफ़ाज़त कर सके और सोने में मदद दे सकें, तुमने देखाहोगा कि जब इन्सान ज़्यादा रौशनी में बलन्दी की तरफ़ किसी चीज़ को देखना चाहता है तो हाथ आंखों के ऊपर रख कर साया कर लेता है। (६) नाक को दोनों आंखों के बीच में इस लिये क़रार दिया है कि मजमए नूर से रौशनी तक़सीम हो कर बराबर दोनों आंखों को पहुंचे। (७) आंखों को बादामी शक्ल का इस लिये बनाया है कि बा वक़्ते ज़ुरूरत सलाई के ज़रिये से दवा (सुरमा वग़ैरा) इसमें आसानी से पहुंच जाय,अगर आंख चौकोर या गोल होती तो सलाई का उसमें फिरना मुशिकल होता दवा उसमें ब खुबी न पहुंच सकती और बीमारी दफ़ा न होती। (८) नाक का सूराख़ नीचे को इस लिये बनाया कि दमाग़ी रूतूबतें आसानी से निकल सकें अगर ऊपर को होता तो यह बात न होती और दमाग़ तक किसी चीज़ की बू भी जल्दी न चहुंच सकती। (९) होंठ इस लिये मूंह पर लगाये गये कि जो रूतूबतें दमाग़ से मूंह में आयें वह रूकी रहें और खाना भी इन्सान के इख़्तेयार में रहे। जब चाहे फेकें और थूक दे। (१०) दाढ़ी मरदों को इस लिये दी कि मर्द औरत में तमीज़ हो जाय। (११) अगले दांत इस लिये तेज़ हैं कि किसी चीज़ का कांटना सहल हो और दाढ़ों को चौड़ा इस लिये बनाया कि ग़िज़ा पीसना और चबाना आसान हो। इन दोनों के दरमियान लम्बे दांत इस लिये बनाये कि दोनों के इस्तेहकाम के बाएस हों। जिस तरह मकान की मज़बूती के बाएस सुतून (खम्बे) होते हैं। (१२) हथेलियों पर बाल इस लिये नहीं कि किसी चीज़ को छूने से इसकी नरमी, सख़्ती, गरमी और सर्दी वग़ैरा आसानी से मालूम हो जाय। बालों की सूरत में यह बात हासिल न होती। (१३) बाल और नाखूनों में जान इस लिये नहीं कि इन चीज़ों का बढ़ना बुरा मालूम होता है और नुक़्सान देह है, अगर इनमें जान होती तो काटने में तकलीफ़ होती (१४) दिल सनोबरी शक्ल यानी सर पतला और दुम चौड़ी(निचला हिस्सा) इस लिये है कि आसानी से फ़ेफ़ड़े में दाख़िल हो सके और उसकी हवा से ठंडक पाता रहे ताकि उसके बुखारात दमाग़ की तरफ़ चढ़ कर बीमारिया पैदा न करें। (१५) फ़फ़ड़े के दो टुकड़े इस लिये हुये कि दिल उनके दरमियान रहे और वह उसको हवा दें। (१६) जिगर मोहद्दब इस लिये हुआ कि अच्छी तरह मेदे के ऊपर जगह पकड़े और अपनी गरानी व गरमी से ग़िज़ा को हज़्म करे। (१७) गुरदा लोबिये के दाने की शक्ल का इस लिये हुआ कि (मनी) यानी नुत्फ़ा इन्सानी पुश्त की जानिब से इसमें आता है और उसके फैलने और सुकड़ने की वजह से आहिस्ता आहिस्ता निकलता है जो सबबे लज़्ज़त है। (१८) घुटने पीछे की तरफ़ इस लिये नहीं झुकते कि चलने में आसानी हो अगर ऐसा न होता तो आदमी चलते वक़्त गिर गिर पड़ता ,आगे चलना आसान न होता। (१९) दोनों पैरों के तलवों के बीच में जगह ख़ाली इस लिये है कि दोनों किनारों पर बोझ पड़ने से आसानी से पैर उठ सकें अगर ऐसा न होता और पूरे

बदन का बोझ पेरों पर पड़ता तो सारे बदन का बोझ उठाना दुशवार हो जाता।

यह जवाबात सुन कर हिन्दोस्तानी तबीब (हकीम, वैद्य) हैरान रह गया और कहने लगा कि आपने यह इल्म किससे सीखा है। फ़रमाया अपने दादा से उन्होंने रसूले खुदा(स.) से हासिल किया और उन्होंने खुदा से सीखा है। उसने कहा।

" इन्ना अशहदोअन ला इला इल्लाह व अन मोहम्मदन रसूल अल्लाह व अब्दहू "

खुदा एक है और मोहम्मद उसके रसूल और अब्दे ख़ास हैं। " व इन्नका आला अहले ज़माना " और आप अपने ज़माने में सबसे बड़े आलिम हैं।

(मनाक़िब जिल्द५, सफ़ा ४६ तबा बम्बई व सवानेह चहारदा मासूमीन हिस्सा २, सफ़ा २५)

इमाम जाफ़रे सादिक़(अ.) को बाल बच्चों समैत जला देने का मन्सूबा

तबीबे हिन्दी से गुफ़्तुगू के बाद इमाम (अ.) का आम शोहरा हो गया और लागों के कुलूब पहले से ज़्यादा आपकी तरफ़ माएल हो गये। दोस्त और दुश्मन आपके इल्मी कमालात का ज़िक्र करने लगे। यह देख कर मन्सूर के दिल में आग लग गई। और वह अपनी शरारत के तक़ाज़ों से मजबूर हो कर यह मन्सूबा बनाने लगा कि अब जल्द से जल्द इन्हें हलाक कर देना चाहिये। चुनांचे उसने ज़ाहिरी क़द्रो मंज़िलत के साथ आपको मदीना रवाना करके हाकिमे मदीना हुसैन बिन ज़ैद को हुक्म दिया। " अन अहरक़ जाफ़र बिन मोहम्मद फ़ी दाराह "इमाम जाफ़रे सादिक़(अ.) को बाल बच्चों समैत घर के अन्दर जला दिया जाय। यह हुक्म पा कर वालिए मदीना चन्द गुन्डों के ज़रिये से रात के वक़्त जब कि सब महवे ख़्वाब थे आपके मकान में आग लगवा दी, और घर जलने लगा। आपके असहाब अगरचे उसे बुझाने की पूरी कोशिश कर रहे थे , लेकिन बुझने को न आती थी। बिल आख़िर आप उन्हीं शोलों में कहते हुये कि " अना इब्ने ईराक़ अल शरआ, अना इब्ने इब्राहीम अल ख़लील " ऐ आग मैं वह हूँ जिसके आबाव अजदाद ज़मीनो आसमान की बुनियादों के सबब हैं और मैं ख़लीले खुदा इब्राहीम नबी का फ़रज़न्द हूँ। निकल पड़े और अपनी अबा के दामन से आग बुझा दी। (तज़केरतुल मासूमीन सफ़ा १८१ ब हवाला उसूले काफ़ी आक़ाए कुलैनी अर रहमा)

१४७ हिजरी में मन्सूर का हज और इमाम जाफ़रे सादिक़(अ.) के क़त्ल का अज़्म बिल जज़्म

अल्लामा शिबलन्जी और अल्लामा मोहम्मद बिन तल्हा शाफ़ेई रक़म तराज़ हैं कि १४७ हिजरी में मन्सूर हज को गया। उसे चूंकि इमाम के दुश्मनों की तरफ़ से बराबर

यह ख़बर दी जा चुकि थी कि इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.) तेरी मुखालेफ़त करते रहते हैं। और तेरी हुकूमत का तख़्ता पलटने की कोशिश में हैं। लेहाज़ा उसने हज से फ़रागत के बाद मदीने का क़स्द किया ओर वहां पहुंच कर अपने ख़ास हमर्दद " **रबी** " से कहा कि जाफ़र बिन मोहम्मद को बुलवा दो , रबी ने वायदे के बावजूद टाल मटोल की। उसने फिर दूसरे दिन सख़्ती के साथ कहा कि उन्हें बुलाव। मैं कहता हूँ कि खुदा मुझे क़त्ल करे अगर मैं उन्हें क़त्ल न कर सकूँ। रबी ने इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.) की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ की, मौला आपको मन्सूर बुला रहा हैं और उसके तेवर बहुत ख़राब हैं। मुझे यक़ीन है कि वह इस मुलाक़ात में आपको क़त्ल कर देगा हज़रत ने फ़रमाया ! " ला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्ला अली-उल-अज़ीम " यह इस दफ़ा ना मुमकिन हैं ग़रज कि रबी हज़रत को लेकर हाज़िरे दरबार हुआ, मन्सूर की नज़र जैसे ही आप पर पड़ी तो आग बबूला हो कर बोला। " या अदू उल्लाह " ऐ दुश्मने खुदा तुमको एहले ईराक़ इमाम मानते है। और तुम्हें ज़कात अमवाल वग़ैरा देते हैं और मेरी तरफ़ उनका कोई ध्यान नहीं। याद रखो, मैं आज तुम्हें क़त्ल करके छोड़ूंगा और इसके लिये मैंने क़सम खा ली है। यह रंग देख कर इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.) ने इरशाद फ़रमाया। ऐ अमीर जनाबे सुलैमान(अ.) को अज़ीम सलतन्त दी गई तो उन्होंने शुक्र किया। जनाबे अय्यूब को बला में मुब्तिला किया गया तो उन्होंने सब्र किया। जनाबे यूसुफ़ पर ज़ुल्म किया गया तो उन्होंने ज़ालिमों को माफ़ कर दिया। ऐ बादशाह यह सब अम्बिया थे और उनहीं की तरफ़ तेरा नसब भी पहुंचता है तुझे तो उनकी पैरवी लाज़िम है यह सुन कर उसका गुस्सा ठन्डा हो गया। (नूरूल अबसार सफ़ा १३२, मतालेबुल सुवेल सफ़ा २७६)

हज़रत इमाम ज़ाफ़रे सादिक़ (अ.) की दरबारे मन्सूर में सातवीं बार तलबी

१४७, हिजरी में हज से फ़रागत के बाद जब मन्सूर अपने दारूल ख़िलाफ़ा में पहुंचा तो मुशीरों ने मौक़े से इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.) का ज़िक्र छेड़ा। मनसूर जो इसी दोरान में उनसे मिल कर आया था उसने फ़ौरन हुक्म दे दिया कि इमाम जाफ़रे सादिक (अ.) की तल्बी की जाय और उन्हें बुला कर मेरे सामने दरबार में पेश किया जाय। दावत नामा चला गया और इमाम (अ.) मदीने से चल कर दरबार में उस वक़्त पहुंचे जब उसे एक मक्खी सता रही थी और वह उसे बार बार हंका रहा था। वह मुँह पर बैठी थी और मन्सूर उसे दफ़ा करता था लेकिन वह बाज़ न आती थी। मन्सूर इमाम (अ.) की तरफ़ मुतवज्जे हो कर बोला, कि ज़रा यह तो बताईये कि खुदा ने मक्खी को क्यों पैदा किया है। हज़रत ने फ़रमाया ! " लैज़ल बेही अल जब्बारता " कि खुदा ने मक्खी इस लिये पैदा की है कि उसके ज़रिये से जाबिरों को ज़लील करे व सर कशों का सर झुकाये।

(नुरूल अबसार, सफ़ा १४४, मनाक़िब इब्ने शहरे आशोब जिल्द ३, सफ़ा ४०)

इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.) और दरबार के शेर

एक दिन का ज़िक्र है कि मन्सूर ने बाबुल से सत्तर जादूगरों को बुला कर दरबार में बैठाये हुये था और उनसे कह दिया था कि मैं अनक़रीब अपने एक दुश्मन को बुलाने वाला हूँ। वह जब यहां पर आये तो तुम उसके साथ कोई ऐसा करतब करना जिससे वह ज़लील हो जाय। वहां पहुँच कर आपने देखाकि सत्तर मसनवी शेर दरबार में बैठे हुये हैं। आपको ग़ुस्सा आ गया और आपने उन शेरों की तरफ़ मुतवज्जे हो कर कहा कि अपने बनाने वालों को निगल लो। वह नक़ली शेर की तसवीरें मुजस्सम हुईं और उन्होंने सब जादूगरों को निगल लिया, यह देख कर मन्सूर कांपने लगा। फिर थोड़ी देर के बाद बोला ऐ इब्ने रसूल अल्लाह(स.) इन शेरों को हुक्म दीजिये कि इन जादूगरों को उगल दें। आपने फ़रमाया यह नहीं हो सकता। अगर असाए मूसा ने सांपों को उगल दिया होता तो यक़ीन है कि यह भी उगल देते।

(दमए साकेबा जिल्द २, सफ़ा ५१३ बा हवालए शरह शाफ़िया अबी फ़रास)

इमाम(अ.) को दरबार में क़त्ल किये जाने का बन्दो बस्त

अल्लामा दहर शती ब हवालए किताब मशारिको अनवार अल्लामा तबरीसी रक़मतराज़ हैं कि मन्सूर अब्बासी जब आपकी रूहानियत से आजिज़ आ गया और किसी मरतबा क़त्ल करने में कामयाबी न हासिल कर सका तो उसने सवालिये अफ़राद तलाश किये जो कुछ जानते और पहचानते ही न थे। बिलकुल अल्लढ़ और क़ुन्दए ना तराश थे। उसने मालो दौलत दे कर इस अमर पर राज़ी किया कि जब इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.) की तरफ़ इशारा किया जाय तो वह उन्हें क़त्ल कर दें। प्रोग्राम मुरत्तब होने के बाद रात के वक़्त हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.) को बुलाया गया। आप तशरीफ़ लाये, हुक्म था कि बिल्कुल तन्हा तशरीफ़ लायें। आप अकेले आये। जब आप दरबार में दाख़िल हुये और उन लोगों की नज़रें आप पर पड़ीं जो तलवारें सूते हुये खड़े थे तो वह सब के सब तलवारें फेंक कर आपके क़दमों पर गिर पड़े। यह हाल देख कर मन्सूर ने कहा, इब्ने रसूल अल्लाह आप रात के वक़्त क्यों तशरीफ़ लाये हैं, आपने फ़रमाया कि तूने मुझे गिरफ़्तार कराके मंगवाया है। अब कहता है क्यों आयें हैं, उसने कहा मआज़ अल्लाह कहीं यह भी हो सकता है आप तशरीफ़ ले जायें और क़याम गाह में आराम फ़रमायें। आप वापस चले गये। वहां से मदीना तशरीफ़ ले गये। इमाम(अ.) के चले जाने के बाद उन लोगों से पूछा गया कि तुमने ख़िलाफ़

वरज़ी क्यों की और उन्हें क़त्ल क्यों नहीं किया। उन्होंने जवाब दिया कि यह तो वह इमाम ज़माना हैं जो हमारी शबो रोज़ ख़बर गीरी करता है और हमेशा हमारी अपने बच्चों की तरह परवर्रिश करते हैं। यह सुन कर मन्सूर डर गया और उसे ख़याल हुआ कि कहीं यह लोग मुझसे इसका बदला न लेने लगें। इसी लिये उन्हें रात ही में रवाना कर दिया। " सम क़त्ल बिल इसमा " फिर आपको ज़हर से शहीद करा दिया। (दमए साकेबा सफ़ा ४८१ जिल्द २, तबा नजफ़ अल्लामा अरबली का कहना है कि आपको क़ैद ख़ाने में ज़हर दिया गया। (कशफ़ुल ग़म्मा सफ़ा १००, रवायात से मालूम होता है कि आप को कई मरतबा ज़हर दिया गया। (जन्नातुल ख़ुलूद सफ़ा २८) बिल आख़िर आप इस आख़ेरी ज़हर से शहीद हो गये, जो अंगूर के ज़रिये से दिया गया था। (जलाउल अयून सफ़ा २६८)

हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.) की शहादत

उलेमाए फ़रीक़ैन का इत्तेफ़ाक है कि बतारीख़, १५ शव्वाल १४८ हिजरी ६५ साल की उम्र में आपने इस दारे फ़ानी से ब तरफ़े मुल्के जावेदानी रेहलत फ़रमाई। (इरशादे मुफ़ीद सफ़ा ४१३ आलाम अल वरा सफ़ा १५६ नूरूल अबसार सफ़ा १३२ मतालेबुल सुवेल सफ़ा २७७, यौमे वफ़ात दोशम्बा था और मक़ामे दफ़्न जन्नतुल बक़ी है।

अल्लामा इब्ने हजर अल्लामा सिब्ते इब्ने जौज़ी अल्लामा शिब्लन्जी अललामा इब्ने तल्हा शाफ़ेई तहरीर तराज़ हैं कि " माता मस्मूमन अय्यामल मन्सूर " मन्सूर के ज़माने में आप ज़हर से शहीद हुये।

(सवाएक़े मोहर्रेका सफ़ा १२१, ग़ाएतुल इख़्तेसार सफ़ा ६२, सहा अल अख़बार सफ़ा ४४, तज़किरए ख़वासुल उमत्ता,नूरूल अबसार सफ़ा १३३, अर हज्जुल मतालिब सफ़ा ४५०)

उलेमाए अहले तशीय का इत्तेफ़ाक़ है कि आपको मन्सूर दवानक़ी ने ज़हर से शहीद कराया था और नमाज़ हज़रत इमाम मूसीए काज़िम(अ.) ने पढ़ाई थी। अल्लामा कुलैनी और अल्लामा मजलिसी का इरशाद है कि आपको निहायत क़ीमती कफ़्न दिया गया और आपके मक़ामे वफ़ात पर हर शब चराग़ जलाया जाता रहा।

(किताब काफ़ी व जलाउल अयून मजलिसी सफ़ा २६६)

आपकी औलाद :- आपकी मुख़्तलिफ़ बीबीयों से दस औलादें थीं। जिनमें से सात लड़के और तीन लड़कियां थीं। लड़कों के नाम यह हैं। (१) जनाबे इस्माईल (२) हज़रत मूसीए काज़िम (३) अब्दुल्लाह (४) इस्हाक़ (५) मोहम्मद (६) अब्बास (७) अली और लडकियों के नाम यह हैं। (१) उम्मे फ़रवा (२) असमा (३) फ़ात्मा(इरशाद व जन्नातुल ख़ुलूद) अल्लामा शब्लिन्जी ने सात औलाद तहरीर किया है। जिन्में सिर्फ़ एक लड़की का

हवाला दिया है। जिसका नाम उम्मे फ़रवा था। (नूरूल अबसार सफ़ा १३३)

आपकी ही औलाद से ख़ुल्फ़ाए फ़ात्मिया गुज़रे हैं। जिनकी सलतन्त २६७ हिजरी से ५६७ हिजरी तक २७० साल क़ायम रही। उनकी तादाद १४ थी।

फ़ात्मी ख़ुल्फ़ा

मुवर्रिख़ एहसान उल्लाह अब्बासी अपनी तारीख़े इस्लाम के सफ़ा ४२२ में लिखते हैं कि तीसरी सदी हिजरी के आख़ीर में एक बड़ी ज़बर दस्त सलतन्त अलवियों की मग़रिब में क़ायम हुई। बनू उमय्या और अब्बासियों के बाद हुदूदे आराजी के हिसाब से नीज़ इस एतेबार से कि अर्से तक बादशाहत क़ायम रही। अलवी सलतन्त तीसरे दरजे में शुमार होती है। बग़दाद से पछिचम अन्दलस तक अलवियों की बादशाहत थी। कुछ दिनों तक शाम, मक्का और मदीने में भी अलवियों का ज़ोर था। साल भर तक ख़ुत्बए बग़दाद में मुसतनसिर अलवी का नाम लिया गया। अन्दलस ऐसी मुसतक़िल और ज़बर दस्त इस्लामी सलतन्त अर्से तक अलवियों का एक सूबा रही।

सलातीने अलविया बा एतेबार ख़ुल्फ़ाए अब्बासिया ज़्यादा पाबन्दे अहकामे शरिया थे। लहो लाब से उनको परहेज़ था। इसी लिये ईसाई मुवर्रिख़ों ने ताअस्सुब की बिना पर अलवियों को मुताअस्सिब लिखा है। २५० सौ बरस से कुछ ज़्यादा अर्से तक यह ख़ान दान क़ायम रहा। चौदहवें बादशाह आज़द पर ५६७ हिजरी में इसका ख़ात्मा हुआ।

अल्लामा अली हैदर लिखते हैं कि यही सलातीने अलविया ख़ुल्फ़ाए फ़ात्मीन के नाम से मशहूर हैं। यह हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.) की नस्ल से थे। इमाम जाफ़रे सादिक़(अ.) के बड़े साहब ज़ादे जनाबे इस्माईल अपने वालिदे माजिद की ज़िन्दगी में इन्तेक़ाल फ़रमा गये थे। मगर आपकी शादी हो चुकी थी, जिनसे उनके बेटे हुसैन अल तक़ी और उनके बेटे अब्दुल्लाह अल मेहदी हुये। जो ख़ुल्फ़ाए फ़ात्मीन के बुज़ुर्ग थे। इसी वजह से इस ख़ानदान को इस्माईलिया कहमे हैं। अशना अशरी फ़िरक़े के लोग इन लोगों को " शश इमामी " (६ छः इमामों को मानने वाले) भी कहते हैं। क्योंकि यह लोग बारह इमामों में से सिर्फ़ ६, इमामों को मानते हैं और हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक(अ.) के बाद हज़रत इमाम मूसीए काज़िम (अ.) को हुक्मे ख़ुदा और रसूल(स.) के ख़िलाफ़ इमाम नहीं मानते। बल्कि जनाबे इस्माईल के बेटे मोहम्मद को इमाम मानते हैं और इस अमर के क़ायल हैं कि इमामत जनाबे इस्माईल ही के औलाद में क़यामत तक रहेगी। हिन्दुस्तान व पाकिस्तान के " शिया बोहरों " और आग़ा ख़ानी ख़ोजों का यही मज़हब है। मुवर्रिख़ जाकिर हुसैन लिखते हैं कि २१, रबी उल अव्वल २६७ हिजरी, मुताबिक़ ९०९ ई० को यह सलतन्त क़ायम हुई। इन्तेहाई उरूज के ज़माने की सलतन्त बहरे ज़ुल्मात से सहराए शाम तक और

बहरे रोम से सहराए अफ्रीका तक फैल गई थी। मशारिक् बलादिउल जज़ाएर,तून्स,तराबलीस,बरका मिस्र ,शाम, यमन जज़ीरए सकीलह और बहरे रोम के बाज़ और जज़ीरए इसमें शामिल थे। बल्कि बग़दाद व मूसल तक एक साल तक इनके नाम का खुत्बा पढ़ा गया। इन बाद शाहों को उलूम व फनून का भी कमाल शौक़ था। खुद भी बड़े आलिम व फाज़िल थे। उन्होने मिस्र में हर किस्म की ऐसी तरक्की ,रौनक् और रौशनी फैलाई ,जो उन्हीं के ज़माने से मखसूस थी। ना इनसे पहले मिस्र को यह दिन नसीब हुआ थाना इनके बाद हुआ। **अस्टैलनली लैन पोल** लिखता है है कि "ख़ानदाने फ़ात्मिया की दौलत व हशमत, शान व शौकत और तिजारत,बहरे रोम की खुश हाली का बाएस साबित हुई। ज़ैल में इस खानदान के चौदह बादशाहों के मुख़्तसर हालात लिखते हैं।

(१) जनाबे अबू मोहम्मद अबीद उल्लाह-उल-मेहदी बिल्लाह

आप २६० हिजरी मुताबिक् ८७४ ई० में बामुकाम सल्मीह या कूफा पैदा हुए। और आपने सलतनते फात्मीन की बुनियाद क़ाएम की ,३०३ ई० से ३०६ई० तक उन्होने बनी फात्मा को ख़ारजियों के हाथ से महफूज़ रखने की ग़रज़ से "कीरोवान" के क़रीब एक मज़बूत शहर और मुस्तहकम केला तामीर कराया और उसका नाम "महदीया" रख कर किरदार अल हुकूमत क़रार दिया । कीरूवान और तराबस को फतेह करके मिस्र की तरफ आए। यही खलीफा मुक़तदर अब्बासी की तरफ से "मूनिस खादिम" मुक़ाबला को आया लेकिन कामयाबी जनाब अबीद उल्लाह ही को हुई। आपने तमाम मग़रिबे अक़सा (मराकू) को मुसख़्ख़र करके फात्मी सलतनत में शामि कर लिया। मग़रिबे अक़सा की फतह के बाद आप इन्दलस फ़तेह करने की तदबीरें कर रहे थे कि अजल आगई। आपने अपनी सल्तनत अपनी हयात ही में सरहद से बहरे ज़ुल्मात और जज़ाएर ख़ालदात (कज़ीर) तक और बहरे रोम से सहराए अज़ीम अफरीक़ा तक फैलाई थी। आपकी खिलाफत ज़बरदस्त और मुस्तएदाना थी।

सेवती ने लिखा है कि आपने दाद गुस्तरी और फ़य्याज़ी के साथ सलतनत की, लोग आपकी तरफ़ झुके हुए थे। आपका अहदे जुलूस रबीउल-अव्वल २६७ हिजरी था। आपकी तारीख़े वफ़ात १५, रबी-उल-अव्वल ३२२ हिजरी मुद्दते सलतनत २४ साल , मुद्दते उमर ६२ साल थी आप शहरे महदीया में दफ़न किए गए।

(२) जनाबे अलक़ासिम मोहम्मद नज़ार क़ाएम बेअमरिल्लाह बिन मेंहदी

आपकी तारीख़ विलादत मोर्हरम २८०, हिजरी मुताबिक् ८६३ ई० तारीख़ जुलूस १५ रबी-उल-अव्वल ३२२ हिजरी मुद्दत सलतनत १२ साल ७ माह और मुद्दत

उमर ५४ साल ६ माह थी। बड़े जगं आज़मूदह थे, अकसर जंगों में खुद फ़ौज लेकर जाया करते थे।

मिस्टर अमीर अली ने लिखा है कि यह पहले फ़ात्मी ख़लीफ़ा में जिन्होंने बहरे रोम पर हुकूमत व एक्तिदार हासिल करने की ग़रज़ से जहाज़ों का एक ज़बर दस्त बेड़ा तैय्यार किया। २२४, हिजरी में मगरिब अक़्सा की बग़ावत फ़रो की और "रीफ" के बनों इदरीस को मुतीय किया। इटली के डाकू फ़ात्मी ख़लीफा के बन्दरगाहों पर लूट मार कर जाया करते थे। इसके रद्दे अमल में आपका सिपेह सालार जुनूबी इटली को गीटा तक ताराज करता हुआ शहर "जनवा" तक जा पहुँचा। इसने शहर को फ़तेह करके बहुत से बाशिन्दों को गिरफ्तार कर लिया। " जनवा" मुद्दत दराज़ तक खुलफाए फ़ात्मीन के कबज़े में रहा। इनकरवा (लोम बरीडी) का एक हिस्सा भी क़बजे में आगया। यक़ीन है कि अगर आपकी अपनी सलतनत में बग़ावत न शुरू हो जाती तो आप पूरे मुल्क " इटली" को फ़तेह कर लेते। आपके इस बेड़े ने वापसी के मौक़े पर "सारडेना" पर हमला करके फिरंगियों को बहुत सी शिकसतें दीं। फिर कर्क़ीसिया का रूख़ किया जो शाम के साहिल पर वाक़े है। यहाँ इसने अब्बासीयों के जहाज़ को जला दिया और बहुत सा माले ग़नीमत लेकर "महदिया" की तरफ़ मरजाअत की। ३३३, हिजरी में आपके ख़ादिम "ज़ैदान" ने इसकनदरया फ़तेह कर लिया। फिर अहले सक़लिया ने बग़वत की और शाहे क़ुस्तुनतुनिया के बेड़े को अपनी मदद के लिए बुला लिया। सक़लिया के फ़ात्मी गवरनर ने क़ेला "अबूसूर"और क़ेला "बलूत" फ़तह करके जर जन्नत का मोहासेरा कर लिया और आपके बेड़े ने रूमी बेड़े को तबाह कर डाला। आपके ज़माने में अबू यज़ीद खारजी" ने बग़ावत की जो मुद्दत दराज़ तक जारी रही। इसी दौरान में बअमिरल्लाह ने बीमार हो कर इन्तेक़ाल किया।

(३) जनाबे अबू ताहिर इस्माइली मन्सूर बिल्लाह बिन अल क़ायम

आप ३०२, हिजरी मे बामुक़ाम क़ीरूवान पैदा हुए और १३, शव्वाल ३३४ हिजरी में सलतनत संभाली और शव्वाल ३४१ हिजरी में वफात पाई , मुद्दते सलतनत सात साल १६ यौम थी आपकी उमर ३६ साल थी।

आप बड़े बहादुर, अक़्लमन्द, मुस्तइद, मुस्तक़िल मिजाज़, खुश खुल्क़, अदीब लबीब, शायर, मुक़र्रि, बलीग़, और नेहाएत मुन्तिज़म थे। आप पहले से सोचे बग़ैर खुतबा शरू करते थे और दरिया की रवानी की तरह बयान करते चले जाते थे। आपका ऐसी हालत में बादशह होना कि अबू यज़ीद की बग़ावत से तमाम मुल्क में ग़दर मचा हूआ था, साहिले बहर के चन्दकेला बन्द शहरों और महदीया(पाऐ तख़्त) के सिवा कुछ भी क़बज़े में रह गया था। इन्दलिस के उमवी ख़लीफ़ा नासिर ने मगरिब अकसा पर कबज़ा कर लिया

था, सलतनत का संभलना और अपने तमाम आबाई मुल्को पर दोबारह कबज़ा कर लेना उन्हीं का काम था। आपने बादशाह होते ही अबू यज़ीद से ऐसी जगं की कि वह बद हवास होकर भागा। रबीउल अव्वल ३३५, हिजरी में उन्होंने अबू यजीद का तअक़्कुब किया और उसे दबाते चले गए। जगंल बियाबान चले गए ,पहाड़, वादी,और दलदलों की कुछ परवाह न की, यहां तक कि उसके पीछे"बिलासौदान" केऐसे वीराने में पहुँचे जहाँ पानी की एक मश्क एक अशरफ़ी को मिलती थी, ग़र्ज़ की सख़्त लड़ाई के बाद अबू यज़ीद मारा गया।

साहबे अख़्बार अलहक़ाएक़ लिखते हैं कि अबू यजीद मुलहद था। खुदा ने उसके शर से अहले मगरिब को निजात दिला दी। वह बहुत बड़ा जालिम था। इसी बादशाहे मन्सूर ने बमुक़ाम "फ़तेह" मन्सूरया कि तामीर की और इसके गवर्नर "**हसन**" ने शहर "**रेओ**" के वसत में मस्जिद बनवाई।

(४) जनाबे अबू तमी मोअज़लद्दीन अल्लाह बिन मन्सूर

आप ११ ,रमज़ानुल मुबारक ३१९ हिजरी में बमुक़ाम "महदीया" पैदा हुए । शववाल ३४१ हिजरी में सलतनत संभाली। १५ रबीउल आखिर् ३६५ हिजरी को क़ाहेरा में वफात पाई। २३ साल ६ माह हुकूमत की , ४५ साल ७ माह आपकी उमर थी।

आप नेहायत ज़ैरिक और बाहोश बादशाह थे, मुख़ालिफ़ों ने भी आपको बादशाह दाना "मुस्तइद" बहादुर, सख़ी, मुनसिफ़, आदिल, करीमउल एख़्लाक़, साइन्स व फ़लसफ़े में माहिर, उलूम व फनून का बड़ा मुरब्बी, साहेबे अराए अमूर मम्लेकत से आगाह, इल्मे नुजूम व हय्यत का शाएक़ व माहिर लिखा है।

उलूम व फुनून की क़दरदानी के लेहाज़ से बाज़ मोवर्रेखों ने उन्हें मगरिब का "मामून " लिखा है। माअज़ के अहदे हुकूमत में शुमाली अफरीक़ा ने आला दर्जे की तहज़ीब और खुश हाली हासिल की। लोग फारिग़ुल बाली और खुशहाली में बसर करते थे। बादशाह ने मुल्क के अन्दरूनी फ़साद और हगांमे सख़्ती से फ़रो किए इन्तेज़ाम असली उसूल की बुन्याद पर क़ाएम किया। तमाम कामों के वास्ते क़वाएद व ज़वाबित मुरत्तिब किए। अमन क़ाएम रखने के लिए फौज के साथ मलेशिया भी क़रार दिया। फ़ौज और बेड़े को अज़सरे नव तरतीब दिया और तिजारत व सनत व हिरफ़त को भी पूरा फ़रोग़ दिया।

मुवर्रिख़ इब्ने ख़ल्दून ने लिखा है कि " चूँकि मोइज़उद्दीन अल्लाह नरम मिज़ाज और रहम दिल थे और खुदा ने एक अजीब व गरीब शऊरवलियाक़त इनको अता की थी, वह सरदार भी जो उनके अबाओ अजदाद के खून के प्यासे थे, वह चाहे दिल से ना हों लेकिन बज़ाहिर उस पर जान देते थे। मआज़ उनके साथ अच्छा बरताव करता था।

(तरीख़े इस्लाम मिस्टर ज़किर हुसैन सफ़ा ११६)

मुवर्रिख़ अब्बासी लिखते हैं सलतनत ने इसके ज़माने में ऊरूज पकड़ा। मिस्र, इस्कन्दरिया, मक्का और मदीना तमाम मुक़ामात अब्बसीयों के तसर्रूफ़ से निकल कर उसकी सलतनत में शामिल हुए। शाम पर भी इसका दख़ल हो गया। क़ाहेरा इसका आबाद किया हुआ शहर अब तक मिस्र का दारूल ख़ेलाफ़ा है। इस बादशाह ने मिस्र को अपना दारूल ख़ेलाफ़ा क़रार दिया और फिर बराबर सलतनते इस्माइला का यही दारूल ख़ेलाफ़ा रहा (तारीख़े इस्लाम सफ़ा ४६४) इन्दलस के उमवी ख़लीफ़ा "नासिरउद्दीन अल्लाह" ने एक ऐसा बड़ा तिजारती जहाज़ बनवाया कि इस वक़्त तक दुनिया कि किसी सलतनत ने इतना बड़ा जहाज़ तैय्यार नहीं किया था। इस जहाज़ ने "माअज़ुद्दीनउल्ल" के जहाज़ को लूट लिया तो आपने एक ज़बरदस्त बेड़ा तैय्यार कराके इन्दलिस पर हमला करने की गर्ज़ से रवाना कर दिया। उस बेड़े ने "मरयह" की लगंगर गाह में घुस कर तमाम जहाजों को फूंक दिया पहले जहाज़ को गिरफ़्तार कर लिया और ख़ुश्की में उतर कर क़तल व ग़ारत का बाज़ार गरम कर दिया और बहुत कुछ माले गनीमत ले कर वापस पलटा। इसके बाद भी यह उमवी और फ़ात्मी बादशाह आपस में लड़ कर अपनी क़ूव्वत ज़ाया करते रहे, वरना ऐसे ज़बरदस्त थे कि अगर इनमें इत्तेहाद होता तो इस वक़्त तमाम यूरोप को फ़तेह कर लेना कोई बड़ी बात ना थी। ३४७, हिजरी के खत्म होते होते हुदूद मिस्र से साहिल बहरवक़यानूस तक फिर तमाम मम्मालिक पर फ़ात्मी खलीफा का कबज़ा हो गया।३५२हिजरी में रूमियों से सख्त लड़ाई हुई। मुस्लमानों ने फ़तेह पाई और बहुत से रूमी गिरफ़्तार कर लिए गए।३५१ हिजरी से ३५२ तक जज़ीरए सक़लिया से रूमीयों की सलतनत बिल्कुल नीस्त व नाबूद कर दी गई। ३५८ हिजरीमें यूरप की फौजों ने जुनूबी इटली के मुस्लमानों पर चढाई की। मगर सब कोशिश बेसूद साबित हुईं। ३५७, हिजरी में अहले मिस्र की दरख्वास्त पर इन की फरयाद रसी करने के लिए "अबू अलहसन जौहर" को एक लाख से ज़्यादा सवार और बारह सौ से ज़्यादा माल के सन्दूक़ दे कर मिस्र की तरफ रवाना कर दिया। जोहर को पूरी कामयाबी नसीब हुइ। "शहर क़ाहिरया माज़िया" को आबाद करके दारूल हुकूमत बनादिया, मिस्र से अब्बसीयों का सिक्का और खुतबा मौक़ूफ करके माजलदैनउल्ला के नाम का सिक्का व ख़ुतबा जारी किया। "नमाज़ में हय्या अला ख़ैरिल अमल" फिर से से जारी किया गया नमाज़ में बिस्मिल्ला हिर रहमानिर्रहीम" बा आवाज़े बुलन्द पढ़ने लगा और खुतबे के बाद अल्लाहूम्मा सल्ले अला मोहम्दे मुस्तफ़ा व अला अली मुर्तज़ा व अला फ़ातेमतुल बुतूल व अला अल हसन व अल हुसैन सिबते रसूल अल लज़ी अजहब अन्ल्लाहा अन्हुम रिजस व तहर हुम्मा ततहीरा व सल्लेअला आइम्मतुत ताहेरीन अबनाआ अमीरल मोमिनीन अलख़ " पढ़ा जाने लगा और अहले बैत के फ़ज़एल बयान होने लगे। इसके बाद जौहर ने बादशाह के हुक्म से " जामए अज़हर " तामीर की जो

जो इस वक्त अहले इस्लाम की सबसे बड़ी यूनीवर्सीटी " है। ३६४ ,हिजरी में " ईदे ग़दीर " मिस्र में पहली बार कमाले शान व शौकत से मनाई गई।

जौहर ने मिस्र फतेह करने के बाद शाम फ़तेह कर लिया और अब्बसीयों का खुतबा मौकूफ़ करके फ़ात्मी बादशाह का खुतबा जारी कर दिया। ३६३ हिजरी में मक्का और मदीना में भी माअज़ के नाम का खुतबा मुस्तिक़ल तौर पर जारी हो गया।

मुवर्रिख़ हबीब उस सियर ने लिखा है कि माअज़ ने ऐसी अदालत और सख़ावत के साथ सलतनत की कि इससे ज़्यादा ख़्याल में नहीं आ सकती पन्दरह हज़ार ऊँट और दस हज़ार ख़च्चर ज़र से लदे हुए अफ़रीका से क़ाहेरा ले कर आए। उन्होंने ख़ज़ान्ची को हुक्म दे रखा कि वह हर रोज़ चन्द सन्दूक़ पुर ज़र दरबार में ला कर रखे। चुनान्चे वह ऐसा ही करता रहा। बादशाह का हुक्म था कि हर मोहताज एक मुठ्ठी ज़र उसमें से ले ले। मक़रयज़ी ने लिखा है कि माज़ का खुतबा तमाम मुमालिक मग़रिब, मिस्र, शाम, हेजाज़, और बाज़ एराक़ के ईलाक़ों में पढ़ा जाता था।

(५) जनाबे अबू मन्सूर नज़ार अज़ीज़ बिल्लाह बिन माअज़

आप १४ मोहर्रमुल हराम ३४४ हिजरी का मेहदीया में पैदा हुए। १५, रबीउस्सानी ३६५ हिजरी में तख़्त नशीं हुए और २८, रमज़ान ३८६ हिजरी में इन्तेक़ाल कर गए। आपकी सलतनत की मुद्दत २१ साल ५-६ माह और आपकी उमर ४२ साल ८-६ माह थी।

आप जवाद, करीम, शुजा, अक़ील, हलीम, साबिर , खुशइख़्लाक़ और कसीरूल अफ़ू थे, दुश्मन पर रहम करते थे और उसे माल व ज़र देते थे। आप आलिम व फाज़िल और ज़बरदस्त अदीब व शायर थे। आपके एक फरज़न्द का ईद के दिन इन्तेक़ाल होगया। तो आपने चन्द अश्आर कहे। जिनमे से वाज़े किया कि आले मोहम्मद हमेशा मसाएब में मुब्तिला रहे हैं। लोगों की ईदें खुशी में गुज़रती हैं और हमारी ईद मातम में (यतीमतुल अलदहर सालबी) आपको इमारतों की तामीर का बड़ा शौक़ था। मिस्र में बहुत सी इमारतें आपकी यादगार हैं। आपके अहद में हमस ,हमात, शैहज़र,और हलब फ़तेह होकर फ़ात्मी सलतनत में शामिल हुए। मूसल, मदाएन, कूफा, अन्बार,वग़ैरह में आपके नाम का खुतबा और सिक्का जारी हुआ। यमन में भी आपके नाम का खुतबा पढा गया। आपके अहद में फ़ात्मी सलतनत दरियाए फुरात के किनारे बहरे जुल्मात तक फैली हुई थी और अरब का तमाम मग़रबी हिस्सा मिन्तहाए यमन तक उसमें शामिल था। इन्देलिस से बनी उम्मय्या ने जो बाज़ इलाक़े मग़रिब अक़सा के दबा लिए थे आपने इन सब को वापिस ले लिया और ३७१ ,हिजरी में इससे सब लोगों को बरतरफ़ कर दिया। अजदद‍ु दौला विलाबू यही

से आपने दोस्ताना मरास्लत जारी थी। आपने ३८६ हिजरी में वफात पाई जिससे फातमी खुलफा, की अज़मत व शौकत को बड़ा नुक़सान पहुँचा। मोर्वेरखीन ने लिखा हे कि इस बादशाह के अहद में लोगो के दिन ईद और रात शबे बरात की तरह गुज़र रहे थे।

(६) अबू अली मन्सूर हाकिम ब अमर अल्लाह बिन अज़ीज़

आप २३, रबीउल अव्वल ३७५, हिजरी को क़ाहेरा में पैदा हुए। २८, रमज़ान ३८६, हिजरी को तख़्त नशीन हुए। २७, शव्वाल ४११ हिजरी को इन्तेक़ाल फ़रमाया। २५ साल २६ दिन तक सलतनत की और ३६ साल ७ माह की उमर पाई, आप ११ साल की उमर में बादशाह हुए, मुवर्रिख़ अब्बासी ने लिखा है कि यह बड़ा मुतशर्रह बादशाह था। उसने औरतों के लिए पर्दे में सख़्ती की, मुस्करात की ख़रीद फ़रोख़्त बन्द की। उसके वक़्त में इन्तेज़ाम शहर भी अच्छा था। क़ाहेरा में मस्जिदे अज़हर इसी ने बनवाई (तारीख़े इस्लाम सफ़ा ४२५) इब्ने जूलाक़ ने लिखा है कि खलीफा हाकिम, सखी, शुजा, मुनसिफ़, आलिम, और साहेबे करामात था। साहेबे हबीब उस सियर ने लिखा है कि बादशाह आदिल और खुदा तरस था। उसने मदरसे बनाए। उनके लिए जागीर वक्फ की और उनमें आलिम व फकीह मोर्कर किए। हुक्म था कि ख़लीफ़ा के वास्ते ज़मीन बोसी न की जाए। न सलाम के वक्त हाथ चूमा जाए। आम इजाज़त थी कि जिसका दिल चाहे बादशाह से मिल कर बराहे रास्त शिकायात पेश करे ।

यह ख़लीफ़ा आला दर्जे का हैसियत दां था इसकी किताब चार जिल्दों में थी। २७, शव्वाल २११ , हिजरी को एक पहाड़ पर किसी दुश्मन ने तन्हा पाकर हलाक कर दिया। मिस्टर अमीर अली ने लिखा है कि हाकिम बड़ी फ़य्याज़ी तन्देही से इल्म और साईंस की तरक्क़ी में कोशिश करते थे। शाम और मिस्र में उन्होंने बहुत सी मस्जिदें , कालिज और रसद ख़ाने तामीर कराए।

(७) जनाबे अबू अल हसन अली ज़ाहिर लाअज़ाज़ दीनअल्लाह बिन हाकिम

आप १०, रमज़ान ३९५, हिजरी बमुक़ाम क़ाहेरा पैदा हुए ४, ज़ीक़ाद ४११ हिजरी को तख़्त नशीनी हुई। १५, शाबान ४२७ ,हिजरी को फ़ौत हुए । १५, साल १० माह सलतनत की और २२ साल की उमर पाई ।

मुवर्रिख अब्बसी लिखते हैं कि यह बादशाह बड़ा नेक नाम था। इसकी नेक नामी सुनकर अमाएद ख़ुरासानी हज करके फिरे, तो मिस्र होते हुए आए और वहाँ से

ख़िलअत लाए। महमूद सुबुकतग़ीन को इसकी ख़बर लग गई, उसने फ़ौरन ख़लीफ़ा को बग़दाद मुत्तिला किया। हुज्जाज मिस्र से आकर अभी बग़दाद में पहुँचे ही थे कि ख़लीफ़ा ने उनसे बाज़ पुर्स की और उनकी खिलअत जला दिए। इससे मालूम होता है कि महमूद को भी फ़ात्मी ख़ुलफ़ा से ख़ौफ़ था और यहीं से यह भी मालूम होता है कि दयालमा मुलूक ग़ज़नी सलजूक़ी वग़ैरा सब ख़ुलफ़ा बग़दाद की ख़ातिर इस लिए भी करते थे कि फ़ात्मी ख़ुलफ़ा से दूबदू मुक़ाबैला करने को मसालेहत के ख़िलाफ़ जानते थे, सलातीन अलवी को ज़ोरे बाज़ू के अलावा वह जो इज़्ज़त ख़ास ,आम नज़रो में हासिल थी वह इन ग़ैर क़रशी अल नस्ल सलातीन के लिए बहुत ज़्यादा परेशान कुन थी।(तारीखे इस्लाम सफा४२५)

आपने इस्माईल मज़हब को कमाले रौनक़ के साथ रवाज दिया। ४१८, हिजरी में क़ैसर से सुलह हुई और उसने अपने मुल्क में जनाब ज़ाहिर का खुतबा पढ़ने की मुस्लमानों को इजाज़त दे दी। कुस्तुनतुनया में मस्जिद बनाई गई और इसमें मोअज़्ज़िन मुक़र्रर किया गया।

साहेबे हबीब उस सैर लिखते हैं कि आप अपने आबाओ अजदाद की तरह मुनसिफ़ और नेक सीरत थे, साहब रौज़तुस अल सफ़ा का बयान है कि जनाबे ज़ाहिर की फ़रते सियासत और कमाले कयासत की वजह से तमाम फ़ितने फ़रो हो गए, और दीन दुनियाँ के उमूर मुस्तक़ीम हो गए लेकिन आप ही के अहद से फ़ात्मी सलतनत का इनहेतात (ज़वाल) शुरू हो गया।

(८)जनाबे अबू तमीम माअद मुस्तनसिर बअम्र अल्लाह बिन ज़ाहिर

आप जमादिससानी ४२०, हिजरी में बामुक़ाम क़ाहेरह पैदा हुए। १५ शाबान ४२७ हिजरी को तख्त नशीनी अमल में आई। १८ ज़िलहिज को आप की वफात हुई। ६० साल ४माह हुकूमत करके ६७ साल की उमर मे दुनियाँ से रेहलत की।

मुवर्रिख़ अब्बसी लिखते हैं कि क़ायम बिल्लाह अब्बसी ने वाली अफरीक़ा से साज़िश करके उनको नुक़सान पहुचाना चाहा। लेकिन इसकी हिकमत कारगर न हुई और इसके बदले में मुसतनसर के इशारे से "बसासीरी" ने क़ाएम को बग़दाद में क़ैद करके साल भर तक मुस्तनसर का नाम बग़दाद के खुतबे में क़ाएम रखा। मुसतनसर के अहद में अब्बासियों का ख़ातमा हो जाता लेकिन तोग़रल बेग ने आकर "बसा सैरी" को मग़लूब कर दिया और क़ायम बिल्लाह को बड़े एज़ाज़ के साथ फिर तख़्त पर बिठा दिया इसी सुलोह में अपने लिए (रूकनुकदीन) का ख़िताब हासिल किया (तारीख़े इस्लाम सफ़ा ४२६) ४७६, हिजरी में "हसन बिन सबाह " जो बाद में नजरिया इस्माईलीयों के पेशवा हुए। ताजिरो

के लिबास में मसतनसर के पास आए। सात साल तक मिस्र में रहे। फिर मुस्तनसर की तरफ़ से खुरासान व बिलादे अजम दाई मुक़र्र हुए। हसन ने पहले मख़्फ़ी तौर पर फिर एलानिया बिलादे अजम में इस्माईली दावत फ़ैलाना शुरू कर दी और क़िलों पर क़ब्ज़ा करके हुकूमत क़ायम कर ली। रूख़्सत होते वक़्त उन्होंने मुस्तन्सिर से पूछा था कि आपके बाद मेरा इमाम कौन है। मुस्तन्सिर ने अपने साहबज़ादे नज़ार को बताया था। जनाबे मुस्तन्सिर के तीन बेटे थे। (१) **नज़ार** (२) **अहमद मुस्तम्ली** (३) **मोहम्मद**

(६) जनाबे अबुल क़ासिम अहमद मुस्तम्ली बिल्लाह बिन मुस्तन्सिर

आप २०, शाबान ४६७ हिजरी को पैदा हुये। १८ ज़िलहिज़ ४८७ हिजरी को बादशाह क़रार पाये। १७, सफ़र ६५ हिजरी को २८ साल की उम्र में वफ़ात पाई। मुद्दते सलतन्त ७,साल ३ माह थी।

अगरचे जनाबे मुस्तन्सिर ब अमरे अल्लाह अपनी ज़िन्दगी में अपने बड़े बेटे जनाबे नज़ार को वली अहद मुक़र्र किया था मगर वज़ीरे आज़म अफ़ज़ल में और उनमें आपसी दुश्मनी थी। इस लिये अफ़ज़ल ने नज़ार को हटा कर जनाबे अहमद को मुस्तम्ली के लक़्ब से ख़लीफ़ा बना दिया। जनाबे नज़ार और अफ़ज़ल में जंग छिड़ गई। बिल आख़िर नज़ार गिरफ़्तार हो कर मुस्तमली के हवाले कर दिये गये। नज़ारी इस्माईली कहते हैं। कि जनाबे नज़ार के फ़रज़न्द हादी क़ैद से निकल कर बिलादे अजम में चले गये थे और यहां जनाबे हादी से " अल मौत " के इस्माईली इमाम पैदा हुये। उस वक़्त से इस्माईलियों के दो फ़िरक़े हो गये। एक नज़ार, यह जो जनाबे नज़ार और उनकी औलाद को इमामे बरहक़ मानता है। वह हसन बिन सियाह के मुक़ल्लिद और हिन्द पाक के आग़ा ख़ानी ख़ोजे हैं। दूसरे वह जो मुस्तमली और उनकी औलाद को इमामें बरहक़ मानते हैं और मस्त अलविया कहलाते हैं। वह शिया बोहरे हैं।

(१०) अबू अली मन्सूर अम्र बा अहकाम अल्लाह बिन मुस्तमली

आप १३, मोहर्रमुल हराम ४६० हिजरी मुताबिक़ १०६६ ई० को पैदा हुये। १७ सफ़र ४६५, हिजरी को तख़्त नशीन हुये और २६, साल ८ माह हुकूमत करके ३४ साल की उम्र में ३,ज़ीक़ाद ५२४ हिजरी को वफ़ात पा गये। मुवर्रिख़ अब्बासी लिखते हैं कि इसके अहद में शिमाली ईसाई से बड़ी लड़ाई हुई और मुसलमान ग़ालिब आये। इन शिमाली ईसाईयों को अहले फ़िरंग लिखते हैं कि इस वक़्त में शाम में एक ख़ानदान नज़ारिया नाम

303

का साहेबे हुकूमत हुआ और चंद मुल्क अलवियों के इस ख़ानदान के क़ब्ज़े में आ गया। इसकी कोई औलाद न थी। इस लिये अपने चचा हाफ़िज़ को उसने वली अहद मुक़र्र किया। (तारीख़े इस्लाम ४२६) आपने जवान होकर वज़ीरे आज़म अफ़ज़ल को क़त्ल कर दिया। आप करीम और जव्वाद थे, आपके ज़माने में आपकी और आपके मुताअल्लेक़ीन की कसरते जूदो अता से लोग कमाल ऐश व इत्मेनान में बसर करते थे। मिस्र में कोई शख़्स ज़माने या इफ़लास का शाकी नहीं मिलता था। आप हाफ़िज़े क़ुरआन भी थे। नज़ारिया फ़िरक़े के लोग मुस्तअलीयों और उनके इमामों से सख़्त दुश्मनी रखते और मुद्दत से जनाबे आमिर की ताक में थे। एक दिन ५२४ हिजरी में आपको हलाक कर दिया। मस्तअलीयों (बोहरों) का एतेक़ाद है कि जनाबे अम्र २, साल चन्द माह के एक साहब ज़ादे अबुल क़ासिम तय्यब को छोड़ कर इन्मतेक़ाल किया और अपने चचा ज़ाद भाई अब्दुल मजीद मम्यून बिन अबील क़ासिम मुस्तन्सिर को हाफ़िज़ुद्दीन अल्लाह के लक़्ब से उनका निगरां मुक़र्र किया था कि ख़िलाफ़ते ज़ाहेरिया का इन्तेज़ाम करें और जब तय्यब लायक़ हो जाय तो ख़िलाफ़त उनके सिपुर्द कर दें। मगर दो साल के बाद हाफ़िज़ ख़ुद ख़लीफ़ा बन गये और जनाबे तय्यब ने रूपोशी इख़्तेयार कर ली। इस अम्र की ख़बर पहले से इमाम अम्र ने अपने अकाबिर " दाअता " को दे दी थी और हुक्म दिया था कि शम्से इमामत के सतर में जाने का वक़्त आ गया है। जब हाफ़िज़ की नियत में फ़र्क़ देखो उसी वक़्त मेरे फ़रज़न्द को लेकर रूपोशी इख़्तेयार करना और ऐसा ही हुआ। अब बोहरे हज़रात उन इमाम तय्यब की नस्ल दर नस्ल इमाम का हर ज़माने में वजूद होना वाजिब जानते हैं और यही उनका एतेक़ाद है। (तारीख़े इस्लाम, मिस्टर ज़ाकिर हुसैन, जिल्द १, सफ़ा १२६)

(११) जनाबे अब्दुल मजीद मम्यून हाफ़िज़उद्दीन अल्लाह

आप मोहर्रम ४६७ हिजरी में पैदा हुये। तीन ज़ीक़ाद ५२४ हिजरी को तख़्ते नशीन हुये और १६ साल ७, माह हुकूमत करके ७७, साल की उम्र में ५, जमादिल आख़िर ५४४, हिजरी को इनतेक़ाल कर गये। आप नज़र बन्दी में बसर करते थे। आपका वज़ीर अहमद कुल उमूरे सलतनत पर हावी था यह अज़ीम अशना अशरी था और बा रवायत क़िरमानी हाफ़िज़ ने भी मज़हब असना अशरी का इज़हार कर दिया था। वज़ीर अहमद ने बारहवें इमाम मोहम्मद मेहदी(अ.) के नाम का सिक्का और ख़ुत्बा भी जारी कर दिया था। १५, मोहर्रम ५२६ हिजरी को वज़ीर अहमद क़त्ल कर दिया गया और ५४४ हिजरी में जनाबे हाफ़िज़ का इन्तेक़ाल हो गया। आपकी तमाम उम्र वज़ीरों की हुकूमत में गुज़री जो वह चाहते करा लेते। मक़रेज़ी ने लिखा है कि हाफ़िज़ मुदब्बिर, सियासतदां, कसीरूल मुदारात आरिफ़ और इलमे नजूम के शाएक़ थे। आप पर हिल्म ग़ालिब था। आपको दर्दे

304

कूलजं की शिकाएत रहती थी। अपके तबीब ने एक तबल बनवायाथा जिसकी आवाज़ से उन्हें फ़ाएदा पहुँता था। हाफ़िज़ के बाद आपकी हस्बे वसीअत आपके बेटे " अबू मन्सूर इस्माईल " बादशाह हुए।

(१२) जनाबे अबू मन्सूर इस्माईल ज़फर बाअम्रअल्लाह बिन हाफिज़

आप ५, रबीउस्सानी ५२७, हिजरी को पैदा हुए, और ५, जमादिउस्सानी ५४४ हिजरी को तख़्त नशीन हुए और ४ साल ७ माह हुकूमत करके २१ साल ६ माह की उमर में १५ मोहर्रमुल हराम ५४६ हिजरी को इन्तेक़ाल कर गए। आप ज़माना हुकूमत में बेबस थे, वज़ीर बादशाही करते थे। बग़ावतें, रक़बतें साज़िशें और फिरक़ा बंदियां फैल गई थीं। मोहर्रम ५४६, हिजरी में आप क़तल कर दिये गए।

(१३)जनाबे अबू अल क़ासिम ईसा फ़ाएज़ ब नसरअल्लाह बिन ज़ाफर।

आप २१, मोहर्रम ५४४, हिजरी में पैदा हुए। १५, मोहर्रम ५४६ हिजरी को तख़्त नशीन हुए और ६ साल ६ माह बराए नाम हकूमत करके ११ साल ६ माह की उम्र में १५, रजब ५५५, हिजरी को इन्तेक़ाल कर गए।

मुवर्रिख़ अब्बसी लिखते हैं ।अहले फिरगं से इसके वक़्त में भी लड़ाई रही। बेलादे ग़रबी पर अहले फिरंग का जो क़बज़ा हो चुका था वह मुसतहकम हुआ , और कुछ हिस्सा मुल्क उसने उनसे वापस भी ले लिया । (तारीखे इस्लाम सफ़ा ४२७) आप तमाम उमर मर्ज़ सरह में मुब्तिला रहे।

सालेह बिन ज़ैरिक उनका वज़ीर था जो उस अहद में दर अस्ल बादशाही करता रहा था। वह बड़ा फ़ाज़िल सख़ी था और अहले इल्म से बड़ी मोहब्बत करता था। कातिब, अदीब, और आला दर्जे का शायर था। अज़रूए फ़ज़्ल व अक़्ल व सियासत व ततबीर अपने ज़माने का सबसे बड़ा शख़्स था। शकल में रोब दार सितवत में अज़ीम था, नीज़ बड़ा पक्का असना अशरी था। ख़िलाफ़ते जनाबे अमीर में ज़बर दस्त किताब लिखी। लोगों से मनाज़रे किए। वज़ीर होते ही शिया मज़हब का इज़हार किया। नेहायत खूबी से हुकूमत की। आख़िर उम्र तक फिरंगियों से लड़ता रहा। तमाम मुमालिक के अहले इल्म इसके पास आते दुरे मक़सूद से दामन भर कर वापस जाते थे।

अल्लामा मक़रेज़ी (अलख़त्त जिल्द ४ सफ़ा ८१) में लिखा है कि सालेह बिन ज़ैरिक अरमनी क़ौम के अस्ना अशरी मज़हब का एक फक़ीर था। एक दिन ज़्यारत रौज़तुल अमीरल मोमिनीन (अ.) के लिए नजफ़ अशरफ़ गया। हज़रत ने उसी शब रौज़े के ख़ादिम

305

"सय्यद इब्ने मासूम " से ख़्वाब में फ़रमाया कि तलाया बिन ज़रीक हमारे महबूबों में से हैं उससे कह दो कि वह वह मिस्र चला जाए , मैंने उसे मिस्र का वाली बना दिया है। सय्यद ने तलाए को बुला कर ख़्वाब बयान किया वह फ़ौरन मिस्र पहुँच कर सलतनत का मुलाज़िम हो गया। फिर चन्द दिनों में मिस्र का बादशाह हो गया। इसका असली नाम तलाया बिन ज़ैरिक था। मिस्र में कारे नुमाया करने की वजह से इसका ख़िताब " मलक सालेह " हो गया था।

(मोअल्लिफ़) मैं कहता हूँ कि मक्रेजी के इस बयान से सय्यद इस्माईल शहीद देहलवी के इस बयान की ताईद होती है जिसमे उन्होने कहा है कि "दुनियाँ के तमाम बादशाहों का तकररूर और तनज़्ज़ुल अली इब्ने अबी तालिब करते हैं, मुलाहेज़ा हो मौसूफ़ की किताब " सिरातल मुस्तक़ीम "

(१४)अबू मोहम्मद अल्लाह आज़लुद्दीन अल्लाह बिन युसुफ बिन हाफिज

आप २० मोहर्रमुल हराम ५४६, हिजरी मुताबिक़ ११५१ को पैदा हुए १७, रजब ५५५ हिजरी को तख़्त नशीन हुए और ११ साल ६ माह बराए नाम हुकूमत की और २१, साल की उमर में १० मोहर्रमुल हराम ५६७, हिजरी को इन्तेक़ाल कर गए।

मुवर्रिख़ अब्बासी लिखते हैं कि इसके अहद में अहले फ़िरंग साहिल शरक़ी व ग़रबी से आते, आते मिस्र तक पहुँच गए और मिस्र पर क़ाबिज हो गए। ग़ैर मुसलमानों का मिस्र पर काबिज़ होना " नुरूद्दीन मोहम्मद" वाली शाम को बहुत गराँ गुज़रा, उसने मिसरियों की मदद् के लिए फ़ौज भेजी जो अहले फिरगं पर ग़ालिब आई । शामियों ने अहले फिरग़ को निकाल बाहर कर दिया । लेकिन खुतबे में आज़िद के बजाए "मसतज़ी बाअल्लाह" अब्बसी का नाम दाखिल कर दिया । इसी ज़माने में "आज़िद "भी मर गया और इसके साथ ही सलातीने अलविया इस्माइल का खात्मा हो गया। और बनू महदी का नाम मिट गया। (तारीख़े इस्लाम सफ़ा ४२७)

आप १०, साल की उम्र में ख़लीफ़ा हुए। सालेह ने अपनी बेटी उनसे ब्याह दी और सालेह तमाम अमूरे सलतनत पर हावी रहा। मगर १६, रमज़ान ५५६, हिजरी को बेचारा क़त्ल कर दिया गया। ख़लीफ़ए आज़द ने उसकी वफात के बाद अहले सुन्नत से एक शख्स "सलाहुद्दीन यूसुफ" को वजीर बना लिया। उसने बेवाफ़ाई की और तमाम अमूरे सलतनत पर हावी होकर ख़लीफ़ा को बे दख़ल कर दिया और शिया क़ाज़ियों को माज़ूल कर तमाम मुलक में शाफ़ई क़ाज़ी मुकर्रर किए। इस वक़्त से मुलक मिस्र से मज़हब शिया ख़त्म होने लगा और मज़हब मालकी और शाफ़ई ज़ोर पकड़ने लगा। मोहर्रम ५६७ , हिजरी में सलाहुद्दीन ने, ख़लीफ़ए आजदा खुतबा भी मिस्र से बन्द करके मुस्तज़ी अब्बसी

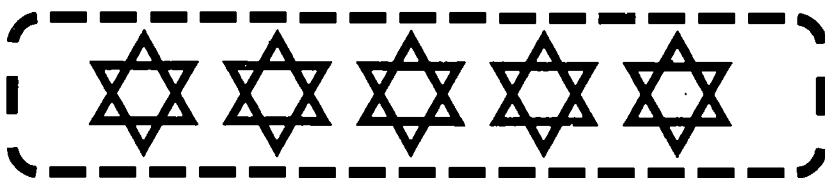
का खुतबा जारी कर दिया। ख़लीफा आज़िदउद्दीन अल्लाह ने आशूर मोहर्रम ५६७ हिजरी को इन्तेक़ाल किया, आपकी वफ़ात से सलतनते फ़ात्मीईन का सितरा, जो मुमालिके, अफ़रीक़ा व मिस्र में २७०, साल से चमक रहा था बिल्कुल गुरूब हो गया।

फ़ात्मी खुलफ़ा के अहद मे जो बरकतें मिस्र को नसीब हुई वह किसी बादशाह के अहद में नहीं हुए। उलूम फ़नून तिजारत व हिरफ़त सबको कमाल तरक़्क़ी हुई। शफ़ाख़ाने , मदरसे ,मस्जिदें और रेफ़ाह आम की दूसरी बेशुमार इमारतें और औक़ाफ़ मुद्दतों यादगार हैं। " **शिया युनीवर्सिटी** " जामए अजहर इसी अहद की रहती दुनियाँ तक के लिए यादगार है। एक लाख तीस हज़ार किस्म की १६, सोलह लाख किताबों का कुतुब ख़ाना इसी अहद में मुरत्तब हुआ था। .....जामा मस्जिदें बनवाई गईं थीं (१) जामा अज़हर (२) जामा माज़िया (३) जामा नूर , जामा हाकिम , जो अपनी शान व शौकत के लेहाज़ से बड़ी पुर अज़मत थी.....उन्हीं के अहद में क़ाहेरा की ख़ास इमारत हुसैनिया (इमाम बाड़ा) थी जिसमें अय्यामे अज़ा में मजालिस मुनअक़िद की जाती थीं जिनमें बादशाह और रेआया सब शरीक होते थे। (तारीख़ मिस्टर ज़ाकिर हुसैन जिल्द १ सफ़ा १३३)

---

(१) यह अम्र क़ाबिले जिक्र है कि खिलाफते फात्मीया के खत्म होते ही जामए अजहर में शियों का दाखला ममनूअ क़रार दे दिया गया था जिसका सिलसिला अब तक बाक़ी रहा लेकिन अहदे जमाल अब्दुल नासिर में डा० शलतूत ने इस मुमानियत को ख़त्म करके शिया फिक़ह की किताबें शरहलुमआ व तब्सेरतूल मुतालेमीन को दाखिले निसाब कर दिया।

अल ईज़ा :- इमाम शरक़ावी लिखते हैं कि खुलफ़ाए बनी उम्मय्या १४ खुलफ़ाए बनी अब्बास ३७ और खुलफ़ाए बनी फ़ात्मा १५ थे और वह यह भी लिखते हैं कि फ़ात्मी खुलफ़ा में ६५०, हिजरी तक ख़िलाफ़त रही। "काना यज़अन बक़ाएहाफेहुम ऐला अन यस मूहालम हुदा फिल अ़खिरूज़ जमान " वह यह गुमान करते थे कि यह हुकूमत उन्हीं में उस वक़्त तक रहेगी जब तक ज़हुरे क़ायमे आले मोहम्मद न होगा। उनके ज़ुहूर के बाद उसे उनके सुपुर्द कर देगें। (तोहफ़तुल नाज़ेरीन बर हाशिया " फ़तूह अल शाम" वाक़दी जिल्द १ सफ़ा ११८ तबा मिस्र १३६८ हिजरी) मेरे नज़दीक इमाम शरक़ावी का खुलफ़ाए बनी फ़ात्मा की तादाद १५ बताना दुरूस्त नहीं है। तमाम कुतुबे मुतबरा में १४ ही की तादाद है। मुलाहेज़ा हो नज़रह असना अशरीया अल्लामा मिर्ज़ा मोहम्मद जिल्द १, सफ़ा २१३, तारीख़े मज़हिब सफ़ा ४६२ तबा कोएटा व तारीख़े इस्लाम व तरजुमए सलातीने इस्लाम लैनिन पोल सफ़ा ८६ तबा लाहौर)





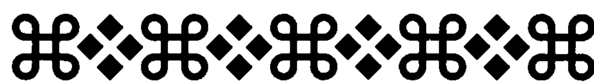
अबुल हसन

हज़रत

इमाम मूसिए काज़िम (अ.)

काज़िमे आले मोहम्मद के, तहम्मुल पर न जा
हाकिमे ज़ालिम यह जाने हैदरो ज़हरा हैं देख
दौलतो हशमत के नशे में ना इतना सर उठा
ऐ बनी अब्बास के फ़िरऔन यह मूसा हैं देख

साबिर थरयानी " कराची "



بسم الله الرّحمٰن الرّحيم

भाग-६

हज़रत इमाम मूसिए काज़िम (अ.)

मख़्ज़ने जुम्ला फुनून आपका कल्बे रौशन
मादने जुम्ला उलूम , आईनए तबा सलीम
आस्ताने दरे हज़रत का अगर देख ले औज
सूरते चर्ख़ पैए बोसा , झुके अर्शे अज़ीम

हज़रत मूसिए काज़िम(अ.) पैगम्बरे इस्लाम रसूले करीम हज़रत मोहम्मद मुस्तफा(स.) के सातवें जांनशीन, हमारे सातवें इमाम और सिलसिलए अस्मत की नवीं कड़ी हैं। आपके वालिद माजिद हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.) थे और आपकी वालदा माजदा जनाबे हमीदा ख़ातून जो बर बर या इन्दलिस की रहने वाली थीं। आपके मुताल्लिक़ हज़रत इमामे बाक़र (अ.) ने इरशाद फ़रमाया है कि आप दुनियाँ में हमीदा और आख़ेरत में महमूदा हैं (शवाहिद अल नबूवत सफ़ा १८६)

अल्लामा मोहम्मद रज़ा लिखते हैं कि आप साहेबे जमाल कमाल और निहायत दियानत दार थीं। (जेनातुल ख़ुलूद सफ़ा २६)

अल्लामा मजलिसी का कहना है कि वह हर निसवानी आलाईश से पाक थीं (जिला उल अयून सफ़ा २७०)

अल्लामा शहर आशोब लिखते हैं कि जनाबे हमीदा के वालिद माजिद साएद बरबरी थे। हमीदा ख़ातून की कुन्नियत लोलो (मोती) थी। (मुनाक़िब जिल्द ५ ७६)

हज़रत इमाम मूसिए काज़िम(अ.) अपने अबाओ अजदाद की तरह इमाम मन्सूस आलमे ज़माना अफ़ज़ले काएनात थे। आप जुमला सिफ़ात हसना से भर पूर थे , आप दुनिया की तमाम ज़बानें जानते और इल्म ग़ैब से आगाह थे। आपके मुताल्लिक़ इब्ने हजर मक्की लिखते हैं कि हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़(अ.) के इल्म, मारेफ़त कमाल और अफज़लीयत में वारिस व जांनशीन थे। आप दुनिया के आबिदों में से सबसे बड़े इबादत

गुज़ार सबसे बड़े आलिम और सबसे बड़े सख़ी,थे। (सवाएके मोहर्रेका सफ़ा १२१) और इब्ने तल्हा शाफ़ेई लिखते हैं कि आप बहुत बड़ी इज़्ज़त व क़द्र के मालिक इमाम और इन्तेहाई शान व शौकत के मुजतहिद थे। आपका इजतेहाद में नज़ीर न था। आप इबादत व ताअत में मशहूरे ज़माना और करामत में मशहूरे कायनात थे। उन चीज़ों में आपकी कोई मिसाल न थी। आप सारी रात रूकु व सुजूद और क़याम व क़यूद में गुज़ारते और सारा दिन सदक़ा और रोज़े में बसर करते थे। (मतालेबुल सुवेल ३०८)

अल्लामा शिब्ली लिखते हैं कि आप बहुत बड़ी क़द्र व मंज़िलत के दुनिया में मुन्फ़रिद इमाम और ज़बर दस्त हुज्जते खुदा थे। नमाज़ों की वजह से हमेशा सारी रात जागते थे और दिन भर रोज़ा रखते थे। (अनवारूल अख़्बार सफ़ा १३५)

अल्लामा इब्ने सबाग़ मालिकी लिखते है। कि आप अपने ज़माने के लोगों में सबसे ज़्यादा आबिद और सबसे ज़्यादा इल्म वाले और सबसे ज़्यादा सख़ी और बुज़ुर्ग नफ़्स थे। (फ़ुसूल मोहम्मद व अर हज्जुल मतालिब सफ़ा ४५१)

अल्लामा हुसैन वाएज़ काशफ़ी लिखते हैं कि आप आबिद तरीन अहले ज़माना और करीम तरीन अहले आलिम थे। आपके फ़ज़ाएल व करामात बेशुमार हैं। (रौज़तुल शोहदा,सफ़ा ४३२)

किताब रौज़तुल अहबाब में है कि आप ब रूए क़द्र मंज़िलत बुज़ुर्ग तरीन अहले आलिम थे और अपने पदरे बुज़ुर्गवार की नस के मुताबिक़ उनके बाद वली अमरे इमामत हुये।

आपकी विलादत ब सआदत :- हज़रत इमाम मूसिए काज़िम(अ.) बतारीख़ ७, सफ़रूल मुज़फ़्फ़र १२८ हिजरी मुताबिक़ १०, नवम्बर, ७४५ ई० यौमे शम्बा ब मुक़ाम (अबवा) जो मक्का व मदीने के बीच वाक़े है पैदा हुये।
(अनवारे नोमानिया, सफ़ा १२६ व आलामुल वरा सफ़ा १७१ व जलाउल अयून सफ़ा २६९ व शवाहेदुन नबूवत सफ़ा १९२, रौज़तुल शोहदा सफ़ा ४३६)

अल्लामा मजलिसी तहरीर फ़रमाते हैं कि पैदा होते ही आपने हाथें को ज़मीन पर टेक कर आसमान की तरफ़ रूख़ किया और कलमए शहादतैन ज़बान पर जारी फ़रमाया। आपने यह अमल बिलकुल उसी तरह किया जिस तरह हज़रत रसूले खुदा (स.) ने विलादत के बाद किया था। आपके दाहिने बाज़ू पर " कलमए तम्मत कल्मता रब्बेका सदक़ा व अदलन " लिखा हुआ था। आप इल्मे अव्वलीन व आख़ेरीन से बहरावर मुतावल्लिद हुये थे। आपकी विलादत से हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ को बे हद मसर्रत हुई थी और आपने मदीना जाकर अहले मदीना को दावते ताअम दी थी। (जलाउल अयून, सफ़ा २७०) आप दीगर आइम्मा की तरह मख़तून और नाफ़ बुरीदा मुतावल्लिद हुये थे।

इस्मे गिरामी कुन्नियत, अल्क़ाब :– आपके वलिदे माजिद हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़(अ.) ने खुदा वन्दे आलम के मोअय्यन करदा नाम मूसा से मौसूम किया। अल्लामा मोहम्मद रज़ा लिखते हैं कि मूसा क़ब्ती लफ़्ज़ है और **" मू "** और **" सी " से** मुरक्कब है। (मू) के मानी पानी और (सी) के मानी दरख़्त है। इस नाम से सबसे पहले हज़रत कलीम अल्लाह मौसूम किये गये थे और इसकी वजह यह थी कि ख़ौफ़े फ़िरौन से मादरे मूसा ने आपको उस सन्दूक़ में रख कर दरिया में बहाया था। जो "हबीब नजार"का बनाया हुआ था और बाद में ताबूते सकीना क़रार पाया तो वह सनदूक़ बह कर फ़िरौन और जनाबे आसिया तक पानी के ज़रिये से उन दरख़्तों से टकराता हुआ जो ख़ास बाग़ में थे पहुंचा था। लेहाज़ा पानी और दरख़्त के सबब से उनका नाम मूसा क़रार पाया था। (जन्नातुल खुलूद , सफ़ा २६) आपकी कुन्नियत अबुल हसन, अबू इब्राहीम, अबु अली, अबु अब्दुल्लाह थी और आपके अल्क़ाब काज़िम, अब्दे सालेह, नफ़्से ज़किया, साबिर, अमीन, बाबुल हवाएज वग़ैरा थे। शोहरते आम्मा काज़िम को है और उसकी वजह यह है कि आप बद सुलूक के साथ ऐहसान करते और सताने वाले को माफ़ फ़रमाते और ग़ुस्से को पी जाते थे। बड़े हलीम बुर्दबार और अपने पर ज़ुल्म करने वाले को माफ़ कर दिया करते थे। (मतालेबुल सुवेल सफ़ा २७६, शवाहेदुन नबूवत सफ़ा १६२, रौज़तुल शोहदा सफ़ा ४३२, तारीख़े ख़मीस, जिल्द २, सफ़ा ३२)

लक़ब बाबुल हवाएज की वजह :– अल्लामा इब्ने तल्हा शाफ़ेई लिखते हैं कि कसरते इबादत की वजह से अब्दे सालेह और खुदा से हाजत तल्ब करने के जरिये होने की वजह से आपको बाबुल हवाएज कहा जाता है। कोई भी हाजत हो जब आपके वासते से तल्ब की जाती थी तो ज़रूर पूरी होती थी। मुलाहेज़ा हो (मतालेबुल सुवेल, सफ़ा २७८, सवाएक़े मोहर्रेक़ा सफ़ा १३१) फ़ाज़िल माअसर अल्लामा अली हैदर रक़म तराज़ हैं कि हज़रत का लक़ब बाबे क़ज़ा अल हवाएज यानी हाजतें पूरी होने का दरवाज़ा भी था। हज़रत की जिन्दगी में तो हाजतें आपके तवस्सुल से पूरी होती ही थीं। शहादत के बाद भी यह सिलसिला जारी रहा ओर अब भी है।(अख़बार पायनियर इलाहाबाद, मोअर्रेख़ा १० अगस्त १६२८ ई० में ज़ेरे उनवान इमाम मूसिए काज़िम के रौज़े पर एक अन्धे को बीनाई मिल गई। ख़बर शाया हुई है जिसका तरजुमा यह है कि हाल ही में रौज़ए काज़्मैन शरीफ़ पर जो शहर बग़दाद से बाहर है एक मोजेज़ा ज़ाहिर हुआ है कि एक अन्धा और बूढ़ा सय्यद निहायत मुफ़लिसी की हालत में रौज़े शरीफ़ के अन्दर दाख़िल हुआ और जैसे ही उसने इमाम मूसीए काज़िम के रौज़े की ज़रीहे अक़दस को अपने हाथ से मस किया। वह फ़ौरन चिल्लाता हुआ बाहर की तरफ़ दौड़ा। मुझे बीनाई मिल गई। मैं देखने लगा हूँ। इस पर लोगों का बड़ा हुजूम जमा हो गया और अकसर लोग इसके कपड़े तबर्रूक के तौर पर

छीन झपट कर ले गए। इसको तीन दफ़ा कपड़े पहनाऐ गए और हर दफ़ा वह कपड़े टुकड़े हो कर तक़सीम हो गए। आख़िर रौज़ए शरीफ़ के ख़ुद्दाम ने इस ख़्याल से कि कहीं इस बूढ़े सय्यद के जिस्म को नुक़सान न पहुँचे। इसको उसके घर पहुँचा दिया। इसका बयान है कि मैं बग़दाद के अस्पताल में अपनी आँख का इलाज करा रहा था बिलं आीखर सब डाक्टरों ने यह कह कर मुझे अस्पताल से निकाल दिया कि तेरा मर्ज़ ला इलाज हो गया है। अब इसका इलाज ना मम्किन है। तब मैं मायूस होकर रौज़ए अक़दस इमाम मूसा काज़िम (अ.) पर आया यहाँ आपके वसीले से खुदा से दुआ की। " बार इलाहा तुझे इसी इमाम मदफ़ून का वासता मुझे अज़सरे नव बीनाई अता कर दे। यह कह कर जैसे ही मैंने रौज़े की ज़री को मस किया। मेरी आँखों के सामने रोशनी नमूदार हुई और आवाज़ आई जा तुझे फिर से रोशनी दे दी गई " इस आवाज़ के साथ ही मैं हर चीज़ को देखने लगा। (अख़बार इन्केलाब लाहैर ,अख़बार अहले हदीस अमरतसर मोवर्रिख़ा २४ अगस्त १६२८ ई०)

अल्लामा इब्ने शहर आशेब लिखते हैं कि ख़तीब बगदादी ने अपनी तारीख में लिखा है कि जब मुझे कोईमुश्किल दरपेश होती है मैं इमाम मूसा काज़िम (अ.) के रौज़े पर चला जाता हूँऔर उनकी कब्र पर दोआ करता हूँ। मेरी मुश्किल हल हो जाती है।

(मुनाक़िब जिल्द ३ सफ़ा १२५ तबा मुल्तान)

बादशहाने वक़्त :–आप १२८, हिजरी में मरवान अल हमार उमवी के अहद में पैदा हुए। इसके बाद १३२ हिजरी में सफ़ा अब्बसी ख़लीफ़ा हुआ (अबुलफ़िदा) १३६, हिजरी में मन्सूर दवानीक़ी अब्बसी ख़लीफ़ा बना (अबुल फ़िदा) १५८, हिजरी में महदी बिन मालिके सलतनत हुआ।(हबीब अल सियर १६६, हिजरी में हादी अब्बसी की बैअत की गई। (इब्ने अलवरी) १७० मे हारून रशीद अब्बसी इब्ने महदी ख़लीफ़ए वक़्त हुआ (अबुल फ़िदा) १८३ ,हिजरी में हारून के ज़हर देने से इमाम (अ.) ब हालते मज़लूमी क़ैदख़ाने में शहीद हुए। (सवाएक़े मोहर्रेक़ा अख़बार अल खुलफ़ा इब्ने राई)

नशोनुमा और तरबीअत :– **अल्लामा अली नक़ी** लिखते हैं कि अपकी उमर के बीस बरस अपने वालिद बुर्ज़ुग़वार हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.) के साए तरबीअत में गुज़रे एक तरफ खुदा के दिए हुए फितरी कमाल के जौहर दूसरी तरफ इस बाप की तरबीयत जिसने पैग़म्बर के बताए हुए मकारेमुल इख़्लाक़ की याद को भूली हुई दुनियाँ में ऐसा ताज़ा कर दिया कि उन्हें एक तरह से अपना बना लिया और जिसकी बिना पर "मिल्लते जाफ़री" नाम हो गया, इमाम मूसा काज़िम ने बचपना और जवानी का काफ़ी हिस्सा इसी मुक़द्दस आग़ोश में गुज़ारा। यहां तक कि तमाम दुनियाँ के सामने आपके ज़ाती कमालात व फ़ज़ाएल रौशन हो गए और इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.) ने अपना जांनशीन

मुक़र्रर फ़रमा दिया। बावजूदे कि आपके बड़े भाई भी मौजूद थे। मगर खुदा की तरफ़ का मन्सब मीरास का तरका नहीं है बल्कि ज़ाती कमालात को ढुंढता है। सिलसिलए मासूमीन में इमाम हसन के बाद बजाए इनकी औलाद के इमाम हुसैन का इमाम होना और औलादे इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.) में बजाए फ़रज़न्दे अकबर के इमाम मूसा काज़िम (अ.) की तरफ़ इमामत का मुन्तक़िल होना इसका सुबूत है कि मियारे इमामत में नसबी विरासत को मद्दे नज़र नहीं रखा गया है। (सवानेह मूसा काज़िम सफ़ा ४)

आपके बचपन के बाज़ वाक़ेआत

यह मुसल्लेमात से है कि नबी और इमाम तमाम सलाहियतों से भर पूर मोतवल्लिद होते हैं। जब हज़रत इमाम मूसाकाज़िम (अ.) की उमर तीन साल की थी। एक शख़्स जिसका नाम सफवान जम्माल था। हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.) की ख़िदमत मे हाज़िर हो कर मुस्तफ़सिर हुआ कि मौला, आपके बाद इमामत के फ़राएज़ कौन अदा करेगा। आपने इरशाद फ़रमाया। ऐ सफ़वान ! तुम इसी जगह बैठो और देखते जाओ जो ऐसा बच्चा मेरे घर से निकले जिसकी हर बात मारफ़ते खुदा वन्दी से पुर हो, और आम बच्चों की तरह लहो लआब न करता हो, समझ लेना कि एनाने इमामत इसी के लिए सज़ावार है। इतने में इमाम मूसा काज़िम (अ.) बकरी का एक बच्चा लिए हुए बरामद हुए और बाहर आकर इससे कहने लगे।"अस्जदी रब्बक" अपने खुदा का सजदा कर यह देख कर इमाम जाफ़र सादिक़(अ.) ने उसे सीने से लगा लिया।(तज़किरतुल मासूमीन सफ़ा १६२)

सफ़वान कहता है यह देख कर मैं ने इमाम मूसा से कहा। साहब ज़ादे! इस बच्चे को कहिए कि मर जाए। आपने इरशाद फ़रमाया कि वाए हो तुम पर, क्या मौत व हयात मेरे ही अख़्तियार में है। (बेहारूल अनवार जिल्द ११ सफ़ा २६६)

अल्लामा मजलिसी लिखते हैं कि इमाम अबू हनीफ़ा एक दिन इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.) से मसाएल दीनीया दरियाफ़्त करने के लिए हसबे दस्तूर हाज़िर हुए। इत्तेफाक़न आप आराम फरमा रहे थे। मौसूफ़ इस इन्तेज़ार में बैठ गए कि आप बेदार हों तो अर्ज़ मुद्दोआ करूँ। इतने में इमाम मूसा काज़िम जिनकी उम्र उस वक़्त पाँच साल की थी बरामद हुए। इमाम अबू हनीफ़ा ने उन्हे सलाम कर के कहा, ऐ साहब ज़ादे यह बताओ कि इन्सान फ़ाएल मुख़्तार है या इनके फ़ेल का खुदा फ़ाएल है। यह सुन कर आप ज़मीन पर दो ज़ानू बैठ गए और फरमाने लगे। सुनो ! बन्दों के अफ़आल तीन हालतों से खाली नहीं, या इनके अफ़आल का फ़ाएल सिर्फ़ खुदा है या सिर्फ़ बन्दा है या दोनों की शिरकत से अफ़आल वाक़े होते हैं अगर पहली सूरत है तो खुदा को बन्दे पर अज़ाब

का हक़ नहीं, अगर तीसरी सूरत है तो भी यह इन्साफ़ के ख़िलाफ़ है कि बन्दे को सज़ा दे और अपने को बचाले क्योकि इरतेक़ाब दोनो की शिरकत से हुआ है। अब ला मोहाला दूसरी सूरत होगी। वह यह कि बन्दा खुद फाएल हो और इरतिकाबे क़बीह पर ख़ुदा उसे सज़ा दे । (बिहारूल अनवार जिल्द ११ सफ़ा १८५)

इमाम अबू हनीफ़ा कहते हैं कि मैंने उस साहब ज़ादे को इस तरह नमाज़ पढते हुए देख कर कि उनके सामने से लोग बराबर गुज़र रहे थे। इमाम जाफ़रे सादिक़(अ.) से अर्ज़ किया कि आपके साहब ज़ादे मुसाकाज़िम नमाज़ पढ रहे थे और लोग उनके सामने से गुज़र रहे थे। हज़रत ने इमाम मूसा काज़िम को आवाज़ दी, वह हाज़िर हुए, आपने फ़रमाया बेटा ! अबू हनीफ़ा क्या कहते हैं उनका कहना है कि तुम नमाज़ पढ़ रहे थे और लोग तुम्हारे सामने से गुज़र रहे थे। इमामे मूसा काज़िम ने अर्ज़ की बाबा जान लोगों के गुज़रने से नमाज़ पर क्या असर पड़ता है, वह हमारे और खुदा के दरमियान हाएल तो नहीं हुए थे क्यों कि वह तो " अक़रबा मिनहबलुल वरीद " रगे जाँ से भी ज़्यादा क़रीब है, यह सुन कर आपने उन्हे गले से लगा लिया और फ़रमाया कि इस बच्चे को असरारे शरीअत अता हो चुके हैं। (मुनाक़िब जिल्द ५, सफ़ा ६८)

एक दिन अब्दुल्ला इब्ने मुस्लिम और अबू हनीफा दोनों वारिदे मदीना हुए। अब्दुल्ला ने कहा चलो इमाम जाफरे सादिक़(अ. से मुलाक़ात करें और उनसे कुछ इस्तेफादा करें। यह दोनो हज़रत के दरे दौलत पर हाज़िर हुए। यहाँ पहुँच कर देखा कि हज़रत के मानने वालो की भीड़ लगी हुई है। इतने में इमाम जाफरे सादिक़(अ.) के बजाए इमाम मूसिए काज़िम बरामद हुए। लोगों ने सरो क़द ताज़ीम की, अगरचे आप उस वक़्त बहुत ही कम सिन थे लेकिन आपने उलूम के दरिया बहाना शुरू किए। अब्दुल्लाह वग़ैरा ने जो आपसे कुछ दूरी पर थे आपके क़रीब जाते हुए आपकी इज़्ज़त व मंज़िलत का आपस में तज़किरा किया। आख़िर में इमाम अबू हनीफ़ा ने कहा कि चलो मैं उन्हें उनके शियों के सामने रूसवा और ज़लील करता हूँ। मैं उनसे ऐस सवालात करूँगा कि यह जवाब न दे सकेगें। अब्दुल्लाह ने कहा, यह तुम्हारा ख़्याले ख़ाम है वह फ़रज़न्दे रसूल हैं। अलग़रज़ दोनों हाज़िरे ख़िदमत हुए इमाम अबू हनीफ़ा ने इमाम मूसिए काज़िम से पूछा साहब ज़ादे यह तो बताओ कि अगर तुम्हारे शहर में कोई मुसाफिर आजाए और उसे क़ज़ाए हाजत करनी हो तो क्या करे और उसके लिए कौन सी जगह मुनासिब होगी हज़रत ने बरजस्ता फ़रमाया !

मुसाफ़िर को चाहिए कि मकानों की दीवारों के पीछे छुपे, हमसायों कि निगाहों से बचे ,नहरों के किनारों से परहेज़ करे जिन मुक़ामात पर दरख़्तों के फल गिरते हों उस जगह से परहेज़ करे।

मकानों के सहन से अलहदा, शाहराहो और रास्तों से अलग मस्जिदो को छोड़ कर, ना क़िबले की जानिब मुह करे ना पीठ। फिर अपने कपड़ो को बचा कर जहाँ चाहे

314

रफ़ये हाजत करे। यह सुन कर इमाम अबू हनीफ़ा हैरान रह गए, और अब्दुल्लाह कहने लगे कि मैं न कहता था कि यह फ़रज़न्दे रसूल (स.) हैं इन्हें बचपन ही में हर क़िस्म का इल्म हुआ करता है। (बिहार, मुनक़िब व एहतिजाज)

अल्लामा मजलिसी तहरीर फ़रमाते हैं कि एक दिन हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़(अ.) मकान में तशरीफ फरमा थे। इतने में आपके नूरे नज़र इमाम मूसा काज़िम (अ.) कहीं बाहर से वापस आए । इमाम जाफरे सादिक़(अ.) ने फरमाया, बेटे ज़रा इस मिसरे पर मिसरा लगाओ। "तन्नहाक अन अलक़बीह वल अमस्तोदा" आपने फ़ौरन मिसरा लगाया। "वमन औलियतन हसना फज़दहा"बुरी बातों से दूर रहो और उनका इरादा भी ना करो।जिसके साथ भलाई करो भर पूर करो। फिर फ़रमाया इस पर मिसरा लगाओ। "सतलक़ी मिन अदूका कुल कैद" आपने मिसरा लगाया "अज़ाका वल अदो फला तकदा" तरजुमा :-(१) तुम्हारा दुश्मन हर क़िस्म का मकरो फरेब करेगा (२) जब दुश्मन मकरो फ़रेब करे तब भी उसे बुराई के क़रीब नहीं जाना चाहिए।(बिहारूल अनवार, जिल्द ११ सफ़ा ३६)

हज़रत इमाम मूसिए काज़िम (अ.) की इमामत

१४८ हिजरी में **इमाम जाफ़रे सादिक़** (अ.) की वफ़ात हुई। उस वक़्त से हज़रत इमाम मूसिए काज़िम (अ.) बाज़ाते ख़ुद फ़राएज़े इमामत के ज़िम्मेदार हुए। उस वक़्त सलतनते अब्बासिया के तख़्त पर मन्सूर दवानक़ी बादशाह था। यह वही ज़ालिम बादशाह था जिसके हाथों ला तादाद सादात मज़ालिम का निशाना बन चुके थे।तलवार के घाट उतारे गए , दीवारों में चुनवाए गए या क़ैद रखे गए थे। ख़ुद इमाम जाफरे सादिक़ (अ.) के खिलाफ़ तरह तरह की साज़िशें की जा चुकीं थी और मुख़तलिफ़ सूरतों से तकलीफ़ें पहुँचाई गई थीं। यहाँ तक कि मन्सूर ही का भेजा हुआ ज़हर था।जिससे आप दुनियाँ से रूख़्सत हुए थे। इन हालात में आपको अपने जानशीन के मुताल्लिक़ यह कतई अन्देशा था कि हुकूमते वक़्त उसे ज़िन्दा न रहने देगी। इसलिए आपने आखरी वक़्त एक एख़्लाक़ी बोझ हुकूमत के कांधों पर रख देने के लिए यह सूरत एख़्तियार फ़रमाई कि अपनी जायदाद और घर बार के इन्तेज़ामात के लिए पाँच शख़्सों कि एक जमाअत मुक़र्रर फ़रमाई। जिसमें पहला शख़्स ख़ुद ख़लिफ़ए वक़्त मन्सूर अब्बासी था। इसके अलावा मोहम्मद बिन सुलैमान हाकिमे मदीना और अब्दुल्लाह अफ़ताह जो इमाम मूसिए काज़िम के सिन में बड़े भाई थे और हज़रत इमाम मूसिए काज़िम और उनकी वालेदा मुअज़्ज़मा हमीदा ख़ातून।

इमाम का अन्देशा बिल्कुल सही था और आप का तहफ़्फ़ुज़ भी कामयाब साबित हुआ। चुनांचे जब हज़रत की वफ़ात की इत्तेला मन्सूर को पहुँची तो उसने पहले

तो सियासी मसलेहत से इज़हारे रंज किया। तीन मरतबा " **इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलैहे राजेऊन** " कहा और कहा अब भला जाफ़र का मिस्ल कौन है? इसके बाद हाकिमे मदीना को लिखा कि अगर जाफ़रे सादिक (अ.) ने किसी शख़्स को अपना वसी मुक़र्रर किया हो तो उसका सर क़लम कर दो। हाकिमे मदीना ने जवाब में लिखा कि उन्होंने तो पांच वसी मुक़र्र किये हैं। जिनमें से पहले आप ख़ुद हैं। यह जवाब सुन कर मन्सूर देर तक ख़ामोश रहा और सोचने के बाद कहने लगा कि इस सूरत में तो यह लोग क़त्ल नहीं किये जा सकते। इसके बाद दस बरस मन्सूर जिन्दा रहा लेकिन इमाम मूसिए काज़िम(अ.) से कोई ताअररूज़ न किया और आप मज़हबी फ़राएज़े इमामत की अन्जाम देही में अमनो सुकून के साथ मसरूफ़ रहे। यह भी था कि इस ज़माने में मन्सूर शहरे बग़दाद की तामीर में मसरूफ़ था। जिससे १५७ हिजरी यानी अपनी मौत से सिर्फ़ एक साल पहले फ़राग़त हुई। इस लिये वह इमाम मूसिए काज़िम(अ.) के मुताअल्लिक़ किसी ईज़ा रसानी की तरफ़ मुतावज्जे नहीं हुआ। मगर इस अहद से क़ब्ल वह सादात कुशी में कमाल दिखा चुका था।

अल्लामा मक़रेज़ी लिखते हैं कि मन्सूर के ज़माने में बे इन्तेहा सादात शहीद किये गये हैं और जो बचे हैं वह वतन भाग गये हैं। इन्हीं तारीकीने वतन में हाशिम बिन इब्राहीम बिन इस्माईल अल दीबाज बिन इब्राहीम उमर बिनुल हसने मुसन्ना इब्ने इमाम हसन (अ.) भी थे। जिन्होंने मुल्तान के इलाक़ों में से मक़ामे " **ख़ान** " में सुकूनत इख़्तेयार कर ली थी। (अल निज़ा व अल तख़ासम सफ़ा ७४, तबा मिस्र)

१५८ , हिजरी के आख़िर में मन्सूर दवानेक़ी दुनिया से रूख़्सत हुआ और उसका बेटा मेहदी तख़्ते सलतन्त पर बैठा। शुरू में तो उसने भी इमाम मूसिए काज़िम (अ.) के इज़्ज़तो एहतेराम के ख़िलाफ़ कोई बरताव नहीं किया। मगर चन्द साल बाद फिर वही बनी फ़ात्मा की मुख़ालेफ़त का जज़बा उभरा और १६४ हिजरी में जब वह हज के नाम से हिजाज़ की तरफ़ गया तो इमाम मूसिए काज़िम (अ.) को अपने साथ मक्के से बग़दाद ले गया और क़ैद कर दिया। एक साल तक हज़रत उसकी क़ैद में रहे। फिर उसको अपनी ग़ल्ती का एहसास हुआ और हज़रत को मदीने की तरफ़ वापसी का मौक़ा दिया गया।

" **मेहदी** " के बाद उसका भाई " **हादी** " १६९ हिजरी में तख़्ते सलतन्त पर बैठा और फिर एक साल एक माह तक उसने सलतन्त की। उसके बाद **"हारून रशीद"** का ज़माना आया। जिसमें इमाम मूसिए काज़िम(अ.) को आज़ादी की सांस लेना नसीब नहीं हुई। (सवानेह मूसिए काज़िम सफ़ा ५)

अल्लामा तबरेसी तहरीर फ़रमाते हैं कि जब आप दरजए इमामत पर फ़ाएज़ हुये उस वक़्त आपकी उम्र २०, साल की थी। (आलाम-अल-वरा, सफ़ा १७१)

316

हज़रत इमाम मूसा काज़िम (अ.) के बाज़ करामात वाकिए शकीक बलख़ी

अल्लामा मोहम्मद बिन तलहा शाफ़ई लिखते हैं कि आपके करामात ऐसे हैं कि "तहार मिन्हा अलअकूलल" इनको देख कर अक्लें चकरा जाती हैं, मिसाल के लिए मुलाहेज़ा हों १४६ हिजरी में शकीक बलख़ी हज के लिए गए। इनका बयान हे कि जब मुकामे कादसियामें पहुँचा तो देखा कि एक निहायत खूब सूरत जवान जिनका रगं सांवला (गन्दुम गूं) था वह एक अज़ीम मजमे में तशरीफ़ फ़रमा हैं। जिसम उनका ज़ईफ़ है वह अपने कपड़ों के ऊपर एक कम्बल डाले हुए हैं और पैरो मे जूतियाँ पहने हुए हैं। थोड़ी देर बाद वह मजमें से हट कर एक अलाहेदा मकाम पर जाकर बैठ गए मैंने दिल में सोचा कि यह सूफ़ी हैं और लोगों पर ज़ादे राह के लिए बार बनना चाहता है, मैं अभी उसको ऐसी तम्बीह करूँगा कि यह भी याद करेगा, ग़र्ज कि मैं इनके क़रीब गया। जैसे ही मैं उनके क़रीब पहुँचा, वह बोले "ऐ शकीक बदगुमानी मत किया करो यह अच्छा शेवा नहीं है, इसके बाद वह फ़ौरन उठकर रवाना हो गए, मैंने ख़्याल किया कि यह मामला क्या है। उन्होंने मेरा नाम लेकर मुझे मुख़ातिब किया और मेरे दिल की बात जान ली, इस वाक़ेए से मैं इस नतीजे पर पहुँचा कि हो न हों यह कोई अब्दे सालेह हों। बस यही सोच कर मैं उनकी तलाश में निकला और उनका पीछा किया,ख़्याल था कि वह मिल जाए मैं उनसे कुछ सवालात करूँ, लेकिन न मिल सके। इनके चले जाने के बाद हम लोग भी रवाना हुए। चलते चलते जब हम "वादिए फिज़ा"में पहुँचे तो हमने देखा कि वही जवान सालेह यहाँ नमाज़ में मशगूल हैं और उनके अज़ा व जवारे बेद की मानिन्द काँप रहे हैं और उनकी आँखों से आंसू जारी हैं। मैं यह सोच कर उनके क़रीब गया कि अब उनसे माफ़ी तलब करूँगा जब वह नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो बोले ऐ शकीक खुदा का कौल है कि जो तौबा करता है मैं उसे बख़्श देता हूँ इसके बाद फिर रवाना हो गए। अब मेरे दिल में आया कि यक़ीनन यह बन्दए आबिद, कोई अबदाल है, क्यों कि दो बारा यह मेरे इरादे से अपनी वाक़फ़ियत ज़ाहिर कर चुका है। मैंने हर चन्द फिर उनसे मिलने की सई की लेकिन वह न मिल सके। जब मैं मंज़िले जबाला पर पहूँचा तो देखा कि वही जवान एक कुंए की जगत पर बैठे हुए हैं। उसके बाद उन्होंने एक कूज़ा निकाल कर कुएं से पानी लेना चाहा, नागाह उनके हाथ से कूज़ा छूट कर कुऐं में गिर गया, मैंने देखा कि कूज़ा गिरने के बाद उन्होंने आसमान की तरफ़ मुँह करके बारगाहे अहदियत में कहा मेरे पालने वाले जब मैं प्यासा होता हूँ तू ही सेराब करता है और भूखा होता हूँ, तो तू ही खाना देता है खुदाया ! इस कूज़े के अलावा

मेरे पास और कोई बरतन नहीं है। मेरे मालिक ! मेरा कूज़ा पूर आब बरामद करदे।" उस जवान सालेह का यह कहना था कि कुऐं का पानी बुलन्द हुआ और ऊपर तक आगया।आपने हाथ बढ़ा कर अपना कूज़ा पानी से भरा हुआ ले लिया और वज़ू फरमाकर चार रकत नमाज़ पढ़ी। उसके बाद आपने रेत की एक मुठ्ठी उठाई और पानी में डाल कर खाना शुरू किया। यह देख कर मैं अर्ज़ परदाज़ हुआ। मुझे भी कुछ इनाएत हो मैं भूखा हूँ। आपने वही कूज़ा मेरे हवाले कर दिया। जिसमें रेत भरी थी। खुदा की क़सम जब मैंने उसमे से खाया तो उसे ऐसा लज़ीज़ सत्तू पाया जैसा मैंने खाया ही न था। फिर उस सत्तू में एक खास बात यह थी कि जब तक सफ़र में रहा ,भूखा नहीं हुआ। इसके बाद आप नज़रों से गाएब हो गए। जब मैं मक्का मोअज़्ज़मा पहुँचा तो मैंने देखा एक बालू (रेत) के टीले के किनारे मशगूले नमाज़ हैं और हालत आपकी यह है कि आपकी आँखो से आसूं जारी हैं और बदन पर खुशू व खुज़ू के आसार नुमायां हैं आप नमाज़ ही में मशगूल थे कि सुबह हो गई , आने नमाज़े सुबह अदा फरमाई और उससे उठ कर तवाफ का इरादा किया, फिर सात बार तवाफ करने के बाद एक मक़ाम पर ठहरे। मैंने देखा कि आपके गिर्द बेशुमार हज़रात हैं और सब बे इन्तेहा ताज़ीम व तकरीम कर रहे हैं। मैं चूँकि एक ही सफर में करामात देख चुका था इस लिए मुझे बहुत ज़्यादा फिक्र थी कि यह मालूम करूँ यह बुर्ज़ुग है कौन?चुनांचे मैं उनके गिर्द जो लोग जमा थे उनके क़रीब गया और मैंने पूछा कि यह साहबे करामात कौन हैं ? उन्होंने कहा कि यह फरज़न्दे रसूल हज़रात इमाम मूसाकाज़िम है,मैंने कहा बेशक ऐसे करामात जो मैंने देखे वह इसी घराने के लिए सज़ावार हैं। (मतालेबुल सुवेल सफ़ा २७६, नूरूल अबसार सफ़ा १३५ व शवाहेदुन नबूवत सफ़ा १६३ सवाहेके मोहर्रेका सफ़ा १२१ अर हज्जुल मतालिब सफ़ा ४५२)

मुवर्रिख़ ज़ाकिर हुसैन लिखते हैं कि शक़ीक़ इब्ने इब्राहीम बल्ख़ी का इन्तेक़ाल १९०, हिजरी में हुआ था। (तारीख़े इस्लाम जिल्द १ सफ़ा५६) इमाम शिबली लिखते हैं कि एक मरतबा ईसा मदाएनी हज के लिए गए और एक साल मक्का में रहने के बाद वह मदीना चले गए। इनका ख्याल था कि वहाँ भी एक साल गुज़ारे गें, मदीना पहुँच कर उन्होने जनाबे अबूज़र के मकान में क़याम किया। मदीने में ठहरने के बाद उन्होंने इमाम मूसाकाज़िम (अ.) के वहाँआना जाना शंरू किया। मदाईनी का बयान है कि एक शब को बारिश हो रही थी मैं उस वक़्त इमाम(अ.) की ख़िदमत में हाज़िर था। थोड़ी देर के बाद आपने फरमाया कि ऐ ईसा तुम फ़ौरन अपने मकान चले जाओ क्योंकि "अन्हदम अलबैत अली मतअक" तुम्हारा मकान तुम्हारे असासे पर गिर गया है और लोग सामान निकाल रहे हैं। यह सुन कर मैं फैरन मकान की तरफ गया, देखा कि घर गिर चुका है और लोग मकान से सामान निकाल रहे हैं। दूसरे दिन जब हाज़िर हुआ तो इमाम(अ.) ने पूछा कि कोई चीज़ चोरी तो नहीं गई, मैंने अर्ज़ की एक तश्त नहीं मिलता जिसमें वज़ू किया करता था। आपने

फ़रमाया वह चोरी नहीं गया बल्कि इनहेदाम मकान से क़बल तुम उसे बैतुल ख़ला में रख कर भूल गए हो ,तुम जाओ और मालिक की लड़की से कहो ,वह ला देगी। चुनांचे मैंने ऐसा ही किया और तश्त मिल गया। (नूरूल अबसार सफ़ा १३५)

अल्लामा जामी तहरीर फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने एक सहाबी के हमराह १०० दीनार हुज़ूर मूसा काज़िम(अ.) कि ख़िदमत में बतौरे नज़र इरसाल किया वह उसे लेकर मदीना पहुँचा, यहाँपहुच कर उसने सोचा कि इमाम के हाथों में इसे जाना है लेहाज़ा पाक कर लेना चाहिए, वह कहता है कि मैंने इन दीनारों को जो अमानत थे शुमार किया ९९ ,थे। मैंने उनमें अपनी तरफ़ से एक दीनार शामिल करके १०० पूरा कर दिया। जब मैं हज़रत की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो आपने फ़रमाया सब दीनार ज़मीन पर डाल दो। मैंने थैली खोल कर सब ज़मीन पर निकाल दिया। आपने मेरे बताए बग़ैर इसमें से मेरा वही दीनार जो मैंने मिलाया था निकाल कर मुझे दे दिया और फ़रमाया भेजने वाले ने अद्द का लेहाज़ नहीं किया। बल्कि वज़न का लेहाज किया है जो ९९, पूरा होता है।

एक शख़्स का कहना है कि मुझे अली बिन यक़तीन ने एक ख़त देकर इमाम(अ.) की ख़िदमत में भेजा। मैंने हज़रत की ख़िदमत में पहुँच कर उनका ख़त दिया, उन्होंने उसे पढ़े बग़ैर आस्तीन से एक ख़त निकाल कर मुझे दे दिया और कहा कि उन्होंने जो कुछ लिखा है उसका यह जवाब है। (शवाहेदुल नबूवतसफ़ा १९५)

अबू बसीर का बयान है कि इमाम मूसा काज़िम(अ.) दिल की बातें जानते थे। और हर सवाल का जवाब रखते थे। हर जानदार की ज़बान से वाक़िफ़ थे।

(रवाहल मुस्तफा सफ़ा)

अबू हमज़ा बताऐनी का कहना है कि मैं एक मरतबा हज़रत के साथ हज को जा रहा था कि रास्ते में एक शेर बरामद हुआ,उसने आपके कान में कुच्छ कहा, आपने उसको उसी ज़बान में जवाब दिया और वह चला गया। हमारे सवाल के जवाब में आपने फरमाया कि उस ने अपनी शेरनी की तकलीफ के लिए दुआ की ख़्वाहिश की, मैंने दुआ कर दी और वह वापस चला गया। (तज़किरतुल मासूमीन सफ़ा १९३)

अली बिन यक़तीन इमाम मूसा काज़िम (अ.) के ख़ास असहाब में से थे। १२१ हिजरी में ब मुक़ाम कूफ़ा पैदा हुए और १८२ ,हिजरी बमुक़ाम बग़दाद ब उम्र, ५७,साल फ़ौत हुए उन्होंने कई किताबें भी लिखी हैं (रेजाल तूसी सफ़ा ३५५ तबा नजफ़ अशरफ़)

ख़लीफ़ा मेंहदी अब्बासी और हज़रत इमाम मूसा काज़िम (अ.)

मन्सूर दवानकी के बाद १५७ हिजरी में मेहदी अब्बासी खलीफए वक़्त करार पाया।उसने अपनी ज़िन्दगी में कुछ अच्छे काम भी किए हैं। उसने बहुत से मुलहिदों को ख़ाक में मिला दिया है। मानी जो फ़लसफ़ी था (मज़दक मतूफ़ी चौथी सदी के अक़ाएद से मख़लूत गुमराह कुन अक़ीदे की नशो नुमा करता था) को इसने क़तल करा दिया था। इसके अलावा वह आले मोहममद के साथ भी इसकी रविश मोतदिल थी। लेकिन यह ऐतिदाल बहुत दिनों बाक़ी नहीं रहा और यह अपने आबाओ अजदाद के जादे पर बहुत थोड़े ही अर्से चल निकला और इस अमर की कोशिश करने लगा कि आले मोहम्मद (स.) का कोई मोअज़्ज़िज़ फ़र्द न रहने पाए, बल्कि कोई ऐसा शख़्स भी महफ़ूज़ न रहे जो आले मोहम्मद (स.) को दोस्त रखता हो। तवारीख़ में है कि उसने याक़ूब इब्ने दाऊद को जो ज़ैदी मज़हब के थे, अपना वज़ीरे आज़म बनाकर रेफ़ाहे आम के तमाम काम इनसे लिए और यह मालूम होने के बाद कि यह दोस्तदारे आले मोहम्मद हैं उन्हें क़ैद कर दिया।

साहेबे हबीब उस सैर लिखते हैं कि याक़ूब हमेशा से दोस्त दाराने अहले बैत में से था। यहिया इब्ने ज़ैद और इब्राहीम बरादरे नफ़्से ज़किया के रफ़ीक़ों में से था। शहादत इब्राहीम के बाद मन्सूर ने उसे क़ैद कर लिया था। मेंहदी ने लाएक़ देख कर उसे वज़ीर बना लिया था। (तारीख़े इस्लाम जिल्द१ सफ़ा५६) जब लोगो ने मेंहदी को बावर करा दिया कि यह आले मोहम्मद का खास दिलदादा है तो उसने उन से कहाकि मैं तुम्हें एक बाग़ एक लौड़ी और एक लाख दिरहम देता हूँ, तुम क़ैद खाने में जाकर फ़ुला अलवी को क़तल कर दो, उन्होने सब कुछ लेने के बाद इस अलवी को इसके दो रफ़ीक़ों समैत क़ैद ख़ाने से रेहा कर दिया और उसे काफ़ी माल देकर इससे कहा कि यहाँ से चले जाओ। चुनांचे वह किसी तरफ़ चले गए। चन्द दिनों के बाद इस कनीज़ ने जो उन्हें मिली थी। मेंहदी से बता दिया कि उन्होंने अलवी को क़त्ल करने के बजाए रेहा कर दिया और यही नहीं। बल्कि तेरे दिए हुएमाल से उसे काफी नवाज़ा भी है। मेंहदी ने आपकी तलाशी ली और वाक़ेआत का पता भी लगाया। वाक़ेया चूँकि सही था इस वजह से वह बरहम हो गया और उस ने उनको क़ैद का हुक्म दे दिया। याक़ूब क़ैद कर दिए गए और मुद्दतुल उमर क़ैद में रहे।

अल्लामा शाफ़ेई लिखते हैं कि याक़ूब को मेहदीं के हुक्म से उसे कुऐं में क़ैद किया गया जिसमें रोशानी न जा सकती थी। जिसके नतीजे में वह बिल्कुल अन्धे हो गए ,याक़ूब उसी क़ैद खाने में पड़े रहे। यहाँ तक कि हारून रशीद का ज़माा आया और उसने उन्हें रिहा करके मक्का मोअज़्ज़मा भेज दिया,जहाँ यह १८७ ,हिजरी में इन्तेक़ाल फ़रमा

गये। "इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहे राजेऊन" (मरातुल जेनान जिल्द १ सफ़ा ४१६ तबा हैदराबाद दकन)

इमाम मूसा काज़िम (अ.) की बग़दाद में कत्ल के लिए तलबी

जैसा कि मैंने ऊपर तहरीर किया है मेंहदी चन्द दिनों से ज़्यादा आले मोहम्मद(स.) का तरफ़ दार नहीं रहा। आख़िर वह वक़्त आ गया कि उसने इमाम(अ.) को मदीना से बग़दाद तलब कर लिया, इस तलबी का मक़सद यह था कि वहाँ बुलाकर उन्हें क़त्ल करा दें। बहर सूरत इसी मक़सद के पेश नज़र हुक्म पहुँचा कि आप बग़दाद हाज़िर हों, इमाम(अ.) हसबुल हुक्म वहाँ से रवाना हो गए।

अल्लाम शबलंजी और अल्लामा जामी लिखते हैं किआप जब मंज़िले"ज़बाला" पर पहुँचे तो आपसे अबू खालिद ने मुलाक़ात की। अबू ख़लिद कहते हैं कि मैंने हज़रत मूसा काज़िम(अ.) को देखा कि आप उन लोगों की हिरासत में तशरीफ़ ला रहे हैं जो बग़दाद से आपको लाने के लिए भेजे गए थे। मैं हज़रत के क़रीब गया और मैंने सलाम किया, मुझे देख कर इमाम (अ.) खुश हो गए और मुझसे फ़रमाने लगे कि फ़लां फ़लां चीज़ें ख़रीद कर अपने पास रख लेना जब मैं वापस आऊंगा तो ले लूँगा, मैंने अर्ज़ की बहुत बेहतर। थोड़ी देर के बाद आपने फ़रमाया। अबू खालिद रंजीदा क्यों हो। मैंने अर्ज़ की, मौला आप दुश्मनों के मुँह में जा रहे हैं। डरता हूँ कि जाने वह क्या करें। आपने फ़रमाया , घबराओ नहीं, मैं इन्शा अल्लाह वापस आऊँगा। और अबू ख़ालिद सुनो तुम फलां तारीख़ ब वक़्त शाम मेरा इन्तेज़ार करना, यह फ़रमा कर आप रवाना हो गए और बग़दाद जा पहुँचे।

अल्लामा इब्ने तलह शाफ़ेई व अल्लामा जामी लिखते हैं कि बग़दाद पहुँचते ही आप क़ैद कर दिए गए। अल्लामा मजलिसी लिखते हैं कि थोड़े दिन क़ैद रखने के बाद मेंहदी ने आपको क़तल करा देना चाहाऔर इसी लिए इसने हमीद इब्ने क़हतबा को आधी रात के वक़्त बुला भेजा और उससे कहा कि मेरे और तुम्हारे बाप और भाई के दरमियान कितने अच्छे तअल्लुक़ात थे, और सुनो इस वक़्त मुझे तुमसे एक ज़रूरी काम लेना है क्या तुम उसे कर सकोगे, इसने कहा कि हाँ ज़रूर करूंगा, और ऐ बादशाह अगर तामील इरशाद में मेरा माल , मेरी जान मेरी औलाद हत्ता कि मेरा ईमान भी काम आजाए तो परवाह नहीं। ख़लीफ़ा मेंहदी ने कहा कि "लिल्लाह दरक" खुदा तुम्हरा भला करे , मुझे तुमसे इसी की तवक़्क़ो थी, देखो काम यह है कि तुम इमाम मूसा काज़िम को सुबह होने से पहले क़त्ल कर दो, उसने कहा बेहतर है, बात तय हो गई, हमीद चला गया। मेंहदी सोने चला गया। अभी थोड़ी ही देर सोया था कि अमीरल मोमेनीन(अ.) ख़्वाब में तशरीफ़ लाये और उससे कहने लगे कि क्या तुम्हें हुकूमत इसी लिये दी गई है कि तुम अहले क़राबत

321

को तबाह कर दो, होश में आओ और अपने इरादए नजिस से बाज़ आओ। यह देख कर मेहदी बेदार हो गया और उसने फ़ौरन हमीद को कहला भेजा कि मैंने जो हुक्म दिया है उस पर आज अमल न करना। इसी ख़्वाब की वजह से मेहदी ने उन्हें रेहा करके मदीने भेज दिया।

अल्लामा जामी (अल रहमा) लिखते हैं कि इमाम वापस आ रहे थे और अबू ख़ालिद ज़बावली का हाल यह था कि जिस दिन से इमाम, ज़बाला से रवाना हुये थे। यह बड़ी मुशकिलों से दिन रात **काट** रहे थे। जब वह दिन आया जिस दिन इमाम ने पहुंचने का वायदा फ़रमाया था। **यह घर** से निकल कर बग़दाद के रास्ते पर खड़े हो गये। सूरज डूबते ही उनका दिल डूबने लगा और उन्हें यह शुब्हा पैदा होने लगा कि शायद इमाम (अ.) पर कोई मुसिबत आ गई है। नागाह देखा कि ईराक़ की तरफ़ से गुबार नमूदार हुआ और उसके आगे आगे इमाम (अ.) ख़च्चर पर सवार चले आ रहे हैं। यह देख कर मसरूर हो गये और इस्तेक़बाल के लिये दौड़ पड़े। इमाम ने फ़रमाया ऐ अबू ख़ालिद अपने कहने के मुताबिक़ वापस आ गया हूँ लेकिन एक मौक़ा ऐसा भी आने वाला है कि बग़दाद जा कर वापस न आ सकूंगा। (नूरूल अबसार, सफ़ा १३० दमेए साकेबा जिल्द ३, सफ़ा १६, बा हवालए मनाक़िब व बेहार, जिल्द ६, सफ़ा ६४ शवाहेदुन नबूवत सफ़ा १६३, मतालेबुल सुवेल सफ़ा २७८) फिर वहां से रवाना होकर आप मदीनए मुनव्वरा पहुँचे और बा दस्तूर फ़राएज़े इमामत की अदायगी में मसरूफ़ हो गये।

इमाम मूसीए काज़िम (अ.) हादी अब्बासी की क़ैद में

तवारीख़ में है कि मेहदी के बाद उसका बेटा हादी अब्बासी २२, मोहर्रम १६६ हिजरी मुताबिक़ ७८५ ई० में तख़्ते ख़िलाफ़त पर बैठा। मिस्टर ज़ाकिर हुसैन लिखते हैं। कि हादी बड़ा ख़ुद सर ,ख़ुद राय, ज़िददी, ज़ालिम, ख़ूंख़ार और बे रहम था। शराब पीता और लहो लाब में मसरूफ़ रहता था।

हादी को आले मोहम्मद(स.) से वही बुग़ज़ व एनाद था जो उसके आबाव अजदाद को था, उसी की सलतन्त में और उसी के अहद में हुकूमत में मदीने के गर्वनर ने इमाम हसन की औलाद में से बाज़ अफ़राद पर बादा ख़वारी का झूठा इल्ज़ाम लगवा कर पिटवाया और उनके गले में रस्सियां बंधवा कर मदीने के कूचे व बाज़ार में तशहीर कराया और कई सौ बनी हसन को क़त्ल कराया और उनकी नुमायां फ़र्द जनाबे हुसैन बिन अली बिन हसन मुसल्लस बिन हसने मुसन्ना का सर कटवा कर बग़दाद भिजवा दिया और पूरी ताक़त से सादात पर ज़ुल्म करता रहा। (तारीख़े इस्लाम जिल्द १, सफ़ा ७)

हादी ने हज़रत इमाम मूसीए काज़िम(अ.) के साथ वही कुछ किया जो इमाम

के आबाव अजदाद के साथ करते आये थे।

अल्लामा इब्ने हजर मक्की लिखते है। कि ख़लीफ़ा हादी बिन मेहदी ने हज़रत इमाम मूसिए काज़िम(अ.) को कैद कर दिया। आप कैद की मुसिबतों को बरदाशत कर ही रहे थे कि एक शब हज़रत अली (अ.) ने उसके सामने ख़्वाब में एक आयत पढ़ी। जिसका तरजुमा यह है! कि क्या इसी लिये तुम हाकिम बने हो कि फ़साद बरपा करो, और क़तए रहम करो। " इस ख़्वाब से वह बेदार हुआ और उसने फ़ौरन आपकी रेहाई का हुक्म दिया।

(सवाएके मोहर्रेका, सफ़ा १२२ व अर हज अल मतालिब सफ़ा ४५३)

हज़रत इमाम मूसिए काज़िम(अ.) के एख़लाक़ व आदात और शमाएल व औसाफ़

अल्लामा अली नक़ी लिखते हैं कि हज़रत इमाम मूसिए काज़िम(अ.) उस मुकद्दस सिलसिले की एक फ़र्द थे जिसको ख़ालिक़ ने नौए इन्सान के लिये मेयारे कमाल क़रार दिया था। इसी लिये उनमें से हर एक अपने वक़्त में बेहतरीन इख़लाक़ व औसाफ़ का मुरक़्क़ा थां बेशक यह एक हक़ीक़त है कि बाज़ अफ़राद में बाज़ सिफ़ात इतने मुम्ताज़ नज़र आते हैं कि सबसे पहले उनपर नज़र पड़ती है। चुनांचे सातवें इमाम में तहम्मुल व बरदाश्त और गुस्सा ज़ब्त करने की सिफ़त इतनी नुमायां थी कि आपका लक़ब काज़िम क़रार पा गया। जिसके मानी ही हैं गुस्से को पीने वाला, आपको कभी किसी ने तुर्श रूई और सख़्ती के साथ बात करते नहीं देखा और इन्तेहाई नागवार हालात में भी मुस्कुराते हुये नज़र आये।

मदीने के एक हाकिम से आपको सख़्त तकलीफ़ें पहुँचीं यहां तक कि वह जनाबे अमीर(अ.) की शान में भी नाज़ेबा अल्फ़ाज़ इस्तेमाल किया करता था, मगर हज़रत ने अपने असहाब को हमेशा उसके जवाब देने से रोका।

जब असहाब ने उसकी गुस्ताख़ियों की बहुत शिकायत की और कहा कि अब हमें ज़ब्त की ताब नहीं हमें उनसे इन्तेक़ाम लेने की इजाज़त दी जाय, तो हज़रत ने फ़रमाया कि मैं खुद उसका तदारूक करूंगा। इस तरह उनके जज़्बात में सुकून पैदा करने के बाद हज़रत खुद उस शख़्स के पास उसके खेमों में तशरीफ़ ले गये और कुछ ऐसा एहसान और हुसने सुलूक फ़रमाया कि वह अपनी गुस्ताख़ियों पर नादिम हुआ और अपने तरज़े अमल को बदल दिया। हज़रत ने अपने असहाब से सूरते हाल बयान फ़रमा कर पूछा कि जो मैंने उसके साथ किया वह अच्छा था या जिस तरह तुम लोग उसके साथ करना चाहते थे। सबने कहा यक़ीनन हुज़ूर ने जो तरीक़ा इख़तेयार फ़रमाया, वही बेहतर था। इस तरह आपने अपने जद्दे बुर्ज़ग़वार हज़रत अमीर(अ.) के उस इरशाद को अमल में ला कर दिखलाया

जो आज तक " **नहजुल बलाग़ाह** " में मौजूद है कि अपने दुश्मन पर एहसान के साथ फ़तेह हासिल करो। क्योंकि यह दो किस्म की फ़तेह में ज़्यादा पुर लुत्फ़े कामयाबी है। बेशक इस लिये फ़रीके मुख़ालिफ़ के ज़र्फ़ का सही अन्दाज़ा ज़रूरी है और इसी लिये हज़रत अली(अ.) ने इन अल्फ़ाज़ के साथ यह भी फ़रमाया है कि ख़बरदार ! यह अदम तशद्दुद का तरीक़ा न अहल के साथ इख़्तेयार न करना वरना उसके तशद्दुद में इज़ाफ़ा हो जायगा।

यक़ीनन ऐसे अदम तशद्दुद के मौक़े को पहचानने के लिये ऐसी ही बालिग़ निगाह की ज़रूरत है। जैसी इमाम को हासिल थी,मगर यह उस वक़्त में है जब मुख़ालिफ़ की तरफ़ से कोई ऐसा अमल हो चुका हो जो उसके साथ इन्तेक़ामी तशद्दुद का जवाज़ पैदा कर सके लेकिन अगर उसकी तरफ़ से कोई एक़दाम अभी ऐसा न हुआ हो तो यह हज़रात बहर हाल उसके साथ एहसान करना पसन्द करते थे ताकि उसके ख़िलाफ़ हुज्जत क़ायम हो और उसे ऐसे जारेहाना एक़दाम के लिये तलाश से भी कोई उज़्र न मिल सके बिल्कुल इसी तरह जैसे इब्ने मुल्जिम के साथ जो जनाब अमीर (अ.) को शहीद करने वाला था। आख़िर वक़्त तक जनाबे अमीर(अ.) एहसान फ़रमाते रहे। इसी तरह मोहम्मद बिन इस्माईल के साथ जो इमाम मूसिए काज़िम(अ.) की जान लेने का बाएस हुआ। आप एहसान फ़रमाते रहे। यहां तक कि इस सफ़र के लिये जो उसने मदीने से बग़दाद की जानिब ख़लीफ़ा अब्बसी के पास इमाम मूसीए काज़िम(अ.) की शिकायतें करने के लिये किया था। साढ़े चार सौ दीनार और पन्द्रह सौ दिरहम की रक़म ख़ुद हज़रत ही ने अता फ़रमाई थी जिसको वह लेकर रवाना हुआ था।

आपको ज़माना बहुत ना साज़गार मिला था न उस वक़्त वह इल्मी दरबार क़ायम रह सकता था जो इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.) के ज़माने में क़ायम रह चुका था। न दूसरे ज़राए से तबलीग़ो इशाअत मुमकिन थी। बस आपकी ख़ामोश सीरत ही थी जो दुनिया को आले मोहम्मद(स.) की तालीमात से रूशेनास बना सकती थी। आप अपने मजमूओं में भी अकसर बिलकुल ख़ामोश रहे थे। यहां तक कि जब तक आपसे किसी अमर के मुताअल्लिक़ कोई सवाल न किया जाय। आप गुफ़्तुगू में इब्तेदा भी न फ़रमाते थे। इसके बावजूद आपकी इल्मी जलालत का सिक्का दोस्त और दुश्मनसबके दिल पर क़ायम था और आपकी सीरत की बलन्दी को भी सब मानते थे। इसी लिये आम तौर पर आपको अकसर इबादत और शब ज़िन्दा दारी की वजह से अब्दे सालेह के लक़ब से याद किया जाता था। आपकी सख़ावत और फ़य्याज़ी का भी शोहरा था और फ़ोक़राए मदीना की अकसर पोशीदा तौर पर ख़बर गीरी फ़रमाते थे। हर नमाज़े सुबह की ताक़ीबात के बाद, आफ़ताब के बलन्द होने के बाद से पेशानी सजदे में रख देते थे और ज़वाल के वक़्त सर उठाते थे। क़ुरआने मजीद की निहायत दिलकश अन्दाज़ में तिलावत फ़रमाते थे। ख़ुद भी रोते जाते थे और

पास बैठने वाले भी आपकी आवाज़ से मुतअस्सिर होकर रोते थे।

(सवानेह मूसिए काज़िम सफ़ा ८, व आलाम अल वरा सफ़ा १७८)

अल्लामा शिब्लन्जी लिखते हैं कि हज़रत मूसिए काज़िम(अ.) का यह तरीक़ा और वतीरा था कि आप फ़कीरों को ढूंढ़ा करते थे और जो फ़कीर आपको मिल जाता था उसके घर में रूपया पैसा अशरफ़ी और खाना, पानी पहुंचाया करते थे और यह अमल आपका रात के वक़्त होता था। इस तरह आप फ़ुक़राए मदीना के बे शुमार घरों का आज़ूक़ा चला रहे थे और लुत्फ़ यह है कि उन लोगों तक को यह पता न था कि हम तक सामान पहुँचाने वाला है कौन? यह राज़ उस वक़्त खुला जब आप दुनिया से रेहलत फ़रमा गये।

(नूरूल अबसार, सफ़ा १३६, तबा मिस्र)

इसी किताब के सफ़ा १३४ में है कि आप हमेशा दिन भर रोज़ा रखते और रात भर नमाज़ें पढ़ा करते थे। अल्लामा ख़तीबे बग़दादी लिखते है। कि आप बेइन्तेहा इबादत व रियाज़त फ़रमाया करते थे और ताअते खुदा में इस दरजा शिद्दत बरदाश्त किया करते थे। जिसकी कोई हद न थी।

एक दफ़ा मस्जिदे नबवी में आपको देखा गया कि आप सजदे में मुनाजात फ़रमा रहे हैं और इस दरजा सजदे को तूल दिया कि सुबह हो गई।

(दफ़यात अल अयान जिल्द २, सफ़ा १३१)

एक शख़्स आपकी बराबर बिला वजह बुराईयां किया करता था। जब आपको इसका इल्म हुआ तो आपने एक हज़ार दीनार (अशरफ़ी) उसके घर पर बतौर इनाम भिजवा दिया जिसके नतीजे में वह अपनी हरकत से बाज़ आ गया।

(रवाएह अल मुस्तफ़ा सफ़ा २६४)

इमाम मूसिए काज़िम (अ.) की तसनीफ़ात

आपको अगरचे तसनीफ़ात का मौक़ा ही नहीं नसीब हुआ लकिन फ़िर भी आप उसकी तरफ़ मुतवज्जे रहे हैं। आपकी एक तसनीफ़ जिसका ज़िक्र अल्लामा चलपी बा हवाला हाफ़िज़ अबु नईम असफ़हानी किया है वह मसन्दे इमाम मूसिए काज़िम है।

(कशफ़ुल ज़नून सफ़ा ४३३ व अर हज्जुल मतालिबसफ़ा ४५४)

आपकी मरवियात :- आपसे बहुत सी हदीसें मरवी हैं जिनमें की दो यह हैं। (१) “ **नज़र अल वलदाली वलदिया इबादता** ” यानी आं हज़रत (स.) फ़रमाते हैं कि लड़के का अपने वालदैन के चेहरों पर नज़र करना इबादत है। (२) “ **कल ख़ल्ता यतवी अल मोमिन अलैहा लैसल कज़ब वल ख़यानता** ” झूठ और ख़यानत के अलावा मोमिन हर आदत इख़्तेयार कर सकता है। (नुरूल अबसार ,सफ़ा १३४)

अहमद बिन हम्बल का कहना है कि आपका सिलसिलए रवायत इतना अहम है कि **" लौ क़दी अल्लल मजनून ला फ़ाक़ेहा "** यानी अगर मजनून पर पढ़ कर दम कर दिया जाय तो उसका जुनून जाता रहे। (मुनाक़िब, जिल्द ५, सफ़ा ७३)

ख़लीफ़ा हारून रशीद अब्बासी और हज़रत इमाम मूसिए काज़िम(अ.)

पांच रबीउल अव्वल, १७० हिजरी को **मेहदी** का बेटा **अबू जाफ़र हारून रशीद** अब्बासी ख़लीफ़ए वक़्त बनाया गया। उसने अपना वज़ीरे आज़म यहीया बिन ख़ालिद बर मक्की को बनाया और इमाम अबू हनीफ़ा के शागिर्द अबू यूसुफ़ को क़ाज़ी कज़्ज़ाता का दरजा दिया। बा रवायत ज़ेहनी उसने अगरचे बाज़ अच्छे काम भी किये है। लेकिन लहो लाब और हुसूले लज़्ज़ाते मम्नुआ में मुन्फ़रिद था।

इब्ने ख़ल्दून का कहना है कि यह अपने दाद मन्सूर दवानक़ी के नक़्शे क़दम पर चलता था। फ़र्क़ इतना था कि वह बख़ील था और यह सख़ी। यह पहला ख़लीफ़ा है जिसने राग रागनी और मौसीक़ी को शरीफ़ पेशा क़रार दिया था। उसकी पेशानी पर सादात कुशी का भी नुमायां दाग़ है। इल्मे मौसीक़ी का माहिर अबू इसहाक़ इब्राहीम मौसली उसका दरबारी था। हबीब अल सैर में है कि यह पहला इस्लामी बादशाह है जिसने मैदान में गेंद बाज़ी की और शतरंज के खेल का शौक़ किया। अहादीस में है कि शतरंज खेलना बहुत बड़ा गुनाह है। जामेए अल अख़बार में है कि जब इमाम हुसैन(अ.) का सर दरबारे यज़ीद मे पहुँचा था तो वह शतरंज खेल रहा था। तारीख़ अल ख़ुल्फ़ा, सियोती में है कि हारून रशीद अपने बाप की मदख़ूला लौंडी पर आशिक़ हो गया। उसने कहा कि मैं तुम्हारे बाप के पास रह चुकी हूँ। तुम्हारे लिये हलाल नहीं हूँ। हारून ने क़ाज़ी अबू यूसुफ़ से फ़तवा तल्ब किया। उन्होंने कहा आप इसकी बात क्यों मानते हैं, यह झूठ भी तो बोल सकती है। इस फ़तवे के सहारे से उसने उसके साथ बद फ़ेली (बलात्कार) की।

अल्लामा सियोती यह भी लिखते हैं कि बादशाह हारून रशीद ने एक लौंडी ख़रीद कर उसके साथ उसी रात बिला इस्तेबरा जिमआ (सम्भोग) करना चाहा। क़ाज़ी अबू यूसुफ़ ने कहा कि इसे किसी लड़के को हिबा करके इस्तेमाल कर लिजिये।

अल्लामा सियोती का कहना है कि इस फ़तवे की उजरत क़ाज़ी अबू यूसुफ़ ने एक लाख दिरहम ली थी।

अल्लामा इब्ने ख़ल्क़ान का कहना है कि अबू हनफ़िया के शार्गिदों में अबू यूसुफ़ की नज़ीर न थी। अगर यह न होते तो इमाम अबू हनीफ़ा का ज़िक्र भी न होता।

तारीख़े इस्लाम मिस्टर ज़ाकिर हुसैन में ब हवाला सहाह अल अख़बार में है कि हारून रशीद का दरजा सादात कुशी में मन्सूर से कम न था। उसने १७६, हिजरी में

हज़रत नफ़से ज़किया(अल रहमा) के भाई यहीया को दीवार में ज़िन्दा चुनवा दिया था। उसी ने इमाम मूसिए काज़िम(अ.) को इस अन्देशे से कि कहीं यह वली अल्लाह मेरे ख़िलाफ़ अलमे बग़ावत बलन्दन कर दें अपने साथ हिजाज़ से ईराक़ में ला कर क़ैद कर दिया। और १८३ हिजरी में ज़हर से हलाक कर दिया। अल्लामा मजलिसी तहफ़ुज़े ज़ाएर में लिखते हैं कि हारून रशीद ने दूसरी सदी हिजरी में इमाम हुसैन(अ.) की क़ब्र मुताहर की ज़मीन जुतवाई थी और क़ब्र पर जो बेरी का दरख़्त बतौरे निशान मौजूद था उसे कटवा दिया था। जलाउल अयून और क़म्क़ाम में बाहवाला अमली शेख़ तूसी मरक़ूम है कि जब इस वाक़ेए की इत्तला जरीर इब्ने अब्दुल हमीद को हुई तो उन्होंने कहा कि रसूले ख़ुदा (स.) की हदीस अलाअन अल्लाह क़ातेए अल सिदरता " बेरी के दरख़्त काटने वाले पर ख़ुदा की लानत, का मतलब अब वाज़े हुआ। (तसवीरे करबला सफ़ा ६१ तबा देहली सफ़ा १३३८)

हारून रशीद का पहला हज और इमाम मूसा काज़िम (अ.) की पहली गिरफ़्तारी

मोहम्मद अबूल फ़िदा लिखता है कि एनाने हुकूमत लेने के बाद हरून रशीद ने १७३ हिजरी में पहले पहल हज किया।

अल्लामा इब्ने हजर मक्की तहरीर फ़रमाते हैं कि " कि जब हारून रशीद हज को आया तो लोगों ने इमाम मूसा काज़िम (अ.) के बारे में चुग़ली खाई कि उनके पास हर तरफ़ से माल चला आता है, इत्तेफ़ाक़ से एक रोज़ हारून रशीद ख़ानए काबा के नज़दीक हज़रत इमाम मूसा काज़िम(अ.) से मुलाक़ी हुआ और कहने लगा तुम ही हो जिनसे लोग छुप छुप कर बैअत करते हैं। इमाम मूसा काज़िम (अ.) ने फ़रमाया कि हम दिलों के इमाम हैं और आप जिसमों के। फिर हारून रशीद ने इमाम मूसा काज़िम (अ.) से पूछा कि तुम किस दलील से कहते हो हम रसूल (स.) की ज़ुरियत हैं। हाँलाकि तुम अली की औलाद हो और हर शख़्स अपने दादा से मुन्तसिब होता है। नाना से मुन्तसिब नहीं होता। हज़रत इमाम मूसा काज़िम (अ.) ने फ़रमाया कि ख़ुदाए करीम क़ुरान मजीद में इरशाद करता है। "वमन ज़मुरैत दाऊद सुलैमान व अयूबा व ज़क्रया व यहया व इसा " और ज़ाहिर है कि हज़रत ईसा बे बाप के पैदा हुए थे तो जिस तरह महज़ अपनी वालेदा की निस्बत से ज़ुरियत अम्बिया में मुलहक़ हुए। उसी तरह हम भी अपनी मादरे गिरामी जनाबे फातमा की निस्बत से जनाबे रसूले ख़ुदा(स.) की ज़ुरियत में ठहरे, फिर फरमाया कि जब आएत मुबाहेला नाज़िल हुई तो मुबाहले के वक़्त पैगम्बरे ख़ुदा ने सिवा अली और फात्मा और हसन हुसैन के किसी को नहीं बुलाया और बफ़हवाए " अबनान " हज़रत हसन व हज़रत हुसैन (अ.) ही रसूल अल्लाह के बेटे क़रार पाए (सवाएक़े माहर्रेक़ा सफ़ा १२२ नूरूल अबसार

सफ़ा १३४ अर हज्जुल मतालिब सफ़ा ४५२)

अल्लामा इब्ने खलकान लिखते हैं कि हारून रशीद हज करने के बाद मदीना मुनव्वरा आया और ज़्यारत करने के लिए रौज़े, मुक़द्देसा नबवी (स.) पर हाज़िर हुआ । उस वक़्त उसके गिरद क़ुरैश और दीगर क़बाएल अरब जमा थे, नीज़ हज़रत मूसा काज़िम (अ.) भी साथ थे। हारून रशीद ने हाज़ेरीन पर अपना फ़ख़्र ज़ाहिर करने के लिए क़ब्र मुबारक की तरफ़ मुख़ातिब हो कर कहा। सलाम हो आप पर ऐ रसूल अल्लाह(स.) ऐ इब्ने अम(मेरे चचा ज़ाद भाई) हज़रत मूसा काज़िम (अ.) ने फ़रमाया कि सलाम हो, आप पर मेरे पदरे बुर्ज़ुगवार यह सुन कर हारून के चेहरे का रगं फ़क़ हो गया, और उसने इमाम मूसा काज़िम (अ.) को अपने हमराह ले जाकर क़ैद कर दिया ।

(दफ़ायात अल अयान जिल्द २ सफ़ा १३१ व, तारीख़े अहमदी सफ़ा ३४९)

अल्लामा इब्ने शहर आशोब तहरीर फ़रमाते हैं कि जिस ज़माने में आप हारून रशीद के क़ैद खाने में थे । हारून ने आप का इम्तेहीन करने के लिए नेहायत हसीन जमील लड़की, आपकी खिदमत करने के लिए कैद खाने में भेज दी हज़रत ने जब उसे देखा तो लाने वाले से फरमाया कि हारून से जाकर कह देना कि उन्होने यह हदीया वापस किया है"बल अनतुम बहदयातकम तफर हूना" वह अताए तौबा लक़ा तो इससे तुम ही खुशी हासिल करो। उसने हारून से वाक़ेआ बयान किया, हारून ने कहा कि इसे ले जाकर वहीं छोड़ आओ और इब्ने जाफ़र से कहो कि न मैंने तुम्हरी मरज़ी से तुम्हें क़ैद किया और न तुम्हारी मरज़ी से तुम्हारे पास यह लौंडी भेजी है, मैं जो हुक्म दूँ तुम्हें वह करना होगा। अलग़रज़ वह लौडी हज़रत के पास छोड़ दी गई।

चन्द दिनों के बाद हारून ने एक शख़्स को हुक्म दिया कि जाकर पता लगाए कि इस लौडी का क्या रहा, उसने जो क़ैद ख़ाने में जाकर देखा तो वह हैरान रह गया, वह भागा हुआ हारून के पास आकर कहने लगा कि वह लौडी तो ज़मीन पर सजदे में पड़ी हुई "सुब्बूहुन क़ुद्दुसुन" कह रही है और इसका अजब हाल है। हारून ने हुक्म दिया कि उसे इसके सामने पेश किया जाए, जब वह आई तो बिलकुल मबहूस थी, हारून ने पूछा कि बात क्या है?उसने कहा कि जब हज़रत के पास गई और मैंने उनसे कहा कि मैं आपकी ख़िदमत के लिए हाज़िर हुई हूँ तो आपने एक तरफ़ इशारा करके फ़रमाया कि यह लोग जबकि मेरे पास मैजूद हैं मुझे तेरी क्या ज़रूरत है। मैंने जब उस सिम्त को नज़र की तो देखा कि जन्नत आरास्ता है और हूरो ग़िलमाँ मौजूद हैं। उनका हुसन जमाल देख कर मैं सजदे में गिर पड़ी और इबादत करने पर मजबूर हो गई। ऐ बादशाह! मैंने वह चीज़े कभी नहीं देखीं जो क़ैद खाने में मेरी नज़र से गुज़रीं, बादशाह ने कहा कि कहीं तूने सोने की हालत में ख़्वाब न देखा हो, उसने कहा ऐ बादशाह! ऐसा नहीं है मैंने आलमे बेदारी में बचश्मे खुद सब कुछ देखा है यह सुन कर बादशाह ने उस औरत को किसी महफ़ूज़ मुक़ाम

पर पहुँचा दिया और उसके लिये हुक्म दिया कि इसकी निगरानी की जाय ताकि यह किसी से यह वाकिया न बयान करने पाये। रावी का बयान है कि इस वाक़िये के बाद वह ता हयात मशगूले इबादत रही और जब कोई उसकी नमाज़ वग़ैरा के बारे में कुछ कहता था तो यह जवाब में कहती थी कि मैंने अब्दे सालेह इमाम मूसिए काज़िम(अ.) को इसी तरह करते देखा है।

यह पाक बाज़ औरत इमाम मूसिए काज़िम(अ.) की वफ़ात से कुछ दिनों पहले फ़ौत हो गई। (मुनाकिबे इब्ने शहरे आशोब, जिल्द ५, सफ़ा ६३)

क़ैद ख़ाने से आपकी रेहाई :- आप क़ैद ख़ाने में तकालीफ़ से दो चार थे और हर क़िस्म की सख़्तियां आप पर की जा रही थीं कि नागहां बादशाह ने एक ख़्वाब देखा जिससे मजबूर हो कर उसने आपको रेहा कर दिया।

अल्लामा इब्ने हजरे मक्की ब हवाला अल्लामा मसूदी लिखते हैं कि एक शब को हारून रशीद ने हज़रत अली(अ.) को ख़्वाब में इस तरह देखा कि वह एक तेशा(एक तरह का हथियार) लिये हुये तशरीफ़ लाये हैं और फ़रमाते हैं कि मेरे फ़रज़न्द को रेहा कर दे वरना मैं अभी तुझे कैफ़रे किरदार तक पहुंचा दूंगा। इस ख़्वाब के देखते ही उसने रेहाई का हुक्म दिया और कहा कि अगर आप यहां रहना चाहें तो रहिये और मदीना जाना चाहते हैं तो वहां तशरीफ़ ले जाइये आपको इख़्तेयार है।

अल्लामा मसूदी का कहना है कि इसी शब को हज़रत मूसिए काज़िम(अ.) ने हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा(स.) को ख़्वाब में देखा था। (सवाएक़े मोहर्रेक़ा सफ़ा १२२, तबा मिस्र) अल्लामा जामी लिखते हैं कि मदीने रवाना करते वक़्त हारून ने आपसे ख़ुरूज का शुबहा ज़ाहिर किया। आपने फ़रमाया कि ख़ुरूज व बग़ावत मेरे शायाने शान नहीं है। ख़ुदा की क़सम मैं ऐसा हरगिज़ नहीं कर सकता। (शवाहेदुन नबूवत सफ़ा १६२)

इमाम मूसिए काज़िम(अ.) और अली बिन यक़्तीन बग़दादी

क़ैद ख़ानए रशीद से छूटने के बाद हज़्रत इमाम मूसिए काज़िम(अ.) मदीनए मुनव्वरा पहुंचे और बदस्तूर अपने फ़राएज़े इमामत की अदायगी में मशग़ूल हो गये। आप चूंकि इमामे ज़माना थे इस लिये आपको ज़माने के तमाम हवादिस की इत्तेला थी। एक मरतबा हारून रशीद ने अली बिन यक़्तैन बिन मूसा कूफ़ी बग़दादी को जो कि इमाम मूसिए काज़िम(अ.) के ख़ास मानने वाले थे और अपनी कार करदिगी की वजह से हारून रशीद के मुक़र्रेबीन में से थे। बहुत सी चीज़ें दीं जिनमें ख़ेलअते फ़ाख़ेरा और एक बहुत उमदा क़िस्म का सियाह ज़रबफ़्त का बना हुआ चोग़ा था जिसपर सोने के तारों से फूल कढ़े हुये थे और जिसे सिर्फ़ ख़ुल्फ़ा और बादशाह पहना करते थे। अली बिन यक़्तीन ने अज़ राहे

तक़र्रूब व अक़ीदत उस सामान में और बहुत सी चीज़ों का इज़ाफ़ा करके हज़रत इमाम मूसिए काज़िम(अ.) की ख़िदमत में भेज दिया। आपने उनका हदिया क़ुबूल कर लिया। लेकिन उसमे से इस लिबास मख़सूस को वापस कर दिया। जो ज़रबफ़्त का बना हुआ था और फ़रमाया कि उसे अपने पास रखो, यह तुम्हारे उस वक़्त काम आयेगा जब " जान जोखम" में पड़ी होगी। उन्होंने यह ख़्याल करते हुए कि इमाम ने न जाने किस वाक़िए की तरफ़ इशारह फ़रमाया होउसे अपने पास रख लिया। थोड़े दिनो के बाद इब्ने यक़तीन अपने एक ग़ुलाम से नाराज़ हो गए और उसे अपने घर से निकाल दिया। इसने जाकर रशीद ख़लीफा से इनकी चुग़ली खाई और कहा कि आप ने जिस क़दर ख़िलअत उन्हें दी है। उन्होने सबका सब इमाम मूसा काज़िम (अ.) को दे दिया,है और चूंकि वह शिया हैं ,इसलिए इमाम को बहुत मानते हैं,बादशाह ने ज्योंही यह बात सुनी। वह आग बगूला हो गया, और उसने फ़ौरन सिपाहियों को हुक्म दिया कि अली बिन यक़तीन को इसी हालत में गिरफ़्तार कर लाऐं जिस हाल में वह हों। अलग़रज़ इब्ने यक़तीन लाए गए ,बादशाह ने पूछा मेरा दिया हुआ चोग़ा कहाँ है? उन्होंने कहा बादशाह मेरे पास है। इसने कहा मैं देखना चाहता हूँ। और सुनो! अगर तुम इस वक़्त उसे न देखा सके तो मैं तुम्हारी गरदन मार दूँगा, उन्होंने कहा बादशाह मैं अभी पेश करता हूँ, यह कह कर उन्होंने एक,शख़्स से कहा कि मेरे मकान में जाकर मेरे फुलाँ कमरे से मेरा सन्दूक़ उठा ला,जब वह बताया हुआ ले आया तो आपने उसकी मोहर तोड़ी और चोग़ा निकाल कर उसके सामने रख दिया,जब बादशाह ने अपनी आँखो से चोग़ा देख लिया तो उसका गुस्सा ठन्डा हुआ और ख़ुश होकर कहने लगा, कि अब मैं तुम्हारे बारे में किसी कि कोई बात न मानूँगा। (शवाहेदुन नबूअत सफ़ा १६४)

अल्लामा शिबलन्जी लिखते हैं कि फिर उसके बाद रशीद ने और बहुत साअतिया देकर उन्हे इज़्जत व ऐहतराम के साथ वापस कर दिया और हुक्म दिया कि चुग़ली करने वालों को एक हज़ार कोड़े लगाए जाऐं चुनाचें जल्लादों ने मारना शुरू किया और वह पाँच सौ कोड़े खाकर मर गया। (नुरूल अबसार सफ़ा १३०)

अली बिन यक़्तीन को उलटा वज़ू करने का हुक्म

अल्लामा तबरसी और अल्लामा इब्ने शहर आशोब लिखते हैं अली बिन यक़तीन ने इमाम मूसा काज़िम(अ.) को एक ख़त लिखा जिसमें तहरीर किया कि हमारे दरमियान इस अमर में बहस हो रही है कि आया मसह काब से असाबा(उंगलियों) तक होना चाहिए या उंगलियों से काब तक हुज़ूर इसकी वज़ाहत फ़रमाएं हज़रत ने उस ख़त का एक अजीब व ग़रीब जवाब तहरीर फ़रमाया आपने लिखा कि मेरा ख़त पाते ही तुम

इस तरह वजू शुरू करो तीन मरबा कुल्ली करो, तीन मरतबा नाक में पानी डालो, तीन मरतबा मुह धो अपनी दाहड़ी अच्छी तरह भिगो, सारे सर का मसा करो, अन्दर बाहर कानो का मसा करो तीन मरतबा पाँव धोऔर देखो मेरे इस हुक्म के खिलाफ हरगिज़ हरगिज़ ना करना अली बिन यक्तीन ने जब इस ख़त को पढ़ा तो वह हैरान रह गए लेकिन यह समझते हुए मौलाई आलमा बेमा क़ाला आपने जो कुछ हुक्म दिया है उसकी गहराई और उसकी वजह का अच्छी तरह आपको इल्म होगा इस पर अमल करना शरू कर दिया।

रावी का बयान है कि अली बिन यक्तीन की मुख़ालेफ्त बराबर दरबार में हुआ करती थी और लोग बादशाह से कहा करते थे कि यह शिया हैं और तुम्हारे मुखालिफ है एक दिन बादशाह ने अपने बाज़ मुशीरों से कहा कि अली बिन यक्तीन की शिकायत बहुत हो चुकी है अब मैं खुद छुपकर देखूँगा और यह मालूम करूँगा कि वजू क्योंकर करते हैं और नमाज़ कैसे पढ़ते हैं। चुनांचे उसने छुप कर आपके हुजरे में नज़र डाली तो देखा कि वह अहले सुन्नत के उसूल और तरीके पर वजू कर रहे हैं यह देख कर उनसे मुतमईन हो गया और उसके बाद से किसी के कहने को बावर नहीं किया इस वाक़िए के फ़ौरन बाद इमाम मूसिए काज़िम(अ.) का ख़त अली बिन यक्तीन के पास पहुँचा जिसमें मरकूम था कि ख़दशा दूर हो गया "तरज़ायेका अम्रकल्लाह" अब तुम इसी तरह वजू करो जिस तरह खुदा ने हुक्म दिया है यानी अब उल्टा वजू न करना बल्कि सीधा और सही वज़ू करना और तुम्हारे सवाल का जवाब यह है कि उंगलियों के सर से काबेईन तक पाँव का मसा होना चाहिए। (आलमुल वरा सफ़ा १७०, मुनाकिब जिल्द ५ सफ़ा ५८)

वज़ीरे आज़म अली बिन यक्तीन का इमाम मूसीए काज़िम(अ.) की फ़हमाईश

अल्लामा हुसैन बिन अब्दुल वहाब तहरीर फरमाते हैं कि मोहम्मद बिन अली सूफ़ी का बयान है कि इब्राहीम जमाल जो इमाम मूसिए काज़िम के सहाबी थे, ने एक दिन अबुल हसन अली बिन यक्तीन से मुलाकात के लिए वक्त चाहा उन्होने वक्त न दिया उसी साल वह हज के लिए गए और हज को इमाम मूसिए काज़िम(अ.) भी तशरीफ़ ले गए इब्ने यक्तीन हज़रत से मिलने के लिए गए उन्होंने मिलने से इन्कार कर दिया इब्ने यक्तीन को बड़ा ताअज्जुब हुआ। रास्ते में मुलाक़ात हुई तो हज़रत ने फ़रमाया कि तुमने इब्राहीम से मुलाक़ात करने से इन्कार किया था इसलिए मैं भी तुम से नही मिला और उस वक्त तक न मिलूँगा जब तक तुम उनसे माफ़ी न मांगोगे और उन्हे राज़ी न करोगे इब्ने यक्तीन ने अर्ज़ की मौला मैं मदीने में हूँ और वह कूफ़े में हैं, मेरी मुलाक़ात कैसे हो सकती है।

फ़रमाया तुम तन्हा बक़ी मे जाओ,एक ऊँट तय्यार मिलेगा इस पर सवार होकर कूफ़ा के लिए रवाना हो चशमे ज़दन मे वहाँ पहुँच जाओगे। चुनांचे वह गए और ऊँट पर सवार हो कर कूफ़ा पहँचे, इब्राहीम के दरवाज़े पर "दक़्कुलबाब" किया,अवाज़ आई कौन है ? कहा मैं इब्ने यक़तीन हूँ उन्होंने कहा , तुम्हरा मेरे दरवाज़े पर क्या काम है ?इब्ने यक़तीन ने जवाब दिया, सख़्त मुसीबत में मुबतिला हूँ, ख़ुदा के लिए मिलने का वक़्त दो, चुनांचे उन्होंने इजाज़त दी, इब्ने यक़तीन ने क़दमों पर सर रख कर माफ़ी, मांगी और सारा वाक़ेआ कह सुनाया इब्राहीम जमाल ने माफ़ी दी। फिर इसी ऊँट पर सवार हो कर चश्मे ज़दन में मदीने पहुँचे और इमाम (अ.) की ख़िदमत में हाज़िर हुए, इमाम ने फिर माफ़ कर दिया और मुलाक़ात का वक़्त दे कर गुफ़्तुगू फ़रमाई। (ऐनुल मोजेज़ात सफ़ा १२२ तबा मुल्तान)

इमाम मूसा काज़िम(अ.) के हुक्म से बादल का एक मर्दे मोमिन को चीन से तालेक़ान पहुँचाने का वाक़िआ

हारून रशीद का एक सवाल और उसका जवाब

यह मुसल्लम है कि हज़रात मोहम्मद वआले मोहम्मद, मोजिज़ात, करामात और उमूरे ख़रक़ आदात मे यकताए काएनात थे,रजअत शमस, शक़्क़ुलक़मर और हज़रत अली का एक गिरोह समेत चादर पर बैठ कर ग़ारे असहाब कहफ़ तक सफ़र करना उसके शवाहेद हैं।

अल्लामा मोहम्मद इब्ने शहर आशोब, तहरीर फ़रमाते हैं कि " ख़ालिद बिन समा बयान करते हैं कि एक दिन हारून रशीद ने एक शख़्स को तलब किया था अली बिन सालेह तालक़ानी,पूछा तुम ही वह हो जिसको "बादल" चीन से उठ कर तालक़ान लाए थे? कहा हाँ!इसने कहा बताओ क्या वाकिया है? यह क्योंकर हुआ। तालकानी ने कहा कि मैं किश्ती में सवार था। नागाह जब मेरी किश्ती समुन्दर के इस मक़ाम पर पहुँची जो सबसे ज़्यादा गहरा था तो मेरी कश्ती टूट गई। तीन रोज़ मैं तख़्तों पर पड़ा रहा और मौजें मुझे थपेड़े लगाती रहीं फिर समन्दर की मौजों ने मुझे ख़ुश्की पर फेंक दिया। वहाँ नहरें और बाग़ात मौजूद थे। मैं एक दर्ख़्त के साए में सोगया। इसी असनामें मैंने एक खौफनाक आवाज़ सुनीडर के मारे बेदार हो गया। फिर दो घोड़ों को आपस में लड़ते हुए देखा। ऐसे खूब सूरत घोड़े कभी नहीं देखे थे। उन्होंने जब मुझे देखा, समुन्दर में चले गए। मैंने इसी असना में एक अज़ीब अल ख़िल्क़त परिन्दे को देखा जो आकर बैठ गया। पहाड़ के ग़ार के क़रीब मैं दरख़्त में छुपे हुए इसके क़रीब गया ताकि इसको अच्छी तरह देख सकूँ। परिन्दे ने जब मुझे देखा तो उड़ गया। मैं उसके पीछे चल पड़ा। ग़ार के क़रीब मैंने तसबीह व तहलील

तकबीर और तिलावते कुरआने मजीद की आवाज़ सुनी। मैं ग़ार के क़रीब गया। आवाज़ देने वाले ने आवाज़ दी। " ऐ अली बिन सालेह तालक़ानी " ख़ुदा तूम पर रहम करे। ग़ार के अन्दर आ जाओ। मैं ग़ार के अन्दर चला गया। वहां एक अज़ीम शख़्स को देखा, मैंने सलाम किया, उसने जवाब दिया। फिर फ़रमाया कि ऐ बिन सालेह तालक़ानी तुम मादन उल कनूज़ हो। भूख, प्यास, और ख़ौफ़ के इम्तेहान में कामयाब हुये हो। अल्लाह तआला ने तुम पर रहम किया है, तुम्हें नजात दी है। तुम्हें पाकीज़ा पानी पिलाया है। मैं उस वक़्त को जानता हूँजब तुम कशती पर सवार हुये और समुन्दर में रहे। तुम्हारी कशती टूट गई। कितनी दूर तक मौजों के थपेड़े खाती रही। तुमने अपने आपको समुन्दर में गिराने का इरादा किया। अगर ऐसा करते तो ख़ुद मौत को दावत देते। बड़ी मुसिबत उठाई ,मैं उस वक़्त को भी जानता हूँ जब तुमने नजात पाई और दो ख़ूब सूरत चीज़ें देखीं तुमने परिन्दे का पीछा किया। जब उसने तुमहें देखा तो आसमान की तरफ़ उड़ गया। अल्लाह तआला तुम पर रहम करें। आओ यहां बैठ जाओ। जब मैंने उस शख़्स की बात सुनी तो उससे कहा मैं तुमहें अल्लाह तआला का वास्ता देकर पूछता हूँ यह बताओ कि मेरे हालात तुमको किसने बताये। फ़रमाया उस ज़ात ने जो ज़ाहिरो बातिन की जानने वाली है। फिर फ़रमाया कि तुम भूखे हो। मैंने अर्ज़ की बेशक मैं भूखा हूँ। यह सुन कर आपने अपने लबों को हरकत दी और एक दस्तरख़्वान रूमाल से ढका हुआ हाज़िर हो गया। उन्होंने दस्तरख़्वान से रूमाल को उठा लिया। फ़रमाया अल्लाह तआला ने जो रिज़्क़ दिया है आओ उसे खाओ। मैंने खाना खाया, ऐसा पाकीज़ा खाना कभी न खाया था। फिर मुझे पानी पिलाया। मैंने ऐसा लज़ीज़ और मीठा पानी कभी नहीं पिया था। फिर उनहोंने दो रकअत नमाज़ पढ़ी और मुझसे फ़रमाया कि ऐ अली घर जाना चाहते हो ,मैंने अर्ज़ की कि मैं वतन से बहुत दूर (चीन के इलाक़े में पड़ा हूँ,मेरी मद्द कौन कर सकता है और मैं क्योंकर यहां से वतन जा सकता हूँ? उन्होंने फ़रमाया घबराव नहीं हम अपने दोस्तों की मद्द किया करते हैं। हम तुम्हारी मद्द करेंगे। फिर उन्होंने दुआ के लिये हाथ उठाया, नागाह बादल के टुकड़े आने लगे और ग़ार के दरवाज़े को घेर लिया। जब बादल उनके सामने आया तो उसने बहुक्मे ख़ुदा सलाम किया " ऐ अल्लाह के वली और उसकी हुज्जत आप पर सलाम हो। उन्होंने जवाबे सलाम दिया। फिर बादल के एक टुकड़े से पूछा कहां का इरादा है और किस ज़मीन के लिये तुम भेजे गये हो। उसने ज़मीन का नाम लिया और वह चला गया। फिर अब्र का एक टुकड़ा सामने आया और आकर सलाम किया। उन्होंने जवाब दिया। पूछा कहां जाने के लिये आया है। कहा तालक़ान जाने का हुक्म दिया गया है। ऐ ख़ुदाए वहदहू ला शरीक का इताअत गुज़ार अब्र जिस तरह अल्लाह की दी हुई चीज़ें उड़ा कर लिये जा रहा है इसी तरह इस बन्दए मोमिन को भी ले जा। जवाब मिला। बसरो चश्म (सर आंखों पर) फिर उन्होंने बादल को अब्र को हुक्म दिया कि ज़मीन पर बराबर हो जा, वह ज़मीन पर

आ गया। फिर मेरे बाज़ू को पकड़ कर उस पर बैठा दिया। बादल अभी उड़ने भी न पाया था कि मैंने उनकी ख़िदमत में अर्ज़ की " मैं आपको अल्लाह तआला की क़सम और मोहम्मद(स.) और आइम्मए ताहेरीन(अ.) का वास्ता देकर पूछता हूँ कि आप यह फ़रमाइये, आप हैं कौन " आपका इस्मे गेरामी(नाम) क्या है। इरशाद फ़रमाया! ऐ अली बिन सालेह तालक़ानी मैं ज़मीन पर अल्लाह की हुज्जत हूँ और मेरा नाम मूसा बिन जाफ़र (मूसिए काज़िम) है। फिर मैंने उनके आबाव अजदाद की इमामत का ज़िक्र किया और उन्होंने बादल को हुक्म दिया और वह बलन्द होकर हवा के दोश पर चल पड़ा। ख़ुदा की क़सम न मुझे कोई तकलीफ़ पहुँची और न ख़ौफ़ लाहक़ हुआ। मैं थोड़ी देर में अपने वतन " **तालक़ान** " जा पहुँचा और ठीक उस सड़क पर उतरा जिसपर मेरा मकान था।

यह सुन कर हारून रशीद ने जल्लादों को हुक्म दे कर उसे इस लिये क़त्ल करा दिया कि वह कहीं इस वाक़िये को लोगों में बयान न कर दे और अज़मते आले मोहम्द और वाज़े हो जाय। (मुनाक़िब इब्ने शहरे आशोब, जिल्द ३, सफ़ा १२१ तबा मुल्तान)

इमाम मूसिए काज़िम(अ.) और फ़िदक के हुदूदे अरबा

अल्लामा यूसुफ़ बग़दादी सिब्ते इब्ने जोज़ी हनफ़ी तहरीर फरमाते हैं कि एक दिन हारून रशीद ने हज़रत इमाम मूसिए काज़िम(अ.) से कहा कि आप " **फ़िदक** " लेना चाहें तो मैं दे दूँ। आपने फ़रमाया कि मैं जब उसके हुदूद बताऊंगा तो तू उसे देने पर राज़ी न होगा और मैं उसी वक़्त ले सकता हूँ, जब उसके पूरे हुदूद दिये जायें। उसने पूछा कि उसके हुदूद क्या हैं। फ़रमाया पहली हद अदन है, दूसरी हद समर क़न्द है। तीसरी हद अफ़रीक़ा है। चौथी हद सैफ़ अल बहर है। जो ख़ज़र्र और आरमीनिया के क़रीब है। यह सुन कर हारून रशीद आग बबूला हो गया और कहने लगा कि फिर हमारे लिये क्या रहा? हज़रत ने फ़रमाया कि इसी लिये तो मैंने लेने से इन्कार किया था। इस वक़िये के बाद ही से हारून रशीद हज़रत के दरपए क़त्ल हो गया।

(ख़वास अल उम्मता अल्लामा सिब्ते इब्ने जौज़ी सफ़ा ४१६, तबा लाहौर)

हरून रशीद अब्बासी की सादात कुशी
हमीद बिन क़हतबा और उसका वाक़ेआ

तवारीख में है कि हारून रशीद तामीर बग़दाद और दीग़र मलकी मसरूफियात की वजह से थोड़े अर्से तक सादात कुशी की तरफ़ मुतवज्जा न हो सका। लेकिन जब

उसे एक ज़रा सा सुकून हुआ तो उसने अपने अबाई जज़बात को बरूए कार लाने का तहय्या कर लिया और इसकी सई शुरू कर दी कि ज़मीन पर आले मोहममद का कोई बीज भी बाक़ी न रहने पाए, चुनांचे उसने पूरा हौसला निकाला और हर मुमकिन सूरत से उन्हें तबाह व बरबाद कर दिया।

उलमा का कहना है कि उसने गुन्डों के गिरोह क़त्ले सादात के लिए मुकर्र कर दिए थेऔर खुद अपनी हुकूमत के आला हुक्काम को खुसूसी हुक्म भेज दिया था कि सलतनत व हुकूमत को पूरी ताक़त से सादात की तलाश की जाए और इनमें से एक को भी ज़िन्दा ना छोड़ा जाए।

अल्लामा मजलिसी " अब्दुल्लाह बज़ार नेशापुरी के हवाले से " हाकिम ईरान हमीद इब्ने क़हतबा तूसी " का एक खत लिखते हैं, इब्ने क़हतबा कहता है कि मैं इस लिए रोज़ा नमाज़ वग़ैरा नहीं करता, कि मुझे इल्म है कि मैं बख्शा नहीं जा सकता और बहर सूरत जहन्नुम में जाऊँगा। ऐ अब्दुल्लाह ! तुमसे क्या बताऊँ,अभी थोड़े अर्से की बात है कि हारून रशीद ने मुझे रात के वक़्त जबकि वह तूस आया हुआ था और मैं भी इत्तेफाक़न आगया,बुलाया और मुझे हुक्म दिया कि तुम इस गुलाम के साथ जाओ और यह मेरी तलवार हमराह लेते जाओ, यह जो कहे वह करो मैं इसके हुक्म से गुलाम के साथ हो लिये। गुलाम मुझे एक ऐसे मकान में ले गया जिसमें फ़ात्मा बिन्ते असद रसूल(स.) और अली (अ.) की ज़ौजा बुतूल की औलाद क़ैद थी गुलाम ने एक कमरे का दरवाज़ा खोला और मुझसे कहा कि इन सब को क़तल करके इस कुँए में डाल दो,मैंने उन्हें क़तल किया और कुऐं में डाल दिया। फिर दूसरा कमरा खोला और मुझसे कहा इन सब को क़तल करके कुएं में डालो, मैंने उन्हें भी क़तल किया। मगर तीसरा कमरा खोला और मुझसे कहा उन्हें भी क़त्ल करो। मैंने उन्हें भी क़त्ल किया। ऐ अब्दुल्लाह इन सब मक़तूलों की तादात साठ थी, इनमें छोटे बड़े बूढ़े, जवान और सभी क़िस्म के सादात थे, ऐ अब्दुल्लाह जब मैं आख़री कमरे के क़ैदी सादात को क़त्ल करने लगा तो आख़िर में एक नेहायत नूरानी बुर्ज़ुग बरामद हुए, और मुझसे कहने लगे! ऐ ज़ालिम क्या रसूल अल्लाह (स.) को मुँह नहीं दिखाना है और क्या खुदा की बारगाह में तुझे नहीं जाना है, यह तू क्या कर रहा है, इसका कलाम सुनकर मेरा दिल काँप गया, और उन पर मेरा हाथ ना उठा। इतने में गुलाम ने मुझे डाँट कर कहा हुक्मे अमीर में क्यों देर करता है। उसके यह कहने पर मैंने उन्हे भी तलवार के घाट उतार दिया। " अब मेरी नमाज़ और मेरा रोज़ा मुझे क्या फाएदा पहुँचा सकता है "

इमाम मूसिए काज़िम (अ.) की दोबारा गिरफ़्तारी

अल्लामा इब्ने शहर आशोब, अल्लामा तबरसी, अल्लामा अरबली, अल्लामा

शिबलन्जी तहरीर फ़रमाते हैं कि १६६-७० हिजरी में हादी के बाद हारून तख़्ते ख़िलाफ़त पर बैठा सलतनत अब्बसीया के क़दीम रवायात जो सादात बनी फ़ात्मा की मुख़ालफ़त मैं थे इसके पेशे नज़र थे, खुद इसके बाप मन्सूर का रवय्या जो इमामे जाफरे सादिक़(अ.) के ख़िलाफ था उसे मालूम था, उसका यह इरादा कि जाफरे सादिक़ के जानशीन को क़त्ल कर डाला जाए यकीनन उसके बेटे हारून को मालूम हो चुका होगा वह तो इमाम जाफ़रे सादिस(अ.) की हकीमाना वसीयत का इख़्लाक़ी दबाव था जिसने मनसूर के हाथ बांध दिए थे और फिर शहर बग़दाद की तामीर की मसरूफ़ियत थी जिसने उसे उस जनिब मोतावज्जे नहीं होने दिया था अब हारून के लिए उनमें से कोई बात माने न थी तख़्ते सलतनत पर बैठ कर अपने इक़्तिदार को मज़बूत रखने के लिए सबसे पहले यह ही तसव्वर पैदा हो सकता था कि इस रूहानियत के मरकज़ को जो मदीने महल्ला बनी हाशिम में क़ाएम है तोड़ने की कोकशि की जाए मगर एक तरफ़ इमाम मुसिए काज़िम (अ.) का मोहतात और ख़ामोश तरज़े अमल और दूसरी तरफ़ सलतनत की अन्दुरूरनी मुश्किलात उनकी वजह से नौ,६ बरस तक हारून रशीद को भी किसी खुले हुए तशदुद्द का इमाम के ख़िलाफ़ मौक़ा न मिला।

इसी दौरान में अब्दुल्लाह इब्ने हसन के फ़रज़न्द यहय्या दरपेश हुआ वह आमान दिए जाने के बादतामाम अहदो पैमान को तोड़ कर र्दद नाक तरीक़े पर क़ैद रखे गए और फिर क़तल किए गए बावजूद कि यहय्या के मामलात से इमाम मूसिए काज़िम (अ.) को किसी तरह का सरो कार न था बल्कि वाक़ेआत से साबित होता है कि हज़रत उनको हुकूमते वक़्त की मुख़ालफ़त से मना फ़रमाते थे। मगर अदावत बनी फ़ात्मा का जज़्बा जो यहय्या बिन अब्दुल्ला की मुख़ालफ़त के बहाने से उभर गया था। इसकी ज़द से इमाम मूसिए काज़िम (अ.) भी महफ़ूज़ न रह सके इधर यहय्या बिन ख़ालिद बरमक्की जो वज़ीरे आज़म था अमीन (फरज़न्द हरून रशीद) के अतालिक़ ताफरबिन मोहम्मद अशअस की रक़ाबत में इसके ख़िलाफ़ यह इलज़ाम क़ाएम किया कि यह इमाम मूसिए काज़िम (अ.) के शियों में से है और इनके इकतिदार का ख्वाहा है ।

बराह रास्त उस का मक़सद हारून को जाफ़र से बरगशता करना था लेकिन बिल वास्ता इसका ताअल्लुक़ हज़रत इमाम मूसिए काज़िम(अ.) के साथ भी था। इसलिए हारून को हज़रत की ज़रर रसानी की फिक्र पैदा हो गई इस दौरान में यह वाकिया पैदा हुआ। कि हारून रशीद हज के इरादे से मक्का मोअज्ज़मा में आया। इत्तेफाक़ से इसी साल हज़रत इमाम मूसिाए काज़िम (अ.) भी हज को तशरीफ लाए हुए थे। हारून ने अपनी आँख से इस अज़मत व मरजीयत का मुशाहेदा किया जो मुसलमानों में इमाम मूसिए काज़िम के मुतालिक़ पाई जाती थी। इससे इसके हसद की आग भड़क उठी। इसके बाद इसमें मोहम्मद बिन इस्माईल की मुख़ालेफ़त ने और इज़ाफा कर दिया वाक़ेया ये है कि इस्माईल इमाम

जाफ़रे सादिक़ (अ.) के बड़े फरज़न्द थे और इसलिए उनकी ज़िन्दगी मे आम तौर पर लोगों का ख़याल ये था के वह इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.) के क़ायम मुक़ाम हो गये मगर उनका इन्तेक़ाल इमाम जाफ़रे सादिक़(अ.) के ज़माने ही में हो गया और लोगों का ख़याल ग़लत साबित हुआ फिर भी बाज़ सादा लौह असहाब इस ख़याल पर क़ायम रहे कि जा नशिनी का हक़ इसमाईल और औलादे इसमाईल में मुनहसिर है उन्होंने इमाम मुसीए काज़िम (अ.) की इमामत को तसलीम नहीं किया चूनान्चे इसमाइलिया फिरक़ा बन गया मूख़्तसर तादाद मे सही अब भी दुनया में मौजूद थे महोम्मद इन ही इस्माईल के फ़रज़न्द थे और इस लिए मूसिए काज़िम (अ.) से एक तरह की मुख़ालफ़त पहले से रखते थे। मगर चुँकि इनके मानने वालों की तादाद बहुत कम थी और वह अफ़राद कोई नुमाया हैसीयत न रखते थे इस लिए ज़ाहिरी तौर पर इमाम मूसिए काज़िम(अ.) के यहाँ आमदो रफ़्त रखते थे और ज़ाहिरी तौर पर क़राबत दारी के तालुक़ात क़ाएम किए हुए थे।

हारून रशीद ने इमाम मूसिए काज़िम (अ.) की मुख़ालफ़त की सूरतों पर ग़ौर करते हुए यहय्या बर मक्की से मशविरा लिया, कि मैं चाहता हूँ कि औलादे अबू तालिब में से किसी को बुला कर इससे मूसा इब्ने जाफ़र के पूरे हालात दरयाफ़्त करूँ। यहय्या जो खुद अदावत बनी फ़ात्मा में हारून से कम न था। इसने मोहम्मद बिन इस्माईल का पता दिया, कि आप इनको बुला कर दरयाफ़्त करें, तो सही हालात मालूम हो सकेंगे। चुनांचे उसी वक़्त मोहम्मद बिन इस्माईल के नाम ख़त लिखा गया।

शहनशाहे वक़्त का ख़त जो मोहम्मद बिन इस्माईल को पहुँचा तो उसने अपनी दुनियाँवी कामयाबी का बेहतरीन ज़रिया समझ कर फ़ौरन बग़दाद जाने का इरादा कर लिया मगर इन दिनों हाथ बिलकुल ख़ाली थे ,इतना रूपया पास मौजूद न था कि सामाने सफ़र करते, मजबूरन इसी डेहवढ़ी पर आना पड़ा जहाँ करम व अता में दोस्त और दुश्मन की तफरीक़ न थी। इमाम मूसिए काज़िम (अ.) के पास आकर बग़दाद जाने का इरादा ज़ाहिर किया। हज़रत खूब समझते थे कि इस बग़दाद के सफ़र का पस मन्ज़र और इसकी बुनयाद क्या है। हुज्जत तमाम करने की गरज़ से आपने सफ़र का सबब दरयाफ़्त किया। उन्होंने अपनी परेशान हाली बयान करते हुए कर्ज़दार बहुत हो गया हूँ कि शायद वहाँ जाकर कोई सूरत बसर अवक़ात की निकले और मेरा कर्ज़ा अदा हो जाए हज़रत ने फ़रमाया। वहाँ जाने की ज़रूरत नहीं है, मैं वादा करता हूँ कि तुम्हारा कर्ज़ा अदा करूँगा और जहाँ तक होगा तुम्हारे ज़रूरयात ज़िन्दगी भी पूरी करता रहूँगा। अफ़सोस है कि मोहम्मद ने इसके बाद बग़दाद जाने का इरादा नहीं बदला। चलते वक़्त हज़रत से रूख़सत होने लगे तो अर्ज़ किया कि मुझे वहाँ के मुतालिक़ कुछ हिदाएत फ़रमाई जाएं, हज़रत ने उसका कुछ जवाब न दिया। जब उन्होंने कई मरतबा इस्रार किया तो हज़रत ने फरमाया ! “ बस इतना ख़्याल

रखना कि मेरे खून में शरीक न होना ,और मेरे बच्चों की यतीमी के बाएस न बनना "कुछ और हिदायत फ़रमाईये , हज़रत ने उसके अलावा कुछ कहने से इनकार किया। जब वह चलने लगे तो हज़रत ने साढ़े चार सौ दीनार और पन्दरह सौ दिरहमउन्हें मसारिफ़े सफ़र के लिये अता फ़रमाये। नतीजा वही हुआ जो हज़रत के पेशे नज़र था। मोहम्मद बिन इस्माईल बग़दाद पहुंचे और वज़ीरे आज़म बर मक्की के मेहमान हुये। उसके बाद यहीया के साथ हारून के दरबार में पहुंचे। मसलेहते वक़्त की बिना पर बहुत ताज़ीमो तकरीम की गई। गुफ़्तुगू के दौरान हारून ने मदीने के हालात दरयाफ़्त किये। मोहम्मद ने इन्तेहाई ग़ल्त बयानियों के साथ वहां के हालात का तज़किरा किया और यह भी कहा कि " मैंने आज तक नहीं देखा और न सुना कि एक मुल्क में दो बादशाह हों। उसने कहाः- कि इसका क्या मतलब? मोहम्द ने कहा कि बिल्कुल उसी तरह जैसे आप बग़दाद में सलतन्त कर रहे हैं। मूसिए काज़िम मदीने में अपनी सलतनत क़ायम किये हुये हैं, अतराफ मुल्क से उनके पासख़िराज पहुंचता है और वह आपके मुक़ाबले के दावे दार हैं। उन्होंने बीस हज़ार अशर्फ़ी की एक ज़मीन ख़रीदी है। जिसका नाम " **सैरिया** " है।(शबलनजी) यही वह बातें थीं जिनके कहने के लिये यहीया बर मक्की ने मोहम्मद को मुन्तख़िब किया था। हारून का ग़ैज़ो ग़जब इन्तेहाई इशतेआल के दरजे तक पहुंच गया। उसने मोहम्मद को दस हज़ार दीनार अता करके रूख़्सत किया। खुदा का करना यह कि मोहम्मद को इस रक़्म से फ़ायदा उठाने का एक दिन भी मौक़ा नहीं मिला। इसी शब को उनके हलक़ में दर्द पैदा हुआ। ग़ालेबन " ख़न्नाक " हो गया और सुबह होते होते वह दुनिया से रूख़्सत हो गये। हारून को यह ख़बर पहुंची तो अशरफ़ियों के तोड़े वापस मंगवा लिये मगर मोहम्मद की बातों का असर उसके दिल पर ऐसा जम गया था कि उसने यह तय कर लिया कि इमाम मूसिए काज़िम का नाम सफ़्हे हसती से मिटा दिया जाय।

चुनांचे १६६ हिजरी में फिर हारून रशीद ने मक्कए मोअज़्ज़मा का सफ़र किया और वहां से मदीनए मुनववरा गया। दो एक रोज़ क़याम के बाद कुछ लोग इमाम मूसिए काज़िम(अ.) को गिरफ़्तार करने के लिये रवाना किये। जब यह लोग इमाम के मकान पर पहुंचे तो मालूम हुआ कि हज़रत रौज़ए रसूल अल्लाह(स.) पर हैं। उन लोगों ने रौज़ए पैग़म्बर की इज़्ज़त का भी ख़्याल न किया। हज़रत उस वक़्त क़ब्रे रसूल(स.) के नज़दीक नमाज़ में मशग़ूल थे। बे रहम दुश्मनों ने आपको नमाज़ की ही हालत में क़ैद कर लिया और हारून के पास ले गये।

मदीनए रसूल(स.) के रहने वालों में बे हिसी इसके पहले भी बहुत दफ़ा देखी जा चुकी थी। यह भी इसकी एक मिसाल थी कि रसूल(स.) का फ़रज़न्द रौज़ए रसूल (स.) से इस तरह गिरफ़्तार करके ले जाया जा रहा था मगर नाम नेहाद मुसलमानों में एक भी ऐसा न था जो किसी तरह की आवाज़े एहतेजाज बलन्द करता। यह २०, शव्वाल

१७९ हिजरी का वाक़िया है।

हारून इस अन्देशे से कि कोई जमाअत इमाम मूसिए काज़िम(अ.) को रिहा कराने की कोशिश न करे। दो महमिलें तय्यार कराईं। एक में इमाम मूसिए काज़िम(अ.)को सवार कराया और उसको एक बहुत बड़ी फ़ौजी दस्ते के हल्के में बसरे रवाना किया और दूसरी महमिल जो ख़ाली थी उसे भी इतनी ही तादात की हिफ़ाज़त में बग़दाद रवाना किया। मक़सद यह था कि आपके महले क़याम और क़ैद की जगह को भी मशकूक बना दिया जाय। यह निहायत हसरत नाक वाक़िया था कि इमाम के अहले हरम और बच्चे वक़्ते रूख़्सत आपको देख भी न सके और अचानक महलसरा में सिर्फ़ यह इत्तेला पहुंच सकी कि हज़रत सलतनते वक़्त की तरफ़ से क़ैद कर लिये गये। इससे बीवियों और बच्चों में कोहराम बरपा हो गया और यक़ीनन इमाम के दिल पर भी जो इसका सदमा हो सकता है वह ज़ाहिर है। मगर आपके ज़ब्तो सब्र की ताक़त के सामने हर मुश्किल आसान थी।

मालूम नहीं कितने हेर फ़ेर से यह रास्ता तय किया गया था कि पूरे एक महीने सत्तरह रोज़ के बाद ७, ज़िलहिज्ज़ा को आप बसरे पहुंचाये गये। एक साल तक आप बसरे में क़ैद रहे। यहां का हाकिम हारून का चचाज़ाद भाई ईसा बिन जाफ़र था। शुरू में तो उसे सिर्फ़ बादशाह के हुक्म की तामील मद्दे नज़र थी बाद में उसने ग़ौर करना शुरू किया कि आख़िर उनके क़ैद किये जाने का सबब क्या है?

इस सिलसिले में उसको इमाम (अ.) के हालात और सीरते ज़िन्दगी इख़लाक़ो अवसाफ़ की जुस्तुजू का मौक़ा भी मिला और जितना उसने इमाम की सीरत का मुतालेआ किया उतना उसके दिल पर आपकी बलन्दीए इख़्लाक़ और हुसने किरदार का असर क़ायम होता गया। अपने इन असरात से उसने हारून को मुत्तला भी किया। हारून पर इसका उल्टा असर हुआ। ईसा के बारे में बदगुमानी पैदा हो गई इस लिये उसने इमाम मूसिए काज़िम(अ.) को बग़दाद में बुला भेजा और फ़ज़ल बिन रबी की हिरासत में दे दिया और फिर फ़ज़ल का रूझान शीइयत की तरफ़ महसूस करके यहीया बर मक्की को उसके लिये मुक़र्र किया।

मालूम होता है कि इमाम के इख़्लाक़ और अवसाफ़ की कशिश हर एक पर अपना असर डालती थी। इस लिये ज़ालिम बादशाह को निगरानों की तबदीली की ज़ुरूरत पड़ती थी। सबसे आख़िर में इमाम (अ.) सिन्दी बिन शाहक के क़ैद ख़ाने में रखे गये। यह बहुत ही बे रहम और सख़्त दिल था, मुलाहेज़ा हो।

(मनाक़िब, जिल्द ५, सफ़ा ६८ व आलाम अल वरा सफ़ा, १८०, कशफ़ुल ग़म्मा, सफ़ा १०८, नूरूल अबसार, सफ़ा १३६, सवानेह मूसिए काज़िम, सफ़ा १५)

इमाम (अ.) का क़ैद ख़ाने में इम्तेहान और इल्मे ग़ैब का मुज़ाहेरा

अल्लामा शिब्लनजी लिखते हैं कि जिस ज़माने में आप हारून रशीदके क़ैद ख़ाने की सख़्तियां बरदाश्त फ़रमा रहे थे। इमाम अबू हनीफ़ा के शागिर्द रशीद अबू यूसुफ़ और मोहम्मद बिन हसन एक शब क़ैद ख़ाने में इस लिये गये कि आपके बहरे इल्म की थाह मालूम करें और देखें कि आप इल्म के कितने पानी में हैं। वहां पहुंच कर उन लोगों ने सलाम किया, इमाम(अ.) ने जवाबे सलाम इनायत फ़रमाया। अभी यह हज़रात कुछ पूछने ना पायें थे कि एक मुलाज़िम डियूटी ख़त्म करके घर जाते हुये आपकी ख़िदमत में अर्ज़ परदाज़ हुआ कि मैं कल वापस आऊंगा अगर कुछ मंगाना हो तो मुझसे फ़रमा दीजिये। मैं लेता आऊंगा। आपने इरशाद फ़रमाया मुझे किसी चीज़ की ज़ुरूरत नहीं। जब वह चला गया तो आपने अबू यूसुफ़ वग़ैरा से कहा कि यह बेचारा मुझसे कहता है कि मै। उससे अपनी हाजत बयान करूं ताकि यह कल उसकी तकमील व तामील कर दे। लेकिन उसे ख़बर नहीं , कि यह आज रात को वफ़ात पा जायगा। इन हज़रात ने जो यह सुना तो सवाल जवाब के बग़ैर ही वापस चले आये और आपस में कहने लगे कि हम इनसे हलालो हराम ,वाजिबो सुन्नत के मुताअल्लिक़ सवालात करना चाहते थे। " फ़ा अख़ाज़ा यतकलम माआना इल्म अल ग़ैब " मगर यह तो हमसे इल्मे ग़ैब की बातें कर रहे हैं। उसके बाद उन दोनों हज़रात ने उस मुलाज़िम के हालात का पता लगाया, तो मालूम हुआ कि वह नागहानी तौर पर रात ही में वफ़ात कर गया। यह मालूम करके इन हज़रात को सख़्त ताअज्जुब हुआ।

(नूरूल अबसार सफ़ा १४६)

अलमा अरबली लिखते हैं कि इस वाक़िये के बाद यह हज़रात फिर इमाम (अ.) की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ परदाज़ हुये कि हमें मालूम था कि आपको सिर्फ़ इल्मे हलालो हराम में ही महारत हासिल है लेकिन क़ैद ख़ाने के मुलाज़िम के वाक़िये ने वाज़े कर दिया कि आप इल्म-अल-मनाया और इल्मे ग़ैब भी जानते हैं। आपने इरशाद फ़रमाया कि यह इल्म हमारे लिये मख़सूस है। इसकी तालीम हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा (स.) ने अली(अ.) को दी थी और उनसे यह इल्म हम तक पहुँचा है।

हज़रत इमाम मूसिए काज़िम(अ.) की शहादत

अल्लामा शिब्लन्जी लिखते हैं कि जब हारून रशीद ने बसरे में एक साल क़ैद रखने के बादईसा इब्ने जाफर वालिये बसरा को लिखा कि मूसा बिन जाफ़र (इमाम मूसिए

काज़िम(अ.) को क़त्ल करके बादशाह को उनके वुजूद से सुकून दे दे। तो उसने अपने हमर्ददों से मशवेरे के बाद हारून रशीद को लिखा कि ऐ बादशाह इमाम मूसिए काज़िम (अ.) में मैं ने एक साल के अन्दर कोई बुराई नहीं देखी यह शबो रोज़ नमाज़ रोज़े में मसरूफ़ व मशगूल रहते हैं। अवाम और हुकूमत के लिये दुआए ख़ैर किया करते हैं और मुल्क की फ़लाह व बहबूद के ख़्वाहिशमन्द हैं। भला मुझसे क्योंकर हो सकता है कि मैं उन्हें क़त्ल करके अपनी आक़ेबत बिगाड़ूं।

ऐ बादशाह ! मैं उनके क़त्ल करने में अपने अन्जाम और अपनी आक़ेबत की तबाही देख रहा हूँ। और सख़्त हरज महसूस करता हूँ। लेहाज़ा तू मुझे इस गुनाहे अज़ीम के इरतेकाब से माफ़ कर बल्कि मुझे हुक्म दे दे कि मैं उन्हें क़ैदे मशक़्क़त से रिहा करूँ। इस ख़त के पाने के बाद हारून रशीद ने आख़िर में यह काम सन्दी बिन शाहक के हवाले किया और इसी से आपको ज़हर दिलवा कर शहीद करा दिया। ज़हर खाने के बाद आप तीन रोज़ तक तड़पते रहे,यहां तक कि वफ़ात पा गये। (नूरूल अबसार सफ़ा १३७)

अल्लामा जामी लिखते हैं कि ज़हर खाते ही आपने फ़रमाया कि आज मुझे ज़हर दिया गया है। कल मेरा बदन ज़रद हो जायगा और तीसरे रोज़ काला हो जायगा। और उसी दिन मैं इस दुनिया से रूख़्सत हो जाऊंगा। चुनांचे ऐसा ही हुआ।

(शवाहेदुन नबूवत सफ़ा १६३)

अल्लामा इब्ने हजरे मक्की लिखते है। कि हारून रशीद ने आपको बग़दाद में क़ैद कर दिया। " फलम यख़रज मिन जसमहा इला मैता मुक़य्यदन " और ताहयात क़ैद रखा। आपकी वफ़ात के बाद हथकड़ी और बेड़ी कटवाई गई। आपकी वफ़ात हारून रशीद के ज़हर से हुई जो उसने सन्दी इब्ने शाहक के ज़रिये से दिलवाया था। जब आपको खाने या ख़ुरमा में ज़हर दिया गया तो आप तीन रोज़ तक तड़पते रहे। यहां तक कि इन्तेक़ाल हो गया। (सवाएक़े मोहर्रेक़ा सफ़ा १३२, अर हज अल मतालिब सफ़ा ४५४)

अल्लामा इब्ने अल साई अली बिन अल नजब बग़दादी लिखते हैं कि आप को ज़हर से इन्तेहाई मज़लूमी की हालत में शहीद कर दिया गया। (अख़बारूल ख़ुलफ़ा)

अल्लामा अबुल फ़िदा लिखते हैं कि क़ैद ख़ाने रशीद में आपने वफ़ात पाई (अबुल फ़िदा जिल्द २, सफ़ा १५१) अल्लामा दयारे बकरी लिखते हैं कि आपको हारून रशीद के हुक्म से यहीया इब्ने ख़ालिद बर मक्की वज़ीरे आज़म ने ख़ुरमे में ज़हर दे कर शहीद कर दिया। (तारीख़े ख़मीस, जिल्द २, सफ़ा ३२०)

अल्लामा जामी लिखते हैं कि आपको हारून रशीद ने बग़दाद में ला कर ता उम्र क़ैद रखा आख़िर में अपने वज़ीरे आज़म यहीया इब्ने ख़ालिद बर मक्की के ज़रिये से क़ैद ख़ाने में ज़हर दिलवा दिया और आप वफ़ात पा गये। (शवाहेदुन नबूवत, सफ़ा १६३) अल्लामा मजलिसी तहरीर फ़रमाते हैं कि आपको कई मरतबा ज़हर दिया गया। लेकिन आप

हर बार महफ़ूज़ रहे। एक मरतबा आपने वह खुरमा उठा कर जिसमें ज़हर था ज़मीन पर फेंक दिया। जिसे हारून के कुत्ते ने खा लिया और वह मर गया। कुत्ते के मरने की ख़बर से हारून रशीद को शदीद रंज हुआ और उसने ख़ादिम से सख़्त बाज़ पुर्स की।

(जलाल अल अयून सफ़ा २७६)

आपकी तारीख़े वफ़ात :- आप की वफ़ात हसरत आयात बतारीख़ २५ रजबुल मुरज्जब १८३ हिजरी यौमें जुमा वाक़े हुई, आपकी उमर उस वक़्त ५५, साल की थी (मतालेबुल सुवेल सफ़ा २८२ , अलाम अलवरा सफ़ा १७१ व शवाहेदुन नबूअत सफ़ा १६२ नुरूल अबसार सफ़ा १३७ वग़ैरह) अपने १४ साल हारून रशीद के क़ैदख़ाने में गुज़ारे, मिर्ज़ा दबीर कहते हैं।

मौला पर इन्तेहाए असीरी, गुज़र गई।
ज़िन्दान में जवानी व पीरी गुज़र गई।।

वफ़ात के बाद आपकी नाअशे मुबारक क़ैद खाने से हथकड़ी और बेड़ी समेत निकाल कर बग़दाद के पुल पर डाल दी गई और नेहायत तौहीन आमेज़ अलफाज़ में आपके और आपके मानने वालों को याद किया गया लोग अगरचे बादशाह के ख़ौफ़ से नुमाया तौर पर मज़हमत की जुरअत ना करते थे। ताहम एक गिरोह ने जिसके सरदार सुलेमान बिन जाफ़र इब्ने अबी जाफ़र थे। हिम्मत की और नाअशे मुबारक दुश्मनों से छीन कर ग़ुस्ल कफ़न का बन्दोबस्त किया। ढाई हज़ार का क़ीमती कफ़न दिया , जिस पर पूरा क़ुरान लिखा हुआ था, नेहायत तुज़ुक व एहतिशाम से जनाज़ा ले कार चले। इन लोगों के गरेबान ग़में इमाम मज़लूम में चाक थे। यह इन्तेहाई ग़म व अलम के साथ जनाज़े को ले कर मक़बरा क़ुरैश में पहुँचे। हज़रत इमाम रज़ा(अ.) नमाज़ व दफ़न के लिए मदीना से ब ऐजाज़ पहुँच चुके थे। आपने नमाज़ पढ़ाई और अपने वालिदे माजिद को सुपुर्दे ख़ाक फ़रमाया। (आलाम अल वरा सफ़ा १७० अनवारे नोमानिया सफ़ा १२७, जिन्नात अल ख़लूद सफ़ा १३० जिला उल अयून सफ़ा २७५)

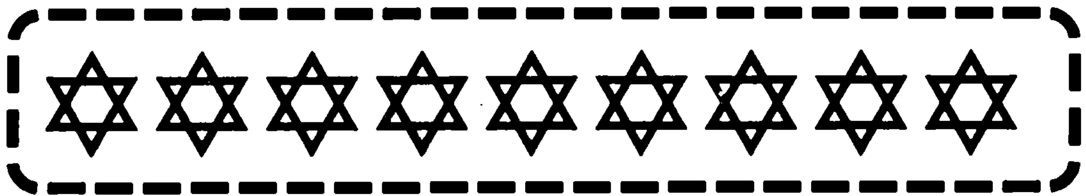
तदफ़ीन के बाद हज़रत इमाम रज़ा(अ.) वापस मदीना तशरीफ़ ले गए। मदीने वालों को जब आपकी शहादत की इत्तिला मिली तो कोहराम बरपा हो गया। मातम और अदाए ताज़ीयत का सिलसिला मुद्दतों जारी रहा। (जिला उल अयून सफ़ा २७६)

अल्लामा मोहम्मद बिन तलह शाफ़ई लिखते हैं कि आप की तदफ़ीन के एक अर्से बाद अयान मुल्क से एक शख़्स ने वफ़ात की, लोगों की ख़्वाहिश पर उसे आप ही के मक़बरे में दफ़न कर दिया गया। एक शब वो आपने ख़ादिम को ख़वाब में आगाह किया।

उसने देखा कि मक़बरे में आग लगी हुई है और इससे धुआँ फैल रहा है और बदबू फैल रही है, सुबह को उसने बादशाहे वक़्त को बाख़बर किया,बादशाह ने क़ब्र खुदवाई तो आग के आसार मैजूद थे और कब्र में मय्यत का वजूद ना था वह जल कर ख़ाक स्तर हो गई थी (मतालिबुल सुवेल सफ़ा २८१)

तादादे औलाद :- सवाएके मोहर्रेक़ा सफ़ा १२२ में है कि आपके ३७ औलाद थीं। **अल्लामा तबरसी, अल्लामा अरबली और हज़रत शेख़ मुफ़ीद** लिखते हैं कि आप के १६ लड़के १८ लड़कियाँ थी जिनके नाम यह हैं।

(१) हज़रत इमाम रज़ा (अ.) (२) इब्राहीम (३) अब्बास (४) क़ासिम (५) इस्माईल (६) जाफ़र (७) हारून (८) हसन (६) अहमद (१०) मोहम्मद (११) हमज़ा (१२) अब्दुल्लह(१३) इस्हाक़ (१४) अबीद अल्लाह (१५) ज़ैद (१६) हसन (१७) फ़ज़ल (१८) हुसैन (१६) सुलैमान (२०) फ़ात्मा (२१) कुबरा (२२) रूकय्या (२३) आलीया (२४) रूकय्या सुग़रा (२५) कुलसूम (२६) उम्में जाफर (२७) लबाह (२८) ज़ैनब (२६) ख़तीजा (३०) आलीहा (३१) आमना (३२) हुसना (३३) बरयह (३४) उम्में सलमा (३५) मैएमूना (३६) उम्में कुलसूम (३७) उम्में अबीहा व बक़ौले उम्में अब्दुल्लाह व बक़ौले उम्में असमा। (आलाम अल वरा सफ़ा १८१ कशफ़ुल ग़म्मा सफ़ा १०६, इरशाद सफ़ा ३३०,नूरूल अबसार सफा १३७ आपकी यह औलादें मुख़्तलिफ बीबीयों से थीं।





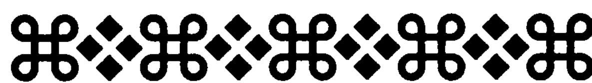
अबुल हसन

हज़रत

इमाम अली रज़ा (अ.)

बतौर ज़ादे सफ़र उसवए हुसैन लिए
चला है सुए खुरासान कारवाने रज़ा
मुमासेलत है बहुत, कर्बला व मशहद

साबिर थरयानी " कराची "



342

بسم الله الرّحمٰن الرّحيم

बाब (१०)

हज़रत इमाम अली रज़ा (अ.)

अरब से आप क्या आए कि , ईमान की बहार आई
अजम ने पाई इज़्ज़त मरकज़े , अहले विला होकर
बहुत मुश्ताक़ थे अहले अजम, नूरे रिसालत के
ज़मीने तूस का चमका, सितारा नक़्श पा होकर

हज़रत इमाम रज़ा (अ.) रसूले करीम हज़रत मोहम्मद मुस्तफा (स.)के आठवें जाँनशीन,मुसलमानों के आठवें इमामऔर सिलसिलए अस्मत की दसवीं कड़ी थे। अपके वालिद माजिद इमाम मुसिए काज़िम(अ.) थे, और वालेदा माजदा उम्मुल बनीन उर्फ़ नजमा थीं। जनाब नजमा के मुतअल्लिक़ उलमा का बयान है कि आपका शुमार अशराफे अजम में थाऔर आप अक़्ल व दियानीयत के लेहाज़ से अफज़ल इन्साँ थीं। हमीदा ख़ातून यानी इमाम मूसिए काज़िम (अ.)की वालदा का कहना है कि मैंने उम्मुल बनीन से बेहतर किसी औरत को नहीं पाया।

अली बिन मीसम कहते हैं कि हमीदा ख़ातून को रसूले ख़ुदा (स.) ने ख़्वाब में हुक्म दिया था कि उम्मुल बनीन की शादी इमाम मुसिए काज़िम(अ.) से करो "क्योंकि सैलदसनहा ख़ैरा हल अर्ज़"इनसे अनक़रीब एक ऐसा फरज़न्द पैदा होने वाला है जो मादरे गेती की आग़ोश में बसने वालों में सब से बेहतर होगा। (आलाम अल वरा सफ़ा १८२)

अल्लामा मोहम्मद रज़ा लिखते हैं, कि जनाबे उम्मुल बनीन,हुस्नो जमाल ज़ोहदो तक़वा में अपनी आप नज़ीर थी। (जन्नातुल खुलूद सफ़ा ३१)

हज़रत इमाम रज़ा (अ.) अपने आबाओ अजदाद की तरह इमाम मन्सूस "मासूम" आलमें ज़माना और अफज़ले काएनात थे, अल्लमा इब्ने हजर मक्की तहरीर फरमाते हैं कि आप तमाम लोगो में जलीलुल क़दर और अज़ीम उल मरतबत थे। (सवाके मोहर्रेक़ा सफ़ा १२२)

अल्लामा अब्दुरहमान जामी लिखते हैं ,कि आप की बाते पुर अज़ हिकमत और आपका अमल दरूस्त और आपका किरदार महफ़ूज़ अनल ख़ता था। आप

343

इल्म हिक्मत सेभर पूर थे। रूऐ ज़मीन पर आप की मिसाल व नज़ीर न थी।
(शवाहेदुन नबूअत सफ़ा १६७ तबा लखनऊ १६०४ ई०)

अल्लामा अबीद उल्लाह लिखते हैं कि इब्राहीम बिन अब्बास का कहना है कि मैंने इनसे बड़ा आलम देखा ही नहीं । (अरहज अल मतालिब सफ़ा २५५)

अल्लामा शहीर लिखते हैं कि आप अशरफ़ुल मख़लूके ज़माना थे। (हबीब अल सैर) आपको इल्मे माकान व मायकून आबाव अजदाद से विरासतन पहुंचा था।(वसीलतुन नजात, सफ़ा ३७७) आप हर ज़बान और हर लुग़त में फसीह और दाना तरीन मरदुम थे और जो शख़्स जिस ज़बान में बातें करता था उसको उसी ज़बान में जवाब देते थे। (रौज़तुल अहबाब) अल्लामा मोहम्मद बिन तलहा शाफ़ेई लिखते हैं कि आप बारह इमामों में के तीसरे अली हैं। आपका ईमान हद से बढ़ा हुआ था। आपकी शान इन्तेहा को पहुंची हुई थी। आपका क़सरे फ़ज़ीलत निहायत बलन्द था और आपके इमकानाते करम निहायत वसी थे। आपके मद्दगार बे शुमार और आपके शरफ़ व इमामत निहायत रौशन थे। इसी वजह से ख़लीफ़ए वक़्त मामून रशीद ने आपको अपने दिल में जगह दी, अपनी हुकूमत में शरीक क़रार दिया। ख़लीफ़ए हुकूमत बनाया और अपनी लड़की की शादी आपके साथ कर दी। आपके मनाक़िब व सिफ़ात निहायत बलन्द, आपके मकारम और आपके इख़लाक़ निहायत अज़ीम थे। बस मुख़्तसर यह कि सिफ़ाते हसना की जो मंज़िलें थीं उनसे आपका दरजा बलन्द था। (मतालेबुल सुवेल, सफ़ा २५२)

पादरी लेनेन एडवर्ड सील डी० डी० लिखता है कि इमाम मूसिए काज़िम (अ.) ने अली बिन मूसा को अपना वारिस इस लिये क़रार दिया कि वह उनको सबसे ज़्यादा मन्सबे इमामत का अहल समझते थे। (अशना अशरया, सफ़ा ४६ तबा लाहौर १६२५ ई०)

हज़रत इमाम मूसिए काज़िम(अ.) फ़रमाते हैं कि मेरा यह फ़रज़न्द " यतर मई फ़िल जाफ़र ला यनज़ू फ़ीहे इल्ला नबी अव वसी " मेरे साथ जाफ़र जामए को देखता और उसे समझता है जिसे नबी और वसी के अलावा कोई देख नहीं सकता। (जन्नातुल ख़ुलूद, सुफ़ा ३१) रजाल कशी व दमए साकेबा सफ़ा ३५ व मसन्द इमाम रज़ा (अ.) के सफ़ा २ में है कि आप आलिम अहले ज़माना और कसीर उल सोम अल इबादत थे।

हज़रत इमाम रज़ा(अ.) की विलादत ब सआदत

उलेमा व मुवर्रेख़ीन का बयान है कि आप बा तारीख, ११ ज़ीक़ादा १५३ हिजरी यौमे पंज शम्बा बमक़ाम मदीनए मुनव्वरा पैदा हुये हैं। (आलाम उल वरा, सफ़ा १८२ जेला उल अयून, सफ़ा २८० रौज़तुल सफ़ा जिल्द ३, सफ़ा १३ अनवारूल नोमानिया,

सफ़ा १२७) आपकी विलादत के मुताअल्लिक़ अल्लामा मजलिसी और अल्लामा मोहम्मद पारसा तहरीर फ़रमाते हैं कि जनाबे उम्ममुल बनीन का कहना है कि जब तक इमाम अली रज़ा(अ.)मेरे बत्न में रहे मझे हमल की गरानियां क़तअन महसूस नही हुईं। मैं ख़्वाब में अकसर तसबीह व तहलील और तमजीद व तहमीद की आवाजें सुना करती थी। जब इमाम रज़ा (अ.) पैदा हुये तो आपने ज़मीन पर तशरीफ़ लाते ही दोनो हाथ ज़मीन पर टेक दिये और अपना सरे मुबारक आसमान की तरफ़ बलन्द कर दिया। आपके होंठ जुम्बिश करने लगे। ऐसा मालूम होता था कि जैसे आप खुदा से कुछ बातें कर रहे हैं। इसी असना में इमाम मूसिए काज़िम(अ.) तशरीफ़ लाये और मुझसे इरशाद फ़रमाया कि तुम्हें खुदा वन्दे आलम की इनायत व करामत मुबारक हो। फिर मैंने मौलूदे मसूद को आपकी आग़ोश में दे दिया। आपने उसके दाहिने कान में अज़ान और बायें कान में अक़ामत कही। इसके बाद आपने इरशाद किया कि " **बग़ीर ईं रा कि बक़िया ख़ुदा अस्त दर ज़मीनो हुज्जत ख़ुदा अस्त बाद अज़ मन** " इसे ले लो यह ज़मीन पर खुदा की निशानी है और मेरे बाद हुज्जते अल्लाह के फ़राएज़ का ज़िम्मेदार है।

इब्ने बाबविया फ़रमाते हैं कि आप दीगर आइम्मा(अ.) की तरह मख़्तून और नाफ़ बुरिदा (यानी ख़त्ना हुये और नाफ़ कटे हुये) पैदा हुये। (नस्ल अल ख़ताब जलाअल अयून,सफ़ा २६६)

नाम, कुन्नीयत, अल्क़ाब :- आपके वालिदे माजिद हज़रत इमाम मूसिए काज़िम(अ.) ने लौहे महफ़ूज़ के मुताबिक़ और तइय्युने रसूल(स.) के मुवाफ़िक़ आपको इस्मे अली से मौसूम फ़रमाया। आप आले मोहम्मद(स.) में के तीसरे " अली " हैं। (आलाम अल वरा, सफ़ा २२५ व मतालेबुल सुवेल, सफ़ा २८२) आपकी कुन्नीयत **"अबुल हसन"** थी और आपके अलक़ाब **साबिर, ज़की, वली, रज़ी, वसी** थे। " **वशहरहा अल रज़ा** " और मशहूर तरीन लक़ब **रज़ा** था।

(नूरूल अबसार सफ़ा १२८ व तज़किरए ख़वास अल उम्मता, सफ़ा १६८)

लक़्ब रज़ा की तौज़ीह :- अल्लामा तबरेसी तहरीर फ़रमाते हैं कि आप को रज़ा इस लिये कहते हैं। कि आसमानों ज़मीन में ख़ुदा वन्दे आलम, रसूले अकरम (स.) और अइम्माए ताहेरीन और तमाम मुख़ालेफ़ीन व मुवाफ़ेक़ीन आपसे राज़ी थे।

(आलाम अल वरा, सफ़ा १८२)

अल्लामा मजलिसी तहरीर फ़रमाते हैं कि बज़नती ने हज़रत इमाम मोहम्मद तक़ी(अ.) से लोगों की अफ़वाह का हवाला देते हुये कहा कि आपके वालिदे माजिद को लक़्ब रज़ा से मामून रशीद ने मुलक़्क़ब किया था। आपने फ़रमाया हरगिज़ नहीं। यह लक़ब ख़ुदा व रसूल(स.) की ख़ुशनूदी का जलवा बरदार है और सच बात यह है कि आप से मुवाफ़िक़ व मुख़ा लिफ़ दोनों राज़ी और ख़ुशनूद थे। (जिला उल अयून, सफ़ा २६६ व रौज़तुल सफ़ा

जिल्द ३, सफ़ा १२)

आपकी तरबियत :- आपकी नशोनुमा और तरबियत अपने वालिदे बुज़ुर्गवार हज़रत इमाम मूसिए काज़िम(अ.) के ज़ेरे साया हुई और इसी मुक़द्दस माहौल में बचपना और जवानी की मुताअद्दिद मंज़िलें तय हुईं और ३० से ३५ बरस की उम्र पूरी हुई। अगरचे आख़री चन्द साल इस मुद्दत के वह थे। जब इमाम मूसिए काज़िम(अ.) ईराक़ में क़ैदे ज़ुल्म की सख़्तियां बरदाश्त कर रहे थे, मगर उससे पहले २४, या २५ बरस आपको बराबर अपने पदरे बुज़ुर्ग वार के साथ रहने का मौक़ा मिला।

बादशाहाने वक़्त :- आपने अपनी ज़िन्दगी की पहली मंज़िल से ताबा अहदे वफ़ात बहुत से बादशाहों के दौर देखे। आप १५३ ई० में अहदे मन्सूर दवानक़ी पैदा हुये। (तारीख़े ख़मीस) १५८ हिजरी में मेहदी अब्बासी , १६६ हिजरी में हादी अब्बासी , १७० हिजरी में हररून रशीद अब्बासी , १६४ हिजरी में अमीन अब्बासी, १६८ हिजरी में मामून रशीद अब्बासी अलत तरतीब ख़लीफ़ए वक़्त होते रहे।

(इब्नुल वरदी, हबीब अल सियर, अबुल फ़िदा)

आपने हर एक का दौर बा चश्में ख़ुद देखा और आप पदरे बुज़ुर्गवार नीज़ दीगर औलादे अली व फ़ात्मा के साथ जो कुछ होता रहा उसे आप मुलाहेज़ा फ़रमाते रहे। यहां तक कि २३०, हिजरी में आप दुनिया से रूख़्सत हो गये और आपको ज़हर देकर शहीद कर दिया।

जांनशीनी :- आपके पदरे बुज़ुर्गवारहज़रत इमाम मूसिए काज़िम(अ.) को मालूम था कि हुकूमते वक़्त जिसकी बाग डोर उस वक़्त हारून रशीद अब्बासी के हाथों में थी। आपको आज़ादी की सांस न लेने देगी और ऐसे हालात पेश आ जायेंगे कि आपकी उम्र के आख़िरी हिस्से और दुनिया को छोड़ने के मौक़े पर दोस्ताने अहले बैत का आपसे मिलना या बाद के लिये रहनुमा का दरयाफ़्त करना ग़ैर मुमकिन हो जायगा। इस लिये आपने उन्हें आज़ादी के दिनों और सुकून के अवक़ात में जबकि आप मदीने में थे, पैरवाने अहलेबैत को अपने बाद होने वाले इमाम से रूशेनास कराने की ज़ुरूरत महसूस फ़रमाई। चुनांचे औलादे फ़ात्मा में से १७, आदमी जो मुम्ताज़ हैसियत रखते थे उन्हें जमा फ़रमा कर अपने फ़रज़न्द हज़रत अली रज़ा (अ.) की वसी होने और जांनशीनी का एलान फ़रमा दिया और एक वसियत नामा तहरीरन भी मुकम्मल फ़रमा दिया। जिस पर मदीने के मोअज्ज़ज़ीन में से साठ आदमियों की गवाही लिखी गई। यह एहतेमाम दूसरे आइम्मा के यहां नज़र नहीं आया। सिर्फ़ उन ख़ुसूसी हालात की बिना पर जिनसे दूसरे आइम्मा अपनी वफ़ात के मौक़े पर दो चार नहीं होने वाले थे।

346

इमाम मूसिए काज़िम (अ.) की वफ़ात और इमाम रज़ा (अ.) के दौरे इमामत का आग़ाज़

१८३ हिजरी में हज़रत इमाम मूसिए काज़िम(अ.) ने क़ैद ख़ानए हारून रशीद में अपनी उम्र का एक बहुत बड़ा हिस्सा गुज़ार कर दरजए शहादत हासिल फ़रमाया,, आपकी वफ़ात के वक़्त इमाम रज़ा (अ.) की उम्र मेरी तहक़ीक़ के मुताबिक़ तीस साल की थी। वालिदे बुज़ुर्गवार की शहादत के बाद इमामत की ज़िम्मेदारियां आपकी तरफ़ मुन्तकिल हो गईं। यह वह वक़्त था कि बग़दाद में हारून रशीद तख़्ते ख़िलाफ़त पर मुतमक्किन था और बनी फ़ात्मा के लिये हालात बहुत ही ना साज़गार थे।

हारूनी फ़ौज और ख़ानए इमाम रज़ा (अ.)

हज़रत इमाम (अ.) मूसिए काज़िम (अ.) के बाद दस बरस हारून रशीद का दौर रहा। यक़ीनन वह इमामे रज़ा (अ.) के वुजूद को भी दुनिया में इसी तरह बरदाश्त नहीं कर सकता था जिस तरह उसके पहले आपके वालिदे बुज़ुर्गवार का रहना उसने गवारा नहीं किया, मगर या तो इमाम मूसिए काज़िम(अ.) के साथ जो तवील मुद्दत तक तशद्दुद और ज़ुल्म होता रहा और जिसके नतीजे में क़ैद ख़ाने के ही अन्दर आप दुनिया से रूख़्सत हो गये। इससे हुकूमते वक़्त की आम बदनामी हो गई थी और या वाक़ेई ज़ालिम की बद सुलूकियों का एहसास और ज़मीर की तरफ़ से मलामत की कैफ़ियत थी जिसकी वजह से खुल्लम खुल्ला इमाम रज़ा के ख़िलाफ़ कोई कारवाई नहीं की थी। लेकिन वक़्त से पहले उसने इमाम रज़ा(अ.) को सताने में कोई दक़ीक़ा अन्जाम नहीं दिया।

हज़रत के अहदे इमामत संभालते ही हारून रशीद ने आपका घर लुटवा दिया, और औरतों के ज़ेवरात और कपड़े तक उतरवा लिये थे।

तारीख़े इस्लाम में है कि हारून रशीद ने इस हवाले और बहाने से कि मोहम्मद बिन जाफ़रे सादिक़(अ.) ने उसकी हुकूमत व ख़िलाफ़त से इन्कार कर दिया है। एक अज़ीम फ़ौज ईसा जलोदी की मातहती में मदीनए मुनव्वरा भेज कर हुक्म दिया कि अली व फ़ात्मा की तमाम औलाद को बिलकुल ही तबाह व बरबाद कर दिया जाय। उनके घरों में आग लगा दी जाय। उनके सामान लूट लिये जायें और उन्हें इस दरजा मफ़लूज व मफ़लूक कर दिया जाय कि फिर उनमें किसी क़िस्म के हौसले के उभरने का सवाल ही पैदा न हो सके और मोहम्मद बिन जाफ़र को गिरफ़्तार करके क़त्ल कर दिया जाय। ईसा जलोदी ने मदीने

पहुंच कर तामीले हुक्म की कोशिश की और मुम्किन तरीक़े से बनी फ़ात्मा को तबाह व बरबाद किया। हज़रत मोहम्मद बिन जाफ़र (अ.) ने भर पूर मुक़ाबला किया, लेकिन आख़िर में गिरफ़्तार होकर हारून रशीद के पास पहुँचा दिये गये। ईसा जुलूदी सादात किराम को लूट कर हज़रत इमाम अली रज़ा (अ.) के दौलत कदे पर पहुँचा और उसने ख्वाहिश की कि वह हस्बे हुक्म हारून रशीद, ख़ानए इमाम में दाख़िल होकर अपने हाथों से औरतों के ज़ेवरात और कपड़े उतारे। इमाम (अ.) ने फ़रमाया यह नहीं हो सकता, मैं खुद तुम्हें सारा सामान दिये देता हूँ। पहले तो वह उस पर राज़ी न हुआ। लेकिन बाद में कहने लगा कि अच्छा आप ही उतार लाइये। आप महल सरा में तशरीफ़ ले गये और आपने तमाम ज़ेवरात और सारे कपड़े एक सतर पोश चादर के अलावा लाकर दे दिया। और उसी के साथ-साथ असासुल बैत नक़्दो जिन्स यहां तक कि बच्चों के कान के बुन्दे सब कुछ उसके हवाले कर दिया। वह मलऊन ज़ेवरात लेकर बग़दाद रवाना हो गया। यह वाक़िआ आपके आग़ाज़े इमामत का है। अल्लामा मजलिसी बिहारूल अनवार में लिखते हैं कि मोहम्मद बिन जाफ़रे सादिक़ (अ.) के वाक़ए से इमाम अली रज़ा (अ.) को ताल्लुक़ न था। वह अकसर अपने चचा मोहम्मद को ख़ामोशी की हिदायत और सब्र की तलक़ीन फ़रमाया करते थे। अबुल फ़र्ज असफ़हानी मुक़ातिल तालिबैन में लिखते हैं कि मोहम्मद बिन जाफ़र निहायत मुतक़्क़ी और परहेज़गार शख़्स थे। किसी नासिबी ने दस्ती कुतबा लिखकर मदीने की दीवारों पर चस्पा कर दिया था जिसमें हज़रत अली और फ़ातिमा के मुतल्लिक़ ना सज़ा अल्फ़ाज़ थे। यही आप के ख़ुरूज का सबब बना। आपकी बैअत लफ़्ज़े अमीरलमोमिनीन से की गयी। आप जब नमाज़ को निकलते थे तो आप के साथ दो सौ सुलहा व अत्तक़िया हुआ करते थे। अल्लामा शिबलिन्जी लिखते हैं कि इमामे मूसिए काज़िम (अ.) की वफ़ात के बाद सफ़वान बिने यहिया ने इमाम अली रज़ा (अ.) से कहा कि मौला हम आपके बारे में हारून रशीद से बहुत ख़ाएफ़ हैं। हमें डर है कि यह कहीं आपके साथ वही सुलूक न करे जो आप के वालिद के साथ कर चुका है। हज़रत ने इरशाद फ़रमाया कि यह तो अपनी सी करेगा। लेकिन मुझ पर कामयाब न हो सकेगा। चुनांचि ऐसा ही हुआ और हालात ने उसे कुछ इस दरजा आख़िर में मजबूर कर दिया था कि वह कुछ भी न कर सका कि यहां तक कि जब ख़ालिद बिने यहिया बर मकी ने उससे कहा कि इमामे रज़ा (अ.) अपने बाप की तरह अम्रे इमामत का एलान करते और अपने को इमामे ज़माना कहते हैं तो उसने जवाब दिया कि हम जो उनके साथ कर चुके हैं वही हमारे लिये काफ़ी है। अब तू चाहता है कि इन " नक़्तलहुम जमीअन " हम सब के सब को क़त्ल कर डालें अब मैं ऐसा नहीं करूँगा।

अल्लामा अली नक़ी लिखते हैं कि फिर भी हारून रशीद का अहलेबैते रसूल(स.) से शदीद इख़्तिलाफ़ और सादात के साथ जो बरताव अब तक रहा था। उसकी बिना आम

तौर से अम्माले हुकूमत या आम अफ़राद भी जिन्हें हुकूमत को राज़ी रखने की ख़्वाहिश थी। अहलेबैत के साथ कोई अच्छा रवय्या रखने पर तैय्यार नहीं हो सकते थे और न इमाम के पास लोग इस्तफ़ादा के लिये आ सकते थे। न हज़रत को सच्चे इस्लामी इहकाम की इशाअत के मवाक़े हासिल थे।

हारून का आख़िरी ज़माना अपने दोनों बेटों, अमीन और मामून की बाहिमी रक़ाबतों से बहुत बे लुत्फ़ी में गुज़रा, अमीन पहली बीवी से था जो ख़ानदान शाही से मन्सूर दुवानक़ी की पोती थी और इसलिए अरब सरदार सब उसके तरफ़दार थे और मामून एक अजमी कनीज़ के पेट से था और इसलिये दरबार का अजमी तबक़ा उससे मोहब्बत रखता था, दोनों की आपस की रस्सा कशी हारून के लिये सोहाने रूह बनी हुई थी, उसने अपने ख़याल में उसका तसफ़िया ममलेकत की तक़सीम के साथ यूँ कर दिया कि दारूल सल्तनत बग़दाद और उसके चारों तरफ़ के अरबी हिस्से जैसे शाम, मिस्र, हिजाज़ यमन वग़ैरह मोहम्मद अमीन के नाम किये और मशरिक़ी मुमालिक जैसे ईरान, ख़ुरासान, तुरकिस्तान वग़ैरह मामून के लिये मुक़र्र किये मगर यह तसफ़िया तो उस वक़्त कारगर हो सकता था जब दोनों फ़रीक़ " जियो और जीने दो " के उसूल पर अमल करते होते। लेकिन जहाँ इक़तिदार की हवस कारफ़रमा हो। वहाँ बनी अब्बास में एक घर के अन्दर दो भाई अगर एक दूसरे के मददे मुक़ाबिल हों तो क्यों न एक दूसरे के खिलाफ़ जारहाना कारवाही करने पर तैय्यार नज़र आए और क्यों उन ताक़तों में बाहिमी तसादुम हो। जब कि उनमें से कोई इस हमदर्दी और असार और ख़ल्क़े ख़ुदा की ख़ैर ख़्वाही का भी हामिल नहीं है। जिसे बनी फ़ातमा अपने पेशे नज़र रखकर अपने वाक़ई हुकूक़ से चश्म पोशी कर लिया करते थे। इसी का नतीजा था कि इधर हारून की आँख बन्द हुई और उधर भाइयों में ख़ाना जंगी के शोले भड़क उठे। आख़िर चार बरस की मुसलसल कशमकश और तवील ख़ूँरेज़ी के बाद मामून को कामयाबी हुई और उसका भाई अमीन मोहर्रम सन १९८ हिजरी में तलवार के घाट उतार दिया गया और मामून की ख़िलाफ़त तमाम बनी अब्बास के हुदूदे सलतनत पर क़ायम हो गयी ।

यह सच है कि हारून रशीद के अय्यामे सल्तनत में आप की इमामत के दस साल गुज़रे इस ज़माने में ईसा जलूदी ताख़्त के बाद फिर उसने आपके मुआमलात की तरफ़ बिल्कुल सुकूत और ख़ामोशी इख़्तियार कर ली उसकी दो वजहें मालूम होती हैं। अव्वल तो यह कि इस दस साला ज़िन्दगी के इब्तिदाई अय्याम में वह आले बरामका के इस्तीसाल। रांफ़ि बिने लैस इब्ने तयार के ग़द्र और फ़साद के इन्सिदाद में जो समर कन्द के इलाक़े से नमूदार होकर मा वराउन नहर और हुदूद अरब तक फैल चुका था। ऐसा हमा वक़्त और हमादम उलझा कि फिर उसको इन उमूर की तरफ़ तवज्जुह करने की ज़रा भी फ़ुरसत न मिली। दूसरे यह कि अपनी दस साला मुद्दत के आख़िरी अय्याम में यह अपने

बेटों में मुल्क तक़सीम कर देने के बाद ख़ुद ऐसा कमज़ोर और मजबूर हो गया था कि कोई काम अपने इख़्तियार से नहीं कर सकता था। नाम का बादशाह बना बैठा हुआ अपनी ज़िन्दगी के दिन निहायत उसरत और तंगी की हालतों में काट रहा था। उसके सबूत के लिये वाक़िआ ज़ैल मुलाहिज़ा फ़रमायें। सबाह तिबरी का बयान है कि हारून जब ख़ुरासान जाने लगा। तो मैं नहरवान तक उसकी मुशाय्यत को गया। रास्ते में उसने बयान किया कि ऐ सबाह तुम अब इसके बाद फिर मुझे ज़िन्दा न पाओगे। मैंने कहा अमीरूलमोमिनीन (अ.)ऐसा ख़याल न करें। आप इन्शाल्लाह सहीओ सालिम इस सफ़र से वापिस आयेंगे। यह सुनकर उसने कहा कि शायद तुझको मेरा हाल मालूम नहीं है। आ, मैं दिखा दूँ, फिर मुझे रास्ता काट कर एक सिम्त दरख़्त के नीचे ले गया और वहाँ से अपने ख़वासों को हटाकर अपने बदन का कपड़ा उठाकर मुझे दिखाया, तो एक पारचए रेशम शिकन पर लपेटा हुआ था, और उससे सारा बदन कसा हुआ था। यह दिखाकर मुझसे कहा कि मैं मुददत से बीमार हूँ। तमाम बदन में दर्द उठता है। मगर किसी से अपना हाल कह नहीं सकता। तुम्हारे पास भी यह राज़ अमानत रहे। मेंरे बेटों में से हर एक का गुमाशता मेरे ऊपर मुक़र्र है। मामू की तरफ़ से मसरूर, अमीन की जानिब से बख़्तीशू। यह लोग मेरी साँस तक गिनते रहते हैं, और उन्हें चाहते हैं कि मैं एक रोज़ भी ज़िन्दा रहूँ, अगर तुमको यक़ीन न हो तो देखो मैं तुम्हारे सामने घोड़ा सवार होने को मांगता हूँ, ऐसा लाग़र टट्टू मेंरे लिये लायेंगे जिस पर सवार होकर मैं और ज़्यादा बीमार हो जाऊँ, यह कहकर घोड़ा तलब किया। वाक़ई ऐसा ही लाग़र अड़यल टट्टू हाज़िर किया। उस पर हारून बे चूँ चराँ सवार हो गया और मुझको वहाँ से रूख़सत करके जरजान का रास्ता पकड़ लिया।

बहरहाल हारून रशीद की यही मजबूरियाँ थीं। जिन्होंने उसकों हज़रत इमाम अली रज़ा (अ.) के मुख़ालिफ़ाना उमूर की तरफ़ मुतवज्जेह नहीं होने दिया। वरना उसे फ़ुरसत होती और वह अपनी क़दीम ज़ी इख़्तियारी की हालतों पर क़ायम रहता तो इस सिलसिले की ग़ारत गरी व बरबादी को कभी भूलने वाला नहीं था, मगर उस वक़्त क्या कर सकता था। अपने ही दस्तो पा अपने इख़्तियार में नहीं थे। बहरहाल हारून रशीद इसी ज़ीक़ुन नफ़स मजबूरी नादारी और बेइख़्तियारी की ग़ैर मुतहम्मिल मुसीबतों में ख़ुरासान पहुँच कर शुरू १९३ हि. में मर गया।

इन दोनों भाइयों अमीन और मामून के मुतल्लिक़ मुवर्रिख़ीन का कहना है कि मामून तो फिर भी सूझ बूझ और अच्छे कैरेक्टर का आदमी था। लेकिन अमीन अय्याश, ला उबाली और कमज़ोर तबीयत का था। सल्तनत के तमाम हिस्सों में बाज़ीगर, मसख़रे और नुजूमी जोतिशी बुलवाये। निहायत ख़ूबसूरत तवाएफ़ और निहायत कामिल गाने वालियों और ख़्वाजा सराओं को बड़ी-बड़ी रक़में ख़र्च करके और नाटक की एक महफिल मिस्ल इन्द्र सभा के तरतीब दी। यह थियेटर अपने ज़र्क़-बर्क़ सामानों से परियों का अखाड़ा मालूम

होता था। स्यूती ने इब्ने जरीर से नक़्ल किया है कि अमीन अपनी बीबियों को छोड़कर ख़स्सियों से लवातत करता था। (तारीख़े इस्लाम जिल्द१ सफ़ा ६०)

इमाम अली रज़ा (अ.) का हज और हारून रशीद अब्बासी

ज़मानए हारून रशीद में हज़रत इमामे अली रज़ा (अ.) हज के लिये मक्के मुअज़्ज़मा तशरीफ़ ले गये। उसी साल हारून रशीद भी हज के लिये आया हुआ था। ख़ाने काबा में दाख़िले के बाद इमाम अली रज़ा (अ.) एक दरवाज़े से और हारून रशीद दूसरे दरवाज़े से निकले। इमाम (अ.) ने फ़रमाया कि यह दूसरे दरवाज़े से निकलने वाला जो हम से दूर जा रहा है, अनक़रीब तूस में दोनों एक जगह होंगे। एक रिवायत में है कि यहया बिने ख़ालिद बरमिकी को इमाम (अ.) ने मक्के में देखा कि वह रूमाल से गर्द की वजह से मुँह बन्द किये हुए जा रहा है। आपने फ़रमाया कि उसे पता भी नहीं कि उसके साथ इमसाल क्या होने वाला है। यह अनक़रीब तबाही की मन्ज़िल में पहुँचा दिया जायेगा। चुनाँचि ऐसा ही हुआ।

रावी मुसाफ़िर का बयान है कि हज के मौक़े पर इमाम (अ.) ने हारून रशीद को देखकर अपने दोनों हाथों की अँगुलियां मिलाते हुए फ़रमाया कि मैं और यह इसी तरह एक हो जायेंगे। वह कहता है कि मैंने इस इरशाद का मतलब उस वक़्त समझा जब आपकी शहादत वाक़े हुई और दोनों एक मक़बरे में दफ्न हुए मूसा बिने इमरान का कहना है कि इसी साल हारून रशीद मदीने मुनव्वरा पहँचा और इमाम (अ.) ने उसे ख़ुतबा देते हुए देखकर फ़रमाया कि अनक़रीब मैं और हारून एक ही मक़बरे में दफ़्न किये जायेंगे।

(नूरूल अबसार सफ़ा १४४)

हज़रत इमाम रज़ा (अ.) का मुजद्दिदे मज़हबे इमामिया होना

अहादीस में हर सौ साल के बाद एक मुजद्दे इस्लाम के नुमूदो शुहूद का निशान मिलता है। यह ज़ाहिर है कि जो इस्लाम का मुजद्द होगा उसके तमाम मानने वाले उसी के मसलक पर गामज़न और उसी के उसूलो फ़ुरू के सराहने वाले होंगे और मुजद्द को जो बुनियादी मज़हब होगा। उसके मानने वालों का भी वही मज़हब होगा। हज़रत इमाम रज़ा (अ.) जो क़तई तौर पर फ़रज़न्दे रसूले इस्लाम थे। वह उसी मसलक पर गामज़न थे। जिस मसलक की बुनियाद पैग़म्बरे इस्लाम और अली ख़ैरूल अनाम का वुजूद ज़ी जूद था। यह मुसल्लेमात से है कि आले मोहम्मद (अ.) पैग़म्बर (अ.) के नक़्शे क़दम पर चलते थे।

और उन्हीं के ख़ुदाई मन्शा। और बुनियादी मक़सद की तबलीग़ फ़रमाया करते थे। यानी आले मोहम्मद का मसलक वही था जो मोहम्मद मुस्तफ़ा (स.) का मसलक था। अल्लामा इब्ने असीर जज़री अपनी किताब जामिउल उसूल में लिखते हैं कि हज़रत इमाम रज़ा (अ.) तीसरी सदी हिजरी में और सुक्क़तुल इस्लाम अल्लामा कुलैनी चौथी सदी हिजरी में मज़हबे इमामिया के मुजद्दद थे। अल्लामा क़ौनवी और मुल्ला मुबीन ने उसी को दूसरी सदी के हवाले से तहरीर फ़रमाया है। (वसीलतुन निजात सफ़ा ३७६ व शरह जामे सग़ीर)

मुहद्दिस देहलवी शाह अब्दुल अज़ीज़ इब्ने असीर का क़ौल नक़्ल करते हुए लिखते हैं कि इब्ने असीर जज़री साहब जामिउल उसूल के हज़रत इमामे अली बिने मूसा रिज़ा (अ.) मुजद्दे मज़हबे इमामिया दरक़रन सालिस गुफ़्ता अस्त। इब्ने असीर जज़री साहबे जामिउल उसूल ने हज़रत इमामे रिज़ा (अ.) को तीसरी सदी में मज़हबे इमामिया का मुजद्दद होना ज़ाहिरो वाज़िह फ़रमाया है। (तोहफ़ए असना अशरया कीद ८५ सफ़ा, ८३) बाज़ उलामाए अहले सुन्नत ने आप को दूसरी सदी का और बाज़ ने तीसरी सदी का मुजद्दद बतलाया है। मेरे नज़दीक दोनों दुरूस्त है। क्योंकि दूसरी सदी में इमामे रिज़ा (अ.) की विलादत और तीसरी सदी के आग़ाज़ में आपकी शहादत हुई है।

हज़रत इमामे अली रज़ा (अ.) के इख़्लाक़ व आदात और शमाएल व ख़साएल

आपके इख़्लाक़ो आदात और शमाएल ओ ख़साएल का लिखना इसलिये दुश्वार है कि वह बेशुमार हैं। " मुश्ते नमूना अज़ ख़ुरदारे " यह हैं बहवाले अल्लामा शिबलिन्जी इब्राहीम बिने अब्बास तहरीर फ़रमाते हैं कि हज़रत इमामे अली रज़ा (अ.) ने कभी किसी शख़्स के साथ गुफ़्तुगू करने में सख़्ती नहीं की, और किसी बात को क़ता नहीं फ़रमाया। आपके मकारिमो आदात से था, कि जब बात करने वाला अपनी बात ख़त्म कर लेता तब अपनी तरफ़ से आग़ाज़े कलाम फ़रमाते। किसी की हाजत रवाई और काम निकालने में हत्तल मक़दूर दरेग़ न फ़रमाते। कभी अपने हमनशीं के सामने पांव फैलाकर न बैठते और न अहले महफ़िल के रूबरू तकिया लगाकर बैठते थे। कभी अपने गुलामों को गाली न दी और चीज़ों का क्या ज़िक्र। मैंने कभी आपको थूकते और नाक साफ़ करते नहीं देखा। आप क़हक़हा लगाकर हरगिज़ नहीं हँसते थे। ख़न्दा ज़नी के मौक़ पर आप तब्बसुम फ़रमाया करते थे। मुहासिने इख़्लाक़ और तवाज़ो व इन्केसारी की यह हालत थी कि दस्तरख़्वान पर साइस और दरबान तक को अपने साथ बिठा लेते। रातों को बहुत कम सोते और अक्सर रातों को शाम से सुबह तक शब्बेदारी करते थे और अक्सर औक़ात रोज़े से होते थे। मगर

तो आपसे कभी क़ज़ा नहीं हुए। इरशाद फ़रमाते थे कि हर माह में कम अज़ कम तीन रोज़े रख लेना ऐसा है। जैसे कोई हमेशा रोज़े से रहे। आप कसरत से ख़ैरात किया करते थे। और अक्सर रात के तारीक परदे में इस इसतिहबाब को अदा फ़रमाया करते थे। मौसमे गर्मा में आपका फ़र्श जिस पर आप बैठकर फ़तवा देते या मसाएल बयान किया करते बोरिया होता था और सरमा में कम्बल आपका यही तर्ज़ उस वक़्त भी रहा। जब आप वली अहदे हुकूमत थे । आपका लिबास घर में मोटा और ख़ुशन होता था और रफ़ए तान के लिये बाहर आप अच्छा लिबास पहनते थे। एक मरतबा किसी ने आपसे कहा हुज़ूर इतना उम्दा लिबास क्यों इस्तिमाल फ़रमाते हैं आपने अन्दर का पैराहन दिखाकर फ़रमाया। अच्छा लिबास दुनिया वालों के लिये और कम्बल का पैराहन ख़ुदा के लिये है। अल्लामा मौसूफ़ तहरीर फ़रमाते हैं कि एक मरतबा आप हम्माम में तशरीफ़ रखते थे कि एक शख़्स जुन्दी नामी आ गया और उसने भी नहाना शुरू किया। दौराने ग़ुस्ल में उसने इमामे रज़ा(अ.) से कहा कि मेरे जिस्म पर पानी डालिये आपने पानी डालना शुरू किया। इतने में एक शख़्स ने कहा। ऐ जुन्दी फ़रज़न्दे रसूल से ख़िदमत ले रहा है । अरे यह इमामे रज़ा हैं, यह सुनना था कि वह पैरों पर गिर पड़ा और माफ़ी मांगने लगा।

(नुरूल अबसार सफ़ा ३८ व सफ़ा ३६)

एक मर्दे बलख़ी नाक़िल है कि मैं हज़रत के साथ एक सफ़र में था। एक मक़ाम पर दस्तरख़्वान बिछा तो आपने तमाम ग़ुलामों को जिनमें हब्शी भी शामिल थे। बुलाकर बिठा लिया। मैंने अर्ज़ किया मौला इन्हें अलाहिदा बिठायें तो क्या हर्ज है। आपने फ़रमाया कि सबका रब एक है और माँ बाप आदम ओ हव्वा भी एक हैं और जज़ा ओ सज़ा आमाल पर मौसूफ़ है, तो फिर तफ़रीक़ क्या। आपके एक ख़ादिम यासिर का कहना है कि आप का यह ताकीदी हुक्म था कि मेंरे आने पर कोई ख़ादिम खाना खाने की हालत में मेंरी ताज़ीम को न उठे। मुअम्मर बिने ख़लाद का बयान है कि जब भी दस्तख़्वान बिछता आप हर खाने में से एक-एक लुक़मा निकाल लेते थे, और उसे मिसकीनों और यतीमों को भेज दिया करते थे। शेख़ सुदूक़ तहरीर फ़रमाते हैं कि आपने एक सवाल का जवाब देते हुए फ़रमाया कि बुज़ुर्गी तक़वा से है जो मुझसे ज़्यादा मुतक़्क़ी है वह मुझसे बेहतर है। एक शख़्स ने आपसे दस्तरख़्वास्त की कि आप मुझे अपनी हैसियत के मुताबिक़ कुछ माल दुनिया से दीजिये। आपने फ़रमाया यह मुश्किल है। फिर उसने अर्ज़ की अच्छा मेरी हैसियत के मुताबिक़ इनायत कीजिये, फ़रमाया यह मुमकिन है। चुनाँचि आपने उसे दो सौ अशर्फ़ी इनायत फ़रमा दी। एक मरतबा नवीं ज़िलहिज्जा यौमे अर्फ़ा आपने राहे ख़ुदा में सारा घर लुटा दिया। यह देखकर फ़ज़्ल बिने सुहैल वज़ीरे मामून ने कहा। हज़रत

यह तो ग़रामत यानी अपने आप को नुक़सान पहुँचाना है। आपने फ़रमाया यह ग़रामत नहीं ग़नीमत है मैं इसके इवज़ में ख़ुदा से नेकी और हसना लूँगा।आपके ख़ादिम यासिर का बयान है कि हम एक दिन मेवा खा रहे थे और खाने में ऐसा करते थे कि एक फल से कुछ खाते और कुछ फेंक देते थे हमारे इस अमल को आपने देख लिया और फ़रमाया नेमते ख़ुदा को ज़ाया न करो ,ठीक से खाओ और जो बच जाए उसे किसी मोहताज को दे दो। आप फ़रमाया करते थे कि मज़दूर की मज़दूरी पहले तै करना चाहिए क्योंकि चुकाई हुई उजरत से ज़्यादा जो कुछ दिया जाएगा पाने वाला उसको इनाम समझेगा।

सूली का बयान है किआप अकसर ऊदे हिन्दी का बुख़ूर करते और मुश्क व गुलाब का पानी इस्तेमाल करते थे। इत्रयात का आपको बड़ा शौक़ था।नमाज़े सुबह अव्वल वक़्त पढते उसके बाद सजदे में चले जाते थे और निहायत तूल देते थे, फिर लागों को नसीहत फ़रमाते।

सुलेमान बिन जाफ़र का कहना है कि आप अपने आबावो अजदाद की तरह ख़ुरमें को बहुत पसन्द फ़रमाते थे। आप शबो रोज़ में एक हज़ार रकत नमाज़ पढ़ते थे। जब भी आप बिस्तर पर लेटते थे तो जब तक सो न जाते क़ुरआने मजीद के सूरे पढ़ा करते थे।

मूसा बिन सयार का बयान है कि आप अकसर आपने शियों की मय्यत में शिरकत फ़रमाते थे और कहा करते थे कि हर रोज़ शाम के वक़्त इमामे वक़्त के सामने आमाल पेश होते हैं, अगर कोई शिया गुनाहगार होता है तो इमाम उसके लिए असतग़फ़ार करते हैं।

अल्लामा तबरसी लिखते है कि आपके सामने जब भी कोई आता था आप पहचान लेते थे कि मोमिन है या मुनाफ़िक़।

(आलाम अलवरा तोफ़ए रिज़विया, कशफ़ुल ग़म्मा सफ़ा ११२)

अल्लामा मोहम्मद रज़ा लिखते हैं कि आप हर सवाल का जवाब क़ुराने मजीद से देते थे,और रोज़आना एक क़ुरान खत्म करते थे। (जन्नात अल ख़ुलूद सफ़ा ३१)

हज़रत इमाम रज़ा (अ.) के बाज़ करामात

आपके क़ौलो फ़ेल से बेइन्तेहा करामत का ज़हूर हुआ है जिनमें से कुछ इस जगह लिखे जाते हैं अल्लामा मोमिन शबलन्जी रक़म तराज़ हैं।

(१) एक दिन हजरत इमाम रज़ा (अ.) अमीन और मामून पर नज़र डालते हुए फ़रमाया कि अन्क़रीब अमीन को मामून क़त्ल करदेगा। चुनाँचे ऐसा ही हुआ और अमीन अब्बसी २३ मोर्हरम १९८, हिजरी को ४ साल ८ माह सलतनत करने के बाद मामून रशीद के हाथों

क़त्ल हुआ ।   (तारीख़े इस्लाम जिल्द १ सफ़ा २० व नुरूल अबसार)

(२) हुसैन बिन मूसा का बयान है कि हम लोग एक मक़ाम पर बैठे हुए बातें कर रहे थे कि इतने में जाफ़र बिन उमर अल अलवी का गुज़र हुआ ! इसकी शकल व शबाहत और हैसीयत व हालत देख कर आपस में बातें करने लगे। हज़रत इमाम(अ.) ने फ़रमाया अन्क़रीब दौलत मन्द और रईस हो जाऐगा और इसकी हालत यकसर तबदील हो जाएगी। चुनांचे ऐसा ही हुआ, और वह एक माह के अन्दर मदीने का गर्वनर हुआ।

(३) जाफ़र बिन सालेह से आपने फ़रमाया तेरी बीवी को दो जुड़वाँ बच्चे होगें। एक का नाम अली और दूसरे का नाम उम्मे उमर रखना। जब इसके यहाँ विलादत हुई है तो ऐसा ही हुआ। जाफ़र बिन सालेह ने अपनी माँ से कहा। इमाम अली रज़ा(अ.) यह उम्मे उमर क्या नाम तजवीज़ फ़रमाया है। इसने कहा तेरी दादी का नाम उम्मे उमर था। हज़रत ने इसी के नाम पर मौसूम फ़रमाया।

(४) अपने एक शख़्स की तरफ़ देख कर फ़रमाया उसे मेरे पास बुला लाओ। जब वह लाया गया तो आपने फ़रमाया कि तू वसीयत करले अमरे हतमी के लिए तैय्यार हो जा "फ़मात अर जअल बादा सलासता अय्याम " इसे फ़रमाने के तीन दिन बाद उस शख़्स का इन्तेक़ाल हो गया   (नुरूल अब्सार सफ़ा १३६)

(५) अल्लामा अब्दुर्रहमान रक़म दराज़ हैं कि एक शख़्स खुरासान के इरादे से निकला । उसे उसकी लड़की ने एक हाला दिया कि फ़रोख़्त करके फ़ीरोज़ा लेते आना। वह कहता है कि जब मैं मक़ाम मर्द में पहुँचा तो इमाम रज़ा(अ.) के एक ख़ादिम ने मुझसे कहा कि एक दोस्त दार अहले बैत का इन्तेक़ाल हो गया है। इसके कफ़न की ज़रूरत है तू अपना हाला मेरे हाथ फ़रोख़त करदे तकि मैं उसे इसके कफ़न के लिए इस्तेमाल करूँ। इस मर्दे कूफ़ी ने कहा कि मेरे पास कोई हाला बराए फ़रोख्त नहीं है। ख़ादिम ने इमाम रज़ा(अ.) से वाक़ेआ बयान किया। आपने फ़रमाया कि इससे जा कर मेरा सलाम कह दे और उसे मेरा पैग़ाम पहुँचा कर तेरी लड़की ने जो हाला बराए ख़रीद फ़ीरोज़ा दिया है। वह फ़रोख़्त कर दे उसने बड़ा ताज्जुब किया और हाला निकाल कर उसके हाथ में फ़रोख़्त कर डाला। उस कूफ़ी का बयान है कि मैंने यह सोच कर कि वह बड़े बा कमाल हैं इनसे चन्द सवालात करना चाहा और इसी इरादे से इनके मकान पर गया। लेकिन इतना इज़्देहाम था कि दरे दौलत तक न पहुँच सका। दूर खड़ा सोच ही रहा था कि एक ग़ुलाम ने एक पर्चा ला कर दे दिया और कहा कि इमाम रज़ा(अ.) ने यह पर्चा इनाएत फ़रमाते हुए कहा है कि तेरे सवाल के जवाबात इसमें मरक़ूम हैं। "चूँ निगाहे करदम जवाब मसलाहाए मन बूद " जब मैंने उसे देखा तो वाक़िएन मेरे सवालात के जवाबात थे।

(६) रियान बिन सलत का बयान है कि मैं हज़रत इमाम रज़ा (अ.) कि ख़िदमत में हाज़िर हुआ। मेरे दिल में यह था कि मैं हज़रत से अपने लिए जामे और उनसे वह दिरहम माँगूगा,

जिस पर आपका इस्म गिरामी कन्दा होगा। मेरे हाज़िर होते ही आपने अपने ग़ुलाम से फ़रमाया कि यह जामे और सिक्के चाहते हैं। इन्हें दो जामे और मेरे नाम के तीस सिक्के दे दो।

(७) एक ताजिर को किरमान के रास्ते में डाकुओं ने पकड़ कर उसके मूहँ में इस दरजा बरफ़ भर दी कि उसकी ज़बान और उसका जबड़ा बेकार हो गया। उसने बहुत इलाज किया लेकिन कोई फ़ायदा न हुआ। एक दिन उसने सोचा कि मुझे इमाम रज़ा(अ.) की ख़िदमत में हाज़िर हो कर इलाज की दरख़्वास्त करनी चाहिये। यह सोच कर वह रात में सो गया। ख़्वाब में देखा कि मैं इमाम रज़ा(अ.) की ख़िदमत में हाज़िर हूँ। उन्होंने फ़रमाया कि कमूनी , सआतर और नमक को पानी में भिगो कर तीन चार बार ग़रारा करो, इन्शाअल्लाह शिफ़ा हो जायेगी। जब मैं ख़्वाब से बेदार हो कर हाज़िरे ख़िदमत हुआ तो हज़रत ने फ़रमाया तुम्हारा वही इलाज है जो मैंने तुमको ख़्वाब में बतलाया है। वह कहता है कि मैंने अपना ख़्वाब उनसे बयान नहीं किया था। इसके बा वजूद आपने वही जवाब दिया।

अल्लामा अरबली लिखते हैं कि हज़रत ने जो दवा बताई थी, उसके अज्ज़ा यह हैं। (१) ज़ीरा किरमानी (२) सआतर नमक (कशफ़ुल ग़मा सफ़ा ११२)

(८) अबु इसमाईल सिन्धी का बयान है कि मैं हज़रत इमाम रज़ा (अ.) की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अर्ज़ परदाज़ हुआ कि मौला मुझे अरबी ज़बान नहीं आती, आपने उसके लबों पर दस्ते मुबारक फेर कर उसे अरबी में गोया बना दिया।

(९) एक हाजी ने आपसे बहुत से सवालात किये, आपने सबका जवाब दे कर फ़रमाया कि वह सवाल तुमने नहीं किया जो एहराम के लिबास से मुताअल्लिक़ था जिसमें तुम्हें शक है। उसने कहा हां मौला उसे भूल गया था। आपने फ़रमाया उस मख़सूस लिबास में एहराम दुरूस्त है।

(१०) आपने ख़ाके ज़मीन सूँघ कर अपनी क़ब्र की जगह बता दी।

(११) एक शख़्स मोतमिद का बयान है कि मैं हज़रत इमाम रज़ा(अ.) के पास खड़ा था कि चिड़ियों का एक झुंड इमाम के पास आके चीख़ने लगा। इमाम ने मुझसे कहा जानते हो यह क्या कहता है मैंने कहा कि ख़ुदा और रसूल और फ़रज़न्दे रसूल(स.) ही इसे जान सकते हैं। आपने फ़रमाया इस झुंड का कहना यह है कि एक सांप आया हुआ है और वह मेरे बच्चों को खाना चाहता है। तुम जाओ और उसे तलाश करके मार डालो। चुनान्चे मैं उस मक़ाम पर गया और सांप को मार डाला। (शवाहेदुन नबूवत सफ़ा १९९ से २०१)

(१२) अल्लामा मोहम्मद रज़ा लिखते हैं कि एक मरतबा क़हत पड़ा, आपने दुआ की, एक अब्र नमूदार हुआ, लोग ख़ुश हो गये। लेकिन आपने फ़रमाया कि यह टुकड़ा अब्र का फ़लां मक़ाम के लिये है। इसी तरह कई बार हुआ। आख़िर में आपने एक अब्र के टुकड़े के नमूदार होने पर फ़रमाया कि यह यहां बरसेगा। चुनान्चे ऐसा ही हुआ। (जन्नातुल ख़ुलूद-

सफ़ा ३१, अयूने अख़्बारे रज़ा सफ़ा २१४)

(१३) अल्लामा तबरेसी तहरीर फ़रमाते हैं कि एक रोज़ आप अपनी जमींदारी पर तशरीफ़ ले गये। जाते वक़्त फ़रमाया कि मेरे हमराही को चाहिये कि बारिश का सामान ले ले। हसन बिन मूसा ने कहा कि हुज़ूर सख़्त गरमी है। बारिश के तो आसार नहीं हैं। फ़रमाया बारिश ज़रूर होगी। चुनान्चे वहां पहुंचने के बाद ही बारिश का नुज़ूल शुरू हो गया और खूब पानी बरसा। (अलाम अल वरा, सफ़ा १८६)

हज़रत रसूले खुदा (स.) और जनाबे अली रज़ा (अ.)

वाक़ए तमर सीहानी

(१४) अल्लामा इब्ने हजर मक्की , अल्लामा शिब्लन्जी, अल्लामा अब्दुल्लाह रक़्म तराज़ हैं। कि मोहम्मद बिन ईसा बिन हबीब का बयान है कि मैंने ख़्वाब में हज़रत रसूले खुदा(स.) को अपने शहर की उस मसिजद में देखा जिसमें हाजी उतरते और नमाज़ वग़ैरा पढ़ा करते थे। मैंने हज़रत को सलाम किया और हज़रत के पास तबक़ देखा जिसमें निहायत उम्दा खजूरें रखी हुई थीं। मेरे सलाम पर हज़रत ने अट्ठारा दाने इस खजूर के मरहमत फ़रमाये। मैं इस ख़्वाब से बेदार हुआ तो समझा कि अब सिर्फ़ अट्ठारा साल ज़िन्दा रहूँगा। इस ख़्वाब के बीस दिन के बाद हज़रत इमाम रज़ा(अ.) मदीने से तशरीफ़ लाये, और इसी मस्जिद में उतरे जिसमें हज़रत रसूल(स.) को मैंने ख़्वाब में देखा था। हज़रत के सामने एक तबक़ में देसी खजूरें रखी थीं। लोग हज़रत को सलाम करने के लिये दौड़े मैं भी गया तो देखा कि हज़रत उसी जगह तशरीफ़ फ़रमा हैं। जहां मैंने ख़्वाब में हज़रत रसूले खुदा (स.) को तशरीफ़ फ़रमा देखा था। मैंने सलाम किया तो हज़रत ने जवाब दिया और अपने क़रीब बुला कर एक मुट्ठी इस तबक़ की खजूरें मरहमत फ़रमाईं। मैंने गिनी तो वह भी अट्ठारा थीं। इसी क़द्र जितनी रसूले खुदा(स.) ने मुझे ख़्वाब में दी थीं। मैंने अर्ज़ की हुज़ूर और कुछ मरहमत हो तो फ़रमाया। " लौ ज़ादेका रसूल अल्लाह लज़्दे नाक " कि अगर रसूले ख़ुदा(स.) तुमको ख़्वाब में इससे ज़्यादा दिये होते तो मैं भी ज़्यादा देता। (सवाएक़े मोहर्रेक़ा सफ़ा १२२, नूरूल अबसार सफ़ा १४४,अर हज्जुल मतालिब सफ़ा ४५४)

हज़रत इमाम रज़ा(अ.) का इल्मी कमाल

मुवर्रेख़ीन का बयान कि आले मोहम्मद(स.) के इस सिलसिले में हर फ़र्द हज़रते अहदियत की तरफ़ से बलन्द तरीन इल्म के दरजे पर क़रार दिया गया था। जिसे दोस्त और दुश्मन सबको मानना पड़ता था। यह और बात है कि किसी को इल्मी फ़यूज़ फैलाने

का जमाने ने कम मौक़ा दिया और किसी को ज़्यादा। चुनांचे इन हज़रात में से इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.) के बाद अगर किसी को सबसे ज़्यादा मौक़ा हासिल हुआ तो वह हज़रत इमाम रज़ा (अ.) हैं। जब आप इमामत के मन्सब पर नहीं पहुँचे थे। उस वक़्त हज़रत इमाम मूसिए काज़िम (अ.) अपने तमाम फरज़न्दों और ख़ानदान के लोगों को नसीहत फरमाते थे कि तुम्हारे भाई अली रज़ा आलिमे आले मोहम्मद हैं। अपने दीनी मसाएल को इनसे दरयाफ़्त कर लिया करो, और जो कुछ कहे उसे याद रखो और फिर हज़रत इमाम मूसिए काज़िम(अ.) की वफ़ात के बाद जब आप मदीना में थे और रौज़ए रसूल (स.) पर तशरीफ़ फ़रमा रहे थे तो उलमाए इस्लाम मुश्किल मसाएल में आपकी तरफ रूजू करते थे।

मोहम्मद बिन ईसा यक़्तैनी का बयान है कि मैंने इन तहरीरी मसाएल जो हज़रत इमाम रज़ा(अ.) से पूछने गए थे और आपने इनका जवाब तहरीर फ़रमाया इकठ्ठा किया तो अठ्ठारह हज़ार की तादात में थे। साहबे लुमतुल रज़ा तहरीर करते है कि हज़रात अइम्मए ताहेरीन (अ.) के खुसूसियात में यह अमर तमाम तारीख़ी मुशाहिद और नीज़ हदीस व सैर के असानीद से साबित है। बावजूद एक अहले दुनियाँ को आप हज़रात की तक़लीद और मुताबेअत फ़ील अहकाम का बहुत कम शरफ़ हासिल था मगर बईं हमा तमाम ज़माना व हर ख़्वेश व बेगाना आप हज़रात को तमाम उलूम इलाही और इसरारइलाही का गन्जीना समझता था और मोहद्दे सीन व मुफ़स्सेरीन और तमाम उलमा फज़लन आपक मुकाबले का दावा रखते थे। वह भी इलमी मुबाहस व मजालिस में आँ हज़रत के आगे ज़ानुए अदब तै करते थे। और इल्मी मसाएल को हल करने की जरूतो के वक़्त हज़रत अमीरल मोमीनीन (अ.) से लेकर इमाम ज़ैनुल आब्दीन (अ.) तक इस्तफादे किए। वह सब किताबों में मैजूद है।

जाबिर बिन अब्दुल्लाह अन्सारी और हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र(अ.) की खिदमत में समअ हदीस के वाक़ेआत तमाम हदीस की किताब में महफूज़ है । इसी तरह अबू अल तुफैल अमिरी और सईद बिन जैर आख़री सहाबा की तफ़सीली हालात जो उन बुज़ुरगों के हाल में पाए जाते हैं। वह सैरो तवारीख़ में मज़कूर व मशहूर हैं सहाबा के बाद ताबईन और तबेए ताबईन और उन लोगों की फैज़याबी की भी यही हालत है।

शअबी, ज़हरी इब्ने क़ुतीबह, सुफ़यान, सौरी इब्ने शीबा, अब्दुर्रहमान, अकरमा, हसन बसरी वग़ैरा वगैरा यह सबके सब जो उस वकत इस्लामी दुनियाँ में दीनयात के पेशवा और मुकद्दस समझे जाते थे इन्ही बुज़ुर्गों के चशमए फैज़ के जरुआ नोश और उन्हीं हज़रात के मुतीय व हलक़ा बगोश थे।

जनाब इमामरज़ा(अ.) को इत्तेफ़ाके हसना से अपने इल्मो फ़ज़ल के इज़हार के ज़्यादा मौक़े पेश आए क्यों कि मामून अब्बसी के पास जब तक दारूल हुकूमत मरव तशरीफ़ फ़रमा रहे बड़े बड़े उलमा व फ़ुज़ला मुख़तलिफ उलूम में आपकी इस्तेदाद और फ़ज़ीलत

का अन्दाज़ा कराया गया और कुछ इसलामी उलेमा व फुज़ला पर मौकूफ नहीं था। बल्कि उलमाए यहूदो नसारा से भी आपका मुक़ाबला कराया गया मगर इन तमाम मनाज़िरो व मुबाहेसो में इन तमाम लोगों पर आपकी फ़ज़ीलत व फ़ौकियत ज़ाहिर हुई। खुद मामून भी खुलफ़ाए अब्बसीया में सबसे ज़्यादा आलम व अफ़कह था बा वजूद इसके उलूम तबर्हुरफ़ी का लोहा मानता था चारो नाचार इसका ऐतराफ़ पर ऐतराफ़ और इक़रार पर इक़रार करता था।। चुनांचे अल्ललामा इब्ने हजर सवाहेक़े मोहरेक़ा में लिखते है कि आप जलालत क़दर इज़्ज़त व शराफत में मारूफ व मज़कूर हैं। इसी वजह से मामून आपको बमुनज़िला अपनी रूह व जान जानता था। उसने अपनी दुख़्तर का निकाह आँ हज़रत(अ.) से किया और मुल्क व विलाएत में अपना शरीक गरदाना, मामून बराबर उलमा,अदयान व फ़ुकहाये शरीअत को जनाबे इमाम रज़ा(अ.) के मुक़ाबले में बुलाता और मनाज़रा कराता। मगर आप हमेशा उन लोगों पर ग़ालिब आते थे और खुद इरशाद फरमाते थे कि मैं मदीने में रौज़ए हज़रत रसूल खुदा(स.) में बैठता। वहाँ के उलमाए कसीर किसी इलमी मसाएल में आजिज़ आते तो बिल इत्तेफाक़ मेरी तरफ रूजू करते। जवाब हाए शाफी दे कर इनकी तसल्ली व तस्कीन कर देता। अबू अलसलत इब्ने सालेह कहते हैं कि हज़रत इमाम अली बिन मूसा रज़ा(अ.) से ज़्यादा कोई आलम मेरी नज़र से नही गुज़रा, और मुझ पर मौकूफ़ नहीं जो कोई आप की ज़्यारत से मुशरर्फ़ होगा वह मेरी तरह आपकी इल्मियत की शहादत देगा।

हज़रत इमाम रज़ा (अ.) और हुरूफ तहज्जी

बाज़ाहिर ऐसा मालूम होता है कि हुरूफ तहजी यानी (अलिफ, बे, जीम, दाल) वग़ैरा की कोई हैसीयत नहीं। लेकिन जब उसकी हक़ीकत अरबाब अस्मत से दरयाफ़्त की जाती है तो मालूम होता है कि यह हुरूफ जिन से कुरान मजीद जैसी ऐजाज़ी किताब मुरत्तब की गई है और जिस पर काएनात के इफ़हाम व तफहीम का दरो मदार है। यह अपने दामन में बेशुमार सेफ़ात रखते हैं और खुदावन्दे आलम ने उन्हीं हुरूफ़ को अपनी मारफ़त का ज़रिया बनाया है और हर हर्फ़ में खास चीज़ पिन्हाँ रखी है। हज़रत इमाम रज़ा (अ.) से हुरूफ तहज्जी दरयाफ़्त किया गया आपने बा हवाला बाब मदीनतुल उलूम हज़रत अली (अ.) इरशाद फरमाते हैं कि " **अलिफ** " से अल्ल अल्लाह खुदा की नेमतें " **बे** " से बहा उल्लाह खुदा की खूबीयाँ बहजतुल्लाह खुदा मोमिन से खुश होना " **ते** " से तमाम अल अमर बक़ाएम आले मोहम्मद दुनियाँ का खात्मा इमाम मेंहदी के अहद में होगा " **से** " से सवाब अल मोमिनीन अली अमालेहुम सालेहता मोमिनीन को अच्छे आमाल का भर पूर सवाब मिलेगा। " **जीम** " से जमाल अल्लाह, अल्लाह का जमाल व जलाल अल्लाह

अल्लाह का जलाल **“ हे ”** से हिल्मुल्लाह अन अलमज़नबीन। गुनाहगार से अल्लाह का हुक्म। “ख़े” से खमोल ज़िक्र अहल अल मासी इन्दुल्लाह “खुदा” का गुनाह गारों के गुनाहों से बुलवादेना “ दाल ” से दीन अल्लाह । अल्लाह का दीन इस्लाम “जीम” जुल्जलाल अल्लाह का साहेबे जमाल होना “ रे ” से अल्लाह का रऊफुर रहीम होना। “ज़े” से ज़लाज़िले अलक़यामता ” क़यामत के दिन अज़ीम ज़लज़ले। “ सीन ” से सेना अल्लाह । अल्लाह की अच्छाईयाँ और बयान “शीन” से शा अल्लाह माशाअल्लाह । जो खुदा चाहे वही होगा। “स्वाद” से सादिक़ अलवाद अल्लाह का वादा सच्चा और लोगों को सच बोलना चाहिए। “ज़वाद” से ज़लमिन ख़ालिफ़ मोहम्मद व आले मोहम्मद (स.)। वह शख़्स गुम्राह है जो मोहम्मद आले मोहममद का मुख़ालिफ़ है। “तो” से तूबा अल मोमिनीन के लिए जन्नत की मुबारक बाद। “ ज़ो ” से ज़न अलमोमीनीन बिल्लाह ख़ैर । मोमिन को खुदा के साथ अच्छा ज़न रखना चाहिए। “ ऐन ” से इल्म यानी खुदा अलमे मुतलक़ है। और इल्म इन्सान के लिए बेहतरीन ज़ेवर है। “ ग़ैन ” से अलग़नी, खुदा सब से मुसतग़नी है और ग़नी को ग़रीबों पर खर्च करना चाहिए “ फ़े ” से फ़ैज मन अफवाज अन्नार, लोग अगर गुनाह करेंगे तो फौज दर फैज जहन्नुम में जाएगें। “ क़ाफ़ ” से क़ुरआन यह अल्लाह की भेजी हुई किताब है जो हिदाएत से पुर है । “ काफ़ ” से अलकाफ़ी खुदा बन्दों के लिए काफ़ी है। “ लाम ” से लग़वो अल काफ़ेरीन फ़ी इफ़तराहुम एल्ल लाहे अलविज़्ब”। खुदा पर झूठे इलज़ाम देना यह काफ़िरों का काम नेहायत लग़ो है। “ मीम ” से मलकुल ला हुल यौम लामालेक ग़ैरहू एक दिन सिर्फ अल्लाह की हुकूमत होगी और कोई भी ज़िन्दा न होगा और न इसके सिवा कोई मालिक होगा, इस दिन खुदा फ़रमाए गा। लेमन उल मुलके अल यौम। आज के दिन किसकी हुकूमत है तो अरवाहे आइम्मा यह जवाब देगें। अल्लाह अलवाहिद अलक़हार ” आज सिर्फ खुदाए वाहिद क़हार, की हुकूमत है “ नून ” से नवाल अल्लाह अलमोमीनीन व निकाला बिल काफ़ेरीन। मोमिनीन पर खुदा का करम और काफिरो पर उसका अज़ाब मोहित होगा। “ वाव ” से वैल लमन असी अल्लाह ” वैल और तबाही है इस के लिए जो खुदा की ना फरमानी करे । “ हे ” से हान इल लल्लाह मन असह जो खुदा का गुनाह करता है वह उसकी तौहीन करता है। “ ला ” से ला इलाहा इल लल्लाह, यह वह कलमाए इख़्लास है जो उसे खुलूस व इक्तेदार और शराएत के साथ ज़बान पर जरी करे। वह ज़रूर जन्नत में जाएगा। “ ये ” से यदुल्लाह अल्लाह का हाथ जो मख़लूक़ात को रोज़ी पहूचाँता है मुराद है।

फिर आपने फ़रमाया कि इन्हीं हुरूफ़ पर मुश्तमिल क़ुरआन मजीद नाज़िल हुआ है और नजूल चूँकि खुदा की तरफ़ से था, इसलिए दावा कर दिया गया कि जो किताब हमने हुरूफ़ व अलफाज़ में भेजी है। इसका जवाब जिन व इन्स सब मिल कर भी नहीं दे सकते। (दमए साकेबह जिल्द ३ सफा, ६१)

इमाम रज़ा (अ.) और वक़्ते निकाह

सक़तुल इस्लाम हज़रत कुलैनी किताब उसूले काफ़ी में तहरीर फ़रमाते हैं कि हज़रत इमाम रज़ा (अ.) से दरयाफ़्त किया गया कि तजवीज़ व निकाह किस वक़्त होना चाहिए। आपने इरशाद फ़रमाया कि निकाह रात को सुन्नत है। इसलिए कि रात लज़्ज़त और सुकून के लिए बनाई गई है और औरतें मर्दों के लिए लुत्फ़ व लज़्ज़त और सुकून का मरकज़ हैं (मुनाक़िब जिल्द १ सफ़ा ६१ ब हावाला काफ़ी)

हज़रत इमाम रज़ा (अ.) के बाज़ मरूयात व इरशादात

हज़रत इमाम रज़ा(अ.) से बेशुमार अहादीस मरवी हैं। जिन में से बाज़ यह हैं (१) बच्चों के लिए माँ के दूध से बेहतर कोई दूध नहीं (२) सिरका बेहतरीन सालन है जिसके घर में सिरका होगा वह मोहताज न होगा (३) हर अनार में एक दाना जन्नत का होता है (४) मुनक्क़ा सफ़रे को दुरूस्त करता है, बलग़म को दूर करता है पठ्ठों को मज़बूत करता है नफ़्स को पाकीज़ा बनाता और रंजो ग़म दूर करता है। (५) शहद में शिफ़ा है, अगर कोई शहद हदीया करे तो वापस न करो (६) गुलाब जन्नत के फूलों का सरदार है (७) बनफ़शे का तेल सर में लगाना चाहिए इसकी तासीर गर्मियों मे सर्द और सर्दियों में गर्म होती है (८) जो ज़ैतून का तेल सर में लगाए या खाय उसके पास चालीस दिन तक शैतान न आएगा (९) सेलए रहम और पड़ोसियों के साथ अच्छा सुलूक करने से माल में ज़्यादती होती है (१०) अपने बच्चों का ख़तना सातवें दिन कर दिया करो। इससे सेहत ठीक होती है और जिस्म पर गोश्त चढ़ता है (११) जुमे के दिन रोज़ा रखना, दस १०, रोजों के बराबर है (१२) जो किसी औरत का महर न दे या मज़दूर की उजरत रोके या किसी को फ़रोख्त करदे वह बख़्शा न जाएगा। (१३) क़ुरान पढ़ने ,शहद खाने और दुध पीने से हाफ़ेज़ा बढ़ता है (१४) गोश्त खाने से शिफ़ा होती है और मर्ज़ दूर होता है (१५) खाने की इब्तेदा नमक से करनी चाहिए। क्योंकि इससे सत्तर बीमारियों से हिफ़ाज़त होती है जिनमें जुज़ाम भी है।(१५) जो दुनियाँ में ज़्यादा खाएगा क़यामत में भूखा रहेगा। (१७) मसूर ७०,सत्तर अम्बिया की पसन्दीदा ख़ुराक है इससे दिल नरम होता है और आँसू बनते है (१८) जो चालीस दिन गोश्त न खायगा बद इख़्लाक़ हो जाएगा (१९) खाना ठन्डा करके खाना चाहिए (२०) खाना प्याले के किनारे से खाना चाहिए (२१) तूले उमर के लिए अच्छा खाना, अच्छी जूती पहन्ना और कर्ज़ से बचना, कस्रते जिमा से परहज़े करना मुफ़ीद है। (२२) अच्छे

इख़्लाक़ वाला पैग़म्बरे इस्लाम(स.) के साथ क़यामत में होगा। (२३) जन्नत में मुत्तक़ी और हुस्ने ख़ुल्क़ वालों की और जहन्नम में पेटू, ज़िना कारों की कसरत होगी। (२४) इमाम हुसैन(अ.) के क़ातिल बख़्शे न जायेंगे। उनका बदला ख़ुदा ख़ुद लेगा। (२५) हसन व हुसैन(अ.) जवानाने जन्नत के सरदार हैं और उनके पदरे बुज़ुर्गवार दोनों से बेहतर हैं। (२६) अहले बैत की मिसाल सफ़ीनए नूह जैसी है, नजात वही पायेगा जो उसपर सवार होगा। (२७) हज़रत फ़ात्मा(स.) साक़े अर्श पकड़ कर क़यामत के दिन वाक़िये करबला का फ़ैसला चाहेंगी। उस दिन उनके हाथ में इमाम हुसैन(अ.) का ख़ून भरा लिबास होगा। (२८) ख़ुदा से रोज़ी सदक़ा दे कर मांगो। (२९) सबसे पहले जन्नत में वह शोहदा और अयाल दार जायेंगे जो परहेज़गार होंगे, और सबसे पहले जहन्नम में न इन्साफ़ हाकिम और मालदार जायेंगे। (मसन्द इमाम रज़ा तबा मिस्र १३४१ हिजरी) (३०) हर मोमिन का कोई न कोई पड़ोसी अज़ियत का बाएस ज़ुरूर होगा। (३१) बालों की सफ़ेदी का सर के अगले हिस्से से शुरू होना सलामती और इक़बाल मन्दी की दलील है और रूख़्सारों, दाढ़ी के अतराफ़ से शुरू होना सख़ावत की अलामत है, और गेसूओं से शुरू होना शुजाअत का निशान है और गुद्दी से शुरू होना नहूसत है। (३२) क़ज़ा व क़द्र के बारे में आपने फ़ज़ील बिन सुहैल के जवाब में फ़रमाया कि इन्सान न बिलकुल मजबूर है और न बिलकुल आज़ाद है। (नूरूल अबसार सफ़ा १४०)

हज़रत इमाम रज़ा(अ.) और मजलिसे शोहदाय करबला

अल्लामा मजलिसी बेहारूल अनवार में तहरीर फ़रमाते हैं कि शायरे आले मोहम्मद(स.) देबले ख़ेज़ाई का बयान है कि एक मरतबा आशूर के दिन मैं हज़रत इमाम रज़ा(अ.) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो देखा कि आप असहाब के हल्क़े में इन्तेहाई ग़मगीन व हज़ीं बैठे हुये हैं। मुझे हाज़िर होते देख कर फ़रमाया। आओ, आओ हम तुम्हारा इन्तेज़ार कर रहे हैं। मैं क़रीब पहुँचा तो आपने अपने पहलू में मुझे जगह देकर फ़रमाया कि ऐ देबल चूँकि आज यौमे आशूरा है और यह दिन हमारे लिये इन्तेहाई रंजो ग़म का दिन है, लेहाज़ा तुम मेरे जद्दे मज़लूम हज़रत इमाम हुसैन(अ.) के मरसिए से मुताअल्लिक़ कुछ शेर पढ़ो। ऐ देबल जो शख़्स हमारी मुसीबत पर रोये या रूलाय उसका अज्र ख़ुदा पर वाजिब है। ऐ देबल जिस शख़्स की आँख हमारे जद्दे नामदार हज़रत सय्यदुश शोहदा (अ.) के ग़म में रोयगा। ख़ुदा उसके गुनाह बख़्श देगा। यह फ़रमा कर इमाम(अ.) ने अपनी जगह से उठ कर परदा खींचा और मुख़द्देराते असमत को बुला कर उसमें बिठा दिया। फिर आप मेरी तरफ़ मुख़ातिब हो कर फ़रमाने लगे। हां देबल ! अब मेरे जद्दे अमजद का मरसिया शुरू करो। देबल कहते हैं कि मेरा दिल भर आया और मेरी आँखों से आँसू

जारी थे और आले मोहम्मद(स.) में रोने का कोहरामे अज़ीम बरपा था।

साहेबे दारूल मसाएब तहरीर फ़रमाते हैं कि देबल का मरसिया सुन कर मासूमए कुम जनाबे फ़ात्मा हमशीरा हज़रत इमाम रज़ा(अ.) इस क़द्र रोईं कि आपको ग़श आ गया।

इस इजतेमाई तरीक़े से ज़िक्रे हुसैनी को मजलिस कहते हैं। इसका सिलसिला अहदे इमामे रज़ा(अ.) में मदीने से शुरू होकर **मरो** तक जारी रहा।

अल्लामा अली नक़ी लिखते हैं कि अब इमाम रज़ा(अ.) को तबलीग़े हक़ के लिये नामे हुसैन(अ.) की इशाअत के काम को तरक़्क़ी देने का भी पूरा मौक़ा हासिल हो गया। जिसकी बुनियाद उसके पहले हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र(अ.) और इमाम जाफ़रे सादिक़(अ.) क़ायम कर चुके थे। मगर वह ज़माना ऐसा था कि जब इमाम की ख़िदमत में वही लोग हाज़िर होते थे। जो बा हैसियत इमाम या बा हैसियत आलिमे दीन आपके साथ अक़ीदत रखते थे, और अब इमाम रज़ा(अ.) तो इमामे रूहानी भी हैं और वली अहदे सलतन्त भी। इस लिये आपके दरबार में हाज़िर होने वालों का दायरा वसी है। **"मरोका"** वह मक़ाम है जो ईरान से तक़रीबन वसत में वाक़े है। हर तरफ़ के लोग यहां आते हैं और यहां यह आलम कि इधर मोहर्रम का चांद निकला और आँखों से आँसू जारी हो गये। दूसरों को भी तरग़ीब व तहरीस की जाने लगी कि आले मोहम्मद(स.) के मसाएब को याद करो और असराते ग़म को जाहिर करो। यहि भी इरशाद होने लगा कि जो इस मजलिस में बैठे जहां हमारी बातें ज़िन्दा की जाती हैं उसका दिल मुरदा न होगा। उस दिन कि जब सबके दिल मुरदा होंगे। तज़किरए इमाम हुसैन(अ.) के लिये जो मजमा हो उसका नाम इसलाही तौर पर " **मजलिस** " इसी इमाम रज़ा(अ.) की हदीस से ही माखूज़ है। आपने अमली तौर पर भी खुद मजलिसें करना शुरू कर दीं। जिनमें कभी खुद ज़ाकिर हुये और दूसरे सामेईन जैसे रिआन इब्ने शबीब की हाज़री के मौक़े पर आपने मसाएबे इमाम हुसैन(अ.) बयान फ़रमाए और कभी अब्दुल्ला बिन साबित या देबले ख़ेज़ाई ऐसे किसी शायर के हाज़री के मौक़े पर उस शायर को हुक्म हुआ कि तुम ज़िक्रे इमाम हुसैन(अ.) में अशआर पढ़ो, वह ज़ाकिर हुआ और हज़रत सामेईन में दाख़िल हुये।

---

(१) किताब अल ग़ाफ़ी जिल्द ७, सफ़ा ७ में है कि इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.) ने एक दिन सय्यद हिमयरी को हुक्म दिया कि मरसिया पढ़ो। उन्होंने मरसिया पढ़ा। इमाम ख़ुद भी बे हद रोय और पसे परदा मुख़द्देरात (औरतों) ने भी बे पनाह गिरया किया।

ख़लीफ़ा मामून रशीद अब्बासी और हज़रत इमाम अली रज़ा(अ.)

हज़रत इमाम रज़ा(अ.) के वालिद माजिद हज़रत इमाम मूसिए काज़िम(अ.) को १८३ हिजरी में हारून रशीद अब्बासी ज़हर से शहीद कराने के बाद १९३ हिजरी में फ़ौत हो गया। इसके मरने के बाद जमादील सानी १९३ हिजरी में इसका बेटा अमीन ख़लीफ़ा हुआ। हारून चूँकि अपने बेटों में सलतनत तक़सीम कर चुका था और उसके उसूल मोअय्यन कर चुका था। इस लिए एक के बजाए दो हुक्मराँन रशीदी हूदूदे सलतनत पर हुकमरानी करने लगे।अमीन चुँकि नेहायत ही लगो आदमी था, इस लिए उसने अपने उसअत इख़्तेआर की वजह से मामून पर जबरो तअद्दुदी शुरू कर दी बिल आख़िर दोनो भाईयों में जगं हुई और अमीन चार साल आठ माह सलतनत करने के बाद २३ मोर्हरम हराम १९८ हिजरी में क़त्ल कर दिया गया।

अमीन के क़त्ल के बाद भी मामून चार साल तक मरो में रहा। सलतनत का कारो बार तो फ़ज़ल बिन सुहेल के सुपुर्द कर रखा थाऔर ख़ुद आलमों फ़ाज़िलों से जो उसके दरबार में भरे रहते थे। फ़लसफ़ी मुबाहिसों में मसरूफ़ रहता था। ईराक़ में फ़ज़ल का भाई, हसन बिन सुहेल गर्वनर बनाया गया था। अबूहज़ीरह में नसर बिन नशिस्त अक़ील ने बग़ावत की और वह पाँच साल तक शाही फ़ौजों का मुक़ाबला करता रहा। ईराक़ में बद्दू, लुच्चों, बदमाशों को बुलाकर हसन बिन सुहेल के ख़िलाफ़ अलमे बग़ावत बुलन्द कर दिया। यह हालत देख कर हज़रत अली (अ.) और हज़रत जाफर तैय्यार के बाज़ बुलन्द नज़र नौनिहालों ने शायद यह ख़्याल किया कि इनके हुक़ूक़ वापस मिलने का वक़्त आ गया है। चुंनाचे जमादील सानी १९९ हिजरी मुताबिक़ ८१४ ई० में अबू अबुदल्लाह बिन इब्राहीम बिन इस्माईल बिन इब्राहीम अल मारूफ बा तबा तबा बिन हसन अली बिन अबी तालिब अलवी ने जो मज़हब ज़ैदिया रखते थे, कूफे में ख़रूज किया और लेगों को आले रसूल की बैअत और मुताबेअत की दावत दी। इनकी मदद पर बनी शैबान का मुअज़्ज़ि सरदार,अबू अल सरयासरी बिन मन्सूर शैबानी जो हरसमह के फ़ौजी सरदारें में से था, उठ खड़ा हुआ। उन्होंने अपनी मुत्तफेक़ा अफ़वाज से हसन की फौज को कूफ़े के बाहर शिकस्त दे कर तमाम जुनूबी ईराक़ पर क़बज़ा कर लिया।

फतेह के दूसरे दिन मोहम्मद बिन इब्राहीम मर्गे मफ़ाजात से फ़ौत हो गए , अबू असराया ने इनकी जगह मोहम्मद बिन ज़ैद शहीद को अमीर बना लिया। हसन ने फिर फ़ौज भेजी। अबू अल सराया ने उसे भी मार कर फना कर दिया। इसी दौरान अलवी हर चार जानिब से अबू अलसरया की मदद को जमा हो गएऔर जाबाजा शहरो में फैल गए। और अबू अलसरया ने कूफे में इमाम रज़ा (अ.) के नाम दिरहम व दीनार "मस्कूक" कराए

और बसरा वस्ता , मदाएन की तरफ़ फ़ैाज रवाना की और ईराक़ के बहुत से शहरो क़रिए फ़तह कर लिए। अलवीयों की क़ूवत व शौकत बहुत बढ़ गई। उन्हाने अब्बासीयों के घर जो कूफ़े में थे। फूंक दिए और जो अब्बासी मिला उसे क़त्ल कर डाला। इसके बाद मौसम हज आया तो अबू असराया ने हुसैन बिन हसन इब्ने इमाम ज़ैनुल आबदीन (अ.) को जिन्हें अफतस कहते है। मक्का का गर्वनर मुक़र्र किया और इब्रहीम बिन मूसा काज़िम को यमन का आमिल बनाया और फारस पर इस्माईल बिन मूसा काज़िम को गर्वनर किया।और मदायन की तरफ़ मोहम्मद बिन सुलैमान बिन दाऊद हसन मुसन्ना को रवाना किया और हुक्म दिया कि जानिबे शरक़ी से बग़दाद पर हमला करें । इस तरह अबू अलसरया की सलतनत बहुत वसी हो गई।

फ़ज़ल बिने सहल ने हरसमा को अबू सराया की सरकोबी के लिए रवना किया। और अबुल सराया नहरवान के करीब शिकस्त खाकर मारा गया, और मोहम्मद बिने मोहम्मद बिने ज़ैद मामून के पास मरो भेज दिए गए। अबू सराया का दौर दौरा कुल दस माह रहा।अबू सराया के क़त्ल होजाने के बाद हिजाज़ में लोगों ने मोहम्मद बिने जाफरे सादिक़ (अ.) को अमीरल मोमिनीन बनाया। अफ्तस ने भी उनकी बैअत करली और यमन में इब्राहीम बिने मूसिए काज़िम (अ.) ने सर उठाया। इसी तरह ईरान की सरहद से यमन तक तमाम मुल्क में ख़ाना जंगी फैल गई। अबूल सराया के क़त्ल के बाद हरसमा मग़रिब के हालात बयान करने बादशाह की ख़िदमत में मरो हाज़िर हुआ। क्योंकि वज़ीर इन तमाम हालात को बादशाह से मख़फी रखता था। हालात बयान करके वह बादशह के पास से वापस आरहा था कि वज़ीर ने रास्ते में उसे क़त्ल करा दिया। यह वाक़ेया २०० हिजरी का है। हरसूमा के क़त्ल की ख़बर सुन कर बग़दाद के सिपाहीयों ने जो उसे दोस्त रखते थे। बग़दादियो में बग़ावत करके हसन बिने सहल को निकाल दियाऔर मन्सूर बिन मेहदी को अपना गर्वनर बना लिया।

मामून को बाग़ियों की कसरत और अलवियो कि तलबे ख़िलाफत में उठने की खबर पहुँची तो घबरा गया। और उसने यही मसलहत देखी कि इमाम अली रज़ा(अ.) को वली अहद बना ले। चुनांचे उनको मदीने से बुला कर २ रमज़ान २०१ हिजरी मुताबिक़ ८१६ ई० को बावजूद उनके सख़्त इन्कार के अपना वली अहद बना लिया। उनसे अपनी बेटी उम्मे हबीबा की शादी कर दी। उनका नाम दिरहमो दीनार में मस्कूक कराया। शाही वर्दी से अब्बसायों का स्याह रगं दूर करके बनी फ़ात्मा का सबज़ रंग इख़्तियार किया। (तारीख़े इस्लाम जिल्द १ सफ़ा ६१) इस वाक़िए की तफ़सील कसीर किताबों में मौजूद है। हम मुख़तसर अलफाज़ में तहरीर करते हैं।

मामून रशीद की मजलिसे मुशाविरत :-हालात से मुतासिर होकर मामून रसीद ने एक मजिलसे मुशाविरत तलब की जिसमें उलमा, फ़ुज़ला, जुअमा,और उमरा सभी को

मदऊ किया। जब सब जमा हो गए तो असल राज़ दिल में रखते हुए उनसे यह कहा कि चूंकि शहरे खुरासान में हमारी तरफ से कोई हाकिम नही है और इमाम रज़ा (अ.) से ज़्यादा लाएक़ कोई नहीं है इसलिए हम चाहते है कि इमाम रज़ा (अ.) को बुला कर वहाँ की ज़िम्मेदरी उनके सुपुर्द करदें। मामून का मक़सद तो यह था कि उनको ख़लीफ़ा बना कर अलवियों की बग़ावत और उनकी चाबुक दस्ती को रोक दे। लेकिन यह बात उसने मजिलिसे मुशाविरत में ज़ाहिर नहीं की। बल्कि मुल्की ज़रूरत का हवाला दे कर उन्हे खुरासान का हाकिम बनाना ज़ाहिर किया, और लेगों ने तो इस पर जो भी राए दी हो लेकिन हसन बिने सहल और वज़ीरे आज़म फज़ल बिने सहल इस पर राज़ी न हुए और यह कहा कि इस तरह ख़िलाफत बनी अब्बास से आले मोहम्मद की तरफ़ मुन्तक़िल हो जाएगी। मामून ने कहा मैंने जो कुछ सोचा है वह यही है और उस पर अमल करूँगा। यह सुन कर वह लोग ख़ामोश हो गए। इतने में हज़रते अली इब्ने अबी तालिब के एक मोअज़िज़ सहाबी, सुलेमान बिने इबराहीम, बिने मोहम्मद, बिने दाऊद, बिने क़ासिम, बिने हैबत, बिने अब्दुल्ला, बिने हबीब, बिने शैख़ान, बिने अरक़म, खड़े हो गए और कहने लगे ऐ हरून रशीद " रास्त मी गोई इमामी तरसम कि तू हज़रते इमाम रज़ा हमाना कुनी कि कूफियान बा हज़रते इमाम हुसैन करदन्द" तू सच कहता है कि लेकिन मैं डरता हूँ कि तू कहीं इनके साथ वही सुलूक न करें जो कूफियों ने इमाम हुसैन (अ.) के साथ किया है। " मामून रशीद ने कहा ऐ! सुलेमान तुम यह क्या सोच रहे हो ऐसा हरगिज नहीं हो सकता। मैं उनकी अज़मत से वाक़िफ हूँ जो उन्हें सताएगा क़यामत में हज़रते रसूले करीम (स.) हज़रते अली हकीम को क्यों कर मुह दिखएगा तुम मुतमईन रहो। इन्शा अल्लाह इनका एक बाल बीका न होगा। यह कह कर बारवाएते

अबू मख़नफ़ मामून रशीद ने क़ुराने मजीद पर हाथ रखा और क़सम खाकर कहा मैं हरग़िज औलादे पैग़म्बर पर कोई ज़ुल्म न करूँगा। इसके बाद सुलेमान ने तमाम लोगों को कसम दे कर बैअत ले ली। फिर उन्होने एक बैअत नामा तैय्यार किया और उस पर अहले खुरासान कि दस्त खत लिए। दस्खत करने वालों की तादात चालिस हज़ार थी। बैअत नामा तैय्यार होने के बाद मामून रशीद ने सुलैमान को बैअत नामा, समेत मदीने भेज दिया। सुलेमान क़ता मराहिल व तै मनाज़िल करते हुए मदीने मुनव्वरा पहुँचे और हज़रते इमाम रज़ा (अ.) से मुलाक़ात की। उनकी खिदमत में मामून का पैग़ाम पहुँचाया और मजलिसे मशविरत के सारे वाक़ेयात बयान किए। और बैंअत नामा हज़रत की खिदमत में पेश किया। हज़रत ने ज्यों ही उसको खोला और उसका सर नामा देखा सरे मबारक हिला कर फ़रमाया कि यह मेरे लिए किसी तरह मुफ़ीद नहीं है। इस वक़्त आप आब दीदा थे। फिर आपने फरमाया कि मुझे जद्दे नाम दार ने ख़्वाब में नतीजा व अवाक़िब से आग़ाह कर दिया है। सुलैमान ने कहा मौला यह तो खुशी का मौक़ा है। आप इस दर्जा परेशान क्यों

हैं इरशाद फ़रमाया कि में इस दावत में अपनी मौत देख रहा हूँ। उन्होंने कहा मौला मैंने सबसे बैअत ले ली है कहा दुरूस्त है , लेकिन जद्दे नाम दार ने जो फ़रमाया है वह ग़लत नहीं हो सकता मैं मामून के हाथों शहीद किया जाऊँगा।

बिल आख़िर आप पर कुछ दबाओ पड़ा कि आप मरो ख़ुरासान के लिए आज़िम हो गए। जब आपके अज़ीज़ों और वतन वालों को आपकी रवानगी का हाल मालूम हुआ बेपनाह रोए।

ग़रजकि आप रवाना हो गए। रास्ते में एक चशमए आब के किनारे चन्द आहुओं को देखा कि वह बैठे हुए हैं जब उनकी नज़रें हज़रत पर पड़ी सब दौड़ पडे और बा चश्मे तर कहने लगे कि हुज़ूर ख़ुरासान न जाऐं कि दुश्मन ब लिबासे दोस्ती आपकी ताक में हैं और मलकुल मौत इस्तेग़बाल के लिए तैय्यार हैं। हज़रत ने फ़रमाया कि अगर मौत आनी है तो वह हर हाल में आएगी।

(कनजुल अन्साब अबू मख़नफ, ८०७ तबा बम्बई १३०२, हिजरी)

एक रवाएत में है कि मामून रशीद ने अपनी ग़रज़ के लिए जब हज़रत को ख़लीफ़ए वक़्त बनाने के लिये लिखा तो आपने इनकार कर दिया। फिर उसने तहरीर किया कि आप मेरी वली अहदी को क़ुबूल कीजिए। आपने इसे भी इनकार कर दिया। जब वह आपकी तरफ से मायूस हो गया तो उसने ३००, अफ़राद पर मुश्तमिल फ़ौज भेज दी और हुक्म दे दिया कि वह जिस हालत में हों और जहाँ हों उनको गिरफ्तार करके लाया जाए। और उन्हें इतनी मोहलत न दी जाए कि वह किसी से मिल सकें। चुनांचे फ़ौज ग़ालेबन फ़ज़ल बिने सहल वज़ीरे आज़म की क़यादत में मदीने पहुँची और इमाम (अ.) मस्जिद से गिरफ़्तार करके मरो ख़ुरासान के लिए रवाना हो गये। इतना मौक़ा न दिया कि इमाम (अ.) अपने अहलो अयाल से रूख़सत हो लेते।

मामून की तलबी से क़बल इमाम (अ.) की रौज़ए रसूल पर फ़रयाद

अबू मख़नफ़ बिने लूत ,बिने यहयया ख़जाई का बयान है कि हज़रते इमाम मूसिए काज़िम (अ.) की शहादत के बाद १५ मोहरमुल हराम शबे यक शम्बा को हज़रत इमाम रज़ा (अ.) ने रौज़ए रसूले ख़ुदा(स.) पर हाज़री दी। वहाँ मशग़ूले इबादत थे कि आँख लग गई, ख़्वाब में देखा कि हज़रते रसूले करीम (स.) बा लिबासे स्याह तशरीफ़ लाए हैं और सख़्त परेशान हैं। इमाम(अ.) ने सलाम किया। हुज़ूर ने जवाबे सलाम देकर फ़रमाया। ऐ! फ़रज़न्द मैं और अली, फ़ात्मा हसन,हुसैन सब तुम्हारे ग़म में नालां व गिरयाँ हैं और हम ही नहीं फ़रज़न्दे ज़ैनुल आबदीन(अ.) व मोहम्मद बाक़र (अ.) जाफ़रे सादिक़(अ.) और तुम्हारे पदर मूसिए काज़िम (अ.) सब ग़मगीन और रंजीदा हैं। ऐ! फ़रज़न्द अन्क़रीब मामून रशीद तुमको ज़हर से शाहीद कर देगा। यह देख कर आपकी आँख खुल गई, और आप

ज़ार ज़ार रोने लगे। फिर रौज़ए मुबारक से बाहर आए । एक जमाअत ने आपसे मुलाक़ात की और आपको परेशान देख कर पूछा कि मौला इज़तिराब की वजह क्या है। फ़रमाया अभी अभी जद्दे नामदार ने मेरी शहादत की ख़बर दी है। अबू अलसलत दुश्मन मुझे शहीद करना चाहते हैं और मैं खुदा पर पुरा भरोसा करता हूँ जो मरज़िए माबूद हो वही मेरी मरज़ी है इस ख़्वाब के थोड़े अरसे के बाद मामून रशीद का लश्कर मदीने पहुँच गया और इमाम (अ.) को अपनी सियासी ग़रज़ पूरी करने के लिए वहाँ से दारूल ख़िलाफ़त " मरो " में ले आया। (कनजुल अन्साब सफ़ा, ८६)

इमाम रज़ा (अ.) की मदीने से मरो में तलबी

अल्लामा शिबलंजी लिखते हैं कि हालात की रौशनी में मामून ने अपने मुक़ाम पर यह क़तई फैसला और अज़्म बिल जज़्म कर लेने के बाद कि इमाम रज़ा (अ.) को वली अहदे ख़िलाफ़त बनाए गा। अपने वज़ीरे आज़म फज़ल बिन सहल को बुला कर भेजा और उससे कहा कि हमारी राए है कि हम इमाम रज़ा को वली अहद सुपुर्द कर दे तुम खुद भी इस पर सोच विचार करो, और अपने भाई हसन बिन सहल से मशविरा करो। इन दोनो ने आपस में तबादलए ख़्यालात करने के बाद मामून की बार गाह में हाज़री दी। उनका मक़सद था कि मामून ऐसा न करे वरना ख़िलाफत आले अब्बस से आले मोहम्मद मे चली जाएगी। उन लोगो ने अगरचे खुल कर मुख़ाल फत नहीं की । लेकिन दबे लफ़्ज़ों में नाराज़ी का इज़हार किया। मामून ने कहा मेरा फैसला अटल है और मैं तुम दोनो को हुक्म देता हूँ कि तुम मदीने जाकर इमाम रज़ा (अ.) को अपने हमराह लाओ। (हुक्मे हाकिम मर्गे मफ़ाजात) आख़िकार यह दोनो इमाम रज़ा (अ.) की ख़िदमत में मक़ामें मदीने मुनव्वरा हाज़िर हुए और उन्होंने बादशाह का पैग़ाम पहुँचाया। हज़रते इमाम अली रज़ा ने इस अर्ज़ दाश्त को मुस्तरद कर दिया और फ़रमाया कि इस अमर के लिए अपने को पेश करने से माज़ूर हूँ। लेकिन चूँकि बादशाह का हुक्म था कि उन्हे ज़रूर लाओ इसलिए उन दोनो ने बे इन्तेहा इसरार किया और आपके साथ उस वक़्त तक लगे रहे जब तक आपने मशरूत तौर पर वादा नहीं कर लिया। (नुरूल अबसार सफ़ा ४१)

इमाम रज़ा (अ.) की मदीने से रवानगी

तरीख़ अबुल फ़िदा में है कि जब अमीन क़त्ल हुआ तो मामून सलतनते अब्बासिया का मुस्तक़िल बादशाह बन गया। यह ज़ाहिर है कि अमीन के क़त्ल होने के बाद सलतनत मामून के पाए नाम हो गई। मगर यह पहले कहा जा चुका है कि अमीन नाननहाल की तरफ़ से अरबीउन नस्ल था। और मामून अजमिउन नस्ल था। अमीन के क़त्ल होने

से ईराक़ की अरब क़ौम और अरकाने सलतनत के दिल मामून की तरफ से साफ नहीं हो सकते थे। बल्कि वह ग़मो गुस्से की कैफीयत महसूस करते थे दूसरी तरफ खुद बनी अब्बास में से एक बड़ी जमाअत जो अमीन की तरफ दार थी। इससे भी मामून को हर तरह का ख़तरा लगा हुआ था। औलादे फात्मा में से बहुत से लोग जो वक़्तन फ़वक़्तन बनी अब्बसा के मुक़ाबिल खड़े होते रहते थे। वह ख़्वाह क़त्ल कर दिए गए हों या जिला वतन किए गए हों। या क़ैद रखे गए हों। उनके मुआफ़िक़ एक जमाअत थी जो अगरचे हुकूमत का कुछ बिगाड़ न सकती थी। मगर दिल ही दिल में हुकूमते बनी अब्बस से बेज़ार ज़रूर थी। ईरान में अबू मुस्लिम खुरासानी ने बनी उम्मय्या के ख़िलाफ जो इश्तेआल पैदा किया वह इन मज़ा लिम ही को याद दिला कर जो बनी उमय्या के हाथों हज़रते इमाम हुसैन (अ.) और दूसरे बनी फ़ात्मा के साथ किए थे। इससे ईरान में इस ख़ान दान के साथ हमदर्दी का पैदा होना फ़ितरी था। दरमियान में बनी अब्बास ने इससे ग़लत फ़ायदा उठाया। मगर इतनी मुद्दत में कुछ नाकुछ तो ईरानियों की आँखें भी खुल गई होंगीं। कि उनसे कहा गया था क्या और इक़्तेदार किन लोगों ने हासिल कर लिया। मुम्किन है ईरानी क़ौम के इन रूझानात का चाचा मामून के कानो तक भी पहुँचा हो। अब जिस वक़्त कि अमीन के क़त्ल के बाद वह अरब क़ौम पर और बनी अब्बसा के खानदान पर भरोसा नहीं कर सकता था और उसे हर वक़्त इस हलक़े से बग़ावत का अन्देशा था। तो उसे इसी सीयासी मस्लहत इसी में मालूम हुई। अरब के खिलाफ अजम और बनी अब्बास के खिलाफ बनी फात्मा को अपना बनाया जाए। और चुँकि तरज़े अमल में खुलूस समझा नहीं जा सकता और वह आम तबाए पर असर नहीं डाल सकता। अगर यह नुमायां हो जाए कि वह सियासी मसलहतों कि बिना पर है इसलिए ज़रूरत हुई कि मामून मज़हबी हैसियत से अपनी शियत नवाज़ी और विलाए अहले बैत के चर्चे अवाम में फैलाए और वह यह दिखलाए कि वह इन्तेहाई नेक नीयती पर क़ाएम है। " अब हक़ बाहक़ दार रसीद के मक़ूले को सच्चा बनाना चाहता है "।

इस सिलसिले में जनाबे शेख़ सद्दूक़ अल्लाहो मुक़ामा ने फ़रमाया है कि इसने अपनी नज़र की हिकायत भी शाया की कि जब अमीन का और मेरा मुक़ाबला था और बहुत नाज़ुक हालत थी और यह उसी वक़्त मेरे ख़िलाफ़ सीसतान और किरमान में भी बग़ावत हो गई थी और खुरासान में भी बेचैनी फैली हुई थी और फ़ौज कि तरफ से भी इतमिनान ना था। और उस वक़्त दुश्वार माहौल में मैंने खुदा से इलतिजा की और मन्नत मानी कि अगर यह सब झगड़े ख़त्म हो जाऐं और मैं बामे ख़िलाफ़त तक पहुँचू तो उसको उसके असली हक़दार यानी औलादे फ़ात्मा में से जो इसका अहल है उस तक पहुँचा दूँगा। इसी नज़र के बाद मेरे सब काम बनने लगे और आख़िर तमाम दुश्मनों पर फ़तेह हासिल हुई यक़ीनी यह वाकिया मामून की तरफ़ से इस लिए बयान किया गया कि इसका तर्ज़े

अमल खुलूसे नियत और हुस्ने नियत पर मुबनी समझा जाए । यूँ तो अहले बैत के खुले दुश्मन सख़्त से सख़्त थे वह भी इनकी हक़ीकत और फ़ज़ीलत से वाकिफ़ थे। मगर शीयत के मानी यह जानना तो नहीं है। बल्कि मोब्बत रखना और इताअत करना है। और मामून के तरज़े अमल से यह ज़ाहिर है कि वह इस दावए शीअत और मुहब्बते अहले बैत का ढिंढोरा पीटने के बावजूद खुद इमाम की इताअत नहीं करना चहता था। बलिक इमाम को अपने मशां के मुताबिक़ चलाने की कोशिश थी। वली अहद बनने के बारे में आपके इख़्तेआरात को बिल्कुल सलब कर दिया गया और आपको मजबूर बना दिया गया था। इससे ज़ाहिर है कि यह वली अहदी की तफवीज भी एक हाकिमाना तशद्दुद था जो उस वक़्त इमाम के साथ किया जा रहा था।

इमाम रज़ा(अ.) का वली अहदी को क़ुबूल करना बिल्कुल वैसे ही था जैसा हारून के हुक्म से इमाम मूसा काज़िम(अ.) का जेल खाने में चला जाना। इसीलिए जब इमाम रज़ा(अ.) मदीने से ख़ूरासान की तरफ़ रवाना हो रहे थे तो आपके रंजो सदमा और इज़्तेराब की कोई हद न थी। रौज़ए रसूल से रूख़्सत के वक़्त आपका वही आलम था जो हज़रते इमाम हुसैन (अ.) का मदीने से रवानगी के वक़्त था। देखने वालों ने देखा कि आप बेताबाना रौज़े के अन्दर जाते हैं और नालओ आह के साथ उम्मत की शिकायत करते हैं। फिर बाहर निकल कर घर जाने का इरादा करते हैं और फिर दिल नहीं मानता। फिर रौज़े से जाकर लिपट जाते हैं। यही सूरत कई मरतबा हुई। रावी का बयान है कि मैं हज़रत के क़रीब गया तो फ़रमाया। ऐ महूल! मैं अपने जद्दे अम्जद के रौज़े से ब जब्र जुदा किया जा रहा हूँ। अब मुझको यहाँ आना नसीब न होगा(सवानेह इमाम रज़ा जिल्द३ सफ़ा ७)

महूल शैबानी का बयान है कि जब वह नागवार वक़्त पहुँच गया कि हज़रते इमा रज़ा(अ.) अपने जद्दे बुर्ज़गवार के रौज़ए अक़्दस से हमेशा के लिए विदा हुए तो मैंने देखा कि आप बेताबाना अन्दर जाते और बा नालओ आह बाहर आते हैं और दिल में उम्मत की शिकायत करते हैं या बाहर आकर गिरयो बुका फ़रमाते हैं और फिर अन्दर चले जाते हैं। आपने चन्द बार ऐसे ही किया और मुझसे न रहा गया और मैंने हाज़िर हो कर अर्ज़ की मौला इज़्तेराब की क्या वजह है ? फ़रमाया ऐ महूल मैं अपने नाना के रौज़े से जबरन जुदा किया जा रहा हूँ। मुझे इसके बाद अब यहाँ आना न नसीब होगा। मैं इसी मुसाफ़िरत और ग़रीबुल वतनी में क़त्ल कर दिया जाऊँगा और हारून रशीद के मक़बरे मे मदफ़ून हूँगा। उसके बाद आप दौलत सरा में तशरीफ़ लाए और सब को जमा करके फ़रमाया कि मैं तुमसे हमेशा के लिए रूख़्सत हो रहा हूँ। यह सुन कर घर में एक अज़ीम कोहराम बरपा हो गया और सब छोटे बड़े रोने लगे। आपने सब को तसल्ली दी और कुछ दीनार अइज़्ज़ा में तक़सीम करके राहे सफ़र इख़्तेआर फ़रमाया। एक रवाएत की बिना पर आप मदीने से रवाना हो कर मक्के मोअज़्ज़मा पहुँचे और वहाँ तवाफ़ करके ख़ानए काबा को रूख़्सत फ़रमाया।

हज़रत इमाम रज़ा (अ.) का नैशा पूर में वरूदे मसूद

रज़ब २००, हिजरी में हज़रत मदीनए मुनव्वरा से मरो "खुरासान" की जानिब रवाना हो गए। अहलो अयाल और मुअल्लेक़ीन सब को मदीना मुनव्वरा ही में छोड़ा। उस वक़्त इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.)की उमर पाँच बरस की थी।आप मदीना ही में रहे।मदीना से रवानगी के वक़्त कूफ़ा और क़ुम की साधी राह छोड़ कर बसरा और अहवाज़ का ग़ैर मुतअर्रिफ़ रास्ता इस खतरे के पेशे नज़र इख़्तेआर किया गया कि कहीं अक़ीदत मन्दाने इमाम मुज़ाहमत न करें। ग़रजकि क़तए मराहल और तै मनाज़िल करते हुए यह लोग नेशापुर के क़रीब जा पहुँचे ।

मोवर्रेख़ीन लिखते हैं कि जब आपकी मुक़द्दस सवारी शहर नेशा पुर के क़रीब पहुंची तो जुमला उलमा ,व फ़ुज़ला शहर ने बैरून शहर हाज़िर हो कर आपकी रस्में इस्तग़बाल अदा की। दाखिले शहर होते हुए तो तमाम खुर्द व बुज़ुर्ग शौक़े ज़्यारत में उमड़ आए। मरकबे आली जब मरबा शहर (चौक) में पहुँचा, तो हुजूम खलाएक़ से ज़मीन पर तिल रखने की जगह न थी उस वक़्त हज़रत इमाम रज़ा क़ातिर नामी खच्चर पर सवार थे। जिसका तमाम साज़ो सामान नुक़रई था, ख़च्चर पर अमारी थी और इस पर दोनों तरफ़ पर्दे पड़े हुए थे और ब रवाएते छतरी लगी हुई थी। उस वक़्त इमामुल मुहद्देसीन हाफ़िज़ अबूज़रआ राज़ी और मोहम्मद बिन अस्लम तूसी आगे आगे और उनके पीछे अहले इल्म व हदीस की एक अज़ीम जमाअत हाज़िरे ख़िदमत हुई और बईं कलमात इमाम (अ.) को मुख़ातिब किया। " ऐ जमीय सादात के सरदार , ऐ तमाम इमामों के इमाम,और ऐ मरकज़े पाकीज़गी आपको रसूले अकरम का वासता, आप अपने अजदाद के सदक़े में अपने दीदार का मौक़ा दीजिए और कोई हदीस अपने जद्दे नाम दार की बयान फरमाईये यह कह कर मोहम्मद बिन राफ़े, अहमद बिन हारिस यहिया बिन यहिया और इस्हाक़ इब्ने सहविया ने आपके क़ातिर की बाग थाम ली। उनकी इस्तदुआ सुन कर आप ने सवारी रोक दीए जाने के लिए इशारा फ़रमाया, और इशारा किया कि हिजाब उठा दीए जाऐं। फ़ौरन ताामील की गई। हाज़रीन ने ज्यों ही वह नूरानी चेहरा अपने प्यारे रसूल के जिगर गोशे का देखा सीनों में दिल बेताब हो गए। दो ज़ुल्फ़ें रूए अनवर पर मानिन्द गेसूए मिश्क बूए जनाबे रसूले खुदा फूटी हुई थीं। किसी को यारए ज़ब्त बाक़ी न रहा। वह सब के सब बे अख़्तेआर धाड़ें मार कर रोने लगे। बहुतों ने अपने कपड़े फाड़ डाले। कुछ ज़मीन पर गिर कर लोटने लगे बाज़ सवारी के गिर्द पेश घूमने और चक्कर लगाने लगे और मरकबे अक़दस के ज़ीन व लजाम चूमने लगे और अमारी का बोसा देने लगे। आख़िर मरकबे आली के क़दम चूमने के इश्तेआक में दर्राना बढ़े चले आते थे। ग़रज़कि अजीब तरह का

था कि जमाले बा कमाल को देखने से किसी को सेरी नहीं हुई थी। टक टकी लगाए रूखे अनवर की तरफ निगराँ थे। यहाँ तक कि दो पहर हो गई और इनके मौजूदा शौक़ व तमन्ना की पुर जोशियों में कोई कमी नहीं आई। इस वक़्त उलमा और फुज़ला की जमाअत ने बाआवाज़े बुलन्द पुकार कर कहा कि ऐ ! मुस्लमानों ज़रा खामोश हो जाओ और फरज़न्दे रसूल(स.) के लिए आज़र न बनो इनकी इस्तेदुआ पर क़दरे शोर व गुल थमा तो **इमाम (अ.)** ने इरशाद फ़रमाया।

" हदसनी अबी मुसा अल-काज़िम , अन अबीहा जाफ़र अल सादिक़ अन अबीह मोहम्मद अल बाक़र अन अबीह ज़ैन ,अल आबेदीन अन अबीह अल हुसैन, अल शहीदे कर्बला अन अबीह अली , अल मुर्तुज़ा क़ाला हदसनी जैबी , व क़रता ऐनी रसूल अल्लाह, सल्लल्लाहो अलैहे वालेही वस्लम्म , क़ाला हदसनी जिबराईल अलैहिस्सलाम , क़ाला हदसनी रब्बुल्लइज़्ज़त , सुबहानहा वताला क़ाला ला इलाहा इल्लाह , हस्सनी फ़मन क़ाला दख़ला हसनी , वमन दख़ला हसना अमेना मन अज़ाबी "

तरजुमा :- मेरे पदरे बुजुर्गवार हज़रत इमाम मुसिए काज़िम(अ.) ने मुझसे फ़रमाया, और उनसे इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.) ने और उनसे इमाम मोहम्मद बाक़र(अ.) ने उनसे इमाम ज़ैनुल आबेदीन(अ.) ने और उनसे इमाम हुसैन(अ.) ने और उनसे हज़रत अली मुरतज़ा (अ.) ने और उनसे हज़रत रसूले करीम जनाबे मोहम्मद मुस्तफ़ा(स.) ने और उनसे जनाबे जिबरईल अमीन ने और उनसे ख़ुदा वन्दे आलम ने इरशाद फ़रमाया कि ला " इलाहा इल्लल्लाह " मेरा क़िला है जो इसे ज़बान पर जारी करेगा मेरे क़िले में दाख़िल हो जायगा और जो मेरे क़िलए रहमत में दाख़िल होगा मेरे अज़ाब से महफ़ूज़ हो जायगा।

(मसन्दे इमाम रज़ा (अ.) सफ़ा ७ तबा मिस्र १३४१ हिजरी)

यह फ़रमा कर आपने परदा खिंचवा दिया और चन्द क़दम बढ़ने के बाद फ़रमाया। " **बा शरतहा व शरूतहा व अना मन शरूतहा ला इलाहा इल्लल्लाह** " कहने वाला नजात ज़ुरूर पायेगा लेकिन इसके कहने और नजात पाने में चन्द शरतें हैं। जिन्में से एक शर्त मैं भी हूँ। यानी अगर आले मोहम्मद(स.) की मोहब्बत दिल में न होगी तो ला इलाहा इल्लल्लाह कहना काफ़ी न होगा। उलेमा ने " **तारीख़े नेशा पूर** " के हवाले से लिखा है कि इस हदीस के लिखने में मफ़रूद दावातों के अलावा २४ हज़ार कलम्दान इस्तेमाल किये गये।

अहमद बिन हम्बल का कहना है कि यह हदीस जिन असनाद और जिन नामों के ज़रिये से बयान फ़रमाई गई है अगर इन्हीं नामें को पढ़ कर मजनून पर दम किया जाय तो " ला फ़ाक़ मन जुनूना " ज़ुरूर उसका जुनून जाता रहेगा और वह अच्छा हो जायगा।

अल्लामा शिब्लन्जी नूरूल अबसार में बा हवालए अबुल क़ासिम तज़ीरी लिखते हैं कि सासाना के रहने वाले बाज़ रऊसा ने जब इस सिल सिलेए हदीस को सुना तो उसे सोने के पनी से लिख वाकर अपने पास रख लिया। और मरते वक़्त वसीअत की कि उसे मेरे कफ़न में रख दिया जाए । चुँकि ऐसा ही किया गया। मरने के बाद उसने ख्वाब में बताया कि खुदा वन्दे आलम ने मेझे इन नामों की बरकत से बख़्श दिया है। और मैं बहुत आराम की जगह पर हूँ।

मोअल्लिफ कहता है कि इसी फ़ाएदे के लिए शिया अपने कफ़न में जवाब नामा के तौर पर इन असमा को लिख कर रखतें हैं। बाज़ किताबों में है कि नेशा पुर में आपसे बहुत से करामात नमूदार हुए।

शहर ख़ुरासान में नुज़ूले इजलाल

अबू अल सलत हरदी नाक़िल हैं कि असनाए सफर में जब आप खुरासान पहुँचे तो दिन ढल चुका था। आप फरीज़ए ज़ोहर अदा करने के लिए सवारी से उतरे और आपने तजदीद वज़ू के लिए पानी तलब फरमाया अर्ज़ की गई मौला इस वक़्त यहाँ पानी नहीं। यह सुन कर आपने एक ज़मीन पर पड़े हुए पथ्थर के नीचे से चश्मा जारी फरमाया और वज़ू करके नमज़ अदा फरमाई। जनाब शेख सद्दूक़ रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं कि इस चश्मे का हनूज़ असर बाक़ी है।

शहर तूस में आप का नुज़ूलो वरूद

जब इस सफ़र में चलते चलते शहर तूस पहुँचे तो वहाँ देखा कि एक पहाड़ से लोग पत्थर तराश कर हांडी वग़ैरा बनाते हैं। आप इससे टेक लगाकर खड़े हो गए और आपने उसे नरम होने की दोआ की। वहाँ के बाशिन्दों का कहना है कि इस पहाड़ का पत्थर बिल्कुल नरम हो गया और बड़ी असानी से बर्तन बनने लगे।

क़रिया सना बाद में हज़रत का नुज़ूले करम

शहरे तूस से रवाना होकर आप **क़रिया सना बाद** पहुँचे और आपने मोहल्ला नौख़ान में क़याम फ़रमाया और लिबास उतार कर धुलने को दे दिया। हमीद बिने क़ैबता का बयान है कि आपकी जेब में एक दोआ कनीज़ ने पाई। उसने मुझे दिखाई मैंने उसे हज़रत तक पहुँचाते हुए दरियाफ़्त किया कि इस दोआ का फ़ाएदा क्या है, फ़रमाया यह

शरीरों के शर से हिफाज़त का हिर्ज़ है। फिर आप कुब्बए हारून में तशरीफ़ ले गए और आपने क़िबले की तरफ़ ख़त खैंच कर फ़रमाया कि मैं इस जगह दफ़न किया जाऊँगा और यह जगह मेरी ज्यारत गाह होगी। इसके बाद आपने नमाज़ अदा फ़रमाई और वहाँ से चलने का इरादा किया।

इमाम रज़ा (अ.) का दारूल ख़िलाफ़ा मरू में नुज़ूल

इमाम(अ.) तय मराहिल और क़ेतए मनाज़िल करने के बाद जब मरू पहुँचे जिसे सिकन्दर ज़ुलकरनैन ने बारवाएते मोअज़्ज़मुल बलदान आबाद किया था और जो उस वक़्त दारूल सलतनत था। तो मामून ने चन्द रोज़ ज़ियाफतो तकरीम के मरासिम अदा करने के बाद क़ुबूले ख़िलाफत का सवाल पेश किया। हज़रत ने उससे इसी ताह इनकार किया। जिस तरह अमीरल मोमिनीन। चौथे मौक़ेपर ख़िलाफत पेश किए जाने के वक़्त इनकार फरमा रहे थे। मामून को खिलाफत से दस्त बरदार होना। दर हक़ीक़त मन्ज़ूर न था वरना वह इमाम को इसी पर मजबूर करता। चुनांचे जब हज़रत ने ख़िलाफ़त के क़ुबूल करने से इन्कार फ़रमाया, तो उसने वली अहदी का सवाल पेश किया। हज़रत इसके भी अन्जाम से न वाक़िफ़ न थे। नीज़ बाखुशी जाबिर हुकूमत की तरफ से कोई मन्सब क़ुबूल करना आपके खानदान के उसूल के खिलाफ था। हज़रत ने उससे भी इन्कार फरमाया। मगर उस पर मामून का इसरार जब्र की हद तक पहुँच गया और उसने साफ कह दिया। कि" लाबद मन क़ुबूलक़ " अगर आप इसको मन्ज़ूर नहीं कर सकते तो इस वक़्त आप को अपनी जान से हाथ धोना पड़ेगा। जान का ख़तरा क़ुबूल किया जा सकता है जब मज़हबी मफ़ाद का क़याम जान देने पर मैक़ूफ़ हो। वरना हिफाज़ते जान शरीअते इस्लाम का बुनियादी हुक्म है। इमाम ने फ़रमाया ! यह है तो मैं मजबूरन क़ुबूल करता हूँ। मगर कारो बारे सलतनत में बिल्कुल दख़्ल न दूँगा। हाँ अगर किसा बात में मुझसे मशविरा लिया जाएगा तो नेक मशविरा ज़रूर दूँगा। इसके बाद यह वली अहदी से बरा नाम सलतनते वक़्त के एक ढखोसले से ज़्यादा कोई वक़्त न रखती थी। जिससे मुम्किन है कि कुछ अरसे तक सियासी मक़सद में कामयाबी हासिल कर ली गई हो मगर इमाम की हैसियत अपने फ़राएज़ के अन्जाम देने में बिल्कुल वह थी जो उनके पेश रौ अली मुर्तज़ा अपने ज़माने के बाइख़्तेदार ताक़तों के साथ इख़्तियार कर चुके थे। जिस तरह उनका कभी कभी मशविरा दे देना उन हुकूमतों को सही व जाएज़ नहीं बना सकता, वैसे ही इमाम रज़ा(अ.) का इस नौईय्यत से वली अहदी का क़ुबूल फ़रमाना इस सलतन के जवाज़ का बाएस नहीं हो सकता था सिर्फ़ मामून की एक राज हट थी जो सियासी ग़रज़ के पेशे नज़र इस तरह पूरी हो गई। मगर इमाम ने आपने दामन को सलतनते ज़ुल्म के इक़्दामात और नजमो नस्ख़ से बिल्कुल

अलग रखा; तवारीख़ में है कि मामून ने हज़रते इमाम रज़ा(अ.) से कहा उसके बाद आपने दोनो हाथ आसमान की तरफ बलन्द किए और बारगाहे अहदीयत में अर्ज की परवरदीगार तू जानता है कि इस अमर को मैंने बामजबूरी और नाचारी और ख़ौफ़ो क़त्ल की वजह से क़ुबूल कर लिया है। खुदा वन्दा तू मेरे इस फेल पर मुझसे उसी तरह मवाख़िज़ा ना करना जिस तरह जनाबे युसुफ,और जनाबे दानियाल से बाज़पुर्स नहीं फरमाई। इसके बाद कहा मेरे पालने वाले तेरे अहद के सिवा कोई अहद नहीं। तेरी अता की हुई हैसियत के सिवा कोई इज़्ज़त नहीं। खुदाया तू मुझे अपने दीन पर क़ाएम रहने की तौफीक़ इनाएत फरमा।

ख्वाजा मोहम्मद पार्सा का कहना है कि वली अहदी के वक़्त आप रो रहे थे। मुल्ला हुसैन लिखते हैं कि मामून की तरफ से इसरार और हज़रत की तरफ से इनकार का सिलसिला दो माह जारी रहा। इसके बाद वली अहदी क़ुबूल की गई।

जलसए वली अहदी का इन्एक़ाद :- यकुम रमज़ान २०१ हिजरी ब रोज़े पंज शम्बा जलसए वली अहदी मुनक़्दि हुआ। बड़ी शानो शैकत और तुज़ुको एहतिशाम के साथ तक़रीब अमल में लाई गई। सबसे पहले मामून ने अपने बेटे अब्बास को इशारा किया और उसने बैअत की फिर और लोग बैअत से शरफ़ याब हुए। सोने और चाँदी के सिक्के सरे मुबारक पर निसार किए गए और तमाम अरकाने सलतनत और मुलाज़मीन को इनामात तक़सीम हुए।

मामून ने हूक्म दिया कि हज़रत के नाम का सिक्का तैय्यार किया जाए। चुनांचे दिरहम और दीनार पर हज़रत के नाम का नक़्श हुआ और तमाम शहरों में वह सिक्का चलाया गया। जुमें के खुतबे में हज़रत का नामें नामी दाखिल किया गया।यह ज़ाहिर है कि हज़रत के नामें मुबारक का सिक्का अक़ीदत मन्दो के लिए तबरूक और ज़मानत की हैसियत रखता था। इस सिक्के को सफ़रो हज़र में हिर्ज़े जान के लिए साथ रखना यक़ीनी अमर था साहेबे जिन्नातुल खुलूद ने बहरो बर के सफर में तहफफुज के लिए आपके तवस्सुल का ज़िक्र किया है । उसी की याद गार मे बतैरे ज़मानत ब अकीदए तहफ़ुज़ हम अब भी सफ़र में बाज़ू पर इमाम ज़ामिन सामिन का पैसा बांधते हैं।

अल्लामा शिब्ली नोमानी लिखते हैं कि ३३,०००(तेतिस हज़ार) मरदो ज़न वग़ैरा की मौजूदगी में आपको वली अहदे ख़िलाफ़त बना दिया गया। उसके बाद उसने तमाम हाज़ेरीन से हज़रत इमाम अली रज़ा के लिये बैएत ली और दरबार का लिबास बजाय काले के हरा क़रार दिया गया। जो सादात का इमतियाज़ी लिबास था। फ़ौज की वरदी भी बदल दी गई। तमाम मुल्क में एहकामे शाही नाफ़िज़ हुये कि मामून के बाद अली रज़ा (अ.) तख़्त व ताज के मालिक है। और उनका लक़ब है। **"अल रज़ा मन आले मोहम्मद"** हसन बिन सहल के नाम भी फ़रमान गया कि उनके लिये बैअते आम ली जाय और उमूमन

अहले फ़ौज व अमाएदे बनी हाशिम सब्ज़ (हरे) रंग के फरहरे और सब्ज़ कुलाह व क़बाएं इस्तेमाल की।

अल्लामा शरीफ़ जरजानी ने लिखा है कि क़ुबूले वली अहदी के मुताअल्लिक़ जो तहरीर हज़रत इमाम अली रज़ा (अ.) ने मामून को लिखी। उसका मज़मून यह था कि " चूंकि मामून ने हमारे उन हुक़ूक़ को तसलीम कर लिया है जिनको उनके आबाओ अजदाद ने नहीं पहचाना था। लेहाज़ा मैंने उसकी दरख़्वास्ते वली अहदी क़ुबूल कर ली। अगरचे जफ़र व जामेए से मालूम होता है कि यह काम अंजाम को न पहुंचेगा। "

अल्लामा शिब्लन्जी लिखते हैं कि क़ुबूले वली अहदी के सिलसिले में आपने जो कुछ तहरीर फ़रमाया था उस पर गवाह की हैसियत से **फ़ज़्ल बिन सहल, सहल बिन फ़ज़्ल, यहिया बिन अकसम, अब्दुल्लाह इब्ने ताहिर, समाना बिन अशरस, बशर बिन मोतमर, हम्माद बिन नोमान** वग़ैरा के दस्तख़त थे। उन्होंने यह भी लिखा है कि इमाम अली रज़ा (अ.) ने इस जलसे वली अहदी में अपने मख़सूस अक़ीदत मन्दों को क़रीब बुला कर कान में फ़रमाया था कि इस तक़रीब पर दिल में ख़ुशी को जगह न दो। मुलाहेज़ा हो (सवाएक़े मोहर्रेक़ा, सफ़ा १२२, मतालेबुल सुवेल,सफ़ा २८२, नूरूल अबसार सफ़ा १४२, आलाम अल वरा सफ़ा १६३, कशफ़ुल ग़मा सफ़ा ११२, जन्नातुल ख़ुलूद सफ़ा ३१, अल मामून सफ़ा ८२, वसीलतुन नजात सफ़ा ३७६, अर हज्जुल मतालिब सफ़ा ४५४, मसन्द इमाम रज़ा सफ़ा ७, तारीख़े तबरी, शरह मवाक़िफ़, तारीख़े आइम्मा सफ़ा ४७२, तारीख़े अहमदी सफ़ा ३५४, शवाहेदुन नबूवत, नियाबवुल मोअद्दता, फ़सल अल ख़ेत्ताब, हुलयाउल अवलिया, रौज़तुल सफ़ा, अयून अख़बारे रज़ा, दमए साकेबा, सवानए इमाम रज़ा)

हज़रत इमाम रज़ा (अ.) की वली अहदी का दुशमनों पर असर

तारीख़े इस्लाम में है कि इमाम रज़ा (अ.) की वली अहदी की ख़बर सुन कर बग़दाद के अब्बासी ख़याल करके कि यह ख़िलाफ़त हमारे ख़ानदान से निकल चुकी, कमाल दिल सोख़ता हुये और उन्होंने इब्राहीम बिन मेंहदी को बग़दाद के तख़्त पर बिठा दिया और मोहर्रम २०२ हिजरी में मामून की माज़ूली का एलान कर दिया। बग़दाद और उसके क़रीबी जगहों में बिलकुल बद नज़्मी फैल गई। लुच्चे गुन्डे दिन दिहाड़े लूट मार करने लगे। जुनूबी ईराक़ और हिजाज़ में भी मामेलात की हालत ऐसी ही ख़राब हो रही थी। फ़ज़्ल वज़ीरे आज़म सब ख़बरों को बादशाह से पोशीदा रखता था मगर इमाम रज़ा (अ.) ने उसे ख़बरदार कर दिया। बादशाह वज़ीर की तरफ़ से बदज़न हो गया। मामून को जब इन शोरिशों की ख़बर हुईतो बग़दाद की तरफ़ रवाना हो गया। सरख़स में पहुंच कर उसने फ़ज़्ल बिन सहल वज़ीरे सलतनत को हम्माम में क़त्ल करा दिया। (तारीख़े इस्लाम, जिल्द

१, सफ़ा ६१) शम्सुल उलेमा शिब्ली नोमानी हज़रत इमाम रज़ा(अ.) की बैअते वली अहदी का ज़िक्र करते हुये लिखते हैं कि इस अनोखे हुक्म ने बग़दाद में एक क़यामत अंगेज़ हलचल मचा दी और मामून से मुख़ालेफ़त का पैमाना लबरेज़ हो गया। बाज़ो ने (सब्ज़ रगं वग़ैरा के एख़्तियार करने के हुक्म की ब जब्र तामील की। मगर आम सदा यही थी कि ख़िलाफ़त ख़ानदाने अब्बास के दायरे से बाहर नहीं जा सकती। (अलमामून सफ़ा ८२)

अल्लामा शिब्लन्जी लिखते हैं कि हज़रत इमाम रज़ा (अ) जब वली अहद ख़िालफ़त मुक़र्र किए जाने लगे। मामून के हाशिया नशीन सख़्त बद ज़न और दिल तगं हो गए और उन पर यह खौफ़ छा गया कि अब खिलाफत बनी अब्बास से निकल कर बनी फ़ात्मा की तरफ़ चली जाएगी और इसी तसव्वुर ने उन्हें हज़रत इमाम रज़ा (अ.) से सख़्त मुतनफ़्फ़िर कर दिया। (नुरूल अबसार सफ़ा १४३)

वाक़िए हिजाब :–मोअर्रख़ीन लिखते हैं कि इस वाक़िए वली अहदी से लोगों में इस दर्जा बुग़ज़ हसद और किना पैदा हो गया कि वह लोग मामूली ममूली बातों पर इसका मुज़ाहेरा कर देते थे।

अल्लामा शिबलन्जी और अल्लामा इबने तल्हा शाफई लिखते हैं कि हज़रत इमाम रज़ा (अ.) कि वली अहदी के बाद यह उसूल था कि आप मामूम से अकसर मिलने के लिए तशरीफ़ ले जाया करते थे और होता यह था कि जब आप दहलीज़ के क़रीब पहुँचते थे। तो तमाम दरबान और ख़ुद्दाम अपकी ताज़ीम के लिए खड़े हो जाते थे और सलाम करके पर्दए दर उठाया करते थे। एक दिन सबने मिल कर तय कर लिया कि कोई पर्दा न उठाए। चुनांचे ऐसा ही हुआ। जब इमाम (अ.) तशरीफ़ लाए तो हिज्जाब ने पर्दा न उठया। मतलब यह था कि इससे इमाम की तौहीन होगी, लेकिन अल्लाह के वली को कोई ज़लील नहीं कर सकता। जब ऐसा मौक़ा आया तो एक तुन्द हवा ने पर्दा उठाया और इमाम दाख़िले दरबार हो गए। फिर जब आप वापस तशरीफ़ लाए तो हवा ने ब दस्तूर पर्दा उठाने में सबक़त की। इसी तरह कई दिन तक होता रहा। बिल आख़िर वह सबके सब शरमिन्दा हो गए और इमाम (अ.) की ख़िदमत मिस्ल साबिक़ करने लगे।
(नुरूल अबसार सफ़ा १४३ मतालेबुल सुवेल सफ़ा २८२, शवाहेदुन नबूअत सफ़ा १६७)

हज़रत इमाम रज़ा (अ.) और नमाज़े ईद

वली अहदी को अभी ज़्यादा दिन न गुज़रे थे कि ईद का मौक़ा आ गया मामून ने हज़रत से कहला भेजा कि आप सवारी पर जा कर लोगों को नमाज़े ईद पढ़ायें। हज़रत ने फरमाया कि मैंने पहले ही तुमसे शर्त करली है कि बादशहत और हुकूमत के किसी काम में हिस्सा नहीं लूँगा और न इसके क़रीब जाऊँगा इस वजह से तुम मुझको इस नमाज़े

ईद से भी माफ़ रखो। मगर मामून ने बहुत इसरार किया। हज़रत ने फ़रमाया कि अगर तुम माफ़ कर दो तो बेहतर है,वरना मैं नमाज़े ईद के लिये उसी तरह जाऊंगा जिस तरह मेरे जद्दे माजिद हज़रत रसूल अल्लाह (स.) तशरीफ़ ले जाया करते थे। मामून ने कहा आपको एख़्तियार है जिस तरह चाहे जाऐं। इसके बाद उसने सवारों और प्यादों को हुक्म दिया कि हज़रत के दरवाज़े पे हाज़िर हों। जब यह ख़बर शहर में मशहूर हुई तो लोग ईद के रोज़ सड़को पर छतों पर हज़रत की सवारी की शान देखने को जमा हो गये,एक भीड़ लग गयी। औरतों और लड़कों सब को आरज़ू थी कि हज़रत की ज़्यारत करें। और आफताब निकलने के बाद हज़रत ने गुस्ल किया और कपड़े बदले, सफ़ेद अम्मामा सर पर बांधा, इत्र लगाया और असा हाथ में ले कर ईद गाह जाने पर आमादा हुये इसके बाद नौकरों और गुलामों को हुक्म दिया कि तुम भी गुस्ल करके कपड़े बदल लो और इसी तरह पैदल चलो। इस इन्तेज़ाम के बाद हज़रत घर से बाहर निकले। पाएजामा आधी पिंडली तक उठा लिया। कपड़ों को समेट लिया,नगें पाँव हो गए और फिर दो तीन क़दम चल कर खड़े हो गये और सर को आसमान की तरफ़ बुलन्द करके कहा। अल्लाहो अकबर, अल्लाहो अकबर, हज़रत के साथ नौकरों गुलामों और फ़ौज के सिपाहियों ने भी तकबीर कही।

रावी का बयान है कि जब **इमाम रज़ा** (अ.)तकबीर कह रहे थे तो हम लोगों को मालूम होता था कि दरो दीवार और ज़मीनो आसमान से हज़रत की तकबीर का जवाब सुनाई देता है। इस हैबत को देख कर यह हालत हुई कि सब लोग और खुद लश कर वाले ज़मीन पर गिर पड़े। सब की हालत बदल गई। लोगों ने छुरियों से अपनी जुतीयों के कुल तसमें काट दिये और जल्दी जल्दी जुतियाँ फेक कर नगें पाँव हो गयें । शहर भर के लोग चीख़ चीख़ कर रोने लगे। एक कोहराम बरपा हो गया , इसकी ख़बर मामून को भी हो गई। वज़ीर फ़ज़ल बिन सहल ने इससे कहा कि अगर इमाम रज़ा (अ़) इसी हालत से ईद गाह तक पहुँच जायेगें तो मालूम नहीं क्या फ़ितना और हगांमा हो जायेगा। सब लोग इनकी तरफ़ हो जाएंगे और हम नहीं जानते कि हम लोग कैसे बचेंगे। वज़ीर की इस तक़रीर पर मुतानब्बे हो कर मामून ने अपने पास से एक शख़्स को हज़रत की ख़िदमत में भेज कर कहला भेजा कि मुझसे ग़लती हो गई है। जो आपसे ईद गाह जाने के लिए कहा। इससे अपको ज़हमत हो रही है और मैं अपकी मशक़्क़त को पसन्द नहीं करता। बेहतर है कि आप वापस चले आएं और ईद गाह जाने की ज़हमत न फ़रमाएं। पहले जो शख़्स नमाज़ पढ़ता था पढ़ाए गा। यह सुन कर हज़रत इमाम रज़ा (अ.) वापस तशरीफ़ लाए और नमाज़ ईद न पढ़ सके। (वसीलतून नजात सफ़ा ३८२ मतालेबुज सुवेल सफ़ा २८२ व उसूले काफ़ी)। **अल्लामा शिब्लन्जी** लिखते हैं कि फरजा अल अरज़ा अला बैत व रकब अल मामून फ़सल ब अलनास कि रज़ा (अ.) दोलत सरा को वापस तशरीफ लाए और मामून ने जाकर नमाज़ पढ़ाई। (नुरूल अबसार सफ़ा १४३)

हज़रत इमाम रज़ा (अ.) की मदह सराई और देबले ख़िज़ाई और अबू नवास

अरब के मशहूर शायर **जनाब देबले ख़िज़ाई** का नाम **अबू अली देबले इब्ने अली बिन ज़र्रीन** है। आप १४८ हिजरी में पैदा हो कर २४५, हिजरी में ब मक़ाम मशूश वफ़ात पा गये । (रिजाले तूसी ३७४) और अबूनवास का पूरा नाम अबू अली हसन बिन हानी इब्ने अबदुल आला हुवाज़ी बसरी बग़दादी हैं। यह १३६, हिजरी में पैदा हो कर (१९६) हिजरी में फ़ौत हुए देबल आले मुहम्मद के मद्दाहे ख़ास थे, और अबूनवास हारून रशीद अमीन व मामून का नदीम था।

देबले ख़िज़ाई के बे शुमार अशआर मदहे आले मुहम्मद में मौजूद हैं। अल्लामा शिबलिन्जी तहरीर फ़रमाते हैं के जिस ज़माने में इमाम रज़ा(अ.) वली अहदे सल्तन्त थे। देबले ख़िज़ाई एक दिन दारूल सल्तन्त मरो में आपसे मिले और उन्हों ने कहा कि मैंने आप की मदह में १२० अशआर पर मुशतमिल एक क़सीदा लिखा है। मेरी तमन्ना है कि मैं सब से पहले हुज़ूर ही को सुनाऊं हज़रत ने फ़रमाया बेहतर है पढ़ो ।

देबले ख़िज़ाई ने अशार पढ़ना शुरू किया। क़सीदे का मतला यह है।

" ज़करत महल अर रबामन अरफ़ात
फ़जरयत दमाअलऐन बिल इबरात "

जब देबल क़सीदा पढ़ चुके तो इमाम(अ.) ने एक सौ अशरफ़ी की थैली उन्हें अता फ़रमाई देबलने शुकरिया अदा करने के बाद उसे वापस करते हुए कहा के मौला मैंने यह क़सीदा क़ुरबतन इल्लल लाह कहा है। मैं कोई अतिया नहीं चाहता ख़ुदा ने मुझे सब कुछ दे रक्खा है। अलबत्ता हुज़ूर मुझे जिसम से उतरे हुए कपड़े से कुछ इनायत फ़रमा दें। तो वह मेरी ऐन ख़्वाहिश के मुताबिक़ होगा। आपने एक जुब्बा अता करते हुए फ़रमाया कि इस रक़म को भी ले लो। यह तुम्हारे काम आयेगी। देबल ने उसे ले लिया। थोड़े अरसे के बाद देबल मरो से ईराक़ जाने वाले क़ाफ़िले के साथ रवाना हुए। रास्ते में चोरों और डाकुओं ने हमला कर के सब का सब कुछ लूट लिया और चन्द आदमियों को गिरफ़तार भी कर लिया। जिन में देबल भी थे। डाकुओं ने माल तक़सीम करते वक़्त देबल का एक शेर पढ़ा। देबल ने पूछा यह किसका शेर है उन्होंने कहा किसी का होगा। देबल ने कहा यह मेरा शेर है। उसके बाद उन्होंने सारा क़िस्सा सुना दिया। उन लोगों ने देबल के सदक़े में सब कुछ छोड़ दिया और सबका माल वापस कर दिया यहां तक कि यह नौबत आयी कि उन लोगों ने वाक़ेया सुन कर इमाम रज़ा (अ.) का जुब्बा ख़रीदना चाहा, और उसकी क़ीमत एक हज़ार लगा दी। देबल ने जवाब दिया कि यह मैंने ब तौरे तबर्रूक अपने पास रखा है।

इसे फ़रोख़्त न करूंगा बिल आख़िर बार बार गिरफ़तार होने के बाद उन्होंने उसे एक हज़ार अशरफ़ी पर फ़रोख़्त कर दिया। अल्लामा शिबलिन्जी ब हवालए अबूसलत बरवी लिखते हैं कि देबल ने जब इमाम रज़ा (अ.) के सामने यह क़सीदा पढ़ा था तो आप रो रहे थे और आपने दो बैतों के बारे में फ़रमाया था कि यह अशआर इल्हामी हैं।

(नूरूल अबसार सफ़ा १३८)

अल्लामा अब्दुल रहमान लिखते हैं कि हज़रत इमाम रज़ा (अ.) ने क़सीदा सुनते हुए नफ़्से ज़किया के तज़किरे पर फ़रमाया कि ऐ देबल इस जगह एक शेर का और इज़ाफ़ा करो ; ताकि तुम्हारा क़सीदा मुकम्मल हो जाये। उन्हों ने अर्ज़ की मौला फ़रमाये। इरशाद हुआ।

व क़ब्र बातूस, नालहा मन मुसिबता
अल हत अल्लल अहशाए बिज़ क़रात

देबल ने घबरा कर पूछा मौला, यह किसकी क़ब्र हो गी, जिसका हुज़ूर ने हवाला दिया है। फ़रमाया ऐ देबल यह क़ब्र मेरी होगी और मैं अन क़रीब इस आलमे ग़ुरबत में जबकि मेरे आइज़्ज़ा व अक़रोबा व बाल बच्चे मदीने में हैं शहीद कर दिया जाऊँगा और मेरी क़ब्र यहीं बनेगी। ऐ देबल जो मेरी ज़्यारत को आयेगा जन्नत में मेरे हमराह होगा। (शवाहेदुन नबूवत, सफ़ा १६६) देबल का यह मशहूर क़सीदा मजालिसे मोमेनीन सफ़ा ४६६ में मुकम्मल मन्क़ूल है। अलबत्ता इसका मतला बदला हुआ है। अल्लामा शेख़ अब्बास क़ुम्मी ने लिखा है कि देबल ने एक किताब लिखी थी जिसका नाम था " **तबक़ाते शोअरा** " (सफ़ीनतुल बेहार जिल्द १, सफ़ा २४१)

अबू नवास के मुताअल्लिक़ उलेमाए इस्लाम लिखते हैं कि एक दिन इसके दोसतों ने इस्से कहा कि तुम अकसर अशआर कहते हो और फिर मदह भी किया करते हो लेकिन अफ़सोस की बात है कि तुमने हज़रत इमाम रज़ा (अ.) की मदह में कोई शेर नहीं कहा उसने जवाब दिया कि हज़रत की जलालते क़द्र ही ने मुझे मदह सराई से रोका है। मेरी हिम्मत नहीं पड़ती कि आपकी मदह करूं। यह कह कर उसने चन्द अशआर पढ़े। जिसका तरजुमा यह है कि, उम्दा कलाम के हर रंग और मज़ाक़ के अशआर सब लोगों से अच्छे तुमहीं कहते हो बल्कि अचछे अशआर में तुम्हारे मदहीया क़सीदे ऐसे होते हैं कि जिनसे सुन्ने वालों के सामने मोती झड़ते हैं। फिर तुमने हज़रत इमाम मूसिए काज़िम (अ.) के बेटे हज़रत इमाम अली रज़ा(अ.) की मदह और हज़रत के फ़ज़ायल व मनाक़िब में कोई क़सीदा क्यों नहीं लिखा। तो मैंने सबके जवाब में कह दिया कि भाईयों जिन जलील उश शान इमाम के आबाए कराम के ख़ादिम जिब्रईल ऐसे फ़रिशते हों उनकी मदह करना मुझसे मुमकिन नहीं है। उसके बाद उसने चन्द अशआर आपकी मदह में लिखे जिसका

तरजुमा यह है। यह हज़रात आइम्माए ताहेरीन खुदा के पाको पाकीज़ा किये हुये हैं और इनका लिबास भी तय्यबो ताहिर है। जहां भी उनका ज़िक्र होता है वहां उनपर दुरूद का नारा बलन्द हो जाता है। जब हसब व नसब बयान होते वक़्त कोई शख़्स अलवी ख़ानदान का न निकले ,तो उसको इबतिदाए ज़माने से कोई फ़ख़्र की बात नहीं मिलेगी। जब मख़लूक़ को पैदा किया फिर उस को हर तरह उस्तवार किया और संवारा तो उसी खुदा के बरगज़ीदा हज़रात आप लोगों को खुदाने सब से ज़ियादा शरीफ़ भी क़रार दिया और सब पर फ़ज़ीलत भी दी मैं सच कहता हूं कि आप हज़रात ही मलाए आला हैं।और आप ही के पास क़ुराने मजीद का इल्म और सूरों के मतालिब व मफ़ाहिम हैं,

(दफ़ियातुल एयान जिल्द १ सफ़ा ३२२ व नूरूल अबसार सफ़ा १३८ तबा मिस्र)

मज़ाहिबे आलम के उलेमा से हज़रत इमाम रज़ा (अ.) के इल्मी मुनाज़िरे

मामून रशीद को खुद भी इल्मी ज़ौक़ था उसने वली अहदी के मरहले तो तय करने के बाद हज़रत इमाम अली रज़ा (अ.) से काफ़ी इस्तेफ़ादा किया फिर अपने ज़ौक़ के तक़ाज़े पर उसने मज़ाहिबे आलम के उलेमा को दावते मुनाज़िरा दी और हर तरफ़ से उलेमा को तलब कर के हज़रत इमाम रज़ा (अ.) से मुक़ाबेला कराया अहदे मामून में इमाम (अ.) से जिस क़दर मुनाज़िरे हुए हैं उनकी तफ़सील अक्सर कुतुब में मौजूद हैं। इस सिलसिले में एहतेजाजी तबरसी ,बिहार, दमेए साकेबा वग़ैरा जैसी किताबें देखी जा सकती हैं इख़्तेसार के पेशे नज़र सिर्फ़ दो चार मुनाज़िरे लिखता हूँ।

आलिमे नसारा से मुनाज़िरा

मामून रशीद के अहद में नसारा का एक बहुत बड़ा आलिम व मुनाज़िर शोहरते आम्मा रखता था। जिसका नाम " जासलीक " था, उसकी आदत थी कि मुताकल्लमीन इस्लाम से कहा करता था कि हम तुम दोनों नबूवते ईसा और उनकी किताब पर मुत्तफ़िक़ हैं और इस बात पर भी इत्तेफ़ाक़ रखते हैं कि वह आसमान पर ज़िन्दा मौजूद हैं। इख़तिलाफ़ है तो सिर्फ़ मुहम्मद मुस्तुफ़ा(स.) में है। तुम उनकी नबुवत का एतेक़ाद रखते हो और हमे इन्कार है फिर हम तुम उनकी वफ़ात पर मुत्तफ़िक़ हो गये हैं। अब ऐसी सूरत में कौन सी दलील तुम्हारे पास बाक़ी है जो हमारे लिए हुज्जत क़रार पाए। यह कलाम सुनकर अकसर मुनाज़िर ख़ामोश हो जाया करते थे मामून रशीद के इशारे पर एक दिन

वह हज़रत इमाम रज़ा (अ.) से भी हम कलाम हुआ। मौक़ए मनाज़ेरह में उसने मज़कूरा सवाल दोहराते हुये कहा कि पहले आप यह फ़रमाएं कि हज़रते ईसा की नबूवत और उनकी किताब दोनों पर आपका ईमान व एतेक़ाद है या नहीं। आपने इरशाद फ़रमाया कि मैं उस ईसा की नबूवत का यक़ीनन एतेक़ाद रखता हूँ जिसने हमारे नबी हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा (स.) की नबूवत की अपने हवारीन को बशारत दी है और उस किताब की तसदीक़ करता हूँ जिसमें यह बशारत दर्ज है जो ईसाइ उसके मोतरिफ़ नहीं और जो किताब उसकी शारेह और मुसद्दक़ नहीं उसपर मेरा ईमान नहीं है। यह जवाब सुन कर जाशलीक़ ख़ामोश हो गया। फिर आपने इरशाद फ़रमाया कि ऐ जाशलीक़ हम उस ईसा को जिसने हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा (स.) की नबूवत की बशारत दी, नबीए बरहक़ जानते हैं मगर तुम उनकी तन्क़ीस करते हो और कहते हो कि वह नमाज़ रोज़े के पाबन्द न थे। जाशलीक़ ने कहा कि हम तो यह नहीं कहते वह तो हमेशा क़ायम अल लैल और साएम अल नहार रहा करते थे। आपने फ़रमाया, ईसा तो बनाबर एतेक़ाद नसारा खुद माज़ अल्लाह खुदा थे। तो वह रोज़ा और नमाज़ किसके लिये करते थे। यह सुन कर जाशलीक़ मबहूत हो गया और कोई जवाब न दे सका। अल्बत्ता यह कहने लगा कि जो मुरदों को ज़िन्दा करे, जुज़ामी को शिफ़ा दे, नाबीना को बीना बनाये और पानी पर चले क्या वह इसका सज़ावार नहीं कि उसकी परस्तिश की जाय और उसे माबूद समझा जाय। आपने फ़रमाया अल यसआ भी पानी पर चलते थे। अन्धे, कोढ़ी को शिफ़ा देते थे। इसी तरह हिज़क़ील पैग़म्बर(अ.) ३५ हज़ार इन्सानों को साठ बरस के बाद ज़िन्दा किया था। क़ौम इसराईल के बहुत से लोग ताऊन के ख़ौफ़ से अपने घर छोड़ कर बाहर चले गये थे। हक़्क़े ताआला ने एक सआत में सबको मार दिया था। बहुत दिनों के बाद एक नबी इस्तेख़्वाने बोसीदा (बोसीदा हड्डियों) से गुज़रे तो खुदा वन्दे आलम ने उनपर वही नाज़िल की उन्हें आवाज़ दो। उन्होंने कहा ऐ अज़ाम बालिया (मुरदा हड्डियों) उठ खड़े हो। वह सब ब हुक्मे खुदा उठ खड़े हुये। इसी लिये हज़रते इब्राहीम (अ.) के परिन्दों को ज़िन्दा करने और हज़रते मूसा(अ.) के कोहे तूर पर ले जाने और रसूले खुदा(स.) के अहयाए अम्वात फ़रमाने का हवाला दे कर फ़रमाया कि इन चीजों पर **तौरात** व **इन्जील** और **क़ुरआन मजीद** की शहादत मौजूद है। अगर मुरदों को ज़िन्दा करने से इन्सान खुदा हो सकता है तो यह सब अम्बिया भी खुदा होने के मुस्तहक़ हैं। यह सुन कर वह चुप हो गया और उसने इस्लाम क़ुबूल करने के सिवा और चारा न देखा।

आलिमे यहूद से मनाज़ेरा :- उलमाए यहूद में से एक आलिम जिसका नाम " **रास अल जालूत** " था को अपने इल्म पर बड़ा ग़ुरूर और तकब्बुर व नाज़ था। वह किसी को भी अपनी नज़र में न लाता था। एक दिन उसका मनाज़रह और मुबाहेसा फ़रज़न्दे रसूल(स.) हज़रत इमाम रज़ा (अ.) से हो गया। आपसे गुफ़्तुगू के बाद उसने

अपने इल्म की हक़ीक़त जानी और समझा कि मैं ख़ुद फ़रेबी में मुबतेला हूँ।

इमाम (अ.) की ख़िदमत में हाज़िर होने के बाद उसने अपने ख़याल के मुताबिक़ बहुत सख़्त सवालात किये। जिनके तसल्ली बख़्श और इतमीनान आफ़रीन जवाबात से बहरावर हुआ। जब वह सवालात कर चुका तो इमाम(अ.) ने फ़रमाया कि ऐ " रास अल जालूत " तुम तौरैत की इस इबारत का क्या मतलब समझते हो कि **" आया नूर सीना से और रौशन हुआ जबले साएर से और ज़ाहिर हुआ कोहे फ़ारान से "** उसने कहा कि इसे हमने पढ़ा ज़रूर है लेकिन उसकी तशरीह से वाक़िफ़ नहीं हूँ।

आपने इरशाद फ़रमाया कि नूर से वही मुराद है। तमरे सीना से वह पहाड़ मुराद है जिस पर हज़रत मूसा (अ.) ख़ुदा से कलाम करते थे। जबल साईर से महल व मक़ामे ईसा (अ.) मुराद है। कोहे फ़ारान से जबले मक्का मुराद है जो शहर से एक मंज़िल के फ़ासले पर वाक़े है। फिर फ़रमायातुमने हज़रते मूसा(अ.) की यह वसीयत देखी है कि तुमहारे पास बनी अख़वान से एक नबी आयेगा। उसकी बात मानना और उसके क़ौल की तसदीक़ करना। उसने कहा देखी है। आपने पूछा कि बनी अख़वान से कौन मुराद है। उसने कहा, मालूम नहीं, आपने फ़रमाया कि वह औलादे इस्माईल हैं। क्योंकि वह हज़रत इब्राहीम के एक बेटे हैं और बनी इसराईल के मूरेसे आला हज़रत इस्हाक़ बनी इब्राहीम के भाई हैं और उन्हीं से हज़रत मोहम्मद मुसतफ़ा (स.) हैं।

उसके बाद जबले फ़ारान वाली बशारत की तशरीह फ़रमा कर कहा कि शैया नबी का क़ौल तौरैत में मज़कूर है कि मैंने दो सवार देखे कि जिनके परतौ से दुनिया रौशन हो गई। उन्में एक गधे पर सवारी किये था और एक ऊँट पर। ऐ " रास अल जालूत " तुम बतला सकते हो उससे कौन मुराद है? उसने इन्कार किया, आपने फ़रमाया कि राकेबुल हमार से हज़रत ईसा (अ.) और राकेबुल जमल से हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा (स.) मुराद हैं।

फिर आपने फ़रमाया कि तुम हज़रत जबकूक़ नबी के उस क़ौल से वाक़िफ़ हो कि ख़ुदा अपना बयान जबले फ़ारान से लाया और तमाम आसमान हम्दे इलाही की आवाज़ों से भर गये। उसकी उम्मत और उसके लशकर के सवार ख़ुशकी और तरी में जंग करेंगे। उनपर एक किताब आयेगी और सब कुछ बैतुल मुक़द्दस की ख़राबी के बाद होगा। इसके बाद इरशाद फ़रमाया कि यह बताओ कि तुम्हारे पास हज़रत मूसा (अ.) की नबूवत की क्या दलील है। उसनपे कहा कि उनसे वह उमूर ज़ाहिर हुये, जो उनसे पहले के अम्बिया पर नहीं हुये थे। मसलन दरियाए नील का शिगाफ़ता होना। असा का सांप बन जाना। एक पत्थर से बारह चशमों का जारी होना और यदे बैज़ा वग़ैरह। आपने फ़रमाया कि जो भी इस क़िस्म के मोजेज़ात को ज़ाहिर करे और नबूवत का मुद्दई हो उसकी तसदीक़ करनी चाहिये। उसने कहा नहीं। आपने फ़रमाया क्यों ? कहा इस लिये कि मूसा को जो क़ुरबत

या मंज़िलत हक़्क़े ताआला के नज़दीक थी वह किसी को नहीं हुई। लेहाज़ा हम पर वाजिब है कि जब तक कोई शख़्स बैनेह वही मोजेज़ात व करामात न दिखलाये हम उसकी नबूवत का इक़रार न करेंगे। इरशाद फ़रमाया कि तुम मूसा से पहले अम्बिया मुरसलीन की नबूवत का किस तरह इक़रार करते हो। हालांकि उन्होंने न कोई दरिया शिगाफ़्ता किया, न किसी पत्थर से चशमे निकाले। न उनका हाथ रौशन हुआ और न उनका असा अज़्दहा बना। " रास अल जालूत " ने कहा कि जब ऐसे उमूर व अलामात ख़ास तौर से उनसे ज़ाहिर हों जिनके इज़्हार से उमूमन तमाम ख़लाएक़ आजिज़ हो, तो वह अगरचे बैनेह ऐसे मोजेज़ात हों या न हों। उनकी तस्दीक़ हम पर वाजिब हो जायगी।

हज़रत इमाम रज़ा (अ.) ने फ़रमाया कि हज़रत ईसा भी मुरदों को ज़िन्दा करते, कोरे मादर ज़ाद (पैदाईशी अन्धे) को बीना बनाते। मबरूस को शिफ़ा देते। मिट्टी की चिड़िया बना कर हवा में उड़ाते थे। वह यह उमूर हैं जिनसे आम लोग आजिज़ हैं। फिर तुम उनको पैग़म्बर क्यों नहीं मानते?

रास अल जालूत ने कहा कि लोग ऐसा कहते हैं। मगर हमने उनको ऐसा करते देखा नहीं है, फ़रमाया तो क्या आयात व मोजेज़ाते मूसा(अ.) को तुमने अपनी आंखों से देखा है। आख़िर वह भी तो मोतबर लोगों की ज़बानी सुना ही होगा। वैसा ही अगर ईसा(अ.) के मोजेज़ात मोतबर लोगों से सुनो, तो तुमको उनकी नबूवत पर ईमान लाना चाहीये और बिलकुल इसी तरह हज़रत मोहम्मद मुसतफ़ा (स.) की नबूवत व रिसालत का इक़रार आयातो, मोजेज़ात की रौशनी में करना चाहिये। सुनो उनका एक अज़ीम मोजेज़ा क़ुरआने मजीद है। जिसकी फ़साहतो बलाग़त का जवाब क़यामत तक नहीं दिया जा सकेगा। यह सुन कर वह ख़ामोश हो गया।

आलिमे मजूस से मनाज़ेरा :- मजूसी यानी आतश परस्त का एक मशहूर आलिम " हरबिज़ा अकबर " हज़रत इमाम रज़ा(अ.) की ख़िदमत में हाज़िर होकर इल्मी गुफ़्तुगू करने लगा। आपने उसके सवालात के मुकम्मल जवाबात इनायत फ़रमाये। उसके बाद उस से सवाल किया कि तुम्हारे पास " **ज़र तश्त** " की नबूवत की क्या दलील है। उसने कहा कि उन्होंने हमारी ऐसी चीज़ों की तरफ़ रहबरी फ़रमाई है। जिसकी तरफ़ पहले किसी ने रहनुमाई नहीं की थी। हमारे असलाफ़ कहा करते थे कि " **ज़र तश्त** " ने हमारे लिये वह उमूर मुबाह किये हैं कि उनसे पहले किसी ने नहीं किये थे। आपने फ़रमाया कि तुमको इस अम्र में क्या उज़्र हो सकता है कि कोई शख़्स किसी नबी और रसूल के फ़ज़ायलो कमालात तुम पर रौशन करे और तुम उसके मानने में पसो पेश करो। मतलब यह है कि जिस तरह तुमने मोतबर लोगों से सुन कर " **ज़र तश्त** " की नबूवत मान ली। उसी तरह मोतबर लोगों से सुन कर अम्बिया और रसुल की नबूवत के मानने में तुम्हें क्या उज़्र हो सकता है? यह सुन कर वह ख़ामोश हो गया।

हज़रत इमाम रज़ा (अ.) और असमते अम्बिया (अ.)

अम्बिया कराम, दवाज़दाह इमाम और जनाबे मरियम व हज़रते फ़ात्मा (स.) की असमत का एतेक़ाद मुसल्लेमात से है, लेकिन बद क़िस्मती से बाज़ मुसलमान जो उनकी हैसियत को सही तौर पर नहीं समझ सके। वह इसमें कलाम करते हैं। इस लिये बहस ख़ास अहमियत की मालिक बन गई है और उलमा ने इस पर ख़ामा फ़रसाई फ़रमाई है। इस सिलसिले में किताब तन्ज़ीहुल अम्बिया, एहतेजाजे तबरीसी, बेहारूल अनवार, शरह तजरीद वग़ैरह देखने के क़ाबिल हैं। हज़रत इमाम रज़ा(अ.) जो ख़ुद अपने आबाव अजदाद और अम्बिया की तरह मासूम थे। उनसे जब इस मसले के मुताअल्लिक़ सवाल किया गया तो आपने उसका जवाब निहायत ख़ूब सूरत तरीक़े पर दे कर मुख़ातिब को मुतमइन फ़रमा दिया।

अली बिन जहम कहते हैं कि एक दफ़ा मामून रशीद ने हज़रत इमाम रज़ा (अ.) से दरयाफ़्त किया कि जब ख़ुदा वन्दे आलम ने हज़रते आदम(अ.) के लिये वाज़े तोर पर फ़रमा दिया। " **फ़ाआसा आदम रब्बेहे फ़ग़वा** " कि आदम ने अपने परवर दिगार की नाफ़रमानी की और वह बहक गये तो फिर वह मासूम कहां रहे।

आपने फ़रमाया कि ख़ुदा का हुक्म था कि ऐ आदम तुम दोनों बेहिशत में रहो और जो चाहो खाओ पियो। **"वला तक़रेबा हुदल शजरतः फ़ता कूना मिनल ज़ालेमीन"** लेकिन इस दरख्त के नज़दीक न जाना, वरना अपना ख़ुद बिगाड़ोगे। यानी उनसे यह नहीं फ़रमाया था कि इस शजर और उसके जिन्स दीगर से भी न खाना और उन्होंने उस दरख़्त ममनूआ से खाया भी नहीं। मगर शैतान के वसवसे से एक और वैसे ही दरख़्त से खा लिया। क्योंकि शैतान ने उनसे कहा कि ख़ुदा वन्दे ताआला ने तुमको ख़ास उस दरख़्त से मना फ़रमाया है। इस क़िसम के और दरख़्तों से मुमानियत नहीं फ़रमाई और उसके पास जाने की भी मुमानियत नहीं फ़रमाई। खाने का ज़िक्र इरशादे ख़ुदा वन्दी में मौजूद नहीं। फिर शैतान ने उनसे क़सम खाई कि मैं तुम्हारा नासेह मुशफ़िक़ हूँ। हज़रत आदम व हव्वा ने इससे पहले किसी को झूठी क़सम खाते नहीं सुना था। उनको धोका हो गया ओर उसकी क़सम पर एतेबार करके उसके मुरतकिब हो गये और यह इज़तेराब भी उन हज़रत से क़ब्ले नबूवत हुआ और गुनाहे कबीरा न था। जिससे मुसतहक़ दुख़ूले जहन्नम होते। यह सिर्फ़ सग़ायरे मौहूबा से था। जो अम्बिया(अ.) से क़ब्ल अज़ वही जाएज़ है। जब ख़ुदा वन्दे आलम ने उनको बरगुज़ीदा किया और नबी गर दाना तो मासूम थे। गुनाहे कबीरा व सग़ीरा उन हज़रात से सादिर न होता था। चुनांचे अल्लाह ताआला ने इरशाद फ़रमाया है। " सुम इतमेबाह रबा फ़ताबा अलैहे " ख़ुदा ने उनको बुरगज़ीदा किया, और उनकी तौबा क़ुबूल

कर ली।

अल्लामा तबरिसी फ़रमाते हैं सग़ाएर मौहूबा से तरक अवला मुराद है जो अम्बिया के लिए क़बूल अज़ल नुज़ूल वही जाएज़ है। मोअल्फ़ि का कहना है कि (नहीं) की दो किस्में हैं। नहीं तहरीमी और नहीं त्ननज़ीही लातक़रबा में यही थी। यानी इसके क़रीब न जाना तुम्हारे लिए बेहतर होगा । फताकूना अलज़ालमीन और अगर चले गए तो तुम अपना खुद नुक़सान करोगे। जैसा कि किताब "तनज़ीह अम्बिया" से मुस्तफ़ाद होता है।

इसी तरह आपने **हज़रत इब्राहीम, हज़रत मूसा, हज़रत यूसुफ** और **हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा** (स.) की असमत पर रोशनी डाली और बतलाया कि इन हज़रात से गुनाहों का सादिर होना इमकान व क़ुदरत के बावजूद मोहाल था। इनसे कभी कोई गुनाह सग़ीरा हो या कबीरा सादिर नहीं हुआ। (अयून अख़बार रज़ा सफ़ा ७१ तबा ईरान)

आपकी तसानीफ़ :- उलमा ने आपकी तसानीफ़ में सहीफ़तुर रज़ा, सहीफ़तुर रिज़विया, तिब्बे रज़ा और मसनदे इमाम रज़ा का हवाला दिया है और बताया है कि आपकी तसानीफ हैं सहीफतुर्ररज़ा का ज़िक्र अल्लामा मजालिसी, अल्लामा तबरसी और अल्लामा ज़हमखशरी ने किया है। इसका उर्दू तर्रजुमा हकीम इकराम अली रज़ा लखनवी ने तबा कराया था। अब जो तक़रीबन नापैद है। सहीफतुर अरज़ा का तरजुमा मोलवी शरीफ हुसैन साहब बरेलवी ने किया है। तिब्बे रज़ा का ज़िक्र अल्लामा मजलिसी शेख़ मुन्तख़बुद्दीन ने किया है। इसकी शरह फ़ज़्लुल लाह इब्ने अरावन्दी ने लिखी है इसी को रिसाला ज़हबिया भी कहते हैं और इसका तरजुमा मौलाना हकीम मक़बूल अहमद साहब क़िबला मरहूम ने भी किया है। इसका तज़किरा शमशुल उलमाअल्लामा शिबली नोमानी ने अलमामून सफ़ा ६२, में किया है। मसनदे इमाम रज़ा (अ.) का ज़िक्र अल्लामा चेलपी ने किताब कशफुल ज़नून में किया है। जिसको अल्लामा अब्बदुल्ला अमरत सरी ने किताब अर हज्जुल मतालिब के सफ़ा ४५४ पर नक़ल किया है। नाचीज़ मुअल्लिफ़ के पास यह किताब मिस्र की मतूबा मौजूद है। यह किताब १३२१ हिजरी में छपी है और इसके मुरतिब अल्लामा शेख अब्दुल अलवासा मिस्री और महशी अल्लामा मोहम्मद इब्ने अहमद हैं।

हज़रत इमाम रज़ा (अ.) ने **"माऊल लहम"** बनाने और मौसिमयात के मुतालिल्क़ जो अफ़दा फ़रमाया है उसका ज़िक्र किताबों में मौजूद है। तफसील के लिए मुलाहेज़ा हो। (दमए साकेबा वग़ैरा)

हज़रत इमाम रज़ा (अ.) और शेरे क़ालीन

अल्लामा मोहम्मद तक़ी इब्ने मोहम्मद बाक़र (अ.) **हज़रत इमाम हसन**

असकरी (अ.) के हवाले से तहरीर फ़रमाते हैं कि हज़रत इमाम रज़ा (अ.) की वली अहदी के ज़माने में एक दफा शदीद तरीन कहत पड़ा। मामून ने हज़रत की खिदमत में हाज़िर हो कर अर्ज़ की मौला कोई तदबीर किजिये और किसी सूरत से दोआ फ़रमाइए कि खुदा वन्दे आलम नज़ूले बारां करदे। अब मुल्क की बुरी हालत हो गई है। भूख और प्यास से लोगों के जान बहक़ होने का सिल सिला शुरू हो गया है। आपने इरशाद फरमाया। ऐ बादशाह घबरा नहीं। मैं दोशम्बे के दिन तलबे बाराँ के लिए निकलूँगा। मुझे अपने परवर दिगार से बड़ी तवक़्क़ा है। इंशा अल्लाह नज़ूले बाराँ होगा और ख़लके खुदा की परेशानी दूर होगी। ग़रजकि वक़्ते मक़ुरा आया और इमाम (अ.) सहरा की तरफ़ बरामद हुए। आपने मुसल्ला बिछाया और दस्ते दोआ बारगाहे अहदियत में बुलन्द करके दोआ फ़रमाई। अभी दोआ के जुम्ले तमाम न होने पाए थे कि ठन्डी हवा के झोंके चलने लगे। बादल छा गया बूंदें पड़ने लगीं और इस क़दर बारिश हुई कि जल थल हो गया। बादशह भी खुश हुआ। पब्लिक भी मुतमइन और आसूदा हुई और लोग अपने अपने घरों को वापस चले गए। इस करामत ख़ास और इस्तेजाबत दोआ की वजह से बहुत से हासिद जल भुन कर ख़ाकिस्तर हो गए। एक दिन जब दरबार अरासता था। उन्हीं हासिदों में से एक ने कहा। लोग आपके बारे में बहुत से ख़राफ़ात नशर करते हैं और आप को बढ़ाने की सई में मुनहमिक हैं। सब चाहते हैं कि आप का पाया बादशाह सलामत के पाया से बुलन्द कर दें और सुने सबसे बड़ी करामात जो आपकी इस वक़्त मशहूर की जा रही है वह यह है कि आप ने बारिश करा दीहै मैं कहता हूँ कि जबकि बारिश अर्से से नहीं हुई थी। वह आपकी दोआ करते या ना करते उसे ो होना ही था। लेहाज़ा मरी नज़र में यह करामात कोई हैसीयत नहीं रखती। हाँ करामात और मोजिज़ा तो यह है कि पेशे नज़र क़ालीन और मस्नद पर जो शेर की तस्वीर बनी हुई है। उसे मुजस्यम कर दीजऐ और हुक्म दीजए कि मुझे फाड़ खाए।

हज़रत इमाम (अ.) ने फ़रमाया कि देख मैंने किसी से नहीं कहा कि मेरी करामात बयान करे और न यह कहा कि मुझे बढ़ाने की कोशिश करे। अब रह गया आबे बारनी का वाक़ेया, वह खुदा की मेहरबानी और इनायत से अमल में आया है, मैं इसमें भी अपनी कोई तारीफ़ नहीं चाहता। यह सब खुदा की इनाएत है, अलबत्ता जो तुझे यह हौसला है कि शेर क़ालीन व मसनद मुजस्सम हो जाए और तुझे भाड़ खाए तो ले यह किए देता हूँ।

यह फ़रमा कर आप शेर की तसवीरों की तरफ़ मोतवज्जा हुए, और आपने फ़रमाया " कि ऐन फ़ाजिर कि नज़्दे शमाअस्त और राबदरौ असर राबाक़ी नगज़ारीद" इस फ़ासिक़ व फ़ाजिर को चीर फाड़ कर खा जाओ कि इसका निशान तक बाक़ी न रहे।

इमाम (अ.) का यह फ़रमाना था कि दोनों शेर की तसवीरें मुजस्सम हो गयीं

और उन्होंने हमहमा भर कर काफ़िर अज़ली पर हमला कर दिया जिसका नाम हमीद बिन महरान था और उसे परा परा करके खा डाला। इस हगांमें को देख कर मामून बेहोश हो गया। हज़रत ने उसे होश में ला कर शेरों को हुक्म दिया कि अपनी असली हालत व सूरत में हो जाओ। चुनांचे वह फिर क़ालीन व मसनद की तसवीर बन गये।

(काशेफ़ुन नक़ाब शरह अयून अख़बार रज़ा सफ़ा २१६)

हज़रत इमाम रज़ा (अ.) के साथ उम्मे हबीब बिन्ते मामून की शादी और मामून का सफ़रे ईराक़

वाक़ेए वली अहदी के क़बल बाद से ले कर २०२ हिजरी के शुरू तक हज़रत इमाम रज़ा (अ.) से मनाज़िरे , मुबाहसे और इलमी मज़ाहिरे मामून रशीद कराता रहा। अब इसकी वजह या यह हो कि शोहरते आम्मा हो जाए और अलवी सरनिगूं रहें और अलमे खुरूज बुलन्द न करें या यह हो कि अब्बसीयों पर हुज्जतें क़ायम हो जाएं और हज़रत की अहलीयत व क़ाबलीयत से मरऊब हो कर वह लोग मुख़लेफ़त और तमरूद व सरकशी का क़सद न करें और ठीक से मामून को हुकूमत करने दें। या यह हो कि इमाम रज़ा (अ.) और उनके मानने वालों के दिल साफ हो जाऐं। और किसी को बाद के आने वाले वाक़ेयात में यह शुबहा न हो कि उनकी ज़िम्मेदारी मामून पर है। बहर हाल सबब जो भी हो ,लेकिन यह मुसल्लम है कि मनाज़रे और मुबाहसे के बाद मामून ने अपने खुफिया मक़सद की तकमील के लिए ईराक़ का सफर करने का फ़ैसला किया। इससे क़ब्ल इसने यह ज़रूरी समझा कि शुबहे की गुनजाईश को ख़त्म कर देने के लिए अपनी लड़की की शादी इमाम रजा(अ.) से कर दे । चुनांचे उस ने अला रऊसा अलशहाद बरसरे दरबार मजिलिसे अक़द करके अपनी बेटी उम्में हबीब की शादी हज़रत इमाम रज़ा (अ.) के साथ कर दी।

अल्लामा शिबलंजी लिखते हैं "कि ज़ौजा अल मामून अबनाता उम्में हबीब फी अव्वल सुन्नतह असनैन वमातैन वलमामून मतार्वज्जाहू अल ईराक़"मामून ने अवएल२०२ हिजरी में अपनी लड़की उम्मे हबीबा का अक़द हज़रत इमाम रज़ा (अ.) के साथ कर दिया, यह उस वक़त किया जब कि वह सफरे ईराक़ का तहय्या कर चुका था।(नुरूल अबसार सफ़ा १४२ तबा मिस्र)

अल्लामा मोहम्मद रज़ा लिखते हैं कि उम्मे हबीबा को आपके तसर्रूफ़ में नहीं दिया गया। (जन्नात अल खुलूद सफ़ा ३२) यह २०२ हिजरी ही है जिसमें अब्बासीयों ने बग़दाद की हुकूमत से मामून को बेदख़ल करके इसकी जगह पर इब्राहीम बिन मेहदी को खलीफ़ा बनाने का ऐलान कर दिया था। इस वक़त बग़दाद की हालत यह थी कि वह इन्तेशार और बद नज़मियों का मरकज़ बन गया था।

मुवर्रिख़ **ज़ाकिर हुसैन** वाक़िए वली अहदी के बाद के हालात के सिलसिले में लिखते हैं कि बग़दाद और उसके गिर्द व नवाह में बिल्कुल बदनज़मी फैल गई, लुच्चे, गुन्डे दिन दिहाड़े लूट मार करने लगे। जुनूबी ईराक़ व हिजाज़ में भी मामलात की हालत ऐसी ही ख़राब हो रही थी। फज़्ल सब खबरो को पोशीदा रखता था। मगर इमाम रज़ा (अ.) ने उन्हें बा ख़बर कर दिया। बादशाह वज़ीर से बदज़न हो गया। मामून को जब इन शोरिशों की ख़बर हुई तो बग़दाद की तरफ़ रवाना हो गया। सरखस़ में पहुंच कर उसने अपने वज़ीर को हमाम में क़त्ल करा दिया। फिर जब तूस पहुंचा तो इमाम रज़ा (अ.) को जिनको वली अहद करने के सबब बग़दाद में बग़ावत हुई थी। अंगूरों में ज़हर दे कर शहीद कर दिया। मामून ने ज़ाहिर में तो मातम किया। और वहीं दफ़न करके मक़बरा तामीर कराया। मामून ने इमाम की वफ़ात का हाल बग़दाद लिख भेजा। जिससे वहां अमनो अमान क़ायम हो गया। मामून आगे बढ़ा यहां तक कि मदाएन पहुंच कर आठ दिन क़याम किया। जहां बग़दाद के जंगी सरदारों , रईसों से मिलां बनी अब्बास ने उसका इस्तक़बाल किया और उसने बाज़ अमाएद की दरख़्वास्त पर फिर वही अब्बासी सियाह रंग इख़्तेयार कर लिया। मामून के आने की ख़बर सुन कर इब्राहीम बिन मेहदी और उसके तरफ़दार भाग गये मगर फिर इब्राहीम पकड़ा गया। (तारीख़े इस्लाम जिल्द १, सफ़ा ६१ वल फ़ख़्री वल मामून)

मामून रशीद अब्बासी और हज़रत इमाम रज़ा(अ.) की शहादत

यह एक मुसल्लेमा हक़ीक़त है कि ग़ैर मासूम अरबाबे इक़तेदार हवसे हुकमरानी में किसी क़िस्म का सरफ़ा नहीं करते अगर हुसूले हुकूमत या तहफ़्फ़ुज़े हुक्मरानी में बाप बेटे, मां बेटी या मुक़द्दस से मुक़द्दस तरीन हस्तियों को भेंट चढ़ा दे, तो वह उसकी परवाह नहीं करते। इसी बिना पर अरब में मसल के तौर पर कहा जाता है कि " अल मुल्क अक़ीमुन "

अल्लामा वहीदुज़्ज़मा हैदरा बादी लिखते हैं कि अल मुल्क अक़ीम बादशाहत बांझ है। यानी बादशाहत हासिल करने के लिये बाप बेटे की परवाह नहीं करता। बेआ बाप की परवाह नहीं करता, बल्कि ऐसा भी हो जाता है कि बेटा बाप को मार कर ख़ुद बादशाह बन जाता है। (अनवारूल लुग़त, पारा ८, सफ़ा १७३) अब इस हवसे हुकमरानी में किसी मज़हब और अक़ीदे का सवाल नहीं। हर वह शख़्स जो इक़तेदार का भूखा होगा वह इस क़िस्म की हरकतें करेगा।

मिसाल के लिये इस्लामी तवारीख़ की रौशनी में हुज़ूर रसूले करीम(स.) की वफ़ात के फ़ौरन बाद के वाक़यात को देखिये। जनाबे सय्यदा (स.) के मसाएब व आलाम और वजहे शहादत पर ग़ौर किजिये। इमाम हसन (अ.) के साथ बरताव पर ग़ौर फ़रमाईये।

वाक़िए करबला और उसके पसे मंज़र, नीज़ दीगर आइम्मए ताहेरीन के साथ बादशाहाने वक़्त के सुलूक और उनकी क़ैदो बन्द और शहादत के वाक़ेयात को मुलाहेज़ा किजिये। इन उमूर से यह बात वाज़े हो जाएगी कि हुक्मरानी के लिए क्या क्या मज़ालिम किए जा सकते हैं और कैसी कैसी हस्तियों की जाने ली जा सकती हैं और क्या कुछ किया जा सकता है तवारीख़ मे मौजूद है। कि मामून रशीद अब्बासी की दादी ने अपने बेटे ख़लीफ़ा हादी को २६ साल की उमर में ज़हर दिलवाकर मार दिया। मामून रशीद के बाप हारून रशीद अपने वज़ीरों के ख़ानदान बरामका को तबाह बरबाद कर दिया। (अलमामून सफ़ा २०) मरवान की बीवी ने अपने ख़ाविन्द को बिस्तरे ख़्वाब पर दो तकियों से गला घुटवा कर मरवा दिया। वलीद बिन अब्दुल मलक ने फ़रज़न्दे रसूल इमाम ज़ैनुल आबदीन (अ.) को ज़हर से शहीद किया। हिशाम बिन अब्दुल मलक ने इमाम मोहम्मद बाक़र(अ.) को ज़हर दिया। इमाम जाफ़र सादिक़(अ.) को मन्सूर दवान्क़ी ने ज़हर से शहीद किया। इमाम मूसिए काज़िम (अ.) को हारून रशीद अब्बासी ने ज़हर से शहीद किया। इमाम अली रज़ा (अ.) को मामून अब्बसी ने ज़हर देकर शहीद किया। इमाम मोहम्मद तक़ी(अ.) को मोतसिम बिल्लाह ने उम्मुल फ़ज़्ल बिन्ते मामून के ज़रिए से ज़हर दिलवाया। इमाम अली नक़ी(अ.) को मोतमिद अब्बासी ने ज़हर से शहीद किया। ग़रजकि हुकूमत के सिलसिले में यह सब कुछ होता रहता है। औरंगज़ेब को देखिए ,उसने अपने भाई को क़तल कराया और अपने बाप को सलतनत से महरूम करके क़ैद कर दिया था। उसी ने शहीदे सालिस हज़रत नुरूल्लाह शुस्तरी (आगरा) की ज़बान गुद्दी से खिंचवाई थी। बहर हाल जिस तरह सबके साथ होता रहा। हज़रत इमाम रज़ा (अ.) के साथ भी हुआ।

तारीख़े शहादत :- हज़रत इमाम रज़ा(अ.) की शहादत २३ ज़ीक़ाद २०३ हिजरी मुताबिक़ यौमे जुमा बा मुक़ाम तूस वाक़ेए हुई है। (जिला अल अयून सफ़ा २८० अनवारूल ग़मानीह सफ़ा १२७ जन्नातुल खुलूद सफ़ा ३१) आपके पास इस वक़्त अज़ीज़ अक़रबा औलाद वग़ैरा में कोई न था। एक तो आप ख़ुद मदीना से ग़रीबुल वतन हो कर आए। दूसरे यह कि दारूल सलतनत मरव में भी आपने वफ़ात नहीं पाई। बल्कि आप सफ़र की हालत में बा आलमे ग़ुरबत फ़ौत हुए। इसी लिए आपको ग़रीबुल ग़ुरबा कहते हैं।

वाक़िए शहादत के मुताअल्लिक़ मोवरिख़ लिखते हैं कि इमाम रज़ा (अ.)ने फरमाया था।"फमा यक़तलनी वल्लाह वग़ैरह "ख़ुदा की क़सम मुझे मामूप के सिवा कोई और क़तल नहीं करेगा और मैं सब्र करने पर मजबूर हूँ (दमए साकेबा जिल्द ३ सफ़ा ७१)

अल्लामा शिबलन्जी लिखते हैं कि हर समा बिन अईन से आपने अपनी वफ़ात की तफ़सील बताई थी और यह भी बता दिया था कि अँगूर और अनार में मुझे ज़हर दिया जाएगा। (नुरूल अबसार सफ़ा १४४)

अल्लामा मआसिर लिखते हैं कि एक रोज़ मामून ने हज़रत इमाम रज़ा(अ.)

को अपने गले से लगाया और पास बिठा कर उनकी ख़िदमत में बेहतरीन अँगूरो का एक तबक़ रखाऔर उसमें से एक ख़ोशा उठा कर आपकी ख़िदमत में पेश करते हुए कहा। इब्ने रसूल अल्लाह यह अँगूर इन्तेहाई उम्दा हैं। तनावुल फ़रमाईये। आपने यह कहते हुए इन्कार फरमाया कि जन्नत के अूँर इससे बेहतर हैं। इसने शदीद इसरार किया और आपने उसमें से तीन दाने खा लिए। यह अँगूर के दाने ज़हर आलूद थे। **अँगूर खाने के बाद आप उठ खड़े हुए। मामून ने पूछा आप कहाँ जा रहे हैं आपने इरशाद फरमाया। जहाँ तूने भेजा है।** वहाँ जा रहा हूँ क़याम गाह पर पहुँचने के बाद आप तीन दिन तक तड़पते रहे। बिल आख़िर इन्तेक़ाल फ़रमा गए। (तारीख आईम्मा सफ़ा ४७६) इन्तेक़ाल के बाद हज़रत इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.) बा ऐजाज़ तशरीफ़ लाए और नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और आप वापस चले गए। बादशाह ने बड़ी कोशिश की मगर न मिल सका। (मतालेबुल सुवेल सफ़ा २८८)

इसके बाद आपको बामुक़ाम तूस मोहल्ला सना बाद में दफ़न कर दिया गया। जो आज कल मशहदे मोकद्दस के नाम से मशहूर है और अतराफ़े आलम के अक़ीदत मन्दों के हवाएज का मरकज़ है।

शहादत इमाम रज़ा (अ.) के मुताल्लिक अबू असलत हरवी का बयान

अल्लामा अब्दुर्रहमान जामी तहरीर फ़रमाते हैं कि अबू सल्लत हरवी का बयान है कि हज़रत इमाम रज़ा (अ.) ने एक दिन मुझसे फ़रमाया कि हारून रशीद के पाँयती की गिर्द की मिट्टी लाओ। जब मैं मिट्टी लाया तो आपने उसे सूंघ कर फेंक दिया। और फ़रमाया कि अन्क़रीब मेरी क़ब्र के लिए इसी मुक़ाम की ज़मीन खोदेंगे और ऐसा पत्थर निकल आएगा कि उसे न कोई काट सकेगा और न उखाड़ सकेगा। फिर फ़रमाया कि हारून रशीद के सरहाने की मिट्टी लाओ मैं मिट्टी ले आया तो आपने उसे सूंघ कर फ़रमाया कि इसी मक़ाम पर मेरी क़ब्र होगी। फिर फ़रमाया ऐ अबू सल्लत कल मुझे मामून तलब करेगा। सुनो जब मैं जाने लगूँ तो तुम यह देख लेना कि मेरे सर पर कोई चादर वग़ैरा है या नहीं। अगर हो तो मुझसे कलाम न करना और अगर न हो तो मुझसे बातें करना अबू सल्लत कहते हैं कि सुबह के वक़्त इमाम (अ.) फ़राग़त के बाद मामून के पयाम का इन्तेज़ार करने लगे। इतने में मैंने देखा कि मामून रशीद का क़ासिद आ गया इमाम (अ.) इसके हमराह रवाना हो गए। जिस वक़्त आप जा रहे थे आपके सरे मुबारक पर अज़ा क़िस्म तौलिया कोई कपड़ा था। मैंने हसबे हुक्म आपसे कोई कलाम नहीं किया और वह तशरीफ़ ले गए। इस वक़्त मामून के सामने अँगूरों का एक तबक़ रखा हुआ था। इसने मरासिम ताज़ीम अदा करने के बाद कहा ,इब्ने रसूल (स.) आपने इससे बेहतर अँगूर कभी नहीं देखा होगा। आपने फ़रमाया कि बेहिश्त के अँगूर इससे कहीं बेहतर हैं फिर मामून

ने एक ख़ोशये अँगूर उठाते हुए कहा। लीजिए तनावुल फ़रामाइये। आपने फ़रमाया ऐ बादशाह इसे खाने को इस वक़्त मेरा जी नहीं चाहता, लेहाज़ा मुझे माफ़ करो। मैं इस वक़्त नहीं खाऊँगा। मामून ने शदीद इसरार करते हुए कहा। " मारमोहत्तम नी वारी "। आप क्यों नहीं तनावल करते। क्या आपको मुझ पर भरोसा नहीं है और क्या आप मुझ पर इत्तेहाम लगाते और मुझसे बदगुमानी करते हैं। यह कहते हुए मामून ने एक खोशा उठाया और उसे खाना शुरू किया। फिर एक और खोशा उठाया और उसे इमाम(अ.) की तरफ़ बढ़ाते हुए कहा लीजिए तनावुल कीजिए। इमाम(अ.) ने उसके शदीद इसरार पर उसे ले लिया और उसमें से तीन दाने तनावुल फ़रमाए इन अँगूरों के खाते ही जौहरे वजूद में इन्क़ेलाब पैदा हो गया। बक़िया अँगूरों को फेकते हुए आप उठ खड़े हुए। मामून ने कहा कहाँ तशरीफ़ लिए जा रहे हैं। आपने फ़रमाया कि "बेअन्जा के फरसतादी "जहाँ तूने भेजा है वहाँ जा रहा हूँ। उसके बाद आप सरे मुबारक पर चादर डाल कर रवाना हो गए।

अबु सल्लत हरवी कहते हैं कि इमाम(अ.) दरबार से रवाना हो कर दाख़िले ख़ाना हुए और आपने मुझे हुक्म दिया कि दरवाज़ा बन्द कर दो। मैंने दरवाज़ा बन्द कर दिया। फिर आप बिस्तर पर लेट गए। आपका बिस्तर पर लेटना था कि मुझे रंज़ो अलम ने आ घेरा। तरह तरह के ख़्यालात पैदा होने लगे और मैं सख़्त हैरान और परेशान हो गया। इमाम(अ.) बिस्तरे अलालत पर थे और मैं रंजो ग़म की हालत में बैठा हुआ था। नागाह मैंने घर के अन्दर एक खूबसूरत नौजवान को देखकर उससे पूछा कि आप कौन है? और जबकि दरवाज़ा बन्द है। आपको अन्दर किसने पहुँचा दिया आपने इरशाद फ़रमाया कि मैं हुज्जते ख़ुदा मोहम्मद तक़ी (अ.) हूँ। मुझे बन्द मकान में वही लाया है, जिसने चश्मे ज़दन में मदीने से यहाँ पहुँचाया है। मैं अपने पदर बुर्ज़ुगवार की ख़िदमत के लिये हाज़िर हुआ हूँ। यह कह कर आप इमाम रज़ा (अ.) कि ख़िदमत में हाज़िर हुए। इमाम(अ.) ने जैसे ही आपको देखा फ़ौरन अपने सीने से लगाया। पेशानी का बोसा दिया और चुपके चुपके आपसे कुछ बातें करने लगे। थोड़ी देर के बाद आपने देखा कि रूहे मुबारक मुफारेक़त कर गई और इमाम(अ.) वफ़ात पा गए। आपके वफ़ात फ़रमाने के बाद हज़रत मोहम्मद बिन अली(अ.) ने गुस्लो कफ़न और हुनूत का इन्तेज़ाम फ़रमाया। फिर क़ुदरती ताबूत मंगवा कर नमाज़ पढ़ने के बाद उसमें रखा। थोड़ी देर के बाद वह ताबूत आसमान की तरफ़ चला गया। अबुल सल्लत कहते हैं कि यह देख कर मैंने अर्ज़ की मौला अभी मामून वग़ैरा आते होंगे। मैं उन्हें क्या जवाब दूँगा। आपने फ़रमया यह ताबूत अभी वापस आ जाएगा। चुनाचें मिस्ल साबिक़ छत शिगाफ़्ता हुई और ताबूत आ गया आपने इमाम (अ.) को बदस्तूर बिस्तर पर लिटा दिया और मुझे हुक्म दिया कि अब दरवाज़ा खोल दो। मैंने दरवाज़ा खोल दिया तो मामून वग़ैरा दाख़िले ख़ाना हुए और सब आहो बुका करने लगे। फिर तजहीज़ और तक़फ़ीन का अज़ सरे नौ इन्तेज़ाम हुआ और आप हारून रशीद के सरहाने दफ़न

कर दिये गए। (शवाहेदुन नबूअत सफ़ा २१२ रौज़तुल सफ़ा जिल्द ३ सफ़ा १६ व अलामुल वरा सफ़ा १६८)

अल्लामा बिन तलहा शाफ़ेई लिखते हैं कि मामून ने हर चंन्द चाहा कि इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.) से मिलें मगर आपके फ़ौरी चले जाने की वजह से मुलाक़ात न हो सकी। (मतालेबुल सुवेल सफ़ा २८८)

अल्लामा नेमत उल्ला अल जज़ाएरी लिखते हैं कि इमाम (अ.) की शहादत के बाद जो ख़बर सबसे पहले उड़ी, वह यह थी कि इमाम रज़ा को मामून ने धोखे से शहीद कर दिया। (तज़किरतुल मासूमीन)

अल्लामा नेमत उल्ला अलजज़ाएरी तहरीर फरमाते हैं कि मामून रशीद ने आपको अनार और अँगूर के ज़रिए ज़हर दिया था। (अन्वार नेमानी सफ़ा२७अल्लामा तबरसी फरमाते हैं कि अनार के अरक़ में ज़हर मिला कर इसमें धागा तर कर लियाऔर उस धागे को सोज़न के ज़रिए अँगूर में गुज़ार कर उन्हे मसमू कर दिया था।

(अलाम अल वरा सफ़ा १६६)

शहादत इमाम रज़ा (अ.) के मौके पर इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.) का खुरासान पहुँचना

अबू मखनफ का बयान है कि जब हज़रत इमाम रज़ा(अ.) को खुरासान में ज़हर दे दिया और आप बिस्तरे अलालत पर करवटें लेने लगे तो खुदा वन्दे आलम ने इमाम मोहम्मद तक़ी(अ.) को वहाँ भेजने का बन्दो बस्त किया। चुनांचे इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.)जबकि मस्जिदे मदीना में मशग़ूले इबादत थे एक हातिफ़े ग़ैबी ने आवाज़ दी कि "अगरमी ख़्वाही पदर ख़ुद रा ज़िन्दा दरयाबी क़दम दर्राह न "। अगर आपने वालिद बुज़ुर्ग वार से उनकी ज़िन्दगी में मिलना चाहते हैं तो फ़ौरन खुरासान के लिए रवाना हो जाएं यह आवाज़ सुनना था कि आप मस्जिद से बरामद हो कर दाख़िले ख़ाना हुए और आपने अपने अइज़्ज़ा अक़रूबा को शहादते पदरे बुर्जुगवार से आगाह किया, घर में कोहराम बरपा हो गया। उसके बाद आप वहाँ से रवाना होकर एक साअत में खुरासान पहुँचे। वहाँ पहुँचकर देखा कि दरबान ने दरवाज़ा बन्द कर रखा है। आपने फ़रमाया कि दरवाज़ा खोल दो। मैं अपने पदर बुर्जुगवार की ख़िदमत में जाना चाहता हूँ। आपकी आवाज़ सुनते ही इमाम(अ.) खुद अपने बिस्तर से उठे और दरवाज़ा खोल कर इमाम मोहम्मद तक़ी को अपने गले से लगाया और बेपनाह गिरया फ़रमाया । इमाम मोहम्मद तक़ी(अ.) पदरे बुज़ुर्गवार की बेबसी,बेकसी,और ग़ुरबत पर आँसू बहाने लगे। फिर इमाम (अ.) तर्बरूकाते इमामत फ़रज़न्द के सुपुर्द करके

करके राहिए मुल्के बक़ा हो गए **इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहे राजेऊन**। (कनज़ुल अनसाब सफ़ा ६५) **अल्लामा शेख़ अब्बास कुम्मी** बा हवाला अलाम अलवरा तहरीर फ़रमाते हैं कि हज़रत इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.) को ज्यों ही ख़बर मिली , खुरासान तशरीफ़ ले गए और अपने वालिद बुज़ुर्गवार को दफ़न करके एक साअत में वापस और यहाँ पहुँच कर लोगों को हुकुम दिया कि इमाम(अ.) का मातम करें (मुन्तहीउल अलमाल जिल्द२ सफ़ा ३१२)

बहस व नज़र :- इससे इनकार नहीं किया जा सकता है कि जिस तरह ख़लीफ़ा मामून ने हालात की रौशनी में अपने भाई अमीन की मातहती कुबूल करली। फिर उसे क़त्ल कर दिया, और जिस तरह फ़ज़ल बिन सुहैल (ज़ूल रियासतैन मालिक निसान व क़लम "अलफख़री") को वज़ीरे जगं बनाया। फिर उसे बामुक़ाम **सरखस** हमाम में क़तल करा दिया और जिस तरह ताहिर को वज़ीरे आज़म बनाया और उसी की वजह से इस्तक़रार ख़िलाफ़त हासिल किया। फिर उसे क़त्ल कर दिया। बिल्कुल इसी तरह अपनी ज़रूरत के वक़्त हज़रत इमाम रज़ा (अ.) को ख़िलाफ़त का वली अहद बनाया। इनके साथ अपनी लड़की की शादी की और काम निकलने के बाद उन्हें अपने हाथों से शहीद कर दिया। यानी जब अलवियों का ज़ोर हुआ ,तो उनकी बग़ावत को रोक देने के लिए शदीद इनकार के बा वजूद इमाम रज़ा (अ.) को वली अहद बनाया और जब अब्बासीयों का ज़ोर बढ़ा तो उन्हें राज़ी करने के लिए इमाम रज़ा (अ.) को शहीद कर दिया। इसे कहते हैं सियासत जिसमें हर किस्म का हरबा इस्तेमाल करना जाएज़ है।

इमाम रज़ा (अ.) को किसने ज़हर दिया। इसके मुतअल्लिक़ अल्लामा शिबली नोमानी ने जो कुछ तहरीर फ़रमाया है। उस का ख़ुलासा यह है कि तामाम मुवर्रेख़ीन व उलमाए अहले तशीय बिला इसतसना इस पर मुत्तफ़िक़ हैं कि इमाम रज़ा (अ.) को खुद मामून ने ज़हर दिया है। लेकिन मुवर्रेख़ीन अहले तसननुन में से एक मुवर्रिख़ ने मामून पर इस इलज़ाम के लगाने की जुर्रत नहीं की। (किताब अल मामून सफ़ा ६२)

मैं समझता हूँ कि अल्लामा शिबली इस मामले में या तो बिल्कुल मामून के साथ हुसने ज़न से काम ले रहे हैं या उन्हें इल्म ही न था। उन्होंने तो साफ़ साफ़ लिखा है कुतुब अहले तशीय हमारे पास नहीं हैं। लेकिन यह नहीं लिखा है कि हमने तमाम कुतुब अहले सुन्नत को देख लिया है।

मेरे ख़्याल में वह अपनी किताबों से भी न वाकिफ़ थे और उनकी तगं नज़री ने उनसे मज़कूरा जुमले लिखवा दिए। मैं कहता हूँ कि बहुत से उलमा व मुवर्रेखीन अहले सुन्नत इस वाक़िए को अपनी किताबों मे लिखा है बाज़ ने तो बड़ी तफ़सील के साथ वाक़िए शहादत और हादसए ज़हर ख़्वानी को तहरीर किया है और बहुतों ने इशारतन " व कनायतन " इस पर रौशनी डाली है। मिसाल के लिए मुलाहेज़ा हो।

(१) तारीख़ रौज़तुल सफ़ा जिल्द १६ (२) तारीख़ शवाहेदुन नबूवत सफ़ा २०२ (३) तारीख़े कामिल जिल्द ६ सफ़ा ११६ (४) तारीख़ मरूज अलज़हब मसूदी जिल्द ६ सफ़ा ३३ (५) तारीख़ नुरूल अबसार सफ़ा १४४ (६) तारीख़ अल फ़ख़री सफ़ा १६३ (७) मतालेबुल सुवेल सफ़ा २८८ (८) तारीख़ हबीब अल सियर जिल्द २ जुज़ अव्वल सफ़ा ५१ (६) तारीख़ आले मोहम्मद सफ़ा ६४ (१०) रवाहे अल मुस्तफ़ा सफ़ा १७४ (११) किताब इन्साब समानी (१२) ख़ुलासा तहज़ीब अल कमाल (१३) मुख़्तसिर अख़बार अल ख़ुलफ़ा (१४) तारीख़ तबरी फ़ारसी जिल्द ४ सफ़ा ७६२ (१५) तारीख़ इब्ने तूलून सफ़ा ६८ (१६) इन्साब समानी (१७) अख़बार अल ख़ुलफ़ा (१८) तारीख़े इस्लाम गुलाम रसूल महरिज २ सफ़ा ५८।

मेरे नज़दीक मज़कूरह बाला हवाला जात की मौजूदगी में अल्लामा शिबली का यह कहना है कि एक सुन्नी मुवर्रिख़ ने भी मामून पर इस इलज़ाम लगाने की जुर्रत नहीं की। (अल मामून सफ़ा ६२)

और इब्ने ख़लदून और जस्टिस अमीर अली का यह फ़रमाना कि बाज़ लोगों का यह ख़्याल... कि मामून ने ख़ुद इमाम रज़ा (अ.) को ज़हर देकर हलाक किया बिल्कुल लग़ो और फ़ुज़ूल है। (तारीख़े इस्लाम अमीर अली सफ़ा १८६) हद दर्जा मोहमल ,लग़ो , फ़ुज़ूल और न क़ाबिले ऐतना है।

मैं इन मुनकिराने हक़ाएक़ से पूछता हूँ कि अगर मामून ने ख़ुद ज़हर नहीं दिया, तो क्या किसी एक तारीख़ में भी यह मौजूद है कि उसने वाक़िए क़त्ल की तहक़ीक़ात कराई ? हरगिज़ नहीं। नीज़ यह कि उसने आपकी वफ़ात को २४ घन्टे छुपाया क्यों ? (मक़ातिल अल तालबैन सफ़ा ३७८ तबा नजफ़ अशरफ़)

मैं यह सच कहता हूँ कि फ़रज़न्दे रसूल की जैसी शख़सीयत के क़त्ल की तहक़ीक़ात न करानी और सिर्फ़ रो पीट कर " मगर मछ " के आँसूओं की तरह आँसू बहाकर अरबाबे नज़र की निगाहों में उस इल्ज़ामे क़त्ल से बरी नहीं कर सकता।

मालूम होना चाहिए कि मामून को इमाम रज़ा (अ.) वली अहदी और फ़ज़ल बिन सहल की वज़ारते जगं पर तक़र्रुरी के बाद इस वक़्त तक सुकून नसीब नहीं हुआ , जब तक वह इन दोनो को नेस्त नाबूद नहीं कर सका। बग़दादियों की बग़ावत रोकने के लिए चुंकि इन दोनो को ख़त्म करना ज़रूरी था। इस लिए उसने एक ही सफर में दोनो का ख़ात्मा कर दिया। इसके बाद अहले बग़दाद को देखा कि अब क्या चीज़ बाक़ी है जिसकी तुम शिकायत कर सकते हो।

शिबली लिखते है कि इन दोनो के क़त्ल होने से अहले बग़दाद की शिकायतों का फ़ैसला हो गया। (अल मामून सफ़ा ६२) यानी इन दोनो के क़त्ल से मामून की ग़रज़ पुरी हो गई। अहले बग़दाद की बग़ावत का ख़ात्मा हो गया। अब्बासी क़ब्ज़े में आ गए और हुकूमत अज़ सरे नौ जम गई।

हज़रत इमाम रज़ा (अ.) की तादादे औलाद

इमाम (अ.) की तादादे औलाद में शदीद इख़्तेलाफ़ हैं। अल्लामा मजलिसी ने बहारूल नवार जिल्द १२ सफ़ा २६ में कई अक़वाल नक़ल करने के बाद ब हवालए कुर्बुल असनाद तहरीर फ़रमाया है कि आपके दो फ़रज़न्द थे। (१) **इमाम मोहम्मद तक़ी** (अ.) दूसरे **मूसा**। अनवारे नोमानीया सफ़ा १२७ में है कि आपकी तीन औलदें थीं। अनवार हुसैनिया जिल्द ३ सफ़ा ५२में है कि आपकी तीन औलाद थी मगर नस्ल सिर्फ़ इमाम मोहम्मद तक़ा (अ.) से जारी हुई। सवाएके मोहर्रेक़ा सफ़ा १२३ में है कि आपके पाँच लड़के और एक लड़की थी। नूरूल अबसार सफ़ा १२५ में है कि आपके पाँच लड़के और एक लड़की थी। जिनके नाम यह हैं। इमाम मोहम्मद तक़ी , हसन ज़ाफ़र, इब्राहीम, हुसैन और आएशा। रौज़तुल शोहदा सफ़ा ४३८ में है कि आपके पाँच लड़के थे जिनके नाम यह हैं। इमाम मोहम्मद तकी, हसन जाफर, इब्रराहीम, हुसैन और अक़ब ऊअज़ बुजर्गुवारश मोहम्मद तक़ी असत। मगर आपकी नस्ल इमाम मोहम्मद तकी (अ.) से बढ़ी है। यही कुछ रहमतुल आलमीन जिल्द २ सफ़ा १४५ में है। जन्नातुल खुलूद सफ़ा ३२ में है कि आपके पाँच लड़के और एक लड़की थी। रौज़तुल अहबाब जमालुद्दीन में है कि आपके पाँच लड़के थे। कश्फ़ुल गम्मा सफ़ा ११० में है कि आपके छः औलाद थीं ५ लड़के एक लड़की यही मतालेबुल सुवेल में है। कनजुल अनसाब सफ़ा ९६ में है कि आपके आठ लड़के थे जिनके नाम यह हैं इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.) हादी "अली नक़ी " हसन , याक़ूब , इब्राहीम, फ़ज़ल , जाफ़र। लेकिन इमाम अल मोहद्देसीन ताज अल मोहक़्केक़ीन हज़रत अल्लामा मोहम्मद बिन मोहम्मद नोमान बग़दादी अल मतूफ़ी ४१३ हिजरी अल मुलक़्क़ब ब शेख़ मुफ़ीद अलैह रहमाह किताब इरशाद सफ़ा २७१- ३४५ में और ताज अलमुफ़रेसीन , अमीन अल्लादीन हज़रत अबू अली फज़ल बिन हसन बिन फज़ल तबरसी अल मशहदी साहब मजमउल बयान अल मतूफ़ी ५४८ किताब अलाम अलवरा सफ़ा में तहरीर फ़रमाते हैं **कान अलरज़ामन अलवालिद अबनहू अबूजाफर मोहम्मद बिन अली अलजवाद लाग़ैर।** हज़रत इमाम मोहम्मद तक़ी(अ.) के अलावा अली रज़ा (अ.) के कोई और औलाद न थी यही कुछ किताब उमदतुल तालिब सफ़ा १८६ में है।

अल्लामा शेख़ मुफीद अलैह रहमह के मुतअल्लिक़ अल्लामा सय्यद नूर उल्लाह शुस्तरी शहीदे सालिस। किताबे मजसिल मोमीनन के सफ़ा २०० में तहरीर फ़रमाते हैं कि वह मुजताहिद कुदसी ज़मीर और मुतकल्लिमे बे नज़ीर थे। सफ़ा २०६ में ब हवालए खुलासतुल अक़वाल तहरीर फ़रमाते हैं कि शेख मौसूफ़ अवसख़ अहले ज़माना व अलमहूम

अपने ज़माने के सबसे ज़्यादा सुक़्क़ाऔर सबसे बड़े आलिम थे। आपकी वफ़ात पर इमामे ज़माना हज़रत साहेबे असर वज़्ज़मान (अ.) ने मरसिया कह कर भेजा था और इस मरसिये के चन्द शेर अलैह रहमत की क़ब्र पर कन्दा हैं।

इसी तरह अल्लामा तबरसी के मुतल्लिक़ तहरीर फरमाते हैं कि आपका शुमार बहुत बड़े उलमा में था। आप तफसीर मजमा अल बयान के मुस्निफ व मुफसिर,और इसकी जामियत आपकी बुलन्दी मुक़ाम की शाहिद हैं (मजलिस अल मोमिनीन सफा २१२)।

मजालिसी सानी अल्लामा शेख़ अब्बास कुम्मी तहरीर फ़रमाते हैं। "कान लिलमरज़ामन अलवलदाअबनाह अबू जाफर मोहम्मद ला ग़ैर "इमाम रज़ (अ.) के मोहम्मद तक़ी (अ.) के अलावा कोई फरज़न्द ना था।(सफीनतुल अलबहार जिल्द २ सफ़ा २३६)

यही कुछ अल्लामा मौसूफ ने अपनी किताब मुन्तही अलमाल की जिल्द २ के सफ़ा ३१२ में भी लिखा है। वह जहरीर फरमाते हैं कि उलमा बराए इमाम रज़ा (अ.) फ़रज़न्दे ग़ैर अज़ इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.) "ज़िक्र ना करदा अन्द बल्कि बाज़े गुफ्ता अन्द के औलादश मुखसर बाआँहज़रत बुदह " उला ने इमामरज़ा (अ.) की औलाद के बारे में इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.) के अलावा किसी का ज़िक्र नहीं किया। बल्कि बाज़ ने तो मोहम्मद तक़ी (अ.) में हसर कर दिया है।

यही कुछ **अल्लामा मोहम्मद बिन शहर आशोब** ने भी तहरीर फ़रमाया है वह लिखते हैं फ़रज़न्द सिर्फ़ इमाम मोहम्मद तक़ी(अ.) हैं।

(मुनाक़िब इब्ने शहर आशोब जिल्द सफ़ा २०६ तबा मुल्तान)

खुलासा यह कि फहूल उलमा व शिया जैसे अल्लामा शेख मुफीद अल्लामा तबरसी अल्लामा इब्ने शहर आशोब , अल्लामा शेख़ अब्बास कुम्मी ने तहरी फ़रमाया है कि हज़रत इमाम रज़ा (अ.) के फ़रज़न्द हज़रत इमाम मोहम्द तक़ी (अ.) के अलावा कोई न था और जिन उलमा ने एक से ज़्यदा औलाद तसलीम की है। इनमें से भी अल्लामा मोहम्मद रज़ा ,अल्लामा वाएज़ काशफी ने लिखा है कि इनकी नस्ल सिर्फ़ इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.) से बढ़ी है बाज़ उलमा एक लड़कीका वजूद भी तसलीम करते हैं जैसे अल्लामा शेख सद्दूक़ व अल्लामा मजलिसी लड़की का नाम "फ़ात्मा " था। उन्होंने अपने पेंदर बुर्जुगवार से रवाएत भी की है, इनके शौहर का नाम मोहम्मद बिन जाफ़र बिन क़ासिम इब्ने इस्हाक़ बिन अब्दुल्ला हबिन जाफ़र बिन अबी तालिब था, वह वालिदा थीं हसन बिन मोहम्मद बिन जाफ़र इब्ने क़ासिम की , इनके मुताअल्लिक़ नुरूल अबसार शिबलन्जी में करामत भी मज़कूरा मरकूम है। (मुंतही अलामाल फ़ी तारीख़ अल नबी व अल्ल जिल्द २ सफ़ा ३१३ तबा तेहरान १३७६ हिजरी) मेरे नज़दीक इसी को तरजीह है। वाज़े हो कि तहक़ीक़ का दरवाज़ा बन्द नहीं है। इस पर मज़ीद ग़ौर किया जा सकता है।

कुम की मुख़्तसर तारीख़ और जनाबे फ़ात्मा (स.) " मासूमए कुम " के मुख़्तसर हालात

कुम नाम है **ईरान** के एक क़दीम और अज़ीम शहर का जिसकी बुनियाद बारवाएते महल "अलहादी " दारूल तबलीग़ इस्लामी कुम ईरान , २ हिजरी पड़ी थी जिसका ज़िक्र " जिसका नाम शाहनामा फ़िरदौसी " में है। एक रवाएत की बिना पर ८३ में क़ायम हुई थी।

कुम की वजहे तसमिया :-कुम की वजह तसमिया के मुतालिक़ बहुत से अक़वाल हैं (१) इस जगह का नाम "को मैदान" था। फिर "कुम" और बाद में कुम हो गया। (२) इस शहर से २० किलो मी. पर ग़रबी जानिब एक पहाड़ है जिसका नाम "क़मु" है। इसी मुनासेबत से यह नाम पड़ा जो बाद में "कुम" हो गया (३)इसकी आबादी से कबल कुछ लोग इस मुक़ाम पर आ ठहरे थे और उन्होंने जगंल को काट कर और इसके गढों को पाट कर अपने खेमें नसब किए थे और मकानात बनाए थे और इस जगह का नाम "कोतह " रखा था। जिस से "कुम" हो गया फिर बाद में "कुम" बन गया (अलहादी कुम ईरानी ज़ीक़ाद १३९२ हिजरी सफ़ा ९६) (४) जब कश्तीए नूह चक्कर लगाती हुई इस सर ज़मीन पर पहुँची थी तो ठहर गई थी लेहाज़ा इसके क़याम की वजह से इस जगह का नाम "कुम" क़रार पाया (५) इस इलाक़े के बाशिन्दे , क़ाएमे आले मोहम्मद के ज़हूर करते ही इनकी ख़िदमत में हाज़िर हो जाएंगे और इनके साथ क़ाएम रहेंगे और इनकी मद्‌द करेंगे इसी लिए इसका नाम "कुम " रखा गया है। (सफ़ीनतुल बेहार जिल्द २ सफ़ा ४४६)

यह मुक़ाम बहुत से क़रियों में घिरा हुआ था, उन्हीं क़रियों में से एक का नाम "कमन्दान" था। इसी के नाम पर इस इलाक़े का नाम जो अब " कुम " मशहूर है, कमन्दान रख दिया गया मुरवरे अय्याम और कसरते इस्तेमाल की वजह से "कुम" हो गया।

(मजालिस अल मोमेनीन शहीदे सालिस सफ़ा ३६)

कुम और अहले कुम के फ़ज़ाएल

तारीख़ कुम, से मुस्तफाद होता है कि यह वह जगह है जिसने **"यौमे अलस्त"** सब ज़मीनों से पहले विलाएते अमीरल मोमेनीन को क़ुबूल किया था। इसी लिए ख़ुदा ने जन्नत का एक दरवाज़ा इसकी तरफ़ खोल दिया है।

अल्लामा शेख़ अब्बास क़ुम्मी तहरीर फ़रमाते हैं (१) कूफ़े को तमाम शहरों पर

फ़ज़ीलत है। लेकिन कुम और अहले कुम को तमाम दुनियाँ पर फ़ज़ीलत है और इसके बाशिन्दों को मशरिक़ व मग़रिब और जिन व इन्स पर फ़ज़ीलत है (२) खुदा ने यहाँ के लोगों को दीन और ईमान में हमेशा अज़ीम तौफ़ीक़ दी है (३) इन अल्लला यामद फूअता अन कुम वालेही " तमाम बलाऐं कुम और अहले कुम से दूर रखी गई हैं यहीं मलाएक दफ़्ये बला के लिए हाज़िर रहते हैं (४) किसी दुश्मन ने कभी कुम पर ग़लबा हासिल नहीं किया (५) कुम अल्लाह की तरफ़ से इल्म व फ़ज़्ल का मरकज़ बनाया गया है। (६) हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.) इरशाद फ़रमाते हैं कि जब सारी दुनियाँ में फ़ितना फैल जाए तो कुम में पनाह ले लेना चाहिए। (७) मासूम फ़रमाते हैं अहले कुम हमारे ख़ास मद्दगारों में से हैं। (८) हज़रत अमीरल मोमेनीन(अ.) फ़रमाते हैं कुम आले मोहम्मद का मरकज़े सुकून और शियों का मलजा व मावा है। (९) हज़रत इमाम रज़ा(अ.) फ़रमाते हैं कि जन्नत के आठ दरवाज़ों में से एक दरवाज़ा कुम में है। कुम के बाशिन्दे क़ाबिले मुबारक बाद हैं (१०) हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.) फ़रमाते हैं कि कुम हमारे शियों और दोस्तों का गढ़ है (११) कुम मौज़ए क़दमे जिबराईल है, यहाँ एक ऐसा चश्मा है कि जो इससे पानी पी ले शिफ़ायाब हो हाए यही वह चश्मा है जिससे हज़रत ईसा (अ.) ने उस मिट्टी को गूँधा था, जिससे बा हुक्मे खुदा ताएर बनाया था, जिसका ज़िक्र कुराने मजीद में है (१२) सादिक़ आले मोहम्मद फ़रमाते हैं कि अहले कुम का हिसाब व किताब सब क़ब्र ही में होगा और वहीं से वह जन्नत चले जाऐंगें एक रवाएत में है कि इनका हिसाब व किताब न होगा और यूँही जन्नत में चले जाऐंगे (कनज़ुल अनसाब सफ़ा ९) (१३) मासूम(अ.) फ़रमाते हैं कि " लौलल क़मेयून लेज़ायद्दीन " अगर अहले कुम न होते तो दीन ज़ाया हो जाता (१४) एक हदीस में है कि अहले कुम बख़्शे हुए हैं (१५) इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.) फ़रमाते हैं कि कुम की मिट्टी मुक़द्दस है " व अहलहा मना व नजन मिनहुम " इसके बाशिन्दे हम से हैं और हम उनसे हैं, जो दुश्मन कुम की तरफ़ आँख उठा कर देखेगा वासिले जहन्नम होगा। कुम हमारा और हमारे शियो का शहर है "मुतहरता मक़दसतह, पाक और पाकीज़ा और मुक़द्दस है। यह हमारे क़ाएम की मद्द करने वाले हैं और हमारे हक़ के पहचानने वाले हैं (१६) यह वह हैं जिन्होंने सबसे पहले खुमस अदा किया और सबसे पहले हमारे नाम पर जाएदादें वक्फ़ कीं (१७) हज़रत सादिक़ आले मोहम्मद (स.) फ़रमाते है कि " सयाती ज़मान तकून बलदता कुम व अहलहा हुज्जतह अला अल खलाएक़ व ज़ालाका फ़ी ज़मान ग़ैबता क़ाएमना अला ज़हूरहा वाला ज़ालक लसाख़्तह अर्ज़ बहालहा अलख़ " अनक़रीब एक ज़माना आने वाला है कि कुम और इसके बाशिन्दे काएनात पर खुदा की हुज्जत होंगे और यह ज़माना ग़ैबते इमाम आखिरूज़मान में आएगा और ज़हूर तक मुमतद होगा और अगर ऐसा न होगा तो ज़मीन पानी में डूब जाएगी।

(सफ़ीनतुल बेहार जिल्द २ सफ़ा ४४६)

दारूल तबलीगे इस्लामी कुम ईरान

मज़कूरा हदीस में जिस अहद की तरफ इशारह है। हो सकता है उससे मुराद इसी इदारे का अहद हो जिसका इस्तेदाद कयामत तक मम्किन है और अहले कुम के हुज्जत होने से मुराद आएत उल्ला उज़मा, मरजये तक्लीद सरकार शरीअत मदार हज़रत आका सय्यद मोहम्मद काज़िम मुजतहिदे आज़म ज़ईमे हौज़ए इलमिया कुम व कीम एदारा मज़कूरह का वजूद ज़ी जूद हो कि वही अहदे हाज़िर नाएब इमाम होने की वजह से हुज्जत हैं।

हज़रत मासूमए कुम के मुताल्लिक हज़रत इमाम जाफर सादिक (अ.) की पेशीन गोई

सादिक आले मोहम्मद (स.) **हज़रत इमाम जाफर सादिक** (अ.) इरशाद फरमाते हैं कि अल्लाह की वजह मक्कए हरम रसूल (स.) की वजह से मदीना हरम। अमीरल मोमेनीन (अ.) की वजह से कूफ़ा (नजफ़) हरम है। " वानलना हरमन वहू बलदतन कुम वसतदफ्न फीहा अमराता मन अवलादी तसमी फात्मता अलख " और हम दीगर अहले बैत की वजह से शहरे कुम हरम है और अन्करीब इस शहर में हमारी औलाद से एक मोहतरमा दफ्न होंगी जिनका नाम होगा । " फात्मा बिन्ते इमाम मूसा काज़िम (अ.) (सफीनतुल बेहार जिल्द २ सफ़ा २२६)

कुम में हज़रत मासूमए कुम की आमद

हजरत इमाम जाफ़र सादिक (अ.) की पेशीन गोई के मुताबिक बारावाएते अल्लामा मजलिसी (र.) हज़रत फात्मा हजरत इमाम मूसा काज़िम (अ.) हमेंशा हज़रत इमाम रज़ा (अ.)उस ज़माने यहाँ तशरीफ लाए जबकि २००हिजरी में मामून रशीद ने हज़रत इमाम रज़ा (अ.) को जबरन मरू, बुलाया था। अल्लामा शेख़ अब्बास कुम्मी लिखते हैं कि जब मामून रशीद ने इमाम रज़ा(अ.) बजब्रो इकराह वली अहद बनाने के लिए दारूल खुलफ़ा मरू में बुला लिया था तो इसके एक साल बाद हज़रत फ़ात्मा भाई की मोहब्बत से बेचैन हो कर ब इरादए मरू, मदीना से निकल पड़ी थीं। चुनांचे मराहले सफ़र तय करते हुए बा मुकाम "सावा" पहुँचीं तो अलील हो गईं। जब आपकी रसीदगी सावा और अलालत की ख़बर मूसा बिन ख़िज़रिज बिन साद कुम्मी को पहुँची तो वह फ़ौरन हाज़िरे ख़िदमत हो

कर अर्ज़ परदाज़ हुए कि आप कुम तशरीफ ले चलें । उन्होने पूछा कि कुम यहाँ से कितनी दूर है। मूसा ने कहा कि १० फरसख़ है वह रवानगी के लिए आमादा हो गईं, चुनांचे मूसा बिन ख़िज़रिज उनके नाके की मेहार पकड़े हुए कुम तक लाए। यहाँ पहुँच कर उन्हीं के मकान में जनाबे फ़ात्मा ने क़याम फ़रमाया। भाई की जुदाई का सदमा शिद्दत पकड़ता गया और अलालत बढती गई यहाँ तक कि सिर्फ १७ यौम के बाद आपने इन्तेक़ाल फरमाया। " इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहे राजेऊन " आपके इन्तेक़ाल के बाद से ग़ुस्लो कफ़न से फ़राग़त हासिल की गई और बामुक़ाम "बाबलान" (जिस जगह रौज़ा बना हुआ है) दफ़न करने के लिए ले जाया गया और इस सरदाब में जो पहले से आपके लिए (क़ुदरती तौर पर) बना हुआ था उतारने के लिए बाहमी गुफ्तगू शुरू हुई " कि कौन उतारे " फ़ैसला हुआ कि " क़ादिर " नामी इनका ख़ादिम जो मर्दे सालेह है वह क़ब्र में उतारे इतने में देखा गया कि रेगज़ार से दो नक़ाब पोश नमूदार हुए और उन्होंने नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और वही क़ब्र में उतरे फिर तदफ़ीन के फ़ौरन बाद वापस चले गए। यह न मालूम हो सका कि दोनों कौन थे ? फिर मूसा बिन ख़िज़रिज ने क़ब्र पर बोरिए का छप्पर बना दिया इसके बाद हज़रत ज़ैनब बिन्ते हज़रत इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.) ने क़ुब्बा बनवाया (मुन्थी अलमाल जिल्द २ सफ़ा २४२) फिर मुख़्तलिफ़ अदवार शाही में इसकी तामीर व तज़ीन होती रही तफ़सील के लिए मुलाहेज़ा हो। (नाहनामा अल हादी कुम ईरान ज़ीक़ाद १३८३ हिजरी सफ़ा १०५)

हज़रत मासूम-ए-कुम की ज़्यारत की अहमियत

हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.) फ़रमाते हैं कि जो मासूमए कुम की ज़्यारत करेगा उसके लिए जन्नत वाजिब होगी, हदीस अयून के अलफ़ाज़ यह हैं "मन जारहा वजबत लहा अलजन्नता "(सफ़ीनतुल बिहार जिल्द २ सफ़ा ४२६) अल्लामा शेख़ अब्बास कुमी, अल्लामा क़ाज़ी नुरूल उल्लाह शुस्तरी(शहीद सालिस) से रवाएत करते हैं कि हज़रत इमाम जाफर सादिक़ (अ.) इरशाद फ़रमाते हैं कि "तद ख़िल ब शफ़ाअताहा शैती अल जन्नता " मासूमए कुम की शिफ़ाएत से कसीर शिया जन्नत में जाएंगे। (सफ़ीनतुल बेहार जिल्द २ सफ़ा ३८६) हज़रत इमाम रज़ा(अ.) फ़रमाते है कि "मन ज़ारहा फलहू अलजन्नता" जो मेरी हमशीरा की क़ब्र की ज़्यारत करेगा उसके लिए जन्नत है। एक रवाएत में है कि अली बिन इब्राहीम ने अपने बाप से उन्होने साद से उन्होंने अली बिन मूसिए रज़ा से रवाएत की है वह फ़रमाते हैं कि ऐ साद तुम्हारे नज़दीक हमारी एक क़ब्र है, रावी ने अर्ज़ की मासूमए कुम की फ़रमाया हाँ ऐ साद "मन ज़ारहा अरफ़ाबहक़हा फलहू अल जन्नता " जो इनकी ज़्यारत इनके हक़ को पहचान के करेगा। इसके लिए जन्नत है, यानी वह जन्नत में जाएगा। (सफ़ीनतुल बेहार जिल्द २ सफ़ा ३७६ तबा ईरान)



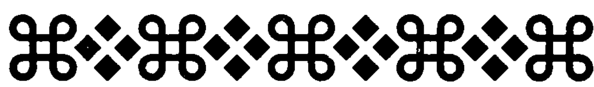
अबु जाफ़र

हज़रत

इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.)

दिये जवाब तक़ी ने, वह बर सरे दरबार।
कि दगं थे उलमा, तिफ़्ल की बसीरत से।।
दिखाए इल्म के जौहर वह इब्ने अक्सम को।
कि वाफ़्क़ीह भी, वाकिफ़ हुये इमामत से।।

साबिर थरयानी " कराची "



بسم الله الرّحمٰن الرّحيم

(बाब-११)

हज़रत इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.)

तरके दुनियाँ में नहीं, मशक़े रियाज़त में नहीं
कसरते इल्म में तौफ़ीक़, बसीरत में नहीं
दिल की एक कैफ़ीयते ,ख़ास है तक़वा बानो
तरज़ पोशिश में नहीं शक्लो, शबाहत में नहीं

हज़रत इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.) पैग़म्बरे इस्लाम हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा (स.) के नवें जानशीन हमारे नवें इमा और सिलसिलए अस्मत की ग्यारवीं कड़ी थे। आपके वालिद माजिद वली अहदे सलतनते अब्बासीया ग़रीबुल ग़ुरबा शहीदे जफ़ा इमाम रज़ा (अ.) थे और अपकी वालदा माजदा जनाबे ख़ैज़रान उर्फ सकीना थीं। उलमा का बयान है कि आप उम्मुल मोमिनीन जनाब मारया क़िबतिया यानी वालदा जनाबे इब्रहीम बिन रसूल करीम (स.) की नस्ल से थीं। (शवाहिद अल नबूअत सफ़ा २०४ रौज़तुल सफ़ा जिल्द ३ सफ़ा १६)

इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.) अपने अबाओ अजदाद की तरह , इमाम मन्सूस , मासूम, इल्म ज़माना और अफज़ल काएनात थे, आप जुमला सिफाते हुस्ना में यगाना रोज़गार और मुम्ताज़ थे। अल्लामा बिन तलहा शाफई लिखते हैं। “वइन कान सग़ीर अलसन फ़हू कबीर अलक़दर, रफ़ीह अलज़कर”। इमाम (अ.) अगरचे तमाम मासूमीन में सबसे कम सिन और छोटे थे। लेकिन आपकी क़दरो मन्ज़ेलत आपके अबाओ अजदाद की तरह निहाएत ही अज़ीम थी, और आपका बुलन्द तज़किरा बर सरे नोक ज़बान था।

(मतालेबुल सुवेल सफ़ा १६५)

अल्लामा हुसैन वाएज़ काशफ़ी लिखते हैं “मुक़ामे वै बिसयार बुलन्द अस्त” आपकी मन्ज़िलत और आपकी हस्ती ” नेहायत ही बुलन्द थी।(रौज़तुल शोहदा सफ़ा ४३८)

अल्लामा ख़विन्द शाह लिखते हैं । “ दर कमाल फज़ल व इल्म और हिकमत इमाम जवाद बामरतबाबूदह कि हेच कसरा अज़ आज़मे सादात आन मरतबा ना बूदा ” इल्म व फज़ल , अदब व हिकमत में इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.) को वह कमाल हासिल था जो किसी को भी नसीब ना था। (रौज़तूल सफ़ा जिल्द ३, सफ़ा १६)

399

अल्लामा शिबलन्जी लिखते हैं कि इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.) कमसिनी के बावजूद फ़ज़ाएल से भर पूर थे " व मुनक़बये कसीरा " और आपके मनाक़िब व मदारिज बेशुमार हैं। (नुरूल अबसार सफ़ा १४५)

अल्लामा तबरसी लखते हैं "कान क़द बलग़ फ़ी कमाल अलअक़्ल व़ल फ़ज़्ल वा आलेम व अल हकम वा अलदाब वरिफ़अते माज़लतेही लम यसा व फ़ीहा अहद मन ज़ी अलसिन मन अलसादात वग़ैरहिम"आप कमाले अक़्ल और फ़ज़्ल और इल्म व हुक्म व आदाब व बुलन्दी मनज़िलत में इन मदारिज पर फ़ाएज़ थे जिन पर आपके सिन और उमर के सादात और ग़ैर सादात में से कोई भी फ़ाएज़ न था। (अलाम अल वरा सफ़ा २०२) **अल्लामा शेख़ मुफ़ीद** (र.) आपकी बुलन्दीए मन्ज़ेलत का ज़िक्र करते हुए तहरीर फ़रमाते हैं। मशाययख़ अहले ज़बान बा ३ मसावी दरफ़ज़्ल न बुदन्द " कि इस अहद में दुनियाँ के बड़े बड़े लोग फ़ज़ाएल व कमालात में आपकी बराबरी नहीं कर सकते थे। (इरशाद सफ़ा ४७४)

इमाम (अ.) की विलादत बा सआदत।

उलमा का बयान है कि इमाम अलमुत्तक़ीन हज़रत इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.) बा तारीख़ १० रजबुल मुरज्जब १९५ हिजरी में बामुताबिक़ ८११ई० यौम जुमा बामुक़ाम मदीना मुनव्वरा मोतावल्लिद हुए थे।(रौज़तुल अलसफ़ा जिल्द २ सफ़ा १६ व शवाहेदुन नबूअत सफ़ा २०४ व अनवारे नोमानी सफ़ा १२७)

अल्लामा यगाना जनाबे शेख़ मुफ़ीद (र.) फ़रमाते हैं। चूँकि हज़रत इमाम रज़ा (अ.) के कोई औलाद आपकी विलादत से क़बल न थी। इसलिए लोग ताना ज़नी करते हुए कहते थे कि शियों के इमााम मुन क़ता उल नस्ल हैं। यह सुन कर हज़रत इमाम रज़ा (अ.) ने इरशाद फ़रमाया कि औलाद का होना ख़ुदा की इनाएत से मुतअल्लिक़ है। उसने मुझे साहेबे औलाद किया है और अनक़रीब मेरे यहाँ मस्नदे इमामत का वारिस पैदा होगा। चुनांचे आपकी विलादत बासाअदत हुई। (इरशाद सफ़ा ४७३)

अल्लामा तबरीसी लिखते हैं कि हज़रते इमाम रज़ा (अ) ने इरशाद फ़रमाया था कि मेरे यहाँ जो बच्चा अनक़रीब पैदा होगा वह अज़ीम बरकतों का हामिल होगा।(अलामुल वरा सफ़ा २००) वाक़ए विलादत के मुतअल्लिक़ लिखा है कि इमाम रज़ा(अ.) की बहन हकीमा ख़ातून फ़रमाती हैं कि एक दिन मेरे भाई ने मुझे बुला कर कहा कि आज तुम मेरे घर में क़याम करो क्यों कि ख़ैज़रान के बतन से आज रात को ख़ुदा मुझे एक फ़रज़न्द अता फ़रमाएगा। मैंने ख़ुशी के साथ इस हुक्म की तामील की जब रात आई तो हमसाया और चन्द औरतें भी बुलाई गईं, निस्फ़ शब से ज़्यादा गुज़रने पर यका यक वज़ए हमल के आसार नमूदार हुए। यह हाल देख कर मैं ख़ैज़रान को हुजरे में ले गई, और मैंने चिराग़ रौशन

कर दिया। थोड़ी देर में इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.) पैदा हुए। मैंने देखा कि वह मख़तून और नाफ़ बुरीदा हैं। विलादत के बाद मैंने नहलाने के लिए तश्त में बिठाया, इस वक़्त जो चिराग़ रौशन था गुल हो गया मगर फिर भी उस हुजरे में रौशनी ब दस्तूर रही और इतनी रौशनी रही कि मैंने बच्चे को आसानी से नहला दिया। थोड़ी देर में मेरे भाई इमाम रज़ा (अ.) भी वहाँ तशरीफ़ ले आए। मैंने निहायत उजलत के साथ साहब ज़ादे को कपड़े में लपेट कर हज़रत की आगोश में दे दिया। आपने सर और आँखो पर बोसा देकर फिर मुझे वापस कर दिया। दो दिन तक इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.) की आँखें बन्द रहीं हैं। तीसरे दिन जब आँखें खुलीं तो आपने सबसे पहले आसमान की तरफ़ नज़र की। फिर दाहिने बाऐ देख कर कलमए शहादतैन ज़बान पर जारी किया। मैं यह देख कर सख़्त मुतअजिब हुई और मैंने सारा वाक़ेया अपने भाई से बयान किया। आपने फ़रमाया ताअज्जुब न करो, यह मेरा फ़रज़न्द हुज्जते ख़ुदा और वसीए रसूल (स.) हादी है। इससे जो अजाएबात ज़हूर पज़ीर हों, उनमें ताअज्जुब क्या ? मोहम्मद बिन अली नाक़िल हैं हज़रत इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.) के दोनों कंधों के दरमियान इसी तरह मोहरे इमामत थी। जिस तरह दीगर आईम्मा (अ.) के दोनों कांधों के दरमियान मोहरें हुआ करती थीं। (मुनाक़िब)

नाम कुन्नियत और अलक़ाब :- आपका इसमें गिरामी , लौहे महफ़ूज़ के मुताबिक़ उनके वालिद माजिद हज़रत इमाम रज़ा (अ.) ने (मोहम्मद) रखा। आपकी कुन्नियत "अबू जाफर "और आपके अलक़ाब जवाद , कानेह, मुर्तुज़ा थेऔर मशहूर तरीन लक़ब तक़ी था। (रौज़तुल अल सफ़ा जिल्द ३ सफ़ा ,१६ शवाहेदनु नबूअत सफ़ा २०२ आलाम अलवरा सफ़ा १६६)

बादशाहाने वक़्त :- हज़रत इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.) की विलादत १६५ हिजरी में हुई। इस वक़्त बादशाहे वक़्त ,अमीन इब्ने हारून रशीद अब्बासी था।,(दफियात अलअयान) १६८ हिजरी में मामून रशीद बाद शहे वक़्त हुआ।(तारीखें खमीस वाअबुल फिदा)। २१८ हिजरी में मोतसिम अब्बासी ख़लीफ़ए वक़्त क़रार पाया। (अबुल फिदा) इसी मोतसिम ने सन् २२०, हिजरी में आपको ज़हर से शहीद करा दिया। (वसीलतुन नजात)

इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.) की नशो नुमा और तरबीअत

यह एक हसरत नाक वाक़िया है कि इममा मोहम्मद तक़ी (अ.) को निहायत कमसिनी ही के ज़माने में मसाएब और परेशानियों का मुक़ाबला करने के लिए तैय्यार हो जाना पड़ा। उन्हे बहुत ही कम इतमेनान और सुकून के लमहात में बाप की मोहब्बत और शफ़क़तो तरबीअत के साए में ज़िन्दी गुज़ारने का मौक़ा मिल सका। आपको सिर्फ़ पांचवा बरस था जब हज़रते इमाम रज़ा (अ.) मदीने से ख़ुरासान की तरफ़ सफ़र करने पर

मजबूर हुए। इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.) उस वक़्त से जो अपने बाप से जुदा हुए तो फिर ज़िन्दगी में मुलाक़ात का मौक़ा ना मिला। इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.) से जुदा होने के तीसरे साल इमाम रज़ा (अ.) की वफ़ात हो गई। दुनियाँ समझती होगी कि इमाम मोहम्मद तक़ी(अ.) के लिए इल्मी और अमली बलन्दियों तक पहुँचने का कोई ज़रिया नहीं रहा इस लिए अब इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.) की इल्मी मस्नद शायद ख़ाली नज़र आए मगर ख़लक़े ख़ुदा की हैरत की इन्तेहा न रही जब इस कम सिन बच्चे को थोड़े दिन बाद मामून के पहलू में बैठ कर बड़े बड़े उलमा से फ़िक़ा व हदीस व तफ़सीर और कलाम पर मनाज़िरे करते और उन सबको क़ाएल हो जाते देखा। उनकी हैरत उस वक़्त तक दूर होना मुमकिन न थी जब तक वह माद्दी असबाब के आगे एक मख़सूस ख़ुदा वन्दी मर्दसा तालीम व तरबीअत के क़ाएल न होते जिसके बग़ैर यह मोअम्मा न हल हुआ और न कभी हल हो सकता है। (सवाने इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.) सफ़ा ४) मक़सद यह है कि इमाम को इल्मे लदुन्नी होता है यह अम्बिया की तरह पढ़े लिखे और तमाम सलाहियतों से भर पूर पैदा होते हैं। उन्होंने सरवरे काएनात की तरह कभी किसी के सामने ज़ानूए तल्लमुज़ नहीं तह किया और न कर सकते थे। यह इसके भी मौहताज नहीं होते थे कि आबाओ अजदाद उन्हें तालीम दें। यह और बात है कि इज़दियाद व इल्म शरफ़ के लिए ऐसा कर दिया जाय या उलूमे मख़सूसा की तालीम दे दी जाए।

वालिदे माजिद के सायए आत्फ़ित से महरूमी

यूं तो उम्मी तौर पर किसी के बाप के मरने से सायऐ आतिफ़त से महरूमी हुआ करती है। लेकिन हज़रत इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.) अपने वालिदे माजिद के सायऐ आतिफ़त से उनकी ज़िन्दगी ही में महरूम हो गए थे। अभी आपकी उमर छः साल की भी न होने पाई थी कि आप अपने पदरे बुर्जुगवार की शफक़तों अतूफ़त से महरूम कर दिए गए और मामून रशीद अब्बसी ने आपके वालिदे माजिद हज़रते इमाम रज़ा(अ.) को अपनी सियासी ग़रज़ के तहेत मदीने से ख़ुरासान तलब कर लिया, और साथ ही यह शर्त भी लगा दी कि आपके बाल बच्चे मदीने ही में रहेंगे। जिसका नतीजा यह हुआ कि आप सबको हमेशा के लिए ख़ैर बाद कह कर ख़ुरासान तशरीफ़ ले गए। और वहीं आलमें ग़ुरबत में सबसे जुदा मामून रशीद के हाथों ही शहीद हो कर दुनियाँ से रूख़सत हो गए।

अपके मदीने से तशरीफ़ ले जाने का असर ख़ानदान पर यह पड़ा कि सबके दिल का सुकून जाता रहा और सबके सब अपने को ज़िन्दा दरगोर समझते रहे। बिल आख़िर वह नौबत पहुँची कि आपकी हमशीरा जनाबे फ़ात्मा जो बाद में " मासूमए क़ुम के नाम से मुलक़्क़ब" हुई। इन्तेहाई बेचैनी की हालत में घर से निकल कर ख़ुरासान की तरफ़ रवाना हो गईं,उनके दिल में जज़्बात यह थे कि किसी तरह अपने भाई अली रज़ा(अ.)

से मिलें। लेकिन एक रवाएत की बिना पर आप मदीने से रवाना होकर जब मुक़ामे वसावा में पहुँची तो अलील हो गईं। आपने पूछा यहाँ से कुम कितनी दूर है, लोगों ने कहा कि यहाँ से कुम की मसाफ़त १० फ़रसख़ है। आपने ख़्वाहिश ज़ाहिर की किसी सूरत से वहां पहुँचा दी जाऐं। चुनांचे आप आले साद के रईस मूसा बिन ख़ज़रज की कोशिश से वहाँ पहुँची और उसी के मकान में १७ यौम बीमार रह कर आपने भाई को रोती पीटती दुनियाँ से रूख़सत हो गईं और मक़ामे "बाबूलान" कुम में दफ़्न हुईं। यह वाक़िया २०१ हिजरी का है। अनवारूल हुसैनिया जिल्द ४ सफ़ा ५३) और एक रवाएत के बिना पर आप उस वक़्त ख़ुरासान पहुँची जब भाई शहीद हो चुका था और लोग दफ़्न के लिए काले काले अलमों के साए में लिए जा रहे थे। आप कुम आकर वफ़ात पागईं। हज़रते इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.) हज़रत इमाम रज़ा(अ.) की जुदाई क्या कम थी कि उस पर मुस्तज़ाद अपनी फुफ़ी के साए से भी महरूम हो गए। हमारे इमाम के लिए कमसिनी में यह दोनों सदमे इन्तेहाई तकलीफ़ देह और रन्ज रसां थे। लेकिन मशीयते ऐज़दी में चारा नहीं। आख़िर आपको तमाम मराहिल का मुक़ाबला करना पड़ा और आप सब्रो ज़ब्त के साथ हर मुसीबत को झेलते रहे।

मामून रशीद अब्बासी और हज़रते इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.) का पहला सफ़रे ईराक़

अब्बसी ख़लीफ़ा मामून रशीद हज़रत इमामरज़ा (अ.) की शहादत से फ़रागत के बाद या इसलिए कि उसपर इमाम रज़ा (अ.) के क़त्ल का इल्ज़ाम साबित न हो सके या इसलिए कि वह इमाम रज़ा (अ.) की वली अहदी के मौक़े पर अपनी लड़की उम्मे हबीबा की शादी का एलान भी कर चुका था। कि वली अहद के फ़रज़न्द इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.) के साथ करेगा। उसे निभाने के लिए या इस लिए कि अभी उसकी सियासी ज़रूरत उसे मोहम्मद तक़ी (अ.) की तरफ़ तवज्जो की दावत दे रही थी। बहरहाल जो बात भी हो। उसने यह फ़ैसला कर लिया कि इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.) को मदीने से बग़दाद बुलाया जाए। जो इमाम रज़ा की शहादत के बाद पाऐ तख़्त बनाया जा चुका था। चुनांचे दावत नामा इरसाल किया और उन्हें इसी तरह मजबूर करके बुलाया जिस तरह इमाम रज़ा (अ.) को बुलवाया था " हुक्मे हाकिम मर्गे मफ़ाजात " बिल आख़िर इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.) को बग़दाद आना पड़ा।

बाज़ और मच्छली का वाक़िया

इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.)जिनकी उमर उस वक़्त तक़रीबन ६, साल की थी।

एक दिन बग़दाद के किसी गुज़रगाह में खड़े हुए थे और चन्द लड़के वहाँ खेल रहे थे। कि नागाह ख़लीफ़ा मामून की सवारी दिखाई दी, सब लड़के डर कर भाग गए मगर हज़रत इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.) अपनी जगह पर खड़े रहे। जब मामून की सवारी वहां पहुंची तो उसने हज़रत इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.) से मुख़ातिब हो कर कहा कि साहब ज़ादे सब लड़के भाग गए तो तुम क्यों नहीं भागे उन्होंने बेसाख़्ता बिला ताअम्मुल जवाब दिया मेरे खड़े रहने से रास्ता तगं न था, जो हट जाने से वसी हो जाता और न कोई जुर्म किया था कि डरता नीज़ मेरा हुसने ज़न है कि तुम बेगुनाह को ज़र्र नहीं पहुँचाते । मामून को हज़रत इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.) का अन्दाज़े बयान बहुत पसन्द आया। इसके बाद मामून वहाँ से आगे बढ़ा, उसके साथ शिकारी बाज़ भी थे जब आबादी से बाहर निकल गया तो उसने एक बाज़ को एक चकोर पर छोड़ा। बाज़ नज़रों से ओझल हो गया और जब वापस आया तो उसकी चोच में एक छोटी सी जिन्दा मच्छली थी जिसको देख कर मामून बहुत मुतअज्जिब हुआ। थोड़ी देर में जब वह इसी तरह लौटा तो उसने हज़रत इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.) को दूसरे लड़कों के साथ वहीं देखा जहां वह पहले थे। लड़के मामून की सवारी देख कर फिर भागे। लेकिन हज़रत मोहम्मद तक़ी (अ.) बदस्तूर साबिक़ वहीं खड़े रहे। जब मामून उनके क़रीब आया, तो मुठ्ठी बन्द करके कहने लगा साहब ज़ादे बताओ मेरे हाथ में क्या है उन्होंने फ़रमाया अल्लाह ताला ने अपने दरियाए क़ुदरत में छोटी मछलियां पैदा कीं है और सलातीन आपने बाज़ से उन मछलियों का शिकार करके अहले बैते रिसालत के इल्म का इम्तेहान लेते हैं। यह सुन कर मामून बोला! बेशक तूम अली बिन मुसा रजा (अ.) के फ़रज़न्द हो फिर उनको अपने साथ लेता गया।

(सवायक़े मोहर्रेक़ा सफ़ा १२३ मतालेबुल सुवेल सफ़ा २६० शवाहेदुन नबूअत सफ़ा २०४ नुरूल अबसार सफ़ा १४५ अरहज्जुल मतालिब सफ़ा ४५६)

यह वाक़िया हमारी भी बाज़ किताबों में है, इस वाक़िए के सिलसिले में जिन किताबों का हवाला दिया है उनमें " इन्नल्लहा ख़लक़ फ़ी बहरे क़ुदरताहू समाकन सग़ारन"मुन्दरिज है अलबत्ता बाज़ कुतुब में "बैन अलसमाआ व अलहवाअन " लिखा है अव्वलउज़ ज़िक्र के मुतअल्लिक़ तवील का सवाल ही पैदा नहीं होता। क्यों कि हर दरिया खुदा की क़ुदरत से जारी है और मज़कूरा वाक़िये में इमकान क़वी है कि बाज़ ऐसी ज़मीन पर जो दरिया हैं उन्हें किसी एक से शिकार करके लाया होगा। अल्बत्ता अख़िर उज ज़िक्र के मुतअलिलक़ कहा जा सकता है(१) जहाँ तक मुझे इल्म है गहरे से गहरे दरिया की इन्तेहा किसी सतह अरज़ी पर है। (२)बक़ौल अल्लामा मजलिसी दरिया ऐसे हैं जिनसे अबर छोटी मछलियों को उड़ा कर ऊपर ले जाते हैं (३) १६३२ ई० के अख़बार में यह शाया हो चुका है कि अमरीका की नहर पानामा में जो सन्डबोल बन्दरगाह के क़रीब है। मछलियों की बारिश हुई है (४) आसमान और हवा के दरमियान बहरे मुतलातिम से मुराद फ़िज़ा की वह

कैफ़ियात हों जो दरिया की तरह पैदा होते हैं (५) कहा जाता है कि इल्म हैवान में यह साबित है कि मच्छली दरिया से एक सौ पचास गज़ तक बाज़ हालात में बुलन्द हो जाती हैं। बहर हाल इन्हीं गहराईयों की रौशनी में फ़रज़न्दे रसूल (स.) ने मामून से फ़रमाया कि बादशाहे बहरे कुदरत खुदावन्दी से शिकार करके लाया है और आले मोहम्मद (स.) का इम्तेहान लेता है।

हज़रत इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.) से उलमाए इस्लाम का मनाज़ेरा और अब्बासी हासिदों की शिकस्ते फ़ाश

उलमाए इस्लाम का बयान है कि बनी अब्बास को मामून की तरफ़ इमाम रज़ा (अ.) को वली अहद बनाया जाना ही नाक़ाबिले बर्दाश्त था। इमाम रज़ा (अ.) की वफ़ात से एक हद तक उन्हें इतमीनान हासिल हुआ था, और उन्होंने मामून से अपने हस्ब दिलख़्वाह तसलीम कर लिया गया। इसके अलावा इमाम रज़ा (अ.) की वली अहदी के ज़माने में अब्बासीयों का मख़सूस शुमार यानी काला लिबास तर्क हो कर जो सब्ज़ लिबास का रवाज हो रहा था। उसे मन्सूख करके फिर सियाह लिबास की पाबन्दी आएद कर दी गई ताकि बनी अब्बास के रवायाते क़दीम मख़सूस रहें यह सब बाते आब्बसीयों को यक़ीन दिला रहीं थी कि वह मामून पर पूरा क़ाबू पा चुके हैं, मगर अब मामून का यह इरादा कि वह इमाम मोहम्मद तक़ी(अ.) को अपना दामाद बनाऐं। उन लोगों के लिए तशवीश का बाएस बना और इस हद तक बना कि वह अपने दिली रूझान को दिल में न रख सके और एक वफ्द की शक्ल में मामून के पास आकर अपने जज़बात का इज़हार कर दिया।उन्होन साफसाफ कहा कि इमाम रज़ा (अ.) के साथ जो आपने तरीक़ा इख़तेआर किया, वही हमको ना पसन्द था। मगर वह ख़ैर कम अज़ कम औसाफ़ व कमालात के लेहाज़ से नाकाबिले इज़्ज़त भी समझे जा सकते थे, मगर यह उनके बेटे " मोहम्मद " तो अभी बिल्कुल कमसिन हैं। एक बच्चे को बड़े-बड़े उलमा, मुवज़्ज़ेज़ीन पर तरजीह देना और इस क़दर इसकी इज़्ज़त करना हरगिज़ ख़लीफ़ा के लिए ज़ेबा नहीं है फिर उम्मे हबीबा का निकाह जो इमाम रज़ा के साथ किया गया था, उससे हमको क्या फ़ाएदा पहुँचा जो उम्मे अफ़ज़ल का निकाह मोहम्मद बिन अली के साथ किया जा रहा है।

मामून ने तमाम तक़रीर का यह जवाब दिया। कि " मोहम्मद " कमसिन ज़रूर हैं, मगर मैंने खूब अन्दाज़ा कर लिया है , औसाफ़ और कमालात में वह अपने बाप के पूरे जांनशीन हैं और आलमे इस्लाम के बड़े - बड़े उलमा जिनका तुम हवाला दे रहे हो

वह इल्म में उनका मुक़ाबेला नहीं कर सकते , अगर तुम चाहो तो इमतेहान ले कर देख लो,फिर तुम्हें भी फ़ैसले से मुत्तफ़िक़ होना पड़ेगा।

यह सिर्फ़ मुन्सेफ़ाना जवाब ही नहीं, बल्कि एक तरह का चैलेन्ज था जिस पर मजबूरन उन लोगों को मनज़िरा की दावत मन्ज़ूर करना पड़ी। हालाँकि ख़ुद मामून तमाम सलातीन बनी अब्बास में यह खुसूसीयत रखता है कि मोर्वेख़ीन इसके लिए यह अलफ़ाज़ लिख देते हैं। "काना यादा मन कबारल फ़ुक़ाहा" यनी इनका शुमार बड़े बड़े फ़क़ीहों में है। इसलिए इसका फ़ैसला ख़ुद कुछ कम वक़्त न रखता था, मगर इन लोगों ने इसपर इक्तेफ़ा नहीं की बल्कि बग़दाद के सबसे बड़े आलिम यहया बिने अक्सम को इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.) से बहस के लिए मुन्तख़ब किया मामून ने एक अज़ीमुश्शान जलसा इस मनाज़िरे के लिए मुनअक़िद किया और आम ऐलान करा दिया। हर शख़्स इस अजीब और बज़ाहिर ग़ैर मुतावाज़िन मुक़ाबले के देखने का मुशताक़ हो गया। जिस में एक तरफ़ एक नौ बरस का बच्चा था और दुसरी तरफ़ एक आमूदाकार आरै शोरए अफ़ाक़ क़ाज़िउल क़ुज़्ज़ाज़त। इसी का नतीजा था कि हर तरफ़ से ख़लाएक़ का हुजूम हो गया।

मुवर्रेख़ीन का बयान है कि अरकाने दौलत और मोअज़्ज़ेज़ीन के अलावा इस जलसे में नव सौ कुर्सियाँ फक़त उलमा व फ़ुज़ला के लिए मखसूस थीं और इसमें कोई ताज्जुब भी नहीं। इसलिए कि यह ज़माना अब्बासी सलतनत के शबाब और बिल खुसूस इल्मी तरक़्क़ी के ऐतबार से ज़र्री दौर था और बग़दाद दारूल सलतनत था जहाँ तमाम अतराफ़े मुख़्तलिफ़ उलूम और फ़ुनून के माहेरीन खिंच कर जमा हो गए थे। इस एतबार से यह तादात किसी मुबालग़े पर मुबनी मालूम नहीं होती ।

मामून ने हज़रत मोहम्मद तक़ी (अ.) के लिए अपने पहलू में मसनद बिछवाई थी और हज़रत के सामने यहया बिने अक्सम के लिए बैठने की जगह थी। हर तरफ़ कामिल सन्नाटा था मजमा हमातन चश्म व गोश बना हुआ गुफ्तुगू शुरू होने के वक़्त का मुन्तज़िर ही था कि इस ख़ामोशी को यहिया के इस सवाल ने तोड़ दिया। जो उसने मामून की तरफ़ मुख़ातिब हो कर किया था क्या आप इजाज़त देते हैं मैं आपसे कुछ दरयाफ़्त करूँ।

हज़रत ने फ़रमाया ऐ यहिया ऐ यहिया तुम जो पूछना चाहो पूछ सकते हो। यहिया ने कहा। यह फ़रमाईए कि हालते एहराम में अगर कोई शख़्स शिकार करे तो इसका क्या हुक्म है?" इस सवाल से अन्दाज़ा होता है कि यहिया हज़रत इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.) की इल्मी पाबन्दी से बिल्कुल वाक़िफ़ न था। वह अपने ग़ुरूरे इल्म और जिहालत से यह समझता था कि यह कमसिन साहब ज़ादे तो हैं ही रोज़मर्रा के रोज़े नमाज़ के मसाएल से वाक़िफ़ हों तो हों। मगर हज वग़ैरा के अहकाम और हालते अहराम में जिन चीज़ों की मुमानियत है उनके कफ़्फ़ारों से भला कहाँ वाक़िफ़ होंगे।

इमाम(अ.) ने इसके जवाब में इस तरह सवाल के गोशों की अलग अलग तहलील फ़रमाई जिससे बग़ैर कोई जवाब अस्ल मसले का दिए हुए आपके इल्म की गहराईयों का यहिया और तमाम अहले महफ़िल को अन्दाज़ा हो गया। यहिया ख़ुद भी अपने को सुबुक पाने लगा और तमाम मजमे को भी इसका सुबुक होना महसूस होने लगा। आपने जवाब में फ़रमाया : यहिया तुम्हरा सवाल बिल्कुल मुबहम और मोहमल है। सवाल के ज़ैल में यह देखने की ज़रूरत है कि शिकार हिल में था कि हरम में। शिकार करने वाला मसले से वाकिफ़ था या ना वाकिफ़। इसने अमदन जानवर को मार डाला या धोखे से क़त्ल हो गया। या वह शख़्स आज़ाद था या ग़ुलाम कमसिन था या बालिग़, पहली मरतबा ऐसा किया था या इसके पहले भी ऐसा कर चुका था। शिकार परिन्द का था या कोई और छोटा था या बड़ा। वह अपने फ़ेल पर इसरार रखता है या पशेमान है। रात को या पोशीदा तरीक़े पर उसने यह शिकार किया या दिन दिहाड़े और एलानियाँ। एहराम उमरे का था या हज का। जब तक यह तमाम तफ़सीलात न बताए जाएं इस मसले का कोई मोअय्यन हुक्म नहीं बताया जा सकता।

यहिया कितना ही नाक़िस क्यों न होता ! बहरहाल फ़िक़ही मसाएल पर कुछ उसकी नज़र थी। इन कसीउत्ताए दाद शिक़ों के पैदा ही करने से ख़ूब समझ गया कि उनका मुक़ाबेला मेरे लिए आसान नहीं है उसके चहरे पर ऐसी शिकस्तगी के आसार पैदा हुए जिनका तमाम देखने वालों ने अन्दाज़ा कर लिया उसकी ज़बान ख़ामोश थी और वह कुछ जवाब न देता था।

मामून उसकी कैफियत का सही अन्दाज़ा करके उससे कुछ कहना बेकार समझा और हज़रत से अर्ज़ किया कि फिर आप तमाम शिक़ों के एहकाम बयान फ़रमा दिजिए। ताकि हम सबको इस्तेफादे का मौक़ा मिल सके इमाम(अ.) ने तफसील के साथ तमाम सूरतो से जुदागाना जो एहकाम थे बयान फ़रमा दिये आपने फ़रमाया" कि अगर एहराम बाधने के बाद " हिल " में शिकार करे और वह शिकार परिन्दा हो और बड़ा भी हो तो उस पर कफ़्फ़ारा एक बकरी है और अगर ऐसा शिकार हरम में किया है तो दो बकरीयाँ हैं और अगर किसी छोटे परिन्दे को हिल में शिकार किया है तो दुम्बे का एक बच्चा जो अपनी माँ का दुध छोड़ चुका हो। कफ़्फ़ारा देगा और अगर हरम में शिकार किया हो तो उस परिन्दे की क़ीमत और एक दुम्बा कफ़्फ़ारा देगा और अगर वह शिकार चौपाया हो तो उसकी कई किस्में हैं। अगर वह वहशी गधा है तो एक गाए और अगर शुतुरमुर्ग़ है तो एक ऊँट और अगर हिरन है तो एक बकरी कफ़्फ़ारा देगा। यह कफ़्फ़ारा तो जब है कि हिल में शिकार किया हो। लेकिन अगर हरम में किया हो तो यही कफ़्फ़ारे दुगने देने होगें,और उन जानवरों को जिन्हें कफ़्फ़ारे में देगा। अगर एहराम उमरे का था, तो ख़ानए काबा तक पहुँचाएगा। और मक्के में क़ुर्बानी करेगा, और एहराम हज का था तो मिना में क़ुर्बनी करेगा। और

इन कफ़्फ़ारों में आलिम व जाहिल दोनों बराबर हैं और इरादे से शिकार करने में कफ़्फ़ारा देने के अलावा गुनाहगार भी होगा। हाँ भूले से शिकार करने में गुनाह नहीं है। और अज़ाद अपना कफफारा खुद देगा। और गुलाम का कफफारा उसका मालिक देगा। और छोटे बच्चे पर कोई कफफारा नही है। और बालिग़ पर कफफारा देना वाजिब है। और जो शख़्स अपने इस फेल पर नादिम हो आख़ेरत के अज़ाब से बच जाएगा। लेकिन अगर इस फ़ेल पर इसरार करेगा तो आख़ेरत में भी इस पर अज़ाब हेगा।

यह तफ़सीलात सुन कर यहिया हक्का बक्का रह गया और सारे मजमें से अहसन्त अहसन्त की आवाज़ बुलन्द होने लगी। मामून को भी कद थी कि वह यहिया की रूसवाई को इन्तेहाई दर्जे तक पहुँचा दे। उसने इमाम से अर्ज़ की कि अगर मुनासिब मालूम हो तो आप भी यहिया से सवाल फ़रमाएं। हज़रत ने एख़लाक़न यहिया से दरियाफ़्त फरमाया कि क्या मैं भी तुम से कुछ पूछ सकता हूँ। यहिया अपने मुतअल्लिक़ किसी धोखे में मुबतिला न था। उसने कहा " कि हुज़ूर दरियाफ़्त फ़रमाएं ! अगर मुझे मालूम होगा । तो अर्ज़ करूँगा वरना खुद ही हुज़ूर से मालूम कर लूँगा। हज़रत ने सवाल किया !

उस शख़्स के बारे में क्या कहते हो जिसने सुबह को एक औरत की तरफ़ नज़र की वह उस पर हराम थी। दिन चढ़े हलाल हो गई। फिर ज़ोहर के वक़्त हराम हो गई। असर के वक़्त फिर हलाल हो गई। ग़ुरूबे आफ़ताब पर फिर हराम हो गई इशा के वक़्त फिर हलाल हो गई। आधी रात को हराम हो गई सुबह के वक़्त हलाल हो गई। बताओ एक ही दिन मे इतनी दफ़ा वह औरत उस शख़्स पर किस तरह हराम व हलाल होती रही। इमाम(अ.)की ज़बाने मोजिज़बयान से इस सवाल को सुन कर क़ाजिउल क़ुज़्ज़ाता यहिया बिन अक़सम मबहूत हो गए और जवाब न दे सके, बिल आख़िर इन्तेहाई आजज़ी के साथ कहा फ़रज़न्दे रसूल आप ही इसकी वज़ाहत फ़रमा दें,और मसले को हल कर दें।

इमाम ने फ़रमाया ! सुनो वह औरत किसी की लौंडी थी। उसकी तरफ़ सुबह के वक़्त एक अजनबी शख़्स ने नज़र की। तो वह उसके लिए हराम थी। दिन चढ़े उसने वह लौड़ी ख़रीद ली वह हलाल हो गई। ज़ोहर के वक़्त उसको आज़ाद कर दिया। वह हराम हो गई, असर के वक़्त उसने निक़ाह कर लिया फिर हलाल हो गई,मग़रिब के वक़्त उससे ज़हार किया तो फिर हराम हो गई, इशा के वक़्त ज़हार का कफ़्फ़ारा दे दिया! तो फिर हलाला हो गई। आधी रात को उस शख़्स ने उस औरत को तलाक़े रजई दी, जिससे फिर हराम हो गई, और सुबह के वक़्त उस तलाक़ से रूजू कर लिया " हलाल हो गई "

मसले का हल सुन कर सिर्फ़ यहिया ही नहीं बल्कि सारा मजमा हैरान रह गया और सब में मर्स्रत की लहर दौड़ गई। मामून को अपनी बात के ऊँचा रहने की ख़ुशी थी। उसने मजमे की तरफ़ मुख़ातिब हो कर कहा मैं न कहता था कि यह वह घराना है जो क़ुदरत की तरफ़ से मालिक क़रार दिया गया है। यहाँ के बच्चों का भी कोई मुक़ाबेला नहीं

कर सकता मजमें में जोशो ख़रोश था सबने यही एक ज़बान होकर कहा कि बेशक जो आपकी राय है वह बिल्कुल ठीक है और यक़ीनन अबू जाफ़र मोहम्मद बिने अली का कोई मिस्ल नहीं है। (सवायेक़े मोहर्रेक़ा सफ़ा १२२ रवाहिल मुस्तफ़ा १६१ नूरूल अबसार सफ़ा १४२ शरा इरशाद ४७८ से ४७६, तारीख़े अइम्मा ४८५ ,सवानह मोहम्मद तक़ी सफ़ा ६)

इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.) के साथ शहज़ादी उम्मे फ़ज़ल का अक़्द और ख़ुत्बए निकाह

इस अज़ीमुश्शान मनाज़रा में इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.) की शान दार कामयाबी ने मामून को आपका और गिरवीदा बना दिया, और उसकी मन्ज़िले एतराफ़ में इन्तेहाई बुलन्दी पैदा हो गई, इसके हर क़िस्म के हुस्ने ज़न में यक़ीन की रूह दौड़ गई।

उलमा लिखते हैं कि "मामून ने इसके बाद फ़ौरन ही अपनी दिली मुराद को अमली जामा पहनाने का तहय्या कर लिया और ज़रा भी ताख़ीर मुनासिब न समझते हुए इसी जलसे में इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.) ने ख़ुतबा और निकाह पढ़ा और यह तक़रीब पूरी कामयाबी के साथ अन्जाम पज़ीर हुई, मामून ने ख़ुशी में बड़ी फ़य्याज़ी से काम लिया , लाखों रूपए ख़ैरो ख़ैरात में तक़सीम किए गए और तमाम रेआया को इनामात व अतीया के साथ माला माल किया गया।

(सफ़र नामा हज व ज़्यारत सफ़ा ४३४ तबा पेशावर १६७२ ई०)

अल्लामा शेख़ मुफ़ीद और अल्लामा शिब्लंजी लिखते हैं कि हज़रत इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.) ने जो ख़ुत्बए निकाह पढ़ा वह यह था। "**अलहम्दो लिल्लाह अक़रार अब्नाहताह व आलाल्लाहा अख़्लासन लौहदा नैहतेही अलख.**"और जो महर किया वह महरे फ़ात्मी मुब्लिग़ पाँच सौ(५००) दिरहम था। (इरशाद मुफ़ीद सफ़ा ४७७ नूरूल अबसार सफ़ा १४६) मालूम होना चाहिए। इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.) ने जो ख़ुत्बए निकाह अपनी ज़बाने मुबारक पर जारी किया था वह वही है जो इस वक़्त भी निकाह के मौक़े पर पढ़ा जाता है। मेरी नज़र में इस ख़ुतबे के होते हुए दूसरे ख़ुत्बे का पढ़ना मुनासिब नहीं है।

अल्लामा शिब्लन्जी का बयान है कि हर क़िस्म की ख़ुशबू की बास में अक़्दे निकाह हुआ, और हाज़रीन की हलवे से तवाज़ो की गई।(नूरूल अबसार सफ़ा १४६, सवाएक़े मोहर्रेक़ा सफ़ा १२३ शवाहेदुन नबूअत सफ़ा २०४, रौज़तुल सफ़ा जिल्द ३ सफ़ा १७, इरशाद सफ़ा ४७७, कशफुल ग़म्मा सफ़ा ११६)

अल्लामा शेख़ मुफ़ीद तहरीर फ़रमाते हैं कि शादी के बाद शबे ऊरूस की सुबह को जहाँ और लोग हज़रत इमाम मोहम्मद तक़ी(अ.)की ख़िदमत में मुबारक बाद अदा करने के लिए आए। एक शख़्स मोहम्मद बिन अली हाशमी भी पहुँचे। उनका बयान है कि मुझे

दफ़तन सख़्त प्यास महसूस हुई, मैं अभी पासे अदब से पानी माँगने न पाया था कि आपने हुक्म दिया और आबे ख़ुनक आगया, थोड़ी देर बाद फिर ऐसे ही वाक़िया दर पेश हुआ। मैं हज़रत के इस इल्मे ज़माएर से बहुत मुताअस्सिर हुआ, और मुझे यक़ीन हो गया कि इमामिया आपके जुमला उलूम में माहिर होने का जो अक़ीदा रखते हैं बिल्कुल दुरूस्त है। (इरशाद सफ़ा ४८१)

उम्मुल फ़ज़ल की रूख़सती, इमाम मोहम्मद तक़ी की मदीने को वापसी और हज़रत के इख़्लाको औसाफ़ अदातो ख़साएल

इस शादी का पस मन्ज़र जो भी हो, लेकिन मामून ने निहायत अछूते अन्दाज़ से अपनी लख़्ते जिगर उम्मुल फ़ज़ल को इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.) के हबालए निकाह में दे दिया। तक़रीबन एक साल तक इमाम (अ.) बग़दाद में मुक़ीम रहे, मामून ने दौराने क़याम बग़दाद में आपकी इज़्ज़तो तौक़ीर में कोई कमी नहीं की"इला अन तवज्जो बेज़ैवजता उम्मुल फ़ज़ल इलल्ल मदीनता अलमुशरफ़ता"। यहाँ तक आप अपनी ज़ौजा उम्मुल फ़ज़ल समेत मदीनए मुशर्रफ़ा तशरीफ़ ले आए। (नूरूल अबसार सफ़ा १४६)। मामून ने बहुत ही इन्तेज़ाम और एहतिमाम के साथ उम्मुल फज़ल को हज़रत के साथ रूखसत कर दिया।

अल्लामा शेख़ मुफ़ीद, अल्लामा तबरसी, अल्लामा शिब्लन्जी, अल्लामा जामी अलैहिम अलरहमता तहरीर फ़रमाते है कि इमाम (अ.) अपनी अहलिया को लिए हुए मदीना तशरीफ़ लिए जा रहे थे, आपके हमराह बहुत से हज़रात भी थे। चलते चलते शाम के वक़्त आप वारिदे कुफ़ा हुए। वहाँ पहुँच कर आपने जनाब मसीब के मकान पर क़याम फ़रमाया और नमाज़े मग़रिब पढ़ने के लिए एक निहायत क़दीम मस्जिद में तशरीफ़ ले गए। आपने वज़ू के लिए पानी तलब फ़रमाया, पनी आने पर आप एक ऐसे दरख़्त के थाले में वज़ू करने लगे जो बिल्कुल ख़ुश्क था और मुद्दतों से सर सब्ज़ी और शादबी से महरूम था। इमाम (अ.) ने उस जगह वज़ू किया, फिर आप नमाज़े मग़रिब पढ़ कर वहां से वापस तशरीफ़ लाए और अपने प्रेग्राम के मुताबिक़ वहाँ से रवाना हो गए।

इमाम(अ.) तो तशरीफ़ ले गए लेकिन एक अज़ीम निशानी छोड़ गये और वह यह थी कि जिस ख़ुश्क दरख़्त के थाले में आपने वज़ू फ़रमाया था। वह सर सब्ज़ शादाब हो गया,और रात ही भर में तैय्यार फलों से लद गया। लोगों ने उसे देख कर बे इन्तेहा ताज्जुब किया(इरशाद सफ़ा ४७६ आलाम अलवरा सफ़ा २०५ नूरूल अबसार सफ़ा १४७, शवाहेदुन नबूअत सफ़ा २०५) कूफ़े से रवाना होकर तय मराहेल व क़ता मनाज़िल करते

हुये आप मदीने मुनव्वरा पहुँचे। वहाँ पहुँच कर आप अपने फ़राएज़ मन्सबी की अदाएगी में मुनहमिक व मशगूल हो गए। पन्दो नसाए,तबलीग़ व हिदाएत के अलावा आपने इख़्लाक़ का अमली दर्स देना शुरू कर दिया। ख़ानदानी तुर्रए इम्तेआज़ के बामोजिब ह़र एक सेझुक कर मिलना। ज़रूरत मन्दो की हाजत रवाई करना मसावात और सादगी को हर हाल में पेश नज़र रखना। गुर्बा की पोशीदा तौर पर ख़बर लेना,दोस्तो के अलावा दुश्मनों तक से अच्छा सुलूक करते रहना। मेहमानों की ख़ातिर दारी में इन्हेमाक और इल्मी व मज़हबी प्यासों के लिए फ़ैज़ के चश्मे जारी रखना, आपकी सीरते ज़िन्दगी का नुमाया पहलू था। अहले दुनियाँ जो आप की बुलन्दीये नफ़स का पूरा अन्दाज़ा न रखते थे। उन्हें यह तसव्वर ज़रूर होता था कि एक कमसिन बच्चे का अज़ीमुश्शान मुसलमान सलतनत के शहनशाह का दामाद हो जाना, यक़ीनन इसके चाल ढाल, तौर तरीक़े को बदल देगा और उसकी ज़िन्दगी दूसरे साँचें में ढल जाएगी। हक़ीक़त में यह एक बहुत बड़ा मक़सद हो सकता है जो मामून की कोतह निगाह के सामने भी था। बनी उमय्या या अब्बस के बादशाहों को आले रसूल (स.) की ज़ात से इतना इख़्तेलाफ़ न था, जितना उनकी सिफ़ात से था। वह हमेशा इसके दरपए रहते थे कि बुलन्दी इख़लाक़ और मेराजे इन्सानियत का वह मरकज़ जो मदीनए मुनव्वरा में क़ाएम है और जो सलतनत के माद्दी इक़तिदार के मुक़ाबले में एक मिसाली रूहानियत का मरकज़ बना हुआ है, यह किसी तरह टूट जाए। इसी के लिए घबरा घबरा कर वह मुख़्तलिफ़ तदबीरें करते थे। इमाम हुसैन (अ.)से बैअत तलब करना , इसी की एक शकल थी और फिर इमाम रज़ा को वली अहद बनाना इसी का दूसरा तरीक़ा था। फ़क़त ज़ाहेरी शकल सूरत में एक का अन्दाज़ मआन्दाना और दूसरा तरीक़ा इरादत मन्दी के रूप में था। मगर असल हक़ीकत दोनों सूरतों की एक थी, जिस तरह इमाम हुसैन (अ.) ने बैअत न की, तो वह शहीद कर डाले गए, इसी तरह इमाम रज़ा (अ.) वली अहद होने के बावजूद हुकूमत के मादीम क़ासिद के साथ साथ न चले तो आपको ज़हर के ज़रिए से हमेश के लिए ख़ामोश कर दिया गया। अब मामून के नुक़तए नज़र से यह मौक़ा इन्तेहाई क़ीमती था कि इमाम रज़ा(अ.) का जानशीन एक आठ, नौ बरस का बच्चा है, जो तीन चार बरस पहले ही बाप से छुड़ा लिया जा चुका था। हुकूमते वक़्त की सियासी सूझ बुझ कह रही थी कि इस बच्चे को अपने तरीक़े पर लाना निहायती आसान है और इसके बाद वह मरकज़ जो हुकूमते वक़्त के ख़िलाफ साकिन और ख़ामोश मगर इन्तेहाई ख़तर नाक क़ाएम है हमेशा के लिए ख़त्म हो जाएगा।

मामून रशीद अब्बसी, इमाम रज़ा(अ.) के वली अहद की मोहिम में अपनी नाकामी को मायूसी का सबब नहीं तसव्वुर करता था, इसलिए कि इमाम रज़ा (अ.) की ज़िन्दगी एक उसूल पर क़ाएम रह चुकी थी, इसमें तबदीली नहीं हुई तो यह ज़रूरी नहीं कि इमाम मोहम्मद तक़ी(अ.) जो आठ नौ बरस के सिन से क़सरे हुकूमत में नशोनुमा पाकर

बढे वह भी बिल्कुल अपने बुज़ुर्गों के उसूले ज़िन्दगी पर बरक़रार हैं।

सिवाए उन लोगों के जो इन मखसूस अफराद के खुदा दाद कमालात को जानते थे इस वक़्त का हर शख़्स यक़ीनन मामून ही का हम ख़्याल होगा, मगर दुनियाँ को हैरत हो गई, जब यह देखा कि नौ बरस का बच्चा जैसे शहनशाहे इस्लाम का दामाद बना दिया गया। इस उमर में अपने ख़ानदानी रख रखाओ और उसूल का इन्तेहाई पाबन्द है कि वह शादी के बाद महले शाही में क़याम से इन्कार कर देता है, और इस वक़्त भी जब बग़दाद में क़याम रहता है तो एक अलाहेदा मकान किराए पर ले कर इसमें क़याम फ़रमाते हैं। इसी से भी इमाम की मुस्तहकम कूव्वते इरादी का अन्दाज़ा किया जा सकता है। उमूमन माली एतबार से लड़के वाले जो कुछ भी बड़ा दर्जा रखते होते हैं तो वह यह पसन्द करते है कि जहाँ वह रहे वहीं दामाद भी रहे। इस घर में न सही तो कम अज़ कम इसी शहर में इसका क़याम रहे, मगर इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.) ने शादी के एक साल बाद ही मामून को हिजाज़ वापस जाने की इजाज़त पर मजबूर कर दिया। यक़ीनन यह अमर एक चाहने वाले बाप और मामून ऐसे ब इक़तिदार के लिए इन्तेहाई नागवार था। मगर उसे लड़की की जुदाई गवारा करना पड़ी और इमाम मय उम्मुल फ़ज़ल के मदीना तशरीफ़ ले गए।

मदीना तशरीफ़ लाने के बाद डयोढ़ी का वही आलम रहा जो इसके पहले था, न पहरे दार न कोई खा़स रोक टोक ,न तुज़ुक व एहतिशाम,न औक़ाते मुलाकात, न मुलाक़ातियों के साथ बरताओ में कोई तफ़रीक़ ज़्यादा तर नशिशत मस्जिदे नबवी में रहती थी। जहाँ मुसलमान हज़रत के वाज़ व नसीहत से फ़ाएदा उठाते थे। रावीयाने हदीस , इख़बार व अहादीस दरियाफ़्त करते थे। तालिबे इल्म मसाएल पूछते थे, साफ़ ज़ाहिर था कि जाफ़र सादिक़ (अ.) ही का जांनशीन और इमाम रज़ा (अ.) का फरज़न्द है जो इसी मसन्दे इल्म पर बैठा हुआ हिदाएत का काम अन्जाम दे रहा है।

उमूरे खा़ना दारी और अज़वाजी ज़िन्दगी में आपके बुज़ुर्गों ने अपनी बीबीयों को जिन हुदूद में रखा हुआ था उन्हीं हुदूद में आपने उम्मुल फ़ज़ल को भी रखा आपने इसके मुतालिक़ परवाह ना की कि आप की बीबी एक शहनशाहे वक़्त की बेटी है। चुनांचे उम्मुल फ़ज़ल के होते हुए। आपने हज़रत अमार यासिर की नस्ल से एक मोहतर्म खा़तून के साथ अक़्द भी फ़रमाया और क़ुदरत को नस्ले इमामत इसी खा़तून से बाक़ी रखना मन्ज़ूर थी, यही इमाम अली नक़ी (अ.) की माँ हुईं। उम्मुल फ़ज़ल ने इसकी शिकायत अपने बाप के पास लिख कर भेजी, मामून के दिल के लिए भी यह कुछ कम तकलीफ़ देह अमर न था, मगर उसे अब अपने किए को निबाहना था। इस लिए उम्मुल फ़ज़ल को जवाब में लिखा कि मैंने तुम्हरा अक़्द अबू जाफ़र के साथ इसलिए नहीं किया कि उनपर किसी हलाले खुदा को हराम करूँ। ख़बरदार ! मुझसे अब इस क़िस्म की शिकायत न करना।

यह जवाब देकर हक़ीक़त में उसने अपनी खिफ़्फ़त मिटाई है। हमारे सामने इस

की नज़ीरें मौजूद हैं कि अगर मज़हबी हैसीयत से कोई बाएहतेराम ख़ातून हुई हैं तो इस की ज़िन्दगी में किसी दूसरी बीवी से निकाह नहीं किया गया, जैसे पैग़म्बरे इस्लाम (अ.) के लिए जनाबे ख़दीजा (र.) और हज़रत अली मुर्तुज़ा(अ.) के लिए जनाबे फ़ात्मा ज़हरा (अ.) मगर शहनशाहे दुनियाँ की बेटी को यह इम्तेआज़ दुनियाँ सिर्फ़ इस लिए कि वह एक बादशाह की बेटी हैं। इस्लाम की उस रूह के ख़िलाफ़ था जिसके आले मोहम्मद मुहाफ़िज़ थे। इसलिए इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.) ने इसके ख़िलाफ़ तर्ज़े अमल अख़्तेआर करना अपना फ़रीज़ा समझा। (सवानेह मोहम्मद तक़ी जिल्द २ सफ़ा ११)

इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.) और तैयुल अल अर्ज़

इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.) अगरचे मदीना में क़याम फ़रमाते थे लेकिन फ़राएज़ की वुसअत ने आपको मदीना ही के लिए महदूद नहीं रखा था। आप मदीना में रह कर अतराफ़े आलम के अक़ीदत मन्दों की ख़बर गीरी फ़रमाते थे यह ज़रूरी नहीं कि जिसके साथ करम गुस्तरी की जाए। वह आपके कवाएफ़ व हालात से भी आगाह हो। अक़ीदे का ताल्लुक़ दिल की गहराई से है कि ज़मीनो आसमान ही नहीं सारी काएनात उनके ताबे होती है। उन्हें इसकी ज़रूरत नहीं पड़ती कि वह किसी सफ़र में तय मराहिल के लिए ज़मीन आपने क़दमों से नापा करें, उनके लिए यही बस है कि जब और जहाँ चाहें चश्में ज़दन में पहुँच जाएं और यह अक़लन मोहाल भी नहीं है। ऐसे ख़ासाने ख़ुदा के लिए इस क़िस्म के वाक़ियात क़ुरान मजीद में भी मिलते हैं। आसिफ़ बिन ख़्यावसी जनाबे सुलेमान(अ.) के लिए उलमा ने इस क़िस्म के वाक़िये का हवाला दिया है। उनमें से एक वाक़िया है कि आप मदीना मुनव्वरा से रवाना हो कर शाम पहुँचे , एक शख़्स को उस मुक़ाम पर इबादत में मसरूफ़ व मशगूल पाया जिस जगह इमाम हुसैन(अ.) का सरे मुबारक लटकाया गया था,आपने इससे कहा मेरे हमराह चलो वह रवाना हुआ अभी चन्द क़दम भी न चला था कि ,कूफ़े की मस्जिद में जा पहुँचा, वहीं नमाज़ अदा करने के बाद जो रवानगी हुई ,तो सिर्फ़ चन्द मिनटों में मदीना मुनव्वरा जा पहुँचे और ज़्यारत व नमाज़ से फ़राग़त की गई, फिर वहाँ से चल कर चन्द लम्हों में मक्कए मोअज़्ज़मा रसीदगी हो गई, तवाफ़ व दीगर इबादत से फ़राग़त के बाद आपने चश्में ज़दन में उसे शाम की मस्जिद में पहुँचा दिया और ख़ुद नज़रों से ओझल हो कर मदीनए मुनव्वरा जा पहुँचे ,फिर जब दूसरा साल आया तो आप बदस्तूरे शाम की मस्जिद में तशरीफ़ ले गए और उस आबिद से कहा मेरे हम राह चलो चुनांचे वह चल पड़ा, आपने चन्द लमहों में उसे साले गुज़श्ता की तरह तमाम मुक़द्दस मक़ामात की ज़्यारत करा दी। पहले ही साल के वाक़िए से वह शख़्स बेइन्तेहा मुत्तअस्सिर था ही, कि दूसरे साल भी ऐसा ही वाक़िया हो गया। अबकी मरतबा उसने मस्जिदे शाम

वापस पहुँते ही उनका दामन थाम लिया और क़सम देकर पूछा कि फ़रमाईये आप इस करामात के मालिक " कौन हैं " आपने इरशाद फ़रमाया कि मैं मोहम्मद बिन अली (इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.) इसने बड़ी अक़ीदत और ताज़ीम व तकरीम के मरासिम अदा किए। आपके वापस तशरीफ़ ले जाने के बाद यह ख़बर बिजली की तरह फैल गई, जब वालीए शाम मोहम्मद अब्दुल मलिक को इसकी इत्तेला मिली और यह भी पता चला कि लोग इस वाक़िए से इन्तेहाई मुतअस्सिर हो गए हैं तो आपने उस आबिद पर " मुदयी नबूअत " होने का इल्ज़ाम लगा कर उसे क़ैद कर दिया और फिर शाम से मुन्तक़िल करके ईराक़ भिजवा दिया। उसने वाली को क़ैद ख़ाने से एक ख़त भेजा जिसमें लिखा कि मैं बेख़ता हूँ, मुझे रिहा किया जाए ,तो उसने ख़त की पुश्त पर लिखा कि जो शख़्स तुझे शाम से कूफ़े और कूफ़े से मदीने और वहाँ से मक्का और फिर वहाँ से शाम पहुँचा सकता है। अपनी रिहाई में उसी की तरफ़ रूजू कर।

इस जवाब के दूसरे दिन यह शख़्स मुकम्मल सख़्ती के बावजूद, सख़्त तरीन पहरे के होते हुए क़ैद ख़ाने से ग़ाएब हो गया, अली बिन ख़ालिद रावी का बयान है कि जब मैं क़ैद ख़ाने के फाटक पर पहुँचा तो देखा कि तमाम ज़िम्मे दारान हैरान व परेशान हैं और कुछ पता नहीं चलता कि आबिद शामी ज़मीन में समा गया, या आसामान पर उठा लाया गया, अल्लामा मुफ़ीद (अ.र.) लिखते हैं कि इस वाक़िए से अली बिन ख़ालिद जो दूसरे मज़हब का पैरो था, इमामिया मस्लक का मोतक़िद हो गया। (शवाहेदुन नबूअत सफ़ा २०५ नूरूल अबसार सफ़ा १४६, अलाम अलवरा सफ़ा ७३१, इरशाद मुफ़ीद सफ़ा ४८१)

हज़रत इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.) के बाज़ करामात

साहेबे तफ़सीरे हुसैनी अल्लामा हुसैन वाएज काशफ़ी का बयान है कि हज़रत इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.) के करामात बेशुमार हैं। (रौज़तलु शोहदा सफ़ा ४३८) में बाज़ तज़केरा मुख़्तलिफ़ कुतुब से करता हूँ।

अल्लामा अब्दुर्रहमान जामी तहरीर फ़रमाते हैं कि(१) मामून रशीद के इन्तेक़ाल के बाद हज़रत इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.) ने इरशाद फ़रमाया कि अब तीस माह बाद मेरा भी इन्तेक़ल होगा , चुनांचे ऐसा ही हुआ (२) एक शख़्स ने आपकी ख़िदमत में हाज़िर हो कर अर्ज़ किया कि एक मुसम्मात (उम्मुल हसन) ने आपसे दरख़्वास्त की है कि अपना कोई जामये कुहना (पुराने कपड़े) दीजिए ताकि मैं उसे कफ़न में रखूँ। आपने इरशाद फ़रमाया कि अब जामेय कुहना की ज़रूरत नहीं है।

रावी का बयान है कि मैं वह जवाब ले कर जब वापस हुआ तो मालूम हुआ कि १३-१४ दिन हो गए हैं वह इन्तेक़ाल कर चुकी हैं (३) एक शख़्स (उमय्या बिन अली)

कहता है कि मैं और हमाद बिन ईसा एक सफ़र में जाते हुए हज़रत की ख़िदमत में हाज़िर हुए ताकि आप से रूख़्सत हो लें, आपने इरशाद फ़रमाय। कि तुम आज अपना सफर मुलतवी करो ,चुनांचे हस्बे अलहुक्म ठहर गया, लेकिन मेरे साथीहमाद बिन ईसा ने कहा कि मैं ने सारा सामाने सफ़र घर से निकाल रखा है अब अच्छा नही मालूम होता है कि कि सफर मुलतवी करूँ, यह कह कर वह रवाना हो गया और चलते चलते रात को एक वादी में जा पहुँचा और वहीं क़याम किया,रात के किसी हिस्से में एक अज़ीमुश्शान सेलाब आ गया और वह तमाम लोगों के साथ हमाद को भी बहा कर ले गया(शवाहेदुन नबूअत सफा २०२) (४) अल्लामा अरबली तहरीर फरमाते हैं कि म्मिबर बिन ख़लाद का बयान है कि एक दिन मदीना मुनव्वरा में जब कि आप बहुत कमसिन थे मुझसे फ़रमाया कि चलो मेरे हमराह !चुनाचें मैं साथ हो गया। हज़रत ने मदीने से बाहर एक वादी में जा कर मुझसे फ़रमाया कि तुम ठहरो मैं अभी आता हूँ। चुनांचे आप नज़रों से ग़एब हो गए और थोड़ी देर बाद वापस हुए। वापसी पर आप बेइन्तेहा मलूल और रंजीदा थे, मैंने पूछा फ़रज़न्दे रसूल (स.)! आपके चेहरए मुबारक से आसार हुज़नो व मलाल हुवैदा हैं। इरशाद फ़रमाया! कि इसी वक़्त बग़दाद से वापस आरहा हूँ। वहाँ मेरे वालिद माजिद हज़रत इमाम रज़ा (अ.) ज़हर से शहीद कर दिए गए हैं। मैं उन पर नमाज़ वग़ैरा अदा करने गया था। (५) क़ासिम बिन अब्दुर्रहमान का बयान है कि बग़दाद में मैंने देखा किसी शख़्स के पास तमाम लोग बरा बर आते जाते है, और मैंने दरियाफ़्त किया कि जिसके पास आने जाने का ताता बंधा हुआ है यह कौन है? लोगों ने कहा कि अबू जाफ़र बिन अली (अ.) हैं। अभी यह बातें हो ही रही थी कि आप नाक़े पर सवार उस तरफ़ से गुज़रे, क़ासिम कहता है कि उन्हें देखकर मैंने दिल में कहा कि लोग बड़े बेवकूफ़ हैं जो आपकी इमामत के क़ाएल हैं और आपकी इज़्ज़त व तौक़ीर करते हैं, यह तो बच्चे हैं और मेरे दिल में इनकी कोई वक़त महसूस नहीं होती। मैं अपने दिल में यही सोच रहा था कि आपने क़रीब आकर फ़रमाया! कि ऐ क़ासिम बिन अब्दुर्रहमान जो शख़्स हमारी इताअत से गुरेज़ाँ है वह जहन्नम में जाएगा। आपके इस फ़रमाने पर मैंने ख़्याल किया कि यह जादूगर हैं कि उन्होंने मेरे दिल के इरादे को मालूम कर लिया है। जैसे ही यह ख़्याल मेरे दिल में आया। आपने फ़रमाया कि तुम्हारा ख़्याल बिल्कुल ग़लत है तुम अपने अक़ीदे की इस्लाह करो। यह सुन कर मैंने आपकी इमामत का इक़रार किया और मुझे मानना पड़ा कि आप हुज्जतुल्लाह हैं(६) क़ासिम इबनुल हसन का बयान है कि मैं एक सफ़र में था। मक्का और मदीने के दरमियान एक मफ़्लूकुल हाल ने मुझसे सवाल किया! मैंने उसे रोटी का एक टुकड़ा दे दिया। अभी थोड़ी देर गुज़री थी कि एक ज़बर दस्त आँधी आई और वह मेरी पगड़ी उड़ा ले गई। मैंने बड़ी तलाश की लेकिन वह दस्तयाब न हुई। जब मैं मदीने पहुँचा और हज़रत इमाम मोहम्मद तकी (अ.) से मिलने गया। तो आपने फ़रमाया कि ऐ क़ासिम तुम्हारी

पगड़ी हवा उड़ा ले गई। मैंने अर्ज़ की जी हुज़ूर आपने अपने गुलाम को हुक्म दिया कि इनकी पगड़ी ले आओ। गुलाम ने पगड़ी हाज़िर की । मैंने बड़े ताज्जुब से दरियाफ्त किया कि मौला !यह पगड़ी यहाँ कैसे पहुँची। आपने फ़रमाया कि तुमने जो राहे ख़ुदा में रोटी का टुकड़ा दिया था। उसे ख़ुदा ने क़ुबूल फ़रमा लिया है। ऐ क़ासिम ख़ुदा वन्दे आलम यह नहीं चाहता कि जो उसकी राह में सदक़ा दे वह उसे नुक़सान पहुँचने दे(७) उम्मुल फ़ज़ल ने हज़रत इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.) की शिकाएत आपने वालिद मामून रशीद अब्बसी को लिख कर भेजी कि अबू जाफ़र मेरे होते हुए दूसरी शादी भी कर रहे हैं। उसने जवाब दिया कि मैंने तेरी शादी इस लिए नहीं की कि हलाले ख़ुदा को हराम कर दूँ। उन्हे क़ाकूने ख़ुदा वन्दी इजाज़त देता है कि वह दुसरी शादी करें । इसमें तेरा क्या दख़्ल है। आइन्दा से इस क़िस्म की कोई शिकाएत न करना और सुन तेरा फ़रीज़ा है कि तू आपने शौहर अबू जाफ़र को जिस तरह हो राज़ी रख। इस तमाम ख़तो किताबत की इत्तेला हज़रत को हो गई।(कशफ़ुल ग़म्मा सफ़ा १२०) अल्लमा शेख हुसैन बिन अब्दुल वहाब तहरीर फ़रमाते हैं कि एक दिन उम्मुल फ़ज़ल ने हज़रत की एक बीवी को जो अम्मार यासिर की नस्ल से थीं। देखा तो मामून रशीद को कुछ इस अन्दाज़ से कहा कि वह हज़रत के क़तल पर आमादा हो गया। मगर क़तल न कर सका। (अयुनूल मोजिज़ात सफ़ा १५४ तबा मुलतान)

हज़रत इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.) के हिदायात व इरशादात

यह एक मुसल्लेमा हक़ीकत है कि बहुत से बुज़ुर्ग मरतबा उलमा ने आपसे उलूमे अहले बैत की तालीम हासिल की। आपके ऐसे मुख्तसिर हकीमाना मक़ूलों का भी एक ज़ख़ीरा है। जैसे आपके जद्दे बुज़ुर्गवार हज़रत अमीरल मोमेनीन (अ.) के कसरत से पाए जाते हैं। जनाबे अमीर (अ) के बाद इमाम मोहम्द तक़ी (अ.) के मक़ूलों को एक ख़ास दर्जा हासिल है। बाज़ उलमा ने आपके मक़ूलों की तादात कई हज़ार बताई है। अल्लामा शिब्लन्जी ब हवालए फ़सूलुल मोहिमा तहरीर फ़रमाते हैं कि इमाम मोहम्मद तकी (अ.) का इरशाद है कि (१) ख़ुदा वन्दे आलम जिसे जो नेमत देता है ब इरादा दवाम देता है। लेकिन उससे वह उस वक़्त ज़ाएल हो जाती है। जब वह लोगों यानी मुस्तहक़ीन को देना बन्द कर देता है। (२) हर नेमते ख़ुदा वन्दी में मख़लूक़ का हिस्सा है। जब ख़ुदा किसी को अज़ीम नेअमतें देता है तो लोगों की हाजतें भी कसीर हो जाती हैं। इस मौक़े पर अगर साहेबे नेअमत (मालदार) ओहदे बरआ हो सका तो ख़ैर ने नेअमत का ज़वाल लाज़मी है(३) जो किसी को बड़ा समझता है उससे डरता है (४) जिसकी ख़्वाहीशात ज़्यादा होंगी। उसका जिस्म मोटा होगा (५) सहीफ़ए हयाते मुस्लिम का सर नामा "हुस्ने ख़ुल्क़ है"(६) जो ख़ुदा के भरोसे पर लोगों से बेनियाज़ हो जाएगा। लोग उसके मोहताज होंगे (७) जो ख़ुदा से डरेगा गो उसे

दोस्त रखेगें (८) इन्सान की तमाम खूबीयों का मरकज़ ज़बान है।(९) इन्सान के कमालात का दारो मदार अक्ल के कमाल पर है।(१०) इन्सान के लिए फ़ख़्र की "जीनत इफ़्फ़त" है खुदाई इम्तेहान की ज़ीनत शुक्र है। हसब की ज़ीनत तवाज़ो और फ़रोतनी है। कलाम की ज़ीनत "फ़साहत" है। रवायात की ज़ीनत "हाफ़ेज़ा" है। इल्म की ज़ीनत "इन्केसार" है। वरा और तक़वा की ज़ीनत" हुस्ने अदब " है। क़नात की ज़ीनत " ख़न्दा पेशानी " है। वरा व परेहज़गारी की ज़ीनत तमाम मामलात से कनारा कशी है (११) ज़ालिम और ज़ालिम के मद्दगार और ज़ालिम के फ़ेल को सराहने वाले एक ही ज़ुमरे में हैं यानी सबका दर्जा बराबर है(१२) जो ज़िन्दा रहना चाहता है उसे चाहिए कि बर्दाश्त करने के लिए अपने दिल को सब्र अज़्मा बना ले। (१३) खुदा की रज़ा हासिल करने के लिए तीन चीज़ें होनी चाहिए। अव्वल असतग़फ़ार ,नरमी और फ़रोतनी सौम कसरते सदक़ा (१४)जो जल्द बाज़ी से परेहज़ करेगा। लोगों से मश्विरा लेगा अल्लाह पर भरोसा रखेगा वह कभी शर्मिन्दा नहीं होगा।(१५) अगर जाहिल ज़बान बन्द रखे तो इख़्तेलाफ़ात न हों (१६) तीन बातों से दिल मोह लिए जाते हैं (क) माशरे में इन्साफ (ख) मुसीबत में हमदर्दी (ग) परेशान ख़ातिरी में तसल्ली (१७)जो किसी बुरी बात को अच्छी निगाह से देखेगा वह उसमें शरीक समझा जाएगा (१८) कुफ़राने नेअमत करने वाला ख़ुदा की नराज़गी को दावत देता है(१९) जो तुमहारे किसी अतिए पर शुकरिया अदा करे। गोया उसने तुम्हें उससे ज़्यादा दे दिया (२०) जो अपने भाई को पोशीदा तौर पर नसीहत करे वह उसका मोहसिन है और जो एलानिया नसीहत करे गोया उसके साथ बुराई की (२१) अक्लमन्दी और हिमाक़त जवानी के क़रीब तक एक दूसरे पर ग़लबा करते रहते हैं और जब अठ्ठारा साल पूरे हो जाते हैं तो इस्तक़लाल पैदा हो जाता है और राह मोअय्यन हो जाती है (२२)जब किसी बन्दे पर नेअमत का नुज़ूल हो वह इस नेअमत से मुतासिर हो कर यह समझे कि यह ख़ुदा कि इनाएत और मेहरबानी है तो ख़ुदा वन्दे आलम शुक्र करने से पहले उसका नाम शाकिरों में लिख लेता है और जब कोई गुनाह करने के बाद यह महसूस करे कि मैं ख़ुदा के हाथ में हूँ वह जब और जिस तरह चाहे अज़ाब कर सकता है तो ख़ुदा वन्दे आलम उसे अस्तग़फ़ार से क़ब्ल बख़्श देता है (२३) शरीफ़ वह है जो आलिम है और अक्लमन्द वह है जो मुत्तक़ी है। (२४) जल्द बाज़ी करके किसी अमर को शोहरत न दो जब तक तकमील न हो जाए (२५) अपनी ख़्वाहीशात को इतना न बढ़ाओ कि दिल तगं हो जाओ (२६) अपने ज़ईफ़ों पर रहम करो और उनपर रहम के ज़रिए से अपने लिए रहम की ख़ुदा से दरख़्वास्त करो (२७) आम मौत से बुरी मौत वह है जो गुनाह के ज़रिए से हो, और आम ज़िन्दगी से ख़ैरो बरकत के साथ वाली जिन्दगी बेहतर है (२८) जो ख़ुदा के लिए अपने किसी भाई को फ़ाएदा पहुँचाए वह ऐसा है जैसे उसने अपने लिए जन्नत में घर बना लिया (२९)जो ख़ुदा पर एतमाद रखे और उसपर तव्वकुल और भरोसा करे। ख़ुदा उसे हर बुराई से बचाता है और

उसकी हर क़िस्म के दुश्मन से हिफ़ाज़त करता है (३०) दीन इज़्ज़त है इल्म ख़ज़ाना है और ख़ामोशी नूर है (३१) जोहद कि इन्तेहा वरा और तक़वा है (३२) दीन को तबाह कर देने वाली चीज़ बिदअत है (३३) इन्सान को बरबाद करने वाली चीज़ " लालच " है (३४) हाकिम की सलाहियत पर रेआया की ख़ुशहाली का दारो मदार है (३५) दोआ के ज़रिए हर बला टल सकती है (३६) जो सब्र ज़बत के साथ मैदान में आजाए वह कामयाब होगा (३७) जो दुनियाँ में तक़वा का बीज बोएगा। आख़ेरत में दिली मुरादों का फल पाएगा

(नूरूल अबसार सफ़ा १४८ तबा मिस्र)

हज़रत इमाम,?त्र७४ मोहम्मद तक़ी (अ.) की एक रवाएत

मुवर्रिख़ दमिश्क़ **अल्लामा शमसुद्दीन इब्ने तालून** लिखते हैं कि हज़रत इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.) ने अपने अबाओ अजदाद से रवाएत करते हुए इरशाद फ़रमाया है कि हज़रत अली (अ.) ने बयान फ़रमाया है कि जब आँ हज़रत (स.) ने मुझे यमन की तरफ भेजा था तो चन्द ख़ास वसीअतें की थीं। जिनमें एक यह थी " या अली माख़ाबा मन इस्तेख़ारो लानदम मन इस्तेशार " जो शख़्स अपने कामो में इस्तेख़ारा कर लिया करेगा । वह ख़ाएब ख़ासिर न होगा, और जो अपने मुख़्लिस दोस्तों से मशविरा किया करेगा वह नादिमो शर्मिन्दा न होगा...मन इस्तेफ़ादा काफ़िल्लाह फ़कत इस्तेफ़ाद बैतन फिल जन्नत जो अपने भाई को फ़ी सबील्लिलाह फ़ाएदा पहुँचाए गा वह जन्नत में अपना घर बनवा लेगा

(अलअमता अलअसना अशर सफ़ा १०३ तबा बैरूत)

मामून की वफ़ात , मोतसिम की ख़िलाफ़त और हज़रत इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.) की गिरफ़्तारी

शादी के बाद हज़रत इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.)मदीने में क़दरे पुर सुकून जिन्दगी बसर कर रहे थे यानी आपको वह ख़दशा न था जो हुकूमते वक़्त की तरफ से आपके आबाओ अजदाद को हर वक़्त लगा रहता था और जिसके नतीजे में शहादत का दर्जा नसीब होता रहता था। आपको जो तकलीफ़ थी वह उम्मुल फ़ज़्ल के शिकाईती ख़ुतूत की थी जिनके ज़रिए से वह मामून की अनाने तवज्जा आपकी मुख़ालेफ़त की तरफ़ मोड़ना चाहती थी। मामून चुंकि होशियार और अपने किए के निबाहने का आदी था, इसलिए उसने कोई परवाह नहीं की। लेकिन इसके बाद वाले ख़लीफ़ा ने इसको पूरी

अहमियत देकर आपका काम तमाम कर दिया।

अल्लामा अली नक़ी लिखते हैं कि २१८,हिजरी में मामून ने दुनियाँ को ख़ैर बाद कहा। अब मामून का भाई और उम्मुल फ़ज़्ल का चचा मोतसिम जो इमाम रज़ा के बाद वली अहद बनाया जा चुका था। तख़्ते सलतनत पर बैठा और मोतसिम बिल्लाह अब्बसी के नाम से मशहूर हुआ , इसके बैठते ही इमाम मौहम्मद तक़ी (अ.) के मुतअलिलक़ उम्मुल फ़ज़्ल के इसी तरह के शिकाएती ख़ुतूत की रफ़्तार बढ़ गई, जिस तरह के उसने अपने बाप मामून को भेजे थे। मामून ने जो तमाम बनी अब्बासियों की मुख़ालेफ़तों के बावजूद भी अपनी लड़की का निकाह इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.) के साथ कर दिया था इस लिए अपनी बात की पच और किए की लाज रखने की ख़ातिर उसने उन शिकायतों पर कोई तवज्जो नहीं दी, बल्कि मायूस कर देने वाले जवाब से बेटी की ज़बान बन्द कर दी , मगर मोतसिम जो इमाम रज़ा (अ.) की वली अहदी का दाग़ अपने सीने पर लिए हुए था और इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.) को दामाद बनाए जाने से तमाम बनी अब्बास के नुमाइन्दे की हैसीयत से पहले ही इख़्तेलाफ़ करने वालों में पेश पेश रह चुका थ। अब उम्मुल फ़ज़्ल के शिकाईती ख़ुतुत को अहमीयत दे कर अपने इस इख़्तेलाफ़ को जो इस निकाह से था हक़ बा जानिब साबित करना चाहता था। फिर सबसे ज़्यादा इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.) की इल्मी मरजीयत आपके इख़्लाक़ी असर का शोहरा जो हिजाज़ से बढ़ कर ईराक़ तक पहुँचा हुआ था, वह बिना मुख़ासेमत जो मोतस्मि के बुज़ुर्गों को इमाम मोहम्मद तक़ी(अ.) के बुज़ुर्गों से रह चुकी थी वह फिर इस सियासत की नामी और मनसूबा की शिकस्त का महसूस हो जाना जो इस अक़्द का मुहर्रिक हुआ था जिसकी तशरीह पहले हो चुकी है। यह तमाम बातें थीं कि मोतसिम मुख़ालेफ़त के लिए अमादा हो गया। उसने अपनी सलतनत के दूसरे ही साल इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.) को मदीने से बग़दाद की तरफ़ जबरन बुलवा भेजा। हाकिमे मदीना अब्दुल मलिक को इस बारे में ताकीदी ख़त लिखा मजबूरन इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.) अपने फ़रज़न्द हज़रत इमाम अली नक़ी(अ.) और उनकी वालेदा को मदीने में छोड़ कर बग़दाद की तरफ़ रवाना हो गए। मुल्ला मोहम्मद मुबीन फ़िरंगी महली कहते हैं कि जब मामून के बाद मोतसिम ख़लीफ़ा हुआ और उसने इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.) के फ़ज़ाएल का आवाज़ा सुना तो बराये बुग़ुज़ व अनाद मदीनए मुनव्वरा से ब मुक़ाम बग़दाद आपको तलब कर लिया। इमाम मोहम्द तक़ी (अ.) जब मदीने से चलने लगे तो उन्होंने अपने फ़रज़न्द इमाम अली नक़ी(अ.) को अपना वसी और ख़लीफ़ा करार देकर कुतुब उलूमे इलाही और असारे जनाबे रिसालत पनाही उन्हें सुपुर्द फ़रमाया, उसके बाद मदीने से रवाना हो कर नवीं माहर्रम(९, मोहर्रम) २२० ,हिजरी को बग़दाद पहुँचे और मोतसिम ने उसी साल उनको शहीद कर दिया

(वसीलए नजात सफ़ा २६०)

इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.) की नज़र बन्दी कैद और शहादत

मदीनए रसूल (स.) से फ़रज़न्दे रसुल को तलब करने की ग़रज़ चूँकि नेक नीयती पर मुबनी न थी। इसलिए अज़ीम शरफ़ के बावजूद आप हुकूमते वक्त की किसी रियायत के क़ाबिल नहीं मतसव्वुर हुए। मोतसिम ने बग़दाद बुलवा कर आपको कैद कर दिया।

अल्लामा अरबली लिखते हैं कि चूँकि मोतसिम ब ख़िलाफ़त बानश्त आँ हज़रत रा अज़ मदीनए तय्यबा ब दारूल ख़िलाफ़ा बग़दाद आवरदा जलस फ़रमूदा (कशफ़ुल ग़म्मा सफ़ा ११२) एक साल तक आपने कैद की सख़्तियाँ सिर्फ़ इस जुर्म में बर्दाश्त कीं कि आप कमालाते इमामत के हामिल क्यों हैं और आपको ख़ुदा ने यह शरफ़ क्यों अता फ़रमाया है। बाज़ उलमा का कहना है कि आप पर इस क़दर सख़्तियाँ थीं और इतनी कड़ी निगरानी और नज़र बन्दी थी कि आप अक्सर अपनी जिन्दगी से बेज़ार हो जाते थे। बहरहाल वह वक्त आ गया कि आप सिर्फ़ पच्चीस साल तीन माह १२ यौम की उम्र में कैद ख़ाने के अन्दर आख़िर ज़ीक़ाद (ब तारीख़ २६ ज़िक़ादा सन् २२० हिजरी यौमे सेह शम्बा) मोतसिम के ज़हर से शहीद हो गए। (कशफ़ुल ग़म्मा सफ़ा १२१, सवाएक़े मोहर्रेक़ा सफ़ा १२३, रौज़तुल सफ़ा जिल्द ३ सफ़ा १६, अलामुलवरा सफ़ा २०५, इरशाद ४८०, अनवारे नोमानिया सफ़ा १२७, अनवारूल हुसैनिया सफ़ा ५४) आपकी शहादत के मुतअल्लिक़ **मुल्ला मुबीन** कहते हैं कि मोतसिम अब्बसी ने आपको ज़हर से शहीद किया (वसीलतुन नजात सफ़ा २६७) **अल्लामा इब्ने हजर मक्की** लिखते हैं कि आपको इमाम रज़ा की तरह ज़हर से शहीद किया गया। (सवाएक़े मोहर्रेक़ा सफ़ा १२३)

अल्लामा हुसैन काशफ़ी लिखते हैं कि "गोयन्द ब ज़हर शहीद शुद" कहते हैं कि ज़हर से शहीद हुए हैं (रौज़तुल शोहदा सफ़ा ४३८) **मुल्ला जामी** कि किताब में है "क़ीला मता मसमूमन" कहा जता है कि आपकी वफ़ात ज़हर से हुई (शवाहेदुन नबूवत सफ़ा २०४)

अल्लामा नेमत उल्ला जज़ायरी लिखते हैं "माता मसमूमन क़द समेउल मोतसिम " आप ज़हर से शहीद हुए हैं और यक़ीनन मोतसिम ने आपको ज़हर दिया है। (अनवारे नोमानिया सफ़ा १६५) यही कुछ **अल्लामा तबरी** ने भी तहरीर फ़रमाया है(आलामुल वरा सफ़ा २०५) और **अल्लामा अब्दुल रज़ा** ने भी यही लिखा है(अन्वारूल हुसैनिया सफ़ा ५४)

नवाब सिद्दीक़ हसन लिखते हैं कि मोहतसिम अब्बसी ने आपको ज़हर से मार दिया (अलफराहुल आमी) **अल्लामा शिबलन्जी** लिखते हैं कि "अना मता मसमूमन" आप ज़हर से शहीद हुए है "यक़ाल इन उम्मुल फ़ज़ल बिनतुल मामून सख़्तहू बे मूराबीहा"

कहा जाता है कि आपको आपकी बीवी उम्मुल फ़ज़ल ने अपने बाप मामून के मुताबिक़ मोतसिम की की मदूद से ज़हर दे कर शहीद किया।

(नुरूल अबसार सफ़ा १४७, अरहज्जुल मतालिब सफ़ा ४६०)

मतलब यह हुआ कि मामून रशीद ने इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.) के वालिद माजिद इमाम रज़ा (अ.) को उसकी बेटी ने इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.) को बक़ौले शिबलन्जी शहीद करके अपने वतीरे मुस्तमारता और उसूल ख़ानदानी को फ़रोग़ बख़्शा है।

अल्लामा मौसूफ लिखते हैं कि "दख़्लत इम्रातहा उम्मुल फ़ज़ल अला क़सर अल मोतसिम" कि इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.) को शहीद करके उनकी बीवी उम्मुल फ़ज़ल मोतसिम के पास चली गईं। बाज़ मआसेरीन लिखते हैं कि इमाम (अ.) ने शहादत के वक़्त उम्मुल फ़ज़ल के बदतरीन मुस्तक़बिल का ज़िक्र फ़रमाया था जिसके नतीजे में उसके नासूर हो गया था और वह आख़िर में दीवानी होकर मरी।

मुख़्तसर यह कि शहादत के बाद हज़रत इमाम अली नक़ी (अ.) ने आपकी तजहीज़ व तकफ़ीन में शिरकत की और नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और इसके बाद आप मुक़ाबिर क़ुरैश में अपने जद्दे नामदार हज़रत इमाम मूसीए काज़िम (अ.) के पहलू में दफ़न किए गए । चुंकि आपके दादा का लक़ब काज़िम और आपका लक़ब जवाद भी था, इस लिए उस शहर को आपकी शिरकत से " काज़्मैन " और वहाँ के इस्टेशन को आपके दादा की शिरकत की रिआयत से "जवादीन" कहा जाता है।

इस मक़बरए क़ुरैश में जिसे काज़्मैन के नाम से याद किया जाता है। ३५६ हिजरी मुताबिक़ ९६८ ई० में मोअज़ उद्दौला और ४५२, हिजरी मुताबिक़ १०४४ ई० जलालुद दौला शाहाने आल बोयह के जनाज़े ऐतिक़ाद मन्दी से दफ़न किए गए। काज़्मैन में जो शानदार रौज़ा बना हुआ है इस पर बहुत से तामीरी दौर गुज़रे लेकिन इसकी तामीरी तकमील शाह इस्माईल सफ़वी ने ९६६ हिजरी मुताबिक़ १५२० में कराई। १२५५,हिजरी मुताबिक़ १८५६ में मोहम्मद शाह क़ाचार ने उसे जवाहेरात से मुरस्सा किया।

आपकी अज़्वाज और औलाद

उलमा ने लिखा है कि हज़रत इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.) के चन्द बीवीयाँ थीं जिनमें उम्मुल फ़ज़ल बिनते मामून रशीद अब्बसी और समाना ख़ातून यासरी नुमायां हैसीयत रखती थीं। जनाबे समाना खातून जो कि हज़रत अम्मार यासिर की नस्ल से थी, के अलावा किसी से कोई औलाद नहीं हुई, आपकी औलाद के बारे में उलमा का इत्तेफाक़ है कि दो नरीना और दो ग़ैर नरीना थी, जिनके असमा यह हैं (१)हज़रत इमाम अली नक़ी (अ.) (२) जनाबे मूसा मुबर्रेक़ा (अ.) (३) जनाबे फ़ातमा (४) जनाबे अमामह (इरशाद मुफ़ीद सफ़ा ४६३, सवाएक़े मोहर्रेक़ा सफ़ा १२३, रौज़तुल शोहदा सफ़ा ४३८,नुरूल अबसार

सफ़ा १४७, अनवारे नोमानिया सफ़ा १२७) कशफुल ग़म्मा सफ़ा ११६, आलामुल वरा सफ़ा २०५ वग़ैरह।

सिलसिलए सादात रिज़विया

हज़रत इमाम अली रज़ा (अ.) के हालात में बहवाले इमाम उल मोहद्देसीन हुज्जतुल इसलाम **हज़रत अल्लामा शेख़ मुफ़ीद** (अ.र.) व **अल्लामा मोतमिद तबरसी** लिखा जा चुका है कि हज़रत इमाम रज़ा(अ.) के नरीना फ़रज़न्द ,हज़रत इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.) थे। इन हज़रात की तहकीक पर ऐतिमाद व एतिक़ाद करने के बाद यह यक़ीनी तौर पर कहा जा सकता है कि हज़रत इमाम रज़ा (अ.) की नस्ल सिर्फ इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.) से बढ़ी, बेटे की औलाद का दादा की तरफ़ इन्तेसाब ख़ुसूसन ऐसी हालत में जबकि बाप के अलावा दादा के कोई और औलाद न हो,नेहायत मुनासिब है।

इसी लिए **अल्लामा हुसैन वाएज़ काशफ़ी , अल्लामा सय्यद नूरूउल्लाह शूस्तरी (शहीदे सालिस) अल्लामा मजलिसी** तहरीर फ़रमाते हैं कि **हज़रत इमाम मोहम्मद तक़ी** (अ.) की औलाद को **" रिज़वी "** कहा जाता है (रौज़तुल शोहदा सफ़ा ४३८ ,मजालिस अल मोमेनीन व बेहारूल अनवार) अल्लामा मासिर मौलाना सय्यद अली नक़ी मुजतहीदुल अस्त्र रक़म तराज़ है कि " यह एक हक़ीकत है कि जितने सादात **" रिज़वी "** कहलाते है वह दरअस्ल **तक़वी** हैं यानी हज़रत इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.) की औलाद हैं। अगर हज़रत इमाम रज़ा (अ.) की औलाद मोहम्मद तक़ी (अ.) के अलावा किसी और फ़रजन्द के ज़रिए से भी होती तो इम्तेआज़ के वह अपने को " रिज़वी " कहलाती और इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.) की औलाद अपने को तक़वी कहती ,मगर चुंकि इमाम रज़ा (अ.) कि नस्ल इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.) से चली और हज़रत इमाम रज़ा (अ.) की शख़्सी शोहरत सलतनते अब्बासीया के वली अहद होने की वजह से जम्हूरे मुसल्लमीन में बहुत हो चुकी थी, इसलिए तमाम औलाद को हज़रत इमाम रज़ा (अ.) की तरफ़ मन्सूब करके तारूफ़ किया जाने लगा और रिज़वी के नाम से मशहूर हुए।

हज़रत इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.) की नस्ल दो बेटों से बढ़ी, एक इमाम अली नक़ी (अ.) और दूसरे मुबरके अलैह रहमता (किताब रहमतुल लिलअलेमीन जिल्द २ सफ़ा १४५) इमाम अली नक़ी (अ.) की औलाद अपने को नक़वी और मूसा मुबरके की औलाद मज़कूरा वजह की बिना पर अपने को रिज़वी कहलाती है।

जनाबे मूसा बिन इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.) के फ़रज़न्द मुताबिक़ तहरीर सय्यद हामिद हुसैन करारवी मतूफ़ी १२७१, हिजरी महूलए "लताएफ अलशरफ़" तीन थे।

अल्लामा हुसैन वाएज़ काशफ़ी लिखते हैं "अक़ब मुबरक़ा अज़ सय्यद अहमद अस्त व अक़ब अहमद अज़ मोहम्मद अरज अस्त " (रौज़तुल शोहदा सफ़ा ४३८)

सय्यद अहमद के तीन बेटे थे (१)सय्यद सालेह (२) सय्यद जलील (३) सय्यद मोहम्मद अरज मोहम्मद अरज के फ़रज़न्द अबू अब्दुल्लाह सय्यद अहमद "नक़ीब अलकुम " थे। जिसके मानी रईसे आज़म ,निगराने आला ,सरबराह और क़ौम के हर दाख़ली और ख़ारजी अमर में तदबीर और साज़गारी पैदा करने वाले के हैं(मजमउल बहरैन सफ़ा १५७) सादाते करारी ज़िला इलहाबाद का सिलसिलए नसब आप ही की वसातत से इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.) और इमाम अली रज़ा (अ.) तक पहुंचता है। सादाते करारी के मूरिसे आला सय्यद हसामुद्दीन आल्लाह मुक़ामहू ,गर्वनर मथुरा ब अहदे फ़िरोज़शाह तुग़लक़ थे। सय्यद रियाज़ुल हसन करारवी मुक़ीम कराची लिखते हैं कि "आप ईरान से हिन्दुस्तान आकर ज़ैद पुर ज़िला बारार बंकी में सुकूनत पज़ीर हुए थे। आपको पहले सूबे का गर्वनर फिर फ़ौज का कमान्डर बना दिया गया था "आप बहुत बड़े बहादुर और सख़ी थे। आपका सिलसिला नौ वास्तों से नक़ीब अलकुम तक, फिर चार वास्तों से हज़रत इमाम मोहम्द तक़ी (अ.) तक पहुँचता है। आपने ७१७ हिजरी में जगंल काट कर " करारी " को आबाद किया जो तक़रीबन आढ़ाई सौ मवाज़ेआत पर मुश्तमिल है, जिन पर आपकी औलाद क़ाबिज़ और मुतासरिफ़ है। (किताब शजरह सादात करारी मोअल्लेफ़ा सय्यद रियाज़ हुसैन मरहूम सफ़ा १७-१८ तबा लखनऊ १९२७ ई०)

सय्यद हसामुद्दीन के कुम से हिन्दुस्तान तशीरफ़ लाने के मुतआल्लिक़ कहा जा सकता है कि चंगेज़ ख़ाँ ने जब ईरान फ़तेह करने के लिए लश्कर भेजा और उस लश्कर ने क़यामत खेज़ तबाही मचाई थी , इसी मौक़े पर दीगर हज़रात की तरह आप भी हिन्दुस्तान तशरीफ़ लाए। (तारीख़ रौज़तुल सफ़ा जिल्द ५ सफ़ा २५ ता सफ़ा ३६ तबा लखनऊ में है कि चंगेज़ ख़ाँ का लश्कर ६१५ हिजरी में फ़तेह ईरान के लिए निकला। इसकी हालत यह थी कि सैले हवादिस की तरह जिस तरफ़ गुज़रता था तबाहो बरबाद कर छोड़ता था, किसी ने किसी का हवाला देते हुए कहा है कि "आमदनदव कुन्दनद व सोख़तन्द व कुश्तनद व बरदनद " कि लश्कर वाले आए , उखाड़ा वछाड़ जलाया फूका, क़त्ल किया और सब लूट कर ले गए। सफ़ा २, चंगेज़ ख़ाँ के दस्त बुरद से ईरान का कोई शहर नुमाया क़रिया नहीं बचा। उसने क़त्लो ग़ारत का सिलसिला ६२१, हिजरी तक जारी रखा। यूँ तो हर जगह तबाही हुई और सब ही क़त्ल हुए। लेकिन वह मुक़ामात जिनकी तबाही से हमारे दिलों को रूही सदमा पहुँचा। वह बलख़, ख़ुरासान, सब्ज़ावार , नेशापूर और कुम जैसे शहर में, बलख़ में पचास हज़ार सादात थे जो क़त्ल हुए। ख़ुरासान में करीब सद हज़ार मोमिन मोवहिद शहीद साखतनद " तक़रीबन एक लाख मोमिन क़त्ल हुए। सफ़ा ३६, सब्ज़ावार में सत्तर हज़ार क़त्ल किए गए। सफ़ा ३६ नेशापूर में तो मक़तूलीन की इतनी कसरत थी कि बारह दिन तक लाशों का शुमार होता रहा। हेरात में भी शदीद अन्धेर गर्दी थी, बेशुमार सादात क़त्ल किए गए। इन हगांमों में नेहायत बरबरियत का सबूत दिया गया,आग लगाई

गई। अस्मतदरी की गई,पानी बन्द किया गया और बे दरेग क़त्ल व खूँरेज़ी से सरज़मीन ईरान लालाज़ार बनाई गई। बाज़ मुक़ामात के तज़किरे में मज़कूर है कि ज़ालिम यह कहते थे कि यह राफ़ज़ी लोग हैं, इनका क़त्ल करना "ऐन सवाब व मुस्तलज़िम सवाब अस्त" नेहायत सही अमल है और बेहद सवाब का मोजिब है सफ़ा ३० बहर हाल हलाात से मुतासिर हो कर सादात ईरान से जान बचा कर निकल खड़े हुए और एतराफ़े आलम जहाँ जिसको सूझा, वहाँ जा ठहरा सफ़ा ३६ साहबे उम्दतूल तालिब की तहरीर के मुताबिक़ हज़रत मूसा मबरक़ा की औलाद भी हिन्दुस्तान आई। बदरे मशअशा सफ़ा ३१ जहाँ तक मैं समझता हूँ, सय्यद हुसामुद्दीन का तशरीफ़ लाना भी इसी अहद से मुतअल्लिक़ है।

हज़रत इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.) के फ़रज़न्दे अर्जुमन्द जनाब मूसा मुबरक़ा के मुख़्तसिर हालात

हज़रत मूसा मुबरक़ा (अ.र.) हज़रत इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.) के फ़रज़न्द और हज़रत इमाम अली नक़ी (अ.) के बरादरे अज़ीज़ थे, आपकी कुन्नीयत अबू जाफ़र और अबू अहमद थी। आप कमाले हुस्नो जमाल की वजह से हमेशा चेहरे पर नक़ाब डाले रहते थे इसी लिए आपके नाम के साथ "मुबरक़ा" भी मुस्तमिल होता है। आप बेहतरीन आलिमे दीन, सख़ी और बहादुर थे। आप १०, रजबुल मुरज्जब २१७, जिहरी को मदीनए मुनव्वरा में पैदा हुए। फिर ३८ साल की उमर में २५५ हिजरी में कूफ़े तशरीफ़ ले गए, फिर वहाँ से २५६, हिजरी में कुम मुन्तक़िल होगए। उलमा का बयान है कि यह पहले शख़्स हैं जिन्होंने सादाते रिज़विया से कुम में मुस्तक़िल क़याम का इरादा किया।

अल्लामा शेख़ अब्बास क़ुम्मी तहरीर फ़रमाते है कि जब आप कूफ़े से कुम पहुँचे तो तो वहां के रऊसा ने आपके मुस्तक़िल क़याम की मुख़ालेफ़त की और आपकी भर पूर कोशिश क़याम के बावजूद आपको वहां टिकने न दिया ,बिल आख़िर आप वहां से रवाना हो कर "काशान" पहुँचे ,आपकी नस्ली अज़तम और तबलीग़ी सर गर्मियों की शोहरत की वजह से वहाँ के बाशिन्दों ने आपकी बड़ी आओ भगत की और पूरी इज़्ज़त व तौक़ीर के साथ इनको अपनी आँखों पर जगह दी , चुनान्चे इनके सरबराह अहमद बिन अब्दुल अज़ीज़ बिन दल्फ़ अजली ने दिलोजान से ख़ैर मक़दम किया और लिबासे फ़ाख़ेरा पहना कर उनके लिए शानदार घोड़े फ़राहम किए और एक हज़ार मिसक़ाल सोना , सालाना उनके लिए मुक़र्र किया।

मुवर्रेख़ीन का बयान है कि अहले काशान आपके वहाँ क़याम करने से बे इन्तेहाई खुश थे और आपके क़याम को सारे काशान की खुश किस्मती समझते थे। लेकिन इसी दौरान में जब कुम वालों को होश आया और उनके बाज़ मोअज़्ज़ि हज़रात जो कि

बाहर थे जैसे"अबू अल सय्यद बिन अल हुसैन बिन अली बिन आदम"जब कुम वापस पहुँचे और उन्हे इस हादसे अख़राज का इल्म हुआ तो वह बेहद शर्मिन्दा हुए और उन लोगों की सख़्त मज़म्मत की। जिनका इनके अख़राज में हाथ था।"फार सलवा रऊसा अलअरब"फिर इन मोअज्ज़ेज़ीन और अरब के रऊसा ने , आपको वापस लाने के लिए एक जमीअत भेज दी, इसने उज़र व माज़ेरत के बाद आपको कुम वापस तशरीफ लाने पर आमादा कर लिया। चुनान्चे आप निहायत इज्ज़त व एहतिराम के साथ कुम वापस तशरीफ़ लाए, इन हज़रात ने इनके लिए एक शानदार मकान और बहुत सी ज़रूरी चीज़ें और जाएदाद में उनको वाफिर हिस्सा दिया और बीस हज़ार दिरहम से नक़द ख़िदमत की आपके कुम में मुस्तक़िल क़याम के बाद आपकी बहने ,ज़ीनत उम्में मोहम्मद, मैमूनावग़ैरा भी पहुँच गईं और आपकी लड़की बरेह भी जा पहुँची। यह बीबियां मुस्तक़िल वहीं मुक़ीम रहीं बिल आख़िर सब की सब हज़रत मासूमए कुम के गिर्दा गिर्द दफ़न हुईं।

आप अपने भाई इमाम अली नक़ी (अ.) के पैरो थे और उन्हे बेहद मानते थे। और मसाएल के जवाब देने में बावक़्ते ज़रूरत उन्हीं से मदद लिया करते थे जैसा कि यहिया इब्ने अक़्सम के सवाल के जवाब में आपका इमाम (अ.) की तरफ़ रूजू करने से ज़ाहिर है। (सफ़ीनतुल बेहार जिल्द १ सफ़ा ५६१) आपके मुतआल्लिक़ जो यह कहा जाता है कि आप इमाम अली नक़ी (अ.) की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ एक दफ़ा मुतवक्किल से मिलने के लिए गए थे। " ग़लत है " क्योंकि इस ख़बर की रवाएत याक़ूब बिन यासिर ने की है और वह मोवक्किल का आदमी था यानी "यह हवाई उसी दुश्मन की उड़ाई हुई है" इसकी कोई अस्लीयत नहीं (बदर मशअशा अल्लमा नूरी व सफीनतुल अलबहार २ सफ़ा ६५२)

आपने शबे चार शम्बा २२ रबीउस्सानी २६६ मे ब उम्र ७६, साल वफ़ात पाई। आपकी नमाज़े जनाज़ा अमीरे कुम अब्बास बिन अमरू ग़नवी ने पढ़ाई और आप इसी मुक़ाम पर दफ़न हुए जिस जगह आपका रौज़ा बना हुआ है। एक रवाएत की बिना पर यह वह जगह है जिस जगह, मोहम्मद बिन अल हसन बिन अबी ख़ालिद अशरी मुलक़्क़ब ब "शम्बूल" का मकान था (मन्थउल माल जिल्द २ सफ़ा ३५१) राक़िम अल हुरूफ़ ने १६६६ ई० में आपके मज़ारे मुक़द्दस पर हाज़री दी और फ़ातेहा ख़्वानी की है।

मोवलिफ किताब का शजरहए नस्ब

मोवलिफ़ किताब और राक़िम अलहुरूफ का शजरहए नस्ब यह है। सय्यद नजमुल हसन बिन सय्यद फ़ैज़ मोहम्मद बिन सय्यद तय्यब हुसैन इब्ने सय्यद अमीर हुसैन (क़ाजी शरीअत बअहदे मलका विक्टोरिया)बिन सय्यद शरीफ़ अली सय्यद रौशन अली बिन सय्यद फ़ैज़ महमूद बिन सय्यद शरीफ़ मोहम्मद बिन सय्यद ईसा इब्ने सय्यद मोहम्मद क़ाएम

बिन रूह उल्लाह बिन सय्यद फ़तेह उल्लाह बिन सय्यद फ़ैज़ बिन सय्यद हाशिम बिन सय्यद याकूब बिन सय्यद इमामुद्दीन बिन सय्यद हैदर बिन सय्यद मोहम्मद बिन सय्यद फ़ीरोज़ बिन सय्यद कुतुबुद्दीन बिन सय्यद इमामुद्दीन बिन सय्यद फ़ख़्रूद्दीन बिन सय्यद हुसामुद्दीन (मूरिसे आला सादात करारी) बिन सय्यद कमालुद्दीन (छहतीम) बिन सय्यद बदरूद्दीन बिन ताजुद्दीन (शहीद) बिन सय्यद यहिया बिन सय्यद अब्दुल अज़ीज बिन सय्यद इब्राहीम बिन सय्यद महमूद बिन सय्यद अब्दुल्लाह (ज़रबख़्श) बिन सय्यद याकूब बिन अबू अब्दुल्लाह सय्यद अहमद (नक़ीब अलकुम)बिन सय्यद अबू अली मोहम्मद ऊरूज बिन अबू अहमद सय्यद अबू अल मकारम बिन सय्यद मूसा मुबरका बिन हज़रत इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.) बिन हज़रत इमाम अली रज़ा (अ.)।





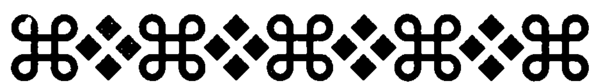
अबुल हसन

हज़रत

इमाम अली नक़ी (अ.)

अली का नाम और ख़ुल्के हसन लेकर मोहम्मद का
नक़ी दुनियाँ में आए, दीन है महवे, सना ख़्वानी
सितारा औज पर है, दसवीं मन्ज़िल का इमामत का
तक़ी के घर में, नाज़िल हो रहा है, नूरे यज़दानी

साबिर थरयानी "कराची"



بسم الله الرّحمٰن الرّحيم

(बाब १२)

हज़रत इमाम अली नक़ी (अ.)

आज दसवाँ नाएब ख़ैरूल बशर पैदा हुआ
हैं लक़्ब हादी, नक़ी, जिसके अली है जिसका नाम
रहबरे दीने ख़ुदा है, यह मोहम्मद का पिसर
इतरते अतहार में ,चौथा अली आली मक़ाम

हज़रत इमाम अली नक़ी (अ.) पैग़म्बरे इस्लाम मोहम्मद (स.) के दसवें जांनशीन और हमारे दसवें इमाम और सिलसिलए मासूमीन की बारवीं कड़ी हैं। आप के वालिद माजिद हज़रत इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.) थे और वालदा माजदा जनाबे समाना ख़ातून थीं,आप अपने अबाओ, अजदाद की तरह इमाम मनसूस ,मासूमए आलम ,ज़माना और अफज़ल काएनात थे ,आप इल्म सख़ावत तहारते नफ़स ,बुलन्दीए किरदार और जुमला सिफात हसना में अपने वालिद माजिद की जीती जागती तस्वीर थे। (सवाएक़े मोहर्रेक़ा सफ़ा १२३ मतालेबुल सुवेल सफ़ा २६१ नूरूल अबसार सफ़ा १४६) आपकी वालेदा के मुताअल्लिक़ उलमा ने लिखा है कि आप "सय्यदा उम्मुल फ़ज़ल " के नाम से मशहूर थीं (मुनाक़िब जिल्द ५ सफ़ा ११६)

इमाम अली नक़ी (अ.) की विलादते बासादत

आप ब तारीख़ ५,रज्जबुल मुरज्जब २१४, हिजरी यौम सेह शम्बा बामुक़ाम मदीनए मुनव्वरा मुतावल्लिद हुए। (नुरूल अबसार सफ़ा १४६, दमए साकेबा सफ़ा १२०) शेख़ मुफ़ीद का कहना है कि मदीने के क़रीब एक क़रिया है जिसका नाम सरय्या है। आप वहाँ पैदा हुए हैं। (इरशाद सफ़ा ४६४)

इस्मे गिरामी, कुन्यित और अलक़ाब :- आपका इस्मे गिरामी अली आपके वालिदे माजिद हज़रत इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.) ने रखा इसे यूँ समझना चाहिए कि सरवरे काएनात (स.) ने जो अपने बारह जां नशीन अपनी ज़ाहेरी हयात के ज़माने में मोअय्यन फ़रमाये थे। उनमें से एक आपकी ज़ाते गिरामी भी थी। आपके वालिदे माजिद

ने उसी मोअय्यन नाम से मौसूम कर दिया। अल्लामा तबरसी लिखते हैं कि चहारदा मासूमीन(अ.) के असमा(नाम) लौहे महफ़ूज़ में लिखे हुये हैं। सरवरे काएनात (स.) ने उसी के मुताबिक़ सबके नाम मुअय्यन फ़रमाए हैं और हर एक के वालिद ने उसी की रौशनी में अपने फ़रज़न्द को मौसूम किया है। (अलाम अल वरा सफ़ा २२५) किताब कशफुल ग़म्मा सफ़ा ४, में है कि आँहज़रत ने सब के नाम हज़रत आएशा को लिखवा दिए थे। आपकी कुन्नियत अबुल हसन थी...आपके अलक़ाब बहुत कसीर हैं जिनमें नक़ी ,नासेह, मोतावक्किल मुर्तुज़ा और असकरी ज़्यादा मशहूर हैं।

(कशफुल ग़म्मा सफ़ा १२२ नूरूल अबसार सफ़ा १४६ ,मतालेबुल सुवेल सफ़ा २६१)

आपका अहदे हयात और बादशहाने वक्त

आप जब २१४, हिजरी में पैदा हुए तो उस वक्त बादशाहाने वक्त मामून रशीद अब्बासी थ। २१८ ई० में मामून रशीद ने इन्तेकाल कियाऔर मोतसिम खलीफा हुआ(अबुल फ़िदा)२२७, हिजरी में वासिक़ इब्ने मोतसिम ख़लीफा बनाया गया(अबुल फ़िदा) २३२ हिजरी वासिक़ का इन्तेक़ाल हुआ और मुतावक्किल अब्बासी ख़लीफ़ा मुर्क़र किया गया। (अबुल फ़िदा फिर २४७, हिजरी में मुग़तसिर बिन मोतावक्किल और २४८,हिजरी में मुस्तईन और २५२, हिजरी में ज़ुबेर इब्ने मोतावक्किल अलमकनी व "मोतिज़बिल्लाह" अल्ल तरतीब ख़लीफा बनाए गए (अबुल फ़िदा दमए साकेबा सफ़ा २५४ हिजरी में मोताज़ के ज़हर देने से इमाम अली नक़ी (अ.) शहीद हुए। (तज़किरतुल मासूमीन)

हज़रत इमाम मोहम्मद तक़ी(अ.) का सफ़रे बग़दाद और हज़रत अली नक़ी(अ.) की वली अहदी

मामून रशीद के इन्तेक़ाल के बाद जब मोतसिम बिल्लाह ख़लीफा हुआ तो उसने भी अपने अबाई किरदार को सराहा और ख़ानदानी रवय्ये का इत्तेबा किया। उसके दिल में भी आले मोहम्मद की तरफ़ से वही ज़ज़बात उभरे जो उसके आबोअजदाद के दिलों में उभर चुके थे, उसने भी चाहा कि आले मोहम्मद (स.) की कोई फ़र्द सतहे अर्ज़ पर बाक़ी न रहे । चुनान्चे उसने तख़्त नशीं होते ही हज़रत इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.) को मदीने से बग़दाद तलब करके नज़र बन्द कर दिया । इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.) जो अपने आबो अजदाद की तरह क़यामत तक के हालात से वाक़िफ़ थे। मदीने से चलते वक्त अपने फ़रज़न्द को आपना जां नशीन मुर्क़र कर दिया और वह तमाम तबरूकात जो इमाम के पास

हुआ करते हैं। आपने इमाम अली नक़ी (अ.) के सिपुर्द कर दिए। मदीने मुनव्वरा से रवाना होकर आप ६, मोर्हरमुल हराम २२०, हिजरी को वारिदे बग़दाद हुए। बग़दाद में आपको एक साल भी न गुज़रा था कि मोतसिम अब्बासी ने आपको ब तारीख़ २६, ज़िक़ाद २२० हिजरी में ज़हर से शहीद कर दिया। (नूरूल अबसार सफ़ा १४७)

उसूल काफ़ी में है कि जब इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.) को पहली बार मदीने से बग़दाद तलब किया गया तो रावीये ख़बर ईस्माईल बिन मेहरान ने आपकी ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ की मौला ,आपको बुलाने वाला दुश्मने आले मोहम्मद (स.) है। कहीं ऐसा न हो कि हम बे इमाम हो जाएं। आपने फ़रमाया कि हमको इल्म है तुम घबराओ नहीं इस सफ़र में ऐसा न होगा।

इस्माईल का बयान है कि जब दोबारा आपको मोतसिम ने बुलाया तो फिर मैं हाज़िर हो कर अर्ज़ परदाज़ हुआ कि मौला यह सफ़र कैसा रहेगा। इस सवाल का जवाब आपने आँसुओं के तार से दिया और ब चश्मे नम कहा कि ऐ इस्माईल मेरे बाद अली नक़ी को अपना इमाम जानना और सब्र ज़ब्त से काम लेना। (तज़किरतुल मासूमीन सफ़ा २१७)

इमाम अली नक़ी (अ.) का इल्मे लदुन्नी

बचपन का एक वाक़िया :- यह हमारे मुसल्लेमात से है कि हमारे अइम्मा को इल्मे लदुन्नी होता है। यह ख़ुदा कि बारगाह से इल्म वहिकमत लेकर कामिल और मुकम्मिल दुनियाँ में तशरीफ लाते रहे है। उन्हे किसी से इल्म हासिल करने की जरूरत नही होती है और उन्हेंने किसी दुनियाँ वाले के सामने ज़ानुए अदब तह नहीं फ़रमाया "ज़ाती इल्म व हिकमत के अलावा मज़ीद शरफ़े कमाल की तहसील अपने आबो अजदाद से करते रहे ,यही वजह है कि इन्तेहाई कमसिनी में भी यह दुनियाँ के बड़े बडे आलिमों को इल्मी शिकस्त देने में हमेशा कामियाब रहे और जब किसी ने फ़रद से माकूफ़ समझा तो ज़लील हो कर रह गया, या फिर सरे ख़म तसलीम करने पर मजबूर हो गया।

अल्लामा मसूदी का बयान है कि हज़रत इमाम मोहम्मद तक़ी (अ.) की वफ़ात के बाद इमाम अली नक़ी (अ.) जिनकी उस वक़्त उमर ६-७ साल की थी मदीनए में मरजए ख़लाएक़ बन गए थे,यह देख कर वह लोग जो आले मोहम्मद से दिली दुश्मनी रखते थे यह सोचने पर मजबूर हो गए कि किसी तरह इनकी मरकज़ियत को ख़त्म कर दिया जाए और कोई ऐसा मोअल्लिम इनके साथ लगा दिया जाए जो उन्हें तालीम भी दे और इनकी अपने उसूल पर तरबीयत करने के साथ उनके पास लोगों के पहुँचने का सद्दे बाब करें यह लोग इसी ख़्याल में थे उमर बिन फ़र्ज रहजी फ़राग़ते हज के बाद मदीना पहुँचा।

लोगों ने उससे अर्ज़ किया। बिल आख़िर हुकूमत के दबाव से ऐसा इन्तेज़ाम हो गया कि हज़रत इमाम अली नक़ी (अ.) को तालीम देने के लिए ईराक़ का सबसे बड़ा आलम, आबिद अबीदुल्लाह जुनीदी माकूल मुशाहेरा पर लगया गया यह जुनीदी आले मोहम्मद(स.) की दुश्मनी में ख़ास शोहरत रखता था। अलग़रज जुनीदी के पास हुकूमत ने इमाम अली नक़ी (अ.) को रख दिया और जुनीदी को ख़ास तौर पर इस अमर की हिदाएत कर दी कि उनके पास रवाफ़िज़ न पहुँचने पाए। जुनीदी ने आपको क़सर सरबा में अपने पास रखा। होता यह था कि जब रात होती थी तो दरवाज़ा बन्द कर दिया जाता था और दिन में भी शियों के मिलने की इजाज़त न थी। इसी तरह आपके मानने वालों की आमद का सिलसिला मुन्क़ता हो गया और आपका फ़ैज़े जारी बन्द हो गया। लोग आपकी ज़्यारत और आपसे इस्तेफ़ादे से महरूम हो गए। रावी का बयान है कि मैंने एक दिन जुनीदी से कहा। ग़ुलाम हाशामी का क्या हाल है। उसने निहायत बुरी सूरत बना कर कहा। उन्हें ग़ुलाम हाशमी न कहो, वह रईसे हाशमी है ख़ुदा की क़सम वह इस कमसिनी में मुझसे कहीं ज़्यादा इल्म रखते हैं। "सुनों" मैं अपनी पूरी कोशिश के बाद जब अदब का कोई बाब उनके सामने पेश करता हूँ तो वह उसके मुतालिक़ ऐसे अबवाब खोल देते हैं कि मैं हैरान रह जाता हूँ। "यज़न अलनास अफ़ी आलामा वाना वल्लाह अतलम मन्हू" लोग समझ रहे हैं कि मैं उन्हें तालीम दे रहा हूँ। लेकिन ख़ुदा की क़सम मैं उनसे तालीम हासिल कर रहा हूँ। मेरे बस में यह नहीं कि मैं उन्हें पढ़ा सकूँ "हाज़ वल्लाह खैरा हल अर्ज़वाफज़ल मन बफा अल्लाह" ख़ुदा की क़सम वह हाफिज़े कुरान ही नहीं वह उसकी तावील वतन्ज़ील को भी जानते हैं और मुख़तसर यह कि वह ज़मीन पर बसने वालों में सबसे बेहतर और काएनात में सबसे अफ़ज़ल हैं। (असबात उल वसीयत दमए साकेबा सफ़ा १२१)

हज़रत इमाम अली नक़ी (अ.) के करामात और आपका इल्मे बातिन

इमाम अली नक़ी (अ.) तक़रीबन २८ साल मदीना मुनव्वरा क़याम पज़ीर रहे। आपने इस मुद्दते उमर में कई बादशाहो का ज़माना देखा। तक़रीबन हर एक ने आपकी तरफ रूख करने से ऐहतिराज़ किया । यही वजह है कि आप उमूरे इमामत को अन्जाम देने में कामयाब रहे । यानी तबलीग़ दीन तहफ़्फ़ुज़ बेनाए मज़हब और रहबरी हवा ख्वाहाँ में फाएज़ अलमराहम रहे। आप चुँकि अपने आबो अजदाद की तरह इल्मे बातिन और इल्मे ग़ैब भी रखते थे। इसी लिए आप अपने मानने वालों को होने वाले वाक़ियात से ब ख़बर फ़रमा दिया करते थे , और सई फ़रमाते थे कि हत्तलवसा मक़दूरात के अलावा कोई गज़न्द न पहुचँ पाए इस सिलसिले में आपके करामात बेशुमार हैं जिनमें से हम इस मक़ाम पर किताब कशफ़ुल ग़म्मा से चन्द करामात तहरीर करते हैं।

(१)मोहम्मद इब्ने फरज रहजी का बयान है कि हज़रत इमाम अली नक़ी (अ.) ने मुझे तहरीर फ़रमाया कि तुम अपने तमाम उमूर व मामलात को रास्त और निज़ामे ख़ाना को दुरूस्त करलो और अपने असलहों को सभाल लो। मैंने उनके हुक्म के बामोजिब तमाम दुरूस्त कर लिया। लेकिन यह न समझ सका यह हुक्म आपने क्यों दिया लेकिन चन्द दिनों के बाद मिस्र की पुलिस मेरे यहाँ आई और मुझे गिरफ़्तार करके ले गई और मेरे पास जो कुछ था सब ले लिया और मुझे कै़द ख़ाने में बन्द कर दिया। मैं आठ साल इस कै़द ख़ाने में पड़ा रहा। एक दिन इमाम (अ.) का ख़त पहुँचा ,जिसमें मरकूम था कि ऐ मोहम्मद बिन फर्ज, तुम उस नाहय्या की तरफ न जाना जो मग़रिब की तरफ़ वाके़ है। ख़त पाते ही मेरी हैरानी की कोई हद न रही। मैं सोचता रहा कि मैं तो कै़द ख़ाने में हूँ। मेरा तो उधर जाना मुम्किन ही नहीं। फिर इमाम ने क्यों यह कुछ तहरीर फ़रमाया। आपने ख़त आने को अभी दो चार ही यौम गुज़रे थे कि मेरी रेहाई का हुक्म आ गया और मैं उनके हस्बुल हुक्म मुक़ामे ममऊन की तरफ़ नहीं गया। कै़द ख़ाने से रेहाई के बाद मैंने इमाम (अ.) को लिखा कि हुज़ूर मैं कै़द से छूट कर घर आ गया हूँ, अब आप ख़ुदा से दुआ फ़रमाएं कि मेरा माल मग़सूबा वापस करा दें। आपने उसके जवाब में तहरीर फ़रमाया कि अन्क़रीब तुम्हारा सारा माल तुम्हें वापस मिल जाएगा चुनान्चे ऐसा ही हुआ ।

(२) एक दिन इमाम अली नक़ी (अ.) और अली बिन हसीब नामी शख़्स दोनों साथ ही रास्ता चल रहे थे। अली बिन हसीब आपसे चन्द गाम आगे बढ़ कर बोले। आप भी क़दम बढ़ा कर जल्द आजाएं हज़रत ने फ़रमाया कि ऐ इब्ने हसीब "तुम्हें पहले जाना है "तुम जाओ इस वाक़िए के चार यौम बाद इब्ने हसीब फ़ौत हो गए।

(३) एक शख़्स मोहम्मद बिन फ़ज़ल बग़दादी नामी का बयान है कि मैंने हज़रत इमाम अली नक़ी (अ.) को लिखा कि मेरे पास एक दुकान है मैं उसे बेचना चहता हूँ आपने उसका कोई जवाब न दिया। जवाब न मिलने पर मुझे अफ़सोस हुआ। लेकिन जब मैं बग़दाद वापस पहुँचा तो वह आग लग जाने की वजह से जल चुकी थी।

(४) एक शख़्स अबू अय्यूब नामी ने इमाम(अ.) को लिखा कि मेरी ज़ौजा हामेला है, आप दोआ फ़रमाएं कि लड़का पैदा हो। आपने फ़रमाया इन्शा अल्लह उसके लड़का ही पैदा होगा और जब पैदा हो तो उसका नाम मोहम्मद रखना। चुनान्चे लड़का ही पैदा हुआ, और उसका नाम मोहम्मद रखा गया।

(५) यहिया बिन ज़करिया का बयान है कि मैं इमाम अली नकी (अ.) को लिखा कि मेरी बीवी हामेला है आप दोआ फ़रमाएं कि लड़का पैदा हो। आपने जवाब में तहरीर फ़रमाया कि बाज़ लड़कियाँ लड़कों से बेहतर होती हैं, चुनांचें लड़की पैदा हुई।

अहदे वासिक़ का एक वाक़िया :-(६) अबू हाशिम का बयान है कि मैं २२७, हिजरी में एक दिन हज़रत इमाम अली नक़ी (अ.) की ख़िदमत में हाज़िर था कि

किसी ने आकर कहा कि तुरकों की फौज गुज़र रही है। इमाम (अ.) ने फरमाया कि ऐ अबू हाशिम चलो इनसे मुलाकात करें। मैं हज़रत के हमराह हो कर लश्करियों तक पहुँचा। हज़रत ने एक गुलाम तुरकी से इसकी ज़बान में गुफ़्तगू शुरू फ़रमाई और देर तक बातें करते रहे। उस तुर्की सिपाही ने आपके क़दमो का बोसा दिया। मैंने उससे पूछा कि वह कौन सी चीज़ है जिसने तुझे इमाम का गिरवीदा बना दिया। उसने कहा इमाम ने मुझे उस नाम से पुकारा जिसका जानने वाला मेरे बाप के अलावा कोई न था।

तिहत्तर ज़बानों की तालीम :- (७) अबू हाशिम कहते हैं कि मैं एक दिन हज़रत की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो आपने मुझसे हिन्दी ज़बान में गुफ़्तगू की जिसका मैं जवाब न दे सका तो आपने फ़रमाया कि मैं अभी अभी तमाम ज़बानो का जानने वाला बनाए देता हूँ। यह कह कर आपने एक सगं रेज़ा उठाया और उसे अपने मुंह में रख लिया उसके बाद उस सगं रेज़े को मुझे देते हुए फ़रमाया कि इसे चूसो, मैंने मुंह में रख कर उसे अच्छी तरह चूसा, उसका नतीजा यह हुआ कि मैं तेहत्तर ज़बानों का आलिम बन गया। जिनमें हिन्दी भी शामिल थी। इसके बाद से फिर मुझे किसी ज़बान के समझने और बोलने में दिक्क़त न हुई सफ़ा १२२ से सफ़ा १२५।

इमाम अली नक़ी (अ.) के हाथों में रेत की क़लबे माहीय्यत

(८) आइम्मए ताहेरीन के उलिल अम्र होने पर क़ुरान मजीद की नस सरीह मौजूद है। इनके हाथों और ज़बान में खुदा वन्दे आलम ने यह ताक़त दी है कि वह जो कहें, हो जाए। जो इरादा करें उसकी तकमील हो जाए अबू हाशिम का बयान है कि एक दिन में मैंने इमाम अली नक़ी (अ.) की ख़िदमत में अपनी तगं दस्ती की शिकायत की । आपने फ़रमाया बड़ी मामूली बात है तुम्हारी तकलीफ़ दूर हो जाएगी। उसके बाद आपने फ़रमाया रमल यानी रेत की एक मुठ्ठी ज़मीन से उठा कर मेरे दामन में डाल दी और फ़रमाया इसे गौर से देखो और इसे फ़रोख़्त करके काम निकालो।

अबू हाशिम कहते है कि खुदा की क़सम जब मैंने उसे देखा तो वह बेहतरीन सोना था, मैंने उसे बाज़ार ले जाकर फ़रोख्त कर दिया (मुनाक़िब इब्ने शहर आशोब जिल्द ६ सफ़ा ११९)।

इमाम अली नक़ी (अ.) और इस्मे आज़म

(९) हज़रत सुक्क़तुल इसलाम अल्लामा कुलैनी उसूले काफ़ी में लिखते हैं कि इमाम अली नक़ी(अ.) ने फ़रमाया। इस्म अल्लाहुल आज़म ७३ हुरूफ़ में इनमें से सिर्फ़ एक

हफ़र आसिफ़ बरख़िया वसी सुलैमान को दिया गया था जिसके ज़रिए से उन्होंने चश्मे ज़दन में मुल्के सबा के तख़्ते बिलक़ीस मंगवा लिया था और इस मंगवाने में हुआ यह था कि ज़मीन सिमट कर तख़्त के क़रीब ले आई थी, ऐ नौफ़ली (रावी) ख़ुदा वन्दे आलम ने हमें इस्में आज़म के बेहतर हुरूफ़ दिए हैं और अपने लिए सिर्फ़ एक हरफ़ महफ़ूज़ रखा है जो इल्म ग़ैब से मुताअल्लिक़ है।

मसूदी का कहना है कि इसके बाद इमाम ने फ़रमाया कि ख़ुदा वन्दे आलम ने अपनी क़ुदरत और अपने इज़्ने इल्म से हमें वह चीज़ें अता कीं हैं जो हैरत अंगेज़ और ताज्जुब ख़ेज़ हैं। मतलब यह है कि इमाम जो चाहें कर सकते हैं , उनके लिए कोई रूकावट नहीं हो सकती। (उसूले- काफ़ी -मुनाक़िब इब्ने शहरे आशोब जिल्द ५ सफ़ा ११८ व दमए साकेबा सफ़ा १२६)

इमाम अली नक़ी (अ.) और साल के चार अहम रोज़े

(१०) शेख़ अबू जाफर तूसी किताब मिसबाह में लिखते हैं कि इस्हाक़ बिन अब्दुल्लाह अलवी अरीज़ी हज़रत इमाम अली नक़ी (अ.) की ख़िदमत में बा मुक़ाम सरय्या (मदीना) हाज़िर हुए। इमाम (अ.) ने उन्हें देखकर फ़रमाया। मै जानता हूँ कि तुम्हारे बाप और तुम्हारे चचा के दरमियान यह अमर ज़ेर बहस है कि साल के वह कौन से रोज़ें हैं जिनका रखना बहुत ज़्यादा सवाब रखता है और तुम इसी के मुतालिक़ मुझ से सवाल करने आए हो । उसने कहा ऐ मौला बस यही बात है कि आपने फ़रमाया सुनो वह चार रोज़े हैं जिनके रखने की ताकीद है (१) यौमे विलादत हज़रत पैग़म्बरे इस्लाम १७ रबीउल अव्वल (२) यौमे बेअसत व मेराज २७, रजबुल मुरज्जब (३) यौमे दहवाउल अर्ज़ यानी जिस दिन जिस दिन काबे के नीचे से ज़मीन बिछाई गई और सफीनाए नूह कोह जूदी पर ठहरा जिसकी तारीख़ २५ ज़ीक़ाद है। (४) यानी यौमें अलग़दीर जिस दिन हज़रत रसूले ख़ुदा (स) ने हज़रत अली (अ.) को अपने जानशीन होने का ऐलान आम फरमाया जिसकी तारीख़ १८ ज़िल हिज है। ऐ अरीज़ी जो इन दिनों में से किसी दिन भी रोज़ा रखे। उसके साठ और सत्तर साला गुनाह बख़्शे जाते हैं।

(किताब मुनाक़िब जिल्द ५ सफ़ा १२३ व दमए साकेबा जिल्द ३ सफ़ा १२३)

इमाम अली नक़ी (अ.) और मुतवक्किल की तख़्त नशीनी

(१) यह मानी हुई बात है कि मोहम्मद (स.) व आले मोहम्मद (स.) उन तमाम उमूर से वाक़िफ़ होते हैं जिनसे अवाम उस वक़्त तक ब ख़बर नहीं होते जब तक वह मन्ज़रे आम पर न आजाए। इमाम शिबलन्जी लिखते हैं कि वासिक़ का एक मुँह चढ़ा

रफ़ीक़ अस्बाती एक दिन ईराक़ से मदीना मुनव्वरा पहुँचा , और वहाँ जा कर इमाम अली नक़ी(अ.) से मिला,आपने ख़ैर ख़ैरियत दरयाफ़्त करने के बाद फ़रमाया कि वासिक़ बिल्लाह ख़लीफ़ए वक़्त का क्या हाल है। उसने कहा मैंने उसे ब सलामत छोड़ा और वह बिलकुल बख़ैरियत है। मैं उसका भेजा हुआ यहाँ आया हूँ। आपने फ़रमाया लोग कहते हैं कि वह फ़ौत हो गया है। यह सुन कर अस्बाती ने सुकूत इख़्तेआर किया और समझा कि यह जो आपने फ़रमाया है, बइल्में इमामत फ़रमाया है, हो सकता है कि दुरूस्त हो। फिर आपने कहा अच्छा यह बताओ कि इब्ने अज़यात किस हाल में है। उसने अर्ज़ की वह भी अच्छा ख़ासा है। बिल्कुल ख़ैरियत से है। इस वक़्त उसी का तूती बोलता है और इसी का हुक्म चलता है। आपने इरशाद फ़रमाया। ऐ अस्बाती सुनो, हुक्मे ख़ुदा को कोई नहीं टाल सकता और क़लमे क़ुदरत को कोई नहीं रोक सकता माता अलवासिक़ व जल्से जाफ़र अलमोतावक्किल वासिक़ का इन्तेक़ाल हो गया है और मुतावक्किल तख़्त नशीने ख़िलाफ़त हो गया है। "वक़तल इब्ने अलज़यात और इब्ने ज़्यारत क़त्ल कर दिया गया है" अस्बाती ने चौंक कर पूछा या हज़रत यह सब कैसे हो गया। मैं तो सबको ख़ैरियत व आफ़ीयत में छोड़ कर आया हूँ। आपने फ़रमाया तुम्हारे ईराक़ से निकलने के छः यौम बाद यह इन्क़ेलाब आया है। इसके बाद अस्बाती आपसे रूख़सत हो कर शहर में किसी मुक़ाम पर जा ठहरा। चन्द दिनों के बाद मुतावक्किल का नामा बर मदीनए पहुँचा तो बिलकुल उन्हीं हालात का इन्केशाफ़ हुआ जिनकी ख़बर इमामे ज़माना दे चुके थे। (नुरूल अबसार सफ़ा १४६, तबा मिस्र)

मुवर्रिख़ अलवर्दी लिखते हैं कि यह वाक़िया २३२ हिजरी का है तारीख़े इस्लाम मिस्टर ज़ाकिर हुसैन में है कि इब्ने अलज़्यारत वज़ीर था। उसके क़त्ल होते ही मोतावक्किल ने अपना वज़ीर फतेह इब्ने ख़क़ान को बनाया जो बहुत ज़ेहीन व ज़की था।

(फेहरिस्त इब्ने नदीम सफ़ा १७५)

हज़रत इमाम अली नक़ी (अ.)और सहीफ़ए कामेला की एक दोआ

हज़रत इमाम अली नक़ी (अ.) के एक सहाबी सबा बिन हमज़तुल क़ुम्मी ने एक को तहरीर किया कि मौला मुझे ख़लीफ़ा मोतसिम वज़ीर से बहुत दुख पहुँच रहा है। मुझे इसका भी अन्देशा है कि कहीं वह मेरी जान न ले ले। हज़रत ने इसके जवाब में तहरीर फ़रमाया कि घबराओ नहीं और दोआए " सहीफ़ए कामेला " यामन तहलो बेहा अक़्दा अलमकाराहा अलख़ पढो मुसीबत से नजात पा जाओ गे। **यसआ बिन हमज़ा** का बयान है कि मैं ने इमाम के हसबे अलहुक्म नमाज़ सुबह के बाद इस दोआ की तिलावत की जिसका पहले ही दिन यह नतीजा निकला कि वज़ीर ख़ुद मेरे पास आया मुझे अपने हमराह ले गया और लिबासे फ़ाख़रा पहना कर मुझे बादशाह के पहलू में बिठा दिया।

इमाम अली नक़ी (अ.) के अबाओ अजदाद की क़ब्रो के साथ मोतावकिल अब्बसी का सुलूक

हज़रत इमाम अली नक़ी (अ.)मदीने ही में थे कि ज़िल हिज २२२, हिजरी में अबू अल फ़ज़ल जाफर मुतावकिकल अब्बसी तख़्ते ख़िलाफ़त पर मुतामक्किन होने के बाद इसने वह हरकतें शुरू कीं जिन्होंने ज़ारे दमिश्क़ यज़ीद को भी शर्मा दिया।

मुवर्रिख़ निगार में मुतावक्किल अब्बसी को वही दर्जा हासिल है। जो बनी उम्मया में यज़ीद को हासिल था। यह दोनें अपने ज़ाती किरदार के अलावा जो कुछ आले मोहम्मद(स.) के साथ करते रहे उससे तारीख़े इस्लाम सख़्त शर्मिन्दा है। मुतावक्किल के मुताअल्लिक़ मुवर्रिख़ इब्ने असीर लिखता है कि यह अली बिन अबी तालिब और उनके अहले बैत से सख़्त बुग़ज़ रखा था।

दमेरी का कहना है कि मोतावक्किल हज़रत अली (अ.) से बुगुज़ शदीद रखता था और उनकी मनक़सत किया करता था। तारीख़ अबुल फ़िदा में है कि मुतावक्किल ने शायर इब्ने सकीयत को इस जुर्म में कि उसने मोतावक्किल के इस सवाल के जवाब में मेरे बेटे मोताज़ और मोइद बेहतर हैं या अली के बेटे हसन, हुसैन, यह कहा था कि तेरे बेटों को मैं हसनैन के ग़ुलाम क़म्बर के बराबर भी नहीं समझता। मोतावक्किल ने उनकी ज़बान गुद्दी से खिचवा ली थी, मोतावक्किल की ज़िन्दगी का एक बत्तरीन और सियाह ज़माना आले मोहम्मद(स.) की क़ब्रों का मिसमार करना है। इसके आम हालात यह है कि “यह बड़ा ज़ालिम दाएम उल ख़ुमर और अय्याशा बादशाह था। इसकी चार हज़ार कनीज़े थीं। इन सबसे मुजामेअत कर चुका था। इसके दरबार में हज़ल और मसख़रा पन बहुत होता था, जो तमसख़ुर में बढ़ कर होता वही इसका ज़्यादा क़रीब होता था। वह महफ़िले बज़्म में मुसाहेबों और नदीमों के साथ तकलीफ़ वह खुश तबइयां करता था, कभी मजलिस में शेर को छुड़ा देता। कभी किसी की आस्तीं में साँप छोड़ देता था। जब बह काटता तो तरयाक़ से मदावा करता कभी मटकों में बिछडू भरवा कर उन्हें मजलिस में छुड़वा देता। वह मजलिस में फैल जाते किसी को हरकत करने का यारा न होता। उसने एक फ़रमान की रद से मज़हब मोतज़िला को ख़िलाफ़े हूकूमत क़रार दिया था। मोतजिलयों को सरकरी ओहदों से माजूल कर दिया था। अली और औलादे अली से दुश्मनी रखता था।

सेवती लिखता है कि मुतवक्किल नासबी था। अली और औलादे नबी का दुश्मन था। साहबे गुलज़ार शाही लिखते हैं कि इसके वक़्त में सादात बेचारे मुसीबत के मारे जिला वतन हो गए। कर्बला के रौज़े जो उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ने बनवाए थे और उन लोगों के गिर्द के मकानात उसने मिसमार करवा दिए और लोगों को ज़्यारत से मना

किया। साहबे हबीब अस सियर लिखते हैं कि २३६ हिजरी में मुतावकिल ने हुक्म दिया कि कोई, मज़ारे हैदरे कर्रार और उनकी औलाद की ज़्यारत को न जाया करें और हुक्म दिया कि इममा हुसैन (अ.) और शोहदाए कर्बला के रौज़े को हमवार करके उन पर ज़राअत के लिए पानी छोड़ दें और तारीख़ गुज़ीदह और तारीख़े कामिल में है कि मुतावक्किल ने हुक्म दिया कि इमाम हुसैन(अ.) की मज़ार और उसके गिर्द के मकानात वग़ैरह मुन्हदिम करके वहाँ ज़राअत की जाए और लोगों को उस मुक़ाम में जाने की मुमानीयत करके यह मुनादी करादी कि जो शख़्स वहाँ दिखाई देगा वह क़ैद किया जाएगा। तवारीख़ में है कि हर चन्द फ़रमा बरों ने कोशिश की मगर पानी इमाम और तमाम शोहदाए इतरते ताहेरा की क़ब्रों पर जारी न हुआ जिससे ख़िलक़त को सख़्त हैरत हुई और उस वक़्त से और इसी सबब से उस मशहदे मुक़द्दस को हायर कहने लगे। मुतावक्किल की इस हरकत से मुसलमानों को सख़्त सदमा हुआ। अहले बग़दाद ने मस्जिदों और घरों की दीवारों पर उसे गालियाँ लिखी और हजो में अशआर कहे। इस बनी फ़ात्मा से बागे फ़िदक भी छीन लिया था। ग़ैर मुस्लिमों को ओहदों से बरतरफ़ कर दिया था। नसारा को हुक्म दिया कि गले में ज़िन्नार न बांधें। घोड़े पर सवार न हों। बल्कि गधे और ख़च्चर पर सवार हों और रकाबें काठ की रखें। २३४, हिजरी में उसने तमाम मोहद्देसीन को सामरा में जमा किया और इनाम व इकराम देकर हुक्म दिया कि सिफात व रोयत व ख़ल्के क़ुरान के मुतआल्लिक़ हदीसें बयान करें। चुनान्चे इसी लिए अबू बक्र इब्ने शीबा को जामा मस्जिद " रसाफ़ा " में और उनके भाई " उसमान " को जामा मन्सूर में मुर्क़र किया। इन दोनों के वाज़ में हर रोज़ क़रीब हज़ार आदमी के जमा **होते थे। सेवती** लिखता है कि मोतावक्किल वह पहला ख़लीफ़ा है जिसने शाफ़ेई मज़हब एख़्तेआर किया। मोतावक्किल के ज़माने में बड़ी बड़ी आफ़तें नाज़िल हुईं। बहुत से इलाक़ों में ज़लज़ले आए। ज़मीनें धंस गईं। आगें लगीं ,आसमान से हौलनाक आवाज़ें सुनाई दीं, बादे समूम से बहुत से आदमी और जानवर हलाक हुए, आसमान से मिस्ल टिडियों के तारे टूटे। दस दस रतल के पत्थर आसमान से बरसे (तारीख़े इस्लाम जिल्द १ सफ़ा ६५) **क़ुमक़ामे ज़ख़ार** में है कि मोतावक्किल चुँकि हज़रत अली (अ.) से दुश्मनी रखता था इसका मुस्तक़िल रवय्या यह था कि वह ऐसे लोगों को अपने पास जमा रखता था जो अमीरल मोमिनीन से बुगज़ व अनाद रखते थे और उनकी तौहीन में मसर्रत महसूस करते थे। जैसे इब्ने जहम शायर , उमर बिन फर्जरहजी अबू अलहज़ इब्ने अतरजा ,अबू अल अबर, यह लोग मोतावकिकल को हमेशा औलादे अली के क़तल की तरफ़ मोतावज्जा करते थे और इससे कहते थे कि अगर तूने उन्हें बाक़ी रहने दिया तो यह एक एक न एक दिन तेरी सलतनत पर कब्ज़ा कर लेंगे। इन लोगों के हर वक़्त उभारने का नतीजा यह हुआ कि दिल में आले मोहम्मद(स.) की दुश्मनी पूरी तरह क़ाएम हो गई। वह चूँकि गाने वाली औरतों का शाएक़ था। लेहाज़ा उसने शराब पीने के बाद एक ऐसी औरत को तलब किया जिससे वह बहुत ज़्यादा मानूस था। लोगों ने कहा

कि दूसरी औरतें हाज़िर हैं इनसे काम निकाला जाए वह आ जाएंगी। चुनान्चे ऐसा ही हुआ। जब वह थोड़ी देर के बाद पहुँची तो बादशाह ने पूछा कि कहाँ गई थीं। उसने कहा मैं हज को गई थी। मोतावक्किल ने कहा माहे शाबान में कौन हज करता है। सच बता ,इसने जवाब दिया इमाम हुसैन(अ.) की ज़्यारत के लिए चन्द औरतों के हमराह चली गईं थी। यह सुन कर मुतावक्किल बहुत ग़ज़ब नाक हुआ और उसे क़ैद करा दिया। इसका तमाम माल असबाब ज़बत कर लिया और लोगों को ज़्यारते कर्बला से रोक दिया और तीन रोज़ के बाद मनादी करा दी कि जो श़ख्स हुसैन(अ.) की ज़्यारत को जाएगा क़ैद किया जाएगा। और हर तरफ़ एक एक मील के फ़ासले से पहरे बिठा दिए कि जो शख्स ज़्यारत को जाता हुआ पाया जाए ,फ़ौरन क़ैद में भेज दिया जाए। फिर एक नौ मुस्लिम यहूदी जिसका नाम " वैरिज " था को हुक्म दिया कि कर्बला जाकर "हुसैन (अ.)" का निशान मिटा दे और उस जगह को जुतवा कर वहाँ खेत बनवा दे ,और " ज़रीह " को किसी तरह फिकवा दे हुक्म पाते ही नौ मुस्लिम यहूदी जिसे इस्लाम और इस्लाम के बानीयों का सही ताअर्रूफ़ भी न था तामील के लिए रवाना हो गया और वहाँ पहुँच कर दो सौ जरीब ज़मीन उसने जुतवा डाली। जब क़ब्रे मुनव्वरा इमाम हुसैन(अ.) को जोतने के लिए आगे बढ़ा,तो मुसलमानों ने तामीले हुक्म से इनकार कर दिया,और कहा कि यह फ़रज़न्दे रसूल हैं और शहीद हैं। कुरान मजीद उन्हें ज़िन्दा बताता है। हम हरगिज़ ऐसी नाजाएज़ हरकत नहीं कर सकते। यह सुन कर विरज ने यहूदियों से मदद ली,मगर कामयाब न हुआ। उसके बाद नहर काट कर क़ब्रे मुनव्वरा को ज़ेरे आब करना चाहा। पानी नहर से चल कर जब क़ब्र के क़रीब पहुँचा तो उस पर रवांना न हुआ। बल्कि इसके इर्द गिर्द जारी हो गया। क़ब्रे मुबारक ख़ुशक ही रही। इस यहूदी ने बड़ी कोशिश की ,लेकिन कामयाबी हासिल न कर सका। वह ज़मीन जहाँ तक पानी फैला हुआ था उसे हाएर कहते हैं। किताबे तसवीरे अज़ा में ब हवाले किताब सराएर मरक़ूम है इस ज़मीन को हाएर इस सबब से कहते हैं कि लुग़ते अरब में हाएर के मानी ज़मीन पस्त के हैं। इस जगह बहता हुआ पानी पहुँच कर साकिन और हैरान हो जाता है। क्योंकि बहने का रास्ता नहीं पाता।

शेख़ शहीद अलैहा रहमता का कहना है कि ज़माना मोतावकिकल में चूंकि आपकी क़ब्र के निशान को मिटाने के लिए पानी जारी किया गया था और वहाँ पहुँच कर ब एजाज़े हुसैनी हैरान रह गया था और उस पर जारी नहीं हो सका। इस लिए इस मुक़ाम को जिसमें पानी ठहरा हुआ था "हाएर" कहतें हैं। सेवती तारीख़ अल ख़ुलफ़ा में लिखता है कि यह वाक़िया इन्हेदाम क़ब्रे इमाम हुसैन २३६ हिजरी का है उसने हुक्म दिया था कि इमाम हुसैन (अ.) की क़ब्र ढा दी जाए और निशाने क़ब्र मिटा दिया जाए और उनके मज़ार के इरद गिर्द जितने मकानात हैं उन्हें भी मिसमार करके उस मुक़ाम को एक सहरा की शकल दे दी जाए और वहाँ पर खेती की जाए और लोगों को ज़्यारत इमाम हुसैन(अ.) से

कृतअन रोक दिया जाए । इसके बाद सेवती लिखता है मुतावक्किल बड़ा नासबी था उसके इस फ़ेल से मुस्लमानों में सख़्त हैजान पैदा हो गया और लोगों ने उसकी हजो की और दीवारों पर इसके लिए गालियाँ लिखीं यही कुछ किताब हबीब उस सियर तारीख़े इस्लाम, तारीख़े कामिल, जिलाउल अयून, कुम क़ाम ज़खारे, अमाली शेख़ तूसी वग़ैरा में है ।

अल्लामा सेवती लिखते हैं कि इस मौक़े पर जिन बहुत से शोअरा ने अशआर लिखे। उनमें से एक शायर ने कई शेर कहे हैं जिनका तरजुमा यह है।

(१) ख़ुदा की क़सम बनी उमय्या ने अपने नबी के नवासे को कर्बला में भूखा और प्यासा ज़ुल्म जौर के साथ क़त्ल कर दिया। (२) तो बनी अब्बास जो रसूल के चचा की औलाद हैं उन्होंने भी उनपर ज़ुल्म में कमी नहीं की और उनकी क़ब्र खुदवा कर उसी क़िस्म के ज़ुल्म का इरतेकाब किया है। (३) बनी अब्बास को इस क़िस्म का सदमा था कि वह क़त्ले हुसैन (अ.) में शरीक न हो सके , तो उन्होंने इस सदमे की आग को बुझाने के लिए हज़रत की हड्डियों पर धावा बोल दिया (तारीख़ अल ख़ुल्फ़ा सफ़ा २३७)

अमाली शेख़ तूसी में है कि मोतावक्किल का फ़िरस्तादा वह जब ज़्यरत से मना करने के लिए कर्बला पहुँचा तो वहाँ के लोगों ने ज़्यारत न करने से साफ़ इन्कार कर दिया और कहा कि अगर मोतावक्किल सब को क़त्ल कर दे तब ही यह सिलसिला बन्द हो सकता है। उसने वापस जाकर मुतावक्किल से वाक़िया बयान किया तो मुतावकिकल २४७ ,हिजरी तक के लिए ख़ामोश हो गया।

तवारीख़ में है कि ख़लीफ़ा के हुक्म के मुताबिक़ अमीरे फ़ौज ने कर्बला वालों को ज़्यारते इमाम हुसैन (अ.)करने से रोकना चाहा तो उन लोगो ने फ़ौज से मरउब होने के बजाए मुक़ाबले का प्रेग्राम बना लिया और अपनी जानों पर खेल कर अतराफ़ व जवानिब से दस हज़ार अफ़राद जमा कर लिए और सरकारी फ़ौज के बिल मुक़ाबिल आकर कहा कि अगर मुतावक्किल हम में से एक एक को क़त्ल कर डाले तब भी यह सिलसिला बन्द न होगा। हमारी औलादें हमारी नस्लें इस सुन्नते ज़्यारत को अदा करेंगी। सुनो हमारे अबाओ अजदाद वही करते चले आए जो हम कर रहे हैं और हमारे अबनाये वाहेफ़ा वही करेंगे। जो हम कर रहे हैं, बेहतर होगा कि तुम हमें बाज़ रखने की कोशिश न करो और मुतावक्किल से कह दो कि वह शराब के नशे में ऐसी हरकतें न करे और अपने फ़ैसले पर नज़र सानी करके हुक्म वापस ले ले। अमीर फ़ौज वापस गया और उसने सारी दस्तान मुतावक्किल के सामने दोहरा दी। मुतावकिकल चुंकि उन दिनों सामरा की तमकील में मशगूल था। इसने मन्सूर दवानक़ी की तरह तक़रीबन दस साल ख़ामोश रहा। यानी मन्सूर दवानक़ी जो तामीरे बग़दाद की वजह से दस साल तक इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.) की तरफ़ मुतावज्जा न हो सका। मुतावकिल भी सामरा की वजह से तक़रीबन इतनी ही मुददत के लिए ख़ामोश हो गया। इमाम शिबलन्जी लिखते हैं कि सामरा एक ज़बरदस्त शहर है जो दजला के मशरिक़ में तकरीयत और बुग़दाद के दरमियान वाक़े हैं इसकी बुनियाद २२१ हि०

में मोतसिम अब्बासी ने डाली थी और मुद्दतों इसकी तकमील का सिलसिला जारी रहा।

(नुरूल अबसार सफ़ा १४६ व तारीख़ किरमानी क़लमी)

हुकूमत की तरफ़ से इमाम अली नक़ी (अ.) की मदीने से सामरा में तलबी और रास्ते का अहम वाक़िया

मोतावक्किल २३२, हिजरी में ख़लीफ़ा हुआ और उसने २३६, हिजरी में इमाम हुसैन (अ.) की क़ब्र के साथ पहली बार बेअदबी की ,लेकिन उसमें पूरी कामयाबी न हासिल होने पर अपने फितरी बुग़ज़ की वजह से जो आले मोहम्मद (स.) के साथ था, वह हज़रत अली नक़ी (अ.) की तरफ़ मुतावज्जा हुआ। मुतावक्किल २४३,हिजरी में इमाम अली नक़ी (अ.) को सताने की तरफ़ मुतावज्जे हुआ,और इसने हाकिमे मदीना अब्दुल्ला बिन मोहम्मद को खुफ़िया हुक्म देकर भेजा कि फ़रज़न्दे रसूल इमाम अली नक़ी (अ.)को सताने में कोई दक़ीक़ा फ़रो गुज़ाश्त न करे। चुनान्चे इसने हुकूमत के मन्शा के मुताबिक़ पूरी तवज्जा और पूरे इन्हेमाक के साथ अपना काम शुरू कर दिया। खुद जिस क़दर सता सका उसने सताया और आपके ख़िलाफ़ रिकार्ड के लिए मोतावकिकल को शिकायात भेजनी शुरू की।

अल्लामा शिबलन्जी लिखते हैं कि इमाम अली नक़ी (अ.) को यह मालूम हो गया कि हाकिमे मदीना ने आपके ख़िलाफ रेशा दवानाइयाँ शुरू कर दी हैं और इस सिल सिले में इसने मोतावकिकल को आपकी शिकायात भेजनी शुरू कर दी हैं तो आपने भी एक तफ़सीली ख़त लिखा जिसमें हाकिमे मदीना की बेएतिदाली और ज़ुल्म आफ़रीनी का ख़ास तौर से ज़िक्र किया। मोतावक्किल ने आप का ख़त पढ़ कर आपको इसके जवाब में लिखा के आप हमारे पास चले आएं। इसमें हाकिमे मदीना के अमल की माज़ेरत भी थी,यानी जो कुछ वह कर रहा है अच्छा नहीं करता,हम इसकी तरफ़ से माज़ेरत ख़्वाह हैं मतलब यह था कि इसी बहाने से उन्हें सामरा बुला लें। ख़त में उसने इतना नरम लहजा इख़्तेआर किया था जो एक बादशाह की तरफ़ से नहीं हुआ करता। यह सब हीला साज़ी थी और ग़रज़ महज़ यह थी कि आप मदीना छोड़ कर सामरा पहुँच जाऐं। (नुरूल अबसार सफ़ा १४६)

अल्लामा मजलिसी तहरीर फ़रमाते हैं कि मोतावक्किल ने यह भी लिखा था कि मैं आपकी खातिर से अब्दुल्ला इब्ने मोहम्मद को माजूल करके इसकी जगह पर मोहम्मद बिन फ़ज़ल को मुर्क़र कर रहा हूँ। (जिलाउल अयून सफ़ा २६२)

अल्लामा अरबली लिखते हैं कि मुतवक्किल ने सिर्फ़ यही नहीं किया कि अली नक़ी (अ.) को ख़त लिखा हो कि आप सामरा चले आइऐ बल्कि इसने तीन सौ का लश्कर यहिया इब्ने हरसमा की क़यादत में मदीना भेज कर उन्हे बुलाना चाहा यहिया इब्ने हरसमा का बयान है कि मैं हुक्मे मुतावकिकल पा कर इमाम(अ.) को लाने के लिए ब इरादा मदीना

मुनव्वरा रवाना हो गया। मेरे हमराह तीन सौ का लश्कर था और इसमें एक कातिब भी था जो इमामिया मज़हब रखता था। हम लोग अपने रास्ते पर जा रहे थे और इस सई में थे कि किसी तरह जल्द से जल्द मदीना पहुचँ कर इमाम (अ.) को ले आएं और मुतावक्किल के सामने पेश करें। हमारे हमराह जो एक शिया कातिब था उससे एक लश्कर के अफ़सर से रास्ते भर मज़हबी मनाज़रा होता रहा। यहाँ तक कि हम लोग एक अज़ीमुश्शान वादी में पहुँचे, जिसके इर्द गिर्द मीलों कोई अबादी न थी और वह एसी जगह थी जहाँ से इन्सान का मुश्किल से गुज़र होता था बिल्कुल जगंल और बेआबो गेयाह सहरा था। जब हमारा लश्कर वहाँ पहुँचा तो उस अफ़सर ने जिसका नाम "शादी" था,और जो कातिब से मनाज़रा करता चला आ रहा था। कहने लगा ऐ कातिब तुम्हारे इमाम हज़रत अली (अ.) का यह क़ौल है कि दुनियाँ की कोई ऐसी वादी न होगी जिसमें क़ब्र न हो या अनक़रीब क़ब्र न बन जाए। कातिब ने कहा बेशक हमारा इमाम(अ.) ग़लिब कुल्ले ग़ालिब का यही इरशाद है। इसने कहा बताओ इस ज़मीन पर किस की क़ब्र है। या किसकी क़ब्र बन सकती है। तुम्हारे इमाम यूँही कह दिया करते हैं। इब्ने हरसमा का कहना है कि मैं चुंकि हश्वी ख़्याल का था। लेहाज़ा जब यह बातें हमने सुनीं तो हम सब हसं पड़े और कातिब शर्मिन्दा हो गया। ग़रज़कि लश्कर बढ़ता रहा और उसी दिन मदीना पहुँच गया। वारिदे मदीना होने के बाद मैंने मोतावकिकल का ख़त इमाम अली नक़ी (अ.)की ख़िदमत में पेश किया। इमाम (अ.) उसे मुलाहेज़ा फ़रमा कर लश्कर पर नज़र डाली और समझ गए कि दाल में कुछ काला है। आपने फ़रमाया ऐ इब्ने हरसमा चलने को तैय्यार हूँ लेकिन एक दो रोज़ की मोहलत ज़रूरी है। मैंने अर्ज़ की हुज़ूर "ख़ुशी से" जब हुक्म हो फ़रमाएं मैं हाज़िर हो जाऊँ और रवानगी हो जाए। इब्ने हरसमा का बयान है कि इमाम (अ.) ने मेरे सामने मुलाज़मीन से कहा कि दर्ज़ी बुलादो, और उससे कहो कि मुझे सामरा जाना है लेहाज़ा रास्ते के लिए गर्म कपड़े टोपियाँ जल्दी से तैय्यार कर दे। मैं वहाँ से रूख़सत हो कर अपने क़याम गाह पर पहुँचा और रास्ते भर यह सोचता रहा कि इमामिया कैसे बेवकूफ़ हैं कि एक शख़्स को इमाम मानते हैं जैसे (माज़ अल्ला) यह तक तमीज़ नहीं है कि यह गर्मी का ज़माना है या जाड़े का। इतनी शदीद गर्मी में जाड़े के कपड़े सिलवा रहे हैं और उसे हमराह ले जाना चाहते हैं। अलग़रज़ मैं दूसरे दिन इनकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो देखा कि जाड़े के बहुत से कपड़े सिले हुए रखे हैं और आप सामाने सफर दुरूस्त फ़रमा रहे हैं और आप अपने मुलाज़मीन से कहते जाते हैं देखो कुलाह बारानी और बरसाती वग़ैरा रहने न पाए। सब साथ में बांध दो। इसके बाद मुझे कहा ऐ यहिया इब्ने हरसमा जाओ तुम भी अपना सामान दुरूस्त करो ताकि मुनासिब वक़्त में रवानगी हो जाए। मैं वहाँ से नेहायत बद दिल वापिस आया। दिल में सोचता था कि उन्हें क्या हो गया कि इस शदीद गरमी के ज़माने में सर्दी और बरसात का सामान हमराह ले रहे हैं और मुझे भी हुक्म देते हैं कि तुम भी इस किस्म के सामान हमराह ले लो। मुख़्तसर यह कि सामाने सफ़र दुरूस्त हो गया और रवानगी

2410

हो गई। मेरा लश्कर इमाम(अ.) को घेरे में में लिए हुए जा रहा था कि नागाह इसी वादी में जा पहुँचे, जिसके मुतअल्लिक़ कातिब इमामिया और अफ़सर शाही में यह गुफ़्तगू हुई थी कि यहाँ पर किसकी क़ब्र है या होगी। इस वादी में पहुँचना था कि क़यामत आगई, बादल गरजने लगे, बिजली चमकने लगी और दोपहर के वक़्त इस क़दर तारीकी छाई कि एक दूसरे को देख न सकता था, यहाँ तक कि बारिश शुरू हुई और ऐसी मूसला धार बारिश हुई कि उमर भर न देखी थी इमाम(अ.) ने आसार के पैदा होते ही मुलाज़मीन को हुक्म दिया कि बरसाती और बारानी टोपीयाँ पहन लो और एक बरसाती यहिया इब्ने हरसमा और एक कातिब को दे दो। ग़रज़ कि खूब बारिश हुई हवा इतनी ठन्डी चली कि जान के लाले पड़ गए। जब बारिश थमी और बादल छटे तो मैंने देखा कि अस्सी अफ़राद मेरी फ़ौज के हलाक हो गए हैं। इमाम(अ.) ने फ़रमाया कि ऐ यहिया हरसमा अपने मुर्दों को दफ़न करो और यह जान लो कि "खुदाए ताला हम चुनी पुरमी गिरवान्द बक़ा राज़ेकबूर"। इस तरह खुदावन्दे आलम हर बुक़्क़ए अर्ज़ को क़ब्रों से पुर करता है। इसी लिए मेरे जद नामदार हज़रत अली(अ.) ने इरशाद फ़रमाया है कि ज़मीन का कोई टुकड़ा ऐसो न होगा जिसमें क़ब्र न बनी हो। "यह सुनकर मैं अपने घोड़े से उतर पड़ा और इमाम(अ.) के क़रीब जा कर पाबोस हुआ और उनकी ख़िदमत में अर्ज़ की "मौला" मैं आज आपके सामने मुसलमान होता हूँ यह कह कर मैंने इस तरह कलमा पढ़ा(अशअदो अन ला इलाहा इल्ललाह व अशअदो अन मोहम्मद अबदहू व रसूलहू व इनकुम खुलाफा अला फ़ीअर हैना" और यक़ीन कर लिया कि यही हज़रत खुदा की ज़मीन पर ख़लीफ़ा हैं और दिल में सोचने लगा कि अगर इमाम(अ.) ने जाड़े और बरसात का सामान न लिया होता और अगर मुझे न दिया होता तो मेरा क्या हशर होता। फिर वहाँ से रवाना होकर "अस्कर " पहुँचा और आपकी इमामत का क़ाएल रह कर ज़िन्दा रहा और ताहयात आपके जद्दे नामदार का कलमा पढ़ता रहा।(कशफ़ुल ग़म्मा सफ़ा १२४)अल्लामा जामी और अल्लामा शिब्लन्जी लिखते हैं कि दो सौ से ज़ाएद अफ़राद आपको अपने घेरे में लिए हुए सामरा पहुँचे। वहाँ आपके क़याम का कोई इन्तेज़ाम नहीं किया गया था और हुक्म था तुमावक्किल का कि इन्हें फ़क़ीरो के ठहराने कि जगह उतारा जाए चुनान्चे आपको "ख़नुल सालेआ" में उतारा गया वह जगह बत्तरीन थी वहाँ शुरफ़ा नहीं जाया करते थे। एक दिन सालेहा बिन सईद नामी एक शख़्स जो आपके मानने वाले थे। आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुए और कहने लगे "मौला" यह लोग आपकी क़दर मन्ज़िलत पर परदा डाल रहे हैं और नूरे खुदा को छुपाने कि किस क़दर कोशिश करते हैं।"कुजा हुज़ूर की ज़ाते अक़दस और कुजा यह क़याम गाह"। हज़रत ने फ़रमाया ऐ सालेह तुम दिल तगं न हो। मैं उसकी इज़्ज़त अफ़ज़ाई का ख़्वाहां और उनकी करम गुस्तरी का जोया हूँ। खुदा वन्दे आलम ने आले मोहम्मद(स.)को जो दर्जा दिया है और जो मुक़ाम अता फ़रमाया है उसे कोई छीन नहीं सकता। ऐ सालेह बिन सईद मैं

तुम्हें खुश करने के लिए बताना चाहता हूँ कि तुम मुझे इस मुक़ाम पर देख कर परेशान न हो खुदा वन्दे आलम ने यहाँ भी मेरे लिए बेहिश्त जैसा बन्दो बस्त फ़रमाया हैं यह कह कर आपने उँगली से इशारा किया और सालेह की नज़र में बेहतरीन बाग़ बेहतरीन नहर वग़ैरह नज़र आने लगीं। सालेह का बयान है कि यह देख कर मुझे क़दरे तसल्ली हो गई। (शवाहेदुन नबूअत सफ़ा २०८ नूरूल अबसार सफ़ा १५०)

इमाम अली नक़ी (अ.) की नज़र बन्दी

इमाम अली नक़ी (अ.) को धोके से बुलाने के बाद पहले तो ख़ान अल सआलेक में फिर इसके बाद एक दूसरे मुक़ाम में आपको नज़र बन्द कर दिया और ताहयात इसी में क़ैद रखा। इमाम शिबलन्जी लिखते हैं कि मुतावक्किल आप के साथ ज़ाहिर दारी ज़रूर करता था, लेकिन आपका सख़्त दुश्मन था। उसने हीला साज़ी और धोका बाज़ी से आपको बुलाया और दरपर्दा सताने और तबाह करने और मुसीबतों में मुबतिला करने के दरपय रहा। (नूरूल अबसार सफ़ा १५०)

अल्लामा इब्ने हजर मक्की लिखते हैं कि मुतावक्किल ने आपको जबरन बुला कर सामरा में नज़र बन्द कर दिया और ता ज़िन्गी बाहर न निकलने दिया।(सवाएक़ मोहर्रेका सफ़ा १२४)

इमाम अली नक़ी (अ.) का जज़बए हमदर्दी

मदीने से सामरा पहुँचने के बाद भी आपके पास लोगों की आमद का तांता बंधा रहा। लोग आपसे फ़ाएदे उठाते और दीनी और दुनियावी उमूर में आपसे मद्द चाहते रहे और आप हल्ले मुश्किल में उनके काम आते रहे। उलमाए इस्लाम लिखते हैं किसामरा पहुँचने के बाद जब आपकी नज़र बन्दी में सख़्ती और शिद्दत न थी। एक दिन आप सामरा के एक क़रये में तशरीफ़ ले गए। आपके जाने के बाद एक साएल आपके मकान पर आया, उसे यह मालूम हुआ कि आप फ़लां गाँव में तशरीफ़ ले गए हैं, वह वहाँ चला गया और जाकर आपसे मिला। आपने पूछा कि तुम कैसे आए हो ,तुम्हारा क्या काम है उसने अर्ज़ की मौला ग़रीब आदमी हूँ ,मुझ पर दस हज़ार दिरहम क़र्ज़ हो गया है और इसकी अदाएगी की कोई सबील नहीं,मौला खुदा के लिए मुझे इस बला से निजात दिलाईए। हज़रत ने फ़रमाया घबराओ नहीं, इन्शाअल्लाह तुम्हारे क़र्ज की अदाएगी का बन्दो बस्त हो जाएगा। वह साएल रात को आपके हमराह मुक़ीम रहा। सुबह के वक़्त आपने इससे कहा कि मैं तुम्हें जो कहूँ उसकी तामील करना और देखो इस अमर में ज़रा भी मुख़ालेफ़त न करना, उसने तामीले इरशाद का वादा किया। आपने उसे एक ख़त लिख कर दिया जिसमें यह मरकूम था कि "मैं दस हज़ार दिरहम इसके अदा कर दूँगा और फ़रमाया कि कल मैं

सामरा पहुँच जाऊँगा जिस वक्त मैं वहाँ के बड़े बड़े लोगों के दरमियान बैठा हूँ तो तुम मुझसे रूपए का तक़ाज़ा करना उसने अर्ज़ की कि हुजूर यह क्यों कर हो सकता है कि मैं लोगों में आपकी तौहीन करूँ हज़रत ने फ़रमाया कोई हर्ज नहीं मैं तुमसे जो कहूँ वह करो। ग़रज़कि साएल चला गया और जब आप सामरा वापस हुए और लोगों को आपकी वापसी की इत्तिला मिली तो आयाने शहर आपसे मिलने आए। जिस वक्त आप लोगों से महवे मुलाक़ात थे। साएल मज़कूर भी पहुँच गया साएल ने हिदाएत के मुताबिक़ आपसे रक़म का तक़ज़ा किया। आपने बहुत नरमी से उसे टालने की कोशिश की ,लेकिन वह न टला और ब दसतूर रक़म माँगता रहा। बिल आख़िर हज़रत ने उसे तीन दिन में अदाएगी का वादा फ़रमाया और वह चला गया। यह ख़बर जब बादशाहे वक्त को पहुँची तो उसने मुबलिग़ तीस हज़ार हज़ार दिरहम आपकी ख़िदमत में भेज दिए तीसरे दिन जब साएल आया तो आपने उससे फ़रमाया कि यह तीस हज़ार दिरहम ले ले और अपनी राह लग। उसने अर्ज़ की मौला मेरा क़र्ज़ तो सिर्फ़ दस हज़ार है। आप तीस हज़ार दे रहे हैं। आपने फ़रमाया जो क़र्ज़ की अदाएगी से बचे उसे अपने बच्चों पर सर्फ़ करना । वह बहुत ख़ुश हुआ और यह पढ़ता हुआ "अल्लाह यालम हैसा यजख़ल रिसालतहू" ख़ुदा ही ख़ूब जानता है कि रिसालत व अमानत का कोई अहल है अपने घर चला गया(नूरूल अबसार सफ़ा १४६, सवाएक़े मोहर्रेक़ा सफ़ा १२३,शवाहेदुन नबूअत सफ़ा २०७ अर हज्जुल मतालिब सफ़ा४६१)

इमाम अली नक़ी (अ.) की हालत सामरा पहुँचने के बाद

मुतावकिल की नीयत ख़राब थी ही। इमाम (अ.) के सामरा पहुँचने के बाद उसने अपनी नियत का मुज़ाहरा अमल से शुरू किया और आपके साथ न मुनासिब तरीक़ों से दिल का बुख़ार निकालने की तरफ़ मुतावज्जा हुआ। लेकिन "अल्लाह" जिसकी लाठी में आवाज़ नहीं उसने उसे कैफ़रे किरदार तक पहुँचा दिया मगर इसकी ज़िन्दगी में भी ऐसे असार और असरात ज़ाहिर किए जिससे वह भी जान ले कि वह जो कुछ कर रहा था। खुदावन्द उसे पसन्द नहीं करता।

मुवर्रिख़ अज़ीम लिखते हैं कि मुतावक्किल के ज़माने में बड़ी अफ़तें नाज़िल हुईं बहुत से इलाक़ों में ज़लज़ले आए। ज़मीनें धस गईं। आगें लगीं। आसमान से हौलनाक आवाज़ें सुनाई दीं। बादे समूम से बहुत से जानवर और आदमी हलाक हुए। आसमान से मिसल टिड्डी के कसरत से सितारे टूटे। दस दस रसल के पतथर आसमान से बरसे। रमज़ान २४३, हिजरी में हलब में एक परिन्दा कौवे से बड़ा आकर बैठा और यह शोर मचाया "या अयाहन नास अत्तक़ू अल्लाह अल्लहा अल्लहा" चालीस दफ़ा यह आवाज़ लगा कर उड़ गया दो दिन ऐसा ही हुआ। (तारीख़े इस्लाम जिल्द १ सफ़ा ६५)

हज़रत इमाम अली नक़ी (अ.)और सवारी की बर्क़ रफ़्तारी

अल्लामा तबरसी रकमतराज़ हैं कि हज़रत इमाम अली नक़ी (अ.) के मदीने से सामरा तशरीफ़ ले जाने के बाद एक दिन अबू हाशिम ने कहा । मौला मेरा दिल नहीं मानता कि मैं एक दिन भी आपकी ज़्यारत से महरूम हूँ, बल्कि जी चाहता है कि हर रोज़ आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ करूँ। हज़रत ने पुछा इसके लिए तुम्हें कौन सी रूकावट है। उन्होंने अर्ज़ की मेरा क़याम बग़दाद है और मेरी सवारी कमज़ोर है। हज़रत ने फ़रमाया "जाओ" अब तुम्हारी सवारी का जानवर ताक़त वर हो जाएगा, और इसकी रफ़्तार बहुत तेज़ हो जाएगी अबू हाशिम का बयान है कि हज़रत के इस इरशाद के बाद से ऐसा हो गया कि मैं रोज़ाना नमाज़े सुबह व नमाज़े ज़ोहर सामरा असकर, में और नमाज़े मग़रिब इशा, बग़दाद में पढ़ने लगा। (अलाम अलवरा सफ़ा २०८)

दो माह क़बल अज़ले काज़ी की ख़बर

अल्लामा जामी रहमतुर अल्लाह तहरीर फ़रमाते हैं कि आपसे एक मानने वाले ने अपनी तकलीफ़ बयान करते हुए बग़दाद के क़ाज़ी शहर की शिकायत की और कहा कि मौला वह बड़ा ज़ालिम है हम लोगों को बेहद सताता हे आपने फ़रमाया घबराओ नहीं वह दो माह बाद बग़दाद में न रहेगा। रावी का बयान है कि ज्योंही दो माह पूरे हुए क़ाज़ी अपने मन्सब से माजूल हो कर अपने घर बैठ गया। (शवाहेदुन नबूअत)

आपका एहतिराम जानवरों की नज़र में

अल्लामा मौसूफ़ यह भी लिखते हैं कि मुतवक्किल के मकान में बहुत सी बतखें पली हुई थीं जब कोई वहाँ जता तो वह इतना शोर मचाया करती थीं कि कान पड़े बात सुनाई न देती थी लेकिन जब इमाम(अ.) तशरीफ़ ले जाते थे तो वह सब ख़ामोश हो जाती थीं और जब तक आप वहाँ तशरीफ़ रखते थे, वह चुप रहती थीं। (शवाहेदुन नबूवत सफ़ा २०६)

हज़रत इमाम अली नक़ी (अ.) और ख़्वाब की अमली ताबीर

अहमद बिन ईसा अल कातिब का बयान है कि मैंने एक शब ख़्वाब में देखा

कि हज़रत मोहम्मद मुस्तफा(स.) तशरीफ़ फरमा हैं और मैं उनकी ख़िदमत में हाज़िर हूँ, हज़रत ने मेरी तरफ़ नज़र उठा कर देखा और अपने दस्ते मुबारक से एक मुठ्ठी खुरमा इस तश्त से अता फ़रमाया जो आपके सामने रखा हुआ था। मैंने उन्हें गिना तो वह पच्चीस थे। इस ख़्वाब को अभी ज़्यादा दिन न गुज़रे थे कि मुझे मालूम हुआ कि हज़रत इमाम अली नक़ी (अ.)सामरा तशरीफ़ लाए हैं। मैं उनकी ज़्यारत के लिए हाज़िर हुआ तो मैंने देखा कि उनके सामने एक तश्त रखा है जिसमें खुरमें हैं। मैंने हज़रत को सलाम किया। हज़रत ने जवाबे सलाम देने के बाद एक मुठ्ठी खुरमा मुझे अता फ़रमाया, मैंने इन खुरमों का शुमार किया तो वह भी पच्चीस थे। मैंने अर्ज़ की मौला क्या कुछ खुरमा और मिल सकता है। जवाब में फ़रमाया ! अगर ख़्वाब में तुम्हें रसूले खुदा (स.) ने इससे ज़्यादा दिया होता तो मैं भी इज़ाफ़ा कर देता। (दमए साकेबा जिल्द ३ सफ़ा १२४) इसी क़िस्म का वाक़िया इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.) और इमाम अली रज़ा(अ.) के लिए भी गुज़रा है।

हज़रत इमाम अली नक़ी (अ.) और फ़ुक़हाए मुस्लेमीन

यह तो मानी हुई बात है कि आले मोहम्मद(स.) ही वह हैं जिनके घर में क़ुरान मजीद नाज़िल हुआ। इनसे बेहतर न क़ुरान समझने वाला है और न उसकी तफ़सीर जानने वाला है। उलमा का बयान है कि जब मोतावक्किल को ज़हर दिया गया तो उसने यह नज़र मानी कि "अगर मैं अच्छा हो गया तो राहे ख़ुदा में माले कसीर दूँगा" फिर सेहत पाने के बाद उसने अपने उलमाए इस्लाम को जमा किया और इनसे वाक़िया बयान करके माले कसीर की तफ़सीर मालूम करना चाही। इसके जवाब में हर एक ने अलाहेदा अलाहेदा बयान दिया एक फ़क़ीहे ने कहा माले कसीर से एक हज़ार दिरहम दूसरे फ़क़ीह ने कहा दस हज़ार दिरहम, तीसरे ने कहा एक लाख दिरहम मुराद लेना चाहिए। मोतावक्किल ने जब हर फ़क़ीह से अलाहेदा जवाब सुना तो तशवीश में पड़ गया और ग़ौर करने लगा कि अब क्या करना चाहिए। मुतावकिकल अभी सोच ही रहा था कि एक दरबान सामने आया जिसका नाम "हसन" था और अर्ज़ करने लगा कि हुज़ूर अगर मुझे हुक्म हो तो मैं इसका सही जवाब ला दूँ। मुतावक्किल ने कहा बेहतर है "जवाब लाओ" अगर तुम सही जवाब लाए तो दस हज़ार दिरहम तुमको इनाम दूँगा और अगर तसल्ली बख़्श जवाब न ला सके तो सौ कोड़े मारूगाँ। इसने कहा मुझे मन्जूर हैं इसके बाद दरबान हज़रत इमाम अली नक़ी (अ.) की ख़िदमत में गया। इमाम(अ.) जो नज़र बन्द ज़िन्दगी बसर कर रहे थे। दरबान को देख कर बोले "अच्छा" अच्छा माले कसीर की तफ़सीर पूछने आया है जा और मुतावक्किल से कह दे माले कसीर अस्सी दिरहम मुराद हैं दरबान ने मुतावक्किल से यही

कह दिया। मुतावक्किल ने कहा जाकर दलील मालूम कर, वह वापस आया हज़रत ने फ़रमाया कि कुरान मजीद में आँहज़रत(अ.) के लिए आया है कि "लक़द नसरकुमुलिल्लाह फ़ी मवातिन कसीरतह" ऐ रसूल अल्लाह ! ने तुम्हारी मद मवातिन कसीरह यानी बहुत से मुक़ामात पर की है जब हमने इन मुक़ामात का शुमार किया जिनमें खुदा ने आपकी मदद फ़रमाई है तो वह हिसाब से अस्सी होते हैं। मालूम हुआ कि लफ़्ज़े कसीर का इतलाक़ अस्सी पर होता है। यह सुन कर मुतावक्किल खुश हो गया, और उसने अस्सी दिरहम सदक़ा निकाल कर दस हज़ार दिरहम दरबान को इनाम दिया।

(मुनाक़िब इब्ने शहरे आशोब जिल्द ५ सफ़ा ११६)

इसी क़िस्म का एक वाक़िया है कि मुतावक्किल के दरबार में एक नसरानी पेश किया गया जो मुसलमान औरत से ज़िना करता हुआ पकड़ा गया। जब वह दरबार में आया तो कहने लगा मुझ पर हद जारी न की जाए। मैं इस वक़्त मुसलमान होता हूँ यह सुन कर क़ाज़ी यहिया बिन अकसम ने कहा कि इसे छोड़ देना चाहिए। क्योंकि यह मुसलमान हो गया। एक फ़क़ीह ने कहा कि नहीं हद जारी होना चाहिए ग़रज़कि फ़िक़हाए मुसल्लेमीन में इख़्तेलाफ़ हो गया। मुतावकिकल ने जब यह देखा कि मसला हल होता नज़र नहीं आता तो हुक्म दिया कि इमाम अली नक़ी(अ.) को ख़त लिख कर इनसे जवाब मगाया जाए। चुनान्चे मसला लिखा गया। हज़रत इमाम (अ.) ने इसके जवाब में तहरीर फ़रमाया "यज़रब हत्ता यमूता" कि उसे इतना मारना चाहिए कि मर जाए। जब यह जवाब मुतावक्किल के दरबार में पहुँचाया तो यहिया इब्ने अकसम क़ाज़ी शहर और फ़क़ीह सलतनत नीज़ दीगर फ़ुक़हा ने कहा इसका कोई सबूत क़ुरान मजीद में नहीं है। बराए मेहरबानी इसकी वज़ाहत फ़रमाऐं। आपने ख़त मुलाहेज़ा फ़रमा कर एक आयत तहरीर फ़रमाई जिसका तरजुमा यह है।(जब काफ़िरो ने हमारी सख़्ती देखी तो कहा कि हम अल्लाह पर ईमान लाते हैं और अपने कुफ़्र से तौबा करते हैं यह उनका कहना उनके लिए मुफ़ीद न हुआ और न ईमान लाना काम आया) आएत पढ़ने के बाद मुतावक्किल ने तमाम फ़ुक़हा के अक़वाल मुस्तरद कर दिएए और नसरानी के लिए हुक्म दे दिया कि इस क़दर मारा जाए कि "मर जाए"

(दमेए साकबा जिल्द ३ सफ़ा १२०)

शाहे रोम को हज़रत इमाम अली नक़ी (अ.)का जवाब

अल्लामा मोहम्मद बाक़र नजफ़ी लिखते हैं कि बादशाहे रोम ने ख़लीफ़ए वक़्त को लिखा कि मैंने इन्जील में पढ़ा है कि जो शख़्स इस सूरे की तिलावत करे जिसमें यह सात लफ़्ज़ न हों (१) **से** (२) **जीम** (३) **हे** (४) **ज़े** (५) **शीन**(६) **ज़ो** (७)**फे**। वह जन्नत में जाएगा। इसे देखने के बाद मैंने तौरैत ज़बूर का अच्छी तरह मुतालेआ किया। लेकिन इस

क़िस्म का कोई सूरा इसमें नहीं मिला। आप ज़रा अपने उलमा से तहक़ीक़ करके लिखये कि शायद यह बात आपके क़ुरान मजीद में हो। बादशाहे वक़्त ने बहुत से उलमा जमा किए और उनके सामने यह चीज़ पेश की सबने बहुत देर तक ग़ौर किया। लेकिन कोई इस नतीजे पर न पहुँच सका कि तसल्ली बख़्श जवाब दे सके। जब ख़लीफ़ए वक़्त तमाम उलमा से मायूस हो गया। तो इमाम अली नक़ी (अ.) की तरफ़ तवज्जा की। जब आप दरबार में तशरीफ़ लाए और आपके सामने मसला लाया गया तो आपने बिला ताख़ीर कहा वह सुरए हम्द है। अब जो ग़ौर किया गया तो बिल्कुल ठीक पाया गया। बादशाहे इस्लाम ख़लीफ़ए वक़्त ने अर्ज़ की, इब्ने रसलू अल्लाह(स.) क्या अच्छा होता अगर आप इसकी वजह भी बताएं कि यह हुरूफ़ इस सूरह में क्यों नहीं लाए गए। आपने फ़रमाया यह सूरा रहमत व बरकत है। इसमें यह हुरूफ़ इस लिए नहीं लाए गए कि **(से)** सबूर हलाकत तबाही,बरबादी की तरफ़ **(जीम)** से जेहीम **(जहन्न्म)** की तरफ़ **(ख़े)** ख़ैबत यानी ख़ुसरान की तरफ़ **(ज़े)** से ज़क़ूम यानी थोहड़ की तरफ़ **(शीन)** से शक़ावत की तरफ़**(ज़वाद)** ज़ुल्मत की तरफ़ **(फ़े)** फ़ुरक़त की तरफ़ तबादुरे ज़ेहनी होता है और यह तमाम चीज़े रहमत व बरकत के मुनाफ़ी हैं। ख़ुलीफ़ए वक़्त ने आपका तफ़सीली बयान शाहे रोम को भेज दिया। बादशाहे रोम ने ज्योंही उसे पढ़ा वह मसरूर हो गया और उसी वक़्त इस्लाम लाया और ताहयात मुसलमान रहा। (दमेए साकेबा जिल्द ३ सफ़ा १४० ब हवाला शरा शाफ़या अबू फ़रास)

मुतावक्किल के कहने से इब्ने सकीत व इब्ने अकसम का इमाम अली नक़ी (अ.) से सवाल

उलमा का बयान है कि एक दिन मुतावक्किल अपने दरबार में बैठा हुआ था। दीगर कामों से फ़राग़त के बाद इब्ने सकीत की तरफ़ मुतावज्जा हो कर बोला अबुल हसन से ज़रा सख़्त, सख़्त सवाल करो,इब्ने सकीत ने क़ाबलीयत भर सवाल किए। इमाम(अ.) ने तमाम सवालात के मुफ़स्सल और मुकम्मल जवाब दिए। यह देख कर यहिया इब्ने अक्सम क़ाज़ी सलतनत ने कहा ऐ इब्ने सकीत तुम नहो शेर, लुग़द के आलिम हो, तुम्हें मनाज़रे से क्या दिलचस्पी,ठहरो मैं सवाल करता हूँ। यह कह कर उसने एक सवाल नामा निकाला जो पहले से लिख कर अपने हमराह रखे हुए था और हज़रत को दे दिया। हज़रत ने इसका इसी वक़्त जवाब लिखना शुरू कर दिया कि क़ाजी शहर को मुतावक्किल से कहना पड़ा कि इन जवाबात को पोशीदा रखा जाए वरना शियों की हौसला अफ़ज़ाई होगी। इन सवालात में एक सवाल यह भी था कि क़ुरान मजीद में"सबता अलबहर और "मानफ़दत कलमात अल्लाह" जो हैं इसमें किन सात दरियाओं की तरफ़ इशारा है और कलमात अल्लाह से क्या मुराद है। आपने इसके जवाब में तहरीर फ़रमाया कि वह सात दरिया यह हैं। (१) ऐन

अलकिबरीयत(२)ऐन अलमैन(३) ऐन अलबरहूत(४)ऐन अलबतरया(५) ऐन अलसैदान (६) ऐन अलफ़रीक़ (७) ऐ अलयाहुरान) यह कलमात से हम मोहम्मद (स.) व आले मोहम्मद (स.) मुराद हैं जिनके फ़ज़ाएल का एहसा न मुम्किन है। (मुनाक़िब जिल्द ५ सफ़ा ११७)

क़ज़ा व क़दर के मुताअल्लिक़ इमाम अली नक़ी (अ.)की रहबरी व रहनुमाई

क़ज़ा व कदर के बारे में तक़रीबन तमाम फ़िरक़े जादए ऐतिदाल से हटे हुए हैं। इसकी वज़ाहत में कोई जबर का क़ाएल नज़र नहीं आता है कोई मुतलक़न तफ़वीज़ पर ईमान रखता हुआ दिखाई देता है। हमारे इमाम अली नक़ी (अ.)अपने अबाओ अजदाद की तरह कजाओ क़दर की वज़ाहत इन लफ़्ज़ो में फ़रमाई है "ला जबरू ला तफ़वैज़ बिल अमरून अमरीन" न इन्सान बिल्कुल मजबूर है न बिल्कुल आज़ाद है। बल्कि दोनों हालतों के दरमियान है। (दमए साकेबा जिल्द ३ सफ़ा १३४) मैं हज़रत का मतलब यह समझता हूँ कि इन्सान असबाब व आमाल में बिल्कलु आज़ाद है और नतीजे की बरामदगी में खुदा का मोहताज है।

उलमाए इमामिया की ज़िम्मेदारीयों के मुतालिक़ इमाम अली नक़ी (अ.)का इरशाद है

हज़रत इमाम अली नक़ी (अ.) ने इरशाद फ़रमाया है कि हमारे उलमा ग़ैबते क़ाएम आले मोहम्मद(स.) के ज़माने में मुहाफ़िज़े दीन और रहबरे इल्म व यक़ीन होंगे। इनकी मिसाल शियों के लिए बिल्कुल वैसी ही होगी जैसी कश्ती के लिए न खुदा की होती है। वह हमारे ज़ईफ़ों को तसल्ली देंगे। वह अफ़ज़ल उन नास और क़ाएदे मिल्लत होंगे। (दमए साकेबा जिल्द २ सफ़ा १३७)

हज़रत इमाम अली नक़ी (अ.) की ख़ाना तलाशी

मुवर्रेख़ीन का बयान है कि २४३, हिजरी में इमाम अली नक़ी (अ.)सामरा पहुँच कर नज़र बन्द हो गए, लेकिन आपने इस हालत में भी फ़रीज़ए इमामत अदा करने में ज़रा भी पसो पेश नहीं फ़रमाया और फ़रीज़ए मन्सबी तबलीग़े दीने इस्लाम बराबर फ़रमाते रहे। चुँकि आप फ़रज़न्दे रसूल(स.) और आलिमे अहले ज़माना थे इस लिए आपका विक़ार लोगों

की निगाहों में रोज़ बरोज़ बढ़ता गया।आप लोगों को उसूले इस्लाम और इबादत की तालीम फ़रमाया करते थे और खुद भी शबो रोज़ इबादत गुजारी में मशगूल रहा करते थे।आप यह तहय्या किए हुए थे कि उमूरे सलतनत में कोई दख़ल किसी तरह से न देंगे और अपने को हर वक़्त मशगूले हक़ रखेंगे और यही कुछ करते रहे लेकिन दुनिया वाले कब किसी अल्लाह वाले को चैन लेने देते हैं। वह लोग यह भी बर्दाश्त न कर सके कि इमाम इज़्ज़त व विक़ार और सुकून व इतमिनाने ज़ाहेरी की ज़िन्दगी बसर करें। बिल आख़िर ज़ालिम मुतावकिकल से चुग़ली खाना शुरू कर दिया और इसे इस दर्जा भड़काया कि वह आपकी हैसीयत से क़ता नज़र करके आपकी ख़ाना तलाशी पर आमादा हो गया। **अल्लामा इब्ने ख़लक़ान** लिखते हैं"बाज़ लोगों ने मुतावक्किल से चुग़ली की कि हज़रत अली नक़ी(अ.) के घर में हतियार और ख़ुतूत वग़ैरा इनके शियों के भेजे हुए जमा हैं। नीज़ मुतावक्किल को यह भी वहम दिलाया गया कि हज़रत अली नक़ी(अ.)अपने लिए अमरे ख़िलाफ़त के तालिब हैं। मुतावक्किल ने चन्द सिपाही मुर्क़र किए कि रात को उन्हें गिरफ़्तार कर लाएं। सिपाहियों ने अचानक हज़त अली नक़ी(अ.) के घर में पहुँच कर देखा कि वह बालों का कुर्ता पहने सौफ़ की चादर ओढ़े तन्हा अपने हुजरे में रेग और सगं रेजों के फ़र्श पर रू बा क़िबला बैठे हुए आईस्ता आईस्ता क़ुरान मजीद की तिलावत कर रहे हैं। सिपाहियों ने उन्हें इसी हालत में ले जाकर मुतावक्किल के सामने पेश किया। मुतावक्किल उस वक़्त शराब लिए हुए मै नोशी कर रहा था। हज़रत अली नक़ी(अ.) को देख कर इसने ताज़ीम की और उनको अपने पहलू में बिठा लिया। सिपाहियों ने बयान किया कि इनके घर में कोई शै अज क़िस्म कुतुब वग़ैरा नहीं मिली और न कोई ऐसी बात पाई गई जिससे इन पर शक व इलज़ाम क़ाएम हो, यह सुन कर मुतावक्किल ने वह जाम शराब जो इसके हाथों में था हज़रत अली नक़ी की जानिब बढ़ाया। उन्होंने फ़रमाया मेरा गोश्त व ख़ून कभी शराब से आलूदा नहीं हुआ। मुझे इससे माफ़ रख। मुतावक्किल ने कहा कि अगर शराब न पियो तो कुछ अश्आर पढ़ूँ। हज़रत इमाम अली नक़ी(अ.) ने फ़रमाया कि मुझे अश्आर से कम दिलचस्पी है। मुतावक्किल न माना कि ज़रूर कुछ पढ़ो। इमाम अली नक़ी(अ.) ने मजबूर होकर चन्द शेर इरशाद फ़रमाए, जिनका हासिले मक़सद यह है कि जिन लोगों ने अपनी हिफ़ाज़त की ग़रज़ से पहाड़ों की चोटियों पर सुकूनत इख़्तेआर की इनको भी मौत ने न छोड़ा और इज़्ज़त की बुलन्दी से ख़ाके ज़िल्लत पर गिर कर कशाँ कशाँ क़ब्रों पर पहुँचा दिया,बाद अज़ाँ इनको हातिफ़ ने आवाज़ दी के ऐ! क़ब्र वालों कहाँ गए तुम्हारे तख़्त ताज और कहाँ हैं तुम्हारे लिबासे नफ़ीस और क्या हुए वह नाज़ परवर्दा वह चेहरे जिनके लिए ख़ेमें सरा पर्दे नसब किए जाते थे। इस वक़्त क़ब्र ने इनकी जानिब से जवाब दिया कि दुनियाँ में वह मुद्दत तक खाते पीते रहे आख़िर कार खुद लुक़मए हशरातुल अर्ज़ हो गए और अब इन पर कीड़े रेंग रहे हैं। अल्लामा मआसिर मौलाना सय्यद अली नक़ी साहब

क़िबला ने इमाम (अ.) के अश्आर का तरजुमा इस नज़्म में फ़रमाया है।

रहे पहाड़ों की चोटी , पर पहरे बिठाकर
बहादुरों की हरासत में बच सके न मगर
बुलन्द क़िलों की इज़्ज़त जो पस्त होके रही
तो कुन्ज क़ब्र में मन्ज़िल भी क्या बुरी पाई
सदा यह उनको दी , हातिफ़ ने बादे दफ़्ने लहद
कहाँ हैं वह तख़्त व, ताज और वह लिबासे जस्द
कहाँ वह चेहरे हैं जो थे हमेशा ज़ेरे नक़ाब
ग़ुबार जिन पे कभी आने देते थे न हिजाब
ज़बाने हाल से बोले ,जवाब में मदफ़न
वह रूख़ ज़मीन के कीड़ों का बन गए मसकन
ग़ेज़ाएं खाईं शराबें जो पी, थीं हद से सिवा
नतीजा इसका है खुद आज बन गए वह ग़िज़ा

जब इमाम(अ.) ने यह अश्आर पढ़े तो मुतावक्किल और हाज़रीन पर कमाले रिक़्क़त तारी हुई और मुतावक्किल इस क़दर रोया कि इसकी दाढ़ी आँसूओं से तर हो गई। बाद इसने हुक्म दिया कि शराब उठा ली जाए और हज़रत इमाम अली नक़ी(अ.)को उनके घर पहुँचा दिया जाए। मुलाहेज़ा हो (किताबे दफ़ायात अयान जिल्द १ सफ़ा ३२२ व नूरूल अबसार, दमए साकेबा जिल्द ३ सफ़ा १४२)

अल्लामा शिबलन्जी ने इन अश्आर के चार इब्तेदाई अश्आर सैफ़ बिन ज़ीयज़ हमीरी के क़स्र पर लिखे हुए देखे गए हैं। कंज़ुल फवाएद कन्ज़ुल मदफ़ून में है कि मुतावक्किल रोते, रोते अपने हाथ से जाम ज़मीन पर फेंक देता था।

हज़रत इमाम अली नक़ी (अ.) और शेरे क़ालीन

मुल्ला जामी लिखते हैं कि एक दिन मुतावक्किल के पास एक मशहूर हिन्दी शोबदे बाज़ आया और उसने बहुत से करतब दिखालाए। मुतावकिकल ने उससे कहा मेरे दरबार में एक निहायत शरीफ़ शख़्स अनक़रीब आने वाला है। अगर तू अपने करतब से उसे शर्मिन्दा कर दे तो मैं तुझे एक हज़ार अशरफ़ी इनाम दूँगा। उसने कहा ऐ बादशाह जब वह आजाए तो खाने का बन्दोबस्त कर और मुझे उनके पहलू में बिठा दे मैं ऐसा करूँगा कि सख़्त शर्मिन्दा होगा। यह सुन कर मुतावक्किल खुश हो गया और जब आप तशरीफ़ लाए तो खाना लाया गया और सब खाने के लिए बैठे। इमाम(अ.) ने ज्यों ही लुक़्मा उठाया और तनावुल फ़रमाना चाहा उसने जादू के ज़ोर से उड़ा दिया। इसी तरह उसने तीन

मरतबा इसने किया, आख़िर यह सारा मजमा हंस पड़ा। इमाम अली नक़ी (अ.) यह देख कर उस कालीन की तरफ मुतावज्जा हुए जो दीवार में लगा हुआ था और उस पर शेर की तसवीर बनी हुई थी। आपने शेरे क़ालीन को हुक्म दिया कि मुज्जसम हो कर इस काफ़िरे अज़ली को निगल ले। शेर मुजस्सम हुआ और उसने बढ़ कर काफ़िरे हिन्दी को मुसल्लम निगल लिया। इस वाक़ियए से दरबार में हलचल मच गई। मुतावकिकल सर निगूँ हो गया और इमाम (अ.) से दरख़्वास्त करने लगा कि इस शेरे क़ालीन को जो फिर अपनी असली हालत पर आ गया है हुक्म दीजिए कि इस काफ़िरे हिन्दी को उगल दे। आपने फ़रमाया यह हरगिज़ न होगा और उठ कर चले गए। एक रवाएत की बिना पर आपने जवाब दिया। कि अगर मूसा के अज़दहे ने फ़िरऔन के सापों को निगल लेने के बाद उगल दिया होता तो यह शेर भी उगल देता। चुँकि उसने नहीं उगला था, इस लिए यह भी नहीं उगले गा। (शवाहेदुन नबूअत सफ़ा २०६ दमए साकेबा जिल्द ३ सफ़ा १४५)

हज़रत इमाम अली नक़ी (अ.) और अब्दुर रहमान मिस्री का ज़ेहनी इन्क़ेलाब

अल्लामा अरबली लिखते हैं कि एक दिन मुतावकिकल ने बरसरे दरबार इमाम अली नक़ी(अ.) को क़त्ल कर देने का फ़ैसला करके आपको दरबार में तलब किया। आप सवारी पर तशरीफ़ लाए ।

अर्ब्दुरहमान मिस्री का बयान है मैं सामरा गया हुआ था और मुतावक्किल के दरबार का यह हाल सुना कि एक अलवी के क़त्ल का हुक्म दिया गया है तो मैं दरवाज़े पर इस इन्तेज़ार में खड़ा हो गया कि देखूँ वह कौन शख़्स है जिसके क़त्ल के इन्तेज़मात हो रहे हैं इतने में देखा कि इमाम अली नक़ी(अ.) तशरीफ़ ला रहे हैं। मुझे किसी ने बताया कि इसी अलवी के क़त्ल का बन्दो बस्त हुआ है। मेरी नज़र ज्योंही उनके चेहरे पर पड़ी, मेरे दिल में उनकी मोहब्बत सराएत कर गई और मैं दुआ करने लगा।

ख़ुदाया तू मतावकिकल के शर से इस शरीफ़ अलवी को बचाना। मैं दिल में दोआ कर ही रहा था कि आप नज़दीक आ पहुँचे और मुझसे बिला जाने पहचाने फ़रमाया कि ऐ अब्दुर्रहमान तुम्हारी दुआ क़ुबूल हो गई है और मैं इन्शा अल्लाह महफ़ूज़ रहूँगा। चुनान्चे दरबार में आप पर कोई हाथ उठा न सका और आप महफ़ूज़ रहे। फिर आपने मुझे दोआ दी और मैं माला माल हो गया और साहेबे औलाद हो गया। अब्दुरहमान कहता है कि मैं इसी वक़्त आपकी इमामत का क़ाएल होकर शिया हो गया।

(कश्फ़ुल ग़म्मा सफ़ा १२३ व दमए साकेबा जिल्द ३ सफ़ा १२५)

हज़रत इमाम अली नक़ी (अ.) और बरकतुल सबआ

उलमा का बयान है कि एक दिन मुतावक्किल के दरबार में एक औरत जवान और खूबसूरत आई और उसने आकर कहा ज़ैनब बिन्ते अली व फ़ात्मा हूँ। मुतावक्किल ने कहा कि तू जवान है और ज़ैनब को पैदा हुए और वफ़ात पाए अर्सा गुज़र गया। अगर तुझे ज़ैनब तसलीम कर लिया जाए तो यह कैसे माना जाए। कि ज़ैनब इतनी उमर तक जवान रह सकती हैं। इसने कहा कि मुझे रसूले खुदा (स.) ने यह दुआ दी थी कि मैं चालीस और पचास साल के बाद जवान हो जाऊँ। इसलिए मैं जवान हूँ। मुतावक्किल ने उलमाए दरबार को जमा करके उनके सामने इस मसले को पेश किया। सबने कहा यह झूठी है। ज़ैनब के इन्तेक़ाल को अर्सा हो गया है। मुतावक्किल ने कहा कोई ऐसी दलील दो कि मैं इसे झुठला सकूँ। सबने अपने आजिज़ी का हवाला दिया। फ़ता इब्ने ख़ाक़ान वज़ीर मुतावकिकल ने कहा कि इस मसले को "इब्ने रज़ा"अली नक़ी (अ.) के सिवा कोई हल नहीं कर सकता। लेहाज़ उन्हें बुलाया जाए। मुतावक्किल ने हज़रत को ज़हमते तशरीफ़ आवरी दी। जब आप दरबार में पहुँचे। मुतावक्किल ने सूरते मसला पेश की। इमाम ने फ़रमाया झूठी है, मुतावक्किल ने कहा कोई ऐसी दलील दीजीए कि मैं इसे झुठी साबित कर सकूँ। आपने फ़रमाया मेरे जद्दे नामदार का इरशाद है कि "हरम लहरम औलादी अली अलसबा" दरिन्दों पर मेरी औलाद का गोश्त हराम है। ऐ बादशाह तू इस औरत को दरिन्दों में डाल दे अगर यह सच्ची होगी और इसका ज़ैनब होना तो दरकिनार अगर यह "सय्यदा"भी होगी तो जानवर इसे न छेड़ेंगे और अगर सयादत से भी बे बहरा और ख़ाली होगी तो दरिन्दे इसे फाड़ ख़ाएंगे। अभी यह गुफ़्तुगू जारी ही थी कि दरबार में इशारह बाज़ी होने लगी और दुश्मनों ने मिल जुल कर मुतावक्किल से कहा कि इसका इम्तेहान इमाम अली नक़ी(अ.) ही के ज़रिये से क्यों न लिया जाय और देखा जाय कि आया दरिन्दे सय्यदों को खाते हैं या नहीं। मतलब यह था कि अगर उन्हें जानवरों ने फाड़ खाया तो मुतावक्किल का मन्शा पूरा हो जायेगा औ अगर यह बच गये तो मुतावक्किल की वह उलझन दूर हो जायेगी जो ज़ैनब काज़ेबा ने डाल रखी है। ग़रज़ कि मुतावक्किल ने इमाम(अ.) से कहा" **ऐ इब्नुल रज़ा** "क्या अच्छा होता कि आप खुद"**बरकतुल सबआ**"में जाकर इसे साबित कर दीजिये कि आले रसूल(स.) का गोश्त दरिन्दों पर हराम है। इमाम(अ.) तय्यार हो गये। मुतावक्किल ने अपने बनाये हुये"**बरकतुल सबआ**" (शेर ख़ाने) में आपको डलवा कर फाटक बन्द करवा दिया,और खुद मकान के बाला ख़ाने पर चला गया। ताकि वहां से इमाम के हालात का मुतालेआ करे। अल्लामा हजर मक्की लिखते हैं कि जब दरिन्दों ने दरवाज़ा खुलने की आवाज़ सुनी तो ख़ामोश हो गये। जब आप सहन में पहुँच कर सीढ़ी पर चढ़ने लगे तो

दरिन्दे आप की तरफ़ बढ़े (जिनमें तीन और ब रवायते दमे साकेबा ६,छै शेर भी थे) और ठहर गये और आप को छू कर आपके गिर्द फिरने लगे। आप अपनी आस्तीन उनपर मलते थे। फिर दरिन्दे घुटने टेक कर बैठ गये। मुतवक्किल इमाम(अ.) के मुताअल्लिक़ छत पर से यह बातें देखता रहा और उतर आया। फिर जनाब सहन से बाहर तशरीफ़ ले आये। मुतवक्किल ने आपके पास गरां बहा सिला भेजा। लोगों ने कहा मुतावक्किल तू भी ऐसा करके दिखला दे। उसने कहा शायद तुम मेरी जान लेना चाहते हो।

अल्लामा मोहम्मद बाक़र लिखते हैं कि ज़ैनबे कज़्ज़ाबा ने जब इन हालात को अपनी आंखों से देखा तो फ़ौरन अपनी किज़्ब बयानी का एतेराफ़ कर लिया। एक रवायत की बिना पर उसे तौबा की हिदायत करके छोड़ दिया गया। दूसरी रवायत की बिना पर मुतवक्किल ने उसे दरिन्दों में डलवा कर फड़वा डाला।

(सवाएके मोहर्रेका, सफ़ा १२४, अर हज्जुल मतालिब, सफ़ा ४६१, दमए साकेबा जिल्द ३, सफ़ा १४५, जला उल अयून, सफ़ा २६३, रौज़तुल सफ़ा, फ़सल अल ख़त्ताब)

अल्लामा इब्ने हजर का कहना है कि इस क़िस्म का वाक़ेया अहदे रशीद अब्बासी में जनाबे यहिया बिन अब्दुल्लाह बिन हसने मुसन्ना इब्ने इमाम हसन(अ.) के साथ भी हुआ है।

हज़रत इमाम अली नक़ी (अ.)और मुतावक्किल का इलाज

अल्लमा अबर्दुरहमान जामी तहरीर फ़रमाते हैं कि जिस ज़माने में हज़रत इमाम अली नक़ी (अ.) नज़र बन्दी की जिन्दगी बसर कर रहे थे। मुतावक्किल के बैठने की जगह कमर के नीचे जिसम के पिछले हिस्से में एक ज़बर दस्त ज़हरीला फोड़ा निकल आया। हर चन्द कोशिश की गई मगर किसी सूरत से शिफ़ा की उम्मीद न हुई। जब जान ख़तरे में पड़ गई तो मुतावकिल की माँ ने मन्नत मान ली कि अगर मुतावक्किल अच्छा हो गया तो इब्ने रज़ा की ख़िदमत में माले कसीर नज़र करूँगी और फ़तह बिन ख़क़ान ने मुतावक्किल से दरख़्वास्त की कि अगर आपका हुक्म हो तो मैं मर्ज़ की कैफ़ियत अबूल हसन से बयान करके कोई दवा तजवीज़ करवा लाऊँ। मुतावक्किल ने इजाज़त दी और इब्ने ख़क़ान हज़रत की ख़िदमत में हाज़िर हुए। उन्होंने सारा वाक़िया बयान करके दवा की तजवीज़ चाही, इमाम(अ.) ने फ़रमाया "कस्बे ग़नम" (बकरी की मेंगनियाँ) लेकर गुलाब के अरक़ में हल करके लगा दो, इन्शा अल्लाह ठीक हो जाएगा। वज़ीर फ़तह इब्ने ख़ाक़ान ने दरबार में इमाम(अ.) की तजवीज़ पेश की लोग हंस पड़े और कहने लगे इमाम होकर क्या दवा तजवीज़ फ़रमाई है। वज़ीर ने कहा ऐ ख़लीफ़ा तजरूबे में क्या हर्ज है। अगर हुक्म

हो तो मैं इन्तेज़ाम करूँ। ख़लीफ़ा ने हुक्म दिया ,दवा लगाई गई,मुतावक्किल की आँख खुल गई और रात भर सोया तीन यौम के अन्दर शिफ़ाए कामिल हो जाने के बाद माँ ने दस हज़ार अशरफ़ी की सर ब मुहर थैली इमाम(अ.) की ख़िदमत में भिजवा दी।

(शवाहेदुन नबूअत सफ़ा २०७ आलाम अल वरा सफ़ा २०८)

हज़रत इमाम अली नक़ी (अ.) की दोबारह ख़ाना तलाशी

दरिन्दों की जुब्बा साई और मुतावकिकल के इलाज में इमाम(अ.) की शानदार कामयाबी ने दुश्मनों के दिलों में हसद की लगी हुई आग को और भड़का दिया जिसका नतीजा यह हुआ कि जान आप ही के इलाज से बची थी वह ममनूने एहसान होने के बजाए इमाम के दरपए आज़ार होकर खुल्लम खुल्ला उन्हें सताने की तरफ़ खुसूसी तौर पर मुतावज्जा हो गया।

मुल्ला जामी अल हर रहमा का बयान है कि वाक़ए सेहत के चन्द ही दिनो बाद लोगो ने मुतावकिल से चुगली खाईऔर कहा कि इमाम अली नक़ी (अ.) के घर में सलाह जगं जमा हैं और अन करीब अपने जमातियों के बल बूते पर तेरी हुकूमत का तख़्ता उलट देगें। और हाकिमें वक्त बन कर तेरे किए का बदला लेंगे। मुतावक्किल जो पहले ही से आले मोहम्मद(स.) का शदीद दुश्मन था, लोगों के कहने से फिर भड़क उठा और उसने सईद को बुला कर हुक्म दिया (जिनकी नज़र बन्दी में इस वक्त आप थे)कि तू आधी रात को दफ़्तन“इमाम के मकान में जा कर तलाशी ले और जो चीज़ बरामद हो उसे मेरे पास ले आ। सईद हाजिब का बयान है कि मैं आधी रात को हज़रत के मकान में कोठे की तरफ़ से गया मुझे रास्ता न मिलता था, क्योंकि सख़्त तारीकी थी। इमाम(अ.) ने अपने मुसल्ले पर से जो अन्दर बिछा हुआ था आवाज़ दी। ऐ सईद अन्धेरा है,ठहरो! मैं शमा ला रहा हूँ। ग़रज़ मैंने जाकर देखा कि आप ज़मीन पर मुसल्ला बिछाए हुए हैं और आपके घर में एक शमा के सिवा कोई असलहा नहीं है और एक वह थैली है जो मुतावक्किल की माँ ने भेजी थी। मैंने इन चीज़ों को मुतावक्किल के सामने पेश कर दिया। इसने उन्हें वापस किया और वह अपने मुक़ाम पर शर्मिन्दा हुआ।

(शवाहेदुन नबूअत सफ़ा २०८, जलाउल अयून सफ़ा २६४)

अल्लामा मजलिसी का बयान है कि मुतावक्किल ने आप पर पूरी सख़्ती शुरू कर दी और आप को कैद कर दिया। पहले ज़राफी की कैद में रखा और ज़राफ़ी की कैद में महबूस रखा।(जलाउल अयून सफ़ा २६३) **अल्लामा मोहम्मद बाक़र नजफी** का बयान है कि मुतावक्किल ने आपके पास जाने पर मुकम्मल पाबन्दी आएद कर दी(दमए साकेबा जिल्द ३ सफ़ा १२१)और हुक्म दिया कि कोई भी आपके करीब तक न जाने पाए। (कशफुल गम्मा सफा १२४)

इमाम अली नक़ी(अ.) के तसव्वुरे हुकूमत पर ख़ौफ़े ख़ुदा ग़ालिब था

हज़रत की सीरते ज़िन्दगी और इख़्लाक़ व कमालात वही थे जो इस सिलसिले असमत की हर फ़र्द के अपने दौर में इम्तेआज़ी तौर पर मुशाहिदे में आते रहे थे,क़ैद ख़ाने और नज़र बन्दी का आलम हो या अज़ादी का ज़माना हर वक़्त हर हाल में यादे इलाही, इबादत, ख़लक़े ख़ुदा से इस्तग़ना सबाते क़दम सब्र इस्तक़लाल, मसाएब के हुजूम में माथे पर शिकन का न होना, दुश्मन के साथ हिल्म व मुरव्वत से काम लेना, मोहताजों और ज़रूरत मन्दों की इमदाद करना यही वह औसाफ़ हैं जो इमाम अली नकी (अ.) की सीरते जिन्दगी में नुमाया नज़र आते हैं।

क़ैद के ज़माने में जहाँ भी आप रहे। आपके मुसल्ले के सामने एक क़ब्र ख़ुदी तैय्यार रहती थी। देखने वालों ने जब इस पर हैरत व दहशत का इज़हार किया तो आपने फ़रमाया मैं अपने दिल में मौत का ख़्याल रखने के लिए यह क़ब्र अपनी निगाहों के सामने तैय्यार रखता हूँ। हक़ीक़त में यह ज़ालिम ताक़त को इसके बातिल मुतालबए इताअत और इस्लाम की हक़ीक़ी तालीमात कि नश्रो अशाअत के तर्क़ कर देने की ख़्वाहिश का एक अमली जवाब था। यानी ज़्यादा से ज़्यादा सलातीने वक़्त के साथ में जो कुछ है वह जान का ले लेना। मगर जो शख़्स मौत के लिए इतना तैय्यार होकर हर वक़्त खुदी हुई क़ब्र अपने सामने रखे । वह ज़ालिम हुकूमत से डर कर सरे तसलीम ख़म करने पर कैसे मजबूर किया जा सकता है। मगर इसके साथ दुनयावी साज़िशों में शिरकत या हूकूमते वक़्त के खिलाफ़ किसी बे महल अक़दाम की तैय्यारी से सख़्त तरीन जासूसी इन्तेज़ाम के कभी आपके ख़िलाफ़ कोई इल्ज़ाम सही साबित न हो सका और कभी सलातीने वक़्त को कोई दलील आपके ख़िलाफ़ तशदुद के जवाज़ की न मिल सकी। बा वजूदे कि सलतनते अब्बासिया की बुनियादें इस वक़्त इतनी खोखली हो रही थीं कि दारूल सलतनत में हर रोज़ एक नई साज़िश का फ़ितना खड़ा होता था।

मुतावकिकल ने खुद इसके बेटे की मुख़लफ़त और उसके इन्तेहाई अज़ीज़ गुलाम बाग़र रूमी की इससे दुश्मनी मुतन्तसर के बाद उमराए हुकूमत का इन्तेशार और आख़िर मुतावक्किल के बेटों को ख़िलाफ़त से महरूम कराने का फ़ैसला मुस्तईन की दौरे हुकूमत में यहिया बिन उमर यहिया बिन हसीन बिन ज़ैद अलवी का कूफ़ा में ख़ुरूज और हसन बिन ज़ैद अल मुलक़्क़ब ब दाई अलहक़ का एलाक़ए तबरस्तान पर कबज़ा कर लेना और मुसतक़िल सलतनत क़ाएम कर लेना। फिर दारूल सलतनत में तुरकी गुलामों की बग़ावत मुसतईन का सामरा को छोड़ कर बग़दाद की तरफ़ भागना और क़िला बन्द हो

जाना, आख़िर को हुकूतम से दस्त बरदारी पर मजबूर होना और कुछ अर्से के बाद माअज़ बिल्लाह के साथ तलवार के घाट उतरना ,फिर माज़ बिल्लाह के दौर में रूमियों का मुख़ालफ़त पर तैय्यार रहना। माज़ बिल्लाह को ख़ुद अपने भाईयों से ख़तरा महसूस होना और मोवीद की ज़िन्दगी का ख़ातमा और मोफ़िक़ का बसरा में क़ैद किया जाना, इन तमाम हगांमी हालात, इन तमाम शोरिशों, इन तमाम बेचैनियों और झगड़ों में से किसी में भी इमाम अली नक़ी(अ.) की शिरकत का शुब्हा तक न पैदा होना, क्या इस तर्ज़े अमल के ख़िलाफ़ नहीं जो ऐसे मौक़ों पर जज़बात से काम लेने वालों का हुआ करता है। एक ऐसे एक़तिदार के मुक़ाबले में जिसे न सिर्फ़ वह हक़ व इन्साफ़ के रू से नाजाएज़ समझते हैं बल्कि इनके हाथों उन्हें जिलावतनी,क़ैद और एहानितों का सामना भी करना पड़ता है "मगर" वह जज़बात से बुलन्द और अज़मते नफ़स के कामिल मज़हर दुनियावी हंगामों और वक़्त के इत्तेफ़ाक़ी मौक़ों से किसी तरह का फ़ाएदा उठाना अपनी बेलौस हक़्क़ानियत और कोह से भी गराँ सदाक़त के ख़िलाफ़ समझता है और मुख़ालफ़त पर पसे पुश्त हमला करने को आपने बुलन्द नुक़तए निगाह और मेयारे अमल के ख़िलाफ़ जानते हुए हमेशा किनारा कश रहा। (दसवें इमाम सफ़ा ६)

क़ब्रे हुसैनी के साथ मुतावक्किल की दोबारा बेअदबी २४७, हिजरी

हज़रत इमाम अली नक़ी(अ.) को क़ैद करने के बाद फिर मुतावकिकल क़ब्रे इमाम हुसैन(अ.) के इन्हेदाम की तरफ़ मुतावज्जा हुआ और चाहा कि नेस्त व नाबूद कर दे। मुवर्रिख़ ने लिखा है कि जब इसे यह मालम हुआ कि कर्बला में क़ब्रे हुसैनी की ज़्यारत के लिए अतराफ़े आलम से अक़ीदत मन्दों की आमद का तांता बंधा हुआ है और बेशुमार हज़रात ज़्यारत को आते हैं तो मुतावक्किल की आतिशे हसद भड़क उठी और इसने इस सिलसिले को बन्द करने का तहय्या कर लिया और यह भी न सोचा कि यह वही क़ब्र है जिस पर हसबे तहकीक़ पीराने पीर शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी सत्तर हज़ार फ़रिश्ते आसमान से उतर कर ख़ानए काबा का तवाफ करने के बाद जाते हैं वहाँ रोते और इसकी ज़्यारत करते और मुजावरत के फ़राएज़ रोज़ाना अदा करते हैं।

(ग़नीयतुल तालबैन सफ़ा ३७४, मजमूउल बहरैन सफ़ा ५०२)

आमाली शेख़ तूसी और जलाउल अयून में है कि मुतावक्किल ने अपनी फ़ौज के दस्ते को ज़्यारत के रोकने और नहरे अलक़मा को काट के क़ब्र पर से गुज़ारने को भेजा और हुक्म दिया जो शख़्स ज़्यारत के लिए आए उसे क़त्ल कर दिया जाए और बाज़ उलमा का बयान के मुताबिक़ यह भी हुक्म दिया गया कि पहले हाथ काटे जाएं फिर अगर बाज़

न आऐं तो क़त्ल कर दिया जाए। यह एक ऐसा हुक्म था जिसने मोतक़ेदीन को बेचैन कर दिया। हज़रत ज़ैद मजनून जो दोस्त दाराने आले मोहम्मद(स.) में से थे ,यह ख़बर सुन कर ज़्यारत के लिए मिस्र से चल कर कुफ़े पहुचे वहाँ पहुँच कर हज़रत बहलोल दाना से मिले जो उस वक़्त ब मस्लेहत अपने को दिवाना बनाए हुए थे। दोनों में तबादलए ख़्यालात हुआ और दोनों ज़्यारते क़ब्रे मुनव्वर के लिए कर्बला रवाना हो गए। उन्होंने आपस में तय किया था कि हाथ काटे जाएं तो कटवाएंगे। क़त्ल होने की ज़रूरत महसूस, हो तो क़त्ल हो जाएंगे। लेकिन ज़्यारत ज़रूर करेंगे। जब यह दोनों कर्बला पहँचे तो उन्होंने देखा कि क़ब्र की तरफ़ नहर का पानी क़ब्र पर गुज़रने की बेअदबी नहीं करता। पानी क़ब्र तक पहुँच कर फट जाता है और केतरा कर एतराफ़ व जानिबे क़ब्र का बोसा लेता हुआ गुज़रता है। यह हाल देख कर इनका जज़बए मोहब्बत और उभर गया, यह अभी इसी मुक़ाम पर ही थे कि वह शख़्स इनकी तरफ़ मुतावज्जा हुआ जो इन्हेदामे क़ब्र पर मुताअय्यन था। उसने पुछा तुम क्यों आए हो। उन लोगों ने कहा ज़्यारत के लिए आए। उसने जवाब दिया जो ज़्यारत को आए, मैं उसे क़त्ल करने के लिए मुर्क़र किया गया हूँ। इन हज़रात ने कहा हम क़त्ल होने की तमन्ना में ही आए हैं। यह सुन कर वह इनके पैरों पर गिर पड़ा और अपने अमल से ताऐब होकर मुतावक्किल के पास वापस गया। मुतावक्किल ने उसे क़त्ल कराके सूली पर चढ़ा दिया। फिर पैरों में रस्सी बंघवा कर बाज़र में खिंचवाया। ज़ैद को जब यह वाक़िया मालूम हुआ, फ़ौरन सामरा पहुँचे और उसकी लाश दफ़न की और उस पर क़ुरआन मजीद पढ़ा।

अभी हज़रत ज़ैद सामरा में ही थे कि एक दिन बड़े धूम धाम से एक जनाज़ा उठाया गया स्याह अलम साथ था। अरकाने दौलत और अमाएदीन सलतनत हमराह थे। चारो तरफ़ से रोने की आवाज़ें आ रही थीं। ज़ैद ने समझा कि शायद मुतावक्किल का इन्तेक़ाल हो गया है। यह मालूम करने के बाद हज़रत ज़ैद ने एक आहे सर्द खींची और कहा "अल्लाह अल्लाह" फ़रज़न्दे रसूल इमाम हुसैन (अ.) कर्बला में तीन रोज़ के भुखे प्यासे शहीद कर दिए गए। इन पर कोई रोने वाला नहीं था। बल्कि उनकी क़ब्र के निशानात मिटाने के भी लोग दरपए हैं और एक मन्हूस कनीज़ का यह एहतिराम है इसके बाद इसी किस्म के मज़ामीन पर मुश्तमिल चन्द अश्आर लिख कर हज़रत ज़ैद मजनून ने मुतावक्किल के पास भिजवा दिया, उसने उन्हें मुक़य्यद कर दिया। मुतावक्किल ने ख़्वाब में देखा कि एक मर्दे मोमिन आए हैं और कहते हैं कि ज़ैद को इसी वक़्त रेहा कर दे। वरना मैं तुझे अभी अभी हलाक कर दूँगा। चुनान्चे उसने उसी वक़्त रेहा कर दिया।

मुतावक्किल का क़त्लः–मुतावक्किल के ज़ुल्म व तआद्दी ने लोगों को ज़िन्दगी से बेज़ार कर दिया था। अब इसकी हालत यह हो चुकी थी कि बरसरे आम आले मोहम्मद को गालियां देने लगा था। एक दिन उसने अपने बेटे मुस्तनसर के सामने हज़रत फ़ात्मा ज़हरा(स.) के लिए नासाज़ अलफ़ाज़ इस्तेमाल किए। मुन्तसार ने उलमा से दरयाफ़्त

किया कि जो शख़्स ऐसे अलफ़ाज़ बिन्ते रसूल (स.) के लिए इस्तेमाल करे उसके लिए क्या हुक्म है। उलमा ने कहा वह वाजेबुल क़तल है। तारीख़ अबूल फ़िदा में हैं कि मुनतसिर ने रात के वक़्त बहालते ख़लवत बहुत से आदमीयों की मद्द से मुतावक्किल को क़त्ल कर दिया हादी अल तवारीख़ , तारीख़े इस्लाम, जिल्द १ सफ़ा ६६ दमए साकेबा सफ़ा १४७ में है कि यह वाक़िया चार शवाल २४७ ,हिजरी का है बाज़ मासरीन लिखते हैं मुतावक्किल ने अपने अहदे सलतनत में कई लाख शिया क़त्ल कराए हैं।

इमाम अली नक़ी (अ.) को पैदल चलने का हुक्म

अल्लामा मजलिसी तहरीर फ़रमाते है कि क़तले मुतावक्किल से तीन चार यौम क़बल इसी ज़ालिम मुतावक्किल ने हुक्म दिया कि मेरी सवारी के साथ तमाम लोग पैदल तफ़रीह के लिए चलें। हुक्म में इमाम (अ.) ख़ास तौर पर मामूर थे। चुनान्चे आप भी कई मील पैदल चल कर वापस तशरीफ़ लाए और आपको इस दर्जे तअब(तकलीफ़) हुआ कि आप सख़्त अलील हो गए। (जिला अल अयून सफ़ा २६२)

हज़रत इमाम अली नक़ी (अ.) की शहादत

मुतावक्किल के बाद आप का बेटा मुसतनसिर फिर मुसतईन फिर २५२ हिजरी में माज़ बिल्लाह ख़लीफा हुआ मोतिज़ इब्ने मुतावक्किल ने भी अपने बाप की सुन्नत को नहीं छोड़ा और हज़रत के साथ सख़्ती ही करता रहा। यहाँ तक कि उसी ने आपको ज़हर दे दिया। "समा अलमोताज़ , अनवारूल हुसैनीया जिल्द २ सफ़ा ५५ और आप ब तारीख़ २, रजब २५४ हिजरी यौम दो शम्बा इन्तेक़ाल फ़रमा गए।

(दमए साकेबा जिल्द ३ सफ़ा १४६)

अल्लामा इब्ने जौज़ी तज़किरए ख़्वास अलमता में लिखते हैं कि आप मोतज़ के ज़माने ख़िलाफ़त में शहीद किए गए हैं आपकी शहादत ज़हर से हुई हैं अल्लामा शिबलन्जी लिखते हैं कि आपको ज़हर से शहीद किया गया (नूरूल अबसार सफ़ा १५०) अल्लामा इब्ने हजर लिखते हैं कि आप ज़हर से शहीद हुए हैं (सवाएके़ मोहर्रेक़ा सफ़ा १२४) दमए साकेबा सफ़ा १४८) में है कि आपके इन्तेक़ाल से क़बल इमाम हसन असकरी(अ.)को मवारिस अम्बिया वग़ैरा सुपुर्द फ़रमाते थे। वफ़ात के बाद इमाम हसन असकरी(अ.) ने गरेबान चाक किया तो लोग मोतरिज़ हुए। आपने फ़रमाया कि यह सुन्नते अम्बिया है। हज़रत मूसा ने वफ़ाते हज़रत हारून पर अपना गरेबान फाड़ा था (दमए साकेबा सफ़ा १४८ जिला अल अयून सफ़ा २६४)आप पर इमाम हसन असकरी (अ.) ने नमाज़ पढ़ी और आप

सामरा ही में दफ़न किए गए **" इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहे राजेउन "** अल्लामा मजलिसी तहरीर फ़रमाते हैं कि आपकी वफ़ात इन्तेहाई कसमा पुर्सी की हालत में हुई इन्तेक़ाल के वक़्त आपके पास कोई भी न था (जिला अल अयून सफ़ा २९२)

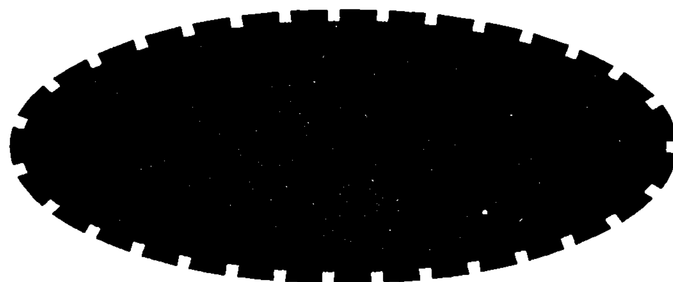
आपकी अज़्वाज व औलाद

आपकी कई बीवीयाँ थीं उनकी कई औलादें पैदा हुईं जिनके असमा यह हैं। (१) इमाम हसन असकरी(अ.) (२) हुसैन बिन अली (३) मोहम्मद बिन अली (४) जाफ़र बिन अली (५) दुख़्तर मौसूमा आएशा बिनते अली

(इरशाद मुफ़ीद सफ़ा ६०२ व सवाएक़े मोहर्रेक़ा सफ़ा १२६ तबा मिस्र)

(हाशिया)

अल्लामा क़ाज़ी मोहम्मद सुलैमान मन्सूर पूरी रिटार्यड जज रियासत पटयाला लिखते हैं , कि इमाम अली नक़ी रज़ी अल्लाह अन्हो ताला के दो फ़रज़न्द अबू अब्दुल्लाह , जाफ़र कज़्ज़ाब और हसन असकरी (र.) से नस्ल जारी हैं। अबू अब्दूल्लाह जाफ़र के नाम के साथ लक़ब " कज़्ज़ाब " बाज लोग इस लिए शामिल किया करते हैं कि उन्होंने अपने भाई हसन असकरी (र.) की वफ़ात के बाद ख़ुद इमाम होने का दावा किया था, इनकी औलाद इनको जाफ़र तौवाब कहती है और अपने आप को **" रिज़वी "** कहलाती है। सादाते अमरोहा इन्हीं की नस्ल से हैं (किताब रहमतुलल्लि आलमीन जिल्द २ सफ़ा १४६ तबा लाहौर) मेरे नज़दीक मुसन्निफ़ को या तो इल्म नहीं या उन्हें धोखा हो गया है दर अस्ल जनाबे जाफ़र एलैह रहमा की औलाद को नक़वी कहा जाता है।





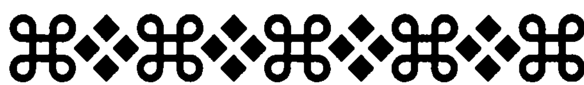
अबु मोहम्मद

हज़रत

इमाम हसन असकरी (अ.)

क्यों न झुकें सलाम को, फ़ौजे उलूम के परे
बज़्मे नक़ी में ज़ौ फ़िशाँ आज है नूरे असकरी
वारिसे ज़ुल्फ़िक़ार है सुल्ब में इनकी जलवा गर
ज़ात है इनकी मुज़दए, आमद दौरे हैदरी

साबिर थरयानी " कराची "



460

بسم الله الرّحمٰن الرّحيم

भाग-१३

हज़रत इमाम हसन असकरी (अ.)

बू मोहम्मद इमाम याज़ दहुम
जां नशीने रसूल अर्श मक़ाम
जिसके जद वजहे ख़िलक़ते आलम
जिसके फ़रज़न्द से जहां को क़याम

हज़रत इमाम हसन असकरी (अ.) पैग़म्बरे इस्लाम हज़रत मोहम्मद(स.) के ग्याहरवें जां नशीन और सिलसिलए इस्मत की १३ वीं कड़ी हैं आपके वालिदे माजिद हज़रत इमाम अली नक़ी(अ.) थे और वालेदा माजेदा हदसिया ख़ातून थीं। मोहतरमा के मुतअल्लिक़ अल्लामा मजलिसी लिखते हैं आप अफ़ीफ़ा, करीमा, निहायत संजीदा और वरा व तक़्वा से भर पूर थीं। (जिला उल अयून, सफ़ा २६५)

हज़रत इमाम (अ.) अपने अबओ अजदाद की तरह इमाम मन्सूस, मासूम, आलिमे ज़माना और अफ़ज़ले काएनात थे (इरशाद मुफ़ीद सफ़ा ५०२) आपको हसना सिफ़ाते इल्म व सख़ावत वग़ैरा अपने वालिद के विरसे में मिले थे।

(अर हज्जुल मतालिब सफ़ा ४६१)

अल्लामा मोहम्मद बिन तलहा शाफ़ई का बयान है कि आपको ख़ुदा वन्दे आलम ने जिन फ़ज़ाएल व मनाक़िब और कमालात और बुलन्दी से सरफ़राज़ किया है,इनमें मुकम्मिल दवाम मौजूद है। न वह नज़र अन्दाज़ किए जा सकते हैं और न इनमें कुहनगी आसकती है और आपका एक अहम शरफ़ यह भी है कि इमाम मेंहदी (अ.) आप ही के इकलौते फ़रज़न्द हैं जिन्हें परवर दिगारे आलम ने तवील उमर अता की है।

(मतालिब अल सुवेल सफ़ा २६२)

इमाम हसन असकरी की विलादत और बचपन के बाज़ हालात

उलमाए फरीक़ैन की अक्सरीयतका इत्तेफाक़ है कि आप बातारीख़ १० रबीउस्सनी २३२ हिजरी यौमे जुमा ब वक़्ते सुबह बतन जनाबे हदीसा ख़ातून से ब मूक़ाम मदीना मुनव्वरा मुतवल्लिद हुए हैं। मुलाहेज़ हो शवाहेदुन नबूअत सफ़ा २१० सवाके़ मुहर्रेक़ा सफ़ा १२४ नूरूल अबसार ११०, जिलाउल अयून सफ़ा २६५ इरशाद मुफ़ीद सफ़ा ५०२ दमए साकेबा जिल्द ३ सफ़ा १६३ । आपकी विलादत के बाद हज़रत इमाम अली नक़ी (अ.) ने हज़रत मोहम्ममद मुस्तफ़ा (स.) के रखे हुए नाम " हसन बिन अली " से मौसूम किया। (नियाबुल मोवद्दता)

आपकी कुन्नीयत और आपके अल्क़ाब

आपकी कुन्नीयत **"अबू मोहम्मद"** थी और आपके अलक़ाब बेशुमार थे। जिनमें **असकरी, हादी, ज़की, ख़लिस, सिराज और इब्ने रज़ा** ज़्यादा मशहूर हैं।(नूरूल अबसार सफ़ा १५० शवाहेदुन नबूअत सफ़ा २१०,दमए साकेबा जिल्द३ सफ़ा १२२ व मुनाक़िब इब्ने शहर आशोब जिल्द सफ़ा १२५)आपका लक़ब असकरी इसलिए ज़्यदा मशहूर हुआ कि आप जिस महल्ले में ब मुक़ाम "सरमन राए" रहते थे उसे असकर कहा जाता था और ब ज़ाहिर इसकी वजह यह थी जब ख़लीफ़ा मोतसिम बिल्ला ने इस मुक़ाम पर लश्कर जमा किया था और खुद भी क़याम पज़ीर था उसे "असकर" कहने लगे थे, और ख़लीफ़ा मुतावक्किल ने इमाम अली नक़ी (अ.) को मदीने से बुलवा कर यहीं मुक़ीम रहने पर मजबूर किया था। नीज़ यह भी था कि एक मरतबा ख़लीफ़ए वक़्त ने इमामे ज़माना को इसी मुक़ाम पर नव्वे हज़ार लश्कर का मुआएना कराया था और आपने अपनी दो उँगलियों के दरमियान से अपने खुदाई लश्कर का मुताला करा दिया था। उन्हीं वजह की बिना पर इस मुक़ाम का नाम "असकर" हो गया था जहाँ इमाम अली नकी और इमाम हसन असकरी(अ.) मुद्दतों मुक़ीम रह कर असकरी मश्हूर हो गए। (बेहारूल अनवार जिल्द १२ सफ़ा १५४, दफ़यात अयान जिल्द १ सफ़ा १४५, मजमूउल बहरैन सफ़ा ३२२ दमए साकेबा जिल्द ३ सफ़ा १६३, तज़किरतुल मासूमीन सफ़ा २२२)

आपका अहदे हयात और बादशहाने वक़्त

आपकी विलादत २३२, हिजरी में उस वक़्त हुई जबकि वासिक़ बिल्लाह बिन

मोतसिम बादशाहे वक्त था जो २३७ हिजरी में ख़लीफ़ा बना था।(तारीख़ अबूल फ़िदा) फिर २३३ हिजरी में मुतावक्किल ख़लीफ़ा हुआ(तारीख़ इबनुल वरा) जो हज़रत अली और उनकी औलाद से सख़्त बुग़ज़ व कीना रखता था और उनकी मनक़स्त किया करता था। (हैवातुल हैवान व तारीख़े कामिल) इसी ने २३६ हिजरी में इमाम हुसैन(अ.) की ज़्यारत को जुर्म क़रार दी और उनके मज़ार को ख़त्म करने की सई की (तारीख़ कामिल) और इसी ने इमाम अली नक़ी (अ.) को जबरन मदीने से सरमन राए तलब करा लिया। (सवाएके मोहर्रेक़ा) और आपको गिरफ़्तार कराके आपके मकान की तलाशी कराई,(दफ़अतिल अयान) फिर १४७, हिजरी में मुन्तसर बिन मुतावक्किल ख़लीफ़ए वक़्त हुआ। (तारीख़ अबुल फ़िदा) फिर २४८ में मोतस्तईन ख़लीफ़ा बना (अबू अलफ़िदा) फिर २५२ हिजरी मुमताज बिल्ला ख़लीफ़ा हुआ(अबुल फिदा) इसी ज़माने में अली नकी (अ.) को ज़हर से शहीद कर दिया गया (नूरूल अबसार) फिर २५५ हिजरी में मेंहदी बिल्ला ख़लीफ़ा बना (तारीख़ इब्ने अल वर्दी) फिर २५६ हिजरी में मोतमिद बिल्लाह ख़लीफ़ा हुआ। (तारीख़ अबुल फ़िदा) इसी ज़माने में २६० हिजरी में इमाम(अ.) ज़हर से शहीद हुए तारीख़े कामिल) इन तमाम ख़ुलफ़ा ने आपके साथ वही बरताव किया जो आले मोहम्मद (स.) के साथ बरताव किए जाने का दस्तूर चला आ रहा था।

चार माह की उमर और मन्सबे इमामत

हज़रत इमाम हसन असकरी (अ.) कि उमर जब चार माह के करीब हुई तो आपके वालिद अली नकी(अ.) ने अपने बाद के लिए मन्सबे इमामत की वसीअत की और फ़रमाया कि मेरे बाद यही मेरे जानशीन होंगे, औरइस पर बहुत से लोगों को गवाह भी कर दिया। (इरशाद मुफ़ीद सफ़ा ५०२ व दमए साकेबा जिल्द३,सफ़ा१६३ बहवालए उसूल काफ़ी)

अल्लामा इब्ने हजर मक्की का कहना है कि इमाम हसन असकरी (अ.) इमाम अली नक़ी (अ.) की औलाद सबसे ज़्यादा अज़िल अरफ़ा अला व अफ़ज़ल थे।

चार साल की उमर में आपका सफ़रे ईराक़

मुतावक्किल अब्बासी जो आले माहम्मद (स.) का हमेशा से दुश्मन था उसने इमाम हसन असकरी(अ.) के वालिदे बुज़ुर्गवार इमाम अली नक़ी(अ.) को जबरन २३६, हिजरी में मदीने से " सरमन राए " बुला लिया। आप ही के हमराह इमाम हसन असकरी (अ.) को भी जाना पड़ा इस वक़्त आपकी उमर चार साल चन्द माह की थी (दमए साकेबा

जिल्द ३, सफ़ा १६२)

यूसुफ़े आले मोहम्मद (स.) कुएं में

हज़रत इमाम हसन असकरी (अ.) न जाने किस तरह अपने घर के कुएं में गिर गए। आपके गिरने से औरतों में कोहरामे अज़ीम बरपा हो गया। सब चीख़ने और चिल्लाने लगीं। मगर हजरत इमाम हज़रत नक़ी(अ.) जो महवे नमाज़ थे, मुतलक़ मुतअस्सिर न हुये और इतमीनान से नमाज़ का एख़तेताम किया। उसके बाद आपने फ़रमाया कि घबराओ नहीं हुज्जते ख़ुदा को कोई गज़न्द न पहुँचेगी। इसी दौरान में देखा कि पानी बलन्द हो रहा है और इमाम हसन असकरी(अ.) पानी में खेल रहे हैं।

(दमए साकेबा जिल्द ३, सफ़ा १७६)

इमाम हसन असकरी(अ.) और कमसिनी में ऊरेजे फ़िक्र

आले मोहम्मद जो तदब्बुरे क़ुरआनी और उरेजे फ़िक्र में ख़ास मक़ाम रखते हैं उनमें से एक बलन्द मक़ाम बुज़ुर्ग हज़रत इमाम हसन असकरी (अ.) हैं। उलमाए फ़रीक़ैन ने लिखा है कि एक दिन आप एक ऐसी जगह खड़े रहे जिस जगह कुछ बच्चे खेल में मसरूफ़ थे। इत्तेफ़ाक़न उधर से आरिफ़े आले मोहम्मद(स.) जनाब बहलोल दाना गुज़रे। उन्होंने यह देख कर कि सब बच्चे खेल रहे हैं और एक ख़ूब सूरत सुर्ख़ व सफ़ेद बच्चा खड़ा रो रहा है। उधर मुतवज्जे हुये और कहा ऐ नौनेहाल मुझे बड़ा अफ़सोस है कि तुम इस लिये रो रहे हो कि तुम्हारे पास वह खिलौने नहीं जो इन बच्चों के पास हैं। सुनो ! मैं अभी अभी तुम्हारे लिये खिलौने ले कर आता हूँ। यह कहना था कि आप कमसिनी के बावजूद बोले ,अना ना समझ। हम खेलने के लिये नहीं पैदा किये गये हैं। हम इल्मो इबादत के लिये ख़ल्क़ हुये हैं। उन्होंने पूछा कि तुम्हें यह क्योंकर मालूम हुआ कि ग़रज ख़िलक़त इल्मो इबादत है। आपने फ़रमाया कि इसकी तरफ़ क़ुरआने मजीद रहबरी करता है। क्या तुम्ने नहीं पढ़ा कि ख़ुदा फ़रमाता है। **"अफ़सबतुम इन्नमा ख़लक़ना कुम अबसा"** क्या तुमने यह समझ लिया है कि हमने तुमको अबस(खेल कूद) के लिये पैदा किया है? और क्या तुम हमारी तरफ़ पलट कर न आओगे। यह सुन कर बहलोल हैरान रह गये और यह कहने पर मजबूर हो गये कि ऐ फ़रज़न्द तुम्हें क्या हो गया था कि तुम रो रहे थे। गुनाह का तसव्वुर तो हो ही नहीं सकता क्योंकि तुम बहुत कमसिन हो। आपने फ़रमाया कि कमसिनी से क्या होता है। मैंने अपनी वालेदा को देखा है कि बड़ी लकड़ियों को जलाने के लिये छोटी लकड़ियां इस्तेमाल करती हैं। मैं डरता हूँ कि कहीं जहन्नम के बड़े ईंधन के लिये

हम छोटे और कमसिन लोग इस्तेमाल न किये जायें। (सवाएके मोहर्रेका, सफ़ा १२४, नूरूल अबसार सफ़ा १५०, तज़केरतुल मासूमीन, सफ़ा २३०)

इमाम हसन असकरी(अ.) के साथ बादशाहाने वक़्त का सुलूक और तरज़े अमल

जिस तरह आपके आबाओ अजदाद के वुजूद को उनके अहद के बादशाह अपनी सलतनत और हुकमरानी की राह में रूकावट समझते रहे। उनका यह ख़्याल रहा कि दुनियां के कुलूब उनकी तरफ़ माएल हैं। क्योंकि यह फ़रज़न्दे रसूल (स.) और आमाले सालेह के ताजदार हैं लेहाज़ा उनको आवाम की नज़रों से दूर रखा जाए वरना इमकान क़वी है कि लोग उन्हें अपना बादशाहे वक्त तसलीम कर लेंगे। इसके अलावा यह बुग़ज़ हसद भी था कि इनकी इज़्ज़त बादशाहे वक्त के मुक़ाबले में ज़्यादा की जाती है और यह कि इमाम मेंहदी(अ.) उन्हीं की नस्ल से होगें जो सलतनतों का इन्क़ेलाब लाएंगे। इन्हीं तसव्वूरात ने जिस तरह आपके बुर्ज़ुगों को चैन न लेने दिया और हमेशा मसाएब की अमाजगा बनाए रखा। इसी तरह आपके अहद के बादशाहों ने भी आपके साथ किया। अहदे वासिक़ में आपकी विलादत हुई और अहदे मुतवक्किल के कुछ अय्याम में बचपना गुज़ारा।

मुतवकिकल जो आले मोहम्मद का जानी दुश्मन था। उसने सिर्फ़ इस जुर्म में कि आले मोहम्मद की तारीफ़ की है इब्ने सकीत शायर की ज़बान गुद्दी से खिंचवा ली।(अबुल फ़िदा जिल्द २, सफ़ा १४) उसने सबसे पहले तो आप पर यह ज़ुल्म किया कि चार साल की उम्र में तरके वतन करने पर मजबूर किया। यानी इमाम अली नक़ी(अ.) को जबरन मदीने से सामरा बुलवाया। जिनके हमराह इमाम हसन असकरी (अ.) को लाज़मन जाना पड़ा। फिर वहां आपके घर के लोगों के कहने सुन्ने से तलाशी कराई और आपके वालिदे माजिद को जानवरों से फ़ड़वा डालने की कोशिश की। गरज़कि जो सई आले मोहम्मद(स.) को सताने की मुमकिन थी, वह सब उसने अपने अहदे हयात में कर डाली। उसके बाद उसका बेटा मुसतन्सर ख़लीफ़ा हुआ। यह भी अपने बाप के नक्शे क़दम पर चल कर आले मोहम्मद(स.) को सताने की सुन्नत अदा करता रहा और इसकी मुसलसल कोशिश यही रही कि इन लोगों को सुकून नसीब न होने पाये। उसके बाद मुस्तईन का जब अहदे नव आया तो उसने आपके वालिदे माजिद को क़ैद ख़ाने में रखने के साथ साथ उसकी सई पैहम की कि किसी सूरत से इमाम हसन हसकरी(अ.) को क़त्ल करा दे और इसके लिये उसने मुख़्तलिफ़ रास्ते तलाश किये।

मुल्ला जामी लिखते हैं कि एक मरतबा उसने अपने शौक़ के मुताबिक़ एक

निहायत ज़बर दस्त घोड़ा ख़रीदा, लेकिन इत्तेफ़ाक़ से वह इस दरजा सरकश निकला कि उसने बड़े बड़े लोगों को सवारी न दी और जो उसके क़रीब गया उसको ज़मीन पर दे मारा और टापों से कुचल डाला। एक दिन ख़लीफ़ा मुसतईन बिल्लाह के एक दोस्त ने राय दी कि इमाम हसन असकरी (अ.) को बुला कर हुक्म दिया जाय कि वह इस पर सवारी करें, अगर वह इसपर कामयाब हो गये तो घोड़ा ठीक हो जायगा, और अगर कामयाब न हुये और कुचल डाले गये, तो तेरा मकसद हल हो जायेगा। चुनांन्चे उसने ऐसा ही किया। लेकिन अल्लाह रे शाने इमामत जब आप उसके क़रीब पहुँचे तो वह इस तरह भीगी बिल्ली बन गया कि जैसे कुछ जानता ही नहीं। बादशाह यह देख कर हैरान रह गया और उसके पास इसके सिवा कोई चारा न था कि घोड़ा हज़रत ही के हवाले कर दे।

(शवाहेदुन नबूत, सफ़ा २१०)

फिर मुस्तईन के बाद जब मोतज़ बिल्लाह ख़लीफ़ा हुआ तो उसने भी आले मोहम्मद(स.) को सताने की सुन्नत जारी रखी और इसकी कोशिश करता रहा कि अहदे हाज़िर के इमामे ज़माना और फ़रज़न्दे रसूल(स.) इमाम अली नक़ी(अ.) को दरजए शहादत पर फ़ाएज़ कर दे। चुनान्चे यही हुआ और उसने २५४ ई० में आपके वालिदे बुज़ुर्गवार को ज़हर से शहीद करा दिया। यह एक मुसीबत थी कि जिसने इमाम हसन असकरी(अ.) को बे इन्तेहा मायूस कर दिया। इमाम अली नक़ी(अ.) की शहादत के बाद इमाम हसन असकरी(अ.) ख़तरात में महसूर हो गये। क्योंकि हुकूमत का रूख़ अब आप ही तरफ़ रह गया था। आपको खटका लगा ही था कि हुकूमत की तरफ़ से अमल दरामद शुरू हो गया। **मोतज़** ने एक शक़ीए अज़ली और नासबे अब्दी **इब्ने यारिश** की हिरासत और नज़र बन्दी में इमाम हसन असकरी(अ.) को दे दिया। उसने उनको सताने में कोई दक़ीक़ा नहीं छोड़ा लेकिन आख़िर में वह आपका मोतक़िद बन गया।

आपकी इबादत गुज़ारी और रोज़ा दारी ने उसपर ऐसा गहरा असर किया कि उसने आपकी ख़िदमत में हाज़िर हो कर माफ़ी मांग ली और आपको दौलत सरा तक पहुँचा दिया।

अली बिन मोहम्मद ज़ियाद का बयान है कि इमाम हसन असकरी(अ.) ने मुझे एक ख़त तहरीर फ़रमाया जिसमें लिखा कि तुम ख़ाना नशीन हो जाओ। क्योंकि एक बहुत बड़ा फ़ितना उठने वाला है। ग़रज़ कि थोड़े दिनों के बाद एक हंगामए अज़ीम बरपा हुआ और हुज्जाज बिन सुफ़ियान ने **मोतज़** को क़त्ल कर दिया। (कशफ़ुल ग़म्मा, सफ़ा १२७)

फिर जब **मेंहदी बिल्लाह** का अहद आया तो उसने भी बदस्तूर अपना अमल जारी रखा और हज़रत को सताने में हर क़िस्म की कोशिश करता रहा। एक दिन उसने सालेह बिन वसीफ़ नामी नासेबी के हवाले आपको कर दिया और हुक्म दिया कि हर मुमकिन तरीक़े से आपको सताये। सालेह के मकान के क़रीब एक बहुत ख़राब हुजरा था

जिसमें आप क़ैद किये गये। सालेह बद बख़्त ने जहां और तरीक़े से सताया। एक तरीक़ा यह भी था कि आपको खाना और पानी से भी हैरान और तंग रखता था। आख़िर ऐसा होता रहा कि आप तयम्मुम से नमाज़ अदा फ़रमाते रहे। एक दिन उसकी बीवी ने कहा कि ऐ दुश्मने ख़ुदा यह फ़रज़न्दे रसूल(स.) हैं। इनके साथ रहम का बरताव कर। उसने कोई तवज्जो न की। एक दिन का ज़िक्र है, बनी अब्बासिया के एक गिरोह ने सालेह से जाकर दरख़्वास्त की कि हसन असकरी पर ज़्यादा ज़ुल्म किया जाना चाहिये। उसने जवाब दिया कि मैंने उनके ऊपर दो ऐसे शख़्सों को मुसल्लत कर दिया है जिनका ज़ुल्मो तशद्दुद में जवाब नहीं है, लेकिन मैं क्या करूँ कि उनके तक़वे और उनकी इबादत गुज़ारी से वह इस दरजा मुताअस्सिर हो गये हैं कि जिसकी कोई हद नहीं। मैंने उनसे जवाब तलबी की तो उन्होंने क़ल्बी मजबूरी ज़ाहिर की। यह सुन कर वह लोग मायूस वापस गये।

(तज़किरतुल मासूमीन,सफ़ा २२३)

ग़रजकि मेहदी का ज़ुल्म तशद्दुद ज़ोरों पर था और यही नहीं कि वह इमाम (अ.) पर सख़्ती करता था बल्कि यह कि वह उनके मानने वालों को बराबर क़त्ल करता रहा था। एक दिन आपके एक सहाबी अहमद बिन मोहम्मद ने एक अरीज़े के ज़रिये से उसके ज़ुल्म की शिकायत की तो आपने तहरीर फ़रमाया कि घबराओ नहीं कि मेहदी की उम्र अब सिर्फ़ पांच दिन बाक़ी रह गई है। चुनान्चे छठे दिन उसे कमाले ज़िल्लत व ख़्वारी के साथ क़त्ल कर दिया गया। (कशफ़ुल गम्मा, सफ़ा १२६)

इसी के अहद में जब आप क़ैद ख़ाने में पहुँचे तो ईसा बिन फ़तेह से फ़रमाया कि तुम्हारी उम्र इस वक़्त ६५ साल एक माह दो यौम की है। उसने नोट बुक निकाल कर उसकी तसदीक़ की। फिर आपने फ़रमाया कि ख़ुदा तुम्हें औलादे नरीना अता करेगा। वह ख़ुश हो कर कहने लगा मौला ! क्या आपको ख़ुदा फ़रज़न्द न देगा। आपने फ़रमाया ख़ुदा की क़सम अन्क़रीब मुझे मालिक ऐसा फ़रज़न्द देगा, जो सारी कायनात पर हुकूमत करेगा और दुनिया को अदलो इन्साफ़ से भर देगा। (नूरूल अबसार, सफ़ा १०१)

फिर जब उसके बाद मोतमिद ख़लीफ़ा हुआ तो उसने इमाम(अ.) पर ज़ुल्मो जौरो सित्म व इस्तेबदाद का ख़ात्मा कर दिया।

इमाम अली नक़ी (अ.स.) की शहादत और इमाम हसन असकरी(अ.स) का आग़ाज़े इमामत

हज़रत इमाम अली नक़ी(अ.) ने अपने फ़रज़न्द इमाम हसन असकरी(अ.) की शादी नरजिस ख़ातून से कर दी जो क़ैसरे रोम की पोती और शमऊन वसीए ईसा की नस्ल से थीं। (जिला उल अयून सफ़ा २६८) इसके बाद आप ३, रजब २५४ ई० को दरजए

शहादत पर फ़ाएज़ हुये। आपकी शहादत के बाद हज़रत इमाम हसन असकरी(अ.) की इमामत का आग़ाज़ हुआ। आपके तमाम मोतक़दीन ने आपको मुबारक बाद दी और आपसे हर क़िस्म का इस्तेफ़ादा शुरू कर दिया। आपकी ख़िदमत में आमदो रफ़्त और सवालात व जवाबात का सिलसिला जारी हो गया। आपने जवाबात में ऐसे हैरत अंगेज़ मालूमात का इनकेशाफ़ फ़रमाया कि लोग दगं रह गए। आपने इल्म ग़ैब और इल्म बिलमौत तक का सबूत पेश फ़रमाया और इसकी भी वज़ाहत की कि फलां शख़्स को इतने दिनों में मौत आ जाएगी।

अल्लामा मुल्ला जामी लिखते हैं कि एक शख़्स ने अपने वालिद समेत हज़रत इमाम हसन असकरी (अ.) की राह में बैठ कर यह सवाल करना चाहा कि बाप को पांच सौ दिरहम और बेटे को तीन सौ दिरहम अगर इमाम दें तो सारे काम हो जाऐ ,यहां तक कि इमाम(अ.) इस रास्ते पर आ पहुँचे। इत्तेफ़ाक़ यह दोनों इमाम को पहचानते न थे। इमाम ख़ुद इन दोनों के क़रीब गए और उनसे कहा कि तुम्हें आठ सौ दिरहम की ज़रूरत है। आओ मैं तुम्हें दे दूँ। दोनों हमराह हो लिए और रक़म माहूद हासिल करली। इसी तरह एक और शख़्स क़ैद ख़ाने में था। उसने क़ैद की परेशानी की शिकाएत इमाम (अ.) को लिख कर भेजी और तंगदस्ती का ज़िक्र शर्म की वजह से न किया। आपने तहरीर फ़रमाया कि तुम आज ही क़ैद ख़ाने से रेहा हो जाओगे और तुमने जो शर्म से तगंदस्ती का ज़िक्र नहीं किया। इसके मुतआल्लिक़ मालूम करो कि मैं अपने मुक़ाम पर पहुँचते ही सौ दीनार भेज दूँगा। चुनान्चे ऐसा ही हुआ। इसी तरह एक शख़्स ने आप से अपनी तगं दस्ती की शिकाएत की। आपने ज़मीन कुरेद कर एक अशरफ़ी की थैली निकाली और उसके हवाले कर दी। इसें सौ दीनार थे। इसी तरह एक शख़्स ने आपको तहरीर किया कि मिश्क़ात के मानी क्या हैं! नीज़ यह कि औरत हामेला है इससे जो फ़रज़न्द पैदा होगा। उसका नाम रख दीजीए। आपने जवाब में तहरीर फ़रमाया कि मिश्क़ात से मुराद क़लबे मोहम्मद मुस्तफ़ा (स.) है और आख़िर में लिख दिया। "अज़मुल्लाह अजरकुम व अख़लफ़ अलैक" ख़ुदा तुम्हें अजर दे और नेमुल बदल अता करे। चुनान्चे ऐसा ही हुआ कि उसके यहां मुर्दा लड़का पैदा हुआ। इसके बाद उसकी बीबी हामला हुई ,फ़रज़न्दे नरीना मुतवल्लिद हुआ। मुलाहेज़ा हो। (शवाहेदुन नबूअत सफ़ा २११)

अल्लामा अरबली लिखते हैं कि हसन इब्ने ज़रीफ़ नामी एक शख़्स ने हज़रत से मिलकर दरयाफ़्त किया कि क़ाएम आले मोहम्मद पोशीदा होने के बाद कब ज़ुहूर करेंगे। आपने तहरीर फ़रमाया जब ख़ुदा की मस्लहत होगी। इसके बाद लिखा कि तुम तप रबआ का सवाल करना भूल गए जिसे तुम मुझसे पूछना चाहते हो, तो देखो ऐसा करो कि जो इसमें मुबतिला हो उसके गले में आएत **" या नार कूनी बरदन सलामन अला इब्राहीम "** लिख कर लटका दो शिफ़ायाब हो जाएगा। अली बिन ज़ैद इब्ने हुसैन का कहना है कि मैं एक घोड़े पर सवार हो कर हज़रत की ख़िदमत में हज़िर हुआ तो आपने फ़रमाया

कि इस घोड़े की उमर सिर्फ़ एक रात बाक़ी रह गई है चुनान्चे वह सुबह होने से पहले मर गया। इस्माईल बिन मोहम्मद का कहना है कि मैं हज़रत की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और मैंने उनसे क़सम खाकर कहा कि मेरे पास एक दिरहम भी नहीं है। आपने मुस्कुरा कर फ़रमाया कि क़सम मत खाओ तुम्हारे घर दो सौ दीनार मदफ़ून हैं। यह सुन कर वह हैरान रह गया। फिर हज़रत ने ग़ुलाम को हुक्म दिया कि उन्हें अशरफ़ियां दे दो।

अब्दी रवायत करता है कि मैं अपने फ़रज़न्द को बसरे में बीमार छोड़ कर सामरा गया और वहां हज़रत को तहरीर किया कि मेरे फ़रज़न्द के लिये दुआए शिफ़ा फ़रमाएं। आपने जवाब में तहरीर फ़रमाया " ख़ुदा उसपर रहमत नाज़िल फ़रमाए " जिस दिन यह ख़त उसे मिला उसी दिन उसका फ़रजन्द इन्तेक़ाल कर चुका था। मोहम्मद बिन अफ़आ कहता है कि मैंने हज़रत की ख़िदमत में एक अरीज़े के ज़रिये से सवाल किया कि " क्या आईम्मा को भी एहतेलाम होता है " जब ख़त रवाना कर चुका तो ख़्याल हुआ कि एहतेलाम तो वसवसए शैतानी से हुआ करता है और इमाम तक शैतान पहुँच नहीं सकता। बहर हाल जवाब आया कि इमाम नौम और बेदारी दोनों हालतों में वसवसए शैतानी से दूर होते हैं जैसा कि तुम्हारे दिल में भी ख़्याल पैदा हुआ है। फिर एहतेलाम क्योंकर हो सकता है। जाफ़र बिन मोहम्मद का कहना है कि मैं एक दिन हज़रत की ख़िदमत में हाज़िर था, दिल में ख़्याल आया कि मेरी औरत जो हामेला है अगर उससे फ़रज़न्दे नरीना पैदा हो तो बहुत अच्छा हो। आपने फ़रमाया कि ऐ जाफ़र लड़का नहीं लड़की पैदा होगी। चुनान्चे ऐसा ही हुआ। (कशफ़ुल ग़म्मा, सफ़ा १२८)

अपने अक़ीदत मन्दों में हज़रत का दौरा :- जाफ़र बिन शरीफ़ जरजानी बयान करते हैं कि मैं हज से फ़राग़त के बाद हज़रत इमाम हसन असकरी की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और उनसे अर्ज़ की मौला ! अहले जरजान आपकी तशरीफ़ आवरी के ख़्वास्त गार और ख़्वाहिश मन्द हैं। आपने फ़रमाया कि तुम आज से १९० दिन के बाद वापस जरजान पहुँचोगे और जिस दिन तुम पहुँचोगे उसी दिन शाम को मैं भी पहुचूँगा। तुम उन्हें ब ख़बर कर देना। चुनांन्चे ऐसा ही हुआ। मैं वतन पहुँच कर लोगों को आगाह कर चुका था कि इमाम (अ.) की तशरीफ़ आवरी हुई। आपने सबसे मुलाक़ात की और सबने शरफ़े ज़्यारत हासिल किया। फिर लोगों ने अपनी मुशकीलात पेश कीं। इमाम(अ.) ने सबको मुतमईन कर दिया। इसी सिलसिले में नसर बिन जाबिर ने अपने फ़रज़न्द को पेश किया, जो नाबीना था। हज़रत ने उसके चेहरे पर दस्ते मुबारक फेर कर उसे बीनाई अता की। फिर आप उसी रोज़ वापस तशरीफ़ ले गये। (कशफ़ुल ग़म्मा सफ़ा १२८) एक शख़्स ने आपको एक ख़त बिला रौशनाई के क़लम से लिखा आपने उसका जवाब मरहमत फ़रमाया और साथ ही लिखने वाले का और उसके बाप का नाम भी तहरीर फ़रमा दिया। यह करामत देख कर वह शख़्स हैरान हो गया और इस्लाम लाया और आपकी इमामत का मोतक़िद बन गया।

(दमए साकेबा सफ़ा १७२)

इमाम हसन असकरी(अ.) का पत्थर पर मोहर लगाना

सुक़्क़तुल इस्लाम अल्लामा कुलैनी और **इमामे अहले सुन्नत अल्लामा जामी** रक़म तराज़ हैं कि एक दिन हज़रत इमाम हसन असकरी(अ.) की ख़िदमत में एक ख़ूबसूरत सायमेनी आया और उसने एक संग पारा यानी पत्थर का टुकड़ा पेश करके ख़्वाहिश की आप इस पर अपनी इमामत की तसदीक़ में मोहर कर दें। हज़रत ने मोहर लगा दी। आपका इस्मे गिरामी इस तरह कन्दा हो गया जिस तरह मोम पर लगाने से कन्दा होता है।

एक सवाल के जवाब में कहा गया कि आने वाला **मजमूए इब्नुल सलत बिन अक़बा बिन समआन इब्ने ग़ानम** था। यह वही संग पारा लाया था जिस पर उसके ख़ानदान की एक औरत **उम्मे ख़ानम** ने तमाम आइम्मे ताहेरीन से मोहर लगवा रखी थी। उसका तरीक़ा यह था कि जब कोई इमामत का दावा करता था तो वह उसको ले कर उसके पास चली जाती थी। अगर उस मुद्दई ने पत्थर पर मोहर लगा दी तो उसने समझ लिया कि यह इमामे ज़माना हैं और अगर वह इस अमल से आजिज़ रहा तो वह उसे नज़र अन्दाज़ कर देती थी। चूँकि उसने इसी संग पारे पर कई इमामों की मोहर लगवाई थी। इस लिये उसका लक़ब (**साहेबतुल साअता**) हो गया था।

अल्लामा जामी लिखते हैं कि जब मजमूए बिन सलत ने मोहर लगवाई तो उससे पूछा गया कि तुम हज़रत इमाम हसन असकरी(अ.) को पहले से पहचानते थे। उसने कहा नहीं। वाक़ेया यह हुआ कि मैं उनका इन्तेज़ार कर ही रहा था कि आप तशरीफ़ लाये, लेकिन मैं चूंकि पहचानता न था इस लिये ख़ामोश बैठा रहा। इतने में एक नाशिनास नौजवान ने मेरी नज़रों के सामने आकर कहा कि यही हसन बिन अली हैं।

रावी अबू हाशिम बयान करता है कि जब वह जवान आपके दरबार में आया तो मेरे दिल में यह आया कि काश मुझे मालूम होता कि यह कौन है। दिल में इस ख़्याल का आना था कि इमाम (अ.) ने फ़रमाया कि मोहर लगवाने के लिये वह संग पारा लाया है। जिस पर मेरे बाप दादा की मोहरें लगी हुई हैं। चुनान्चे उसने पेश किया और आपने मोहर लगा दी। वह शख़्स आयए " **ज़ुर्रियते बाज़ुहा मिन बाअज़** " पढ़ता हुआ चला गया। (उसूले काफ़ी व दमए साकेबा, सफ़ा १६४, शवाहेदुन नबूवत, सफ़ा २११, तबा , लखनऊ १६०५ ई० , आलाम अल वरा, सफ़ा २१४)

इमाम हसन असकरी(अ.) के इल्मी ख़िदमात

तफ़सीर-अल-कुरआन

यह एक मुसल्लेमा हक़ीकृत है कि जब इन्सान को सुकून नसीब न हो तो दिलो दिमाग़ अज़कारे रफ़ता हो जाते हैं और उसमें इतनी सलाहियत नहीं रहती कि वह कोई ग़ैर फ़ानी दमाग़ी किरदार पेश कर सके। हज़रत इमाम हसन असकरी(अ.) जिन्हें बिल वास्ता या बिला वास्ता खुलफ़ाए अब्बासिया के सात,७ ज़ालिमों के दस्ते इस्तेबदाद से मुताअस्सिर होना पड़ा। कभी आपके वालिदे माजिद को कैद किया गया। कभी आपके घर की तलाशी ली गई। कभी आपको कैदे जुल्म में मुक़य्यद किया गया। कभी नज़र बन्दी की ज़िन्दगी बसर करने पर मजबूर किया गया। ग़रज कि आपका कोई लमहे हयात पुर सुकून नहीं गुज़रा। फिर उम्र भी आपने सिर्फ़ २८, साल की पाई थी। इन्हीं वजूह से आपके कमालात इल्मिया का कमा हक़्क़ा इज़हारो इन्केशाफ़ न हो सका। इसी बिना पर अल्लामा किरमानी लिखते हैं कि आप दुनियां में इतने दिनों बक़ैदे हयात रहे ही नहीं कि आपके फ़ज़ाएल व मनाक़िब और उलूम व हुक्म लोगों पर ज़ाहिर हो सकें। (अख़बारूल दवल सफ़ा ११७) ताहम इन हालात में भी आपने अपने इल्मे लदुन्नी, नीज़ अपने वालिदे बुज़ुर्गवार से हासिल करदा इल्म के सहारेतबहव्वुरे इल्मी के साथ बड़े बड़े इल्मी कारनामों से लोगों को हैरान कर दिया।आपने मुख़ालेफ़ीने इस्लाम और अज़ीम जा शलीक़ों से अहम मनाज़िरे किये और इल्म व हक्म के दरया बहाये हैं।

आपके इल्मी कारनामों में एक अहम कारनामा कुरआने मजीद की तफ़सीर है। जो तफ़सीरे इमाम हसन असकरी(अ.) के नाम से मौसूम व मशहूर है। यह तफ़सीर उलूमे कुरआनी और हुक्मे नबवी से मम्लू है। (दमए साकेबा जिल्द ३,सफ़ा १६५) मेरे नज़दीक इसका इन्तेसाब तशनए तहक़ीक़ है।

आपने अपनी क़लमी सलाहियत को महले इफ़तेख़ार में ज़िक्र फ़रमाया है। आपका कहना है कि हम वह हैं जिन्हें साहेबे क़लम क़रार दिया है। उलेमा का बयान है कि जब आप लिखते, लिखते नमाज़ के लिये चले जाया करते थे, तो आपका क़लम बराबर चलता रहता था और आप माफ़िज़ ज़मीर बहुकुमे ख़ुदा वन्दी सतह किरतास पर मरकूम होता रहता था। (बेहारूल अनवार, दमए साकेबा, जिल्द ३, सफ़ा १७६) बहवालए असबात अल हदाया उर आमली। अल्लामा शेख़ मुफ़ीद का कहना है कि आप इल्म फ़ज़ल, ज़ोहदो तकवा अक्लो असमत, शुजाअतो करम आमालो इबादत में अफ़ज़ल अहले ज़माना थे।(इरशाद सफ़ा ५०२, सुक्कतुल इस्लाम अल्लामा कुलैनी(र.) का बयान है कि हज़रत

इमाम हसन असकरी(अ.) अपने आबाव अजदाद की तरह तमाम ज़बानों से वाक़िफ़ थे। आप तुरकी, रूमी गरज़ कि हर ज़बान में तकल्लुम किया करते थे। ख़ुदा ने आपको हर ज़बान से बहरावर फ़रमाया था और आप **इल्मे रजाल, इल्मे अन्साब, इल्मे हवादिस** में कमाल रखते थे। (दमए साकेबा, जिलद ३, सफ़ा १७७, बहवाला उसूले काफ़ी) अब्दुल्लाह इब्ने मोहम्मद का बयान है कि मैंने हज़रत को भेड़िये से बात चीत करते हुये ख़ुद सुना है। (किताब मुनाक़िबे फ़ात्मा)

हज़रत इमाम हसन असकरी(अ.) का ईराक़ के एक अज़ीम फ़लसफ़ी को शिकस्त देना

मुवर्रेख़ीन का बयान है कि ईराक़ के अज़ीम फ़लसफ़ी इस्हाक़ कन्दी को ख़ब्त सवार हुआ कि क़ुरआने मजीद में तनाक़ुज़ साबित करे और यह बता दे कि क़ुरआने मजीद की एक आयत दूसरी आयत से और एक मज़मून दूसरे मज़मून से टकराता है। उसने इस मक़सद की तकमील के लिये किताब **"तनाक़ुज़े क़ुरआन"** लिखना शुरू की और इस दरजा मुनहमिक हो गया कि लोगों से मिलना जुलना ओर कहीं आना जाना सब तरक कर दिया।

हज़रत इमाम हसन असकरी(अ.) को जब इसकी इत्तेला हुई तो आपने उसके ख़ब्त को दूर करने का इरादा फ़रमाया। आपका ख़्याल था कि उस पर कोई ऐसा एतेराज़ कर दिया जाय कि जिसका वह जवाब न दे सके और मजबूरन अपने इरादे से बाज़ आ जाय। इत्तेफ़ाक़न एक दिन आपकी ख़िदमत में उसका एक शागिर्द हाज़िर हुआ। हज़रत ने उससे फ़रमाया कि तुम में कोई ऐसा नहीं है जो इसहाक़ कन्दी को **"तनाक़ुज़ अल क़ुरआन"** लिखने से बाज़ रख सके। उसने अर्ज़ की मौला! मैं उसका शागिर्द हूँ। भला उसके सामने लब कुशाई कर सकता हूँ। आपने फ़रमाया कि अच्छा यह तो कर सकते हो कि जो मैं कहूँ वह उस तक पहुँचा दो। उसने कहा कर सकता हूँ। हज़रत ने फ़रमाया कि पहले तो तुम उस से मवानस्त पैदा करो और उसपर एतेबार जमाओ। जब वह तुमसे मानूस हो जाये और तुम्हारी बात तवज्जो से सुन्ने लगे तो उससे कहना कि मुझे एक शुबहा पैदा हो गया है। आप उसको दूर फ़रमा दें। जब वह कहे कि बयान करो तो कहना कि " **इन्ना एताका हज़ल मुताकल्लिम बे हज़ारूल क़ुरआन हल यह बजूअन यकून मुरादा बेमा तकल्लुम मिन्हा अनल मआनी अल लती क़द ज़न सतहा इन्का ज़ेबतहा इलैहा** " अगर इस किताब यानी क़ुरआन का मालिक तुम्हारे पास इसे लाय तो क्या हो सकता है। कि इस कलाम से जो मतलब उसका हो वह तुमहारे समझे हुये मआनी व मतालिब के ख़िलाफ़ हो। जब वह तुम्हारा यह एतेराज़ सुनेगा तो चूँकि ज़ेहीन आदमी है। फ़ौरन कहेगा कि बेशक ऐसा हो सकता है। जब वह यह कहे तो तुम उससे कहना कि फिर किताब "तनाक़ुज़-अल-क़ुरआन"

लिखने से क्या फ़ायदा? क्योंकि तुम उसके जो मानी समझ कर उसपर एतेराज़ कर रहे हो हो सकता है कि वह खुदाई मक़सूद के ख़िलाफ़ हो। ऐसी सूरत में तुम्हारी मेहनत ज़ाया और बरबाद हो जायगी। क्योंकि तनाकि़स तो जब हो सकता है कि तुम्हारा समझा हुआ मतलब सही और मक़सूदे खुदा वन्दी के मुताबिक़ हो और ऐसा यक़ीनी तौर पर नहीं तो तनाकि़स कहां रहा ? अल गरज़ वह शागिर्द इसहाक़ कन्दी के पास गया और उसने इमाम के बताये हुये उसूल पर उससे मज़कूरा सवाल किया। इस्हाक़ कन्दी यह एतेराज़ सुन कर हैरान रह गया और कहने लगा कि फिर सवाल को दोहराओ। उसने फिर दोहराया। इसहाक़ थोड़ी देर के लिये महवे तफ़क्कुर हो गया और दिल से कहने लगा कि बेशक इस क़िस्म का एहतेमाल ब एतबारे लुग़त और ब लेहाज़े फ़िकरो तदब्बुर मुमकिन है। फिर अपने शागिर्द की तरफ़ मुतवज्जे हो कर बोला ! मैं तुम्हें क़सम देता हूँ। तुम मुझे सही सही बताओ कि तुम्हें यह एतेराज़ किसने बताया है। उसने जवाब दिया मेरे शफ़ीक़ उस्ताद यह मेरे ही ज़ेहन की पैदावार है। इस्हाक़ ने कहा हरगिज़ नहीं, यह तुम्हारे जैसे इल्म वाले के बस की चीज़ नहीं है। तुम सच कहो कि तुम्हें किसने बताया और इस एतेराज़ की तरफ़ किसने रहबरी की है। शागिर्द ने कहा सच तो यह है कि मुझे हज़रत इमाम हसन असकरी (अ.) ने फ़रमाया था और मैंने उन्हीं के बताये हुये उसूल पर सवाल किया है।

इसहाक़ कन्दी बोला " **एलान जेहत बेह** " अब तुमने सच कहा है। ऐसे एतेराज़ात और ऐसी अहम बातें ख़ानदाने रिसालत ही से बरामद हो सकती हैं। " **सुम अनह दुआ बिन नार वा अहरक़ जमीए मा काना अनफ़हा** " फिर उसने आग मंगाई और किताब **"तनाकुज़ अल क़ुरआन"** का सारा मसवेदा नज़रे आतश कर दिया। (मनाकिब इब्ने शहरे आशोब मा ज़न्दरानी, जिल्द ५, सफ़ा १२७ व बेहारूल अनवार जिल्द १२, सफ़ा १७२ दमए साकेबा, सफ़ा १८३ जिल्द ३)

हज़रत इमाम हसन असकरी(अ.) और खुसूसियाते मज़हब

हज़रत इमाम हसन असकरी(अ.) का इरशाद है कि हमारे मज़हब में उन लोगों का शुमार होगा जो उसूल व फ़ुरूऔर दीगर लवाज़िम के साथ, साथ इन दस चीज़ों के क़ायल बल्कि उनपर आमिल हों।

(१) शबो रोज़ में ५१ रकअत नमाज़ पढ़ना। (२) सजदा गाहे करबला पर सजदा करना। (३) दाहिने हाथ में अंगूठी पहन्ना। (४) अज़ान व अक़ामत के जुमले दो दो मरतबा कहना। (५) अज़ान व अक़ामत में हय्या अला ख़ैरिल अमल कहना। (६) नमाज़ में बिस्मिल्लाह ज़ोर से पढ़ना। (७) हर दूसरी रकअत में क़ुनूत पढ़ना। (८) आफ़ताब की ज़रदी से पहले नमाज़े

अस्र और तारों के डूब जाने से पहले नमाज़े सुबह पढ़ना। (९) सर और दाढ़ी में वसमा का ख़िज़ाब करना। (१०) नमाज़े मय्यत में पांच,५ तकबीरें कहना।

(दमए साकेबा,जिल्द ३,सफ़ा १७२)

हज़रत इमाम हसन असकरी(अ.) और ईदे नहुम रबीउल अव्वल

हज़रत इमाम हसन असकरी(अ.) चन्द अज़ीम असहाब जिनमें अहमद बिन इस्हाक़ कुम्मी भी थे। एक दिन मोहम्मद बिन अबी आला हम्दानी और यहिया बिन मोहम्द बिन जरीह बग़दादी के दरमियान ९,रबीउल अव्वल के यौमे ईद होने पर गुफ़्तुगू हो रही थी। बात चीत की तकमील के लिये यह दोनों अहमद बिन इस्हाक़ के मकान पर गये। दक़्कुल बाब किया। एक ईराक़ी लड़की निकली, आने का सबब पूछा, कहा अहमद से मिलना है। उसने कहा वह आमाल कर रहे हैं। उन्होंने कहा कैसा अमल है? लड़की ने कहा कि अहमद बिन इस्हाक़ ने हज़रत इमाम अली नक़ी(अ.) से रवायत की है कि ९, रबीउल अव्वल यौमे ईद है और हमारी बड़ी ईद है, और हमारे दोस्तों की ईद है। अलग़रज़ वह अहमद से मिले। उन्होंने ने कहा मैं अभी ग़ुस्ले ईद से फ़ारिग़ हुआ हूँ और आज ईदे नहुम, ९ है। फिर उन्होंने कहा कि मैं आज ही हज़रत इमाम हसन असकरी(अ.) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ हूँ। उनके यहाँ अंगूठी सुलग रही थी, और तमाम घर के लोग अच्छे कपड़े पहने हुये थे। ख़ुशबू लगाये हुये थे। मैंने अर्ज़ की इब्ने रसूल अल्लाह(स.) आज क्या कोई ताज़ा यौमे मसर्रत है। फ़रमाया हाँ आज ९, रबीउल अव्वल है। हम अहलेबैत और हमारे मानने वालों के लिये यौमे ईद है। फिर इमाम (अ.) ने इस दिन के यौमेईद होने और रसूले खुदा और अमीरूल मोमेनीन के तरज़े अमल की निशान देही फ़रमाई।

हज़रत इमाम हसन असकरी (अ.) के पन्दे सूद मन्द

हज़रत इमाम हसन असकरी(अ.) के पन्दो नसायह हुक्म और मवाएज़ में से कुछ नीचे लिखे जा रहे हैं। (१) दो बेहतरीन आदतें यह हैं कि अल्लाह पर ईमान रखे और लोगों को फ़ायदे पहुँचाये। (२) अच्छों को दोस्त रखने में सवाब है। (३) तवाज़ो और फ़रोतनी यह है कि जब किसी के पास से गुज़रे तो सलाम करे और मजलिस में मामूली जगह बैठे। (४) बिला वजह हंसना जिहालत की दलील है। (५) पड़ोसियों की नेकी को

छुपाना और बुराईयों को उछालना हर शख़्स के लिये कमर तोड़ देने वाली मुसिबत और बेचारगी है। (६) यह इबादत नहीं है कि नमाज़ रोज़े अदा करता रहे, बल्कि यह भी अहम इबादत है कि ख़ुदा के बारे में सोच विचार करे। (७) वह शख़्स बदतरीन है जो दो मुहा और दोज़बाना हो , जब दोस्त सामने आए तो अपनी ज़बान से ख़ुश कर दे और जब वह चला जाए तो उसे खा जाने की तदबीर सोचे जब उसे कुछ मिले तो यह हसद करे और जब उस पर कोई मुसीबत आ जाए तो क़रीब न फटके। (८) गुस्सा हर बुराई की कुन्जी है (६) हस्द करने और कीना रखने वाले को भी सुकूने क़ल्ब नसीब नहीं होता। (१०) परहेज़गार वह है जो शब के वक़्त तवकुफ़ व तदब्बुर से काम ले और हर अमर में मोहतात रहे। (११) बेहतरीन इबादत गुज़ार वह है जो फ़राएज़ अदा करता रहे (१२) बेहतरीन सइर्द और ज़ाहिद वह है जो गुनाह मुतलक़न छोड़ दे। (१३) जो दुनियां में बोएगें वही आख़ेरत में काटेगें (१४) मौत तुम्हारे पीछे लगी हुई है अच्छा बोओगे तो अच्छा काटोगे, बुरा बोओगे तो निदामत होगी।(१५) हिरस और लालच से कोई फ़ाएदा नहीं जो मिलना है वही मिलेगा। (१६) एक मोमिन दूसरे मोमिन के लिए बरकत है। (१७) बेकूफ का दिल उसके मुह में होता है और अक़लमन्द का मुंह उसके दिल में होता है। (१८) दुनियां की तलाश में कोई फ़रीज़ा न गवां देना। (१६) तहारत में शक की वजह से ज़्यादती करना ग़ैर ममदूह है। (२०) कोई कितना ही बड़ा आदमी क्यों न हो जब वह हक़ को छोड़ देगा ज़लील तर हो जायेगा। (२१) मामूली आदमी के साथ हक़ हो तो वही बड़ा है (२२) जाहिल की दोस्ती मुसीबत है। (२३) ग़मगीन के सामने हसंना बे अदबी और बद अमली है (२४) वह चीज़ मौत से बदतर है जो तुम्हें मौत से बेहतर नज़र आए। (२५) वह चीज़ ज़िन्दगी से बेहतर है जिसकी वजह से तुम ज़िन्दगी को बुरा समझो। (२६) जाहिल की दोस्ती और इसके साथ गुज़ारा करना मोजिज़े के मानिन्द है।(२७) किसी की पड़ी हुई आदत को छुड़ाना ऐजाज़ की हैसीयत रखता है। (२८) तवाज़े ऐसी नेमत है जिस पर हसद नहीं किया जा सकता। (२६) इस अन्दाज़ से किसी की ताज़ीम न करो जिसे वह बुरा समझे (३०) अपने भाई की पोशीदा नसीहत करनी इसकी ज़ीनत का सबब होताहै (३१) किसी की ऐलानीया नसीहत करना बुराई का पेश ख़ेमा है। (३२) हर बला और मुसीबत के पस मन्ज़र में रहमत और नेमत होती है (३३) मैं अपने मानने वालों को नसीहत करता हूँ कि अल्लाह से डरें दीन के बारे में परहेज़गारी को शाआर बना लें ख़ुदा के मुतअल्लिक़ पूरी सई करें और उसके अहकाम की पैरवी में कमी न करें। सच बोलें , अमानतें चाहें मोमिन की हो या काफ़िर की,अदा करें और अपने सजदों को तूल दें और सवालात के शीरीं जवाब दें तिलावते क़ुरान मजीद किया करें मौत और ख़ुदा के ज़िक्र से ग़ाफ़िल न हों। (३४) जो शख़्स दुनियां से दिल का अन्धा उठेगा, आख़ेरत में भी अन्धा रहेगा । दिल का अन्धा होना हमारी मुवद्दत से ग़ाफिल रहना है।

कुरान मजीद में है कि क़यामत क दिन ज़ालिम कहेंगें " रबे लमा हशरतनी आएमी व कनत बसीरन "मेरे पालने वाले हम तो दुनियां मे बीना थे। हमें यहाँ अन्धा क्यों उठाया है । जवाब मिलेगा । हमने जो निशानियाँ भेजी थी तुमने उन्हें नज़र अन्दाज़ किया था "लोगों ! अल्लाह की नेमत अल्लाह की निशानियाँ हम आले मोहम्मद (स.) हैं। एक रवाएत में है कि आपने दोशम्बे के शर व नहूसत्त से बचने के लिए इरशाद फ़रमाया है कि नमाज़े सुबह की रकते अव्वल में सुरह "हल अता" पढ़ना चाहिए नीज़ एह फ़रमाया है कि नहार मुह ख़रबुज़ा नही खाना चााहिए क्यों कि इससे फ़ालिज का अन्देशा है। (बेहार जिल्द १४)

इमाम मेहदी (अ.) की विलादत बासआदत

१५ शबान २५५, हिजरी में बतने जनाबे नरजिस ख़ातून से क़ाएम आले मोहम्मद हज़रत मेंहदी (अ.) की विलादत ब सआदत हुई , इमाम हसन असकरी (अ.) ने दुश्मनों के खौफ़ से आपकी विलादत को ज़ाहिर होने नहीं दिया।

मुल्ला जामी लिखते हैं कि इमाम मेंहदी की विलादत के बाद हज़रत जिबराईल उन्हें परवरिश व परदाख़्त के लिये उठा कर ले गए। (शवाहेदुन नबूअत)

अल्लामा अरबली लिखते हैं कि आप तीन साल की उमर में देखे गए और आपने हुज्जतुल्लाह होने का इज़हार किया। (कशफुल ग़मा सफ़ा १३८)

मोतमिद अब्बासी की ख़िलाफत और इमाम हसन असकरी (अ.) की गिरफ़्तारी

गर क़लम दरदस्ते ग़द्दारे बूद
ला जुर्म मन्सूर , बरदारे बूद

२५६ हिजरी में मोतमिद अब्बसी ख़िलाफत मकबूज़ा तख़्त पर मुतमकिन हुआ इसने हुकूमत की अनान संभालते ही अपने अबाई तर्ज़े अमल को इख़्तेआर करना और जद्दी किरदार को पेश करना शुरू कर दिया और दिल से सई शुरू कर दी कि आले मोहम्मद(स.) के वजूद से ज़मीन ख़ाली हो जाए, यह अगरचे हुकूमत की बाग डोर अपने हाथो में लेते ही मुल्की बग़वत का शिकार हो गया था। लेकिन फिर भी अपने वज़ीफ़े और अपने मिशन से ग़ाफ़िल नहीं रहा।"इसने हुक्म दिया अहदे हाज़िर में ख़ानदाने रिसालत (स.)की यादगार इमाम हसन असकरी(अ.) को क़ैद कर दिया जाए और उन्हें क़ैद में किसी क़िस्म का सुकून न दिया जाए। हुक्मे हाकिम मरगे मफ़ाजात आख़िर इमाम(अ.) बिला जुर्मो

ख़ता आज़ाद फेज़ा से कैद ख़ाने में पहुँचा दिए गए , और आप पर अली बिन अवताश नामी एक नासबी मुसल्लत कर दिया गया जो आले मोहम्मद, आले अबी तालिब का सख़्त तरीन दुश्मन था और उससे कह दिया गया कि जो जी चाहे करो , तुम्से कोई पूछने वाला नहीं है।

इब्ने औताश ने हस्बे हिदाएत आप पर तरह तरह की सख़्तीयाँ शुरू कर दी। इसने न ख़ुदा का ख़ौफ किया न पैग़म्बर की औलाद होने का लेहाज़ किया, लेकन अल्लाहरे आपका ज़ोहदो तक़्वा कि दो चार ही यौम में दुश्मन का दिल मोम हो गया, और वह हज़रत के पैरों पर पड़ गया। आपकी इबादत गुज़ारी और तक़्वा व तहारत देख कर वह इतना मुतअस्सिर हुआ कि हज़रत की तरफ़ नजर उठा कर देख न सकता था। आपकी अज़्मतो व जलालत की वजह से सर झुका कर आता व चला जाता । यहाँ तक कि वह वक्त आ गया कि दुश्मन बसीरत आगीं बन कर आपक मोतरिफ़ और मानने वाला हो गया।

(अलाम अल वरा सफ़ा २१८)

अबू हाशिम दाऊद बिन क़ासिम का बयान है कि मैं और मेरे हमराह हसन बिन मौहम्मद अलकतफी व मोहम्मद बिन इब्राहीम उमर और दीगर बहुत से हज़रात इस कैद ख़ाने में आले मोहम्मद(स.) की मोहब्बत के जुर्म की सज़ा भुगत रहे थे कि नागाह हमें मालूम हुआ कि हमारे इमाम ज़माना हज़रत हसन असकरी(अ.) भी तशरीफ़ ला रहे हैं। हमने उनका इस्तेक़बाल किया वह तशरीफ़ लाकर कैद ख़ने में हमारे पास बैठ गए और बैठते ही एक अन्धे की तरफ़ इशारह करते हुए फ़रमाया कि अगर यह शख़्स न होता तो मैं तुम्हें यह बता देता कि अन्दरूनी मामला क्या है और तुम कब रिहा होगें। लोगों ने यह सुन कर उस अन्धे से कहा कि तुम ज़रा हमारे पास से चन्द मिनट के लिए हट जाओ चुनान्चे वह हट गया। उसके चले जाने के बाद आपने फ़रमाया कि यह नाबीना कैदी नहीं है तुम्हारे लिए हुकूमत का जासूस है। इसकी जेब में ऐसे काग़जात मौजूद हैं जो इसकी जासूसी का सुबूत देते हैं। यह सुन लोगों ने उसकी तालाशी ली और वक़िया बिल्कुल सही निकला। **अबू हाशिम** कहते हैं कि अय्याम गुज़र रहे थे कि एक दिन गुलाम खाना लाया। हज़रत ने शाम का खाना खाने से इनकार कर दिया और फ़रमाया कि मैं समझता हूँ कि मेरा अफ़्तार कैद से बाहर होगा। इसलिए खाना न लूँगा। चुनान्चे ऐसा ही हुआ आप असर के वक्त कैद खाने से बराआमद हो गए। (आलाम अल वरा सफ़ा २१४)

इस्लाम पर इमाम हसन असकरी (अ.) का एहसाने अज़ीम वाक़िए क़हत

इमाम (अ.) कैद ख़ाने ही में थे कि सामरा में जो तीन साल से क़हत पड़ा हुआ

था उसने शिद्दत इख़्तेआर कर ली और लोगो का हाल यह हो गया कि मरने के क़रीब पहुँच गए। भूख और प्यास की शिद्दत ने ज़िन्दगी से आजिज़ कर दिया। यह हाल देख कर ख़लीफ़ए मोतमिद अब्बसी ने लोगों को हुक्म दिया कि तीन दिन तक बाहर निकल कर नमाज़े इसतेस्क़ा पढ़ें। चुनान्चे सबने ऐसा किया, मगर पानी ना बरसा, चौथे रोज़ बग़दाद के लसारा कि जमाअत सहरा में आई और इनमें से एक राहिब ने आसमान की जानिब अपना हाथ बुलन्द किया, उसका हाथ बुलन्द होना था कि बादल छा गए और पानी बरसना शुरू हुआ। इसी तरह उस राहिब ने दूसरे दिन भी अमल किया और बादस्तूर उस दिन भी बाराने रहमत का नुज़ूल हुआ, यह हालत देख कर सब को निहायत ताज्जुब हुआ। हत्ता कि बाज़ जाहिलों के दिलों में शक पैदा हो गया, बल्कि बाज़ उनमें से इसी वक़्त मुरतिद हो गए।

यह वाक़िया ख़लीफ़ा पर बहुत शाक गुज़रा और उसने इमाम हसन असकरी (अ.) को तलब करके कहा, अबू मोहम्मद अपने जद के कलमे गोयों की ख़बर लो, और उनको हलाकत यानी गुमराही से बचाओ। हज़रत इमाम हसन असकरी (अ.) ने फ़रमाया कि अच्छा राहिबों को हुक्म दिया जाए कि कल फिर वह मैदान में आकर दोआए बारान करें, इन्शा अल्लाह ताला मैं लोगों के शकूक ज़ाएल कर दूँगा। फिर जब दूसरे दिन वह लोग मैदान में तलबे बारां के लिए जमा हुये तो इस राहिब ने मामूल के मुताबिक़ आसमान की तरफ हाथ बुलन्द किया नागाह आसमान पर अबर नमूदार हुआ और मेह बरसने लगा। यह देख कर इमाम हसन असकरी (अ.) ने एक शख़्स से कहा कि राहिब के हाथ पकड़ कर जो चीज़ राहिब के हाथ में मिले "ले ले" उस शख़्स ने राहिब के हाथ में एक हड्डी दबी हुई पाई और उससे लेकर हज़रत इमाम हसन असकरी (अ.) की ख़िदमत में पेश की। उन्होंने राहिब से फ़रमाया कि तू हाथ उठा कर बारिश की दुआ कर उसने हाथ उठाया तो बजाए बारिश होने के मतला साफ़ हो गया और धूप निकल आई, लोग कमाले मुताअज्जिब हुए और ख़लीफ़ा मोतमिद ने हज़रत इमाम हसन असकरी(अ.) से पूछा, कि ऐ अबू मोहम्मद यह क्या चीज़ है! आपने फ़रमाया कि यह एक नबी की हड्डी है जिसकी वजह से राहिब अपने मुददोआ में कामयाब होता रहा। क्योंकि नबी की हड्डी का यह असर है कि जब जब वह ज़ेरे आसमान खोल दी जाएगी, तो बाराने रहमत ज़रूर नाज़ल होगा। यह सुन कर लोगों ने इस हड्डी का इम्तेहान किया तो उसकी वही तासीर देखी जो हज़रत इमाम हसन असकरी (अ.) ने की थी। इस वाक़िए से लोगों के दिलों से शकूक ज़ाएल हो गए जो पहले पैदा हो गए थे। फिर इमाम हसन असकरी (अ.) इस हड्डी को ले कर अपनी क़याम गाह पर तशरीफ़ लाए। (सवाएक़े माहर्रेक़ा सफ़ा १२४ व कशफ़ुल ग़म्मा सफ़ा १२६)।

फिर आपने इस हड्डी को कपड़े में लपेट कर दफ़न कर दिया। (अख़बार अल दवल सफ़ा ११७) **शेख़ शहाबुद्दीन क़लबूनी** ने किताब ग़राएब व अजाएब में इस

वाक़िये को सूफ़ियों की करामात के सिलसिले में लिखा है बाज़ किताबों में है कि हड्डी की गिरफ़्त के बाद आपने नमाज़ अदा की और दुआ फ़रमाई। खुदा वन्दे आलम ने इतनी बारिश की कि जल थल हो गया और क़हत जाता रहा। यह भी मरक़ूम है कि इमाम (अ.) ने क़ैद से निकलते वक़्त अपने साथियों की रिहाई का मुतालेबा फ़रमाया था जो मंजूर हो गया था और वह लोग भी राहिब की हवा उखाड़ने के लिये हमराह थे।

नूरूल अबसार, सफ़ा १५१)

एक रवायत में है कि जब आपने दुआए बारान की और अब्र आया तो आपने फ़रमाया कि फ़लां मुल्क के लिये है और वह वहीं चला गया। इसी तरह कई बार हुआ फिर वहां बरसा।

वक़िए क़हत के बाद :- २५६, हिजरी के आख़िर में वाक़िए क़हत के बाद हज़रत इमाम हसन असकरी(अ.) का चरचा तमाम आलम में फैल गया। अब क्या था मुवाफ़िक़ व मुख़ालिफ़ सब ही का मैलान और रूझान आपकी तरफ़ होने लगा। आपके वह नए मानने वाले जिनके दिलों में आले मोहम्मद(स.) की मोअद्दत कमाल को पहुँची हुई थी। वह यह चाहते थे कि किसी सूरत से इमाम की ख़िदमत में इमाम मेहदी(अ.) की विलादत की मुबारक बाद पेश करें। लेकिन इसका मौक़ा न मिलता था। क्योंकि या इमाम क़ैद में होते या हिरासत में, उनसे मिलने की किसी को इजाज़त न होती थी, लेकिन क़हत के वक़िए से इतना हुआ कि आप तक़रीबन एक साल क़ैद ख़ाने से बाहर रहे। इसी दौरान में लोगों ने मसाएल वग़ैरा दरयाफ़्त किये और जो लोग ज़्यारत के मुशताक़ थे उन्होंने ज़्यारत की और जो खुफ़िया तहनियते विलादत हज़रत हुज्जत(अ.) अदा करना चाहते थे उन्होंने तहनियत अदा की।

अल्लामा मोहम्मद बाक़र लिखते हैं कि २५७ हिजरी में तक़रीबन ७० आदमी मदाएन से करबला होते हुये सामरा पहुँचे और हज़रत इमाम हसन असकरी(अ.) की ख़िदमत में हाज़िर हो कर तहनियत गुज़ार हुये। हज़रत ने फ़रते मसर्रत से आंखों में आंसू भर कर उनका इस्तेक़बाल किया और उनके सवालात के जवाबात दिये।

(दमए साकेबा, जिल्द ३, सफ़ा १७२)

अक़ीदत मन्दों की आमद का चूँकि तांता बंध गया था इस लिये ख़लीफ़ा मोतमिद ने आपके हालात की निगरानी के लिये बे शुमार जासूस मुक़र्र कर दिये। इमाम (अ.) जिन्हें हुकूमत की नियत का बहुत अच्छी तरह इल्म था ख़ामोशी और गोशा नशीनी की ज़िन्दगी बसर करने लगे और आपने इसकी एहतीयात बरती कि मुल्की मामेलात पर कोई तबसेरा न किया जाय और सिर्फ़ दीनी उमूर से बहस की जाय। चुनान्चे २५७ हिजरी के आख़िर तक यही कुछ होता रहा। लेकिन ख़लीफ़ा मुतमईन न हुआ और उसने हसबे आदत रोक टोक शुरू की और सबसे पहले उसने ख़ुम्स की आमद की बन्दिश कर दी।

इमाम हसन असकरी(अ.) और अबीदुल्लाह वज़ीर मोतमिद अब्बासी

इसी ज़माने में एक दिन हज़रत इमाम हसन असकरी(अ.) मुतवक्किल के वज़ीर फ़तेह इब्ने ख़ाक़ान के बेटे अबीदुल्लाह इब्ने ख़ाक़ान जोकि मोतमिद का वज़ीर था मिलने के लिये तशरीफ़ ले गये। उसने आपकी बेइन्तेहा ताज़ीम की ओर आपसे इस तरह महवे गुफ़्तुगू रहा कि मोतमिद का भाई मौफ़क़ दरबार में आया तो उसने कोई परवाह न की। यह हज़रत की जलालत और ख़ुदा की दी हुई इज़्ज़त का नतीजा था। हम इस वाक़िए को अबीदुल्लाह के बेटे अहमद ख़ाक़ान की ज़बानी बयान करते हैं। कुतुबे मोतबरा में है कि जिस ज़माने में अहमद ख़ाक़ान कुम का वाली था, उसके दरबार में एक दिन अलवियों का तज़किरा छिड़ गया। वह अगरचे दुशमने आले मोहम्मद होने में मिसाली हैसियत रखता था लेकिन यह कहने पर मज़बूर हो गया कि मेरी नज़र में इमाम हसन असकरी(अ.) से बेहतर कोई नहीं है। उनकी जो वक़अत उनके मानने वालों और अराकीने दौलत की नज़र में थी वह उनके अहद में किसी को भी नसीब नहीं हुई। सुनो ! एक मरतबा मैं अपने वालिद अबीदुल्लाह इब्ने ख़ाक़ान के पास खड़ा हुआ था कि नागाह दरबान ने आकर इत्तेला दी कि इमाम हसन असकरी(अ.) तशरीफ़ लाए हुये हैं वह इजाज़ते दाख़ेला चाहते हैं। यह सुन कर मेरे वालिद ने पुकार कर कहा कि **हज़रत इब्नुल रज़ा** को आने दो। वालिद ने चूँकि कुन्नियत के साथ नाम लिया था इस लिये मुझे सख़्त ताअज्जुब हुआ क्योंकि इस तरह ख़लीफ़ा या वली अहद के अलावा किसी का नाम नहीं लिया जाता था। इसके बाद ही मैंने देखा कि एक साहब जो सब्ज़ रंग, ख़ुश क़ामत, खूब सूरत, नाज़ुक अन्दाम जवान थे, दाख़िल हुये। जिनके चेहरे से रोबो जलाल हुवेदा था। मेरे वालिद की नज़र ज्योंही उनके ऊपर पड़ी वह उठ खड़े हुये और उनके इस्तेक़बाल के लिये आगे बढ़े और उन्हें सीने से लगा कर उनके चेहरे और सीने का बोसा दिया और अपने मुसल्ले पर उनको बिठा लिया ओर कमाले अदब से उनकी तरफ़ मुख़ातिब रहे, और थोडी, थोड़ी देर के बाद कहते थे। मेरी जान आप पर क़ुरबान,ऐ फ़रज़न्दे रसूल(स.) इसी असना में दरबान ने आकर इत्तेला दी कि ख़लीफ़ा का भाई मौफ़िक़ आया है। मेरे वालिद ने कोई तवज्जो न की हालांकि उसका उमूमन यह एज़ाज़ रहता था कि जब तक वापस न चला जाय। दरबार के लोग दो रोया सर झुकाये खड़े रहते थे। यहां तक कि मोफ़िक़ के ग़ुलामाने ख़ास को उसने अपनी नज़रों से देख लिया। उन्हें देखने के बाद मेरे वालिद ने कहा या इब्ने रसूल अल्लाह अगर इजाज़त हो तो मौफ़क़ से कुछ बाते कर लूँ। हज़रत ने वहां से उठ कर रवाना हो जाने का इरादा किया। मेरे वालिद ने उन्हें सीने से लगाया और दरबानों को हुक्म दिया कि उन्हें दो मुकम्मल सफ़ों के दरमियान से ले जाओ कि मोफ़क़ की नज़र आप पर न पड़े। चुनान्चे हज़रत इसी

अन्दाज़ से वापस तशरीफ़ ले गये। आपके जाने के बाद मैंने ख़ादिमों और ग़ुलामों से कहा कि वाए हो तुमने कुन्नियत के साथ किसका नाम ले कर उसे मेरे वालिद के सामने पेश किया था। जिसकी उसने इस दरजा ताज़ीम की जिसकी मुझे तवक़्क़ो न थी। उन लोगों ने फिर कहा कि यह शख़्स सादाते अलबिया में से था। उसका नाम हसन बिन अली और कुन्नियत इब्नुल रज़ा है। यह सुन कर मेरे ग़म व ग़ुस्से की कोई इन्तेहा न रही और मैं दिन भर इसी ग़ुस्से में भुनता रहा कि अलवी सादात की मेरे वालिद ने इतनी इज़्ज़त व तौक़ीर क्यों की यहां तक कि रात आगई। मेरे वालिद नमाज़ में मशग़ूल थे। जब वह फ़रीज़ए इशा से फ़ारिग़ हुये तो मैं उनकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ। उन्होंने पूछा ऐ अहमद इस वक़्त आने का क्या सबब है। मैंने अर्ज़ की कि इजाज़त दीजिये तो मैं कुछ पूछूँ। उन्होंने फ़रमाया कि जो जी चाहे पूछो। मैंने कहा यह कौन शख़्स था? जो सुबह आपके पास आया था। जिसकी आपने ज़बर दस्त ताज़ीम की और हर बात में अपने को और अपने बाप को उसपर से फ़िदा करते थे। उन्होंने फ़रमाया कि ऐ फ़रज़न्द यह राफ़ज़ियों के इमाम हैं। उनका नाम हसन बिन अली और उनकी मशहूर कुन्नियत इब्नुल रज़ा है। यह फ़रमा कर वह थोड़ी देर चुप रहे। फिर बोले ऐ फ़रज़न्द यह वह कामिल इनसान है कि अगर अब्बासियों से सलतनत चली जाय तो इस वक़्त दुनिया में इससे ज़्यादा इस हुकूमत का मुस्तहक़ कोई नहीं। यह शख़्स इफ़्फ़त, ज़ोहद, कसरते इबादत, हुस्ने इख़्लाक़, सलाह, तक़वा वग़ैरा में तमाम बनी हाशिम से अफ़ज़ल और आला है, और ऐ फ़रज़न्द अगर तू उनके बाप को देखता तो हैरान रह जाता। वह इतने साहेबे करम और फ़ाज़िल थे कि उनकी मिसाल भी नहीं थी। यह सब बातें सुन कर मैं ख़ामोश तो हो गया लेकिन वालिद से हद दरजा नाख़ुश रहने लगा और साथ ही साथ इब्नुल रज़ा के हालात को मालूम करना अपना शेवा बना लिया। इस सिलसिले में मैंने बनी हाशिम, उमरा, लशकर, मुनशियाने दफ़तरे क़ज़्ज़ाता और फ़ुक़हा और अवामुन नास से हज़रत के हालात का इस्तेफ़सार किया। सबके नज़दीक हजरत इब्नुल रज़ा को जलील उल क़द्र और अज़ीम पाया और सबने बिल इत्तेफ़ाक़ यही बयान किया कि इस मरतबे और ख़ूबियों का कोई शख़्स किसी ख़ानदान में नहीं है। जब मैंने हर दोस्त और दुश्मन को हज़रत के बयाने इख़्लाक़ और इज़हारे मकारमे इख़्लाक़ में मुत्तफ़िक़ पाया तो मैं भी उनका दिल से मानने वाला हो गया और अब उनकी क़द्रो मंज़िलत मेरे नज़दीक बे इन्तेहा है। यह सुन कर तमाम अहले दरबार ख़ामोश हो गये। अल्बत्ता एक शख़्स बोल उठा कि ऐ अहमद तुम्हारी नज़र में उनके बरादर जाफ़र की क्या हैसियत है। अहमद ने कहा उनके मुक़ाबले में उसका क्या ज़िक्र करते हो वह तो एलानिया फ़िस्क़ व फ़ुजूर का इरतेकाब करता था। दाएमुल ख़ुमर था, ख़फ़ीफ़ उल अक़्ल था, अनवाए मलाही व मनाही का मुरतकिब होता था। इब्नुल रज़ा के बाद जब ख़लीफ़ा मोतमिद से उसने उनकी जानशीनी का सवाल किया तो उसने उसके किरदार की वजह से दरबार से निकलवा दिया

था। (मनाक़िब इब्ने शहरे आशोब, जिल्द ५, सफ़ा १२४ व इरशादे मुफ़ीद, सफ़ा ५०५) बाज़ उलेमा ने लिखा है कि यह गुफ़्तुगू इमाम हसन असकरी(अ.) की शहादत के १८, साल बाद माहे शाबान २७८, हिजरी की है।

(दमए साकेबा सफ़ा १६२, जिल्द ३, तबा नजफ़े अशरफ़)

हज़रत इमाम हसन असकरी(अ.) की दोबारा गिरफ़्तारी

यह एक मुसल्लेमा हक़ीक़त है कि ख़ुलफ़ाए बनी अब्बासिया ख़ूब जानते थे। कि सिलसिलए आले मोहम्मद(स.) के वह अफ़राद जो रसूल अल्लाह(स.) की सही जानशीनी के मिसदाक़ व हक़दार हो सकते हैं, वह यही अफ़राद हैं। जिनमें से ग्याहरवीं हस्ती इमाम हसन असकरी (अ.) की है। इस लिये उनका फ़रज़न्द वह हो सकता है जिसके बारे में रसूल(स.) की पेशीन गोई सही क़रार पा सके। लेहाज़ा कोशिश यह थी कि उनकी ज़िन्दगी का दुनिया से ख़ात्मा हो जाय। इस तरह कि उनका जानशीन दुनिया में मौजूद न हो। यही सबब था कि इमाम हसन असकरी(अ.) के लिये नज़र बन्दी पर इकतेफ़ा नहीं की गई। जो इमाम अली नक़ी(अ.) के लिये ज़रूरी समझी गई थी, बल्कि आपके लिये अपने घर बार से अलग क़ैदे तन्हाई को ज़रूरी समझा गया। यह और बात है कि क़ुदरती इन्तेज़ाम के मातहत दरमियान में इन्केलाबाते सलतनत के वाक़ए आपकी क़ैदे मुसलसल के बीच में क़हरी रिहाई के सामान पैदा कर दिया करते थे, मगर फिर भी जो बादशाह तख़्त पर बैठता वह अपने पेश रौ के नज़रिए के मुताबिक़ आपको दोबारा मुक़य्यद करने पर तय्यार हो जाता था। इस तरह आपकी मुख़्तसर ज़िन्दगी जो दौरे इमामत के बाद थी उसका बेशतर हिस्सा क़ैदो बन्द में ही गुज़रा। इस क़ैद की सख़्ती मोतमिद के ज़माने में बहुत बढ़ गई थी। अगरचे वह मिसल दीगर सलातीन के आपके मरतबे और हक़्क़ानियत से ख़ूब वाक़िफ़ था लेकिन फिर भी वह बुग़ज़े लिल्लाही को छोड़ न सका और दस्तूरे साबिक़ के मुताबिक़ उन्हें ज़िन्दगी की मंज़िले आख़िर तक पहुँचाने के दरपए रहा। यही वजह है कि वह नज़र बन्दियों से मुतमईन न हो सका और उसने २५८, हिजरी में इमाम(अ.) को फिर मुक़य्यद कर दिया। (आलाम अल वरा, सफ़ा २१४)और अबकी मरतबा चूंकि नियत बिलकुल ख़राब थी इस लिये क़ैद में भी पूरी सख़्ती की गई। हुक्म था कि आपके साथ किसी क़िस्म की कोई रियायत न की जाय। चुनान्चे यही कुछ होता रहा, लेकिन उसे इससे तसल्ली न हुई और उसने अपने एक ज़ालिम ख़िदमतगार जिसका नाम "**नख़रीर**" था, को बुला कर कहा कि उन्हें तू अपनी निगरानी में ले ले और जिस दरजा सता सके उन्हें परेशान कर। नख़रीर ने हुक्म पाते ही तशद्दुद शुरू कर दिया। इमाम को दिन की रौशनी और पानी की फ़रावानी तक

से महरूम कर दिया। आपको दिन और रात का पता सूरज की रौशनी से न चलता था सिर्फ़ तारीकी ही रहती थी। एक दिन उसकी बीवी ने उससे दरख़्वास्त की के फ़रज़न्दे रसूल (स.) है उसके साथ तुम्हारा यह बरताव अच्छा नहीं है। उसने कहा यह क्या है, अभी तो उन्हें जानवरों से फ़डवा डालना बाक़ी है।

हुज्जते ख़ुदा दरिन्दों में :- चुनान्चे उसने इजाज़त हासिल करके इमाम हसन असकरी (अ.) को दरिन्दों में डाल दिया। शेर और दीगर दरिन्दों की नज़र जब आप पर पड़ी तो उन्होंने हुज्जते ख़ुदा को पहचान लिया और उन्हें फाड़ खाने के बजाये उनके क़दमों पर सर रख दिया इमाम अलैहिस्सलाम ने उनके दरमियान मुसल्ला बिछा कर नमाज़ पढ़ना शुरू कर दिया दुश्मनों ने एक बुलन्द मक़ाम से यह हाल देखा और सख़्त शरमिन्दा हो कर इमाम की फ़ज़ीलत का एतेराफ़ किया।

(आलाम उल वरा सफ़ा २१८ कशफ़ुल ग़म्मा सफ़ा १२७ इरशाद सफ़ा ५१४)

इस वाक़ये ने आप की दबी हुई फ़ज़ीलत को उभार दिया लोगों में इस करामत का चरचा हो गया अब तो मुतामिद के लिये इस के सिवा कोई चारा न था कि उन्हें जल्द से जल्द इस दारे फ़ानी से रूख़सत कर दे चुनान्चे उसने एक ऐसे क़ैद ख़ाने में आपको मुक़य्यद कर दिया जिसमें रह कर ज़िन्दा रहने से मौत बेहतर थी।

इमाम हसन असकरी (अ.) की शहादत

इमाम याज़ दहुम (ग्यारहवें इमाम) **हज़रत हसन असकरी**(अ.) क़ैदो बन्द की ज़िन्दगी गुज़ारने के दौरान में एक दिन अपने ख़ादिम अबुल अदयान से इरशाद फ़रमाते हुये कि तुम जब अपने सफ़रे मदाएन से पन्द्रह दिन के बाद पलटोगे तो मेरे घर से शेवनो बुका की आवाज़ आती होंगी। (जलाउल अयून, सफ़ा २६६) नीज़ आपका यह फ़रमाना भी मन्कूल है कि २६० हिजरी में मेरे मानने वालों के दरमियान इन्केलाबे अज़ीम आयेगा।

(दमए साकेबा, जिल्द ३, सफ़ा १७७)

अल गरज़ **इमाम हसन असकरी**(अ.) बतारीख़ १, रबीउल अव्वल २६०, हिजरी मोतमिद अब्बासी ने ज़हर दिलवा दिया और आप ८, रबीउल अव्वल २६० हिजरी को जुमे के दिन ब वक़्ते नमाज़े सुबह ख़िलअते हयाते ज़ाहेरी उतार कर ब तरफ़े मुल्के जावेदानी रेहलत फ़रमा गये। **" इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहे राजेऊन "**

(सवाएक़े मोहर्रेक़ा, सफ़ा १२४, व फ़ुसूल अल महमा व अर हज्जुल मतालिब सफ़ा ४६४, जिला उल अयून, सफ़ा २६६, अनवारूल हुसैनिया जिल्द ३, सफ़ा ५६)

उलेमा का बयान है कि वफ़ात से क़ब्ल आपने इमाम मेहदी(अ.) को तबर्रूकात सिपुर्द फ़रमा दिये थे। (दमए साकेबा जिल्द ३, सफ़ा १६२)

इन्तेक़ाल के वक़्त आपकी उम्र २८ साल की थी।(सवाएके मोहर्रेक़ा,सफ़ा१२४)

उलमाए फ़रीक़ैन का इत्तेफ़ाक़ है कि आपने हज़रत इमाम मेहदी(अ.) के अलावा कोई औलाद नहीं छोड़ी।

(मतालेबुल सुवेल सफ़ा २६२ व सवाएके मोहर्रेक़ा सफ़ा १२४, नूरूल अबसार, अर हज्जुल मतालिब सफ़ा ४६२, कशफ़ुल ग़म्मा सफ़ा १२६ व आलाम अल वरा सफ़स २१८)

शहादत के बाद :- वाक़िए क़हत, दरिन्दों की सजदा रेज़ी ओर आपकी मज़लूमियत की वजह से हर एक के दिल में आपकी वक़अत, आपकी मोहब्बत जा गुज़ीं हो चुकी थी। यही वजह है कि आपकी रेहलत की ख़बर का शोहरत पाना था कि हर घर से रोने की आवाज़ें आने लगीं। हर दिल में इज़तेराब की लहरें दौड़ने लगी। शोरो शेवन से सामरा की गलियां क़यामत का मन्ज़र पेश करने लगीं।

अल्लामा मजलिसी लिखते हैं कि इमाम(अ.) के इरशाद के मुताबिक़ जब १५ दिन के बाद अबुल अदयान दाख़िले सामेरा हुये तो आप शहीद हो चुके थे और शेवन व मातम की आवाज़ें बुलन्द थीं। (जिला उल अयून सफ़ा २६७)

इमाम शिब्लन्जी लिखते हैं कि आपके इन्तेक़ाल की ख़बर के मशहूर होते ही तमाम सामरा में हल चल मच गई और हर तरफ़ रोने पीटने का शोर बलन्द हो गया। बाज़ारों में हरताल हो गई दुकानें बन्द हो गईं। फिर तमाम बनी हाशिम और हाकिमाने क़सास, अरकाने अदालत, अयाने हुकूमत, मुन्शी, क़ाज़ी और आइम्मए ख़लाएक़ आपके जनाज़े में शिरकत के लिये दौड़ पड़े। सरमन राय इस दिन क़यामत का नमूना था।

(नूरूल अबसार सफ़ा १६८, फ़ुसूल मूहिम्मा, अर हज्जुल मतालिब सफ़ा ४६८)

गरज़ कि निहायत तुज़ुक व एहतेशाम और ज़ाहेरी शानो शौकत के साथ आपका जनाज़ा उठाया गया और उस मुक़ाम पर ले जाकर रखा गया जिस जगह नमाज़ पढ़ाई जाती थी। इतने में मोतमिद के हुक्म से ईसा इब्ने मुतावक्किल जो उमूमन नमाज़े मय्यत पढ़ाया करता था आगे बढ़ा और उसने चेहरे से कफ़न सरका कर बनी हाशिम अलवी व अब्बासी और सब अमीरों ,मुन्शियों ,क़ाज़ियों ग़रज़कि कुल अशराफ़ो अयान को दिखाते हुये कहा कि “ **माता हतफ़ अनफ़ा अला फ़राशा** ” देखो यह अपनी मौत से मरे हैं। यानी इन्हें किसी ने कुछ खिलाया नहीं है। (तज़किरतुल मासूमीन, सफ़ा २२६)

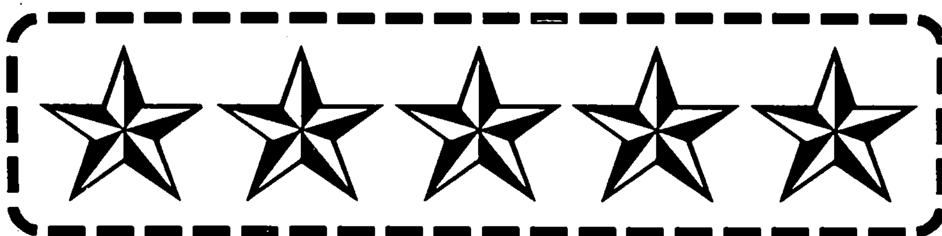
इसके बाद जाफ़रे तव्वाब नमाज़ पढ़ाने के लिये आगे बढ़े, अभी आप तकबीरतुल हराम न कहने पाये थे कि मोहम्मद इब्ने हसन अल क़ाएम अल मेहदी बरामद होकर सामने आ गये और आपने चचा को हटा कर नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई। (जलाउल अयून, सफ़ा २६२) इसके बाद आपको इमाम अली नक़ी (अ.) ही के रौज़ए मुबारक में

दफ़्न कर दिया गया। (अर हज्जुल मतालिब सफ़ा २६४)

यह आपकी ख़ानदानी करामत है कि आपके रौज़े पर ताएर बीट नहीं करते।

(दमए साकेबा, जिल्द ३, सफ़ा १७६ तबा नजफ़े अशरफ़)

अल्लामा मजलिसी लिखते हैं कि इमाम हसन असकरी(अ.) की तदफ़ीन के बाद इमाम मेहदी (अ.) के तजस्सुस में आपके घर की तलाशी ली गई और आपकी औरतों को गिरफ़्तार किया गया। मक़सद यह था कि इमाम मेहदी को गिरफ़्तार करके क़त्ल कर दिया जाय। ताकि ख़ानदाने रिसालत का ख़ात्मा हो जाय और क़यामत के क़रीब अदलो इन्साफ़ की बस्ती न बसाई जा सके और ज़ालिमों के ज़ुल्म का बदला न लिया जा सके, लेकिन खुदा वन्दे आलम ने अपने वादए **" वल्लाह मतम नूरा "** के मुताबिक़ उन्हें इस ज़ालिम मोतमिद के दस्त रस से महफ़ूज़ कर दिया। अब इन्शा अल्लाह जब हुक्मे खुदा होगा ज़हूर फ़रमायेंगे। **(अजल्लाह फ़राजहू)**





क़ाएमे आले मोहम्मद

अबुल क़ासिम

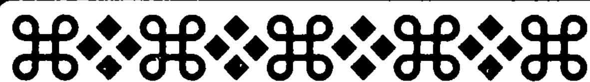
हज़रत

इमाम मोहम्मद मेहदी(अ.)

साहेबुज़्ज़मान

है यह ख़ालिक़ की, अदालत का तक़ाज़ा दम बदम
जान लेवा है अगर कोई, तो जां परवर भी हो
छुप के जब परदे में, बहकाता है इबलीसे लईं
है तक़ाज़ा अदल का, परदे में एक रहबर भी हो

साबिर थरयानी "कराची"



بسم الله الرّحمٰن الرّحيم

भाग-१४

हज़रत इमाम मोहम्मद मेहदी (अ.)

या इलाही मेहदियम , अज़ ग़ैब आर
ता बगरदुद, दर जहाँ अदल आशकार

इमामे ज़माना हज़रत इमाम मेहदी(अ.) सिलसिलए अस्मतें मोहम्मदिया की चौदहवीं ओर सिल्के इमामतें अलविया की बारहवीं कड़ीं हैं। आपके वालिदे माजिद हज़रत **इमाम हसन असकरी**(अ.) और वालेदा माजेदा जनाबे **नरजिस ख़ातून** [1]थीं।

आप अपने आबाओ अजदाद की तरह इमामे मन्सूस,मासूम, आलमे ज़माना और अफ्ज़ले कायनात हैं। आप बचपन ही में इल्मो हिकमत में भर पूर थे।

(सवाएक़े मोहर्रेक़ा सफ़ा १२४)

आपको पांच साल की उम्र में वैसी ही हिकमत दे दी गई थी जैसी हज़रते यहिया को मिली थी, और आप बतने मादर में उसी तरह इमाम क़रार दिये गये थे, जिस तरह हज़रते ईसा(अ.) नबी क़रार पाये थे। (कशफ़ुल ग़म्मा सफ़ा १३०)

आप अम्बिया से बेहतर हैं। (एसआफ़ुल राग़ेबीन, सफ़ा १२८) आपके मुताअल्लिक़ हज़रत रसूले करीम(स.) ने बेशुमार पेशीन गोईयां फ़रमाई हैं और इसकी वज़ाहत की है कि आप हुज़ूर की इतरत और हज़रत फ़ात्मा ज़हरा(स.) की औलाद से होंगे। मुलाहेज़ा हो (जामए सग़ीर सियूती, सफ़ा १६० तबा मिस्र व मसनद अहमद बिन हम्बल जिल्द १, सफ़ा ८४ तबा मिस्र व कन्ज़ुल हक़ाएक़, सफ़ा १२२ व मुस्तदरिक जिल्द ४, सफ़ा ५२० व मिशकात शरीफ़)

आपने यह भी फ़रमाया कि इमाम मेहदी(अ.) का ज़ुहूर आख़िर ज़माने में होगा और हज़रते ईसा(अ.) उनके पीछे नमाज़ पढ़ेंगे। मुलाहेज़ा हो सही बुख़ारी पारा १४ सफ़ा ३६६ व सही मुस्लिम जिल्द २, सफ़ा ६५, सही तिर्मिज़ी सफ़ा २७० व सही अबू दाऊद जिल्द २, सफ़ा २१० व सही इब्ने माजा सफ़ा २०४ व सफ़ा ३०६ व जामए सग़ीर सफ़ा

4186

१३४ व अन्वारूल हक़ाएक़ सफ़ा ६०) आपने यह भी कहा है कि इमाम मेहदी(अ.) मेरे ख़लीफ़ा की हैसियत से ज़हूर करेंगे और " **यख़्तमुद्दीन बेही कमा फ़तेह बना** " जिस तरह मेरे ज़रिये से दीने इस्लाम का आग़ाज़ हुआ उसी तरह उनके ज़रिये से मुहरे एख़्तेताम लगा दी जायेगी। मुलाहेज़ा हो कन्ज़ुल हक़ाएक़ सफ़ा २०६। आपने इसकी भी वज़ाहत फ़रमाई है कि इमाम मेहदी का असल नाम मेरे नाम की तरह मोहम्मद और कुन्नियत मेरी कुन्नियत की तरह " **अबुल क़ासिम** " होगी। वह जब ज़हूर करेंगे तो सारी दुनिया को अदल व इन्साफ़ से उसी तरह पुर कर देंगे, जिस तरह वह उस वक़्त ज़ुल्म व जौर से भरी होगी। मुलाहेज़ा हो, जामए सग़ीर, सफ़ा १०४ व मुस्तदरिक इमाम हाकिम सफ़ा ४२२ व ४१५) ज़हूर के बाद उनकी फ़ौरन बैअत करनी चाहिये क्योंकि वह ख़ुदा के ख़लीफ़ा होंगे।

(सनन इब्ने माजा उर्दू सफ़ा २६१ तबा किराची, १३७७ हिजरी)

हज़रत इमाम मेहदी(अ.) की विलादत ब सआदत

मुवर्रेख़ीन का इत्तेफ़ाक़ है कि आपकी विलादत बसआदत १५, शाबान, २२५ हिजरी यौमे जुमा बवक़्ते तुलूए फ़जर वाक़े हुई है। जैसा कि दफ़यातुल अयान, रौज़तुल अहबाब, तारीख़ इब्नुल वरदी, नियाबुल मोवद्दता, तारीख़े कामिल, तबरी, कशफ़ुल ग़म्मा, जिला उल अयून, उसूले काफ़ी,, नूरूल अबसार, इरशाद, जामए अब्बासी, आलाम अल वरा और अनवारूल हुसैनिया वग़ैरा) में मौजूद है।

बाज़ उलेमा का कहना है कि विलादत का सन् २५६ हिजरी और माद्दए तारीख़ नूर है। यानी आप शबे बराअत के एख़्तेताम पर बवक़्ते सुबहे सादिक़ आलमे ज़हूर व शहूद में तशरीफ़ लाये हैं।

हज़रत इमाम हसन असकरी(अ.) की फ़ुफी जनाबे हकीमा ख़ातून का बयान है कि एक रोज़ मैं हज़रत इमाम हसन असकरी(अ.) के पास गई तो आपने फ़रमाया कि ऐ फ़ुफी आप आज हमारे ही घर में रहिये, क्योंकि ख़ुदा वन्दे आलम मुझे आज एक वारिस

हाशिया:-

(१) नरजिस एक यमनी बूटी को कहते हैं जिसके फूल की शोअरा आंखों से तशबीह देते हैं। (अल मुंजद सफ़ा ८६५) मुन्तहुल अदब जिल्द ४ सफ़ा २२२७ में है कि यह जुमला दख़ील और मआरब यानी किसी दूसरी ज़बान से लाया गया है। सराह सफ़ा ४२५ और अल मआत सिद्दीक़ हसन सफ़ा ४७ में है कि यह लफ़्ज़ **नरजिस, नरगिस** से मआरब है जो कि फ़ारसी है। रिसाला आजकल लखनऊ के सालनामा १६४७ ई० के सफ़ा ११८ में है कि यह लफ़्ज़ यूनानी नरकोस से मआरब है। जिसे लातीनी में " **नरकसस** " और अंग्रेज़ी में " **नरसेसिस** " कहते हैं।

अता फ़रमायेगा। मैंने कहा यह फ़रज़न्द किसके बतन से होगा। आपने फ़रमाया कि बतने नरजिस से मुतावल्लिद हो गा। जनाबे हकीमा ने कहा! बेटे मैं तो नरजिस में कुछ भी हमल के आसार नहीं पाती, इमाम ने फ़रमाया कि ऐ फुफी नरजिस की मिसाल मादरे मूसा जैसी है। जिस तरह हज़रते मूसा का हमल विलादत के वक़्त से पहले ज़ाहिर नहीं हुआ। उसी तरह मेरे फ़रजन्द का हमल भी बर वक़्त ज़ाहिर होगा। गरज़ कि इमाम के फ़रमाने से उस शब वहीं रही। जब आधी रात गुज़र गई तो मैं उठी और नमाज़े तहज्जुद में मशगूल हो गई, और नरजिस उठ कर नमाज़े तहज्जुद पढ़ने लगी। उसके बाद मेरे दिल में यह ख़याल गुज़रा कि सुबह क़रीब है और इमाम हसन असकरी(अ.) ने जो कहा था वह अभी तक ज़ाहिर नहीं हुआ। इस ख़याल के दिल में आते ही इमाम(अ.) ने अपने हुजरे से आवाज़ दी! ऐ फुफी जल्दी न किजिये, हुज्जते ख़ुदा के ज़हूर का वक़्त बिलकुल क़रीब है। यह सुन कर मैं नरजिस के हुजरे की तरफ़ पलटी, नरजिस मुझे रास्ते ही में मिलीं, मगर उनकी हालत उस वक़्त मुतग़य्यर थी। वह लरज़ा बर अन्दाम थीं और उनका सारा जिस्म कांप रहा था। (अल बशरा, शराह मोअद्दतुल कुरबा सफ़ा १३६)

मैंने यह देखकर उनको अपने सीने से लिपटा लिया और " **सूरए कुल हो अल्लाह, इन्नान ज़लना, व आयतल कुरसी** " पढ़ कर उन पर दम किया। बतने मादर से बच्चे की आवाज़ आने लगी। यानी मैं जो कुछ पढ़ती थीं वह बच्चा भी बतने मादर में वही कुछ पढ़ता था। उसके बाद मैंने देखा कि तमाम हुजरा रौशन व मुनव्वर हो गया। अब जो मैं देखती हूँ तो एक मौलूद मसऊद ज़मीन पर सजदे में पड़ा हुआ है। मैंने बच्चे को उठा लिया। हज़रत इमाम हसन असकरी(अ.) ने अपने हुजरे से आवाज़ दी ऐ फुफी ! मेरे फ़रज़न्दको मेरे पास लाईये। मैं ले गई, आपने उसे अपनी गरदन में बिठा लिया और **ज़बान दर दहाने वै करद** और अपनी ज़बान बच्चे के मूँह में दे दी और कहा कि ऐ फ़रज़न्द, ख़ुदा के हुक्म से बात करो।, बच्चे ने इस आयत " **बिस्मिल्लाह हिर रहमानिर रहीम व नर यदान नमन अल्ल लज़ीना असतज़अफ़रा फिल अर्ज़ व नजअल हुम अल वारीसैन** " की तिलावत की जिसका तरजुमा यह है। कि हम चाहते हैं कि एहसान करें उन लोगों पर जो ज़मीन पर कमज़ोर कर दिये गये हैं और उनको इमाम बनायें और उन्हीं को रूए ज़मीन का वारिस क़रार दें।

इसके बाद कुछ सब्ज़ ताएरों ने आकर हमें घेर लिया, इमाम हसन हसकरी (अ.) ने उनमें से एक ताएर को बुलाया और बच्चे को देते हुये कहा " **ख़ुदह फ़ा हिफ्ज़हू** " इसको ले जाकर इसकी हिफ़ाज़त करो। यहां तक कि ख़ुदा इसके बारे में कोई हुक्म दे। क्योंकि ख़ुदा अपने हुक्म को पूरा करके रहेगा। मैंने इमाम हसन असकरी(अ.) से पूछा कि यह ताएर कौन था और दूसरे ताएर कोन थे ? आपने फ़रमाया कि यह जिब्रईल थे और वह दूसरे फ़रिशतगाने रहमत थे। इसके बाद फ़रमाया कि ऐ फुफी इस फ़रज़न्द को उसकी

माँ के पास ले आओ ताकि उसकी आंखें खुनुक हों और महजून व मग़मूम न हो और यह जान ले कि खुदा का वादा हक़ है। **“ व अकसरहुम ला यालमून ”** लेकिन अकसर लोग इसे नहीं जानते इसके बाद इस मौलूदे मसऊद को उसकी माँ के पास पहुँचा दिया गया।

(शवाहेदुन नबूवत, सफ़ा २१२ तबा लखनऊ, १६०५ ई०)

अल्लामा हायरी लिखते हैं कि विलादत के बाद आपको जिब्रईल परवरिश के लिये उड़ा कर ले गये। (ग़ायतुल मक़सूद जिल्द १, सफ़ा ७५)

किताब शवाहेदुन नबूवत और वफ़यातुल अयान व रौज़तुल अहबाब में है कि जब आप पैदा हुये तो मख़्तून और नाफ़ बुरीदा थे और आपके दाहिने बाज़ू पर यह आयत मन्कूश थी। **“ जाअल हक़ व ज़हक़ा अल बातिल अनल बातिल काना ज़हूक़ा ”** यानी हक़ आया और बातिल मिट गया और बातिल मिटने ही के क़ाबिल था। यह कुदरती तौर पर बहरे मुताक़ारिब के दो मिसरे बन गये हैं। हज़रत नसीम अमरोहवी ने इस पर क्या खूब तज़मीन की है वह लिखते हैं।

चशमो, चराग़ दीदए नरजिस ऐने खुदा की आँख का तारा
बदरे कमाल, नीमए शाबान चौदहवाँ अख़्तर औज बक़ा का
हामिए मिल्लत माहिए बिदअत कुफ़्र मिटाने ख़ल्क़ में आया
वक़्ते विलादत माशा अल्लाह कुरआन सूरत देख के बोला
जा अल हक़ वल हक़्क़ुल बातिल
अनल बातिल काना ज़हूक़ा

मोहद्दिस देहलवी शेख़ अब्दुल हक़ अपनी किताब मनाक़िबे आइम्मा अतहार में लिखते हैं कि हकीमा ख़ातून जब नरजिस के पास आईं तो देखा कि एक मौलूद पैदा हुआ है। जो मख़तून और मफ़रूग़ मुंह है। यानी जिसका ख़तना किया हुआ है और नहलाने घुलाने के कामों से जो मौलूद के साथ होते हैं बिलकुल मुसतग़नी है। हकीमा ख़ातून बच्चे को इमाम हसन असकरी(अ.) के पास लाईं। इमाम ने बच्चे को लिया और उसकी पुश्ते अक़दस और चश्मे मुबारक पर हाथ फेरा। अपनी ज़बाने मुतहर उनके मूँह में डाली और दाहिने कान में अज़ान और बाएं में अक़ामत कही। यही मज़मून फ़सल अल ख़त्ताब और बेहारूल अनवार में भी है। किताब रौज़तुल अहबाब और नियाबुल मोवद्दता में है कि आपकी विलादत बमुक़ाम सरमन राय **“ सामरह ”** में हुई है।

किताब कशफ़ुल गम्मा सफ़ा १२० में है कि आपकी विलादत छिपाई गई और पूरी सई की गई कि आपकी पेदाईश किसी को मालूम न हो सके। किताब दमए साकेबा जिल्द ३, सफ़ा १६४ में है कि आपकी विलादत इस लिये छिपाई गई कि बादशाहे वक़्त पूरी ताक़त के साथ आपकी तलाश में था। इस किताब के सफ़ा १६२ में है कि इसका मक़सद

यह था कि हज़रते हुज्जत को क़त्ल करके नस्ले रिसालत का ख़ात्मा कर दे।

तारीख़े अबूल फ़िदा में है कि बादशाहे वक़्त मोतज़ बिल्लाह था। तज़किरए ख़वासुल उम्मता में है कि उसी के अहद में इमाम अली नक़ी(अ.) को ज़हर दिया गया था। मोतज़ के बारे में मुवर्रेख़ीन की राय कुछ अच्छी नहीं है। तरजुमा तारीख़ अल खुलफ़ा, अल्लामा सियूती के सफ़ा ३६३ में है कि उसने अपने ख़िलाफ़त में अपने भाई को वली अहदी से माजूल करने के बाद कोड़े लगवाये थे और ता हयात क़ैद में रखा था। अकसर तवारीख़ में है कि बादशाहे वक़्त मोतमिद बिन मुतवक्किल था। जिसने इमाम हसन असकरी(अ.) को ज़हर से शहीद किया। तारीख़े इस्लाम जिल्द १, सफ़ा ६७ में है कि ख़लीफ़ा मोतमिद बिन मुतवक्किल कमज़ोर मतलून मिज़ाज और ऐश पसन्द था। यह अय्याशी और शराब नोशी में बसर करता था। इसी किताब के सफ़ा २६, में है कि मोतमिद हज़रत इमाम हसन असकरी(अ.) को ज़हर से शहीद करने के बाद हज़रत इमाम मेहदी को क़त्ल करने के दरपए हो गया था।

आपका नसब नामा :- आपका पेदरी नसब नामा यह है। मोहम्मद बिन हसन बिन अली बिन मोहम्मद बिन अली इब्ने मूसा इब्ने जाफ़र बिन मोहम्द बिन अली बिन हुसैन बिन अली व फ़ात्मा बिन्ते रसूल अल्लाह(स.) यानी आप फ़रज़न्दे रसूल(स.), दिलबन्दे अली और नूरे नज़र बुतूल(स.) हैं। इमाम अहमद बिन हम्बल का कहना है कि इस सिलसिलए नसब के असमा को अगर किसी मजनून पर दम कर दिया जाय तो उसे यक़ीनन शिफ़ा हासिल होगी। (मसन्द इमाम रज़ा सफ़ा ७) आपका सिलसिलए नसब मां की तरफ़ से हज़रत शमऊन बिन हमून अल सफ़आ वसी हज़रत ईसा तक पहुंचता है।

अल्लामा मजलिसी और **अल्लामा तबरी** लिखते हैं कि आपकी वालेदा जनाब नरजिस ख़ातून थीं। जिनका नाम " **मलीका** " भी था। नरजिस ख़ातून यशूआ की बेटी थीं। जो राम के बादशाह " **क़ैसर** " के फ़रजन्द थे जिनका सिलसिलए नसब वसीए हज़रते ईसा(अ.) जनाब शमऊन तक पहुंचता है। १३, साल की उम्र में क़ैसरे रोम ने चाहा था कि नरजिस का अक़्द अपने भतीजे से कर दे, लेकिन बाज़ क़ुदरती हालात की वजह से वह इस मक़सद में कामयाब न हो सका। बिल आख़िर एक ऐसा वक़्त आ गया कि आलमे अरवाह में हज़रते ईसा(अ.), जनाबे शमऊन हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा(स.) जनाब अमीरल मोमेनीन और फ़ात्मा(स.) बमक़ाम क़सरे क़ैसर जमा हुये, जनाबे सय्यदा ने नरजिस ख़ातून को इस्लाम की तलक़ीन की और आँ हज़रत (स.) बतवस्सुत हज़रत ईसा(अ.) जनाबे शमऊन से इमाम हसन असकरी के लिये नरजिस ख़ातून की ख़्वास्तगारी की, निस्बत की तकमील के बाद हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा(स.) ने एक नूरी मिम्बर पर बैठ कर अक़्द पढ़ा और कमाले मसर्रत के साथ यह महफ़िले निशात बरख़्वास्त हो गई। जिसकी इत्तेला जनाबे नरजिस को ख़्वाब के तौर पर हुई। बिल आख़िर वह वक़्त आया कि जनाबे नरजिस ख़ातून

हज़रत इमाम हसन असकरी(अ.) की ख़िदमत में आ पहुँची और आपके बतने मुबारक से नूरे खुदा का ज़हूर हुआ।

(किताब जला अल अयून, सफ़ा २६८ व ग़ाएतुल मक़सूद सफ़ा १७५)

आपका इस्मे गिरामी :- आपका नामे नामी व इस्मे गिरामी **"मोहम्मद"** और मशहूर लक़ब **" मेहदी "** है। उलेमा का कहना है कि आपका नाम ज़बान पर जारी करने की मुमानिअत है।

अल्लामा मजलिसी इसकी ताईद करते हुये फ़रमाते हैं कि **" हिकमत आन मख़्फ़ी अस्त "** इसकी वजह पोशीदा और ग़ैर मालूम है।(जला अल अयून)

उलेमा का बयान है कि आपका यह नाम खुद हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा(स.) ने रखा था। मुलाहेज़ा हो रौज़तुल अहबाब व नियाबुल मोअद्दता।

मुवर्रिख़े आज़म मिस्टर ज़ाकिर हुसैन तारीख़े इस्लाम जिल्द १, सफ़ा ३१ में लिखते हैं कि आँ हज़रत(स.) ने फ़रमाया कि मेरे बाद बारह ख़लीफ़ा कुरैश से होंगे। आपने फ़रमाया कि आख़िर ज़माने में जब दुनिया ज़ुल्मो जौर से भर जायेगी, तो मेरी औलाद में से मेहदी का ज़हूर होगा जो ज़ुल्मो जौर को दूर करके दुनिया को अदलो इन्साफ़ से भर देगा। शिर्क व कुफ़्र को दुनिया से नाबूद कर देगा। नाम **"मोहम्मद"** और लक़ब **" मेहदी"** होगा। हज़रत ईसा(अ.) आसमान से उतर कर उसकी नुसरत करेंगे और उसके पीछे नमाज़ पढ़ेंगे ओर दज्जाल को क़त्ल करेंगे।

आपकी कुन्नियत :- इसपर उलमाए फ़रीक़ैन का इत्तेफ़ाक़ है कि आपकी कुन्नियत **" अबुल क़ासिम "** और अबू अब्दुल्लाह थी और इस पर भी उलेमा मुत्तफ़िक़ हैं कि अबुल क़ासिम कुन्नियत खुद सरवरे कायनात की तजवीज़ करदा है। मुलाहेज़ा हो! (जामए सग़ीर सफ़ा १०४, तज़किरए ख़वास अल उम्मता, सफ़ा २०४, रौज़तुल शोहदा,सफ़ा ४३६, सवाएके़ मोहर्रेक़ा सफ़ा १३४, शवाहेदुन नबूवत सफ़ा ३१२, कशफ़ुल ग़म्मा सफ़ा १३०, जला अल अयून, सफ़ा २६८)

यह मुसल्लेमात से है कि आँ हज़रत (स.) ने इरशाद फ़रमाया है कि मेहदी का नाम मेरा नाम और उनकी कुन्नियत मेरी कुन्नियत होगी। लेकिन इस रवायत में बाज़ अहले इस्लाम ने यह इज़ाफ़ा किया है कि आँ हज़रत ने यह भी फ़रमाया है कि मेहदी के बाप का नाम मेरे वालिदे मोहतरम का नाम होगा। मगर हमारे रावियों ने इसकी रवायत नहीं की और खुद तिरमिज़ी शरीफ़ में भी **" इस्मे अबीहा इस्मे अबी "** नहीं है। ताहम बक़ौल साहेबुल मनाक़िब अल्लामा कन्जी शाफ़ेई यह कहा जा सकता है कि रवायत में लफ़्ज़ **" अबीहा "** से मुराद अबू अब्दुल्लाह-अल-हुसैन हैं। यानी इससे इस अम्र की तरफ़ इशारा है कि इमाम मेहदी(अ.) हज़रत इमाम हुसैन(अ.) की औलाद से हैं।

आपके अलक़ाब :- आपके अलक़ाब मेहदी,हुज्जत उल्लाह,ख़लफे अलसालेह ,साहेबुल असर व साहेबुल अमर,वलज़मान अलक़ाएम,अलबाक़ी और अलमुन्तज़र हैं। मुलाहेज़ा हो तज़किरए ख़वासुलमता सफ़ा २०४, रौज़तलु शोहदा सफ़ा ४३६ कशफ़ुल ग़म्मा सफ़ा १३१ सवाएक़े मोहर्रेक़ा सफ़ा १२४ मतालेबुल सुवेल सफ़ा २६४, आलाम अल वरा सफ़ा २४ हज़रत दानियाल नबी ने हज़रत इमाम मेहदी (अ.) की विलादत से १४२० साल पहले आप का लक़ब मुन्तज़िर क़रार दिया है। मुलाहेज़ा हो किताब व दानियाल बाब १२ आएत १२। **अल्लामा इब्ने हजर मक्की** अल मुन्तज़िर की शरह करते हुए लिखते हैं कि उन्हें मुन्तज़िर यानी जिसका इन्तेज़ार किया जाए इस लिए कहते हैं कि वह सरदाब में ग़ाएब हो गए हैं और यह मालूम नहीं होता कि कहाँ चले गए। (मतलब यह है कि लोग उनका इन्तेज़ार कर रहें हैं, शेख़ अल ऐराक़ैन अल्लामा शेख अब्दुलरसा तहरीर फरमाते हैं कि आपको मुन्तज़र इसलिए कहते हैं कि आप की ग़ैबत की वजह से आपके मुख़लिस आपका इन्तेज़ार कर रहें हैं। मुलाहेज़ा हो । (अनवारूल हुसैनिया जिल्द २ सफ़ा ५७ तबा बम्बई)

आपका हुलिया मुबारक :-किताब अक्मालुद्दीन में शेख़ सदूक़ तहरीर फरमाते हैं कि सरवरे काएनात (स) का इरशाद है कि इमाम मेहदी, शक्ल व शबाहत ख़ल्क़ व ख़लक़ ख़साएल, अक़वाल व अफ़आल में मेरे मुशाबे होंगे।

आपके हुलिए के मुतालिक़ उलमा ने लिखा है कि आपका रग़ं गन्दुम गून , क़द मियाना है। आपकी पेशानी खुली हुई और आपके अबरू घने और बाहम पेवस्ता हैं, आपकी नाक बारीक और बुलन्द है आपकी आखे बड़ी और आपका चेहरा नेहायत नूरानी है। आपके दाहिने रूखसार पर एक तिल है "कानहू कौकब दर" जो सितारे की मानिन्द चमकता है, आपके दाँत चमकदार खुले हुए हैं आपकी जुल्फें कन्धों तक पड़ी रहती हैं। आपका सीना चौड़ा और आपके कन्धे खुले हुए हैं आपकी पुश्त पर इसी तरह की मुहरे इमामत सब्त है जिस तरह पुश्ते रिसालत माब (स.) पर मुहरे नबूअत सबत थी। (अलाम अल वरा सफ़ा २६५ग़ाएत अल मक़सूद जिल्द १ सफ़ा ६४ नूरूल अबसार सफ़ा १५२)

तीन साल की उमर में हुज्जतुल्लाह होने का दावा

किताब तवारीख़ व सैर से मालूम होता है कि आप की परवारिश का काम जनाबे जिबराईल (अ.) के सिपुर्द था और वही आपकी परवशि व परदाख़ करते थे। ज़ाहिर है कि जो बच्चा विलादत के वक़त कलाम कर चुका हो और जिसकी परवरिश जिबराईल जैसे मुकर्रब फरिशते के सिपुर्दहो वह यक़ीनन दुनियाँ में चन्द दिन गुज़ारने के बाद बहरे सूरत इस सलाहियत का मालिक हो सकता है वह अपनी ज़बान से हुज्जतुल्लाह होने का दावा कर सके ।

अल्लामा अरबली लिखते हैं अहमद इब्ने इसहाक़ और साद अल अशकरी एक दिन हज़रत इमाम हसन असकरी (अ.) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और उन्होंने ख़्याल किया कि आज इमाम (अ.) से यह दरयाफ़्त करेंगे कि आप के हुज्जतुल्लाह फी अर्ज़ कौन होगा जब सामना हुआ तो इमाम हसन असकरी (अ.) ने फ़रमाया कि ऐ अहमद ! तुम जो दिल में ले कर आए हो मैं उसका जवाब तुम्हें देता हूँ, यह फ़रमा कर आप अपने मुक़ाम से उठे और अन्दर जाकर यूँ वापस आए कि आप के कन्धे पर एक नेहायत ख़ूबसूरत बच्चा था, जिसकी उमर तीन साल की थी। आपने फ़रमाया ऐ अहमद! मेरे बाद हुज्जते खुदा यह होगा। इसका नाम मोहम्मद और इसकी कुन्नीयत अबुल क़ासिम है यह ख़िज़र की तरह ज़िन्दा रहेगा और ज़ुलक़रनैन की तरह सारी दुनियाँ पर हुकूमत करेगा। अहमद इब्ने इसहाक़ ने कहा मौला ! कोई ऐसी अलामत बता दीजीए जिससे दिल को इत्मीनान कामिल हो जाए। आपने इमाम मेहदी की तरफ़ मुतावज्जा हो कर फ़रमाया, बेटा इसको तुम जवाब दो। इमाम मेहदी (अ.) ने कमसिनी के बावजूद बज़बाने फ़सीह फ़रमाया-"इन्ना हुज्जतुल्लाह वाना बक़ैतहुलल्लाह" मैं ही खुदा की हुज्जत और हुक्में खुदा से बाक़ी रहने वाला हूँ , एक वह दिन आएगा जिस में मैं दुश्मनाने खुदा से बदला लूँगा, यह सुन कर अहमद खुश व मसरूर व मुतमईन हो गए। (कशफ़ुल ग़म्मा सफ़ा १३८)

पाँच साल की उमर में ख़ासुल ख़ास असहाब से आपकी मुलाक़ात

याक़ूब बिन मनक़ूस व मोहम्मद बिन उसमान उमरी व अबी हाशिम जाफ़री और मूसा बिन जाफ़र बिन वहब बग़दादी का बयान है कि हम हज़रत इमाम हसनअसकरी (अ.) की ख़िदमत में हाजिर हुए और हमने अर्ज़ की मौला ! आपके बाद अमरे इमामत किस के सुपुर्द होगा और कौन हुज्जते खुदा क़रार पाएगा। आपने फ़रमाया कि मेरा फ़रज़न्द मोहम्मद मेरे बाद हुज्जतूल्लाह फ़ी अर्ज़ होगा। हमने अर्ज़ की मौला हमें उनकी ज़्यारत करा दीजीए। आपने फ़रमाया वह पर्दा जो सामने आवेज़्ता है उसे उठाओ। हमने पर्दा उठाया तो उससे एक निहायत खूब सूरत बच्चा जिसकी उमर पाँच साल थी बरामद हुआ, और वह आकर इमाम हसन असकरी (अ.) की आगोश में बैठ गया। इमाम ने फ़रमाया कि यही मेरा फ़रज़न्द मेरे बाद हुज्जतुल्लह होगा। मोहम्मद बिन उसमान का कहना है कि हम इस वक़्त चालीस अफ़राद थे और हम सब ने उनकी ज़्यारत की। इमाम हसन असकरी (अ.) ने आपने फ़रज़न्द इमाम मेहदी को हुक्म दिया कि वह अन्दर चले जाएं और हमसे फ़रमाया शुमा ऊरा नख़्वही दीद ग़ैर अज़ इमरोज़ " कि अब तुम आज के बाद फिर उसे

4193

न देख सकोगे। चुनान्चे ऐसा ही हुआ फिर ग़ैबत शुरू हो गई।

(कशफुल ग़म्मा सफ़ा १३६ व शवाहेदुन नबूअत सफ़ा २१३)

अल्लामा तबरसी किताब आलाम अल वरा के सफ़ा २४३ में तहरीर फ़रमाते हैं कि आइम्मा के नज़दीक मोहम्मद और उसमान उमरी दोनों सुक़ह हैं।

फिर इसी सफ़े में तहरीर फ़रमाते हैं कि अबू हारून का कहना है कि मैंने बचपन में साहेबुज़्ज़मान को देखा है "**कानहू अलक़मर लैलता अलबदर**" इनका चेहरा चौदवीं रात के चाँद की तरह चमकता था।

इमाम मेहदी नबूअत के आईने में :- अल्लामा तबरसी बहवाला हज़रात मासूमीन(अ.) तहरीर फ़रमाते है कि इमाम मेंहदी(अ.) में बहुत से अम्बिया के हालात व कैफ़ियात नज़र आते हैं और जिन वाक़ियात से मुख़तलिफ़ अम्बिया को दो चार होना पड़ा। वह तमाम वाक़ियात आपकी ज़ात सतूदा सफ़ात में दिखाई देते हैं। मिसाल के लिए हज़रत नूह(अ.), हज़रत इब्राहीम(अ.) हज़रत मूसा (अ.) हज़रत ईसा (अ.) हज़रत अय्यूब (अ.) हज़रत यूनुस (अ.) हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा (स.) को ले लीजए और उनके हालात पर गौर कीजए, आपको हज़रत नूह की तवील ज़िन्दगी नसीब होगी हज़रत इब्रहीम की तरह आप की विलादत छिपाई गई और लोगों से किनारा कश हो कर रूपोश होना पड़ा। हज़रत मूसा (अ.) की तरह हुज्जत के ज़मीन से उठ जाने का खौफ ला हक़ हुआ और उन्ही की विलादत की तरह आपकी विलादत भी पोशीदा रखी गई, और उन्हीके मानने वालों की तरह आपके मानने वालों को आपकी ग़ैबत के बाद सताया गया। हज़रत ईसा (अ.) की तरह आपके बारे में लोगों ने इख़्तेलाफ़ किया। हज़रत अयूब (अ.) की तरह तमाम इम्तेहानात के बाद आपकी फर्ज व कुशाइश नसीब होगी। हज़रत युसुफ़ (अ.) की तरह अवाम व ख़वास से आपकी ग़ैबत होगी। हज़रत यूनुस की तरह ग़ैबत के बाद आपका ज़हूर होगा। यानी जिस तरह वह अपनी क़ौम से ग़ाएब हो कर बुढ़ापे के बावजूद नौजवान थे। उसी तरह आपका जब ज़हूर होगा तो आप चालीस साल के जवान होंगे और हज़रत मोहम्द मुस्तफ़ा(स.) की तरह आप साहेबुल सैफ़ होंगे।

(आलाम अल वरा सफ़ा २६४ तबा बम्बई १३१२ हिजरी)

इमाम हसन असकरी (अ.) की शहादत

इमाम मेहदी (अ.) की उमर अभी सिर्फ पाँच साल की हुई थी कि ख़लीफा मोतमिद बिन मुतावकिल अब्बासी ने मुद्दतों क़ैद रखने के बाद इमाम हसन असकरी (अ.) को ज़हर दे दिया। जिसकी वजह से आप बतारीख़ ८, रबीउल अव्वल २६० हिजरी मुताबिक़ ८७३ ब उम्र २८ साल रेहलत फ़रमा गए। " वख़ल मन अलविदा बनहूमोहम्मदन" और आपने औलाद में सिर्फ़ इमाम मेहदी(अ.) को छोड़ा।

(नुरूल अबसार सफ़ा ५३ दमए साकेबा सफ़ा १६१)

अल्लामा शिब्लन्जी लिखते हैं कि जब आपकी शहादत की खबर मशहूर हुई,तो सारे शहर सामरा में हलचल मच गई। फरयादो फ़ुग़ां की आवाज़ बुलन्द हो गईं, सारे शहर में हड़ताल कर दी गई। यानी सारी दुकाने बन्द हो गईं। लोगों ने अपने करोबार छोड़ दिए। तमाम बनी हाशिम हुक्कामे दौलत , मुन्शी काज़ी अरकान अदालत, अयान हुकूमत और आम्म ख़लाएक़ हज़रत के जनाज़े के लिए दौड़ पड़ें, हालत यह थी कि शहर सामरा क़यामत का मन्ज़र पेश कर रहा था। तजहीज़ और नमाज़ से फराग़त के बाद आपको इसी मकान में दफन कर दिया गया जिस में हजरत इमाम अली नक़ी (अ.) मदफ़ून थे ।
(नुरूल अबसार सफ़ा १५२ व तारीख़े कामिल सवाएक़े मोहर्रेक़ा व फ़सूल महमा, जिला अल अयून सफ़ा २६६)

अल्लामा मोहम्मद बाकर तहरीर फ़राते हैं कि इमाम हसन असकरी (अ.) की वफ़ात के बाद नमाज़ जनाज़ा हज़रत इमाम मेहदी (अ.) ने पढ़ाई, मुलाहेज़ा हो,

(दमए साकेबा जिल्द ३ सफ़ा १६२ व जिला अल अयून सफ़ा २६७)

अल्लामा तबरसी लिखते हैं कि नमाज़ के बाद आपको बहुत से लोगों ने देखा और आपके हाथों का बोसा दिया (आलाम अल वरा सफ़ा २४२) अल्लामा इब्ने ताऊस का इरशाद है कि ८, रबीउल अव्वल को इमाम हसन असक़री(अ.) की वफ़ात वाकेए हुई और ९, रबील अव्वल से हज़रत हुज्जत की इमामत का आग़ाज हुआ हम ९, रबीउल अव्वल को जो ख़ुशी मनाते हैं इसकी एक वजह यह भी है।(किताब इक़बाल) अल्लामा मजलिसी लिखते हैं ९, रबीउल अव्वल को उमर बिन साद ब दस्ते मुख़्तार आले मोहम्मद का क़त्ल हुआ। (ज़ाद अल माद सफ़ा ५८५) जो उबैदुल्लाह इब्ने ज़्याद का सिपह सालार था, जिसके क़त्ल के बाद आले मोहम्मद(स.) ने पूरे तौर पर ख़ुशी मनाई।(बेहारूल अनवार मुख़्तार आले मोहम्मद) किताब दमए साकेबा के सफ़ा १६२ में हैं कि हज़रत इमाम हसन असकरी (अ.) ने २५९ में अपनी वालेदा को हज के लिए भेज दिया था,और फ़रमा दिया था कि २६० हिजरी में मेरी शहादत हो जाएगी। इसी सिन में आपने हज़रत इमाम मेहदी को जुमला

तबरूकात दे दिए थे और इस्में आज़म वग़ैरा तालीम कर दिया था। (दमए साकेबा व जिला अल अयून सफ़ा २६८) उन्हीं तबरूकात में हज़रत अली (अ.) का जमा किया हुआ वह कुरान भी था जो तरतीब नुज़ूल पर सरवरे काएनात की ज़िन्दगी में मुरत्तब किया गया था। (तारीख़ अल खुलफ़ा व अतफ़ान) और जैसे हज़रत अली (अ.) ने अपने अहदे ख़िलाफ़त में भी इस लिए रायज न किया था कि इस्लाम में दो कुरआन रवाज पा जाएंगे और इस्लाम में तफ़रेक़ा पड़ जाएगा (अज़ाता अल ख़फ़ा सफ़ा २७३) मेरे नज़दीक इसी सिन में हज़रत नरजिस ख़तून का इन्तेक़ाल हुआ है और इसी सिन में हज़रत ने ग़ैबत इख़्तेयार फ़रमाई है।

हज़रत इमाम मेहदी(अ.) की ग़ैबत और उसकी ज़रूरत

बादशाहे वक़्त ख़लीफ़ा मोतमिद बिन मुतावक्किल अब्बासी जो अपने आबाव अजदाद की तरह ज़ुल्म सितम का ख़ूगर और आले मोहम्मद का जानी दुश्मन था। उसके कानों में मेहदी(अ.) की विलादत की भनक पड़ चुकी थी। उसने हज़रत इमाम हसन असकरी की शहादत के बाद तकफ़ीन व तदफ़ीन से पहले बक़ौल अल्लामा मजलिसी हज़रत के घर पर पुलिस का छापा डलवाया और चाहा कि इमाम मेहदी(अ.) को गिरफ़तार करा ले। लकिन चूंकि वह बहुक्मे खुदा २३ रमज़ानुल मुबारक २५६, हिजरी को सरदाब में जाकर ग़ायब हो चुके थे। जैसा कि शवाहेदुन नबूवत,नूरूल अबसार, दमए साकेबा, रौज़तुस शोहदा,मनाक़िब अल आइम्मा, अनवारूल हुसैनिया वग़ैरा से मुस्तफ़ाद मुस्तबज़ होता है। इसी लिये वह उसे दस्तयाब न हो सके। उसने उसके रद्दे अमल में हज़रत इमाम हसन असकरी(अ.) की तमाम बीबियों को गिरफ़तार करा लिया और हुक्म दिया कि इस अमर की तहक़ीक़ की जाय कि आया कोई उनमें से हामेला तो नहीं है, अगर कोई हामेला हो तो उसका हमल ज़ाया कर दिया जाय। क्योंकि वह हज़रते सरवरे कायनात(स.) की पेशीन गोई से ख़ाएफ़ था कि आख़री ज़माने में मेरा एक फ़रज़न्द जिसका नाम मेहदी होगा। कायनात आलम के इन्केलाब का ज़ामिन होगा, और उसे यह मालूम था कि वह फ़रज़न्दे इमाम हसन असकरी(अ.) की औलाद से ही होगा। लेहाज़ा उसने आपकी तलाश और आपके क़त्ल की पूरी कोशिश की। तारीख़े इस्लाम जिल्द १, सफ़ा ३१ में है कि २६० हिजरी में इमाम हसन असकरी(अ.) की शहादत के बाद जब मोतमिद ख़लीफ़ए अब्बासी ने आपके क़त्ल करने के लिये आदमी भेजे तो आप **(सरदाब)**१ सरमन राय में ग़ायब हो गये। बाज़ अकाबिर उलेमाए अहले सुन्नत भी इस अमर में शियों के हम ज़बान हैं। चुनान्चे मुल्ला जामी ने शवाहेदुन नबूवत में इमाम अब्दुल वहाब शेरानी ने लवाक़ेउल अनवार व अल यूवाक़ेयत वल जवाहर में ओर शेख़ अहमद मुहिउद्दीन इब्ने अरबी ने फ़तूहाते मक्कीया में

496

में और ख़्वाजा पारसा ने फ़सलुल ख़िताब मोहद्दिस देहलवी ने रिसाला आइमए ताहेरीन में और जमालुद्दीन मोहद्दिस ने रौज़तुल अहबाब में, अबू अब्दुल्लाह शामी साहब किफ़ातुल तालिब ने किताब अल तिबयान फ़ी अख़बार साहेबुज़्ज़मान में और सिब्ते इब्ने जौज़ी ने तज़किरए ख़्वास अलमता, और इब्ने सबाग़ नुरूद्दीन अली मालकी ने फ़सूल अल महमा में और कमालुद्दीन इब्ने तलहा शाफ़ई, ने मतालेबुल सुवेल में और शाह वली उल्लाह फ़ज़ल अल मुबीन में और शेख़ सुलैमान हनफ़ी ने नियाबुल मोवद्दता में और बाज़ दीगर उलमा ने भी ऐसा ही लिखा है और जो लोग इन हज़रत के तवील उमर में ताअजुब करके इनकार करते हैं। उनको यह जवाब देते हैं कि खुदा की कुदरत से कुछ बईद नहीं है जिसने आदम को बग़ैर माँ बाप के और ईसा (अ.) बग़ैर बाप के पैदा किया ,तमाम अहले इस्लाम ने हज़रत ख़िज़र (अ.) को अब तक ज़िन्दा माना हुआ है, इदरीस(अ.) बेहिश्त में और हज़रत ईसा (अ.) आसमान पर अब तक ज़िन्दा माने जाते हैं और अगर खुदाए ताला ने आले मोहम्मद (स.) में से एक शख़्स को तुले उमर इनायत किया तो ताअज्जुब क्या है? हालां कि अहले इस्लाम को दज्जाल के मौजूद होने के क़रीब क़यामत ज़हूर करने से इन्कार नहीं है। किताब शवाहेदुन नबूअत सफ़ा ६८ में है कि ख़ानदाने नबूअत के ग्याहरवें इमाम हसन असकरी (अ.) २६० हिजरी में ज़हर से शहीद कर दिए गए थे। उनकी वफ़ात पर इनके साहब ज़ादे मोहम्मद लक़ब व मेहदी शियों के आख़री इमाम हुए।

मोलवी अमीर लिखते हैं कि ख़ानदाने रिसालत के इन इमामों के हालात निहायत र्दद नाक हैं। ज़ालिम मुतावक्किल ने हज़रत इमाम हसन असकरी (अ.) के वालिदे माजिद इमाम अली नक़ी को मदीने से सामरा ,पकड़ बुलाया था और वहाँ उनकी वफ़ात तक उनको नज़र बन्द रखा था। फिर ज़हर से हलाक कर दिया था इसी तरह मुतावक्किल

---

(१) यह सरदाब मक़ाम सरमन राय में वाके है जिसे असल में सामेरा कहते हैं। सामरा की आबादी बहुत ही क़दीमी है। और दुनियाँ के क़दीम तरीन शहरो मे से एक शहर हैं इसे साम बिन नूह ने आबाद किया था और इसी को दरूल सलतनत भी बनाया था, इसकी आबादी सात फरसख़ लम्बी थी, इसने इसे निहायत खूबसूरत शहर बना दिया था। इसीलिए इसका नाम सरमन राए ,रख दिया था यानी वह शहर जिसे जो भी देखे खुश हो जाए, असकरी इसी का एक मोहल्ला है जिसमें इमाम अली नक़ी (अ.)नज़र बन्द थे बाद में उन्होनें दलील बिन याकूब नसरानी से एक मकान ख़रीद लिया था जिसमें अब भी आपका मज़ार मुक़द्दस वाक़े है।

सामरा में हमेंशा ग़ैर शिया आबादी रही इसी लिए अब तक वहाँ शिया आबाद नहीं हैं वहाँ के जुमला खुद्दाम भी ग़ैर शिया हैं

हज़रत हुज्जत (अ.) के ग़ाएब होने का सरदाब वहीं एक मसजिद के किनारे वाके है जो हज़रत इमाम अली नक़ी (अ.) और हज़रत इमाम हसन असकरी (अ.) के मज़ार अक़दस के क़रीब है।

के जानशीनों ने बदगुमानी और हसद के मारे हज़रत इमाम हसन असकरी(अ.) को कै़द रखा था। उनके कमसिन साहब ज़ादे मोहम्मद अल मेहदी जिनकी उम्र अपने वालिद की वफ़ात के वक़्त पांच साल की थी। ख़ौफ़ के मारे अपने घर के क़रीब ही एक ग़ार में छुप गये और ग़ायब हो गये। इब्ने बतूता ने अपने सफ़र नामे में लिखा है कि जिस ग़ार में इमाम मेहदी(अ.) की ग़ैबत बताई जाती है उसे मैंने अपनी आँखों से देखा है।(नुरूल अबसार, जिल्द १, सफ़ा १५२) अल्लामा हजरे मक्की का इरशाद है कि इमाम मेहदी(अ.) सरदाब में ग़ायब हुये थे। " **फ़ल्म यारफ़ ईं ज़हब** " फिर मालूम नहीं कहां तशरीफ़ ले गये।

(सवाएक़े मोहर्रेक़ा, सफ़ा १२४)

ग़ैबते इमाम मेहदी(अ.) पर उलेमाए अहले सुन्नत का इजमा

जमहूर उलेमाए इस्लाम इमाम मेहदी(अ.) के वुजूद को तसलीम करते हैं। इसमे शिया और सुन्नी का सवाल नहीं। हर फ़िरक़े के उलेमा यह मानते हैं कि आप पैदा हो चुके है और मोजूद हैं। हम उलेमाए अहले सुन्नत के अस्मा मय उनकी किताबों और मुख़्तसर अक़वाल के दर्ज करते हैं।

(१) **अल्लामा मोहम्मद बिन तल्हा शाफ़ेई** किताब मतालेबुल सुवेल में फ़रमाते हैं कि इमाम मेहदी(अ.) सामरा में पेदा हुये हैं जो बग़दाद से २० फ़रसख़ के फ़ासले पर है।

(२) **अल्लामा अली बिन मोहम्मद बिन सबाग़ मालकी** की किताब फ़ुसूल अल महमा में है कि इमाम हसन असकरी(अ.) गयाहरवें इमाम ने अपने बेटे इमाम मेहदी (अ.) की विलादत बादशाहे वक़्त के ख़ौफ़ से पोशीदा रखी।

(३) **अल्लामा शेख़ अब्दुल्लाह बिन अहमद ख़साब** की किताब तवारीख़ मवालीद में है कि इमाम मेहदी (अ.) का नाम मोहम्मद और कुन्नियत अबुल क़ासिम है। आप आख़री ज़माने में ज़हूर व खुरूज करेंगे।

(४) **अल्लामा मुहिउद्दीन इब्ने अरबी हम्बली** की किताब फ़तूहात में है कि जब दुनिया ज़ुल्म जौर से भर जायेगी तो इमाम मेहदी(अ.) ज़हूर करेंगे।

(५) **अल्लामा शेख़ अब्दुल वहाब शेरानी** की किताब अल यूवाक़ियत वल जवाहर में है कि इमाम मेहदी(अ.) १५, शाबान २५५, हिजरी में पैदा हुये हैं। अब इस वक़्त यानी ६५८, हिजरी में उनकी उम्र सात सौ छै (७०६, साल) की है। यही मज़मून **अल्लामा बदख़शानी** की किताब मिफ़्ताह अल नजाता में भी है।

(६) **अल्लामा अब्दुल रहमान जामी हनफ़ी** की किताब शवाहेदुन नबूवत में है कि इमाम मेहदी (अ.) सामरा में पैदा हुये हैं और उनकी विलादत पोशीदा रखी गई है। वह

इमाम हसन असकरी(अ.) की मौजूदगी में ग़ायब हो गये हैं। इसी किताब में विलादत का पूरा वाक़ेया हकीमा ख़ातून की ज़बानी लिखा है।

(७) **अल्लामा शेख़ अब्दुल हक़ मोहद्दस देहलवी** की किताब मनाक़ेबुल आइम्मा में है कि इमाम मेहदी(अ.)१५, शाबान २५५, हिजरी में पैदा हुये हैं। इमाम हसन असकरी (अ.) ने उनके कान में अज़ान व अक़ामत कही है और थोड़े अर्से के बाद आपने फ़रमाया कि वह उस मालिक के सुपुर्द हो गये, जिनके पास हज़रते मूसा(अ.) बचपने में थे।

(८) **अल्लामा जमाल उद्दीन मोहद्दिस** की किताब रौज़तुल अहबाब में है, कि हज़रत इमाम मेहदी (अ.) १५, शाबान २५५, हिजरी में पैदा हुये और ज़मानए मोतमिद अब्बासी में बमक़ाम " **सरमन राय** " अज़ नज़र बराया ग़ायब शुद। लोगों की नज़र से सरदाब में ग़ायब हो गये।

(९) **अल्लामा अब्दुल रहमान सूफ़ी** की किताब मराएतुल इसरार में है कि आप बतने नरजिस से १५, शाबान, २५५, हिजरी में पैदा हुये।

(१०) **अल्लामा शहाबुद्दीन दौलताबादी** साहेबे तफ़सीर बहरे मवाज की किताब हिदाएतुल सआदा में है कि ख़िलाफ़ते रसूल(स.) हज़रत अली (अ.) के वासते से इमाम मेहदी तक पहुँची, आप ही आखरी इमाम हैं।

(११) **अल्लामा नसर बिन अली जहमनी** की किताब मवालिदे आइम्मा में है कि इमाम मेहदी(अ.) नरजिस ख़ातून के बतन से पैदा हुये हैं।

(१२) **अल्लामा मुल्ला अली क़ारी** की किताब मरक़ात शरह मिशक़ात में है कि इमाम मेहदी(अ.) बारहवें इमाम हैं। शियों का यह कहना ग़ल्त है कि अहले सुन्नत अहले बैत के दुश्मन हैं।

(१३) **अल्लामा जवाद साबती** की किताब बराहीन साबतीया में है कि इमाम मेहदी(अ.) औलादे फ़ात्मा(स.) से हैं। वह बक़ौले २५५, हिजरी में पैदा हो कर एक अर्से के बाद ग़ायब हो गये हैं।

(१४) **अल्लामा शेख़ हसन ईराक़ी** जिनकी तारीफ़ किताब अल वाक़ेआ में है कि उन्होंने इमाम मेहदी(अ.) से मुलाक़ात की है।

(१५) **अल्लामा अली ख़वास** जिनके मुताअल्लिक़ शेरानी ने अल यूवाक़ियत में लिखा है कि उन्होंने इमाम मेहदी(अ.) से मुलाक़ात की है।

(१६) **अल्लामा शेख़ सईद उद्दीन** का कहना है कि इमाम मेहदी(अ.) पैदा हो कर ग़ायब हो गये हैं। " **दौरे आख़िर ज़माना आशकार गरदद** " और वह आख़िर ज़माने में ज़ाहिर होंगे। जैसा कि किताब मस्जिदे अक़सा में है।

(१७) **अल्लामा अली अकबर इब्ने सआद अल्लाह** की किताब मकाशिफ़ात में है कि आप

पैदा हो कर कुतुब हो गये हैं।

(१८) **अल्लामा अहमद बिला ज़री** अहादीस में लिखते हैं कि आप पैदा होकर महजूब हो गये हैं।

(१९) **अल्लामा शाह वली अल्लाह मोहद्दिस देहलवी** के रिसाले नवादर में है, मोहम्मद बिन हसन(अल मेहदी) के बारे में शियों का कहना दुरूस्त है।

(२०) **अल्लामा शम्सुद्दीन जज़री** ने बहवाला मुसलसेलात बिलाज़री ने एतेराफ़ किया है।

(२१) **अल्लामा अलाउद्दौला अहमद समनानी** साहब तारीख़े ख़मीस दर अहवाली अल नफ़स नफ़ीस अपनी किताब में लिखा है कि इमाम मेहदी(अ.) ग़ैबत के बाद एबदाल फिर कुतुब हो गये।

(२३) **अल्लामा नूर अल्लाह** बहवाला किताब बयानुल एहसान लिखते हैं कि इमाम मेहदी तकमीले सिफ़ात के लिये ग़ायब हुये हैं।

(२४) **अल्लामा ज़हबी** अपनी तारीख़े इस्लाम में लिखते हैं कि इमाम मेहदी(अ.) २५६ हिजरी में पैदा हो कर मादूम हो गये हैं।

(२५) **अल्लामा इब्ने हजर मक्की** की किताब सवाएके मोहर्रेक़ा में है कि इमाम मेहदी अल मुन्तज़र पैदा हो कर सरदाब में ग़ायब हो गये हैं।

(२६) **अल्लामा अस्र** की किताब दफ़यातुल अयान की जिल्द २, सफ़ा ४५१ में है कि इमाम मेहदी की उम्र इमाम हसन असकरी(अ.) की वफ़ात के वक़्त ५, साल की थी। वह सरदाब में ग़ायब हो कर फिर वापस नहीं हुये।

(२७) **अल्लामा सिब्ते इब्ने जौज़ी** की किताब तज़किरए ख़वास अल आम्मा के सफ़ा २०४ में है कि आपका लक़ब अल क़ाएम, अल मुन्तज़िर, अल बाक़ी है।

(२८) **अल्लामा अबीद उल्लाह अमरतसरी** की किताब अर हज्जुल मतालिब के सफ़ा ३७७ में बहवाला किताबुल बयान फ़ी अख़बार साहेबुज़्ज़मान मरकूम है कि आप उसी तरह ज़िन्दा व बाक़ी हैं जिस तरह ईसा(अ.), ख़िज़्र(अ.), इलयास(अ.) वग़ैरा ज़िन्दा और बाक़ी हैं।

(२९) **अल्लामा शेख़ सुलैमान तमन दोज़ी** ने किताब नियाबुल मोवद्दता सफ़ा ३९३ में।

(३०) **अल्लामा इब्ने ख़शाब** ने किताब मवालीद अहले बैत में।

(३१) **अल्लामा शिब्लन्जी** ने नूरूल अबसार के सफ़ा १५२ तबा मिस्र १२२२ हिजरी में बहवाला किताबुल बयान लिखा है कि इमाम मेहदी(अ.) ग़ायब होने के बाद अब तक ज़िन्दा और बाक़ी हैं और उनके वुजूद के बाक़ी और ज़िन्दा होने में कोई शुबहा नहीं। वह इसी तरह ज़िन्दा और बाक़ी हैं जिस तरह हज़रते ईसा (अ.), हज़रते ख़िज़्र (अ.) और हज़रत इलयास(अ.) वग़ैरा ज़िन्दा और बाक़ी हैं। उन अल्लाह वालों के अलावा, दज्जाल, इबलीस भी ज़िन्दा हैं। जैसा कि क़ुरआने मजीद, सही मुस्लिम,

तारीख़े तबरी वग़ेरा से साबित है। लेहाज़ा " **ला इमतना फ़ी बक़ाया** " उनके बाक़ी और ज़िन्दा होने में कोई शक व शुबहे की गुन्जाईश नहीं है।

(३२) **अल्लामा चलपी** किताब कशफ़ुल ज़ुनून के सफ़ा २०८ में लिखते हैं कि किताब अल बयान फ़ी अख़बार साहेबुज़्ज़मान अबू अब्दुल्लाह मोहम्मद बिन यूसुफ़ कंजी शाफ़ेई की तसनीफ़ है। अल्लामा फ़ाज़िल रोज़ बहान की अबताल अल बातिल में है कि इमाम मेहदी(अ.) क़ाएम व मुन्तज़िर हैं। वह आफ़ताब की मानिन्द ज़ाहिर होकर दुनिया की तारीकी, कुफ़्र ज़ाएल कर देंगे।

(३३) **अल्लामा अली मुत्तक़ी** की किताब कंजुल आमाल की जिल्द ७, के सफ़ा ११४ में है कि आप ग़ायब हैं ज़ुहूर करके ६, साल हुकूमत करेंगे।

(३४) **अल्लामा जलाल उद्दीन सियूती** की किताब दुर्रे मन्शूर जिल्द ३, सफ़ा २३ में है कि इमाम मेहदी(अ.) के ज़हूर के बाद हज़रते ईसा(अ.) नाज़िल होंगे वग़ैरा, वग़ैरा।

इमाम मेहदी(अ.) की ग़ैबत और आपका वुजूद व ज़ुहूर कुरआने मजीद की रौशनी में

हज़रत इमाम मेहदी(अ.) की ग़ैबत और आपके मौजूद होने और आपके तूले उम्र नीज़ आपके ज़ुहूर व शहूद और ज़ुहूर के बाद सारे दीन को एक कर देने के मुताअल्लिक़ ६४ आयतें क़ुरआन मजीद में मौजूद हैं। जिनमें से अकसर दोनों फ़रीक़ ने तसलीम किया है। इसी तरह बेशुमार ख़ुसूसी अहादीस भी हैं। तफ़सील के लिये मुलाहेज़ा हो। ग़ाएतुल मक़सूद व ग़ाएतुल मराम, अल्लामा हाशिम बहरानी व नियाबतुल मोवद्दता मैं इस मक़ाम पर सिर्फ़ दो तीन आयतें लिखता हूँ। आपकी ग़ैबत के मुताअल्लिक़।

" **आलम्मा ज़ालेकल किताबो ला रैबा फ़ीहे हुदल लिल मुत्तक़ीन अल लज़ीना योमेनूना बिल ग़ैबे** " है।

हज़रत मोहम्मद मुसतफ़ा(स.) फ़रमाते है कि ईमान बिल ग़ैब से इमाम मेहदी (अ.) की ग़ैबत मुराद है। नेक बख़्त हैं वह लोग जो उनकी ग़ैबत पर सब्र करें और मुबारक बाद के क़ाबिल हैं। वह समझ दार लोग जो ग़ैबत में भी उनकी मोहब्बत पर क़ाएम रहेंगे। (नेयाबुल मोवद्दता सफ़ा ३७०, तबा बम्बई) आपके मौजूद और बाक़ी होने के मुताअल्लिक़ " **जालहा कलमता बाकियता फ़ी अक़बा** " **है।** इब्राहीम की नस्ल में कलमा बाक़िया को क़रार दिया है जो बाक़ी और ज़िन्दा रहेगा। इस कलमए बाक़िया से इमाम मेहदी(अ.) का बाक़ी रहना मुराद है और वही आले मोहम्मद(स.) में बाक़ी हैं। (तफ़सीरे हुसैनी अल्लामा हुसैन वाएज़ काशफ़ी, सफ़ा, २२६) नम्बर ३, आपके ज़हूर और ग़लबे के मुताअल्लिक़

"युन ज़हरा अल्ल दीन कुल्लाह" जब इमाम मेहदी ब हुक्मे खुदा ज़हूर फ़रमाएंगे तो तमाम दीनों पर ग़लबा हासिल कर लेंगे। यानी दुनिया में सिवा एक दीने इस्लाम के कोई और दीन न होगा। (नूरूल अबसार, सफ़ा १५३, तबा मिस्र)

इमाम मेहदी(अ.) का ज़िक्र कुतुबे आसमानी में

हज़रत दाऊद की **ज़बूर** की आयत ४, मरमूज़ ६७ में है कि आख़री ज़माने में जो इन्साफ़ का मुजस्सेमा इन्सान आयेगा, उसके सर पर अब्र साया फ़िगन होगा। किताब सफ़याए पैग़म्बर के फ़सल ३, आयत ६, में है। आख़री जमाने में तमाम दुनिया मोवहिद हो जायेगी। किताब ज़बूर मरमूज़ १२० में है, जो आख़ेरूज़्ज़मान आयेगा उसपर आफ़ताब असर अन्दाज़ न होगा। सहीफ़ए शैया पैग़म्बर के फ़सल ११, में है कि जब नूरे खुदाज़हूर करेगा तो अदलो इन्साफ़ का डन्का बजेगा। शेर और बकरी एक जगह रहेंगे। चीता और बज़ग़ाला एक साथ चरेंगे। शेर और गौसाला एक साथ रहेंगे, गोसाला और मुर्ग़ एक साथ होंगे। शेर और गाय में दोस्ती होगी। तिफ़ले शीर ख़्वार सांप के बिल में हाथ डाले गा और वह काटेगा नहीं। फिर इसी सफ़हे के फ़सल २७, में है कि यह नूरे खुदा जब ज़ाहिर होगा तो तलवार के ज़रिये तमाम दुश्मनों से बदला लेगा। सहीफ़ए तनजास हरफ़े अलिफ़ में है कि ज़हूर के बाद सारी दुनिया के बुत मिटा दिये जायेंगे। ज़ालिम और मुनाफ़िक़ ख़त्म कर दिये जायेंगे। यह ज़हूर करने वाला कनीज़े खुदा **(नरजिस)** का बेटा होगा।

तौरैत के सफ़रे अम्बिया में है कि मेहदी(अ.) ज़हूर करेंगे। हज़रत ईसा(अ.) आसमान से उतरेंगे। दज्जाल को क़त्ल करेंगे। इन्जील में है कि मेहदी और ईसा(अ.) दज्जाल और शैतान को क़त्ल करेंगे। इसी तरह मुकम्मल वाक़िया जिसमें शहादते इमाम हुसैन(अ.) और ज़हूरे मेहदी(अ.) का इशारा हैं इनजील किताब दानियाल बाब १२, फ़सल ६, आयत २४ रोयाए २, में मौजूद है।

(किताब अल वसाएल, सफ़ा, १२६ तबा बम्बई, १३३६, हिजरी)

इमाम मेहदी(अ.) की ग़ैबत की वजह :- मज़कूरा बाला तहरीरों से उलेमाए इस्लाम का एतेराफ़ साबित हो चुका यानी वाज़े हो गया कि इमाम मेहदी(अ.) के मुताअल्लिक़ जो अक़ाएद अहले तशी के हैं वही मुन्सिफ़ मिज़ाज और ग़ैर मुताअस्सिब अहले तसन्नुन के उलेमा के भी है और मक़सदे असल की ताईद क़ुरआन की आयतों ने भी कर दी। अब रही ग़ैबते इमाम मेहदी(अ.) की ज़रूरत उसके मुताअल्लिक़ अर्ज़ है कि, (१) ख़ल्लाक़े आलम ने हिदायते ख़ल्क़ के लिये एक लाख चौबीस हज़ार पैग़म्बर और कसीर तादाद में उनके औसिया भेजे। पैग़म्बरों में से(१,२३,९९९) अम्बिया के बाद चूंकि हुज़ूर

रसूले करीम(स.) तशरीफ़ लाये थे। लेहाज़ा उनके जुमला सिफात व कमालात व मोजेज़ात हज़रत मोहम्मद मुस्तफा (स.) में जमा कर दिए गए थे और आप को खुदा ने तमाम अम्बिया के सिफात का जलवा बरदार बना दियाबल्कि खुद अपनी ज़ातका मज़हर क़रार दिया था और चुंकि आपको भी इस दुनियाए फानी से ज़ाहिरी तौर पर जाना था। इसलिए आपने अपनी ज़िन्दगी ही में हज़रत अली(अ.) को हर क़िस्म के कमालात से भर पूर कर दिया था। हज़रत अली(अ.) अपने ज़ाती कमालात के अलावा नबवी कमालात से भी मुम्ताज़ हो गए थे। सरवरे काएनात के बाद काएनाते आलम में सिर्फ़ अली की हस्ती थी जो कमालाते अम्बिया की हामिल थी आपके बाद से यह कमालात अवसाफ़ में मुन्तिक़िल होते हुए इमाम मेहदी तक पहुँचे। बादशाहे वक़्त इमाम मेहदी को क़तल करना चाहता था। अगर वह क़तल हो जाते तो दुनियां से अम्बिया व औसिया का नाम व निशान मिट जाता और सब की याद गार बयक ज़र्ब शम्शीर ख़त्म हो जाती और चुँकि उन्हें अम्बिया के ज़रिए से खुदा वन्दे आलम मुताअरिफ़ हुआ था। लेहाज़ा उसका भी ज़िक्र ख़त्म हो जाता। इसलिए ज़रूरी था कि ऐसी हस्ती को महफ़ूज़ रखा जाए जो जुम्ला अम्बिया और अवसिाया की यादगार और तमाम के कमालात की मज़हर हो (२) खुदा वन्दे आलम ने कुरान मजीद में इरशाद फरमाया"वजालाहाकमातह बाक़ीयता फी अक़बे"इब्राहीम की नस्ल में कलमा बाक़ीहा क़रार दे दिया है। नस्ल इब्राहीम दो फरज़न्दो से चली है एक इसहाक़ और दूसरे इस्माईल इस्हाक़ की नस्ल से खुदावन्दे आलम जनाब ईसा (अ.) को जिन्दा व बाक़ी क़रार दे कर आसमान पर महफ़ूज़ कर चुका था। अब यह मुक़तज़ाए इन्साफ ज़रूरत थी कि नस्ले इस्माईल से भी किसी एक को बाक़ी रखे और वह भीज़मीन पर क्यों कर आसमान पर एक बाक़ी मौजूद था, लेहाज़ा इमाम मेहदी को जो नस्ल इस्माईल से हैं ज़मीन पर जिन्दा और बाक़ी रखा और उन्हें भी इसी तरह दुश्मन के शर से महफ़ूज़ कर दिया। जिस तरह हज़रत ईसा (अ.) को महफ़ूज़ किया था। (३) यह मुसल्लेमात इस्लामी से है कि ज़मीन हुज्जते खुदा और इमामें ज़माना से खाली नहीं रह सकती (उसूले काफ़ी १०३ तबा नवल किशोर) चुँकि हुज्जते खुदा उस वक़्त इमाम मेहदी (अ.) के सिवा कोई न था, उन्हें दुश्मन क़तल कर देने पर तुले हुए थे इसलिए उन्हें महफ़ूज़ व मस्तूर कर दिया गया। हदीस में है कि हुज्जते खुदा की वजह से बारिश होती है और उन्हीं के ज़रिए से रोज़ी तक़सीम की जाती है(बेहार) (४) यह मुसल्लम है कि हज़रत इमाम मेहदी जुमला अम्बिया के मज़हर थे। इसलिए ज़रूरत थी कि उन्हीं की तरह उनकी ग़ैबत भी होती। यानी जिस तरह बादशाहे वक़्त के मज़ालिम की वजह से हज़रत नूह(अ.) हज़रत इब्राहीम(अ.) हज़रत मूसा(अ.) हज़रत ईसा(अ.) और हज़रत मोहम्मद मुस्तफा(स.) आपने अहदे हयात में मुनासिब मुद्दत तक ग़ाएब रह चुके थे। इसी तरह यह भी ग़ाएब रहते। (५) क़यामत का आना मुसल्लम है और इस वाक़ेए क़यामत में इमाम मेहदी का ज़िक्र बताता है कि आपकी ग़ैबत मस्लहते

ख़ुदा वन्दे आलम की बिना पर हुई है (६) सुरए "इन्ना अन ज़लनाहो" से मालूम होता है कि नुजूले मलाएक शबे क़दर में होता रहता है यह ज़ाहिर है कि नुजूले मलाएक अम्बिया व औसिया पर ही हुआ करता है। इमाम मेंहदी को इस लिए मौजूद और बाक़ी रखा गया है ताकि नजूले मलाएक की मरकज़ी ग़रज पूरी हो सके, और शबे क़दर में उन्हीं पर नुजूले मलाएक हो सके। हदीस में है कि शबे क़दर में साल भर की रोज़ी वग़ैरह इमाम मेहदी तक पहुँचा दी जाती है और वही उसे तक़सीम करते रहते हैं(७) हकीम का फेल हिकमत से ख़ली नहीं होता। यह दूसरी बात है कि आम लोग इस हिकमत व मसलेहत से वाक़िफ़ न हों। ग़ैबते इमाम मेहदी(अ.) उसी तरह मसलेहत व हिकमते ख़ुदा वन्दी की बिना पर अमल में आई है। जिस तरह तवाफ़े काबा, रमी जमरात वग़ैरह है, जिसकी अस्ल मसलेहत ख़ुदा वन्दे आलम को ही मालूम है (८) इमाम जाफर सादिक़ (अ.) का फ़रमाना है कि इमाम मेहदी को इस लिए ग़ाएब किया जाएगा ताकि ख़ुदा वन्दे आलम अपनी सारी मख़लूक़ात का इम्तेहान करके यह जाचें कि नेक बन्दे कौन हैं और बातिल परस्त कौन लोग हैं(इक्मालुद्दीन) (९) चुँकि आपको अपनी जान का ख़ौफ़ था और यह तय शुदा है कि "मन ख़फ अली नफ़सही एहसताज अली अलसत्ता" कि जिसे अपने नफ़स और अपनी जान का ख़ौफ़ हो वह पोशीदा होने को लाज़मी मानता है।(अलमुतर्ज़ा) (१०) आपकी ग़ैबत इसलिए वाक़ेए हुई है कि ख़ुदा वन्दे आलम एक वक़त मोअय्यन में आले मोहम्मद (स.) पर जो मज़ालिम किए गए हैं। इनका बदला इमाम मेंहदी के ज़रिए से लेगा यानी आप अहदे अव्वल से लेकर बनी उमय्या और बनी अब्बास के मज़ालिमों से मुकम्मिल बदला लेंगे। (कमालुद्दीन)

ग़ैबते इमाम मेहदी जफ़र जामए की रौशनी में

अल्लामा शेख़ कुन्दूज़ी बलख़ी हनफी रक़मतराज़ हैं कि सुदीर सैरफ़ी का बयान है कि हम और मुफज़ल बिन उमर , अबू बसीर,अमान बिन तग़लब एक दिन सादिक़ आले माहम्मद (स.) की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो देखा कि आप ज़मीन पर बैठे हुए रो रहे हैं, और कहते है कि ऐ मोहम्मद ! तुम्हारी ग़ैबत की ख़बर ने मेरा दिल बेचैन कर दिया है" मैंने अर्ज़ की , हुज़ूर ख़ुदा आपकी आँखो को कभी न रूलाए, बात क्या है, किस लिए हुज़ूर गिरया कुना हैं। फ़रमाया ऐ सुदीर ! मैंने आज किताब " **जाफ़र जामे** " मैं बवक़्ते सुबह इमाम मेहदी की ग़ैबत का मुताला किया है, ऐ सुदीर ! यह वह किताब है जिसमें " **आमा माकाना वमायकून** " का इन्दराज है और जो कुछ क़यामत तक होने वाला है सब इसमें लिखा हुआ है। ऐ सुदीर! मैंने इस किताब में यह देखा है कि हमारी नस्ल से इमाम मेहदी होगें। फिर वह ग़ाएब हो जाएगें और उनकी ग़ैबत नीज़ उमर बहुत तवील होगी। उनकी ग़ैबत के ज़माने में मोमनीन मसाएब में मुबतिला होगें और उनके इम्तेहानात होते रहेंगे।

और ग़ैबत में ताख़ीर की वजह से उनके दिलों में शकूक पैदा होते होंगे फिर फरमाया! ऐ सुदीर ! सुनो इनकी विलादत हज़रत मूसा की विलादत की तरह होगी । और उनकी ग़ैबत ईसा (अ.) की मानिन्द होगी और उनके ज़हूर का हाल हज़रत नूह (अ.) के मानिन्द होगा और उनकी उमर हज़रत ख़िजर की उमर जैसी होगी (नेयाबुल मोवद्दत) इस हदीस की मुख़तसर शरह यह है कि :-

(१) तारीख़ में है कि जब फिरऔन को मालूम हुआ कि मेरी सलतनत का ज़वाल एक मौलूद बनी इस्राईल के ज़रिए होगा । तो उसने हुक्म जारी कर दिया कि मुल्क में कोई औरत हामेला न रहने पाए और कोई बच्चा बाक़ी न रखा जाए। चुनान्चे इसी सिलसिले में ४० हज़ार बच्चे ज़ाया किए गए, लेकिन खुदा ने हज़रत मूसा (अ.) को फ़िरऔन की तमाम तरकीबो के बावजूद पैदा किया, बाक़ी रखा और उन्हीं के हाथों से उसकी सलतनत का तख़ता उलट दिया। इसी तरह इमाम मेहदी के लिए हुआ कि तमाम बनी उमय्या और बनी अब्बास की सई बलीग़ के बावजूद आपका बतन नरजिस ख़ातून से पैदा हुए और कोई आपको देख तक न सका।

(२) **हज़रत ईसा** (अ.) के बारे में तमाम यहूदी और नसरानी मुत्तफिक़ हैं कि आपको सूली दे दी गई और आप क़त्ल किए जा चुके , लेकिन खुदा वन्दे आलम ने उसकी रद फ़रमादी और कह दिया कि वह न क़त्ल हुए हैं और न उसको सूली दी गई है। यानी खुदा वन्दे आलम ने आपने पास बुला लिया और वह आसमान पर अमन व अमान खुदा में हैं। इसी' तरह हज़रत इमाम मेहदी (अ.) के बारे में भी लोगों का कहना है कि पैदा ही नहीं हुए। हालां कि वह पैदा होकर हज़रत ईसा (अ.) की तरह ग़ाएब हो चुके हैं।

(३) **हज़रत नूह**(अ.) ने लोगों की नाफ़रमानी से आजिज़ आकर खुदा के अज़ाब के नज़ूल की दरख़्वास्त की। खुदा वन्दे आलम ने फरमाया कि पहले एक दरख़्त लगाओ वह फल लाएगा। तब अज़ाब करूँगा। इसी तरह नूह (अ.) ने सात मरतबा किया बिल आख़िर इस ताख़ीर की वजह से आपके तमाम दोस्त व मवाली और इमानदार काफ़िर हो गए और सिर्फ़ ७० मोमिन रह गए। इसी तरह ग़ैबत इमाम मेहदी और ताख़ीर ज़हूर इसी तरह ग़ैबते इमाम मेहदी और ताख़ीरे ज़हूर की वजह से हो रहा है लोग फ़रामीन पैगम्बर और आइम्मा(अ.) की वजह से हो रहा है। लोग फ़रामीने पैग़म्बर और आइम्मा (अ.)की तकज़ीब कर रहे हैं और अवाम मुसलिम बिला वजह ऐतिराज़ात करके अपनी आक़बत ख़राब कर रहे हैं और शाएद इसी वजह से मशहूर है कि जब दुनियाँ में चालीस मोमिन कामिल रह जाएंगे तब आपका ज़ुहूर होगा।

(४) **हज़रत ख़िज़्र** जो ज़िन्दा और बाक़ी हैं और क़यामत तक ज़िन्दा और मौजूद रहेंगें। उन्हीं की तरह हज़रत इमाम मेंहदी (अ.) भी ज़िन्दा और बाक़ी हैं और क़यामत तक मौजूद रहेगें और जब कि हज़रत ख़िज़्र के ज़िन्दा और बाक़ी रहने में मुसलमानों में कोई इख़्तेलाफ़ नहीं है। हज़रत इमाम मेहदी (अ.) के ज़िन्दा और बाक़ी रहने

में भी कोई इख़्तेलाफ़ की वजह नहीं हैं।

गै़बते सुग़रा व कुबरा और आपके सुफ़रा

आपकी ग़ैबत की दो हैसियतें थीं। एक सुग़रा और दूसरी कुबरा। ग़ैबते सुग़रा की मुद्दत ७५ या ७३ साल थी। उसके बाद ग़ैबते कुबरा शुरू हो गई। ग़ैबते सुग़रा के ज़माने में आपका एक नाएबे ख़ास होता था। जिसके ज़ेरे एहतेमाम हर क़िस्म का निज़ाम चलता था। सवाल व जवाब, खुम्स व ज़कात और दीगर मराहिल उसी के वास्ते से तय होते थे। खुसूसी मक़ामाते महरूसा में उसी के ज़रिये और सिफ़ारिश से सुफ़रा मुक़र्र किये जाते थे।

सबसे पहले जिन्हे नायबे ख़ास होने की सआदत नसीब हुई, उनका नामे नामी, व इस्मे गेरामी **हज़रत उस्मान बिन सईद अमरी** था। आप हज़रत इमाम अली नक़ी (अ.) और इमाम हसन असकरी(अ.) के मोतमिदे ख़ास और असहाबे ख़ल्लस में से थे। आप क़बीलए बनी असद से थे। आपकी कुन्नियत **अबू उमर** थी, आप सामरा के क़रीए असकर के रहने वाले थे। वफ़ात के बाद आप बग़दाद में दरवाज़ा जबला के क़रीब मस्जिद में दफ़न किये गये हैं। आप की वफ़ात के बाद बहुक्मे इमाम(अ.) आपके फ़रज़न्द **हज़रत मोहम्मद बिन उस्मान बिन सईद** इस अज़ीम मंज़िलत पर फ़ाएज़ हुये। आपकी कुन्नियत **अबू जाफ़र** थी। आपने अपनी वफ़ात से २, माह क़ब्ल अपनी क़ब्र खुदवा दी थी। आपका कहना था कि मैं यह इस लिये कर रहा हूँ कि मुझे इमाम (अ.) ने बता दिया है और अपनी तारीख़े वफ़ात से वाक़िफ़ हूँ। आपकी वफ़ात जमादिल अव्वल ३०५, हिजरी में वाक़े हुई और आप माँ के क़रीब बमक़ाम **दरवाज़ा कूफ़ा सिरे राह** दफ़न हुये।

फिर आपकी वफ़ात के बाद बा वास्ता मरहूम हज़रत इमाम(अ.) के हुक्म से **हज़रत हुसैन बिन रौह** (र.) इस मनसबे अज़ीम पर फ़ाएज़ हुये।

जाफ़र बिन मोहम्मद बिन उस्मान सईद का कहना है, कि मेरे वालिद हज़रत मोहम्मद बिन उस्मान ने मेरे सामने हज़रत हुसैन बिन रौह को अपने बाद इस मनसब की ज़िम्मेदारी के मुताअल्लिक़ इमाम (अ.) का पैग़ाम पहुँचाया था। हज़रत हुसैन बिन रौह की कुन्नियत अबू क़ासिम थी। आप महल्ले नौ बख़्त के रहने वाले थे। आप खुफ़िया तौर पर जुमला मुमालिके इस्लामिया का दौरा किया करते थे। आप दोनों फ़िरक़ों के नज़दीक मोतमिद, सुक़्क़ा, सालेह और अमीन क़रार दिये गये हैं। आपकी वफ़ात शाबान ३२६, हिजरी में हुई और आप महल्ले नव बख़्त कूफ़े में मदफ़ून हुये हैं। आपकी वफ़ात के बाद बहुक्मे इमाम(अ.) हज़रत अली बिन मोहम्मद अल समरी इस ओहदए जलीला पर फ़ाएज़

हुये। आपकी कुन्नियत अबुल हसन थी। आप अपने फ़राएज़ अंजाम दे रहे थे, जब वक़्त क़रीब आया तो आपसे कहा गया कि आप अपने बाद का क्या इन्तेज़ाम करेंगे। आपने फ़रमाया कि अब आईन्दा यह सिलसिला क़ाएम न रहेगा। (मजालेसुल मोमेनीन, सफ़ा ८६ व जज़ीरए ख़िज़रा, सफ़ा ६, व अनवारूल हुसैनिया, सफ़ा ५५) मुल्ला जामी अपनी किताब शवाहेदुन नबूवत के सफ़ा २१४ में लिखते हैं कि मोहम्मद अल समरी के इन्तेक़ाल से ६ यौम क़ब्ल इमाम(अ.) का एक फ़रमाने नाहिया मुक़द्देसा से बरामद हुआ। जिसमें उनकी वफ़ात का ज़िक्र और सिलसिलए सिफ़ारत के ख़त्म होने का तज़किरा था। इमाम मेहदी (अ.) के ख़त के अयून अल्फ़ाज़ यह हैं।

بسم اللہ الرّحمٰن الرّحیم

“ या अली बिन मोहम्मद अज़्म अल्लाह अजरा ख़्वाएनेका फ़ीका फ़ाअनका मयत मा बैनका व बैने सुन्नता अय्याम फ़ा अजमा अमरेका वला तरज़ इला अहद याक़ौम मक़ामेका बाअद वफ़ातेका फ़क़द वक़अत अल ग़ैबता अल तामता फ़ला ज़हूर इला बआद इज़्न अल्लाह ताआला व ज़ालेका बआद तूल अल आमद ”।

तरजुमा :- ऐ अली बिन मोहम्मद ! ख़ुदा वन्दे आलम तुम्हारे बारे में तुम्हारे भाईयों और दोस्तों को अजरे जमील अता करे। तुम्हें मालूम हो कि तुम ६, यौम में वफ़ात पाने वाले हो, तुम अपने इन्तेज़ामात कर लो और आइन्दा के लिये अपना कोई क़ाएम मुक़ाम तजवीज़ व तलाश न करो। इस लिये कि ग़ैबते कुबरा वाक़े हो गई है और इज़्ने ख़ुदा के बग़ैर ज़हूर ना मुमकिन होगा। यह ज़हूर बहूत तवील अरसे के बाद होगा।

ग़रज कि ६, यौम गुज़रने के बाद हज़रत अबुल हसन अली बिन मोहम्मद अल समरी ने तारीख़ १५, शाबान ३२६ हिजरी इन्तेक़ाल फ़रमा गये और फिर कोई ख़ुसूसी सफ़ीर मुक़र्र नहीं हुआ और ग़ैबते कुबरा शुरू हो गई।

सुफ़राए उमूमी के इस्मा :- मुनासिब मालूम होता है कि उन सुफ़रा के इस्मा भी दरजे ज़ैल कर दिये जाएं जो उन्हे नव्वाबे ख़ास के ज़रिए और सिफ़ारिश से बहुक्म इमाम मुमालिके महरूसा मख़सूसिया में इमाम (अ.) का काम करते और हज़रत की ख़िदमत में हाज़िर होते रहते थे।

(१) बग़दाद से **हाजिज़, बिलाली, अत्तार** (२) कूफ़े से **आसमी** (३) अहवाना से **मोहम्मद बिन इब्राहीम बिन मेहरयार** (४) हमदान से **मोहम्मद इब्ने सालेह** (५) रै से **बसामी व असदी** (६) आज़र बैजान से **क़सम बिन अला** (७) नैशापूर से **मोहम्मद बिन शादान** (८) क़ुसम से **अहमद बिन इस्हाक** (ग़ाएत अल मक़सूद जिल्द १, सफ़ा १२०)

हज़रत इमाम मेहदी की ग़ैबत के बाद

हज़रत इमाम मेहदी(अ.) की ग़ैबत चूँकि ख़ुदा वन्दे आलम की तरफ़ से बतौरे लुत्फ़े ख़ास अमल में आई थी। इस लिये आप ख़ुदाई ख़िदमत में हमतन मुनहमिक हो गये और ग़ायब होने के बाद आपने दीने इस्लाम की ख़िदमत शुरू फ़रमा दी। मुसलमानों, मोमिनों के ख़ुतूत के जवाबात देने उनकी बवक़्ते ज़रूरत रहबरी करने और उन्हें राहे रास्त दिखाने का फ़रीज़ा अदा करना शुरू कर दिया। ज़रूरी ख़िदमात आप ज़मानए ग़ैबते सुग़रा में ब वास्ता सुफ़रा या बिला वास्ता और ज़मानए कुबरा में बिला वास्ता अन्जाम देते रहे और क़यामत तक अन्जाम देते रहेंगे।

३०७, हिजरी में आपका हजरे असवद नसब करना

अल्लामा अरबली लिखते हैं कि ज़मानए नियाबत में बाद **हुसैन बिन रौह, अबूल क़ासिम, जाफ़र बिन मोहम्मद, क़ौलिया** हज के इरादे से बग़दाद गये और वह मक्के मोअज़्ज़मा पहुँच कर हज करने का फ़ैसला किये हुये थे। लकिन वह बग़दाद पहुँच कर सख़्त अलील हो गये। इसी दौरान में आपने सुना कि क़रामता ने हजरे असवद को निकाल लिया है और वह उसे कुछ दुरूस्त करके अय्यामे हज में फिर नसब करेंगे। किताबों में चूँकि पढ़ चुके थे कि हजरे असवद सिर्फ़ इमाम ज़माना ही नसब कर सकता है। जैसा कि पहले हज़रत मोहम्मद(स.) ने नसब किया था। फिर ज़मानए हज में इमाम ज़ैनुल आब्दीन(अ.)ने नसब किया था। इसी बिना पर उन्होंने अपने एक करम फ़रमा " **इब्ने हश्शाम** " के ज़रिये से एक ख़त इरसाल किया और उसे कह दिया कि जो हजरे असवद नसब करे उसे यह ख़त दे देना। नसबे हजर की लोग सई कर रहे थे। लेकिन वह अपनी जगह पर क़रार नहीं लेता था कि इतने में एक खूब सूरत नौजवान एक तरफ़ से सामने आया और उसने उसे नसब कर दिया और वह अपनी जगह पर मुसतक़र हो गया। जब वह वहां से रवाना हुआ तो इब्ने हश्शाम उनके पीछे हो लिये। रास्ते में उन्होंने पलट कर कहा ऐ इब्ने हश्शाम, तू जाफ़र बिन मोहम्मद का ख़त मुझे दे दे। देख उस में उसने मुझसे सवाल किया है कि वह कब तक ज़िन्दा रहेगा। यह कह कर वह नज़रों से ग़ाएब हो गये। इब्ने हश्शाम ने सारा वाक़ेया बग़दाद पहुँच कर जाफ़र बिन क़ौलिया से बयान कर दिया। ग़रज़कि वह तीस साल के बाद वफ़ात पा गये। (कशफ़ुल ग़म्मा, सफ़ा १३३)

इसी क़िसम के कई वाक़ेयात किताबे मज़कूर में मौजूद हैं। अल्लामा अब्दुल

रहमान मुल्ला जामी रक़म तराज़ हैं कि एक शख़्स इस्माईल बिन हसन हर कुली जो नवाही हिल्ला में मुक़ीम था उसकी रान पर एक ज़ख़्म नमूदार हो गया था। जो हर ज़मानए बहार में उबल आता था। जिसके इलाज से तमाम दुनिया के हकीम आजिज़ और क़ासिर हो गये थे। वह एक दिन अपने बेटे शमसुद्दीन को हमराह ले कर सय्यद रज़ी उद्दीन अली बिन ताऊस की ख़िदमत में गया। उन्होंने पहले तो बड़ी सई की लेकिन कोई चारा कार न हुआ। हर तबीब यह कहता था कि यह फोड़ा " रगे एकहल " पर है, अगर इसे नशतर दिया जाए तो जान का ख़तरा है इसलिए इसका इलाज न मुम्किन है। इसमाईल का बयान है "चून अज़अत्तबा मायूस शुदम अज़ी मत मशहद शरीफ़ सरमन राए करदम" जब मैं तमाम एतबार से मायूस हो गया तो सामरा के सरदाब के क़रीब गया, और वहाँ पर हज़रत साहेबे अमर को मुतावज्जा किया एक शब दरियाए दजला से गुसल करके वापस आ रहा था कि चार सवार नज़र आए, उनमें से एक ने मेरे ज़ख़्म के क़रीब हाथ फेरा और मैं बिलकुल अच्छा हो गया मैं अभी अपनी सेहत पर ताज्जुब ही कर रहा था कि इनमें से एक सवार ने जो सफ़ैद रीश(सफ़ैद बाल) कहा कि ताअज्जुब क्या है। तुझे शिफ़ा देने वाले इमाम मेहदी(अ.) हैं। यह सुन कर मैंने उनके क़दमों का बोसा दिया और वह लोग नज़रों से ग़ायब हो गये। (शवाहेदुन नबूवत, सफ़ा २१४ व कशफ़ुल ग़म्मा, सफ़ा १३२)

इस्हाक़ बिन याक़ूब के नाम इमामे अस्र का ख़त

अल्लामा तबरिसी बहवाला मोहम्मद बिन याक़ूब कुलैनी लिखते हैं। कि इस्हाक़ बिन याक़ूब ने बज़रिये मोहम्मद बिन उस्मान अमरी हज़रत इमाम मेहदी(अ.) की ख़िदमत में एक ख़त इरसाल किया। जिसमें कई सवालात लिखे थे। हज़रत ने ख़ुद ख़त का जवाब तहरीर फ़रमाया और तमाम सवालात के जवाबत तहरीर इनाएत फरमा दिए। जिसके अजज़ा यह हैं :-

(१) जो हमारा मुनकिर है ,वह हमसे नहीं (२)मेरे अज़ीज़ों में से जो मुख़ालफ़त करते हैं , उनकी मिसाल इब्ने नूह और बरादराने युसुफ की है (३)फ़िक़ा यानी जौ की शराब का पीना हराम है। (४) हम तुम्हारे माल सिर्फ इसलिए (बतौरे खुम्स कुबूल करते हैं कि तुम पाक हो जाओऔर अज़ाब से निजात हासिल कर सको (५) मेरे ज़हूर करने और न करने का ताल्लुक़ सिर्फ खुदा से है जो लोग वक़्ते ज़हूर मुक़र्र करते हैं वह ग़लती पर हैं झूट बोलते हैं (६) जो लोग यह कहते हैं कि इमाम हुसैन(अ.) क़त्ल नहीं हुए वह काफ़िर झूटे और गुमराह हैं (७) तमाम वाक़ेए होने वाले हवादिस में मेरे सुफ़रा पर एतिमाद करो वह मेरी तरफ़ से तुम्हारे लिए हुज्जत हैं और मैं हुज्जतुल्लाह हूँ (८) "मोहम्मद बिन उस्मान

अमीन और सुक़्क़ह हैं और उनकी तहरीर मेरी तहरीर है(९) मोहम्मद बिन अली महर अहवाज़ी दिल इन्शां अल्लाह बहुत साफ़ हो जाएगा और उन्हें कोई शक न रहेगा (१०) गाने वाले की उजरत व क़ीमत हराम है (११) मोहम्मद बिन शादान बिन नईम हमारे शियों में से हैं (१२)अबू अल ख़ताब मोहम्मद बिन ज़ैनब अजद मलउन है और इनके मानने वाले भी मलून हैं मैं और मेरे बाप दादा इससे और इसके बाप दादा से हमेशा बेज़ार रहे हैं (१३) जो हमारा माल खाते हैं वह अपने पेटों में आग भरते हैं (१४) ख़ुम्स हमारे सादात शिया के लिए हलाल है (१५) जो लोग दीने ख़ुदा मे शक करते हैं वह अपने ख़ुद जिम्मेदार हैं (१६) मेरी ग़ैबत क्यो वाकए हुई है। यह बात ख़ुदा की मसलहत से मुतालिक़ है इसके मुतालिक़ सवाल बेकार हैं। मेरे आबाओ अजदाद दुनियाँ वालों के शिकन्जें में हमेशा रहे हैं लेकिन ख़ुदा ने मुझे इस शिकन्जे से बचा लिया है। जब मैं ज़ुहूर करूँगा बिल्कुल आज़ाद हूँगा। (१७) ज़मानए ग़ैबत में मुझसे फ़ाएदा क्या है इसके मुतअल्लिक़ यह समझ लो कि मेरी मिसाल ग़ैबत में वैसी है, जैसे अबर में छुपे हुए आफ़ताब की। मैं सितारों की मानिन्द अहले अर्ज़ के लिए अमान हूँ। तुम लोग ग़ैबत और ज़ुहूर के मुतअल्लिक़ सवालात का सिलसिला बन्द करो और ख़ुदावन्दे आलम की बारगाह में दोआ करो और वह जल्द मेरे ज़ुहूर का हुक्म दे ,ऐ! इसहाक़ तुम पर और उन लागों पर मेरा सलाम जो हिदाएत की इत्तेबा करते हैं। (आलाम अल वरा सफ़ा २५८ मजालिस अल मोमेनीन सफ़ा १६० कशफ़ुल ग़म्मा सफ़ा १४०)

शेख़ मोहम्मद बिन मोहम्मद के नाम इमाम ज़माना का मकतूबे गिरामी

उलमा का बयान है कि हज़रत इमाम (अ.) ने जनाबे शेख़ मुफ़ीद अबू अब्दुल्लाह मोहम्द बिन मोहम्मद बिन नेमान के नाम एक मकतूब इरसाल फरमाया है। जिसमें उन्होने शेख़ मुफ़ीद की मदह फरमाई है और बहुत से वाक़ियात से मौसूफ़ को अगाह फरमाया है उनके मकतूबे गिरामी का तरजुमा यह है:-

मेरे नेक बरादर और लाएक़ मोहिब, तुम पर मेरा सलाम हो । तुम्हे दीनी मामले में ख़ुलूस हासिल है और तुम मेरे बारे में यक़ीन कामिल रखते हो । हम उस ख़ुदा की तारीफ करते हैं जिसके सिवा कोई माबूद नहीं है। हम दुरूद भेजते हैं हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा (स.) और उनकी पाक आल पर हमारी दोआ है कि ख़ुदा तुम्हारी तौफीक़ात दीनी हमेश क़ाएम रखे और तुम्हे नुस्रते हक़ की तरफ हमेशा मुतावज्जा रखे। तुम जो हमारे बारे में सिदक़ बयानी करते रहतें हो, ख़ुदा तुमको इसका अज्र अता फ़रमाए। तुमने जो हमसे ख़त व किताबत का सिलसिला जारी रखा और दोस्तों को फ़ाएदा पहुँचाया, वह क़ाबिले

मदह व सताईश है। हमारी दोआ है कि खुदा तुमको दुश्मनों के मुक़ाबले में कामियाब रखे। अब ज़रा ठहर जाओ, और जैसा हम कहते हैं उस पर अमल करो। अगरचे हम ज़ालिमों के इमकानात से दूर हैं जब तक दौलते दुनियाँ फासिकों के हाथ में रहेगी। हम उन लग़ज़िशों को जानते हैं जो लोगों से अपने नेक असलाफ़ के ख़िलाफ ज़ाहिर हो रही है। (शायद इससे अपने चचा जाफर की तरफ इरशाद फरमाया है) उन्होंने अपने अहदों को पसे पुश्त डाल दिया, गोया वह कुछ जानते ही नहीं। ताहम हम उनकी रियायतों को छोड़ने वाले नहीं और न उनके ज़िक्र भूलने वाले हैं अगर ऐसा होता तो इन पर मुसीबतें नाज़िल होतीं और दुश्मनों का ग़लबा हासिल हो जाता, पस उनसे कहो कि खुदा से डरो और हमारे अमर नहीं अनिल मुनकर की हिफ़ाज़त करो और अल्लाह अपने नूर का कामिल करने वाला है, चाहे मुशरिक कैसी ही कराहीयत करें। तक़य्या को पकड़ें रहो, मैं उसकी निजात का ज़ामिन हूँ। जो खुदा की मरज़ी का रास्ता चलेगा। इस साल जमादील अव्वल का महीना आएगा तो इसके वाक़ियात से इबरत हासिल करना तुम्हारे लिए आसमान व ज़मीन से रौशन आएतें ज़ाहिर होगीं। मुसलमानों के गिरोह हुज़न व क़लक़ में बामुक़ाम एराक़ फंस जाएगें। और उनकी बद आमालियों की वजह से रिज़्क़ में तगीहो जाएगी। फिर यह ज़िल्लत व मुसीबत शरीरों की हलाकत के बाद दूर हो जाएगी। उनकी हलाकत से नेक और मुत्तक़ी लोग खुश होगें। लोगों को चाहिए कि वह ऐसे काम करें जिनसे उनमें हमारी मोहब्बत ज़्यादा हो। यह मालूम होना चाहिए कि जब मौत यकायक आएगी तो बाबे तौबा बन्द हो जाएगा। और खुदाई क़हर से नजात न मिलेगी। खुदा तुमको नेकी पर क़ाएम रखे और तुम पर रहमत नाज़िल करे”

मेरे ख़्याल मे यह ख़त अहदे ग़ैबत कुबरा का है, क्यों कि शुख़ मुफीद की विलादत ११ ज़ीक़ाद ३२६हिजरी और वफात ३ रमज़ान ४१३ हिजरी में हुई और ग़ैबत सुग़रा का एख़्तेताम १५ शाबान ३२६ हिजरी में हुआ है। अल्लामा कबीर हज़रत शहीदे सालिस अल्लामा नूर उल्लाह शूसतरी मजालिस अल मोमेनीन के सफ़ा २०६में लिखते हैं कि शेख़ मुफ़ीद के मरने के बाद हज़रत इमाम अस्र ने तीन शेर इरसाल फ़रमाए थे जो मरहूम की क़ब्र पर कुन्दा हैं।

उन हज़रात के नाम जिन्होंने ज़मानए ग़ैबते सुग़रा में इमाम को देखा है

चारों वकलये खुसूसी और सात व कलाए उमूमी के अलावा वह जिन लोगों ने हज़रत इमाम अस्र (अ.) को देखा है । उनके इसमाए बाज़ के नाम यह हैं:-

बग़दाद के रहने वालों में से (१) अबू अल क़ासिम बिन रईस (२) अबू

अब्दुल्ला इब्ने फ़राख़ (३) मसरूर अल तबाख़ (४-५) अहमद व मोहम्मद पिसराने हसन (६) इसहाक़ कातिब अज़नू बख़्त (७) साहेबे अलफ़राए (८) साहेबे असरतह अल मख़तूमा (९) अबू अल क़ासिम बिन अबी जलैस(१०) अबू अब्दुल्ला अल कन्दी (११) अबू अब्दूल्ला अल जन्दी(१२) हारून अल फ़राज़ (१३) अलनैला (हमदान के बाशिन्दो में से) (१४) मोहम्मद बिन कशमरो (१५) जाफ़र बिन हमदान (देनूर के रहने वालों में से) (१६) हसन बिन हरवान (१७) अहमद बिन हरवान (अज़ असफ़हान) (१८) इब्ने बाज़शाला (अज़ ज़ैमर) (१९) ज़ैदान,अज़ क़ुम (२०) हसन बिन नसर (२१ मोहम्मद बिन मोहम्मद (२२) अली बिन मोहम्मद बिन इसहाक़ (२३) मोहम्मद बिन इसहाक़ (२४) हसन बिन याक़ूब (अज़रै) (२५) क़सम बिन मूसा (२६) फ़रज़न्द क़सीम बिन मूसा (२७) इब्ने मोहममद बिन हारून (२८) साहेबे अल अससाक़ा (२९) अली बिन मोहम्मद (३०) मोहम्मद बिन याक़ूब कुलैनी(३१) अबू जाफ़र अरक़ा (अज़ कज़वीन) (३२) मरवास (३३) अली बिन अहमद (अज़ फ़ारस) (३४) अकमजरूह (शहज़ोर) (३५) इब्ने अल जमाल (अज़क़ुदूस) (३६) मजरूह (अज़मरो) (३७) साहेबे अलफ दीनार (३८) साहेबे अलमाल व अरक़ता अल बैज़ा (३९) अबू साबित (अज़ नेशापूर) (४०) मोहम्मद बिन शेऐब बिन सालेह (अज. यमन) (४१) फ़ज़ल बिन यज़ीद (४२) हसन बिन फ़ज़ल (४३) जाफ़री (४४) इब्ने अल अजमी (४५) शमशाती (अज़ मिस्र) (४६) साहेबे अल मौलूदैन (४७) साहेबे अलमाल (४८) अबू रहाए (अज़ नसीबैन) (५०) अल हुसैनी (ग़ायतल मक़सूद जिल्द १ सफ़ा १२१)

ज़्यारते नाहिया और उसूले काफ़ी

कहते है कि इसी ज़मानए ग़ैबत सुग़रा में नाहिय्या मुक़द्देसा से एक ऐसी ज़्यारत बरामद हुई है जिसमें तमाम **शोहदाए करबला** के नाम और उनके क़ातिलों के असमा हैं। इसे " **ज़्यारते नाहिय्या** " के नाम से मौसूम किया जाता है ।

इसी तरह यह भी कहा जाता है कि उसूल काफ़ी जो कि **हज़रत सुक़तुल इस्लाम अल्लामा कुलैनी** अल मतूफ़ी ३२८ हिजरी की २० साला तसनीफ है। वह जब इमामें असर की ख़िदमत में पेश हुई तो आपने फ़रमाया " **हाज़ काफ़े लाशैतना** "। यह हमारे शियों के लिए काफ़ी है ।

ज़्यारत नाहिय्या की तौसीक़ बहुत से उलमा ने की है जिनमें **अल्लामा तबरसी** और **मजलिसी** भी हैं। दोआए **सबासब** आप ही से मरवी है।

गै़बते कुबरा में इमाम मेहदी (अ.) का मरकज़ी मुक़ाम

इमाम मेहदी (अ.) चुंकि उसी तरह ज़िन्दा और बाक़ी हैं जिस तरह हज़रत ईसा (अ.) ,हज़रत इदरीस(अ.), हज़रत ख़िज़्र,(अ.) हज़रत इलयास नीज़ दज्जाल, बताल ,याजूज माजूज और इब्लीस लईन ज़िन्दा और बाक़ी हैं और उन सब का मरकज़ी मुक़ाम मौजूद है। जहाँ यह रहते हैं मसलन हज़रत ईसा चौथे आसमान पर (कुरान मजीद) हज़रत इदरीस जन्नत में (कुरान मजीद) हज़रत ख़िज़र और इलयास, मजमउल बहरैन यानी दरियाए फ़ारस व रोम के दरमियान पानी के क़सर में (अजाएब अलक़स अल्लामा अब्दुल वाहिद सफा १७६) और दज्जाल व बताल तबरस्तान जजीरए मग़रिब में (किताब ग़ायतुल मक़सूद जिल्द १ सफ़ा १०२) और याजूज माजूज बहरे रोम के अक़ब में दो पहाड़ों के दरमियान(ग़ायतल मक़सूद जिल्द २ सफ़ा ७४) और इब्लीस लईन, इस्तेमारे अरज़ी के वक़्त वाले पाएतख़्त मुल्तान में (किताब इरशाद उत तालेबीन अल्लामा अखून्द दरवीज़ा सफ़ा २४३) तो लामुहाला हज़रत इमाम मेहदी (अ.) का भी कोई मरकज़ी मुक़ाम होना ज़रूरी है। जहाँ आप तशरीफ़ फ़रमा हों और वहाँ से सारी काएनात में अपने फ़राएज़ अन्जाम देते हों इसी लिए कहा जाता है कि ज़माना ग़ैबत हज़रत मेहदी (अ.) (जज़ीरए ख़िज़र और बहरे अबयज) में अपनी औलाद अपने असहाब समेत क़याम फ़रमा हैं और वहीं से ब एजाज़ तमाम काम किया करते और हर जगह पहुँचा करते हैं, यह जज़ीरए ख़िज़रा , सरज़मीने विलाएत बरबर में दरमियान दरिया इन्लिस वाक़े है यह जज़ीरह मामूर व आबाद है , इस दरिया के साहिल में एक मौज़ा भी है जो बशक्ले जजीरा है उसे इन्लिस वाले (जज़ीरए रफज़ा) कहते हैं , क्योंकि उसमें सारी आबादी शियों की है। इस तमाम आबादी की ख़ुराक वग़ैरा जज़ीरए ख़िज़रा से बराह बहरे अबयज़ साल में दो बार इरसाल की जाती है। मुलाहेज़ा हो (तारीख़ जहाँ आरा ,रेआज़ उल उलमा कफ़ाएतुल मेहदी ,कशफुल केफ़ना, रेआज़ अल मोमेनीन, ग़ाएतल मक़सूद, रिसाला जज़ीरए ख़िज़रा, बहरे अबयज़ और मजालिस अल मोमेनीन,अल्लमा नूर उल्ला शूस्तरी व बेहारूल अनवार , अल्लामा मजलिसी किताब रौज़तुल शोहदा अल्लामा हुसैन वाज़ेए क़ाशफ़ी सफ़ा ४३८) में इमाम मेहदी के अक़साए बिलादे मग़रिब में होने और उनके शहरों पर तसररूफ़ रखने और साहबे औलाद वग़ैरा होने का हवाला है।

इमाम शिबलन्जी अल्लामा अब्दुल अल मोमिन ने भी अपनी किताब नूरूल अबसार के सफ़ा १५२) में इस की तरफ़ ब हवाला किताब जामेए अल फ़नून इशारा किया है ग़यास अल ग़ास के सफ़ा ७२ में हैं कि यह वह दरिया है जिसके जानिबे मशरिक़ चीन

जानिबे ग़रबी यमन ,जानिबे शुमाली हिन्द, जानिबे जुनूबी दरियाए मोहीत वाके हैं। इस बहरे अबयज़ व अख़ज़र का तूल २ हज़ार फ़रसख़ और अर्ज़ पाँच सौ फ़रसख़ है। इसमें बहुत से जज़ीरे आबाद हैं जिनमें एक सरान्दीब भी है इस किताब के सफ़ा २९५ में है कि "साहेबुज़्ज़मान" हज़रत इमाम मेहदी (अ.) का लकब है। अल्लामा तबरसी लिखते हैं कि आप जिस मकान में रहते हैं उसे " बैतुल हम्द "कहते हैं। (आलाम अल वरा सफ़ा २६३)

जज़ीरए ख़िज़रा में इमाम (अ.) से मुलाक़ात

हज़रत इमाम मेहदी (अ.) की क़याम गाह जज़ीरए ख़िज़रा में जो लोग पहुँचे हैं। उनमें से शेख़ सालेह , शेख़ ज़ैनुल आब्दीन अली बिन फ़ाज़िल माज़न्देरानी का नाम नुमाया तौर पर नज़र आता है। आपकी मुलाक़ात की तस्दीक़, फ़ज़ल बिन यहिया बिन अली ताबई कुफ़ी व शेख़ आलिम आमिल शेख़ शम्सुद्दीन नजी अली व शेख़ जलालुद्दीन, अब्दुल्लाह इब्ने अवाम हिल्ली ने फ़रमाई है।

अल्लामा मजलिसी ने आपके सफ़र की सारी रूदाद एक रिसाले की सूरत में ज़ब्त किया है। जिसका मुसलसल ज़िक्र बेहारूल अनवार में मौजद है रिसाला जज़ीरए ख़िज़रा के सफ़ा १ में है कि शेख़ अजल सईद शहीद बिन मोहम्मद मक्की और मीर शमसुद्दीन मोहम्मद असद उल्लाह शुस्तरी ने भी तसदीक़ की है।

मोअल्लिफ़ किताबे हाज़ा कहता है कि हज़रत की विलादत हज़रत की ग़ैबत , हज़रत का ज़ुहूर वग़ैरा जिस तरह रमज़े ख़ुदावन्दी और राज़े इलाही है उसी तरह आपकी जाए क़याम भी एक राज़ है जिसकी इत्तेला आम ज़रूरी नहीं है, वाज़े हो कि कोलम्बस के इदराक से भी क़ब्ल अमरीका का वजूद था।

इमाम ग़ाएब का हर जगह हाज़िर होना

अहादीस से साबित है कि इमाम मेहदी (अ.) जो कि मज़हरूल अजाएब हज़रत अली (अ.) के पोते हैं, हर मक़ाम पर पहुँचते और हर जगह अपने मानने वालों के काम आते हैं। उलमा ने लिखा है।

कि आप ब वक़्त ज़रूरी मज़हबी लोगों से मिलते हैं लोग उन्हें देखते हैं यह और बात है कि उन्हें पहचान न सकें ।

(ग़ाएतुल मक़सूद)

इमाम मेहदी (अ.) और हज्जे काबा

यह मुसल्लेमात से है कि **हज़रत इमाम मेहदी** (अ.) हर साल काबा के लिए मक्का मोअज्ज़मा इसी तरह तशरीफ़ ले जाते हैं जिस तरह हज़रत ख़िजर व इलयास (अ.) जाते हैं। (सिराज अल कुलूब सफ़ा ७७)

अली अहमद कूफ़ी का बयान है कि मैं तवाफ़े काबा में मसरूफ़ व मशगूल था कि मेरी नज़र एक निहायत ख़ूब सूरत नवजवान पर पड़ी मैंने पूछा आप कौन हैं और कहाँ से तशरीफ लाए हैं! आपने फरमाया ! " **अन्नल मेहदी व अन्नल क़ाएम** " मैं मेहदी आख़रूज़ ज़मा और क़ाएम आले मोहम्मद (स.) हूँ।

ग़ानम हिन्दी का बयान है कि मैं इमाम मेहदी की तलाश में एक मरतबा बग़दाद गया, एक पुल से गुज़रते हुए मुझे एक साहब मिले वह मुझे एक बाग़ में ले गए और उन्होंने मुझसे हिन्दी ज़बान में कलाम किया और फ़रमाया कि तुम इम साल हज के लिए न जाओ, वरना नुक़सान पहुँच जाएगा मोहम्मद बिन शाज़ान का कहना है कि मैं एक दफ़ा मदीने में दाख़िल हुआ तो हज़रत इमाम मेहदी (अ.) से मुलाक़ात हुई , उन्होंने मेरा पूरा नाम ले कर मुझे पुकारा, चुँकि पूरे नाम से कोई वाकिफ़ न था इसलिए मुझे ताज्जुब हुआ। मैंने पूछा आप कौन हैं ? फ़रमाया इमामे ज़मान हूँ।

अल्लामा शेख़ सुलेमान कन्दूज़ी बलख़ी तहरीर फ़रमाते हैं कि अब्दुल्लाह इब्ने सालेह ने कहा मैंने ग़ैबते कुबरा के बाद इमाम मेहदी (अ.) को हजरे असवद के नज़दीक इस हाल में खड़े हुए देखा कि उन्हें लोग चारों तरफ़ से घेरे हुए हैं।

(नियाबुल मोदद्दता)

ज़मानए ग़ैबते कुबरा में इमाम मेहदी (अ.) की बैअत

हज़रत शेख़ अब्दुल लतीफ हलबी हनफ़ी का कहना है कि मेरे वालिद शेख़ इब्राहीम हुसैन का शुमार हलब के मशएख़ अज़ाम में था।

वह फरमाते हैं कि मेरे मिस्री उस्ताद ने बयान किया है कि मैंने हज़रत इमाम मेहदी (अ.) के हाथ पर बैअत की है।

(नियाबुल मोवद्दता बाब ८५ सफ़ा ३९२)

इमाम मेहदी (अ.) की मोमेनीन से मुलाक़ात

रिसालए जज़ीरए ख़ज़रा के सफ़ा १६ में बहवाला अहादीसे आले मोहम्मद (स.) मरकूम है कि हज़रत इमाम मेहदी(अ.) से हर मोमिन की मुलाक़ात होती है। यह और बात है कि मोमेनीन उन्हें मसलहते खुदा वन्दी की बिना पर इस तरह न पहचान सकें जिस तरह पहचान्ना चाहिये। मुनासिब मालूम होता है कि इस मुक़ाम पर मैं अपना एक ख़्वाब लिख दूँ। वाक़िया यह है कि आज कल जबकि मैं इमाम ज़माना के हालात लिख रहा हूँ। हदिसे मज़कूर पर नज़र डालने के बाद फ़ौरन ज़ेहन में यह ख़्याल पैदा हुआ कि मौला सबको दिखाई देते हैं, लेकिन मुझे आज तक नज़र नहीं आये। इसके बाद मैं बिसतरे इस्तेराहत पर गया और सोने के इरादे से लेटा। अभी नींद न आई थी और कतई तौर पर नीम बेदारी (गुनूदगी) की हालत थी कि नागाह मैंने देखा कि मेरे मकान से मशरिक़ की जानिब ता बा हद्दे नज़र एक क़ौसी ख़त पड़ा हुआ है यानी शुमाल की जानिब का सारा हिस्सा आलमे पहाड़ है और उस पर इमाम मेहदी(अ.) तलवार लिये खड़े हैं और यह कहते हुये कि " निस्फ़ दुनिया आज ही फ़तेह कर लूँगा " शुमाल की जानिब एक पाँव बढ़ा रहे हैं। आपका क़द आम इन्सानों के क़द से डेयोढ़ा और जिस्म दोहरा है। बड़ी बड़ी सुरमगीं आखें और चेहरा इन्तेहाई रौशन है। आपके पट्टे कटे हुये हैं और सारा लिबास सफ़ेद है और वक़्त अस्र का है। यह वाक़िया ३०, नवम्बर १९५८ ई० शबे यक शम्बा ब वक़्त ४.३० बजे शब का है।

मुल्ला मोहम्मद बाक़र, दामाद का इमामे अस्र (अ.) से इस्तेफ़ादा करना

हमारे अकसर उलेमा इल्मी मसाएल और मज़हबी व मआशरती मराहिल हज़रत इमाम ज़माना ही से तय करते आये हैं। मुल्ला मोहम्मद बाक़र दामाद जो हमारे अज़ीमुल क़द्र मुजतहिद थे। उनके मुताअल्लिक़ है कि एक शब आपने ज़रीह नजफ़े अशरफ़ में एक मसला लिख कर डाला, उसके जवाब में तहरीरन कहा गया कि तुम्हारा इमामे ज़माना इस वक़्त मस्जिदे कूफ़ा में नमाज़ गुज़ार है, तुम वहाँ जाओ। वह वहाँ जा पहुँचे। खुद ब खुद मस्जिद का दरवाज़ा खुल गया और आप अन्दर दाख़िल हो गये। आपने मसले का जवाब हासिल किया और आप मुतमइन होकर बरामद हुये।

जनाब बहरूल उलूम का इमामे ज़माना(अ.) से मुलाक़ात करना

किताब क़सासुल उलेमा मोअल्लेफ़ा अल्लामा तन्काबनी सफ़ा ५५ में मुजतहिदे आज़म करबलाए मोअल्ला जनाब आक़ा सय्यद मोहम्मद मेहदी बहरे उलूम के तज़किरे में मरक़ूम है, कि एक शब आप नमाज़ में अन्दूरूने हरम मशगूल थे, कि इतने में इमामे अस्र अपने अबो जद की ज़्यारत के लिये तशरीफ़ लाये। जिसकी वजह से उनकी ज़बान में लुकनत हुई और बदन में एक क़िस्म का राशा पैदा हो गया। फिर जब वह वापस तशरीफ़ ले गये तो उन पर जो एक ख़ास क़िस्म की कैफ़ियत तारी थी वह जाती रही। इसके अलावा आपके इसी क़िस्म के कई वाक़ेयात किताब मज़कूर में लिखे हैं।

इमाम मेहदी(अ.) का हिमायते मज़हब फ़रमाना
वाक़िए "अनार"

किताब कशफ़ुल ग़म्मा सफ़ा १३३ में है कि **सय्यद बाक़ी बिन अतूवाह** इमामिया मज़हब के थे और उनके वालिद **ज़ैद** यह ख़याल रखते थे। एक दिन उनके वालिद **अतूवाह** ने कहा कि मैं सख़्त अलील हो गया हूँ और अब बचने की कोई उम्मीद नहीं। हर क़िस्म के हकीमों का इलाज कर चुका हूँ। ऐ नूरे नज़र मैं तुमसे वायदा करता हूँ कि अगर मुझे तुमहारे इमाम ने शिफ़ा दे दी, तो मैं मज़हबे इमामिया इख़्तेयार कर लूँगा। यह कहने के बाद जब यह रात को बिसतर पर गये, तो इमामे ज़माना काउनपर ज़हूर हुआ, इमाम ने मक़ामे मर्ज़ को अपने हाथ से मस कर दिया और वह मर्ज़ जाता रहा। **अतूवाह** ने उसी वक़्त मज़हबे इमामिया इख़्तेयार कर लिया और रात ही में जाकर अपने फ़रज़न्द **बाक़ी अलवी** को ख़ुशख़बरी दे दी।

इसी तरह किताब जवाहरूल बयान में है कि बहरैन का वाली नसरानी और उसका वज़ीर ख़वारजी था। वज़ीर ने बादशाह के सामने चन्द ताज़ा अनार पेश किये जिन पर ख़ुलफ़ा के नाम अल्ल तरतीब कन्दा थे और बादशाह को यक़ीन दिलाया कि हमारा मज़हब हक़ है और तरतीबे ख़िलाफ़त मनशए क़ुदरत के मुताबिक़ दुरूस्त है। बादशाह के दिल में यह बात कुछ इस तरह बैठ गई कि वह यह समझने पर मजबूर हो गया कि वज़ीर का मज़हब हक़ है, और इमामिया राहे बातिल पर गामज़न हैं। चुनान्चे उसने अपने ख़याल की तकमील के लिये जुमला उलेमाए इमामिया को जो उसके अहदे हुकूमत में थे बुला भेजा और उन्हें अनार दिखा कर उनसे कहा कि इसकी रद में कोई माकूल दलील लाओ।

वरना हम तुम्हें कत्ल करके तमाम मज़हब को जड़ से उखाड़ देंगे। इस वाकिए ने उलेमाए कराम में एक अजीब किस्म का हैजान पैदा कर दिया। बिल आख़िर सब उलेमा आपस में मशवेरे के बाद ऐसे दस उलेमा पर मुत्तफ़िक हो गये जो उनमें निसबतन मुक़द्दस थे और प्रोग्राम यह बना कि जंगल में एक एक आलिम शब में जाकर इमामे ज़माना से इस्तेआनत करे ,चूँकि एक शब की मोहलत व मुद्दत मिली थी इस लिये परेशानी ज़्यादा थी। ग़रज़कि उलेमा ने जंगल में जाकर इमामे ज़माना से फ़रियाद का सिलसिला शुरू किया। दो आलिम अपनी अपनी मुद्दते फ़रयादो फ़ुग़ां ख़त्म होने पर जब वापस आये और तीसरे आलिम हज़रत मोहम्मद बिन अली की बारी आई तो आपने बदस्तूर सहरा में जाकर मुसल्ला बिछा दिया और नमाज़ के बाद इमामे ज़माना को अपनी तरफ़ मुतवज्जे करने की कोशिश की, लेकिन नाकाम हो कर वापस आते हुये उन्हें एक शख़्स रास्ते में मिला, उसने पूछा, क्या बात है क्यों परेशान हो। आपने अर्ज़ की इमामे ज़माना की तलाश है, और वह तशरीफ़ ला नहीं रहे हैं। उस शख़्स ने कहा, " **अना साहेबुल अस्र फ़ा ज़िक्र हाजतेका** " मैं ही तुम्हारा इमामे ज़माना हूँ। कहो क्या कहते हो। मोहम्मद बिन अली ने कहा कि अगर साहेबुल अस्र हैं तो आपसे हाजत बयान करने की ज़रूरत क्या, आपको खुद ही इल्म होगा।

इसके जवाब में उन्होंने फ़रमाया कि सुनो ! वज़ीर के कमरे में एक लकड़ी का संदूक़ है। उसमें मिट्टी के कुछ साँचे रखे हुये हैं। जब अनार छोटा होता है, वज़ीर उसपर सांचा चढ़ा देता है और जब वह बढ़ता है तो उस पर नाम कन्दा हो जाते हैं। जो सांचे में कन्दा हैं। मोहम्मद बिन अली! तुम बादशाह को अपने हमराह ले जाकर वज़ीर के दजल व फ़रेब को वाज़े कर दो। वह अपने इरादे से बाज़ आ जायेगा और वज़ीर को सज़ा देगा। चुनान्चे ऐसा ही किया गया और वज़ीर बरख़ास्त कर दिया गया।

(किताब बदाए उल अख़बार मुल्ला इस्माईल सबज़वारी, सफ़ा १५० व सफ़ीनतुल बेहार जिल्द १, सफ़ा ५३६ तबा नजफ़े अशरफ़)

इमामे अस्र का वाकिए करबला बयान करना

हज़रत इमाम मेहदी(अ.) से पूछा गया कि " **कहयेअस** " का क्या मतलब है तो फ़रमाया कि इसमें **काफ़** से करबला, **हे** से हलाकते इतरत, **ये** से यज़ीद मलऊन, **ऐन** से अतशे हुसैनी, **सुवाद** से सब्रे आले मोहम्मद मुराद है। आपने फ़रमाया कि आयत में जनाबे **ज़करिया** का ज़िक्र किया गया है। जब **ज़करिया** को **वाकिए करबला** की इत्तेला हुई तो वह तीन रोज़ तक मुसलसल रोते रहे। (तफ़सीरे सानी सफ़ा २७६)

हज़रत इमाम मेहदी(अ.) के तूले उम्र की बहस

बाज़ मुशतशरक़ीन व माहेरीन आमार का कहना है कि "जिनके आमाल व किरदार अच्छे होते हैंऔर जिनका सफाए बातिन कामिल होता है उनकी उमरें तवील होती हैं। यही वजह है कि उलमा फुक़हा और सुलहा की उमरें अकसर तवील देखी गई हैं और हो सकता हे कि तवील उमर मेहदी (अ.) की यह भी एक वजह हो , इनसे कबल जो आइम्मा (अ.) गुज़रे वह शहीद कर दिए गए , और इन पर दुश्मन का दस्तरस न हुआ, तो यह ज़िन्दा रह गए और अब तक बाक़ी हैं। लेकिन मेरे नज़दीक उमर का तक़र्रुर व तअय्युन दस्त एज़िदी में है उसे अख़्तेआर है कि किसी की उमर कम रखे किसी की ज़्यादा उसकी मोअय्यन करदा मुद्दत उमर में एक पल का भी तफ़रेक़ा नहीं हो सकता।

तवारीख़ व अहादीस से मालूम होता है कि ख़ुदा वन्दे आलम ने बाज़ लोगो को काफी तवील उमरे अता कीहैं। उमर की तवालत मसलहत ख़ुदा वन्दी पर मुबनी है। इससे उसने अपने दोस्त और दुश्मन दोनो को नवाज़ा है। दोस्तो में हज़रत ईसा(अ.), हज़रत इदरीस, हज़रत ख़िज़र , हज़रत इलयास और दुश्मनो में से इब्लीस लईन, दज्जाल व बताल, याजूज माजूज वग़ैरा हैं और हो सकता है कि चुकि क़यामत उसूले दीने इस्लाम से है और इसकी आमद में इमाम मेहदी का ज़हूर ख़ास हैसीयत रखता है। लेहाज़ उनका ज़िन्दा व बाक़ी रहना मक़सद रहा हो , और उनके तवील उमर के ऐतिराज़ को रद और रफा दफा करने के लिए उसने बहुत से अफ़राद की उमरें तवील कर दी हों। मज़कूरा अफ़राद को जाने दीजीए। आम इन्सानों की उमरों को देखिए बहुत से ऐसे लोग मिलेंगे जिनकी उमरें काफ़ी तवील रही हैं, मिसाल के लिए मुलाहेज़ होः-

(१) लुक़मान की उमर ३५००साल (२) औज बिन अनक़ की उमर ३३००साल और बक़ौले ३६००साल (३) ज़ुरकरनैन की उमर ३०००साल (४) हज़रत नूह(अ.) की उम्र ६०० (५) ज़हाक व(६) तमहूरस की उमरें १०००साल (७) कैनान की उमर ६०० साल (८) महलाइल की उमर ८०० साल (६) नफ़ील बिन अब्दुल्लाह की उमर ७००(१०)रबी बिन उमर उर्फ़ सतीह काहिन की उमर ६०० साल(११) हाकिम अरब आमिर बिन ज़रब की उमर ५०० साल (१२)साम बिन नूह ५०० साल (१३) हरस बिन मज़ाज़ जर हमी की उमर ४०० साल (१४) अरमख़्शद की उमर ४०० साल (१५) दरीद बिन ज़ैद की उमर ४५६ साल (१६) सलमान फारसी की उमर ४०० साल (१७) उमर बिन दूसी की उमर ४०० साल (१८) ज़ुहैर बिन जनाब बिन अब्दुल्लाह की उमर ४३० साल (१६) हरस बिन ज़यास की उमर ४०० साल (२०)काब बिन जमजा की उमर ३६० साल (२१) नसर बिन धमान बिन सलमान की उमर ३६० साल (२२) क़ैस बिन साद की उमर ३८० साल

(२३) उमर बिन रबी की उमर ३३३ साल (२४) अक्सम बिन ज़ैफी की उमर ३३६ साल (३५ उमर बिन तफ़ील अदवानी की उम्र २०० साल थी।

(ग़ाएतल मक़सूद सफ़ा १०३ आलाम अल वरा सफ़ा २७०)

इन लोगों की तवील उमरों को देखने के बाद यह हरगिज़ नहीं कहा जा सकता कि "चुंकि इतनी उमर का इन्सान नहीं होता , इस लिए इमाम मेहदी का वजूद हम तसलीम नही करते। क्योंकि इमाम मेहदी (अ.) की उम्र इस वक़्त १३६३ हिजरी में सिर्फ़ ग्यारह सौ अड़तालिस साल की होती है। जो मज़कूरा उमरों में है लुक़मान हकीम और जुलक़रनैन जैसे मुक़द्दस लोगों की उमरों से बहुत कम है।

अलग़रज़ कुरआने मजीद, अक़वाल उलमाए इस्लाम और अहादीस से यह साबित है कि इमाम मेहदी (अ.) पैदा होकर ग़ाएब हो गए हैं और क़यातम के क़रीब ज़हूर करेगें और आप उसी तरह ज़मानए ग़ैबत में भी हुज्जत ख़ुदा हैं जिस तरह बाज़ अम्बिया अपने अहदे नबूअत में ग़ाएब होने के दौरान में भी हुज्जत थे (अजाएब अल क़सस सफ़ा १६१) और अक़्ल भी यही कहती है कि आप ज़िन्दा और बाक़ी मौजूद हैं, क्योंकि जिसके पैदा होने पर उलमाए इस्लाम का इत्तेफ़ाक़ हुआ और वफ़ात का कोई एक भी ग़ैर मुतअसिब आलिम क़ाएल न हुआ और तवील उल उम्र इन्सानों के होने की मिसालें भी मौजद हों तो ला मुहाला उसका मौजद और बाक़ी होना मानना पड़ेगा। दलील मन्तक़ी से भी यही साबित होता है। लेहाज़ा इमाम मेहदी जिन्दा और बाक़ी हैं।

इन तमाम शवाहिद और दलाएल की मौजूदगी में जिनका हमने इस किताब में ज़िक्र किया है मौलवी मोहम्मद अमीन मिस्री का रिसाला " **तूले इस्लाम** " कराची जिल्द, १४ सफ़ा ४५ व सफ़ा ६४ में यह कहना कि !

" शियों को इब्तेदाअन रूए ज़मीन पर कोई ज़ाहेरी ममलेकत क़ाएम करने में कामयाबी न हो सकी इनको तकलीफ़ें दी गईं और परागन्दा और मुन्तशिर कर दिया गया तो उन्होंने हमारे ख़याल के मुताबिक़ इमामे मुन्तज़िर और इमाम मेहदी(अ.) वग़ैरा के पुर उम्मीद अक़ाएद ईजाद कर लिये ताकि अवाम की ढारस बन्धी रहे "।

और मुल्ला अख़ूवन्द दरवेज़ा का किताब इरशाद अल तालेबैन, सफ़ा ३६६ में यह फ़रमाना कि !

" हिन्दोस्तान में एक शख़्स अब्दुल्ला नामी पैदा होगा जिसकी बीवी अमीना(आमना) होगी। उसके एक लड़का पैदा होगा। जिसका नाम मोहम्मद होगा, वही कूफ़े जा कर हुकूमत करेगा। लोगों का यह कहना दुरूस्त नहीं कि इमाम मेहदी(अ.) वही हैं जो इमाम हसन असकरी (अ.) के फ़रजन्द हैं। " हद दरजा मज़हका ख़ेज़, अफ़सोसनाक,और हैरत अंगेज़ है। क्योंकि उलेमाए फ़रीक़ैन का इत्तेफ़ाक़ है कि " **अल मेहदी मन वलद अल इमाम अल हसन अल असकरी** " इमाम मेहदी(अ.) हज़रत इमाम हसन असकरी(अ.) के बेटे हैं और १५, शाबान

२५५, हिजरी को पैदा हो चुके हैं। मुलाहेज़ा हो,

असआफ़ अल राग़बैन, दफ़्यातुल अयान, रौज़तुल अहबाब, तारीखे़ इब्नुल वरदी, नेयाबुल मोअद्दता, तारीखे़ कामिल, तारीखे़ तबरी, नुरूल अबसार. उसूले काफ़ी, कशफ़ुल ग़म्मा, जिलाउल अयून, इरशाद मुफ़ीद, आलामुल वरा, जामए अब्बासी, सवाएके मोहर्रेका़, मतालेबुल सुवेल, शवाहेदुन नबूवत, अर हज्जुल मतालिब, बेहारूल अनवार, मनाकि़ब, वग़ैरा।

हदीसे नअसल और इमामे अस्र

नअसल एक यहूदी था जिससे हज़रत **आयशा** हज़रत **उस्मान** को तशबीह दिया करती थीं, और रसूले इस्लाम(स.) के बाद फ़रमाया करती थीं। इस **नअसले** इसलामी उस्मान को क़त्ल कर दो। मुलाहेज़ा हो, निहायत अल लुग़ता अल्लामा इब्ने असीर जज़री सफ़ा ३२१) यही नअसल एक दिन हुज़ूर रसूले करीम(स.) की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ परदाज़ हुआ, मुझे अपने ख़ुदा, अपने दीन, अपने ख़ुलफ़ा का तआर्रूफ़ कराईये, अगर मैं आपके जवाब से मुतमइन हो गया तो मुसलमान हो जाऊंगा। हज़रत ने निहायत बलीग़ और बेहतरीन अन्दाज़ में ख़ल्लाक़े आलम का तआर्रूफ़ कराया। उसके बाद दीने इस्लाम की वज़ाहत की, " क़ाला सदक़त " नअसल ने कहा आपने बिलकुल दुरूस्त फ़रमाया। फिर उसने अर्ज़ की मुझे अपने वसी से आगाह किजिये और बताईए कि वह कौन है? आपने फ़रमाया मेरे वसी अली बिन अबी तालिब (अ.) और उनके फ़रज़न्द हसन व हुसैन (अ.) के सुल्ब से नौ (९) बेटे क़यामत तक होंगे। उसने कहा सबके नाम बताईये, आपने बारह इमामों के नाम बताये। नामों को सुन्ने के बाद वह मुसलमान हो गया और कहने लगा कि मैंने कुतुबे आसमानी में इन बारह नामों को इसी ज़बान के अल्फ़ाज़ में देखा है। फिर उसने हर वसी के हालात बयान किये। करबला का होने वाला वाक़िया बताया।

इमाम मेहदी(अ.) की ग़ैबत की ख़बर दी और कहा कि हमारे बारह इस्बात में से लादी बिन बरख़िया ग़ायब हो गये थे। फिर मुद्दतों के बाद ज़ाहिर हुये और अज़ सरे नौ दीन की बुनियादें इस्तेवार(मज़बूत) कीं।

हज़रत ने फ़रमाया इसी तरह हमारा बारहवां जानशीन इमाम मेहदी मोहम्मद बिन हसन(अ.) तवील मुद्दत तक ग़ायब रह कर ज़हूर करेगा और दुनिया को अदलो इन्साफ़ से भर देगा। (ग़ायतुल मक़सूद, सफ़ा १३४ बहवाला फ़राएद अल सिमतैन हमवीनी)

अलामाते ज़हूरे मेहदी(अ.) के मुताअल्लिक़ अरबाबे अस्मत के इरशादात

इमाम मेहदी(अ.) के ज़हूर से पहले बेशुमार अलामात ज़ाहिर होंगे। फिर आख़िर में आपका ज़हूर होगा। मग़रिब व मशरिक़ पर आपकी हुकूमत होगी। ज़मीन खुद ब खुद तमाम दफ़ाएन(ज़मीन के ख़ज़ाने) उगल देगी। दुनिया की कोई ऐसी ज़मीन न बाक़ी रहेगी जिसको आप आबाद न कर दें। अलामाते ज़हूर में यह चन्द हैं।

(१) औरतें मरदों के मुशाबेह होंगी। (२) मर्द औरतों जैसे होंगे। (३) औरतें ज़ीन जैसी चीज़ें, घोड़े, साईकिलों, स्कूटरों, कारों वग़ैरा पर सवारी करने लगेंगी। (४) नमाज़ जान बूझ कर क़ज़ा की जाने लगे गी। (५) लोग ख़ाहिशाते नफ़सानी की पैरवी करने लगेंगे। (६) क़त्ल करना मामूली चीज़ समझा जायगा। (७) सूद का ज़ोर होगा। (८) ज़िना आम होगा। (९) अच्छी अच्छी इमारतें बहुत बनेंगी। (१०) झूठ बोलना हलाल समझा जायगा। (११) रिश्वत आम होगी। (१२) शहवते नफ़सानी की पैरवी की जायगी। (१३) दीन को दुनिया के बदले बेचा जायगा। (१४) अज़ीज़दारी की परवाह न होगी। (१५) अहमक़ों को आमिल बनाया जायगा। (१६) बुर्दबारी को बुज़दिली व कमज़ोरी पर महमूल किया जायगा। (१७) जुल्म फ़ख़्र के तौर पर किया जायगा। (१८) बादशाह व उमरा फ़ासिक़ो फ़ाजिर होंगे। (१९) वज़ीर झूठे होंगे। (२०) अमानत दार ख़ाएन होंगे। (२१) हर एक मद्दगार जुल्म परवर होंगे। (२२) क़ारीयाने कुरआन फ़ासिक़ होंगे। (२३) जुल्म व जौर आम होगा। (२४) तलाक़ बहुत ज़्यादा होगी। (२५) फ़िसक़ो फुजूर नुमायाँ होंगे। (२६) फ़रेबी की गवाही कुबूल की जायगी। (२७) शराब नोशी आम होगी। (२८) अग़लाम बाज़ी का ज़ोर होगा। (२९) सिहक़, यानी औरतें, औरतों के ज़रिये शहवत की आग बुझाएंगी। (३०) माले खुदा व रसूल(स.) को माले ग़नीमत समझा जायगा। (३१) सदक़ा व ख़ैरात से नाजाएज़ फ़ायदा उठाया जायगा। (३२) शरीरों की ज़बान के ख़ौफ़ से नेक बन्दे ख़ामोश रहेंगे। (३३) शाम से सुफ़यानी का खुरूज होगा। (३४) यमन से यमानी बरामद होगा। (३५) मक्के और मदीने के दरमियान ब मक़ाम "**लुद**" ज़मीन धंस जायेगी। (३६) रूकन और दरमियान आले मोहम्मद की एक मोअज़्ज़िज़ फ़र्द क़त्ल होगी। (नुरूल अबसार, सफ़ा १५५, तबा मिस्र)(३७) बनी अब्बास में शदीद एख़्तेलाफ़ होगा। (३८) १५, शाबान को सूरज गरहन और इसी माह के आख़िर में चाँद गरहन होगा। (३९) ज़वाल के वक़्त आफ़ताब अस्र के वक़्त तक क़ाएम रहेगा। (४०) मग़रिब से आफ़ताब निकलेगा। (४१) नफ़्से ज़किया और सत्तर(७०) सालेहीन का क़त्ल (४२) मस्जिदे कूफ़ा की दीवार ख़राब व बरबाद कर दी

जायेगी। (४३) खुरासान की जानिब से सियाह(काले) झंडे बरामद होंगे। (४४) मिस्र में एक मग़रेबी का ज़हूर होगा। (४५) तुर्क जज़ीरे में होंगे। (४६) रोम रमले में पहुँच जायेंगे। (४७) मशरिक़ में एक सितारा निकलेगा जिसकी रौशनी मग़रिब तक फैलेगी। (४८) एक सुर्ख़ी ज़ाहिर होगी जो आसमान और सूरज पर ग़ालिब आजायेगी। (४९) मशरिक़ से एक ज़बर दस्त आग भड़केगी जो तीन या सात रोज़ बाक़ी रहेगी और बरवायत शिब्लन्जी, सफ़ा २१ वह आग मग़रिब तक फैल कर आलम को तहस नहस कर देगी। (५०) अरब मुख़तलिफ़ बलाद पर क़ाबू पा लेंगे और अजम के बादशाह को मग़लूब कर देंगे। (५१) मिस्री अपने बादशाह और हाकिम को क़त्ल कर देंगे। (५२) शाम तबाह व बरबाद हो जायेगा। (५३) क़ैस व अरब के झन्डे मिस्र पर लहराएंगे। (५४) खुरासान पर बनी कन्दा का परचम लहरायेगा। (५५) फ़रात का पानी इस दरजा चढ़ जायगा कि कूफ़े के गली कूचों में पानी होगा। (५६) ६०, अद्द मुद्दीयाने नबूवत ज़ाहिर होंगे। (५७) १३, नफ़र औलादे अबूतालिब से दावाए इमामत करेंगे। (५८) बनी अब्बास का एक अज़ीम शख़्स ब मुक़ाम हलवलाद ख़ानक़ैन नज़रे आतश किया जायगा। (५९) बग़दाद में क़रख़ जैसा पुल बनाया जायगा। (६०) सियाह आंधी का आना। (६१) ज़लज़लों का आना। (६२) अकसर मक़ामात पर ज़मीन का धंस जाना। (६३) नागहानी मौतों का ज़्यादा होना। (६४) जानो माल व समरात(फलों) की तबाही। (६५) चींटीयों और टिड्डियों की कसरत जो खेती को खा जायें। (६६) ग़ल्ले का कम उगना। (६७) आपसी कुशतो ख़ून की कसरत। (६८) अपने सय्यदों से लोगों का नाफ़रमान होना। (६९) अपने सरदारों को क़त्ल करना। (७०) बाज़ गिरोह का सुअर और बन्दर की सूरत में मसख़ होना। (७१) आसमान से एक आवाज़ का आना जिसे तमाम अहले ज़मीन सुनेंगे। (७२) आसमानी आवाज़ का हर ज़बान बोलने वाले के कान में उसी की ज़बान में पहुँचना। (७३) बाज़ सूरतों का मक़ामे ऐन अल शम्स में ज़ाहिर होना। (७४) २४, चौबीस बारिशों का पै दर पै होना। (७५) ज़मीन का ज़िन्दा हो कर अपने तमाम मालूमात ज़ाहिर करना। (कशफ़ुल ग़म्मा, सफ़ा १३४) (७६) अच्छाई और बुराई एक नज़र से देखी जायेगी। (७७) बुराई का हुक्म अपनी औलाद को दिया जायेगा और अच्छाई से रोका जायेगा। (७८) लालच की वजह से बातिन ख़राब हो जायेंगे। (७९) ख़ौफ़े ख़ुदा दिल से निकल जायेगा। (८०) कुरआन का सिर्फ़ निशान रह जायेगा। (८१) मस्जिदें आबाद मगर हिदायत से ख़ाली होंगी। (८२) फ़ोक़हा फ़ितना परवर होंगे। (८३) औरतों से मशवेरा लिया जायेगा। (८४) गुनाह खुल्लम खुल्ला किया जायेगा।(८५) बद अहदी आम होगी। (८६)औरतों को तिजारत में शरीक किया जायेगा।(८७) ज़लील तरीन शख़्स क़ौम का सरदार होगा। (८८) गाने वालियों का ज़ोर होगा।(८९) उस ज़माने के लोग अगलों पर बिला वजह लानत करेंगे। (९०) झूठी गवाही दी जायेगी।(९१) हक़ ख़त्म हो जायेगा।(९२) कुरआन एक कोहना(पुरानी) किताब समझी जायेगी।(९३) दीन अन्धा कर दिया जायेगा। (९४)बदकारी

एलान के साथ की जायेगी। (६५) फिसको फुजूर में जिसकी मदह की जायेगी खुश होगा। (६६) लड़के औरतों की तरह उजरत पर इस्तेमाल होंगे। (६७) मासियत पर माल ख़र्च करने वालों को टोका न जायेगा। (६८) हमसाया हमसाये को अज़ियत देगा। (६६) नेकी का हुक्म करने वाला ज़लील होगा। (१००) नेकी के रास्ते छोड़ दिये जायेंगे। (१०१) बैतुल्लाह मोअत्तल कर दिया जायेगा। (१०२) औरतें अन्जुमनें क़ायम करेंगी। (१०३) मर्द औरतों की तरह कंघी करेंगे। (१०४) मरदों को शर्मगाहों का मोआवज़ा मिलेगा। (१०५) मोमिन से ज़्यादा साहेबे माल की इज़्ज़त होगी। (१०६) औरतें अपने शौहरों को मरदों के साथ बद फ़ेली पर मजबूर करेंगी। (१०७) औरतों की दल्लाली करने वाले मोअज़्ज़ज समझे जायेंगे। (१०८) मोमिन ग़मगीन और ज़लील होगा। (१०६) हराम को हलाल किया जायेगा। (११०) दीन में खुदराई की जायेगी। (१११) गुनाह के लिये परदए शब की ज़रूरत न होगी। (११२) बड़े बड़ माले खुदा की मासियत में सर्फ़ होंगे। (११३) हुक्काम दींदारी से दूर भागेंगे। (११४) जज फ़ैसले में रिश्वत लेंगे। (११५) हराम औरतों से ज़िना किया जायेगा, जैसे माँ बहनें। (११६) मर्द अपनी ज़ौजा की हराम कमाई खाएगा। (११७) औरतें अपने मर्दों पर हुकूमत करेंगी। (११८) मर्द अपनी ज़ौजा और लौंडी को किराये पर चलायेगा। (११६) शरीफ़ को ज़लील समझा जायेगा। (१२०) हुक्काम में उसकी इज़्ज़त होगी जो आले मोहम्मद(स.) को बुरा कहेगा। (१२१) कुरआन पढ़ना और सुन्ना बार होगा। (१२२) चुग़ल ख़ोरी आम होगी। (१२३) ग़ीबत को अच्छा समझा जायेगा। (१२४) हज और जेहाद खुदा के लिये नहीं दीगर मक़ासिद के लिये किया जायेगा। (१२५) बादशाह यानी बर सरे इक़्तेदार तबक़ा मोमिन को काफ़िर के लिये ज़लील करेगा। (१२६) वीराना आबादी से बदल जायेगा। (१२७) नाप तौल में कमी लोगों का जरिए माश होगा। (१२८) लोग रियासत तलबी के लिये अपने को बदज़बानी में मशहूर करेंगे ताकि ख़ौफ़ के मारे हुकूमत उनके सुपुर्द कर दी जाये। (१२६) नमाज़ बिलकुल सुबुक कर दी जायेगी। (१३०) माले कसीर के बावजूद ज़कात न दी जायेगी। (१३१) मय्यत क़ब्र से निकाली जायेगी। (१३२) क़ब्र से कफ़न चुरा कर बेचा जायेगा। (१३३) इन्सान सुबह शाम नशे में होगा। (१३४) चौपायों के साथ बदफ़ेली की जायेंगी। (१३५) चौपाए चौपायों को फाड़ ख़ाएंगे। (१३६) लोग जानमाज़ पर बरैहना जायेंगे। (१३७) लोगों के कुलूब सख़्त हो जायेंगे। (१३८) लोगों की आंखें बेहयाई करेंगी। (१३६) ज़िक्रे खुदा लोगों पर बार होगा। (१४०) माले हराम आम होगा। (१४१) नमाज़ सिर्फ़ दिखावे के लिये पढ़ी जायेगी। (१४२) फ़क़ीह दीन के सिवा दूसरे कामों के लिये फ़िक़ा हासिल करेंगे। (१४३) लोग ग़ासिब का साथ देंगे। (१४४) हलाल रोज़ी कमाने वाले की मज़म्मत की जायेगी। (१४५) तालिबे हराम की मदह की जायेगी। (१४६) हरमैन शरीफ़ैन में ऐसे अमल होंगे जो मन्शाए खुदा वन्दी के ख़िलाफ़ होंगे। (१४७) आलाते ग़िना (गाने बजाने की चीज़ें) मक्के व मदीने में आम हो जायेंगे। (१४८) हक़ की हिदायत को मना किया जायेगा। (१४६) लोग एक दूसरे

की तरफ़ देखेंगे और अहले शहर उनकी इक़्तेदा करेगे चाहे वह कुछ करें। (१५०) नेकी के रास्ते ख़ाली हो जायेंगे। (१५१) मय्यत का मज़हका उड़ाया जायेगा। (१५२) हर साल बुराईयों में इज़ाफ़ा होगा। (१५३) मजालिस में सिर्फ़ मालदार की इज़्ज़त की जायेगी। (१५४) फ़क़ीरों को मज़हके के तौर पर माल दिया जायेगा। (१५५) आसमानी मख़ादफ़ से कोई ख़ौफ़ न खायेगा। (१५६) मर्द और औरतें सबके सामने ख़्वाहिशाते नफ़सानी की आग बुझायेंगे। (१५७) अपनी इज़्ज़त के ख़ौफ़ से कोई शरीफ़ किसी को रोक टोक न सकेगा। (१५८) मासियत में माल ख़ुशी से सर्फ़ किया जायेगा लेकिन ख़ुदा की राह में बिलकुल न दिया जायेगा। (१५९) वालेदैन की तरफ़ से औलाद को आक़ करना आम हो जायेगा। (१६०) वालदैन अपनी औलाद की निगाह में सुबुक होंगे। (१६१) औलाद अपने वालदैन पर इफ़्तेरा करने में ख़ुशी महसूस करेगी। (१६२) औरतें मुल्क व हुकूमत पर ग़ालिब हो जायेंगी। (१६३) फ़रज़न्द अपने बाप पर बोहतान बांधेगा। (१६४) लड़का माँ बाप पर बद दुआ करेगा। (१६५) फ़रज़न्द माँ बाप के जल्द मरने की तमन्ना करेगा। (१६६) इन्सान जिस दिन कोई गुनाह न करेगा उस दिन ग़मगीन रहेगा। (१६७) बादशाह गरानी के लिये ग़ल्ला रोकेगां (१६८) आइज़्ज़ा का माल फ़रेब से तक़सीम किया जायेगा। (१६९) जुआ खेला जायेगा। (१७०) शराब के ज़रिये से मरीज़ों का इलाज किया जायेगा। (१७१) अच्छाई और बुराई दोनों की तलक़ीन बराबर हैसियत रखेगी। (१७२) मुनाफ़िक़ और दुश्मने ख़ुदा की हवा बंधेगी और अहले हक़ मक़हूर " बे इज़्ज़त " रहेंगे। (१७३) उजरत ले कर अज़ान कही जायेगी और एवज़ लेकर नमाज़ पढ़ाई जायेगी। (१७४) ख़ुदा से न डरने वाले मस्जिदों पर क़ाबिज़ होंगे। (१७५) मस्जिदों में न अहल जमा होकर ग़ीबतें करेंगे। (१७६) बद मस्त रसमी तौर पर जमाअत में खड़े हो कर नमाज़ पढ़ेंगे; (१७७) यतीमों का माल खाने वाले की मदह की जायेगी। (१७८) क़ाज़ी हुक्मे ख़ुदा के ख़िलाफ़ फ़ैसला करेगा। (१७९) हुक्काम लालच की वजह से ख़ाइनों पर भरोसा करेंगे। (१८०) मीरास बदकारी में सर्फ़ की जायेगी। (१८१) मिम्बर पर तक़्वे का ज़िक्र किया जायेगा लेकिन वाएज़ ख़ुद अमल नहीं करेंगे। (१८२) नमाज़ के औक़ात की परवाह न की जायेगी। (१८३) सदक़ा व ख़ैरात ख़ुशनूदिये ख़ुदा के लिये नहीं सिर्फ़ सिफ़ारिश पर दिया जायेगा। (१८४) इन्सान का मक़सूदे हयात सिर्फ़ पेट पालना और ऐश करना होगा। (१८५) हक़ की निशानियां मिट जायेंगी। (१८६) भाई भाई से हसद करेगा। (१८७) अपने दोस्तों के साथ ख़यानत की जायेगी। (१८८) दिलों में ज़हर की तरह तकब्बुर दौड़ जायेगा। (१८९) ज़ोहद ख़त्म हो जायेगा। (१९०) लोगों की शक्लें इन्सानी और दिल शैतानी हो जायेंगे। (१९१) उनकी उमरें क़लील और उनकी तमन्नाएं कसीर होंगी। (बेहारूल अनवार, जिल्द १३ सफ़ा १७४, तबा ईरान)

(१९२) कनीज़ों से मशविरे किये जायेंगे। (१९३) बच्चे मिम्बरों पर बैठेंगे। (१९४) ऐसे हाकिम होंगे कि जब उनसे कोई बात करेगा तो क़त्ल कर दिया जायेगा। (१९५) हुक्काम

शुरफ़ा के माल को अपना माल समझेंगे। (१६६) औरतों की आबरू रेज़ी करेंगे। (१६७) कुछ चीज़ें मशरिक़ से और कुछ मग़रिब से लाई जायेंगी जिनसे उम्मत का इम्तेहान किया जायेगा। (१६८) मस्जिदें नक़शो निगार से मुज़य्यन की जायेंगी। (१६६) क़ुरआन मजीद सजाये जायेंगे। (२००) मस्जिदों की मीनारें बलन्द बनाई जायेंगी। (२०१) मर्द सोना इस्तेमाल करेंगे । (२०२) रेशमी कपड़े पहनेगें। (२०३) चीते की खाल का फर्श बनाएगें। (२०४) सूद ख़ोरी ज़ाहिर बज़ाहिर होगी। (२०५) हदे शरई न की जाएगी। (२०६) शरीर अफराद हाकिम होगें। (२०७) मालदार तफरीह के लिए , ग़रीब दिखाने के लिए मुतवसित तिजारत के लिए हज करेंगें। (२०८) कुरान मजीद सुर से पढा जाएगा। (२०६) वल्द-अज़-ज़ेना की कसरत होगी। (२१०) खुशामद बहुत ज़्यादा राएज होगी। (२११) लिबास पर फख़रो मुबाहात किया जाएगा। (२१२) उमरा शतरन्ज खेलेंगे। (२१३) क़ारियाने कुरान और अब्बाद एक दूसरे पर लानत करेंगे। (२१४) मालदार फक़ीरों से दूर भागेंगे। (२१५) मुल्की नज़्म व नस्क़ में वह लोग दख़ील होंगें जिनको उससे हिस व मिस ना होगा। (२१६) ज़मीने ऐतिराफ से धंस जाएगी। (तफसीर अली बिन इब्रहीम कुमी सफा २२६ (२१७) दरिन्दे इन्सानों से बातें करने लगेंगे। (२१८) लोगों से उनके कोड़े और जूते कलाम करने लगेंगे। (२१६) इन्सान की राने बोलने लगेंगी और वह इस के घेर के लोगों ने जो कुछ किया होगो घर के मालिक से बताने लगेगी। (नेयाबुल मोवद्दता सफ़ा ४३१ बहवाला तिरमिज़ी)

(२२०) सुफ़यानी , खुरासानी, यमानी का खुरूज एक ही दिन , एक ही महीना , एक ही साल में होगा। (२२१) हुकूमते शाम , हमस महतसकीन, अरदन कफससरीन पर ग़ालिब आजाएगी। (२२२) तूफ़ान का ज़ोर होगा। (२२३) वादी याबिस से "इब्ने आकलातुल अकबाद" खुरूज करेंगे। (२२४) मोमिनीन का इम्तेहान ख़ौफ, जू अन्कस अमवाल , नक़्श, समरात से होगा। (२२५) शाम का "क़रिया" जाबीह ज़मीन में धसं जाएगा। (२२६) क़त्ल नफस ज़किया के १५ दिन बाद इमाम मेहदी (अ.) का ज़हूर होगा। (अलाम अलवरा तबरसी सफा २६२ तबा बम्बई १३१२ हिजरी) (२२७) दुनियां में झगड़े बखेड़े बेइन्तेहा होगें। (२२८) नए नए फ़ितने पैदा होंगे। (२२६) आमदो रफ्त के रास्ते बन्द हो जाऐंगे। (२३०) लोग एक दूसरे को लूटने लगेगें। (अर हज्जुल मतालिब सफ़ा ४७२) (२३१) मर्दों की कमी और औरतों की ज़्यादती होगी। (२३२) हेजाज़ से आग निकले गी। (२३३) मस्जिदों से(लाऊड स्पीकरों वग़ैरा के ज़रिए से) आवाज़ें बुलन्द होंगी। (२३४) रेशमी लिबास मर्द पहनने लगेंगें। (२३५) मशरिक़ मग़रिब जज़ीरए अरब में ज़मीने धंस जाऐंगी । (२३६) यमन और अदन से आग भड़कने लगेगी, मिशक़ात सफ़ा ४६१ (२३७) अच्छे लोग ख़तम हो जाऐंगे और बुरों की कसरत होगी। (२३८) मुक़द्देरात इलाही की मुख़ालफ़त आम होगी। (२३६) माल के लाने ले जाने वाले चोरी करेंगे। (२४०) हराम ख़ोरी आम होगी। (२४१) गरानी हद से बढ़

जाएगी। (२४२) दरिया खुश्क हो जाऐंगें। (२४३) बारिश बन्द हो जाएगी। (२४४) अहले बरबर ज़र्द झंडे लेकर मिस्र पहुँच जायेंगे। (२४५) सख़र की औलाद से एक शख़्स खुरूज करेगा। (२४६) बर सरे आम औरतों की छातियों से खेला जायेगा। (२४७) सफ़ैद पिंडलियों की औरतें सड़कों पर बरैहना मिलेंगी। (२४८) एक यमनी बादशाह " **हसन** " नामी यमन से खुरूज करेगा। (२४९) हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़(अ.) फ़रमाते हैं कुरसे आफ़ताब (सूरज के गोले) के क़रीब आसमान पर एक हाथ ज़ाहिर होगा। (२५०) हज का रास्ता बन्द कर दिया जायेगा। (२५१) मर्दों से बद फ़ेली के लिये ताक़तवर ग़िज़ाएं खाई जायेंगी। (२५२) दौलत के ज़ोर से हुकूमत हासिल की जायेगी। (२५३) झूठी क़सम खाना फ़ैशन में दाख़िल होगा। (२५४) ज़ख़ीरा अन्दोज़ी होगी। (२५५) मस्जिदे **बरासा** जो जंगे **नहरवान** के बाद हज़रत अली(अ.) ने **राहिब** के ज़रिये से बनाई थी, तबाह कर दी जायेगी। (२५६) **कुज़्वैन** में एक काफ़िर की अज़ीम हुकूमत होगी। (२५७) तकरीत से एक शख़्स " **औफ सलमा** " नामी खुरूज करेगा। (२५८) मक़ामे क़रक़िया में जंगे अज़ीम होगी। (२५९) तुर्क मैदाने जंग में उतर आयेंगे। (२६०) अहले नाक़ूस नसारा की हुकूमते आलम पर छा जायेंगे। (२६१) इस्लामी मुमालिक में बेशुमार कलीसे बनाये जायेंगे। (किताब अल वसाएल अलहाज मोहम्मद अली सफ़ा, २०७ तबा बम्बई १३२९, हिजरी। (२६२) औरतें ऊंट के कोहान की तरह सर के बाल बनाएंगी। (२६३) औरतें ऐसे कपड़े पहनेंगी कि बरैहना मालूम होंगी। (२६४) औरतें ज़ीनत करके बाहर निकला करेंगी। (बेहारूल अनवार) (२६५) लड़के लम्बे बाल रखेंगे। (२६६) बेवक़ूफ़ तफ़रीह के लिये इस्तेमाल किये जायेंगे। (२६७) मस्जिदें खूबसूरत बनाई जायेंगी। (२६८) बड़ी बड़ी इमारतें बनाई जायेंगी। (२६९) क़हवे की मुख़्तलिफ़ क़िस्में इस्तेमाल होंगी। (२७०) लोग सवारियों से टकरा कर मरेंगे। (२७१) लोग रात में सोयेंगे और सुबह को मुरदा होंगे। (२७२) रोयते हिलाल पर इख़्तेलाफ़ होंगे। (२७३) लोग आलाते ग़िना जेब में रख कर घूमा करेंगे। (२७४) हिन्द तिब्बत की वजह से तबाह होगा और तिब्बत की तबाही चीन की वजह से होगी।

(मनाक़िब)

(२७५) मिस्र में अमीर अल आमरा का क़याम होगा। (२७६) अरबों की हुकूमत छिन जायेगी। (कशफ़ुल ग़म्मा)

(२७७) अदन की गहराई से आग निकलेगी। (रिसालए ग़ैबत, तूसी सफ़ा २८१)

(२७८) दुनिया में हबशियों की हुकूमतें क़ाएम हो जायेंगी। (२७९) शाम में चीनी घुस जायेंगे तब ज़हूर होगा। (इलज़ाम अल निसाब सफ़ा १८३)

हज़रत इमाम मेहदी(अ.) का ज़हूर मौंफ़ूर अल सुरूर

हज़रत इमाम मेहदी(अ.) के ज़हूर से पहले जो अलामात ज़ाहिर होंगे उनकी तकमील के दौरान ही में नसारा फ़तेह ममालिके आलम का इरादा करके उठ खड़े होंगे और बेशुमार ममालिक पर क़ाबू हासिल करने के बाद उन पर हुक्मरानी करेंगे। इसी ज़माने में अबू सुफ़यान की नस्ल से एक ज़ालिम पैदा होगा जो अरब व शाम पर हुक्मरानी करेगा। इसकी दिली तमन्ना यह होगी कि सादात के वजूद से मुमालिके मीरूसा ख़ाली कर दिए जाऐं। और नस्ले मोहम्मदी का एक फ़रज़न्द भी बाक़ी न रहे। चुनान्चे वह सादात को निहायत बेदर्दीसे क़त्ल करेगा। फिर इसी असना में बादशहे रोम को नसारा के एक फिरक़े से जगं करना पड़ेगी शाहे रोम एक फिरक़ा को हमवार बना कर दूसरे फिरक़े से जंग करेगा और शहर क़ुसतुनतुनयाँ पर क़बज़ा करले गा। क़ुसतुनतुननयाँ का बादशाह वहाँ से भाग कर शाम में पनाह लेगा, फिर वह नसारा के दूसरे फ़िरक़े की मुवावनत से फ़िरक़ये मुख़लिफ़ के साथ नर्बद आज़मा होगा। यहाँ तक कि इस्लाम को ज़बर दस्त फ़तेह नसीब होगी। फ़तेह इस्लाम के बावजूद नसारा शोहरत देंगे कि " सलीब " ग़ालिब आएगी उस पर नसारा और मुसलमानों में जंग होगी और नसारा ग़ालिब आजाएंगे। बादशाहे इस्लाम क़त्ल हो ज़ाएगा और मुल्क शाम पर भी नसारा का झन्डा लहराने लगेगा और मुसलमानों का क़त्ले आम होगा। मुसलमान अपनी जान बचा कर मदीने की तरफ़ कूच करेंगे और नसारा अपनी हुकूमत को वुस्अत देते हुए ख़ैबर तक पहुँचेंगे। इस्लामिया आलम के लिए कोई पनाह न होगी। मुसलमान अपनी जान बचाने से आजिज़ होंगे। उस वक़्त वह गिरोह सारे आलम में मेहदी (अ.) को तलाश करेंगे, ताकि इस्लाम महफ़ूज़ रह सके और उनकी जानें बच सकें और अवाम ही नहीं मुल्क के क़ुतुब, अबदाल और औलिया ,जुस्तजू में मशग़ूल व मसरूफ़ होंगे नागाह आप मक्कए मोअज्ज़मा में रूकनव मक़ाम के दरमियान से बरामद होंगे। (क़यामत नामा क़दो तह अल मोहद्देसीन शाह रफ़ीउद्दीन देहलवी सफ़ा ३ तबा पेशावर १६२६ ई०) उलमाए फ़रीक़ैन का कहना है कि आप क़रिया " क़रआ " से रवाना होकर मक्कए मोअज़्ज़मा से ज़हूर फ़रमाएंगे। (ग़ाएतल मक़सूद सफ़ा १६५ नूरूल अबसार सफ़ा १५४)

अल्लामा कुन्जी शाफ़ई और अली बिन मोहम्मद साहब किफ़ायतुल अस्र का ब हावाला अबू हुरैरा बयान करते हैं कि हज़रत सरवरे काएनात (स.) ने इरशाद फरमाया है कि इमाम मेहदी क़रया (करआ)। (जो मदीना से बतरफ मक्का तास मील के फ़ासले पर वाक़ेए है (मजमुअल बहरैन सफ़ा ४३५) निकल कर मक्का मोअज़्ज़मा से ज़हूर करेंगे , वह मेरी ज़िरा पहने होंगे। मेरी तलवार लगाए होंगे और मेरा अमामा बांधे होंगे। उनके सर

पर अबर का साया होगा और मलक आवाज़ देता होगा यही इमाम मेहदी हैं इनकी इत्तेबा करो। एक रवाएत में है कि जिबराईल आवाज़ देगें और "हवा" इसको सारी काएनात में पहुँचा देगी और लोग आपकी ख़िदमत में हाज़िर होंगे। (ग़ाएतुल मक़सूद सफ़ा १६५)

लुग़ाते सरवरी सफ़ा ५३० में है कि आप क़स्बए ख़ैरवाँ से ज़हूर फ़रमाएंगे। मासूम का फ़रमाना है कि इमाम मेहदी (अ.) के ज़हूर के मुतअल्लिक़ किसी का कोई वक़्त मोअय्यन करना फ़िल हक़ीक़त अपने आप को इल्म ग़ैब में ख़ुदा का शरीक क़रार देना है। वह मक्के में बे ख़बर ज़हूर करेंगे, उनके सर पर ज़र्द रगं का अमामा होगा। बदन पर रिसालत मआब(स.) की चादर और पाँव में उन्हीं की नालैने मुबारक होगी। वह अपने सामने चन्द भेड़ें रखेंगे। कोई उन्हें पहचान न सकेगा, और उसी हालत में यको तन्हा बग़ैर किसी रफ़ीक़ के काबातुल्लाह में आ जायेंगे। जिस वक़्त आलम सियाहिए शब की चादर ओढ़ लेगा और लोग सो जायेंगे। उस वक़्त मलाएका सफ़ बा सफ़ उतरेंगे और हज़रत जिब्रईल व मीकाईल उन्हें नवेद इलाही सुनाएंगे, कि उनका हुक्म तमाम दुनिया पर जारी व सारी है। यह बशारत पाते ही इमाम (अ.) शुक्रे ख़ुदा बजा लायेंगे, और रूकने हजरे असवद और मक़ामे इब्राहीम के दरमियान खड़े हो कर बा आवाज़े बलन्द निदा देंगे कि ऐ वह गिरोह जो मेरे मख़सूसों और बुज़ुर्गों से हो और वह लोग जिनको हक़े ताआला ने रूए ज़मीन पर मेरे ज़ाहिर होने से पहले मेरी मद्द के लिये जमा किया है। " **आजाओ** " यह निदा हज़रत के उन लोगों तक ख़ाह व मशरिक़ में हैं या मग़रिब में पहुँच जायगी, और वह लोग यह आवाज़ सुन कर चश्मे ज़दन में हज़रत के पास जमा हो जायेंगे। यह लोग ३१३ होंगे, और नक़ीबे इमाम कहलाएंगे। उसी वक़्त एक नूर ज़मीन से आसमान तक बलन्द होगा जो सफ़े दुनिया में हर मोमिन के घर में दाख़िल होगा। जिससे उनकी तबियतें मसरूर हो जायेंगी। मगर मोमेनीन को मालूम न होगा कि इमाम (अ.) का ज़हूर हुआ है।

सुबह इमाम(अ.) मय उन ३१३ अशख़ास(लोगों) के जो रात को उनके पास जमा हो गये थे काबे में खड़े होंगे, और दीवार से तकिया लगा कर अपना हाथ खोलेंगे। जो मूसा (अ.) के यदे बैज़ा के मानिन्द होगा और कहेंगे कि जो कोई इस हाथ पर बैयत करेगा। वह ऐसा है गोया उसने " **यद अल्लाह** " पर बैयत की। सबसे पहले जिब्रईल शरफ़े बैयत से मुशर्रफ़ होंगे। इनके बाद मलाएका बेयत करेगे। फिर मुक़द्दम अल ज़िक्र नुक़बा। ३१३, बैयत से मुशर्रफ़ होंगे। इस हलचल और इज़देहाम में मक्के में तहलका मच जायेगा और लोग हैरत ज़दा होकर हर सिम्त से इस्तेफ़सार करेंगे, कि यह कौन शख़्स है। यह तमाम वाक़ेयात तुलूए आफ़ताब से पहले सर अन्जाम हो जायेंगे। फिर जब सूरज चढ़ेगा तो क़ुरसे आफ़ताब के सामने एक मुनादी करने वाला ज़ाहिर होगा, और बा आवाज़े बलन्द कहेगा। जिसको तमाम साकेनाने ज़मीनो आसमान सुनेंगे। कि " ऐ गिरोहे ख़लाएक़ यह मेहदी आले मोहम्मद(स.) हैं। इनकी बैयत करो फिर मलाएका और ३१३, आदमी तसदीक़

करेंगे और दुनिया के हर गोशे से जूक़ दर जूक़ आपकी ज़्यारत के लिये रवाना हो जायेंगे और आलम पर हुज्जत क़ाएम हो जायेगी। इसके बाद दस हज़ार अफ़राद बैयत करेंगे, और कोई यहूदी और नसरानी बाक़ी न छोड़ा जायेगा। सिर्फ़ अल्लाह का नाम होगा, और इमाम मेहदी(अ.) का काम होगा। जो मुख़ालेफ़त करेगा उसपर आसमान से आग बरसे गी, और उसे ख़ाक इसतर कर देगी।

(नुरूल अबसार, इमाम शिब्लन्जी, शाफ़ेई, सफ़ा १५५, आलाम अल वरा, सफ़ा २६४)

उलेमा ने लिखा है कि २७, मुख़लेसीन आपकी ख़िदमत में कूफ़े से इस क़िस्म के पहुँच जायेंगे। जो हाकिम बनाये जायेंगे। जिनके असमा, किताब " **मुन्तख़ब बसाएर** " यह हैं। यूशा बिन नून, सलमान फ़ारसी, अबू दजाना अन्सारी, मिक्दाद बिन असवद, मालिके अशतर, और क़ौमे मूसा के १५, अफ़राद और सात असहाबे कहफ़।

(आलाम अल वरा ,सफ़ा २६४, इरशाद मुफ़ीद सफ़ा ५३६)

अल्लामा अब्दुल रहमान जामी का कहना है कि क़ुतब, अबदाल, अरफ़ा, सब आपकी बैयत करेंगे। आप जानवरों की ज़बान से भी वाक़िफ़ होंगे और आप इन्सानों और जिनों में अदल व इन्साफ़ करेंगे। (शवाहेदुन नबूवत सफ़ा २१६)

अल्लामा तबरीसी का कहना है कि आप हज़रते दाऊद(अ.) के उसूल पर अहकाम जारी करेंगे। आपको गवाह की ज़रूरत न होगी। आप हर एक के अमल से ब इल्हामे ख़ुदा वन्दी वाक़िफ़ होंगे। (आलाम अल वरा,सफ़ा २६४)

इमाम शिब्लन्जी शाफ़ेई का बयान है कि जब **इमाम मेहदी**(अ.) का ज़हूर होगा तो तमाम मुसलमान ख़वास और अवाम ख़ुश व मसरूर हो जायेंगे। उनके कुछ वज़रा होंगे जो आपके अहकाम पर लोगों से अमल कराएंगे।

(नुरूल अबसार, सफ़ा १५३, बहवाला फ़तूहाते मक्किया)

अल्लामा हल्बी का कहना है कि **असहाबे कहफ़** आपके वज़रा होंगे।

(सीरते हल्बिया)

हमूयनी का बयान है कि आपके जिस्म का साया न होगा।

(ग़ायत अल मक़सूद जिल्द २, सफ़ा १५०)

हज़रत अली(अ.) का फ़रमाना है कि अनसार व असहाब **इमाम मेहदी**(अ.), ख़ालिस अल्लाह वाले होंगे। (अर हज्जुल मतालिब सफ़ा ४६६) और आपके गिर्द इस तरह लोग जमा हो जायेंगे जिस तरह शहद की मक्खी अपने " **यासूब** " बादशाह के गिर्द जमा हो जाती हैं। (अर हज्जुल मतालिब सफ़ा ४६६)

एक रवायत में है कि ज़हूर के बाद आप सबसे पहले कूफ़े तशरीफ़ ले जायेंगे। और वहां के कसीर अफ़राद क़त्ल करेंगे।

इमाम मेहदी(अ.) का सिने ज़हूर :- ख़ल्लाक़े आलम ने पांच चीज़ों का इल्म अपने लिये मख़सूस रखा है जिनमें एक क़यामत भी है। (क़ुरआने मजीद) ज़हूरे इमाम मेहदी (अ.) चूंकि लाज़मए क़यामत से है लेहाज़ा इसका इल्म भी ख़ुदा ही को है कि आप कब ज़हूर फ़रमायेंगे। कौन सी तारीख़ होगी, कौन सा सन् होगा। ताहम अहादीसे मासूमीन जो इल्हाम और क़ुरआन से मुसतम्बित होती हैं उनमें इशारे मौजूद हैं। अल्लामा शेख़ मुफ़ीद, अल्लामा सय्यद अली, अल्लामा तबरेसी, अल्लामा शिब्लन्जी, रक़म तराज़ हैं कि हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.) ने इसकी वज़ाहत फ़रमाई है। कि आप ताक़ सन् मे ज़हूर फ़रमायेंगे। जो १, ३, ५, ७, ९ से मिल कर बनेगा। मसलन १३००, १५००, १७००, १९००, या १०००, ३०००, ५०००, ७०००, ९०००, इसी के साथ ही साथ आपने फ़रमाया है कि आपके इस्मे गेरामी का एलान बज़रिए जनाबे जिब्रईल(अ.) २३ तारीख़ को कर दिया जायेगा और ज़हूर यौमे आशूरा होगा। जिस दिन इमाम हुसैन(अ.) ब मुक़ामे करबला शहीद हुये हैं।

(शरह इरशाद मुफ़ीद, सफ़ा ५३२, ग़ायतुल मक़सूद जिल्द १,सफ़ा १६१, आलाम अल वरा सफ़ा २६२, नूरूल अबसार, सफ़ा १५५)

मेरे नज़दीक ज़िल्हिज्जा की २३, तारीख़ होगी क्योंकि नफ़से ज़किया के क़त्ल और ज़हूर में १५, रातों का फ़ासला होना मुसल्लम है। इमकान है कि क़त्ले नफ़से ज़किया के बाद ही नाम का एलान कर दिया जाय। फिर उसके बाद ज़हूर हो।

मुल्ला जव्वाद साबाती का कहना है कि इमाम मेहदी(अ.) यौमे जुमा बवक़्ते सुबह बतारीख़ १० मोहर्रमुल हराम, ७१००, हिजरी में ज़हूर फ़रमायेंगे।

(ग़ायतुल मक़सूद, सफ़ा १६१, ब हवाला बराहीने साबतीया)

इमाम जाफ़रे सादिक़(अ.) का इरशाद है कि इमाम मेहदी (अ.) का ज़हूर बवक़्ते अस्र होगा और वही असराया "**वल अस्र अनल इन्सान नफ़ी ख़सरिन**" से मुराद है।

शाह नेमत अल्लाह वली काज़मी अल मतूफ़ी ८२७, हिजरी (मजालिसे मोमेनीन,सफ़ा २७६) जो शायर होने के अलावा आलिम और मुनज्जिम भी थे। आपको इल्मे जफर में भी दख़्ल था। आपने अपनी मशहूर पेशीन गोई में १३८०, हिजरी का हवाला दिया है। जिसका ग़ल्त होना साबित है क्योंकि १३९३, हिजरी है। (वल इल्म इन्दल्लिाह)

(क़यामत नामा क़ुदवतुल मोहद्देसीन शाह रफ़ीउद्दीन, सफ़ा ३८)

ज़हूर के वक़्त इमाम(अ.) की उम्र :- यौमे विलादत से ताबा ज़हूर आपकी क्या उम्र होगी? इसे तो ख़ुदा ही जाने, लेकिन यह मुसल्लेमात से है कि जिस वक़्त आप ज़हूर फ़रमायेंगे मिसले हज़रते ईसा(अ.) आप चालीस साला जवान की हैसियत में

होंगे। (आलाम अल वरा, सफ़ा २६५, व ग़ायतुल मक़सूद, सफ़ा ७६, सफ़ा ११६)

आपका झन्डा :- हज़रत इमाम मेहदी(अ.) के झन्डे पर **" अल बैतुल्लाह "** लिखा होगा और आप अपने हाथों पर खुदा के लिये बैयत लेंगे और कायनात में सिर्फ़ दीने इस्लाम का परचम लहरायेगा।

(नेबुल मोवद्‌दता, सफ़ा ४३४)

ज़हूर के बाद

ज़हूर के बाद **हज़रत इमाम मेहदी**(अ.) काबे की दीवार से टेक लगा कर खड़े होंगे। अब्र का साया आपके सरे मुबारक पर होगा। आसमान से आवाज़ आती होगी " यही इमाम मेहदी(अ.) हैं " इसके बाद आप एक मिम्बर पर जलवा अफ़रोज़ होंगे। जोगों को खुदा की तरफ़ दावत देंगे और दीने हक़ की तरफ़ आने की सबको हिदायत फ़रमायेंगे। आपकी तमाम सीरत पैग़म्बरे इस्लाम की सीरत होगी, और उन्हीं के तरीक़े पर अमल पैरा होंगे। अभी आप का खुतबा जारी होगा कि आसमान से जिब्रईल और मीकाईल आ कर बैयत करेंगे। फिर मलाएकए आसमानी की आम बैयत होगी। हज़ारों मलाएका की बैयत के बाद वह ३१३, मोमेनीन बैयत करेंगे। जो आपकी ख़िदमत में हाज़िर हो चुके होंगे। फिर आम बैयत का सिलसिला शुरू होगा। दस हज़ार अफ़राद की बैयत के बाद आप सबसे पहले कूफ़े तशरीफ़ ले जायेंगे, और दुशमनाने आले मोहम्मद का क़ला क़मा करेंगे। आपके हाथ में असाए मूसा होगा। जो अज़दहे का काम करेगा और तलवार हेमाएल होगी।

(अयनुल हयात मजलिसी, सफ़ा ६२)

तवारीख़ में है कि जब आप कूफ़े पहूचेंगे तो कई हज़ार का एक गिरोह आपकी मुख़ालफ़त के लिये निकल पड़ेगा, और कहेगा हमें बनी फ़ातमा की ज़रूरत नहीं ,आप वापस जाइये। यह सुन कर तलवार से उन सबका क़िस्सा पाक कर देंगे और किसी को भी ज़िन्दा न छोड़ेंगे। जब कोई भी दुश्मने आले मोहम्मद और मुनाफ़िक़ वहां बाक़ी न रहेगा तो आप एक मिम्बर पर तशरीफ़ ले जायेंगे, और वाक़िए करबला का ज़िक्र करेंगे। यानी मजलिसे हुसैन(अ.) पढेंगे। उस वक़्त लोग महवे गिरया हो जायेंगे, और कई घन्टे तक रोने का सिलसिला जारी रहेगा। फिर आप हुक्म देंगे कि मशहदे हुसैन(अ.) तक नहरे फ़रात काट कर लाई जाये, और एक मस्जिद की तामीर की जाये। जिसके एक हज़ार दर हों। चुनान्चे ऐसा ही किया जायगा। इसके बाद आप ज़्यारते सरवरे कायनात के लिये मदीनए मुनव्वरा तशरीफ़ ले जायेंगे। (आलाम अलवरा, सफ़ा २६३, इरशाद मुफ़ीद, सफ़ा ५३२, नूरूल

अबसार, सफ़ा १५५)।

कुदवतुल मोहद्दिसीन शाह रफ़ीउद्दीन रक़म तराज़ हैं कि हज़रत इमाम मेहदी(अ.) जो इल्मे लदुन्नी से भर पूर होंगे। जब मक्के से आपका ज़हूर होगा और उस ज़हूर की शोहरत अतराफ़ व अकनाफ़े आलम में फैलेगी तो अफ़वाज मदीना व मक्का आपकी ख़िदमत में हाज़िर होंगी और शाम व ईराक़ व यमन के अब्दाल और औलिया ख़िदमत शरीफ़ में हाज़िर होंगे, ओर अरब की फ़ौजें जमा हो जायेंगी। आप उन तमाम लोगों को उस ख़ज़ाने से माल देंगे जो काबे से बरामद होगा, और मुक़ामे ख़ज़ाना को " ताजुल काबा " कहते होंगे। इसी असना में एक शख़्स ख़ुरासानी अज़ीम फ़ौज लेकर हज़रत की मदद के लिये मक्के मोअज़्ज़ेमा को रवाना होगा। रास्ते में इस लशकरे ख़ुरासानी के मुक़द्देमा अल जैश के कमान्डर मन्सूर से नसरानी फ़ौज की टक्कर होगी, और ख़ुरासानी लशकर नसरानी फ़ौज को पसपा करके हज़रत की ख़िदमत में पहुँच जायेगा।

इसके बाद एक शख़्स सुफ़ियानी जो बनी कल्ब से होगा हज़रत से मुक़ाबले के लिये लशकरे अज़ीम इरसाल करेगा। लैकिन बहुक्मे ख़ुदा जब वह लशकरे मक्कए मोअज़्ज़ेमा और काबए मुनव्वरा के दरमियान पहुँचेगा और पहाड़ में क़याम करेगा जो ज़मीन में वहीं धंस जायेगा। फिर सुफ़ियानी जो दुश्मने आले मोहम्मद होगा। नसारा से साज़ बाज़ करके इमाम मेहदी(अ.) से मुक़ाबले के लिये ज़बर दस्त फ़ौज फ़राहम करेगा। नसरानी और सुफ़ियानी फ़ौज के अस्सी निशान होंगे और निशान के नीचे १२,००० की फ़ौज होगी। उनका दारूल ख़िलाफ़ा शाम होगा। हज़रत इमाम मेहदी(अ.) भी मदीनए मुनव्वरा होते हुये जल्द से जल्द शाम पहुँचेंगे। जब आपका वरूदे मसऊद दमिशक़ में होगा तो दुश्मने आले मोहम्मद और सुफ़ियानी और दुशमने इस्लाम नसरानी आपसे मुक़ाबले के लिये सफ़ आरा होंगे। इस जंग में फ़रीक़ैन के बे शुमार अफ़राद क़त्ल होंगे। बिल आख़िर इमाम (अ.) का फ़तेह कामिल होगी, और एक नसरानी भी ज़मीने शाम पर बाक़ी न रहेगा। उसके बाद इमाम(अ.) अपने लशकरियों में इनाम तक़सीम करेंगे और उन मुसलमानों को मदीनए मुनव्वरा से वापस बुला लेंगे। जो नसरानी बादशाह के ज़ुल्म व जौर से आजिज़ आकर शाम से हिजरत कर गये थे। (क़यामत नामा, सफ़ा ४)

इसके बाद आप मक्कए मोअज़्ज़ेमा वापस तशरीफ़ ले जायेंगे, और मस्जिदे सहला में क़याम फ़रमायेंगे। (इरशाद, सफ़ा ५३३)

इसके बाद मस्जिदुल हराम को अज़ सरे नो बनायेंगे और दुनिया की तमाम मसाजिद को शरई उसूल पर कर देंगे, हर बितअत को ख़त्म कर देंगे, और हर सुन्नत को क़ाएम करेंगे। निज़ामे आलम दुरूसत करेंगे, और शहरों में फ़ौजें इरसाल करेंगे। इन्सेराम व इन्तेज़ाम के लिये वज़रा रवाना होंगे। (आलाम अल वरा, सफ़ा २६२,, सफ़ा २६४)

इसके बाद आप मोमनीन, कामेलीन, और काफ़रीन को ज़िन्दा करेंगे और इस

532

ज़िन्दगी का मक़सद यह होगा कि मोमनीन इस्लामी उरूज से खुश हों, और काफ़ेरीन से बदला लिया जाय। इन ज़िन्दा किये जाने वालों में क़ाबील से लेकर उम्मते मोहम्मदिया के फ़राना तक ज़िन्दा किये जायेंगे, और उनके किये का पूरा पूरा बदला उन्हें दिया जायेगा। जो जो ज़ुल्म उन्हीं ने किये। उनका मज़ा चखेंगे। ग़रीबों मज़लूमों और बे कसों पर जो ज़ुल्म हुआ है उसकी, ज़ालिम को सज़ा दी जायेगी। सबसे पहले जो वापस लाया जायेगा वह यज़ीद बिन माविया मलऊन होगा, और इमाम हुसैन(अ.) तशरीफ़ लायेंगे। (ग़ायत अल मक़सूद)

दज्जाल और उसका खुरूज :- दज्जाल दजल से मुश्तक़ है(बना है) जिसके मानी फ़रेब के हैं। इसका असल नाम **साएफ़,** बाप का नाम **साएद,**माँ का नाम **काहेता** उर्फ़ **क़तामा** है। यह अहदे रिसालत माआब(स.) में बमक़ामे **तीहा** जो मदीनए मुनव्वरा से तीन मील के फ़ासले पर वाक़े है। चहार शम्बे के दिन बवक़्ते ग़ुरूबे आफ़ताब पैदा हुआ है। पैदाईश के बाद आन्न फ़ान्न बढ़ रहा था। उसकी दाहिनी आँख फूटी थी और बाई आँख पेशानी पर चमक रही थी। वह चन्द दिनों में काफ़ी बढ़ कर दावाए ख़ुदाई करने लगा। सरवरे कायनात(स.) जो हालात से बराबर मुत्तला हो रहे थे। उन्होंने सलमाने फ़ारसी और चंद असहाब को लिया और बमक़ामे **तीहा** जाकर उसको तबलीग़ करना चाही, उसने बहुत बुरा भला कहा और चाहा कि हज़रत पर हमला कर दे, लेकिन आपके असहाब ने मदाफ़ेअत की, आपने उससे यह फ़रमाया था कि ख़ुदाई का दावा छोड़ दे और मेरी नबूवत को मान ले। उलेमा ने लिखा है कि दज्जाल की पेशानी पर ब ख़त्ते यज़दानी **" अल काफ़िर बिल्लाह "** लिखा हुआ था, और आँख के ढेले पर भी **(काफ़, फ़े, रे)** मरक़ूम था। ग़रज़कि आपने वहां से मदीनए मुनव्वरा वापस तशरीफ़ लाने का इरादा किया। दज्जाल ने एक संगे गरां (बहुत बड़ा पत्थर) जो पहाड़ के मानिन्द था। हज़रत की राह में रख दिया। यह देख कर हज़रत जिब्रईल(अ.) आसमान से आये और उसे हटा दिया। अभी आप मदीने पहुँचे ही थे कि दज्जाल लशकरे अज़ीम लेकर मदीने के क़रीब जा पहुँचा। हज़रत ने बारगाहे अहदियत में अर्ज़ की, ख़ुदाया इसे उस वक़्त तक के लिये महबूस कर दे, जब तक इसे ज़िन्दा रखना मक़सूद है। इसी दौरान में जनाबे जिब्रईल आये और उन्होंने दज्जाल की गर्दन को पुश्त की तरफ़ से पकड़ कर उठा लिया और उसे ले जाकर जज़ीरए तबरिस्तान में महबूस(क़ैद) कर दिया। लतीफ़ा यह है कि जिब्रईल उसे ले कर जाने लगे तो उसने ज़मीन पर दोनों हाथ मार कर तहतुल शरह तक की दो मुठ्ठी खाक ले ली और उसे तबतिरस्तान में डाल दिया। जिब्रईल ने सरवरे कायनात(स.) के जवाब में कहा कि आपकी वफ़ात से ९७० साल बाद यह ख़ाक आलम में फैले गी, और उसी वक़्त से आसारे क़यामत शुरू हो जायेंगे। (ग़ायतल मक़सूद, सफ़ा ६४, इरशाद अल तालेबैन सफ़ा ३९४)

पैग़म्बरे इस्लाम का इरशाद है कि दज्जाल को महबूस होने के बाद तमीम दारमी ने जो पहले नसरानी था जज़ीरए तबरिस्तान में ब चश्मे खुद देखा है। उसकी मुलाक़ात की

तफ़सील किताब सहाह अल मसाबिह, ज़हरतुल रियाज़, सही बुख़ारी, सही मुस्लिम में मौजूद है।

ग़रज़कि अकसर रवायात के मुताबिक़ दज्जाल हज़रत इमाम मेहदी(अ.) के ज़हूर फ़रमाने के १८, यौम बाद खुरूज करेगा। (मजमऊल बहरैन, सफ़ा ५६०, व ग़ायतल मक़सूद, जिल्द २, सफ़ा ६६) ज़हूरे इमाम और खुरूजे दज्जाल से पहले तीन साल तक सख़्त कहत पड़ेगा। पहले साल एक बटे तीन बारिश और एक बटे तीन ज़राएत ख़त्म हो जायेगी। दूसरे साल आसमान व ज़मीन की बरकत व रहमत ख़त्म हो जायेगी। तीसरे साल बिल्कुल बारिश न होगी, और सारी दुनिया वाले मौत की आग़ोश में पहुँचने के क़रीब हो जायेंगे। दुनिया ज़ुल्म व जौर, इज़्तेराब व परेशानी से बिल्कुल पुर होगी। इमाम मेहदी (अ.) के ज़हूर के बाद १८ ही दिन में कायनात निहायत अच्छी सतह पर पहुँची हो गी। कि नागाह दज्जाल मलऊन के खुरूज का गुलगुला उठेगा। वह ब रवायत अख़वन्द दरवीज़ा हिन्दोस्तान के एक पहाड़ पर नमूदार होगा और वहां से बा आवाज़े बलन्द कहेगा। “ मैं खुदाए बुज़ुर्ग हूँ ” मेरी इताअत करो। यह आवाज़ मशरिक़ व मग़रिब में पहूँचेगी। उसके बाद ३, यौम या ब रवायत ४०, यौम इसी मुक़ाम पर रह कर लशकर तय्यार करेगा। फिर शाम व ईराक़ होता हुआ अस्फ़हान के एक क़रये “ **यहूदिया** ” से खुरूज करेगा। उसके हमराह बहुत बड़ा लशकर होगा। जिसकी तादाद ७०,००,०००(सत्तर लाख) मरकूम है। जिन, देव, परी, शैतान इनके अलावा होंगे। वह एक गदहे पर सवार होगा। जो अबलक़ रंग का होगा। उसके जिस्म का बालाई हिस्सा सुर्ख़, हाथ पाँव ताज़ा नौ सियाह उसके बाद से सुम तक सफ़ैद होगा। उसके दोनों कानों के दरमियान ४०, मील का फ़ासला होगा। वह २१, मील ऊँचा और ६० मील लम्बा होगा। उसका हर क़दम एक मील का होगा। उसके दोनों कानों में ख़लके कसीर बैठी होगी। चलने में उसके बालों से हर क़िसम के बाजों की आवाज़ आयेगी। वह उसी गदहे पर सवार होगा। सवारी के बाद जब वह रवाना होगा। तो उसके दाहिने तरफ़ एक पहाड़ होगा जो हमराह चलता रहेगा। उसमें नहरें, मेवा जात, और हर क़िस्म की नेमतें होंगी, और बाईं जानिब एक पहाड़ होगा जिसमें हर क़िस्म के साँप बिच्छू होंगे। वह लोगों को उन्हीं चीज़ों के ज़रिये से बहकायेगा और कहेगा कि मैं खुदा हूँ। जो मेरा हुक्म मानेगा जन्नत में रखूंगा जो न मानेगा उसे जहन्नम में डाल दूँगा। इसी तरह चालीस दिन में सारी दुनिया का चक्कर लगा कर और सबको बहका कर इमाम मेहदी (अ.) की इस्कीम को नाकामयाब बनाने की सई कोशिश में ख़ानए काबा को गिराना चाहेगा, और एक अज़ीम लशकर भेज कर काबे और मदीने को तबाह करने पर मामूर करेगा।, और खुद कूफ़े के लिये रवाना होगा। उसका मक़सद यह होगा कि कूफ़ा जो इमाम मेहदी (अ.) की आमाजगाह है उसे तबाह करदे। “ **चूँ आन लईन नज़दीक कूफ़ा बरसदे इमाम मोहम्मद मेहदी(अ.) बइसतेसाले ओ बरसद** ” लेकिन खुदा का करना देखिये कि जब वह

कूफ़े के क़रीब पहूँचेगा। तो हज़रत इमाम मेहदी(अ.) ख़ुद वहां पहुँच जायेंगे और उसे ब हुक्मे ख़ुदा बीख़ो बुन(जड़) से उखाड़ देंगे। ग़रज़कि घमसान की जंग होगी, और शाम तक फैले हुये लशकर पर इमाम मेहदी(अ.) ज़बरदस्त हमले करेंगे। बिल आख़िर वह मलऊन आपकी ज़रबों की ताब न लाकर शाम के मक़ामे " **उक़बए रफ़ीक**." या बमक़ाम " **लुद** " जुमे के दिन तीन घड़ी दिन चढ़े मारा जायेगा। उसके मरने के बाद दस मील तक दज्जाल और उसके गदहे और लशकर का ख़ून ज़मीन पर जारी रहेगा। उलेमा का कहना है कि क़त्ले दज्जाल के बाद इमाम(अ.) उसके लशकरियों पर एक ज़बरदस्त हमला करेंगे, और सबको क़त्ल कर डालेंगे। उसे जो काफ़िर ज़मीन के किसी हिस्से में छुपेगा, वह आवाज़ देगा कि फ़लां काफ़िर यहां छुपा हुआ है। इमाम (अ.) उसे क़त्ल कर देंगे। आख़िर कार ज़मीन पर कोई दज्जाल का मान्ने वाला न रहेगा।

(इरशाद अल तालेबैन, सफ़ा ३६७) ग़ायतल मक़सूद, जिल्द २,सफ़ा ७१ ऐनुल हयात सफ़ा १२६, किताब अल वसाएल, सफ़ा १८१, क़यामत नामा, सफ़ा ७, माअरफ़ुल मिल्लता, सफ़ा ३२८, सही मुस्लिम, लम्आते शरह मिशक़ात अब्दुल हक़, मरक़ात, शरह मिशक़ात, मजमेउल बेहार)

बाज़ रवायात में है कि दज्जाल को हज़रते ईसा(अ.) बहुक्मे हज़रते मेहदी (अ.) क़त्ल करेंगे।

नुज़ूले हज़रते ईसा(अ.) :- हज़रत इमाम मेहदी(अ.)सुन्न्त के क़ाएम करने और बिदअत के मिटाने नीज़ इनसेराम व इन्तेज़ामे आलम में मशग़ूल व मसरूफ़ होंगे कि एक दिन नमाज़े सुबह के वक़्त बरवायते नमाज़े अस्र के वक़्त हज़रते ईसा (अ.) दो फ़रिशतों के कंधों पर हाथ रखे हुये दमिशक़ की जामे मस्जिद के मिनारए शरक़ी पर नुज़ूल फ़रमायेंगे। हज़रत इमाम मेहदी(अ.) उनका इस्तेक़बाल करेंगे, और फ़रमायेंगे कि आप नमाज़ पढ़ाइये। हज़रते ईसा कहेंगे कि यह नामुमकिन है। नमाज़ आपको पढ़ानी होगी। चुनान्चे हज़रत इमाम मेहदी(अ.) इमामत करेंगे और हज़रते ईसा(अ.) उनके पीछे नमाज़ पढ़ेंगे, और उनकी तसदीक़ करेंगे। (नूरूल अबसार, सफ़ा १५४, ग़ायत अल मक़सूद सफ़ा १०४ से १५४, बहवालए मुस्लिम व इब्ने माजा, मिशकात, सफ़ा ४५८) उस वक़्त हज़रते ईसा(अ.) की उम्र चालीस साला नौजवान जैसी होगी। वह इस दुनिया में शादी करेंगे और उनके दो लड़के पैदा होंगे। एक का नाम अहमद और दूसरे का नाम मूसा होगा।

(असआफ़ुल राग़ीबैन, बर हाशिया नुरूल अबसार, सफ़ा १३५, क़यामत नामा, सफ़ा ६ बहवालए किताबुल वफ़ा इब्ने जोज़ी व मिशकात, सफ़ा ४६५, व सिराजुल क़ुलूब,सफ़ा ७७)

इमाम मेहदी(अ.) और ईसा इब्ने मरियम का दौरा

इसके बाद **हज़रत इमाम मेहदी**(अ.) और हज़रते ईसा(अ.) बलाद मुमालिक का दौरा करने और हालात का जायज़ा लेने के लिये बरामद होंगे, और दज्जाल मलऊन के पहुँचाये हुये नुक़सानात और उसके पैदा किये हुये बदतरीन हालात को बेहतरीन सतह पर लायेंगे। हज़रते ईसा(अ.) ख़न्ज़ीर को क़त्ल करने, सलीबों को तोड़ने और लोगों के इस्लाम क़ुबूल करने का इन्सेराम व बनदोबस्त फ़रमायेंगे। अदले मेहदवी से बलादे आलम में इस्लाम का डंका बजेगा और ज़ुल्म व सित्म का तख़्ता तबाह हो जायेगा।

(क़यामत नामा, क़ुदवतुल मोहद्देसीन सफ़ा ८, बहवाला सही मुस्लिम)

हज़रत इमाम मेहदी (अ.) का क़ुस्तुनतुनया को फ़तेह करना

रवायत में है कि इमाम मेहदी(अ.) क़ुसतुनतुनया, चीन, और जबले देलम को फ़तेह करेंगे। यह वही क़ुसतुनतुनया है जिसे अस्तम्बोल कहते हैं और जिस पर उस ज़माने में नसारा का क़बज़ा होगा, और उनका क़बज़ा भी मुसलमान बादशाह को क़त्ल करने के बाद होगा। चीन और जबले देलम पर भी नसारा का क़बज़ा होगा और वह हज़रत इमाम मेहदी(अ.) से मुक़ाबले का पूरा इन्तेज़ाम करेंगे। " **चीन** " जिसको अरबी में " **सीन** " कहते हैं इसके बारे में रवायत के हवाले से अल्लामा तरही ने मजमउल बहरैन के सफ़ा ,६१५ में लिखा है कि **सीन**(१) एक पहाड़ी है। (२) मशरिक़ में एक ममलेकत है। (३) कूफ़े में एक मौज़ा है। पता यह चलता है कि सारी चीज़ें फ़तह की जायेंगी। इनके अलावा सिन्ध और हिन्द के मकानात की तरफ़ भी इशारा है। बहर हाल इमाम मेहदी(अ.) शहरे **क़ुसतुनतुनया** को फ़तह करने के लिये रवाना होंगे और उनके हमराह जो सत्तर हज़ार बनू इस्हाक़ के नौजवान होंगे उन्हें दरियाये रोम के किनारे शहर में जाकर उसे फ़तह करने का हुक्म होगा। जब वह वहाँ पहुँच कर फ़सील के किनारे नारए तकबीर लगायेंगे तो ख़ुद बख़ुद रास्ता पैदा हो जायेगा, और यह दाख़िल होकर उसे फ़तेह कर लेंगे। कुफ़्फ़ार क़त्ल होंगे और उस पर पूरा पूरा क़बज़ा हो जायेगा।

(नूरूल अबसार , सफ़ा १५५ बहवालए तबरानी, ग़ाएतल मक़सूद, जिल्द १, सफ़ा १५२, बहवालए अबू नईम, अलाम अल वरा, बहवालए इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.) सफ़ा २६४, क़यामत नामा बहवालए सही मुस्लिम)

याजूज माजूज और उनका ख़ुरूज

क़यामते सुग़रा यानी ज़हूरे आले मोहम्मद और क़यामते कुबरा के दरमिया दज्जाल के बाद **याजूज** और **माजूज** का ख़ुरूज होगा यह सद्दे सिकन्दरी से निकल क सारे आलम में फैल जायेंगे और दुनिया के अमनो अमान को तबाह व बरबाद कर देने ग पूरी कोशिश करेंगे।

याजूज, माजूज हज़रते नूह(अ.) के बेटे याफ़िस की औलाद से हैं। यह दोन चार सौ क़बीलों और उम्मतों के सरदार और सरबर आवुरदा हैं। उनकी क़सरत का को अन्दाज़ा नहीं लगाया जा सकता। मख़लूक़ात में मलाएका के बाद उन्हें कसरत दी गई है इनमें कोई ऐसा नहीं जिसके एक एक हज़ार औलाद न हो।यानी यह उस वक़्त मरते ह नहीं जब तक एक हज़ार बहादुर पैदा न करलें। यह तीन क़िसम के लोग हैं। एक वह ज ताड़ से ज़्यादा लम्बे हैं, दूसरे वह जो लम्बे और चौड़े बराबर हैं जिनकी मिसाल बहुत बड़ हाथी से दी जा सकती है। तीसरे वह जो अपना एक कान बिछाते और दूसरा ओढ़ते हैं इनके सामने लोहा, पत्थर, पहाड़ तो कोई चीज़ नहीं है। यह हज़रते नूह(अ.) के ज़माने म दुनिया के आख़िर में उस जगह पैदा हुये हैं। जहां से पहले पहल सूरज ने तुलउ किया था ज़मानए फ़ितरत से पहले यह लोग अपनी जगह से निकल पड़ते थे और अपने क़रीब क सारी दुनिया को खा, पी जाते थे। यानी हाथी, घोड़ा, ऊँट, इन्सान,जानवर, खेती बाड़ ग़रजकि जो कुछ सामने आता था सबको हज़्म कर जाते थे। वहां के लोग उनसे सख़्त तंग आकर आजिज़ थे। यहां तक कि ज़मानए फ़ितरत में हज़रते ईसा(अ.) के बाद बरवाएत जब " **ज़ुलक़रनैन** " उस मंज़िल तक पहुँचे तो उन्हें वहां का सारा वाक़िया मालूम हुआ और वहां की मख़लूक़ ने उनसे दरख़्वास्त की कि हमें इस बलाए बे दरमा **याजूज, माजूज** से बचाइये। चुनान्चे उन्होंने दो पहाड़ों के उस दरमियानी रास्ते को जिससे वह आया करते थे बहुक्मे ख़ुदा लोहे की दीवार से जो दौ सौ (२००) गज़ ऊँची और पचास या साठ (५० या ६०) गज़ चौड़ी थी बन्द कर दिया। इसी दीवार को " **सद्दे सिकन्दरी** " कहते हैं। क्योंकि " **ज़ुलक़रनैन** " का असल नाम सिकन्दरे आज़म था। सद्दे सिकन्दरी के लग जाने के बाद उनकी ख़ूराक़ साँप क़रार दी गई। जो आसमान से बरसते हैं। यह ता बा ज़हूर इमाम मेहदी(अ.) इसी में महसूर रहेंगे। उनका उसूल और तरीक़ा यह है कि यह लोग अपनी ज़बान से सद्दे सिकन्दरी को सारी रात चाट कर काटते हैं। जब सुबह होती है और धूप लगती है तो हट जाते हैं। फिर दूसरी रात कटी हुई दीवार भी पुर हो जाती है, और वह फिर उसे काटने में लग जाते हैं। बहुक्मे ख़ुदा यह लोग इमाम मेहदी(अ.) के ज़माने में ख़ुरूज करेंगे दीवार कट जायेगी और यह निकल पड़ेंगे। उस वक़्त का आलम यह होगा

कि यह लोग अपनी सारी तादाद समैत सारी दुनिया में फैल कर निज़ामे आलम को दरहम बरहम करना शुरू कर देंगे। लाखों जानें ज़ाया होंगी, और दुनिया की कोई चीज़ ऐसी बाक़ी न रहेगी जो खाई और पी जा सके, और यह उस पर तसर्रूफ़ न करें। यह बला के जंगजू लोग होंगे। दुनिया को मार कर खा जायेंगे, और अपने तीर आसमान की तरफ़ फेंक कर आसमानी मख़लूक़ को मारने का हौसला करेंगे, और जब उधर से ब हुक्मे ख़ुदा तीर ख़ून आलूद आयेगा तो यह बहुत ख़ुश होंगे, और आपस में कहेंगे कि अब हमारा इक़्तेदार ज़मीन से बलन्द होकर आसमान पर पहुँच गया है। इसी दौरान में हज़रत इमाम मेहदी (अ.) की बरकत और हज़रते ईसा(अ.) की दुआ की वजह से ख़ुदा वन्दे आलम एक बीमारी भेज देगा। जिसको अरबी में **"नग़फ़"** कहते हैं। यह बीमारी नाक से शुरू होकर ताऊन की तरह एक ही शब में उन सबका काम तमाम कर देगी। फिर उनके मुरदार को खाने के लिये **"उन्क़ा"** नामी ताएर पैदा होगा। जो ज़मीन को उनकी गनदगी से साफ़ कर देगा, और इन्सान उनके तीरो कमान और क़ाबिले सोख़तनी आलाते हर्ब (लड़ाई के असलहों) को सात साल तक जलायेंगे।

(तफ़सीरे साफ़ी, सफ़ा२७८, मिशकात, सफ़ा ३६६, सही मुस्लिम, तिरमिज़ी, इरशाद अल तालेबैन, सफ़ा ३९८, ग़ायतुल मक़सूद, जिल्द २, सफ़ा ७६, मजमुअल बहरैन, सफ़ा ४६६, क़यामत नामा, सफ़ा, ८)

इमाम मेहदी(अ.) की मुद्दते हुकूमत और ख़ातमए दुनिया

हज़रत इमाम मेहदी(अ.) का पाए तख़्त शहरे कूफ़ा होगा। मक्के में आपके नाएब का तक़र्रूर होगा। आपका दीवान ख़ाना और आपके इजराए हुक्म की जगह मस्जिदे कूफ़ा होगी। बैतुल माल, **मस्जिदे सहला** क़रार दी जायेगी, और ख़िलवत कदा नजफ़े अशरफ़ होगा।

(हक़्क़ुल यक़ीन, सफ़ा १४५)

आपके अहदे हुकूमत में मुकम्मल अमनो सुकून होगा। बकरी और भेड़, गाय और शेर, इन्सान और साँप, ज़म्बील और चूहे सब एक दूसरे से बेख़ौफ़ होंगे। (दुरे मनशूर, सियोती, जिल्द ३, सफ़ा २३) मआसी का इरतेकाब बिलकुल बन्द होगा। तमाम लोग पाक बाज़ हो जायेंगे। जेहल, जबन, बुखल काफ़ूर हो जायेंगे। आजिज़ों, ज़ईफ़ों की दाद रसी होगीं ज़ुल्म दुनिया से मिट जायेगा। इस्लाम के क़ालिब बे जान में-रूहे ताज़ा पैदा हो जायेगी। दुनिया के तमाम मज़हाहिब ख़त्म हो जायेंगे, न ईसाई होंगे न यहूदी न कोई और मसलक होगा। सिर्फ़ इस्लाम होगा,और उसी का डंका बजता होगा। आप दावत बिल सैफ़ देंगे। जो

आपके ख़िलाफ़ होगा कत्ल कर दिया जायेगा। जज़िया मौकूफ़ होगा। ख़ुदा की जानिब से शहर अकाके हरे भरे मैदान में मेहमानी होगी, सारी कायनात मसर्रतों से ममलूह होगी। ग़रज़कि अदलो इन्साफ़ से दुनिया भर जायेगी। दुनिया के तमाम मज़लूम बुलाये जायेंगे और उन पर ज़ुल्म करने वाले हाज़िर किये जायेंगे। हत्ता कि आले मोहम्मद(स.) तशरीफ़ लायेंगे।, और उन पर ज़ुल्म के पहाड़ तोड़ने वाले बुलाये जायेंगे। हज़रत इमाम (अ.) मज़लूम की दाद रसी फ़रमायेंगे, और ज़ालिम को कैफ़रो किरदार तक पहुँचायेंगे। हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा (स.) इन तमाम उमूर में निगरानी का फ़रीज़ा अदा फ़रमाने के लिये जलवा अफ़रोज़ होंगे। इसी दौरान में हज़रते ईसा(अ.) अपनी साबेक़ा अरज़ी ३३, साला ज़िन्दगी मं ७, साला मौजूदा अरज़ी ज़िन्दगी का इज़ाफ़ा करके चालीस साल की उम्र में इन्तेक़ाल कर जायेंगे, और आपको रौज़ए हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा(स.) में दफ़न कर दिया जायेगा। (हाशिए मिशक़ात, सफ़ा ४६३, सिराज अल कुलूब, सफ़ा ७७, अजाएबुल क़सस,सफ़ा २३)

इसके बाद **हज़रत इमाम मेहदी**(अ.) की हुकूमत का ख़ात्मा हो जायेगा, और हज़रत अमीरुल मोमेनीन निज़ामे कायनात पर हुक्मरानी करेगे। जिसकी तरफ़ क़ुरआने मजीद में " **दाबतुल अर्ज़** " से इशारा किया गया है। अब रह गया यह कि हज़रत इमाम मेहदी(अ.)की मुद्दते हुकूमत क्या होगी? इसके मुताअल्लिक़ सख़्त इख़्तेलाफ़ है। इरशाद मुफ़ीद के सफ़ा ५३३ में सात साल और सफ़ा ५३७ में १६, साल और आलाम अल वरा के सफ़ा ३६५ में १६, साल, मिशक़ात के सफ़ा ४६२ में ७, ८, ६ साल, नूरूल अबसार के सफ़ा १५४ में ७, ८, ६, १०, साल। ग़ायतुल मक़सूद जिलद २, सफ़ा १६२ में ब हवाला हुलयतुल औलिया ७,८,६, साल और नेयाबुल मोअद्दता शेख़ सुलेमान कन्दूज़ी बलख़ी के सफ़ा ४३३ में बीस(२०) साल मरकूम है। मैंने हालात हदीस, अक़वाले उलेमा, से इस्तेम्बात करके बीस साल को तरजीह दी है। हो सकता है कि एक साल दस साल के बराबर हों। (इरशाद मुफ़ीद सफ़ा ५३३, नुरूल अबसार, सफ़ा १५५) गरज़कि आपकी वफ़ात के बाद हज़रत इमाम हुसैन(अ.) आपको ग़ुसलो कफ़न देंगे और नमाज़ पढ़ा कर दफ़न फ़रमायेंगे। जैसा कि अल्लामा सय्यद अली बिन अब्दुल हमीद ने किताब अनवारूल मज़ीया में तहरीर फ़रमाया है। हज़रत इमाम मेहदी(अ.) के अहदे ज़हूर में क़यामत से पहले ज़िन्दा होने को रजअत कहते हैं। यह रजअत ज़रूरियाते मज़हबे इमामिया से है। (मजमुल बहरैन, सफ़ा, ४२२) इसका मतलब यह है कि ज़हूर के बाद ब हुक्मे खुदा शदीद तरीन काफ़िर और मुनाफ़िक और कामिल तरीन मोमनीन हज़रत रसूले करीम(स.), आइम्मए ताहेरीन,बाज़ अम्बियाए सलफ़ बराए इज़हार दौलते हक़्क़े मोहम्मदी दुनिया में पलट कर आयेंगे।

(तकलीफ़ अल मुकल्लेफ़ीन फी उसूल अल दीन, सफ़ा २५)

इसमें ज़ालिमों को ज़ुल्म का बदला और मज़लूमों को इन्तेक़ाम का मौक़ा दिया जायेगा। इस्लाम को इतना फ़रोग़ दिया जायेगा कि "लेज़हरा अल्ल दीने कुल्लह" दुनिया में सिर्फ़ एक

इस्लाम रह जायेगा। (मआरिफ़ अल मिल्लता अल नाजिया वल नारिया सफ़ा, ३८०)

इमाम हुसैन(अ.) का मुकम्मल बदला लिया जायेगा। (ग़ायतुल मक़सूद जिल्द १, सफ़ा १८६, बहवाला तफ़सीर अयाशी) और दुश्मनाने आले मोहम्मद(स.) को क़यामत में अज़ाबे अकबर से पहले रजअत में अज़ाबे अदना का मज़ा चखाया जायेगा।

(हक़्कुल यक़ीन,सफ़ा १४७, बहवाला क़ुरआने मजीद)

शैतान सरवरे कायनात(स.) के हाथों से नहरे फ़रात पर एक अज़ीम जंग के बाद क़त्ल होगा। आइम्मए ताहेरीन(अ.) के हर अहदे हुकूमत में अच्छे बुरे ज़िन्दा किये जायेंगे, और **हज़रत इमाम मेहदी**(अ.) के अहद में जो लोग ज़िन्दा होंगे उनकी तादाद चार हज़ार होगी।(ग़ायतल मक़सूद, जिल्द १, सफ़ा १७८) शोहदा को भीरजअत में ज़ाहेरी ज़िन्दगीदी जायेगी। ताकि उसके बाद जो मौत आये उससे आयत के हुक्म " **कुल्लो नफ़सिन ज़ाएक़तुल मौत** " की तकमील हो सके और उन्हें मौत का मज़ा नसीब हो जाये।

(ग़ायतुल मक़सूद जिल्द १, सफ़ा १७३)

इसी **रजअत** में बवादए क़ुरआनी आले मोहम्मद(स.) को हुकूमते आअम्मए आलम दी जायेगी, और ज़मीन का कोई गोशा न होगा। जिसपर आले मोहम्मद(स.) की हुकूमत न हो। इसके मुताअल्लिक़ क़ुरआने मजीद में " **इन्ना अरज़ यरशहा अबादिल सालेहून** " व " **नरीद अन नमन अल्ल लज़ीना असतज़ओफ़वानी अल अरज़ व नजअल हुम अल वारेसीन** " मौजूद है। (हक़्कुल यक़ीन, सफ़ा १४६)

अब रह गया यह कि कायनात की ज़ाहेरी हुकूमत व विरासत आले मोहम्मद (स.) के पास कब तक रहेगी। असके मुताअल्लिक़ एक रवायत आठ हज़ार (८,०००) साल का हवाला दे रही है, और पता यह चलता है कि अमीरल मोमेनीन(अ.) हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा(स.) के ज़ेरे निगरानी हुकूमत करेंगे, और दीगर आइम्मए ताहेरीन उनके वज़रा और सुफ़रा की हैसियत से मुमालिके आलम में इन्तेज़ाम व इन्सेराम फ़रमायेंगे।

एक रवायत में यह भी है कि हर इमाम अल्ल तरतीब हुकूमत करेंगे।

(हक़्कुल यक़ीन व ग़ायतुल मक़सूद)

हज़रत अली(अ.) के ज़हूर और निज़ामे आलम पर हुक्मरानी के मुताअल्लिक़ क़ुरआने मजीद में ब सराहत मौजूद है। इरशाद होता है।

" **अख़रजना लहुम दाबतन मिनल अर्ज़** " (पारा २०, रूकू १)

उलेमाए फ़रीक़ैन यानी शिया व सुन्नी का इत्तेफ़ाक़ है कि इस आयत से मुराद हज़रत अली(अ.) हैं। मुलाहेज़ा हो! मीज़ान अल एतेदाल, अल्लामा ज़ेहबी व मोआलिम अल तनज़ील अल्लामा बग़वी व हक़्कुल यक़ीन अल्लामा मजलिसी, व तफ़सीर, साफ़ी अल्लामा मोहसिन फ़ैज़ उसकी तरफ़ तौरैत में भी इशारा मौजूद है। (तज़किरतुल मासूमीन, सफ़ा २४६) आपका काम यह होगा कि आप ऐसे लोगों की तसदीक़ न करेंगे जो खुदा के

मुख़ालिफ़ और उसकी आयतों पर यक़ीन न रखने वाले होंगे। वह सफ़ा व मरवा के दरमियान से बरामद होंगे। उनके हाथ में हज़रत सुलैमान(अ.) की अंगूठी और हज़रते मूसा(अ.) का असा होगा। जब क़यामत क़रीब होगी तो आप असा व अंगुश्तरी से हर मोमिन व काफ़िर की पेशानी पर निशन लगायेंगे। मोमिन की पेशानी पर " हाज़ा मोमिन हक़ा " और काफ़िर की पेशानी पर " हाज़ा काफ़िर हक़ा " तहरीर हो जायेगा। मुलाहेज़ा हो ! (किताब इरशाद अल तालीबैन, अख़वन्द दरवेज़ा सफ़ा ४००, व क़यामत नामा, कुदवतुल मोहद्देसीन, अल्लामा रफ़ीउद्दीन सफ़ा, १०, अल्लामा बग़वी किताब मिशक़ात अल मसाबीह के सफ़ा ४६४ में तहरीर फ़रमाते हैं कि व अबतल अज़्र दोपहर के वक़्त निकलेगा, और जब इस दाबतुल अर्ज़ का अमल दरामद शुरू हो जायेगा तो बाबे तौबा बन्द हो जायेगा, और उस वक़्त किसी का ईमान लाना कारगर न होगा।

हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.) फ़रमाते हैं कि एक मरतबा हज़रत अली(अ.) मस्जिद में सो रहे थे, इतने में हज़रत रसूले करीम(स.) तशरीफ़ लाये और आपने फ़रमाया " **क़ुम या दाबतुल्लाह** " इसके बाद एक दिन फ़रमाया! " **या अली अज़ाकान अख़रज कुल्लाहा** " ऐ अली(अ.) जब दुनिया का अख़िरी ज़माना आयेगा, तो खुदा वन्दे आलम तुम्हें बरामद करेगा। उस वक़्त तुम अपने दुश्मनों की पेशानियों पर निशान लगाओगे। (मजमउल बहरैन,सफ़ा १२७)

आपने यह भी फ़रमाया, कि अली " **व अबता अल जन्नता** " हैं लुग़त में है कि दाबा के मानी पैरों से चलने वाले के हैं। (मजमउल बहरैन सफ़ा १२७)

कसीर रवायात से मालूम होता है कि आले मोहम्मद(स.) की हुक्मरानी जिसे साहेबे अर हज्जुल मतालिब ने बादशाही लिखा है। उस वक़्त तक क़ाएम रहेगी। जब तक दुनिया के ख़त्म होने में चालीस यौम बाक़ी रहेंगे। (इरशाद मुफ़ीद,सफ़ा १३७ व आलाम अल वरा, सफ़ा २६५) इसका मतलब यह है कि वह चालीस दिन की मुद्दत क़बरों से मुरदों के निकलने और क़यामते कुबरा के लिये होगी। हश्रो नश्र, हिसाबो किताब, सूर फूंकना और दीगर लवाज़िमे क़यामते कुबरा इसी में अदा होंगे। (आलम अल वरा, सफ़ा २६५)

इसके बाद हज़रत अली(अ.) लोगों को जन्नत का परवाना देंगे। लोग उसे लेकर **पुले सिरात** पर से गुज़रेंगे।

(सवाएक़े मोहर्रेक़ा, इब्ने हजर मक्की सफ़ा ७५, व इस्आफ़ुल राग़ेबीन, सफ़ा ७५, बर हाशिया नूरूल अबसार)

फिर आप हौज़े कौसर की निगरानी करेंगे। जो दुशमने आले मोहम्मद(स.)हौज़े कौसर पर होगा, उसे आप उठा देंगे। (अर हज्जुल मतालिब, सफ़ा ७६७)

फिर आप **"लवा अल हम्द"** यानी मोहम्मदी झन्डा लेकर जन्नत की तरफ़ चलेंगे। पैग़म्बरे इस्लाम(स.) आगे आगे होंगे। अम्बिया और शोहदा व सालेहन और दीगर

आले मोहम्मद(स.) के मानने वाले पीछे होंगे।

(मनाक़िब अख़तब ख़्वारज़मी, कल्मी व अर हज्जुल मतालिब, सफ़ा ७७४)

फिर आप जन्नत के दरवाज़े पर जायेंगे और अपने दोस्तों को बग़ैर हिसाब दाख़िले जन्नत करेंगे और दुश्मनों को जहन्नम में झोंक देंगे।

(किताब शिफ़ा क़ाज़ी अयाज़ व सवाएक़े मोहर्रेक़ा)

इसी लिये **हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा**(स.) ने हज़रत **अबूबक्र** , हज़रत **उमर**, हज़रत **उस्मान** और बहुत से असहाब को जमा करके फ़रमा दिया था कि **अली**(अ.) ज़मीन और आसमान दोनों में मेरे वज़ीर हैं, अगर तुम लोग ख़ुदा को राज़ी करना चाहते हो तो **अली**(अ.) को राज़ी करो। इसलिये कि अली की रज़ा ख़ुदा की रज़ा और अली का ग़ज़ब ख़ुदा का ग़ज़ब है। (मोवद्दतुल क़ुरबा सफ़ा ५५ से ६२)

अली(अ.) की मोहब्बत के बारे में तुम सबको ख़ुदा के सामने जवाब देना पड़ेगा, और तुम अली (अ.) की मरज़ी के बग़ैर जन्नत में न जा सकोगे, और अली (अ.) से कह दिया कि तुम और तुमहारे शिया " **ख़ैरूल बर्रिया** " यानी ख़ुदा की नज़र में अच्छे लोग हैं। यह क़यामत में ख़ुश होंगे, और तुमहारे दुश्मन नाशादो नामुराद रहेंगे। मुलाहेज़ा हो !

(कंज़ुल आमाल, जिल्द ६, सफ़ा २१८ व तोफ़ए अशना अशरया, सफ़ा ६०४, तफ़सीर फ़तहुल बयान जिल्द १, सफ़ा ३२३) **वस्सलाम**।

सय्यद नजमुल हसन करारवी

कूचए मौलाना साहब,

पेशावर सिटी



समाप्त

بسم الله الرّحمٰن الرّحيم

किताब चौदह सितारे(मय इज़ाफ़ा) के मआख़ज़

१.कुरआन मजीद
२.ज़ुबूर (हज़रत दाऊद)
३.तौरैत (हज़रत मूसा)
४.इन्जील(हज़रत ईसा)
५.सहीफ़ए शईया
६.नहजुल बलाग़ह
७. उसूले काफ़ी
८.मुतकदुल इमामिया
९.रौज़तुल अहबाब
१०.सीरते हलबिया
११.हयातुल कुलूब
१२.अल याकूबी
१३.तारीख़े अबुल फ़िदा
१४.मफ़रूदात इमाम राग़िब
१५.मजमउल बहरैन
१६.तारीख़े इस्लाम जाकिर हुसेन
१७.मनाक़िब इब्ने शहरे आशोब
१८.मुहाब लुदमिया
१९. तक़रीब अल तहज़ीब
२०.तारीख़े इब्ने ख़ल्दून
२१. इस्तीयाब
२२.असदुल ग़ाबा
२३. तारीख़े तबरी
२४.तारीख़े कामिल
२५.जबाब अल तावील
२६.मुआलिम अल तन्ज़ील
२७.बहतहुल महाफ़िल
२८.तफ़रीह अल अज़किया
२९.तन्क़ीदुल कलाम
३०.क़साएसे निसाई
३१.मुसनद अहमद हम्बली
३२.कन्जुल आमाल
३३.सीरते इब्ने इस्हाक़
३४.तफ़सीर इब्ने अबी हातम
३५.दलाएले बेहक़ी
३६.मुनाक़िबे इमाम अहमद
३७.मुसन्निफ़ इब्ने अबी शेबा
३८.तारीख़े ख़मीस
३९.तफ़सीर इब्ने मरदविया
४०.तफ़सीरे वाहिदी
४१.तफ़सीरे सिराजे मुनीर
४२.तफ़सीर इमामे शालबी
४३.हुलयतुल औलिया
४४.ज़ख़ीरतुल मआल अजली
४५.मुख़्तार ज़ियाए मुकद्दसी
४६.तहज़ीबुल आसार तबरी
४७.इकतेफ़ाए आसमी
४८.रौज़तुल सफ़ा
४९.हबीबुल सियर
५०.मआरेजुल नबूवत
५१.मदारेजुल नबूवत
५२.इज़ालतुल ख़फ़ा
५३.किताब इब्ने शहना
५४.समरात अल औराक़
५५.सफ़ीनतुल बेहार
५६.बेहारूल अनवार
५७.हयातुल हैवान
५८.सन्न इब्ने माजा
५९.तफ़सीरे कुम्मी
६०.फ़ेहरिस्ते इब्ने नदीम
६१.नसर अल तय्यब थानवी
६२.तारीख़े ख़ज़री
६३.सही बुख़ारी
६४.ग़यासुल लुग़ात
६५.रियाज़ुल नज़रा
६६.सीरतुल नबी
६७.तलख़ीस सीरतुल नबी
६८.दुरे मंशूर
६९.लुग़ाते सरवरी
७०.नेआबुल तोअद्दत
७१.ज़हरतुल रियाज़
७२.तफ़सीरे फ़तहुल बयान
७३.किबरितए अहमर
७४.अल यवाक़ियत वल जवाहेर
७५.इल्म तरजुमए मुस्लिम
७६.नील अल वतार शेकानी
७७.सही मुस्लिम
७८.अल रक़ फ़िल इस्लाम

७६.तारीख़े इस्लाम अब्बासी	११०.रबीउल अबरार ज़मखशरी	१४२.दलाएल अल इमामता
८०.शवाहेदुन नबूवत	१११.असआफ़ल राग़बैन	१४३.नासेखुल तवारीख़
८१.शरह शिफ़ा क़ाज़ी अयाज़	११२.लवामए अल तनज़ील	१४४.उमदतुल मतालिब
८२.सवाएके मोहर्रेक़ा	११३.सहाह अल मसाबीह	१४५.अनवारूल अलविया
८३.वफ़ा अल वफ़ा	११४.मिशकात शरीफ़	१४६.मशारेकुल अनवार
८४.फ़तावाए अज़ीज़ी	११५.दमए साकेबा	१४७.रिसालए हज़रते फ़िज़्ज़ा
८५.शरह मवाकिफ़	११६.तारीख़ मरवज अल ज़हब	१४८.मसाबेहुल कुलूब
८६.मोजमुल बलदान	११७.मरजाअल अनस बदख़्शानी	१४६.रियाज़ुल कुदस
८७.शरह मुस्लिम नोदी	११८.सवानेह हयाते सय्यदा	१५०.मआली अल सिब्तैन
८८.अल फ़ारूक़ शिब्ली	११६.अलाम अल वरा	१५१.तफ़सीरे कशाफ़
८६.मीज़ानुल कुबरा	१२०.नूर अल अनवार शरह सज्जादिया	१५२.तफ़सीरे बैज़ावी
६०.अजाएबुल क़सस	१२१.तज़किरए ख़वास अल उम्मता	१५३.तफ़सीरे बुरहान
६१.फ़तहुल बारी	१२२.तकलीफ़ अल मुकल्लेफ़ीन	१५४.ज़िकरूल अब्बास
६२.ख़साएसे निसाई	१२३.वसाएल अल शिया	१५५.निसान अल वाएज़ीन
६३.रौज अल अनफ़	१२४.मकारेमुल इख़लाक़	१५६.ख़ुलासतुल मसाएब
६४.कुरअतुल ऐन	१२५.सन्न तिरमिज़ी	१५७.मुस्दरिक इमाम हाकिम
६५.ख़िलाफ़तो इमामत	१२६.मतालेबुल सुवेल	१५८.कशफ़ुल ग़म्मा
६६.तारीख़ इब्नुल वरदी	१२७.ज़ाद अल उक़बा	१५६.रौज़तुल शोहदा
६७.अराएसे साअलबी	१२८.अल इमामत वल सियासत	१६०.किफ़ायत अल तालिब
६८.जामए अब्बासी	१२६.अल मल्ल वल ख़हल	१६१.तारीख़े आइम्मा
६६.इख़तेयाराते मजलिसी	१३०.शरह इब्ने अबिल हदीद	१६२.मीज़ान अल एतेदाल
१००.नूरूल अबसार	१३१.किताब अल इकतेफ़ा	१६३.फ़ुसूले महमा
१०१. सराह	१३२.इन्सान अल अयून	१६४.मआरेफ़ल मिल्लता(हायरी)
१०२.उमहात अल उम्मता	१३३.अनवारूल हुसैनिया	१६५.असाबा
१०३.इब्ने ख़लक़ान	१३४.रोयाए सादेक़ा	१६६.असनीउल मतालिब
१०४.सर आलेमीन	१३५.तैयसियर अल क़ारी	१६७.नस्से इजतेहाद
१०५.मकतूबाते शेख़ अहमद सर हिन्दी	१३६.मुशकिल अल आसार तहावी	१६८.कन्ज़ुल वाएज़ीन बराली
	१३७.बराहीने क़ातेआ	१६६.जन्नातुल ख़ुलूद
१०६.मोहर्रम नामा हसन निज़ामी	१३८.अशअतुल लेमआत	१७०.हदीसे कुदसी
१०७.मोवद्दतुल कुरबा	१३६.अल ज़हरा अबू नसर	१७१.मदीनतुल मआजिज़
१०८.अर हज्जुल मतालिब	१४०.शरह बुख़ारी ऐनी	१७२.रूहुल कुरआन
१०६.अल मुतर्ज़ा	१४१.मुन्तही अल अमाल	१७३.अबक़ातुल अनवार

१७४.ऐनुल हयात मजलिसी
१७५.तारीख़े बग़दाद
१७६.किताब अल शिफ़ा, क़ाज़ी अयाज़
१७७.नसीमुल रियाज़
१७८. शरह मिशक़ात
१७६. किताबे ख़िलाफ़त
१८०.जनरल हिसटरी
१८१.इन्साईकिलो पीडिया
१८२.स्प्रीट आफ इस्लाम
१८३.मनेह मक्कियता
१८४.सलसबीले फ़साहत
१८५.अहियाए उलूम, ग़ज़ाली
१८६.मुन्तख़िब बसाएर
१८७.तफ़सीरे कबीर
१८८.अरबईने राज़ी
१८६.हमारी उर्दू
१६०.शरह मोवाफ़िक़
१६१.अनवारूल लुग़त
१६२.मोहज़्ज़बुल मुकालेमा
१६३.ख़ुल्फ़ाए रसूल
१६४.तारीख़े अरब
१६५.एजाज़ अल तन्ज़ील
१६६.मआलेमुल उलेमा
१६७.अल शिया व फ़ुनून अल इस्लाम
१६८.एयानुल शिया
१६६.तारीख़े तमुद्दुने इस्लामी
२००.इमामे मुबीन
२०१.तरजुमा नहजुल बलागह(शिया)
२०२.तरजुमा नहजुल बलागह(सुन्नी)
२०३.सीरते मोहम्मदिया
२०४.इरशाद मुफ़ीद
२०५.ख़साएसे सियोती
२०६.तारीख़े आसम कूफ़ी
२०७.अतक़ाने सियोती
२०८.तारीख़े इस्लाम(अमीर अली)
२०६.अल ग़फ़ारी
२१०. नहाए इब्ने असीर
२११.किताब फ़तूहात
२१२.अहसनुल इन्तेख़ाब
२१३.शराए अल इस्लाम
२१४.मजमेउल बेहार
२१५.तोहफ़ए सुलैमानिया
२१६.मनाक़िब अख़तब ख़्वारज़मी
२१७.निहायतुल अरब कलक़ शनदी
२१८.मआरिफ़ इब्ने क़तीबा
२१६.जच नामा क़लमी
२२०.फ़तहुल बलदान
२२१.तारीख़े सिन्ध
२२२.तारीख़े फ़रिशता
२२३.तबक़ाते नासरी
२२४.किताब ज़ैद शहीद
२२५.तारीख़ अल फ़ख़री
२२६.तज़किरए मोहम्द व आले मोहम्मद
२२७.मनाक़िबे मुतर्ज़वी
२२८.अल करार(बनारसी)
२२६.रहमतुल लिल आलेमीन
२३०.अल अख़बारूल तवाल
२३१.कशफ़ अल अनवार
२३२.मरक़ात अल इक़ान
२३३.अक़्दल फ़रीद
२३४.रेहलत इब्ने जेर अन्देसी
२३५.सैफ़ अल मुक़ल्लेदीन
२३६.अल्ल अशराए
२३७.अहक़ाक़ अल हक़
२३८.तारीख़ अल ख़ुल्फ़ा
२३६.रौज़तुल वाएज़ीन
२४०.मराअतुल जेनान
२४१.कामिल मुबर्रद
२४२.किफ़ाएतुल अस्र मजलिसी
२४३.तरजुमा इब्ने ख़ल्दून
२४४.तसकीन अल फ़तन
२४५.दरासातअल बैब
२४६.सवानेह इमाम हसन
२४७.मोअज्जमुल तालिब
२४८.महाज़ेराते असफ़हानी
२४६.समतुल शमीन तबरी
२५०. सन्न इब्ने दाऊद
२५१.तारीख़े अरब(हिट्टी)
२५२.तारीख़े सार सनेज़कली
२५३.सीरतुल हसन
२५४.अबसारूल ऐन
२५५.मक़ातिल अल तालीबैन
२५६.अक़्दुल फ़रीद
२५७.रौज़तुल मनाज़िर
२५८.नजुल अल अबरार
२५६.मनाक़िब इब्ने समआन
२६०.शजरतुल औलिया
२६१.इक़्तेबासुल अनवार
२६२.नेसाए काफ़िया
२६३.दीवान हससान बिन साबित
२६४.अल हरीत अल इस्लाम
२६५.ततहीर अल नजनान
२६६.तफ़सीर नैशापूरी
२६७.मुतख़बुल लुग़ात
२६८.आग़ानी अबुल फ़ैज़
२६६.अदाएले सियोती
२७०.कामिल अल सफ़ीना
२७१.हदीक़ए सनाई

२७२.फ़राएतुल सिमतैन
२७३.मिनहाज अल सुन्नत
२७४.अनवार अल मज़ीया
२७५.तफ़रीह अल अहबाब
२७६.अल मदख़ल इब्नुल हाज
२७७. सन्न तिरमिज़ी
२७८.सरमायए ईमान लाजी
२७९.मौजूआते मुल्ला अली क़ारी
२८०.तफ़सीरे साफ़ी
२८१.मिसबाहे तूसी
२८२.मसन्द इमाम रज़ा
२८३.ग़ैनतुल तालेबैन
२८४.कशफुल महजूब
२८५.मजमेउल हतीमी
२८६.ज़ख़ाएर अल उक़बा
२८७.मीज़ान अल कुबरा
२८८.कनूज़ अल हक़ाएक़ मुनादी
२८९.फ़ज़ाएल अल ख़म्सा
२९०.तबक़ात इबने सआद
२९१.ख़ून के आँसू
२९२.शजरए तूबा
२९३.किबरियते अहमर
२९४.मुन्तख़ब तरीही
२९५.शहीदे आज़म अब्दुल हमीद खाँ
२९६.सिर अल शहादतैन
२९७.नूरूल ऐन
२९८.मख़ज़ेनुल बुका
२९९.जलाल अल अयून
३००.आसारतुल अहज़ान
३०१.कशकोल बहाई
३०२.अल बदायावल नेहाया
३०३.मक़तल इब्ने मख़नफ़

३०४.तज़किरा
३०५.मक़तल अवाम
३०६.तारीख़े इस्लाम
३०७.इन्सानियत मौत के दरवाज़े पर
३०८.वसाएले मुज़फ़्फ़री
३०९.माएतीन कन्तूरी
३१०.महीज अल अहज़ान
३११.नुरूल ऐन तरजुमा इसफ़राईनी
३१२.अनवारूल शहादत
३१३.नामूसे इस्लाम
३१४.तारीख़े चीन
३१५.तहज़ीब अल तहज़ीब
३१६.इसरारूल शहादत
३१७.अल हुसैन अबू नसर
३१८.ज़ैनब अख़तल हुसैन
३१९.बतलते करबला
३२०.सिलसिलतुल ज़हब
३२१.ख़साएसे ज़ैनबिया
३२२.किताबे ज़ैनब
३२३.हदाएकुल हनफ़िया
३२४.हयात उज़ ज़हरा
३२५.वसीलतुन नजात
३२६.तबक़ातुल हफ़्फ़ाज़ ज़हबी
३२७.अयून अख़बार रज़ा
३२८.मजमउल बहरैन
३२९.अल फ़राउल नामी
३३०.फ़सल अल ख़त्ताब
३३१.फ़तू अल अजम
३३२.फ़तूहाते इस्लामिया
३३३.तोहफ़ए हुसैनिया
३३४.लहूफ़
३३५.अहसनुल क़सस

३३६.रियाज़ुल क़ुदस
३३७.मिसबाहुल मुतजद
३३८.अल हुसैन जलाल मिस्री
३३९.इल्ज़ाम अल नासिब
३४०.तहरीर अल शहादतैन
३४१.ख़ुलासतुल ता|अत
३४२.तफ़सीर इमाम हसन असकरी
३४३.एहतेजाजे तबरीसी
३४४.सहीफ़ए कामेला
३४५.रियाज़ुल सालीकैन
३४६.शरह मालुक़ात ज़ौज़नी
३४७.दीवाने हमासा
३४८.मेहबानुल अदब
३४९.तारीख़े अहमदी
३५०.मजालेसुल मोमेनीन
३५१.तारीख़ फ़िकेह ख़िज़री
३५२.अल मन्जद
३५३.रिजाल कशी
३५४.आलाम अल मोकेनीन
३५५.इतआफ़ शबरादी
३५६.अल ख़राएज अबू यूसुफ़
३५७.तदरीब अल रावी
३५८.माअसर बाक़रिया
३५९.मुक़द्दमए इब्ने ख़ल्दून
३६०.दफ़यातुल अयान
३६१.सफ़र नामा हज व ज़ियारत
३६२.तोहफ़ए अशना अशरया
३६३.अनवारूल लुग़ता
३६४.हुलयतुल अबरार
३६५.अल वसाएल मोहम्मद अली
३६६.उसवतुल रसूल
३६७.जामेउल अख़बार

३६८.जज अल करामा सिद्दीक़ हसन
३६९.तारीख़े सग़ीर बुख़ारी
३७०.सीरतुल नोमान, शिब्ली
३७१.मुस्फ़ी शरह मौता
३७२.तजकिरतुल मासूमीन
३७३.सादिक़े आले मोहम्मद
३७४.तोहफ़्हुल ज़ाएर
३७५.तसवीरे अज़ा
३७६.अदब अल कातिब इब्ने क़ुतीबा
३७७.अल आलाम ज़रकली
३७८.मआरेफ़ुल क़ुरआन वजदी
३७९.किताब व किताब ख़ाना
३८०.तबक़ातुल उमम
३८१.अख़बारूल हुक्मा
३८२.इन्साईकिलोपीडिया
इस्लामिक कैमिस्टरी
३८३.मोअज्जमुल मतबूआत
३८४.ख़ुलासतुल अक़वाल हिल्ली
३८५.मिनहजुल मक़ाल
३८६.मौलफ़ुल शिया फ़ी
सदरूल इस्लाम
३८७.अल मोतज़ मोहक़्क़िक़ हिल्ली
३८८.रिजाल इब्ने उक़दा
३८९.रिजाल तूसी
३९०.अल ख़साल बाबूया
३९१.हुलयतुल मुत्तक़ीन
३९२.तहज़ीबुल इस्लाम
३९३.सवानेह चहारदा मासूमीन
३९४.शरह शाफ़िया
३९५.मशारेक़ुल अनवार बरसी
३९६.फ़ुतूहुल शाम वाक़दी
३९७.तोहफ़तुल नाज़ेरीन
३९८.अनवारूल अख़बार
३९९. अनवारूल नोमानिया
४००.अख़बारूल ख़ुलफ़ा इब्ने दाई
४०१.सवानेह इमाम मूसीए काज़िम
४०२.एतनाज़ेए वल तख़ासुम
४०३.रवाहेल मुस्तफ़ा
४०४.कशफ़ अल ज़नून
४०५.अयून अल मोजेज़ात
४०६.अशना अशरया(ऐडवर्ड सेल)
४०७.लमअतुल ज़िया
४०८.जामेउल उसूल
४०९.शरह जामेए सग़ीर
४१०.तोहफ़ए रिज़विया
४११.कनीज़ अल निसाब,
अबी मख़नफ़
४१२.सवानेह इमाम रज़ा
४१३.अल मामून
४१४.तन्ज़ीउल अम्बिया
४१५.शरह तजरीद
४१६.काशेफ़ुल नक़ाब
४१७.तारीख़े फ़ख़री
४१८.मुनतहिल आमाल
४१९.तारीख़े आले मोहम्मद
४२०.ख़ुलासा तहज़ीबुल कमाल
४२१.मुख़्तसर अख़बारूल ख़ुलफ़ा
४२२.सवानेह मोहम्मद तक़ी
४२३.आइम्मा अशना अशर
इब्ने तोलूं
४२४.किताब शजरए सादात,करारी
४२५.बदरे मुशअशा
४२६.असबात अल वसीयत
४२७.तारीख़ गुज़ीदा
४२८.क़मक़ामे ज़ख़ार
४२९.अमाली शेख़ तूसी
४३०.तारीख़े क़िरमाना क़लमी
४३१.दसवें इमाम
४३२.तरजुमा सन्न इब्ने माजा
४३३.अल बशरा, शरह
मुवद्दतुल क़ुरबा
४३४.मुन्तहीउल अरब
४३५.अल क़िमात, सिद्दीक़ हसन
४३६.मनाक़िब आइम्मए अतहार
मोहद्दिस देहलवी
४३७. ग़ायतुल मक़सूद
४३८. किताबे इक़बाल
४३९. नवाएक़ुल अनवार
४४०. फ़ुतूहाते मक्कीयता
४४१. किफ़ाएतुल तालिब
४४२. अल बयान फ़ी
अख़बार साहेबुज़्ज़मान
४४३.फ़ज़्ल मुबीन(मोहद्दिस देहलवी)
४४४. मिफ़ताहुल नजात बदख़्शानी
४४५. मराअतुल इसरार
४४६. हिदायतुल सआदा
४४७. मवालीदुल आइम्मा जहमी
४४८.मिरक़ात शरह मिशक़ात
४४९. बराहीने साबतीया
४५०. किताबुल वाक़ेया
४५१. मकाशेफ़ात
४५२. किताब नवादर
(मोहद्दिस देहलवी)
४५३.तारीख़े ख़मीस(समनानी)
४५४.किताब शरह यबज़ी
४५५.किताब बयानुल एहसान

४५६.तारीख़े इस्लाम,ज़हबी
४५७.अल बताल अल बातिल(रोज़बहां)
४५८.तफ़सीरे हुसैनी
४५९.इशाअते इस्लाम, देवबन्दी
४६०.अल मुसतरफ़ इमाम अल शबीही
४६१.दीनी बातें (ज़ाकिर हुसैन)
४६२.रौज़तुल नाज़िर
४६३. हक़्कुल यक़ीन
४६४. मआनीउल अख़बार
४६५. शरह मवाकिफ़
४६६. अनवारूल कुलूब
४६७. अल वाफ़ी मोहसिन फ़ैज़
४६८. तहज़ीबुल कलाम
४६९.मोहसिने आज़म व मोहसनीन
४७०.ज़िन्दगानीए मोहम्मद(स.)
४७१. शरह अक़ाएदे नसफ़ी
४७२.मेराजुल इरफ़ान
४७३. तफ़सीरे बैज़ावी
४७४. तारीख़े इस्लाम
४७५. दलाएल अल इमामत
४७६. जमउल फ़वाएद
४७७.अल जमोहरता बिन हज़्म
४७८. तहज़ीबुल इसमा
४७९. मक़तल इब्ने नम्मा
४८०. शरह फ़िकहे अकबर
४८१. तारीखुल कुरआन करवी
४८२. अनवारूल मजालिस
४८३. जवाहेयल कलाम,बग़दादी
४८४. नुजूमे ज़ाहेरा
४८५. अल मसाएद
४८६. मिनहाजुल दमो
४८७. रियाहीने शरीयता
४८८. सय्यदा की अज़मत, मौलाना कौसर नियाज़ी
४८९. मनाकिबे अबू हनीफ़ा
४९०. सलातीने इस्लाम,लेनन पोल
४९१. ग़ायतुल इख़्तेसार
४९२. सहाअउल अख़बार
४९३. दारूल मसाएब
४९४. तारीख़े इब्ने तोलून
४९५. इन्साबे समानी
४९६. क़यामत नामा(देहलवी)
४९७. तारीख़े इस्लाम (गुलाम रसूल, मेहर)
४९८. अहसनुल तक़ासीम, मुक़द्देसी
४९९. किफ़ायतुल आसार
५००. रिसालए जज़ीरए ख़िज़्र
५०१. इकमालुद्दीन
५०२. तारीख़ जहां आरा
५०३. रियाजुल उलेमा
५०४. किफ़ायतुल मेहदी
५०५.कशफ़ल क़नाअ
५०६.रियाजुल मोमेनीन
५०७.सिराजुल कुलूब
५०८.जवाहेरूल बयान, ज़रदनी
५०९.बदाउल अख़बार सरवरी
५१०. इरशाद अल तालेबैन
५११. अरबी माहनामा अल हादी, कुम
५१२. अख़बार पायर्नीयर, लखनऊ
५१३. सरफ़राज़, लखनऊ
५१४. अख़बार पयामे इस्लाम लखनऊ.
५१५. अल जव्वाद, बनारस
५१६. अहले हदीस, अमरत सर
५१७. आजकल, लखनऊ
५१८. इन्केलाब, लाहौर
५१९. तुलूए इस्लाम, किराची

